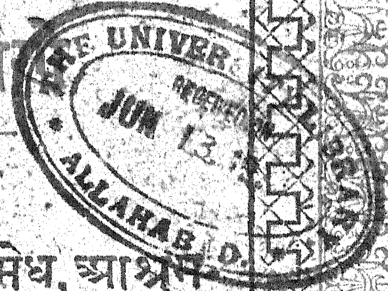
# महाभारतदर्पण




## चतुर्थ भाग

शांतिपर्व चतुर्थअंश, अश्वमेध, आश्रमवासिक मुशल, महाप्रस्थान, स्वर्गारोहण और हरिवंशपर्व सहित

स्वस्तिश्री महाराजाधिराज श्रीउदितनारायण काशिराजकी आज्ञानुकूल

श्रीगोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरों ने संस्कृत का सारांश यथावस्थितसे अतिपरिश्रम से भाषा, वर्णमात्रा वृत्तमें अति रुचिर रचना किया और उक्त काशीनरेशने कलकत्ता महानगरके शास्त्रप्रकाशमुद्रायंत्रमें श्रीपंडितलक्ष्मीनारायणसे शुद्धकराय संवत् १८८६ मेंमुद्रितकरायाथा

सम्पूर्णविद्यानुरागियोंके अनुरागार्थ और पौराणिक ऐतिहासाकांक्षियोंके पठन पाठनार्थ

वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

तीसरीबार

---

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर ( सी, आई ई ) के छापेखानेमें छपी

अगस्त सन् १८९१ ई० ॥

# महाभारत वार्त्तिक की भिन्न २ पर्वें ॥

## आदिपर्व ॥

इसपर्वमें महाभारतकी प्रशंसा व कथा श्रवणफल व अक्षौहिणी संख्या व सृष्टिविस्तार और पौरववंश के राजाओंकी कथा सविस्तर वर्णितहै ॥

## सभापर्व ॥

मयदानवकरके पाण्डवोंकेहित अद्भुतसभाकी रचना व नारदकृतपाण्डव प्रतिसभावर्णन श्रीकृष्णके उपदेश से युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने के लिये जरासन्धबध व पाण्डवों प्रति चारोंदिशाओं की विजय व युधिष्ठिर और शकुनी से जुआंहोना और द्रौपदी सहित सब धनहारना और दुश्शासन करके द्रौपदी वस्त्राकर्षणादि कथायें वर्णित हैं ॥

## बनपर्व ॥

पाण्डवों का बनवास सूर्यार्चनसे ताम्रपात्र युधिष्ठिरको प्राप्तहोना अर्जुनको स्वर्गजाकर इन्द्रसे मिलापकरना भीमसेन करके किर्मीर राक्षस बध राजानलकीकथा, लोपामुद्रासे अगस्त्यजी का विवाह राजाभगीरथ को गंगाजीकेदर्शनार्थ तपकरना व गंगाजी से व शिवजी से बरप्राप्तहोना किरातरूप महादेव व अर्जुनकायुद्ध व रामायणकी कथा वर्णितहै ॥

## बिराटपर्व ॥

इसपर्वमें युधिष्ठिरादि पाण्डवों का दुर्योधनसे जुयेंमेंहारके राजाविराटके यहां गुप्तबास और वहांही द्रौपदीमें आसक्त कीचककाभाइयों सहित भीमसेनके हाथसे मरण पुनि दुर्योधनादि कौरवोंको राजा विराटकी गौवें हरना वहांगुप्तवेष अर्जुनसेयुद्ध पश्चात् विराटको अपनीपुत्री उत्तरा को अर्जुनके पुत्र अभिमन्यु को विवाहिदेना ॥

## उद्योगपर्व ॥

[illegible] दूतका कथा, संजय, विदुर, धृतराष्ट्र और श्रीकृष्णजी का

# सूचीपत्र ॥

## शान्तिपर्व दानधर्म ॥

इति हरिबंशदर्पण सूचीपत्रं समाप्तम् ॥



# महाभारत दर्पण ॥

## शान्तिपर्व दानधर्म दर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहिं नौमि । बंदि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ सीताराम सुस्वामि प्रभु न्यामक अन्तरयामि । सेवक हनुमतसहित हित सन्तत तिन्हैंनमामि ॥ पारथकेसारथभये सारथिपरमअनूप। तेसारथ रचिदेहिंयह भारतभाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिवरबीररामपरमप्रिय पारषद । मंगलमूरतिधीर भारतस्वरथध्वजरथबर ॥ सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधिउलंघन समयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहततस्यो ॥ दानव्याज प्रभुजौनलैत्रिलोक इन्द्रहिदयो । सोप्रभु महिमाभौन दान धर्म पूरणकरो ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ मोक्षसुधर्म परोक्षतेहि कर्ण युधिष्ठिर भूप । भीषमसों बूझत भये दानधर्मको रूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ मरेशस्त्रक्षतसों सबगात । शर शय्यापरपरे बिभात ॥ बिस्तर कहत तत्त्व सब धर्म । कथा पुरातन सहित समर्म ॥ लखि तो श्रम साहस अधिकार । बूझत बनत न किये बिचार ॥ लहि तो बचन सुधाकीधार । मन नाहिंगहत तृप्तताचार ॥ तातेबूझन चाहत और । कहिनाहिं सकत देखि श्रम डौर ॥ दुर्योधन की

मति मगलागि। पापकर्म कीन्हें असत्यागि॥ जाते यह अघ कुकरम जात। छूटै कहो तौनबिधि तात॥ भीष्मउवाच॥ धर्मशील अति पावन आप॥ नाहक निज यह थापत पाप॥ सूक्षमगति करमन की होति। देशकाल बिधि कला तनोति॥ अत्रकहत पूरबइति हास। सुनो तौन भूपति मतिरास॥ रहीगौतमीनामा एक। वृद्ध ब्राह्मणी गहे बिबेक॥ जाके रह्यो पुत्र सुकुमार। डस्यो ताहि पन्नग बिषगार॥ मर्यो तौन तब अर्जुन नाम। लुब्धक अहिहि पकरि बधकाम॥ पाशबद्ध बिप्रिणि पहँ ल्याय। यहि बिधि कहत भयो समुझाय॥ तो सुतहा यह अधम अयान। है बध योगमंत्र नहिं आन॥ शासनदेहु बधौं मैं याहि। बधब उचित अपकरमी ताहि॥ दोहा॥ यहसुनि बोलीगौतमी या कहँ बधब अयोग। प्राप्तहोत भवितब्यता पूर्वकर्मकोभोग॥ दुःखार्णव मधि परिकिते बूड़त तरतअनेक। किते लहत सुख दुखनहीं पूरबकर्म बिबेक॥ याको मारब अनृतनहिं सुतजेहि मृतकन होय। मृतककरै यहि मृतकगति लहै नरक गतिसोय॥ व्याधउवाच॥ बधि शत्रुहि मेटति दुखहि सामरथी मतिमान। ऐसे अरिकहँ पाय बश बधबै उचित न आन॥ गौतम्युवाच॥ कहीगौतमी यहिबधे मिटहि न मेरोशोक। बिप्रहि निरदय प्रकृतिको किये चाहिये रोक॥ व्याधउवाच॥ लभ्यनहीं मेटे मिटत अवशि लभ्यको लाह। लहि शत्रुहि बध किये नहिं रुकत स्वर्ग की राह॥ गौतम्युवाच॥ बधे अहिहिका लाभ अब बधे बिना का हानि। मोक्ष सुफल चाहत सुबुधि नित्यधर्म अनुमानि॥ व्याध उवाच॥ दुःख एकके बधे जो रक्षित होहिं अनेक। तौ बहुतन को रक्षियेएकहि मारिसटेक॥ दुष्टएक के जिये जो मारेपरैंअनेक। तौ तेहि खलको बध करबशतधा उचितबिबेक॥ भीष्मउवाच ब्याधा के ये बचन सुनिबोलो उरगबिचारि। और काहि डसि बधत तुम लखेमोहिं निरधारि॥ कैकै प्रेरित मृत्युते डस्यो याहि

हमहेरि । दोष न मम कछु मृत्युको मानोदोष निबेरि ॥ व्याधउवाच
कारय कीन्हें सर्प तुम तुम दोषी ममजान । नहिं प्रेरक कहँ गु-
णत हम तुमहौ बध्य न आन ॥ सर्पउवाच ॥ आयुध सम लगि हम
किये कारयकारण सोत । आयुधको कछु दोषनहिं बाहकदोषी
होत ॥ व्याधउवाच ॥ अवशिबध्य तू ब्यालहै ब्यर्थ बनावत बैन ।
अपकारी अपकारको विसम तोहिं अघऐन ॥ सर्पउवाच ॥ न्याम-
कते प्रेरित किये कारय कछू न दोष । कर्त्ता मानौ ताहि मति
मोपहँ मानौ दोष ॥ भीष्मउवाच ॥ इतने में आई तहां मृत्युमहा
दुख दानि । ब्याधसों सुभाषत भई कर्मकालकृत ठानि ॥ मृत्यु-
रुवाच ॥ प्रेरित ह्वै हम कालते प्रेरित कीन्हें याहि । नहिं मम
दोष न सर्पको काल बधत क्षणचाहि ॥ यथा बायु बश घन
चरत तथा कालबश ब्याध । चरत सर्प हम रोगसब कर्म
कराल अबाध ॥ सात्विक राजस तामस पूर्ब कर्म अनुसार ।
करत अन्त अन्तक अवशि इहांन और बिचार ॥ स्थावर
जंगम जगजिते कालात्मक ते सर्ब । यथाप्रवृति तिमि निवृति
है पाइ कर्मगतिपर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ तदनु ब्याधसों कहत भो
बन्धनपीड़ितसर्प । सुनेमृत्युके बचन ममकाटो बन्धन अर्प ॥
व्याधउवाच ॥ हम नहिं मानत एकयह तुमकीन्हें अपराध । दोषी
मानततोहिं हम करता पाप अगाध ॥ भीष्मउवाच ॥ इतनेमें तहँ
आइकै कालकियो सुनु ब्याध । मम पन्नगअरु मृत्युको गुणो
न कछु अपराध ॥ पूर्बकर्म अनुसारको फल जो मंद अमंद ।
बिरचि देत बिधि तौन हम प्रापित करत अदंद ॥ हेतु नाशको
कर्महै मरत कर्म अनुसार । दोष न काहूको कछू बिधिवतकिये
बिचार ॥ भीष्मउवाच ॥ कालबचनसुनि गौतमी कहो ब्याध सों
बैन । दोषन काहूको कछू तजु सर्पहि गहुचैन ॥ पूर्ब कर्मफल
हम लह्यो दुसहदुःख सुतशोक । यहिबय यहिबिधि सुतमरयो
नहींकर्मकोरोक ॥ सोरठा ॥ सुनि बिप्रिणिके बैन ब्याधा छोड़ेउ

पन्नगहि । कालगयो निज ऐन गईमृत्यु पन्नग गयो ॥ यहि बिधि करो बिचार दोष न काहूको कछू । तजो शोच संचार पाप न आनो अपुनपहँ ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ महाप्राज्ञ हे पितामह सर्वशास्त्र बिद दक्ष । तुमसों सुने अनेक बिधि उपाख्यानके कक्ष ॥ धर्मसाधिकै को गृही मृत्युहि जीत्योअत्र । सो अब कहिये कुलकमल भयो पुरुष असयत्र ॥ भीष्मउवाच ॥ अत्रपूर्व इतिहास हम कहत सुनोसो भूप । मृत्युहि जीत्यो जिमिगृही साधि सुधर्म अनूप ॥ चौपाई ॥ पूर्व प्रजापति मनु शुभकर्मी । तासु सुवन इक्ष्वाकु सुधर्मी ॥ शतसुतमे इक्ष्वाकु नृपतिके । रहे दशाश्व दशमअति मतिके ॥ तासु सुवन मदिराश्व सुकामी । तासुसुवन द्युतिमान सुनामी ॥ सुतद्युतिमान भूपको राजा । भयो सुबीर सुसेन समाजा ॥ तासुसुवन दुर्जय भूभरता । तासुत दुर्योधनमखकरता ॥ रत्न शस्यधन जाके पुरमें । बर्षेइंद्र मुदित ह्वै उरमें ॥ तेहि नर्मदा नदीपति कीन्ही । शुचिसुरूप रमि आनँद दीन्ही ॥ शुभ सुदर्शना तनया ताके । उत्पतिभई अगण गुणजाके ॥ तैसी रूपवती अति दीपति । और न प्रगटभईसुनु भूपति ॥ तरुण रूप अति ताकोदेखी । मोहेआगिनि अपूरब लेखी ॥ मन में गुण्यो कौनबिधि कीजे । याहि तियाकरि आनँद लीजे ॥ गहि द्विजरूप मांगिये याही । नृपतिन देय कहउँका ताही ॥ इमि गुणि मौन रहतभो मनमें । नृप मखकरतरहो द्विज गनमें ॥ शान्तरूप तहँ ह्वैगे पावक । यथाअप्राण परोकरिशावक ॥ सोलखि भूप दुखित अति ह्वैकै । बोलतभये द्विजनतनज्वैकै ॥ पावक लुप्तभयो केहिकारण । सोकहि करिये शोचनिवारण ॥ दोहा ॥ भूमिपालको बचनसुनि अग्निहि ध्यायोबिप्र । तिनकहँ पावक प्रगटभे उग्ररूप गहि क्षिप्र ॥ बिप्रनसों पावक कह्यो

हम तिय हित गजगौनि। चाहतहैं नृप कन्यकहिकाहिदिवाइये
तौनि ॥ चौपाई ॥ सोसुनि बिप्रगोइनाहिं राखे। यह वृत्तान्तभूप
सोंभाखे॥ सुनि नृपकहे अवशि मुदलेहौं। निज तनया पावक
कहँ देहौं ॥ हमइतनो पावक तेमांगत। ममढिग रहैं परमहित
लागत ॥ कहि तथास्तु इमिपावक बोले । सुनि भूपति सुख
लहे अतोले॥ निज तनयाकहँ भूषितकीन्हें। वेद विहितपावक
कँहँ दीन्हें ॥ तेहिकरि ग्रहण रमतभे पावक । चाहे पुत्रसुबुधि
शुचिभावक ॥ कछु दिनमें भोसुत सुघरीमें। नाम सुदर्शन सु-
खद थरीमें ॥ क्रमसों भयो युवा जगजाहिर । बिद्यावान वेद-
बिद माहिर ॥ होनृप ओघवान शुभसाकी। ओघवती तनया
होताकी ॥ ओघवानसो सुता सयानी । दईताहिकहिकै मृदु
बानी ॥ ओघवती कहँ पाइ सुदर्शन । ह्वै गृहस्थ करि आनँद
कर्षन॥ कुरुक्षेत्रमें बसि छबिछाये। संयमनियम सुनीतिबढ़ाये॥
मृत्युहि जीतनको पन करिकै। लगे अतिथिपूजन व्रतधरिकै॥
ओघवती कहँ शासनदीन्हे। पूजहु सदाअतिथि हितचीन्हे ॥
अतिथि करै अनुशासन जोई। बिना बिचार किहेहुतुमसोई ॥
आत्मदानलों तोषण कीजो। मति सङ्कोच शोच कछुलीजो॥
दोहा ॥ रहै इहां हम गेहकै रहै न काहूकाल । तुम अतिथन
तोषेहु सदा जो तोषै जेहिचाल ॥ अतिथि पूजिबे ते न कछु
अधिक गृहीको धर्म। ताते जानेहु अतिथिको पूजन महा सु-
कर्म ॥ सोरठा ॥ अनुशासन धरिशीश ओघवती पतिसों कही।
देत सुआज्ञाईश सोव्रत पालब सबशमैं ॥ रोला ॥ तहां तिन
कहँ अतिथि पूजत बहुत दिनगो तात । काल आयो तहां
बनिकै बिप्रवेष बिभात। गये हे बनमें सुदर्शन समिध हित
तेहिकाल। कह्योताकी तियासों तब बिप्ररूपी काल ॥ गृही
कोशुभधर्म जोतुम होहु जानतबाल। करौतौ सतकारमम हम
अतिथि आयेहाल ॥ बचन यह सुनि राजपुत्री परम आनँद

पाय। पाद्यअर्घाचमनदै शुभठौर पहँ बैठाय ॥ कही आज्ञा करहु सोहम करब करब न देर। कह्यो ब्राह्मण देहुरति रमि सविधिकरि मनसेर॥ शोचिआज्ञा सुपतिकी तव राजपुत्रीतौं-नि। रञ्जिलज्जित गईगृहमधि सहितद्विजगजगौनि ॥ सैन थल तेहिपाइलखि स्वीकार लाग्योरंग। अंगकरि सउमंगठान्यो दरीते रतिढंग॥ बिप्रनाहिं रतिकियो ताको गह्योकर सुख पाय। इतेमें तेहि भयो टेरत सुपति द्वारेआय॥ बिप्रतब कर छोड़ि दीन्हों तऊलज्जित नारि। जानि निजहि उछिष्ट बोली नहीं सुधरमधारि॥ फिरिसुदर्शन भयोटेरत बिप्र तबकढ़िआ-य। अग्निसुतसों कहतभो हमबिप्र अतिथि सचाय॥ भये मांगत आइहम तुवतियाते रतिदान। देन उत्सुक भईवहतब कियेतुम आह्वान॥ भाषिइमिगहि दण्डमुद्गर चलो मारण ताहि। भयेहीनप्रतिज्ञ तुमबध योगमुद्गरवाहि॥ तबसुदर्शन कह्यो सुरति यथेष्टकीजैतात। अतिथिपूजन परमधर्म गृहस्थ को अवदात॥ प्राणदारा सुधनजो ममगेह मध्यअधार। देत सो सब अतिथिकहँ नहिं मोहिं और बिचार॥ बायु महिजल तेजनभ गुण बुद्धिमम सुरकाल। सुकृत दुष्कृत रहत देखत पुरुषको सबकाल॥ जौनमिथ्या बचन भाषत होहिंहम दृढ़ने-म। करसु रक्षण सुमनमम तौ दास जानि सप्रेम॥भीष्म उवाच॥ इतेमें नभगिरा तेहिथर भईसो सुनिलेहु। अतिथि पूजकसत्य दृढ़व्रत है सुदर्शन एहु॥ सुनतही नभगिरा बोलो कालद्विज हरषाय। हमपरीक्षा किये इमि तुवधर्मको सुखदाय॥ सबिधि जीते मृत्युकहँतुम अतिथि पूजिसनेम। करैगो तुव स्मरणसो नरलहैगो नितक्षेम॥ लहौगे इहिदेहते तुमपरम उत्तमलोक। महा सुकृती बसत जेहिथल शुभ सनातनओक॥ तियातो पातिव्रता यह गुणवती पालक धर्म। अर्द्धतनते जाइ तुवसँग बसिहि पावनिपर्म॥ अर्द्ध तनते होयगी इतनदी लहि निज

नाम। करिहि मज्जन तासुमधि सो लहहि सुधरम आम॥ इतेमेंतहँ आइ बासव किये पूजिततांहि। अतिथि पूजनसुकृत पूरण परम सुधरम चाहि॥ इमिसुदर्शन गृही जीत्यो मृत्युकहँ हेतात। अतिथिपूजननेम दृढ़ब्रत पालिपावनगात॥ गृहीको है परम सुधरम अतिथि पूजनरूप। गृही कहँनहिं अतिथिते है और देव अनूप॥ पाइपात्र सुअतिथि पूजन नहीं सुगृही जौन। पाप दैलै पुण्यताको जात सुअतिथि तौन॥ दोहा॥ उपाख्यान उत्तममहा पावन धन्य यशस्य। पुण्य पुत्र धनधान्यप्रद मंगल मंजु रहस्य॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेसुदर्शनोपाख्यानोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ क्षत्री बिश्वामित्र किमि लहे श्रेष्ठ ब्रह्मण्य। सुनो चहत हैं तौन हम कहो पितामह धन्य॥ भीष्मउवाच॥ चौपाई॥ सुनो तात सो तत्त्वअनूपा॥ भरतबंश अति पावन रूपा॥ नृप अजमीढ़ प्रगटभे तामें। तासुत जहनु अगण गुणजामें॥ तासुत सिन्धुदीप भूस्वामी। तासुत बलाकाश्व जयकामी॥ तासुतनय बल्लभ नयगामी। कुशिक तासु सुत अनुपम नामी॥ तासुतगाधिभये अतिभाके। भयोनपुत्र प्रसव नृप ताके॥ तब तिय सहित बसे बनमाहीं। तहां भई तनया सुतनाहीं॥ सत्यवती तेहि भूपतिभाखे। पूरित प्रेम पुत्र समराखे॥ जबवह सुता बालपन त्याग्यो। तब ऋचीक मुनि ताकहँ मांग्यो॥ नृप तेहि सुता देन मुदपागे। सहस श्याम श्रुति बाजीमांगे॥ देहौसहस श्याम श्रुतिबाजी। तौ हमदेब सुता छबि साजी॥ सुनि ऋचीक मुनि आनँदलहिकै। कहेबरुणते सुजुगुति गहिकै॥ सहसश्याम श्रुति बाजीनीके। देहु हमैं अति चञ्चलजीके॥ कहेबरुण जेहिथल कहिदेहु। जलते तहां कढ़ें हयलेहु॥ सुमुनिकहे कनउजकेधोरे। करौप्रगट सुरसरितेघोरे॥ सुनतबरुण अनुकम्पालीन्हें। सहस श्यामश्रुति

प्रगटित कीन्हें ॥ तुरग भये जहँ जलते बाहिर । अश्वतीर्थतहँ अबतक जाहिर ॥ दोहा ॥ ग्रामअश्वनी बसतजहँ सुमन सराहत जाहि । विप्रवेदबिद बसत जहँ उत्तम शुभथल चाहि ॥ सुमुनि श्यामश्रुति तुरगलै दयेगाधिकहँ जाय । गाधि दई मुनि कहँसुता सत्यवती सुखदाय ॥ सोरठा ॥ मुनि पतनी लहि योषि तब अचरज लागे करन । लहि सुखसेवा तोषि उपचारक सुतको कहे ॥ चौपाई ॥ सो सुनि सत्यवती की माता । कही सुताते बचन बिख्याता ॥ कहि सुबचन मुनिकहँअवराधौ । मोरेहुंपुत्र होइ सो साधौ ॥ सत्यवती निज पति सन भाषी । मो जननी शुभसुत अभिलाषी ॥ तुव प्रसाद सुत चाहति साँई । हम हमारि जननी शुभठाँई ॥ सोसुनि मुनिगुणि हिये बसाये । दोयपात्र मैं सुचरुचढ़ाये ॥ कहीतिया ते तुम दोउनारी । लहि ऋतुदिन अस्नान सुधारी ॥ भेंटि उदुम्बरतरु कहँ सुखते । निजनिज गृह आवहु शुचि रुखते ॥ मिलिउदुम्बरहि आनँद पाई । सत्यवती मुनिवरपहँ आई ॥ उभयपात्र चरु मुनि तेहि दीन्हें । तिनको भेद प्रगट यहकीन्हें ॥ यहचरु चारु तिया तुम खायहु । यह चरु निज जननीहि खवायहु ॥ लै युग चरु नृपसुता सयानी । गई जननिपहँ आनँदसानी ॥ चरु दै दई भेद कहि सोई । चरु बिभाग मुनि भाषे जोई ॥ सुनि नृपतिया गुणी मनमाहीं । बिनु कछुभेद उभयचरु नाहीं ॥ इमि बिचारि ताको चरु लीन्हीं । निजचरु निज तनया कहँ दीन्हीं ॥ भोरि बुझाइ बचन बहुकहिकै । बदलिलई चरुछल बिधि गाहिकै ॥ दोहा ॥ करि बितपाशय उभयचरु भोजन करि तेतीय । गहिसुगर्भ राजितभई लहिशोभा कमनीय ॥ सत्यवतीको गर्भलखि मुनिबोले अनुमानि । करी बिपर्यय सुचरुको मोहिं परो यहजानि ॥ ब्रह्ममंत्र ते एक चरु मंत्रिदये हमतोहिं । क्षात्रमन्त्रते मंत्रिकै दये ताहि बिधि जोहिं ॥ उनखाईतो चरु

बदलि तुमखाईचरुतासु । क्षत्री तोसुत होइगो तासु बिप्रतप रासु ॥ सोरठा ॥ सुनियह अप्रिय बैन सत्यवती कम्पित भई । पाणिजोरि भरिनैन कहत भई अति बिनयकरि ॥ चौपाई ॥ मो सुत ऐसो होइ न साईं । तप कृत होइ तुम्हारी नाईं ॥ चरु प्रभाव तुम निरमें जैसो । मम पउत्र चरुप्रगटैतैसो । सुनितथास्तु बोलेमुनिमानी । तासुतभे जमदग्निसुज्ञानी ॥ भयेगाधिके सुवनसुखारी । बिश्वामित्र परम तपचारी ॥ इमि ब्रह्मत्व लहे भूमरता । बिश्वामित्र परम तपकरता । तपकृतभये बहुत सुत ताके । तेज पुंज अतिपरम प्रभाके ॥ देवरात मधुछन्दकहाये । बभ्रु मुकुन्त अक्षीण गणाये ॥ थूनकाल पथ बातुलनामी । याज्ञबल्क्य गालवतपकामी ॥ जंघउलूक यमदूतजानो । अरुसयंध्र वायनऋषि मानो ॥ सालंकायनबज्र बिशारद । कुर्चमुखौ लीलासित नारद ॥ बच्छग्रीवशुचि मुशल मुनीशा । बक्रकआंघिसुनो अवनीशा ॥ चक्रक मारुत आश्वलायन । वालिबात ग्रोथा श्यामायन ॥ सुश्रुगार्ग्य याबालिसुरायन । पौरबतन्तकपिल कपिलानन ॥ माई ताढ़कापन नबतन्तू । अरुकाऋषि औपग्रह सन्तू ॥ सूति बिभूति अरालिबखाने । नाचिक बक नख जापिन सयाने ॥ चारुमत्स्य चाम्पेय सिरीषि । उर्जय अम्भोरुह शुभ ऋषि ॥ दोहा ॥ गार्दभिअरु जंघारिमुनि निरुदा पक्षोनाम । सुमुनि बाभ्रबायनि कहे हिरण्याक्ष तपधाम ॥ सेथानोपति सुमुनिअरु सुमुनिनारदी आम । बिश्वामित्रमुनीश के पुत्र इते अभिराम ॥ सोरठा ॥ अब कछु संशयऔर होय बूझियेभूपसोउ । भाषितासु सबठौर देवतुम्हें समुझायहम ॥

इतिशांतिपर्वणिदानधर्मेबिश्वामित्रउत्पत्तिनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ बिनाव्यर्थ कृत कर्म जे धर्मशीलमतिमान । ज्ञानमान हे पितामह कहोतासु ब्याख्यान ॥ भीष्मउवाच॥ अत्रपूर्ब इतिहास हम कहत सुनोनृप तौन । बासव ते शुकते

सुचित भई बार्त्ता जौन ॥ रोला ॥ काशिराज महीपकेबरनगर ते कढ़ि पूर्व । गयोव्याधा बिपिनमधिलैअस्त्र अपनो गूर्व ॥ देखि तरुतर मृगहि मार्‍यो बाणतीक्षणतानि । बेधि मृगतन धर्‍यो तरुमें बिशिख बिषकी खानि ॥ मृगहि आमिष लुब्ध लुब्धक गयो लै निजधाम । बाण बिषझर सूखिगो तरु झरेछन्दहवै काम ॥ गये झरि फल फूल ताके कढ़े कोटर भूरि । रह्यो तापै बसत शुकसो गयो दुखत पूरि ॥ बर्‍यो कोटर मध्यदृढ़ हवैअनत जैबो त्यागि । वृक्षके सँग आपनो तन त्यागिबो गुणिलागि ॥ शक्रशुकको सत्तलखि अरु भक्तिपूरणप्रेम । बिप्रबनितहँ आइलागे कहनपरखत नेम ॥ कहाशुक यहिवृक्षमधि बसिलाभतुमकहँ कौन । बिगत फल दल फूल रस अब कियो चाहत जौन ॥ छोंड़ि याकहँ बसो पुष्पित फलित तरुपहँजाय । तुम्हें जीबो बहुतदिन भो मृतकयाको काय ॥ शक्रके सुनि बचनशुक अनुमानिशक्र सुजान । नम्रिहियमें नौमिबोलो बचन साधु समान॥शक्रतुमत्रैलोक्यपतिहौउचिततुमकहँएहु । पालिबोसब जीवको उपकार करबसनेहु ॥ धर्म शिक्षक धर्म पालकआपु सुरपतिख्यात।त्यागिबो यहिवृक्षकोमम धर्म नहिं हे तात ॥ जन्मि यापहँ बढ़े हम रहि सुफल याको खाय । लहे सुख बचि रहे अरिते आड़ याको पाय ॥ परीयापहँ आपदा यह भयो फल दल हीन । छोंड़ि याकहँ गये अनते होत पातक पीन ॥ मरे याके कोटरै मधि होत मम उद्धार। आपदा लखित्राण करतहि तजब अधरम चार ॥ शक्र शुकके बचन सुनिकै जानि भक्ति अछाम। कहे शुक अब मांगुबर जो होइ मनमें काम ॥ कह्यो शुक प्रभु कृपा मोपहँ करत इमि जो आप। होइ तौ तरु पूर्ववत पल्लवितसफल सधाप ॥ दोहा ॥ शक्र अमृतते सींचितरु किये पल्लवितगात। मोदित भो शुक शक्रप्रभु गेसुर सदनबिभात ॥ शुक कछु दिनमें देहतजि लह्यो स्वर्गको बास । यहि

बिधि धर्मी धर्म्म गहि पावत परमसुपास ॥ प्रभु प्रश्नोत्तरकहत तुम सुनि मन पूरतमोद । दैव और उद्योग को कियो श्रेष्ठता नोद ॥ भीष्मउवाच ॥ अत्र पूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृप तौन । मुनि बशिष्ठ श्रद्धासहित बिधिते बूझे जौन ॥ वशिष्ठउवाच ॥ कहो पितामह पुरुषको दैव जौन प्रारब्ध । तौन श्रेष्ठ उद्योगके याते कारज लब्ध ॥ चौपाई ॥ बिना बीजकछु प्रगटत नाहीं । बिना बीज नहिं फल महि माहीं ॥ प्रगटत बीज बीजते जगमें । होत बीजते फल रस अगमें ॥ बीजक्षेत्र मधि बोवत जैसो । सुकृतदुकृत पावत फल तैसो ॥ फलत न क्षेत्र बीज बिनु मानो । तिमि उद्योग दैव बिनु जानो ॥ क्षेत्र पुरुषकरतब छबि छावत । बीज जौन प्रारब्ध कहावत ॥ क्षेत्र बीज संयोग भये ते । प्रगटि शस्य बरधत समयेते ॥ कर्ता नित्य कर्मफल भोगत । सो प्रारब्ध कृत्यसंयोगत ॥ शुभ सुकर्म करिकै सुख पावत । पाप कर्मनिति दुख सरसावत ॥ निज कृत फलत अकृत नहिं कबहूं । सुकृतसुकर्म सुखद इत उतहूं ॥ भाग्य प्रतिष्ठा सुकृती पावत । दुष्कृति क्षतपरलोन लगावत ॥ है तप रूप भाग्य नृप सुनिये । देत स्वर्गपद तासुख गुनिये ॥ चन्द्र अर्क आदिक शुभहीते । होत कर्म करि सुरनरहीते ॥ आपुहि पुरुष आपनो हितहै । शत्रु आपनो आपु कचित है ॥ नशत पुण्य पातकके कीन्हें । पातक नशत पुण्यब्रत लीन्हें ॥ यथा ययाति स्वर्ग ते गिरिकै । पुण्यपाइ दिव बिलसे फिरिकै ॥ अश्वमेधकरिशुचिसबादिशिते । भोसौदासअसुरद्विजऋषिते ॥ दोहा ॥ वसु शत मखकरि शक्र सम बोले मिथ्याबैन । स्वर्गबास नहिं करिसके गये पताल अचैन ॥ नृग नृप बहु गोदानकरि द्विजते मिथ्या बोलि । शापपाइ सरटा भये बसे बिलिनमें ओलि ॥ तप ब्रत नियम गहे सुमुनि शापदये लखिकर्म । तौन नहीं प्रारब्ध नृप कृत पातकको मर्म ॥ बढ़े पाप प्रारब्ध नहिं

रक्षिसकत अधिकाय। वायुलगे जिमि ज्योतिकहँ तेल न सकत बचाय॥ यथा तेज मारुत लगे बरधत अग्नि सचाय। बढ़त शुद्ध प्रारब्ध तिमि पायसुकर्म सहाय॥ नशेतेलके नशत है जिमि दीपक हे तात। तथा कर्म को क्षयभये प्रारब्धौ मिटि जात॥ कार्य्य सिद्धि प्रारब्ध सों पूर्ब सफल को कर्म। क्रीयमाण अति कर्म सो बेधत ताको मर्म॥ सोरठा॥ बिधि पूरब शुभकर्म करि नर पावत सुर सदन। सदा पालिये धर्म्म धर्म्म कर्म्म शोचब उचित॥ युधिष्ठिरउवाच॥ जिते महत शुभकर्म तिनकेफल कहिये सबिधि। तुम ज्ञाता सब मर्म ज्ञानमान है पितामह॥ भीष्मउवाच॥ तुम बूझत जो मर्म सो हम तुमते कहत अब। सुनो तौन नृप धर्म श्रद्धावान सुजान शुचि॥ रोला॥ करत जेहि बिधि कर्म्म नर तिमि लहत ताको भोग। करत मानस कर्म ताकहँ होत स्वप्न सँयोग॥ करत कायिक कर्म जो शुभअशुभ जेहिजेहि भांति। त्यागितन सो करत ताको भोग तेहि तेहि भांति॥ लहि अवस्था बाल्य यौवन आदि जेहि जो कर्म। करत नर तेहि समय भोगत कर्मकृतको मर्म॥ लाइइन्द्रिन करत नाहिंनकबहुं ताकोनाश। इन्द्रियेंअरुआतमा ये तासुसाक्षीपाश॥ अन्त क्षुधितहि देतताको होत पुण्यमहान॥ अतिथि पूजन गृहीको शुभकर्म अति सुखदान॥ बानप्रस्थादिकसुकर्म महान फलदातार। त्यागि सुख सामान व्रत गहि होत भू भरतार॥ त्याग कीन्हें रसनको सौभाग्य पावत भूरि। तजे आमिष पुत्र पशुधन लहत सुखसोंपूरि॥ रहत मौन अधोमुखौ जे करतहैं जलशैन। एकशायी सदाते सबलहत इच्छित चैन॥ युद्ध में करि बीरशय्या लहत अक्षयलोक। देत बिधिवत दान धनते भरत ताको ओक॥ लहत तपकरि भोग आयू ब्रह्मचर्य्यहि लागि। रूप बल आरोग्यता ऐश्वर्य्य हिंसात्यागि॥ मूलफल दल पर्ण अशनी लहत दिवमें धाम। अग्निहोत्रहि साधि

स्वर्गी होत पूरणकाम ॥ गहत दीक्षा तीर्थ प्रजटन सुब्रतद्वादश बर्ष । लहत दिवते ब्रह्मलोकौ गहत जिमि उत्कर्ष ॥ करत वेदाध्ययन जेते लहत स्वर्ग स्वछन्द । पालिमानस धर्म बिधिवत लहत स्वर्ग अमन्द ॥ वत्स जिमि बहु गऊमें निज जननिही पै जात । तथा पूरब कर्म करतहि होत प्रापति तात ॥ पिता माता गुरु पुरोहित बिप्र ऋत्विज पर्म । इनहिं पूजत तृप्ति राखत सोई पालक धर्म ॥ मंत्र ईर्षा गहिजपैं अरु यज्ञ सब बिनुदान । मंत्रबिनु को होम ये त्रयब्यर्थ जानो न्यान ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥ धर्मभूप सुनि भीष्मके ऐसेबचन अनूप । फेरि प्रश्न जोकिये सो सुनु जनमेजयभूप ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ बन्दनीय अरु पूज्यको जगमें महिमा भौन । बन्दत पूजत आपुकेहि मानत कहिये तौन ॥ भीष्मउवाच॥ पूज्यबंद्य ब्राह्मणसदा ब्रह्म परमधन जाहि । मोकहँ अतिप्रिय बिप्रनित हम ध्यावत हैं ताहि ॥ वेदमंत्रतप साध्यजेहि लखत शास्त्रको पार । सुनोभूप सबजगतको द्विजकरता उद्धार ॥ बंदि पूजि नितिसोइ जेहि करिप्रसन्न गहि प्रीति । इतउत पावत मोदजन द्विजपदसेइ बिनीति ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ इमि द्विजमहिमा जानिसुनि ह्वै पषाण हियमूढ़ । जेनरनहिंमानत द्विजहिं कहौ तासुगतिगूढ़ ॥ भीष्मउवाच ॥ जोनहिं पूजत द्विजहिनहिंदेत दान अवराधि । ताकी आशा अफल नित सबथर बाढ़ति ब्याधि॥ चौपाई ॥ सिगरे धर्म शास्त्रके ज्ञाता । कहतबिप्र सबजगको त्राता ॥ सबकहँ कुशल बिप्रपदसेये । बिप्रबचन रसते मनभेये॥ अत्र पूर्व इतिहास सुभायक । कहत तौन सुनिये नरनायक ॥ हैबन मधि शृगाल अरुबानर । तेहैं पूरबजन्म सखानर ॥ ते शृगाल बानर तनलहिकै । हौंबिहरत पुरढिग बनगहिकै ॥ जम्बुक मृतकपाइकै दिनमें । लागोखान मशान बिपिनमें ॥ सो

लखि बानर बोलो ऐसो । पूर्वपाप तुम कीन्हो कैसो ॥ जाते मानुषकोतनखाहू । कुत्सित कर्म कियेकोलाहू ॥ शृगालउवाच ॥ हम ब्राह्मणकी महिमासुनिकै । नहिंमान्यो पूज्यो हित गुनिकै ॥ ताहीते कुत्सिततनपायो । भक्षकजौन अभक्ष्य गनायो ॥ सुनुबानर बिप्रहि बिनुपूजे । बिनादानदेसुबचनकूजे । बिगरत जन्म मिलत गतिऐसी । द्विजप्रसाद बिनुदशा अनैसी ॥ भीष्मउवाच ॥ यह इतिहास सुन्यो हम पूरब । द्विजप्रभाव बिधिकहे अपूरब ॥ द्विजप्रसाद सब पावन होई । द्विजमहिमा जाहिर नहिं गोई ॥ द्विजहिदान दीन्हे अतिनीको । मिलत सुलोक सुखद शुभजीको ॥ पूजत देत द्विजहि जो आरय । सिद्ध होत ताको शुभ कारय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुहृद बिप्र जो नीच कहँ करत मंत्र उपदेश । होतदोष तेहिके नहीं कहोतौन मतबेश ॥ भीष्मउवाच ॥ जातिहीन । कहँ बिप्रनहिं कबहुँकरै उपदेश । उपाध्याय कहँ होतहै दोष भयानक भेश ॥ अत्रपूर्व इतिहास हम कहतसुनौ नृप तौन । हो हिमवत ढिग मुनिनको आश्रमसुखमाभौन ॥ तेजपुंजरबि सरिस मुनि बसत जहां तपधाम । रहोएक मुनिबरतहां कुलपति ताको नाम ॥ तपकी श्रद्धा धारितहँ जायशूद्र मतिमान । कुलपतितेइमि कहतभो बंदिचरण सुखदान ॥ जानन चाहत तत्त्वहम तुवप्रसादतेनाथ । कर्म त्याग करि धरमगाहे चाहत भयो सनाथ ॥ कुलपतिरुवाच ॥ सोइहिउचित न तत्त्वको साधव गहि संन्यास । करौशुश्रूषा द्विजनकी लहिहौ सुगति सुपास ॥ दोला ॥ सुमुनिको सुनि बचनसो चलिदूरि तहँतेजाय । देवताको सदनलखिकै फिरो तहँ हरषाय ॥ निराहार जितेन्द्रि रहि तहँलगो पूजन देव । रटत सीताराम प्रभुको नाम अनुपम भेव ॥ अतिथि आवत तहां तिनकहँ सुफल मूल खवाय । करत पूजन पायँलोटत्त सुथर शयन कराय ॥ बहुतादिन तप कियो तहँ तब आइ सुमुनि सुजान । लगोपूजन देवतहि अभिषेक

करि सविधान ॥ अभिषेक लखि शिषि तौनबिधिवह शूद्र शुभ दिन जानि । जोरिकर करिविनय मुनिते कह्यो आनँदसानि ॥ पितृकारय कियोचाहत सुमुनिहम परद्योस । कृपाकरि करवाय हौजय पूरिमेरो हौस ॥ सुमुनिकरि स्वीकारता सँगगये आश्रम तास । पूजि सो फल अरपिदीन्हों मुनिहि सरस सुपास ॥ ज्ञान वार्त्ता कह्योमुनि वह सुन्यो सो मनलाय । भोरकरि असनान रंभण कियोश्राद्ध सचाय ॥ भयो बैठत पूर्वमुख तव कियो शिक्षाबिप्र । करोउत्तर शीरषा तब तथाकीन्हो क्षिप्र ॥ श्राद्ध तेहि करवाइ मुनिबर सुफल भोजन पाय । बिदाह्वै निज आश्रमनिगे सुमुनि रामहिं ध्याय ॥ कछू दिन तपसाधिकै वहशूद्र तहँ तनत्यागि । राजकुलमें जन्मलीन्हो करमके मगलागि ॥ देह तजि मुनिभो पुरोहित ताहि नृपको आय । अभिषेकताहि सुनाय शीक्षि सुकर्मकांड कराय ॥ हीनबरणहि कियेते उपदेश ऐसोहोत । हीनबरणहिंकबहुंनाहिं उपदेश सुबुधितनोत ॥ महा तपकृत सुमुनिसो पुनि कियो गर्व निबास । हीन बर्णहि कियेते उपदेश यह फलपास ॥ दोहा ॥ तीनिबरण कतपरखिकै करैबिप्र उपदेश । चौथे बरणहि नाहिं करै गुणि सिद्धान्त नरेश ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मबर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कैसेसुपुरुषके गृहेलक्ष्मी बसतिअडोल । कहो तौन हे पितामह अति प्रिय थाकीबोल ॥ भीष्मउवाच ॥ भूप पूर्व वृत्तांतइत कहत तौन सुनि लेहु । विकट कृष्णके रुक्मिणी ते हम बूझे एहु ॥ कैसे सुपुरुषके गृहे बसति आपु धनरूप । रमारमापतिने कहो सो वृत्तांत अनूप ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै सुखपाय कहीरुक्मिणी कृपाकरि । सुनौतौन मनलाय कौरव कुलपति धर्मनृप ॥ चौपाई ॥ सुभग सुशील धीरनयगामी । जे कृतज्ञ उपकारी नामी ॥ सदा देव पूजन रतजोई । अरि शिशु कर्मी सुमती होई ॥ दक्षजितेन्द्री शूरसुजाना । करै न अतिथि

बिप्र अपमाना ॥ सन्तोषी धर्मी द्विजपूजक । सदयसत्य शुभ बाणीकूजक ॥ शान्तिसुभाव अनालसभोगी । बीरबिक्रमी अति उद्योगी । दानीदांत अमन्दअचारी । मंत्र शील शुचि चाल बिचारी ॥ तिनकेगृह हम बसत सदाहीं । इते बिहीन तासुघर नाहीं ॥ चौर कृतघ्नी कुमती कादर । बिप्र अतिथिको करत अनादर ॥ अधरमशील अकर्मींसबहूं । तासुगेहनहिं निवसत कबहूं ॥ जे तिय पतिब्रतरत प्रिय बादिनि । सलज सुशील गुरुन अहलादिनि ॥ राखति गेह स्वच्छ शुभचारिणि । रहनि चारुसबिचार अचारिणि ॥ गृहकारजमें परम प्रबीना । सदा उदारचित्त नहिं दीना ॥ निवसत हम तेहि तियके घरमें । नहिं तेहिके जो गुणाति न धरमें ॥ कलहकारिणी पतिप्रतिकूला । देत रहति गुरुजनहियशूला ॥ परघर जाब नीकजेहि लागत । निज गृह रहत महा दुख पागत ॥ रहनि अस्वच्छ रुक्ष तनजाको । कबहुं न गेह लखत हमताको ॥ दोहा ॥ और सुनो हम बसत जहँ यज्ञ धर्मके गेह । गो गज बाजीके सदन सरिताते अति नेह ॥ उत्पलमें हम बसत अरु अति सुंदर थलजौन । नृप सिंहासनमधि बसत अरुसुकृतीकेभौन ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ सोरठा ॥ यह प्रश्नोत्तर बेश अनुपम रमा निवासको । सुनिकै धर्मनरेश भीषमते फिरि इमि कहे ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ जयकरी ॥ इस्त्री पूरुषको अस्पर्स । भयेहोतकाकहँ सुखसर्स ॥ कहियेतौनपितामहदक्ष । हमजान्यो चाहत परतक्ष ॥ भीष्मउबाच ॥ अत्र कहत पूरब इतिहास । सुनौ तौन भूपतिमतिरास ॥ भंगाश्वन नामक राजर्षि । रहो पूर्व धार्मिक उत्कर्षि ॥ भूप अपुत्र पुत्रके हेत । कियो अरम्भ यज्ञसुखसेत ॥ लखि उत्कर्ष इन्द्र अनखाय । बिघ्न करण कहँ निरखत दाय ॥ बहुत दिवस परखे मनलाय । नहिं पाये अन्तर बहुताय ॥ मखकरि भंगाश्वन नरनाह । गो मृगया खेलन बनमाह ॥ एकाकी बाजी चढ़ि तत्र । गयोरहे बहु मृग

गण यत्र ॥ अवसरपाय शक्र तहँताहि। मोहितकिये लखत है
जाहि ॥ दिगभ्रम भयो भूपतिहि भूप। जानि न परै दिशाकी
रूप ॥ क्षुधा पिपासाते ह्वै खिन्न। भयो भूपपन्थाते भिन्न ॥
लख्यो तहां जलभरो तड़ाग। मुदितभयो जान्यो निजभाग ॥
हय बांध्यो करिकै जलपान। तदनुपैठि कीन्हों अस्नान ॥ तिय
ह्वै गयो करत अस्नान। बाहरभो गहि दुख अति मान ॥ शोचि
घरिक भरि चिन्ता भूरि। हयचढ़ि चलो गेह गुणिदूरि ॥ दोहा ॥
कहा कहब सब तियनते सुत मंत्रिनते काह। इमिशोचतनिज
गृहगयो अति लज्जित नरनाह ॥ मंत्री सुत हित बन्धु प्रिय
लखि बूझे वृत्तान्त। जिमिअन्हाय तियतन लह्यो तथाकह्यो
नृपदान्त ॥ भूपतितत्त्व बिचारिकरि पुत्रहि करिअभिषेक। आ-
पु बिदा ह्वै बनगई शिक्षिसुनीति बिबेक ॥ रोला ॥ जाइकै सो
तिया आश्रम ऋषिनको तहँ देखि। भई करत निवाससोथल
परमपावनलेखि ॥ तहां हो यक बिप्र बिरही तौन ताकहँपाय।
लगो मैथुन करन तेहिकरि स्ववश सुख सरसाय ॥ बहुतदिन
में संगलहि रतिरंगको बहुरंग। अंग मरदि सुढंगलागो रमण
द्विज सउमंग ॥ तिया ये दई दई दैया कहीकरिशिशिकार। लङ्क
लचदै बङ्कगतिलै अंकलागीदार ॥ ग्रीवबाहीं देतनाहीं कहति
हाही रोस। प्रगटनाहीं हियेहांहीं रुकतनाहीं हौस ॥ सुमिरिकै
कै द्विजन रोंकै ऊर्द्ध अध व्यवहार। रम्योकै औ घरीठौंकै धरी
जो घरिआर ॥ दंशिअधरन मरदि उरजन करतआसनफेर।
चेतिनौरति लेतसौगरि देतनौबतिभेर ॥ करिजलपनो उचित
अपनो भरतमैथुनचार। करतनिरदय मनों जैसेबालगीर स-
वार ॥ डगरमेंधनवानकहँ जिमिऐंठि बैठि डकैत। निधि समेटत
नहींमेटत लालचैअमनैत ॥ तथासोतिय पायब्राह्मण मोहि कै
औ याम। मन न छाको नहीं थाको कही ताको काम ॥ रम्यो
वह अरु बहुत तापस रमेतासों तत्र। तहां शतसुत भयेताकहँ

कहैं कबलौंअत्र ॥ त्रियासोतिनातियनलै निजपुत्र नृपग्रहजाय। नीतिधर्म सुनाइकै इमिकही बहुत बुझाय ॥ पुरुषपनकेपुत्रतुम ये तियापनके सर्ब। देइ आधोराज्य इनकहँ करौ भोगअखर्ब ॥ परमधर्मी पुत्र तिन कहँ दई आधीभूमि । तियाबनमें जाइ बिलसी ऋषिनके सँगघूमि ॥ इंद्रकरि अनुमान ताको सुवनजेठो जौन। कहतभे इमि बिप्रबनि करि पास ताकेगौन ॥ असुरसुर सुतकश्यपैकेलरतराज्यहिँचाहि । दयेआधोराज्यतुम निजबन्धु गुणिकै काहि ॥ राज्य तोसुत तापसनके भोगवत हैं आय ।करौ भोग सुराज्य अपनो देहु तिन्हहिँ भगाय ॥ सुनतशतसुतपूर्व के ते लरेतिनसों हांकि । मरे मारे अमलिलीन्हें राज्य अपनो आकि। शक्रद्विज तब गये तहँ जहँ तियातापस रौनि। दुखी तेहि लखि भये बूझत बिकल कत गजगौनि ॥ कही सो जिमि भई तियजिमि भये सुत सुख सोध।राज्यदीन्ही भयो जैसेदुखद युद्ध बिरोध ॥ दोहा ॥ बिप्रकह्यो हम शक्रहैं तुम कीन्हेंबहुयज्ञ। ताते हम रिस करि किये तो अपकार अदज्ञ ॥ शक्रजानि कै तापसी करीबंदना भूरि । तब सुरपति तासों कह्यो दया हियेमें पूरि ॥ पुरुषपनेके पुत्र तुव अरु तियपनके जौन । मरे युद्धकरि कै जिये तिनमें तैं कहु कौन ॥ तापस्युवाच ॥ दया सदन अतिमया करि कीजे कृपासुरेश । बालापनके पुत्र मम जीवेपालेदेश ॥ सोरठा ॥ सुरपति सुनिकै एह कहत भये तेहि तरुणिते । काहे अधिक सनेह बाला पनके सुतनसों ॥ चौपाई ॥ काहे इनको जीवन भाषी । उनको जीवन नहिं अभिलाषीं ॥ यहसुनिकै सोयुवतिउबाची । सुनो सुरेश कहत हम सांची ॥ गर्भभारदुखजन्म समयको । अरु सेवाश्रम रुदन क्षमयको ॥ तिया सहति सुत हित दुखभारी । ताते होति मया अधिकारी ॥ यहिबिधिसांचे सुबचन सुनिकै । इन्द्र कृपा करि बोले गुनिकै ॥ पुरुषभयोचाहौ हित जोही । तौ करि देउँ पुरुषफिरि तोही ॥ स्त्रीउबाच ॥ शक्र

सुभाव कहत निज जीको। अबतौ मोहिं युवतिपन नीको॥यह सुनि कहे शक्र प्रभुओहीं। कसन पुरुषपन भावत तोहीं॥ अधिक कौन गुणयुवती पनमें। जाते चहति युवतिपन मन में॥ यहसुनि युवति सत्यगतिधरिकै। बोलतभई नयन नत करिकै॥ तियपनमें पूरुषसंगमते। होत अधिक सुख सब अंगनते॥नर रतिकरि तोषतमनमाहीं। नारिअथक मनमाखतनाहीं॥नारिहि पूरुषते सुखअधिकी। हमलहि उभयकहति हियमधिकी॥ ताते हम न पुरुषपन लेइब। इमि युवती रहि तपसिन सेइब॥ दई दई सो शिर भरि लीन्ही। ताहीमें अधिकी गुणचीन्ही॥ तजि गुणअधिक अल्पगुणगाहै॥ यहअयानपन कियेकहाहै॥दोहा॥ यहसुनिकै सुरपुरगये शक्रमुदित मन माह। त्रिहिं अधिकीहोत सुख सुनोधर्म नरनाह॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्म्मेषष्ठोऽध्यायः ६॥

युधिष्ठिरउवाच॥दोहा॥कहोतातपरलोकहितउचितकौनव्यापार। त्याज्यकहांअरुग्राह्यको कहोतौनउपचार॥ भीष्मउवाच॥ तीनिकरमकायिककहेअरु बाचिकहैंचारि। तीनिकर्ममानसकहेते निति त्याज्य बिचारि॥ हिंसा तसकरतातथा अरु परदार बिहार। त्याज्य तीनि कायिक करम उग्रपाप निरधार॥ चुगुलपनोअरु कटुबचन असत असत्य प्रलाप। त्याज्यचारि बाचिक करम परगति करतउथाप॥ चाहबपरधन हरणको पर पीड़ाकोचाह। मानब मत नास्तीकये मानस तीनिकुराह॥ दानधर्म हरिचिंतवनपर उपकारसुकर्म। ग्राह्यसदा ये भूपमणिगुणिसुख दायक पर्म॥ पूजबगौरीनाथकोकूजबसीताराम। सूझबप्रभुमेंजगभलो बूझबतत्त्वसुनाम॥ बैशम्पायनउवाच॥ सोरठा॥ यहसुनि धर्ममहीप फेरि पितामहसोंकहे। अबकहियेकुलदीप महिमागौरीनाथकी॥ चौपाई॥ यहसुनि बोलेभीषमज्ञानी। नीकोप्रश्नकियेअनुमानी॥ पैबिधिहरि महिमाशंकरकी। कहिनसकै जग अभय ङ्करकी॥

हम मानुष कितनीमति मोरी । जेहि गुणिहोति शेषमति भोरी॥ बासुदेव समरथ सबलायक । एकहि हैं हरगुण शुभदायक ॥ इमि कहि भीष्म कृष्णतेबोले । आपुकहौ शिव सुगुणअमोले॥ यहसुनि कृष्ण जगतपति मानद । कहतभये शिव महिमा सानँद ॥ भूप सबन्धु सुनौं लहि अनदैं । सुनोभीष्म सब ब्राह्मण मनन्दैं ॥ मारि शम्बरासुरहि समरमें । जब प्रद्युम्न आये मम घरमें ॥ निरखिमहा बिक्रमगुणताको । चारु स्वरूप सुपुंजप्रभाको ॥ जाम्बवती हिय आनँद भरिकै । मोसों कही बिनयअति करिकै ॥ स्वामी सुनो आपने लायकै । सोमैं प्रगटकरौं सुत चायकै ॥ सो सुनि हम तथास्तु कहि खिलिकै । चले उदीची सबसों मिलिकै ॥ सुनतशुभदस्वस्त्ययन सुहावन । गुरु जनते ह्वै बिदासुभावन ॥ चिंति गरुड़ पहँ चढ़ि ढिग लहिकै । हिमवत पास गये मुदगहिकै ॥ अति रमणीय बिपिन तहँ देखे । फूल फलनते सुखमा भेखे ॥ बिहरत बिबिधभांति के पक्षी । कलधुनि कूजत गहि गति अक्षी ॥ दोहा ॥ मृग गण अगणित भांतिके बिहरत भरे अनन्द । दिब्ययुवति क्रीड़त फिरत करतगान शुभछन्द ॥ अनुपम सर शोभित तहां राजत पक्षीजूह । सुरसरिकी धारालसति सेवत सुमुनिसमूह ॥ गरुड़हि तहांबिसर्जिकै मुनिमण्डल मधिजाय । लखेसुऋषि उपमन्यु कहँ रबिसम लसत सचाय ॥ चौपाई ॥ ताढिग जाय सबिधि हमबन्दे । हमहिंदेखि मुनि महाअनंदे ॥ करिसत्कार सुआसन दीन्हे । कुशल प्रश्न बूझे मुदलीन्हे ॥ फिरि बूझे आगमको कारण । तबहमकहे पुत्र ब्रतधारण ॥ बोले सुमुनि अर्थकोसाधन । करोशम्भुप्रभुको अवराधन ॥ सुरगन्धर्ब सुतप बिधि साधी ॥ इच्छित पाये शिवहि अराधी ॥ असुर शम्भुको सेवन करि करि । भे त्रिलोकपति अति बल भरि भरि ॥ हो हिरण्यकश्यप बलधामा । तासु पुत्रहो मंदरनामा ॥ शिवहि अराधि

प्रबलभो सोई। तासों जूटि सकै नहिंकोई॥ तब चढ़िलरे इंद्र रिसछाये। बार अनेकन बज्र चलाये॥ शम्भुप्रसादबज्रतातन में। धरयोनशक्रहारिगे मनमें॥ अर्बुदवरिस शक्रसमक्कैके।लहि शिवकृपा लरयोमुदग्वैकै॥ मरयोतौन आपुसमो लरिकै।तबसुर सुचितभये मुदभरिकै॥ रहैसहस्र सुभटसुत तिनको। बिधिकुश द्वीप दये तब तिनको॥ यहि विधि सुत बिभूति मन भाये। शिवहिपूजि सहसन जनपाये॥ तुम तौप्रभु सुजनार्दन स्वामी। गहि नरदेह भये सुतकामी॥ शिवहिअराधि महामुदगहिहौ। निज समसुत चाहत सो लहिहौ॥ दोहा॥ अब सुनिये वृत्तांत मम केशव यदुकुल चन्द। व्याघ्रपात निज पिताके हम युग पुत्र अमन्द॥ जेठो भ्राता धौम्यमम लहुरे हम उपमन्यु। बसत बिपिनमें पिता मम तपकृत अनघ अमन्यु॥ रोला॥ बालपनमें पिताके सँग गृहीके घरजाय। पाय ओदन दूधखायसु आशरममें आय॥ मोर रोदन करन लागे मायतें अनखाय। दूध ओदन खाइहैं हम देहि मेरी माय॥ मायगहि चतुराय चाउर पीसि पीठबनाय। घोरि जलमो मिलै ओदन दईमोहिं खवाय॥ बहुत दिन हम तौन खायो हिये आनँदपूरि। यज्ञ रचि मम पिता आन्यो गृही ब्राह्मण भूरि॥ तहांआनि नन्दिनी कहँ करनको सत्कार। पियो तब हम नन्दिनीको दूधस्वाद अपार॥ यज्ञबीते नन्दिनी जब गई तब भौं माय। पूर्ववतकरि पीठको पय देनलागी ल्याय॥ कह्यो तबहम दूधमीठोहोतयह तौ बारि। नहींहम यह खाइहैं दे दूधयाकहँ टारि॥ बचन यह सुनि माय दुखभरि मोहिं अंकलगाय। कही बनमधि मुनिनके घर क्षीर कहँ बिनु गाय॥ बसत बनमें मूल फलदल तोर खनिकै खात। बिना सुरभी गोतपाये दूध दुर्लभ तात॥ करु अराधन शंभु प्रभुको पाइहौ मन काम। क्षीर ओदन बसन भूषण धेनु धन अभिराम॥ बचन यहसुनि जोरिकर हमभये

बूझत ताहि। शंभुप्रभुको किमिअराधन कीजिये कहुयाहि॥ अम्ब यहसुनि कही शुभ ईशान प्रभु जगदीश। बरणिजोगुण लहत पारन गिरासुमन फणीश॥ जासु अगणित रूप अरु अस्थान चारु चरित्र। कहत मुनिगण कहत जाहि हृदिस्थ परम पवित्र॥ जिते देही जगतमें बिधिआदि खर्ब अखर्ब। सर्बरूप अनूपधारत सर्ब ताते सर्ब॥ बसत सबके हृदय मों सबदेत सबकहँ काम। महा औढर ढरण भू सबलोक जाको धाम॥ आदि अन्त न जासु व्यक्त अनंत योगी योग। एकदोय सहस्र लोचन तथा बदन सँयोग॥ तासुभक्ति अडोल गहिकै लाइ मन बुधि चित्त। भजो सेवन करो नित सुत होहुगे कृत कृत्त॥ मातुके सुनि वचन तबते भये हम शिवभक्त। करत पूजन नाम कूजन रहत नित अनुरक्त॥ बरिस कइक हजार धारे ध्यान मन चितलाय। भक्त गुणिकरि कृपा तब प्रभु प्रगट भेतहँ आय॥ शक्रको गहिरूप सुरगण सहित करि तहँ जौन। कहे हम परसन्न द्विजबर मांगु इच्छित जौन॥ वचन ऐसे सुनत हम तहँकहे सुरपति पाहिं। बिना शंकरऔर ते हमकछू मांगत नाहिं॥ करै हमहिं त्रिलोकपति जो बिना शंकर और। नहीं चाहत तौनहमदृढ़ भक्तिको यहठौर॥ इते मो तहँ प्रगटभेप्रभु शंभु महिमाभौन। प्रथमदेखे तेज अति-शय सकैलखि जेहिकौन॥ फेरि देख्यो उग्रप्रभु कहँ महाउग्र स्वरूप। संगगण समुदाय अगणित दिब्य अनघ अनूप॥ गदा बाण त्रिशूलधनु अरु अस्त्र पशुपति जौन। और अग-णित अस्त्रशस्त्र प्रछन्न प्रगटित तौन॥ मूर्तिमान बिभातप्रभु सँग ज्वलित ज्वलन समान॥ आदित्य बिश्वेदेव सेवत सिद्ध साध्यमहान॥ करतअस्तुतिचहूँदिशितेशतयकादशरुद्र। ब्रह्म ऋषि बसुपितर सेवत यक्षरक्षअक्षुद्र॥ लखत जगकृत गरुड़ गामीबिष्णु दक्षिणओर। बामदिशि बिधिहंसगामी संगसुनि-

धि अथोर ॥ शक्रसुर गन्धर्ब गणसह लसत आनँदपूरि ।कार्तिकेयगणेश राजत भरेपरमाभूरि ॥ पाइदर्शन शंभुप्रभुकामुदितहमतेहिकाल । कियेअस्तुतिशंभुप्रभुकीपूजि अपनोभाल॥ करिसु अस्तुति प्रार्थनादै अर्घपाद्य सनेम । जोरि करकै रहे ठाढ़े पूरिअतिशय प्रेम ॥ लखत शोभा शंभुकी हमरहे यकटक हेरि। सुमनबर्षै सुमन तहँ सुखदाय दुन्दुभि भेरि॥ दोहा ॥तब मोपै करि अति कृपाकहे शंभु मुद्भौन। सुततोपै परसन्न हम मांगो इच्छित जौन ॥ शंकर प्रभुके बचन सुनि ह्वै गदगदकृत कृत्त । किये दण्डवत बारबहु अति आनँद भरि चित्त ॥ पाणि जोरिकै ह्वै खरो रोमांचित भरि नैन॥ चावचैन हिय ऐनभरि बोले सबिनय बैन ॥ योगिनकहँ दुर्ल्लभ इबिधि तुव दर्शन है नाथ। सो इमि दर्शनमोहिं दै कीन्हे आपुसनाथ॥ चौपाई ॥तुम जगकृत जगपालनहारे। करि बिनाश फिरिसिरजनहारे ॥सर्बगसर्ब सर्ब जगस्वामी। सर्ब भूत भव उद्भवनामी॥ जो बरदेत मोहिं करि आदर। तौ निजभक्ति देहु दृढ़सादर॥ त्रयकालज्ञ मोहिं प्रभु कीजे। नितपय ओदन भोजनदीजे ॥ यहसुनिनाथ जु जगपति शंकर। एवमस्तु बोले अभयङ्कर ॥ अजर अमर दुखवर्जित होहू। यशी तेजमय अति प्रिय मोहू॥ क्षीरोदन सागर तुव धोरे। पूरणरही बचनते मोरे॥ सोकुटुम्बसह भोजन कीजो। तिन्हैंसमेत अमरपदलीजो ॥ इमि कहि भयेअदृश्य गोसाईं। तब ते हम बिलसत यहि ठाईं॥ शंभुकृपा निधि इच्छित दायक। तिन्हैं भजो त्रिभुवनके नायक॥ मंत्र देतहम सोजपकीजै। छठये मास सुदर्शन लीजै॥ इमिकहि बिप्रमंत्र मोहिं दीन्हें। दीक्षित ह्वै हम सानँद लीन्हें॥ गहिसोमंत्रतपन तपलागे। शंभु अराधन में अनुरागे॥ एकमास फल भोजन करिकै। पांचमासले जलब्रत धरिकै॥ एक चरण धरि महिमधि रहिकै॥ ऊर्ध्वबाहु करि दृढ़ब्रत गहिकै॥ इमिषटमास किये

आराधन । अनरथकै सुअरथको साधन ॥ दोहा ॥ तबप्रसन्न ह्वै शंभुप्रभु भये सुदर्शन देत । यथा दये उपमन्युकहँ बिधि सुर ऋषिन समेत ॥ लखि श्री शोभातेज हम रहे चकित ह्वै हेरि । निकटआइ तब शंभुप्रभु कहे कृपा निधिटेरि ॥ कृष्णहमैं तुमपरमप्रिय मांगहु इच्छित जौन । नौमि किये तब शंभु की अस्तुति माहिमा भौन ॥ नमो विश्वपति विश्वकृत बिश्वात्मा भगवान । अनघ अगोचर बेदमय सर्बद सर्बमहान ॥ अस्तुति सुनि सुर शक्रसबशंभुहि किये प्रणाम । तब हँसिकै मोसों कहे शङ्कर महिमाधाम ॥ केशवमांगहु आठबर तुमकहँ इच्छित जौन । सोसुनि सुखलहि हमकहे सुनो तौन क्षितिरौन ॥ धर्म्मै दृढ़ता रण बिजय यशबल योग महान । अग्रेसरतातव निकट सुत शतसहस सुजान ॥ जयकरी ॥ यह सुनि शंकर आनँद दानि । कहे तथास्तु परम हितमानि ॥ उमादेवि महिमाकी खानि । तब इमि कही भक्त निज जानि ॥ शांब नामसुतपरम प्रबीन । बीरबिक्रमी दातापीन ॥ जाम्बवतीमें ह्वैहै बेश । जासुहेत आये यहि देश ॥ इमि बरदै प्रभु शम्भु महान । होतभये तहँ अन्तरधान ॥ हम उपमन्यु बिप्र पहँ जाय । दीन्हे सबवृत्तान्त सुनाय ॥ सुनि बोले ऋषि महिमाभौन । कृष्ण शर्बसम दाता कौन ॥ इमि कहिकै ब्राह्मण तपधाम । कहत भयो वार्त्ता अभिराम ॥ रह्यो सत्ययुगमें तपऐन । तण्डिनाम ऋषि पूरित चैन ॥ अयुत बरिस सो लाइसमाधि । पेख्यो शंभुहि सबिधि अराधि ॥ पढ़तजाहि सांख्यकमनलाय । चिंततयोगीजनसुख दाय ॥ परमप्रधान पुरुष प्रभुजौन । उत्पतिपालनकारणतौन ॥ लहिताके दरशन सुखसाज । अस्तुति कियोतण्डिमुनि राज ॥ सुनिये तौनयुधिष्ठिरभूप । जगपावनकृतपरमअनूप ॥ तंडिरुवाच ॥ पवित्राणांपवित्रस्त्वं गतिर्गतिमताम्बर । अत्युग्रन्तेजसांतेजस्तपसांपरमन्तपः ॥ विश्वावसुहिरण्याक्षपुरुहूतनमस्कृत । भूरि

कल्याणदविभो परंसत्यंनमोस्तुते ॥ जातीमरणभीरूणांयतीनां यततांविभो । निर्वाणदसहस्त्रांशो नमस्तेस्तुसुखाश्रय ॥ ब्रह्मा शतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवामहर्षयः । नविदुस्त्वांतुतत्त्वेन कुतोवेत्स्यामहेवयं ॥ त्वत्तः प्रवर्त्ततेसर्वंत्वयिसर्वंप्रतिष्ठितं । कालाख्यः पुरुषाख्यश्चब्रह्माख्यश्चत्वमेवहि ॥ तनवस्तेस्मृतास्तिस्त्रःपुराणज्ञैःसुरर्षिभिः । अधिपौरुषमध्यात्ममधिभूताधिदैवतं ॥ अधिलोकाधिविज्ञान मधियज्ञस्त्वमेवहि । यंविदित्वात्मदेहस्थंदुर्विदंविबुधैरपि ॥ विद्वांसोयान्तिनिर्मुक्ताःपरंभावमनामयं । अनिच्छतस्तवविभोजन्ममृत्युरनेकतः॥द्वारंत्वंस्वर्गमोक्षाणा माक्षेप्ता त्वंददासिच । त्वंवैस्वर्गश्चमोक्षश्चकामःक्रोधस्त्वमेवच ॥ सत्वंरजस्तमश्चैव अधश्चोर्ध्वस्त्वमेवहि । ब्रह्माभवश्चविष्णुश्चस्कन्देन्द्रौसवितायमः ॥ वरुणेन्दूमनुर्धाता विधातात्वंघनेश्वरः । भूर्वायुःसलिलाग्निश्च खंवाराद्धिस्थितिर्मतिः ॥ कर्मसत्यानृतेचोभे त्वमेवास्तिचनास्तिच । इंद्रियाणीन्द्रियार्थाश्चप्रकृतिभ्यःपरंध्रुवं॥ विश्वाविश्वंपरोभावश्चिन्त्याश्चिन्यत्वमेवहि। यच्चैतत्परमंब्रह्मयच्चतत्परमंपदं ॥ यागतिःसांख्ययोगानांसभवान्नात्रसंशयः । न्यूनमद्यकृतार्थाःस्मन्यूनंप्राप्ताःसतांगतिं ॥ यांगतिंप्रार्थयन्तीहज्ञाननिर्मलबुद्धयः । अहोमूढाःस्मसुचिरमिमं कालमचेतसः ॥ यन्नविद्मःपरंदेवंशाश्वतंयंविदुर्बुधाः। सेयमासादितःसाक्षाद्बहुभिर्जन्मभिर्तया ॥ भक्तानुग्रहकृद्देवोयंज्ञात्वामृतमश्नुते । देवासुरमुनीनांतुयच्चगुह्यंसनातनं ॥ गुहायांनिहितंब्रह्मदुर्विज्ञेयंमुनेरपि । सएषभगवान्देवः सर्वकृत्सर्वतोमुखः॥ सर्वात्मासर्वदर्शीच सर्वगःसर्ववेदिता । देहकृद्देहभृद्देही देहभुग्देहिनांगतिः ॥ प्राणद्दक्प्राणभृत्प्राणःप्राणभूःप्राणिनांगतिः । अध्यात्मगतिनिष्ठानां ध्यानिनामात्मवेदिनां ॥ अपुनर्दारकामानां यागतिःसोयमीश्वरः । अयंचसर्वभूतानां शुभाशुभगतिप्रदः ॥ अयंचजन्ममरणेऽयदधत्सर्वजन्तुषु । अयंच सिद्धिका

मानां यागतिःसोयमीश्वरः ॥ भूराद्याःसप्तभुवनान्युत्पाद्यसदि
वौकसः । दधातिदेवस्तनुभिरष्टाभिर्योबिभर्तिच ॥ अतःप्रवर्तते
सर्वमस्मिन्सर्वंप्रतिष्ठितं । अस्मिंश्चप्रलयंयाति सोयमेकःस
नातनः ॥ अयंचसत्यकामानां सत्यलोकःपरंसतां । अपवर्गश्च
युक्तानां कैवल्यंचात्मवेदिनां ॥ अयंब्रह्मादिभिःसिद्धैर्गुहायाङ्गो
पिताप्रभुः । देवासुरमनुष्याणामप्रकाशोभवेदिति ॥ नत्वांदेवा
सुरनरास्तत्त्वेननविदुर्भवं । मोहिताःखल्वनेनैव हृदिस्थेनाप्रका
शिना ॥ येचैनंप्रतिपद्यन्ते भक्तियोगेनभारत । तेषामेवात्मना
त्मानन्दर्शयत्येषहृच्छयः॥यंज्ञात्वानपुनर्जन्ममरणंचापिविद्यते।
यंविदित्वापरंवेद्यं वेदितव्यंनविद्यते ॥ यंलब्ध्वापरमंलाभं नाधि
कंमन्यतेबुधः । यांसूक्ष्मांपरमांप्राप्तिंसगच्छत्यक्षयाव्ययां ॥ यं
सांख्यगुणतत्त्वज्ञः सांख्यशास्त्रविशारदाः । सूक्ष्मज्ञानरतासू
क्ष्मं ज्ञात्वामुच्यन्तिबन्धनात् ॥ यंचवेदविदोवेद्यंवेदांतेचप्रति
ष्ठितं । प्राणायामपरानित्यं प्रविशंतिपरेजनाः ॥ ओङ्काररथमा
रुह्य तेविशंतिमहेश्वरं । अयंसदेवयानानामादित्योद्वारमुच्य
ते ॥ अयञ्चपितृयानानांचन्द्रमाद्वारमुच्यते । एषकालगति
श्चित्रासंवत्सरयुगादिच ॥ दिव्यादिव्यपरोलाभस्त्वयनेदक्षि
णोत्तरे । एनंप्रजापतिःपूर्वमाराध्यबहुभिस्तवैः ॥ प्रजार्थम्वरया
मास नीललोहितसंज्ञितं । ऋषिभिर्यमनुसंशंतिशुतत्वेकर्मणि
बह्वृच॥यजुर्भिर्यत्त्रिधावेद्यंजुह्वत्यध्वर्यवोध्वरे। सामभिर्यञ्चगा
यन्ति सामगाःशुद्धबुद्धयः ॥ ऋतंसत्यंपरंब्रह्मस्तुवंत्याथर्वणाः
द्विजाः । यज्ञस्यपरमायोनिःपतिश्चायंपरःस्मृतः ॥ राज्यहाश्रो
त्रनयनःपक्षमासशिरोभुजः । ऋतुवीर्यतपोधैर्यो यद्वगुह्योरुपा
दवान् ॥ मृत्युर्यमोहुताशश्चकालःसंहारवेगवान् । कालस्य
परमायोनिः कालश्चायंसनातनः ॥ चन्द्रादित्यौसनक्षत्रौ ग्रहा
श्चसहवायुना । ध्रुवःसप्तर्षयश्चैवभुवनानिचसप्तच ॥ प्रधानं
महदव्यक्तंविशेषांतंसवैकृतं । ब्रह्मादिस्तम्भपर्यन्तंभूतादिसद

सञ्चयत् ॥ अष्टौप्रकृतयश्चैवप्रकृतिभ्यश्चयःपरं। अस्यदेवस्य
वशगंकृत्स्नंसम्परिवर्तते ॥ एतस्मात्परमानंदंतदेतत्परमंपदं ।
एषागतिर्विरक्तानामेषभावःपरस्मतां॥एतत्परमनुद्विग्नमेतद्ब्रह्म
सनातनं। शास्त्रवेदांगविदुषामेतद्ध्यानपरंपदं ॥ इयंसापरमा
काष्ठा इयंसापरमाकला । इयंसापरमासिद्धिरियंसापरमागतिः॥
इयंसापरमाशान्तिरियंसानिर्वृतिःपरा । यंप्राप्यकृतकृत्यास्म इ
त्यमन्यन्तयोगिनः॥ इयंतुष्टिरियंसिद्धिरियंश्रुतिरियंस्मृतिः। अ
ध्यात्मगतिनिष्ठानां विदुषांप्राप्तिरव्यया ॥ यजतांकामयागानां
मखैर्विपुलदक्षिणैः। यागतिर्यज्ञशीलानां सागतिस्त्वंनसंशयः॥
समयोगजपैःशांतिनियमैर्देहपावनैः। तप्यतांयागतिर्देव परमा
सागतिर्भवान् ॥ कर्म्मन्यासकृतानाञ्च विरक्तानांततस्ततः। या
गतिर्ब्रह्मसदने सागतिस्त्वंसनातनः॥ अपुनर्दारकामानां वैराग्ये
वर्ततांचय॥प्रवृत्तीनांलयानांचसागतिस्त्वंसनातनः॥ज्ञानविज्ञा
नयुक्तानांनिरुपाख्यानिरंजना। कैवल्यायागतिर्देवपरमासागति
र्भवान्॥वेदशास्त्रपुराणोक्ताःपञ्चैतागतयःस्मृताः । त्वत्प्रसादा
द्धिलभ्यंतेनलभ्यन्तेन्यथाविभो ॥ इतितण्डिस्तपोराशिस्तुष्टावे
शानमात्मना।जगौचपरमंब्रह्मयत्पुरालोककृज्जगौ॥ उपमन्युरुवाच ॥
एवंस्तुतोमहादेवस्तण्डिनाब्रह्मवादिना। उवाच भगवान्देवोउ-
मयासहितःप्रभुः॥ ब्रह्माशतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवामहर्षयः। नवि
दुस्त्वामितिजनास्तुष्टःप्रोवाचतंशिवः ॥श्रीशिवउवाच ॥ अक्षयश्चा
व्ययश्चैव भविताढुःखवार्जितः। यशस्वीतेजसायुक्तो दिव्यज्ञा
नसमन्वितः ॥ ऋषीणामभिगम्यश्चसूत्रकर्तासुतस्तव । मत्प्र
सादाद्द्विजश्रेष्ठभविष्यतिनसंशयः ॥ कम्वाकामंददाम्यद्यब्रूहि
यद्वत्सकांक्षसे। प्रांजलिःसउवाचेदंत्वयिभक्तिर्दृढास्तुमे ॥ उपम-
न्युरुवाच ॥ एतान्दत्त्वावरान्देवोवंद्यमानःसुरर्षिभिः। स्तूयमानश्च
विबुधै स्तत्रैवान्तरधीयत ॥ अन्तर्हितेभगवति सानुगेयाद वे-
श्वर। ऋषिराश्रममागम्य समेचप्रोक्तवानिह ॥ यानिचप्रथिता

आदिरादिकरोनिधिः ॥ सहस्राक्षोविशालाक्षः सोमोनक्षत्रसा
धकः । चन्द्रःसूर्य्यःशनिःकेतुर्ग्रहोग्रहपतिर्वरः ॥ अत्रिरत्र्यानम
स्कर्त्ता मृगबाणार्पणोनघः । महातपाघोरतपा अदीनोदीनसा
धकः ॥ संवत्सरकरोमंत्रःप्रमाणंपरमंतपः । योगीयोज्योमहा
बीजोमहारेतामहाबलः॥ सुवर्णरेताःसर्वज्ञःसुबीजोबीजवाहनः।
दशबाहुस्त्वनिमिषोनीलकण्ठउमापतिः ॥ विश्वरूपःस्वयंश्रे
ष्ठोबलवीरोबलोगणः ॥ गणकर्त्तागणपतिः १०० दिग्वासःका
मएवच ॥ मंत्रवित्परमोमंत्रः सर्वभावकरोहरः । कमण्डलुधरो
धन्वी बाणहस्तः कपालवान् ॥ अशनीखड्गीशतघ्नीच पट्टिशी
चायुधीमहान् । स्रुवहस्तःसुरूपश्च तेजस्तेजस्करोनिधिः ॥
उष्णीषीचसुवक्रश्च उदग्रोविनतस्तथा । दीर्घश्चहरिकेशश्च
सुतीर्थःकृष्णएवच ॥ शृगालरूपःसिद्धार्थोमुण्डःसर्वशुभङ्करः।
अजश्चबहुरूपश्चगन्धधारीकपर्द्यपि ॥ ऊर्ध्वरेताऊर्ध्वलिंग ऊ
र्ध्वशायीनभस्थलः । त्रिजटीचीरवासाश्चरुद्रःसेनापतिर्विभुः ॥
अहश्चरोनक्तचरः स्निग्धमन्युःसुवर्चसः । गजहादैत्यहाका
लोलोकधातागुणाकरः ॥ सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माबरावृ
तः । कालयोगीमहानादःसर्वकामश्चतुष्पथः ॥ निशाचरःप्रेत
चारी भूतचारीमहेश्वरः । बहुभूतोबहुधरःस्वर्भानुरमितोगतिः॥
नृत्यप्रियोनित्यनर्त्तो नर्तकःसर्वलालसः । घोरोमहातपाःपाशो
नित्योगिरिरुहानभः ॥ सहस्रहस्तोविजयो व्यवसायोह्यनिन्दि
तः । अधर्षणोधर्षणात्मा यज्ञहाकामनाशकः ॥ दक्षयागापहारी
चसुसहोमध्यमस्तथा । तेजोपहारीबलहामुदितोर्थोजितोवरः ॥
गम्भीरघोषोगम्भीरो गम्भीरबलवाहनः २०० न्यग्रोधरूपो
न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थितिर्विभुः । सुतीक्ष्णदशनश्चैव महाकायो
महाननः ॥ विष्वक्सेनोहरिर्यज्ञःसंयुगापीडवाहनः । तीक्ष्णात
पश्चहर्य्यश्वः सहायःकर्मकालवित् ॥ विष्णुप्रसादितोयज्ञःस
मुद्रोवडवामुखः । हुताशन सहायश्च प्रशान्तात्माहुताशनः ॥

उग्रतेजामहातेजा जन्योबिजयकालवित्। ज्योतिषामयनंसि
द्धिःसर्वविग्रहएवच॥ शिखीमुण्डीजटीज्वालीमूर्त्तिजोमूर्द्धगोब
ली। वैणवीपणवीतालीखलीकालकटङ्कटः॥ नक्षत्रविग्रहमति
र्गुणबुद्धिर्लयोगमः। प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागःसर्वगोमुखः॥
विमोचनःसुशरणोहिरण्यकवचोद्भवः। मेढ्रजोबलचारीच महीं
चारीस्तुतस्तथा॥ सर्वतूर्यनिनादीच सर्वतोद्यपरिग्रहः। व्या
लरूपोगुहावासी गुहोमालीतरंगवित्॥ त्रिदशस्त्रिकालधृक्कर्मः
सर्वबन्धविमोचनः। बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधिशत्रुविनाशनः॥
सांख्यंप्रसादोदुर्वासःसर्वसाधुनिषेवितः। प्रस्कन्दनोविभागज्ञः
अतुल्योयज्ञभागवित्॥ सर्ववासःसर्वचारी दुर्वासावासवोमरः।
हैमोहेमकरोयज्ञः सर्वधारीधरोत्तमः॥ लोहिताक्षोमहोक्षश्चवि
जयाक्षोविशारदः। संग्रहो निग्रहःकर्त्ता सर्पचीरनिवासिनः॥
मुख्योमुख्यश्चदेहश्च काहलिःसर्वकामदः। सर्वकालप्रसाद
श्चसुबलोबलरूपधृक् ३०० सर्वकामवरश्चैवसर्वदःसर्वतोमु
खः। आकाशनिर्विरूपश्चनिपातीह्यवशःखगः॥ रौद्ररूपोंशुरा
दित्यो बहुरश्मिःसुवर्चसी। वसुवेगोमहावेगोमनोवेगोनिशाच
रः॥ सर्ववासीश्रियावासी उपदेशकरोकरः। मुनिरात्मनिराल्लो
कः समग्रश्चसहस्वदः॥ पक्षीचपक्षरूपश्च अतिदीप्तोविशां
पतिः। उन्मादोमदनःकामोह्यश्वत्थोर्थकरोयशः॥ वामदेवश्च
वामश्च प्राग्दक्षिणश्चवामनः। सिद्धयोगीमहर्षिश्च सिद्धार्थः
सिद्धसाधकः॥ भिक्षुश्चभिक्षुरूपश्च विपणोमृदुरव्ययः। महा
सेनोविशाखश्च षष्टिभागोगवांपतिः॥ वज्रहस्तश्चविष्कम्भो
चमूस्तम्भनएवच। वृत्तावृत्तकरस्तालोमधुर्मधुकलोचनः॥
वाचस्पत्योवाजसनो नित्यमाश्रमपूजितः। ब्रह्मचारीलोकचा
री सर्वचारीविचारवित्॥ ईशानईश्वरः कालोनिशाचारीपिना
कधृक्। निमित्तस्थोनिमित्तञ्च नन्दिर्नन्दिकरोहरिः॥ नन्दी
श्वरश्चनन्दीच नन्दनोनन्दिवर्द्धनः। भगहारीनिहन्ताचकालो

ब्रह्मापितामहः ॥ चतुर्मुखोमहालिंगश्चारुलिंगस्तथैवच । लिं
गाध्यक्षःसुराध्यक्षोयोगाध्यक्षोयुगावहः ॥ बीजाध्यक्षोबीजकर्त्ता
अध्यात्मानुगतोबलःइतिहासःसकल्पश्च गौतमो ४०० थनि
शाकरः ॥ दम्भोह्यदंभोवैदम्भो वश्योवशकरःकलिः । लोकक
र्त्तापशुपतिर्महाकर्त्ताह्यनौषधः ॥ अक्षरंपरमंब्रह्म बलवच्छक्रए
वच । नीतिर्ह्यनीतिःशुद्धात्माशुद्धोमान्योगतागतः ॥ बहुप्रसा
दःसुस्वप्नोदर्पणोथत्वमित्रजित् । वेदकारोमंत्रकारोविद्वान्स
मरमर्दनः ॥ महामेघनिवासीच महाघोरोवशीकरः । अग्नि
ज्वालोमहाज्वालो अतिधूम्रोहुतोहविः ॥ वृषणःशङ्करोनित्यं
वर्चस्वीधूमकेतनः । नीलस्तथांगलुब्धश्च शोभनोनिरवग्रहः ॥
स्वस्तिदःस्वस्तिभावश्च भागोभागकरोलघुः । उत्संगश्चमहां
ङ्गश्च महागर्भपरायणः ॥ कृष्णवर्णः सुवर्णश्चइन्द्रियंसर्वदेहि
नाम् । महापादोमहाहस्तोमहाकायोमहायशाः ॥ महामूर्द्धामहा
मात्रो महानेत्रोनिशालयः । महान्तकोमहाकर्णो महोष्ठश्च
महाहनुः ॥ महानासोमहाकंबुर्महाग्रीवोश्मशानभाक् । महा
वक्षामहोरस्कोह्यन्तरात्मामृगालयः ॥ लम्बनोलम्बितोष्ठश्च
महामायःपयोनिधिः । महादन्तोमहादंष्ट्रोमहाजिह्वोमहामुखः ॥
महानखोमहारोमा महाकेशोमहाजटः । प्रसन्नश्चप्रसादश्च
प्रत्ययोगिरिसाधनः ॥ स्नेहनोस्नेहनश्चैव अजितश्चमहा
मुनिः । वृक्षाकारोवृक्षकेतुरनलोवायुवाहनः ॥ गण्डली
५०० मेरुधामाच देवाधिपतिरेवच । अथर्वशीर्षः सामास्य
ऋक्सहस्रामितेक्षणः ॥ यजुःपादभुजोगुह्यः प्रकाशोजंगम-
स्तथा । अमोघार्थःप्रसादश्चअभिगम्यःसुदर्शनः ॥ उपकारः
प्रियःसर्वःकनकःकाञ्चनच्छविः । नाभिर्नन्दिकरोभावःपुष्करः
स्थपतिःस्थिरः ॥ द्वादशःत्रासनश्चाद्योयज्ञोयज्ञसमाहितः । न
क्तं कलिश्चकालश्चमकरःकालपूजितः ॥ सगणोगणकारश्च
भूतवाहनसारथिः । भस्माशयोभस्मगोप्ता भस्माभूतस्तरुर्गणः ॥

लोकपालस्तथालोकोमहात्मासर्वपूजितः। शुक्लस्त्रिशुक्लःसम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः॥ आश्रमस्थाक्रियावस्थोविश्वकर्मामतिर्वरः। विशालशाखस्ताम्रोष्ठोह्यम्बुजालःसुनिश्चलः॥ कपिलःकपिशः शुक्लःआयुश्चैवपरोपरः। गन्धर्वोह्यदितिस्ताक्ष्यःसुविज्ञेयःसुशारदः॥ परश्वधायुधोदेवःअनुकारीसुबान्धवः। तुम्बवीणोमहाक्रोध ऊर्ध्वरेताजलेशयः॥ उग्रोवंशकरोवंशोवंशनादोह्यनिन्दितः। सर्वांगरूपोमायावी सुहृदोह्यनिलोनलः॥ बन्धनोबन्धकर्त्ताच सुबन्धनाविमोचनः। सुयज्ञारिःसकामारिर्महादंष्ट्रोमहायुधः॥ बहुधानिन्दितःसर्वःशङ्करःशङ्करोधनः। अमरेशो६०० महादेवोविश्वदेवःसुरारिहा॥ अहिर्बुध्नोनिलाभश्चचेकितानोहविस्तथा। अजैकपाच्चकापालीत्रिशंकुरजितःशिवः॥ धन्वन्तरिर्धूमकेतुःस्कन्दोवैश्रवणस्तथा। धाताशक्रश्चविष्णुश्चमित्रस्त्वष्टाध्रुवोधरः॥ प्रभवस्सर्वगोवायुरर्यमासवितारविः। उष्णगुश्चविधाताचमान्धाताभूतभावनः॥ विभुर्वर्णविभावीचसर्वकामगुणावहः। पद्मनाभोमहागर्भश्चंद्रवक्रोनिलोनलः॥ बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणःपुण्यचुञ्चुरी। कुरुकर्ताकुरूवासीकुरुभूतोगुणौषधः॥ सर्वाशयोदर्भचारीसर्वेषांप्राणिनाम्पतिः। देवदेवःसुखासक्तः सदसत्सर्वरत्नवित्॥ कैलासगिरिवासीचहिमवद्गिरिसंश्रयः। कूलहारीकूलकर्ताबहुविद्योबहुप्रदः॥ वणिजोवर्द्धकीवृक्षोवकुलश्चन्दनश्छदः। सारग्रीवोमहाजन्तु रलोलश्चमहौषधः॥ सिद्धार्थकारीसिद्धार्थ श्छन्दोव्याकरणोत्तरः। सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंह वाहनः॥ प्रभावात्माजगत्काल स्थानो लोकहितस्तरुः। सारंगोनवचक्रांगःकेतुमालीसभावनः॥ भूतालयोभूतपतिरहोरात्रमनिंदितः। वाहितासर्वभूतानांनिलयश्च विभुर्भवः॥ अमोघसंयतोह्यश्वो भोजनःप्राणधारणः। धृतिमान्मतिमान् ७०० दक्षःसत्कृतश्चयुगाधिपः॥ गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्म वसनोहरिः। हिरण्यबाहुश्चतथागुहापालः

प्रवेशिनाम् ॥ प्रकृष्टारिर्महाहर्षोजितकामोजितेन्द्रियः। गान्धार
श्चसुवासश्चतपःशक्तोरतिर्नरः॥ महागीतोमहानृत्योह्यप्सरोग
णसेवितः। महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः ॥ आवेदनीय
आदेशः सर्वगन्धसुखावहः। तोरणस्तारणोवातःपरिधीपातिखे
चरः॥संयोगोवर्द्धनोवृद्धःअतिवृद्धोगुणाधिकः।नित्यमात्मसहाय
श्चदेवासुरपतिःपतिः॥ युक्तश्चयुक्तवाहुश्चदेवोदिविसुपर्वणः।
आषाढश्चसुषाढश्चध्रुवोथहरिणोहरः॥ वपुरावर्त्तमानेभ्यो वसु
श्रेष्ठोमहापथः। शिरोहारी विमर्षश्च सर्वलक्षणलक्षितः॥अक्ष
श्चरथयोगीच सर्वयोगीमहाबलः। सामाम्नायोसमाम्नाय स्ती
र्थदेवोमहारथः॥ निर्ज्जीवो जीवनोमंत्रः शुभाक्षोबहुकर्कशः।
रत्नप्रभूतोरत्नांगो महार्णवनिपानवित् ॥ मूलंविशालोह्यमृतो
व्यक्ताव्यक्तस्तपोनिधिः। आरोहणोधिरोहश्च शीलधारी महा
यशाः॥ सेनाकल्पोमहाकल्पो योगोयुगकरोहरिः। युगरूपोमहा
रूपो महानागहनोबधः॥ न्यायनिर्वपणःपादः पण्डितोह्यचलो
पमः। बहुमालोमहामालः शशीहरसुलोचनः॥ विस्तारोलवणः
कूपस्त्रियुगःसफलोदयः ।त्रिनेत्रश्चविषाणांगो मणिविद्धोजटा
धरः॥ बिंदुर्विसर्गःसुमुखः ८०० शरःसर्वायुधःसहः। निवेदनः
सुखाजातःसुगान्धारोमहाधनुः ॥ गन्धपालीचभगवानुत्थानः
सर्वकर्म्मणाम् । मन्थानोबहुलोवायुः सकलःसर्वलोचनः ॥ त
लस्तालःकरस्थालीऊर्ध्वसहननोमहान् । छत्रंसुछत्रोविख्यातो
लोकःसर्वाश्रयःक्रमः ॥ मुण्डोविरूपोविकृतोदण्डीकुण्डीविकुर्व
णः। हर्य्यक्षःककुभोवज्री शतजिह्वःसहस्रपात् ॥ सहस्रमूर्द्धादे
वेन्द्रः सर्वदेवमयोगुरुः । सहस्रवाहुःसर्वाङ्गः शरण्यःसर्वलोक
कृत् ॥ पवित्रंत्रिःककुन्मंत्रः कनिष्ठःकृष्णपिङ्गलः । ब्रह्मदण्ड
विनिर्म्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान् ॥ पद्मगर्भोमहागर्भो ब्रह्म
गर्भोजलोद्भवः । गभस्तिर्ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म विद्ब्राह्मणो
गतिः ॥ अनन्तरूपोनैकात्मा तिग्मतेजाःस्वयंभुवः । ऊर्ध्व

गात्मा पशुपतिर्वातरंहोमनोजवः॥ चन्दनीपद्मनालाग्रःसुरभ्युत्त
रणोनरः। कर्णिकारोमहास्रग्वीनीलमौलिःपिनाकधृक्॥ उमा
पतिरुमाकान्तःजाह्नवीधृनुमाधवः। वरोवराहोवरदो वरेण्यः
सुमहास्वनः॥ महाप्रसादोदमनःशत्रुहाश्वेतपिङ्गलः।प्रीतात्मा
परमात्माच प्रयतात्माप्रधानधृक्॥सर्वपार्श्वमुखस्त्र्यऽक्षोधर्म्म
साधारणोवरः। चराचरात्मासूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वरः॥
साध्यर्षिर्वसुरादित्यो विवस्वान्सवितामृतः। व्यासःसर्गःसुसं
क्षेपो विस्तारःपर्य्ययोनरः॥ ऋतुःसंवत्सरोमासःपक्षः ९०० सं
ख्यासमापनः। कलाकाष्ठापलोमात्रा मुहूर्त्ताहः क्षपाः क्षणः॥
विश्वक्षेत्रेप्रजाबीजोलिङ्गमाद्यस्तुनिर्गमः।सदसद्व्यक्तमव्यक्तं
पितामातापितामहः॥ स्वर्गद्वारंप्रजाद्वारंमोक्षद्वारंत्रिविष्टपम्।
निर्वाणंह्लादनञ्चैव ब्रह्मलोकःपरागतिः॥देवासुरविनिर्मातादेवा
सुरपरायणः। देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः॥देवासुरमहा
मात्रो देवासुरगणाश्रयः। देवासुरोगणाध्यक्षो देवासुरगणाग्र
णीः॥ देवातिदेवोदेवर्षि र्देवासुरवरप्रदः। देवासुरेश्वरो विश्वे
देवासुरमहेश्वरः॥सर्वदेवमयोचिन्त्यो देवतात्मात्मसम्भवः। उ
द्भिन्निविक्रमोवैद्योविरजोनीरजोऽमरः॥ ईड्योहस्तीश्वरोव्याघ्रो
देवसिंहोनरर्षभः। विधुधोग्रवरःसूक्ष्मःसर्वदेवस्तपोमयः॥सुयुक्तः
शोभनोवज्रीप्रासानांप्रभवोव्ययः।गुहःकान्तोनिजःसर्गःपवित्रः
सर्वपावनः॥ शृंगी शृंगा प्रियोबभ्रू राजराजोनिरामयः। अभि
रामःसुरगणो विरामःसर्वसाधनः॥ ललाटाक्षोविश्वदेवोहरिणो
ब्रह्मवर्च्चसः। स्थावराणांपतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्द्धनः॥सिद्धा
र्थःसिद्धभूतार्थो चिन्त्यःसत्यव्रतःशुचिः। व्रताधिपःपरंब्रह्मभ
क्तानांपरमागतिः॥विमुक्तोमुक्ततेजाश्चश्रीमान्श्रीवर्द्धनोजगत्।
१००० यथाप्रधानम्भगवा नितिभक्त्यास्तुतोमया॥ यन्न
ब्रह्मादयोदेवाविदुस्तत्त्वेर्महर्षयः। स्तोतव्यमर्च्यवंद्यञ्च कस्तो
ष्यतिजगत्पतिम्॥भक्त्यात्वेवंपुरस्कृत्यमयायज्ञपतिर्विभुः। ततो

भ्यनुज्ञांसंप्राप्यस्तुतोमतिमतांबरः ॥ शिवमेभिस्तुवन्देवन्नाम
भिःपुष्टिवर्द्धनैः । नित्ययुक्तःशुचिर्भक्तःप्राप्नोत्यात्मानमात्मना ॥
एतद्धिपरमंब्रह्म परंब्रह्माधिगच्छति । ऋषयश्चैवदेवाश्च स्तु-
वंत्यैनन्तुतत्परम् ॥ स्तूयमानोमहादेवःस्तुष्यते नियतात्मभिः।
भक्तानुकम्पीभगवानात्मसंस्थाकरोविभुः ॥ तथैवचमनुष्येषुये
मनुष्याःप्रधानतः । आस्तिकाःश्रद्दधानाश्च बहुभिर्जन्मभिः
स्तवैः ॥ भक्त्याह्यनन्यमीशानम्परंदेवंसनातनम्। कर्म्मणामन
सावाचा भावेनामिततेजसः ॥ शयानाजाग्रमाणाश्च व्रजन्नुप
विशंस्तथा।उन्मिषन्निमिषंश्चैव चिन्तयन्तःपुनःपुनः ॥ शृण्व
न्तःश्रावयन्तश्चकथयंतश्चतेभवम्। स्तुवन्तस्तूयमानाश्चस्तु
ष्यन्तिचरमन्तिच ॥ जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु ।
जन्तोर्विगतपापस्य भवेभक्तिःप्रजायते ॥ उत्पन्नाचभवेभक्तिर
नन्यासर्वभावतः । भाविनःकरणेचास्यसर्वयुक्तस्यसर्वथा ॥ एत
द्देवेषुदुःप्राप्यं मनुष्येषुनलभ्यते । निर्विघ्नानिश्चलारुद्रे भक्ति
रव्यभिचारिणी ॥ तस्यैवचप्रसादेनभक्तिरुत्पद्यतेनृणाम्। यया
यान्तिपरांसिद्धिं तद्भावगतचेतसा ॥ येसर्वभावानुगताः प्रपद्य
न्तेमहेश्वरम् । प्रपन्नवत्सलोदेवःसंसारात्तान्समुद्धरेत् ॥ एवम
न्येविकुर्वन्ति देवाःसंसारमोचनम्। मनुष्याणांमृतेदेवं नान्याश
क्तिस्तपोबलम् ॥ इतितेनेन्द्रकल्पेनभगवान्सदसत्पतिः। कृत्ति
वासास्स्तुतःकृष्णःतण्डिनाशुभबुद्धिना ॥ स्तवमेतंभगवतोब्र
ह्मास्वयमधारयत् । गीयतेच सुबुद्धेन ब्रह्माशंकरसन्निधौ ॥
इदंपुण्यंपवित्रंचसर्वदापापनाशनम्। योगदंमोक्षदंचैव स्वर्गदं
तोषदन्तथा ॥ एवमेतत्पठन्तेयएकभक्त्यानुशंकरे । यागतिः
सांख्ययोगानां व्रजंतेतांगतिन्तदा ॥ स्तवमेतत्प्रयत्नेन सदा
रुद्रस्यसन्निधौ। अब्दमेकंचरेद्भक्तःप्राप्नुयादीप्सितंफलम्॥ एत
द्रहस्यम्परमं ब्रह्मणोहृदिसंस्थितम् । ब्रह्माप्रोवाचशक्रायशक्रः
प्रोवाचचमृत्यवे ॥ मृत्युःप्रोवाचरुद्राणांरुद्रेभ्यस्ताण्डिरापवान्।

महतातपसाप्राप्त स्तण्डिनाब्रह्मसद्मनि ॥ तण्डिःप्रोवाचशुक्राय गौतमायचभार्गवः । वैवस्वतायमनवे गौतमःप्राहमाधव ॥ नारायणायसाध्याय समाधिष्ठायधीमते । यमायप्राह भगवान् साध्योनारायणोऽच्युतः ॥ नासिकेतायभगवान् प्राहवैवस्वतो यमः । मार्कण्डेयायवार्ष्णेयनासिकेतोभ्यभाषत ॥ मार्कण्डेयान्मयाप्राप्तो नियमेनजनार्दन । तवाप्यहममित्रघ्नस्तवन्दद्याद्यविश्रुतम् ॥ स्वर्गमारोग्यमायुष्यंधन्यंदेवेनसम्मितम् ।नास्यविघ्नं विकुर्वन्ति दानवायक्षराक्षसाः ॥ पिशाचायातुधानाश्च गुह्यका भुजगास्तथा । यःपठेत्तुशुचिर्भूत्वाब्रह्मचारीजितेन्द्रियः । अभग्नयोगोवर्षन्तु सोऽश्वमेधफलंलभेत् ॥ इतिमहाभारतान्तर्गते दानधर्म्मोत्तरे महादेवसहस्रनाम समाप्तम् ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ कहतभयेइमि व्यासमुनि सुनोयुधिष्ठिरतात । शिवस्तोत्रयहतुमपढ़ो आनँदकर अवदात ॥ तुमपै होहिं प्रसन्न अति शंकर आनँद दानि । परमप्रज्ञधरमज्ञ अति कीरति करण महानि ॥ रामगीती ॥ पुत्रकाजेमेरुगिरिपै स्तुती यहअवदात ।पढ़तभे हमलायमनको सुनियुधिष्ठिरतात ॥ भयो इच्छित फलसु हमको प्राप्त यहिते स्वक्ष । तिमिहुं ह्वै हो प्राप्त तुम सब कामनाको दक्ष ॥ कह्यो इमि पुनि कपिल मुनिवर हम सुजन्म अनेक । शिव अराधन कियोचितको लायसहित बिबेक ॥ शंभु होय कृपालु हमको भयेदेत सुज्ञान । हरणभवको दुःख अरु बरकरण मोदमहान ॥ तिहिअनन्तर धर्म्मशीलसु चारु शीर्षसुजान । सखाहै सुरनाथको सो ज्ञानमयमतिमान ॥ परम दायावान अरु आलम्बगोत्रज जौन । कहतभो इमिपांडुसुतसों परम प्रज्ञाभौन ॥ जायकै गोकर्ण तीरथमाहिं हमशत वर्ष । निराहारबिहारपरिहरि कियोतपउत्कर्ष ॥ शंभुहोयकृपाल हमकोदिये सुतशतदक्ष । लक्षबर्षसुआयु जिनकी इन्द्रिजित अतिस्वक्ष ॥ योनितेनहिं भयेतेउत्पन्न अतिधरमज्ञ । तेजवान

महानसुंदर अजरदुखदरप्रज्ञ ॥ कह्योइमिपुनिपांडुसुतसों बाल
मीकिऋषीश ।होहुतुमबर बिप्रघातककह्योमोहिंमुनीश॥ मुनिन
के यह बचनसुनिकै गयेशंकरशरण । सफलदरशन तासुकोअरु
परमदुखकोदरण ॥ गयेशरणैशम्भुके हमछुटेअघतेभूरि । परम
थातेउन्हैंजाने करणक्लेशाहिदूरि ॥ कह्यो ऐसे शम्भुमोसों सुयश
तवअतिस्वक्ष । होयगो भूमाहिं मेरे बचन सों हेदक्ष ॥ कहतभे
सुनि पांडुसुतसों परशुराम सुजान । ऋषिन्ह माहँ सुभान सेथे
तेजमान महान ॥ बन्धुबध सों भये प्रापत क्लेशको हमउद्ध ।
लयो तब हम शरण शिवको न्हायकै होइशुद्ध ॥ करीस्तुति
शम्भुकी हम सहसनामहिं जापि । उक्तिबरसों गायकै शुचि
भक्तिहियमें थापि ॥ शम्भुहोय कृपाल मोपै दयो यह बरदान।
रहित होहु महान अघसों अजय होहुसुजान ॥ अजर होयन
होहु कबहुंन मृत्युतव ऋषिराज । किये हमको सर्वप्रापतकृपा
तासु दराज ॥ पुनि सुविश्वामित्र ऐसे कहतभे बरबैन । रहैं
पूरब हम सुक्षत्री क्रोधमति के ऐन ॥ होहिं हम बरविप्र जी में
के बिचार सुएह । हमअराधन कियो शिवको परम आनँदगे-
ह ॥ भई तिनकी कृपाते मोहिं प्राप्त द्विजता जौन । अतिहि दु-
र्लभ तौनहै बर महा आनँद भौन ॥ कहतभे पुनि पांडुसुतसों
असित देवलदक्ष । अन्यथा हम कियो कबहूंधर्म में अति
स्वक्ष ॥ पाकशासन कोपते भो प्राप्त हमको शाप । भो ह-
मारो नष्ट तिहिते परम धर्मकलाप ॥ करीस्तुति जायकै तबश-
म्भुकी हम भूप । प्रार्थना मो श्रवण करिकै परमआनँद रूप ॥
आयु यश अरु धर्ममोकोदये पर्म अखर्ब । हरन दुखके करन
सुखके महादानी सर्ब ॥ गृत्समद ऋषि पुरन्दरके सखापर्म म-
हान । बृहस्पति सम प्रभाजिनकी धर्मवानसुजान ॥ कहत भे
ते पांडुसुतसों गृत्समद ऋषि दक्ष । रच्योबत्सरसहसको मघ-
वान यक्ष सुस्वक्ष ॥ सुनहु नृप ता यज्ञमाहीं सामवेद अनूप ।

भो उचारण मान हमसों अन्यथा है भूप ॥ अरिल ॥ मनुके सुत बरिष्ठ सो सुनि करि। कहतभये इमि हमसों गुनि करि॥ पढ्यो आप नहिं नीकेसामहि। याते गहिसुबुद्धि वर मामहि॥ करहु बिचार आपुपुनि हियमह। यहकहिकै बरिष्ठ ह्वै क्रुधसह॥ दियो शाप हमको तब यह तिन। होहु बिप्रतुम धर्मबुद्धि बिन॥ चरणाकुलक ॥ पाणीमो लेनाहिं जिहिमाहीं। मारुत कबहूंलागेनाहीं॥ मिलै और मृग नाहीं जिहिमें। होय सिंहको डर अति तिहिमें॥ ऐसे देश माहिं दुख ग्वैकै। कुत्सित अतिहि क्रूरमृग ह्वैकै॥ रहोजाय तजिकै सब हर्षन। ग्यारहसहस आठशत बर्षनं॥ सुनतहि शाप मृगाहम भये। तासु अनन्तर शिवपैगये॥ क्लेशित देखि मोहिं शिवदानी। कहत भये कै कृपा महानी॥ दोहा ॥ अजर अमर तुम होहु अरु होहु दुःखसों दूरि। सुनहु गृत्समद ऋषि महत लहो अनन्दहि भूरि॥ सोरठा ॥ रहोनित्य समभाव तुम्हरो अरु मघवान को। सुनहुं पर्म्म ऋषिराव बढो योग्य आनन्दकर॥ दोहा ॥ इमि सुअनुग्रहकरतहैं शङ्कर श्री भगवान। सुनहुं युधिष्ठिर भूप वर प्रज्ञावान महान॥ महामोद के करणहैं हरण दुःखको दाप। औढर ढरणमहान हैं हरणतीनहू ताप॥ सोरठा ॥ नित्य अगोचर स्वक्ष मनसा वाचाकर्मसों॥ उनसों औरन दक्ष देव सुनहु धरणी शरण॥ बोले फेरि सुजान बासुदेव आनन्दकर। जगके हेतु महान जासुनाम अति दुख दरण॥ दोहा ॥ शिव को किये प्रसन्न हम कै तप्र पर्म्ममहान। कहत भये ऐसे हमैं तब शंकरभगवान॥ रामगीती ॥ लगत सब को आतमा निज परम प्यारो चारु। होहुगे तिहि तुल्यप्यारे सबै आप उदारु॥ बुद्धमाहीं होयगी तव पराजय कबहूं न। अग्नि ऐसो होयगो तव तेज दिन दिन दून॥ दये इमि बरदांन मोको बहुत और अनेक। सुनहु पाण्डव धर्म्मधर वर धरेपरम बिबेक॥ अरिल ॥ सुनहुप्रथम अवतार माहिंवर। परम

सुमणि मन्थाचल ऊपर ॥ लाखनबर्ष शिवहिपूजे हम । और न देव परम तिनकीसम ॥ ह्वै कृपालतब बोले पशुपति । मांगहुबर अबबेर करहुमति ॥ मनबांछित तुम्हरेजोहोयसु । देहौं कृष्ण तुम्हैं अबसोयसु ॥ नायमाथ बोले हमइमि तब । शङ्कर तुमदानीहौ बरसब ॥ दयाकरीजै आप सुहमपर । नित्यनिरन्तर देहुभक्तिबर ॥ एवमस्तु कहिशङ्कर तिहिथल । अंतर्द्धान भये ताही पल ॥ जैगीषव्यउवाच ॥ सुनहु युधिष्ठिर नृपति धर्मधर । काशीमाहिं सुपूजे हमहर ॥ ह्वैकृपाल मोऊपर पशुपति । दियो मोहिं ऐश्वर्य परमअति ॥ गर्गउवाच ॥ नदी सरस्वती के तटबर पर । ध्यान मानसिकसो मोपरहर ॥ होय कृपाल पर्मसुनि भूपति । कला ज्ञान दीन्हों मोकोअति ॥ अरुसहस्र दीन्हें मोको सुत । तेसब मोसम बरमेधायुत ॥ चरणादोहा ॥ आयुदई दश लक्ष बर्षकी सुतसह मोकोसर्ब । सुनहु पांडुसुत पर्मबर मेधावान अखर्ब ॥ पराशरउवाच ॥ आभीर ॥ शिवको बिधिसों पूजि । ह्वै प्रसन्न अतिकूजि ॥ मनमें चिन्तनएह । कीन्हो हमबुधिगेह ॥ योगीपरममहान । सुयशीप्रज्ञावान ॥ दयावानश्रीवान । बरवेदज्ञ सुजान ॥ चरणादोहा ॥ शम्भुकृपाते होयहमारे ऐसो सुवन अनूप । शम्भुबूझि मोमनको मतयह बोले आनँदरूप ॥ जयकरी ॥ सुनहुबिप्र चिन्तनते येह । ह्वैहै तेरे सुधिबुधिगेह ॥ कृष्ण नाम यशवान महान । परमतेजस्वी प्रज्ञावान ॥ दोहा ॥ सावर्णिक मनुके समय सातऋषिनमें जौन । मिलिहै अरु वेदज्ञबर ह्वैहै सुनिद्विजतौन ॥ तोमर ॥ कुरुबंशको करतासु । बरधर्मको धरतासु ॥ इतिहासकर्त्ता स्वक्ष । हित सर्वजगको दक्ष ॥ अरु इन्द्रको प्रियपर्म । बरबीर्यवान अभर्म ॥ अरुयोगवान महान । श्रियमान शुद्ध सुजान ॥ दोहा ॥ ऐसो ह्वैहै सुवनतुव पाराशर सुऋषीश । यहबरदै मोकोभये अंतर्द्धान गिरीश ॥ माण्डव्यउवाच ॥ पद्धरी ॥ हमचोरहैं नपै चोरसाथ । भ्रमसोंगहि हमको

भूमिनाथ ॥ बिनजानदिये शूरीचढ़ाय। शूरीपर शिवको ध्यान लाय ॥ हमकरतभये स्तुतिमहान। तबह्वै कृपाल शिवसुनि सुजान ॥ इमिकहत भये मोसों अनूप। अति दयावान आनंद रूप ॥ दोहा ॥ शूरीते तुम छूटिहौ अब मांडव बरबिप्र। लहिहौ मोद महानतुम मेरेबरतेक्षिप्र ॥ आधि ब्याधि सों रहितह्वै जीहौ अर्बुद वर्ष। सब तीरथमें न्हान तुम करिहौ होय सहर्ष ॥ सोरठा ॥ अक्षय स्वर्ग महान देहैं तुमको बिप्रहम। यहकहिकै ईशान अन्तर्द्धान भयेसुनो ॥ गालवउवाच ॥ रामगीती ॥ लेय विश्वामित्रकी आज्ञाहिहमहेभूप। पितादर्शन कार्यआये गेहमाहिंअनूप ॥ रुदनकरती मात मोसों कह्यो ऐसेबैन। शीलमान महानसुनि सुतबुद्धिके बरऐन ॥ भये तरुणसुजान भूषित वेद सों सुखदान। लेय आज्ञा गाधिसुतकी विनय कै सुमहान ॥ पिता दर्शन कार्य आये भरेप्रेम अनूप। हायपै नहिंलखत है तव पिता तुम्हशेरूप ॥ बचन सुनिये पितादर्शन माहिंहोय निराश। गयेशरणहि शम्भुके हम परम आनँदराश ॥ कृपाकै अतिशम्भु मोपै कहतभे इमिबैन। सुनहु गालव बिप्र प्रज्ञावान श्रुतिके ऐन ॥ मृत्युसों तुमरहित होगे मात पित सहबिप्र। पिता दर्शन पायहौ तुमजाहु गृह में क्षिप्र ॥ पायऐसे शम्भु आज्ञा गेहमेंहमजाय। परममोदद पिताकोहम भये लखत सचाय ॥ पितामेरे यज्ञ करिकै रहे बैठेपर्म। नीरसों भरिलिये लोचन मोहिंदेखिसधर्म ॥ लग्योकरन प्रणाममैं तबसुनि युधिष्ठिरभूपं। अन्तलकरी कुशातजिकै भरेप्रेम अनूप ॥ चूमिमुख मो मिलिसु मोसों कृपाकै अतिउद्ध। भये कहत सुमोहिं ऐसे बचन प्यारे शुद्ध ॥ सोरठा ॥ आयो मेरेपास बिद्याको पढ़िकै सुवन। लखोतुम्हैं मुदरास भलोभयो हमको हरष ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ रामगीती ॥ मुनिनकरिकै कह्योजो है कर्मशिवको स्वक्ष। करतबिस्मय भयो सुनिकै नृपयुधिष्ठिर दक्ष ॥ कहतभे तब

युधिष्ठिर प्रज्ञा पोत ॥ शंकर में जो ध्यान लगाय । पढ़ै स्तोत्र-हि परम सचाय ॥ तिहिके होहिं सर्ब अघदूरि । बढ़ैपुण्य अरु आनँदभूरि ॥ जितने रोम देहके बीच । तितने वर्ष हजार निभीच ॥ रहैस्वर्ग में सुनु हेभूप । धर्मवान वर पर्म्म अनूप ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि दानधर्मेअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ योग्य जानिबे जौन ईश्वर अति आनंदकर । सुनहुतात बुधिभौन जान्यो तुमसों तौनहम ॥ मधुभार॥ संशय महान । एकभो सुजान ॥ सोकरहु दूरि । अब आपभूरि॥ रामगीती ॥ करै धर्महिं सहित पत्नी शास्त्रमाहीं येह । कह्योहै वर बुद्धजन सुनि पितामह बुधिगेह ॥ पूर्व्वहींकर ग्रहणके सहभाव तियको जौन । है कहा यहिमाहिं संशय होतहै बुधिभौन ॥ कह्यो जो है ऋषिन्ह पूरुब धर्म्म तिय सह जौन । कहा है यह तौन मोसों कहो प्रज्ञाभौन ॥ प्रकाशितयह कियो श्रुतिको मंत्र सों मुनिराज । कियोहैकी प्रजापति यह धर्म्म सन्ततिकाज ॥ दोहा ॥ इन्द्रहि के सुख हेत है की यह तिय सहधर्म्म । संशय होत महान है मेरे हियमें पर्म्म ॥ यहीलोक में लखत है तिय सह जो यहधर्म्म । लखत नहीं परलोकमें सुनहु पितामह पर्म्म ॥ पूरुब एकै मरत हैं जीवतरहैं सु एक । कहां रहत सह भाव है सुनहु तात सबिबेक ॥ रामगीती ॥ करत पिय तिय कर्म्म सँगपै सुनहु तात सुजान । होत निज निज बासना सों धर्म्म भेद महान ॥ बहुत बिधिके धर्म फलसों युक्त बहुजन पर्म । कर्मकी बहुबासनासे युक्त बहुत अधर्म ॥ दोहा ॥ साहस कपट अरुमूर्खता इस्त्रिनके ये धर्म । धर्मप्रवक्ता कहत हैं सुनियेतात अधर्म ॥ ऐसे होत सुभाव हैं इस्त्रिनके जो तात । तौ सहधर्म सुकहत किमि ज्ञानबान अवदात ॥ रामगीती ॥ नहीं है सहधर्म है सहधर्म्म को उपचार । सुनि पितामह धर्म धरबर ज्ञानवान सुढार ॥ दोहा ॥ बिनु अन्तर चिन्तन करतमोकोजो यहबात ।

भासतिहैं गम्भीर अति सुनिये भीषमतात ॥ दूरिहोय जिहि
हेतसों यह संदेहमहान। तौनहेत हमसों कहो तुमहो परमसु-
जान ॥ भीष्मउवाच ॥ जयकरी ॥ यहिपरसंग माहिं सुनुभूप। कहत
एक इतिहास अनूप ॥ उत्तरदिशासाथअति स्वक्ष। अष्टावक्र
ऋषीको दक्ष ॥ तामें है सम्बादअनूप। सुनिये तौन युधिष्ठिर
भूप ॥ चरणाकुलक ॥ गृह आश्रमकी इच्छाकरिकै। अष्टावक्रऋ-
षी मुदभरिकै ॥ ऋषिवदान्यसों मांगीकन्या ॥ नामसुप्रभा जे-
हिको धन्या ॥ महासुन्दरी परमअनूपा। लजै चन्द्र जिहिको
लखिरूपा ॥ शीलसुभाव गुणनसों मोहै। ऐसी सुन्दरिनैनीको
है ॥ अष्टावक्र ऋषीके मनको। मोह्यो जिहिंदिखायकैतनको ॥
ऋतु बसंतके माहीं नीके। फूलेफरे वृक्ष अतसीके ॥ जैसे तुरि-
तहिं मनको मोहत। मोहि लियो तिमि ऋषिको जोहत ॥ ऋ-
षि वदान्य तबबोलत भये। तपके परम तेजसों छये ॥ चरणा
दोहा ॥ कन्या तुमकोदेहैं पर यकसुनो हमारी बात। अष्टावक्र
ऋषितपवर ज्ञानवान अवदात ॥ जयकरी ॥ पुण्यमयी उत्तरदि-
शिजाउ। लखिहौ तहां सुनहु ऋषिराउ ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ उहां
जाय का लखिहैं तौन। कहो मोहिं ऋषि प्रज्ञाभौन ॥ जैसो
कहिहौ हमकोआप। तैसो करिहैं पुण्य कलाप ॥ वदान्यउवाच ॥
कुवेर अगार हिमाचल पर्म। उलंघि इन्हैं तुम जाहु अभर्म ॥
अगार तहां शिवको अतिस्वक्ष। अमंद बिलंद अनूपमदक्ष ॥
दोहा ॥ सेवित जो चारणनसों अरु सिद्धनसों पर्म। रहत जहां
बहुपारषद बहुमुखके सहधर्म ॥ युक्तताल सुरवाद्यसों शिवहि
रिझावत गाय। बांचि बांचि शिवके सुस्तव नाचि नाचिसह-
चाय ॥ शिवको प्यारो लगत अति रहततहां नितसर्व। महा
दिव्य हम सुनत हैं मुनि तपवान अखर्व ॥ सोरठा ॥ करीशंभुके
काज तहां तपस्याअम्बिका। यातेलगतदराज प्यारोशिवअरु
शक्तिको ॥ दोहा ॥ पारसगिरिके पूर्वअरु शिवके उत्तरपर्म। तहँ

उपासना करत हैं शिवकी देवअभर्म ॥ चरणादोहा ॥ तौनहुँथान उलंघि जाइयो आगे तुम ऋषिराज । तहां देखिहौ नीलवन घनके सदृश दराज ॥ मनहर अति रमणीयहै ता बन में एक दार । लखिहौ अष्टावक्र तुम तपके परम अगार ॥ तपसिन अरु अतिही वृद्धा महाभाग्य सहतौन । यज्ञक्रियामें निपुण अति सुनहु सुऋषि बुधिभौन ॥ दरशन पूजन योग्यदा रहैं तौन सुऋषिवर । ताहि देखि फिरिआउ तबै तुम करहु ग्रहण कर ॥ यह संकेतहि सिद्धि करणको जाहु आपुअब ॥ अष्टावक्रउ-वाच ॥ तुमजो कह्यो बदान्य सुनहु सो करिहैं हमसब ॥ दोहा ॥ जहां जायबे को कह्यो हमको तुम ऋषिराय । तहां जायहैं होहुँ तव बचन सिद्धिसुखदाय ॥ भीष्मउवाच॥सोरठा ॥ सुनहुँ युधिष्ठिर भूप अष्टावक्र ऋषीशवर । उत्तर दिशिहि अनूप चले भये अतिहर्षसों ॥ रामगीती ॥ जायकै हिमवान गिरिपै तहांते सुनि भूप । गये सरिता बाहुदामें भरी सलिल अनूप ॥ जायकै पुनि बिमलचारु अशोक तीरथबीच । न्हाय शुचिह्वै देवतन को कियेतृप्त निभीच ॥ बनै आसन कुशाको तहँ बसे बरऋषिरा-य । कै ब्यतीत निशाहि उठिकै प्रातन्हाय सचाय ॥ अग्निको प्रज्वलित करिकै करी अस्तुतिस्वक्ष । सुनि युधिष्ठिर परम अ-ष्टावक्र ऋषिमतिदक्ष॥ चरणा दोहा ॥ जायहर रुद्राणी माहीं तहां रहे कछुबार । चले फेरि कैलाश पर्वतहि ऋषि बर सुमतिअ-गार ॥ जयकरी ॥ तहां धनदको कांचनद्वार । देख्यो ऋषिबर सुमतिअगार ॥ अरु मन्दाकिनि नदिकाचारु । लखी सलिल सों भरी सुढारु ॥ नलिनीको बर बिपिनि अनूप । देख्यो तहां ऋषीमुदरूप ॥ नलिनी बनके रक्षकजौन । मणिभद्र आदिक सब तौन ॥ लखिकै ऋषिको उठे सचाय । सुनहु युधिष्ठिर हे नरराय ॥ मणिभद्र आदिकको पर्म । आदर कीन्हों ऋषी स-धर्म ॥ सबसों कह्यो ऋषीइमिबैन । सबतुमजायधनदकेऐन॥

कहो धनदसों इमिबरबात। अष्टावक्र आयअवदात॥ चरणा-
कुलक॥ ते राक्षससब बोलत भये। मणिभद्र आदिक मुदछये॥
आपुहि आवत पासतुम्हारे। भूप धनद महिमासों भारे॥
तुम्हरो आवन कारण जाना। धनदराय यशवान महाना॥
देखो इनको तुम ऋषिराजा। तेजवानमतिमान दराजा॥ यक्ष
राज इतने में आये। ऋषिसों बूझि कुशल मुदछाये॥ पुनि
ऋषिसों इमिबोलतभये। यक्षराज अति रतिसोंरये॥ आये
सुखसों तुम ऋषिराजा। कहोआपु आवनकोकाजा॥ जो तुम
कहिहौ सो हम करिहैं। और न भाव हिये में धरिहैं॥ करो ह-
मारे भवन प्रवेशा। ऐसे कहतभयो यक्षेशा॥ कृतकराय सत
कारित कैकै। आपुजाइयो मुदसों कैकै॥ ऐसे कहि ऋषिको
संगलये। अपने गृहको आवतभये॥ ल्यायगेहते आसन
दीन्हो। बिधिसों ऋषिको पूजनकीन्हो॥ बैठे मोदभरे अति-
दोऊ। जिनकी समताको नहिंकोऊ॥ मणिभद्र आदिक गण
आये। बैठतभये मोदसों छाये॥ औरं यक्ष किन्नर गन्धर्बा।
बैठतभये आयकैसर्बा॥ बैठेआय सबै तबनीके। बोले बचन
यक्षपतिसीके॥ जौसुहोय आज्ञातवनीकी। नाचैतौसुअप्सरा
सीकी॥ चरणादोहा॥ शुश्रूषा तव कीबोचाही अष्टावक्रऋषीश।
दक्षयक्षपतिऐसेबोले पाण्डवसुनहुमहीश॥ अष्टावक्र ऋषीश
तब बोले इमि सुनिबैन। होयनृत्य सुनि यक्षपति महा बुद्धिके
ऐन॥ रामगीतो॥ उर्वरारम्भा सुकेशी उर्बशी रतिचारु। घृताची
चित्रांगदासुमुखी सुपर्मसुदारु॥ दोहा॥ अलम्बुषाअरुमनहरा
चित्रापरमअनूप। प्रशमीदान्ता बिद्युता हासनि प्रभास्वरूप॥
बिद्योतारुचिअप्सराइतनीनचतिसभाय। औरकितीनचतीभई
सुंदरि परमसचाय॥ चरणादोहा॥ भये बजावत बहुप्रकारकेबाजा
बरगन्धर्ब। नाचदेखिअरु बाजासुनि ऋषिमोदितभयेअखर्ब॥
प्रवृत्तिभये गन्धर्ब रागकी अतिही दिव्यअनूप। रागमाहिं

अतिलीनहोय ऋषि बसेतहां मुदरूप ॥ बत्सर ऊपर बितेकिते दिन नाचलखत ऋषिराय। यक्षराज तब ऐसे ऋषिसों कह्यो मोदसों छाय ॥ यह जो बिषय मनोहर अतिहै गांध्रब याको नाम। जैसे कहो आपु यह तैसे प्रकृतरहै बुधिधाम ॥ पूजनीय हौ अतिथिहौ है तुम्हरो गृहएह। जौनकरो आशा तुम हमसों करैंतौन बुधिगेह ॥ चरणाकुलक ॥ तब ऋषि ऐसे बोलतभये। यक्ष राजसों मुदसों रये ॥ तुमसों हम अति आनँदपायो। रह्योधाम तव मुदसों छायो ॥ यथायोग्य हम पूजित भये। तुमसों यक्षराज बुधिछये ॥ सुनहु यक्षपति जैहैं अबहम। तुम्हैं योग्य है कियो जानतुम ॥ दोहा ॥ यक्षराज तुमपैभये हमप्रसन्नहैंपर्म्म। बुद्धिमान सब योग्यहौ बरयशवान सधर्म्म ॥ रामगीती ॥ आपु के परसादते सुनयक्षराज सुजान। औ बदान्य ऋषीशकी आज्ञासुनो मतिमान ॥ जायँगे हम होहु तुमबर ऋद्धिमान महान। दैयकै आशीश श्रीदहि महाऋषि तपवान ॥ चले उत्तरदिशाको आनन्दसौं हियछाय। परमगिरि कैलाशमन्दिर हैमनांघि सचाय ॥ धस्यो बपुष किरातको जहँ महादेव अनूप। भये पहुँचत भये तहां अष्टावक्र ऋषि तपरूप ॥ सुनि युधिष्ठिर नम्रह्वै ऋषिप्रेम गहिकै पर्म। थानकी परदक्षिणाकी कै प्रणाम सधर्म ॥ उतरिकै भूमाहिं परसन होतभे ऋषिराय। तीनबेर प्रदक्षिणाकै अचलकी ऋषिराय ॥ परमसम भूमाहिं उत्तर चले सुऋषिसुजान। जाय आगे भये देखत परम सुंदर थान ॥ तौनथल रमणीय बनसों परम भूषितस्वक्ष। सर्बऋतु में फूल फलसों युक्त जो सुनिदक्ष ॥ युक्त अरु पक्षीणसों कल शब्दवारे जौन। तहां एकअति स्वक्षआश्रम भये देखततौन॥ लखे बिबिधाकारके गिरि हेमके अतिचारु। लसैं जिनके रत्न भूषित शिखर उह्वसुढारु ॥ लखी पुनिमणि भूमिमाहीं परम बापीस्वक्ष। और थल रमणीय लखिकै सुनहु भूपतिदक्ष ॥

रमितभो मनअतिहि अष्टावक्र ऋषिकोपर्म्म। तहां देख्योएक कंचनसौधसु ऋषि अभर्म्म॥ सर्बमणिसों जड़ित अरुबरधनद गृहसोंचारु। लसत चारौंओर जिहिके हेमअचल सुढारु॥ अतिहिरम्य बिमान जेहां रत्नरम्यअनेक। लखत मोदितभये अष्टाबक्र ऋषि सबिवेक॥ लसतमणितहँपर्म्म परमामयीभूरि सुढारु। आपनीही प्रभासों जे प्रकाशितहैं चारु॥ बरवादोहा॥ हीरनसों भूषित है तहँकी भूमि अमंद अनूप। धर्म्मवान यश वानबर सुनहु युधिष्ठिरभूप॥ हीरनके तोरणसों भूषित शोभा भरेअमन्द। चारो ओर सौध हैं जाके ऐसे परमबिलन्द॥ लागी मोतिनकी हैं झालरि जिनमें परमसुढार। ऐसेचारुचांदनी जिनसों सोहतताआगार॥ मोतीदाम॥ ऋषीनसों स्वच्छ बिभूषितजौन। मनोहर पर्म्मलख्योथलतौन॥ तपस्वनि कोसुकहा बरवास। भयो यह संशयको परकास॥ चहुंदिशि देखि ऋषीशसुजान। भयोइमिबोलत बैनसुठान॥ जयकरी॥ अतिथिइहां हम आये एह। जानैजौन होयइहिगेह॥ यहसुनि सप्तसुकन्या चारु। निकसींगृहते परमसुढारु॥ सबहिमनोहरिपर्मसुजानि। महामनोहर जे बरखानि॥ जिहि जिहिकादेखत ऋषिराय।तेते मनको हरति सचाय॥ दोहा॥ ऐसो मन तिनमें लग्यो लखिकै तिनकोरूप।वारणकरिबेयोग्यनहिंभयेऋषीशअनूप॥भयेधरत जब धीरता अष्टावक्र ऋषीश। तब कन्याबोलति भई सुनिये वर धरणीश॥ प्रज्झटी॥ करिये प्रवेश गृहमाहिं आप। सुनिये ऋषीश वर तप कलाप॥ कौतुक समेत ऋषि गेहबीच। कीन्हों प्रवेश सुनि नृपनिभीच॥ पहिने सुवसन वर अतिहि चारु। अरु सर्ब परम भूषणसुढारु॥ बैठी सुपलंगपै अतिहि स्वक्ष। वृद्धासुदारदेखी सुदक्ष॥ आशीरबाद दीन्हों सु ताहि। ऋषिराय मोद सह ताहि चाहि॥ इमि कहत भई उठिदार बैन। ऋषिराय बैठिये तेज ऐन॥ अष्टावक्रउवाच॥ जो शान्त ज्ञानवंतीसु-

होय । तुम सर्बमाहिं ये कहहु सोय ॥ अरु और बाम निजनिज सुऐन । सबजाहुहमारे सुनि सुबैन ॥ दोहा ॥ सुनि यहबैन ऋषीशकी करि प्रदक्षिणा सर्व । अपने अपने गृहगईं वृद्धारही, अखर्व ॥ सोरठा ॥ करहुशयन ऋषिरायहयह अतिसुन्दर सेजपर। वृद्धा कह्यो सचाय ऐसे अष्टावक्र सों ॥ सुनिवृद्धाके बैन ऐसे ऋषि तपनिधि कह्यो । तुमहूं करिये शैन बीतीहैरजनी बहुत॥ अन्तगुरुतोमर ॥ सुनिबैन ये ऋषिरायके । अति स्वच्छ सुंदरभाय के ॥ दोहा ॥ बैठी दूजीसेज परवृद्धा परम सुजानि। सुखदाशोभासेमई वर रमणीय महानि ॥ रामगीती ॥ कछुक पीछे काँपती अति दार वृद्धाजौन । मोहिं लागो शीतहै कहिबैन ऐसे तौन॥ जायबैठी सेज ऊपर ऋषीकी अतिस्वक्ष। आउबैठो कह्योउठिकै ऋषी सादर दक्ष ॥ भुजाभरिकै ऋषीजूको लयेउरसोंलाय। भो बिकारित नाहिं ऋषिको चित्तलखि तियभाय॥ ऋषी अष्टावक्रजूको काष्ठवत लखि बाल । भई कहती ऋषीसों इमि होयकै बेहाल ॥ कामसों हमभई मोहित सुनहुं हे ऋषिराय। चाहतीहैं तुम्हैं हमको चहो तुमहुंसचाय॥ होय कामीकरहु मेरेसाथमाहिं विहार। कामसोंहम दुखित ह्वैकै कहातिबुद्धिअगार ॥ अरिल ॥ तुम से कामारत हैं हम अति। करु आलिंगन हम सों गहिरति ॥ यह तव तपको है उत्तम फल। सुनहुं ऋषीवरधर्मवान कल ॥ दोहा ॥ धन आलय अरु बस्तुजे देखतहो ऋषि आप।तिनके हौप्रभु आपुही सुनिये धर्म्मकलाप ॥ अरु मेरेहू आपुही हो प्रभु हे मतिमान । यह में नहिं संदेह है धर्मवान यशवान ॥ प्रज्झटी ॥ यह जो अनूपवर बन सुढार । तिहिमाहिं करो मोसँग विहार ॥ सब कामदानिहै बिपिन येह। सुनि सुऋषि महा तप बुद्धिगेह ॥ हम काम सिद्धि करिहैं तुम्हार । सब सुनहु ऋषीवर बुधिअगार ॥ सुन्दरी ॥ मो सँग में करिये सुबिहारहि । मैं बश हौं ऋषिराज तुम्हारहि ॥ देवनके अरुमानुष

के सब । भोग महा मिलिहैं तुमको अब ॥ रामगीती ॥ पुरुषसंग बिहारजो सो तियनको सुखपर्म । और सुख न समान इहिकी सुनहुँ सुऋषि सधर्म ॥ भई प्रेरित कामसों जे बामहेऋषिराय । चलतिइच्छा आपनी सों बामते सहचाय ॥ भई प्रेरित काम सों ते तप्त बारूमाहिं । चलति हैं पै उन्हेंताती जानिजातीनाहिं ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ करत नहिं परदारके हम साथमाहिं विहार । धर्म शास्त्र सुमाहिं दूषित है सुयह हे दार ॥ सोरठा ॥ गृह आश्रमके बीच इच्छाभई प्रवेशकी । मो मनमाहिं निभीच बुद्धिधामवर बामसुनि ॥ हैं हम अबहिं अजान बिषयमाहिं हे दारसुनि । सन्तति चहत सुजान काजधर्म सुखसाजको ॥ रामगीती ॥ धर्म जनित सुपुत्र सो शुभलोकको हमपर्म । प्राप्तह्वैहैं सुनहु वृद्धा दार अतिहि अभर्म ॥ होहु निवृतिहि प्राप्तत् हे जानिकै बर धर्म ॥ स्त्रीउवाच ॥ अग्नि मारुत बायु आदिक देवता हैं जौन । तियनको नहिं लगत प्यारे सुनहु प्रज्ञा भौन ॥ लगे प्यारो बामको है परमकेवलकाम । बामकीरति रहति रतिही माहिं हे बुधिधाम ॥ होतिरतिमें निपुण एकै बाम सहसन बीच । पति-ब्रता यक होति लक्षणमाहिं सुनहु निभीच ॥ दारनहिं पितु मातु जानै औ न देवर भ्रात । पतिहि जानै नाहिं औ नहिंपुत्र को अवदात ॥ जानती है एक केवल कामकेलि सचाय । स-रितजैसे आपनेबर कूल देति गिराय ॥ हनति इमिही कुलहि अपने दारते ऋषिराय । प्रजापति सब दोष लखिकै कहे ये तियभाय ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि युधिष्ठिर ऋषी अष्टावक्र सुनिकै येह । दार दोष बिचार ते इमि कहत भे बुधिगेह ॥ होय चुप कै चित्त थिरता माहिं बैठो दार । जानतीहौ आपमन्मथ केलि को व्यवहार ॥ करतिइच्छाहौ हमारी हेत यहिते चारु । हमन जानैकामकेलिहि सुनहुवृद्धादारु ॥ करतइच्छानाहिंयाते आप की हमपर्म । कहत भे इमिदारसोंऋषि सुनहुँभूपसधर्म ॥ जौन

करतरक्षा पितासुनहेदार । तरुणाई में करतरक्षा नित्यहीभरता-र ॥ पूतरक्षा करत वृद्धापनेमें अनुमानि । प्रजापतिके बैनये हैं सुनहुं तिय मतिमानि ॥ स्त्रीउवाच ॥ देत हमको कामदुखअति सुनहुंहे ऋषिराज । करहुयहिको शान्ति मेरीभक्तिदेखि दराज ॥ मो मनोरथसिद्धिजो नहिं करौगे ऋषिआपु । तौअधर्महिप्राप्त ह्वै हौ सुनहुं तेज कलापु ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ जोई आवत चित्तमें जन करत सोई जौन । काम क्रोधादिकन सों अति लहतदुख कोतौन ॥ धीरता सों रहतहैं हमयुक्त नितिहेदार । जाहुअपनी सेजपै मम सेज छोड़ि सुढार ॥ स्त्रीउवाच ॥ सुनहुहे ऋषिरायतुम कोकरति हमपरणाम ।नायमस्तकचरणमाहीं भक्तिगहिकैमाम ॥ रावरी हम शरणमें हैं करहुदायापर्म । कहत पुनिपुनि जोरिकर हम सुनहुं सुऋषि सधर्म ॥ दोष परतिय माहिं जानौ तौ सुनौ ऋषिराय । पाणि ग्रहण करावती हैं तुम्हैं हमहिं सचाय ॥ करौ तुमकर ग्रहणजासों लगै नाहींदोस । सत्यतुमसों कहति हौं मिटिजायगो अपसोस ॥ हमहमारे दानमें स्वाधीनहे ऋ-षिराय । कहति याते आपुसों हम बेर बेरसचाय ॥ दोहा ॥ पा-णिग्रहण को धर्म जो सोऊ मेरोहोत । सुनिये अष्टावक्रऋषि तप तेजसके पोत ॥ लगो रहत है चित्तमम तुममें हे ऋषि-राय । ग्रहण हमारो कीजिये याते आपुसचाय ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ कैसे तुम स्वाधीनहौ सुनो सवृद्धाबाम । बूझत हैं हम आपसों याको कारणमाम ॥ सोरठा ॥ कहूंनहीं स्वाधीन तीनहु लोकन माहिं तिय । अष्टावक्र प्रवीन ऐसे कह्यो सुबामसों ॥ रामगीती ॥ कुमारी की करतरक्षा पिताहे सुनु दार । परमयौबनमाहिं रक्षा करत है भरतार ॥ करतरक्षा पुत्र वृद्धापने में हे बाम । कहां हैं स्वाधीननारी कहत मतिसों माम ॥ स्त्रीउवाच ॥ लरिकई सोंगहे हैं हम ब्रह्मचारय धर्म । सुनो ऋषि कन्याहि हैं हम हेतते यह पर्म ॥ करहु पत्नी मोहिं मोपै कै कृपा तुमभूरि । कहत मैं कर-

जोरि जानि मम करहुश्रद्धा दूरि ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ अरिल ॥ जानत कामातुरि तोको हम । ऐसेही जानो हमको तुम ॥ पै अति अधरम जानि हियेमहिं । तोसों करत सुकाम केलिनहिं ॥ कन्यारूप देखि ऋषिदारहि । करतभये मनमाहिं बिचारहि ॥ चरणा दोहा ॥ ऋषि बदान्यमम करणपरीक्षा भेजीहै यहबाम । कीयह कोई बिघ्न महाहै होत आचरजमाम ॥ कैतो बृद्धा बामही यह शिथिलांगीपर्म । कैतो यह कन्याभई अति सुंदरी सधर्म ॥ किमिहवैहै कल्याण हमारो यहस्थानके बीच । इमि मनमें गुणते भये अष्टावक्र निभीच ॥ राजगीती ॥ अतिहिजीरणरही बृद्धापूर्व यहजो दार । भई है किहिभांति कन्या अबहिंपर्मसुढार ॥ करैंगे हम नाहिं यहशुचि दारको स्वीकार । छोड़िहैं नहिं धर्म को अरु धीरताहि सुढार ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेदानधर्मेअष्टाबक्रदिगसम्बादोविंशोऽध्यायः २० ॥

जयकरी ॥ क्यों नहिंडरी शापसों बाम । अरुफिरिआये किमि ऋषिमाम ॥ सुनहु पितामह सबुधिसधर्म । कहो हेत हमसोंयह पर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनहुं युधिष्ठिरबुद्धिअगार । कहत हेततुमसों यहचार ॥ अष्टावक्र ऋषीश सधर्म । बूझत भये दारसों पर्म ॥ और और किहिभांति सुरूप । धरती है तुम परमअनूप ॥ याहिजानिबे की हेतीय । है अभिलाष हमारेहीय ॥ हमसों कहो सत्यगहि भूरि । करहु हमारो संशयदूरि ॥ स्त्रीउवाच ॥ थिरह्वै के ऋषि सुनहुँ सधर्म । यह वृत्तान्त कहतिहोंपर्म ॥ तियकोप्रेम पुरुषके बीच । पुरुषहुको तियमाहिं निभीच ॥ रहतसर्व लोकन में नेह । सुनि हे सुऋषि बुद्धिके गेह ॥ एक मोक्षहीहै निष्काम । और सर्व है लोकसकाम ॥ इस्त्री सहितधर्मयह जौन । हैसकाम पुरुषनको तौन ॥ जो निष्काम पुरुषहै पर्म । तिनको नाहीं है यहधर्म ॥ अरिल ॥ तब थिरता कीबेके काजहि । हम ये चेष्टा करी दराजहि ॥ यह सुधीरतासों हे ऋषिवर । जीते सर्बलोक

तुम तपधर ॥ सुनहुँ सुलखिहम हैं उत्तरदिशि । तुमको भाव दिखाये तियमिसि ॥ देखे भाव तियनके तुमअब । भावदिखाये तुम को हमसब ॥ सोरठा ॥ सुनि हे ऋषितपभौन वृद्धाहू नारीन को । मैथुनको ज्वरजौन नित सतावतै रहत है ॥ अष्टवक्रऋषिराय है तुममें यह धीरता । तबै देव समुदायहै तुमपै परसन्न अति ॥ आये तुम जिहकाज भेजे सुऋषि बदान्यके । तौन काज ऋषिराज सिद्धि कियेहम आपके ॥ जयकरी ॥ तीयस्वभाव दिखावनकाज । अरु कामेच्छा परमदराज ॥ तुमको भेजेहैंहम पास । सुऋषि बदान्य सुमतिके रास ॥ ताको कियो तुम्हैं उपदेश । हम हैं अष्टावक्र बुधेश ॥ जावो अबघर मुदसे आप । लहिहौ नहीं परिश्रमदाप ॥ मिलिहै तुमको कन्यातौन । जिहि कारण आये बुधिभौन ॥ पुत्रहु ताके ह्वैहै पर्म । सुनिये अष्टावक्रसधर्म ॥ अरिल ॥ जिमिसकाम बूझो हमको तुम । तिमिसकाम दीन्हों उत्तरहम ॥ जावो ऋषि अब अपनेधामहिं । करिकै तुम करतब्य सुकामहिं ॥ कहासुननकीइच्छा है अब । बूझो जौन कहैं तुमसोंसब ॥ चरणाकुलक ॥ ऋषिबदान्यहमपासपठाये॥ तुमको सुनहु सुऋषि बुधिछाये ॥ उनको सनमानै के काजे । कीन्हों यह उपदेश दराजै ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनहुंयुधिष्ठिर भूप अष्टावक्र ऋषीशबर । सुनिये बैन अनूप उत्तरदिशि तिय रूपके ॥ दोउ हाथनकोजोरि बैठे सोहेंदारके । फेरिसुमाथ निहोरि आज्ञाले निजगृह गये ॥ मल्लिका ॥ आय अपने सदन में ऋषिरायअति मदसोंछये । कछुकदिन रहि बूझिअपनेहितुनको रतिसों रये ॥ चले सुऋषि वदान्यके गृहको सुचाव महानसों । पहुंचिगृहमें बातकरते भये सुऋषि बदान्यसों ॥ चरणाकुलक ॥ ऋषिबदान्य तब बोलत भये । अष्टबक्रसों मुदसोंछये ॥ हम पठये हे तुमको जहां । अष्टाबक्र गयेहे तहां ॥ वहअस्थान जायकै देख्यो । अतिरमणीय प्रभासों भेख्यो ॥ ऋषिबदान्यकी

सुनियहबानी। बोलेअष्टवक्रऋषिज्ञानी॥सुनहुऋषीश बदान्य सुमतिधर। आज्ञापाय तुम्हारी अतिबर॥ रामगीती॥ गन्धमादन पर्वतहि हमगये पर्मसचाय। जाहिदेखे कौनकोहियहर्षसों नहिंछाय॥ जासुउत्तर लख्योहम आरण्य सघन बिलन्द। तासुमाहीं लख्योयकबर धाममाम अमन्द॥ लखीतिहि आगारमाहीं एकबृद्धादार। करत बातें भयेतासों सुनहुं बुद्धि अगार॥ मोदसों तिहि दार मेरोकियोआदरपर्म। कहतभोपुनि इमिसुमोसों दार तौनअभर्म॥ पायसुऋषिबदान्यकी आज्ञाहि तुम ऋषिमाम। कृपाकरिकै आपआये हो हमारेधाम॥ सोरठा॥ तिहिकी आज्ञापाय आये अपने सदनमें। फिरिबदान्य ऋषिरायआये हम तवसदनमें॥ बदान्युवाच॥ चरणाकुलक॥ कन्यापाणिग्रहण अबकरिये। महामोदसों हीको भरिये॥ पर्मसुपात्र पायकै तुमको। भयो अनन्द महाहै हमको॥ भीष्मउवाच॥ सुनहुं युधिष्ठिर बरधरणीशा। यह सुनि अष्टावक्र ऋषीशा॥ पाणिग्रहण कीन्हों कन्याको। जिहिकीसम जगमें धन्याको॥ सोरठा॥ ऋषि कन्याकोपाय अतिही मोदित होयकै। निज आश्रम में आय बसतभये भार्य्यासहित॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेदानधर्मेअष्टावक्रदिगसम्बादेएकविंशोऽध्यायः २१

युधिष्ठिरउवाच॥ जयकरी॥ कारण गृह आश्रमको काम। जान्यो सो तुमसों बुधिधाम॥ सुऋषि सनातन पर्म्म अमन्द। जिनकी महिमा महा बिलन्द॥ दान पात्रते कहत सुकाहि। कहो तात अब यह अवगाहि॥ रामगीती॥ ब्रह्मचारिहि कहतहैं की यतीको अवदात। दण्डबानहिं कहत हैं की बिप्रको हे तात॥ भीष्मउवाच॥ जीव काको उचित बृत्तिहि करत हैं जन जौन। तौनही है दानपात्र सु कहतप्रज्ञाभौन॥ तौनहीहैतपस्वीसुनि धर्म्मवान सुतात। ब्रह्मचारी होहु वा द्विज दण्डवतअवदात॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुनि पितामह जौनजन अपवित्र होय महान।

तौन जन सुर पितर काजै देय बिप्रहि दान ॥ होत तिहिको दोषका अपवित्रताको धर्म्म । कहो हमको आपु भीषम ज्ञानवान अभर्म्म ॥ भीष्मउबाच ॥ जौन जन हैं देत श्रद्धा सहितदान महान । तौन होत पवित्र श्रद्धा सोहि हे मतिमान ॥ तोमर ॥ बर सर्व बिधिसों शुद्ध । तुमहौ युधिष्ठिर बुद्ध ॥ बर धर्म्मवान अमन्द । तुमसों न और नरेन्द ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ रामगीती ॥ निर्जरार्थ दानमाहीं कहत हैं मतिमान । पात्रकी कीजे परीक्षा नाहिं सुनहुं सुजान ॥ पात्रकी कीजै परीक्षा पिता दान सुमाहिं । सुनहुं भीषम तात तुमसों कहत में अवगाहि ॥ चरणादोहा ॥ श्रद्धाहीसों लहत सुनहुं जोजन पवित्र धर्म्म । पित्रदानहुमें नहिं चाही पात्रपरीक्षा धर्म्म ॥ भीष्मउबाच ॥ सोरठा ॥ देवकर्म्म फल जौन देवतहीसों होत सिधि । द्विजके गुणते तौन सिद्धि होत नहिं सुनि नृपति ॥ यह कारणते धर्म्मदेवारथके दानमें । सुनि अवनीप सधर्म्म पात्र परीक्षा नहिं करिय ॥ दोहा ॥ श्रद्धाप्यारी धर्म्महै देवनकोहेतात । यातेश्रद्धा सहकरै देवकार्य्यअवदात ॥ रामगीती ॥ पितर कारय होत सिधि लहि द्विज अनुग्रह धर्म्म । सुनहुं याते चाहिये द्विजमाहिं बिद्याधर्म्म ॥ पितर पूजनमाहिं चाही वेदबिद द्विज स्वक्ष । मारकण्डे कह्योहै यह सुमतसुनि नृपदक्ष ॥ महिखरी ॥ अग्निमुख हैं देवता अरु पाणिमुख सब पितर हैं । आश्वलायन कह्यो है यह ऋषिन्हमें जे सुबर हैं ॥ अग्नि आपुहि शुद्ध याते तृपित सब सुरको करै । पाणि तौ सतप्रात्रहीको पितरको मुदसों भरै ॥ रामगीती ॥ सुनहुंसुत यह हेतते बर पितर कारय बीच । पात्रकी कीजै परीक्षा कहतबुद्धि निभीच ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ ज्ञानवान अपूरबी अरुतपस्वीबरधर्म । मज्ञशील सुनु औ सम्बन्धी सुनहु तात सधर्म्म ॥ ज्ञानवानहि आदिदैके पंचजेहैं येह । पात्रभावसुहोतकैसे इन्हेंकहु बुधिगेह ॥ भीष्मउबाच ॥ सत्यता अक्रूरता सुकुलीनता अरु कर्म्म । वेदपढ-

न सु कोमलाई औ सुलजता पर्म्म ॥ सुनहुं गुणसों तौन सो अति युक्तजेहैं तीन । तपस्वी औअपूर्वी अरु समन्धी सुप्रबीन ॥ दानपात्र सुजानि तेई पर्म्म प्रज्ञाभौन । होहिं जिहिमेंनहीं ये गुण दानपात्र न तौन ॥ भूमि काश्यप मारकण्डे अग्निको मतपर्म्म । कहतयहिपरसंगमाहीं सुनहुंतौनसुधर्म्म ॥ भूमिरुवाच ॥ मखकरावबऔ पढ़ावबऔ प्रतिग्रहजौन । वृत्तिहै इनत्रयनसों जिहि माहिं सुनि बुधिभौन ॥ परमऐसी बिप्रकी सम्प्राप्तिताके बीच । बूड़िसबैहि ज़ातपावक कहतभूमि निभीच ॥ काश्यपउवाच ॥ लसत जैसे शीलसों द्विज सुनहुनृप बुधिपोत । सुकुल सांख्य पुराणश्रुतिसों त्योंन शोभित होत ॥ अग्निरुवाच ॥ अरिल्ल ॥ जौनबिप्र पढ़ि कै बिद्याबर । मानत आपुहि परमसुमतिधर ॥ विद्याबलसों और बिप्रकर । हरत यशहि सुनिनृपति कलुषदर ॥ सोरठा ॥ यज्ञादिक जे कर्म्म तिन्हैं नाहिं कबहूंकरै । नष्टतासुके धर्म्म होत अग्नि इमि कहत है ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ दोहा ॥ अश्वमेध बरयज्ञको फल अरु सत्यमहान । तोले इन दोऊनको चतुरानन मतिमान ॥ अर्धभयोनहिंसत्यके अश्वमेध फलजौन । सुनहुँ युधिष्ठिर धर्मधर पाण्डुसुवन बुधिभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ भूमिकाश्यपमारकण्डे अग्निवर सरवज्ञ । गये ऐसेमोहिं कहिके सुनु युधिष्ठिर प्रज्ञ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ श्राद्धमें भोजन कराये ब्रती द्विजको पर्म्म । सुनहुँभीषम ताततांको भये नष्ट सुधर्म ॥ कहो हमसों श्राद्ध दूषित होतहै की नाहिं । बूझतोहों आपुसों मैं चित्तमें अवगाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ गुरूआज्ञा पाय द्वादश बर्षलौंको पर्म्म । धरो जिहि ब्रत ब्रह्मचारय सुनहुतात सधर्म्म ॥ नशत ताको धर्म्म भोजन किये श्राद्धहि माहिं । श्राद्धदूषित होतहै नहिं कहतहौं अवगाहि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ तोमर ॥ बहु द्वारहै बरधर्म्म । बहु फलाकार अभर्म्म ॥ निश्चित्तधर्म्म सुकौन । हमसों कहौ तुम तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ सति अहिंसा

अक्रोध । अरु चित्तको नितरोध ॥ ऋजुतारु सुनु भूपाल । अक्रूरतारु बिशाल ॥ निश्चित्तधर्म्म सुजेह । तिहिके सुलक्षण येह ॥ रामगीती ॥ धर्म्म अस्तुति करतजे जन फिरत भूकेबीच । करत धर्म्महिं नाहिं अरु सुनि पाण्डुपुत्र निभीच ॥ तिन्हें जे जनदेतसुरभीरत्न हेमअनूप । बर्षदशलौं तौनजन रहिनरकमें सुनिभूप ॥ खातविष्ठा चर्म्मकारादिकन की नित जानि । और को जे पाप जाहिर करत दुर्म्मति ठानि ॥ तौनमानुष चर्म्मकारादिकनकी सम मानि । सुनु युधिष्ठिर धर्म्मधर बर कहत हम अनुमानि ॥ ब्रह्मचारी यतीको जे देत भोजन नाहिं । होत प्रापित जाय तेजन अशुभलोकन माहिं ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ कौन सो है धर्म्मबर अरु ब्रह्मचारय कौन । कौन सो है शौच श्रेष्ठ सुकहौ मतिके भौन ॥ भीष्मउबाच ॥ त्यागमदिरा मांसकोसोब्रह्मचारयपर्म्म । गहब जो मर्यादको सो जानिबर अतिधर्म्म ॥ बिषय ते इन्द्रीन को जो भिन्नकरिबोतात । शौचसों अतिश्रेष्ठहै बुध कहत हैं अवदात ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ कहो भीषम कीजिये किहिकालमाहीं धर्म्म । औ कहौ किहिकालमाहीं काम सेवन पर्म्म ॥ पज्झली ॥ अरु अर्थकरै किहि कालबीच । कहिये सुतात हमको निभीच ॥ भीष्मउबाच ॥ उठि प्रातकाल करिये सुअर्थ । पुनि धर्म्म करै सुनु सुत समर्थ ॥ पश्चातकाम करिये सुपर्म्म । मतिमान कहत बर हैं अभर्म्म ॥ चरणाकुलक ॥ गुरुकोपूजै द्विजको मानै । काहूमेंन बिरोधहि आनै ॥ सबसों कहै प्रेममयबानी । गहिकोमलता परम महानी ॥ मधुभार ॥ यहजौन धर्म्म है सुखदपर्म्म । बुधकहत स्वच्छसुनु सुवनधर्म्म ॥ चरणा दोहा ॥ झूठन्यायमें कपटगुरू सों चुगुली जौन । द्विजहत्यासम ये औगुणहैं कहत सुबरबुधि भौन ॥ राजाको नहिं मारिये औनहिं हनियेगाय । बालकहत्या समइनकी है हत्यासुननरराय ॥ दोहा ॥ अग्निहवनको छोड़िबो अरुश्रुति पठन अनूप । द्विजनिंदा अरु बिप्रकी हत्या सम ये

भूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ साधु बिप्र कैसेहैं होत । कहो पि-
तामह प्रज्ञापोत ॥ काहिदिये फल होतमहान । यहौ कहौ हम
सोंमतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥क्रुधसोंरहोधर्मरतपर्म । नित्यहिं बोलै
सत्य अभर्म ॥ कियेरहैं इन्द्रीबश सर्व । ऐसे द्विज ते साधु अ-
खर्व ॥ तिन्हैं दिये फल होत महान । सुनहु युधिष्ठिर नृप मति-
मान ॥ अरु अभिमान रहित द्विजजौन । जीतें सब इन्द्रीबुधि
भौन ॥ सब जीवनके मित्रमहान । शीतादिक सब सहैं सुजान॥
ऐसे जे हैं द्विजबर भूप । तिन्हैं दिये फल होत अनूप ॥ रहित
लोभसों अतिही स्वक्ष । अरु वेदज्ञ धर्मरत दक्ष ॥ सत्यमान
अरु लज्जावान । स्वकरम निरत परममतिमान ॥ ऐसेजे द्विज
सुनु भूपाल । तिन्हैंदिये फलहोत बिशाल ॥ षटअंगन सह
चारोवेद । पढ़ैजौन द्विजहोयअखेद ॥ मर्यादा पालनअरुदान ।
यज्ञ शौच अध्ययन सुठान ॥ मदिरा आमिष तजिबोपर्म । सु-
नहु युधिष्ठिरयेषटकर्म ॥ इनमेंप्रवृत्तरहतद्विजजौन । ताकोपात्र
कहत बुधिभौन ॥ ऐसेजे द्विजहैं गुणवान । तिन्हैंदिये फलहोत
महान ॥ गुणसों परमयोग्यद्विज जौन । ताहिदियेसुनुप्रज्ञाभौन॥
सहसगुणो अधिक फल होत । दाताको सुकहैं मतिपोत ॥प्र-
ज्ञाशील युक्त द्विजजौन । तारतहैं सब कुलको तौन ॥ गऊअ-
श्वधन और महान । ताहि दिये सुनु भूप सुजान ॥ उपजैशोच
न चितके माहि । कहत तुम्हैंमैं हौं अवगाहि ॥ अरिल ॥ दोषहि
रहित बिप्र कुल तारत । परमअग्नि लौं अघतृण जारत ॥पू-
रब उक्तगुणन सों जो युत । ताकी कहा बातहै सुनुसुत ॥ यहि
ते पात्र परीक्षा कीजिय । कहत सुबुधबरहैं गुणिके हिय ॥ गु-
णयुत साधुबिप्रजौ जानिय । कैसतकार दूरिसों आनिय ॥सब
प्रकार सों पूजन कीजिय । करिकै बर उतपन्न प्रेमहिय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेदानधर्म्मेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ देवअरथ है कारजगौन । कौन कालमें कीजै

तौन ॥ पितर कार्य्य सो कौने काल । करिये कहो सुबुद्धि ।बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ महिखरी ॥ सुनहु पूरबकाल माहीं देवकारज कीजिये । पितर कारज जौन सो परकालमें करिलीजिये ॥ दान सादर मनुज को मध्याह्न माहीं दीजिये । सुनियुधिष्ठिर कहतहैं मतिमानसोजुगुणीजिये ॥ मल्लिका ॥ कालहीनदानजौन। यातुधान भागतौन ॥ जेसुबुद्धि हैं महान । ते कहैं सुनोसुजान॥ जयकरी ॥ अरु लांगितहै वस्तुसुजौन । कलह पूरबककीन्हौंतौन॥ रजस्वला को दीन्हौं दान । राक्षस भागतौनहूं जान ॥ चरणा दोहा ॥ परोहोय जिहिमाहिं बारबाळुयो श्वानको होय । राक्षस भागजानिये ऐसो भोज्य कहत बुध लोय ॥ रामगीती ॥ और को उच्छिष्ट जो अरु दुष्टकीन्हों जौन । देव बालक वृद्धबिनजो कियो भोजन तौन ॥ औ कियो बिन अतिथि ऐसो जौनभोजन भूप । जानि राक्षस भाग ऐसे कहत बुद्ध अनूप ॥ कौणपनको भागप्रापित कह्यो तुमसोंतौन । दानपात्रनकीपरीक्षा सुनोअब बुधिभौन ॥ जातिबाहिर भयेजेद्विज पापकीन्हेपर्म । स्वेत कुष्ठी औ नपुंसक महामूर्ख सभर्म ॥ पर्मकुष्ठी महारोगी अपसमारी जौन । वैद्य औ देवल पुजेरू अन्धदम्भी तौन॥ वाद्यकर अरु नृत्यकर अरु गानकर जे पर्म । वृथालापी मल्लजे अरु सुनहु भूप सधर्म ॥ मखकरावैं शूद्रकोजे औ पढ़ावैं जौन । सेवकाई शूद्रकी जे करत दुर्मति भौन ॥ निमंत्रण के योग्य नाहीं विप्र ऐसे तात । शास्त्रमत सों कहत हैं वरबुद्धिजे अवदात ॥ देइ धन जे पढ़तहैं धनलै पढ़ावैं जौन । श्राद्धके नहिं योग्य दोऊ सुनहु वर बुधिभौन ॥ सर्व बिद्या वानहू जो दासिका पतिहोय। तौनऊ द्विज नाहिं निवते योग्य कह बुध लोय ॥ चोर अरुश्रुति कर्म्म सों जे रहित सुनु भूपाल । पतित अरु जे मृतक को अति दानलेत बिशाल ॥ व्याजकाजै देय जो धन अरु सुता सुतजौन। श्राद्धकेनहिंयोग्यएऊसुनहुवरबुधिभौन ॥ लेतसस्ता

अन्नको द्विज जौन महँगादेत। रहत बइयाबधुनमेंरतजौनकु-
बुधि निकेत॥ और जो निजदारके नितरहै बशकेमाहिं। सुन-
हु नृप जो करत संध्योपासनाको नाहिं॥ निमंत्रणके योग्यनाहीं
बिप्रऐसे जौन। कहत हैं अवगाहिकै बरबुद्धिके जे भौन॥ जे
निमंत्रण योग्यनाहीं श्राद्ध मखके बीच। कौनहू गुणपायतेद्विज
योग्य होत निभीच॥ कहत मैं हौं तुम्हें सो अब सुनौ तातस-
धर्म॥ व्रतहि पूरणकियो जे अरुयुक्तगुण सोंपर्म॥ परमक्रिया-
वान गायत्रीहि जानै जौन। करै तीनहुंकाल संध्या शान्तकोंकै
भौन॥ कृषीकारक होय ऐसो बिप्रजो है तात। है निमंत्रणयो-
ग्य वर बुध कहत हैं अवदात॥ मल्लिका॥ जौनबिप्रमाहिं युद्ध।
शस्त्रकोगहै सक्रुद्ध॥ होय जो कुलीन तौन। है सुनो सुबुद्धिभौ-
न॥ परम बिप्र ताहि जानि। योग्य पूजिबे सुमानि॥ ग्रामबास
वानजौन। अग्निहोत्रवान तौन॥ होय जो सुनो सुभूप। यो-
ग्य पूजिबे अनूप॥ जानिये कहै सुबुद्ध। जौनज्ञानवान उद्ध॥
तीनहूं सुकाल बीच। गायत्रीजपैनिभीच॥ भीखवृत्तिवानजौन।
बिप्र बुद्धिको सुभौन॥ पूजिबे सुयोग्य धर्म। ताहिजानि है स-
धर्म॥ प्रातकाल द्रव्यपाय। द्रव्यवान भो सचाय॥ फेरिभो
दरिद्र भूरि। द्रव्यसों भये सुदूरि॥ सोरठा॥ ऐसे प्रातःकालबिना
द्रव्यपाये परम। रहतदरिद्रबिशाल सुनहु युधिष्ठिर नृपतिवर।
फिरि मध्याह्न सु बीच बिप्र द्रव्यको पायकै। ह्वै धनवाननि
भीचपरम मोदसोंफिरतहै॥ चरणा दोहा॥ रहितहोयबिदुषादिक
गुणसोंऐसे जेद्विजतौन। होहिंअहिंसकतो निवर्तै केयोग्यजानि
बुधिभौन॥ रामगीती॥ दंभसों जे रहितहैं अरु योग्यभिक्षा लेत।
तेनिमंत्रणयोग्य द्विजहैं सुनहुभूपसचेत॥ रहितव्रतसों बणिक
कर्महि करत जे द्विज भूप। पियै जो फिरि सोमवल्ली तौन बिप्र
अनूप॥ निमंत्रण के योग्यहैं सुनि धर्मवानसुजान। कृषी आ-
दिक कर्म करिके जोरि द्रव्य महान॥ जौन आवै अतिथि ता-

को देय भोजनपर्म । सो निमंत्रण योग्य द्विजहैं सुनहु तात सधर्म ॥ वेद वरके बेचबेसों जुरो धनहै जौन । औबटोरो दारको जो द्रव्य है बुधि भौन ॥ बिप्रको नहिं दीजिये सो पितर श्राद्ध सुबीच । सुनु युधिष्ठिर कहत हैं बर बुद्धिमान निभीच ॥ स्वधा अस्तु न कहत जो द्विज श्राद्ध अन्तसुजान । अनृत गोकी शपथको अघ ताहि लहत महान ॥ अमावस्या मांस मृगको दधी घृत द्विज पर्म । मिलै तबहीं श्राद्ध समया जानि तात सधर्म ॥ दोहा ॥ विप्र श्राद्ध के अन्त में श्राद्धकार इमि बैन । बोलै श्राद्ध करावे तासों स्वधा कहो बुधि ऐन ॥ अस्तुस्वधा जबकहे बिप्रबर श्राद्धकरावै जौन । महातृप्त जबहोत पितर हैं सुनहु नृपति बुधिभौन ॥ क्षत्रीश्राद्ध अन्तकेमाहीं बिप्रकहै इमिबैन । होहु प्रसन्न सुपितर सब सुनहु नृपति मतिऐन ॥ बैश्यश्राद्ध के अन्तमें बिप्र हर्षसों छाय । अक्षय श्राद्ध सु होउ इमि बोलै सुनु नरराय ॥ शूद्र श्राद्धके अन्तमें स्वस्ति कहै द्विजपर्म । पितरन को ये बचनहैं अतिप्रिय तात सधर्म ॥ अरिल ॥ द्विजके यज्ञमाहिं सुनि भुवपति । यज्ञकार इमिकहैं सुगहि रति ॥ कहु पुण्याह सर्व तुम द्विजबर । सुनि यहबैन सर्व द्विज मतिधर ॥ दोहा ॥ जो पुण्याह कहै सुनो यज्ञ आदिमें पर्म । यह बिधिहै द्विज यज्ञकी कहत सुबुद्ध अभर्म ॥ यों न कहै सुनिये नृपति क्षत्री मखके बीच । कहिये याही शब्दको कहत सुबुद्ध निभीच ॥ होहु प्रसन्न देवइमि कहिद्विज बैश्य यज्ञके बीच । फेरिकहै पुण्याह सुनि पाण्डव नृपतिनिभीच ॥ जन्मादिक की जो क्रिया कहत सुबुध अवदात । अब हमतिहि को कहतहैं सुनहु युधिष्ठिरतात ॥ मल्लिका ॥ जातिकर्म आदिजौन । कर्म्म ते सुबुद्धि भौन ॥ तीनहूं सुवर्ण बीच । मंत्रसों करी निभीच ॥ दोहा ॥ द्विजहि मूंजकी मेखला चाही सुनि हेतात । क्षत्रिहि चाही मौरवी कहत सुबुध अवदात ॥ चहिय बाल्वजी

मेखला बैश्यहि सुनि भूपाल । तीनहुँ बर्णनके करम क्रमसों कहे बिशाल ॥ अधर्म दान पात्रको जो है अरु दाताको धर्म । अब तुमसों मैं कहतहौं सुनिये तौन अभर्म ॥ रामगीती ॥ पण के काज बिप्र सु अनृत बोलत जौन । लगत तिहिते पाप जितनो द्विजहि सुनि बुधिभौन ॥ लगत तिहिते चतुर्गुणहै अधिक क्षत्रिहि पाप । एक पणको अनृत बोले सुनहु धर्म कलाप ॥ क्षत्रिहूते अठगुणो अघ अधिक बैश्यहि होत । शास्त्र मतसों कहत हैं बर परम प्रज्ञापोत ॥ एक द्विजको द्वैनिमंत्रण भयेहोहिं सुजान । दुहु निमंत्रण माहिं पहिलो छोड़ि तृष्णामान ॥ दूसरे के जाय गृहमें करै भोजन जौन । यवीयान कहावतो है तौन सुनि बुधिभौन ॥ होय जो पहिलो निमंत्रण बिप्रको हे तात । ताहि तजिकै सुनहु जो द्विज दूसरे के जात ॥ बृथापशुहिंसा कियेको पूर्ण पातक ताहि । होतहै बुध कहत हैं बर बुद्धिसों अवगाहि ॥ प्रथम निवतो क्षत्रिको जो होय हे सुनिभूप । वैश्य को वा होय तौ बर कहत बुद्ध अनूप ॥ ताहि तजिकै दूसरे के करै भोजन जौन । वृथा पशुहिंसा कियेको होत पापी तौन ॥ देव कारजमाहिं अथवा पितृ कारज बीच । किये बिनुहिं समान जो द्विज करत भोज्य निभीच ॥ अनृत गोकी शपथकोहै लगत पातक ताहि । सुनि युधिष्ठिर शास्त्रमतसों कहत बुधअवगाहि ॥ जौन बिप्र अशौच द्विजकी पांति माहीं धाय । लोभते जो करै भोजन सुनि युधिष्ठिर राय ॥ अनृत गोकी शपथको अघ तौनहूंको होत । शास्त्रमतसों कहत हैं बर पर्म्म प्रज्ञापोत ॥ तीर्थ यात्राके बहाने जौन द्विज धनलेत ॥ यही पातकहोत तिहिको प्राप्त भूप सचेत ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ दैव कारज बीच अथवा पितर कारज बीच । महाफल किहिदिये होत सु कहोयात निभीच ॥ भीष्मउबाच ॥ यतीको उच्छिष्ट भोजन तकै जिहिकी बाम । निधन ऐसे द्विजहि दीन्हें होतहै फलमाम ॥ भोज्यही को लेत जे

धन करत संग्रह नाहिं। महाफल तिहिं दियेहोत सु कहतहौं अवगाहि॥ तस्करन की भीतिसों अति रहत पीड़ित जौन। भोज्यही को अर्थ जिहिके सुनहु नृप बुधिभौन॥ दियेऐसे बिप्र बरको होतहै फलमाम। शुद्धिसा अवगाहिकै इमि कहत बुध अभिराम॥ रहित जा अभिमान सों अरु दरिदसों दुखवान। देखिताके पाणिमाहीं अन्न सुनि मतिमान॥ शिष्य अरु सुत घेरिताकोकहैंऐसेबैंन। देहुहमको देहुहमकोअहोपितसुखदैन॥ दियेऐसेद्विजहिभोजन महाफलहैहोत। सुनियुधिष्ठिरधर्म्मधर बर परम प्रज्ञापोत॥ भोउपद्रव होय जिहिके देशमाहिंमहान। होयहरिगोजौन द्विजको द्रब्यतियसुखदान॥ ताहिदीन्हेंहोतहै फलमहत कहतसुजान। औरजोद्विजनेमव्रतकोगहे हैंसुखदान॥ तौन जोव्रत पूर्ण कीबे द्रब्यमांगे आय। दीजिये तौ ताहि धन सुनि युधिष्ठिर नरराय॥ ताहि दीन्हेंहोत है फल महाकहत सुप्रज्ञ। औ सुनौ पाखण्ड पथसों दूरिजे धर्मज्ञ॥ करत संग्रह ताहि धनको बिप्र ऐसे जौन। तिन्हैं दीन्हे होत फलहै महासुनि बुधिभौन॥ रहित सर्बहि दोषसों अरु तजे जिन धनसर्ब। उदरपालन करैंगे भगवान धर्म्म अखर्ब॥ रहत जिनके चित्त में यह बिप्रऐसे जौन। तिन्हैं दीन्हें होतहै फल महामुनि बुधि भौन॥ मांगिभिक्षा तपस्विनको देत भोजनजौन। तिन्हैंदीन्हें होतहै फल महामुनि बुधिभौन॥ महाफल बिधिदानकी हमकहीतुमसों तात। नरकस्वर्गहि जानकी बिधि सुनहु अब अवदात॥ झूठ जो है कौनहूकी प्राणरक्षाकाज। औ गुरूकेकाज जो है झूठ सुनि नरराज॥ छोड़ि इनको और झूठहि सुनहु बोलत जौन। कुपथ ह्वैकै सहत दुखको जातनरकहि तौन॥ हरतजो परदारको जो रमतपरातिय साथ। जो मिलावै परतियापर पुरुषसों नरनाथ॥ मित्रता बिश्वास करिपुनि भेदकरत है जौन। जाततेजन नरकको हैं कहतप्रज्ञाभौन॥ हरतजो पर-

द्रव्यको जो करत परधन नष्ट । कहतजे परदोष तेऊ लहतदु-
रगति कष्ट ॥ पौसराको सभाको जो करतभेद न तात । औअ-
गारहि जौन भेदततौन नरकै जात ॥ मोतीदाम ॥ अनाथहिदार
छलै जनजौन । सुनारकमाहिं परै जनतौन ॥ सुन अरु जोजन
छेदतदार । सुमित्र सुआश सुवृत्तिअगार ॥ इन्हेंहुं सु जोजन
छेदतभूप । लहैजन नारक तौन अनूप ॥ महीपतिसोंचुगलीहि
महान । करै जनजौन सुनोमतिमान ॥ सुजातनकी मरयादहि
भूरि । करैतिहिको जनजौनसुदूरि ॥ सुमित्रनकेउपकारहिजौन ।
नहींसमुझैकबहूंतनतौन ॥ महाबलसोंपरवृत्तिछुड़ाय । करैनिज
वृत्तिसुनोनरराय ॥ परैजनजौनसुनारकमाहिं । महानसुजानकहैं
अवगाहि ॥ [illegible]क ॥ अरुजेजननिन्दकवेदनके । अरुनिन्दकसाधुन
केगनके ॥ सुनिभूपतिते नरकैहिलहैं । सुमतीमतिसों अवगा-
हिकहैं ॥ रामगीती ॥ जन बिरोधी होय जिहिकी वृत्तिअरु व्यव-
हार । परतसोहौं नरकमाहीं सुनहुबुद्धिअगार ॥ दूतईसों करत
जे व्यवहार हैं भूपाल । प्रवृत निशिदिन रहतजे हिंसाहिमाहिं
बिशाल ॥ लहतजेहैंनरकको दुखमहत कहतसुजान । औसुनो
जनजौन कहि यहदेहिंगे हमदान ॥ देतफेरि न तेपरै हैं नरक
माहिं महान । आशकाहुहि देयकै पुनिकरतताहिनिरास । तौन-
ऊजन करत हैं सुनि नरकमाहींबास ॥ अग्नि अतिथि सुभृत्य
दारहि दिये बिन जनजौन । करतभोजन परत हैं जन नरक
माहीं तौन ॥ देवयज्ञहि पितरयज्ञहि करत जेजननाहिं । वेदबे-
चक वेद दूषक परत नारकमाहिं ॥ रहित चारो आश्रमनसों
रहित श्रुतिसों जौन । आपको जे वृत्तिदूषित महागहिकैतौन ॥
करत जे हैं जीविका ते परत नारकबीच । सुनियुधिष्ठिर धर्मधर
बर बुद्धिमान निभीच ॥ केशको अरु दूधकोअरु बिषहि बेचत
जेसु । परतते हैं नरकमाहीं कहैं परमबुधेसु ॥ द्विजगऊ अरु
कन्यकाके कायमाहीं जौन । करतबाधा परत हैं जननरकमाहीं

तौन ॥ अरिल ॥ अस्त्र शस्त्रको जौन बनावत । अरु बेचैंते दुरगतिपावत ॥ कांटनसों जो मगको रोंकत । नारकमाहिं होतजन सोगत ॥ बिनअपराध गुरूको त्यागत । ते जनजाय नरक में पागत ॥ तजत भृत्यको बिन अपराधहि । तौनहुँ नारकलहत अगाधहि ॥ पशुके अण्डकोशको मरदन । करत जौनजनराखत दरदन ॥ अरु जे छेदतपशुके नाकहि । तौन नरकमेंरहत सशोकहि ॥ तोमर ॥ जे प्रजासों करलेत । रक्षा न करतसचेत ॥ अरु हैं समर्थमहान । पर देत नाहींदान ॥ अवनीप ऐसेजौन। सुनु लहत नारकतौन ॥ सोरठा ॥ क्षमावान मतिवान रहतसंग बहुदिनन सों । ऐसे जनहिं अजान त्यागत जो नरकैलहत ॥ बालवृद्ध बिनजौन भोजनकरत महीपसुनु । जा[illegible]रकमें तौन दुखको सहत अपार है ॥ नरकयोग्य जनजौन ते तुमसों हम सबकहे । स्वर्गयोग्य बुधिभौन जनहैं तिनको कहतअब ॥ सब कारजके माहिं जौन सुयशवर बिप्रको । करत उलँघननाहिं तौन स्वर्ग को लहतहैं ॥ जौन करत हैं दान सत्यबोलि करिकै सुतप । करतसुधर्म महान तौन स्वर्गको लहत हैं ॥ बिद्यापढ़िकैजौन कियोप्रतिग्रहलेनकी । रक्षाकरत न तौन स्वर्गलोकको लहत हैं ॥ मल्लिका ॥ व्याधिग्रस्तजीव जौन । ताहिमोद देततौन॥ स्वर्गलोक माहिं पर्म । लेब श्रेयहैअभर्म ॥ पापपर्म भीतिकष्ट । जीवके करैं सुनष्ट ॥ तौन स्वर्गलोकबीच । मोदसोंरहैं निभीच॥ पर्मधीर क्षमावान । धर्मको करैं महान ॥ औ अचारयुक्तजौन। पर्ममोद लेततौन ॥ मद्यमांसजोनखात । तौनस्वर्गमेंबिभात ॥ औरदारजेर मैन । लोभ मोहको धरैन ॥ तौन स्वर्गलोकपर्म । ताहिलेतहैं अभर्म ॥ चामर ॥ देशग्राम औ कुटुम्बकी सहाय जे करैं । तौन स्वर्गलोक माहिंभूरि मोदसोंभरैं ॥ औ सुआश्रमीन कीसहायजेगहे रहैं । तौनहू सुलोक माहिं भूरि मोद कोलहैं ॥ वस्त्रभोज्यनीरजौन देतहैं दयालह्वै । तौनलेतस्वर्गलोकतेजमें

विशालहवै॥आनके बिवाहको करायजौनदेतहैं। तौनस्वर्गलोक माहिंभूरि मोदलेतहैं ॥ सोरठा ॥ सबहिंसासों दूरिसबके आश्रय भूतजे। तौनलेत मुदभूरि स्वर्ग लोकमें प्राप्तहवै ॥ चरणा दोहा ॥ माताकी अरु पितरकी सुआति करत शुश्रूषाजौन ॥ बन्धुनसों राखतजे प्रेमहिलहत स्वर्गकोतौन ॥ तोमर ॥ धनवान अरु बल- वान। अतिरूपमान सुजान ॥ वरपाय यौबनपर्म। जनजौनरहत सधर्म ॥ सुनितौन स्वर्गहिजात। बुधकहतहैं अवदात॥ जयकरी ॥ अपराधहुकीन्हे जनजौन।राखत परमप्रीति बुधिभौन॥ अतिही कोमल जासुसुभाव। तौनस्वर्गको जातसचाव॥ जो सेवाकरिकै सुखदेत। औरहि तौन स्वर्गकोलेत ॥ जौनदेत सहसनको दान। सहसनको भोजनसुखदान ॥ जे सहसनकीकरें सहाय। तेसुख लेत स्वर्गमेंजाय ॥ अरु सुवरणको जोदातार। गऊदेत जोपरम सुढार ॥ वरजे बाहनदेत सुठान। अरु सादरजे देत बिमान। तेजनजात स्वर्गको पर्म। सुनहु युधिष्ठिर नृपति सधर्म ॥ कन्या ब्याहमाहिंजन जौन। दासी दास द्रब्य देतौन ॥ स्वर्गहि जात तात सुनिस्वक्ष। शास्त्रमतेसों कहतसुदक्ष॥ बागलगावत जौन सुढार। औबनवै मनमाहिं अगार ॥ औ सु बनावै बनमें कूप। घाटबनावै परमअनूप॥ अरु सुपौसरालावै चारु। तौनलहतहै स्वर्गसुढारु॥ शुद्धसभूमिदेतजेग्राम। बासबनायदेतअभिराम॥ जौन बस्तुमांगे जनआय। तौनहिं देतसुनोनरराय॥ पर्मसधर्म सुजनहैंजौन। पावततौनस्वर्ग सुखभौन॥ करिउत्पन्न धान्यरस पर्म। देतजौन दिवलहत अभर्म ॥ जन्महोयकौनहुं कुलबीच। शतबत्सर जीवै सुनुमीच ॥ जेहिके बहुतहोहि सुतस्वक्ष। आप सुदयावानअति दक्ष॥ जीतै क्रोधहि होय महान। तौन स्वर्ग कोजात सुजान॥ पूरबऋषिन्हकहो जो पर्म। परलोकार्थ सुदान सुधर्म ॥ तुमसोंकहे तौन हमसर्ब।सुनहुं धर्मधर नृपतिअखर्ब॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभाषायांदानधर्म्मेत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ बिनहने ब्रह्महत्या होतिहै किहिभांत । कहौ हमसे कृपाकरिकै भूमिपति अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ ब्यास को बुलवाय पूरब हम सुबूझो जौन । सुनो मनको लायकै हम कहतसो बुधिभौन ॥ हम सुबूझो ब्याससों इमि सुनहु हे ऋषि राय । बिनहनेहू ब्रह्महत्या होतिहै किहिभाय ॥ बैनमेरे श्रवण करिकै धर्मवानसुजान । कहतभे इमिब्यास मोसों सुनहुनृपमति-मान ॥ आपुही बुलवाय भिक्षा काजद्विजको चाहि । करैनाहीं फेरिलागै ब्रह्महत्याताहि ॥ होय जो मध्यस्थ ब्राह्मण कहै कछु नहिं बैन । हरैताकी वृत्तिको जो मना दुर्मति ऐन ॥ सुनु युधि-ष्ठिर होतहै सो ब्रह्महत्यावान । कहौहै अवगाहि मोसों ब्यास वर मतिमान ॥ परमप्यासी गऊआवै दूरिते जलपास । जो न पीवनदेतहै जल महा दुर्मतिरास ॥ ब्रह्महत्यावान सो जन होत है भूपाल । औसुनो जो दूखतोहै वेदस्मृतिहि बिशाल ॥ बि-नाजाने होत है सो ब्रह्महत्यावान । भईमहती होयकन्या रूप-वन्ति महान ॥ खोजिकै बरयोग्य कन्या जो न करत बिवाह । ब्रह्महत्यावानसो जनहोतहै नरनाह ॥ देतद्विजकोशोच ऐसोहै अधर्मीजौन । ब्रह्महत्यावान सुनु नृपहोतहै जनतौन ॥ अन्धको अरु पंगुजड़को हरतहैं धनजौन । ब्रह्महत्यावानसो जनहोत सुनु बुधिभौन ॥ ग्राममें अरु बिपिनमें जो अग्निलावतअज्ञ । ब्रह्महत्यावानसो जनहोत सुनु नृपप्रज्ञ ॥

इतिशांतिपर्बणिदानधर्मेब्रह्महत्याबर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिल ॥ जिनतीर्थनको दरशन अतिबर । हैकल्या-णक परम सुमतिधर ॥ औ तिनको जो श्रवण समानसु । है कल्याणक परम महानसु ॥ चरणादोहा ॥ पुण्यतीर्थ ऐसे जे भूमें तिनहिं सुननकीतात । इच्छाभई हमारेही में कहो आपु अव-दात ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ कहे गोतम ऋषिहि तीरथ अंगि-रस मुनिपर्म । सुनहुसो तुम सुननकेही योग्य सुवन सधर्म ॥

सुने उत्तमधर्म तुमको प्राप्त हैहै तात। तपोबनगत महामुनिबर
अंगिरस अवदात॥ भयेबूझत तिन्हैं गौतमऋषी इमिब्रतवान।
अंगिरसमुनि सुनहुसर्बहितीर्थमाहिं महान॥ होतसंशयधर्मको
है सुवनकीसो सर्व। भईमो मनमाहिं इच्छा कहो सुमुनि अ-
खर्ब॥ होतहै फल कहा तीरथमाहिं कीन्हेस्नान। अन्तकाल
सुभयेते फल कहाहोत सुजान॥ महागौतम ऋषीके ये बैन
सुनिकैपर्म। भये कहत ते अंगिरस मुनि ज्ञानवान अभर्म॥
मूर्त्तिमालिनि चन्द्रभागा बितस्ताके बीच। सप्तवत्सर निरा-
हार सुकरै स्नाननिभीच॥ तोमर॥ मुनिकी सु जो गति पर्म।
जन ताहिलेत अभर्म॥ सोरठा॥ काशमीरकी जौन नदी सि-
न्धुमें मिलति है। स्वर्ग लहतहैं तौन तिनमें जोजन न्हातहैं॥
जयकरी॥ नैमिषार पुष्कर सुप्रभास। इन्द्रमार्गवर धर्म सुरास॥
अरु देविकानदी अतिचारु। स्वर्ग बिन्दुशुचि तीर्थ सुढारु॥
इनमें जो जन करत स्नान। सो बिमानपर चढ़ि सुखदान॥
जायस्वर्गमें आनँदरूप। लहत अप्सरा पर्मअनूप॥ कीरति
करति अप्सरास्वक्ष। तिहिकी सुनुभूपति अतिदक्ष॥तीर्थ हिर-
ण्य बिन्दकेबीच। करैजौन जन स्नाननिभीच॥ अरु बरतीर्थ
कुशेशय जौन। तिहिमें करै स्नानबुधिभौन॥ कल्मष दूरिहोत
हैं सर्व। लहतधर्म हैं पर्म अखर्व॥ रामगीती॥ इन्द्रतोया नदीहै
बर गन्धमादन पास। सदानीरा औ कुरंग सुतीर्थ आनँद
रास॥ स्नानतिनमें कियेते अरुतीन रजनी बास। बिगत क-
ल्मष पुण्यजनसो करत दिवमें बास॥ अश्वमेध सुयज्ञकोफल
होत जनको पर्म। सुनु युधिष्ठिर भूपबर बुधज्ञानवान अभर्म॥
हरिद्वारसुनीलपर्वत औ सुकनखल स्वक्ष। कुशावर्तक औ
सुबल्वक तीर्थजे हैं दक्ष॥ कियेते सुनु स्नान तिनमें तीन रज-
नी बास। स्वर्गप्राप्तसुहोतहै बर पर्म आनँदरास॥ ब्रह्मचारी
क्रोधजित अरुसत्यमान सुजौन। अपां हृदबरतीर्थमाहा स्नान

कीन्हें तौन ॥ अश्वमेध सु यज्ञकेबर फलहि प्रापतहोत । सुनहु शुचिब्रतवान भूपतिपरम प्रज्ञापोत ॥ गंगउत्तरबाहनी जहँभई होहि सुजान । मासएकव्रत करैतामें जौनकरिकै स्नान ॥ सिद्धि को सो होतप्रापत मासहीमें पर्म । सुनहु पाण्डव नृपति बरबर ज्ञानवान सधर्म ॥ महाह्रदमें कियेते सुनिस्नान त्रयनिशि बास । नशतद्विज हत्यादिपातक लहत आनँदरास ॥ स्नान कीन्हेंस्वक्ष बलको तीर्थमाहींपर्म । औ सु कन्याकूप माहींकिये स्नान सधर्म ॥ होतिकीरति देवतनमें चन्द्रिकासीचारु । पर्म निर्मल सुयशसों अतिलसत बुद्धि अगारु ॥ किये स्नानसु देविकाबर सरितमें मतिमान । तथा सुबरिहदमाहीं कियेस्नान सुजान ॥ लहतजन परलोक माहीं तेजरूप सुढार । देवतनमें रहत हैं लहि स्वर्गमाहिं अगार ॥ महा गंगामाहिं कृतिकांगार्क माहीं पर्म । करे ब्रत एक पक्ष करिकै स्नान सुनहुसधर्म ॥ जाय निर्मल देहपावै स्वर्ग आनँदधाम । सूर्य्यकोसो तेजपावै रूप अति अभिराम ॥ बैमाणिकतीर्थमाहीं स्नान करिकै पर्म । किङ्कणीकाश्रमेजाय सुकरै स्नान सधर्म ॥ सुनहुंसो जन स्वर्गमें अप्सरन साथ सुढार । हर्षसों अतिशय करिकै करैपर्मबिहार ॥ प्राप्तह्वैकै कालिकाके धाममाहीं जौन । बिपासामें स्नान करिकै बसैत्रय निशितौन ॥ लहतनाहिं संसारको जो क्लेश हैअतिउद्ध । बसत है सुरलोकमें शुचिलहि शरीरहिशुद्ध ॥ प्राप्तकृतिका थानमें ह्वै स्नान करिकै स्वक्ष । करै पूजन शम्भुको तौ लहै स्वर्गहि दक्ष ॥ महा पुरमें न्हायजे जन करत त्रयनिशि बास । लहत भयनाहिं चराचरको तौन सुनु बुधिरास ॥ देषदारु सु बिपिन माहीं स्नानकैकै पर्म । सप्त निशि जेबसैं ते जन लहैं स्वर्ग अभर्म ॥ बरवादोहा ॥ सरस्तम्ब अरु कुशस्तम्ब शुचि द्रोण सर्मपदबीच । जेजन करतस्नान स्वर्गतलहिकरि रहत निमीच ॥ चामर ॥ जनस्थान चित्रकूटमाहिं जौन न्हात हैं । स्व-

च्छदेह पायतौनस्वर्गमेंबिभात हैं॥ देवि श्यामिका सुथानबीच जौन जायकै। एक पक्ष वृत्त नेमसों करै सचायकै॥ मधुभार॥ गन्धर्व भोग। ते लहत लोग॥ सुनु नृप महान। बरसुमतिवान॥ चामर॥ कौशिका नदीसुबीच जौन न्हात जायकै। शान्तभावलेय लोल भावको बिहायकै॥ एकविंश रात्रिबास कैसुब्रत्तको करै। तौन स्वर्गलोकमाहिं भूमि मोदसों भरै॥ औ मतंग बापिका सुमाहिं जौन न्हातहैं। एकराति माहिं तौनसिद्धि लेबिभात हैं॥ स्वर्ग तीर्थ नैमिषार माहिं एक मासते। बास कै करै सनान छोड़िकै दिलासते॥ तोमर॥ नर मेधको फललेत। सुनु भूप पर्म सचेत॥ अरिल॥ गंगाह्रद उत्पला बन बर। तिनमें जे जन न्हात सुमतिधर॥ एकमास ब्रत करिकै पूरण। लहत अश्वमख फलते तूरण॥ गंगा यमुना कालंजर गिरि। इनमें एकमास ह्वैकै थिरि॥ करत सनान शांतगहि जेजन। दश हयमख फल लहत सुते जन॥ न्हाये षष्टिह्रदमें निर्म्मल। अन्नदानतेहोतअधिकफल॥ सुनहुयुधिष्ठिरनृपतिसुमतिधर। तीरथ परम प्रयाग माहिं बर॥ तीनकोटि तीरथ हैं आवत। अरुदश सहससुफल सों भावत॥ सोरठा॥ ऐसो जो अवदात तीरथ पर्म प्रयागहै। माघमासमें न्हाततिहिमें ते स्वर्गैलहत॥ जयकरी॥ बैवस्वत तीरथकेबीच। अरु पितराश्रम माहिं निभीच॥ करत जौन जन जायसनान। तौन होत शुचिपर्म सुजान॥ तिमिहीं किये मरुद्गण माहिं। होत पवित्र कहौं अवगाहि॥ ब्रह्म सरोवर माहीं न्हाय। पुनि बर सुरसरितामें जाय॥ करिकै स्नान होय अतिस्वक्ष। मास एकब्रत कीन्हें दक्ष॥ चन्द्रलोकको प्रापतहोत। सुनहुं युधिष्ठिर प्रज्ञापोत॥ अष्टावक्र तीर्थमें न्हाय। पुनि उत्पातक माहीं जाय॥ करि सनान द्वादश दिनपर्म। बसिकै कीन्हें ब्रतहि सधर्म॥ नर मखको फल प्रापत होत। सुनहुं युधिष्ठिर प्रज्ञापोत॥ रामगीती॥ गया तीरथ माहिं उत्तमप्रेताशि-

लपर पर्म। ब्रह्महत्याछूटतीहै एक तात सधर्म ॥ ब्रह्महत्याद्वितिय छूटति प्रेत पर्वत बीच। विष्णुपदमें तृतिय छूटति स्वच्छ होत निभीच ॥ अग्निपुर में बासकीन्हे होतउज्ज्वलपर्म। तदा वर करवीर पुरमें होत स्वच्छसधर्म ॥ देवह्रद सुबिशालमें अस्नानकीन्हे तात। होतहै जन ब्रह्मपदको प्राप्तअति अवदात॥ महानन्दा तीर्थ अरु आवर्त नंदाजौन। इन्हें सेवत ह्वै अहिंसक तौन सुनु बुधिभौन ॥ लहत स्वर्गहि अप्सरनमें करत हैं सुबिहार। लसत तिहिको सुयशसुमनस माहिं स्वच्छसुढार ॥ पूर्णमासी कार्तिकीमें उर्बसीमें न्हाय। करैं पुनि लोहित्य तीरथ माहें स्नानसचाय ॥ होतहै फल पुण्डरीक सुयज्ञको हे तात। रामहर्द सुबिपासामें किये स्नान बिभात ॥ होत कल्मष दूरि अरु वर लहतमख फल पर्म। महाह्रदके माहिं करिकै स्नान होय अभर्म ॥ मासएकबृत करैं करिकै चित्तको अति शुद्ध। लहै द्विज जमदग्निकी गति सुनहु नृपबुध उद्ध ॥ ह्वै अहिंसक किये ते तप बिंध्यगिरि पर पर्म। लहतएकहि मासमें जन सिद्धता तसधर्म ॥ नर्मदा अरु सूरपारकमाहिं कीन्हें स्नान। राजश्रीको लहतहैं अरु पर्म तेज महान ॥ जम्बु मारगतीर्थ माहीं स्नानकै ह्वै स्वक्ष। मासतीन सुवन से ते जन लहतासिद्धिसुदक्ष ॥ जयकरी ॥ कोकामुख तीरथमें न्हाय। पुनि अंजलिकाश्रममें जाय ॥ न्हायतहां अति उज्ज्वलहोय। बसै कछुकदिन मुद सों भोय ॥ फेरिकुमारी तीरथबीच। जायकरैसुनु स्नाननिभीच॥बासकरै करि शाकअहारु। पहिरैचीर बल्कलहिचारु॥ ऐसेजे जनहैं सुनुभूप। तौनस्वर्गको लहत अनूप ॥मधुभार॥ क्षेत्र सुप्रभास। बर धर्मरास ॥ तिहि माहिं स्वक्ष। लहि अमादक्ष॥ जनजौन न्हात। शुचि ह्वै बिभात ॥ उज्जान पर्म। तीरथ सधर्म ॥ तिहि माहिं जौन। जनन्हाततौन॥ बर धर्मवान। होवत सुजान ॥ कल्मष अखर्ब। मिटि जात सर्ब ॥ कुल्यासनान।

करिसह विधान ॥ कीन्हें सुजाप । सुनि बुधि कलाप ॥ हयमख सुढारु । फल तासु चारु ॥ सो मिलत भूप । मोदद अनूप ॥ पज्झली ॥ पिण्डारक तीरथ परम स्वक्ष । तिहि माहिं स्नानकरि कै सुदक्ष ॥ यक निशाबास कीन्हे अनूप । अग्नीष्टोम मखको सुभूप ॥ फलमिलत सर्व अघछूटि जात । अवदात सुयशजग में बिभात ॥ इहिभांति ब्रह्मसर माहिं जाय । कीन्हें स्नानसुनु भूमिराय ॥ मखपुण्डरीकको फलमहान । सोमिलत आनिअ-तिमोद दान ॥ मैनाक अचलपर जायन्हाय । संध्यासुकरै चि-तको लगाय ॥ क्रुध काम जीति यकमास बास । कीन्हें महीप सुनु सुमति रास ॥ फल सर्ब मखनको मिलत पर्म ।बरकान्ति होति शुचिमति अभर्म ॥ कालोदक तीरथ नन्दिकुण्ड । तिन के सनान ते अघघमण्ड ॥ मिटिजात होत निर्मल शरीर ।सुनु सुवन धर्मधर पर्मधीर ॥ नन्दीश्वर दर्शन ते महान । अरुस्वर्ग मार्ग में किये स्नान ॥ मिटिजात तात कलमष बिलंद । जन स्वर्ग जात ह्वैकै अदंद ॥ विख्यात अचल हिमवान भूप । सबरत्ननको आकर अनूप ॥ सेवत सुजाहि तपनिद्धिसिद्ध । रमणीय पर्म पीवनप्रसिद्ध ॥ तहँ पूर्ण प्रीतिसों देवपूजि ।अति ह्वै प्रसन्न बहुभांति कूजि ॥ करिकै निज श्राद्धहि सविधि पर्म । जीवन अनित्यजानै सुभर्म ॥ जे तजत देह सुनु सुमति ओक । ते लहतसनातन ब्रह्मलोक ॥ चंचला ॥ काम क्रोध लोभ मोह जी-तिकै मनुष्य जौन । तीर्थवास को करै सुनो सु तात बुद्धिमौन॥ ताहि होत प्राप्त और पाप सर्ब छूटिजात । पुण्यवानहोयतेज-वान भानलौं बिभात ॥ चरणाकुलक ॥ और अगम्य तीर्थहैं जेते । लायध्यान से तीरथ तेते ॥ करि स्नानकरै तिनकीपूजा॥तिहिसों पुण्यबान नाहिं दूजा ॥तीरथसेबन कल्मषहारी । यज्ञफलद अति ही सुखकारी ॥ उत्तमपरम स्वर्गको दानी । महिमा तासुनजाति बखानी ॥ सोरठा ॥ यह श्रुतिको सिद्धान्त कह्यों तोहिं हम

तात जो । जेजनसाधु नितान्त तिनसों कहिबे योग्यहै ॥ शिष्य मित्र शुचिपर्म धर्मसहित जो होयतौ । सुनुहेतात अमर्म ताहू कोहु सुनाइये ॥ सुऋषि अंगिरा दान्त ज्ञानवान यतवानबर । यह जो श्रुति सिद्धान्त बूझेगौतमसों कह्यो ॥ मधुभार ॥ पावन महान । यहहै सुजान ॥ जे भजत याहि । बिधि सहितचाहि ॥ ते स्वर्गलोक । आनन्द ओक ॥ पावत अनूप । निजजानि भूप ॥ अरु सुनत जौन । यहिको सु तौन ॥ उत्तम अनूप । कुलमाहिं भूप ॥ लै जन्मस्वक्ष । सुखलेत दक्ष ॥

इतिश्रीभाषायांमहाभारतदर्पणेदानधर्म्मेपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रामगीती ॥ पराक्रम में शक्र ऐसे बलीबीरमहान । क्षमामाहीं बिधातासे तेजमें जिमिभान ॥ गिरे अर्जुन बाण करिकै खेत माहीं पर्म । महाबीरन माहिं जे अतिश्रेष्ठ स्वच्छसधर्म ॥ सहितबन्धुन नृपयुधिष्ठिर पास तिनकेआय । सेवते हैं परम ऐसे भीष्म सुभटकराय ॥ देखिबेको तिनहिं आये महा ऋषि तपवान । तेजपुंज सुअग्नि ऐसे ज्ञानवान महान ॥ अत्रिभृगु सुपुलस्त्य गौतम पुलहक्रतु सम्बर्त । अंगिरस अरु सुमति जेशुचितेजसों अघहर्त ॥ शिरास्थूल वशिष्ठ गालव च्यवन काश्यप व्यास । प्रमति बिश्वामित्र दम अरु शुक्र तेज सरास ॥ रैभ्यत्रित अरु जीवक्रीत सुभरद्वाज सुजान । सुधन्वा पर्बत सुनारद तेजवान महान ॥ बितभूकृश धौम्यएकत आदि दै ऋषिराय । भये आवत देखिबेको भीष्महि सहचाय ॥ मोतीदाम ॥ सबन्धु युधिष्ठिर भूप सुजान । ऋषीन्हको पूजत भो तपवान ॥ ऋषीवर पूजित बैठिसचाय । कथाशुचि भीषम की सुखदाय ॥ सबै करते सुभये अतिस्वक्ष । सुनोजनमेजय भूपतिदक्ष ॥ कथासुनि तौन सुभीषमबीर । भये अतिपावन मोद गँभीर ॥ सुआपुहि मानत भे स्वरगस्थ । तदन्तर पर्म ऋषी सुसमस्थ ॥ सुअन्तरध्यान भये तिहिथान । सबैजन देखिरहे

मतिमान ॥ चरणाकुलक ॥ अन्तर्ध्यान सबैऋषिभये। तऊ युधिष्ठिर मुदसोंरये ॥ पुनि पुनि करत प्रशंसा नीकी। करिकै प्रगट प्रीति शुचिहीकी ॥ ह्वै प्रसन्न भीषम के पासै। बैठतभे पाण्डव सहुलासै ॥ देखि ऋषिन को तपस प्रभावा। पाण्डवके हिय विस्मयछावा ॥ तिन ऋषीनको भाग्यअनूपा। चिन्तत बन्धु सहित वरभूपा ॥ भीषम सह पाण्डव वरज्ञानी। कथा ऋषिन की सुभग महानी ॥ कहतभये अतिही मुदपागे। तिनके ध्यान माहिं अनुरागे ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कथाअन्तमें पाण्डव भुवपति। भरेहर्ष सों धरे परमरति। भीषम के चरणन में अतिवर। नायमाथ को परम सुमतिधर ॥ बूझत भये सु प्रश्नधर्म को। पर्म्म मनोहर धामशर्म को ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कौनदेश है श्रेष्ठ महाना। कौनअचल अरु कौनसुथाना ॥ कौनश्रेष्ठ सरिताहैं जगमें। नशतकलुष अतितिनके मगमें ॥ कहौपितामह हमको गुनिकै। जासोंसमुद होहुँमैं सुनिकै ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि सुप्रश्नमें सुनुवरभूपा। कहत एकइतिहास अनूपा ॥ रामगीता ॥ शीलवृत्ति द्विजअरु सिद्धको तिहिमाहिंहै सम्बाद। सुनुयुधिष्ठिर भूपसों इतिहास छोड़ि प्रमाद ॥ भूमिकी परदक्षिणाकै पुनःपुन एकसिद्धि। गेहमें शिलवृत्ति द्विजके प्राप्तभो तपनिद्धि ॥ सिद्धि की शिलवृत्ति द्विजवर करीपूजा पर्म्म। होयहर्षित बसतभो निशिमाहिं सिद्धसधर्म्म ॥ प्रातउठि शिलवृत्ति द्विजवर प्रातकृतकरि पर्म्म। सिद्धके भो निकट आवत सुनहुँ तात सधर्म्म॥ सिद्धअरु शिलवृत्ति.द्विजमिलि बैठि सुखसह उद्ध। कथाकहते भये श्रुतिमतमई सुन्दर शुद्ध ॥ अन्तमाहीं कथा के शिलवृत्ति विप्र सुजान। यत्नसोंकरि सामुहे वरसिद्धको मतिमान॥ तुम युधिष्ठिर भूप बूझ्यो प्रश्नहमसों जौन। तौनप्रश्नहिं करत भो द्विजज्ञानको वरभौन ॥ शिलवृत्तिरुवाच ॥ कौनसोहै श्रेष्ठ आश्रम देशपर्वत पर्म्म। कहोहमसों कृपा करिकै सिद्ध स्वच्छ

सधर्म्म ॥ सिद्धउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ श्रेष्ठ देश गिरि आश्रमसोई । जिहिमें गङ्गा प्रापतिहोई ॥ जोफल सुरसरि पूजनकीन्हे । सो न मिलतहै दानहुँ दीन्हे ॥ ब्रह्मचर्य्यसों सो फलनाहीं । मिलत सुबिप्रकहा अवगाही ॥ कीन्हें तपअरु यज्ञमहाना । मिलत नहीं फलतौन सुजाना ॥ गंगाजलको जो जन परसै । तौनस्वर्ग में रहत सहरसै ॥ गिरत स्वर्गते कबहूं नाहीं । द्विजवर सत्य मानि मनमाहीं ॥ होत गंगजलसों सबकाजा । निज मनुजन को सुनुबुधिराजा ॥ भूमिछोड़ि ते जन बड़भागे । बसत स्वर्ग में मुदसोंपागे ॥ जे जन पूरब बयमें भारी । कीन्हें पाप होहिं दुखकारी ॥ ते पुनि जो गंगाको ध्यावैं । तौ अति उत्तम गतिको पावैं ॥ गंगास्नान किये फलजैसो । शत यज्ञनसों मिलत न तैसो ॥ उदयसमयमें जिमि तम हरिकै । सोहत भासमान द्युति करिकै ॥ तिमिहीं जे गंगामें न्हावैं । दूरिपापको करिकै भावैं ॥ जितने गंगा महिं मनुजनके । रहत लोमअरु अस्थिसुतनके ॥ तितने सहसवर्ष दिवमाहीं । पूजितरहत सुरनके पाहीं ॥ तरुबिन कुसुम लसत नहिंजैसे । दिश अरु देश गंग बिन तैसे ॥ शशि बिन लसति न रजनी जिमिहै । देश दिशा गंगा बिन तिमिहै ॥ तोमर ॥ बरबर्ण आश्रम धर्म्म । जिमिसोह तन बिन धर्म्म ॥ अरु सोम बिन जिमियज्ञ । नहिं लसतहैसुनु प्रज्ञ ॥ तिमि सोहत न जग सर्ब । बिन गंग भूपअखर्ब ॥ जिमि अर्क बिन आकाश । नहिं लसत सुनु बुधिराश ॥ बिनशैल भूमि महान । नहिं ज्यों लसै मति मान ॥ सुर निम्नगा बिन देश । तिमिहीं न लगत सुबेश ॥ चरणादोहा ॥ तर्पमानजे गंगा जलसों तीन लोकके बीच । धर्म्म तृप्तिको प्राप्तहोत ते सुनुबर नृपति निभीच ॥ जयकरी ॥ रबिसों तप्त गंगजलजौन । ताहि पियत जो जन बुधिभौन ॥ तिहिको जावक ब्रत ते धर्म्म । अधिक होत फल सुनहुं सधर्म्म ॥ अरिल्ल ॥ जौन करत है ब्रत च-

न्द्रायन। अरु जो गंगास्नानसचायन॥ ते दोऊ समहैं धौं
हैं नहिं। होत महा सन्देह हिये माहिं॥ दोहा॥ खरो रहत युग
सहसजो एक पांवसों पर्म्म। औ सुरसरिमें न्हातजो एकमास
सहधर्म्म॥ जयकरी॥ ते दोऊ सम हैं की नाहिं। है सन्देह महा
हियमाहिं॥ दोहा॥ शिरनीचोकै युगअयुत भूलत हैं जनजौन।
तिहिते अधिकी श्रेष्ठहै गंगाश्रितहै तौन॥ अग्नि माहिं प्रा-
पत भये भस्महोत जिमि तूल। तिमि गंगाश्रित जननको पाप
होत निरमूल॥ अरिल॥ सुखदा उपायका सहित छाय। हेरत
सहाय लहि ज्ञानभाय॥ ऐसे सुजीव तिनको सुजान। अन्य
न उपाय गंगा समान॥ रामगीती॥ दरशते जिमि गरुड़के बर
सर्प निर्बिष होत। तिमिहिं गंगा दरशते मिटि जातअघ बुधि
पोत॥ कियेते अतिपापको जन नहिं प्रतिष्ठित जौन। होत
सुरसरि शरणते हैं जन प्रतिष्ठित तौन॥ परत जे जन नरक
माहीं किये कल्मष भूरि। सुरसरीकेध्यानते ते होत अघतेदूरि
सुरसरीके सामुहं जन जातजे हैं पर्म। सुरन सह सुरराजताको
कहत स्वच्छ सधर्म॥ बिनय अरु आचारते जे हीनजन अघ
रूप। सुरसरीकेशरणते ते होतस्वच्छ अनूप॥तृप्तिकारक सुरन
को ज्यों अमृतहै सुखदान। नरनको तिमि सुरसरीको सलिल
है मतिमान॥ मोतीदाम॥ क्षुधाकरि आरत बालकहोय। उपा-
सत मातहि ज्यों सुखभोय॥ सुनौतिमि श्रेय मनोरथ काज।
उपासत रंगहि जीव सुसाज॥ सबै अस्थाननमें जिमि पर्म।
स्वयम्भुवनाथ सुश्रेष्ठ सधर्म॥ नदी मधिमें तिमि श्रेष्ठअनूप।
सुगंगहि जानि महा मुदरूप॥ सुरादिकको जिमि जीवनमूल।
धरा अरु धेनु समोद अतूल॥ सबै तिमि जीवनको मतिमानि।
सुजीवनमूलतु गंगहि जानि॥ पियूषहिं ज्यों सुरपीवतपर्म। म-
हा मुदसों सुनु बिप्र सधर्म॥ सुजह्नु सुता जलको तिमि चाहि।
सबै जन पीवतहैं अवगाहि॥ चरणादोहा॥ देवधुनीकी सिकता

तासों लपटे हैं जनजौन । दिवबासीसे आपुहि मानत ते जन सुनु बुधिभौन ॥ भुजंगप्रयात ॥ सुनोजाह्नवी तीरकी मृत्तिकाको। धरैते धरैं भानुकीसी प्रभाको ॥ नशै पापभारी बसैं पुण्यहीमें। लसैं स्वर्गमें कीर्त्तिको कै महीमें ॥ त्रिसोताहि जो पर्शिकै बायु चालै । महा पापका तौन नाशै बिशालै ॥ मधुभार ॥ दुर्बिसन पर्म । अरु अति अधर्म ॥ तिनमाहिंजौन। रत कुमति भौन ॥ दुर्बिसन तासु। अरु कलुषरासु ॥ हरिलेत ताहि । सुर सरित चाहि ॥ सुरसरित तीर । मुदमें गँभीर ॥ जे करत राव । पक्षी सचाव ॥ गन्धर्ब जौन । तिन सम न तौन ॥ हंसादि स्वक्ष । पक्षी सुदक्ष ॥ शुचि बोलि बोल । करि करि कलोल ॥ जिहि माहिं पर्म । नाचैं अभर्म ॥ सुरसरित कूल । ऐसो अतूल ॥ सुखको सुधाम । अतिही ललाम ॥ तहँ सुमुनि बर्ग । गे भूलि स्वर्ग ॥ रामगीती ॥ होत जो मुद सुरसरीके पुलिनमाहिंमहान । होत सो नहिं स्वर्गमाहीं प्राप्तसुनु मतिमान ॥ बचन मन अरु कर्म्मसों जो जनितपाप बिलन्द । ग्रसत तिहिसों जौन जन हैं सुनहुं बिप्र अमन्द ॥ तौनजन लखि सुरसरीको होत पावन पर्म । है न इहिमें तौन संशय सुनहुं बिप्र सधर्म ॥ दरशते अरु परशते अरु पिये ते जलस्वक्ष । करतिपावन पर्म जनको सुर-सरी सुनिदक्ष ॥ सुरसरीकी कीर्त्तिबरको सुनतहैं जन जौन । मात पितुके कुलहि तारत तौन सुनि बुधि भौन ॥ सुरसरीको लखत जो नहिं जाय सुनि मतिमान । तौन जन है मृतक अरु जड़ पंगु अन्धसमान ॥महाऋषि अरुदेव तिहिको भजतनित्य सप्रेम । सुनहु ऐसी सुरसरीको भजै कौन सनेम ॥ ब्रह्मचारी बान,प्रस्थ सुयती अरु गृहवान । रहत गंगा शरणमें हैं नित्य सुनु मतिमान ॥ लहै ताकी शरणको नाहिं कौन ऐसो अज्ञ । लखत जाको होतहैं जन देवसम सुनिप्रज्ञ ॥ चंचला ॥ अन्त काल माहिं जौन गंगाको भजै सुजान । दक्ष ताहि पर्मस्वच्छ

प्राप्तहोत है सुथान ॥ जन्मते सु अन्तकाललौं भजै सप्रेम जौन। व्याघ्रआदि जीवकी सुभीतिको लहै न तौन॥ पापहोत नष्ट सर्व पर्मकष्ट छूटिजात। तेजसे अखण्डहोय मारतण्डलौं बिभात॥ माथमें धरीसुजाहि शंभु मोदसों अखर्ब। पूजते सप्रेम हैंसनेम ताहिदेवसर्ब॥ गंगके बियोगते यथा सुहोतहै कलेश। मात तात पुत्रदारके बियोगते बुधेश॥ होतहै तथा कलेशनाहिं विप्रसत्यमानि। लेतहैं मुनीशमोद तासु कूलबासठानि॥ तीन पंथचालिकै तिहूँ सुलोकके अमन्द। तीनहू सुलोकबीच कीर्त्ति कोकरीबिलन्द॥ होतज्यों प्रसन्नदृष्टि पूर्णचन्द्रको सुदेखि।होत त्यों मनुष्यकी सुदृष्टि जाह्नवीहि पेखि॥ गंगको बिलोकि चित्त होत ज्यों प्रसन्नपर्म। कौनहू पदार्थ पाय त्यों न होतहै सधर्म॥

रामगीती ॥ सुरन माहिं सुरेश जैसेनरनमाहिं नरेश। नखतमें नखतेश जैसे श्रेष्ठ है सुबुधेश॥ तिमिहिं सरितन माहिं श्रेष्ठासुरसरीहै पर्म। जाहि परशे होत जनकृत कृत्य हैं बिनभर्म॥ सुरसरीको भक्ति गहिकै जपत हैं जनजौन। सुरसरीको लगतप्रियहैं तौन सुनि बुधिभौन॥ राजतीहैं लोक तीनहुं माहिं कीरति जासु। सेयजाको होतहै कृतकृत्यजन बुधिरासु॥ भूमिबासी व्योमबासी स्वर्गबासी सर्ब। करत गंगास्नान हैं अतिगहेमोद अखर्ब॥ प्राप्तकीन्हे सगर नृपके सुवन जिहि दिवमाहिं। जाय जिहिके निकटमें जनके नहीं हर्षाहिं॥ सुरसरीकी लहरि सों निर्दोषभे जनजौन। तौनराजत प्रभासोंहैं भानुलौं बुधिभौन॥ देहछोड़त जौन जनहैं सुरसरीमें जाय। देवसमते होयकै नितरहत मुद सों छाय॥ अंधजड़ धनहीनहूंकी करति इच्छासिद्धि। मोददा सुरसरीकेसम और नाहिं बुधि निद्धि॥ लहतजे जन सुरसरीको शरण हैं अवदात। मोद पागे जायकैते स्वर्ग माहिं बिभात॥ करतदर्शन सुरसरीको जौन बसिकेकूल।ताहि आनँद देतहैं सुरभरे प्रेम अतूल॥ प्रातआई भूमिमेंहै जाह्नवी

सुखदान॥होतहै अतिपुण्ययातेप्रातकीन्हेस्नान॥लोकतीनोंसुर-सरीसोंहोत भूषितपर्म॥ होतपावन सर्बइनते सुनहुंबिप्र सधर्म॥ सुरसरीके शरणमाहीं मनहुंसों जेहोत। ब्रह्मपदकोहोत प्रापत तौन सुनुबुधिपोत ॥ होतिहै परसन्न जैसे जननि सुतकोदेखि। होतित्यों परसन्नगंगा सर्बलोकन्ह पेखि ॥ चित्तको बशकिये जेजन ज्ञानवानमहान। सुरसरीको सेवते हैं ते सबै मतिमान॥ मोक्षकीबर कामनाकी करतजे जनपर्म। प्रेमसों ते सेवतेहैं सुर-सरीहिसधर्म ॥ शम्भुआदिक देवतनकोकै प्रसन्नसुजान। उग्र तपसों भगीरथ नृप ज्ञानवान महान ॥ सोरठा ॥ ल्याये भूकेमा-हिं जाह्नवीहि अतिमोददा। पावत तिहिकेपाहिं अमरनकी गतिको सुनर ॥ रामगीती ॥ ताहि परशे भीतिदोऊ लोककी मि-टिजाति। बढ़त तेयश सुरनकोसो स्वच्छमतिसरसाति ॥ सुर-सरीके गुणनको हमकह्यो यह यकदेश। बुद्धिसों अवगाहि क-रिकै सुनहुं बिप्रबुधेश ॥ सर्बगुणके कहनकीहै शक्ति हममें ना-हिं। सकतनहिं अवगाहि जोबर अमरऊ अवगाहिं॥ मेरुगिरि के उपलकी अरु सिंधुजलकी पर्म। होति संख्या पैनगंगा गुण-नकी सहधर्म ॥ सुनहुंताते जानिगंगा गुणनको मतिमान। भक्ति मनबच कर्मसोंगाहिहोय श्रद्धावान। मोददा अति सुर-सरीबर कृपाकरिकैउद्ध। धर्मयुत करि करै तब मम मनीषाको शुद्ध ॥ भीष्मउवाच ॥ तोटक ॥ शुचिजह्नु सुता बरकेकरिकै। बुधि सोंअवगाहि हियेचहिकै। द्विजसोंबुध सिद्ध बिदालहिकै। सुग-योदिव मारगकोगाहिकै॥ अन्तगुरुतोमर ॥ सुनि सिद्धिकेबरबैनको। शिलवृत्तिद्विजसुखलैनको ॥ सुरनिम्नगाकहँपूजिकै।धरिप्रेमको हियकूजिकै ॥ शुचिसिद्धिदुर्लभपायकै।रविरूपमोक्षबिद्धायकै॥ तिहि भांतिहौतुमपूजिये। सुरनिम्नगाको कूजिये॥गाहिकैसुभक्ति महानको। धरिहियेमें बरज्ञानको ॥मधुभार॥ उत्तमसुसिद्धि। तुम बुधि निद्धि॥ लहिहौमहान। अतिमोददान॥ सुरसरिहि सेय।

कोमुद नलेय ॥ गंगासमान। सुखदानआन ॥ यातेसुपूजि। बहु भांतिकूजि ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ जयकरी ॥ सुरसरि स्तवसहितइतिहास। बुद्धिप्रकाशक आनँदरास ॥ बंधुन्हसहित युधिष्ठिरभूप ॥ सुनिकै हर्षित भयो अनूप ॥ दोहा ॥ यहि इतिहासहि जौन जन पढ़ै सुनै सहप्रेम। सर्व कलुष ताके मिटैं नितही रहै सक्षेम ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेगंगामाहात्म्येषड्बिंशोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउबाच॥रामगीती ॥ सर्बगुणसों युक्तहौतुमसुनहुभीषमतात। बेदधर्महिं धरेहौ अरुशीलको अवदात ॥ महा प्रज्ञावानहौ व्रतवान अरुयशवान। धर्मधरजे मनुज तिनमेंश्रेष्ठ आपुमहान ॥ धर्मबूझतआपुसों यहहेतुतेहमपर्म। धर्मबक्ताआपुसोंनहिं और कोइअभर्म ॥ प्रजंझली ॥ क्षत्रिय सु बैश्य अरु शूद्रजौन। द्विजताहि लहत किहिभांतितौन ॥ तपकियेलहतकी कियेकर्म। श्रुतिश्रवणकियेकी स्वच्छपर्म ॥ हमको सुआप कहियेनरेश। तुमकहनयोग्यहौ बरबुधेश ॥ भीष्मउबाच ॥ रामगीती ॥क्षत्रियादिक बर्णजेहैं तीनसुनु भूपाल। लहतहैंब्राह्मण्यको अतिदुःखसों सुविशाल ॥ बहुत योनिनमाहिं पुनिपुनि जन्मलेत सुजान। जन्म आवृत माहिं कबहूं होत द्विजमतिमान ॥ परम यहिपरसंगमें इक कहत हौं इतिहास। सुनहु सो मनलायकै तुम भूप बरबुधिरास ॥ दोहा ॥ ऋषि मतंग अरु गर्दभी को है तिहि में सम्बाद। अब तेहि कहत बुझाइकै जेहि सुनि मिटतबिषाद॥ रामगीती ॥ रहो एक बिप्रकोई वेदवान सुजान। संसकारितभयो ताके सुवनइक सुखदान ॥ सर्ब गुणसों युक्त जोहो नामतासु मतंग। सिन्धुसों गम्भीर हौ बर भरो बुद्धितरंग ॥ विप्रमख सामान काजै ताहि भेज्योतात। चपलबालक गर्दभनसोंयुक्त रथ अवदात ॥ चढ़ोतापै चलो ल्यावनयज्ञको सामान। लगो मारन गर्दभनको सो सुनो मतिमान ॥ प्रेमपूरीहीतहां उनगर्दभनकीमाय। देखिपीड़ित सुतन्ह को तिहिंकह्योइमिअकुलाय॥

करहु शोच न पुत्र मेरे धरहु ही में धीर । है महाचण्डाल यह परकहा जानैपीर ॥ मित्र सबके होत हैं द्विजहोत निर्दय नाहिं । लेत शिक्षा आयकै जनसर्ब तिनके पाहिं ॥ करतबालक दयाको नहिं देत यहबहुभार । है नहीं यहबिप्रजानो याहि अघ आगार ॥ गहे अपनी जातिको यहभाव है सुनुतात । हनतयाते धरत है नहिं दयाको अवदात ॥ होतहै जब आयहीमें प्रवृत्तजातिसुभाव । रहतनाहिं तव हियेमाहीं मनीषा को छाव ॥ गर्दभीके बचन सुनिकै ये मतंगसुजान । गर्दभीकेपास आयो छोड़िरथ सुखदान ॥ कहतभो इमि बैनतासोंऋषिमतंगअभर्म । मोहिं किमिचण्डालजान्यो कहहुगर्दभिपर्म ॥ नष्ट कैसे भईमेरी बिप्रताअभिराम । कहो विधिसों सर्बमोसों बुद्धिवन्ती माम ॥ गर्दभीउवाच ॥ है तुम्हारो शूद्रपितु अरुब्राह्मणी है मात । नष्टयाते भई है तव बिप्रता अवदात ॥ बैन सुनि ये गर्दभीके ऋषिमतंग अनूप । भयो आवतधाम माहीं सुनुयुधिष्ठिरभूप ॥ देखिताको पिता ऐसे कह्यो तातसुजान । गहीव गें नहिं ल्यायबेको यज्ञको सामान ॥ गेहमें फिरि आवनेको कौन कारणतात । कुशल है की नाहिं मोसों कहो सुत अवदात ॥ मतंगउवाच ॥ लेतजे हैं जन्मकुत्सित जातिमेंसुनुतात । कुशलसों ते रहैंगे किहि लोकमें अवतात ॥ गर्दभी इमिकह्योमोसोंसुनहु पितु अवदात । पिता तेरो शूद्रहै अरु ब्राह्मणी तवमात ॥ सुनहु ताते करैंगेहम महत तपबनबीच । पितासों कहि बैन ऐसे ऋषि मतंग निभीच ॥ करी ऐसी तपस्याबर बिपिनमाहीं जाय । भये तासों तृप्त सुरके बृन्दसह सुरराय ॥ भयो तपसों बिप्रताको प्राप्तवर ऋषिराय । महततपसों युक्त लखिकै शक्र तापै आय ॥ कहतभो इमिमहत तपको करतहौ किहिकाज । मनुजवारे छोड़िकै सब भोगवारे साज ॥ जौन इच्छित होय तुमको देहुंसो बरदान । कहहु मोसों करहुदेरन सुनो वरतप-

वान॥ मतंगउवाच ॥ लहे हम यहि बिपिनमाहीं बिप्रताकोपर्म। है हमारे कामनायह सुनो शक्रअभर्म॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक॥ ऋषिकेबैन पुरन्दरसुनिकै। ऐसेकह्यो हियेमें गुनिकै॥ द्विजता अतिदुर्लभहैजानो। यहनमांगिबे को अनुमानो॥ तुमकोप्रापति ह्वै है नाहीं। धरहु न मन यहइच्छा माहीं॥ देव दनुज मनु जनमें रूरी। पर्मपवित्रविप्रतापूरी॥ भेचांडालयोनिकेमाहीं। याते द्विजतालहि हौ नाहीं॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मेमतंगशक्रसम्बादेसप्तबिंशोध्यायः

भीष्मउवाच॥ मधुभार ॥ चांडाल जौन। कबहूं न तौन॥ द्विजताहिलेत। सुनि हे सचेत॥ चरणाकुलक ॥ सुनिकै यह मघवाकी बानी। बर व्रतवान मतंग सुज्ञानी॥ कीनोतप इकपदसोंठाढ़े। शतवत्सरलौं गहि मन गाढ़े॥ तदनन्तरबोले मघवापुनि। ऋषिमतंग को तपहीमें गुनि॥ द्विजता अतिही दुर्लभ जानो। लहिहौ तुम न सत्यअनुमानो॥ मति करु साहसही के माहीं। तुम्हरोधर्ममार्ग यहनाहीं॥ द्विजताको तुमनहिं लहिसकिहौ। बहुदिन लौंतप करिकरि थकिहौ॥ बारबार तुमकोहम बरजे। मानतनाहिं हिये हठअरजे॥ यहनिश्चय मानो मनमाहीं। मिलिहै तुम्हें बिप्रतानाहीं॥ द्विजतालीबे जो हठकरिहौ। थोरे काल माहिंतौ मरिहौ॥ तिर्यग् योनि माहिं गतजैहैं। लहत मनुजताको जबतैहैं॥ तबचांडाल योनिकेमाहीं। लेतजन्महैं सुनुममपाहीं॥ रामगीती ॥ भ्रमतहैंबहुकाललौं तिहिं योनि माहीं तौन। लहत ते पुनि शूद्रताको सुनो बरबुधिभौन॥ रहतजितने वर्ष हैं चांडालयोनि सुमाहिं। सुनहु तात सुजान तुमसों कहतहौं अवगाहिं॥ शूद्रतामें भ्रमतताते अधिक दशगुणतौन। लहत ते पुनि वैश्यताको सुनो प्रज्ञाभौन॥ जयकरी ॥ शूद्रयोनि में जितने वर्ष। भ्रमत जीव सुनु तात सहर्ष॥ त्रिंशतगुण अधिक तिहि तेसु। वैश्ययोनि के माहिं भ्रमेसु॥ तौन जीव पुनि

सुनु बुधिपोत । क्षत्रियोनि में प्रापति होत ॥ जितनेवर्ष वैश्यता बीच । भ्रमत तौन सुनुतात निभीच ॥ क्षत्रियोनिमें तिहिते तौन । षटगुण अधिकभ्रमें बुधिभौन ॥ ब्रह्मबन्धुतामें पुनिहोत । तौनसुनो वर प्रज्ञापोत ॥ बहुत काल भ्रमि तामें जौन । काष्ठ पृष्ठता लहत सुतौन ॥ वेश्याकोराखत द्विजजोई । काष्ठ पृष्ठ द्विजगणमें सोई ॥ बहुतकाल भ्रमिताके माहिं । जपता लहत कहौं अवगाहिं ॥ गायत्रीहि जपै द्विज जौन । जपता ताहि कहैं बुधिभौन ॥ बहुत काल भ्रमि ताके बीच । वेदवान पुनि होतनिभीच ॥ वेदवान कुलमाहिं सुपर्म । बीतेकछु दिन सुनोअभर्म ॥ शोकहर्ष अरुकाम महान । द्वेषबाद अरु अति अभिमान ॥ ये सबतिनको घेरतआय । करत आपने बशमें लाय ॥ जीतिलेय जब इनकोसर्व । तब शुचिद्विजता लहै अखर्व ॥ हम तुमसों यह कह्यो बिचारि । तातेतजौ याहिनिर्धारि ॥ दोहा ॥ अतिदुर्लभ ब्राह्मण्यहै तजौ कामना येह । और कामना को करौ सुनिमतंग बुधिगेह ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेमतंगशक्रसम्बादेअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

भीष्मउवाच ॥ अन्तगुरु तोमर ॥ सुरनाथके सुनि बैनको । द्विजताहि दुर्लभ लैनको ॥ पुनिएकपदसों ठाढ़कै । समरत्थ बर उड़गाढ़कै ॥ करिचित्त धीर्य महानमें । मनलायकै थिरध्यानमें ॥ तप कीन्ह बर्षहज़ारलौं । तन सूखिभोकृशदारुलौं ॥ पुनि शक्रता पहँ आयकै । अवरेखितपमनलायकै ॥ सोरठा ॥ कहेतौनहींबैन सुरपतिफेरिमतंगसों । सुनहुतातबुधिऐ न जौन वचन पहिले कहे ॥ मतंगउवाच ॥ रामगीती ॥ ब्रह्मचारय धर्मसों हमयुक्तहोइकै पर्म । सहसबत्सर एकपदसों खरेहोय अभर्म ॥ सुनहुहे सुर राजहमतप कियोपर्म महान । क्योंन होइहै प्राप्त हमको बिप्रतासु खदान ॥ शक्रउवाच ॥ भयोतुम्हरो जन्महै चाण्डाल योनि समाहिं । लहौगे यहिहेतुते तुम बिप्रताको नाहिं ॥ बैनसुनिकै

शक्रके ये गयामाहींजाय। वर्षशतलौं अँगुष्ठ सों खरो ह्वै मन लाय॥ करतभोतप महा तासों भईकृशसबदेह। गिरतभो तब आय मघवा गह्यो सहित सनेह॥ शक्रउवाच॥ सुनुमतंगसु विप्रता है तुम्हैंदुर्लभ पर्म। भूलिअब जनि करो हठको कहत तोहिं अभर्म॥ लहत सुखको महतद्विजको पूजतेहैं जौन। जेनपूजत महादुखको लहत हैं जन तौन॥ विप्र दारा होयकैं सुर पितर तृप्तसु होत। श्रेष्ठ सब ते विप्रताहै कहत प्रज्ञापोत॥ सर्व भूतन माहिंहै उत्कृष्ट विप्र अमन्द। जौनइच्छा होय सोई करत हैं निरदन्द॥ बहुत योनिनमाहिं पुनि पुनि जन्मलेत सु जीव। लहत है द्विजयोनिको कबहूँ सु आनँद सीव॥ पर्म्म दुर्लभ विप्रताहै त्यागि याते याहि। करोऔरै कामनाको कहतहौं अवगाहि॥ मतंगउवाच॥ मारतेहौ मोहिं क्यों तुम मृतक हौं मैंआप। दया धरिये हियेमाहीं अहो बुद्धिकलाप॥ कहत पुनि पुनि जात हौं उहिहोय जासों पीर। दया धरत न हो हिये में हे पुरन्दर धीर॥ क्षमा जेजन गहत नाहीं करत हिंसा पर्म्म। करत नाहिं इन्द्रीनको बश करैं भूरिअधर्म्म॥ तिन्हैंदुर्लभ विप्रताहै शक्र सुनि धरमज्ञ। प्राप्त द्विजता भये तौ नहिं सकत राखि न अज्ञ॥ सोरठा॥ जानतनहिंकरिजौनद्विज ताकीरक्षापरम। सुनहुशक्रजनतौन पापिनतेपापीअधिक॥ जयकरी॥ दुखतेद्विजता प्रापति होत। प्रापतिभयेसुनोबुधिपोत॥ ताकीरक्षादुर्लभपर्म्म। हैनाहिं मेरेथामें भर्म्म॥ रक्षाकरत न द्विजतापाइ। तेजनअज्ञ महा सुरराइ॥ मैं सु करत संग्रहकोनाहिं। कबहुंनजातक्रोधकेपाहिं॥ हिंसादिकको कबहुंकरौंन। अरुकुमार्गमें पांव धरौंन॥ लहिहौं क्योंनहिं द्विजतापर्म्म। सुनहुंशक्र यशवानसधर्म्म॥ पूरबकरम महा बलवान। होत सुनो मघवान सुजान॥ मैं धर्मज्ञ प्रज्ञ अति होय। तासों लही दशा यह जोय॥ पुरुषारथसों पूरव कर्म्म। मिटतनहीं है कहतअभर्म्म॥ द्विजताकाजे यत्नमहान।

कीन्हों पै नहिं लहत सुजान ॥ कृपायोग्य हमहोहिं सुरेश । तौ करिकृपा देहु बरवेश ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनि मतंगके बैन सुवेश । अबहिं मांगुवर कह्यो सुरेश ॥ मघवाकी आज्ञाको पाय । मांग्योवर सुमतंग सचाय ॥ जो हम इच्छा करें दराज । होय सिद्धि सो सुनि सुरराज ॥ अरु हम पूजितहोहिं अनूप । बढ़ै सुयश ममशशिकेरूप ॥ देहुहमैंतुमयहबरदान । हेमघवान महा यशवान ॥ शक्रउवाच ॥ दोहा ॥ पूजित ह्वैहौ परमतुम तीनहुं लोकनमाहिं । कीरति अतुला होयगी मानो संशयनाहिं ॥ यह बरदेय मतंगको सुरपतिगो निजधाम । छोड़ि मतंगहु प्राण गति लीन्हीं उत्तममाम ॥ ऐसीहोतिसुविप्रता दुर्लभ परमबिशाल । मघवाके इन बचनसों जान्यो तुम भूपाल ॥

शांतिपर्वणिदानधर्ममेंमतंगशक्रसम्बादसमाप्तिर्नामैकोनात्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ प्रापति दुखसों होतिहै जनको द्विजता धर्म्म । तौन सुन्यो हम आपसों भीषम सुनहु सधर्म ॥ चरणा दोहा ॥ बिश्वामित्र लही द्विजता अरु हैहय वर भूपाल । तौन सुननकी हिये हमारे इच्छा भईबिशाल ॥ कौनकर्म्म तपकौन सों द्विजता लही अनूप । तौन कृपा करिकै कहौ हमकोभीषम भूप ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनि पाण्डव सुमहीप जिहि बिधि सों द्विजतालही । है यह वर अवनीप सोबिधि तुमसों कहत हौं ॥ अरिल ॥ होत भयो मनु भूपति के सुत । नाम तासु सर्याति धर्म्मयुत ॥ तिहिकेकुलमें बत्स महीपति । भयोतासुको यश भूमें अति ॥ ताके सुवनभये द्वै मतिवर । तालजंघ अरु हैहय यशधर ॥ हैहयके दश रानिनके सुत । दशदशभये महा मेधा युत ॥ धर्म्मशूर अरु भूरि कीर्तिकर । तुल्यरूप बलवान धनुर्द्धर ॥ पढ़ेबेदजिननींकेश्रमकरि । सर्बशत्रुजीते जिनलरिलरि ॥ काशिदेशमें भो यक भूपति । नामतासु हर्य्यश्व महामति ॥ हैहय नृपके सुतबलवानसु । गंगा यमुनामध्य महानसु ॥ रचि

है युद्ध भूपहर्य्यश्वहि। सेना सहित मारिडार्‍यो महि॥ मारि
ताहि अवनीपहि बलधर। हैहयके सुत गे अपने घर॥ तब
हर्य्यश्व महीपतिको सुत। काशिराजभो महा सुयशयुत॥ ना-
म सुदेव देवसम सोहत। कम्पत दुवन जबै वहकोहत॥ स-
साक्षात धर्म्मसो लागत। जाकोरूप लखे अघभागत॥ पाल
तभो भूको सो भूपति। लीन्हे राजनीतिकी युगति॥ ताहूका
है हय के सुतसुनि। मार्‍यो उद्ध युद्ध रचि अरिगुनि॥ दिवो-
दास तब काशि देशपति। भो कीन्हों तिहिं जगमें यशअति॥
तो बिचारि हैहयसुतको बल। शासनपाय शक्रको अतिकल॥
गंगाकेउत्तर कूलहि पर। बाराणसी बसाई शुचिवर॥ चारिहु
वर्ण बसत हैं जामाहिं। अमरावति लो सोहतिभालहिं॥ दोहा॥
सुनि हैहयसुत आयकै बाराणसीहि घेरि। दिवोदास अबको
नेकरि छप्यो कह्यो इमि टेरि॥ सुनिकै हैहय सुतनके बैनहोय
तहक्रुद्ध। शारदूललों गरजिकै निकसिभटनसहउद्ध॥ भुजंगप्रया-
त॥ दिवोदास संग्राम घोरै बिराच्यो। तहांलोहु औ मेदको
कीच माच्यो॥ दुहूंओरसों शूरबांकेहँकारैं। चलैंबाण औशेल
खड्गौ कटारैं॥ परैं मुण्डभूमैं करैंरुण्ड युद्धै। चहैंजीति को ते
मरैंक्रोध उद्धै॥ लसैंखड्गसों शूरके रुण्ड ऐसे। सशम्पान भे
सांझके मेघजैसे॥ डरे लोहकीधार में शूरवारे। लसैंरुण्डऔ
मुण्ड ऐसेसुढारे॥ परेभारतीमें बहोरूप धवरैं। मनोराहु औ
केतु दोऊ बिहारैं॥ अमानै दुहूंओरके शूरबांके। हटैं नाहिंकेहूं
बलीह्वै ससाके॥ तहां हासकै अट्टकाली बिहारै। महामोद
सों भै चहूंघानिहारै॥ खरीलोहुकीधारमें भांति ऐसे। घटा
सांवरी भारती माहिं जैसे॥ लहैंहस्तमें कालिका टोपवारे।
महा शूरकेमुण्ड भारे सुढारे॥ लसैतान ऐसे तिन्हैंकी प्रभासों।
गहेभानु मानो घटाघोर वासों॥ सोरठा॥ दिन सहस्रलों युद्ध
कियो बली काशी धनी। चिन्ताबाढ़ी उद्ध जबबाहन मारेगये॥

तब सुदीनता भाषि दिवोदास भूपालवर। प्राण आपनोराखि भरद्वाज ऋषिपै गये ॥ चरणाकुलक ॥ बोलेतब नृपसों द्विजराजा। कहो आपु आवनको काजा ॥ कहिहौ जो सोई हम करिहैं। और बिचार हिये नहिं धरिहैं ॥ राजोवाच ॥ है हय नृपके सुत बलभारे। मेरे कुलवारे सब मारे ॥ मैं हौं बच्यो दीनता को गहि। आयो तव शरणै अब मैं चहि ॥ शिष्य आपुकोहौं मैं थहिते। ऐसोकरो अभयहौं जिहिते॥दिवोदासनृपकी यहबानी। सुनिकै बोलेसुऋषि सुज्ञानी॥मतिडरु मतिडरु हेभूपाला। साहसहीमें धरो बिशाला ॥ जयकरी ॥ तुम्हरे सुतहोबेके काज। करिहौं यज्ञसुनो नरराज ॥ सुवन बली है हय के सर्व । हनिहै सो रचियुद्ध अखर्ब ॥ कहि नृपसों ऋषि ऐसे बैन। मखकीरचना करी सचैन ॥ सुतभो नृपके कीन्हें यज्ञ। तासु प्रतर्दन नाम सुप्रज्ञ ॥ बढ़त भयोसो जन्महिंलेत। शीघ्रहि धनुधर भयोसचेत ॥ दोहा ॥ लेय तेज सब लोकको भरद्वाज ऋषिराय । दिवोदासके तनय के तनमें धर्यो सचाय ॥ तोटक ॥ ऋषिराय कियो बहुभांति बली। तिहिको लखि कांपतभे सुछली ॥ धनु आदिक शस्त्र लग्योगहिबे। अरिगंजन बैन लग्यो कहिबे ॥ यशगावन जासु लगे सुगुनी । बहुभांति सराहत हैं सुमुनी ॥ जिमि प्रातसमय रवि साजतहै। तिमिहीं सु प्रतर्दन भ्राजतहै॥ रथपै चढ़िकै सब शस्त्र लिये। धनुको सु फिरावत गर्बकिये॥ चहुँघा सुलग्यो फिरिबे जबसों। मुदसों भरि भूप रहे तबसों॥ सोरठा ॥ जान्यो मनमें येह लखिकै सुवन पराक्रमी। बसिहैं नाहिं अरि गेह बचिहैं नहिं संग्राममें ॥ हामगीती ॥ दिवोदास महीपलखिकै सुवनको परताप। राजपै बैठायकै अति भयो मोदित आप ॥ तदनन्तर भूप है हय सुतनके बधकाज। प्रतर्दनको भेजतो भो भरोहर्षदराज ॥ उतरिकैरथ साहितगंगा शीघ्रही बलवान। जायहै हय सुतनको पुर लियोघेरि महान॥ श्रवणकरिकै शब्द

रथको उद्द है हयनन्द । रथनपै चढ़ि शस्त्र लीन्हे भरे क्रोध बिलन्द ॥ निकरि पुरते प्रतर्दन सों रच्यो युद्ध महान । दृष्टि करि कैशरनकी बहुहते शूर सुजान॥जलद ज्यों हिमवान ऊपरपरम बर्षत नीर । तिमिहि बर्षत बाण हैं सब प्रतर्दन पै धीर ॥ चले आवत अस्त्र है हय सुतनके जेपर्म । प्रतर्दन निज अस्त्रसोंते वारिदेत अभर्म ॥ बज्रसम शर मारि तिनको दिये भूमिगिराय। रहेजितने नन्द है हय भूपकेनरराय ॥ भरेशोणितपरे ऐसे खेत माहीं तौन । कटे किंशुकपरे जैसे लगत सुनु बुधिभौन ॥ मरेते सब सुवन है हय भाजितजि पुर पर्म । जायभृगुके शरणमाहीं रह्यो भूप सधर्म ॥ अतिहि व्याकुल देखि है हय भूपको ऋषि राय । कियो निर्भय बचन कहिकै परम मुदसों छाय ॥ कछुक बीते प्रतर्दन नृप जाय आश्रम बीच । देखिकै चहुं ओर ऐसे भयो कहत निभीच ॥ कौन है यहि थानमाहीं शिष्य भृगुके पर्म । कहौ हमको आय कहैं कहां सुमुनि अखर्म ॥ भई तिनको देखिबेकी कामनामो माहिं । देहुमेरी खबरिको तुमजाय भृगुके पाहिं ॥ जानि नृपको थान ते कढ़ि सुमुनि बाहिर आय । सबिधि पूजत भये नृपको हर्ष हियमें छाय ॥ पूजिकै इमि भयेबूझत कहौ गे कछु आप । कह्यो निज आगमनको नृप हेतु तेजकलाप ॥ राजोवाच ॥ दीजियेकरि बिदा है हय नृपतिको मुनि आप । हन्यो मेरेबंश याके सुवनपाप कलाप ॥ करीऊजर काशिकामो पुरी यह भूपाल । है हमारो महा अरि यह सुनहुं सुमुनि बिशाल ॥ हने याते सुवन याके सर्बमयमुनि राज ॥ याहिहनिहौं अबहिं मैं हौं भरो क्रोधदराज ॥ याहि हनिहौं तबैहवैहौं उऋण पितुसों पर्म । करहुयाते बिदा याको सुनहु सुमुनिसधर्म॥ भृगुरुवाच ॥ है हमारे थानमाहीं सर्ब द्विज नाहिं और । बैनसुनि ये सुमुनि भृगुके महा नृप शिर मौर ॥ परसिमुनिके चरण मुद सहकहे ऐसे बैन । दई जाति छुड़ाय है यह भूपकी हमऐन ॥

भयोमें कृतकृत्ययाते लह्यो मोद महान । प्रतर्दन इमिकहिसु-मुनि सों गये अपने थान ॥ सुमुनिभृगुके बचनसों शुचिभूप है हय पर्म । भयो प्रापित बिप्रताको सुनहु तात सुधर्म ॥ तिहि अनन्तर भयो है हय ऋषीके सुतस्वच्छ । कहतताको शक्र हैं सबदनुजधरमहिदच्छ ॥ बरवै ॥ नामगृत्समद ताको सुनि मति मान । पूजतभे द्विज ताकोअतिश्रीमान ॥ ऋचा जासुकीश्रुति में सोहत स्वच्छ । भो सुचेतसुनताको अतिहीदच्छ ॥ दोहा ॥ बर्चसभयो सुचेतके अतिही प्रज्ञावान । बर्चसके सु बिहव्यभो श्रुतिमें परम सुजान ॥ सोरठा ॥ सुनुनृप भयो बितत्य सुमती बिप्र बिहव्यके । भोबितत्यके सत्य सन्तभयो सुतसत्यके॥ दोहा॥ श्रवाभयो सुतसन्तके भयोश्रवाके तात । नामतासु तम तौन भो बिप्रनमें अवदात ॥ तमकेभयो प्रकाश सुततौनहुँ द्विजभो पर्म । भोवागिन्द्र प्रकाशके सो श्रुतिमाहिं अभर्म ॥ भयोप्रमति बागिन्द्रके सोमतिमान महान । तेजवान यशवान अरु धर्मवान श्रुतिमान ॥ चरणादोहा ॥ ताकेभयो घृताचीमाहीं सुवन तासुरुरु नाम । प्रमद्वरामें सुवनभो रुरुके सों बुधिधाम ॥ शुनकनाम ताको महा तेजमान श्रीमान । शौनकभो ताके सुवन पर्मपूज्य मतिमान ॥ कृपापाय भृगु सुमुनिकी है हय भूपति पर्म । ऐसे द्विजताकोलही पाण्डव सुनहु सधर्म ॥ हैहय ऋषिको बंशवर बरणिकह्यो अवदात ॥ अब आगे का बूझिहौ सुनहु धर्मधर तात ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कौनमनुज यहिलोकमें पूज्यमानहैंपर्म तौन बतावहु मोहिंतुम भीष्मसुनहुसहधर्म ॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा ॥ सुनहु युधिष्ठिरभूप यहि प्रसंगमें कहत हम । यक इतिहास अनूप सुनेतौन संशयटरत ॥ चरणादोहा ॥ बासुदेव अरु नारदमुनिको तामेंहै सम्बाद । उत्तम बिप्रनको पूजत हैं नारद

छोड़ि प्रमाद ॥ दोहा ॥ केशव तिनको देखिइमि बूझतभये सप्रेम। सुनहु सुमुनि नारदपरम प्रज्ञावान सक्षेम ॥ पूजतहौं सनमानकरि निज मनुजनको पर्म। इच्छातिनको सुननकी मैं हौं करत सधर्म ॥ जानो सुनिबे योग्यजो मोको नारदआप। तौनीके हमकोकहौ येहो धर्मकलाप ॥ नारदउवाच ॥ सोरठा ॥ तुम सों कोहै और सुनिबेयोग्य त्रिलोकमें। सुनु यादव शिरमौर जनरंजन भंजन दुवन ॥ पज्झटी ॥ सुरनाथ वायु अरु भानुचन्द्र। अरु शम्भु स्वामिकार्त्तिक सुइन्द्र ॥ बिधि बिष्णु वृहस्पति भूमिबार। अम्बादि और देवत उदार ॥ जन जौन इन्हें पूजत सप्रेम। हमपूजतहैं तिनको सनेम ॥ अरुवेदवान जन जौनपर्म। अतिपूज्यलोकमें जे सधर्म ॥ तिनकोसदाहि पूजत सप्रेम। गहिकैसुभक्ति तिनकीसनेम ॥ सोरठा ॥ भोज्यकियेबिन जौन जनपूजतहै देवको। सुनिये आनँदभौन पूजतहौं तिन जननको ॥ मोतीदाम ॥ क्षमायुतजे जनहैं जगमाहिं। कबौंनाहिं जात सुजे अघपाहिं ॥ रहैंनित तुष्टित जेजनपर्म। तिन्हैं हम पूजत नित्यअभर्म ॥ सुनोअरु जेजन बोलततथ्य। कबौंनहिं बोलत भूलिअतथ्य ॥ रहैंरतधर्महिं माहिंमहान। करेंबिधिसों मखजौन सुजान ॥ अतीथिहि पूजतहैं गहिनेम। तिन्हैंहम पूजतहैंसहप्रेम ॥ कृपालहि नित्यरहैं जनजौन। करैंनहिं संचय को सुखभौन ॥ बसैंबनमाहिं भखैं फलमूल। अतीथिहि जेमुद देतअतूल ॥ सुवेदहिप्रापित होयअनूप। कहैंनितबैन सुशील स्वरूप ॥ पढ़ैंनितवेद रहैंनिरद्वन्द। तिन्हैं हमपूजत आनँद कन्द ॥ सुदेवहि पूजि सुभोगलगाय। करैंजनभोजन जौन सचाय ॥ गहैंव्रतसुन्दर जेजनस्वक्ष। समोद सुभृत्यहि राखत दक्ष ॥ गुरुहि प्रसन्न सुराखतजौन। तिन्हैंहम पूजत हैं सुख भौन ॥ सुनोअरु राखत जौनमहान। दया सबजीवनकीसुखदान ॥ गुरुकुलमाहिंतजेअभिमान। पढ़ैंजनजौनमहामतिमा-

न ॥ बधैंकबहूंनहिं जीवहिजौन । तिन्हैंहम पूजतहैं मुदभौन ॥
करैंनित धर्महि भर्महित्यागि । तिन्हैं हम पूजतहैं मुदपागि ॥
समयलहिधर्म सुअर्थ सुकाम । करैंजनजौन सुनो सुखधाम ॥
महासुकृती जनकीगहिनीति । चलैंजनजौन गहे सुप्रतीति ॥
करैं अतिमान नहींजनजौन । तिन्हैंहम पूजत हैं सुखभौन ॥
करैंजनजौन सुव्रत्त अनेक । अचंचलताहि गहे सबिबेक ॥
तिन्हैं हमपूजतहैं मुदकन्द । गहेतिनकी शुचिभक्ति बिलन्द ॥
सुनो कमलापति मैंगहिधर्म । इतेजनकोनितपूजतपर्म ॥ सोरठा ॥
जैसे बिप्रसुजान सुखदायक हैं जगतमें । तैसेजननहिं आन
बासुदेव आनन्दकर ॥ दोहा ॥ पूजोतुमहू द्विजनको योग्यपूजि-
बेजौन । देहैंतुमको मोदअति बिप्र सुमतिकेभौन ॥ जयकरी ॥
राखतजौन अतिथिकोभाव । गऊद्विजनमें सुनुब्रजराव ॥ अरु
जेजनहैं बोलतसत्य । चलत सुमारगमाहीं नित्य ॥ औ अन-
शूय कहैंजनजौन । लहतपारहैं दुखकोतौन ॥ औजेश्रद्धावान
सधर्म । पढ़त वेदको नित्यअभर्म ॥ पूजत सर्बदेव सहप्रीति ॥
अघको पारलहत तेजीति ॥ तोमर ॥ जनजौनहैं ब्रतवान । अरु
देतजौनसुदान ॥ द्विजको सुपूजिसप्रेम । सन्मान करतसनेम ॥
दुखपारहोत सुतौन । सुनुकृष्ण आनँदभौन ॥ तपकोसुकैअति
पर्म ॥ जिनकीन्ह चित्तअभर्म ॥ दुखपार तेजनजात । सुखसोंभरे
सुबिभात ॥ अरु देवपूजतजौन । दुखपार जातसुतौन ॥ बिधिसों
सुथापिकृशान । मखकरतजे सुखदान ॥ औश्राद्धकरत सुजौन ।
दुखपारजात सुतौन ॥ चरणादोहा ॥ मातापिता गुरूकेपाहीं जिमि
जेजन न रहत सप्रेम । यादवराय आपहू रहिये ऐसे नित्यस-
नेम ॥ दोहा ॥ ऐसेकहिकै कृष्णसोंचुपकैरहे ऋषीश । सुनहुं धर्म
धर सुयशकर पांडवबर धरणीश ॥ तुमहूंपूजत सुरपितर बिप्र
अतिथिकोपर्म ॥ तातेलहिहौ स्वच्छगति पांडव सुनहुसधर्म ॥
इतिश्रीमहाभारतेशान्तिपर्वणिदानधर्मेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कहौमोहिं अबधर्म शास्त्र बिशारद प्राज्ञबर। जासों होहुँ अभर्म सुनहुपितामह धर्मधर ॥ दोहा ॥ जोजन आवत शरणमें ताकी किये सहाय। होतकहाफलतौन तुम हमैं कहौनरराय॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ कहतयहि परसंग में इतिहास सुनुभूपाल। महाप्राज्ञ सुधर्मधर बर सुयशवान बिशाल ॥ बाजके डरसों कपोत सुभाजि दुखसोंछाय। शरण में वृषदर्भ नृपके गयो सुनुनरराय ॥ देखिकै वृषदर्भ तिहिको कहे ऐसे बैन। हे कपोतसुडरहु जनि अबरहहु पर्म सचैन ॥ कहो कौनेस्थान माहींका कियोहै कर्म। भाजिजासों यहांआयो भरेभीति सभर्म ॥ डरहु जनि अब धरहु हियमें महामोद कपोत। कह्योइमि वृषदर्भ तासों सुनो नृप मतिपोत ॥ काशिराज सुछोड़ि देहौं अबहिं मैं तवअर्थ। तिमिहि जीवहि छोड़ि देहौं कहत बैन न ब्यर्थ॥ करहु चिन्ता दूरि अबतुम धरहु हिय में धीर। सोइ करिहौं होयगी जिहिसों न तोकोपीर ॥बाजउवाच॥ सुनहु भूप कपोतहै यह भक्ष मेरोपर्म। नित्य अण्डज खातहैं हमकहत तुमको धर्म ॥ करहु तुम रक्षा न याकी है न तुमको योग्य। कियेते अतियत्नहमको मिल्यो है यह भोग्य ॥ हमैं प्रियहै पर्म याके रुधिर आमिषमेद। प्राप्त हमको होयगो तब दूरिह्वै है खेद ॥ करहु बाधा आप मतिमो भक्ष्य में भूपाल। देतजारे हियेको मो क्षुधा पर्मबिशाल ॥ रुधिरयाको पीयबेकी बढ़ीतृष्णा पर्म। तजहुयाते बेगियाको सुनहु भूप सधर्म ॥ मारि नखसों करी याकी अतिहि विह्वलदेह। रह्योहै कछु श्वासबाकी सुनो नृप बुधिगेह ॥ मृतक ऐसो ह्वै रह्योहै है न रक्षा योग्य। कृपा करिकै छोड़िदीजै है हमारो भोग्य ॥ हो कपोताहिके कहा प्रभुआपुहेभूपाल। हो हमारे नाहिंका प्रभु तेजमान बिशाल ॥ करत रक्षा आपुयाकी करत मेरीनाहिं। सुनोभूपति महापातकं होयगो यहिमाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ बैन सुनि ये बाज

के वृषदर्भ भूप सुजान । बाजको इमिकहत भो सुनु पाण्डुसुत यशवान ॥ राजोवाच ॥ महिष मृगको मांस तुमको देतहौं मँगवाय । करहु शान्त सु क्षुधा तासों सुनो श्येन सचाय ॥ जौन आवत शरणमेंमो तजतहौं नहिंताहि । हैहमारो नित्यब्रत यह कहतहौं अवगाहि ॥ नाहिं मोतन तजत अण्डज भरो डरसोंभूरि । लखोपातक होय हमको किये पातकदूरि ॥ श्येन उवाच ॥ महिषमृगके मांसको हमखात हैं नहिंभूप । औन दूजे बिहगकी शुचिपर्म मांस अनूप ॥ है कपोतहि भक्षमेरो सुनहु भूपति पर्म । बाज औरे बिहगको नहिंखात कहत अभर्म ॥ अतिहि प्यारोहोय जो यह तुम्हें बिहग स्वरूप । आवरो बरि देहु तो तुम मांस अपनोभूप ॥ राजोवाच ॥ अति अनुग्रह करौ हमपै सुनहुश्येनसुजान । बैनतेरे सुनेमेरे भयो मोदमहान ॥ जौनहमसों कहौगे तुम करैंगे हमतौन । बैनऐसेश्येन सों कहि भूपधर्मक भौन ॥ काटिकाटि सुमांस अपनी देहको भूपाल । लग्यो धरने तुला ऊपर भरोमोद बिशाल ॥ सर्बरानी भूपकी सुनि करति हाहाकार । भूरिदुखसों भरी निकसीं छोड़िकै आगार ॥ भृत्यऊसुनि भरेदुख सों अतिहि बिह्वल होय । आय भूपति पासकीन्हों रुदन अतिहीजोय ॥ जलदकोसो भये तिनके रुदनको रवपर्म । छायआये मेघचहुँदिशि सुनहु तात सधर्म ॥ भईचलती महीताके मर्मसों अवदात । छायनभ में लगे देखन देवता हेतात ॥ काटि अपने अंगकोनृपदियोमांस चढ़ाय । तऊनाहिं कपोतके सम भयो सुनु नरराय ॥ अस्थिरहिगे शेषभो निरमांस सर्ब शरीर । धर्मको अवगाहिकै तब चढ़ो आपुहिधीर ॥ देखिकै सुरराज ताको धर्मआयोपास ॥ फूल बर्षन लगे देवत भरेभूरि हुलास ॥ बजनलागीं दुन्दुभी अरु भेरि नभमें पर्म । गान बरगन्धर्बलागे करनहोय अभर्म ॥ नचनलागीं अप्सरा सबभरीं मोदमहान । अस्नानकीनो भूपवर

वृषदर्भ पर्म सुजान ॥ भईसुन्दरदेह सब वृषदर्भकी सुनितात।
हेमके सु बिमान ऊपर बैठिकै अवदात ॥ गयो अक्षय स्वर्ग
कोसो स्वच्छकीन्हेंकर्म । सुनि युधिष्ठिर धर्मधर बर ज्ञानवान
अभर्म ॥ जौनआवैजीव तेरे शरणमें हे तात । करहु ताकी
तुमहुँ रक्षा धर्मगहि अवदात ॥ जौन आश्रित जीव तिनकी
कियेरक्षापर्म । होत अति परलोकमें सुख कहत तोहिं अभर्म॥
रहित होइकै कपटसों जेकरत कर्महि स्वच्छ। होत तिनको प्राप्त
का नहिं सुनहु भूपति दक्ष ॥ कियेते शुचिकर्मबर वृषदर्भ भूप
सुजान। ख्यातभो तिहुँलोक माहीं सुनहु सुतमतिमान ॥सोरठा॥
शरणागत जो जीव इमि ताकी रक्षाकिये। सुनहु तात बुधिसींव
उत्तमगतिको लहत जन ॥ यह जो ब्रत अतिस्वक्ष भूपतिबर
वृषदर्भको। ताहिसुने नृपदक्ष जन पावन अति होतहैं ॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिदानधर्मेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥ कौनकर्म है श्रेष्ठ नृपनको कर्मनमें
अवदात। दुहूँलोकमें मोदलहतहैं कौनकर्मतेतात॥ भीष्मउवाच॥
दोहा ॥ बिप्रनको जो पूजिबोसुनो युधिष्ठिरभूप। भूपनको यहक-
र्महै अतिही श्रेष्ठअनूप ॥ पालैज्यों निजआतमा जिमिहीं सुसु
तैप्रेम। तिमिहींपालै द्विजनको भूपतिगहिकै नेम ॥ पूज्यमान
जे अतिथिहैं बिप्रनमें अवदात । तिनको बिधिसों पूजियेगहि
कै भक्ति सुतात ॥ पूजितिन्हैं हर्षितकिये बढ़त राज्यहै पर्म।
तेजबढ़त अरु यशबढ़त पाण्डव सुनहु सधर्म ॥ पतंगम ॥ ज्यों
पितरनको पूजिये सु अतिप्रीतिसों। बिप्रनहूंको पूजिये सुति-
हिरीतिसों ॥ जिन मनुजनपै कोपितहोत सुबिप्रहैं। तिन मनु-
जनको नष्टकरते क्षिप्रहैं ॥ होतबिप्र अति उग्रसुयश तिनको
बिभात है। नाशकार नाहिं तिनकोकहूं दिखातहै ॥ दोहा ॥ उग्र
अग्निसे लगतहैं करत बिप्रजबक्रुद्ध। मूर्खहु जिनसों डरत हैं
कबहुंन करतबिरुद्ध ॥ रामगीती ॥ रहतकेते गुप्त द्विज हैं सुनहु

भूपतिपर्म । प्रगट केते रहतहैंद्विज परमस्वच्छ सधर्म ॥ बिप्र दुर्बासादिकेते परमहैं हठकार । किते कोमल बिप्रअतिहैं गौतमादि उदार ॥ करतरक्षा गौनकी उपमन्युआदिकपर्म । करत भिक्षाकिते दत्तात्रेय आदिसधर्म ॥ बाल्मीकहि आदि हैं द्विज किते चौर अनूप । कलहकर हैं नारदादिक कितेद्विजसुनुभूप ॥ कितेनर्तक बिप्रहैं भरतादि अतिही दक्ष । सर्बकर्मक कितेद्विज हैं सुनहु भूपतिस्वक्ष ॥ प्रशंसा जनकरत तिनकी धरत प्रीति महान । देवराक्षस पितरमनुजन माहिंसुनु बुधिमान ॥ पूर्बही सों श्रेष्ठ हैं द्विज कहत श्रेष्ठ बुधेश । सकतजीति न तिन्हें सुरगंधर्ब असुरनरेश ॥ पितर औ न पिशाचराक्षस सकत तिन कोजीत्ति । लहतकाहूकीनशंका रहत नित्यनिभीति ॥ करतसुर को असुरहे अरु असुरको सुरपर्म । करतइच्छा होय जिहिको भूप भूप सधर्म । जौनजन अज्ञान द्विजको करतहैं अपमान । नष्ट ते जन होतहैं हमकहत सत्यसुजान ॥ होतनिन्दा प्रशंसा में कुशल अतिही बिप्र । लहतजासोंदुःख तापै होत कोपित क्षिप्र ॥ करतजाकी प्रशंसा द्विजबढ़तहैं जनजौन । हीनताको लहतजाकी करत निन्दातौन ॥ सोरठा ॥ करत अनुग्रह नाहिं जिहिक्षत्रीपै बिप्रबर । शूद्रयोनिकेमाहिं तिनकोहोत सुजन्महै ॥ दोहा ॥ बिप्रनते जो भाजिबो सोहै अतिकल्यान । बिप्रनकोजो जीतिबो सो कारण दुखदान ॥ आभीर ॥ द्विजहत्याहै जौन । महादोषहैतौन ॥ द्विजहत्या समअन्य । हैन सुनोनृपधन्य ॥ तोमर ॥ परिवाद द्विजकोजौन । कबहूंन सुनियेतौन ॥ जनकरत कौनहु होय । सुनिबैठिये मुखगोय ॥ सोरठा ॥ करनलगै जो भूरि कौनहुं निन्दा बिप्रकी । तो चुपह्वै उठिदूरिजाय बैठियेसुनुनृपति ॥ दोहा ॥ जो बिरोधकरि बिप्रसों सुखको लेयमहान । ऐसो भयो न होयगो भूमें सुनहु सुजान ॥ मधुभार ॥ जिमिमूठिमाहिं । आवतसुनाहिं ॥ मारुतअमन्द । सुनुधर्मनन्द ॥ सोरठा ॥ अरुजैसे

नहिंलेत परशपाणिसों चन्दको। तिमिहीं सुनहु सचेत लहत नहीं जयविप्रसों॥
इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेब्राह्मणप्रशंसायांत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३३॥
भीष्मउवाच॥ दोहा॥ अतिहि निरन्तरपूजिये बिप्रनको अवदात। कारण हैं सुख दुखनके बिप्रहि जानो तात॥ रामगीती॥ पूजिबे के योग्य हैं बहुभांतिसों द्विजपर्म। तृप्ति जिमिनृपकरै पितरहिं द्विजहि त्योंहि सधर्म॥ लहत हैं पर्जन्य ते सुखसर्ब जैसेभूत। सुनहुसुत तिमि द्विजनते सुखलहतराज्य अकूत॥ परमयाते राखियेद्विज राज्यमाहिं सुजान। होत अरिको नाश कीन्हें द्विजनको सनमान॥ राखिगृहमें ब्रतीसुकृती द्विजनको अवदात। करैपूजा नित्ययोसम धर्म और नतात॥ दियो जोहै द्विजनको अतिश्रेष्ठ अन्न अनूप। करतताको ग्रहण हैं सुरपितरमुनिवरभूप॥ भानुऔसित भानुमारुत भूमिजल दिशिसर्ब। बिप्रद्वारा होयकेयेकरतभोज्यअखर्ब॥ करतजिनकेनाहिंभोजन बिप्रबर अवदात। होतनाहीं तृप्ततताके पितरसुर हेतात॥ हनतपाप कलापकोद्विजदापवान अनूप। हैनयामेंतनकसंशयजानि निश्चयभूप॥ दानदीबे द्विजनकोजे करतसंशयपर्म्म। रहत नित्य समोदते हैंसुनहु तातसधर्म॥ होत तिनकेपुण्यकोपरलोकमें नहिंनाश। लहत उत्तम गातिहिते नितिभरे रहत हुलाश॥ होत जिहिजिहि अन्नसों हैं तृप्त द्विजअवदात। पितरदेवत होत तिहि तिहिसों सुतृप्तिसुतात॥ सोरठा॥ होत द्विजनतेयज्ञ बढ़तिप्रज्ञा हैयज्ञते। सुनुभूपतिबरप्रज्ञ याते द्विजको पूजिये॥ अरिल्ल॥ बिप्रहि स्वर्ग नरकके कारण। बिप्रहि दुखको करत निवारण॥ जौनबिप्रके बचनसुमानत। तौनअरिनको भयनहिं आनत॥ क्षत्रिय तेजमानबलवानसु। तिनकोबल अरुतेजमहानसु॥ होतशान्त बिप्रनमें सुनुसुत। बिप्रहोतहैं सर्बहि गुणयुत॥ चरणाकुलक॥ भृगुऋषि तालजंघको जीते। डारेकरि भटतासों

रीते ॥ जीते है हयके सुत गुणको । भरद्वाज कुधमें धरि मन को ॥ सोरठा ॥ मंत्रादिक हैंजौन सर्ब द्विजन ते होतहैं । सुनहु तात बुधिभौन पापहुको बिप्रहि हरत ॥ दोहा ॥ यहप्रसंग मैं कहतबुध यक इतिहास अनूप । सो तुमसों मैं कहतहौं सुनहु युधिष्ठिर भूप ॥ तामाहीं सम्बादहै आनन्दद अतिपर्म । बासुदेव अरु भूमिको हरता अतिशय भर्म ॥ बासुदेवउवाच ॥ सोरठा ॥ बूझत हौं संदेह तोसों धरणी एकहम । कहिये सहित सनेह माताञाता जगतकी ॥ गृहीजननको पापअतिदुखकर आनन्द हर । कौनकर्मको दाप तौनपापको हरतहै ॥ भूम्युवाच ॥ ब्राह्मण सेवन जौन अतिपावन उत्तमपरम । सुनहुकृष्ण मुदभौन सुख दायक सबलोकके ॥ तोटक ॥ जनपूजत जे द्विजके गनको । सह प्रेमसदा थिरकै मनको ॥ तिनके अघते नशिजातसबै । जगमें शुचिकीरति भूरिफबै ॥ बुधिउज्ज्वलहोत सुहैतिनकी । समता नहिंऔर लहैजिनकी ॥ सुकह्यो हमको यहनारदहै । अतिही ऋषितौन बिशारदहै ॥ द्विजसों सबभूति लहैसिधिहैं । गृहमाहिं महान भरेऋधिहैं ॥ द्विजको जनजे दुखदेतसुहैं । कबहूँनहिं ते सुखलेतसुहैं ॥ सुकलंकलग्यो शशिकेउरमें । द्विजकेकुधते सुकहौंधुरमें ॥ द्विजकेकुधते सरिता पतिसों । सुनिये हरिपारभयो अतिसों । द्विजकेकुधते मघवातनमें । भगमें सुहजार कहौंपनमें ॥ फिरि बिप्रनकी सुकृपालहिकै । सहस्राक्षभयो मुदको गहिकै ॥ महिमा द्विजकी नहिंजायकही । हरिको यहिभांति किह्योसुनही ॥ शुचिकीरतिको जनजौनचहैं । अरुजौन बिभूतिसु कोउमहैं ॥ जनते द्विजको अतिपूजत हैं । तिनकी शुचिकीरति कूजतहैं ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनिये महिकेबैन कृष्णहोय मोदितअतिहि । पूजाधर्मसचैन नीकीधरणी कीकरी ॥ दोहा ॥ यहउपमा सुनिद्विजन कीपूजाकरिसमचाय । तुमहूँबिधिसों श्रेयकोलहिहौ सुनुनरराय ॥
इतिशांतिपर्वणिदानधर्मेभूमिकृष्णसंवादेब्राह्मणप्रशंसायांचतुस्त्रिंशोऽध्यायः

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ जन्माहिंसों द्विजहोतहैं योग्यपूजिबेपर्म ।
करतअर्थ सब सिद्धिहैं सुनिये नृपति सधर्म ॥ जेजनपूजतद्वि-
जनको सहितप्रीति अभिराम । बाणीकहत समंगला तिनको
बेप्रललाम ॥ जेजनपूजत नाहिंहैं बिप्रनकोनृपशुद्ध । तिनको
कहत अमंगला बाणीहोय सक्रुद्ध ॥ यह प्रसंगमें कहतहौंबुध
गाथा प्राचीन । सो गाथाहम कहतहैं तुमको नृपति प्रबीन ॥
ुग्धबिलास ॥ रचिद्विजनको अबदात । अतिस्वस्थ होयसुतात ॥
ननमाहिं चिन्तनएह । बिधि कीन्हसुनु बुधिगेह ॥ दोहा ॥ जौन
रम करतब्यहै तौनकियो हमसर्ब । कीबेको अब और नहिं
कारजस्वच्छ अखर्ब ॥ रक्षाजोहै द्विजनकी सोअतिउत्तमकर्म ।
तातेअति आनँद मिलत सुनि अवनीप सधर्म ॥ चरणाकुलक ॥
कियेसहाय द्विजनकी राजा । मिलत द्विजनकी प्रभादूराजा ॥
मिलति बुद्धि अरुतेज महाना । अरु ऐश्वर्य्य मिलतहैंनाना ॥
श्रद्धा सहजे द्विजकोपूजै । द्विजकी परम प्रशंसाकूजै ॥ द्विजपै
करै क्रोधनहिं कबहूं । परुषहु बात कहैं द्विज तबहूं ॥ होतकाम
तेनके सबसिधिहैं । सर्बलोकमें होत प्रसिधि हैं ॥ सर्बपदारथ
सेद्धि करत हैं । बिप्र महातपनेम धरतहैं ॥ सोरठा ॥ यह द्विज
ीताजौन रक्षाकीबे द्विजनकी । सुनहु सुमतिकेभौन बुद्धिवान
जनहैकही ॥ यथा तपस्वी भूप होतमहा बलवानहैं । तिमिहीं
बेप्रअनूप होतमहा बलवानहैं ॥ रामगीती ॥ धरेकेते बिप्रबर हैं
सेंहको सुस्वभाव । धरेव्याघ्र सुभावकोहैं किते द्विजनरराव ॥
घरेनीरस्वभावकेते बिप्रहैंअबदात । धरेरहत स्वभावकेतेसर्प
को हेतात ॥ किते कोपितभये द्विजबर जनहिं मारत हाकि ।
सुनहुभूपति कितेकोपित भये मारतताकि ॥ होतबिबिधप्रकार
कहैं द्विजनके सुसुभाव । कहत प्रज्ञावान जनहैं सुनहुंबर नर
ाव ॥ बसे असुर पतालमाहीं किये द्विजअपमान । स्वर्गमा-
हीं बसे सुरबर कियेद्विजसनमान ॥ हैअशक्य डुलायबो हिम

वानको जिमितात । अरु अशक्य सुपरस जैसे व्योमको अव-
दात ॥ द्विजनकोहै जीतिबो तिमिहीं अशक्यमहान । सुनहुं
भूपति धर्मधर बर धर्म सुत मतिमान ॥ मोतीदाम ॥ बिरोधकरै
द्विजसों नृपजौन । न पालिसकै महिको नृपतौन ॥ सुनोद्विजहैं
सुरके सुरपर्म । महान सुजान कहैं सहधर्म ॥ सुबिप्रहि पूज-
त जौन सुभूप । सुभोगतहै महि तौन अनूप ॥ बढ़ै तिनकी
अतिकीरति स्वक्ष । कहौं अवगाहि तुम्हैं नृपदक्ष ॥ प्रतिग्रह
जे द्विजलेत महान । रहै तिनमें नहिं तेजसुजान ॥ दोहा ॥
जौन प्रतिग्रह लेत नहिं बिप्र परम अवदात । रहोसदातिनसों
सभयसुनहुधर्मधर तात ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्म्मेब्राह्मणप्रशंसायांपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

दोहा ॥ यहिप्रसंगमें कहतहम और एक इतिहास । सुनहु
तौन तुम धर्मसुत परम बुद्धिके रास ॥ जयकरी ॥ तामाहींसम्बाद
अनूप । मघवा सम्बरको सुनुभूप ॥ जटीहोय निजरूपछपाय ।
शक्रदनुजसम्बर पैजाय ॥ बूझतभये प्रश्न अवदात । तासों
सुनहुधर्मधरतात ॥ शक्रउवाच ॥ मुग्धबिलास ॥ किहिकर्म सों अव-
दात । तुमश्रेष्ठहोय बिभात ॥ हमको कहो तुमएह । सुनु दैत्य
बुद्धि सुगेह ॥ सम्बरउवाच ॥ सोरठा ॥ करत असूया नाहिं हमक-
बहूं हो बिप्रकी । जाय बिप्रकेपाहिं पूजाकरत सप्रेमहौं ॥ देहि
मोहिंजो शाप कोपितहोइकै बिप्रबर । तबहुं न क्रोधप्रतापाहिय
ते बाहर करतहौं ॥ तोटक ॥ सुनिशाप अनादर नाहिंकरौं । क-
रिबो अपराध न हीयधरौं ॥ गहिकै द्विजके पदपूजतहौं । ति-
नकी शुचि कीरति कूजतहौं ॥ जबसोवत बिप्र सुहैं सुखसों ।
तब जागतहौं मुदकी रुखसों ॥ दोहा ॥ पालति जैसे मक्षिका
क्षौद्रहि परमसनेम । ऐसेपालत बिप्रहैं मोहिं जोहि सहप्रेम ॥
जो द्विज हमको कहतहैं करत ग्रहणहमताहि । राखतहौं द्विज
भक्तिको नम्र होतहौंचाहि ॥ याते अपनी जाति में श्रेष्ठसुहैं

हमपर्म। जिमि नक्षत्रपति श्रेष्ठहैं नखतनमाहिं अभर्म॥ विप्र
नको जो मानिबो सोअति उत्तम काज। ऐसो और न काजहै
भूमें सुनसुरराज॥ यहकारणको जानिअरु देवासुर लखियुद्ध।
मोपितु हरषित होयकै बिस्मय कीन्हींउद्ध॥ लखिकै महिमा
द्विजनकी मोपितु मोदितहोय। बूझतभये बिशेषसों परमप्रेम
सोंभोय॥ विप्र सिद्धि किमि होतहैं महिमाभरे महान। सुनहुं
निशाकर मोहिंतुम कहिये यह सु निदान॥ सोमउवाच॥ प्रज्झली॥
सब बिप्र लहततप किये सिद्धि। जगमाहिं होत भूषित प्रसि-
द्धि॥ पितुगेहमाहिं श्रुतिपढ़त जौन। निंदा महान द्विजलेत
तौन॥ रामगीती॥ अल्पमेधावानकी श्रिय हनतहै अभिमान।
हनत त्यों सु कपोतकी श्रियबाज सुनुमतिमान॥ होत दूषित
कन्यका है गर्भसों जिमिपर्म। होतदूषितविप्रतिमि गृहबास
माहिं सधर्म॥ बैन सुनिकै चन्द्रमाके मोपिता मतिमान। पूज-
तोभो द्विजनको अतिगहि सुभक्ति महान॥ रहेपूजत पितामो
जिमि द्विजनको अभिराम। तिमिहि पूजत द्विजनको मैं भक्ति
गाहिकै माम॥ भीष्मउबाच॥ दोहा॥ दानवेंद्रके बचनसुनि अति
सप्रेमहोइ इन्द्र। पूजाकीन्हीं द्विजनकी ताते भयो महेन्द्र॥

इतिश्रीभाषायांमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

युधिष्ठिरउबाच॥ चरणदोहा॥ अभ्यागतजे अरु अपूर्वजे अरु
जे बसत सुपास। इन तीनहुं में पात्रकौनहै कहोसुमतिकेरास॥
भीष्मउबाच॥ सोरठा॥ इनतीनहुं में जौन क्रोधादिक सों रहितहै।
सुनहुतात बुधिभौन तौनहिं पात्र प्रधान है॥ मल्लिका॥ वेदको
प्रमाणजौन पर्ममोदका सुभौन॥ ताहि मानते सुजेन। पात्रता
लहैं सुतेन॥ मुग्धबिलास॥ बरवेद निंदकपर्म। अभिमान कार
सभर्म॥ कटु बाकवान महान। अरु पर्म दुर्मतिवान॥ यहि
भांतिके द्विजजौन। सुनुश्वानकेसमतौन॥ सोरठा॥ श्रेष्ठनके
आचार तामेंजे द्विजप्रवृत्तहैं। सुनुनृपबुधिआगार तेद्विजजी-

वत बर्षबहु ॥ रामगीती ॥ यज्ञकरिकै सुरनको ऋणदै छुटाय सु-
जान । वेदपढ़िकै ऋषिनको ऋणदै छुटात महान ॥ पितरको
ऋण पुत्रके उत्पन्न देयछुटाय । बिप्रको ऋण दानदैकै सुनहुं
हे नरराय ॥ अतिथिके ऋणको छुटावै देयभोजन पर्म । भर्म
तजिकै कर्म शुचिकै धरि सुहियमें धर्म ॥ दोहा ॥ जौनगृहीयहि
भांतिसों करैकर्म अवदात । ताके धर्म न नशत हैं निश्चय
जानोतात ॥
इतिश्रीभाषायांमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥
मल्लिका ॥दारकेसुभाव जौन । कैकृपा कहो सुतौन ॥ दारहोति
मेहमूल ।दोषसों भरी अतूल ॥ भीष्मउवाच ॥दोहा ॥यह प्रसंगमें
कहतबुध इकइतिहास अनूप । सोतुमसों मैं कहतहौं सुनहुंयुधि-
ष्ठिरभूप ॥ रामगीती ॥पंचचूड़ा अप्सराअरु सुऋषि नारद पर्म ॥
दुहुनके सम्बाद तामें कहततोहिं अभर्म ॥ भ्रमत लोकनमाहिं
नारद बर बिशारददक्ष । पंचचूड़ा अप्सराको भयेदेखतस्वक्ष ॥
अप्सराको देखि बूझत भये नारद ताहि । भयो संशय मोहिं
ये कछु कहौ सो अवगाहि ॥ भीष्मउवाच ॥पंचचूड़ाअप्सराबरसु-
ऋषिकेसुनि बैन । भईकहती बचन ऐसे सुनहुंनृप बुधिऐन ॥
बूझिबेके योग्य मोको होयजो हे बिप्र । समर्थाजो मोहिं जानत
बूझिये तो क्षिप्र ॥नारदउवाच ॥बूझिबेके योग्यहोइहै बूझिहैं हम
जौन । जो न बूझिबे योग्य होइहै बूझिहैं नहिं तौन ॥ दोहा ॥
जेसुभावहैं दारके कहोमोहिं ते सर्ब । तिय सुभावको सुननकी
इच्छाभई अखर्ब ॥ भीष्मउवाच॥सोरठा ॥ सुनिनारदके बैन ऐसेबो-
ली अप्सरा । सुनहुं भूपबुधिऐन धर्मवान यशवानबर ॥ दोहा॥
दारन निन्दा करतिहैं दारनकी मुनिराव । यातेमैं कैसेकहौंदारन
केसुसुभाव ॥सोरठा॥ जैसे दारसुभाव तैसे तुमहौ जानतै । सुनु
नारद मुनिराव याते बूझहु मोहिंजनि ॥तोटक॥ सुनि बैन ऋषी
यहिभांतिकही । सुनुहेतिय तूकहु मोहिंसही ॥ अति होतसुदो-

ष असत्यकहे । नहिंदोष सुहोत सुसत्य गहे ॥ सुनिकै मुनि बैन सुमोदपगी । तियभावहि सों कहिबे सुलगी ॥ पंचचूड़उ-बाच ॥ भुजंगप्रयात ॥ कुलीनासनाथा सुरूपाअपारा । महाशील वन्ती सुधाकी अगारा ॥ रहैचारु मर्यादमें तेउनाहीं । सुनो दोषएतो बड़ो दारमाहीं ॥ नहींदारसे और कोईसुपापी । कहौं सत्य तोसों सुनो हेप्रतापी ॥ सबैदोष को मूलहै दारजानो । नहीं अन्यथामैंकहीसत्यमानो ॥ मुग्धबिलास ॥ गुणवानऔश्रिय मान । अतिरूपवान सुजान ॥ दिनरातिजो बशनाहिं । संग कबहुं छोड़तनाहिं ॥ सोरठा ॥ तियकछु अंतरपाय ऐसे पतिको छोड़िकै । और पुरुषपै जाय करति बिहार अपारहैं ॥ दोहा ॥ असतकर्म नारीनके एहैं सुनुऋषिपर्म । और पुरुषको भजति हैं तजिकै लज्जाधर्म ॥ अरिल ॥ जोजन तियसों मीठेबोलत । कछुसँग रहि हिय प्रीतिहि खोलत ॥ करतितासु संगकीइच्छा तिय । अधरमनाहिं बिचारतहैहिय ॥ तियनहिंयोग्य अयोग्य बिचारति । मनआवत ता संग बिहारति ॥ मिलत सुअन्यपु-रुष नहिंजबहैं । घरकेमाहिं रहति तिय तबहैं ॥ भयको लखि देखि धनकोअति । नाहिंतजतहैं परनरसोंरति ॥ पुरुषमात्र ना-रिनको चाहिय । रूप कुरूप बिचारति नाहिय ॥ जेजन बहुत प्रीतिसोंराखत । कबहुंन परतियको अभिलाषत ॥ कारणपाय ताहि तजिकैतिय । औरपुरुषके जायलगतहिय ॥ कुब्ज अन्ध जड़नाहिं बिचारति । औनपंगु बामन निरधारति ॥ हैअयोग्य दारनको कछुनहि । रमणलगै कुत्सित पुरुषोंलहि ॥ पुरुष मि-लत नारिनकोनाहिंजब । लिंगबनाय बसनको तियतब ॥करति बिहार परस्पर सुनुमुनि । आसन रचित अनेकन गुनिगुनि ॥ दोहा ॥ प्राज्ञपुरुषके बचनको मिलतनाहिं जिमिभाव । तिमि सुभावनाहिं तियनको जानिपरतऋषिराव ॥ रामगीती ॥ तृप्तजस होतनाहीं काष्ठसों सुकृशान । नादिनसों जिमि होतनाहीं तृप्त

उदधि महान ॥ तिमिहिं पुरुषनसों न होती तृप्तनारीपर्म ।कहे तुमसों गुप्तनारिनके सुभाव सधर्म । सुरतिसों जिमि होतिनारी अतिहि मोदित सर्व । तिमिनमोदित होतकौनहुं पायबस्तु अखर्व ॥ सुनहुंजासेनाशकारक बह्नि सर्पककाल । तिमिहिंजानो तियनको तुम सुऋषि बुद्धिबिशाल ॥ रचीनारि सुढारिजबसों बिधाता मुनिराज । रचेतिनके दोष संगहि कहत प्रज्ञसमाज॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मेअष्टत्रिंशोध्यायः ३८ ॥

दोहा ॥ नारिनमाहीं रहतहैं नर आसक्त नितान्त । नरनमाहिं नारीरहत कहतसत्य वृत्तान्त ॥ यामें संशयहोतहै मो मन माहिं महान । सुनहुं पितामह प्राज्ञबर धर्म्मवान यशवान ॥ रामगीती ॥ करति अंगीकारहै किमि तियनको नरपर्म्म । रमति किनमें बिगतकिनते होतिनारि सधर्म्म ॥ करतिरक्षा तियनकी किमिपुरुषहैंमतिमान । योग्यकहिबेआपुयाते कहोतातसुजान॥ रहति बशमें नारिनाहीं पुरुषके अवदात । परत जो नर नारि करमें सो न छूटत तात ॥ गाय नव नव तृणनको जिमिकरति ग्रहण अमन्द । तिमिहिं नव नव नरनको तिय करतिग्रहण नरिन्द ॥ जौन अप्रिय पुरुषताको समय लहिकैतीय । बोलिके प्रिय वाक्य कोमल लायलेति सुहीय ॥ जौन माया नमुचिकी अरुदैत्य सम्बरतास । जानती हैं नारिते सब सुनहुबर बुधिरास ॥ रुदनकर तो देखि नरको रुदन करत महान । हँसत लखिकै हँसनलागैं तियहु सुन मतिमान ॥ जौन छलमय शास्त्र बिरचे शुक्र अरु गुरुपर्म्म । तिनहुंते तिय अधिक छलमय कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ सुनतहैं हम धर्म्मरूपा तियनको अभिराम । परत देखि अधर्मरूपा सुनहुबर बुधिधाम ॥ सकतहैं करि कौनरक्षा तियनकी मति माम । भयो मोहिय माहिंसंशय सुनहु भूपमहान ॥ दोहा ॥ केहिबिधिसों रक्षा करै तियकी सुनहु

सुजान । कौनेकी किहि भांतिसों सो बिधि कहौ महान ॥
इतिश्रीदानधर्मेस्त्रीस्वभाववर्णनोनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ जैसे कहे सुभाव नारिनके तुमहीयगुणि। सुनहुं प्रश्न नरराव तैसे होत असत्य नाहिं ॥ दोहा ॥ यह प्रसंग मैं कहत हौं यक इतिहास अनूप । सुनहु धर्म्मधर परम बर अधरम कर दरभूप ॥ चरणाकुलक ॥ जिहि काजै बिधि बिरची नारी । अतिहि मनोहरि परम सुढारी ॥ कहिहैं सो तुमको हम भूपति । पाप कारिणी होति तिया अति ॥ अति प्रज्वलित अग्निहै जैसी । जानहुं नारिन को तुम तैसी ॥ सर्पबह्नि बिष अरु असिधारा । एकओर यक ओरसुदारा ॥ तियदेवत्वहि प्रापित भई । आपुहि सुनहु नृपति यह नई ॥ तब सबसुर ब्रह्मा पै गये । भय अरुसंशय सों अतिरये ॥ बिधिको सब वृत्तान्त सुनैकै । सर्व भये बैठत चुपह्वैकै ॥ तिनके मनकी जानिबिधाता। जगकर जगधर जगबर त्राता ॥ नरमोहन को बिरची नारी । अतिही चञ्चलतासों भारी ॥ पूर्ब सृष्टि में रही सुशीला । कहे सुरनके रचीकुशीला ॥ तिन नारिनजो इच्छा कीन्ही । सो ब्रह्मा पूरण करि दीन्ही ॥ मथति सदा तेनर की नारी । काम कलो-लनि भरी सुढारी ॥ मल्लिका ॥ कामकी सहाय काज । क्रोधको कियो दराज ॥ काम क्रोध माहिं जौन । प्राप्त हैं सुनौ सुतौन॥ होय रक्त नारि माहिं । नित्यही रहैं सुपाहिं ॥ नारि शास्त्र सों बिहीन । होतिहैं कहैं प्रवीन ॥ पूर्व मैं सुन्यो सुएह । हेसुनो सु-बुद्धि गेह ॥ दोहा ॥ रक्षाकी गुरुनारि की बिपुल सुऋषि मति-मान । सुनहु युधिष्ठिर भूपबर धर्मवान यशवान ॥ मुग्धबिलास ॥ एकहा सुऋषि अभिराम । तिहि देव शर्मानाम ॥ तिय तासु सुन्दरि पर्म । अतिही सुजानि अभर्म ॥ रुचि नाम तासु महीप। तिहिसी न कौनेहु द्वीप ॥ जितजाति वह तितआय । चितवत चकोर सचाय ॥ तिहिको सुरूप अनूप । लखि देव दानवभूप॥

निति रहत मोहित तात । अति जानिकै अवदात ॥ सुरराज तौ लखि जाहि । मुदवान होय सराहि ॥ अतिही सुमोहित होत । सुनु धर्मधर बुधिपोत ॥ ऋषिदेवशर्मा पर्म । बरज्ञान वान अभर्म ॥ तियके सुभावहि जानि । हियमाहिं सो अनुमानि ॥ पुनिकाम चारी पर्म । मघवाहिजानि अभर्म ॥ दोहा ॥ भार्याकी रक्षा करन लागो ऋषि मतिमान । अप्रमत्तह्वैकै परम भूपति सुनहु सुजान ॥ रामगीती ॥ काल कौनहुं माहिं ऋषिबर कियोयज्ञबिचार । सुनुयुधिष्ठिर धर्म्मधर बरपर्म्म बुद्धिअगार॥ होयरक्षा नारिकी किमि करि सुचिन्ता माम । लयो शिष्य बुलाय अपनो बिपुल ताको नाम ॥ कह्यो ऋषि इमिशिष्यसों सुनु बिपुलबर बुधिगेह । करो रुचिकी तुमसुरक्षा महासहित सनेह ॥ देखिकै सुरराजयाको रूपमोहित होय । नैनकरिकैऐन रस के जात है नितिजोय ॥ सोरठा ॥ अप्रमत्त अति होय रुचि की रक्षा करहु तुम ॥ ताते मुदसोंभोय मखकी रचनाको करो ॥ मधुभार ॥ बहुधरत रूप । मघवा अनूप ॥ सुनु बिपुल दक्ष । बुधि धर सु स्वक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि बिपुल बैन । ऋषिके सचैन ॥ इमि कही बात । मुनिको बिभात ॥ बिपुलउवाच ॥ मघवा सुआय । मायाहि छाय ॥ बपु धरत कौन । कहिये सुतौन ॥ भीष्मउवाच ॥ आभीर ॥ सुनि करिकै ऋषिराय । ऐसे कह्यो सचाय ॥ माया महा महान । सुरपतिकी मतिमान ॥ तोमर ॥ बहुधरतबेष महान । सुरनाथ सुनु मतिमान ॥ कबहूं सुहोत सुथूल । कबहूंक कृश की तूल ॥ कबहूंक होत सुश्याम । कबहूंक गौर ललाम ॥ कबहूंक होत सुरूप । कबहूंक होत कुरूप ॥ कबहूंक वृद्ध सुजान । कबहूंक तरुण सुठान ॥ कबहूंक द्विज मतिपोत । कबहूंक क्षत्रिय होत ॥ कबहूंक बैश्य प्रतक्ष । कबहूंक शूद्र सुदक्ष ॥ कबहूं सुकोकिल रूप । कबहूं सुहंस अनूप ॥ कबहूं सु बायस होत । कबहूं सुशुक छबि पोत ॥ कबहूं सुमैगल चारु । कबहूं सुसिंह

उदारु ॥ कबहूं सुनृप अवदात। सुनु धर्मधर बरतात ॥ कबहूं सुबायु स्वरूप। सुरनाह होत अनूप ॥ इमिधरतरूप अनेक। सुनुतात हे सबिबेक ॥ सोरठा ॥ सुनहु विपुल मतिमान अप्रमत्त ह्वैकेपरम। तजिकै भरम महान रुचिकी रक्षाकीजियो ॥ ऐसे कहिकै बैन महाधर्म्मधर बिपुलसों। ह्वैकैपरम सचैन चलतभयो मखकरनको ॥ मधुभार ॥ सुनि बिपुलबैन। गुरुकेसचैन ॥ यहकिय सँदेह। सुनुसुमतिगेह ॥ गुरुकी सुनारि। अतिही सुढारि ॥ कोताहिजोय। मोहितनहोय ॥ बरवै ॥ किहिबिधि ताकी रक्षाहोय महान। है बहुरूपी मघवा अति बलवान ॥ कबित ॥ सदनको ढांपि राखौं गुरुपतनीको जोतो बायुबपुधैकरि परसकरै आयकै। राखौं पुरुषारथसों होयतौ ब्यरथबल समरथ इन्द्रहै कहतबुध गायकै ॥ अंगमाहिं पैठिकै सुढंग सों जो रक्षा करौं देय गुरुशाप तो सुक्रोध दाप छायकै। मतिको अगारऋषि बिपुल उदार इमिकरत बिचार भयो संशय सरसायकै ॥ सोरठा ॥ ऋषिबर बिपुल समर्थ ताको करत बिचारभे। रक्षामाहिं समर्थ जानि पर्‍यो बलयोगको ॥ बरवै ॥ रुचिकीरक्षा यासों करिहौंपर्म्म। कहतभयो तब ऐसे बिपुलसधर्म्म ॥ कारज जो यह करिहौं उत्तममाम। ह्वैहै तो यशभुवमें ममअभिराम ॥ रामगीती ॥ योगबलसों बपुष धरिकै अलप या तनबीच। बसैंगे हम करनरक्षा परमहोय निभीच ॥ कमलके दलमाहिं जैसे रहत नीर अशक्त। तिमिहियाकी देहमेंहम रहैंगे सुबिरक्त ॥ मोहिंयहशुचि हेतुते अपराध ह्वैहैनाहिं। यहबिचार सुकियो ऋषिबर बिपुलहियकेमाहिं ॥ योगबलसों छोड़िकै निजदेह ऋषिमतिमान। गुरुतियाकी देहमाहीं कैप्रवेशसुजान ॥ नेत्र माहिं मिलायनेत्रन कियेबशमेंपर्म। श्रवणमाहिं मिलाय श्रवणहिं सुनहुंतात सधर्म ॥ ज्ञानइंद्रिय सर्वऐसी करीबशकेमाह। बिपुलऋषिबर धर्मधरबर सुनहु हेनरनाह ॥ नारितनमहँरहि-

तचेष्टा होयबैठोआप। तियअचेष्टित भईताते सुनहुधर्मकला-
प । गुरूपत्नी अंगमाहीं कियोविपुलप्रवेश। तियाकौतुकनाहिं
जान्यो बिपुलको सुनरेश॥ आयहैंजबलौं न मोगुरु यज्ञकरिकै
पर्म । नित्यरुचिकी करौंगो रक्षासुहोय अभर्म ॥ दोहा ॥ यहकी-
न्हों संकलपबर बिपुल सुऋषिमतिमान । सुनहु धर्मधर सुयश
धर बुधिधर परम सुजान ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेबिपुलोपाख्यानेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

रामगीतो ॥ कालकौनहुं माहिंसुरपति दिव्यधरिकैरूप । यज्ञ
करिबे गयोऋषिको जानपरम अनूप ॥ जायआश्रम माहिंऋ-
षिके भयोमोदितपर्म । महालोलुपकाममदसों भरोभूरिअभर्म॥
चित्रऐसी रहतचेष्टा विपुलकीलखिदेह । लखीपुनि ऋषिनारि
सुरपति महासहित सनेह ॥ केशचारु सुवेषताके गोलगोल
कपोल । महासुखमा सदनजाको बदन लोचनलोल ॥ कम्बुसो
गर परम छबिधर चेतहर बरबैन । पीनकुच कटिक्षीण जाकी
त्रिबलिका छबिऐन ॥ लसतिजंघा रामकदली कमलऐसेपाय।
भयोचक्रित रूपताको देखिनिर्जरराय ॥ देखिकै सुरनाथकोसो
भई हर्षितदार । होयविस्मित भई मोहित जानिपरमसुदार ॥
कौनहौ यह बूझिबेकी करी इच्छापर्म । उठन लागी सकीउठि
नाहिं बिपुलसों सहधर्म ॥ आपुही तबकहनलागो नारिसोंइमि
बैन । नारि हम तव काजआये चारुछबिकी ऐन ॥ काम तव
संकल्प भवअति देतमोकोपीर । करहुताको दूरिहेतिय आय
मेरेतीर ॥ कालबीत्यो जातहै अबबेरकरु जिननारि । होयकै
बेहाल मेरो रह्योहै हियहारि ॥ अन्तगुरुतोमर ॥ सुनिबैन ये मघ-
वानके । अतिही सुदुर्मतिखानके ॥ बशमाहिं इन्द्रिनकोकरी ।
तियको सुमन्मथसोंभरी ॥ तिहिते सुबोलिसकीनहीं । इहिभां-
तिसों बिपुलैगही ॥ गुरुनारिको मनजानिकै । मघवाहि दुर्मति
मानिकै ॥ अतियत्न रक्षाकोकियो । गुरुनारिको बशकैहियो ॥

मघवा सुरुचिको देखिकै । अति निर्बिकारिणि लेखिकै ॥ इमि बोलतोभो प्रीतिसों । वरलोलुपौकी रीतिसों ॥ तियआउ हे ममपास में । सुखलेहु काम बिलासमें ॥ सुनिबैनये सुररायको तियजानिके अतिचायके ॥ मनमाहिंमोदितहोयकै । मुसुकायकै तियजोयकै ॥ दोहा ॥ बोलनकी इच्छाकरी सुरपतिसों तियपर्म। भरीमदनमदसों महा द्युतिकीसदनअभर्म ॥बोलनलागीनारि तब दिये फेरि मुनिबैन । बोली इमिकछु सुनु नृपति परम धर्म के ऐन ॥ भुजंगप्रयात ॥ सुनो कौनकाजे इहांआपु आये । कहौशक्र मोसों महा मोद छाये ॥ इतेबैन पीछे गयोबोलि नाहीं । भयो शक्र के भूरि संशैहिनाहीं ॥ दोहा ॥ दिब्य नयनसों देखतों भो तब श्रीसुरराय । देख्यो जब ऋषि बिपुलतब कम्पित भयो सकाय ॥ रामगीती ॥ छोड़िकै गुरुनारि को ऋषि बिपुल ते यश धाम । कियो आप प्रवेश अपनी देहमें अभिराम ॥ महा क-लुषी शक्रको लखि बक्रकरिकै नैन । शापदेतो भयो ऋषिवर होयक्रुधको ऐन ॥ बिपुलउबाच ॥ सुनहु हे दुर्बुद्धि मघवा पापवान बिशाल । होय तव पूजा न कबहूं लोकमें बहुकाल ॥ भगनसों चिह्नित सुकरिकै तोहिं गौतम बिप्र । छोड़ि दीन्हों रहोसो तू भूलिगो का क्षिप्र ॥ चरणाकुलक ॥ अब सुरपति तुमको हमजाने। हौ तुम पापी परम महाने ॥ सुनहु मूढ़ इच्छा हम जाकी । नि-त्यकरत ताको तुमताकी ॥ सुनहु शक्र आये तुम जैसे । जाहु चले अबहीं तुम तैसे ॥ क्रोध अग्निसों जारेनाहीं । सो तुम भलजानो मनमाहीं । सुनि मुनिबैन शक्रभो ऐसो । हिमको मारो भूरुह जैसो ॥ काँपनलगो भीतिसों छायो । जैसे मनुज पूषमेंन्हायो ॥ ऐसे बिकल भयो हियमाहीं । जानौ चोर सैंदके पाहीं ॥ दशादेखि सुरपति की मुनिवर । कह्योजाहु अबबेगि सुपविधर ॥ हेसुरपति जो मो गुरुऐहैं । तौ तुमको क्षणमाहिं जरै हैं ॥ तुम्हैं योग्य करतब्य न ऐसो । सुनोशक्र कीन्हो तुम

जैसो ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ बैनसुनिकै बिपुल मुनिके शक्र आरत होय। कह्यो कछु नहिं भये अन्तर्द्धान दुखसों भोय॥ कछुक बीते यज्ञकरिकै देवशर्मापर्म। भयेआवत सदनमाहीं सुनहु तात सधर्म॥ दोहा॥ पूजनकै गुरुदेवको बिपुल महातप वान। हर्षित ह्वै बैठत भयो लहिकै धर्ममहान॥ तोटक॥ गत काल भये कछु मोदपग्यो। मघवाकृत को कहिवे सु लग्यो॥ सुनिकै मुनिको सब भय सु भग्यो। टरिगोदुख सर्ब सुखै उमग्यो॥ मल्लिका॥ शिष्य की सुभक्ति देखि। चारुहीय माहिं लेखि॥ यों कह्यो सु पुत्रधन्य। तो समानहै न अन्य॥ रामगीती॥ होय तुष्टित देवशर्मा कहे ऐसेबैन। मांगुअब बरदान मोसों बिपुल बरबुधि ऐन॥ बचनसुनिकै बिपुल ये गुरुदेव के अवदात। भयो मांगत यह सुबर बरदान हे सुनुतात॥ धर्म में थितिरहै मेरी नित्यही अभिराम। देहु यह बरदान मोको सुनहु गुरु बुधिधाम॥ देवशर्मा चाहिकै भरि मोदही में माम। कह्योऐसे होहु थिति तव धर्ममाहिं ललाम॥ पायकै बरदान गुरुसों बिपुल मुनि मतिमान। लग्योतपकी क्रियामाहीं सुनहु भूपसुजान॥ सहित नारी देवशर्मा ऋषिहु बनमेंजाय। होय निर्भय करत भे तपहर्ष हियमें छाय॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेबिपुलोपाख्यानेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

भीष्मउवाच॥ पज्झटी॥ तपकीन्ह बिपुल ऋषिबर महान। अति तेजवान भो सो सुजान॥ गुणजासुलगे गावनसुबिप्र। जेहिको सुदर्श अघदरत क्षिप्र॥ रामगीती॥ जानतो भो आपु कोसो बिपुलबर तपवान। सुनुयुधिष्ठिर धर्म्मधरबर ज्ञानवान महान॥ कालतौनहिं माहिं रुचिकी भगनिकाकेचारु। भयो उत्सव उद्वहेसुनु भूपउद्व उदारु॥ अरिल॥ तौनहिं समय माहिं सुनुभूपति। एकअंगना रूपमई अति॥ जातिहुती नभ मारग को गहि। तासुदेहते पुष्प गिरेमहि॥ निकरिगेहते ते चुनिकै

रुचि। धारण किये समुद शिरमेंशुचि ॥ दोहा ॥ रुचिकी भगिनी ज्येष्ठा तासु प्रभावति नाम। अंगदेशपति चित्ररथ तासुबाम अभिराम ॥ चरणाकुलक ॥ रुचिकेगेह निमंत्रन आयो। ताके गृह ते मुदसों छायो ॥ तबरुचि आनँदसों अतिरई। अंगदेशपति गृहमेंगई ॥ रुचिकी भगिनी सुमनहिं देखे। अतिहि अनूप महीमेंलेखे ॥ भगिनी सुमन कहां ये पाये। अतिहि सुगन्ध चारु सोंछाये ॥ प्रभावती इमि कहतीभई ॥ सुमनलेनकी रतिसोंरई ॥ भगिनीके सुबैन सुनिकैरुचि। कहीजाय अपनेपतिसों शुचि ॥ सुनि वृत्तान्त तौन रुचिकोपति। लखि मुसुकाय भयो मोदित अति ॥ मधुभार ॥ बिपुलहि बुलाय। ऋषिचोपछाय ॥ इमिकहेबैन। सुनु सुमतिऐन ॥ ऐसे सुफूल। मोदद अतूल ॥ तुम जाहुलैन। अतिकैसचैन ॥ सुनिबचनचारु। गुरुके उदारु ॥ बिपुलसुपयान। कीन्हींसुजान ॥ रामगीती ॥ नारितनते गिरे हेजिहि देशमाहींफूल। गयेतौने देशमाहीं भरेमोद अतूल ॥ गिरेहे बहुदिननके पै भये फूलनमन्द। देखिकै मुनि बिपुलतिनको लहोअति आनन्द ॥ लेयफूलनि चल्योतूरण बिपुल मुनिअवदात। धरेहीमें मोदको अतिधर्मधर सुनुतात ॥ महानिर्जनबिपिनमाहीं नारिनरअभि-राम ॥ पाणिसोंगहि पाणि घूमत रहेदोऊ माम ॥ सुनहु तिन दोऊनमाहीं चलत एकउताल। चलत एकउतालनाहीं सुनहु भूपाबिशाल ॥ भयो कहतो नारिसों तवपुरुष ऐसेपर्म्म। शीघ्र तूहे चलत तजिकै मानको बरधर्म्म ॥ बैनसुनिसो भई कहती चलतितूरणनाहिं।मानगहिकै चलतिहैं हममानु सत्यहिमाहिं ॥ देखिदोऊ बिपुलको इमि करीशपथ सुजान। कहत जौहमहो-हिंमिथ्या हियेराखि महान ॥ जौनगति परलोक माहीं बिपुल ऋषिकीपर्म्म। प्राप्तसो परलोकमाहीं हमैंहोय अभर्म्म ॥ मलि-नभो मुख विपुल ऋषिको दुहुंनके सुनिबैन। नष्टमम तपभयो ऐसे कह्योहोय अचैन ॥ कौनधौं हमकियो इन दोऊनको अघ

माम। कहतजातेमोहिं ऐसेबैन ये बुधिधाम॥ बिपुल ऋषि यह चिन्तना कै होयअतिदुखवान। भोबिचारत आपनोअघसुनहु भूपसुजान। तेहि अनन्तर पुरुषषट अभिराम बरबुधिधाम। रहेखेलत द्यूतको तेभरे मुदसोंमाम॥ शपथ उन दोऊनकीन्हो तौनहीं इन कीन। बिकल औरउ भयोसोसुनि बिपुल सुमुनि प्रवीन॥ कहत भे ते विपुलमुनिको देखिऐसेबैन। सुनुयुधिष्ठिर धर्मधरबर परम बुधिकेऐन॥ कहतहोहिं अरीति जोहमलोभ को गहिथोक। प्राप्त हमको होयतौ गतिबिपुलकी परलोक॥ बैनसुनिये बिपुल मुनिबर होयक्केशितपर्म। धर्मको व्यभिचार अपनो भयोलखत अभर्म॥ चिन्तना बहुदिननलौं ऋषिकरी होयउदास। लखिपस्यो तबहेतु अघको सुनहु नृपबुधिरास॥ कहतभो अवगाहिकै सो बिपुलमुनि अवदात। भयोमनमें मलिन अतिज्यों कुमुदिहोत प्रभात॥ करीरक्षा गुरुस्त्रियकीसर्ब अंग मिलाय। कह्योमैं यहहेतु नहिं गुरुदेवसों सुखदाय॥ मानतोभो आपुमें यह पापऋषि मतिमान। सुनु युधिष्ठिर धर्म्म धरबर ज्ञानवान महान॥ जायचम्पा पुरीमेंमुनि बन्दि गुरुके पाय। सुमनदेतो भयो गुरुको प्रभामैं सुखदाय॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिदानधर्मेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

भीष्मउवाच॥ रामगीती॥ देवशर्मा शिष्यको लखिकहत भो जो बैन। सुनहुसो तुम नृपयुधिष्ठिर महत मतिकेऐन॥ देवशर्मोवाच॥ लख्योतुम कछुबिपिनमाहीं सुनहुसुत बुधिधाम। जानतेहैं तुम्हें तिनको लखे तुमते आम॥ विपुलउवाच॥ कौन हे तिय पुरुषदोऊ भरेपरमा माम। सुनहु गुरु अरुकौन हे षटपुरुषबर अभिराम॥ देवशर्मोवाच॥ लखेजे हे बिपिनमें तुमपुरुषनारि अनूप। दिवस निशिते रहेदोऊ धरेनरतियरूप॥ रहजे हे पुरुष बनमें तौन हे ऋतुपर्म। बिपुलमुनि सुनु धर्मधरबर ज्ञानवान अभर्म॥ पाप

को अरु धर्मकोंजे करतहैं जनतात । लखत ऋतु दिनरैनि तिनको धर्मधर अवदात ॥ करीतुम मम नारिकी जिहिभांति रक्षा पर्म । कह्यो हमकोनाहिं सो तुम सुनहु तात अभर्म ॥ हेतुयाते लोक जौ पापीनको है पर्म । तुम्हैं प्रापति होयगो सो मानुसत्य अभर्म ॥ विपुलमुनि सुनि देवशर्मा सुऋषिके बरबैन । सुनु युधिष्ठिर धर्मधरबर भयो परमअचैन ॥ देखि क्लेशित विपुलको मुनि देवशर्माभूप । कहतभो मुसकाय ऐसे कैदयालु अनूप ॥ करी रुचिकी पर्मरक्षा धर्मगहि अवदात । सुनहु परम प्रसन्न याते हैं सुतुम परतात ॥ दोहा ॥ अधरम जो हम देखते तवहिय माहिं सुजान । करते और बिचार नहिं देते शापमहान ॥ रक्षा की मम नारिकी तुम सचेत कै पर्म । यातेरहिहौ मोदमय लहिहौ स्वर्गसधर्म ॥ त्रिभंगी ॥ मुनि देवशर्मा परम अभर्मास्वक्ष सधर्मा सुमतिभयो । विपुलै इमिकहिकै संगति लहिकै मोद सुगाहिकै स्वर्गगयो ॥ सुनुतात यशस्वी एकतपस्वी हौबर चस्वी श्रेयळयो । गंगाके तटमें नीर निकटमें शुचि औघटमें ज्ञान रयो ॥ दोहा ॥ कह्यो मोहिं अख्यान यह तिनकरि कृपा महान । सुनहु युधिष्ठिर भूपबर धर्मवान यशवान ॥ रामगीती ॥ पतिब्रता तिय होति केती केती कुलटापर्म । होतिहै द्वै भांतिकी तिय सुनहुतात सधर्म ॥ पतिब्रता जगमाहिं जेती नारिहैं अवदात । लोकमाता कहत तिनको सर्वजन हे तात ॥ रहति मोदित भूमि तिनके धर्म करिकै पर्म । कीर्त्ति तिनकीहोत भूमें सुनहुतात सधर्म ॥ जौन कुलटा नारि तिनकी करतनिन्दा सर्ब । धरतिही में धर्मकेहुन करतिपापअखर्ब ॥ योग बलसों होतिरक्षा तियनकी अभिराम । औरभांति न होति रक्षा कहत मतिसों माम ॥ रहत जोनर नारिसँगमें करत कामाबिलाश । लगतसोई परमप्यारो तियनको बुधिराश ॥ प्राणग्राही देवता हैं नारिनिश्चयजानि । रहततिनते यज्ञदूरिहि परम दुखदामानि ॥ एकविपुलै करीरक्षा

नारिकी अवदात। अन्य अबलौं नाहिंकीन्हीं माननिश्चयतात॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

दोहा॥ पितरदेवसुत अरुसुकृतइनको जो है मूल। कहहुताात अब तौनतुम महिमा भरे अतूल॥ कैसे बरको कन्यका दीजै यह सुबिचार। है अतिउत्तम सुनुनृपति मतिकेचारु अगार॥ भीष्मउवाच॥ छन्द॥ बरको सुजानि जान। शुचिकर्म करत कुलवान॥ बुध ताहि कन्यादेत। सुनुतात परमसचेत॥ यह बिप्र ब्याह अनूप। बुध कहत बुद्धि स्वरूप॥ बर योग्यजानि बुलाय। अति हर्ष हियमें छाय॥ सुनु देय कन्या ताहि। बुध कहत हैं अवगाहि॥ यहक्षात्रब्याह सुढार। सुनुभूप उद्ध उदार॥ दोहा॥ कन्या जिहि बरको चहै कन्याको बर जौन। तिहिको दीजै कन्यका सुनहुतात बुधिभौन॥ यह गन्धर्बबिवाहहै भरो उछाह महान। कहत वेदबिद बिप्रहैं जिनकी सुमति महान॥ दै धन कन्या लेयके जो जन करत बिवाह। आसुरतौन बिवाह है कहत सुबुध नरनाह॥ जन हतिकन्या लेयँजे बरबस करत बिवाह। राक्षस तौन बिवाह है कहत सुबुध नरनाह॥ जयकरी॥ पञ्चबिवाहन माहिं सुभूप। ब्राह्म्य क्षात्रगान्धर्ब अनूप॥ हैं बिवाह ये उत्तमधर्म। कहत सुबुधजन तातसधर्म॥ राक्षसब्याह अरु असुरबिवाह। ये नहिं उत्तम हैं नरनाह॥ कीजै ये बिवाह कबहूंन। इनते धर्महोतहैऊन॥ दोहा॥ ब्राह्म्यक्षात्रगांधर्ब अरु ये बिवाह सुखदान। मिलेहोहिं वा प्रथककै कीबे योग्य सुजान॥ तीनबर्णकी कन्यका ग्रहण करत द्विजधर्म। द्वै बर्णन की क्षत्रिसब करतग्रहण सहधर्म॥ कन्या अपनिहिं जातिकी वैश्यलहत सुनुभूप। कहत परम अवगाहिकै प्रज्ञावानअनूप॥ शूद्राको कीजैग्रहण रति कीबे अभिराम। किते कहत बुध कहतहैं केतेनाहिं ललाम॥ शूद्रामें जो होतहै पुत्रसुनहु मतिमान। सो न प्रशंसा लहतहै साधुनमाहिं महान॥ जौनकरत उत्पन्न

है शूद्रामें सुतपर्म । होत तौन द्विज पातकी बुधबर कहत अ-
धर्म ॥ कन्या जो दशबर्षकी ताको बर अभिराम । तीसबर्षको
योग्यहै कहत सुबुध बुधिधाम ॥ सप्तबर्षकी कन्यका ताकोबर
अवदात । योग्यबर्ष इकबिंशको निश्चयजानहु तात ॥ जिहि
कन्याके होयनहिं पितुअरु भ्रातापर्म । सो बिवाहिबे योग्यनहिं
बुधबर कहत अधर्म ॥ सोरठा ॥ रजोधर्म पश्चात तीनबर्षलों
कन्यका । सुनहु भूप अवदात पतिको संग्रह नहिं करै ॥ बर्ष
चतुर्थ माहिं कामक्रियामें ह्वैनिपुण । जायपतीके पाहिं लहै म-
दनके मोदको ॥ जाकी सन्तति पर्म कबहूंहीन न होतिहै । सुनु
अवनीप सधर्म अरु रतिरति नाहीं टरै ॥ मधुभार ॥ यहिक्रमहि
त्यागि । रतिमाहिं पागि ॥ तिय चलतिजौन । दुखलहतितौन ॥
निन्दामहान । तिनकी सुजान ॥ जगमाहिंहोत । सुनुबुद्धिपोत ॥
दोहा ॥ माताको अरु पितरको गोत्र बचाय सुजान । ब्याह की-
जिये कहत बुध जिनकी सुमति महान ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ सोरठा ॥
काहू दीन्हों होय देत होय कोउ मोलको । कोऊ हठसों भोय
कहतहोय हम देहिंगे ॥ कोउ दिखावतहोय मोल कन्यका को
परम । कोऊ सुखसों भोय कियोहोय करको ग्रहण ॥ दोहा ॥
कन्या इन पांचौनमें किहिकी भार्य्या होय । कहौ आपअवगा-
हिकै ज्ञान नयनसों जोय ॥ भीष्मउबाच ॥ सोरठा ॥ सुनहु युधिष्ठिर
भूप इनपांचहुमें नारिवह । तिहिकी होय अनूप कियो होय
जिहिकर ग्रहण ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ काहू लीन्हींहोय मोल देइकै
कन्यका । कोऊ तिहिका जोय लेइजाय निजबीर्य्यसों ॥ दोष
होत की नाहि ताको कन्या हरणको । कहौ आपुअवगाहि सु-
नहु पितामह प्राज्ञबर ॥ भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ मोललेनमें होतहै
भार्य्याको नहिं भाव । याते कन्याहरणको दोष नहीं नरराव ॥
मोल न निश्चयकार है भार्य्याको सुनुभूप । यामें कहत प्रसंग
इक सो सुनु परमअनूप ॥ काशीपतिको जीतिकै ताकी कन्या

तीन । ल्यायेहम निजवीर्य्यसों सुनु अवनीप प्रवीन ॥ लखिकै तिन कन्यानको मो पित भ्राता पर्म । मोको ऐसे कहतभे पर्म सधर्म अभर्म ॥ रामगीती ॥ अम्बिका अम्बालिका ये दोय कन्या जौन । करहु इनको ब्याह भीषम सुनहुबर बुधिभौन ॥ छोड़िबे के योग्य अम्बा है सुतात सुजान । छोड़ि अम्बहि देहुयाते करु न बैरमहान ॥ भयोनहिं कर ग्रहणयाते दोष क्छु है नाहि । दईहम तब दुओकन्या चित्ररथको ब्याहि ॥ कह्यो ऐसे मोहिं मोपित भ्रातअति अवदात । और लोक प्रसिद्ध है इकबातसो सुनुतात ॥ कहतकन्यादानहैं सबकोइ जगकेमाहिं । जीतिबो अरु मोललीबो कहतकोई नाहिं ॥ मोल दैकै लेतजे जे मोल लैकैदेत । सुनहु ते जन धर्मवान न कहतप्रज्ञ सचेत ॥ मोल लीन्हें होत है नहिं भारयाको भाव । होत करके ग्रहणही ते सुनहुबर नरराव ॥ करत ऐसे कर्मकोजन धर्मच्युतहैं जौन । भर्मसों हैं भरे ते अतिपर्म दुर्मति भौन ॥ मोललीन्हीं कन्यका में होत दासीभाव । भारयाको भाव कबहूं होतनहिं नरराव ॥ दोहा ॥ कन्याके करको ग्रहण बिधिवत करै सुजौन । ताकी भार्य्या होतिहै कहत सुबुध बुधिभौन ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ मोलदैकै कन्यकाको कोइजाय बिदेश । करै ब्याह न कोय ताकी भीतिते सुनु देश ॥ कन्यकाको पितागुणि तब करै कौन उपाय । कहौ यह सन्देह कहिबेयोग्य हौ नरराय ॥ भीष्मउवाच ॥ कन्यकाको मोलदैकै जौन जाय बिदेश । सुनहु ताके कुटुम्बवारे लोगजेहैं बेश ॥ कन्यकाको पिता तिनको देइ फेरि न मोल । सकैतौ करिब्याह अनत न मानु सति मो बोल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ होय जिहिके पुत्रनाहीं द्रव्य तिहिको जौन । लेयकै किहिभांतिसों सो कहहुप्रज्ञाभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ जैसो आत्मा होत तैसोई सुतहोतहै । सुनहु

नृपति बुधिपोत होति सुताहै सुत सदृश ॥ रामगीती ॥ पिता को धन लेयकन्या मात जो नहिं होय । लहै कोई और नाहीं कहतवर बुधलोय ॥ सुनु युधिष्ठिर मातको जो पृथक धन है पर्म । सुताहीको भागसोहै कहत प्रज्ञअभर्म ॥ होयजाके सुवन नाहीं तासु श्राद्ध सुजान । सुताकोसुत करै सोई लेय द्रव्य महान ॥ पुत्रमें अरु पुत्रिकाके पुत्रमें नहिं भेद । कहत सुबुध महानहैं जिनपढ़ो नीकेवेद ॥ प्रथम सुतवत कन्यकाको मानि लीन्हींहोय । होय फेरि सुपुत्र तौ सुनु कहतहैं बुधलोय ॥ पांच भाग सुद्रव्यके तिनमाहिंले सुततीन । भागद्वै ले कन्यकासुनु भूपपरम प्रवीन ॥ सुतातनुजा होयअरु सुत मोललीन्होंहोय । करत ताको न्यायहैं यह धर्मशास्त्री लोय ॥ तीनिभाग सुलेय कन्याभागले सुतदोय । सदाचार सुपर्महैंयहकहतहैं सबकोय ॥ बेचिदीन्हीं कन्यकाकोसुवन जोअभिराम । लहैधनमेंभागनाहीं तौनसुनुबुधिधाम ॥ मोल लीन्होंपुत्रसोईलेयधनकोसर्ब । कहत हैं अवगाहिकै बुध धर्मशास्त्रअखर्ब ॥ बेचिदीन्हीं कन्यकाको सुवनजो हैभूप । होतधर्मबिरोध कीहै कहत प्रज्ञअनूप ॥ दोहा ॥ निन्दाअसुर बिवाहकी ताकेमाहिं महान । इकगाथायमकीकही सो हमकहतसुजान ॥ चंचला ॥ द्रव्यलोभ माहिंपागि त्यागिलाज को सुभौन । पुत्रऔरकन्यकाहि बेचिदेतहैं सुतौन ॥ कालसूत्र नर्कमाहिंमूत्र औ पुरीषखात । नित्यहीं रहैं सपीर खेदपायकै सुतात ॥ सोरठा ॥ कन्यापिता सुजौन एक सुरभि इक वृषभलै । करतब्याहहै तौनआर्ष कहावत सुनुनृपति ॥ कितेकहतबुधपर्म दोष न आर्षविवाहमें । केते कहतअभर्म आर्षहुमाहीं दोषहै ॥ दोहा ॥ केचित आर्षबिवाहको करतसुनहुवरभूप । पै न सनातन धर्मयह मतिधर कहतअनूप ॥ सोरठा ॥ क्वारीकन्याजौन तासों बरबस रतिकरै । अन्धनर्कको तौन परि दुख लहत अनेकहै ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

रामगीती ॥ दक्षके ये बचनहैं बुधकहत हैं अवदात । ब्याह काजै लियो जो धन मोलसो नहिं तात ॥ देय जो सब कन्यका को तनिक राखैनाहिं । होयमोल सुद्रब्य राखे आपनेगृहमाहिं ॥ जौन जन कल्याण चाहैं आपनोसुमहान । तौन राखत मोदसों हैं तियनको मतिमान ॥ करै कामुकपुरुषको नहिं बाम करिकै भाव । बढ़ै सन्तति नाहिं तौ हे सुनु युधिष्ठिर राव ॥ रमत देवत तत्र हैं तिय रहति पूजित यत्र । जहां पूजित रहति नाहीं क्रिया बिफला तत्र ॥ जौन कुलमें करति नारी शोच हैं अति मान । निन्द्य सो कुल परमहै सुनि भूप बर बुधिधाम ॥ जौन गृहमें जातिनाहीं कुटुंबन्नारीनारि । लहतनाहींतौनहै गृह प्रभा परमसुढारि ॥ योग्यहै सनमानकेतिय सुनहु भूप सुजान । किये ते अपमान दुखको लहत पुरुष महान ॥ जनति पुत्रहि नारिहैं अरु करति पालनपर्म । योग्ययाते मानकेहैं सुनहु भूप सधर्म ॥ सर्ब कारज होत जिनके सिद्धिहैं अवदात । करत तियको नित्यजे सनमानजनसुनुतात ॥ कहतगाथा जानकी तिय धर्म में यहपर्म । सुनहुं सोहम कहत तुमको भूप पर्म सधर्म ॥ दोहा ॥ नारिनको उत्तम धरम पतिकीसेवा पर्म्म । पतिसेवाते स्वर्गको जीततिनारिअभर्म्म ॥ इच्छाजो ऐश्वर्यकी करत तौन सत्कार । नारिनको हैं लक्ष्मी नारी सुनो धर्म अगार ॥

इतिश्रीशान्तिपर्बणिदानधर्मेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ तुमसों कोइ न और संशयहर अरु धर्मधर । सुनु कुरुकुल शिरमौर सर्ब शास्त्रबिद नीतिबिद ॥ भो इक संशयभूरि सुनहु पितामह प्राज्ञबर । सो अबकरिये दूरि धर्म्मधाम बुधिमामधर ॥ रामगीती ॥ बिप्रकेहैं बिहित नारी चारि सुनु बुधिधाम । ब्राह्मणी क्षत्रिया बैश्या और शूद्राबाम ॥ होत तिन चारौनके सुत सुनहु बुधिधरतात । कौनकेतो लेय बर्द्धन पिताको अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ बिप्र क्षत्रिय बैश्य तीनहुं बर्ण

हैं द्विजभूप। बिप्रको जो धर्मतीनहुं माहिं पर्म अनूप॥ मदन की जो केलिताके लोभकरिकै पर्म। शूद्रिकाको करत नारी बिप्रतात अधर्म॥ जौनब्राह्मण सोवतेहैं नारिशूद्रा साथ। होत हैं ते नीचगतिको प्राप्त सुनुनरनाथ॥ लेय मैंगल वृषभ अरु हय ब्राह्मणीकोतात। पिताको जो द्रब्य तामें सुनहुनृप अवदात॥ करै भागसमान दशधन शेष माहींपर्म। ब्राह्मणी सुत लेय तामें चारिभाग अधर्म॥ क्षत्रियाको पुत्रतामें भागलेय सुतीन। दोय भागसुलेय बैश्या सुवन कहत प्रवीन॥ द्रब्य भागी होतनाहीं शूद्रिकाको तात। लहत है एकभाग दीन्हे पिताके अवदात॥ जौनमानत बिप्र शूद्रापुत्रको अवदात। शास्त्र में सो निपुण नाहीं जानु निश्चयतात॥ होय जौने बर्ण माहीं बिप्रते सुतपर्म। होतसो है बिप्र पण्डित कहतपरम अधर्म॥ देय बहुत न नारिको जो द्रब्य होय महान। नारिमनते देयतौ धनलेय भूप सुजान॥ पिताको जो दियो माता पासहै धन तात। पुत्रसों नहिं लेय बरबस कहतबुध अवदात॥ युधिष्ठिर उवाच॥ दोहा॥ ब्राह्मणते जो पुत्रभो शूद्रामाहिं अनूप। सो धन भागी होतनहिं कह्योआपु यहभूप॥ एक अंश वह लहतपुनि कौनहेतु ते पर्म। संशय होत महानहै यामें सुनहु सधर्म॥ होत ब्राह्मणी माहिं जो ब्राह्मणसंशयनाहिं। ब्राह्मण ताहूको कहत जौन क्षत्रियामाहिं॥ बैश्यामें जोहोतसुत ब्राह्मणते अवदात। तौनहुँब्राह्मण होतहै कह्योआप यहतात॥ पै नहिं लहत समान ये तीनहुँभाग सुजान। सो काहे ते होतहै संशय महामहान॥ भीष्मउवाच॥ कन्या तीनहुँ बर्णकी पहिलेकरि निजनारि। फेरि ब्राह्मणीको करै भार्य्या परम सुढारि॥ तबहूं ज्येष्ठा ब्राह्मणी होय न अन्याकोय। सर्बहि उत्तम कार्य में संग रहतिहै सोय॥ भूषण नानाभांतिके अरु भोजन अभिराम। दीजे बिप्रानारि को अधिकऔरते आम॥ देख्यो मनुके शास्त्र में यह सुसना-

तन धर्म । करत जौनहै अन्यथा सो चाण्डाल अधर्म ॥ होत सुमाता के सदृश पुत्र जानि निज तात । याते धनमें लहत हैं भाग समान अवदात ॥ भार्य्या बिप्रा क्षत्रिया बैश्याशूद्रा जौन । तिनमें श्रेष्ठा ब्राह्मणी होत सुनहु बुधिभौन ॥ यातेबिप्राको सुवन भागलेतहै श्रेष्ठ । बिप्राके सब सुतनमें अधिक लेत है ज्येष्ठ ॥ रामगीती ॥ ब्राह्मणी के सदृशनाहीं क्षत्रिया है बाम । औन बैश्या क्षत्रियाके सदृश सुनु बुधिधाम ॥ बैश्यकाके सदृश नाहीं शूद्रिका जो दार । शास्त्रमतते कहत हैं बर ज्ञानवान उदार ॥ देवतनके देवताहैं बिप्रबर अवदात । सबिधिपूजा किये तिनकी लहतजन मुद तात ॥ होतहैं श्रीमान क्षत्रियते जमान बिशाल । करत राज्य सु भूमिको हैं दरत अरिकेजाल ॥ करत रक्षा धर्मकी हैं पर्म क्षत्रिय भूप । देतदान महानहैं सनमानकै सु अनूप ॥ करत चारिहु बर्णकी रक्षा सु क्षत्रियपर्म । कृषी बाणिज गो रक्षाहैं बैश्यके ये धर्म ॥ श्रेष्ठबैश्यापुत्रते है क्षत्रिया को तात । अधिकभागै लहत याते सुनहुसुत अवदात ॥ दोहा ॥ कह्यो सर्ब बृत्तान्त तुम बिप्रनको हे भूप । और बर्णको अब कहौ करिकै कृपा अनूप ॥ भीष्मउवाच ॥ क्षत्रिहूके होति हैं द्वैभार्य्या अभिराम । तृतिया शूद्रा होतिपै शास्त्र तेन मतिधाम ॥ बिप्रनको जो क्रम कह्यो क्षत्रियहूको सोइ । शास्त्रनको अवगाहिकै कहत सुबर बुधिलोइ ॥ क्षत्रियधनके होत हैं अष्टभाग सुनुभूप । तिनमें ऐसी रीतिसों भागैलहत अनूप ॥ क्षत्रियाको सुवनसो चारिअंग ले चारु । अरु खड्गादिक शस्त्रसब सोई लेयउदारु ॥ सोरठा ॥ बैश्याको सुतजौन तीनभाग ले द्रव्यमें । एकभाग बुधिभौन लेयशूद्रिकाको सुवन ॥ दोहा ॥ नारि होतिहै बैश्यके एकहि सुनु बुधिधाम । द्वितिया शूद्रा होतिपै शास्त्र तौन अभिराम ॥ बैश्यद्रव्यके होत हैं पंचभाग मतिमान । चारि भाग तिनु माहिंले बैश्यापुत्र सुजान ॥ शूद्राको जो सुवनसो

एक अंश ले तात। दिये पिताके कहतबुध शास्त्र देखि अव-
दात ॥ सोरठा ॥ होति शूद्रकेदार एकहि अपने बर्णकी। सुनु
नृप बुद्धिअगार अन्यबर्णकी होतिनहिं ॥ जयकरी ॥ जेते होहिं
शूद्रकेतात। सब समभाग लेहिं अवदात ॥ ब्राह्मणआदि बर्ण
जे तीन। तिनमें है यह रीति प्रवीन ॥ होत ज्येष्ठसुत श्रेष्ठ स-
चेत। ताते अंश अधिक यक लेत ॥ मध्यमसुत जो मध्यम
भाग। लेय सुनहु भूपति बड़भाग ॥ लघुहिभाग पावै लघु
तात। कहत सुबुध मतिबर अवदात ॥

इतिश्रीदानधर्मेधनविभागवर्णनोनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ हीनबर्ण सुपुरुषकेसँग रमतजो है
दार। बर्णसंकर होत ताते सुनहु बुद्धिअगार ॥ धर्म तिनको
कौनहै अरु कर्मतिनको कौन। कहौतात सु कृपाकरिकै परम
बुधिकेभौन ॥ कर्म चारिहुबर्ण के अरु बर्ण चारिहुधर्म्म। यज्ञ
काजे प्रथमबिरचे बिधाता सहधर्म्म ॥ बिप्रकेहैं होतिनारी चारि
अति अभिराम। ब्राह्मणी क्षत्रिया बैश्या और शूद्राबाम ॥ सु-
नहु तिनमें ब्राह्मणी अरु क्षत्रिया जोदार। होत दोउन माहिं
बिप्रहि परम बुद्धि अगार ॥ औ सु बैश्या शूद्रिकामें होतहै सुत
हीन। बिप्रकेसम होतनाहीं कहत प्रज्ञ प्रवीन ॥ बिप्रते जो होय
बैश्या माहिं पुत्र सुभूप। कहतहैं अंबष्ट ताको परम प्रज्ञअनूप ॥
होत शूद्रामाहिं जोसुत बिप्रते अवदात। कहतताको पारसब
बुध सुनहु बुधिधरतात ॥ करतसेवा परमदोऊ द्विजनकीअभि-
राम। दानकारक होतदोऊ महामेधाधाम ॥ होतक्षत्रिय ते सु-
क्षत्रिय दोयनारिनमाह। हीनपुत्र सुहोतशूद्रा माहिंसुनु नर-
नाह ॥ उग्रताको नामहै वह उग्र अतिहीहोत। शास्त्रको अव-
गाहि करिकै कहत प्रज्ञापोत ॥ बैश्यका अरुशूद्रिका येबैश्यके
हैदार। होतबैश्यहि दुहुँनमाहीं कहतबुद्धिअगार ॥ होतएकहि
नारिशूद्रा शूद्रके हेतात। होततामें सुवन शूद्रहि कहत बुधअ-

वदात ॥ कह्यो सब वृत्तान्त चारिहु बर्णकोसुअनूप । बर्णबाहर जौन तिनको कहत अब हमभूप ॥ होत क्षत्रियते सु जो सुत ब्राह्मणीमें पर्म । बर्ण बाहर तौन ताको सूतनामअभर्म ॥ होत बिप्रानारिमेंहै बैश्यतेसुत जौन । नामहै बैदेह ताको सुनहुबर बुधिभौन ॥ नृपनके रनिवासको सो करतकाज अनूप । सुनु युधिष्ठिर धर्मधरबर ज्ञानमानअनूप ॥ ब्राह्मणीमें शूद्रते सुतहोत है चाण्डाल । हनत चौरादिकनको सो कहत जब भूपाल ॥ ब्राह्मणीमें होत एते बर्णसंकर पर्म । कह्यो हमअवगाहि तुमसों सुनहुभूप सधर्म ॥ बैश्यते सुत होत जो हैं ब्राह्मणीमें चारु । नाम मागध तासुको सुनु भूपबुद्धि अगारु ॥ क्षत्रियामें शूद्र ते उत्पन्नजो है पूत । नामतासु निषादजो है हनतमत्स्यअकूत ॥ बैश्यकामें होत जोहै शूद्र तेसुत पर्म । नाम आयो गवस ताको कहतप्रज्ञ अभर्म ॥ करतरचना काष्ठकीसो सुनहुतातअजान । कहत बढ़ई नामताको जगतमाहिं महान ॥ सुनहु नृप अम्बष्ट पार्सव उग्रसूत बिदेह । चाण्डालमागध औ निषादसु अयोगव नवयेह ॥ योनि अपनीमाहिं ये सुत करतआपु समान । नीच योनीमाहिं इनते और होत सुजान ॥ भये चारिहु बर्णते जिमि बाह्यये नवआम । बाह्यतर हैं होत इनते और सुनुबुधिधाम ॥ सोरठा ॥ होतहीनते हीन बर्णपंचदश और नृप । बुधबर कहत प्रबीन शास्त्रनको अवगाहिकै ॥ रामगीती ॥ मागधी में अयोगव ते होत जो है तात । नामहै सैरंध्रताको सुनहुनृप अवदात ॥ चरणाकुलक ॥ भूषण भूपनको पहिरावैं । बसननकी रचना सुबनावैं ॥ सैरंध्रनके कारज ये हैं । कहत शास्त्र लखि आरज जे हैं ॥ रामगीती ॥ मागधी में होतहै बैदेहते सुत तौन । नाम मैरे यकसुता को करत मदिराजौन ॥ होत जौन निषाद ते सुत मागधीमेंपर्म । नाम मंगुर तासु जीवन नावते सुअभर्म ॥ मागधीमें होत जो चाण्डालते सुतभूप । नामतासु स्वपाकहै

बुधकहत पर्म अनूप ॥ दोहा ॥ अयोगवीमें होत हैं बैदेह केते जौन। क्रूरनाम ताकोकरत कपट महाहै तौन ॥ चंचला ॥ जौन होतहै निषादते अयोगवी सुबीच। मद्रजानु नामतासु प्रज्ञते कहैंनिभीच ॥ होतजो चण्डालते अयोगवी सुमाहिंपूत। खात हैसुनो सुतौन अश्वमांसको अकूत ॥कान्ता॥ पुस्कसनाम। जिहि कोश्राम ॥ जगकेमाह। सुनुनरनाह ॥आभीर॥ आयोगवीकेबीच। तीनबर्ण ये नीच ॥ होतकहत बुधमाम। निरखि शास्त्र अभिराम ॥ सोरठा ॥ आयोगवीकेमाह होत जौन बैदेहते।तासुनाम नरनाह क्षुद्र कहत अवगाहि बुध ॥ रामगीती ॥ ब्यतिक्रमते मातके अरुपिताके सुनुभूप। होतयेते बरणसंकर कहत प्रज्ञ अनूप ॥ शास्त्रउक्ति सुजौन बिधिसों बर्णचारिहुमाहि। बर्णसंकर में नहीं हैं कहतबुध अवगाहि ॥ सोरठा ॥ षट अनुलोमज होत चारिहु बर्णनते प्रकट। सुनहु नृपति मतिपोत और बिलोमज होतषट ॥ अनुलोमज हैं जौन तौन सुक्रमते होतहैं। हैं सुबिलोमज तौन होत ब्यतिक्रम तेसुजे ॥ जयकरी ॥ इन द्वादशते छाछठिहोत। अनुलोमज सुनु नृप बुधिपोत॥ औसुबिलोमज छाछठि श्राम। होतकहत बरबुधिधर माम ॥ इनते बहुत होत हैं और। ऐसेही सुनु नृप शिरमौर ॥ तिनमेंकिते अचलपै बास। किंतकरत श्मशानपास ॥ सत्यबचन अरु क्षमामहान। इनके नित्यधर्ममतिमान ॥ गोब्राह्मणकीकियेसहाय। येऊसिद्धि लहत नरराय ॥ यामें संशय नाहिं सुजान। सत्यबचन मम मानु महान ॥ रामगीती ॥ धर्मपत्नी माहिं बुधवर बीर्यकोआधान। करत हैं लहि समयको सुनुभूप परम सुजान ॥ बीर्यकोआधान कीन्हें और नारीमाह। होतहै उत्पन्नसुत दुखकार सुनु नरनाह ॥ दोहा ॥ काम क्रोधबश जौनजन तिनको नारीपर्म। प्राप्तकरतहैं कुपथको भूपति सुनहु सधर्म ॥ अन्तगुरुतोमर ॥ तिय हावभाव दिखायकै। बशमाहिंकै सुरिझायकै ॥ नरकोसुदूषित

करति हैं । जगमें अकीरतिभरतिहैं ॥ दोहा ॥ बुधजनयातेकरत नहिं बहुधा तियकोसाथ । इहैहेतु अवगाहिकै सुनुसधर्म नरनाथ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ होय संकर वर्ण में उत्पन्न जो हेतात । श्रेष्ठकैसो रूपताको होयअति अवदात ॥ कहोताकी जातिसो किहिभांति जानीजाय॥ भीष्मउवाच ॥ वर्णसंकर योनिमें उत्पन्नजो नरराय ॥ श्रेष्ठकैसो रूपताको होयछबिमेंपर्म । किये चेष्टा जातजान्यो तौनतात सधर्म ॥ श्रेष्ठकेजे कर्मतिनतेरहित जोवहहोय । वर्णसंकरजानियेतौकहतबरबुधलोय॥ श्रेष्ठकेजेकर्म तामेंहोहिंजोअवदात । शुद्धवर्णसुजानियेतौताहि सुनुहेतात ॥ दोहा॥ अनाचारअरुदुष्क्रियाऔरक्रूरताजौन । इनतेजानेजातहैं सङ्करयोनिजतौन ॥ रामगीती ॥ वर्णसङ्कर जौनते नहिं तजत जातिसुभाव । शास्त्र मतते कहत हैं बुध सुनहु हेनरराव ॥ कर्म करिकै वर्णसंकर आपु जाहिरहोत । गुप्त नाहीं रहतहैं तेसुनहु बर बुधिपोत ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ सुतबिवादहै बहुत सुजान । तामाहीं संदेहमहान ॥ होत तौन नृपकरिये दूरि । मेटत तुमहीं संशय भूरि ॥ कैसी नारीमाहींतात । कैसोहोत कहो अवदात ॥ तुमहो प्रज्ञावान महान । संशय हरतुमसों नहिंआन ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ आपुते जोहोतस्वकिया नारिमाहींतात । कहतऔरसपुत्रताको परमबुध अवदात ॥ कहेते निजनारिमें परवीर्यते जोहोत । नामक्षेत्रज कहतताको परम प्रज्ञापोत ॥ कहे बिन निजनारि औरै पुरुषसाथ बिहार । करतिताते होतजो उत्पन्न पुत्र सुढार ॥ प्रस्मृतजहै नामताको सुनहु भूप सुजान । कहत हैं निरधारिस्मृति कह ज्ञानवानअमान ॥ होयकौनहु हेतुतेजो मनुज कुलते हीन । होतताते पुत्रचौथो तौनभूपप्रवीन ॥ दियो काहुहि होयकाहू पुत्रअति अभिराम । तौन पंचमनाम ताको

दत्तसुनु बुधिधाम ॥ क्रीत ताको नामजोसुत मोललीन्होहोय। शास्त्रको अवगाहिकै नृप कहतहैंबुधलोय ॥ जयकरी ॥ गर्भवती को होय बिवाह । ताको जो सुत हैनरनाह ॥ तासुनाम अध्यूढ़ अनूप । सोसप्तमसुत हैसुनुभूप ॥ रामगीती ॥ अपध्वंशजहोत हैं षटपुत्र भूपसुजान । होतसुतकानीनसप्तम कहतबरमतिमान॥ होयक्वारीकन्यकामें पुत्रजोहेतात । कहतहैंकानीनताकोनाम बुध अवदात॥चतुर्दशये औरअपसद पुत्रषट अभिराम । तौनआगे कहैंगेहम सुनहुनृप बुधिधाम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अपध्वंशज कौन षट अरु कौन अपसद तात । कहौतुम अवगाहि हमको पितामह अवदात ॥ भीष्मउवाच॥ क्षत्रिया अरु बैश्यका अरु शूद्रिका जे दार । होत इनमें पुत्र द्विजके अपध्वंशज चार ॥ होत क्षत्रियके सुबैश्या शूद्रिकामें जौन । शूद्रिकामें बैश्यके जो होतसुत बुधिभौन ॥ अपध्वंशज ये सुषटहैं कहतबुधि अवदात । और अपसद पुत्रषटते सुनहु बुधिवरतात ॥ शूद्रके जो होत बिप्रा माहिं सुत चाण्डाल । होतहै सुत क्षत्रियामें व्रात्यसो भूपाल॥ बैश्यकामें होतजोसुतशूद्रकेहेतात । बैद्यताकोनामहैबुधकहत हैं अवदात ॥ होतमागध ब्राह्मणीमें बैश्यके सुतपर्म । क्षत्रियामें होतबामक सुनहुभूपसधर्म ॥ होतहैसुत सूतबिप्रामाहिं क्षत्रिय केसु । होत अपसद पुत्रएते सुनहु प्रज्ञ नरेसु ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ पतिकी आज्ञापाय पुत्रअर्थ जो कामिनी ॥ औरपुरुष पै जाय भोग करातिहै समुदकै ॥ ताके जो सुतहोत सो दोउन में कौनको । कहोतात बुधिपोत धर्मवान यशवानबर ॥ भीष्मउवाच ॥ जाको बीरय होय सो सुतको चाहै न जो । कहत सुबर बुधलोय क्षेत्रपतिहिको होयतौ ॥ दोहा ॥ पुत्रहि चाहै बीर्य्यप्रद तौ ताहीको होय । कहतसुबुध अवगाहिकै धर्मशास्त्रको जोय॥ सुनहु पुत्र अध्यूढ़को यह वृत्तान्त सुजान । बीर्य्यप्रद जो छोड़ि दे कैकै लज्जावान ॥ क्षेत्रपतीको होयतौ सुवन सुनहु महिपा-

ल। जो नहिंछोड़ै पुत्रको तजिकैलाज बिशाल ॥ बीर्य्यप्रदको होयतौ पुन्नतौन मतिमान। कहतशास्त्र अवगाहिकै मतिसोंप्रज्ञ सुजान ॥ आभीर ॥ कृतकपुत्र कहुंहोत। सुनहुनृपति बुधिपोत ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ कैसो होत सुतौन। कृतकपुत्रहै जौन ॥ भीष्मउबाच॥ रामगीती ॥ जाहि माता पिता पथसे डारिदीन्होंहोय। पायताको ल्याय गृहमें महामुदसों भोय ॥ कहै ताकोपुत्र सोहै कृतकसुत अभिराम। जाहिजाने नाहिंताके पिता माताग्राम ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ चंचला ॥ संस्कार तासुकौन भांतिसों सुहोय भूप। कन्यका सुहोय तौ सुकाहि दीजिये अनूप ॥ होतहै संदेह तातकै कृपाकहौ महान। है न दक्ष आपुसे संदेह दूरिकार आन ॥ भीष्मउबाच ॥ रामगीती ॥ परा पथमें मिलैजाको सुवन सुनु मतिमान। करैसो निजबर्णको सो संस्कार सुजान ॥ जो सु ल्यावै मार्गमेंते गोत्र ताकोजौन। होत सुतमें कहतहैं अवगाहि प्रज्ञा भौन ॥ कन्यका जो मिलैतौ निजबर्णमाहीं पर्म। देय बिधिसों चारुबरको सुनहुभूप सधर्म ॥ औ सुनो कानीनऔ अध्यूढ़सुत अभिराम। और क्षेत्रज अपसदोउ ये चारिपुत्र ललाम॥इनहुँको निजबर्णको सो संस्कार अनूप। कीजिये बुधकहतहैं अवगाहि शास्त्रहिभूप ॥ दोहा ॥ दीन्होंउत्तर तासुहम जोबूझो तुम धर्म। कहा सुननकी इच्छाहै अब भूपति सुनहुअमर्म ॥

इतिश्रीशांतिपर्बणिदानधर्मेबिवाहधर्मबर्णनोनामैकोनपंचाशदऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ परकीपीड़ा देखिअरु बसिकै परकेसाथ। कैसे करै सनेहको अब यहकहु नरनाथ ॥ अरु महिमा सुरभीनकीकहौ समोदितआपु। सुनहु पितामह सुयशधर बुधिधरधर्म कलापु॥भीष्मउबाच॥रामगीती ॥ कहतहौं इतिहास यामें सुनहु छोड़ि प्रमाद। च्यवनऋषि अरु नहुषको तिहिमाहिंहै सम्बाद॥च्यवनऋषि मतिमान मनमें करी इच्छा येह। करै बारह बर्षलौं जलबास सुनु बुधिगेह ॥ मान क्रोधहि छोड़िकरिकै सुरनको

परणाम । मध्य यमुना सुरसरीके सुऋषि तेजसधाम ॥ भये करत प्रवेश जलमें होय मोदित पर्म । बेग यमुना सुरसरीको सुनहु भूप सधर्म ॥ भयेधारण करत शिरपै च्यवनऋषि मतिमान । दुहुँन रक्षाकरी ऋषिकी दयाकरि सुमहान ॥ दई पीरा नाहिं ऋषिको तनिकहू हेतात । पाप हारिणि सुरसरी अरुकालिन्दी अवदात ॥ दोहा ॥ रहतभये ऋषि काष्ठलों जलकेमाहिं सुजान । करतभये जलजीव सब तिनमें प्रेममहान ॥ मुग्धबिलास ॥ बहुकाल जलमें बास । ऋषिकरतभे तपरास ॥ एकसमय माहिं मलाह । बहुआय सुनु नरनाह ॥ जलमाहिं डारिसु जाल । बिसतारिकै सुबिशाल ॥ सबभये खैंचत पर्म । निज जातिको गहिधर्म ॥ बहुफँदे जलके जन्तु । तिहिमाहिं सुनुमहिकन्तु ॥ तेहिजाल माहिं महान । ऋषिरायहू मतिमान ॥ बझिगे सुजन्तुन साथ । सुनुप्रज्ञ हे नरनाथ ॥ ऋषिरायकोलखिसर्व । भयमानि भेसुअखर्ब ॥ मछरीनको ऋषिराय । लखिकै सपीर अचाय ॥ अतिक्लेश मनमें कीन । सुनु भूपपरम प्रवीन ॥ निषादाउचुः ॥ बिनजानभो यहपाप । क्षमियेसुसो ऋषिआप ॥ प्रिय होय तुमको जौन । कहियेसु अब तुमतौन ॥ अब जो कहोगे तौन । हम करैंगे बुधिभौन ॥ ऋषिराय ये सुनिबैन । इमि भये कहत सचैन ॥ दोहा ॥ सबही सुनहु मलाहतुम यह मेरे प्रियपर्म । जलजन्तुनको साथनहिं तजिहैं कहत सधर्म ॥ मरिहैं तो इनसाथमें बिकिहैं तो इनसंग । बहुदिनलों हम मुदित ह्वै इनके बसेप्रसंग ॥ ऋषिके सुनिकै बैनये तजिमत्स्यनकी आस । शंकित सर्व मलाह ह्वै गये नहुषके पास ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्म्मेपञ्चाशदऽध्यायः ५० ॥

भीष्मउवाच ॥ तोमर ॥ मुनि च्यवनको वृत्तान्त । सुनिनहुषशीघ्र नितान्त ॥ उठिगये सहित समाज । जहँहौसुऋषि शिरताज ॥ ऋषिको प्रणाम सुकीन । लखिभूप परम प्रवीन ॥ नहुषउवाच ॥

ऋषिराय सुनुमोबैन । तपवान परमसचैन ॥ प्रियहोय तुमको
जौन । कहिये सुहमकोतौन ॥ च्यवनउवाच ॥ दोहा ॥कियो मला-
हन परमश्रम याते सुनुबरभूप । मछरिनको अरु मोलममदी-
जे इन्हैं अनूप ॥ पज्झली ॥ धीवरहि देहु मुद्राहजार । सुनु हेसु
बिप्रवर बुधि अगार ॥ च्यवनउवाच ॥ मुद्राहजार ममयोग्यना-
हिं । अवगाहि देहु नृपचित्तमाहिं ॥ ममसदृश मोल धीवरहि
देहु । सुनु नहुष भूमिपति सुमतिगेहु ॥ नहुषउवाच ॥ऋषिकेसुबैन
ये सुनि अनूप ।पुनि कह्यो बिप्रसों नहुषभूप ॥ धीवरहि देहु
मुद्रासुलक्ष । ऋषिराय च्यवनको मोलदक्ष ॥ च्यवनउवाच ॥ सुनु
नहुषभूप तुम देतजौन । ममसदृश मोल है नाहितौन ॥ नहुषउ-
वाच ॥ मुद्रासुकोटि धीवरहिदेहु । सुनु हे सुबिप्रबर बुद्धिगेहु ॥
च्यवनउवाच ॥ मुद्रा सुकोटि ममसम न मोल । सुनुनहुष भूप
मतिके अडोल ॥ द्विज सहितआप करिकै बिचार । धीवरहि
मोल दीजै हमार ॥ नहुषउवाच ॥ धीवरहिदेहु ममसर्बराज ।सुनु
बिप्र अबहिं नाहिं बिलँबकाज ॥ च्यवनउवाच ॥ ममभोल सदृश
नहिं राजसर्ब । सुनुनहुषभूप बुधिधरअखर्ब ॥ मम सदृशमोल
जो होयभूप। द्विजसँग बिचारि दीजै अनूप ॥ भीष्मउवाच ॥ नृप
नहुष च्यवन ऋषिके सुबैन । सुनिकै सुहोय अतिही अचैन ॥
मतिमान द्विजनके साथहोय । करतेबिचारभे शोचभोय ॥ राम-
गीती ॥ समय तौनहिंमाहिं यकऋषिबिपिनतेअवदात । निकसि
कैनृपपास आये सुनहु बुधिधरतात ॥ गऊते भो जन्मताको
महातेजसधाम । परम प्रज्ञावान सोतन तासुअति अभिराम॥
कहत भो सो बैन ऐसे नहुषनृपसों पर्म । करैंगे परसन्न हमऋ-
षिच्यवनको सहधर्म ॥ सत्यतुमसों कहत हैं नरनाह हे यश-
वान । कहैं तुमसों जौन सो तुम करो भूपसुजान ॥ नहुषउवाच ॥
सुनहु हे ऋषिराय प्रज्ञावान तेजस धाम । कहौहमको च्यवन
ऋषिके सदृशमोल ललाम ॥ सोरठा ॥ जासों रक्षाहोय कुलकी

अरु मम देशकी । नातो क्रुधसोंभोय देहैं हमको शापऋषि ॥ भीष्मउवाच ॥ पज्झली ॥ नृपके सुबैन सुनिकै सुजान । इमि कहत भयो ऋषि तेजमान ॥ करिये न शोचअब नहुषभूप । लहिहौ न शाप ऋषिसोंअनूप ॥दोहा॥ जसयह स्वच्छ अमोलहै ब्राह्मण बर्णनमाह । इमिही स्वच्छ अमोल है सुरभी हेनरनाह ॥ याते इनको मोल तुम गऊकहो हेभूप । यह सुनिकै नृप नहुष अति पायो मोद अनूप ॥ सोरठा ॥ जाय च्यवनऋषिपास नहुष भूप इमि कहतभे । उठहु च्यवन तपरास गऊदेत तव मोल हम ॥च्यवनउवाच ॥ सुनहु नहुष मतिमान कियोमोल ममसदृश तुम । याते मुदित महान हैं तुमपै परसन्न हम ॥ रामगीती ॥ दरशकीन्हे गऊको अरुकिये पूजादान । होतहै कल्याण अतिही कटत पाप महान ॥ स्वर्गमें गोपूज्य हैं अरु स्वर्गकी सोपान । करत हैं सब कामनाको सिद्धि सुनु बुधिमान ॥ दोहा ॥ सुरभीके सम और नहिं श्रेष्ठ सुनहु बरभूप । गाईं तिनकी जातिनाहिं महिमा परम अनूप ॥ निबादाऊचुः ॥ चलैजाके संगमें पद सप्त हे ऋषिराय । होति तासों मित्रताहै तासुप्रीतिहि छाय ॥ आपु हमको दियो दरशन औ सुबोले बैन । करहुयाते कृपा हमपै सु ऋषि तेजसऐन ॥ अग्निऐसे आपुहौ सबनरनमें ऋषिराज । लेहुसुरभी आपुहमसों दयाकरि सुदराज ॥ च्यवनउवाच ॥ धेनुको हम लेहिंगे तुमहोहु अघतेदूरि । होयतुममें सुरनकीसीप्रभा बिमलाभूरि ॥ लहो स्वर्गहि नीरजन्तुन सहित धीवर सर्व । होहु मम आशीशते तुम मोदवान अखर्व ॥ भीष्मउवाच ॥ सर्व धीवर पायकै आशीश ऋषिकी भूप । गये अक्षय स्वर्गको जलजन्तु सहित अनूप ॥ नहुष तिनको देखिकै मनमाहँ बिस्मयकीन । तत अनन्तर सुऋषिदोऊ तेजमान प्रवीन ॥ नहुषनृपसों कहतभे इमि मांगु अब बरदान । मांगते तब भयेयहबर नहुष नृप मतिमान ॥ धर्ममें थिति रहैमेरी नित्यहे ऋषिराय । भूलि

कै नहिं धरैं कबहूं कुपथमाहीं पाय ॥ सुऋषि दोऊ कृपाकरिकै देतभे बरदान । दुहुँनको तब पूजतो भो नहुष नृप मतिमान ॥ च्यवनऋषि व्रत भये पूरण गये अपनेधाम । गयेआश्रम आपनेको गाविजऊ ऋषिमाम ॥ पायकैबरदान भूपति नहुषशुचि यशवान । होयहर्षित गयो अपने नगरकोसुखदान ॥ दोहा ॥ पर पीड़ाको देखिअरु बसिकै परकेसाथ । ऐसेकरै सनेहको सुनहु प्रज्ञ नरनाथ ॥ गौअनकी महिमामहा तुमसों कही अनूप । अब आगेका बूझिहौ सुनहु युधिष्ठिरभूप ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिदानधर्मेएकपंचाशदऽध्यायः ५१ ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ मधुभार ॥ संशय महान । एकहै सुजान ॥ सो करहुदूरि । मतिमानभूरि ॥ ऋषि परशुराम । तपतेज धाम ॥ क्षत्रियहि जीति । तिनाकिय सभीति ॥ दोहा ॥ भयेतौन उत्पन्न किमि कहौ पितामहपर्म । ह्वैकै ब्राह्मण किमिलहो क्षत्रिन को जो धर्म ॥ सोरठा ॥ भयो प्रतापमहान परशुराम ऋषिरायको । तिमिहि प्रतापसुजान भयोसु बिश्वामित्रको ॥ दोउनको सुप्रताप ताको कारण जानहैं । कहो कृपाकरि आप सुनहु तात बुधिधामबर ॥ भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ यह प्रसंगमें कहतहौं यक इतिहासअनूप । यशधरमतिधर धर्म्मधरसुनहु युधिष्ठिरभूप ॥ महाप्राज्ञ ऋषिच्यवन अरु भूपकुशिक अवदात । तामाहीं संबादहै इनदोउनको तात ॥ रामगीती ॥ च्यवनऋषि यकसमय माहीं कुशिक नृपपैजाय । कहतभेइमि बसैंगेतवपास हम नरराय ॥ कुशिकउबाच ॥ जौन आज्ञाकरौगेतुम च्यवनऋषि मतिमान । तौनहीं हम करैंगे तवकृपाकाजमहान ॥ भीष्मउबाच ॥ सुऋषिसों इमि बैन कहिकै दियो आसन चारु । धोयकै पद सबिधि पूजाकरी भूप उदारु ॥ कुशिकनृप ऋषिच्यवनसों पुनि कहे ऐसे बैन । राज्य गज हय सदनहैं सब तुम्हारे तपऐन ॥ तिहारे आधीनहैं हम सहित नारि अनूप । कुशिकनृपके बचन

सुनिये च्यवनऋषि मुदरूप ॥ कहतभे इमि बचन तिनसों सु-
नहु भूपउदार । हैहमारे राज्यधनकी कामना न सुढार ॥ कियो
चाहत नेमको प्रारम्भएकअनूप । सहितरानी रुचै तुमको करैं
तौ हमभूप ॥ चरणाकुलक ॥ सेवाको तुम करौ हमारी । शंका त-
जिकै सहितसुनारी ॥ यह नेमै हम कीन्हो चाहैं । करैं भूप जो
आप निबाहैं ॥ सुनि करिकै ऋषिकी यह बानी । मुदित होयकै
राजा रानी ॥ बचन कहतभे ऋषिसों ऐसे । सेवाकरिहौं कहिहौ
जैसे ॥ ऋषिको उत्तम गृहमें लाये । दोऊ परमप्रेमसों छाये ॥
ऋषिहि सेजऊपर बैठाये । सुन्दर अतर मँगायलगाये ॥ जोरि
पाणि दोऊ मुदपागे । ऋषिसों बचन कहन इमिलागे ॥ दोहा ॥
बसो सुमुनि यहि सदनमें जबलौं इच्छा होय । करिहैंसेवा आ-
पकी कहिहौ तिमि सुखभोय ॥ चरणाकुलक ॥ इतने में पूछनकछु
गये । तब ऋषि ऐसेकहते भये ॥ सुनहुभूप कछु भोजनल्यावो ।
द्विजसों निरमल नीर मँगावो ॥ राजोवाच ॥ नीको भोजन लागै
जोई । तुमकाजै हमल्यावैं सोई ॥ कहौकृपाकरि हेऋषिराजा ।
धर्मवान मतिमानदराजा ॥ कहतभये तब ऋषि इमिबानी ।
अतिही कोमलतासों सानी ॥ भोजनहोय सिद्धि जोभूपा । ल्या-
वो तौ नहिं सविधि अनूपा ॥ ऋषिकेबैन सुने ये जबहीं । भो-
जनलेनगयो नृपतबहीं ॥ सिद्धिसुपायो भोजन जोई । त्वरितहि
लेयगयो नृपसोई ॥ दोहा ॥ भोजन करिकै च्यवनऋषि बुद्धि-
धाम अभिराम । रानीराजासोंबचन बोलतभये ललाम ॥ चर-
णाकुलक ॥ शयनकरैंगे अब हम राजा । चितमें आलस भयो
दराजा ॥ कबहुं न हमैं जगावैकोऊ । दाबो पदमेरेतुम दोऊ ॥
शयनकरैं हम हे नृपजबलौं । जगतरहो तुमदोऊ तबलौं ॥
सुनिकै बैन ऋषीसों बोले । रानी राजा प्रीतिहि खोले ॥
करिये शयन सुऋषिबरज्ञानी । करिहैं सेवाहम सुखदानी ॥
जबऋषि च्यवन सु सोवत भये । तब रानीसह नृप मुदरये ॥

दावनलगे पायँसो नीके । ऋषिके अमल कमलसे श्रीके ॥
निशाबीतिगइ तउ न जगावैं । ऋषिकी शाप भीतिसों छावैं ॥
दोहा ॥ एक बिंशदिनलों शयन कियो च्यवनऋषिराय । तबलों
सेवामेंरहे सहतिय भूपसचाय ॥ चरणाकुलक ॥ तब ऋषि आपुहि
उठते भये । नृपहि देखिकै बाहरगये ॥ नृपसोंकही कछू नहिं
बानी । च्यवन सु ऋषि तपवान सु ज्ञानी ॥ नृपहुसतिय श्रम
सों अतिछाये । पीछेपीछे बाहर आये ॥ रानी राजा को नहिं
देखे । औनहिं श्रमताकों ऋषिलेखे ॥ कछूदूरिचलि सु ऋषि
सुजाना । लखत लखत भे अन्तर्द्धाना ॥ तब ब्याकुल ह्वै रानी
राजा । परेभूमिमें सदुखदराजा ॥ कछूबेरमें चेतितह्वैकै । उठिकै
परम शोचसों ग्वैकै ॥ करत भये मनमाहिं बिचारै । भूपति रानी
सहित सुढारै ॥ दोहा ॥ भूपति रानीसहित तब खोजन लगे
अचाय । कहि कहि ऐसे परस्पर कहांगये ऋषिराय ॥
इतिश्रीशांतिपर्बणिदानधर्मेद्विपंचाशदऽध्यायः ५२ ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ सुनहुपितामह बुद्धिनिधाना । सं-
शयहरता परममहाना ॥ अन्तरद्धान भयेऋषिराई । तब नृप
कीन्हीं कौनउपाई ॥ भीष्मउवाच ॥ ऋषि न लखे जब राजारानी ।
चिन्ता चितमेंकरी महानी ॥ होयदुखित नगरीमें आये। दोऊ
ब्रीडासों अतिछाये ॥ कै प्रवेश गृह माहिं सु राजा । सोवत
लखे ऋषीश दराजा ॥ राजा रानी अचरज मानो । सोवत
लखि ऋषिको सुखसानो ॥ दावनलगेपायँ पुनिभूपति । ऋषि-
हि देखि श्रम भूलिगये अति ॥ तौनहिं कालमाहिं ऋषि जागे ।
बैठे आलससों अतिपागे ॥ दोहा ॥ हाथजोरिसों हे खरे रानी
सहभूपाल । कह्यो कछूनहिंसुऋषिको भयसोंभरे बिशाल ॥
तोटक ॥ कछुकाल ब्यतीत भये नृपसों । ऋषिराय कह्यो सु छयो
तपसों ॥ नृप तैल लगावहु मो तनमें । सुनि सो नृप मोदित ह्वै
मनमें ॥ मँगवाय सु तेल लगावत भो । तनमें ऋषि के सुख

पावत भो ॥ दोहा ॥ काल ब्यतीत भयो बहुत तेल लगावत पर्म। तबहूँ नाहीं ना करी ऋषिवर च्यवन सधर्म ॥ अंतगुरुतोमर॥ ऋषिराय भूपहि देखिकै। अति निर्बिकारित लेखिकै ॥ शुचि सेजको सु बिहायकै। उठि स्नानके गृह आयकै॥ लखि स्नान वारे धामको। अरुनारि अति अभिराम को ॥ कछुकह्यो नाहिं सराहिकै। महिपालको अवगाहिकै॥ ऋषि पुनिहु अन्तरद्धान भो। नृपको सु दुखदमहान भो ॥ सहनारि ठाढ़ेह्वैरहे। अति शोचतासों वै रहे ॥ दोहा ॥ छल चेष्टा येतीकरी च्यवन सु ऋषि मतिमान। तऊअसूया ना करत भूपतिकुशिक सुजान॥ मोतीदाम ॥ ऋषिप्रगटत पुनि भे तपधाम। किय सु स्नानधरे मुद माम ॥ कह्यो तदनन्तर यों महिपाल। करो अबभोजन बुद्धि बिशाल॥ कह्यो तब यों ऋषिराय अनूप। मँगावहु भोजन हे बर भूप ॥ सु मोदित ह्वै ऋषिके सुनिबैन। गयो सहनारि सु भोजनलैन ॥ ततक्षणलाय धस्यो ऋषि पास। धरे अतिहीं हियमाहिं हुलास ॥ सुनो तदनन्तर सो ऋषिपर्म्म। महा तपवान सधर्म्म अभर्म्म ॥ लपेटि सु बस्त्रनमाहिं अनूप। सभाजनसेज सुनोवर भूप॥ जरायदई क्षणमाहिं सु सर्ब। तऊ न कियो क्रुधभूप अखर्ब ॥ ऋषि पुनि अन्तरद्धान भये सु। तऊ नहिं भूपति क्रोध रये सु ॥ कछू गतकाल भये ऋषिराय। भये प्रगटे सुनुभूप सचाय॥ कह्योनृपसों इमि हे महिपाल। सुनो सहनारि सप्रेम बिशाल ॥ मधुभार ॥ रथकोमँगाय। हमकोचढ़ाय ॥ ले चलहुयत्र। हमकहैं तत्र ॥ सुनि यह सुबैन। नृप धर्म्म ऐन ॥ रथकोमँगाय। मुदसों सु छाय॥ दहिनी सु ओर। लगिनृप सजोर ॥ अरु ओर बाम। रानी ललाम ॥ लगिकरि तयार। रथको सुढार॥ तापै चढ़ाय। ऋषिको सचाय ॥ इमि कह्यो बैन। नृप धर्म्मऐन ॥ अबकहो यत्र। रथचलै तत्र ॥ सुनिबचनयेह। ऋषि सुमतिगेह ॥ इमिकह्यो पर्म्म। सुनुनृप अ-

भर्म्म ॥ दोहा ॥ सहज सहज रथ लै चलौ सावधान अतिहोय । जासों होय न श्रम हमैं औ न लहै दुखकोय ॥ तोटक ॥ जिनि टारहु जौन मिलै पथमें । बहुद्रव्य मँगाय भरो रथमें ॥ करिहैं हम दान महान सुनो । यहि में मति और न आपुगुनो ॥ ऋषि केसुनिबैन सु भूपकहा । निज भृत्यनसों तजिलोभ महा ॥ ऋषि मांगहिं जो धनल्याहु अबै । रथसंग लगे तुम आउसबै ॥ सुनि भृत्य सु बैन महीपति के । हय ल्यावत भे परमाअति के ॥ अरु मैंगल उन्नत भूधरसे । तिनके सम और नहींदरसे ॥ बहुकांचन भूषण रत्नमये । रथचारु अनेकनि द्रव्यरये ॥ गजगामिनीनारि नई सुथरी । दिवतें अबहीं जनुहैं उतरी ॥ दोहा ॥ ये सब ऋषिहि दिखायकै रथके पीछे पर्म्म । मन्द मन्द चलते भये नृप के भृत्य सधर्म्म ॥ अरिल ॥ हाहाकार मच्यो पुरमेंअति । लखि रानी सह भूपतिकीगति ॥ पुरबासी सब ह्वैकै आरत । बाहर ह्वै बहुभांति पुकारत ॥ ऋषिरथऊपरते बहुमारत । दोउ तऊ न क्रोध को धारत ॥ स्रवत रुधिर अंगमाहिं भयेक्षत । तबहुं शीलता माहीं हैं रत ॥ शापभीत ते कोउ न बोलत । पुरवारे सब व्याकुल डोलत ॥ दोहा ॥ तपबलको देखो प्रबल कहत सर्व इमिबैन । क्रोधहोतहै उद्दपै ऋषिसों बोलिसकैन ॥ रानी की अरु भूपकी लखहु धीरता पर्म्म । एतो सहत कलेशहैं तजत तबहुँ नहिंधर्म्म ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ निर्बिकारित देखि तियसह भूपको अवदात । दियोदान महान ऋषिबर द्विजन को हे तात ॥ अश्वमैंगल रजत कांचन दिये रत्नअनेक । तबहुँ भूपति कुशिकमनमें कियो दुख नहिं नेक ॥ निर्बिकारित देखिनृपको च्यवनऋषिमतिमान । धर्म को अवगाहि ताके कृपाकीन महान ॥ उतरि रथते छोंड़ि भूपहि सहितनारी पर्म । कहत भे इमिबचन कोमल ह्वै प्रसन्न सधर्म ॥ मांगिहो वरदान जो तुम देहिंगे हमतौन । सुनहु हमपरसन्न हैं अतिभूपबर

बुधिभौन ॥ कहि सुऐसे अमृत ऐसे करणसों अभिराम । भये परशत अंग तिनको सुनहुसुतबुधिधाम ॥ कहतभेतब भूपऐसे सुऋषिसों बरबैन । छूटिगो सब दुखनहे तवकृपाते तपऐन ॥ दोहा ॥ सुनि भूपतिके बचनये सुऋषि च्यवन तपवान । हर्षित ह्वै बोलतभये करिकै कृपामहान ॥ जाहु आपनेधामको भार्या सहभूपाल । सुरसरिताके निकट हम बसिहैं समुदविशाल ॥ प्रातकाल तुम आइयो भार्यासहित नरेश । ह्वैहै तवकल्याण अब नशिहैं सर्वकलेश ॥ तोमर ॥ ऋषिके सुबैन अनूप । सुनि होय मोदित भूप ॥ इमिकहे बैन अमन्द । सुनु सुऋषि हे निरदन्द ॥ हमको सुपावनपर्म । तुम कियेभूप सधर्म ॥ हमनारि सहित ललाम । अति स्वस्थ हैं बुधिधाम ॥ क्षतजौन हैं अँग माहिं । लखितेपरैं अबनाहिं ॥ तवकृपाते ऋषिराय । हमभये पर्मसचाय ॥ ममनारिकी द्युतिजौन । लखिपरत अद्भुततौन ॥ सुनिबैन ये ऋषिराव । नृपसोंकह्यो गृहजाव ॥ तुम आइयोपुनिभूप । सहनारिचारु अनूप ॥ तब भूप बुद्धि अगार । मुदसों भरे सहदार ॥ सुरराजसे अवदात । निजधाम को भे जात ॥ दोहा ॥ आगम सुनिकै भूपको पुरबासी सुखपाय । सब सोहैं आवतभये सुनहु युधिष्ठिरराय ॥ मंत्रिनसह बरनगरमें भूपति कियो प्रवेश । बंदीजन गावतसुयश पावतदान सुबेश ॥ जाय धाममें मुदितह्वै धर्मधाम बरभूप । सहितबाम भोजनकरि सु आनँदलह्यो अनूप ॥ गयेसेजपै भूपवर रानी सहित अनूप । दोऊ अति सुखको लह्यो देखि पररूपररूप ॥ भई तरुणनवदेहद्युति भई अनूप अमंद । कृपापाय ऋषिच्यवनकी भये परम निरद्वंद ॥ करतभये उत्पन्नऋषि बन सुरसरिके कूल । इन्द्रहुके वनते अधिक छबिसों भरो अतूल ॥

इतिश्रीमहाभारतदानधर्मेच्यवनकुशिकसंवादेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ प्रातउठि करि क्रिया तियसह भूपवर

अवदात । च्यवनऋषिके बिपिनमाहीं गये हे सुनुतात ॥ लखे बनके माहिंभूपति कनकमंदिरमाम । लगेमणिके खंभातिनमेंप्र-भाकेअभिराम ॥ लखे बहुततड़ागनीरज सहितअति रमणीय । चित्रशाला लखीतिनमें होतमोदितहीय ॥ लखेपर्बत कितेतिन में रत्नके हैं सान । लखे फूले फरे तरु आम्रादि सुखमावान ॥ लपटि तिनमें लता लहकैं लालित आगेवायु । बिहँग बर्ही आदि बिहरैं बहुतबर सहचायु ॥ सदनमाहीं सेजसुन्दर सज-तिहैं सुअनेक । बिबिध बिधिके धरे भोजनसुनहुनृप सबिबेक॥ लखेकहुँ गन्धर्बदेखी अप्सरा कहुँचारु । नारिनरकहुँ लखेसो-वत सेजमाहिं सुढारु ॥ परतलखिये कबहुँ कबहूँ परतलखिन-हिंभूप । होतहै कहुँगान कहुँ द्विज पढ़त वेदअनूप ॥ सोरठा ॥ कौतुक लखियहभूप कीन्हों चिन्तन यहहिये । है यह स्वप्नअ-नूप कैभ्रमहै मो चित्तमें ॥ दोहा ॥ कैनगरी यहँ इन्द्रकी परमा-मयी महान । कैउत्तमथल और यह कैहै धनदस्थान ॥ करत रहे यह चिन्तना हियमें भूपअनूप । तिही समयमें लखिपरे च्यवन सुऋषि मुदरूप ॥ कांचनके आगारमें मणिके लगे किवार । रत्नजटित खंभालसत परमाभरे सुढार ॥ तामेंसुन्दर सेजपर पौढ़ेहैं ऋषि पर्म । गयेभूप तिनपास अति भरे हुला-स सधर्म ॥ तोटक ॥ ऋषिकेजब भूपति पासगये । सहनारि सु-ढारि सुहर्षछये ॥ तबहीं ऋषि अंतर्द्धान भये । सहनारि सुभूपति शोचरये ॥ दोहा ॥ तबआगे बनमेंगये रानीसह भूपा-ल । परेदेखि पुनिऋषि च्यवन करते जापबिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ योगबलसों कियेऐसे नृपहि मोहितपर्म । च्यवन ऋषि मतिमानबर तपवान स्वच्छसधर्म ॥ भये अंतर्द्धानक्षण में अप्सरा गन्धर्ब । सोधनानाभांति के अरु बिपिन पक्षी स-र्ब ॥ रह्यो जैसो सकुश पहिले सुरसरीकेतीर । कैगयो क्षणमा-हिं तैसोसुनु युधिष्ठिरबीर ॥ होय बिस्मित देखिकौतुक कुशिक

भूप सुजान । भये बोलत नारिसों इमि होयकै मदवान ॥ योग बलसों होतहैं सब सुलभ दुर्लभजौन । योगबलसों किये कौतुक इतेऋषि बुधिभौन ॥ करै इच्छा च्यवन ऋषितौ रचै और सुलोक । सुनहुयाते राज्यतेहै श्रेष्ठतपसुखओक ॥ लखहु तासु प्रभावते ऋषिभये शंकितनाहिं । वृषभलौहमतुम्हैंदीन्हैं जोय रथकेमाहिं ॥ चिन्तना इमि कहतहे सहनारि नृप बुधि रास । जानिऋषि तब कह्योतूरण आउमेरेपास ॥ बैनसुनि ये नारिसह नृप निकटऋषिकेजाय । बिबिधबिधिसोंबंदनाकी दुहुन शीशनवाय ॥ दईतब आशीष ऋषिबर होयहर्षितपर्म । तृप्त करिकै दुहुनऐसे बैनबोले नर्म ॥ सर्व इन्द्री आपुजीती सुनहु नृप शिरमौर । मम अराधन कियो नीके है न तुमसों और ॥ पापसों हौ रहिततुम धर्मवान अनूप । जौन मांगहु देहिं सोहम हैं प्रसन्न सुभूप ॥ कुशिकउवाच ॥ सुनहु भार्गव आप हम पै कृपाकीन्हीं माम । हर्षसों है भरोयाते मो हियो अभिराम ॥ तव कृपासौं मुख्यबरहै है न यासम और । सुनहु प्रज्ञावानबर तपवान ऋषि शिरमौर ॥ सोरठा ॥ संशय एक महान है सो करिये दूरितुम । सुनहु च्यवन मतिमान संशय हरहौ आपुबर ॥

इतिश्रीदानधर्म्मेच्यवनकुशिकसम्बादेचतुःपंचाशदऽध्यायः ५४ ॥

च्यवनउवाच ॥ जयकरी ॥ बरदानहुं हमसों तुमलेहु । सुनहु कुशिक नृपबर बुधिगेहु ॥ औ जो संशय ह्वैहै भूरि । तौनहुं हमसब करिहैं दूरि ॥ कुशिकउवाच ॥ मो गृहमें बसिबेको हेत । कहौकृपा करि सुऋषि सचेत ॥ एकविंश दिनलौं तपऐन । एक करोंटहि दीन्हो शैन ॥ अब बिनकहे सुबाहरजाय । अंतर्द्धानभये ऋषिराय ॥ हमको आपु सुदीन्हो दर्श । फेरि सेजपर पर्म सहर्ष ॥ एकबिंश दिनलौं पुनिआप । कीन्हो शयन सुधर्मकलाप ॥ जगिकै पुनिसुतैल लगवाय । चारुस्नान शालामेंजाय ॥ कह्यो कछूनाहिं हमको बैन । ताकोहेत कहा तपऐन ॥ अरु भो-

जन हमसों मँगवाय। ताहि ससेजै दियो जराय॥ फेरिसुरथ मँगवाय सुढार। तापै ह्वैकै आपुसवार॥ जोय हमैं तामें ऋषिराय। यत्र तत्र तुमफिरे सचाय॥ फेरि द्विजनको दैकैदान। आये गंगाकूल सुजान॥ हमैं बिदा करिकै यहबैन। कहेआप ऋषि परम सचैन॥ फेरि आइयो गृहमें जाय। ताको हेत कहा ऋषिराय॥ जबहम आये गृहते प्रात। आपुदिखायो बन अवदात॥ औसु दिखाये हेम अगार। मणिके तिनमें लगे किवार॥ दोहा॥ कबहुं लखिपरे ये सबै कबहुं लखिपरे नाहिं। संशय भयो महानहै याते मो हियमाहिं॥ सो तुम करियेदूरि ऋषि करिकै कृपा महान। संपूरण वृत्तान्तकहि क्रमसों आपु सुजान॥ च्यवनउवाच॥ कीन्हेंजौने हेतसों येकौतुक हमसर्ब। सो तुमसों हम कहतहैं बूझेपुछे अखर्ब॥ चरणादोहा॥ देवसमागम माहिं पितामहकहे सुएसेबैन। क्षत्रिय बिप्रबैरसों ह्वैहैं कुलको संकरऐन॥ यातेतो कुलनाशअर्थहम पासतुम्हारेआय। काठिननेमको कीन्हांहो हम सुनहुकुशिक नरराय॥ नेममाहिंयेचूकैंगे तौ करिकैक्रोध बिलन्द। देहैंशाप करीइच्छाही यहहम कुशिक नरिन्द॥ अरु बनहेम अगार बहाने तव प्रसन्नताकाज। दई दिखाय स्वर्गकी रचना तुम्हैं कुशिक नरराज॥ तपअरु उत्तम धर्मको ऐसो होत प्रभाव। महाधीर्यधर धर्मधर सुनहुकुशिक नरराव॥ रामगीती॥ कै अनादरराज्यकी अरु इन्द्रपदकोपर्म। बिप्रताकी प्रशंसाको करतआपु सधर्म॥ सत्य है सो बिप्रतासम औरहैनहिं भूप। करतइच्छा आपु ताकी जानिसुखद अनूप॥ होयगी सो सिद्धि इच्छा धर्मते महिपाल। बिप्रह्वै है पौत्र तेरो भरोतेज बिशाल॥ होयगो भय महा जाको लोक तीनहुंमाहिं। सत्य तुमसों कहतहैं हममानु मिथ्यानाहिं॥ धर्मधरबर कुशिक नृपयह लेहु बर अवदात। तीर्थको अब जायँगे हम समय बीत्योजात॥ कुशिकउवाच॥ दोहा॥ होय बिप्रता प्राप्तमम कुलको

अति अभिराम। तवप्रसादते च्यवनऋषि प्रज्ञाधामललाम ॥ किहिविधि लहिहैं बिप्रतामेरो कुल ऋषिराय। कहहुआप यह कै कृपाजासों संशयजाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मेपंचपंचाशदध्यायः ५५ ॥

आभीर ॥ सुनुसधर्म महिपाल। वर मतिमान बिशाल ॥ बूझतहमसों जौन। कहिहैं तुमसों तौन ॥ दोहा ॥ हतिहै भृगुवंशीनको क्षत्रियकरिकै क्रुद्ध। दैवयोगते सुनुकुशिक भूप धर्मधरउद्ध ॥ सोरठा ॥ भृगुबंशिनमें एकबचिहै कौनहुं हेतुते। कै है सों सबिवेक भासमान सों तेजमय ॥ औअब ताकोनाम ह्वैहै सोकरिक्रोधको। भूमें जितनेमाम भूधरतिनको जारिहै ॥ अग्नि क्रोधकीजौन जारनलगिहै जगतको।तब औरव बुधिमौन ताहि सिन्धुमेंडारिहैं ॥ ह्वैहै पुत्रऋचीक औरव ऋषि बलवानके। कैहैनाहिं नजीक कोऊ ताके तेजसों ॥ पढ़िहै सोधनुवेद थोरेही दिनमाहिं वर। करिकै अतिहिं सखेद दरि है क्षत्रियवंशको॥ तेजोमय बलधाम कैहैपुत्र ऋचीकके। कुशिकसुनहु बुधिधाम नामतासु जमदग्निबर ॥ देहैंसर्व पढ़ाय धनुर्वेद जमदग्निको। बरऋचीक ऋषिराय कैहर्षित हियमाहिं अति ॥ ऋषीऋचीक अनूप तव पौत्रीको ब्याहि हैं। तामेंपुत्र सुरूप ह्वै है क्षत्रिय कर्मकर ॥ अरुतव कुलमें पर्म ह्वैहै पुत्र सुगाधिके। बिश्वामित्र अभर्म बिप्र कर्मकर धर्मधर ॥ यहसुबित्त क्रम माहिं कारणकै हैं नारिहै। चतुराननके नाहिं ह्वैहैं भाषण अन्यथा ॥ भीष्मउवाच॥ च्यवन सुऋषिकेबैन सुनिके भूपति कुशिकबर। ह्वैकै परम सचैन ऐसे ऋषिसों कहतभे ॥ मोकुलको अभिराम होहु प्राप्तबर बिप्रता। तव सुकृपाते माम सुनहु च्यवनऋषि सुमतिधर ॥ दैकरि यह बरदान च्यवन सुऋषि नृपकुशिकको। ह्वैकै मुदित सुजान तीरथयात्रा करनगे ॥ दोहा ॥ बिश्वामित्र

सु परशुरामको जन्मभयो इमिभूप। अबआगे जो बूझो हमसों सो हमकहैं अनूप ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मेषष्ठपंचाशत्तमोऽध्यायः५६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ आभीर ॥ धर्म बिप्रकोजौन । अतिहि श्रेष्ठ है तौन ॥ क्षत्रियको जो धर्म । क्रूरतौनहै पर्म ॥ दोहा ॥ तौन धर्म ते हमहने कोटिन्ह पुरुष महान। उद्धयुद्धमें क्रुद्धकरि सुनहुतात बुधिमान ॥ तिनकी नारिनकी दशा ह्वैहै कहा सुजान । यह चिन्ताते होतिमो हियमें ब्यथामहान ॥ चरणाकुलक ॥ यह अघ ते हम दुर्गतिलहिहैं । भांति अनेकनिके दुखसहिहैं ॥ यामें संशय नेकहुनाहीं । मैं बिचार कीन्हों हिय माहीं ॥ यह पातकको मेटनकाजै । करिहैं तप बनमाहिं दराजै ॥ सुनहु पितामह बुद्धि निधान । करहुहमें उपदेश महान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ भूप युधिष्ठिरकी सुनिबानी । भीषम धर्म्मवान बरज्ञानी ॥ जानि निपुण इमि कहते भये । भूप युधिष्ठिरको मुदरये ॥ गुप्तबात यकहै सो सुनो । ताकोमतिसों हियमेंगुनो ॥ तप कीन्हें यशमिलत महाना। अरु बरभोग मिलतहैं नाना ॥ तपसों बसत स्वर्गके माहीं। तपसों रोगहोतहैं नाहीं ॥ तपसोंआयु बढ़तिहै जनकी। तपसों सिद्धि कामना मनकी ॥ दोहा ॥ मौन तपकिये मिलत है धन महान सुनुभूप। दानदियेते मिलतहैं भोग अनेकअनूप ॥ ब्रह्मचर्य्य बृतकोकिये आयु बढ़तिहैपर्म । सुन्दर कुलमेंहोतहै जन्म किये जपकर्म ॥ चरणाकुलक ॥ हिंसाकरत जौन जननाहीं ॥ ब्याधि न आवत तिनकेपाहीं ॥ मिलत अनूप रूपहैताको । लखिकै सबै सराहैंजाको ॥ जे तपकरत खाय फलमूला। तिन्हैं राज्य सुखमिलत अतूला ॥ जे पयभक्षी ते दिवमाहीं। रहत समुद सुरपतिके पाहीं ॥ जे जनकरत गुरूकीसेवा । तिन्हैं मिलत बिद्याको मेवा। अरुजे शयन करतहैंभूपै । तिन्हैंमिलत गृह सेज अनूपै ॥ जे जनचीर बल्कलहिधारैं। लहत बसन आ-

भरणसुढारैं ॥ दोहा ॥ अरुजे करत प्रवेश हैं अग्नि माहिं सुनु भूप। ब्रह्मलोकको होतहैं प्रापततौन अनूप ॥ रामगीती ॥ त्याग जे जनकरतहैं षडरसनको अवदात। प्राप्ततिनको होतहै सौ- भाग्य सुनु हे तात ॥ करत आमिष त्यागताकी नशाति सन्तति नाहिं। स्वर्गकोसो लहत जोजन बसत जलके माहिं ॥ सत्य नित्यहि कहतजो सो रहत सुरपतिसाथ। दानदीन्हें होति है बरकीर्ति हेनरनाथ ॥ किये सेवा बिप्रकी जनलहत राज्यमहा- न। लहतहैं औबिप्रताको होत प्रज्ञावान ॥ दुखन जो नहिंदेत कौनहुंजीवको ते भूप। शोकको नहिंहोत प्रापत लहतमोद अनूप ॥ मिलति मेधामाम जनको कियेदर्पण दान। मिलत लोचन स्वच्छकीन्हें दीपदान सुजान ॥ दास दासी गेह भूषण भूमि जे जनदेत। होत तिनको स्वर्ग प्रापति सुनहु भूप सचे- त ॥ फूल फलसों करत पूजन देवताको जौन। महत उत्तम ज्ञानकोसो लहतहै बुधिभौन ॥ हेमसों मढ़िशृङ्ग सुरभी देतजे अभिराम। होत प्रापत स्वर्गको सो भरो मुदसों माम ॥ होहिं जेते रोम सुरभी अंगमें अवदात। रहै तितनेबर्ष दिवमें हर्ष सों हे तात ॥ बायु युक्त जहाज जैसे करत नीरधिपार। तिमि- हि नारकपार सुरभी करति बुद्धिअगार ॥ अन्नदानहिं करत जो सो लहतहै सुरलोक। मिलत क्षत्रप्रदानते है भरो सम्पति ओक ॥ किये दान सु उपानहको मिलतचारु बिमान। मिलत बस्त्र प्रदानते है रूप शोभावान ॥ फूलफलसों युक्त द्रुमको देत हैं जन जौन। लहतनारी सुन्दरीअरु इन्द्रकोसो भौन ॥ देत भोजन नीर शीतल द्विजनको अभिराम। मिलत ताको सर्ब रसहैं सुनहु नृप बुधिधाम ॥ सहित शय्या भूरिधनसों पूरिगृह जे देत। पुण्यताको परमसो जन तौन ध्रुवपदलेत ॥ करत श- य्यादान ताको मिलत सुन्दरिदार। होत ये फलदानकेहैं सुन- हु बुद्धिअगार ॥ युद्धमें जे बीरहैं ते पितामह समतात। लोक

सबमें अधिक ताते और नाहिं अवदात ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बैन सुनि ये पितामहके युधिष्ठिर मतिमान । हियेमें अवगाहि करिकै जानि श्रेष्ठ महान ॥ लालसा भो करत अतिही बीरताकीपर्म । तत अनन्तर युधिष्ठिरनृप धर्मधर सु अभर्म ॥ भीम आदिक बन्धु तिनको कहतभो इमिबैन । करोरुचि तुम पितामहके बचन माहिं सचैन ॥ सोरठा ॥ भूपतिके सुनि बैन भीमादिक सह द्रौपदी । कैकै परमसचैन पूजा कीन्हीं भूपकी ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेविपुलोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

दोहा ॥ जो फलहै आरामको अरु तड़ागको जौन । कहहु तौन अबके कृपा सुनहुतात बुधिभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ भूमें जौने थानमें होत तड़ाग सुजान । सोमहि उत्तमहैकहत जिनकी बुद्धिमहान ॥ चरणाकुलक ॥ चारु तड़ाग बनावत जोहै । पूजनीय लोकनमें सो है ॥ उत्तम श्रीको लहत महाना । सुनहु युधिष्ठिर भूप सुजाना ॥ देवत पितर मनुज गन्धर्बा । राक्षस उरगस्थावर सर्बा ॥ सुखसों रहत जलाशयपाहीं । रहत औरके ते ता माहीं ॥ सुनहु तड़ागनके फल भूपति । कहत सुबुधि जिनके मतधूवति ॥ सुन्दर जौन खनावतताले । दिवमें सो सुखलहत बिशाले ॥ दोहा ॥ जाके रहै तड़ागमें बर्षामाहीं नीर । अग्निहोत्र फल सो लहै सुनहु भूपरणधीर ॥ जाकेरहै तड़ागमें शरद माहिं जल पर्म । गो सहस्रके दानको सो फल लहत अभर्म ॥ रहै नीर हेमन्तमें जासु सरोवर माह । ताको यहफल होत है प्राप्तसुनहु नरनाह ॥ जौने मखमें होतहै सुबरणदान महान । ताकोफल सो होतहै प्राप्त ताहिमतिमान ॥ जाकेरहै तड़ागमें सलिल शिशिरलौं चारु । यज्ञ सुअग्निष्ठोमको सोफल लहत उदारु ॥ जासुतालमें रहत जल ऋतुबसन्तलौंपर्म । सो फल मख अति रात्रको लहत सुकहत अभर्म ॥ जाके रहै तड़ागमें जल निदाघलौं स्वक्ष । बाजि मेधफल सो लहत कहत सुबुध

हैं दक्ष ॥ रामगीती ॥ पियेंजासु तड़ागमें जलगऊ अरुजनसाधु। होततताको प्राप्तहै अतिपुण्यस्वच्छ अगाधु ॥ बंश अपनो सर्ब तारत प्रभा धारतभूरि। दरशताको किये जनके होत कल्मष दूरि ॥ पियतजासु तड़ागमेंजल तृषितजीवअनेक। अश्वमख को लहत सोफल कहतहौंसबिबेक॥ परम दुर्लभसलिलहै पर-लोकमाहीं भूप। हर्षसों ते रहत जे जलदान करत अनूप॥ कहतहैं बुध दान सबते श्रेष्ठहै जलदान। कह्यो तुमसों तड़ाग-नको सर्बफल मतिमान॥ होत जो फल वृक्षलाये कहतहौं अ-बतौन। होततरु षटजातिके हौं कहत प्रज्ञाभौन ॥ होतथावर भूतहैं षटजातिके बुधिधाम। वृक्ष तृण त्वकसारबल्ली लता गु-ल्म ललाम ॥ कियेते आरोप तिनको कीर्त्तिहोत अनूप। रहत हैं आनन्द सों परलोकमें सुनुभूप॥ नरनको आरोप जो जन करतहै अभिराम। मातको अरुपिताको सो बंशतारत माम॥ होतवृक्ष सुपुत्रसमहै कहत दक्ष महान। करत अक्षय स्वर्गको ते प्राप्तहैं मतिमान॥ दोहा ॥ तृप्त सुरणको करतहैं वृक्ष सुमन सों चारु। फलसों पितरनको करत सुनु नृप बुद्धि अगारु॥ तरुके आश्रय रहतहैं सर्बजीव सुखपाय। देतस्वच्छ फलफूल हैं राखत नित्य सचाय॥ ताते कूल तड़ागके वृक्ष लायकैभूप। रक्षाकीजै पुत्रलों है यह धर्म अनूप॥ चरणदोहा ॥ जौन तड़ागन को बनवावै बाग लगावै चारु। यज्ञ करत अरु सत्यधरतते दिवमें लहत अगारु॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिदानधर्मेअष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः५८॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ बहुप्रकारके दानहैं तिनमें श्रेष्ठसुकौन। कहौ हमैं अवगाहिकै अहो तात बुधिभौन॥ सोरठा ॥ औ जो दीन्होंदान तौन मिलत परलोकमें। यामें सुनहु सुजान संशय होत महानहै॥ भीष्मउबाच ॥ चरणाकुलक ॥ अभय सर्ब भूतनको दीबो। दुखमें परम अनुग्रह कीबो॥ तृषित जौन मांगन को

आवै। ताहिदेय मुदसों अतिछावै ॥ दियेदानकोदियो न मानै। बुध तिहि दानहि श्रेष्ठ बखानै ॥ दियो दान परलोकेमाहीं। मिलत अवश्यहि संशय नाहीं ॥ दोहा ॥ भूमि हेमके दानसों अति पवित्रहै तात। दुरत कलुषतनकी प्रभा करत परम अवदात ॥ सोरठा ॥ साधुनकोये दानदीजे नित्यहि प्रीतिसह। करि सन्मान महान कहिकै कोमलबचनबर ॥ दोहा ॥ जेअक्षय फलकोचहत ते हियमें करि प्रेम। लोकमाहिं प्रियबस्तु जे द्विजको देत सनेम। प्रियबस्तुनको देत जे प्रियबस्तुहि ते लेत। रहत समुद परलोकमें बुधजन कहत सचेत ॥ जे जन मांगें आयकै सदुख दरिद्सों भूर। यथाशक्ति जे देतनहिं तिनको ते हैं कूर ॥ शत्रुहु गहिकै दीनता आवै शरणै माहिं। ताकी जे रक्षा करत करत द्रोहको नाहिं ॥ तेअतिउत्तम पुरुषहैं परमप्रशंसावान्। तिनके दरशनते मिटत अघके ओघमहान ॥ विद्यावान सुबिप्रजे क्षीण सुधासों पर्म। तिनकी जे सु क्षुधा हरैं तेहैं स्वच्छ सधर्म ॥ अरिल ॥ देव मनुजसों जे नहिं मांगत। औ नहिं कबहुंक्रोध में पागत ॥ जोई लब्धहोत तिहि सो अति। गहत सुतोषहि रहत समुद निति ॥ राखहु ऐसे बिप्रनको डर। भाषहु तिनसों नित्य वचन बर ॥ तिनको करि बहुबिधि सन्मान सु। करहु निमंत्रण सुनहु सुजानसु ॥ सब धर्म्मनते यह अति उत्तम। सुन्योमहा मतिमाननसों हम ॥ रहोदान तुम देत सर्व दिन। कबहुं चित्तमें अरुचि करहु जिन ॥ नारीपति आधीन रहति जिमि। हम द्विजके आधीन रहत तिमि ॥ लागत सबते तुम हमको प्रिय। तुमहूंते प्रियबिप्र लगतजिय ॥ मेरेपिता गये जिहिलोकहि। यहु सुधर्मते होय अशोकहि ॥ जैहैं हमहुं सुनहु हे नृपबर। है ऐसोनहिं और धर्मबर ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेउत्तमानुशासनेएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ याचमान अयाचमानहिं दियो जो

है दान। दुहुनमाहीं कौनसो है श्रेष्ठ सुनु मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ दियो जौन अयाचमानहिं श्रेष्ठसोहै दान। परम उत्तम है अयाची बिप्र हे मतिमान ॥ दोहा ॥ जे क्षत्रिय रक्षाकरत गहे धीरतापर्म। ते अतिउत्तमहैं सुनहु कहत सुबुद्ध अभर्म ॥ सोरठा ॥ जे अयाचना माहिं बिप्र धीर्यताको गहत। तिनकीसमहैनाहिं याचमान जे बिप्र हैं ॥ मल्लिका ॥ धीर्यमान बिप्र जौन। श्रेष्ठ हैं सुजान तौन ॥ देवताहि तृप्तपर्म। ते करैं सुने सधर्म ॥ दोहा ॥ बिबिध भांतिके दुःखसहि अरु दुख दे दाताहि। जौनयाचना करत द्विज तौन श्रेष्ठ है नाहि ॥ तातेजे द्विज याचनाकरन न आवत तात। तिनको कै सन्मान तुम देहु दान अवदात ॥ दीबो ऐसे द्विजनको सो उत्तमहै यज्ञ। प्रवृत रहौ यामें सदा सुनहु भूपवर प्रज्ञ ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कौनकालमें कीजिये यज्ञक्रिया अभिराम। कैसे द्विजको दीजिये दान कहहु बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ कर्म भयानक सर्ब हैं क्षत्रिनके हे तात। पावनकर्म सुदानयक कहत सुबुध अवदात ॥ सुनहु भूप यहि जगतमें जेनृपहैं अघकार। ग्रहण कछूनहिं करतहैं तिनको साधु उदार ॥ सोरठा ॥ याते कीजै यज्ञ दानदीजिये द्विजनको। सुनहु नृपति बरप्रज्ञ सुबुधन को सिद्धान्तयह ॥ दोहा ॥ जाके धनको करतहैं ग्रहण न बिप्रअनूप। ताको साधन होतनहिं कौनहु सिद्धि सुभूप ॥ सोरठा ॥ बिप्र कुटुम्बी जौन तिन्हैं देहु तुम द्रव्यबहु। यासम सुनु बुधि भौन परमधरम नहिं औरहै ॥ दोहा ॥ प्रापति तुमको होयगी सन्ततिसुखद सुजान। ह्वैहौ तुम परलोकमें प्रापति मोद महान ॥ रामगीती ॥ धेनु वृषभ सुछत्र अरु बरबस्त्र रथ अभि राम। सहित शय्या अन्न धनसों भरो गेह ललाम ॥ द्विजनको सन्मान करिकै देहु ये सबतात। स्वर्ग प्रापति हो-

यगो यहिधर्मसों अवदात ॥ प्रजाको अरु भृत्यको नितकरहु पालनपर्म । द्विजनको जो प्राप्तनाहीं देहु तौन सधर्म ॥ प्रजासों जे दण्डलैके करतहैं नृपयज्ञ । प्रज्ञताकी प्रशंसानहिं करत हैं धर्मज्ञ ॥ हैं अनर्थक द्विजनको धननिकर हे भूपाल । मोह बाढ़ै लोभबाढ़ै बढ़ैदर्पबिशाल ॥ मोहबाढ़े धर्मको नृप होयजात बिनाश । बढ़त अधरम मोहबाढ़े कहत बरबुधिराश ॥ वृष्टि नाहीं होतिहै जब प्रजाहोय सदन्द । कूपजलसों करतिहै उत्पन्नअन्न नरेन्द ॥ सुनहु तौने अन्नको महिपाल लेत सुजौन । नशत ताकी राजश्रीहै लहत दुखको तौन ॥ कीर्तिताकी मन्द भूमें होतिहै महिपाल । लहत मुदपरलोकमें नहिं कहत बुद्धि बिशाल ॥ होय बिद्यावान अरुबर धर्मवान महान । सत्यमाहीं निरतऐसो बिप्रजो मतिमान ॥ होयजाके राज्यमाहीं क्षुधासों दुखमान । बालहत्यामानसो नृप होतकहतसुजान ॥ राज्यमें जेहि भूपके द्विजरहैं नित्य सपीर । तौन निन्दितभूपहै सुनु नृप युधिष्ठिर धीर ॥ भूपशिविके बचन हैं ये कहे तुमसों तौन । नीतिमान महानसोहो परमबुधिको भौन ॥ दोहा ॥ प्रजाकी नरक्षा करै हरैद्रव्य नृपजौन । नष्टहोत तिहिकर्मसों तौन कुमतिको भौन ॥ कुमतीजौने नृपतिकी करैप्रजा अघमाम । होत नृपहि सोप्राप्तअघ कहत सुबुध बुधिधाम ॥ चरणादोहा ॥ प्राप्त होतहै भाग चतुर्थो किते कहत मुनिपर्म । किते कहतहैं प्राप्तहोतहै आधोभाग अभर्म ॥ दोहा ॥ जौनेनृपकी करतिहै प्रजासुकर्मअनूप । तामेंते सोलहत है भाग चतुर्थो भूप ॥ आश्रित जिमि परजन्यके रहत सबैहैं भूत । तिमिहीं तव आश्रित रहोमुदसों प्रजाअकूत ॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिदानधर्मे एकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ बहुप्रकारके दान तिनमें कौन बिशिष्ट है । कहहु आपु मतिमान संशयहर धर आपबर ॥ भीष्मउवाच ॥

दोहा ॥ सबदाननमें श्रेष्ठहै भूमि दानहेभूप । सर्वकामना करति है पूरण भूमि अनूप ॥ भूमिदान जेकरतकरि बिप्रनको सन्मान। बहु वर्षनलौं बढ़तहै ताको बंशमहान ॥ जे नृपअपनेराज्यमें अल्पहु अचला देत। अचला को ते करतहैं भोग समोद सचेत ॥ रामगीती ॥ दुहुंलोकन माहिंअपने कर्मसोंअवदात। करतहैं नर भोग यामें है न संशयतात ॥ करत भूको दान तिनको करति भूप्रिय पर्म। करत पावन पर्म अरु सब दराति पापअभर्म ॥ मिलत तैसो भोग जनको करत जैसो दान। धर्ममें यह पर्मनिश्चय सुनहु नृप मतिमान ॥ युद्धमें तन त्याग अरु बर भूमिदान अनूप। स्वच्छ यह क्षत्रियन को है धर्मदक्ष सुभूप ॥ प्रेमसों सहदक्षिणाजनभूमिको जे देत। पाय नरता फेरि ते जन होत भूप सचेत ॥ पापकृत महिपालहूकी लेतभूमि सुजान। होत ऐसीभूमि प्यारी सुनहु नृपमतिमान ॥ बुधनको जे देत भू ते लहतराज्य महान। सुनु युधिष्ठिर भूपताते करहुभू को दान ॥ करै इच्छा भूमिकी तो देयभूरि अनूप। भूमिप्रापति होनकी नहिं और बिधि है भूप ॥ देयदान बिचारि पात्रहि कहतहैं मतिमान। दई भूमें जायनाहिं नर कबहुं तात सुजान ॥ दई भूमेंजातनाहिं जे लहत ते यश उद्ध। रहत दिवमें समुदहैं ते पाय श्रीकोशुद्ध ॥ मल्लिका ॥ पाप करत भूप जौन। भूमिदान ते सुतौन ॥ होतहै पवित्रपर्म। भानुलौं लसैंअभर्म ॥ अश्वमेध भूमिदान। हैदुओ सुनो समान ॥ जौनभांतिसों सुभाय। पुत्र की करै सहाय ॥ तौनभांति भूमिशुद्ध। दानकारकी सुउद्ध ॥ कीर्तिहै सहायभूप। धरति मोदहिय अनूप ॥ चरणादोहा ॥ सुबरण बस्त्र रजत मणिमुक्ता दीन्हें ते अवदात। होत जौन फल भूमिदानते होत तौनफल तात ॥ हंसादोहा ॥ स्वामिकार्य्यमें युक्तजो ब्रह्मलोक गत जौन। ते न उलंघन करिसकत भूमिदको बुधभौन ॥ अरिल ॥ यमकेकिंकरआयसकतनाहिं। भूमिदेत तापा-

स अन्तनहिं ॥ सुर अरु पितरनको सो मोदित । करत सु भूमि देत करि जो हित ॥ रह्यो होय तनजाके कृशअति । ताहि सु भूमि देत जे सहरति ॥ तौन सदा ब्रतको फलपावत । ताको सुयश महीमहँ भावत ॥ गऊ सप्रेम बत्सको देखति । तिमिहि भूमि भूमिदको पेखति ॥ दईभूमि बिप्रनको जो बर । होतितौन दातहि कामदघर ॥ गुरुकी पूजा करत जौनजन । अरुजेपूजत सुरहिलायमन ॥ तेउ नहीं हैं भूमिदकी सम । सुन्यो महामति मतिमानसों हम ॥ मातासुतको पोषति है जिमि । धरणी धरणिदहि पोषति तिमि ॥ सोरठा ॥ कहतिभूमिइमि भूप देतमोहिं जे हर्षसों । ते मोहिं लहतअनूपजेन देतते लहतनाहिं ॥ दोहा ॥ याते धरणी दीजिये सुनुधरणीप सधर्म । दई न धरणी लीजिये है सुकर्म यहपर्म ॥ दीन्हीं धरणी लेतजे करिकैलोभमहान । तौन नरकमें परतनृप निश्चयजानुसुजान ॥ जैसे नीकी भूमि में उलहति कृषी अनूप । तिमिहीं उलहति कामना भूमिदकी सुनुभूप ॥ करतकृपाहैं अमर सब भूमिदपै महिपाल । यातेधरणी दानसम और न श्रेष्ठ बिशाल ॥ होतजीव सब भूमि ते होत भूमि में लीन । याते माता औ पिता भूमिहि जानिप्रबीन ॥ रामगीती ॥ महाभूतनमाहिं औरन भूमिसमहै तात । कहत हौं इतिहासयामें सुनहुसो अवदात ॥ बृहस्पति अरु शक्रको तिहिमाहिं है सम्बाद । यज्ञशतकरि दक्षिणाबहु देयछोड़ि प्रमाद ॥ बृहस्पतिसों भये बूझत शक्रयह सुनुभूप ॥ शक्रउवाच ॥ मिलत अक्षय स्वर्गकीन्हें कौनदान अनूप ॥ कहौ तुम अवगाहि हमसों सुनहु गुरु बुधिमान । बैन सुनिये कह्यो गुरुइमि सुनहु शक्रसुजान ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ दिये सुरभी दान सुबरण दान अरु भूदान । होत कल्मषदूरिअक्षयस्वर्गमिलतसुजान ॥ भूमिदान समान और न दानहैं सुरराज । रहत भूमिद तृप्तिहै निति भरोमोद दराज ॥ जीति भूमिहि सिन्धुलों जे देतहैं म-

हिपाल। रहति तिनकी कीर्त्तिजबलौं रहति भूमिबिशाल॥ भूमिकी अरु मोदकी जो करै इच्छाभूप। पात्रको तौ देय धरणी सहित प्रेमअनूप॥ कियेते सबदानजनको मिलतहैफलजौन। मिलत बसुधा दानते फल तौनसुनु बुधि भौन॥ दई धरणी आंपनीको हरत जे हैं अज्ञ। परत ते जन नरक माहीं सुनहु भूपतिप्रज्ञ॥ दई भूमी और की जो हरै ताकोजौन। नरक में परिसहतहै बहुभांतिके दुखतौन॥ सुनहु हे सुरराजयाते दईबसुधाताहि। हरणइच्छा भूप मनमें करै कबहूंनाहिं॥ दईबसुधा हरत जो है भूप लोभ अगार। परतताके तीन पुरुषा नरकमाहिंअपार॥ भयो जो च्युत राज्यते नृपपरमह्वैके दीन। ताहि थापित राज्य पै जो करत भूप प्रवीन॥ लहत सो सुरलोकको सुख महत कहत बुधेश। रहतताको सुयश भूमें चन्द्रमासों वेश॥ बढ़ति बसुधा माहिं जिमि जिमि कृषी हैसुरराज। बढ़त तिमि तिमि पुण्य भूमिद भूपको सुदराज॥ समरमें अरि मारिकै जे मरत हैं महिपाल। मिलति जैसी अप्सरा है तिन्हैं चारुरसाल॥ मिलति तैसी अप्सरा धरणीदको सुरराय॥ देखि तिनके नृत्यको सो रहत नित्य सचाय। भूमिदान समान और न दानहै अवदात। सुनो मघवन सत्यसम नहिं और धर्मबिभात॥ मातसमनहिं और गुरु है कहत हैं मतिमान। दानसमन औरबिधि है सुनहुशक्रसुजान॥ बैनसुनि येबृहस्पतिके मुदित ह्वै मघवान। बृहस्पतिको रत्नयुक्त सुदई भूमि महान॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ कह्योतुम्हैं अवगाहिहम दान श्रेष्ठ है जौन। अब आगेकाबूझिहौसुनहु तात बुधिभौन॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिदानधर्मेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ सुनहुतात यहिलोकमें बिप्रनको अभिराम। दान दीजिये कौनसो कहौ हमैं बुधिधाम॥ सोरठा॥ लहे कौन शुचिदान शीघ्रहोत परसन्नद्विज। करि बिस्तार म-

हान कहो आपु अवगाहिकै ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ सुनहु तात बूझो तुम जोई । नारदसों बूझो हम सोई ॥ उनजोउत्तर दीन्हों याको । अतिशय संशयहरण हियाको ॥ कहततात तुम सों हम तौनै । धरहुताहि सुनिकै हियभौनै ॥ नारदउबाच ॥ अन्न दानसम और न कोई । अन्नदजनअतिउत्तमहोई ॥ मुनिअरु अमरप्रशंसाकरैं । नित्यअन्नकी मुदकोधरैं ॥ रहतसबैहैंअन्ना धीना । अन्नद रहतसमुदपरबीना ॥ यातेअन्नदानको दीजै । अन्नदान कीन्हेंसुखलीजै ॥ सबकेप्राणअन्नकेमाहीं । रहतअ-निश्चयमानोनाहीं ॥ जोअपनेकल्याणैचाहै । अन्नदेतसोसहित उछाहै ॥ दोहा ॥ अन्नदेत जो द्विजनको करिकै अतिसन्मान । तिमिमानो परलोकमैंनिधिको धरी महान ॥ चरणाकुलक ॥ पथमें श्रमितभयो जो होई । ताकोअन्नदेत जो कोई ॥ स्वर्गमाहिंसो सुखको पावै । भूमिमाहिं शुचियशकोछावै ॥ जौन देतहै अति-थिहिभोजन । लहत महान धर्मकोसोजन ॥ पापमान जे मनुज बिशाला । नित्यरचत कुकरमको माला ॥ तेऊ अन्नदानको दीन्हें । सब कलुषनसों होत बिहीने ॥ जागृहमें भिक्षाकोमाँगै । बिप्रजायसो मुदसोंपागै ॥ सो गृह परम वृद्धिकोपावै । दुःखन-जीक न ताके आवै ॥ अन्नदानजो करत महाना । सो जन्मा-न्तर माहिं सुजाना ॥ लेतजन्म उज्ज्वल कुलमाहीं । कबहुं न-आवै बाधापाहीं । अन्नद लहत रूपतानीकी । रहतसमोद कृपालहिश्रीकी ॥ सुन्दरक्षेत्र बिप्रहैं जानो । यहनिश्चय हिय में अनुमानो ॥ दोहा ॥ तामेंबोवै बीजजो लहतपुण्य फलभूप । ऐसो और न क्षेत्रहै कहत सुप्रज्ञअनूप ॥ चरणाकुलक ॥ दियेअन्न यशमिलत महाना । मिलतस्वर्गमें आनँदनाना ॥ अन्नहिते सबहोत जगत है । अन्नहिते जगमोद पगतहै ॥ अन्नहिते सबहोत धर्महै ॥ अन्नहिते सब मिटत भर्म है ॥ अन्नहि रुज को करत बिनाशै । अन्नहि बलकोकरत प्रकाशै ॥ क्षीणहोत

तन अन्नबिना है। हीनहोत बलभूरि महाहै॥ वायुमेघमें जल
को भारै। ताकोमेघ यत्नसोंधारै॥ मघवातौन नीरको बरषै।
भानुताहि किरणनिसों करषै॥ पुनि रबिकिरण मेघवपुक्वैकै।
भरतभूमिको नीरहिच्वैकै॥दोहा॥ आर्द्रहोतिजबभूमितब अन्न
होत उतपन्न। अन्नहोत तब रहत है जगत परम परसन्न॥
चरणाकुलक॥ अन्नहिते तनहोत सुढारा। बढ़तअन्नते रुधिर
अपारा॥ मेदअस्थि अरु शुक्र बढ़तहै। अन्नहिते जगमोद
मढ़तहै॥ सुनुनृपहोत शुक्रतेप्रानी। तातेअन्नहिकारणजानी॥
भीष्मउवाच॥ हम नारदकी सुनि यहबानी। अन्नदेत करिदया
महाबी॥ तिमिहिं द्विजनको तुमहूंराजा। देहुअन्न करिदया
दराजा॥ अन्नदानको कीन्हेंनेमै। लहिहौस्वर्गमाहिं तुमक्षेमै॥
आभाशरद अभ्रकी जिनमें। मणिकेलगे खम्भ हैं तिनमें॥ बहु
बिधिकी रचनासों सोहैं। जोहत रहत तिन्हैं जेजोहैं॥ शय्या
तिनमें बिछीअनूपा। राजति तिनमें नारि सुरूपा॥ अन्नद
ऐसे थलको पावै। स्वर्गमाहिं अति सुखसोंछावै॥ दोहा॥ ताते
तुमश्रद्धा सहित करो अन्नकोदान। अन्नदानसम दाननहिं
और सुनहु मतिमान॥

इतिश्रीदानधर्मेनारदोपदेशेभीष्मयुधिष्ठिरसम्बादेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

युधिष्ठिरउवाच॥ चरणदोहा॥ अन्नदानको सुन्यो महातम सर्व
आपुसोंतात। कहौ सर्ब अब अन्नदानको बिधिजो है अव-
दात॥ किहिनक्षत्रमें अन्नदानको कीन्हेंका फलहोत। कहौ
मोहिं अवगाहि आपुयह सुनहुंतात बुधिपोत॥भीष्मउवाच॥दोहा॥
यहिप्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अनूप। नारदको अरु देव
कीको है सम्बाद अनूप॥ अरिल॥ एक समयमें नारद ऋषि-
बर। गये द्वारिकामाहिं सुमतिधर॥ तिन्हैं देवकी देखि समुद
सह। सादर बोलि प्रश्नपूछो यह॥ पूछेकहत भये मुनिनारद।
बिधिवत सुनोसु भूप बिशारद॥ नारदउवाच॥ कृतिकामाहीं बिप्र

बुलायसु। जौनकरावत भोजन पायसु॥ तौन लहत हैं उत्तम लोकहि। रहत समुद नितिलहत न शोकहि॥ नखतरोहिणी माहीं जोजन। दुग्ध अन्नदे द्विजका भोजन॥ ता जनको ऋ-णसबहै छूटत। पाप वृक्ष तिनुकालौं टूटत॥ दोहा॥ देत मृग-शिरा माहिंजे सुरभीबत्स समेत। ते दिवमाहीं लहतहैं परमा मयो निकेत॥ आर्द्रामें जे देतहैं कृसर तिलनसोंपर्म। दुर्ग मार्ग के होतते पार समोदसधर्म॥ पुनर्बसूमें देतजे पूप द्विजन कोभूप। होत महाधनवानसो कीरति लहत अनूप॥ पाचक जे जनदेतहैं पुष्य नखतके बीच। स्वयंप्रकाशक लोकमें शशि लौंलसत निभीच॥ अश्लेषामें देतजे द्विजहि रजतकोदान। छूटत ताके सर्बभय लहतलोक सुखवान॥ तिलसों पूरण पात्र जे देतमघाके माहिं। सो सुतसुंदर लहत हैं लहत दुःखको नाहिं॥ चरणादोहा॥ पूर्वाफाल्गुणी में जेजन गोरस देत अमंद। तौनलहत सौभाग्य महतहैं लहत कबहुँ नहिंदंद॥ उत्रामें जे शाठीओदन दुग्धसुघृतसों देत। अमरलोक में लहत तौनहैं परमामयो निकेत॥ जो जोदान देत हैं उतरा फाल्गुणी में पर्म। होतमहाफल तिन तिनकोहै मैंहों कहत अभर्म॥ दोहा॥ हस्त नखतमें देत जे द्विजको हस्तीदान। परम लोकमें प्राप्तह्वै पावत मोदमहान॥ जेजन चित्रानखत में वृषभ सुगन्धहिदेत। तौन अप्सरन संग बन नंदन को सुखलेत॥ स्वातीमाहीं देत हैं अतिप्रिय धनको जौन। पावतहैं दुहुंलोकमें यश अरु सुखको तौन॥ सुरभीदेती दुग्धअरु वृषभ चारु जेदेत। नखत बि-शाखामाहिं ते कबहुंन दुखको लेत॥ तासों देवत अरु पितर तृप्त रहत हैं पर्म। स्वर्गलोक में लहत सो सुखको भूरि अभ-र्म॥ जेजन बृतकरिदेत हैं अन्नबसन अवदात। अनुराधामें कीर्ति अति तिनकी चारु बिभात॥ युगशतलौं तेरहत हैं स्वर्ग लोक में स्वक्ष। सुरजिनको चाहतरहत कहत सुबुधहैं दक्ष॥

ज्येष्ठामें जेदेतहैंकालशाक अभिराम । बांछितगतिको होतसो
प्राप्तकहत बुधमाम ॥ मूलनखत में देतजे द्विजको फल अरु
मूल । बासपायसो स्वर्गमें सुखको लहतअतूल ॥ जेजन पूर्बा-
षाढ़में दधिसों भरोअमन्द। पात्रदेत हैं द्विजनको ते न लहतहैं
दन्द ॥ दुग्धवतीबहुहोहिंजिहिंकुलमें सुरभीचारु । होततौन
कुलमाहिंसो लहत अनन्द अपारु ॥ उत्तराषाढ़नक्षत्र में शक्तु
सुघृतदेजौन। सर्बकामना लहत हैं सुनहुं देवकी तौन ॥ मधु
घृत दुग्धसुदेतजे अभिजित में अभिराम। स्वर्गलोकको होत
सो प्राप्तकहत बुधिधाम ॥ कम्बलजे जनदेतहैं श्रवण नखतके
माहिं। तेबिमानपै बैठिकै जात सुरनकेपाहिं ॥ गथमेंरथजेदेत
हैं नखत धनिष्ठाबीच । मरणान्तर में मिलति है तिनको राज्य
निभीच ॥ शतभिषमें जे देतहैं अतरादिक अभिराम । बिहर-
तते अप्सरनसँग लहत सुगन्ध ललाम ॥ पूर्बभाद्रपद माहिंजे
राजमाष शुचिदेत । स्वर्गमाहिं ते प्राप्तह्वै सर्ब सुखनकोलेत ॥
उतरभाद्रपद माहिंजे मांसदेत अभिराम । तृप्त होत ताके
पितर आपलहत मुदमाम ॥ नखत रेवती माहिं बर जेजन
सुरभी देत। सर्ब कलुष ताके कटत सुखसों रहत सचेत ॥
सर्ब कामना सहित सो सुरभी अति अभिराम। प्राप्त होत
दातारको बुधजन कहतललाम ॥ नखत अश्वनी माहिं जे
अश्वसहित रथदेत। हाथी हयसुखपालते जन्मान्तर में ले-
त ॥ द्विजहि देत तिल धेनुजे भरणीमाहिं उदार ॥ बहुसुरभी
ताकोमिलत अरु बर सुयश अपार ॥ भीष्मउबाच ॥ नखतयोग
में दानको जो फलहोत अनूप। कह्यो देवकी सों सरब नारद
मुनि हेभूप ॥ कह्यो देवकी यहसुफल पुत्र बधुनसों सर्ब । धर्म
धाम अभिरामबर भूपति सुनहु अखर्ब ॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्बणिदानधर्मे चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ ब्रह्माके सुत अत्रिमुनि कही बात यहभू-

प । जेजनकांचनदेत ते सुखकोलहतअनूप ॥ सर्बकामनादेनको फल जो है अभिराम । हेमदको सो होत है प्राप्त सुनहुबुधि- धाम ॥ मल्लिका ॥ हेमदान देतजौन । मोदको महान तौन ॥ प्राप्त होतहैं सुजान । कीर्तिको लहैं महान ॥ होतहैं पबित्रपर्म । चन्द्र लौंलसैं सधर्म ॥ आयुको लहैं बिलन्द । ना लहैं कबौंहुंदन्द ॥ दोहा ॥ पितर रहत परसन्नहैं हेमदके भूपाल । कह्यो यहसुअव- गाहिकै हरिश्चन्द्र भूपाल ॥ मौक्तिकदाम ॥ किये घृत दान सुनो मतिमान । बृहस्पतिहोत प्रसन्नमहान॥सुनोअरु अग्निप्रसन्न सुहोत । कहैं अवगाहि महामति पोत ॥ सोरठा ॥ औंअश्विनी- कुमार मारतण्ड घृतदानसों । होत प्रसन्न उदार करत सहाय सु घृतदकी ॥ रामगीती ॥ श्रेष्ठहै सब रसनमें घृत कहतबुधअव- दात । होतबल अरु सुयशताके दानते हेतात ॥ क्वारमें जेदेत घृतको दानद्विजको भूप । अश्विनसुत देतताको रूप परम अनूप ॥ खीरभोजनदेत घृतयुत द्विजनको जनजौन । प्रेतता- के भवनमाहीं कबहुं करत न गौन ॥ देतहैंजन जे करोरा पात्र को अभिराम । प्यासदुखको कबहुं नाहिं सो लहैं सुखको माम ॥ यज्ञकीबे बिप्रबरके काष्ठ जेजन देत । सर्बताके होत कारजसिद्ध रहत सचेत ॥ रहत गालिब अरिन पै सों नित्यही बलवान । बढ़तताको भूमिकामें सुयश चारुमहान ॥ देवतनके समागम को बिधाताको साथ । कहत हैं वृत्तान्तहम सो सुनहु अब नर नाथ ॥ सर्बसुर मिलि कह्यो बिधिसों जायकै इमिप्रश्न । देहु सुन्दर देश भूमें करैं तहँ हमयज्ञ ॥ देवाऊचुः ॥ भूमिके अरुस्वर्ग के प्रभु आपुहौ लोकेश । आपके हम पासयाते आय सहित सुरेश ॥ देशमाँग्यो भूमिमाहीं यज्ञकीबे पर्म । देहु याते कृपाक- रिकै करैं यज्ञ सधर्म ॥ दई पुहुमीमाहिं है बहुयज्ञको फलहोत । चराचरके नाथ हौ तुम करण मोदउदोत ॥ योग्यआज्ञादेन के हौ आपुयातेनाथ । देहु आज्ञाकरैं जासों यज्ञसबसुरसाथ ॥

बिधिरुवाच ॥ देत हैं हमतुम्हैं कीबे यज्ञ भूमि अमन्द। करो तेहाँ जायकै तुम यज्ञ हे सुरवृन्द ॥ देवाऊचुः ॥ सुनहु जौनेकाज आये आपु के हमपास। कृपा ते तव सिद्धिभोसो परमआनँदरास ॥ दयो जो कुरुक्षेत्र हमको देश यह अभिराम। बसत हैं तिहि माहिं बहुऋषि पुण्यको हैधाम ॥ यज्ञयाही देशमें हम करैंगे लोकेश। कहिसुऐसे बिधातासों अमरसह अमरेश ॥ करनमख कुरुक्षेत्रमाहीं भये आवतसर्ब। कण्वअत्रि अगस्त्यअरुऋषि वृषाकपि सु अखर्ब ॥ असित देवलआदि ऋषि तब तहाँ आयेदक्ष। ऋषिनसहते भयेकरते यज्ञ सबसुरस्वक्ष ॥ कियो पूरण यज्ञ बिधिवत ऋषिन्ह सह सुरवृन्द। तत अनन्तर यज्ञ भूको अंश षष्ठ अमन्द ॥ देयकै सब अमर आनँद भरे भूरि अभर्म। गये अपने लोकको हे भूमिपाल सधर्म ॥ सुनहु याते महत जनकी लेयआज्ञा तात। यज्ञ कीजै प्रज्ञको यह सुमत है अवदात ॥ दोहा ॥ बसिबेको जे देतहैं चारु अगार अनूप। सोउ स्वर्गकोजातहैं सुनहु युधिष्ठिर भूप ॥ अध्यापकको राखि निज गृहमें जे सुखदेत। ब्रह्मलोकमें प्राप्तकै तौन महत सुख लेत ॥ छप्पय ॥ छहौं ऋतुन्हमें सुखद्धाम जन जौन बनावत। सुरभिन्हकाजे तौनपाय अति मोदहिभावत ॥ कीरतिभूमें करत सप्तपुस्तिनको तारत। सम्पति लहत महान दन्द दीनन्हको टारत ॥ शुभक्षेत्र भूमिको देत जे ते शुचिशोभा लहतहैं। नहिं सहत दुख बहुलहत सुख चहतपुण्य बुध कहत हैं ॥ तोमर ॥ महिरत्नकी जनजौन। द्विजको सुदे तहँतौन ॥ कुलकी सुवृद्धि सुजान। लहिकै रहैं मुदवान ॥ सुन्दरी ॥ ऊसर भूमि न बिप्रहि दीजै। औनाहिं भूलि अनादर कीजै ॥ सुन्दर भूमिहिं देत सु जेजन। भूमि अनूपम पावत तेजन ॥ चंचला ॥ औरकी सुभूमि माहिं श्राद्धको किये सुजान। श्राद्धहोत व्यर्थ बुद्धिमानते कहैं महान ॥ भूमि मोललेय पिण्डदानको करैं सुजौन। हे सुनो

महीप उक्त पुण्यको लहैं सुतौन ॥ दोहा ॥ कौनहु बिघ्न न होत है तास पितर अतिहोत । बढ़तबंश तिहि पुण्यते सुनहु नृपति बुधिपोत ॥ पर्बतकी अरु बिपिनकी तीर्थ कूलकी पर्म । है पुहुमी अस्वामिका बुधबर कहत अभर्म ॥ सोरठा ॥ बुधबर कहत समर्थ याते इन पुहुमीनमें । होत श्राद्ध नाहिं ब्यर्थ महीमोल दीन्हेहु बिना ॥ रामगीती ॥ करतिहै सब अङ्गसों उपकार सुरभी पर्म । होति ऐसी पुण्यधामा सुनहु भूप सधर्म ॥ करति रक्षा सर्बकीहै सुरभिका अभिराम । कहतहैं श्रुतिमान बरद्विज महामेधाधाम ॥ तिन्हैं जेजन देत बिप्रहि बोलि सादरभूप । होत हैं परसन्न ताके पितर देव अनूप ॥ शूद्रको अरु नास्तीकहि दीजिये नहिंगाय । औ न दीजै बधनकाजै सुनहु हे नरराय ॥ देतजेजन लहत तेजन नरकमाहीं बास । कबहुं निकरैं नरकते नहिं कहतहैं बुधिरास ॥ बत्सबिनकी गायदीजै द्विजनको नहिं भूप । अंगहीना दुर्बला औ कहतप्रज्ञ अनूप ॥ औ न बंध्या रुजयुता गो दीजिये सुनदक्ष । कहतहैं अवगाहिकै बुधबुद्धि जिनकीस्वक्ष ॥ चरणादोहा ॥ भूमिदान अरु अन्नदान अरुगऊदान तिलदान । इनको कह्यो महातम तुमसों सर्बसुनहुमतिमान ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ सुन्योसर्ब हम आपुसों दाननको फल स्वक्ष । तिनमें पाणीदान फल कह्यो अधिक किमिदक्ष ॥ इच्छाअब यह सुननकी मो मनमें है तात । कहौआप अवगाहिकै बर बुधिधर अवदात ॥ भीष्मउबाच ॥ मधुभार ॥ पाणीयदान । तामें सुजान ॥ फल अधिक जौन । हम कहत तौन ॥ पज्झटी ॥ जलते सुअन्न उतपन्नहोत । जलबिन न होत कछु सुमतिपोत ॥ भोनीर तेहि उतपन्न चन्द । औषध अनेक तरु लता वृन्द ॥ सबहोत नीरहीते सुजान । है सर्बजीवको जलहिप्रान ॥ सबदान ते सु जलदानमाह । याते अधिक्य फल भूमिनाह ॥

दोहा ॥ चाहै जो ऐश्वर्य तौ नित्यकरै जलदान । नित्यकरत जलदानते दिवको लहतसुजान ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मेषट्षष्टितमोऽध्यायः६६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अर्द्ध चरणादोहा ॥ अन्नदान तिलदान औ दीपदान अभिराम । बसनदानको कहौ महातम सुनहुतात बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणादोहा ॥ यह प्रसंगके माहिं कहतहम एक इतिहास अनूप । यमको अरु द्विजबरको तामें है सम्बाद सुभूप ॥ जयकरी ॥ गंगा औ यमुनाके बीच । है बिप्रनको ग्राम निभीच ॥ पर्णशालिका ताकोनाम । यामुन गिरिके पास ललाम ॥ तामें बहुत सुबुधजनपर्म । एकसमयके माहिं सधर्म ॥ घोरदूत अपनो बुलवाय । तासोंबचन कह्यो यमराय ॥ अगस्त्य गोत्रज शरमीविप्र । जायल्याउ ताको तुमक्षिप्र ॥ शरमीहीको गोत्री पर्म । वैसोई गुणवान अभर्म ॥ जेते सुतशरमीके स्वक्ष । वाहूके हैं तेते दक्ष ॥ शरमीके गृह पासहितौन । रहत नित्यसो द्विज बुधिभौन ॥ सर्ब गुणनकी समताचाहि । ल्याइयो न भ्रमिकै तुम वाहि ॥ शरमीहीको ल्यावोजाय । पूजाहम करिहैं सुखपाय ॥ यमआज्ञालहिहोय सचैन । गयोदूत सो बिप्रहिलैन ॥ जिहिको मनाकियो यमराय । तौनहिंद्विजको गयो लवाय ॥ ताद्विजकी यमराय प्रवीन । सहित सु बिधिवत पूजा कीन ॥ फेरिकह्यो दूतहि बुलवाय। अबहीं इन्हैं देहु पहुँचाय ॥ तुमसों हम बुलवायोजाहि । बेगि लेयआवो तुमताहि ॥ सुनिये धर्मरायके बैन। बिप्रबोलतो भयो सचैन ॥ जौलौंहै मम बाकी आय । रहिहैं तौलौं यहां सचाय ॥ यमउवाच ॥ आयुर्बलको जो परमान । ताहि न हम जानत मतिमान ॥ तातेराखि सकतहम नाहिं । जावो अबहीं निज गृहमाहिं ॥ सुनहु बिप्र हमसों तुम जौन । बूझोतुमसों कहैं सुतौन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ पुण्यहोय कीन्हे ते जौन । कहो कृपाकरि हमकोतौन ॥ सब जानतहो तुम यम-

राज । कहिये करिकै कृपा दराज ॥ यमउवाच ॥ आभीर ॥ सुनहु बिप्र मतिमान । कीर्त्तिमान श्रुतिमान ॥ दानकी सु अभिराम । उत्तम जो बिधिमाम ॥ कहत तौन अवगाहि । दान तिलनको ताहि ॥ कीजै नित्य सचाय । सुनहु सुबुध द्विजराय ॥ किये तिलनको दान । इच्छा सर्ब महान ॥ सिद्धिहोतहै स्वक्ष । निश्चय जानहुदक्ष ॥ दोहा ॥ श्राद्धमाहिं तिलदानकी परमप्रशंसा होत । याते तिलदीजै द्विजहि सुनहु बिप्र बुधिपोत ॥ पूर्णिमा बैशाखकी यामें जे तिलदेत । स्वर्गलोकमें प्राप्त ह्वै तौन महत सुखलेत ॥ अरिल ॥ जौन जलाशयको खनवावत । तौन स्वर्ग में अति सुखपावत ॥ है अति उत्तम याको फलवर । जलहि देहुयाते नित बुधिधर ॥ भीष्मउवाच ॥ कहिकैयम चुपहोय रहे जब । लेयचल्यो यमदूत द्विजहितब ॥ बिप्रहि पहुँचायो गृह माहिंसु । आयोफेरि धर्मकेपाहिंसु॥आज्ञाफेरि धर्मकीलहिकरि। दूतजाय धर्मीको गहिकरि ॥ दोहा ॥ लेयगयो सो शीघ्रही धर्मरायके पास । धर्म्मराय ताको लखे मुदित भयो बुधिरास ॥ चरणाकुलक ॥ यम शर्मीकी पूजाकरिकै । कियोमंत्र कछु मोद सों भरिकै ॥ शासन जो वा द्विजधर्मीको । कीन्हों सोई द्विजशर्मी को ॥ फिरि सादर पठ्यै निज गेहै । संगदूतकरि सहित सनेहै ॥ आयगेह माहिं द्विजबरशर्मी । कीन्होजौन कह्यो यमधर्मी ॥ भीष्मउवाच ॥ जोजन करत दीपकेदानै । सोजन पुण्यहि लहत महानै ॥ तौनपुण्यसों पितरहितारै । कीरतिपरम महीमेंभारै॥ दीपदानते सबसुख लीजै । याते दीपदानको कीजै ॥ सोरठा ॥ रत्नदिये फलजौन होततौन हम कहतअब । सुनहुतात बुधिभौन धर्मधुरन्धर कीर्त्तिकर ॥ मल्लिका ॥ रत्नदानदेतजौन । पुण्य को महान तौन ॥ प्राप्तहोतहैं सुजान । कीर्त्तिको लहैं महान ॥ जाहिदीजिये सु रत्न । जौन बेंचिकै सुयत्न ॥ यज्ञको करै अनूप । लोभ छोड़िकै सुभूप ॥ अन्तगुरुतोमर ॥ जनबस्त्रदेत सुजौन

हैं । शुचि कीर्त्तिलेत सुतौन हैं ॥ रतते रहैं निज दारमें । नित चलतमार्ग सुढारमें ॥ शुचिबेश तिनके होतहैं । बहु करतपुण्य उदोतहैं ॥ सोरठा ॥ दानबस्त्रको भूप अति उत्तमहै कहत बुध । याते बसन अनूप दीजै दुर्बल द्विजनको ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिदानधर्मेसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ फेरिकहौ बिधिदानकी अतिउत्तम है जौन । अबहिं तृप्त हमना भये सुनहुतात बुधिभौन ॥ भीष्मउ-बाच ॥ गऊ भारती औ मही ये तीनिहुं अभिराम । देत तुल्य फलहैं कहत सुबुध सुनहु बुधिधाम ॥ रामगीती ॥ भारती जे देत शिष्यहि प्रेमसों जनजौन । गऊभूके दानको फल लहत हैं जन तौन ॥ तिमिहिं जेजन देत सुरभी प्रेमसों अभिराम । भारती भूदानको फल लहत तेहैंमाम ॥ उपजती शुचि भूमि-काको देतहै जनजौन । लहत सुरभी भारतीके दानको फल तौन ॥ सर्बभूतनकी सुमाता सुरभिकाहै भूप । करततिनकीजे प्रदक्षिण लहत वृद्धि अनूप ॥ गऊमण्डलमाहिं ह्वैकै जाइये नहिंतात । परशिये कबहूं न पदसों गऊको अवदात ॥ पूजिबे केयोग्य सुरभी नित्यहैं भूपाल । महत मंगल देतिहैं बहु हरत पाप बिशाल ॥ कष्ट प्रापति होय जेहिथलमाहिं गोको पर्म । जाइये नहिंलेय तिहिथल माहिं कहत सुधर्म ॥ लेय जात सुजौन सुरभी बक्रथलके माहिं । तृषालागे जहांसुरभी लहै जोजलनाहिं ॥ होयतौ जन तौनको अघप्राप्त अतिहि म-हान । सकुलताको हनत सुरभी कहतहैं मतिमान ॥ होतजा-सु पुरीषतेहै परमपावन तात । देवगृह अरु पितरगृह बुधकह-तहैं अवदात ॥ सुनहु याते और सुरभी समपवित्र न कोय । लगे जिनके चरणकी रजको न पावनहोय ॥ देतपरकी गऊ को जेबर्षलौं बरघास । करैं गोरसकी न कबहूं हियेमाहींआस ॥ सर्बकामद चारुब्रतको लहतहैंफलतौन । मिलतताको सुयश

अरु बरपुत्र बुधिको भौन ॥ मिटतसर्बअरिष्टहैं अरुमिलत स-
म्पतिपर्म । लहतदोष कुस्वप्नको नहिंकहत प्रज्ञअमर्म ॥ युधिष्ठि-
रउवाच ॥ कौन लक्षणकी सु सुरभी दीजिये हेतात । कहौ कैसे
बिप्रको गो दीजिये अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ बिप्रलोभी पातकी
को दीजिये नहिंगाय।देवकारजपितर कारज करै जौन सचाय॥
अरु महापापिष्टजो द्विज होय अघका चाय । ताहिऊ नहिं
दीजियेगो सुनहुहे नरराय ॥ होयबिप्र कुलीनताके होहिं सुत
बहु भूप। पितर कारज देवकारज करै नित्य अनूप ॥ ताहि
सादर बोलिदीजै सुरभिका अभिराम। दियेऐसे बिप्रकोगोल-
हत दिवमेंधाम ॥ दई गोके गव्यसों द्विजकरत यज्ञ सधर्म ।
लहत षष्ठम अंशदाता तासु फलमें पर्म ॥ करतजो उत्पन्न
अरुदे जीविकाको जौन । भीतते जोकरत रक्षा तौनसुनु बुधि
भौन ॥ होत येहैं पिता जगके माहँतीन सुजान । किये आज्ञा
भंग इनकी होतदोष महान ॥ कहैं सबसों बचन प्रिय अरु
सत्यबादी स्वक्ष । धर्मसे रत होयअरु श्रुतिमान अतिही दक्ष॥
सुनहु ऐसे बिप्रकोदे जीविका महिपाल । जीविका नहिं देयतौ
अघहोय प्रासबिशाल ॥ क्षुधासों अति होय पीड़ित बिप्र दक्ष
कुलीन । करै कुकरम जौन नृपके राज्यमाहिं प्रबीन ॥ तौननृप
को होत प्रापततासुपाप महान । कहतहैं अवगाहिकै बुध सुनहु
नृप मतिमान ॥ दिये सुरभी दानजेतो होतफल अभिराम ।
बिप्रको धन हरे तेतो होत पातकमाम ॥ सुनहु याते बिप्रको
धन हरैकबहुंन भूप। औ न दारा लखै कबहूं बिप्रकी सुअनूप॥
भीष्मउवाच ॥ बिप्रके धन हरणमाहीं प्रज्ञजनअवदात । कहतहैं
आख्यान नृगको सुनहुसो तुम तात ॥ बिप्रके धनहरणमें नृग
लहो दुःख बिशाल । सुनहुयाते बिप्रकोधन लीजियेन नृपाल॥
द्वारकाके माहिंहो यककूप अति गम्भीर । ढपोहो तृण तरुण
सों सो सुनहुभूपति धीर ॥ लगे कौतुकमाहिं यादव गये ताके

पास । तोरितरुतृण दूरिकीन्हें लगेते अति प्यास ॥ परोहोकृक-
लाश एक ता कूपमें सुनुभूप । महादीरघ देह ताकी घोर रूप
अनूप ॥ करतभे बहु यत्नताके काढ़िबेकोपर्म । काढ़ि पैनाहिं
सकेयादव थके सर्ब सधर्म ॥ पास यादवरायजूके गये यादव
सर्ब । कहतभे कृकलाशको वृत्तान्त हरिसोंसर्ब ॥ यादवाऊचुः ॥
सुनहु यादवरायजू अतिदीर्घ यक कृकलास । घोर रूपअनूप
कीन्हें कूपमें हैबास ॥ सर्ब कूपहि रोंकिराख्यो कढ़त काढ़ेनाहिं ।
बैनये सुनि कृष्ण आवतभये ताकेपाहिं ॥ कियो लखि उद्धार
ताको कृष्णपांय छुवाय । ताहि बूझतभये ऐसे कृष्ण त्रिभुवन
राय ॥ कहौतुम अवगाहि अपनो पूर्बको वृत्तान्त । बैनसुनिये
कृष्णके नृपभरो मोदनितान्त ॥ कहनलागो पूर्बको वृत्तान्त नृप
नृगपर्म ॥ नृगउवाच ॥ सुनहु हरि हमकियेहैं बहुयज्ञसहित सुध-
र्म ॥ कह्योइमि तब कृष्ण सुनिये बैननृगकेभूप । सुनहु नृग
शुभकर्मकर हौ धर्मधर सुअनूप ॥ कहौतुम किमिलही ऐसी
दृशा दुखदामाम । दईकोटिन द्विजनको तुम गो सवत्स ललाम
॥ पुण्यभोगत कहां सो तव महत हे नृगदक्ष । कहतभो तब
कृष्णजूसों नृगसुभूप प्रतक्ष ॥ अग्निहोत्री बिप्रहो इक महा
तेजसधाम । मिली ताकी छूटिगो मम गोनमें अभिराम ॥ तौ-
नहीं दिन कियोहौं संकल्प हम यदुराय । सहस सुरभी देनको
अति हर्ष हियमें छाय ॥ सहस सुरभिनमाहिं तौनहु सुरभिका
को ग्वाल । लेयआयो पास मेरे सुनहु कृष्ण कृपाल ॥ दई सुर-
भीद्विजन को ते सर्बसहित सनेह । गऊ लैलै समुद द्विज सब
गये अपनेगेह ॥ अग्निहोत्रीलखी बहुदिन माहिं ढूंढ़त गाय ।
दईही जिहि बिप्रको हम गाय तापै जाय ॥ कहतभो इमि गाय
तो यहहैहमारीबिप्र । लरतदोऊ भये आवत पास मेरेक्षिप्र ॥
कहतभेते बैनऐसे मोहिंहे मुदरूप । देत तुमहीं गऊको फिरि
लेत तुमहीं भूप ॥ दईही जिहि बिप्रको हम गायहे यदुराय ।

कह्यो तौन सुबिप्रसों हम जोरि कर गहिपाय ॥ लेहुतुम यह गऊ बदले सहस दश शुभगाय । बैनमेरे श्रवणकरिकै कह्यो द्विज इहिभाय ॥ जायगी नहिं दईमोसों गाय यहअभिराम । लगति मोको परमप्यारी देत दुग्ध ललाम ॥ जातभो निज धामको द्विज मोहिं इमिकहि बैन । कह्योहम तब अग्निहोत्री बिप्रसों मुदऐन ॥ लेहुतुम वह गऊ बदले सहसदश गोचारु । कहत हैं करजोरि तुमसों सुनहुबुद्धि अगारु ॥ कहतभो तब बिप्रमोसों बैनऐसेपर्म । ब्राह्मणउवाच ॥ लेतहमनहिं गऊ नृपकी सुनहुभूप अभर्म ॥ जातभो निज धामको सो मोहिंकहि इमि बैन । कालतौनहिं माहिंहै श्रीकृष्ण आनँद ऐन ॥ मृत्युके बश होयकै हमगये यमकेपास । कहतभे यम मोहिंऐसे पूजिसहित हुलास ॥ है न संख्या पुण्यकी तव सुनहुंनृग महिपाल । कियो तुम द्वैपाप सोऊ बिनाजान बिशाल ॥ दोहा ॥ करिहैंरक्षा द्विजनसों कहि इमि तुम नाहिं कीन । औ ब्राह्मणको धन हर्‌यो तुम नृगनृपति प्रवीन ॥ पज्झटी ॥ तुम पापकीन्ह ये द्वै बिशाल । अरु बहुत पुण्य कीन्हें नृपाल ॥ करिहौसुभोग तिनको सुजान । यहि माहिं आपु समझो न आन ॥ दोहा ॥ चाहो पूरब भोगिये पुण्यहि सुखदअनूप । चाहहुभोगौ पापको हे नृग सुनहु सुभूप ॥ तोमर ॥ यमके सुये सुनिबैन । हम कृष्णआनँद ऐन ॥ इमि कह्यो यमसोंपर्म । पहिले सुभोगि अधर्म ॥ हमभोगिहैं सुखदाय । फिरि पुण्यको सहचाय ॥ सुनिबैनये यमराज । इमिकह्यो हे महराज ॥ दोहा ॥ जाहुभोगिये पापको प्रथमहि हे नृगभूप । फेरिभोगियो पुण्यको सुखद महान अनूप ॥ सोरठा ॥ फेरिकह्यो इमिमोहिं भूमेंजबमैं गिरतभो । कृष्ण तारिहैंतोहिं जगदाधार सुमोदमय ॥ दोहा ॥ वर्षसहसमें होयगो यहतव पातकक्षीण । पुण्यलोकको प्राप्त तब ह्वैहो नृपति प्रवीण ॥ तबसों मैं कृकलासह्वै परोरह्यो यहकूप । सम्मृतिरही वहि जन्मकी मोको सर्व

अनूप ॥ परशपाय तवचरणको भो मेरोउद्धार। स्वर्गलोकको जातहौं मैं अबमोद अगार ॥ परशपाय यदुरायको पाय मोद कोपर्म। चढ़ि बिमानपै जातभो दिवको सुनृगसधर्म ॥ सोरठा ॥ तिहीसमयके माहिं कहतभये इमिबैनहरि। धन बिप्रनको नाहिं कबहुँ न हरिये सुनुनृपति ॥ दोहा ॥ दानदिये जैसा सुफल होत सुनहु महिपाल। द्रोहकियेद्विजसों कुफल तैसाहोत बिशाल ॥ इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेकृष्णनृगोपाख्यानेअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सुरभीदीन्हें जिहिफलहि होतप्राप्त जन पर्म। कहौताहि बिस्तारिकै हमसोंतात सधर्म ॥ फलसुरभी के दानको कह्यो आपु बहुबार। तृप्त पैन मैं अबहिंभो सुनहु सुबुद्धि अगार ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणादोहा ॥ यकइतिहास कहत हम यामें सुनु सो छोड़िप्रमाद। उद्दालक औ नाशकेतको तामें है सम्बाद ॥ चरणाकुलक ॥ नाशकेतसों ऐसीबानी। कहत भये उद्दालकज्ञानी ॥ करहु सुसेवा तातहमारी। करिहैं हम मखरचना भारी ॥ कहिइमि मखरचनामें लागे। उद्दालक ऋषि मुदसों पागे ॥ पूरणकै मख रचनानीकी। कीन्हीसिद्धिकामनाहीकी ॥ ऋषिबरजाय और थलमाहीं। लखिकै नाशकेतके पाहीं ॥ कह्यो बचन इमि हे सुनुराजन। काष्ठदर्भ अरुसुमन सुभाजन ॥ नदिकातीर भूलि हमआये। ल्यावोजाय शीघ्रताछाये॥ दोहा॥ नाशकेत ये बचनसुनि गये नदीकेकूल। तहांनहीं देखोकछू संशय भरे अतूल ॥ चरणाकुलक ॥ नाशकेत अति श्रमसोंछाये। पास उदालक ऋषिके आये ॥ कहतभये इमिबचन पितासों। छाय रहे अतिहीभै भासों ॥ बहिगे सबै नदीके माहीं। काष्ठादिक देखे हमनाहीं ॥ नाशकेतकी सुनि यहबानी। कै चिन्ता मन माहिं महानी ॥ इमि करिक्रोध कह्योऋषिराई। यमको अबहिं लखो तुमजाई ॥ नाशकेत यहबाणी सुनिकै। कह्यो जोरिकर शीशहि धुनिकै ॥ होहुप्रसन्न करहु क्रुधनाहीं। कहतहि यह

सुगिरो महिमाहीं ॥ सुतको मृतकदेखि हा कहिकै । उद्दालक शुकशिखिसों दहिकै ॥ दोहा ॥ गिरिगिरि भूमें कहतइमि हाय कहाहमकीन। जिमिजिमि सुतको लखतहैं होतदुःख अतिपीन॥ पुत्रशोकके माहिं ऋषि भो बिह्वल अतिभूप। बीतिगयो दिन कष्टदा आई निशा अनूप ॥ अरिल ॥ रोवत हायहाय ऋषि कहि कहि। नाशकेत तनहियमें गहिगहि ॥ तिही समयभो जीवत ऋषिसुत। सोवतजग्यो मनहुँ चेष्टायुत॥ जीवतसुत शुकजात भयो इमि। भानु उदयते जात तिमिरजिमि ॥ नाशकेतको हिय में ऋषिबर। लायकह्यो तुमहौ सुधर्मधर ॥ दोहा ॥ जीते तुम शुभ कर्मसों शुभ लोकनको तात। ताते तुमसों औरनहिं तुम से तुमहिं बिभात ॥ चरणाकुलक ॥ नाशकेत इमि कहतेभये। जोरिपाणि अतिआनँद च्वये ॥ तात सुआज्ञापाय तुम्हारी। हम अन्तककी पुरीनिहारी ॥ योजन सहसप्रमाण सुजाको। काहुहि मिलतथाह नहिंताको ॥ मोकोदेखि कह्यो यमराई। ल्यावहुआसन शुचिसुखदाई ॥ सो सुनिभृत्य सुआसन ल्यायो। कोमल परम प्रभासोंछायो ॥ अन्तककरिकै पूजा मेरी। सादरकीन्ही बातघनेरी ॥ तदनन्तर हम यमसों बोले। सब वृत्तान्त हियेकेखोले ॥ दोहा ॥ फेरिकह्यो यमरायसों हम इमितात अभर्म। कौन लोकके योग्यहम करु बिचार हे धर्म ॥ तोमर ॥ सुनि बैन ये यमराय। हमसों कह्यो यहिभाय ॥ तुम हौ न मृतकसुजान। बर धर्मवान महान ॥ तव तात होय सक्रुद्ध। तुमसों कह्यो इमिबुद्ध ॥ तुमजाहु यमकेभौन। किमि होय अनृत सुतौन ॥ दोहा॥ आये तुमतिहि शापते धामहमारेमाहिं। अब तुम मेरे बचनसों जाहु पिताके पाहिं ॥ चंचला ॥ जौन होय कामना सुचित्तमाहिं नाशकेत। तौन सर्ब हे कहौ सुनो सुबुद्धिके निकेत ॥ यों कह्यो सप्रेम होय धर्मराज तात मोहिं। बैन ये सुनेसुपर्म मैं कह्योसु ताहिजोहि ॥ दुःखसों नि-

वृत्तहोत है सुरावरो सुलोक। ताहि प्राप्तभो सु मैं सुनो सुधर्म धर्म ओक॥ पुण्यलोक देखिबे कि कामना भई महान। अद्य तौन तौन सिद्धि कीजिये सुधर्मवान॥ मौक्तिकदाम॥ सुने ममबैन बिमान मँगाय। चढ़ायसुतापर मोहिं सचाय॥ दिखावत भो सब लोक अमन्द। लखे तहँ मैं गृहचारु बिलन्द॥ शशीसम शुभ्र महाछबिमान। लगे तिनमें मणिखम्भमहान॥ सुहेमक-पाट लगे अतिचारु। रही मुकुतालर झूलिसुढारु॥ सरोवर स्वच्छ लसैं तिनपास। करैं तिनमें जलजंतु बिलास॥ रहे बहु फूलि सुकुंज अनूप। फिरैं तिनपै अलिभौंरि सुरूप॥ लसैंयहि भांति सुतौन अकूत। ग्रसे शशिको मनु हैं तमदूत॥ बहैं नदिका सुभरी जलस्वक्ष। लसैं तिनके चहुँओर सुवृक्ष॥ कितीपय की नदिका अभिराम। किती घृतकी सुबहैं छबिधाम॥ लखी हम भोजन बस्तु अपार। अनेक बिमान महान सुढार॥ लखे सब ये अति मोदहिपाय। थमैंहमपूंछतभे ऋषिराय॥पज्झटी॥ इनको सुभोग कहु कर्त्तकौन। सुनुधर्मराय बरधर्म भौन॥ सुनिकै सुबैन ममधर्मराय। इमि कह्यो सुनहु पितहेसचाय॥दोहा॥ बिधिवतपात्र बिचारिजे गऊदेत अभिराम। प्रीति सहित ते करत हैं इनको भोगललाम॥ रामगीती॥ शीलवान सुतपस्वी ब्रतवान अरु श्रुतिमान। बिप्र ऐसेपात्रहैं गोदानके मतिमान॥ शुद्धकै त्रयरात्रि ब्रतकै भूमिमाहीं शयन। चतुर्थ दिनते सु गो-रसपानकै बुधिअयन॥ बोलिकै श्रुतिमान बिप्रहि सहित आ-दरमाम। बत्ससह सह कांस्य दोहनि सुरभिका अभिराम॥ तीनि दिनलौं देत यकयक प्रेमसों जनजौन। महापुण्यहि होत ते जन प्राप्त हे बुधिभौन॥ गऊके अंगमाहिं जेते रोम होहिं सुजान। रहत ते ते वर्ष ते हैं स्वर्गमाहिं महान॥ तामिहिवृष भै देत जे हैं महाबीरजमान। धेनुप्रदके लोकको ते प्राप्त होत सुजान॥ नाचिकेतउबाच॥ कह्यो हम यमराजके ये बैन सुनिइमि

तात। कहौ बिन गोदान ये किमि लहैं लोक बिभात ॥ बचन मेरे श्रवण करिकै कहतभे यमराय। लहतजन गोदान बिनहू लोक ये सुखदाय ॥ यज्ञ बिनजे देत घृतकी गऊचारुबनाय। लहत ते जन नदी घृतकी रहत नित्यसचाय ॥ घृतबिनाजे देत हैं तिल धेनुको अभिराम। क्षीर सरितापायकै ते रहतमुदसों माम ॥ देत जे जल धेनुको तिल बिनापाये पर्म। कामदा ते लहत नदिका सुनहुतात सधर्म ॥ धर्मके येबचन सुनिमैं भयों मोदिततात। सुनहुतबसों जानतोहौं दानयहअवदात॥ दोहा॥ जौन शाप हमको दयो तुमही मैं करिक्रुद्ध। तौन अनुग्रहसों भयो बहुसुखदायक उद्ध ॥ श्रवणसुधा ॥ शापजौन देतमोहिं आपुके सुक्रुद्धे। तौन मैं बिलोकतो सु पुण्यलोक उद्धे ॥ गमक ॥ फेरि फेरि। हेरि हेरि ॥ धर्मराय। कैसचाय ॥ कह्यो येह। कै सनेह ॥ गऊदान। केसमान ॥ दानअन्य। हैंन धन्य ॥ आभीर ॥ तात हे तुम तात। गऊ देहु अवदात ॥ अहंकारको त्यागि। परमप्रेममें पागि ॥ सुरभी देत सुजौन। लहतलोक शुभतौन ॥ सुन्दरी ॥ गोरससों रस और नहींबर। ताहि दिये सुनु हे शुभ धीधर ॥ पावत हैं जनलोक सुपावन। भावतहैं लहिकै अति चावन ॥ दोहा ॥ हमको लोक दिखाय सब धर्मराय मतिमान। कह्यो सर्व गोदानको यहफलतात सुजान ॥ सुनिकै हमगोदानफल लखिशुभलोक बिलास। करिप्रणाम यमकोसुहम आये फिरितव पास ॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिदानधर्मेएकोनसप्ततितमोध्यायः॥ ६९ ॥

युधिष्ठिरउवाच॥ रामगीती ॥ कह्योफलगोदानको अरुमहातमअभिराम। बिनाजाने एकगौके हरणते अतिमाम ॥ लह्योदुख महिपाल नृगपरि कूपमाहिं गँभीर। ताहि तार्‍यो द्वारकामें कृपाकरि बलवीर ॥ सर्व हम सो सुन्यो हे मतिमान तात सुजान। जातहैं सुरभीद जौने लोक माहिं सुठान ॥ कहौ तौने लोकको वृत्तांत

हमसों सर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनहु यह परसंग में इतिहास एक अखर्ब ॥ शक्र बूझतभये इमि लोकेशसों हे भूप । स्वर्गबासी जौनजनहैं भरेतेज अनूप ॥ लखेहम गोलोकबासी तिन्हैंजीति सुजात । भूरि अपने तेजसों ते भरे मोद बिभात ॥ सोरठा ॥ कैसे हैं गोलोक तिनमेंहैं बर कौनगुण । सुनहु द्रुहिण मुदओक जन तिनको किमि लहत हैं ॥ करत जौन गोदान तेतिनमें कबलौं रहत । मोमनमाहिं महान इच्छाहै यह सुननकी ॥ जयकरी ॥ दीन्हें बहु सुरभी अभिराम । कहुफल कैसो होत ललाम ॥ अल्पदान सुरभिन को जौन । ताको फलकैसो बुधिभौन ॥ चरणाकुलक ॥ बहु दाता लघुदाता दोऊ । लघुदाता बहुदाता सोऊ ॥ किहिबिधि होत समान बखानो । भो मोहिय संदेहमहानो ॥ औसुरभीकिहि बिधिसों दीजै । कौन बिशेष दक्षिणाकीजै ॥ रामगीती ॥ पितामहउवाच ॥ सुनहुहेसुरराज यहतुम प्रश्नपूछो जौन । याहि पूछैयोग्य तुमहीं हौसु हे बुधिभौन ॥ बहुत बिधिके लोकहैं नहिं लखत तिनको आप । लखतहैंहमतिन्हैं हे सुनु शक्रबुद्धिकलाप ॥ लखतिहैं औ कामिनी जे पतिब्रता अभिराम । लहततिनको बिप्रहेबहु किये कर्मललाम ॥ जरा औसन्ताप अन्तक रमै तिनमें नाहिं । रहत नित्य समोदहैं जे बसत तिनकेमाहिं ॥ ब्याधिको अरु पापको नहिं तहां नेकहुलेश । करतिइच्छा गऊ जो सो सिद्धिहोत सु-रेश ॥ सबैसुन्दर बस्तुहैं गोलोकमें सुरराज । और ऐसो लोक है नहिंभरो मोददराज ॥ शांतिजिनकी प्रकृतिहै अरुदयावान महान । रहतरत गुरुभक्तिमें जे परम प्रज्ञावान ॥ अहंकारहि छोड़िकै बर करतहैं नितधर्म । करतसेवा मातुकी औ पिताकी जे पर्म ॥ करत निन्दा द्विजनकी नहिं कियेहू अपराध । करत पूजन गऊको जे भरे प्रीति अगाध ॥ कहैंकोमल बचनजे अरु सत्य बोलतबैन । देवपूजन करतजे नितदेत दीनहिचैन । जातते गोलोकको हैं भरे आनंदभूरि । रमत जे परनारिको ते रहतहैं

नितदूरि ॥ मित्रद्रोही छली औ गुरुभक्तहैं नहिंजौन । धर्मद्रोही ब्रह्मघाती महाअघके भौन ॥ लहतहैं गोलोकको ते कबहुं नहिं अमरेश । सुनहु अबहम कहत हैं गोदानको फलवेश ॥ कियो जो उत्पन्न धन है कर्मकरि शुभउद्ध । तौन धनसों लेय सुरभी प्रीति करिकै उद्ध ॥ बोलि सादर बिप्रको जे देत हैं सुरराज । लहतहैं गोलोकमें बसि तौन मोद दराज ॥ द्यूतमें धन जीति कै जे लेय सुरभीदेत । अयुत बत्सर तौनजन गोलोकको सुख लेत ॥ पाय जो द्विज औरसों सो देत सुमनसों शुद्ध । रहतसो गोलोकमेंहै सदा मुदसों उद्ध ॥ सदा जेजन सत्यबोलत नित्य रहत अगर्ब । बिप्र औ गुरुको करैं जे क्षमा दोष अखर्ब ॥ लहत तौनहुं मोदबसि गोलोकमें अभिराम । मनहुं सों जे क-रत गोके द्रोहका नहिंमाम ॥ देत जे सुरभीनको हैं घास को-मल स्वक्ष । धर्ममें अरु सत्यमाहीं रहत तनपर दक्ष ॥ सहस गोके दानको फल मिलत ताहि सधर्म । होहिं क्षत्रियमाहिं जो ये सगुण अतिही पर्म ॥ बिप्रहीके सदृश तौ फल लहैं स्वच्छ अमन्द । बैश्यमें जो होहिंतो फल लहैं धर्म सुरेन्द ॥ शूद्रमाहीं होहिं जो ये सुगुण स्वच्छ सुरेश । जानु निश्चयलहैं तौ वह भाग चतुरथवेश ॥ दोहा ॥ सुरभीको लखि मुदितह्वै जे जन करत प्रणाम । यज्ञकिये को फल मिलत तिनको अति अभि-राम ॥ सोरठा ॥ नम्र परम बलवान वृषभ देत जे द्विजनको । तिनको मिलत सुजान फलदश सुरभीदानको ॥ कान्ता ॥ बनके माह । हे सुरनाह ॥ बर बुधिभौन । गोकी जौन ॥ रक्षाकरत । मुदसों भरत ॥ इच्छासबै । तासु अखर्ब ॥ सिद्धिसुहोत । हे बुधिपोत ॥

इतिश्रीदानधर्मेगोलोकप्रश्नेपितामहशक्रसम्बादेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इन्द्रउवाच ॥ श्रवणसुधा ॥ जानिकै सुहर्त गाय बेचते सुजे हैं । सुनहु द्रुहिण कौन गतिहि प्राप्तहोत तेहैं ॥ पितामहउवाच ॥ मल्लिका ॥

भक्ष्य काज हरतजौन । नरकमाहिं परत तौन ॥ रोमगाय के जितेक । होहिं बर्षलौं तितेक ॥ होतहैं उधारनाहिं । मानुसत्य चित्तमाहिं ॥दोहा॥ बेचनको अरुदानको हरत जौनजन गाय । तिनहूंकी एहीदशा होति सुनहु सुरराय ॥ सम्मत जेजन देत हैं गऊ बधनको पर्म । अरु जे भक्षत हनत हैं पापी अतिहि बिधर्म ॥ रोम होहिंगो अंगमें तितने वर्ष हजार । नरक माहिं परिसहत ते बाधा महाअपार ॥ आभीर ॥ हरिकै सुरभी जौन । देत बिप्रको तौन ॥ परतनरकके माह । निश्चय हे सुरनाह ॥ दोहा ॥ गोप्रदानमें दक्षिणा दीजै सुबरण स्वक्ष । सुबरण है पावन परम निश्चय जानु प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ कह्यो बिधि सुरनाथसों यहधर्म अति अवदात । कह्यो श्रीसुरनाथ नृप दशरत्थसों हे तात ॥ कह्यो दशरथ रामसों यह धर्मअति अभिराम । रामकरिकै कृपा लक्ष्मण सों कह्यो बुधिधाम ॥ कह्यो लक्ष्मण बिपिनमें बर ऋषिनसों यह धर्म । भये धारण करत याको सुऋषि ते सब पर्म ॥ ऋषिनसों सुनि और भूपन कियो धारणभूप । मोहिं ममगुरु कह्यो करिकै कृपा परम अनूप ॥ यज्ञमें द्विजसभा में गोदानमें द्विजजौन । पढ़त अक्षय स्वर्गको सो लहत हैं बुधिभौन ॥ दोहा ॥ मघवासों ब्रह्माकह्यो यहसुधर्मअवदात । जेयहिमेंरतरहतते शशिसेस्वच्छबिभात ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेपितामहशक्रसम्बादेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१

युधिष्ठिरउबाच ॥ सोरठा ॥ सुनहुतात बुधिधाम धर्म प्रबक्ता हौ तुमहिं । संशयहै यककाम दूरिकरहुसो कैकृपा ॥ रामगीती ॥ होत का फल किये ब्रतअरु नेमकीन्हेंपर्म । कहाफल अध्ययनकीन्हें होत तात सधर्म ॥ सर्ब इन्द्री जीतिबेको कहाफलहै स्वक्ष । वेदधारण कियेते फल होत कौन प्रतक्ष ॥ कौन बिद्यादानकीन्हें होत फलअवदात । जे प्रतिग्रह लेत नहिं ते लहतका फल तात ॥ कहाफल श्रुतिदानमें अरु शूरता में कौन । कहाफलहै

शौचमाहीं सुनहुबर बुधिभौन ॥ ब्रह्मचारयमाहिं काफल होत है अभिराम । कियेसेवा पिताकी अरु मातकी सुललाम ॥ होत का फल गुरूसेवा कियेते सहप्रेम । दया कीन्हें होतका फल सुनहु तात सक्षेम ॥ किये परदुख दूरिकाफल होतहै हे तात । कहो तुम अवगाहि हमसों सर्बफल अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ करत बिधिवत जौन ब्रतते लहत उत्तम लोक । नेमको फलमिलत है परतक्षही बुधिओक ॥ कियेते अध्ययनबिद्या सिद्धिहोत सुअर्थ । मिलत है परलोकमाहीं मोदभूरि समर्थ ॥ सर्ब इन्द्री जीतिबे ते होतहै फलजौन । सुनहुसो बिस्तार करिकै कहत हमबुधिभौन ॥ जौन जीतै सर्बइन्द्री लहतसुख सर्बत्र । जाइबेकी होय इच्छा जातहैं ते तत्र ॥ होति तिनकी कामनाहै सर्ब सिद्धि सुजान । प्राप्तह्वैकै स्वर्गमाहीं लहतमोद महान ॥ जीतिबो इन्द्रीनको जो कहतहैं दमताहि । दानते सो श्रेष्ठ है अति कहत बुध अवगाहि ॥ देत दानहि करत दानी कबहुं मनमें क्रुद्ध । करत कबहुं न क्रुद्धहैं दमवान मनमें शुद्ध ॥ सुनहुयाते श्रेष्ठहै दमदान ते अवदात । लहतहै दमवान दमते लोक उत्तमतात ॥ ब्रह्मलोकै होत प्रापत जौनबिद्यादेत । जोप्रशंसा करत गुरुकी लहत स्वर्गसचेत ॥ करतजे अध्ययन क्षत्रिय देत दान महान । युद्धमाहीं करतरक्षा औरकी मतिमान ॥ प्राप्तह्वै ते स्वर्ग माहीं लहतमोद बिलन्द । रहतरत निजकर्म में जे बैश्य सुनहु नरिन्द ॥ देतहैं अरु दानबिधिसों लहत ते दिवलोक । शूद्रहू जो रहैरत निज धर्म में बुधिओक ॥ लहै तौ सुरलोक माहीं परमपावनधाम । शूर बहुपरकार केहैं सुनहुनृप अभिराम ॥ यज्ञमें हैं शूरकेते युद्धमें हैंपर्म । सत्यमें हैं शूरकेते दानमाहिंसधर्म ॥ कितेइन्द्रिय जीतिबेमें शूरहैं अवदात । योगमें हैं शूरकेते सांख्यमें हैं तात ॥ किते अटवी बासमाहीं शूरहैं अभिराम । शान्तिमें हैं शूर केते सुनहुनृप बुधिधाम ॥ क्षमामें हैं शूर

केते वासगृहके माह । किते कोमल बचनमाहीं शूर हे नरनाह ॥ बेदके अध्ययनमें हैं शूरकेतेपर्म । गुरूसेवा माहिं केतेशूर तात सधर्म ॥ कितेसेवा पिताकीमें शूरहैं महिपाल । किते माताकी सु सेवा माहिं शूरबिशाल ॥ अतिथि पूजन माहिं केते शूरहैं अवदात । किते विद्यादान में हैं शूर हे सुनुतात ॥ लहत ये सब शूरहैं नृप महत उत्तम लोक । होतिइनकी कीर्त्ति जगमें रहत नित्य अशोक ॥ दोहा ॥ जन फलउत्तम लहत हैं सत्यबचन ते पर्म । और धर्मनहिं सत्य सम भूपति सुनहु अभर्म ॥ बेदधरण तीरथ करण हैं नहिं सत्यसमान । सत्यधर्म सोसत्यहै जानहुसत्यसुजान ॥ अश्वमेध सहसन नहीं सत्य बचन सम तात । सत्यकहतजे जन नृपतितेजन अतिहिबिभात ॥ भुजंगप्रयात ॥ तपै सत्यसों भानुशोभाप्रकाशै । बहै सत्य सों बायु औ अग्निभाशै ॥ मही सर्व संसारको भारभारै । फणीसत्य सों भूरि भूको सम्हारै ॥ दोहा ॥ पितरहोत परसन्न अरु निर्जर सर्वसुजान । तिमिहीं होत प्रसन्न हैं बिप्र सुविद्यामान ॥ रहत निरत निति सत्य में सर्व सुमुनि अवदात । ताते तिनमें होतहै महत पराक्रम तात ॥ सोरठा ॥ सत्यवान जन जौन तौन लहत मुदस्वर्ग में । ताते हे बुधिभौन सत्य कबहुँ नहिं त्यागिये ॥ मल्लिका ॥ नीतिमान भूपजौन । स्वर्गलोक माहिं तौन ॥ प्राप्त होतहैं सुजान । मोदको लहैं महान ॥ उक्ता ॥ ब्रह्मचर्य्य को जौन । फलसो सुनु बुधिभौन ॥ अरिल ॥ ब्रह्मचर्य्य को जौन निबाहत । ताकोसब बहुभांति सराहत ॥ तेहि अप्राप्त कछूनहिं जानहु । ब्रह्मलोकको लहत सुमानहु ॥ दोहा ॥ ब्रह्मचर्य्य सब पापको दूरिकरतहै भूप । तेज बढ़ावत अंग में परमा करत अनूप ॥

इतिश्रीदानधर्मेसत्यमाहात्म्यवर्णनोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

दोहा ॥ जो बिधि सुरभी दानकी अतिउत्तम है भूप । मो मन

ताको सुननकी इच्छाभई अनूप॥ जिहिको कीन्हे लहतहैं जन अतिउत्तमलोक। कहो आपु अवगाहिकै ताहि सुनहु बुधिओक ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनहु तात गोदानते उत्तम और न धर्म्म। बिधिवत जे गो देत ते कुलको तारत पर्म्म ॥ बिधिवर सुरभी दान की मान्धाता भूपाल। बूझत भे बागीशसों करि सनमान बिशाल॥ जयकरी ॥ मान्धाताके सुनिकै बैन। कहत भये बागीश सचैन ॥ बिप्रनको करिकै सतकार। देयनिमंत्रण बुद्धिअगार॥ आपु गऊशाला में जाय। पढ़ैमंत्र यह शुभ सुखदाय ॥ सुरभी मोमाता अभिराम। पिता वृषभ मुददायक माम ॥ देहि हमैं सुरलोक अमन्द। औ यहि लोकमाहिं सुखवृन्द ॥ जपि यह मंत्र करै तहँबास। मौनहोयकै भरोहुलास ॥ जिहि बिधि रहैं भूमिमें गाय। तिमिहीं आपहु रहै सचाय॥ दोहा ॥ दूजे दिन गोदानके समयमाहिं हे भूप। बोलैकोमलता भरे बचन समोद अनूप ॥ गऊदान में प्रथमदिन कोहै ब्रत यह भूप। याको करिकै प्रातही दीजै गऊअनूप ॥रामगीती॥ फेरि सुरभीकी प्रशंसा करै ऐसीरीति। देति तिहिको स्वर्गहौ जो करत तुममें प्रीति॥ यज्ञकी हौ तुमहिं साधन पापहरणी पर्म। सुरभि तुमको पूजिकै जन कौन होत सधर्म ॥ देतिहौ ऐश्वर्य्य तुमहीं परम आनँद उद्द। करति चञ्चल चित्तको करुणामयी तुम शुद्ध॥ करहुमाता तुमहमारी नित्यरक्षापर्म। हरहु मेरे पापको अरु करहु मोहिं सधर्म ॥ धेनुको जो लेय सो द्विज कहै ऐसे बैन। सुरभि है तुममोहिं औ दाताहि करहु सचैन ॥ सर्वपूरण कामना तुम कीजिये अभिराम। भरहुदाताके सग्रहमें आपुआनँद माम॥ दोहा ॥ मोलदेत जो धेनुको सादर द्विजहि बुलाय। धेनुदानको फललहत तेऊ जन नरराय॥ बस्त्रधेनु जे देत अरु हेमधेनु अभिराम। तौनहुजन गोदानके फलको लहत ललाम॥अरिल॥ बिधिसोंदेत एक जो सुरभिय। होतिकामना सबसिधि तिहि

किय ॥ बिधिसों बहुत धेनुदें जे जन। तिनके फलहि सकैं कहि के जन ॥ दोहा ॥ जे जन ब्रतको करतनहिं औ दुर्बुद्धो जौन। परम गुप्तयह धर्म जो कहियेतिन्हैं कबौंन ॥ महादीपक ॥ सर्वठौर यह सुधर्म कहिय कबहुँनाहीं। पापमानहैं मनुष्य बहुत लोक माहीं ॥ धेनुदान सुनेतिन्हैं लागत ना नीको। जानतहैं याहि भूरि क्लेशकार हीको ॥ रामगीती ॥ बृहस्पति के बचन सुनिये प्रेम युत कैपर्म। देय सुरभीदान बिधिसों कै सुस्वच्छ सधर्म ॥ पुण्य लोकनको सु जे जे गये नृप मतिमान। कहत तिनके नाम हैं हम सुनहु तात सुजान ॥ उशीनर औ बिश्वगश्व सु भूप नृप धर्मज्ञ। भगीरथ औ यौवनाश्वक मान्धाता प्रज्ञ ॥ भूरिद्युम्न पुरूरवा मुचुकुन्द सोमक भूप। चक्रवर्त्ती भरत औ नृप रामचन्द्र अनूप ॥ औ दिलीप महीप बर धर्मज्ञप्रज्ञ महान। गये सब दिवलोकको ये सविधिकै गोदान ॥ सुनहु ताते नृपयुधिष्ठिर तुमहुँ करिकै हेम। बृहस्पतिके बचन धारण करि सु सबिधि सनेम ॥ बोलि सादर द्विजनको तुम करहु सुरभीदान ॥ बैशम्पायन उबाच ॥ बैन सुनिये पितामहके युधिष्ठिर मतिमान ॥ करत भो गोदान बिधिसों नेमगहिकै पर्म। महाकीरति भईताते भये आपु अभर्म ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेगोदानमाहात्म्यंनामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ चरणाकुलक ॥ भूप युधिष्ठिर आनँदपागे। बैठि पितामह जूके आगे ॥ जोरिपाणि बिनती बहुकरिकै। कहत भये पुनिइमि रतिधरिकै ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ धेनुदानको सर्बगुण कहो आपु पुनितात। अबहिंतृप्त हमनाभये सुनहुबीर अवदात ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिरके बचनसुनिये भीषमभूप। कहत भये गोदानके फल को परमअनूप ॥ भीष्मउबाच ॥ चरणाकुलक ॥ शीलवती तरुणीगुण पूरी। अरुबर दुग्धवती अतिरूरी ॥ सब दोषनते रहित दयाला। रूपवती

बलवती बिशाला ॥ दीन्हेंऐसी सुरभी बिप्रहि । पापसर्ब कटि जात सुक्षिप्रहि ॥ सब सरितनमें ज्यों सुरसरिता । अतिउत्तम पापनकी हरिता ॥ तिमि कपिलासब सुरभिनमाहीं । भूपसुन्यों हम बुधजन पाहीं ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सब सुरभिनके दानते कपिलाको जो दान । सो किमि उत्तमहै कहौ करिकै कृपामहान ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगमें पूर्बहम सुन्यों बुधनसों जौन । सो तुमसों हम कहतहैं सुनहुतात बुधिभौन ॥ रामगीती ॥ दक्षको इमिकह्यो ब्रह्मा स्वच्छबोलि सुबैन । प्रजाको उत्पन्नकरिये सुनहुदक्ष सचैन ॥ बैनसुनि लोकेशके ये दक्षकरि सुबिचार । वृत्तिपूर्बहिं प्रजाकाजै भयो करतसुढार ॥ अमृत आश्रित रहत जैसे देवता हेतात । रहति है तिमि वृत्तिआश्रित प्रजासबअवदात ॥ वृत्ति प्रथमहिं बिरचिकै बर प्रजापति अभिराम । फेरि बिरची प्रजाको बहु भरे आनँदमाम ॥ प्रजा इच्छावृत्ति की करि हियेमाहिं महान । दक्षको आह्वान कीन्हो सुनहु भूप सुजान ॥ प्रजाको तब भयो प्रापित श्रीप्रजापति आय । प्रजालखिकै प्रजापतिको भई परमसचाय ॥ वृत्तिदीवे प्रजाको बर प्रजापति मतिमान । भये पीवत अमृतको सुनु तातपरम सुजान ॥ तृप्तभे अति अमृत पीकै प्रजापति धर्म्मज्ञ । अमृतकी शुचि सुरभिलागी कढ़न मुखते प्रज्ञ ॥ सुरभिके सँगकढ़ी मुखते एक सुरभीपर्म । दक्ष तिहिको भये देखत भरे हर्ष सधर्म ॥ करी तिहि उत्पन्न कपिला किती धेनुललाम । लगींबर्षन दुग्धको ते सर्ब अति अभिराम ॥ बहनलागो दुग्ध ताते भये फेन अनूप । होत जैसे नदिनमाहीं लहरि परमसुभूप ॥ दोहा ॥ बत्सनके मुखते गिरो दुग्धफेन अभिराम । परो शंभुके शीशपै तौन सुनहु बुधिधाम ॥ सोरठा ॥ करिकै क्रोधमहान तब ललाटके नेत्रसों । देखतभे ईशान सह बत्सन कपिलानको ॥ दोहा ॥ तिहि लोचनके तेजसों कपिलनको रँगपर्म । विवरणताकोप्राप्त

भो भूपति सुनहु सधर्म ॥ शरणभई तब सोमके सुरभी कपिला सर्ब । ताते सब कपिलानको भो निजबर्ण अखर्ब ॥ जयकरी ॥ यह वृत्तांत जानिकैदक्ष । करि बिचार मनमाहीं स्वक्ष ॥ शीघ्र जाय शंकरकेपास । कहत भये इमिसहित हुलास ॥ दुग्धहोत उच्छिष्टकबौन । बत्सनके पीये मुदभौन ॥ ताते क्रोध न करहु अखर्ब । करौदया कपिलनपै सर्ब ॥ कपिला अपनी सन्तति चारु । भरिहैं लोकनमाहिं सुढारु ॥ ताते लोकनमाहिं अनंद । बढ़िहै महासुनहु निर्द्वंद ॥ इनको जो ऐश्वर्यमहान । चाहैंगेसो सबईशान ॥ यहकहि वृषभदयो अभिराम । दक्षदक्षता करिकै माम ॥ भये प्रसन्नपायसो सर्ब । कियकपिलनपै कृपाअखर्ब ॥ दोहा ॥ धारण कीन्हों वृषभको ध्वजामाहिं अवदात । औबाहन अपनो कियो शङ्कर हे सुनुतात ॥ चरणादोहा ॥ याते वृषभध्वज औ पशुपति भयो शंभुको नाम । सब देवन दुहुँ नामको कियो ख्यात बुधिधाम ॥ दोहा ॥ प्रथम भई उत्पन्न हैं कपिला यहि बिधितात । याते उत्तम हैं महा धेनुनमें अवदात ॥ यही हेतु ते श्रेष्ठ है इनको दानसुजान । सर्ब कामना देतिहैं कपिलाधेनुमहान ॥ धेनुनकी उत्पत्तिको यह बिधानजो पर्म । पढ़त सुनत शुचिहोयँजे तिनके कटतअधर्म ॥ सम्पति सन्तति मिलति है रहत निरोगितगात । औ आयुर्बल बढ़तिहै परमापरम बिभात ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ रामगीती ॥ पितामहके बचन सुनिकै युधिष्ठिर महिपाल । वृषभ औ कपिलानको भे दानदेत बिशाल ॥ दई सुरभी और कती हर्षसहित महान । यथोचितदै दक्षिणा करिद्विजनको सनमान ॥

इतिश्रीशान्तिपर्बणिदानधर्मेगोदानप्रशंसाबर्णनेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ॥

भीष्मउबाच ॥ आभीर ॥ सुनु सधर्म नरनाह । एकसमयकेमाह ॥ बरभूपति सौदास । अतिहीभरे हुलास ॥ ऋषि बशिष्ठसोंपर्म । पव्रतभये सधर्म ॥ सौदासउबाच ॥ चंचला ॥ तीनहुँ सुलोकमाहिं श्रेष्ठ

है कहाअनूप । ताहिनेमसोंकिये सुपुण्यहोय ज्ञानरूप ॥ कैकृपा कहो सुआपु मोहिंहेबशिष्ठदक्ष । पूछिबेसुयोग्य और आपुसों न हैप्रतक्ष॥मधुभार॥ सुनिबैनयेह । ऋषि वृद्धिगेह ॥ गोस्तव सुस्वक्ष । भेकहतदक्ष॥रामगीती॥लक्ष्मीको मूलहैंगो महामंगल धाम। यज्ञसाधन औ महाधन मोदकारणि माम॥ पापसागर पारकरणी धेनुहैं अभिराम । परेतिनके चरणकीरज होत देहललाम॥ धेनुही हैं बषट्स्वाहा मंत्र परमअमंद । धेनुहीसों लहतहैं सुर वृन्दमोदबिलन्द ॥ होम कीबे प्रात सायङ्काल हौम्यअनूप । देतिहैं गो ऋषिनको नित परमपुण्य स्वरूप ॥ दोहा ॥ कहैंकहां लौं धेनुके गुणको है नहिंअन्त । याते को समताकरै धेनुन की क्षितिकन्त ॥ पज्झली ॥ जिहिके सुहोहिं दशधेनु भूप।द्विजको सुदेयसो यकअनूप ॥ जिहिके सुहोहिं शतधेनु पर्म । दशदेय द्विजनको सो अभर्म ॥ जिहिके सुहोहिं यक सहसगाय । शतएक तौन दे ह्वै सचाय ॥ यह पर्मधर्महै हे नरेश । अवगाहि कहत बरबुधसुबेश ॥ रामगीती ॥ अग्निहोत्र सुकरै जाके होहिं शतगो पर्म । होहिंजाके सहसगो सो करै यज्ञअभर्म ॥ करै जो नहिं होहिं तौ बरपूजनीय न भूप । कहतहैं अवगाहिकै बुधशास्त्र देखिअनूप ॥ तोमर ॥ करिधेनु को हियध्यान । जपिकै सुनाम सुजान ॥ करिये सुसैन सचैन । सुनु भूपबुद्धि सुऐन ॥ अरु प्रातहू उठिपर्म । जपि धेनुनाम सधर्म ॥ धरिये सुभूमहँ पाय । बरधर्मयह नरराय॥ नितप्रात सायंकाल । करियेप्रणाम बिशाल ॥दोहा॥ गोकेमूत्र पुरीषको करिय उलंघननाहिं। पावन ह्वैकैजाइये गोशालाकेमाहिं ॥ अरिल॥ बिप्रनको घृतदीजे पावन। औ हुनिये शिखिमाहिं सचावन॥ भूपतिसुनहु धर्मयहभावन। याहिकिये बपुहोत सुहावन ॥ दोहा ॥ गोकपिलाके दानको देत सबिधिहैं जौन। सबदाननको फललहत रहतसमुदहैं तौन ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेगोदानमाहात्म्येपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५॥

तोमर॥ शतसहसबर्षमहान। हमकीन्ह तपधरिज्ञान॥ तबहूं मिली नहिंमाम। शुचिश्रेष्ठता अभिराम॥ सुरभीनते सोपर्म। हमकोमिलोसु सुधर्म॥ यहितेसु उत्तमजानि। अतिप्रीतिहिय में आनि॥ नितधेनुकीअभिराम। हमकरतसेवामाम॥ रामगीती॥ कहतिहैं यहिभांति सुरभी सुनहु नृपबुधिभौन। दक्षिणा जेसर्व तिनमें है हमारी जौन॥ परम उत्तम दक्षिणाहै करत जे जन जाहि। परमपरमा लहतते जन देतअघवनदाहि॥ कियेस्नानपुरीषसों ममहोय जन सुपावित्र। भूमिमें इमि लसतजैसे व्योम माहिं सवित्र॥ करत मम सुपुरीषसों हैं धाम पावनपर्म्म। देवता अरु मनुजजेते सुमतिमान अभर्म्म॥ देतहमको जौनजन ते लहतउत्तमलोक। महत आनँद पायकरिकै रहत नित्य अशोक॥ चित्त थिरिकै कियो सुरभिन महातप अभिराम। प्राप्तभे तब तिन्हैं ब्रह्मा अन्त तपके माम॥ कह्यो इमि सुरभीन सों बिधिजौन ईछितहोय। मांगिये बरदान तुमको देहुंगो मैं सोय॥ बैनसुनि लोकेशके ये सुरभिका मुदपाय। भईयह बरदान मांगति भईं परम सचाय॥ करैं पावन लोक को अरु लोकको उद्धार। देहु यहबरदान हमको सुनहु द्रुहिण उदार॥ बैनये सुरभीनकेसुनि द्रुहिण हर्षितहोय। कह्यो ऐसे दयो यहबरदान तुमकोजोय॥ परमपावनलोक करि तुमकरौगी उद्धार। लेय यह बरदान सुरभी उठींमुदित अपार॥ द्रुहिण के बरदानते अतिभईं पावनधेनु। श्रेष्ठसबही कहत तिनको तिन्हैं पूजतकेनु॥ प्रातउठि जे नामगोको लेय करत प्रणाम। पुष्टिको ते होत प्रापत कटत रोग सुछाम॥ महासूधी दुग्धवन्ती बस्त्र सहिताचारु। तुल्यवत्सा धेनुकपिला देतजौन सुढारु॥ ब्रह्मलोकै माहिं ते जन पूज्यहोय बिभात। होतहै अवदात शोभा तौन नित सरसात॥ तुल्यवत्सा अरुणबर्णा दुग्धवन्ती पर्म्म। शीलवन्ती बस्त्रसहिता देतजौन सधर्म्म॥

भासकरके लोकसेते होतपूज्य सुजान । होत तिनके अंगमाहीं परमतेज महान ॥ तुल्यवत्सा शीलवन्ती बस्त्रवन्ती स्वक्ष । कर्बुरा शुचिधेनुको जे देतहैं सुनु दक्ष ॥ पाय ते जन चन्द्रमाके लोकको अभिराम । होतहैं अतिपूज्य परमा लहतपरम ललाम ॥ तुल्यवत्सा श्वेतवर्णा दुग्धवन्ती माम । शीलवन्ती बस्त्रसहिता दियेगो छबिधाम ॥ होय सुरपति लोकमाहीं पूजनीय अमन्द । प्रशंसासुर करतजाकी प्रभा लहत बिलन्द ॥ तुल्यवत्सा दुग्धवतिका शीलवतिका पर्म । बस्त्रसहिता धेनु कृष्णा देतजौनसधर्म ॥ होतयमके लोकमाहीं प्राप्तहैं जनतौन । देखिशास्त्रहि कहतहैं बुध सुनहु नृपबुधिभौन ॥ धेनुजल के फेणऐसी श्वेतअति अभिराम । शीलवतिका दुग्धवतिका बस्त्र सहिता माम ॥ तुल्यबत्सा धेनुको सहकांश्य दोहन चारु । देतजे तेबरुणलोकहि प्राप्तहोत सुढारु ॥ बायुसों जो उड़तहै रजबर्णताकेहोय । तुल्यबत्सा हर्षहीमें होयताकोजोय ॥ बस्त्रचारु उढ़ायकै तिहिधेनुको अभिराम । देतजेजन लहत मारुत लोकमें हैंधाम ॥ हेमबर्णा तुल्यबत्सा शीलयुक्तापर्म । बस्त्रचारु उढ़ायकै तिहिधेनुको सुअभर्म ॥ देतजेजन लहत तेजन बरुणलोक सुजान । बरुणकीसी अंगमाहीं होतिभास महान ॥ होयकुन्दनबर्णजाको बनोअति अभिराम । होहिंजाके नैनपीरे चारुसुखमाधाम ॥ तुल्यबत्सा शीलयुक्ता दुग्धवतिका पर्म । बस्त्रचारुउढ़ायकै तिहिधेनुको सुअभर्म ॥ कांश्यदोहन सहित सादर बिप्रको जेदेत । लोकमाहिं कुबेरकेते परम मोदहिलेत ॥ मांसको जो धूमतैसो बर्ण जाकोहोय । सबत्सा अरु दुग्ध जामें परै सब गुणजोय ॥ बस्त्रयुत तिहिधेनुको करिदेत हैं जनजौन । लोकमाहीं पितरके जनहोत प्रापततौन ॥ होय कंमलचारु जाको रंगपीरोपर्म । तुल्यबत्सा दुग्धबतिका होय सुनहु सधर्म ॥ अलंकृतयुत कांश्यदोहन सहितऐसीगाय ।

दिये बिश्वेदेवको शुचि लहत लोक सचाय ॥ गौरबर्णा दुग्धवतिका शील युक्तास्वक्ष। तुल्य बत्सा ताहि करिकै वस्त्र युक्ता दक्ष॥ देत जेजन कांश्यदोहन सहितअति अभिराम। प्राप्तह्वै बसुलोकको ते लहतहैं मुदमाम॥ पाण्डु कम्बलकी सु आभा होतिजाकेमाहिं। तुल्यबत्सा होयजामें नेकहूक्रुधनाहिं॥ सबिधि ऐसी धेनु दीन्हें बिप्रको अवदात। साध्य सुरकेलोकको ते प्राप्तहोय बिभात॥ पीठि जाकी होयदृढ़ अरु होहिं अँगसब शुद्ध। होय कम्बलचारु जाको शीलमय बलउद्ध॥ करि सुभूषित रत्नसों तिहि वृषभको अभिराम। देत जेते मरुत लोकहि लहतहैं बुधिधाम॥ होय भारीअंग जाको चारु बैस नबीन। लहत जन गन्धर्व लोकहि दियेताहि प्रबीन॥ होय जिहिवर वृषभको अति चारुकम्बल स्वक्ष। रत्नसों करि ताहि भूषित देत जेजन दक्ष॥ प्रजापति के लोकमें ते प्राप्तहोत सुजान। बिगतह्वैकै शोकसों ते लहत मोद महान॥ रहतहैं गोदानमें रतजौनजन अवदात। भानु से सुबिमानपै चढ़ि स्वर्गको ते जात॥ करतिताहि प्रसन्नहैं नित देवतनकी दार। चाहि लोचन कोरसों हँसि करैंभाव अपार॥ धेनुके अँगमाहिं जेतेहोहिं रोम सुवेश। स्वर्ग माहीं रहत तेतेबर्ष सुनहु नरेश॥ दोहा॥ दिवते च्युत जब होतहैं भूमिमाहिं तबआय। बिप्र बर्णमें जन्म लै निशिदिन रहत सचाय॥ किये धेनुके दानको जन ऐसो फललेत। धेनु दानसों और नहिं भूपति सुनहु सचेत॥

इतिश्रीदानधर्मेगोदानमाहात्म्यबर्णनोनामषट्सप्ततितमोऽध्यायः॥७६॥

बशिष्ठउबाच॥ दोहा॥ सुरभी अति करिकैकृपा रहोधाम मम माहिं। मैंनिशिदिन सुरभीन के रहौंचावसों पाहिं॥ अरिल॥ सुरभी चारौ ओररहौमम। बसैं सर्बदा सुरभिनमें हम॥ सायंकाल जपै यहि मंत्रहि। तिमिहिं प्रात उठिहोय स्वतंत्रहि॥ निशिदिन माहिं किये ज अघआति। ते सब छूटिजात मानो

सति ॥ एक सहस्त्रदेत गो जो जन। बासि मुदलहत स्वर्गमें सोजन॥ तोमर ॥ यकलक्ष सुरभी जौन। जनदेतहैं बुधिभौन॥ द्विजबोलि सादर पर्म। बिधिसहितहोय अभर्म॥ बरद्वद्विलहियहलोक। मुदपाय रहत अशोक॥ दशपुस्ति तारि सुतौन। पुनि करत दिवको गौन॥ यह दानके समपर्म। नहिं और दान सधर्म॥ दोहा॥ सुरभी ऐसीसुरभिही यहि जगमाहिं बिभात। श्रेष्ठभयो नहिं होयगो सुरभीसम अवदात॥ माताहैं सब जगतकी सबते उत्तमपर्म। कीन्हेंतिनकी बन्दना जनगण होत सशर्म॥ धेनुदान फलको कह्यों तुमसों हमयकदेश। श्रेष्ठ और गोदान सम है नहिंसुनहु नरेश॥ भीष्मउवाच॥ मधुभार॥ ऋषि के सुबैन। नृप सुमति ऐन॥ सुनिकै सचाय। द्विजबर बुलाय॥ सुरभी सुढार। गुणकी अगार॥ भो सबिधि देत। कैकै सचेत॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्म्मेगोप्रशंसायांसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ श्रेष्ठ कौनहै जगतमें अरु अति पावन कौन। कहौमोहिं अवगाहिकै सुनहुतात बुधिभौन॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा॥ तिहुंलोकनके माहिं सुरभी पावन परम है। सुरभी की समनाहिं और कोय तिहुँलोकमें॥ रामगीती॥ नहुषभूप ययाति अरु बर मान्धाता भूप। निरन्तर गोदानकरिकै सहित प्रेम अनूप॥ सुरन्हहूको परम दुर्लभ जौनलोक सुठान। प्राप्तभे तिहिलोकको ते भरेमोद महान॥ धेनुदान प्रसंगमें हम और यक इतिहास। कहतहैं सो सुनहुनृप तुमलाय मनबुधिरास॥ भये बूझत पितासों शुक सुमतिमान महान। कौनसो है श्रेष्ठ मखसब मखनमाहिं सुजान॥ औ कहौ किहि कर्मसों जनलहत उत्तमथान। स्वर्गको किहि कर्मसों सुरकरत भोग सुठान॥ कहां थितिहै यज्ञकीकहु मोहिंतात प्रतक्ष। कहा उत्तम देवतनको बस्तुहै अतिस्वक्ष॥ अतिपबित्र सुकहाहै सो कहौ हमको तात। व्यास सुनियै बचनसुतके कहतभे हर्षात॥ व्यासउवाच॥ रहीं पूरब

श्रृंगबिन गो सुनहु सुत मतिमान । कामनाते श्रृंगकी करिहिये माहिं महान ॥ चरणाकुलक ॥ करतिभई आराधन बिधिको । गहि कै नेम कामना सिधिको ॥ तब प्रसन्नह्वै ब्रह्मा आये । श्रृंग दिये तिनको मनभाये ॥ सुरभी श्रृंगपायकै नीके । मुदितभई अतिमाहीं हीके ॥ बिधिसों बरलहि होय सश्रृंगा । भई पवित्रा अति शुभअंगा ॥ विधिवत तिन्हैं देतहैं जे जन । परम होतहैं सुकृती तेजन ॥ तोमर ॥ जहँ भूमि मणिमय चारु । बनबाग पर्म सुढारु ॥ बर जलाशय अभिराम । मणिकी सिढ़ीं सुललाम ॥ तिनमाहिं कंजसुठान । शुचिरहे फूलि सुजान । बहु कल्पतरु अवदात । अतिफूलिफलि सुबिभात ॥ गिरि हेमके सुअमन्द । मणिश्रृंगवान बिलन्द ॥ सरिता अनूप अनेक । बहु बहति जहँ सविवेक ॥ यहि भांतिके जे लोक । तिनमाहिं होय अशोक ॥ सुरभीद जन अवदात । नित रमतहैं सुनु तात ॥ आभीर ॥ सुरभी को जन जौन । सेवतहैं बुधिभौन ॥ तिनपै होय दयाल । सुख-दा धेनु बिशाल ॥ दुर्लभबर अभिराम । देतीहैं बुधिधाम ॥ म-नहूसों गो माहिं । करियद्रोहको नाहिं ॥ रामगीती ॥ पिये त्रयदिन सुरभिकाको उष्णमूत्र सुढार । उष्णपयकोपिये त्रयदिन सुनहु बुद्धि अगार ॥ उष्णघृतको पिये त्रयदिन औ सुत्रयदिन बायु । परम ब्रत यह कहतहैं अवगाहिकै बुधरायु ॥ किये यह ब्रत भो-गतेहैं स्वर्गको सुरसर्ब । परम पावनहै सुब्रत यह सुखद स्वच्छ अखर्ब ॥ कढ़त गोमयमाहिं जेयव तासु भोज्य बनाय । खातजेजन सर्ब तिनके महत अघनशिजाय ॥ लहे दानव वृन्दसों सबदेव हारिमहान । कियो यहब्रत नेमगहिकै सुनहु तात सुजान ॥ लई तिहिते दनुजगणसों फेरिजीति बिलंद । दिवश्रीकोभये प्रापत ह्वये भूरिअनंद ॥ जयकरी ॥ करि सु आचमन निर्मलहोय । परम हर्षको हीमेंभोय ॥ गऊवृन्दके माहिं सुजान । जपैगोमती मंत्र सुठान ॥ ब्राह्मण प्रज्ञावान अमंद । ह्वैकै निर्मल परम अदंद ॥

धेनुमाहिं अरु पावकपाहिं। अरु बरबिप्र सभाकेमाहिं॥ मख सम मंत्रगोमतीस्वक्ष। शिष्यनको सु पढ़ावै दक्ष॥ तीनरात्रि बृतकरिकै पर्म। जपै गोमतीमंत्र सधर्म॥ लहै अपुत्री पुत्रहि चारु। औ धनको निर्द्धनी अपारु॥ नारीपाय चारुभरतार। तिनहीं लहैं अनंद सुढार॥ मानवलहैं कामनासर्ब। करैंजौन हियमाहिं अखर्ब॥ सेवनते तुष्टितह्वै गाय। देतिकामना सर्ब सचाय॥ यहतुम निश्चय जानहुतात। गोसम श्रेष्ठ न और बिभात॥ सुनिशुक ये सुपिताकेबैन। सुरभी पूजन लगेसचैन॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेगोमाहात्म्येअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

युधिष्ठिरउवाच॥ रामगीती॥ कियोधेनु पुरीषको लक्ष्मी सुसेवन पर्म। सुनत यहहम सुनु पितामह सुमतिवान अभर्म॥ होतहै यहिमाहिं संशय करहुसो तुम दूरि। आपुसों नहिं और कोई हरणसंशयभूरि॥ भीष्मउवाच॥ कहतहौं इतिहास यक सो सुनहु छोड़ि प्रमाद। लक्षमी अरु गऊको तामाहिं है सम्बाद॥ चारु बपुधै रमागोधन माहिंकीन प्रवेश। भई सुरभी चकित ताको देखिरूप सुवेश॥ गौरुवाच॥ कौनहै तू देविआई कहां ते भूमाहिं। भो हमारेहिये अचरज रूपतेरोचाहिं॥ करतिहैं हमपरम इच्छा जानिबेकी तोहि। जायगीतू कहां हमको कहौ सत्यहि जोहि॥ लक्ष्मीरुवाच॥ गमक॥ लोकमाहिं। औरनाहिं॥ मोसमानि। रूपमानि॥ रमानाम। मो सुआम॥ नोदरूप। हौंअनूप॥ रामगीती॥ युक्त मोसों देव हैं ते नित्य मोदहिलेत। युक्तदानव वृन्दनाहिं तेभये नष्ट अचेत॥ बायु इन्द्र उपेन्द्र और बियुक्त मोसोंपर्म। सिद्धिको ते लहतहैं नितसुनहु सुरभिसधर्म॥ नष्टतेई होतजिनमें करतिमैं न प्रवेश। अर्थधर्म सुकाम मोसों सिद्ध होत सुवेश॥ हैप्रभाव हमार यहनिज सुनहु सुरभीसर्ब। बसतजिनमें मैंसुतिनमें बसतमोदअखर्ब॥ दोहा॥ इच्छा तुममें बसनकी मैंहौं करतिमहान। देहौं मैंतुम सबनको शोभा महासुठान॥ गौरुवाच॥ जयकरी॥ क-

बहुं थिरति तू कबहूंनाहिं। अति चंचलताहै तो माहिं॥ एक-
हि तजाति एक पै जाति। ऐसी तो सुबाणिसरसाति॥ याते
चाहति तोकोनाहिं। जाहु जहां आवै मनमाहिं॥ रूपवतीहम
हैं सब देखु। काकारज है तोसों लेखु॥ श्रीरुवाच॥ यहतुमकहा
कहति हौ सर्ब। ह्वैकै प्रज्ञावती अखर्ब॥ कहिबे योग्य नहीं
ये बैन। क्यों इनसों मोहिं करति अचैन॥ चरणाकुलक॥ काहेग्र-
हण करति नहिं मेरो। परमदुर्लभा हौं मैं हेरो॥ सुरअरुअसुर
उरगगन्धर्बा। राक्षस और पिशाच अखर्बा॥ अतिही महत
उग्र तपकरिकै। सेवत मोहिं प्रेमबहु धरिकै॥ तीनहुँलोक च-
राचरमाहीं। मैं हौं परिभव योग्यानाहीं॥ अरिल॥ जौनजात
काहूपै सादर। आपुहि सो अति लहत निरादर॥ लोकमाहिं
यहबात बखानिय। सो हमसत्य आजुही जानिय॥ गौरुवाच॥
काव्य॥ सुनहु देबि हमकरत अनादर तेरोनाहीं। जानत तेरी
चंचलताअतिहीके माहीं॥ बरजतियाते तोहिं न आवहुपास
हमारे। बरजे ते अपमान करूं हम नाहिं निहारे॥ बहुत
बारतालाप किये लागत नीको नाहि। जहँमनआवै तहांजाहु
हठ राख्यो क्योंगहि॥ श्रीरुवाच॥ सुनहु सुरभि सब करिहौ जौं-
नहिं मेरेआदर। ह्वैहै तौ सब लोकनमें ममभूरि अनादर॥
अरिल॥ तुम सब होहु प्रसन्न कृपाकरि। शरणागत रक्षकपण
हियधरि॥ हौं शरण्य शरणागतकी तुम। गह्यो शरण तुम्ह-
रो अब हैं हम॥ मधुभार॥ सुनु सुरभिसर्ब। गहिरति अखर्ब॥
रक्षाहमार। कीजै सुढार॥ पज्झटी॥ कल्याणरूप तुम सुरभि
सर्ब। अरु मोदकारिणी हौ अखर्ब॥ तुमसों सुनित्य लीबे सु-
मान। इच्छासु करति हमहैं महान॥ चरणाकुलक॥ बसब अर्द्ध
अँग माहिंतुम्हारे। जीमें इच्छा भई हमारे॥ तुम्हरे सब अं-
गनकेमाहीं। एकहु कुत्सित जान्योनाहीं॥ आज्ञादेहु सु जिहि
अँगमाहीं। बसिबे की हम बसैं तहांहीं॥ कमलाकी यहबाणी

सुनिकै । सर्वा सुरभीहीमें गुनिकै ॥ कहतभई इमिश्रीसोंबानी । अतिही करुणा रससों सानी ॥ अर्द्ध चरणादोहा ॥ करिहैं हम सनमान तव निश्चय करु हियमाहिं । पावनमूत्र पुरीषतुम्हारो यामें संशयनाहिं ॥ तोमर ॥ तिहिमाहिं तू सुप्रवेश । करि हे सुदेवि सुवेश ॥ श्रीरुबाच ॥ तुम्हरी कृपा शुचिपाय । हम भईं परमसचाय । हमसों कह्योतुम जौन । करिहैंसु अद्यहितौन ॥ सुरभीन सों इमिबैन । कहिकै रमा मुदऐन ॥ दोहा ॥ सब सुरभिनके देखतै कमला अन्तर्द्धान । भई तहांहीं सुनहुनृप प्रज्ञावान महान ॥ कह्यो महातम बर्णिकै गो पुरीषकोजौन । फेरिमहातम कहत हैं सुरभिनको सुनुतौन ॥

इतिश्रीमहाभारतेदानधर्मेगोमयमाहात्म्येएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ सबिधिगऊजे देतहैं सादर बिप्रबुलाय । तिनको नित्यहि यज्ञ है सुनहुप्रज्ञ नरराय ॥ जयकरी ॥ दधिघृत बिना होत नहिं यज्ञ । सुनहु युधिष्ठिर भूपतिप्रज्ञ ॥ याते यज्ञ मूल तू जानि । सुरभिहि और न हिय अनुमानि ॥ सेवत इन्हैं पुष्टिके काज । अरु दुखशांति अर्थ नरराज ॥ सुरभिनकेदधि घृत अभिराम । पाप प्रमोचन हैं बुधिधाम ॥ यह लोकहु परलोकहुमाहिं । श्रेष्ठ गऊसम कोऊनाहिं ॥ परमतेज हैं तिनमें उद्ध । सुनहुभूप जानत बरबुद्ध ॥ दोहा ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अबाद । ब्रह्माको अरु इन्द्रकोतामें है सम्बाद ॥ रामगीती ॥ पराजय में दैत्यगणकी शक्र अरु सुरसर्ब । उरगऔ गन्धर्व किन्नर असुर तिमिहिं अखर्ब ॥ गरुड़नारद और ऋषिवर प्रजा मुदिता पर्म । काल कौनहु माहिं येसब सुनहुतात अभर्म ॥ रहे पूजत पितामहको भरे हर्षअपारु । रहेगावतराग हाहा औसु हूहूचारु ॥ करत हौतहँ प्राप्तमारुत फूल परमअनूप । ऋतुनचारु सुगंधको बगरायरह्यो भूप ॥ चतुर्बिधि जहँ रहे बाजा बजत अतिअभिराम । रही नाचति अप्सरा रंभादि

गायललाम॥ तिहि समयमें भये बूझत द्रुहिणको सुरराय॥ सुरराजउवाच॥ हेपितामह हहोकौनेहेतसों सुखदाय॥ देवतनकेलोकपै गोलोकहै अभिराम। जानिबे यह भईमेरे हियेइच्छामाम॥ ब्रह्मचर्यसु कियोकी इनकियोहै तपभूरि। सुरनऊपर बासकरिकै रहीं सुखसोंपूरि॥ अंतगुरुतोमर॥ सुनि बैनये सुररायके। अतिही सु संशय भायके॥ यहिभांति बिधि कहतेभये। सुरराजको मतिसों रये॥ दोहा॥ नित्य अनादर तुमकियो सुरभिनको सुरराय। याते इनको महातम जान्योनाहीं जाय॥ सुरभिनको परभाव अरु परम महातम जौन। सो मैं तुमसों कहतहौं सुनहु लायमन तौन॥ जयकरी॥ गोके पुत्रनसों अभिराम। कृषी करतहैं जगजनमाम॥ ताते विविध बीज उत्पन्न। होत औ सुजगमें बहु अन्न॥ तेहिते प्रजा रहति मुदछाय। निश्चय जानहु हे सुरराय॥ नितहि मुनिनको करति निबाह। तिमिहि प्रजाको हे सुरनाह॥ याते बसिकै धेनु बिभात। स्वर्गलोक ऊपर अवदात॥ अमरन पर बसिबे को जौन। सुरभिनको कारणहै तौन॥ वर्णिकह्यो तुमको हमसर्ब। हेसुरपति सुखमान अखर्ब॥ जौन अर्थको गोभू माह। आईतौन सुनहु नरनाह॥ पूर्बभयो वृत्तांत सु एक। कहत तुम्हैं सो हम सविवेक॥ रामगीती॥ करतहौं सुरराय रक्षा लोककी अभिराम। आयकै बलि दैत्यपति तहँ युद्ध रचिकै माम॥ जीति रण में अमरपतिको छीनलीनोराज। अदितिके हियमाहिंतासों भयो दुःख दराज॥ लसी कश्यप को सु ऐसे कहनसों दुखछाय। हायमोसों सुतनको दुख सह्यो नाहींजाय॥ अदितिके सुनि बचन कश्यप कहे ऐसे बैन। करुअराधन विष्णु प्रभुको चित्त लाय सचैन॥ बचन कश्यपके सुने ये अदिति मुदसों छाय। करनलागी महत तपको चित्त थिरकैलाय॥ अदितिकी बर तपस्याते ह्वै प्रसन्न अनूप। बिष्णुआये गर्भमाहीं अदिति के

मुद्रूप ॥ अदितिको तप देखि सुरभी हर्ष हियमें छाय । क-
रनलागी महत तपको चित्त थिरकैलाय ॥ शिखरपै कैलास
गिरिके आयकरिकैपर्म । एकपदसों होयठाढ़ी करि सुचित्त अ-
भर्म ॥ सहस ग्यारह बर्षकीन्हों महत तप अभिराम । तेजसों
बहुरयो ताको भयो तन अतिछाम ॥ सुनहुताके महततपसों
देवऋषि अरु सर्प । गयेताके पासमेरे साथहोय अदर्प ॥ गये
ताके पास मोदित कियो पूजन तास । ता अनन्तर ताहि पूं-
छत भये हम सहुलास ॥ सुरभि कहुकिहि अर्थयह तप कियो
घोर महान । देखि तवतप भये हम परसन्न अतिहि सुठान ॥
मांगु तू बर अबहिं बाञ्छित सुरभि सुनु तपधाम ॥ सुरभीउबाच ॥
कृपाजोहै रावरी सो परम बर अभिराम ॥ जानती नाहिं तव
कृपासम और हम बरदान ॥ ब्रह्मोबाच ॥ कह्यो हम इमि सुरभि
का के बैनसुनि मतिमान ॥ कामनासों रहित तेरी तपस्या सों
पर्म । भये अतिहि प्रसन्नहैं हम कहत तोहिं अभर्म ॥ देहिंगे
अमरत्व ताते तोहिं बर अभिराम । बसोगी तुम लोकतीनहुं
उपरिसुरभि ललाम ॥ परमधन्या तव सुकन्या बसैंगी भू माहिं ।
नशैंगे सब पाप जनके गये तिनके पाहिं ॥ सुरनके अरु देव-
तनके भोगजेहैं सर्ब । प्राप्ततोको होहिंगेते सुनहुदेवि अखर्ब ॥
सुनहु हे सुरराज सुरभी लोक अति अभिराम । जातिहै क-
बहूं न तेहां मृत्युबर बलधाम ॥ जराऔ संताप तेहां कहूंनाहिं
दिखात । तासु महिमा सर्ब लोकन माहिंहै विख्यात ॥ परम
दिव्य अरण्यहैं जहँ अशुभको नहिंलेश । प्रशंसा नहिंजात
ताकी कहींसुनहु सुरेश ॥ ब्रह्मचर्य्य सुवर्त्तसों अरु सत्य सों
अभिराम । महततपसों दानसों अरु पुण्यसों सुललाम ॥ तीर्थ
सेवन किये ते अरु चारु कीन्हें कर्म । होतहै गोलोक प्रापत
सुनहुशक्र सशर्म ॥ अनादर सुरभीनको कबहूंन करु सुरराय ।
करहु आदर सर्बदाहै गऊ अतिसुखदाय ॥ तोमर ॥ हमसों सु-

पूछोजौन। सबकह्यो तुमसों तौन॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिबैन बिधि के पर्म। सुरराव होय अभर्म॥ सुरभीनको सनमान। करिकै सुनित्य महान॥ बिधि सहित पूजनकीन। सुनु पण्डुनन्द प्रवीन॥ सुरभीनको अवदात। तहँ महातम सुनुतात॥ सब पापमोचन पर्म। अतिहै पवित्र सधर्म॥ दोहा॥ तजि प्रमाद यहि को पढ़त श्राद्धमाहिं जनजौन। तृप्तरहत ताके पितर नित्यसुनहु बुधिभौन॥ जेजे इच्छाकरतहैं गोके भक्त सुजान। सिद्धि होततेहैंसुनहु हेभूपतिमतिमान॥ गोसेवातेलहतहैंसुत अर्थी सुतस्वक्ष। कन्याअर्थी लहतहैं कन्याहै नृपदक्ष॥ धन अर्थी धन लहत हैं धर्म सु अर्थी धर्म। बिद्याअर्थी लहत हैं बिद्या उत्तमपर्म॥ आनँद अर्थी लहतहैं आनँदको अवदात। दुर्लभ गोकेभक्तको कछूनहींहै तात॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेगोदानप्रशंसावर्णनेअशीतितमोऽध्यायः ८०॥

युधिष्ठिरउवाच॥ रामगीती॥ कह्योविधि गोदान करिबो नृपनको सु विशेश। सुन्यो तुमसों तौनहम सब सबिधि सुनहुनरेश॥ नृपनको नहिंहोति बहुधा प्राप्तशुभगति पर्म। होतपावन भूमि गोको कियेदान सधर्म॥ सत्यहै सो कह्यो इमिहीं भूपनृग अवदात। औ कह्योहै परम ऋषिवर नाशकेत सुतात॥ जयकरी॥ सब यज्ञनके माहींतात। भूमिहेम सुरभी अवदात॥ होत दक्षिणा कहत सुजान। तिनकेमाहिं सुनहु मतिमान॥ सुनत सु हेम दक्षिणा श्रेष्ठ। सो किमिकहिये आपु यथेष्ठ॥ कौनबस्तुहै सुवरण भूप। भो किहिविधि उत्पन्न अनूप॥ कौन देवताको है तात। कियेदान ताको अवदात॥ मिलत कहाफलहै अभिराम। अरुकिमि उत्तमहै यहमाम॥ हेमदानकी अतिहिमहान। करतप्रशंसाहै मतिमान॥ गो भूते यहपावन पर्म। कौनहेतु सों भयो सधर्म॥ मखकेमाहिं दक्षिणातासु। किमि प्रशस्तहै कहु बुधिरासु॥ भीष्मउवाच॥ याहि जानिबेको जो हेत। है विस्तरित

महीप सचेत ॥ सुवरणकी उतपतिहै जौन। अरु मोकोभो अ-
नुभवलौन ॥ तुम्हैं कहतहौं मैं नरराय। सुनहु चित्तथिर करिकै
लाय ॥ अरिल ॥ पिताहमारे शान्तभये जब। गोहरद्वार श्राद्धकीबे
तब॥ तहांजायकीन्हों आरम्भहि। श्राद्धकर्मको तजिकैदम्भहि॥
तब सुरसरिता मात हमारिय। करतीभई सहायसुढारिय ॥ त-
दनन्तर हम हर्षितह्वैकरि। अतिहि शान्तिता हियरेमेंधरि ॥
आदरकरिकै बहुतसु ऋषिवर। श्राद्धमाहिं बुलवाय सुमतिधर॥
जलदानादि कार्य जो हैवर। कियोतासु आरम्भ सुमतिधर ॥
करिसमाप्त हम पूरबकर्महिं। हियरेधारि श्राद्धके धर्महिं ॥ लागे
पिण्डदानदीबेजब । तहाँ एकआश्चर्य भयोतब ॥ भूषणसों
भूषित अतिसुंदर। सुनुनृप पिता हमारेकोकर ॥ निकसतभयो
सुदर्भ भेदिकरि। ताहि देखि हम विस्मयको धरि ॥ ह्वै अनि-
मेष जानिकै अद्भुत। बहुत बेरलौंचाहि रहे सुत ॥ तदनन्तर
हमकरिकै चिन्तन। संज्ञा सहितकियो अपनोमन ॥ दीजै पिण्ड
सु पितर हस्तमाहिं। यहबिधि है बरवेद बिहितनाहिं ॥ पिण्ड-
दान दीजै कुशऊपर। वेदबिहित यहशुचि बिधिहै वर॥ चरणा-
कुलक ॥ यह बिचारको हीमें धरिकै। पितु करको सु अनादर क-
रिकै॥ पिण्डदेत भो कुशकेमाहीं। पितुकर देखिपर्‌यो तब नाहीं॥
दोहा ॥ तदनन्तर मोहिं स्वप्नमें मो पितु परेसुदेखि । कहतभये
ऐसेबचन धर्मसु मेरोलेखि ॥ सुनहुतात तवज्ञानसों मैं प्रसन्न
भो पर्म। शास्त्रप्रमाणहि मानिबो तौनश्रेष्ठ है धर्म ॥ रामगीती ॥
धर्मको अरु बेदको अरु शास्त्रको अभिराम। पितामह अरु
अरु बृहस्पतिको दक्षकोसुललाम ॥ पितरको अरु ऋषिनको
परमानराख्यो तात। सुनहु यातेमो हियेमें प्रेमतव सरसात ॥
रहो ऐसो ज्ञानतेरे हियेमाहिं सदाहिं। क्रिया लखिकै श्राद्धकी
सुखभयो मो हियमाहिं ॥ देतहौं उपदेश तोको एकमैं हेतात।
मिलैगो उपदेशसोंतिहि तोहिंफल अवदात ॥ दानमाहीं गऊ

के अरु भूमिके अभिराम । देहुसुवरण सुनहु सुत तुम महत मेधाधाम ॥ प्रेमसोंगहि नेमकीन्हें हेमकोशुचिदान । सर्वपावन होहिंगेसम पितामह मतिमान ॥ तोमर ॥ जनजौन सुवरणदेत । विधिसों सुहोय सचेत ॥ दशपुस्ति तारततौन । सुनु तातवर बुधिभौन ॥दोहा॥ तदनन्तर मैं जागिकै विस्मितहोय सुजान । सुवरण दानहि करतभो मतिसों सविधि महान ॥ यहि प्रसंग में कहतहौं और एक इतिहास । अतिपावन प्राचीन है सुनहु तौन बुधिरास ॥ पज्झटी ॥ ऋषि परशु एक इसबार । कीन्ही नि क्षत्रिय भू अपार ॥ बलसों अखर्व सब भूमि जीति हय मेधकीन्ह गहिकै सुरीति ॥ दोहा ॥ अश्वमेधके सुफलसों रहित पापसोंपर्म्म । होतभयो जमदग्निसुत भूमिप सुनो सधर्म्म ॥ तदनन्तरवर ऋषिनको अरु देवनको माम । पूछतभो जमदग्निसुत यहि विधिसों बुधिधाम ॥ उग्रकर्म जे नरनके तिनमें पावनकौन । कहौमोहिं अवगाहिकै सर्वआपु बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ परशुरामके बैन सुनिकै सर्व महानऋषि । सुनहुतात बुधिऐन कहतभये ऐसे बचन ॥ आभीर ॥ बिप्रनको सतकार । कर्म्मन माहिं सुढार ॥ है अति पावन कर्म्म । निश्चय जानु अभर्म ॥ कर्मन माहीं माम । कर्मजौन अभिराम ॥ ते पुनि पूछोराम । बिप्रनसों बुधिधाम ॥ दोहा ॥ परशुराम ये ऋषिन्हके सुनिकै बचन सुढार । ऋषिअगस्त्य सु वशिष्ठ अरु काश्यपको सु उदार ॥ पूछत भो ऐसेबचन कोमल कहिकैपर्म । जनपावन किमिहोतहै कहिये आपुअभर्म ॥ करी अनुग्रह आपु जो मोपै परममहान । तौ कहिये किमिहोहुँगो मैं पावन मतिमान ॥ त्रयपञ्चक ॥ भूमिगऊअरुवित्तकोदीन्हेंदानललाम । पापी पावनहोतहैं सुनते हैंहमराम ॥ औरहु पावनहोनको सुनतपरम हमहेत । सो तुमसो हमकहतहैं सुनियेहोय सचेत ॥ रामगीती ॥ दिव्य अद्भुतरूप पावकसुवनअति अभिराम । लोकमेंविख्यात ताको

नाम सुवरण आम ॥ सिद्धिको तुम प्राप्तकैहौ किये ताकोदान । और याके दानसम नहिं दान है मतिमान ॥ अग्नि ते उत्पन्न सुवरण भयोहै हे राम । महायामें तेजहै यह हेतुते अभिराम ॥ देवता अरु मनुज राक्षस उरग औ गन्धर्व । शुद्ध ह्वैके याहि धारत औ पिशाच अखर्व ॥ पहिरिभूषण बिबिध बिधिके हेम के अवदात । देवतादिक सर्व निज निज लोकमाहिं विभात ॥ देवतादिक सर्व याको धरत शिरपरपर्म्म । हेम याते है पवित्रन ते पवित्र सुशर्म्म ॥ श्रेष्ठयाही हेतु सों है भूमि गोते हेम । है प्रशस्त सु दक्षिणामें देतजन गहिनेम ॥ सबिधि जे जन देत सुवरण प्रेम गहिके माम । सर्व दानहिं कियेको फल लहत ते जन राम ॥ महातम पुनि कहतहौं मैं हेमको अभिराम । सुनहु सो तुम राम धिषणाधाम परम ललाम ॥ सुन्यो हमसु पुराणमें यह परशुराम सुजान । भूमिधर हिमवान पर शिव शिवाको सुखदान ॥ ब्याहके पश्चात् जब भो समागम सहप्रीति । भये आवत देवसब तब शंभुपास सभीति ॥ देखि बैठे दुहुनको सब देव शीशनवाय । बैठि कै इमि भये कहतेशम्भुको सुखदाय ॥ तपस्वी हौ आपु तैसा तपास्विन्या गोरि । तेज तुम दोऊनको लखि कहत हम करजोरि ॥ होयगो बलवान तुम्हरे पुत्रपरम महेश । तीन हनिहै लोक तीनहुं राखिहै नहिं शेश ॥ सुनहु याते अपत्यारथ तेजजो है पर्म । रहौ रोकि ताहि करिकै कृपाआप सशर्म ॥ अपत्यारथ तेज ताको रोकिहौ जो नाहिं । होयगो सन्ताप तौ अतिलोक तीनहु माहिं ॥ करैगो सुर पराजयको आपुको सु अपत्य । कहत हम अवगाहिकै ध्रुव मानिये न असत्य ॥ धारि सकत न तेज तव भू औ न स्वर्ग अकाश । सुनहु ताते तेज को परभाव तव मुदराश ॥ जारि डारिहि सर्व जगतहि महत हेभूतेश । तेज ताते रोकिये निज परम चण्ड बिशेश ॥ होय देवीमाहिं तिहिते पुत्र तुम्हरे

नाहिं। कहे देवन बैन ऐसे बैठिशिवके पाहिं ॥ बचन सुनिये शम्भु बीर्य्यहि लियो ऊर्ध्व चढ़ाय। ऊर्ध्वरेता भये तबसो शम्भु जन सुखदाय॥ करि सु गिरिजा कोप सन्ततिको भये उच्छेद। देवतनको कहे निष्ठुर बचनहोय सखेद ॥ कियो मम सुअपत्य को उच्छेद तुम सुरवृन्द । सुनहु ताते तुमहु सिगरे लहौगे नहिंनन्द ॥ दियोगिरिजा शाप यहजब सुरनको अति माम। हतो तौने कालमें नहिं तहां पावकराम ॥ शापते गिरि सुताके सबदेवता अभिराम। रहित सन्ततिसों भये सुनुराम मेधाधाम ॥ ऊर्ध्व धारण करतभे जब तेजको शिवस्वक्ष। निकसिकै कछु तेज तब शिव अंगते हेदक्ष ॥ भूमिकामें अग्नि माहीं गिरतभो सो पर्म। तेजमाहीं युक्तह्वैकै तेज तौन सधर्म॥ जन्म कारण ताहि प्रापित भयो होतललाम । समय तौनहिं माहिं सब शक्रादिसुर अभिराम॥ भयेपीड़ित बीरतारक दैत्य सों बलवान । रहन नहिंकोउ सकतताके अग्रमें सुमहान ॥ अश्विनी सुत रुद्र मारुतभानु औ बसुअष्ट। पराक्रमते दैत्य के इन लह्यो सबहिन कष्ट॥ छीनि लीन्हें देवतनके थान औ सु बिमान। किमिहि आश्रम छीनिलीन्हे ऋषिन्हके बलवान॥ इन्द्र आदिक देवता अरु ऋषी जे हेसर्ब। भये आवत बिधातापै ऋषी जे हे सर्ब। भयेआवत बिधाता पै होयदीन अखर्ब ॥ नौमिकरिकै बिधाताको कहतभे इमिबैन। बलीतारकदैत्य हमको किये परम अचैन॥ करहु रक्षा हमारीतुम मारिकरिकै ताहि। करहुदाया हमारीतुम दीनता को चाहि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सुनहु मैंतो जानतोहौं सर्बभूत समान। होयगो ताते न मोसों यह सुपाप महान ॥ करोतारक दैत्यको बध तुमहिं मिलिकै सर्ब। होहु शङ्कित नेकुमति तुमहौ अवध्य अखर्ब॥ देवाऊचुः॥ देव और अदेव राक्षस बर्त्तमान जितेक। सकैं कबहूं नाहिं मोको मारि सर्ब तितेक ॥ दैत्यतारक आपुसों मांग्यो सुयह

बरदान। दयो करिकै कृपा तब तुमताहि सुखद महान॥ सुनहु ताते तारकहि हम जीति सकिहैं नाहिं। कहतहैं हम आपु को बरदानगुणि हियमाहिं॥ पूर्वहमको प्रजाको उच्छेदकीन्हो पर्म। दयो गिरिजा शापकरिकै कोप सुनहु सशर्म॥ होति सन्तति नाहिं ताते हमारे लोकेश॥ ब्रह्मोवाच॥ दयोगिरिजा शाप तुमको करिसुक्रोध अशेश॥ हुतो तौनेकालमें नहिं तहांपावक पर्म। करैगो उत्पन्न ताते बली पुत्र सधर्म॥ अधिक सबते होयगो सो गुणनसों अभिराम। सुरनके जे शत्रु तिनको मारिहै सोमाम॥ ऊर्ध्वधारत तेज शिवको कछू पावकमाहिं। गिस्यो हो सो लियो पावक चाहि करिकै ताहि॥ अग्नि तौने तेजसों सुरसरी माहिं अमन्द। भरो तेजस भानुसों उत्पन्न करि है नन्द॥ अग्निको नहिंभयो प्रापत शाप है सुरवृन्द। देवभय हर होयगो तिहिते सुताकेनन्द॥ लखहु सुरसब ज्वलनहैकहँ करहु तासु तलाशु। जायताके पास तुम यह कहो कारण आशु॥ दैत्य तारक बधनकी बरहै उपाय सुजौन। कही हम अव गाहि करिकै सर्ब तुमको तौन॥ कहौ जो यह सबं तुमहै अग्निहू तौ देव। शाप गिरिजाको न लाग्यो याहि क्यों कहु भेव॥ सुनहु तौ मैं कहतहौं यहि हेतको अभिराम। शाप तेजस्विन को जो क्रोधसों अतिमाम॥ लगत तेजस्वीन में नहिं जानु निश्चय पर्म। नेकु संशयहै न यामें कहत होय अभर्म॥ अग्निको सु तलाश शीघ्रहि करो तुम सुरसर्ब। कामनाको सिद्धि करिहैं तुम्हारी सु अखर्ब॥ सर्व देवन बिधाताके परम सुनिये बैन। खोजिबेको हुताशनके चलेहाय सचैन॥ तत अनन्तर सुरन सहऋषि सर्ब लोकन माह। भये फिरते अग्निकाजे भरे अतिहि उछाह॥ आपुही में प्राप्तजोहै अग्निताको नाहिं। सके जानि सुफिरे ढूंढ़त सर्ब लोकन माहिं॥ तपित पावक तेजसों मण्डूक एक अखर्ब। अग्नि दर्शन लालसासों युक्त सुर ऋषि

सर्व ॥ देखिसो मण्डूक तिनको कहत भो इमिबैन। बसत है पाताल में शिखि किये जलमें ऐन ॥ तपित ताके तेजसों हम होयके सुबिशाल। भागिआये भूमि ऊपर छोड़िकै पाताल ॥ ताहि देख्यो चहतहौ तौ जाहु सब तुम तत्र। जातहैं हम अग्निभयते रहैंगे नहिं अत्र ॥ कहि सुमण्डुक बचन ये सुर ऋषिनको अभिराम। त्वरितही परवेश करतो भयो जलमें माम ॥ जानिकै मण्डूककी चुगलीहि पावक उद्ध। देत भो यह शाप भेकहि महत करिकै क्रुद्ध ॥ जानिहै जिह्वा न तेरी रसनको अव दात। शापसों करियुक्त भेकहि भयो त्वरितहि जात ॥ आपुको सुछपायबेको कियो अनतहि बास। तत अनन्तर सुनहु हे जमदग्नि सुत बुधिरास ॥ जाय मण्डुक सुरनपै यह कहत भे वृत्तान्त। सुरन सुनि इमिकह्यो भेकहि कृपाकरि सु नितान्त॥ दोहा ॥ रहितभई रस ज्ञानसों तव जिह्वा अभिराम। उद्ध क्रुद्ध सह अग्निको लहेंशाप अतिमाम ॥ अरिल ॥ तबहुं बहुविधा बाणी को बर। बोलैगी जिह्वा तव दर्दुर ॥ सब सुर ऋषि कहिकै इमि भेकहि। भोजन लागे पुनि सविवेकहि ॥ कछूदूरि जबगे ऋषि अरु सुर। मिल्यो द्विरद एक तासु महत उर॥ ऐरावतहूते अति सुन्दर। चकित भयो लखिताहि पुरन्दर ॥ कहतभयो ऐसेसों मदधर। चल दल माहिं रहतहै शिखिवर ॥ चरणादोहा ॥ द्विरदहुको तब शाप दियो यह अग्निक्रोधकरि उद्ध। होयजायगी उलटी जिह्वा सब द्विरदनकी शुद्ध ॥ दोहा ॥ शापदेय यह द्विरदको गयो समीकेमाहिं। तदनन्तर पुनिसो द्विरद गयो सुरनके पाहिं ॥ जयकरी ॥ कह्यो शापको सब वृत्तान्त। दीन होयकै द्विरद नितान्त ॥ सो सुनिकै ऋषि देवतसर्व। तासु समुझि उपकार अखर्व ॥ देतभये जोवर वरदान। सुनहु तौन तुम राम सुजान॥ देवाऊचुः ॥ उलटी जिह्वाहूसों चारु। करिहौ मंगल सर्व अहारु॥ शब्द होयगो तव अतिउद्ध। यहवर दै निर्जर ऋषि शुद्ध ॥

॥दोहा॥ लगे अग्निके खोजमें गयेकछू जबदूरि । मिलतभयो तब एक शुकपरम बुद्धिकोभूरि ॥ मौक्तिकदाम॥ शुकउवाच॥ लख्योहम बह्नि समी द्रुममाहिं । लखौ अबहीं चलिकै तिहिपाहिं ॥ कह्यो ऋषि देवनको शुकपर्म । सुने सब देवभये सहशर्म ॥ गयोशुक यों कहिकै कछूदूरि । मिल्योतहँ अग्निभरो क्रुधभूरि ॥ दयोशुकको यहशापमहान । तु होहु सुबाकबिहीन अजान ॥ सु पावक को लहिकै यहशाप । मलीन सु होतभरो दुखदाप ॥ गयो तदनन्तर देवनपास । कह्यो सुरसों सब शाप प्रकास ॥ दयायुत ह्वै तब देवनगर्व । दयो वरदान सु येह अखर्ब ॥ सुनोशुक तो वर वाक सुठान । न होइहि नष्ट नितान्त सुजान ॥ सबै पणमाहिं सु तो बरबैन । बनो रहिहै कल अद्भुतऐन ॥ सु दै वरदान शुकै यहसर्ब । समी महि देखतभे सु अखर्ब ॥ पर्यो लखि अग्नि समीतरु माहिं । लखेऋषि औ सुरछन्दहि पाहिं ॥ भयो अति पीड़ित पावक पर्म । सुनो ऋषिराय महान अभर्म ॥ कह्यो तदनन्तर यों सु कृशान । कहौ तुम आगमहेतु महान ॥ सुने यह पावकके वरबैन । सबै सुर औ ऋषिहोय सचैन ॥ भये कहते इमिबैन सुठान । सुनोऋषिराय महान सुजान ॥ सोरठा ॥ करिबेको यक काज कह्योचहत तुमको सु हम । कारजतौन दराज तुमहीं करिबेयोग्यहौ ॥ कीन्हेकारज तौन तुमहूंको गुणहोयगो। ऋषि अरु सुर बुधिभौन कहतभये इमिअग्निसों ॥ अग्निरुवाच ॥
॥ दोहा ॥ कहिहौ कारज जौनतुम करिहैं सो हमसर्ब । कहौ कृपा करि शीघ्रही करहु न देरअखर्ब ॥ देवाऊचुः ॥ तोमर ॥ एक दैत्य अति बलधाम । तिहिको सुतारक नाम ॥ अतिपराक्रम तिहि माहिं । सम तास कोऊ नाहिं ॥ आभीर ॥ ताहि बधनकाज । तेजस भरोदराज ॥ परमबीर बलवान । महाबाहु मतिमान ॥ दोहा ॥ करहुपुत्र उत्पन्नतुम ऐसोहोय कृपाल । तासों ऋषि अरुसुरन को साध्वस मिटै बिशाल ॥ रामगीती ॥ देवता अरु ऋषिन के

सुनि बैन पावकपर्म। जाय सुरसरि माहिं मिलि सो सुनहु राम सशर्म ॥ तेजधरतो भयो शिवको परमउग्रअमन्द । गर्भसोभो सुरसरीमें सुनहु ऋषि निरदन्द ॥ बढ़तभोसो गर्भअतिही परमउग्रअनूप। सहिसकी नहिं तेजताको सुरसरी मुदरूप ॥ बिह्वला अतिहोय सुरसरि कह्यो ऐसे बैन । स्वस्थमेरो चित्त हैनहिं सुनहु तेजस ऐन ॥ प्राप्तभो यह गर्भसों अतिदुःखमोको माम। तजातिहौं मैं अबहिं याते याहि पावक आम ॥ बैनसुनि ये सुरसरीके कह्यो इमि सुकृशान । करहुधारण तजहु मतितुम गर्भको गुणवान ॥ रह्योपावक बरजतै सुरसरी मान्योनाहिं। डारिदीन्हों गर्भको बर मेरुगिरिके माहिं ॥ भयो पूछत सुरसरीको तब कृशानु अनूप। गर्भकोहै बर्णकैसो औ सु कैसो रूप ॥ तेजहै तिहिमाहिं कैसो कहौ यह सब मोहि। सुरसरी तब कहनलागी अग्निसोंहें जोहि॥ गंगोवाच ॥ तेजसोंहै लसत तुमको बर्णसुन्दरतास । बिमल ताकोरूपहै अति भरो परम प्रकास ॥ कदम्बनकेफूलकीसी गन्धजामें पर्म । सुरसरी इमि कह्यो शिखिसों सुनहु रामसशर्म ॥ परो जिन जिन पदारथपर तासुतेज अखर्ब। परमकंचन भयेतेते पदारथ बरसर्ब ॥ लोक तीनहुं माहिंफैलो तासुतेज बिलन्द । रूपऐसो है तुम्हारे नन्द को सु अमन्द ॥ सुरसरी इमि अग्निसों कहिभई अन्तर्द्धान। गयोअग्निहु देवतनको करि सु काज महान ॥ कर्म यहिसों भयो शिखिको हेमरेता नाम। भईपुहुमी बसुमती सुनुरामऋषि अभिराम ॥ दोहा ॥ गर्भ सुरसरी सों तजित शरकेबनमेंपर्म। बढ़तभयो अद्भुत सुनहु ऋषिबररामअभर्म ॥ पज्झटी ॥ कृत्तिका नक्षत्र तिहिको सुदेखि । लीन्होंउठाय अतिबाल लेखि ॥ निज सुस्तनको बरपयपियाय। पोषति सु भई ह्वैकै सचाय ॥ भो कार्त्तिकेय तबसों सुतौन। सुनु परशुरामऋषि सुमति भौन ॥ उत्पन्न भयो यहि बिधि हिरन्य। तिहिमाहिं जाम्बुनद सो न

अन्य ॥ हैं तासु देव शिव औ कृशान । तिहिते सु हेम महि-
मा महान ॥ बशिष्ठउवाच ॥ इतिहास और हम कहत पर्म । सुव-
रण प्रसंगमें सुनुअभर्म ॥ आचरण द्रुहिणको जो ललाम ।
बृत्तान्त तासु तिहिमाहिं माम ॥ यकसमय माहिं शंकर सशर्म ।
बपुधस्यो बरुणको सुनु अभर्म ॥ तिहि समयमाहिं मुनि महत
सर्ब । अरु द्रुहिण आदि देवत अखर्ब ॥ सब समुदभये शिव
पास जात । सुनु सुमतिमान जमदग्नि तात ॥ चारों सुवेद बर
मूर्त्तिमान । अरु अंग सर्ब मखके सुजान ॥ ओंकारमंत्र अरु
बषट्कार । ह्वै मूर्त्तिमान सुखमा अगार ॥ ये शम्भुपास भे
जात सर्ब । इन सबनको सु आदर अखर्ब ॥ कीन्हों गिरीश
भगवान पर्म । सुनु परशुराम ऋषिवर अभर्म ॥ दोहा ॥ बिर-
च्यो तौनहिं समयमें यज्ञ शम्भु भगवान । शिव प्रभावसों यज्ञ
सो शोभितभयो महान ॥ रामगीती ॥ आवते तेहि यज्ञमें भेदि-
शा औ दिगपाल । देवमाता देवकन्या औ बरा सुरबाल ॥
महतमुदसों भरीआवति भईं मखकेमाहिं । शम्भुकोकरि दरश
सबही भईं बैठति पाहिं ॥ रजोगुण उत्पन्न भो हियमाहिं बि-
धिके पर्म । देखिकै तिन सबनको सुनुराम सु ऋषि सधर्म ॥
गिरनलागो बीर्य्यताते द्रुहिणको सुखधाम । गिरोजेतो भूमि
माहीं बीर्य्यपरम ललाम ॥ दयोपूषा होमिताको सहितधूरि
उठाय । अग्निके बर कुण्डमाहीं सुनहु सुऋषि सचाय ॥ भये
ताते ऊष्मज औजरायुजअभिराम । तिमिहिं स्वेदज अण्डजौ
भे होतपरम ललाम ॥ तत अनन्तर गिरोबहुतहि बीर्य्यबिधि
कोपर्म । ताहि गिरताहि लयोसुर बामाहिं द्रुहिणसशर्म ॥ होमि
दीन्हों ताहि घृतवत मंत्रपढ़िकैं पर्म । तमोगुण भो होतताके
तेजते सुसधर्म ॥ सत्वगुण भो तिमिहिं ताते भरो तेजमहान ।
सत्वगुणते होतभो आकाश महत सुजान ॥ होतभे आकाशते
सब बायुआदिक भूत । तामसी सब तमोगुणते भये परम अ-

कृत ॥ भये होमत अग्निमें जब बीर्य्यको लोकेश। तीनपुरुष सु होतभे तब सुनहु सुऋषि सुबेश ॥ ज्वालते भो होत भृगु-बर भरोतेजस पर्म। अंगिरा अंगारतम भो होतस्वच्छ अभर्म ॥ अल्पज्वालाके अँगारेतेभयो कविस्वक्ष। भो मरीच सुमरीचीते अग्निकी सुनुदक्ष ॥ भयोताके सुवन कश्यप भुवनमें बिख्यात। भये कुश समुदाय ते सब बाल्लखिल्य बिभात ॥ भये अत्रिहु दर्भ के समुदाय ते अभिराम। भये भस्म समूहते वरबाणप्रस्थ ललाम ॥ भये शिखिके अश्रुति हैं दुम्रो दस्र सुवेश। श्रवण ते उत्पन्न भे वर प्रजापति जे शेश ॥ स्वेद ते भो वेद अरु भे रोमते ऋषिपर्म्म। भयो बलते होत मन सुनु परशुराम सधर्म्म ॥ भयो लोहित बर्ण ते उत्पन्न सुवरण तात। तासु महिमा सर्बलोकन माहिं है विख्यात ॥ ता अनन्तर बरुण बपुधरि शम्भु आनँदऐन। मुदितह्वैकै देवगणको कहत भे इमिबैन ॥ तोमर ॥ यह दिब्ययज्ञ हमार। अरु तीनपुत्र सुढार ॥ सुनिअग्नि ये वरबैन। इमि भयो कहत सचैन ॥ मम अंग ते अभिराम। उत्पन्न भे सुतश्राम ॥ अरु ममहिं आश्रयकर्त। नहिं अन्य आश्रयधर्त ॥ यहिते सु हैं मम नन्द। शिवकहत झूठ बिलन्द ॥ इहिके अनन्तर पर्म्म। इमि कह्यो द्रुहिण सशर्म्म ॥अरिल॥ हमहीं हैं सु यज्ञके कारक। सुनहु देव सब आनँद धारक ॥ हमहीं हैं अरु शुक्र होमकर। याते मेरे हैं ये सुतबर ॥ शुक्रहि हैं सन्ततिको कारण। तुम्हैं कहतहौं करिनिरधारण ॥ जासुहोय बीरज फलसोइय। लहै न और दूसरो कोइय ॥ सर्ब देव विधिकीबाणी सुनि। कहत भये बिधिको इहिविधि गुनि ॥ जग सब महत चराचर मयबर। अरु हम हैं आपुहि के मुदघर ॥ ताते कह्यो हमारो मानहु। आपुनेकहू हठ मतिठानहु ॥वरुणरूप शंकर अरु पावक। तिन्हैंदेहु ये सुत तुमचावक ॥ तोमर ॥ सुनि देवतनके बैन। विधिपरम आनँद

ऐन ॥ इमिकह्यो तिनको जोय । कहिहौ सु करिहैं सोय ॥ तब बरुण बपुधर सर्ब । सुनु रामसुऋषि अखर्ब ॥ विधिको सु शासनपाय । अतिहर्षहियमें छाय ॥ सुतज्येष्ठ मृगवर ताहि । शुचिभये लेत सु जाहि ॥ अरु आंगिरसको स्वक्ष । शिखिभयो लेत प्रतक्ष ॥ कविको लिये सहप्रेम । विधि लोकनाथ सक्षेम ॥ शिव बरुण बपुधर पर्म्म । भृगुको सु लीन्ह सशर्म्म ॥ तिहिते सु वारुणनाम । भृगुको भयो बुधिधाम ॥ दोहा ॥ अग्नि अंगिरसको लयो आग्नेय भो नाम । भयो अंगिरस को सुनहु परशुराम ऋषिमाम ॥ आभीर ॥ ब्रह्माकबिकोलीन । सुनु ऋषि परम प्रवीन ॥ ताते ब्राह्मसुनाम । कविको भयो ललाम ॥ दोहा ॥ ये तीनो हैं प्रजापति सर्ब सृष्टिके हेत । इनते जौन अपत्य भे ते अब सुनहु सचेत ॥ अरिल ॥ बज्रशीर्ष अरु च्यवन और्ब शुचि । शुक्र वरेण्य सबन बिभुवर रुचि ॥ भृगुके भये सप्त ये सुतबर । भृगुहि समान परम सब गुणधर ॥ घोरबिरूप उतथ्य वृहस्पति । शान्ति पयस्य सुधन्वावर मति ॥ अरु सम्बर्त महत तेजसयुत । भये अंगिरसके ये बसुसुत ॥ बिरजाकाब्य उग्र उशनाकवि । काशीधृष्णु सुभृगु अरु बरछबि ॥ अष्टभये कविके ये सुत वर । कबिहि समान अमन्द सुमतिधर ॥ रोला ॥ तदनन्तर इमिकहतभये सुर विधिके सनमुख । सुनहु लोकपतिपाय कृपा तवकोन लहतसुख ॥ तवप्रसादते प्रजापति सुतारैंगे लोकहि । ह्वै हैं करता बंशके सुहनिहैं जगशोकहि ॥ लहिहैं तपस महान तिमिहिंबर ब्रह्मचर्य्यब्रत । रहिहैं बिदुष महान होय नित वेदमाहिंरत ॥ तुमहींकरता देवनके अरु बिप्रनकेसब । होतमहत आनन्द अनुग्रह आपु करतजब ॥ बरवै ॥ यहिविधि विधिको कहिकै देवतसर्ब । जातभयेनिजलोकहि समुद अखर्ब ॥ दोहा ॥ वरुणरूपधर शंभुके यज्ञमाहिं अभिराम । यह वृत्तान्त भयो सुन्यो पूरब हम बुधिधाम ॥ निश्चय अग्निहिको सुवन

है सुबरण अभिराम। यामें संशय है नहीं सुनहु सुऋषि बुधिधाम ॥ रामगीती ॥ द्रुहिणकोसुत अग्नि है अरु अग्निको सुत हेम। सुनहुताते श्रेष्ठहै अति हेमदान सक्षेम ॥ सहित आदर द्विजनको जे सबिधि सुबरणदेत। रहित तमसों लोकतामें महत मुदकोलेत ॥ सविधि रबिकेउदयमें जेदेत सुबरणस्त्रक्ष। होत तिनको दोषनहिं दुःस्वप्नको सुनु दक्ष ॥ हेमको मध्याह्न माहीं देतहैं जनजौन। प्राप्त कबहूं होतहैं नहिं पापको जनतौन॥ देत सायंकालमें जे हेमको अवदात। मरुतविधि अरु अग्नि विधुके लोकमें ते जात ॥ लहतहैं अतिप्रतिष्ठाको सर्बलोकन बीच। पायकै यहि लोकमें यश रहत नित्य निभीच ॥ नित्य रबिके उदयमाहीं परम गाहिकै नेम। अग्निको प्रज्वलित साक्षी भूतकरि गहिप्रेम ॥ बिप्रबरको सहित आदरदेत सुबरण जौन। कामना सब लहतहैं जनतौन बरबुधिभौन ॥ दोहा ॥ कार्त्तिकेय अरु हेमकी उत्पति जो अभिराम। तुम्हैंकही सो सविधि हम सुनहु सुऋषि बुधिधाम ॥ कार्त्तिकेय बहुदिननमें भयो महत बलवान। सेनापति तबदेवतन कीन्ह्यो ताहिसुजान ॥ आज्ञा लहि सुररायकी कार्त्तिकेय करिक्रुद्ध। मार्‌यो तारक दैत्यको बिरचियुद्ध अतिउद्ध ॥ सुबरणमें है महतगुण ते हम कहे बखानि। बिप्रनको तुम देहुअति निश्चयहीमें आनि ॥ भीष्मउवाच ॥ परशुराम ये बचनसुनि ऋषि बशिष्ठके पर्म। हेमदेतभो द्विजनको ताते छुटे अधर्म ॥ देहु तुमहुंबर द्विजनको हेमदान अवदात। सब पापनते छूटिहो निश्चय जानहु तात ॥

इतिश्रीशांतिपर्बणिदानधर्म्मेसुबर्णोत्पत्तौएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ गुण सुबरणके दानको कह्यो बिस्तरितआपु। अरुताकी उत्पत्तिको कह्यो हेतु सप्रतापु ॥ देवनसों नहिं बध्यहो तारकदैत्यमहान। ताको बध कैसेभयो कहो मोहिं बुधिमान ॥ तारकनामा दनुजको मरणभये ते भूरि। संशय मो

हियमाहिं भै सो तुमकीजै दूरि ॥ भीष्मउवाच ॥ अरिल ॥ गंगा गर्भहि डारिदियो जब । ऋषि अरु सुर सब बिकल भये तब ॥ भरे भीति अरुशोच महासों । कहत भये ऐसे कृतिकासों ॥ दोहा ॥ सब देवनमें देवकोउ ऐसो नाहिंदिखात । धारणशिखिके गर्भको करैजौन अवदात ॥ धारण कीबे योग्यहौ तुमहिं समर्थापर्म । यातेशिखिकेगर्भको पोषणकरो सशर्म ॥ देवनकेअरु ऋषिनकेकृतिका सुनि येबैन । धारण शिखिके गर्भको करतीभई सचैन ॥ धारणकीन्हें गर्भको भयो प्रसन्न कृशान । अरु देवता ऋषिबर सरब मोदितभये महान ॥ चरणाकुलक ॥ बढ़ोगर्भ जब कृतिका सर्बा । तासु तेजसों परम अखर्बा ॥ अतिही ब्याकुलतासों छाई । बनमें जरत मृगीकीनाई ॥ कृतिका कालब्यतीत भयोजब । गर्भ भई जन्मावाति सम तब ॥ तौन सुगर्भ इकट्ठाह्वैकै । शोभित भयो प्रभासों ग्वैकै ॥ तिहि बालकको सर्ब सहा । धारण कियो मोदसों महा ॥ प्राप्तहोय सो सरके बनमें । बढ़त भयो अति थोरेदिनमें ॥ ताहि देखि कृतिका मुद पागी । होय सप्रेम पोषिबे लागी ॥ दोहा ॥ तदनन्तर ताको लखत ब्रह्मा बिष्णु महेश । आवतभये सहर्ष अरुअमरन सह अमरेश ॥ हाहा हूहूआदिदैरहे जितेगन्धर्ब । तेऊ सबआवत भये आनँदभरे अखर्ब ॥ आप बायु नभ चन्द रबि अरुनक्षत्रके बृन्द । कार्तिकेयको देखिबे आवतभे सानन्द ॥ चरणाकुलक ॥ षटआननभुज द्वादश नीके । मारतण्डके करसे सीके ॥ द्वादश नयनऐन बरभाके । लसतकर्णलौं तेजमहाके ॥ ऐसे बपुअग्निजको देखे । सिद्धिकामकी हींमिंलखे ॥ परमहर्ष सोंहीकीसान्यो । तारकको बध निश्चय जान्यो ॥ तदनन्तर सब आनँद पागे । ताहि खिलौना दीबेलागे ॥ दयोगरुड़ अपनोसुतनीको । तासु मयूरनाम अतिसीको ॥ वरुण दियो कुक्कुटअति सुन्दर । दियो सिंह बर बली पुरन्दर ॥ औ दीन्हो इक उन्नत हाथी । सुन्दर

ऐरावतको साथी ॥ मारतण्ड दीन्ही भानीकी। सुरभी देतिभई गोश्रीकी ॥ दियो चन्द्रमा मेषसुअद्भुत । अग्नि देत भो छाग प्रभायुत ॥ दिये सुधन्वा शकट अनोखे। औ दीन्हें बहुरथ अति चोखे॥ दोहा ॥ तदनन्तर तहँ आयकै तारकदैत्य महान। कार्तिकेयको जानिकै महत भयोबलवान ॥ पज्झटी ॥ बहुबधनकाज कीन्हो उपाय। पै बधिसक्यो न बरदैत्यराय ॥ तदनन्तर ऋषि अरु अमर सर्व। हियमाहिं शोच करिकै अखर्व ॥ अग्निजहि सेनपहि करि सुजान। तारक सुदैत्य तिहिको महान ॥ कहिदीन्ह पूर्व वृत्तान्त सर्व। सुनि तौनबीर बह्निज अखर्व ॥ चढ़िसज्जि गज्जि करि क्रुद्ध उद्ध। चल्यो बीर कीबे सुयुद्ध ॥ इमि लसतबीर रससों महान। अति भरो तेज मनु है कृशान ॥ उतते झपट्टि तारक सुभट्ट। लीन्हें प्रचण्ड दानव सघट्ट। आयो करत्त अतिघोर शब्द। गज्जत सचल्ल मनु शुद्ध अब्द ॥ बलवान बीर दोऊ सुजान। संग्राम घोर बिरच्यो महान ॥ हट्टत न कोय दोऊन बीच। कट्टत अनेक भट्टै निभीच ॥ बररुण्ड मुण्ड बिच परिय खग्ग। इमिलसत तासु उपमा अदग्ग ॥ मिट्यो चहत्त मनु राहुकेत। रबि किरण तिनहिं नहिं मिलन देत ॥ बिनहस्तरुधिरमय रुण्डदक्ष। मनु जरे अग्निसों तार वृक्ष ॥ लखि कार्तिकेयकोरण अतूल। हर्षत सुदेव बर्षत सुफूल ॥ बढ़ि कार्तिकेय गहिशक्ति उद्ध। तारकहि हन्यो अति ह्वै सक्रुद्ध ॥ दोहा ॥ तारककोबध देखिकैऋषिअरुसुरसानन्द। ह्वै समीप इमि कहत भे धन्य धन्य शिखिनन्द ॥ कार्तिकेय पुनि इन्द्रको राज्य माहिं बैठाय। हनिकै भयकर निकरको कीन्होंपरम सचाय ॥ जयकरी ॥ तबसोंसुर सेनापति नाम। कार्तिकेयको भोबुधिधाम ॥ भयो सदाशिवको प्रिय पर्म। सुनहु भूप मतिमान सधर्म ॥ दोहा ॥ कार्तिकेय ऐसो बली भो सुवर्ण तिहि साथ। ताते उत्तम परम है सुनु सधर्म नरनाथ॥ सोरठा ॥ पर-

शुराम ये बैन सुनि ऋषिपरम बशिष्ठके। ह्वैकै परम सचैन सुबरण दानहि देतभो॥ दोहा ॥ सर्बपापसों छूटिकैदीन्हें सुबरण दान। स्वर्गलोकको प्राप्तभो परशुराम मतिमान॥

इतिश्रीदानधर्मेसुबर्णदानप्रशंसानामद्व्यशीतितमोऽध्यायः॥ ८२॥

दोहा ॥ चतुरवर्णको जिमिकह्यो आपुधर्मअवदात। कहौं तिमिहिं अबश्राद्धकी सम्पूरण विधितात॥ बैशम्पायनउवाच ॥ भूपयुधिष्ठिरकेबचन सुनिसुरसरितानन्द। सम्पूरणबिधि श्राद्धकी कहत भयेसानन्द॥ भीष्मउवाच ॥ तोमर ॥ सुनुश्राद्धकीविधि जौन। अति मोददायक तौन॥ सुत दायका अभिराम। शुभकारिणी बुधिधाम॥ सुर असुर अरु गन्धर्ब। अहि औ पिशाच अखर्ब॥ नर किन्नरो सहप्रीति। सब करत श्राद्ध सनीति॥ दोहा ॥ ताते श्राद्ध करै सदा स्वच्छ होय मनलाय। श्राद्ध किये यश मिलत अरु बढ़त बंश सुखदाय॥ पितर रहत परसन्नहैं किये श्राद्ध नित पर्म। ताते श्राद्ध करै सदा भूमिप सुनहु सधर्म॥ तिथि नक्षत्र अरु पर्बमें किये श्राद्ध अभिराम। जो फल जनको मिलत सो कहत भूप हम आम॥ रामगीती ॥ प्रतिपदामें श्राद्ध बिधिसों करतहैं जनजौन। नारिसुन्दरि लहत हैं अरु लहत सुत बहुतौन॥ श्राद्ध द्वितियामाहिं कीन्हें सुताहोति अनूप। श्राद्ध तृतियामेंकियेबहुमिलत अश्वसुरूप॥ चतुर्थीमें श्राद्धकीन्हें मिलत तप बहुपर्म। मिलत बहुसुत पंचमीमें किये श्राद्ध सधर्म॥ कियेषष्ठीमाहिं श्राद्धहि मिलयदीप्ति सुढार। सप्तमीमें कियेश्राद्धहिकृषीहोतअपार॥ श्राद्धकीन्हेंअष्टमीमें सहितविधि अभिराम। होतहै बाणिज्यमाहीं लाभअतिही माम॥ श्राद्ध नौमीमाहिं कीन्हें मिलत हय बहुपर्म। किये दशमीमाहिं सुरभी मिलति बहुत सधर्म॥ सविधि एकादशीमाहीं किये श्राद्ध अनूप। मिलतहैं बहुरत्न निश्चय जानुहे बरभूप॥ परमतेजस्वीसुजाके होहिंसुतअभिराम। द्वादशीमें श्राद्धकीन्हें सुनहुनृप

बुधिधाम ॥ मिलत हय बहु रजत अरु बहु मिलत सुबरणपर्म। मिलतहै अरु और धनबहु सुनहुभूप सधर्म ॥ त्रयोदशिकामाहिं जेजन करत श्राद्ध सुजान। ज्ञातिमेंते होत श्रेष्ठ सुकहत हैं मतिमान ॥ मरैंताके गेह वारे तरुणाही नरचारु । है न हियमें नेक संशय सुनहुबुद्धि अगारु ॥ श्राद्ध जे जन करतहैं तिथिचतुर्दशिका माहिं। युद्धमेंते मरतहैं हम सुन्योबुधजनपाहिं ॥ अमावस्यामाहिं जेजन करत श्राद्ध सुजान । कामना सब होति तिनकी सिद्धिसुनु बुधि मान ॥ चरणादोहा ॥ कृष्ण पक्षकीदशमी आदिक पंचतिथिनके माहिं। है प्रशस्त सब श्राद्धकर्ममें चतुर्दशीहै नाहिं ॥ दोहा ॥ है बिशेष जिमि शुक्ल पक्षते कृष्ण पक्ष मनुजेश। तिमिहि श्राद्ध में पूर्वाह्नते है अपराह्न बिशेश ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेत्र्यशीतितमोऽध्यायः८३॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ दीन्हे कौन पदार्थको पिण्ड परम अभिराम। पितर लहतअक्षय तृपित कहो मोहिंबुधि धाम ॥ औ कहु कौन पदार्थ को दिये पिण्ड हे तात। महत तृप्तिको पायकै बहुदिन पितर बिभात ॥ किहि पदार्थके श्राद्ध सों दिनअनन्त लों पर्म। पितर तृप्तको लहतहैं कहिये तात सधर्म ॥ भीष्मउवाच रामगीती ॥ तिलनसों अरु ब्रीह यवसों मूलफलसों पर्म। मांस सों अरु नीरसों बर किये श्राद्ध सधर्म ॥ पितर तृप्तसुरहत हैं यक मासलों हेतात। शास्त्र मत सों कहतहैं अवगाहि बुधअवदात ॥ बहुत तिलसों श्राद्धकीन्हें सहित प्रीति बिशाल। लहत अक्षय तृप्तिको हैं पितरसुनु भूपाल ॥ मत्स्यआमिषसोंकियेते श्राद्ध सविधि सुजान। पितर तृप्तिसुलहतहैं द्वैमासलोंमतिमान ॥ सविधिकीन्हे श्राद्ध शशके मांससों अभिराम । पितर तृप्तसुरहतहैं त्रयमासलों बुधि धाम ॥ श्राद्धकीन्हें सविधि अजके मांससों सहप्रेम। तृप्तिलहिकै रहत पितर सुपंचमास सक्षेम ॥ श्राद्धमांस बराहके सों कियेते सुनुभूप। मासषटलौंरहत

मोदित तृप्तिपाय अनूप ॥ श्राद्धकीन्हें विहँगके बरमांससों अभिराम । सप्तमहिना रहततृप्त सुपितरसुनु बुधिधाम ॥ श्राद्ध कीन्हें चित्रमृगके मांससों सहप्रेम । अष्टमास सुतृप्तिलहि कै रहत पितर सक्षेम ॥ श्राद्धकीन्हें रोझके बरमांससों सुनुभूप । रहत मोदित मासदश लौं तृप्तिपाय अनूप ॥ श्राद्धकीन्हे महिषके बर मांससों महिपाल । लहतएकादश महीना पितरतृप्ति बिशाल ॥ श्राद्धकीन्हें गऊके बरमांससों अभिराम । पितरमोदित रहत बत्सर तृप्ति लहिकै माम ॥ लहतजैसे एकबत्सरगव्यसों हे तात । तिमिहि घृतयुत खीरसों अति तृप्तिपाय बिभात ॥ श्राद्धकीन्हें खंगके बरमास सों सहप्रेम । पाय तृप्तिअनन्त बासर रहत पितर सक्षेम ॥ पिण्डदीन्हें फूलकोकचनार के अभिराम । तिमिहि दीन्हें चूंचको सहप्रेम पिण्ड ललाम ॥ पाय तृप्ति अनंतबासर रहतपितर सक्षेम । सुनहु ताते भूपकरिये श्राद्धगहिकै नेम ॥ कही पितरनकी कथाभगवान सनतकुमार । पूर्व मोको कहीही सो सुनहु भूप उदार ॥ चरणादोहा ॥ होय हमारे कुलमें ऐसो कोऊबरमति मान । जौनसप्रेम हुलसिहीमें करि बिप्रन को सनमान ॥ क्वारकृष्णकी त्रयोदशीमेंमघानखत को पाय । हमकोघृतयुत पायसताके पिण्डादेय सचाय ॥ दोहा ॥ ऐसेकहत सुपितर सब इच्छा करिकैपर्म । सुनहुभूपकुन्तीतनय प्रज्ञावान अभर्म ॥ श्राद्धकरै अजमांस सों मघानखतकेमाहिं । बिधिसहअरु सहप्रेम अति चलदलतरुकीछाहिं ॥ चरणादोहा ॥ गयातीर्थ में अक्षयबटतर कीन्हें श्राद्ध सप्रेम । दिन अनन्तलौं तृप्तिपायकै पितर सुरहत सक्षेम ॥ मधुमिलाय फल मूलअन्न जल दिये पितर तिथिमाह । दिन अनन्तलौं तृप्त रहतहैं पितर सुनहु नरनाह ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ नखतनमें जो मिलतफल कियेश्राद्ध अभि-

राम। कहतभयो शशबिन्दुको धर्मराजसों आम॥ तौन तुम्हें हमकहतहैं पृथक् पृथक् नरराय। तजिप्रमादता सुनहु तुम थिरिकै चित्तलगाय॥ जयकरी॥ श्राद्धकरत कृतिकामें जौन। रुजते बिगतहोतहै तौन॥ कीन्हेंश्राद्ध रोहिणीबीच। अनुपम मिलत अपत्य निभीच॥ नखत मृगशिरामाहिंसप्रेम। कीन्हें श्राद्ध सबिधिगहिनेम॥ प्रापतहोत सतेजमहान। सुनहु युधि-ष्ठिरभूप सुजान॥ क्रूरजगतमेंहैं जनजौन। श्राद्धकिये आर्द्रामें तौन॥कोमलहोत परम मतिमान। छूटतक्रूरस्वभाव महान॥ कीन्हेंश्राद्धपुनर्बसुमाह। कृषीहोति बहुसुनुनरनाह॥ कीन्हें श्राद्ध पुष्यमें पर्म। पुष्टि पायतनहोत सशर्म॥ अश्लेषामें कियेसनेम। श्राद्धमिलैं सुत धीरसक्षेम॥ कीन्हेंश्राद्ध मघाकेबीच। होत ज्ञाति में श्रेष्ठनिभीच॥ कियेश्राद्ध फाल्गुणिमें पर्म। प्राप्तहोत ऐश्वर्य्य सधर्म॥ कीन्हेंश्राद्ध उत्तरामाह। मिलत अपत्य सुनहु नरनाह॥ कियेहस्तमें श्राद्ध अनूप। इच्छाहोति सिद्धिसब भूप॥ श्राद्धकिये चित्रामेंचारु। प्राप्तहोत सुतपरम सुढारु॥ श्राद्धकिये स्वातीमें भूप। प्राप्ति बणिजमें होति अनूप॥ सह-बिधि नखत बिशाखा माह। कियेश्राद्ध सुनु हे नरनाह॥ प्राप्त होत बहुपुत्र सुढार। शुद्धप्रभाके बुद्धिअगार॥ किये श्राद्ध अ-नुराधा माहिं। रहैसदा राजाके पाहिं॥ निग्रहकै इन्द्रिन को सर्व। श्रद्धाकरि हियमाहिं अखर्व॥ श्राद्धकिये ज्येष्ठामें पर्म। आधिपत्य लहिहोत सशर्म॥ कीन्हें श्राद्ध मूलकेमाहिं। कौनिहुं ब्याधि होतिहै नाहिं॥ पूर्बाषाढ़माहिं सुनु दक्ष। कीन्हें श्राद्ध मिलै यशस्वक्ष॥ सबिधि उत्तराषाढ़ा माह। कीन्हें श्राद्धसुनहु नरनाह॥ बिगतशोकसों ह्वैकैपर्म। रहत महीके माहिंसशर्म॥ कियेश्राद्ध अभिजितमें चारु। बिद्याप्राप्त सुहोत सुढारु॥श्राद्ध श्रवणमें कीन्हेंतात। नरमरिकै सद्गतिको जात॥ नखत धनिष्ठा माहिं सप्रेम। कीन्हेंश्राद्ध सबिधि गहिनेम॥ होत राज्यभागी

नरपर्म । निश्चय जानहुभूप सधर्म ॥ किये श्राद्ध शतभिषमें तात । होत सुवैद्यपरम अवदात ॥ पूर्वभाद्रपदमें जनजौन । सह बिधिकरै श्राद्धको तौन ॥ अज अरु आविक लहतअनेक । निश्चय जानहु नृप सबिवेक ॥ कीन्हेंश्राद्ध रेवती बीच । मिलत रत्नबहु नरहि निभीच ॥ कियेश्राद्ध आश्विनमें पर्म । अश्वमिलत बरसुनहु सधर्म ॥ श्राद्धकिये भरणीके माह । आयु बढ़तिहै सुनु नरनाह ॥ सुने श्राद्धकी बिधि यहचारु । भूपति बर शशाबिन्दु उदारु ॥ श्राद्धकरत भो सबिधि सप्रेम । सुनहु युधिष्ठिर भूप सक्षेम ॥ दोहा ॥ श्राद्धकियेकी पुण्यसों जीततभो भू सर्ब । भईप्रभा अतिअंगमें बाढ़ोतेज अखर्ब ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ श्राद्धमाहिं अभिराम कैसोबिप्र बुलाइये । कहो तात बुधिधाम तुमहीं कहिबे योग्यहो ॥ भीष्मउवाच ॥ तोमर ॥ कुलवान होय सुजान । अरु शीलवान महान ॥ बयहोय जासु नवीन ॥ अरुपिता जासु प्रवीन ॥ बररूप होय अमन्द । तन शुद्ध होय नरेन्द ॥ बर बिप्र ऐसो ताहि । बुलवाइये नृप चाहि ॥ रामगीती ॥ द्विजनमाहीं जितेकाणे अन्धहैं सुनुभूप । निमंत्रणके योग्यते नहिं श्राद्धमाहिं अनूप ॥ द्यूतखेलत जौनद्विज अरु जौनहैं रुजवान । गर्भघाती जौनद्विज अरु करत जो द्विज गान ॥ ग्रामके जे भृत्य हैं अरु मूर्ख जे द्विजपर्म्म ॥ जौन जारत गेह को हैं बिप्र सुनहु सधर्म्म ॥ गरल जे द्विजदेतहैं अरु राज भृत्य सु जौन । पिताको जे देत उत्तर महा दुर्मतिभौन ॥ जौन बेचत सोमबल्ली धरत जो बहुरूप । सर्ब बस्तुहि जौन बेचत बिप्र हे सुनु भूप ॥ द्यूत पणसों द्रव्यलीबे हिये में ललचाय । अन्यकी तिय अन्यपै द्विजदेत जे पहुंचाय ॥ रमत जो परदार सँग अरु तैल बेचत जौन । कपटको जो करतहैद्विज परम दुर्मतिभौन ॥ करत चुगुली मित्रसों जो द्रोह राखत बिप्र । हल-

आहीजौन अरु जे बचनछोड़त क्षिप्र॥ धारि शस्त्रहि जीविका जेकरत द्विज महिपाल। जात जे गुरुनारिपै धरि हियेपाप विशाल॥ श्वानगणको राखिमृगया करतहैं द्विजजौन। क्रोधजो बहुकरतहैं द्विज परम दुर्मतिभौन॥ जीविका जो करतहैं द्विज चित्र लिखि अभिराम। करत चोरी हेमकी हैं जौन द्विजअघधाम॥ करत जो द्विजजीविका तिथिपत्रको नितबांचि। छोंड़ि कै निजकर्म्म जे द्विज लेतहैं धननाचि॥ जौनहैं द्विज शूद्रकेऊ पुरोहित भूपाल। देवताको चढ़ो जो द्विज द्रब्यलेत विशाल॥ श्वानकाटोहोय जौने बिप्रको नरनाथ। रमतिजाकी होयनारी और पतिकेसाथ॥ पढ़िसमुद्रिक जीविकाको करतहैंद्विजजौन। पांति बाहिर इते द्विजहैं सुनहुं नृपबुधिभौन॥ जौनद्विजकेबंधु लघुको भयो होय बिवाह। होय अपनो नाहिंभो द्विज तौनऊ नरनाह॥ जातिबाहिर हेकहैंबुध परम प्रज्ञावान। वेदमें जेरहतहैं रत धर्मवान महान॥ कहतहैं इहिभांतिते द्विज पांति बाहिरजौन। निमंत्रणके योग्यनाहीं श्राद्धमाहींतौन॥ करैंभोजन बिप्र जो ये श्राद्ध माहींतात। राक्षसनकोहोय तौ फलश्राद्धको अवदात॥ पढ़ै जो द्विज श्राद्धमें करिभोज्य सुनु बुधिरास। बसैं बिष्ठामाहिं ताके पितर तो यकमास॥ श्राद्धमें करिभोज्य जो द्विज जाय शूद्रीपास। पितर तौ यजमानके सब निरयमें यकमास॥ बसैं बिष्ठामाहिं तौने बिप्रकी निजजानि। शास्त्रको अवलोकिकै बुध कहतहैं अनुमानि॥ जौन बेचत सोमबल्ली तौन द्विज बुलवाय। श्राद्धमें जे देतभोजन ताहि सुनुनरराय॥ होत बिष्ठाप्राप्तताके पितरको हे तात। बैद्यको जे देत भोजन श्राद्धमें अवदात॥ होतताके पितरकोहै प्राप्त शोणितपीप। सुनहुताते बैद्यको बुलवाइये न महीप॥ ब्याजको जे लेत हैं द्विजलोभके आगार। श्राद्धमें बुलवाइये नाहिं तिन्हैं भूपउदार॥ श्राद्धमाहीं तिन्हैं भोजन दियेतें अभिराम। पितरको नहिंहोत

प्रापित श्राद्धफल बुधिधाम ॥ करत जो बाणिज्यको द्विज जी-
विकाकेकाज । श्राद्धमें बुलवाइये नहिं ताहिहे नरराज ॥ तिन्हैं
भोजनदियेतेनहिं मिलत कछुफलभूप। दुहूंलोकनमाहिं निजुकै
कहतप्रज्ञअनूप ॥ धर्म्मसों जो रहितहैं द्विज श्राद्धमाहींताहि।
दियो जोहै भोज्यताते मिलत कछुफलनाहि ॥ जानिये ते द्वि-
जनको जो अल्पबुद्धी पर्म । देत भोजनश्राद्धमाहीं सुनहुं भूप
सधर्म ॥ खाततावके पितरबिष्ठा कहतबुध अवदात।हैनहीं संदेह
यामें जानु निश्चयतात ॥ मंत्र जे द्विज अल्पबुद्धी शूद्रजनको
देत । श्राद्धके नहिं योग्यतेऊ सुनहु भूप सचेत ॥ दियेभोजन
श्राद्धमें एकाक्ष द्विजको तात। साठि द्विजके भोज्यकोफल मि-
लतनहिं अवदात ॥ दिये भोजनश्राद्धमाहीं खंज द्विजकोभूप ।
एकशतद्विज भोज्यको फलमिलत नाहिं अनूप ॥ पांतिमाहीं
बिप्रकुष्ठी लखैं बिप्र जितेक । तितेकनके भोज्यको फलमिलत
नाहिं सबिबेक ॥ किये भोजन राखि शिरपैवस्त्रको हे नन्द । औ
अबाची और मुखकै किये भोज्य अमन्द ॥ असुरगणको होत
प्रापति भोज्यको फलपर्म । कहतहैं अवगाहिकै बुध सुनहुभूप
सधर्म ॥ रहितश्रद्धाश्राद्ध माहीं दियो भोजन जौन । प्राप्तसो
सब दनुजपतिको होतहै बुधिभौन ॥ असूयाकरिदियो भोजन
द्विजनको जो भूप । तौनहूंसब दनुजपतिको प्राप्तहोत अनूप ॥
कहत हैं यहिभांति बुधबर श्राद्धबिधिके माहिं । श्वान औ का-
णादि द्विजको लखनदीजै नाहिं ॥ रहित तिलसों श्राद्धकीन्हें
औ किये सहक्रोध । भूत राक्षस लूटिताको लेत कहतसुबोध॥
पंक्ति बाहिर जिते द्विजहैं कहे तुमको तौन । सुनहु अबहम क-
हतहैं नृप पंक्तिपावन जौन ॥ अग्निहोत्री बिप्र औ व्रतवान
बिद्यावान । वेदमें नित रहत तत्पर धर्म शीलसुजान ॥ ऋतु-
वती जब होयनारी जाय तब तिहिपास । कबहुंनहिं परनारि
देखै करै ज्ञानप्रकास ॥ बेदके षटअंग तिनको पढ़ै जो द्विज

पर्म। पढ़ावै जो वेदगावै सामवेद अभर्म॥ पिताको अरुमातु को जो भक्तवर बुधिधाम। ब्रह्मचारी जौन द्विज अरुसत्यवादी माम॥ रहै सुकरममाहिंजोरत परमप्रज्ञाभौन। कियोश्रमजिहि होय करिकै तीर्थयात्रागौन॥ होहिं इन्द्री जासुबश अरु रहित क्रुधसों जौन। होयश्रोत्रिय जौनद्विज दशपुरुषतसोंबुधि भौन॥ चपलतासोंरहितजो अरुक्षमायुतजो पर्म। पंक्तिपावनइतेद्विज हैंकहतप्रज्ञअभर्म॥ दीजिये इनको निमंत्रण श्राद्धमाहींतात। दिये इनको पितर अक्षय तृप्तिपाय बिभात॥ औरऊ हैं पंक्ति पावन बिप्र हे नरराय। तौन तुमसों कहत हैं हम सुनहु चित्त लगाय॥ करत सेवा गुरुनकी जो भरेहर्ष महान। मोक्ष धर्महिं जानते हैं बिप्र जे मतिमान। रहत जे ब्याकरण में रत नित्य आलस त्यागि। पढ़त जौन पुराणहैं द्विज ज्ञानवर सोंपागि॥ धर्म्म शास्त्रहि जानिकै जे करत बिधिवत काज। वेदमाहीं श्रेष्ठ जे बरबिप्रहैं नरराज॥ जहांलौं ये बिप्रदेखैं पंक्तिको अभिराम। करत पावन तहांलौं हैं सुनहु नृप बुधिधाम॥ करतपावन पंक्तिको हैं बिप्रये मतिमान। पंक्तिपावनकहत याते इन्हैं मनुज सुजान॥ पढ़ावत जे वेदहैं द्विज सुवन तिनकेपर्म। दूरिहू सों सुनेपावन करत पंक्तिसधर्म॥ रहित जो द्विजहोय तिनमों दोष जे हैं सर्व। पतितहोय न परम निर्मल होयकरत अखर्व॥ सुनहु भूमिप बिप्रऐसो पढ़ेअल्पहु वेद। पंक्तिपावन द्विजनसों सो रहतहोय अभेद॥ पंक्तिबाहिर जितेहैं अरु जिते पावन पर्म। कहे तुमसों तिते हम सब बिप्रसुनहु सधर्म॥ परीक्षा बिनकिये द्विजकी जे निमंत्रण देत। पितर ताके लहत दुखअति कहत बुद्धिनिकेत॥ देतभोजन मित्रको जे श्राद्धमें बुलवाय। पितर ताके होततृप्त न जानुनिजु नरराय॥ मित्रताको भावकरिकै श्राद्धमें जनजौन। देतजे अन्योन्यभोजन लहतस्वर्ग न तौन॥ जायकौनहुं पुण्यसों जो स्वर्गमें अभिराम। होय तौ च्युतशी-

ग्रही यह कहतबर बुधिधाम ॥ सुनहु ताते मित्रको बुलवाइये नहिंतात । श्राद्धमाहीं श्राद्धबिधिविद कहतहैं अवदात ॥ शत्रु होय न मित्रऐसो बिप्र जो नरनाह । ताहिभोजन दीजिये बर श्राद्धमें करिचाह ॥ श्राद्धमाहीं दियेभोजन मूर्ख द्विजकोचारु । होत कछुफल नाहिं दोऊ लोकमाहिं सुढारु ॥ होतनहिं उत्पन्न जैसे बीज ऊसरमाहिं । तिमिहिं दीन्हें मूर्खद्विजको होतहैफल नाहिं ॥ श्राद्धमाहीं परस्पर बर दक्षिणा जे देत । होतप्राप्त न पितरको सो कहत बुद्धि निकेत ॥ भ्रमत याही लोकमें सो दक्षिणा नरराय । भ्रमै शालामाहिं जैसे नष्टबत्सागाय ॥ जौन नर्तक बिप्रहैं अरु गानकारक जौन । श्राद्धमाहीं तिन्हें दीन्हीं दक्षिणाहै तौन ॥ देत जो है तास पितरहि देतादिवले डारि । है नहीं सन्देह यामें तुम्हें कहत बिचारि ॥ देत जो अरु लेतजो हैं करत तिनको नास । जगतमाहीं करत तिनके बंशको उपहास ॥ ऋषिनको आचारजे नित करतहैं सुनुभूप । औ सुजानत सर्वधर्महिं भर्मरहित अनूप ॥ देवताबर तिन्हेंजानतबिप्र अन्यहि नाहिं । बढ़त नितसों मोदहै सब सुरनके हियमाहिं ॥ पढ़नमें रत रहतजे अरु ज्ञानमें रतजौन । कर्ममें रत औ सु तपमें जौनरत बुधिभौन ॥ चारिविधिकेबिप्र ये तिनमाहिं सुनु बरभूप । ज्ञानमें रतजौन सोहैं श्रेष्ठ परमअनूप ॥ ताहिभोजन दीजिये बर श्राद्धमें बुलवाय । तासुआदर कीजिये अतिबचन कहि सुखदाय ॥ करतनिन्दा जौन द्विजहैं द्विजनकी सुनुतात । ताहि भोजन दीजिये नहिं श्राद्धमें अवदात ॥ करै जो द्विज कबहुं निन्दा द्विजनकी नहिं भूप । ताहि भोजन दीजिये बर श्राद्ध माहिं अनूप ॥ वेदपारग बिप्र तिनकी परीक्षा क्षितिकन्त । दूरिही ते कीजिये इमि बुद्धिमान भनन्त ॥ श्राद्ध भोजन योग्य नृप अनहितहु जो द्विज होय । श्राद्ध में बुलवाइये तौ परम सादर सोय ॥ दिये भोजन लक्ष मूरख द्विजन

को फलजौन। एक बुध को दियेभोजन मिलतहै फलतौन॥
इतिश्रीमहाभारतेदानधर्मेश्राद्धकल्पेषडाशीतितमोऽध्यायः ८६॥
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ कौन समयमें किहिकियो प्रथम श्राद्ध अभिराम। कहो श्राद्धको रूपहै कैसो सुनु बुधिधाम॥ कौन अन्न अरु कौनफल कौनमूल अरुकर्म। श्राद्धमाहिं नहिंग्रहण है कहिये तात सधर्म॥ भीष्मउवाच॥ प्रवृत्तिभई जिमि श्राद्धकी जौन समयके माहिं। कीन्हों जिहिं अरुरूप है तैसो सुनु मम पाहिं॥ अरिल॥ अत्रि सुऋषि अरु ब्रह्माके सुत। परम प्रताप वान मेधायुत॥ तिनके बंशमाहिं शुचि बुधिधर। दत्तात्रेयभये सुनु नृपबर॥ होतभये तिनके नन्दननिमि। कश्यपके तेजस्वी रबिजिमि॥ रामहोत भो ऋषि निमिके सुत। परम प्रतापवान शोभायुत॥ करिकै सो तप सहसबर्ष बर। भयो मृत्युको प्राप्त सुमतिधर॥ तब ऋषिबर निमिशोच सबिधिकरि। बिकलभयो अतिशोक माहिं परि॥ चतुर्दशी तिथि में तदनन्तर। करिकै शय्यादान सबिधिबर॥ मन बटोरि तजिशोक महानाहिं। करत भयो उत्पन्न सुज्ञानाहिं॥ तदनन्तर निमि सुऋषि महामति। सुबिधि श्राद्धकी बर उत्तम अति॥ तजि प्रमाद भो ताहि बिचारत। अरु ताको भोजन निरधारत॥ अन्न मूल अरु फल ताके बर। सब बिचारि हियमाहिं सुमतिधर॥ सुतिथि अमावस्यामें उत्तम। बिप्र बुलाय प्राज्ञ गुरु की सम॥ दोहा॥ आसन रुचिर बिछायकै सप्तद्विजनको स्वक्ष। सावांको भोजन दयो लवणबिना निमिदक्ष॥ सोरठा॥ करिकै दहिनी ओर अग्रभाग बर दर्भके। शुचिबिष्टरकी ठौर बिप्रन के पदतर धरे॥ दोहा॥ दक्षिणादिशि कुश अग्रकरि तिनऊपर बुधिधाम। गोत्रनाम उच्चारिकै दीन्हेंपिण्ड ललाम॥ तोमर॥ करिश्राद्ध निमि बुधिधाम। करिशोच हियमें माम॥ इमिभयो करत बिचार। सुनु भूप बुद्धिअगार॥ मुनिवृन्द परम प्रवीन।

नहिंश्राद्ध पूरब कीन॥ तिहिते सुब्राह्मण कोहि। नहिं जारिडारे मोहि॥ दोहा॥ करिकै हियमें शोचयह कियो अत्रिको ध्यान। ध्यान करतही आयगे ऋषिबर अत्रि सुजान॥ पुत्रशोक सों देखिकै निमिको कर्षित पर्म। समुझावतभो ज्ञानके कहिकै वचन अभर्म॥ विधिको बिरच्यो धर्मयह कीन्हों है तुमजौन। बिना स्वयम्भू श्राद्धकी बिरचि सकै विधिकौन॥ जयकरी॥ बिधिकी कही श्राद्धविधि जौन। तुमको कहत तात हम तौन॥ प्रथमस्थापि अग्निको पूजि। सो है तात मंत्रको कूजि॥ तदनन्तर पावक अरु सोम। वरुण निमित्त करै बरहोम॥ करि बहु भांति स्तुति बुधिधाम। पाणि जोरिकै करै प्रणाम॥ दोहा॥ पुनिकरि बिश्वदेवको पितरन सह आह्वान। द्विज बुलाय तिनके निमित पूजाकरै सुजान॥ तदनन्तर दै द्विजनको भोजन परम ललाम। पिण्डदानदै पितरकी अस्तुति करै बुधिधाम॥ करै बिसर्जन श्राद्धको तदनन्तर हे तात। निर्मलह्वै बैठोरहै करि स्वभाव अवदात॥ निजु बर्जितहैं श्राद्धमें अन्न मूल फल जौन। ते तुमको अब कहत हैं सुनहु तात बुधिभौन॥ जयकरी॥ कछू धान्ययुत तण्डुल जौन। श्राद्ध माहिं बर्जित हैं तौन॥ हिंगु प्याज अरु श्यामल लौन। लहसुन औ गृंजन बुधिभौन॥ कूषमाण्ड शित जीरा श्याम। बर्जित श्राद्ध माहिं बुधि धाम॥ बिषको शस्त्रलगे पशु जौन। मरत तासु आमिषहै तौन॥ श्राद्ध माहिं बर्जितहै तात। प्रज्ञावान कहत अवदात॥ रहत बराह ग्राम में तास। आमिष बर्जितहै बुधिरास॥ औ अंकुरको शाक सु जौन। औ अलाबु जम्बूफल तौन॥ श्राद्ध माहिं ये बर्जित सर्ब। सुनहु तात मतिमान अखर्ब॥ कोबिदारफल औबिट नौन। श्राद्धमाहिं बर्जित बुधिभौन॥ सिंघाड़ा अरु रुदन सुजान। बर्जितहैं ऋषि भणत महान॥ जो ये सर्ब श्राद्धके माहिं। होहिं पितर तौ मोदित नाहिं॥ श्राद्धमाहिं बर्जित हैं जौन। कहे

अन्न आदिक हम तौन ॥ रामगीती ॥ बिप्रको जे हनतहैं अरु करत मदिरा पान। करत चोरी हेमकी हैं जौनद्विज अज्ञान॥ पापसों गुरुनारि पै द्विजजौन कुमती जात। करैं इनचारौंन सों जो मित्रता हे तात॥ पांच ये हैं पतित प्रज्ञावान कहत महान। इन्हैंदीजै होन निकट न श्राद्धके मतिमान ॥ बिप्र कुष्ठी बर्ण सङ्कर ब्रह्मघाती जौन। श्वपच औ चाण्डाल तिमिहीं सुनहु बर बुधिभौन॥ श्राद्धके आगार के नाहिं निकट दीजैहौन। अत्रिकहि इहिभांति निमिको गये बिधिके भौन॥

इतिश्रीशांतिपर्बणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥

भीष्मउवाच॥ तोमर॥ सुनि पितामहके बैन। निमि सुऋषि प्रज्ञाऐन॥ बर श्राद्धकी बिधिबीच। भो प्रवृत होत निमीच॥ दोहा॥ प्रवृत भये ते श्राद्धकीबिधिमें निमिको पर्म। पितरयज्ञ करतेभये ऋषिबर सर्बसधर्म॥ रामगीती॥ ता अनन्तर वरण चारिहु भरे अतिहि उछाह। श्राद्धकीबिलगे बिधिसों सुनहु हे नरनाह॥ पितरके अरु सुरनके तबभो अजीरणपर्म। दृतभो दोऊनको सो दुःख सुनहु सधर्म॥ ता अनन्तर अतिहि पीडित पितर सह सुरवृन्द। सोमके गे पास सबही सुनहु कुन्तीनन्द॥ प्राप्त ह्वैकै सोमको इमि भये कहते सर्ब। श्राद्धके बहु अन्नसों हम लखो दुःख अखर्ब॥ आपु करिकै कृपा अतिही करि अजीरण दूरि। जानि हमको शरणमें तुम देहु आनँदभूरि॥ पितर सहित सुदेवतनके सोम सुनिये बैन। कह्यो इमि तुमजाहुबिधि के पास आनँदऐन॥ तिहारो दुखहरैंगे सब करैंगे कल्यान। जाहु ताते शीघ्रही तुम द्रुहिण पै मुदमान॥ बचन सुनिये पितर सहसुर गये बिधिकेपास। देखि तिनको मेरुगिरिके शृंगपै सहुलास॥ पितर सहसुर बचन ऐसे कहे हे भूपाल। श्राद्धकोबहु अन्न हमको व्यथादेत बिशाल ॥ सोव्यथाहरि कृपा करिकै देहु हमकोचैन। दयासागर सुनहु हे लोकेश आनँद ऐन॥बैन

सुनि ये कह्यो विधि इमि कृपा करिकै भूरि । अग्नि देहैं मोद तुमको ब्यथाकरिकै दूरि ॥ ता अनन्तर कह्योऐसे अग्नि हेनर नाथ । श्राद्ध अवजब होयगो तब सर्व हम तुम साथ ॥ तास भोजन करैंगे सुनु पितर सहसुर सर्ब । जायगी मम संगमें मिटिब्यथापरम अखर्ब ॥ अजीरणकी ब्यथा तुमको फेरिकैहै नाहिं बचन सुनि ये अग्निके बरबिधाताकेपाहिं ॥ पितर सहसुरभये मोदित परम हे नरराय । अजीरण जो हुतो सो सबगयो मिटि दुखदाय ॥ श्राद्ध में यहि हेतु ते जन परम प्रज्ञावान । भागपूर्बहि देत शिखिको सुनहु भूप सुजान ॥ दिये पूर्बहि भाग शिषिको पितर कारज माहिं । ब्रह्म राक्षस आय करिकै करत बाधा नाहिं ॥ और राक्षस जिते तेते सकत पास न आय । अग्नि ऐसो देतहै फल भाग पूरबपाय ॥ सुनहु ताते भागपूर्बहि देय शिषिको पर्म । पिण्ड दीजे पिताको सहप्रीति तात सधर्म ॥ ता अनंतर पितामहको देत पिण्ड सुठान । पितामहके पिताको पुनि दीजिये मति मान ॥ दोहा ॥ मनसों गायत्रीजपै पिण्ड पिण्डके माहिं । रजस्वलाको श्राद्ध में आवनदीजै नाहिं ॥ भंगहोहिं जिहिनारिके दोऊ कान सुजान । सोऊ आवन दीजियेश्राद्ध में न मतिमान ॥ सुधा ॥ अलपनीर पार लेय पितरको सुनाम । नदीपार होय करै तर्पण बुधि धाम ॥ तर्पणकै प्रथम पितर अपनेको चारु । जोरि पाणिकै प्रणाम ध्यानकै सुढारु ॥ दोहा ॥ सम्बन्धिनके पितरको तदनन्तर हे भूप । तर्पण करै सुबिधि सहित मतिमत कहत अनूप ॥ लगे शकटमें है वृषभचित्रबर्ण अभिराम । तिन्हैं पाय उतरत नदी सुनहु तात बुधि धाम ॥ कीन्हे तिनकी पुच्छपर तर्पण सहाबिधि पर्म । पितर मोद अति लहत हैं भूपति सुनहु सधर्म ॥ आयु बढ़ति बीरजबढत सम्पति बढ़ति महान । पितर भक्तिते सुनहुनृप पण्डुसुवनमतिमान ॥ प्रेत पिण्ड संबन्धते होत पितरहैं भूप । छूटतहैं प्रेतत्वते बुधवरक-

हत अनूप ॥ भई श्राद्ध उत्पात्ति जिमिकही तुम्हैं तिमि तात । दान बिधिहि अब कहतहमसुनहु तौन अवदात ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

युधिष्ठिरउवच ॥ दोहा ॥ सुनहु पितामह कहत तुम श्राद्धमाहिं अभिराम । ब्रती बिप्र बुलवायकै दीजै भोज्य ललाम ॥ भोजन कीन्हें श्राद्ध में ब्रती द्विजनको चारु । रहिहै ब्रत किहि भांतिसों कहिये बुद्धि अगारु ॥ भीष्मउबाच ॥ सोरठा ॥ यज्ञको सुब्रत जौन भोजन कीन्हें श्राद्ध में । तौनहिं सुनु बुधिभौन नष्ट होत नहिं अन्यब्रत ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ जौन दानकोदेत अरु जौनदानको लेत । तिनमेंको जनश्रेष्ठहै कहिये बुद्धिनिकेत ॥भीष्मउबाच॥ दान लिये गुणवानसो अल्पदोषहै होत । निर्गुण ते लीन्हें महा दोष होत बुधि पोत ॥ तिमिहिं दिये गुणवानको होत सु पुण्य महान । निगुणीको दीन्हें अलप होत पुण्यमतिमान ॥ सोरठा ॥ ताते दोउन माहिं जे गुणवतते श्रेष्ठ हैं । यामैं संशयनाहिं निश्चय करिकै कहतहौं ॥ दोहा ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं यकइतिहास अवाद । वृषादर्भ अरु सप्तऋषि नितको है संवाद ॥ रामगीती ॥ अत्रि कश्यप भरद्वाज सु औ बशिष्ठ सदार । सुऋषि बिश्वामित्र औ जमदग्नि पुण्य अगार ॥ अरु सुगौतम सुऋषि ये बरसप्त अति अभिराम । हुतीदासी एक तिनकी तासगण्डी नाम । हुतो भर्ता तासपशुसख शुद्रसुनु नरनाह । कामनाकै ब्रह्मलोकहि प्राप्तकीही माह ॥ तपस्याको करत ते सब फिरतहैं भू बीच । भानुकीसी प्रभा तिनकी सुनहु तात निभीच ॥ कछू दिन में भई होती अनावृष्टि महान । अतिहि पीडित भयोताते लोक यह मतिमान ॥ समयतौनहिं माहिं यकबर बिप्र मेधाधाम । कामनाकरि यज्ञकीबर सहित आदर माम ॥ बोलिसप्तहु ऋषिन को बिधि सहित करिकै यज्ञ । दक्षिणामें ऋषिनको सो देत भो सुतप्रज्ञ ॥ काल तौनहिं सो बश कालके भो होत । क्षुधासों

सन्तप्तते ऋषि सर्व प्रज्ञापोत ॥ भयेठाढ़े होत तिहिकोचहूंदिशिसों घेरि । परस्पर ते लगे देखन मृतकताकोहेरि ॥ ताअनन्तर गण्डिताके अंगऋषिबर सर्व । भये चुरवत क्षुधासों अति पायदुःख अखर्ब ॥ वृषादर्भ महीप तिनको देखिकै मगमाहिं भयो कहतो बैन ऐसे जायतिनके पाहिं ॥ वृषादर्भउवाच ॥ पुष्टिका जै लेहु धन तुम करहुयह मतिकर्म । याच्यमान सु बिप्र मोको लगत हैं प्रिय पर्म ॥ तुम्हें देहौं वृषभबर दश सरस अतिबल वान । परम सूधे श्वेत रँगके स्वक्ष सुखमावान ॥ धेनुबहु अरुरत्न देहौं और बहुधन चारु । करहु भक्षण आपु मति यह है अभक्ष उदारु ॥ ऋषयऊचुः ॥ दोहा ॥ लेत प्रतिग्रह नृपन को लागत है प्रिय पर्म । पै दुखकर फलकार है भूपति सुनहु सधर्म ॥ जौन प्रतिग्रह लेतनाहिं ते निर्मल बर बिप्र । तपसों करत प्रसन्नहैं आदित्यनको क्षिप्र ॥ बिप्रनके तपको महतदहत प्रतिग्रहभूप । नहीं प्रतिग्रह लेतहैं तातेप्रज्ञ अनूप ॥ दीजे अर्थी द्विजनको भूपप्रतिग्रह आप । कहिकै इमि वृषदर्भिको ऋषिबर धर्मकलाप ॥ करतभये प्रज्वलित अति पावकको हे तात । पैनपक्क भो मांसतब भयेबिपिनको जात ॥ अरिल ॥ वृषादर्भि के मंत्री मतिबर । शासनपाय सर्बकारजकर ॥ बनमें जाय उदुम्बरचुनिकरि । तिनकेमाहिंहेमकोगुणिभरि ॥ दयेऋषिनके आगेधरिजब।जानिगरू इमिअत्रिकह्योतब ॥ उदुम्बरनमें सुवरणभरि तुम । ल्याये सो छल जानिलियोहम ॥ दोहा ॥ जो ये फलहम लेहिं अति तृष्णाकरि हियमाहिं । पावैं तौ परलोक में उत्तमफलको नाहिं ॥ इच्छा जे परलोक में सुखकी करत महान । ते नप्रतिग्रह लेतहैं निजुकै कहत सुजान ॥ बशिष्ठउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ जिमि जिमिद्रव्यमिलत अभिमानी । तिमि तिमि तृष्णाहोति महानी ॥ तिहिते जन दुर्गतिके माहीं । निश्चय परत अनिश्चय नाहीं ॥ कश्यपउवाच ॥ भूकेमाहिं बस्तु

है जेती । लोभ न हटत लहेहू तेती ॥ ताते सुज्ञगहैं संतोषै । तृष्णा को कबहुं नाहिं पोषै ॥ भरद्वाजउवाच ॥ है प्रमाण तृष्णाको नाहीं । ताते तजेरहे सुखमाहीं ॥ गौतमउबाच ॥ दोहा ॥ ऐसी कोऊबस्तुनहिं लोकमाहिं अभिराम । तौनबस्तुको पायकै होय न तृष्णा माम ॥ तृष्णाजनकी सिन्धुसम कबहुं भरति है नाहिं । ताते सन्तोषै गहे होत मोदहियमाहिं ॥ विश्वामित्रउबाच ॥ पूर्णभये यककामना द्वितिय कामनाहोति । सिद्धिहोय जो द्वितियतौ तिसरी करति उदोति ॥ ताते सुवरण लेनकी करिहैं तृष्णानाहिं । यहितृष्णातेहोहिबहु तृष्णाहीकेमाहिं॥ जमदग्निरुबाच ॥ ते बुधतप धारण करत जेन प्रतिग्रह लेत । धारणते नहिंकरिसकत जे द्विजलेत अचेत ॥ प्राप्तहोतहै बिप्रको दानमाहिं धन जौन । हम निश्चयकरि कहतहैं रहत नहींहैतौन ॥ अरुन्धत्युबाच ॥ धन कोसंचयधर्मको कीजै कहत सु कोय । तपके संचय समनपै धनको संचय होय ॥ धनसंचय ते श्रेष्ठहै तपको संचय पर्म । तपके संचयको किये को नहिंहोत सशर्म ॥ गण्ड्युबाच ॥ डरत प्रतिग्रहते बली ये ऋषि निबल समान । ताते अतिही डरभयो मोहिय माहिं महान ॥ पशुसखउवाच ॥ पगे लोभ में मिलत नाहिं उत्तमपद अभिराम । ताते ब्राह्मण कहत हैं लोभ त्याग धन माम ॥ शिक्षारथ इन ऋषिनके लगोरहतमैं पास । यथा योग मैं करत हौं सेवासहित हुलास ॥ ऋषयऊचुः ॥ रहो कुशल सों दानसह वृषादर्भि महिपाल । जाके शासनसों कियो तुम छलइतो बिशाल ॥ मधुभार ॥ इमि कहि सुबैन । ऋषि सुमति ऐन ॥ फलत्यागि तौन । सुनु सुमति भौन ॥ बनमाहिं अन्य । गे सर्ब धन्य ॥ वृषदर्भि भूप । तिहिके अनूप ॥ मंत्री अपार । छलके अगार ॥ वृषदर्भि पासु । ते जायआसु ॥ इमिकहेवैन । नतकै सुनैन ॥ मंत्रिणऊचु ॥ अत्रादि सर्ब । ऋषिवर अखर्ब ॥ छलको सुजानि । छलभीति मानि ॥ फलतौन त्यागि । तहँते

सुभागि ॥ बनमाहिं अन्य । ते गये धन्य ॥ दोहा ॥ मंत्रिनके ये बचनसुनि वृषादर्भि महिपाल । जातभयो निजधामको करिकै कोप बिशाल ॥ चरणाकुलक ॥ गृहमें होमहि करतो भयो । वृषादर्भि भूपति क्रुधरयो ॥ कढ़ी अग्निते एक कराला । लोकभय करी नारि बिशाला ॥ ताहिदेखि भूपति हर्षानो । जान्योकार्य्य भयो मनमानो ॥ नाम यातुधानी तिहि केरो । राख्यो नृप मुद पाय घनेरो ॥ अतिहि कराल काल रजनीसी । ठाढ़ी होय मृत्यु सजनीसी ॥ नृपको कहति भई इमिबाणी । सोहें आय जोरि दोउ पाणी ॥ करौंकौन कारज मैं कहिये । कहतआपु संदेह न गहिये॥वृषादर्भि यहबाणी सुनिकै । कहतभये ताको इमिगुणिकै ॥ वृषादर्भिरुवाच ॥ सह अरुन्धती सप्तऋषिनके । दासी अरु दासीपति तिनके ॥ नाम अर्थको गुणिहिय माहीं । जाय बिपिन में तिनके पाहीं ॥ दोहा ॥ मारिसकै जो तिनहिं तू तौ तिन को करनाश । मन आवैतहँजाइयोकरि ममभोदप्रकाश ॥ सुनि भूपतिके बचनये करिकै क्रोध अखर्ब । तिहि बनको जातीभई हुते जहां ऋषिसर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ सह अरुन्धती सप्तऋषीवर । बिचरत हे जिहिबनमें बुधिधर ॥ बासवबनि संन्यासी आयो । तहांपीन परमासों छायो ॥ संगस्थूल श्वानको लीन्हें।आनँदभरो मन्दगतिकीन्हें॥देखिअरुन्धति सतीमहानी। कही ऋषिनको ऐसे बानी ॥ जैसोपीन अंग संन्यासी । अतिही भरो प्रभासोंखासी ॥ तैसे तुमक्षैहौकी नाहीं । कहौमोहिं गुणिकै हियमाहीं ॥बशिष्ठउवाच॥नित्यकर्म कीबेकीभारी । चिन्ता हमैंहोति हे नारी ॥ सो चिन्ता याके है नाहीं । कहततोहिं हम गुणिहिय माहीं ॥ ताते श्वानसहित संन्यासी । धरे पीनता परमाखासी॥ अत्रिरुवाच ॥ भयो क्षुधासों नष्ट बीर्य्यमम । ताते वेदहि भूलिगये हम ॥ चिन्तातातकी मोहियमाहीं । सोचिन्ता याकेहैनाहीं ॥ ताते श्वानसहित संन्यासी । धरेपीनता परमाखासी ॥बिश्वामित्रउवाच॥

धर्महमारो क्षीणभयोहै। ताते अतिहिय शोचछयो है॥ तौन शोच याकेहै नाहीं। मिलतभोज्य जहँ करततहांहीं॥ आलस युत अरु मूर्खमहाहै॥ तहँहीं जातजहां मनचाहै॥ तातेश्वान सहित संन्यासी। धरेपीनता परमाखासी॥ जमदग्निरुवाच॥ इंधन अरु सुअन्न सञ्चयकी। चिन्तानित अति दुखता मनकी॥ हमको प्राप्त रहतिहै जैसी। याको प्राप्तनहींहै तैसी॥ ताते श्वानसहित संन्यासी। धरेपीनता परमाखासी॥ कश्यपउवाच॥ जिमि कुटुम्बके लोगहमारे। कोहूनहीं टरतहैंटारे॥ देहुभोज्य यहभांति पुकारैं। तातेहम अतिचिन्ता धारैं॥ सोचिन्ता याके है नाहीं। कहततोहिं हमगुणि हियमाहीं॥ ताते श्वानसहित संन्यासी। धरेपीनता परमाखासी॥भरद्वाजउवाच॥ नारीकीनिन्दा हमसुनिकै। शोकहि प्राप्तहोत शिरधुनिकै॥ तौनशोक याकेहै नाहीं। कहत तोहिं हम गुणिहियमाहीं॥ ताते श्वानसहितसं-न्यासी। धरे पीनता परमाखासी॥ गौतमउवाच॥ मृगकी एक चर्मको राखै। तीनबर्ष लौं बीचननाखै॥ तासकष्ट हमकोहै जै-सो। याकोकष्ट प्राप्तनहिं तैसो॥ ताते श्वानसहित संन्यासी। धरे पीनता परमाखासी॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा॥ श्वानसहित सुर राय तिन ऋषीनको देखिकै। तिनके निकटै जाय चरणछुवत भो पाणिसों॥ चरणाकुलक॥ तदनंतरफल मूलनकाजै। बनमेंगे ऋषि सह परिब्राजै॥ बनके माहिं फैलिचहुं ओरै। लगे सबै फल मूलबटोरै॥ तेहां एक सरोवर देखी। चारुघने वृक्षनसों भेखी॥ एकाहिबाट बन्यो जिहिमाहीं। विहँग बिहार करैं तिहि पाहीं॥ स्वच्छनीर नीरज बहुफूले। तिनपै गुंजतमधुपअतूले॥ वृषादर्भ छलकर महि पाल। तासु प्रेरिता परमकराल॥ नाम यातुधानी तिहि केरो। करिकै सो तिहि पासबसेरो॥ तौनसरो-वरकी दिनराती। रक्षाकरत कतहुं नहिं जाती॥ तामें नीरज विसके काजै। गये सुऋषि सब सह परिब्राजै॥ तहँवांदेखिया-

तु धानीको ॥ कहत भये ऐसी बानीको ॥ को तूहै तवनाम कहा है। बैठीतू किहि काजइहांहै ॥ सुनिकै यातुधानि यह बानी ।बोली ऐसे क्रूर महानी ॥ यातुधान्युवाच ॥ दोहा ॥ जोमैंहौं सो हौं कहा बूझतहौ तुम मोहिं । सरोवरहिकी रक्षिका मैंहौं परत न जोहि ॥ ऋषयऊचुः ॥ है न हमारे पासकछु हमहैं क्षुधितबिशाल । जोतू आज्ञादे हमें तौहमलेहिं मृणाल ॥ यातुधान्युवाच ॥ तुमसब निज निज नामकोमोको अर्थ बताय । लेहु मृणालनकोपरम सरोवरहिमें जाय ॥ तोमर ॥ तिहि यातुधानिहि जानि । इमिकह्यो अत्रि बखानि ॥ अत्रिरुवाच ॥ अदमृत्युको अभिमान । हरिलेत सब केप्रान॥ दोहा ॥ तातेरक्षाकरत हम तौनहेतुतेस्वक्ष । अत्रिनाम भो ख्यातहै लोकनमाहिं प्रतक्ष ॥ यातुधान्युवाच ॥ धारण करिबे योग्यनहिं ममगतिसों तवनाम । जाहु सरोवर माहिं तुम बिस लीबेअभिराम ॥ बशिष्ठउवाच ॥ मैं बसुमान महान अरु सब मेरे बशमाहिं । यातेनाम बशिष्ठहै मैं काहूबश नाहिं ॥ यातुधान्युवाच॥ तो सुनाम व्युत्पत्तिको धारिसकत मैं नाहिं । ताते तुमहूं लेन बिस जाहुसरोवरमाहिं ॥ कश्यपउवाच ॥ रामगीती ॥ कश्यनाम शरीरकोहै ताहि पालतजौन । ताहिकश्यपकहतहैं अवगाहिकै बुधि भौन ॥ है हमारे नामकी ब्युत्पत्ति यह अभिराम । है हमारो नाम इहितेख्यातकश्यपश्राम ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिन अति तव नामकी व्युत्पत्ति जोहै पर्म । समुझि सो नाहिं परत मोको सुनहु सुऋषिसधर्म ॥कमललीबेजाहुशीघ्रहिसरोवरकेमाहिं । नेकुठाढ़े होहुमति तुम सुऋषि मेरेपाहिं ॥ भरद्वाजउवाच ॥ करत पोषण सुतनको अरु शिष्यगणको पर्म । तिमिहि पोषण नारिको करि करत नित्य सशर्म ॥ सुरनहूंको करतपोषण नित्यहोय अभर्म । औरते मैं भयो औरहि कियोपालन पर्म ॥ नामहै बिख्यात याते भरद्वाज हमार । नामकी ब्युत्पत्ति सुनिकै यातुधानिसुढार ॥ कह्योइमि तव मामकी ब्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवर में

जायकै तुम लेहु विससुखदाय ॥ गौतमउवाच ॥ कहत बुधवर भूमिको अरुस्वर्गगो मो नाम । दमन तिनको करत ताते मम सु गौतमनाम ॥ गौदमहिको कहत गौतम यातुधानि सुजानि । है हमारे नामकी ब्युत्पत्तियहतू जानि ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी ब्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवरमें जायकै तुम लेहु विस सुखदाय ॥ बिश्वामित्रउवाच ॥ मित्र बिश्वेदेवको हौं परम ताते ख्यात । नाम बिश्वामित्र मेरो भयोहै अवदात ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी ब्युत्पत्ति समुझि नजाय ॥ सरोवर में जायकै तुम लेहुविस सुखदाय ॥ जमदग्निरुवाच ॥ याज हविको नामहै अरु हविहि भक्षत जौन । जमत तिनको नामहै हैं देव ते मुदभौन ॥ अग्निमाहीं जमत प्रगटत यातुधानि सुजानि । तिमिहि प्रगटत अग्निमें हम सत्य मनमें जानि ॥ नाम मेरो ख्यातहै जमदग्नि याते स्वक्ष । अग्निकीसी प्रभामेरी लसति देखु प्रतक्ष ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तवनामकी ब्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवरमें जायकै तुम लेहुविस सुखदाय ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ करतिहौं अनुरोध पतिके चित्तको अवदात । है हमारो नाम याते अरुन्धति विख्यात ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिन है तव नामकी ब्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवरमें जायकै तुम लेहुविस सुखदाय ॥ गण्डोवाच ॥ है हमारे बदनके यक देशमाहीं गंड । ख्यातहै गंडो हमारो नाम याते चंड ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी ब्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवरमें जायकै तुम लेहुबिस सुखदाय ॥ पशुसखउवाच ॥ करत रक्षा पशुनकी लखि पशुनको अभिराम । पशुनको हौं सखा याते मम सुपशुसख नाम ॥ यातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी ब्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवर में जायकै तुम लेहुविस सुखदाय ॥ शुनःसखउवाच ॥ कही अपने नामकी ब्युत्पत्ति इन जिहिभांति । नामकी ब्युत्पत्ति मोसों कहीतिमि नहिं जाति ॥ नामहै शुन धर्मको मुनि सखा

ताके आम । मुनिनको मैं सखायाते शुनःसख मम नाम ॥ यातुधान्युवाच ॥ कहो अपने नामकी ब्युत्पत्तिको तुम फेरि । बचन सुनि ये शुनःसख इमिकह्यो ताको हेरि ॥ कही अपने नाम की ब्युत्पत्ति मैं यकबार । ग्रहणते नहिं करी ताते मारिहौं तोहिंदार॥ शुनःसख इमि बचन कहिकै दण्डसों करिक्रुद्ध । यातुधानिहि मारि ऊरी भूमिमें नृपबुद्ध ॥ मारिताको शुनःसख बर टेकि भूमें दण्ड । खरेहोते भयेबनमें धरे तेज सचण्ड ॥ ता अनन्तर सर्ब मुनिवर लेयकै बिस पर्म । सरोवरके कूलपै धरि स्नानकरि सह धर्म ॥ सबिधि तर्पण कै सुआये कूलऊपर सर्ब । तहांबिस देखे न ताते भयो दुःख अखर्ब ॥ क्षुधारत हम खनेबिस बहु महत श्रमसों चारु । कूल पै ते अबहिंते सब लये किहि अघकारु ॥ बचन ते इहिभांति कहिकै होथ शंकामान । लगे पूंछन परस्पर तब सर्बमुनि मतिमान ॥ दूरकीबे शंककीबे लगे शपथ सुजान । क्षुधासों अतिभये पीड़ित धरेधीर महान ॥अत्रिरुवाच॥चरणाकुलक॥ परसकरै सुरभीको पदसों । तजेवेद दुर्मतिके मदसों ॥ मूत्र पुरीष किये रबि ओरै । अनध्यायमें पढ़ै ससोरै ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो । होयकमल के चोरहि तैसो ॥ बशिष्ठउवाच ॥ होय शरण में ताकोमारे । संन्यासीकै नारिनिहारे ॥ अरुधन अधिकप्रजा सों लीन्हे । राखिश्वान गण मृगया कीन्हे ॥ अन्तकाल में प्राणी केरे । लिये लोभसों द्रब्य घनेरे ॥ होतप्राप्त पातकहै जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ कश्यपउवाच ॥ धरी अन्यकी बस्तु छपाये । दिनमें रति कीन्हे मद छाये ॥ बृथा मांसको भोजन कीन्हें । अरुकुपात्रको दानहि दीन्हें ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ भरद्वाजउवाच ॥ नारि ज्ञाति अरु सुरभीमाहीं । दायाकरै जौन जन नाहीं । अरु जो ब्राह्मणको संहारै । हियमें अधरमको न बिचारै ॥ ताहि होतहै पातक जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ गुरुके नामहि नीचे करिकै ।

पढ़ैवेद गर्बै बहु धरिकै ॥ ताहि होत पातकहै जैसो । होय कमल
के चोरहि तैसो ॥ जमदग्निरुवाच ॥ किये पुरीष सुनीर किनारे । क-
रिकैद्रोह गऊको मारे ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो । होय कमल
के चोरहि तैसो ॥ करै तासु पोषण नितनारी । सबसों होहि
द्वेषता भारी ॥ ज्ञातिमाहिं सो जाय निकारो । लयोहोय जिहि
कमल तिहारो ॥ गौतमउवाच ॥ बेचेसदा सोमलतिकाको । अरु
छोड़े वर वेद पढ़ाको ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो । होय कमल
के चोरहि तैसो ॥ तास मृत्यु सह सब गृह वारे । रहैं सदाहीं
परम दुखारे ॥ तिनको पालै जन कोउ औरे । जो तव कमल
कन्दको चोरै ॥ दोहा ॥ पढ़ै अशुद्ध सुवेदको होतपाप है जौन ।
जोचोरी तव कमलकी करै लहै सो तौन ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ चरणाकुलक ॥
पतिकोजौन प्रसन्न न राखो । नितहि कुबैन सासुको भाखो ॥
रहो जन्मभरि परम दुखारी । लयोहोय बिस जौनी नारी ॥
गण्डोवाच ॥ मोललेय कन्याको दीन्हें । पतिसों परम विरोधहि
कीन्हें ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥
पशुसखउवाच ॥ पुत्रजन्मको मुद मतिपावो । निधनी रहो दुःख सों
छावो ॥ लहोदासताके अपमानै । करीहोय बिसचोरीजानै ॥ शुनः
सखउवाच ॥ धर्ममार्गमें नितहीचालो । राजाहोय प्रजाको पालो ॥
नितरतरहो वेदकेमाहीं । धरो कुमारगमेंपदनाहीं ॥ वेदवानद्विज
कोनिजकन्या । बिधिवतदेहुसुरूपाधन्या ॥ पावोजीति तौन द-
शदिशिकी । करीहोयजिहिचोरीबिसकी ॥ ऋषयऊचुः ॥ जोतुमकरी
शपथसोनीकी । है शुधजनको दायकश्रीकी ॥ याते हमकोजानि
परयोहै । चोरकर्म यहतुमहिं कस्योहै ॥ शुनःसखउवाच ॥ सत्यकही
बाणीजोतुमहै । बिसकीचोरी कीन्हींहमहै ॥ कीन्हेंबिसहम गुप्त
तिहारे । ते सबदेखहु पासहमारे ॥ कीबे हमसुतुम्हार परीक्षा ।
बिसकीचोरीकरीअनिक्षा ॥ जानहुमोको मघवाहौं मैं । मारीयातु
धानिकाको मैं ॥ जो मैंयाकोहनतौनाहीं । हनतीतुम्हैंसरोवरमाहीं ॥

मैं तुम्हरे रक्षारथ आयों । मारि यातुधानिहि सुख पायों ॥ तुम अलोभते अक्षय लोकहि । रहिहौ प्रापत होय अशोकहि ॥ दोहा ॥ उठिकै तुम अब क्षिप्र बिस अपने अपने लेहु । सप्त ऋषिनको कहतमे मघवा सहित सनेहु ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ मुनिवर सुनि मघवाकी बानी । लैबिस भे प्रसन्न शुचिज्ञानी ॥ तदनन्तर आनँदसों रये । मघवासह मुनि दिवको गये ॥ जानि ऋषिनको अति गुणवाना । वृषादर्भि महिपाल सुजाना ॥ महत पुण्यइनको दीन्हेंते । ह्वै है यह बिचार कीन्हेंते ॥ प्रथमैंलखिधन दीबेलाग्यो । सादर परम मोदसों पाग्यो ॥ सप्तऋषिन जब धननहिं लीन्हों । धनदीबे तब नृप छलकीन्हों ॥ तातेदान गुणिहिको दीजै । है यहनृप सिद्धान्तपतीजै ॥ यहआख्यान पढ़ीजो कोई । ताको अर्थ सिद्धि सब होई ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मेएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

चरणादोहा ॥ यहि प्रसंगमें कहत हौं इकइतिहास अनूप । तामेंहै वृतान्त शपथको सुनहु युधिष्ठिर भूप ॥ अरिल ॥ पश्चिम दिशामाहिं नरनायक । तीर्थ प्रभास परम अघघायक ॥ तामधिआय सुऋषि मिलि मतिवर । करत भये यहमंत्र सुमुदकर ॥ दोहा ॥ पुण्यमयी यह भूमि जो दायक मोद अखर्ब । तीरथयात्राको चलैं तामें मिलि कै सर्ब ॥ चरणाकुलक ॥ भृगुबशिष्ठ गौतम हर्षाने । भरे तेजसों परम महाने ॥ शुक्र अंगिरा पर्वत नारद । बरततेजसों रविकी भारद ॥ कवि कश्यप गालवमति माना । भरद्वाजअष्टक मुदवाना ॥ बालखिल्यआनँद सोंपागे ॥ विश्वामित्र तिमिहिं अनुरागे ॥ तिमिहिं दिलीप नहुष शिवि राजा । धुन्धुमार पुरुसमुद दराजा ॥ नृपययाति अरु अम्बरीष वर । अधरमदर नित परमधर्मकर ॥ ये सब इन्द्रहि करिकैं आगे । तीरथकरनचले मुदपागे ॥ तीरथ करत करत भू माहीं । आये नदी कौशिकी पाहीं ॥ सविधि स्नानतामाहींकरिकै । गये

ब्रह्मसरको मुद धरिकै ॥ करि स्नानतामें बड़भागे। कमलकन्द को खोदन लागे ॥ दोहा ॥ खोदि खोदिकै कन्दतब धरतभयेतट माहिं।तहँ अगस्त्य अपनो खन्यो कन्दलखतभे नाहिं ॥ चरणाकुलक ॥ तब अगस्त्य चिन्तासों छाये। ऋषिगणको इमि बैन सुनाये॥ कमलकन्द मेरो किहि लीन्हों। सब में यह अधर्म किहि कीन्हों ॥ चोरी करन योग्य तुम नाहीं। सत्यकहतहौंऋषिगण माहीं॥ताते कन्द हमारोदीजै। अधरम गुणिकै लोभन कीजै ॥ कुत्सितकालधर्मकोनाशै। कल्मषकोसो करतप्रकाशै॥ सुनतरहे सोई अब आयो। याते दुख ममहीमें छायो ॥ ह्वै है अब अधरम भू माहीं। लखिहैं भूपति धर्महि नाहीं ॥ बिप्र लोभही में बहुधरिकै। ग्राममाहिं ऊंचेस्वर करिकै ॥ वेद सुनावैंगे शूद्रनको। धर्म माहिं नहिं धरिहैं मनको ॥ करिहैं सबसब के अपमानै। धर्महुँ छल हिय माहिं महानै ॥ दोहा ॥ बलीनिर्ब लहि लूटिहैं दया करेंगे नाहिं। ताते अब हम जायँगे तुर पर लोकै माहिं ॥ चरणाकुलक ॥ बचन सुऋषि अगस्त्यके सुनिकै। कहत भये सब ऋषि शिर धुनिकै ॥ चोर्यो हम नहिं कमल तिहारो। आपुन यह हिय माहिं बिचारो ॥ कहि अगस्त्य सों ऐसे बानी। हिये शपथकी इच्छाआनी ॥ पुत्र पौत्रन सह दुख पागे। शपथकरन ऋषि अरु नृप लागे ॥ भृगुरुवाच ॥ जिहिंतव पुष्कर लीन्हो ह्वैहै। सो अपमान दुःखसों ध्वैहै ॥ वृषादिकनको सो पलखैहै। तेजतास ननमें नहिंरैहै ॥ वशिष्ठउवाच ॥ लयोहोय जिहिकमल तिहारो। होहु महा सो दुर्मतिवारो ॥ होयनगरमें सो संन्यासी। घरघर फिरिकै लहहुउदासी ॥ कश्यपउवाच ॥ दोहा ॥ लयो होय जिहिकमल तव यह तीरथके कूल। बेचोसोसबवस्तु को धरिकै लोभ अतूल ॥ धरी अन्यकीवस्तु जो करोलोभतिहि नाहिं। झूठोसाक्षी होहु अरु करोधर्मको नाहिं ॥ गौतमउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ काम क्रोधमाहीं रतरहो। द्विज ह्वै कृषीकर्म कोग-

हो ॥ होहु मत्सरी दुर्मतिधारो । लयोहोय जिहिकमल तिहारो॥ अंगिरउवाच ॥ वेद माहिं झूठहि निलिभाखो । पाससदाश्वानन को राखो ॥ रहो अपावन द्विजको मारो । लयोहोइ जिहिकमल तिहारो ॥ धुन्धुमारउवाच ॥ शूद्रामाहिं पुत्र उपजावो । हितु उपकारण मन में लावो ॥ आपुहि भोजन करै निरायो । लयोहोय जिहिकमलतिहायो ॥ पुरुरुवाच ॥ करो भोज्य नारी को ल्यायो । रहो आपु आलस सों छायो ॥ होहु वैद्यसो दुर्मति बायो । लयो होय जिहिकमलतिहायो ॥ दिलीपउवाच ॥ एकहि कूप होय जामाहीं । होय न सरिता ताके पाहीं ॥ ऐसो ग्राम बसै द्विज तामें । नितिहिं विहार करै शूद्रामें ॥ तिहिकी गतिको सो पद धारो । लयो होय जिहिंकमलतिहारो ॥ शुक्रउवाच ॥ भोजनकरो वृषापलकेरो । होहु भूमि नायक को चेरो ॥ रतिकीबो दिनमाहिं बिचारो । लयो होय जिहिकमलतिहारो ॥ जमदग्निरुवाच ॥पढ़ो अनध्ययनके माहीं । कहो सर्वदा बैनवृथाहीं ॥ शूद्रश्राद्धमेंभोजनकरो । अधरमसे कबहूं मति डरो ॥ कहेहू न सुमगे पगधारो । लयोहोय जिहि कमल तिहारो ॥ शिविरुवाच ॥ दोहा ॥ करोअन्य के यज्ञमें बिघ्नहोयकै यज्ञ । लयोहोय जिहि चोरि तव कमल सुनहुं ऋषिप्रज्ञ ॥ ययातिरुवाच ॥ किये अनादर वेदको होत प्राप्त अघजौन । करीहोय जिहि कमलकी चोरीलहै सुतौन ॥ चरणाकुलक ॥ लै धन जो बिद्याहि पढ़ावै । अतिथि होय पुनिगृह में आवै ॥ ताहि होतहै पातक जोई । होयकमल के चोरहि सोई॥ अम्बरीषउवाच ॥ नारिज्ञाति अरु गोके माहीं । दायाकरै जौन जन नाहीं ॥ अरु जो ब्राह्मणकोसंहारै । हियमें अधरमको न बिचारै॥ ताहि होतहै पातक जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ नारदउवाच ॥ श्रेष्ठनकी निन्दाको कीन्हें । अरु निर्वलको धन हरि लीन्हें ॥ होत प्राप्त है पातक जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ अंगिराउवाच ॥ झूठहि कहत रहै दिनराती । भूरि गर्वसोंकरि

मतिमाती ॥ साधुजननसों करैविरोधै । कबहुं सुमारगको नहिं सोधै ॥ देय कन्यकाको लै मोलै । करतरहै निति पापअतोलै॥ तिहिको प्राप्तहोति गति जैसी । होय कमल के चोरहि तैसी ॥ कविरुवाच ॥ रवि दिशि विष्ठा मूत्रहि कीन्हें । आये अतिथिहि भोज्य न दीन्हें ॥ जोकोउ होय शरणके माहीं । कीन्हेंताकी रक्षा नाहीं ॥ ताड़े पदचलाय सुरभीको । कीन्हेंबहुत लोभमेंजीको ॥ प्राप्तहोत जनको गति जैसी । होय कमलके चोरहि तैसी ॥ बिश्वामित्रउवाच ॥ शूद्रनके मखको करवाये । तिनको दियो बहुत धन पाये ॥ प्राप्त होत जनकोगति जैसी । होयकमलके चोरहि तैसी ॥ दोहा ॥होयपुरोहित नृपनको कमल लयेजिहिहोय । लहो अनादर सर्वदा रहो दुःखसों भोय ॥ पर्वतउवाच ॥ राखो श्वान जीविका काजै । भाखो नित्य असत्य दराजै ॥ फिरोचहूंघा खरपै चढ़िकै । गिरो बंशते मदसों मढ़िकै ॥ दानाध्यक्ष होहु यश ढारो । लयो होय जिहिकमलतिहारो ॥ भरद्वाजउवाच ॥ झूठ बोलि सबपाप बटोरै । चलै सुमारगके नहिं धोरै ॥ अरु जो गहैकूरताभारी । कमल चोर लहु गतिहीबारी ॥ अष्टकउवाच॥ होहु सदा सो परतिय गामी । होहु मूर्ख अरु अघकृतनामी ॥ भूलेहूं न सुमग पगधारो । लयो होय जो कमलतिहारो ॥गालवउवाच ॥ दिये दानकोनित्यबखानो । देवकार्य्यमें चितमतिआनो । होहुपापकृत अयश पसारो । लयोहोय जोकमलतिहारो ॥ अरुन्धत्युवाच॥करीसासुकीनित्यअवज्ञा । पतिप्यारी मतिहोहिअप्रज्ञा॥ प्रियको भोजन बिना दियेहीं । भोजन करौ आपु पहिलेहीं ॥ रहीजन्म भरि दुखसों भारी । लीन्हों होय कमल जिहि नारी॥ बालखिल्याऊचः ॥ कार्य्य जीविकाके दुखभारे । सहि करिकै सुग्राम के द्वारे ॥ रहो एकपदसों नित ठाढ़ो । धर्मछोड़ि अधरममें बाढ़ो ॥ क्रूरभावको नित्य पसारो । लयो होय जो कमल तिहारो॥ शुनःसखउवाच ॥ ह्वै संन्यासी राखहु नारी । जगबिख्यात होहु अ-

धिकारी ॥ प्रात अग्निहोत्रहि तजि सेवो । निशिदिन वृथा शयनमें खोवो ॥ धर्मगतिहि कबहूं न बिचारो । लयो होय जो कमल तिहारो ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ करी ऋषिनकी शपथ सुनि ह्वै सहर्ष सुरराय ॥ ऋषि अगस्त्यको देखिकै कोपित कह्यो कसाय ॥ शक्रउवाच ॥ शुचि ह्वै पढ़ो सदाहीं वेदै । होहु धर्मकर रहहु अखेदै ॥ शीलमान सो होहु महानै । देहु सुताबर द्विजहि सुजानै ॥ समुद सु ब्रह्मलोक को जावो । बहुप्रकारके आनँद पावो ॥ चलहु सुमारग सुयश पसारो । लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ अगस्त्यउवाच ॥ जोतुम शपथकरी सुरराजा । सो तो आशिर्वाद दराजा ॥ है न शपथ याते हम चीन्हें । तुमहीं कमल हमारोलीन्हें ॥ देहुकमल अबहीं तुममेरो । चीन्हेंतुम्हेंकहाशशि हेरो ॥ इन्द्रउवाच ॥ सुनि वे धर्म कमल हम लीन्हों । लोभ नेकुही में नहिं कीन्हों ॥ ताते क्रोध न मनमें कीजे । कमल आपनो यह तुम लीजे ॥ सुनिमैं धर्म महतसुख पायो । शपथ ब्याज ऋषिगण को गायो ॥ करहु क्षमा अपराध हमारो । लागत डर है मोहिं तिहारो ॥ सुनि अगस्त्य मघवाकी बानी । अति प्रसन्नताही में आनी ॥ लेत भये नीरज ऋषिअपनो । ताते मिटो क्लेशको तपनो ॥ तदनन्तर ते ऋषि बड़भागे । अन्य तीर्थकोगे मुद पागे ॥ बिधिवत पर्व पर्वके माहीं । तीर्थमाहिं वह देवत पाहीं ॥ यह आख्यान पढ़ैजो कोई । ताके मूरख सुत नहिं होई॥ कौनहुं आपत पास न आवै । जरा अवस्था नाहिं नगिचावै ॥ होती नष्ट कलुषता भारी । सम्पति गृहते टरति न टारी॥दोहा॥ अन्तकाल जबहोय तब जाहि स्वर्गके माहिं । भरो भूरि आनन्दसों रहै सुरनके पाहिं ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेशपथविधौनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ श्राद्ध कर्म में करत जन उपानहनको दान । तिमिहिं छत्रको करतहैं श्रद्धा सहित महान ॥ तीरथ औ

व्रतहून में देत सबिधिहैं पर्म। ताते पूछत हौं तुम्हैं कहिये मोहिं सधर्म ॥ ऊपानह औ छत्रकी प्रवृति करीहै कौन। औ किहि-बिधि उत्पन्न भे कहो तात बुधिभौन ॥ श्राद्ध तीर्थ अरु ब्रतन में इन्हैं देत किहि अर्थ। कहो मोहिं बिस्तार कै सुनिये तात समर्थ ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ जिहिं बिधिसों उत्पन्न भे ऊपानह औ छत्र। अरुजिहि बिधिसों प्रवृत भे भे प्रसिद्ध सर्बत्र ॥ सो बिधि तुम सों कहत हौं मैं बिस्तरित महान। तजि प्रमाद ताको सुनहु पंडुसुवन मतिमान ॥ यहि प्रसंग में कहतहौं यक इतिहास अवाद। दिनकर औ जमदग्निको तामें है सम्वाद ॥ चरणाकुलक ॥ ऋषि जमदग्नि मोदसों पागे। धनु गहि क्रीड़ा करनेलागे ॥ शर ऋषिबर सुचलावत ज्यों ज्यों। दौरि रेणुका ल्यावति त्यों त्यों ॥ जब मध्याह्न भयो तब भारी। तपति भई ताते सो नारी ॥ भई बिकल ह्वै ठाढ़ी तरुतर। तिहिते भई अबेर महतडर ॥ भयो रेणुका के हियमाहीं। आईकांपति ऋषि के पाहीं ॥ तब ऋषिकह्यो ताहि क्रुधसेती। लाईबार कहातैं एती ॥ रेणुकोवाच ॥ सुनु ऋषिराय क्रोध जिन कीजै। कारण देरी को सुनिलीजै ॥ तप्त भये शिरअरु पद मेरे। परम तेजसों दिनकर केरे ॥ ताते गईवृक्षतर भागी। भूरिबिकलताई सों पागी॥ जबलौं गई बिकलता नाहीं। तबलौं आय सकिन तव पाहीं ॥ यह कारणहै देरीकेरो। है अपराध कछू नाहिं मेरो ॥ सुनिकै यह नारीकी बानी। रिस करिकै ऋषिराय महानी ॥ दोहा ॥ कहत भये इमिनारिसों गहि निषंगकोदण्ड। मैं गिराय देहौं रबिहि बर शरगण सों चण्ड ॥ चरणाकुलक ॥ कहिइमि सुऋषि चढ़ाय सु भौंहैं। बैठत भये भानु के सौंहैं ॥ अग्निसरिस जमदग्निहि देखे। ऋषिको क्रोधदाप हिय लेखे ॥ मारतण्ड द्विज को बपु धरिकै। आय कह्यो इमि बिनती करिकै॥ मारतण्ड तव कहा बिगार्यो। ताते इतो क्रोध तुम धार्यो ॥ भानु किरणसों जल

कोकरषै। ताहि फेरिबिर्षा में बर्षे॥ अन्नहोतहै भूमें ताते। रहत समुद मनुजादिक जाते॥ होत धर्म बहुविधि सुमहींमें। पढ़त शास्त्र श्रुति द्विज सुखहींमें॥ होति बित्त संचयता भारी। बहु बिधि दान करत नरनारी॥ तिहिते भानुपैन तुम रोषो। मेरे कहे रोषको मोषो॥ दोहा॥ कीन्हों चहत प्रसन्न हम तुम्हैं सुनहु ऋषि पर्म। मिलि है भानु निपात ते तुमको कहा सधर्म॥ युधिष्ठिरउवाच॥ भासमानके सुनिबचन ऋषि जमदग्नि सुजान। कहा करतभे सोहमैं कहिये तात सुजान॥ भीष्मउवाच॥ चरणाकुलक॥ भासमानकी सुनिकै बानी। ऋषि न शान्तताही में आनी॥ तब रबिनौमि जोरिकैपाणी। कहतभये इमि ऋषिकोबाणी॥ चलत रहतहै भानुसदाही। कैसे अचल जानिहौ ताही॥ अचलबिना जाने तुमएजू। करिहौकिमि निपात रबिकोजू॥ जमदग्निरुवाच॥ सुनहु भानु थिरताको तेरी। देखतिज्ञान आंखि हैं मेरी॥ अर्धमेष मधि दिनके माहीं। तब थिरता है होति सदाहीं॥ सूर्यउवाच॥ निश्चय तुम जानोगे मोहीं। यातेकहत ऋषे हम तोहीं॥ जानहु मोहिं आपु अपकारी। करहुकृपाहौं शरणातिहारी॥ भीष्मउवाच॥ तब जमदग्नि कह्यो इमि हँसिकै। होहु विकल जिन डरमें धसिकै॥ नम्रताहि अब देखि तुम्हारी। मिटीरोषता सर्व हमारी॥ तब किरणन सों युत पथमाहीं। दुःखहोय जीवनको नाहीं॥ ऐसोकछू बिचार बिचारो। मिटैरोष तब सर्वहमारो॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ ऐसेकहि चुपह्वै रहे ऋषि जमदग्नि सुजानु। छत्र उपानह देतभे तब ऋषिवरको भानु॥ छत्र उपानह देयकैऋषिजमदग्निहिपर्म। मारतण्ड इमि कहत भे भूपति सुनहु सधर्म॥ शिरकीरक्षाछत्रसों ह्वैहै हेऋषिराय। उपानहनसों होयगी चरणनकी सुखदाय॥ अबसों ह्वैहैलोकमें इनको ऋषैप्रचार। ह्वैहैइनको दानफल अक्षय सुमति अगार॥ भीष्मउवाच॥ छत्र उपानहकी प्रवृति कीन्हींरबि इमिताता।

उत्तम इनके दानको पुण्यलोक बिख्यात ॥ रामगीती ॥ उपानह अरु छत्रको तुमकरहु तातेदान । धर्मअक्षय प्राप्ततुमको होयगो मतिमान ॥ छत्रजेजन देतद्विजको शुभ्रसुखमाऐन । प्राप्त ताको होतहै परलोकमें बहुचैन ॥ बसत सुरपति लोकमाहींदेवतनकेसाथ । हैनयामें नेकसंशय सुनहु हेनरनाथ ॥ देतद्विजको तपनिमाहीं उपानहजनजौन । लहततौनहु देवतनकोलोक आनँदभौन ॥ बास बहुदिन स्वर्गमेंकरि ताअनन्तरपर्म । जात सो गोलोकमाहीं सुनहुतातसधर्म ॥ दोहा ॥ छत्रउपानहदानको फल जोहै अभिराम ॥ सोसंपूरण हमकह्यो तुमको नृप बुधिधाम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ छत्रउपानह दानको सुन्योसर्व फलतात। अवगृहस्थ धर्महिकहो हमको तुमअवदात ॥ कहाकियेसों मनुजके होयऋद्धि बहुपर्म । सोऊतुम हमसोंकहो करिकै कृपा सधर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ यहिप्रसंगमें कहतहौं यकवृत्तान्त महान । बासुदेव अरु भूमिको हैसंवाद सुजान ॥ सोरठा ॥ हमसों पूछो जौन सुनहु धर्मधर प्रज्ञतुम । बासुदेव मुदभौन पूछत भे सो भूमिसों ॥ चरणाकुलक ॥ बासुदेवकी सुनिकैबानी । कहतिभईइमि धरणि सुजानी ॥ करिकैयज्ञ नेमगहिअतिही । करैप्रसन्नसुरन को नितही ॥ आदरकरि सुप्रीति हियमाहीं । अतिथिहिकरै प्रसन्न सदाहीं ॥ करिकैश्राद्ध सबिधि सहप्रेमै । पितर प्रसन्न करै गहिनेमै ॥ ऋषिबरहोहिं प्रसन्नसुजैसे । तिनकोकरैसुमति सों तैसे ॥ बासुदेव यहधर्म गृहीको । आनँद दायकहै अति नीको ॥ ऋद्धिमिलत बहुकीन्हेंयाको । गृहीलहतहै परमप्रभाको ॥ धरणीकी यहबाणी सुनिकै । कृष्ण प्रतापवानबरगुणिकै॥ धरणिकह्यो यहिधर्महिजैसे । करतभये बरबिधिसों तैसे॥दोहा॥ कियेधर्म यह मनुजबर पायसुयश यहिलोक । स्वर्ग लोकमें प्राप्तकै निशिदिन रहत अशोक ॥

शांतिपर्वणिदानधर्मेउपानच्छत्रादिदानबर्णनोनामएकनवतितमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ गन्धधूप अरु दीपको कियेदान अभिराम । होतकहाफल मनुजको कहहुतात बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच॥ यहिप्रसंगमें कहतहैं यकइतिहास सुभूप । मनुओसुवरणबिप्रको है संवाद अनूप ॥ होसमसुवरण बर्णके ताकोबर्ण बिभात। तातेसुवरण नामभो तिहिद्विजको बिख्यात ॥ रामगीती ॥ समय कौनहुं माहिंसो द्विजगयो मनुकेपास । बूझिकै अन्योन्य दोऊ कुशल सहित हुलास ॥ मेरुपर्बतमाहिं सुन्दर शिलापरतेपर्म। भयेबैठत मयेमुदसों सुनहुतात सधर्म॥ ब्रह्मऋषि अरु देवदैत्यनकी कथा अभिराम । करतदोऊ भये तिहिंबर शिलापर अभिराम॥ ताअनन्तर कह्योमनुको बाक्य सुबरणयेह। मनुज के हितअर्थ कहिये धर्म हेबुधिगेह ॥ धूपदीप सुगन्धसों बर मनुज पूजतदेव । होततिनको कहाफलहै कहहुयाकोभेव ॥मनुरुवाच ॥ कहत यहि परसंगमें इतिहास एकसधर्म । शुक्र अरु बलिदैत्यको संवादतामें पर्म ॥ सुनहु द्विजबरशुक्रआवत भये बलिकेपास । देखितिनकोदनुजपति बलिउठ्यो सहितहुलास॥ सहित आदर पूजिआसन चारुपै बैठाय । आपुबैठत भयोसो हैं शुक्रके सुखपाय ॥ ताअनन्तर कथापूछी आपुहमसों जौन । भयोसोई पूछतो बलिशुक्रसों मतिभौन ॥ बलिरुवाच ॥ सुमन दीप सधूपदानाहिं कियेते फलकौन । मिलतहै तुमकहौ भार्गव कृपाकरि बुधिभौन ॥ शुक्रउवाच ॥ देतमनको मोद अरुश्रिय देत है अभिराम । नामसुमनस कहततातै पुष्पकोबुधिधाम ॥ सुमन जो जन देवतन को देतहै दैत्येश । देवतुष्टित होयताको पुष्टि देत अशेश ॥ सुमन जिहि जिहि देवको उद्देश करि जोदेत । देत सोसो ताहि मंगल सुनहु बुद्धि निकेत ॥ वृक्ष जेते यज्ञमाहीं ग्रहण हैं अभिराम । सुमन तिनके देवतन को लगत हैं प्रियमाम ॥ वृक्ष जे नाहिं ग्रहणमखमें सुमन तिनके जौन। असुर राक्षसयक्षगणको लगतहैं प्रियतौन ॥ होयसुमन-

नमाहिं जिनजिन परमचारु सुबास । सुमनते सब देवतनके जानु हे बुधिरास ॥ श्वेतजिनके सुमनऐसे अकण्टक जे वृक्ष। देवतनको लगतहैं प्रिय सुमन तिनकेस्वक्ष ॥ जलजजे कमलादि तिनके सुमन हे सुनुतात। यक्ष औ गन्धर्व नागहि देत बुध अवदात॥ रक्त जिनकेफूल अतितरु सकण्टक हैं जौन। प्रेतकेहैं योग्य तिनके फूलसुनु बुधिभौन॥ कृष्ण तिलके फूल ऐसे वृक्ष जे भूमाहिं। तिनहुंकेहैं फूल भूतहि योग्य संशयनाहिं॥ देत जे आनन्द मनको सुमन कोमलचारु । मनुष्यनके योग्यते हैं सुनहु सुमतिअगारु॥ लतातरु उत्पन्नभे श्मशान माहीं जौन। औ भये देवायतनमें तौनसुनु बुधिभौन॥ बिवाहादिकके नहीं हैं योग्य तिनकेफूल। कहतहौं मैं तुम्हें निजुकै करत अशुभ अतूल॥ लता औ तरुभये जे उत्पन्न गिरिमें पर्म। सुरनके हैं योग्य तिनके सुमनदैत्य सुशर्म॥ सुमन पहिले अमल जलसों धोयकै अभिराम। मंत्रसों पुनिकरै मोक्षण सहितबिधि बुधिधाम॥ सहित कण्टक रक्तजिनके सुमन कटु फलपर्म। जौनऐसे वृक्षतिनके सुमनदैत्य सधर्म ॥ देवताको अर्पिये अरिबधन कारजमाहिं । अथर्वणमें लिखी बिधियहि माहिं संशयनाहिं॥ देवतनको करतजे परसन्न सुमनचढ़ाय। करत तिनकी कामनाहैं सिद्धिदेव सचाय॥ पूजिकरिकै देवतन को करत जे सन्मान। करतहैं सन्मान तिनको देवतासुखदान॥ अवज्ञाजे देवतनकी करत दुर्मतिवान। भस्मताको करत हैं करिकोप देवमहान॥ दोहा॥ सुमन दानको फलकह्यो तुम्हैं वर्णि हमसर्व। धूपदानको अब सुनोफल उत्कर्ष अखर्व॥ यक सारिण निर्जासयक औहै कृत्रिम एक। त्रयप्रकारकी होति है धूपसुनहु सविबेक॥ चन्दनादिकी धूपजे ताको सारिणनाम। अष्टगन्धको कहतहैं कृत्रिम धूपललाम॥ नामकहत निर्जासहै गुग्गुलादिको चारु। इन तीनहुंमें श्रेष्ठहै गुग्गुलधूप उदारु॥

सलईके निर्जासबिन हैं निर्जास जितेक । तिनकी प्रियअति धूपहै देवनको सबिबेक ॥ यक्षसर्प राक्षसनको सुनु दैत्येश अनूप। सबसारिणमें अगरकी लागतिहै प्रियधूप ॥ सलईके निर्जासको दैत्यनको प्रियधूप । यक्षादिक को प्रियनहीं निजुकै कहतअनूप ॥ मल्लिकादिके सुरससों युक्तराल रसचारु। मनुजनको प्रिय लगतिहै तिनकी धूपउदारु ॥ देवदनुज अरु भूतहू यहि सुधूपसों पर्म । शीघ्रहि तुष्टित होत हैं सुनु दैत्येश सशर्म ॥ मनुजनहीके योग्यहैं अतरादिक जेसर्ब। हम निश्चय करि कहतहैं सुनुदैत्येन्द्र अखर्ब ॥ जौनसुमनके दानको उत्तम फलहै तात। सोईधूप प्रदानको फलहै अतिअवदात ॥ दीपदानको कहतहैं अबहम फलअभिराम । दीपदान कीन्हें परम तेज बढ़तहै माम ॥ प्रभाबढ़तिहै अंगमें होत निरोगितनैन । आधिब्याधि नहिंहोतिहै नितिहीं रहत सचैन ॥ दीपचढ़ायो देवको लीजै पुनि नहिंताहि। ताकीरक्षा कीजिये निकट बैठिकै चाहि ॥ जौनहरतहै दीपको तौनअन्ध जनहोत । होतिनष्ट ताकीप्रभा अघको करत उदोत ॥ लसत दीपलौं स्वर्गमें दीपप्रद दैत्येश। चाहतहै ताकोसदा अमरन सह अमरेश ॥ घृतको दीपक दीजिये प्रेमसहित अभिराम। मिलै न घृत तौतैलको दीजैदीप ललाम ॥ इच्छाजे ऐश्वर्य्यकी करैंपरम हियमाहिं। दीप धरतते चतुष्पथ बनमें अरु गिरिपाहिं ॥ होतआत्माशुद्ध अरु करति सुबुद्धि प्रकाश। दीपदानते होतहै ऐसोफल बुधिराश ॥ सुवरण द्विजको मनुकह्यो यहफल अति अभिराम । सुवरण नारदको कह्यो नारदमोको आम ॥ यह जो बिधि सो जानितुम करहु नित्य महिपाल । पूर्वउक्त फल तुमहुको ह्वैहै प्राप्त बिशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुमनदीप अरु धूपको जो जन देत सहर्ष। ताको जो फलहोत सो सुन्योंपरम उत्कर्ष ॥ धूपदान किहिअर्थ अरु दीपदान किहिअर्थ। औ बलिदान कि-

मर्थ जन बिधिसों देत समर्थ॥ कहहु मोहिं अवगाहिकै सुनहु तात मतिमान। तुमहीं कहिबे योग्यहौ बक्ता परमसुजान॥ भीष्मउवाच॥ कहत एक इतिहासहैं यहिप्रसंगमें भूप। ऋषि अगस्त्य अरु नहुषको है सम्बाद अनूप॥ चरणाकुलक॥ सुकृतकर्म सों नहुष सुनीको। पायोदेव राज्यशुभ श्रीको॥ तहां मानुषी अरु देवनकी। क्रिया करतभो सो निशिदिनकी॥ बिधिसोंकरतभयो बलिदानै। तिमिहीं सबिधि होम जप ध्यानै॥ धरणि माहिं पूजतहौ जैसे। देवनको पूजतभोतैसे॥ धूपदीप दानहिं सहप्रीती। नहुष करतभो गहिकैरीती॥ तदनन्तर अपने को जाने। इन्द्रकरतभो गर्बमहाने॥ ताते क्रियाभई सबहीनी। महतप्रमाद तासुमतिछीनी॥ रथकेमाहिं लगाय ऋषिनको। तापै चढ़िमुदमें धरिमनको॥ फिरतभयोचहुंधा मदपागो। ताहिऋषिनको डरनहिंलागो॥ दोहा॥ बीततभो बहुकाल जब मदसों भयो अखर्ब। भो बुलावतो ऋषिन को बारी बांधि सगर्ब॥ चरणाकुलक॥ आईपारी कुम्भज ऋषिकी। परम प्रतापमान सम शिखिकी॥ तब तिनपाससुऋषि भृगुआये। तिनको ऐसेबैन सुनाये॥ नहुष करत अपमान दराजे। सो हमसहैं सुमुनि किहिकाजे॥ अगस्त्यउवाच॥ मम सुदृष्टिमें आवै जोई। होयहमारे बशमें सोई॥ बिधिसों नहुष सु यहबरमांग्यो। पायो सो ताते भय भाग्यो॥ यहिते ऋषिके दम तुमदोऊ॥ और मुख्य ऋषिगण हैं सोऊ॥ नहुषहि दग्धसकत करिनाहीं। यहनिश्चय मानहु मनमाहीं॥ भृगुरुवाच॥ मैं ब्रह्माकेपास गयोहो। परिभव के अति दुखरोयो हो॥ तिनको सब वृत्तांत सुनायो। कियो नहुषको दुर्मतिछायो॥ चतुरानन ममबाणीसुनिकै। कहतभये मोको इमिगुणिकै॥ बली नहुषके हैं अपकारी। कुम्भजऋषि बरतेजस धारी॥ तिहिते आयो पास तुम्हारे। भयो मोदबर तुम्हैं निहारे॥ सोरठा॥ अबहिं तुम्हैं बुलवाय नहुषइन्द्र दुर्मति

सदन । रथकेमाहिं लगाय शिरमें हनिहै चरणसो ॥ चरणाकुलक ॥ तातं अबहिं अनिन्द्रकरोगो ॥ नहुषहि नेकु न डरहि धरोगो ॥ देहु शाप यह क्रुध करिभारी । होहु सर्प तू अति दुखधारी ॥ तदनन्तर मैं ताहिमहीमें । हौं गिरायजानो सतिही मैं ॥ सुनि यह ऋषिबर भृगुकी बानी । मनमें अति प्रसन्नता आनी ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भयो अनिन्द्र नहुष कहुकैसे । अरु किमिपरो भूमिमें भैसे ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणदोहा ॥ देवलोक अरु मनुजलोक में सदा चारसों चारु । महतत्वको पाय गृहीबर पावतमोद अपारु ॥ चरणाकुलक ॥ सबिधि सप्रीति किये बलिदानै । देवत होत प्रसन्न महानै ॥ धूप दीप दानहिं तिमि कीन्हें । तातेप्रसन्न देव मुदलीन्हें ॥ याते धूपदीप बलिदानहिं । करतसविधि हैं नित्य सुजानहिं ॥ सुर अरु पितर सुऋषिहैं जेते । पूजेहोत प्रसन्न सुतेते ॥ यह मति थापि नहुष मुदपाग्यो । होय इन्द्र सब करने लाग्यो ॥ दोहा ॥ नहुष कौनहूकाल में भाग्य भये ते हीन । प्रापित भयो प्रमादको भूपति सुनहु प्रवीन ॥ चरणाकुलक ॥ सो प्रमादताभये महानै । भूलो धूपदीपबलिदानै ॥ कुत्सित कर्म्मकरनसबलाग्यो । गर्बमाहिं दुर्मतिसोंपाग्यो ॥ तदनन्तर सुनहुष सुरराजा । रथके माहिं लगावन काजा ॥ तटत सुनदी सरस्वतिकेरे । शीघ्र सुमुनिकुम्भजकोटेरे ॥ तबकुम्भजको ऐसीबानी । कहत भये भृगुऋषिबर ज्ञानी ॥ शाप देनको नहुष सुरेशै । जटा माहिं तव करत प्रवेशै ॥ करौं प्रबेश जटा में जबलौं । रहो नयन मूंदेतुम तबलौं ॥ कुम्भजको इमिबाणी कहिकरि । तासु जटामें बैठ क्रुधधरि ॥ नहुष पास कुम्भज के आयो । तब कुम्भज इमि बैन सुनायो ॥ रथमें हमको बेगि लगावो । ज्योंमन आवै त्यों सु चलावो ॥ जहां जायबेकी हम पावें । आज्ञातहां तुम्हैं पहुंचावें ॥ सुनिकै यह कुम्भजकीबानी । दिये लाय रथमें अभिमानी ॥ जब कुम्भज रथके तरआने ।

तब भृगुऋषिबर अति हर्षाने ॥ नहुष सुरेश बैठि रथ ऊपर । चलत बेग अतिसों भो कूपर ॥ कछूदूरि चलि मोदसों हेरत । भो प्रमोद सों मुनिको प्रेरत ॥ तबहूं कुम्भज परम तपोधन । नेकहु मनमें कीन्ह्यों क्रोधन ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सुरपति नहुष सुनहुयुधिष्ठिरप्रज्ञ । कुम्भजके शिरपरहन्यो बाम पादसोंअज्ञ॥ चरणाकुलक ॥ तबसक्रोधह्वैकै भृगुमुनिबर । नहुषहिशापदियो यह दुखकर ॥ भूमेंजाहु सर्प तुमह्वैकै । तहांरहो बहुदुख सों ग्वैकै ॥ शापपाय मुनि भृगुके पाहीं । गिरो सर्प ह्वै भूके माहीं । भृगुको नहुष नेकु जौं तकतो । नहुषहि भृगु गिराय नहिं सकतो ॥ बलिदानादि कर्म शुभ कीन्हें । रह्यो पूर्व वृतान्तहि चीन्हें ॥ तद नन्तर इमि कहतो भयो । भृगुको नहुष दुःखसों रयो ॥ शाप अन्त ह्वैहैकब मुनिबर । कहहु कृपाकरि मोपै मुदकर॥भृगुरुवाच॥ भूप युधिष्ठिर ह्वैहै सुनु जब । ह्वैहै मोक्ष नहुष तेरीतब ॥ भृगु नहुषको ऐसे कहिकै । बिधिके पास गयो मुदलहिकै ॥ सुऋषि अगस्त्यहु परम तपस्वी । गे निज आश्रमको सु यशस्वी ॥ पासजाय बिधिके इहि बिधिसों । कहतभये भृगुभरिसुख निधिसों ॥ दोहा ॥ लखिप्रमादतानहुषकी हम महान दुखपाय । शाप देय करिकै सरप भू में दयो गिराय ॥ चरणाकुलक ॥ भृगुके बचन बिधाता सुनिकै । भये बुलावत शक्रहि गुनिकै ॥ तदनन्तर अमरनके वृन्दहि । भये बुलावत सहित अनंदहि ॥ जब संपूरण देवत आये । तब तिनको इमि बचन सुनाये ॥ नहुषहिभृगु अगस्त्य क्रुध धरिकै । भूमेंडारि दियो अहि करिकै ॥ कार्य न कछू होत बिनराजा । भयो परम संदेह दराजा ॥ ताते शक्रहि पुनि बैठावो । देव राज्यपर सुख सरसावो ॥ सबसुर सुनि यह बिधिकी बानी । पाय हर्षतापरम महानी ॥ कहत बचनभे बिधिको यहि बिधि । अबकीकरोकार्य यह तुम सिधि ॥ सुनि बाणी यह बिधि मुद छायो । शक्रहिरा-

ज्य माहिं बैठायो ॥ शक्र पूर्वराजत हैं जैसे । राज्य पाय राज्यो पुनि तैसे ॥ नहुषहु दरश तुम्हारो पाये । छूटि शाप सों मुदसों छाये ॥ बलिदानादि फेरि बहु करिकै । ब्रह्मलोकको गो सुखधरिकै ॥ देव राज्य लहि नहुष नृपाला । कीन्हीं परम अनीति विशाला ॥ ताते अतिहि क्लेशता पाई । ऋषिकी लहिकै रिस दुखदाई ॥ बलिदानादिक के फलसों बर । पुनिहुंहोतभोसमुद धर्म कर ॥ दोहा ॥ धूपदीप बलिदानको ऐसो फल है पर्म । ताते गृही करै सदाभूपति सुनहुसधर्म ॥ आभीर ॥ धूपदीप बलिदान । जे जन करत सुजान ॥ रूपमान बलवान । तेजन होत महान ॥
इतिमहाभारतशान्तिपर्बणिदानधर्मेउत्तमानुशासनेद्विनवतितमोऽध्यायः ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ तोमर ॥ धनहर्त द्विजकोजौन । जन लहततेगति कौन ॥ भीष्मउवाच ॥ यहिप्रश्न में इतिहास । एक कहतहौं बुधि रास ॥ रामगीती ॥ वृद्ध एक चांडाल हौ सो सुनहु तात सुजान । परेगोके चरणकी रज करै तबहीं स्नान ॥ ताहि लखियक भूप को सुत कहतभो इमि बैन । परे गोरज करतक्योंहै स्नानदुर्मति ऐन ॥ चण्डालउवाच ॥ अधम यक महिपालकोऊ बिप्रकी हरि गाय । जातहौ निजधामको अघमानसोय सचाय । मार्गऊपर करत हैं महिपाल कोऊयज्ञ । चरणकी तिन गौनके रज परीतिहिमें प्रज्ञ ॥ भयो रजमय सोम ताको भये पीवत जौन । नरक माहीं परेते द्विज कहत नृप बुध भौन ॥ औरऊ जे यज्ञ माहीं हुते जन ते सर्ब । भये जाते नरकको सुनु सुमति मान अखर्ब ॥ इन्द्रिजित ह्वै ब्रह्मचारय धर्मको अभिराम । धरे मैंहौं बसततत्र हि हुतो बुध मै माम ॥ धरी भिक्षा ल्याय मैंहीं परीतिहिके माहिं । हरी गोके चरणकी रज कढ़े ह्वैकै पाहिं ॥ तासु भोजन किये ते मैं भयो हों चाण्डाल । क्षीण मेरो ह्वै गयो बर धर्म तेज बिशाल ॥ हरीगोके चरणकी रजपरीजबसों बुद्ध । बेचिबेके योग्य सोम न कहत मति बर शुद्ध ॥ जौन बेचत सोमको ते जातरौ-

ख माहिं। सुबुधताकी करत निन्दा नित्य संशय नाहिं॥ परे गोरजभयो हौं चाण्डाल मैं मतिमान। सुनहु याते करतहौंमैं परे गौरजस्नान॥ छूटि हौं किहि भांति मैं चाण्डालता तेपर्म। होत निश्चय नाहिं हमको भूप तातसधर्म॥ राजसुतउबाच ॥बिप्र के धन अर्थ छोड़ो युद्धमें तुम प्रान। है तुम्हारी मोक्षको यह हेतु हेमतिमान॥ बचन सुनि चाण्डाल ये महिपालसुतकेपर्म। बिप्रके धनअर्थ लरिकै युद्धमाहिंसधर्म॥ प्राणतजिकै मोक्षको सो भयो प्रापत होत। करहुतातेतुमहुंकारजयह सुप्रज्ञापोत॥

इतिश्रीमहाभारतदानधर्मेनृपसुतचांडालसंबादोत्रिनवातितमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ एकहि है सुकृतीनको लोक परम अभिराम। भिन्न भिन्नकीहै कहो मोको हे बुधिधाम॥ भीष्मउबाच ॥ कर्म्म कर्म्म के लोक हैं पृथक २ महिपाल। पुण्यलोकको जात हैं सुकृती जौन बिशाल॥ पापमान ते जातहैं पापलोकको तात। यामें संशय है नहीं कहत सुबुधि अवदात॥ कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसंगमें भूप। गौतमको अरु इन्द्रको है संबाद अनूप॥ तोमर ॥ मति मान गौतम पर्म। बन माहिं तात सधर्म। यक हस्तिको सुत चारु। लखि परयो मृतक उदारु॥ तिहिको जिवाय सप्रेम। ऋषिकीन्ह दीर्घ सक्षेम॥ कछु दिनन माहिं महान। गिरिसो भयो बलवान॥ धृतराष्ट्रको धरिरूप। तहँ आयइन्द्रअनूप॥ गहतेभयेगजतौन। तबदेखिऋषिबुधि भौन॥ धृतराष्ट्रको इमिबैन। कहतेभयेमतिऐन॥ ममपुत्रवतहै येह। गजचारु हेअघगेह॥ गहुयाहि तू तिहितैन। ममजीवहोत अचैन॥ यह इध्मअरु जलल्याय॥ नितदेत मोहिं सचाय॥ अतिहि लागत मोहिं। सुख लहा इहिको जोहि॥ धृतराष्ट्रउबाच॥ शतदासिका अभिराम। अरु गो सहस्र ललाम॥ बहुरत्न चारु अमन्द। अरु और बित्त बिलन्द॥ हम तुम्हैं देहैं पर्म। सुनहु ऋषि सहधर्म॥ गज चाहिये द्विजकौन। निजु जानु हे बुधि

भौन ॥ गौतमउबाच ॥ तब दासिकाअरुगाय । बररत्नबहु सुख-
दाय ॥ अरु औरऊ धन जौन । चहिये न हमको तौन ॥ धृतराष्ट्र
उबाच ॥ दोहा ॥ बाहन कुंजर नृपनको होत कहत बुध पर्म । याते
मैं लेजातहौंहै नहिं नेक अधर्म ॥ कुंजरको अब मोह तुम छोड़ि
देहु बुधिधाम । हस्तीयोग्य न राखिबो बिप्रनको अभिराम ॥
सुने बचन धृतराष्ट्रके ये गौतम मतिमान । कहत भये ऐसे
बचन करिकै क्रोध महान ॥ गौतमउबाच ॥ रामगीती ॥ पुण्यकर्मा
जायकै जहँ रहत हैं सानन्द । पापकर्मा जायकै जहँ लहतहैं
अतिदन्द ॥ सुनहुं ऐसो सदनहै यमराजको तहँभूरि । दिवैहौं
मैं यातना तुम रहेका सुखपूरि ॥ धृतराष्ट्रउबाच ॥ धर्मसों जे रहितहैं
अरु रहितश्रद्धाजौन । बिषयमेंजेरहतरतहैं महतअघके भौन॥
यातनाते सहतहैं अतिजाय यमकेधाम । जायँगेहम तहां नहिं
निजुजानु ऋषिबुधिधाम ॥ गौतमउबाच ॥ जाहुगे जोधनदके तुम
लोकमें नरराय । यातना मन्दाकिनीमें दिवैहौं तौजाय ॥ धृतराष्ट्र
उबाच ॥ देतभोजन अतिथिको जेगहे ब्रत अभिराम । देतआ-
श्रय द्विजनको जेपरम प्रज्ञाधाम ॥ प्रथमभोजन देयतिनको
जौनआश्रितहोय । करतभोजन धनाधिपके जातलोकहिसोय॥
हमनजैहैं धनाधिपके लोककोऋषिपर्म । दिवैहौ किमियातना
तुममोहिं प्रज्ञसधर्म ॥ गौतमउबाच ॥ मेरुआगे फूलफलयुतबिपि
नचारु बिभात । भरेआनँद गानकिन्नर करत जहँ अवदात ॥
बहतिजम्बू नदीहैजहँ महतिजल गम्भीर । तहांहूंजोआपुजैहौ
सुनहु भूमिपधीर ॥ दिवैहौं तौ यातनामें हरेमोगजचारु । तुम्हें
निजुकै कहत संशयहै न भूपउदारु ॥ धृतराष्ट्रउबाच ॥ पढ़तजेद्विज
प्रज्ञहैं इतिहास सहितपुरान । सत्यबक्ता बहुश्रुत अरुधर्मवान
महान ॥ समधुभोजनदेतद्विजकोजौनजनबुधिधाम । जातजम्बू
नदीकोते कहतबुधअभिराम ॥ तहां मैं जैहौंनतातेयातनाकिमि
मोहि । दिवैहौहेऋषमतिबर सुनहुइततुमजोहि॥ गौतमउबाच॥ प्रिय

सुनारद ऋषीको फलफूलसों युतपर्म। अप्सरा गन्धर्वगणको तिमिहिं प्रियसहशर्म ॥ करताकिन्नरराजतामें नित्य समुद बिहार। इन्द्र तामें जायके अति मुदित होत उदार ॥ सुनहु ऐसो बिपिन नन्दन तौन माहीं तोहि। दिवावैंगे यातना हम महत का इतजोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ नृत्यमें अरु गीतमाहीं कुशल हैं द्विज जौन। कबहुंकाहूको न याचतजौन द्विज बुधिभौन ॥ जात नन्दन बिपिनको ते और कोउ न जात। तहांहम जैहैं न जानो सत्यऋषि अवदात ॥ गौतमउवाच ॥ जहां अग्निज बसतहैं अरु पर्वतजहैं यत्र। जलज जन जहँ रहतहैं सह देवगण एकत्र ॥ सिद्धि सर्ब सु कामना बर करतहैं जहँ शक्र। नारिनर गणमें न कोऊ कबहुँ बोलतबक्र ॥ नाम उत्तर कुरुसुताको लोक ऐसो जौन। यातना तुमको दिवैहौं मैं तहां करिगौन ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ कामना करिजात जे नाह कबहुँ कोऊपास। जे न भक्षत मांस धारे ज्ञानसहितहुलास ॥ जिते जंगम सथावरहैं भूत तिनके माहिं। कबहुं हिंसा भावकोजेजनबिचारत नाहिं ॥ लाभमें औ अलाभहूमें रहत एकहि भाय। स्तुती निन्दाकरत काहूकी न सुख दुख छाय ॥ उत्तरा कुरुलोक माहीं जातहैं जन तौन। सुनहुऋषिबर तहांको हमकरैंगे नहिंगौन ॥ दिवैहौ किमि यातना तुम मोहिं करिकै क्रुद्ध। छोड़िहौं मैं नाहिं जैहौं लैसुगज यहउद्ध ॥ गौतमउवाच ॥ चन्द्रहूके लोकमें जो जाहुगे महिपाल। दिवैहौं तौ तहांहूमें यातना सुबिशाल ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ जे प्रति ग्रह लेतनाहीं देतहैं नितदान। जौनमांगत बिप्रसोई बस्तुदेत सुजान ॥ जितेआवैं अतिथितिनको भूरिकरि सन्मान। देत भोजन प्रीतिसों जे परम प्रज्ञावान॥ छोड़िरोषहि सदाकोमल जौन बोलतबैन। निरन्तरजे करत यज्ञहिसुनहु सुऋषि सचैन ॥ जाततेहैं चन्द्रमाके लोकको सुखऐन। दिवैहो तुम यातनाकिमि तहांहम जैहैं न ॥ गौतमउवाच ॥ रजोगुण औ तमोगुण

सों रहित अति अभिराम । शोकऊसों रहित तेजसभरोअति-हीमाम ॥ लोकऐसोभानुको जो जायहौ तिहिमाहिं । दिवैहैं तौ यातनाहमतोहिंसंशयनाहिं ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ करतसेवा गुरूकीजो प्रीतिसहिताबिशाल । शास्त्रश्रुतिमेंरहतजेरतमहतजौनदयाल ॥ तपस्याको करतजे अरुगहे सुब्रतहि जौन । सत्यजे जन नित्य बोलतचारुप्रज्ञा भौन ॥ दिवाकरके लोकमाहीं जातते हैं पर्म । तहांहम जैहैं न जानहु सत्यसुऋषिसधर्म ॥ गौतमउवाच ॥ बरुण के तुम लोकमें जो जायहौ भूपाल । दिवैहौं तौ तहांहूंहमयातना सु बिशाल ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ वेद बिधिसों अग्नि होत्रहि करें जो त्रयवर्ष । यज्ञत्रय बर बर्ष माहीं करें जौन सहर्ष ॥ सुमारग में चलै जो नित करै नित्य सुधर्म । वरुणकेसो लोकमाहींजात सुऋषि सधर्म ॥ तहां हम जैहैं नयाते यातनातुम मोहि । दिवैहौं किहि भांति सों ऋषि सुनो मो तन जोहि ॥ गौतमउवाच ॥ जायबेकी तहां मानव करतइच्छा पर्म । शोक सों है रहित ऐसो इन्द्र लोक सशर्म ॥ तहां तुमको यातना मैं दिवैहौं अति भूरि । कहा जगको लेयकै तुम रहे सुखसों पूरि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ युद्धमें जे सूर हैं अरु पढ़त जे नित वेद ।जिये जो शतबर्षलौं बरकरै धर्म अखेद । इन्द्रवारे लोक माहीं जायहैं जन तौन । दिवैहौ किमि यातना नहिं करैंगे तहँ गौन ॥ गौतमउवाच ॥ स्वर्गहू के लसत ऊपर प्रजापति को लोक । जायबे की तहां इच्छाकरत सब बुधि ओक ॥ तहां तुमको यातनामें दिवैहौं महिपाल ।कहा कुंजर लेय मेरा भरे हर्षबिशाल ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ अश्वमेधहिक-रत जे अरु प्रजापालत जौन । प्रजापति के लोकको ते जात हैं बुधिभौन ॥ तहां हम जैहैं नयाते यातना तुममोहिं । दिवै हौ किहिभांतिसों ऋषि कहत हैंहम तोहिं ॥ गौतमउवाच ॥ शोक सोंहै रहित औ हैं परम दुर्लभचार । जायकै तहँ लहतअक्षय मोदसुमति अगार ॥ सुनहुशुचिगोलोक है इहिभांतिको अभि-

राम। तहां तुमको यातनामें दिवैहौं अतिमाम॥ धृतराष्ट्रउवाच॥
सहसगो जो देतबिधिसों वर्षमाहिं ललाम। सहितआदर द्वि-
जनको बुलवायकै बुधिधाम॥ होहिंगृहमें जासु शतगो देतजो
दशगाय। होहिंजाके गऊ दशसो देयएकसचाय॥ ब्रह्मचर्य्य-
हिमाहिं जेजन वृद्धहोत सुजान। करतरक्षा धर्मकी जो बिप्रवर
मतिमान॥ गोमती अरु कौशिकीमें करतजौन स्नान। तिमिहिं
यमुना सुरसरीमें करतस्नान सुजान॥ बिपासा अरु बाहुदामें
तिमिहिं पंपामाहिं। प्रेमसों जे जायकै जनकरत स्नानसदाहिं॥
और उत्तम तीर्थजे हैं भूमिमेंअभिराम। सबिधि तिनमें स्नान
जेजन करतहैं बुधिधाम॥ जाततै गोलोककोहैं हैन संशयअत्र।
दिवैहौं किमियातना हमजायँगे नहिंतत्र॥ गौतमउवाच॥ उष्णता
अरु शीतको है नेक जहँ भयनाहिं। क्षुधा प्यास न लगतिहैं
नहिंहोत दुखसुख पाहिं॥ रागद्वेष न जहांहै अरु जरा मरण
न होय। शत्रुता अरु मित्रता जहँपरतहै नहिंजोय॥ पाप पुण्य
नजहांऐसो लोकबिधिको पर्म। यातनामें दिवैहौं तहँ कहां
लखत सशर्म॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ करत काहूको न जेजन संगहैं
करिमोह। नेमसों जे करतहैं ब्रत करतकबहुं न कोह॥ स्वर्ग
गतिको प्राप्तह्वैकै तौन जन अभिराम। बिधाता के लोक ब-
रको जातहैं बुधिधाम॥ तहां हमजैहैं न याते यातना तुममो
हि। दिवैहौ किहिभांतिसों मुनि कहाजोवत कोहि॥ गौतमउवाच॥
पुंडरीक सुकंजकी जहँ होति बेदीचारु। जहां गायोजातहै नि-
ति सामबेद सुढारु॥ यातना मैं दिवैहौं धृतराष्ट्र हे तहँ तोहि।
कहागजको लेयकै मुसकात मोतन जोहि॥ तदअनन्तर जानि
गौतम शक्रको हेतात। कहतभे इमिबैन प्रज्ञा ऐन मुनिअवदा-
त॥ लये तुमको जानि हे सुरराज अब हम आम। तुमन मन-
साबाकहूसों करत अघ मुदधाम॥ शतक्रतुरुवाच॥ हम सुनिज
सुरनाथ हैं तुम लये हमको जानि। तुम्हैं करत प्रणामहैं हम

जोरिदोऊपानि ॥ ब्याजमेंगजहरणके हमसुनीअद्भुतबात । जो कहौ सो करें अब हम सुनहु मुनि अवदात ॥ गौतमउवाच ॥ बर्ष दशलौं हरि हमारे गजहि राखोअन्त । देहु सो तुम कृपाकरि के सुनहुं हे सुरकन्त ॥ इंद्रउवाच ॥ लखहु आवत आपुको यह सुवन वारण पर्म । चरण उपटे रावरे के भूमि माहिं सधर्म ॥ सूंघितिनको चायसों सो रह्योसुखसों पूरि । प्रेम बश्यों जातहै नहिं तास हियकोभूरि ॥ करहुवारण लेहुवारण आपनोअभि-राम । दयाधारण करु सु धारण श्रेयममतिधाम ॥ गौतमउवाच ॥ चहत हैंकल्याणतेरो सदाहम सुरराय । पायबारण आपनो मैं भयोंपरमसचाय ॥ इंद्रउवाच ॥ कहे बिन तुम जानि लीन्हों मोहिं मुनि मतिधाम । भयोहौं परसन्न ताते भयोमुदमैंमाम ॥ चल-हुतुम शुभलोकको गजसहित ऋषि अवदात । कहे ऐसेबचन मुनिसों शक्रसुनु हेतात ॥ ता अनन्तर करि सुआगे मुनिहिं गज सह पर्म्म । सुराधिप सुरलोक को भो जातहोय सशर्म्म ॥ दोहा ॥ पढ़िहैं जो आख्यानयह मढ़िहैं मुदसोंभूरि । जैहेंबिधि केलोकको गौतमलौं सुखपूरि ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेचतुर्नवतितमोऽध्यायः॥९४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ शांति अहिंसा सत्य अरु बहुप्रकार के दान । अपनी तियमें तुष्टि अरु दान सुफल सुखवान ॥ ब-रणि सुनायो मोहिं तुम सुनहुतात बुधिधाम । पूंछतहौं यकहेतु अब कहहु तौन तुमआम ॥ तप बलते तुम और का जानत श्रेष्ठ सुजान । कहहु श्रेष्ठ जो होयसो बक्ता आपुमहान ॥ भीष्म-उवाच ॥ जितनेतप तिनमाहिं हैं अनशन तप अभिराम । अन-शन तप सम और तप है न कहत बुधिधाम ॥ जयकरी ॥ यहि प्रसंगके माहीं भूप । सुनहु एक इतिहास अनूप ॥ विधि औ नृपति भगीरथ पर्म्म । तिनकाहै सम्बाद सधर्म्म ॥ अमरलोक गो लोकहि पर्म्म । अरु ऋषि लोक उलंघि सशर्म्म ॥ गये

भगीरथ बिधिके लोक। देखिताहि बिधि आनँद ओक॥ कहतभये ऐसेवर बैन। सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञाऐन॥ आये कौन भांति तुम भूप। इहिसुलोकके माहिं अनूप॥ नर अरु अमर तिमिहिं गन्धर्व। किये तपस्या बिना अखर्ब॥ आय सकतहैं कोऊनाहिं। मम उत्तम सुलोकके माहिं॥ भगीरथउवाच॥ सुवरण की मुद्रा यकलक्ष। दई द्विजन को सादर स्वक्ष॥ कहे वेदमें जे ब्रतचारु। कीन्हें तेमैं सबिधि उदारु॥ तिनके फलते मैं इहिलोक। आयोंहौं नहिं सुनु मुदओक॥ होत एकदिन में मखजौन। कीन्हें तेमैं दश मुदभौन॥ होत पञ्चदिन में जे यज्ञ। तेऊ दश कीन्हें सुनुप्रज्ञ॥ एकादश दिनमें मखजौन। होतकिये एकादश तौन॥ ज्योतिष्टोम यज्ञ शत एक। कीन्हें हैं हम सहित बिवेक॥ बसिकै सुरसरि तट शतबर्ष। कीन्होतप हम महत सहर्ष॥ तहांखच्चरी सहस सुढार। दीन्हीं हम सुनु मोद अगार॥ औ कन्या दीन्हीं अभिराम। भूषण परम पिन्हाय ललाम॥ तिनहूंके फलते हमनाहिं। आये इहि सुलोक के माहिं॥ अश्वदिये सुन्दर यकलक्ष। अरुगोबीस सहस अतिस्वक्ष॥ दीन्हीं पुष्कर तीरथ माहिं। बिप्र बुलाय बिज्ञ हम पाहिं॥ सुवरणके आभरण पिन्हाय। साठि सहस कन्या छबि छाय॥ विधिवत हमदीन्हीं लोकेश। भरेहर्षसों परम अशेश॥ तौन दानहूके फलसौन। आये द्रुहिण तुम्हारे भौन॥ गोमुख माहिं सुनहु लोकेश। करिसनमान द्विजनके वेश॥ एक एक द्विजको हमगाय। दशदश अर्बुद दई सचाय॥ पहिले ब्याई जोहै गाय। गृष्टी ताहि कहत बुधराय॥ दोयकोटि हम दीन्हीं तौन। सुनु हे द्रुहिण परम सुखभौन॥ तौन दान फलसों हम पर्म। नाहिं लह्यो तव लोक सशर्म॥ बाह्लिदेशके बाजीचारु। श्वेतवर्णके प्रभाअगारु॥ सुवरण भूषणसों अभिराम। भूषित लसें चालके माम॥ दीन्हे मैं सादर यकलक्ष। बायु बेगवारे

अतिदक्ष ॥ एकएक नखमेंलोकेश । कोटिकोटिवर मोरसुवेश॥ वेदवान बिप्रनको दीन्ह । तिनके विधिवत आदर कीन्ह ॥ तौ नहुं फलसों आये नाहिं । ब्रह्मालोक तुम्हारेमाहिं ॥ श्यामकर्ण बाजी अभिराम । अरुबर हरितबर्ण छबिधाम ॥ सुवरणमाला तिन्हें पिन्हाय । सत्रह कोटि दिये सुखदाय ॥ सुवरणमाल वि- शाल सुठान । तिनसों भूषित अति बलवान ॥ तिनकेदन्त सु उन्नतशुभ्र । मनु बकमाल धरेहैं अभ्र ॥ तिनके कुम्भनिऊपर पर्म । चिह्न पद्मके लसत सशर्म ॥ ऐसे सुन्दर मैंगलनाम । सत्रहकोटिदिये छबिधाम ॥ अरु सुवरणके रथ रमणीय । तिन्हें देखि मोदित ह्वै जीय ॥ मुक्तालर लागी तिनमाहिं । इन्द्रहु के ऐसे रथनाहिं ॥ सत्रहकोटि दिये हम तौन । युक्त सुबाजिनसों बलभौन ॥ अंगदक्षिणाके सु जितेक । वेदमाहिंहैं कहे तितेक॥ बाजपेयदशयज्ञसुवेश ।करिदीन्हेंहमसबलोकेश ॥ बलसोंजीति सर्ब महिपाल । राजसूयकरि यज्ञ बिशाल ॥ भूषणसों भूषित अभिराम । मघवासम विक्रमसोंमाम ॥ ऐसेभूपति एकहजार । दिये दक्षिणामाहिं सुढार ॥ पज्झटी ॥ हमदीन तीनशत चारु ग्राम । अरुषटहजार बाजीललाम ॥ संकल्पनीरको भो प्रवाह। सुरसरित स्रोतहू ते अथाह ॥ तिहि दानतैसु हम अत्रआय । नहिं प्राप्तभये सुनु लोकराय ॥ सुरसरित ल्यायबे को महान । हिमवान भूमिधरपै सुठान ॥ हमकियो भूरितप महत काल ॥ थिरिकै सुचित्त चञ्चल बिशाल ॥ तिहितेहुं लोक तवमाहिं आय । हमभये प्राप्त नहिं लोकराय ॥ दिन द्वादशमें मखहोत जौन । हमकीन्ह त्रयोदश यज्ञतौन ॥ बर सहसअष्ट बल के उतंग । सुवरण मढ़ाय यकएक शृंग ॥ हमदिये द्विजनको वृ- षभचार । आये न तौनहूते उदार ॥ बरहेमरत्नके निचयउद्ध । हमदिये द्विजनको तोलिशुद्ध ॥ धनधान्ययुक्त अभिरामग्राम । दीन्हेंसहस्त्र बिधिसोंसुमाम ॥ अरुअश्वमेध बहुयज्ञकीन ।तिन

माहिं दक्षिणाभूरिदीन ॥ मढ़वायहेमसों तरुसुढार । करिभूषित रत्ननसों अपार ॥ तिनतरुनकोसुयोजनप्रमान । बिस्तरितबिपिनअतिबरसुठान ॥ बरवेदवानबिप्रनबुलाय। विधिसहिततौन दीन्हेउसचाय ॥ दोहा ॥ फलते तौनहुंदानके सुनुलोकेश सशर्म । आये नहिं तव लोकमें निश्चय जानहुपर्म ॥ अरिल ॥ तीस वर्ष ब्रत कियो तुरायन । छोड़िप्रमाद क्रोध सहचायन ॥ गोनौशत हमदीन्हीं दिनदिन । मुदितभये अतिपाई जिन जिन ॥ तौन दानहूके फलतेबर । लोकमें न तव आये मुदकर ॥ तीस सुचयन यज्ञकीन्हेंहम । अरु नरमेधसत कीन्हेंसम ॥ सविध सुअष्टादश अरु यकशत । किये बिश्वजित मखलहि श्रुतिमत ॥ नदी बाहुदा सरयू सुरसरि । नैमिषार औ तिनमें बिधिकरि ॥ दश हजार गौदई दुग्धवति । तौनहुते न लई हम यहगति ॥ दोहा ॥ राख्यो हियमें गुप्तकरि अनशनब्रत सुरराय । ताकोजान्यो शुक्रकरि तपमहान सुखदाय ॥ ताहि जानिकै शुक्रजिमि साधतभये सुजान । तिमिही अनशन ब्रतहि मैं साधतभो सुख दान ॥ साधे अनशन सुब्रतको ह्वै प्रसन्न ऋषिसर्ब । जितेहुते ममधाममें तेजसभरे अखर्ब ॥ ब्रह्मलोकको जाहु तुम महत मोदकेधाम । कहतभये ऐसे बचन मोहिंदया करिमाम ॥ ताते मैं तवलोकको प्राप्तभयों लोकेश । नमस्कार मैं करतहौं होहु प्रसन्न अशेश ॥ अनशन ब्रतसम औरनहिं सुखदायक तप पर्म । ताहिकिये ते मैं लह्योंबर तवलोक सशर्म ॥ तोमर ॥ नृप भगीरथके बैन । सुनिलोकनाथ सचैन ॥ अतिह्वै प्रसन्न सुजान । सुरवृन्द सहित महान ॥ दोहा ॥ भगीरथहि पूजतभये आदरसों बैठाय । अनशनब्रत फलदेतहै ऐसो हे नरराय ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेब्रह्माभगीरथसम्बादेपंचनवतितमोऽध्यायः ९५

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ लिखीवेदमें पुरुषकी आयु वर्षशत तात । बाल तरुण किमि मरतहैं कहिये करि विख्यात ॥ आयु बढ़ति

है मनुजकी किये कर्म्मको कौन । अल्पआयु किहि कर्म्मसों होत कहा बुधिभौन ॥ कौन कर्म्मसों लहतहैं कीरति मनुज महान । कौन कर्म्म कीन्हे लहत श्रियसुखदा मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीतो ॥ लहतहैं जिहि कर्म्मसोंजन महतकीरति तात । औ लहैं जिहिकर्म्मसों श्रिय मोददा अवदात ॥ मनुजकी जो कर्मकीन्हे आयु होति महान । होतिहै औ कर्म्मसों जिहि अल्प आयु सुजान ॥ कहतहौं ते कर्म्मतुमको सुनहु तजिकै भर्म । प्रश्न ऐसोकरे तुमबिन कौन तात सधर्म्म ॥ आयुहोति महान जनकी किये ते आचार । लहत हैं आचारहीसों श्रियहु तात उदार ॥ कीर्त्तिप्राप्तहु होनको आचारही है हेत । तुम्हैं निजुकै कहतहौं मैं सुनहु बुद्धिनिकेत ॥ हनत जनके पापको आचारहै अभिराम । सुनहु ताते योग्यहै आचार कीबो माम ॥ क्रियासों जे रहितहैं नास्तीक हैं जन जौन । दुराचारी पातकी अरुजौन सुनु बुधिभौन ॥होतहैंअल्पायुते जन कहत बुध अवदात । नेकु नहिं सन्देह यामें जानु कुन्तीतात ॥ तजत जे मर्य्यादको अरु शील छोड़त जौन । रहत मैथुन माहिं जे रत नित्य दुर्म्मति भौन ॥ शास्त्रको अरु गुरूको जो बचन मानत नाहिं । होतहैं अल्पायुते संशय न याके माहिं ॥ नित्यबोलत सत्यहैं अरु जौन करत न क्रुद्ध । कबहुंहिंसा करत जे नहिं धरिप्रमादहि उद्ध ॥ करत कबहूं ना असूया धरत श्रद्धाभूरि । आयु तिनकी बढ़ति है नित रहत सुखसोंपूरि ॥ दशनसों जे नित्यकाटत नखनको हे तात । धारि दुर्जनताहि जे जन क्रोधको सरसात ॥ तृणनको जो नित्यतोरत लोष्टफोरत जौन । महतआयुहि तौन प्राप्त न होतहैं बुधिभौन ॥ करतचुगुली जौन तिनको शीघ्र होत विनाश । है नहीं सन्देह यामें नेकनृप बुधिराश ॥ रहै निशि जब चारिघटिका तब सुआलस त्यागि । धर्म्मको अरु अर्थको नित करैचिन्तनलागि ॥ प्रातउठिकै स्नानसंध्या करै बिधिवतपर्म्म ।

तिमिहि सायंकाल संध्या करै तात सधर्म्म ॥ अर्द्ध उद्यत मारतण्डहि कबहुं लखिये नाहिं । औ न लखिये मारतण्डहि कबहुं जलके माहिं ॥ होहिं जब नभ मध्यगत कबहूं न लखिये तात । होत जनको दोषदेखे कहत बुध अवदात ॥ किये संध्या बढ़ति आयु सु ऋषिनकी अभिराम । करै ताते सविधि संध्या मौन ह्वै बुधिधाम ॥ प्रातसंध्याकरैं जे नहिं औ न सायंकाल । कर्म्म तिनसों शूद्रके करवाइये महिपाल ॥ कबहुं नहिं परनारिमाहीं रमणकीजै भूप । धर्म्मचारिहु बर्णको यह कहतप्रज्ञ अनूप ॥ सुनहु परतिय गमन जैसो आयुनाशक पर्म्म । और ऐसो आयु नाशन हेतुहै न सधर्म्म ॥ सुनहु नृप परनारि के अँगमाहिं रोम जितेक । रमत जो परनारि सेवत नरक वर्षतितेक ॥ दन्त धावन केशधोवन देवपूजन जौन । प्रात ये सब कार्य्य करिये कहत वर बुधि भौन ॥ मूत्र विष्ठा देखिये कबहूंन तात सधर्म्म । औ उलंघन कीजिये नहिं कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ अतिहि प्रातःकालऔ नहिं अतिहि सायंकाल । औ नहीं मध्याह्नमें चलिये सुधरणी पाल ॥ शूद्रगण के साथसे औ बिजातिके साथ । गमन कबहूं नाहिं कीजै सुनहु वर नरनाथ ॥ भूपको औ बिप्रको अरु वृद्धजन को पर्म्म । औगऊको दीजिये पय कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ गर्भवतिका नारिको अरु जौनहोय सभार । तिमिहि निबलहि दीजिये पथ दया करि सु अपार ॥ पिप्पलादिक बृक्ष जेपै पूजनीय सुजान । कीजिये तिनकी प्रदक्षिण मिलै जहँ मति मान ॥ अर्द्ध निशि मध्याह्न में औदुऔ संध्या माहिं । चतुष्पथ में जाइये नहिं सुन्यों बुधजनपाहिं ॥ अन्यकीपहिरीउपानहपहिरियेनहिंतात । औ न ओढ़ोवस्त्रलीजै कहत बुध अवदात ॥ चरणऊपर चरणको कबहूं न धरियेभूप । मूत्र विष्ठा कीजिये तरुछांहमें न अनूप ॥ अष्टमीऔ अमावस्या पूर्णिमाके माहिं । औ चतुर्दशि माहिं तियकेजाइये नहिंपाहिं ॥

कबहुं काहूकी न चुगुली कीजिये दुखदाय । औ अनादर कीजिये नहिं दुखद बैनसुनाय ॥ आपुसों जो होय नीचो पढ़िय तिहि सों नाहिं । क्रूरताको राखिये नहिं आपने हिय माहिं ॥ कबहूं काहूको न कहिये तात ऐसे बैन । सुने जिनको होय हिय के माहिं भूरि अचैन ॥ लगे शायक होत जोहै देह माहींघाव। पूरिआवत तौन है कछु दिननमें नरराव ॥ बाक शायक लगेसों जो घाव होत महान । कबहुं पूरतनाहिं सोहै जानु निजु मतिमान ॥ युद्धमें जो लगत शायक सकत कढ़िहै तौन । बचनशायक सकतकढ़ि नहिं जानु निज बुधिभौन ॥ प्रज्ञताते कहतकाहू सों न है कटु बैन । औ न काहूको करै परिहास प्रज्ञा ऐन ॥ रूप बिनके जौनहैं अरु हीन अंगके जौन । कीजिये अपमान तिनको कबहुं नहिं बुधिभौन ॥ जौन बिद्याहीन हैं अरु जौनहैं धनहीन । कीजिये अपमान तिनहूं को न तातप्रबीन ॥ पुत्र को अरु शिष्यको शिक्षार्थ ताड़न देय । अन्यओर उठाइये नहिं दण्ड करमें लेय ॥ प्रातअनुदय माहिं उठिकै देवकोकरिध्यान। मात औ पितुको सु करिये नित प्रणाम सुजान ॥ तिमिहिगुरुको और जेठे होहिं तिनको भूप । नमस्कार सु कीजिये नित यह सुधर्म अनूप ॥ बढ़ति है यह धर्म कीन्हे आयु तातसधर्म। है नहीं संदेह यामें कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ शास्त्र माहीं कही जेती वस्तुभक्ष नृपाल । तिनहिंको नित करिय भक्षण कहत दक्षविशाल ॥ बैठि उत्तर दिशा मुखकै शौच करिये तात। मौन ह्वैकै दन्तधावन करै नित अवदात ॥ वृद्ध ढिग औ गुरुन के ढिग तिमि बिचक्षण पास । देवपूजा किये बिनहूं जाइये बुधिरास ॥ देवपूजा किये बिन नहिं जाइये अन्यत्र। होमनित्यहि कीजिये यह धर्म भूप पवित्र ॥ मूत्र और पुरीष करिकै धोइये नितपाय। तिमिहि जो कहुं जाइये तौ धोइयेनरराय ॥ भोज्य औ अध्ययन कीजे पदनको नित धोय । नित्यको यह धर्म कीन्हे रहत

सुखसों भोय ॥ देवताके अर्थ भोजन बिरचिये हे तात। स्नान करिकै शुद्ध ह्वैकै मनतबुध अवदात ॥ मलिन जो आदर्शता-को देखिये कबहूं न। औ निशामें देखिये नाहिं होत परमायून॥ शिरहि उत्तर ओर करिकै शयनकीजै नाहिं। तिमिहि पश्चिम ओरकै हम सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ पूर्व दक्षिण ओर शिर कै नित्य कीजै शयन। अति अँधेरे माहिं शयन न कीजिये मति अयन॥ होहि जौने सदनमाहीं सोवती परदार। जाइयेनहिं सोइबेको तहां भूप उदार ॥ सोइये कबहूं न जीरण भग्नग्रह के माहिं । औ न तिरछो सोइये हम सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ कीजिये कबहूं न भूपति नास्तिकन को संग। संग कीन्हे होत अपनो धर्म नष्ट उतंग ॥ बैठि आसन पायसों नहिं बैठिये भूपाल । नग्न ह्वैकै न्हाइये नहिं कहत सुबुध बिशाल ॥ औ निशाके माहिं कबहूं कीजिये नहिं स्नान । स्नानकरिकै अंग को नहिं पोंछिये मतिमान ॥ बिना कीन्हे स्नानचन्दन लाइ-ये नाहिं भाल । स्नान करिकै बस्त्रको फटकारिये न नृपाल ॥ बस्त्रभीजो राखिये कबहूं न तन के माहिं। स्नानकै बिन किये पूजा बोलिये हे नाहिं॥ देवतापै चढ़ी मालापाइ तिहिको पर्म। गरेते सो खैंचिये कबहुं न तात सधर्म ॥ पहिनि ताको जाइये नहिं बाहिरे सुनु तात । परशिये नहिं पातकीको कहत बुध अवदात ॥ रजस्वलिका नारिसों कबहूं न कहिये बैन। ग्राम के नहिं निकट बिष्ठा कीजिये मति ऐन ॥ मूत्र बिष्ठा कीजिये नहिं कबहुं जल के माहिं। खेत माहीं अन्नके अरु औ न सुर गृहपाहिं ॥ अन्न भोजन करत जल नाहिं पीजिये त्रयबार। करि सु भोजन धोइये मुख तीनबार उदार ॥ पूर्वमुख ह्वै नित्यभोज न कीजिये ह्वै मौन। कबहुं भोजन की न निन्दा कीजिये बुधिभौन ॥ करि सु भोजन राखिये कछु अन्न भाज-नमाहिं। बढ़ति जनकी आयुहै इमि किये धर्म सदाहिं ॥ पूर्व-

मुखह्वै किये भोजनबढ़ाति आयु सुभूप । बदन दक्षिण ओर करिकै किये भोज्य अनूप ॥ होतहै यश भूमिकामें चंद्रसों अभिराम । बदनपश्चिमओरकरिकै कियेभोज्यललाम ॥ धन्य जगमें होतहै मतिपायकै अवदात । बदनउत्तर ओरकरिकै कियेभोजन तात ॥ होतहैकल्याणप्रापत कहत बुध अभिराम। सुनहु कुन्तीनन्दबर अरुवृन्ददर बुधिधाम ॥ करि सु भोजनपरशशिखि को करि सुमन सों भूप । लाइये जल नाक कान सु चक्षुमाहिंअनूप ॥ मूर्द्धमाहीं तिमिहिं जलको परशकीजै तात । ताअनन्तर देह मेंसब कीजियेअवदात ॥ अस्थिभस्म अलारजहँ बहु पर्‌यो होयसुजान । तहां ठाढ़ो हूजिये नहिं कहत प्रज्ञ महान ॥ अन्यजनके स्नान ते जो बच्यो है कीलाल । कीजिये नाहिं स्नान तासों कहत बुद्ध बिशाल ॥ अन्नपथ में चलत कबहूं खाइये नहिं तात । औखरो ह्वै खाइये नहिं कहतबुधअवदात। मूत्रकीजै भस्ममें औ गऊ गृहमें नाहिं। औ न ठाढ़ोहोयकीजै औन सुरगृह पाहिं ॥ जायभोजन करनको तब धोय करिकैपाय । पोछिये नहिं चरण आले राखिये नरराय ॥ शयन कीजै धोय करिकै पोछिपद सुखदायु । किये यहबिधि नित्य नृपबर बढ़ति है बहु आयु ॥ खायकै कछु बिना धोये बदनको अभिराम । बिप्र गो अरु अग्निको जे छुवतनहिं बुधिधाम ॥ भानुऔसितभानुको औनखत वृन्दहिपर्म । जे न देखत होत ते अल्पायु नाहिंसधर्म ॥ वृद्ध आवै पास जबतब नम्रह्वै बुधिधाम । जोरिकर उठि जायसोंहै सबिधि करि परनाम ॥ हाथअपने चारु आसनको बिछायनरेश । वृद्धकोबैठाइये यह धर्मसुखद अशेश ॥ कांस्य भाजन भग्नमें करिये नभोजनतात । भग्नआसन पैनकबहूं बैठिये अवदात ॥ कीजिये भोजन न तनमें राखिकै यकबास । औनकीजैशयन ह्वैकै नग्न सुनु बुधिरास ॥ औ सुनो उच्छिष्ट मुखह्वै कीजिये नहिंशयन ।

औ न शिरको परशिये उच्छिष्टमुख मतिअयन ॥ रहत शिरके सर्व आश्रय प्राण हैं नरराय। केश तातेखैंचिये नहिं कहत वरबुधराय ॥ औ न कबहूं घावदीजै हौन शिरकेमाहिं। शिरहि अपने पाणि दोउन सों खुजाइय नाहिं ॥ औ न पुनि २ स्नान कीजै सहित शिर महिपाल। किये यहबिधि होति जनकी आयु परमबिशाल ॥ जो लगायोतेल शिरमें रह्यो तामें जौन। अंगमें लगवाइये नहिंतौन सुनु बुधिभौन ॥ जौनभूंजेतिहुनको कबहुं न भक्षत तात ॥ होतहैं अल्पायु ते नहिं कहत बुधअव-दात ॥ बेदको उच्छिष्ट मुख कबहूं न पढ़िये भूप। औ पढ़ाइये नकबहुं कहत बुध अनुरूप ॥ बेदकोपढ़िये न तबजब चलैबा-यु महान। औ तहां पढ़िये न जहँ दुर्गन्धहोय महान ॥ दोहा ॥ बाणी श्रीयमरायकी कहीपरम अभिराम। यहि प्रसंगमें कहत हौं सुनहुं तौन बुधिधाम ॥ रामगीती ॥ पढ़त जे उच्छिष्ट मुखअरु पढ़ावत जन जौन। होतहैं अल्पायु अरु नहिं लहत सन्तति तौन ॥ अनध्यायन माहिं जे जन पढ़त अज्ञ सुवेद। बेदकोते लहतहैं नहिं रहत नित्य सखेद ॥ होतहैं अल्पायु ते यहिमाहिं संशय नाहिं। कहीबाणी धरमकीहमसुनीबुधजनपाहिं ॥ चंचला ॥ भानु अग्निगाय बिप्रसामुहें अजान जौन। मूत्र औपुरीष कर्त होतहैं गतायु तौन ॥ जेनकर्त ते सु प्राप्त होत आयुको महा-न। नित्य ते अनन्दको लहैं नरिन्द्रहे सुजान ॥ दोहा ॥ बिष्ठा मूत्रहि करतजे उत्तरमुख दिनमाहि। दाक्षिण मुख निशिमाहिं ते हैं अल्पायू नाहिं ॥ तोमर ॥ हठ कीजिये गुरुसाथ। कबहूंन हे नरनाथ ॥ जब होय गुरु सहक्रुद्ध। तब नम्रह्वै अतिउद्ध ॥ करिकै बिनय परिपाय। करियेप्रसन्न सचाय ॥ गुरुकी सुनिंदा जौन। जनकरत दुर्मति भौन ॥ निश्चैहि तिनकीआय। नाशि जाति है नरराय ॥ रोला ॥ चरणधोयबे काजलयो भोजनमें जो जल। दूरिडारिये बच्योहोय जिहिमाहिं जितोजल ॥ भोजनक-

रिकै जायदूरि कछु बहुजललैवर । बदनकीजिये शुद्धनित्य सुनु भूपसुमतिधर ॥ दोहा ॥ दूरि कीजिये धामते मूत्र जायकै तात । धाममाहिं नहिं कीजिये भनत सुबुधअवदात ॥ कबहुं न धारण कीजिये रक्तपुष्प की माल । शुक्लपुष्पकी मालको धरिये सदा नृपाल ॥ रक्तसुमन जे बिपिनके औ नीरजहैंजौन । तेतौ धारण कीजियेसदातात बुधिभौन ॥ कचनारहु के सुमन कीमाला दूषित नाहिं । सुन्योतात सिद्धान्तयह हम वर बुधजन पाहिं ॥ सोरठा ॥ जो जनकरिकै स्नान आवै पूजासमयमें । शिरमेंतासु सुजान चन्दन चारु लगाइये ॥ रामगीती ॥ ओढ़िबेके बस्त्र तिनकोपहिनिबे नहिं तात । ओढ़िये नहिं पहिनिबे के बस्त्रको अवदात ॥ दशी जौनेबसनमाहीं होयनाहीं भूप । कीजिये नहिं ताहि धारणकहत प्रज्ञअनूप ॥ देवपूजा समयके अरु शयनके बरबास । तिमिहि बाहिर जायबे के बसननृप बुधिरास ॥ पृथक् पृथक् सुराखिये मतिमान भनतहमेश । राखिये नहिं कार्य सबमें एक बसननरेश ॥ रहै दिनभर ब्रह्मचारी भयोकरिकै स्नान । ब्रह्मचारीहोय औ सब पर्वमाहिं सुजान ॥ एक भाजन माहिं जन द्वैचारि मिलिकैतात । कीजिये कबहूं न भोजन भनतबुध अवदात ॥ गऊ औ मञ्जारको सूंघ्यो सुभोजन जौन । तिमिहिंसूंघ्यो श्वानको करिये न भोजन तौन ॥ लवण करमें खाइयेनहिं औ न निशिकेमाह । सक्तु दधिसँग खाइये कबहूं न हे नरनाह ॥ तौन भोजन कीजिये नहिं कढ़ैजासे बाल । मांससूखो औ न बासी खाइये महिपाल ॥ मांसगाय मयूरकोहै नित्यबर्जिततात । खाइये कबहूं न ताते भनतबुध बिख्यात ॥ भूमिमें धरि कीजिये कबहूं न भोजनपर्म । औ सुभोजन शब्दवत कीजै न तातसधर्म ॥ पंक्तिमाहीं सबनको दीजै सुभोज्य समान । दीजिये नहिं कबहुँ न्यूनाधिक्यतात सुजान ॥ भक्ष्य जेती बस्तु तिनको भक्षिकरिकैशेश । कबहुँ काहूको न दीजैभनत सुबुध सुबेश ॥ उदुम्बर

शणशाक पिप्पल बटनके फलजौन । चहतजे कल्याण ते नहिं खातहैं बुधिभौन ॥ करिसुभोजन आचमन करि कहतबुध अवदात । चरणदक्षिणके अंगुष्ठहि धोय उठिये तात ॥ ताअनन्तर शुद्ध ह्वैके पाणिसों शिरपर्शि । परश करिये अग्निको ह्वै खरोसो हे दर्शि ॥ किये यह बिधि रहतमोदित पचत अन्नसुजान । प्रशंसा है होतिजनकी ज्ञातिमाहिं महान ॥ ज्ञाति को जो वृद्ध अपनी औ दरिद्रीमित्र । इन्हैं राखे गेहमाहीं होतगेह पवित्र ॥ जौनराखतधन्यते हैं बढ़ततिनकी आयु । कढ़तिबाधा गेहते सब रहत आनँदछायु ॥ सारिका शुकऔ परेवा राखिये गृहमाहिं । वृद्धिकारक सर्बये हैं अत्र संशयनाहिं ॥ गृध्रउद्दीपक तथा अलितिमिहिं भूपकपोत । सर्बआयेधाममें येकरतअशुभ उदोत ॥ कीजिये निन्दा न कबहूंमहत जनकीतात । छोड़िकपटहि प्रशंसानित कीजिये अवदात ॥ नृपतिकी अरु वैद्य की अरु वृद्धकी तियभूप । बिप्रकी अरु बन्धुकी अरु भृत्यनारि अनूप ॥ बालकी औ शरणमें जो होयताकी दारु । नारिसम्बन्धीनकी औ है अगम्याचारु ॥ गमनइनमें करत जे नहिंमहत तिनकी आयु । होत निश्चय कहत हैं बुध सुनहु बर नररायु ॥ शास्त्रमतसों शुद्ध जोबर बनोहोय अगार । बासतामें कीजिये बुधिरासि भनत सुढार ॥ शयन औ अध्ययन संध्यामाहिं कीजै नाहिं । औ न भोजन कीजिये हम सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ किये यह बिधि होति जनकी आयु महतसुजान । नित्ययामेंरहतरत हैं परमप्रज्ञावान ॥ धोइये नहिं केश कबहूंकरि सुभोजनतात । औ न कीजै श्राद्ध निशिमें भनतबुध बिख्यात ॥ बहुत भोजन कीजिये नहिं कबहुँ रजनी माहिं । बिहंगनको मारिये महिपाल कबहूंनाहिं ॥ बैन अप्रिय भूप कहिये कबहुँकाहूकौन । औ न काहू को सशोकै कीजिये बुधिभौन ॥ कीजिये निन्दा न काहू की परोक्षसुजान । घटति जनकी आयु ये सब किये ते मति-

मान ॥ पतितसों नहिं बोलिये कबहूंन हे महिपाल । दर्शपर्शहु कीजिये नहिं कहतप्रज्ञ बिशाल ॥ पतितको संसर्गसोहै आयु हर्तापर्म । है नहीं संदेहयामें सुनहु तातसधर्म ॥ किये ते दिन माहिं मैथुन होतजनअल्पायु । तिमिहिं कन्यागमनते जनहोत हैं अल्पायु ॥ रमणकुलटा माहि कीन्हें होति आयुषक्षीन । औ किये ते स्नान पुनि पुनि कहत परमप्रवीन ॥ रजो दर्शन भये बिननहिं जाइये तियपास । हेतु दीरघ आयुको यह भणत बर बुधिरास ॥ होय जाको जन्मभो कुलमाहिं उत्तमपर्म । होहिं जाके अंग सुंदरसर्ब तात सधर्म ॥ होय जाकी बरोबरबय तिहि सुकन्या साथ । ब्याहकीबो योग्यहै सुनु धर्मधरनरनाथ ॥ बंश राखन हेत करि उत्पन्न पुत्रसुजान । साबिधितहि पढ़ायकैकरि भूरिबर मतिमान ॥ परमउत्तम बंशमाहीं तास कीजे ब्याह । राखियेनितधर्ममाहिं प्रवृत्त हे नरनाह ॥ पुत्रिका उत्पन्नकरिकै सहित विधिअभिराम । सुकुलमें उत्पन्न शुचिधीमान परमा धाम ॥ दीजिये ऐसे सुबरको हर्ष सहित बिशाल । धर्मधर बर कीर्त्तिकरबर प्रज्ञसुनु महिपाल ॥ साबिधिसह शिर स्नानकरिकै बिमलतन अभिराम । देवकारज पितर कारज कीजियेबुधिधा-म ॥ होय जौने नखतमाहीं जन्मसुनु हे तात । श्राद्धतिहि में कीजिये नहिं भनतबुध बिख्यात ॥ पूरबा अरु उत्तरामें श्राद्ध कीजै नाहिं । तिमिहिं श्राद्धै कीजिये नहिं नखतकृतिकामाहिं ॥ और ज्योतिषमाहिं बर्जित हैं जितेकनक्षत्र । श्राद्ध तिनमें कीजिये नहिं भणतप्रज्ञ पवित्र ॥ पूर्व मुख औ उदीचीमुख जे करावत क्षौर । बढ़ति तिनकी आयु है बरभणत बुधि शिरमौर ॥ होय जौने बंशमें रुजमृगी कुष्ठमहान । ब्याह तौने बंशमें नहिं कीजिये मतिमान ॥ चारु लक्षण जितोति-नसों सोय युक्ताजौन । दर्शनीया औ प्रशस्ता होय जोबुधि भौन ॥ होयजामें कुटिलता नहिं नेकहू नरनाथ । ब्याहकीजे

चाहिऐसी कन्यकाके साथ ॥ ईरषा कबहूं न कीजै नारिसेंनृप प्रज्ञ। हेतुहै अल्पायुको यह कहतबर धर्मज्ञ ॥ उदय माहीं भानुके अरु दिवसमाहीं शयन। कियेतेजन होत हैं अल्पायु नृप मतिअयन॥ औ किये उच्छिष्टमुख निशिमाहिं शयनसुजान। तिमिहिं सन्ध्यामें किये अल्पायुहोत अजान ॥ स्नान भोजन पढ़नसन्ध्या माहिंकीजैनाहिं। औ न कबहूं गमनकीजै पर सुनारी माहिं। करत जे ते होतहैं अल्पायु हे महिपाल। है नहीं सन्देह यामें भणत विज्ञबिशाल ॥ क्षौरको करवाय करिकै तबहिकीजै स्नान। घटतिहै आयुष्यकीन्हें देरहेमतिमान ॥ द्विजनकी अरु देवतनकी तिमिहिं गुरुकीपर्म। स्नान करिकै कियेपूजा बढ़ति आयुषधर्म॥ निमंत्रण बिनजाइये नृप विवाहादिक मैन। निमंत्रणहूं बिनामखमें जाइये बुधिऐन॥ आपुएकहि करि सुसाहस जाइये न बिदेश॥ औ निशामें चालिये नहिं बिना संगनरेश॥ मातको अरु पिताको अरु गुरुनको अवदात। हितहु औ अनहितहु शासन मानिये हेतात॥ वेदऔ धनुबेद पढ़िये यत्नसों अभिराम। तिमिहि अश्वादिकनपै चढ़िये सुनृप बुधिधाम॥ नीति शास्त्रहि तथाबर गन्धर्बशास्त्रहि पर्म। शब्द शास्त्रहि तिमिहिं पढ़िये यत्नसहित सधर्म॥ शास्त्रमें हैं कहीजेती कलातेतो सर्ब। जानियेबर बिज्ञजनसों सुमतिमान अखर्ब ॥ नित्यसुनिये चोपसों इतिहास सहितपुरान। नीतिसों नित प्रजापालन कीजिये मतिमान॥

दोहा॥ रजस्वला जबहोय तब जाइ न तियकेपास। दिनचतुर्थमें जायजब करैस्नान सहुलास॥ रमैसु पचईं रातिमें तियके सँग सुनुभूप। निश्चय पुत्रीहोतहै मतिबर भणतअनूप॥

सोरठा॥ छठईनिशिके माहिं रमैनारिमें होतसुत। यामें संशय नाहिं निश्चय करिकै कहतहौं॥ अर्द्ध चरणादोहा॥ इमिहीं षोड़श दिबसलौं रमैनारिमें भूप। समदिनमें सुतहोत बिषममें पुत्री

होतिअनूप॥ सबवेदनमें श्रेष्ठहै आचारहि नररायु। होतधर्म आचारते बढ़ति धर्मतेआयु॥ कह्योविधाताको महा यह आख्यान सुजान। पढ़े सुने याकोमिलै यश अरु आयु महान॥
शान्तिपर्वणिदानधर्मेउत्तमानुशासनेआयुराख्यानेषट्नवतितमोऽध्यायः॥
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ मानैकिमि सुकनिष्ठको ज्येष्ठ बन्धुमतिमान। औ कनिष्ठकिमि ज्येष्ठको मानैकहहु सुजान॥ भीष्मउवाच॥ ज्येष्ठ सुबन्धु कनिष्ठकी नितही करैसहाय। आज्ञामें नितज्येष्ठ कीरहै कनिष्ठ सचाय॥ चाहै भलो कनिष्ठको ज्येष्ठबन्धु जो नाहिं। पापलोकको जायतौ यामें संशयनाहिं॥ चरणादोहा॥मरै पितातब ज्येष्ठबन्धुको मानैपिता समान। रहैसदाहीं आश्रित ह्वैकै बन्धुकनिष्ठ सुजान॥ तिमिहीं ज्येष्ठबन्धुकी तियकोजानै मातसमान। औ ज्येष्ठाभगिनीको मानै बन्धुकनिष्ठ सुजान॥ सोरठा॥ कियोप्रश्नतुम जौन ताको उत्तर हमदयो। सुनहुतात बुधिभौन अब आगेका पूछिहौ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ जयकरी॥इच्छा उपवासनकीपर्म। बर्णचारिहू करत सधर्म॥ तिमिहींम्लेच्छ करतहैंतात। तासुहेतु नहिंजान्योजात॥ यह हमसुन्यो बुधन सों दक्ष। नेमसु उपवासनको स्वक्ष॥ करैबिप्र क्षत्रियहि सप्रीति। और न कोऊकरैसनीति॥ याको कहिये मोकोहेत। आपुहि कहिबेयोग्य सचेत॥ औ उपवासनको फलजौन। तौनहु कहौ तातबुधिभौन॥ जे उपवासकरत अवदात। गतिकोकौन तौनजन जात॥ कौनधर्म कीन्हें अभिराम। जनछूटै अधर्म सोंमाम॥ औकहुकौन कर्मसोंपर्म। मिलैस्वर्गमें धामसशर्म॥ जेजन करत सबिधि उपवास। करैंदान काते बुधिरास॥ वैशम्पायनउवाच॥ सुने युधिष्ठिरके ये बैन। कहतभये भीषम मतिऐन॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ सुन्योजौन हम श्रेष्ठगुण उपवासनके माहिं। सुनहुतौन हमकहतहैं भूप तुम्हारेपाहिं॥ पूछ्यो जो यह प्रश्न है हमसों तुम अवदात। सोइ अंगिरस बिप्रसों

पूछ्यो हौं हमतात ॥ सुनिकै ऋषिबर अंगिरस मम सुप्रश्न को पर्म । कहतभये उपवासके फलको तात सधर्म ॥ अंगिराउवाच ॥ एकरात्रि द्वैरात्रिको तीनरात्रिकोपर्म । ब्राह्मण औक्षत्री करैं बर उपवास सशर्म ॥ इन उपवासन को करैं वैश्य शूद्र जो भूप । मिलै न कछुफल अचल है यह सिद्धान्त अनूप ॥ तिथि सुपंचमी षष्ठीमें औ पूरणमासी माहिं । एकबेर भोजन करै होत दरिद्री नाहिं ॥ क्षमा मिलति सन्तति मिलति होत रूप अभिराम । यामेंहै संशयनहीं सुनहु भूप बुधिधाम ॥ वैश्य शूद्र जो यज्ञकी इच्छा करै नरेश । तौ कुलवान बुलायबर सादर बिप्र सुवेश ॥ तिन्हैं देय भोजन सबिधि खरोहोयकैपाहिं। कृष्णपक्ष की पंचमी षष्ठी अष्टमि माहिं ॥ यज्ञ यहीहै वैश्यको तिमिहिं शूद्रकोपर्म । व्याधिकढ़ै बीरजबढ़ै कीन्हें याहि सधर्म ॥ चंचला ॥ मार्गशीर्ष मासमाहिं बिप्र वृन्दकोबुलाय । देय भोज्य दक्षिणा समेत कै बिदा सचाय ॥ नित्य एकबेर भोज्य जो करै सुनो सुजान । तासु व्याधि पापको विनाशहोतहै महान ॥ सर्व मोदको उदोत होत गेहमाहिं भूप । होतिहै समृद्धि प्राप्तकीर्त्ति भूमिमें अनूप ॥ पौषमाहिं एकबेर भोज्य जे करैंसुबुद्ध । होततै सकीर्तिभूतिमानरूपमानशुद्ध ॥ एकबेरभोज्यमाघमाहिं जोकरै सचेत । होयभूतिमान बंशमाहिं सो महत्त्वलेत ॥ दोहा ॥ एकबेर भोजनकरत फाल्गुणमेंजनजौन । ताकेबशमें होहिंतियबहुतिय बल्लभभौन ॥ जयकरी ॥ चैत्रमाहिं भोजन यकबार । करै जौनजन सुमति अगार ॥ बहु धनवान बंशमें तौन । लेत जन्महै सुनु बुधिभौन ॥ औ बैशाखहु माहीं भूप । किये एक बरभोज्य अनूप ॥ होहु नारि वा नर नरनाह । श्रेष्ठहिहोत ज्ञातिके माह ॥ ज्येष्ठमास में भूप सुढार । कीन्हें ते भोजन यकबार ॥ मिलत अतुल ऐश्वर्य महान । होहु नारि वा नर मतिमान ॥ आषाढ़हु में जो जन एक । बार करै भोजन सविवेक ॥ लहै पुत्रबहु

अरु धनभूरि । रहैसदा आनँदसों पूरि ॥ श्रावणहूमें जो यक-
बार । भोजन करै सुबुद्धि अगार ॥ अरु तीर्थनमें करै सनान ।
बढ़ैबंश ताको मतिमान ॥ तिमिहिं भाद्रपद माहिं उदार । भो-
जनकरै जौनयकबार ॥ ताहिअचल ऐश्वर्य महान । प्राप्तहोत
है सुनहु सुजान ॥ अरु बहुप्राप्त होतहैं गाय । रहैनित्य आनँद
सों छाय ॥ क्वारमासमें जो यकबार । भोजनकरै सुबुद्धि अगार॥
मिलैताहि बाहन अभिराम । अरु बहुपुत्र होत बुधिधाम ॥
एकबार भोजन जनजौन । कार्त्तिकमाहिं करै बुधिभौन ॥ प्राप्त
होति ताको बहुनारि । भरी सुगुणसों परम सुढारि ॥ होतशूर
अरु कीरतिवान । रूपवान अरु बरबलवान ॥ दोहा ॥ अगहन
आदिक मासमें कीन्हें ते उपवास । जे फल जनको मिलत ते
कहे तुम्हैं बुधिरास ॥ कीन्हें ते उपवासनृप तिथिन माहिं फल
जौन । जनको प्राप्त होत अब सुनहु तौन बुधिभौन ॥ पक्ष
गत भये जौन जन भोजनकरै सुजान । दीर्घ आयुसो होतबहु
पुत्रहोत मतिमान ॥ कहे पूर्ब उपवास जे तिनको गहिकै नेम ।
कीन्हें द्वादशबर्ष लों जन गणहोत सक्षेम ॥ जयकरी ॥ जे जन
हिंसामें रतनाहिं । दायाधरे भूरि हियमाहिं ॥ प्रातकाल औ
सायंकाल । भोजन करै सविधि महिपाल ॥ करैहोम नित आ-
लस त्यागि । विधिवतचारु क्रियामें पागि ॥ तेजन षट बर्षहि
के माहिं । लहैं सिद्धिको संशयनाहिं ॥ औ मख अग्निष्टोम
अनूप । लहत तासुफलहै सुनुभूप ॥ धाम अप्सरनको अभि-
राम । तामेंबाम सहस्र ललाम ॥ रमण करत तिनमें सानंद ।
सुनहु धर्मधर कुन्तीनन्द ॥ रमिकरिकै तिनमें बहुकाल । तद-
नन्तरसो सुनु महिपाल ॥ सुवरण वर्ण ललाम बिमान । तामें
चढ़िलहि मोद महान ॥ सानँद ब्रह्मलोकको जाय । बर्षसहस्र
रहत मुदछाय ॥ दोहा ॥ तदनन्तर इहिलोकमें आय तौन सुनु
भूप । उत्तमघरमें जन्मलहि लहत महत्त्व अनूप ॥ तोमर ॥ जन

जौन करत अहार। यकबर्षलौं यकबार॥ अतिरात्रि मखको पर्म। फल लेततौन सधर्म॥ दशसहस्रबर्ष सुजान। बसिस्वर्ग माहिं महान॥ सुखलहतहैं महिपाल। बरप्रज्ञभणत विशाल॥ सुरलोकते पुनिआय। भुवलोकमें नरराय॥ नितसोमहत्त्वहि लेत। गहिधर्म राह सचेत॥ दोहा॥ भोजन चतुरथ प्रहरमें जौन करतयक बर्ष। हिंसातजि गहिसत्यको इन्द्रीजीतिसहर्ष॥ बाजपेय मखके फलहि लहिसोजन महिपाल। बर्ष सहसदश स्वर्ग में आनँदलहै बिशाल॥ दिनके छठयें भागमें करत सु भोजनजौन। एकबर्षलौं नेमगहि क्रोधछोड़ि बुधिभौन। अश्वमेधके फलहि बर लहिमहत्त्व मतिमान। चक्रबाक जामें लगे ऐसो चारुबिमान॥ तापैचढ़िकै स्वर्गको जाततौन अवदात। बर्ष सहस चालीसलौं बसिकै समुद बिभात॥ दिनके अष्टम भागमें एकबर्षलौं नेम। गहि भोजन जो करतगो मखफल लहतसक्षेम॥ जामें सारस हंसबर लागेपरम अनूप। तिहिबिमान पै बैठिसो जातस्वर्गको भूप॥ बर्षसहस्र पचासलौं स्वर्ग माहिं करिबास। पावतहै आनंदको सुनहु तात बुधिरास॥ चरणादोहा॥ करत जौनजन भोजनको है मासमाहिं द्वै बार। अमावास्या पूरणमासी माहिं सुमति आगार॥ अनशन ब्रत षटमासको ताको जो फलशर्म। ताको ते जन होतहैं प्रापतसु नहुसधर्म॥ चरणादोहा॥ साठि सहस संवत्सरलौंसोबसतस्वर्ग के माहिं। करिकै भाव अनेकन नाचति रम्भादिकतिहिपाहिं॥ एकबर्षलौं मास मासमें जोजन जल यकबार। पीवत सो है लहत बिश्वजित मखको सुफलउदार॥ हंसादोहा॥ सिंहब्याघ्र सों युक्तबर ऐसो जौन बिमान। स्वर्गलोककोजात है तापैचढ़ि मतिमान॥ बर्षसु सत्तारिसहसलौं स्वर्गमाहिं करिबास। पावत मोदमहानको सुनहुतात बुधिरास॥ अनशन ब्रतकीजै सुबिधि आनँद कर अवदात। सो बिधितुमसों कहतहौं सुनहुतौनतुम

तात ॥ रामगीती ॥ ब्याधिसों जे रहित अरुहैं जौन आरतनाहिं। ते किये अनशनहि मखफल लहत पदपदमाहिं ॥ हंसयुक्त बिमान पै चढ़ि स्वर्गमेंही जाय। करतहैं यकलक्ष बत्सरतहांबास सचाय ॥ अप्सरन की चारुकन्या रहतिताके पाहिं। राखती हैं ताहि मोदित सदाकौतुकमाहिं ॥ ब्याधियुत औ आरतहु जो अनशनहि बृतधर्म। करैं तौ आनन्दको अति होहिं प्राप्तसधर्म ॥ हंस सहसन लगेजामें प्रभामान बिमान। बैठि तामें स्वर्गको सो जात है मतिमान ॥ लक्षवत्सर स्वर्ग में करिबास बरबुधिरास। करत सुन्दर तियनसँग सुबिलाससाहितहुलास॥ सुबृत अनशन माहिंजाकी देह छूटतितात। भानुकीसी पाय के सो प्रभाचारु बिभात॥ जड़ितमणि मुकतानसों छबिमान स्वच्छ बिमान। बैठि तामें स्वर्गको सो जातहै मतिमान॥ रोम जेते देहमाहीं बर्ष सहस तितेक। बसतहै सुरलोकमाहीं सुनहु नृप सविवेक॥ श्रेष्ठलाभ सुधर्मते नहिं औरहै मतिमान। औ नहीं है वेदते नृप श्रेष्ठ शास्त्रसुजान॥ मातसम नहिं और गुरु है श्रेष्ठ सुखद बिशाल। तिमिहिं अनशन सुबृत समतप और नहिं महिपाल॥ बिप्रसम नहिं और पावन दुहूंलोकन माहिं। करतजे उपवास हैं यहि माहिं संशयनाहिं॥ देवतन उपवासहीसों लह्यो है सुरलोक। सिद्धिलहि उपवासहीसों भयेसुऋषि अशोक॥ कियो भोजन बारियकदिनमाहिं बिश्वामित्र। सहस यकसुर वर्षलों गहि क्षमाभूरिपवित्र॥ भये ताते बिप्र ताको प्राप्त अति अभिराम। कह्यो हमसों अंगिरस ऋषि परम प्रज्ञाधाम। च्यवन भृगु जमदग्निगौतम ऋषिबशिष्ठसुजान। सबन इम उपवासही सों लह्यो दिवसुदवान॥ कह्यो यह उपवासके आख्यान क्रमसे पर्म। कृपाकरिकै अंगिरस मुनिसुनहु तातसधर्म॥ दोहा॥ पढ़िहैं याको जौनअरु सुनिहैं याको जौन। छूटितौन कल्मषनसों करिहैं दिवको गौन॥ लहिहैं कीरति

भूमि में अति अभिराम महान । सब पक्षिनको जानिहैं राष्ट्र सुनहु बुधिधाम ॥

इतिश्रीमहाभारतेदानधर्मेउपवासविधौसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कहे सबिधि उपवास अरु कहे सबिधि सबयज्ञ । अरु यज्ञनके जे सुगुण तेऊ कहे सुप्रज्ञ ॥ धन बिन होत न यज्ञ है याते तात प्रवीन । यज्ञ नहीं करिसकतहैं जे जन हैं धनहीन ॥ धन हीननको जौन बिधि प्राप्तयज्ञ फल होय । कहहु ताततुम तौन बिधि ज्ञान नयन सों जोय ॥ सोरठा ॥ अरु जो होय समान मखफलको तौनहु कहौ । सुनहुतात मतिमान धर्म गेह सन्देहदर ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ लहत हैं धन हीन मखफल किये ते उपवास । यज्ञकेसम उपासही है सुनहु नृप बुधिरास ॥ करत भोजन जौनजन त्रयबर्षलौं यकबार । धर्म पत्नी माहिं जोरत रहैं सुमतिअगार ॥ यज्ञ अग्निष्टोम को फल लहत हैं सो तात । कही हमको यह सुविधिऋषि अंगिरा अवदात ॥ क्षमाधारे सत्य बोलत नित्यजेजनपर्म । दान औ उपवास में रतरहत जौनसधर्म ॥ हंसजामें लगे ऐसोशुभ्र चारु बिमान । बैठि तामें स्वर्गको सो जात ह्वै मुदवान ॥ बर्ष द्वै शतकोटि लौं दिवमाहिं करिके बास । रहत है अप्सरनके सँग भरो भूरिहुलास ॥ दूसरे दिन करतभोजन जौनजन इकबार । बर्ष लौं यक औकरै नितहोम सुमति अगार ॥ सोउअग्निष्टोम मखको लहत फल अभिराम । अंगिराऋषि कह्यो हमसों सुनो बरबुधिधाम ॥ हंससारस युक्तिलाहिकै प्रभावान बिमान । बैठि तामें जाय दिवमें लहत मोदमहान ॥ बर्षलौं यक तीसरे दिन करत भोजन जौन । करै होम सुनित्य आलस छोड़िकै बुधिभौन ॥ लहत सो अतिरात्र मखको सुफल परम सुजान । युक्त हंस मयूर सों अभिराम पाय बिमान ॥ बैठि तामें इन्द्रसों लसिप्रभासों अभिराम । जात सप्तऋषीन

के वरलोक माहिं ललाम ॥ बासकै त्रयपद्म बत्सर तहांआनँद लेत । अप्सरनके साथरमिकै सुनहु बुद्धि निकेत ॥ चतुर्थेदिन जौन भोजन करतहैं हे तात । बर्षलौं यक करै होमहि नेम सों अवदात ॥ बाजपेय सु यज्ञको फल लहततौन सधर्म । बैठि चारु बिमान ऊपर अप्सरन सहपर्म ॥ जाय सुरपति लोक माहीं देवतनके साथ । रहतहैं चौपद्म बत्सरहर्ष सह नरनाथ॥ जौन पञ्चम दिवस माहीं बर्षलौं यकबार । करै भोजन होम को नितकरै सुमति अगार ॥ होत द्वादश दिवसमाहीं यज्ञजो अवदात । होत ताके फलहि प्रापत तौन जन दैव तात ॥भानु को सो भास जामें हंसयुक्तबिमान । बैठि तापै जातहै सुरलोक को मुदवान ॥ पद्म इक्यावनसु बत्सर तहां करिकै बास ।लहत है अरु महत आनँद सुनहु नृप बुधिरास ॥ करत भोजनदिवस छठयें बर्षलौं जन जौन । औ करै नितहोम थिरिकै चित्त को बुधिभौन ॥ लहतहै गोमेधको फल तौन जन महिपाल। हैनहीं संदेह यामें कहत बिज्ञ बिशाल ॥ हंसऔ बरहीनसों युत हेम को सुबिमान । अग्निकीसीप्रभा जामें सुनहु तात सुजान ॥ ब्रह्मलोकहि जात है सो बैठि ताके माहिं । लहतहै आनंदअ-तिही अप्सरनके पाहिं॥ सहसकोटि सु पद्मअष्टादश पताका दोय । ऋक्षके शतचर्म माहीं रोमजेते होय ॥ रहत तेते बर्षसो है ब्रह्मलोकहि माहिं । सुन्यो यह फल भूप हमहै अंगिरसमुनि पाहिं ॥ दिवस सप्तममाहिं भोजन करै जो यकबर्ष । करै होम-हि नित्य तजिकै क्रोध होय सहर्ष ॥ ब्रह्मचर्यहि धरैविद्या करै गुप्तकबौन । मांस मदिरा कबहुं भक्षण करै नाहिं बुधिभौन ॥ होय जौने यज्ञ माहीं महत सुबरणदान । लहतहै तिहि यज्ञ को फल तौन जन मति मान ॥ मरुतके अरु इन्द्रके सो लोक माहीं जाय । रहतहै बहु बर्षलौं सह हर्षसों नरराय ॥ परमसु-न्दरि देवकन्या पूजतीहैं ताहि । करति मोदित राखिबेकोभाव

ते बहु चाहि ॥ दिवस अष्टम माहिं भोजन करै जो जनतात। बर्षलौं यक करै होमहि नेम सों अवदात ॥ पौंडरीक सु यज्ञ को फल लहतसो अभिराम। है नहीं संदेह यामें भणतमतिबर माम ॥ पद्मबर्ण बिमान को लहि जाय दिवके माहिं। लहत है बहु नारिसो यहि माहिं संशय नाहिं ॥ करत जो जन नवमबा-सर माहिं भोजनभूप। बर्षलौं यक करै होमहि धरे धैर्यअनूप॥ अश्वमेध सहस्रको फल लहतसो जनदक्ष। पुण्डरीक सुकमल कीसी प्रभाजामें स्वक्ष ॥ ब्योम यान सु पाय ऐसो सुनहु भूप उदार। बैठितामें जाय दिवमें लहतमोद अपार॥ कल्पयक औ बर्ष अष्टादश सहस्र नरेश। शतसहस्र सुकोटि ऐसो बसत तत्र सुबेश॥करत जोजन दशमदिनके माहिं भोजन तात। बर्षलौं यक करै होमहि नेमगहि अवदात ॥ अश्वमेध सहस्रको फल लहत तौन सुजान। है नहींसंदेह यामें भणत बिज्ञमहान ॥लगी लरमोतीनकी जिहिमाहिं अति अभिराम। जरेहीरा चारु जामें भरे परमामाम॥ लगे अनगिनखम्भजामें मणिनके छबिमान। कोकनद के बर्ण सोहै परम परमावान ॥ हंस सारस बंशजामें करें नाद अनूप। पाय ऐसे ब्योम यानहि बैठि तामें भूप॥जा-यकै सुरलोक माहीं रहत है बहु काल। अप्सरनके साथरमि कै लहतमोद बिशाल ॥ बर्षलौं यक ग्यारहेंदिन करतभोजन जौन। छोड़ि आलस नित्य होमहि करै सुनुबुधि भौन॥ लखै नहिं परनारि औ बोलै न मिथ्या बैन। देय काहू जीवको कबहूं न भूप अचैन ॥ पिताकोअरु मातको उद्धार कीबेकाज। महा-देव सुमहाबलको प्रीति सहित दराज॥ करै दर्शन जायकहि-कै तौन जन हे तात। अश्वमेध सहस्रको फल लहत है अव-दात ॥ बिधाताको लहत पावन महत चारु बिमान। बैठि तामें जात दिवको भरो मोद महान ॥ मिलतिहैं तहँ हेमवर्णा ताहि सुन्दरिदार। करत तिनके साथमाहीं नित्य सुमुद बिहार॥ द-

शहजार सुकोटि औशतकोटि दशशतबर्ष । करतहैंतहँ बाससो बुधिरास तातसहर्ष॥ नित्यशंकर जाततामें देखिबेकेकाज। अं- गिरसमुनि कह्यो हमसों सुनहुबर नरराज ॥ करत द्वादश दिवस में जन जौन भोजन तात । बर्षलौं यककरै होमहिनेमगहि अव- दात ॥ लहत सो सब यज्ञ को फलमहत सुनु महिपाल । चारु जामें जरी मणि औ भरी मुक्तामाल ॥ हंसबरही बंशजामें करैं शब्द सचैन । ब्योमयान सुपाय ऐसो सुनहु नृप बुधि ऐन॥ बैठितामें भानुवारे लोकमाहीं जाय । तहां करिकै बास सो बहु काललौं सुख पाय ॥ लहत हैं पुनि ब्रह्मलोकहि महत मोद निकेत । है न यामें नेक संशयकह्यो सुमुनि सचेत ॥ त्रयोदश दिनमाहिं भोजन करतजो यकबार । बर्षलौं नित करै होमहि सहितनेम उदार ॥ देव मखको महत सो फल लहत है अ- भिराम । अग्नि कोसो तेज तनमें होतहै अति माम ॥ लगी मुक्तामाल औ मणिजाल तामें चारु । देवकन्या परमधन्या भ- रीरूप अपारु ॥ करति जामें गान ऐसो पायकै सुबिमान । बैठि तामें जातहै सुरलोकमाहिं सुजान ॥ शंकु एक औ पताका द्वै कल्पयक अरु दक्ष । कोटि औ यक पद्मवत्सर बसत सो तहँ दक्ष ॥ करतताके सामुहेहैं गान नित गन्धर्ब । देवकन्या देति ताको नित्यमोद अखर्ब ॥ चतुर्दश दिनमाहिं भोजन करतजो यकबार । बर्षलौं नितकरैहोमहि गहि सुनेम सुढार ॥ देव कन्या लसति जामें परम सुन्दरिभूप । हंस सारस जूह कूजत भरे मोद अनूप ॥ ब्योमयान सुपाय ऐसो बैठितामें पर्म । देवकन्या के सु गृहमें जात तौन सशर्म ॥ चारुबालूकण जितेहैं सुरसरी के माहिं । तिते बत्सर रहतसो है देवकन्यापाहिं ॥ पक्षजबगत होय तबजो करै भोजन भूप । बर्षलौं यककरै होमहि नितस- नेमअनूप ॥ राजसूय सु यज्ञकोफल लहतसो अभिराम । है न यामें नेकुसंशय सुनहु नृप बुधिधाम ॥ चारुयक स्तम्भ जामें

चारिद्वार सुढार। सप्तषण अभिराम तामें लगीं सुमणिअपार॥ लुरै लर मोतीनकी अतिप्रभामय नरराय। ध्वजा जामें लगीं सहसन जुगी छबिसों छाय॥ प्रभाजामें दामिनीकी लसति परम अनूप। व्योमयान सुपायऐसोबैठितामेंभूप॥ जातहै सुरलोकको अवदात सो जन पर्म। सहस युगलौं रहतहैतहँ महतप्रज्ञ सशर्म॥ करत षोड़श दिवसमाहीं जौन भोजन एक। बर्ष लौं यक करै होमहि नित्य सहित बिबेक॥ चन्द्रकन्या के सुगृह में करत सोहै बास। जहांइच्छा होय सो तहँजात सहित हुलास॥ प्रभावारी चारुनारी नित्यपूजत ताहि। नित्यराखत मुदितते बहुभावकरिकै चाहि॥ पद्मशत औ बिधाताके बर्ष शतलौं तत्र। बसतहै सोसुनहु भूपति है न संशय अत्र॥ सप्त दश दिनमाहिं भोजन करतजो यकबार। बर्षलौं नितकरै होमहि सहितनेम उदार॥ बरुणके औ चन्द्रमाके लोकमाहीं तौन। प्राप्तह्वैके जातहै पुनि रुद्रके बुधिभौन॥ तिमिहिं मारुतशुक्रवारे लोकमाहींजाय। जातहै पुनि ब्रह्मलोकहिमाहिं सो नरराय॥ तहां भूषण सहित कन्या इन्द्रकी अभिराम। राखती हैं ताहि मोदित नित्यबरबुधिधाम॥ चलतजबलौं गगनमाहीं चन्द्रमा औ भान। रहत तबलौं ब्रह्मलोकै माहिं सोमतिमान॥ अठारहदिनमाहिं जो जनकरत भोजन तात। वर्षलौं यककरै होमहि नेमगहि अवदात॥ देवकन्याचढ़ी जापै मढ़ी सुखमापर्म। चलतपीछे तासु ऐसेरथ अनूपसधर्म॥ अब्द कोसो शब्द जाको भूरि आनँदकार। ब्याघ्र सिंह सुयुक्त ऐसो लहि बिमान सुढार॥ बैठितामेंलहतहै आनंदतौनअपार। देवकन्या सहित तिहि में बसत कल्पहजार॥ देवता जोकरत भोजन करत सोई स्वक्ष। हैनहींसंदेह यामें सुनहुभूपतिदक्ष॥ करतभोजन जौन जन उनईस दिनमें तात। बर्षलौं यककरै होमहि नेम गहि अवदात॥ लखतहै बर लोक सातहु तौनजे बुधिधाम।

रहतितामें अप्सराहैं लहतसो शुचिधाम॥ करतहैं गंधर्व ताके सामुहे नितगान। भानुऐसो कान्तिमयसो लहतचारु विमान॥ राखतीहैं ताहिबर सुरनारि नित सानन्द। रहतहैं तहँ कोटि बत्सर सुनहु कुन्ती नन्द॥ बीसदिनमें करत भोजन जौनजन यकबार। करै द्वादश मासलौं नित होमसुमति अगार॥ जात सो आदित्यवारे लोकको अभिराम। लहतहै बहुमोदको तहँ सुनहुनृप बुधिधाम॥ अप्सरा गन्धर्वके नभयान ताकेसाथ। चलत हैं नितजात जहँ तहँ सुनहु वरनरनाथ॥ जौनजनइक-ईसदिनमें करत भोजन एक। करै द्वादश मासलौं नित होय सहित विवेक॥ शुक्रकेअरु मरुतके सोलोकमाहींजात। जात सो तिनअश्विनीसुत लोकमें अवदात॥ सुखहिमें रत रहतहै नित दुःखहोत न पास। अमरलौं नित करत क्रीड़ा सुनहुनृप बुधिरास॥ रहतिहैं बहुनारि ताके संग सुन्दरिपर्म। नित्य मोदित राखतीहैं सुनहुतातसधर्म॥ करत भोजनजौन जन बाईस दिनमेंतात। बर्षलौं नित करै होमहि नेमगहि अवदात। नित्यबोलैसत्यहिंसाकरै कबहूं नाहिं। करै दोषारोपकाहू केन गुणके माहिं॥ प्रभामान सु भानुसों सो होतहै महिपाल। बसुनकेशुभलोकमाहीं जातसमुदविशाल॥ सुरनकीकन्यानके सँगरमतसोहैभूप। अमृतभोजनकरतहैनितकह्योसुमुनिअनूप॥ करतभोजनजौनजनत्रयबिंशदिनकेमाहिं। बर्षलौंनितकरैहोमहि करैहिंसानाहिं॥ मरुतकेअरुशुक्रकेशुभलोकमाहींजाय। जातहै पुनिरुद्रके शुभलोककोसुखपाय॥ अप्सरावरनाचतीहैंसदासों हैतास। होयकै यहि भांति मोदित करतहै तहँबास॥ बैठिकै सुविमान ऊपर देवकन्या साथ। रमतहै आनंदसों सुनु धर्मधर नरनाथ॥ करतजो चौबीस दिन के माहिं भोजन एक। वर्षलौं नितकरै होमहि नेम गहि सविवेक॥ जायकै आदित्यके सो लोकमें अभिराम। रहतहै बहु काललौं मुद लहतहै अति

माम ॥ हंसयुक्त बिमानऊपर बैठिकै नरनाथ । सहस कन्या देवतनकी रमत तिनके साथ ॥ पञ्चविंश सु दिवसमाहीं करत भोजन जौन । बर्षलौं नितकरै होमहि नेमगहि बुधिभौन ॥ सिंहब्याघ्र सु लगे तिनमें प्रभाके अभिराम । देवकन्या चढ़ीं तिनपै मढ़ी छबिसों माम ॥ बने सुन्दर हेमके इहिभांतिके रथ तात । तासुपाछे चलतहैं अति प्रभाके अवदात ॥ आपुबैठि बिमानमें यक सहस नारिनमाह । रमतहै यक सहस कल्प सु-सुनहुबर नरनाह ॥ सुधाभोजन करतहैं तहँ सुधाहैनहिं अत्र । सुनहु बर धर्मज्ञ भूपति भणत प्रज्ञ पवित्र ॥ करत भोजन जौन जन षटबिंश दिनमें भूप । बर्षलौं नितकरै होमहि सहित नेम अनूप ॥ मरुतके औ बसुनके सो लोकमाहींजात । लहि बिमान स्फटिकको अति प्रभाको अवदात ॥ बैठि तामें अप्सरा गन्धर्व लैकेसाथ । रमत है द्वै सहस युगलौं सुनहुबर नरनाथ ॥ सप्तबिंश सु दिवसमाहीं करत भोजन जौन । बर्षलौं नित करै होमहि नेमगहि बुधिभौन ॥ होतसो जन पूज्य है सुरलोकमा-हीं जाय । अमृत भोजन करत है तहँ सहित मुदसों छाय ॥ रमतसो नारीनमें तहँ रहत कल्प हजार । बैठिचारु बिमान ऊपर लहत मोद अपार ॥ जौन अष्टाबिंश दिनमें करत भो-जन एक ।बर्षलौं नित करै होमहि नेमसह सबिवेक ॥ भास्कर सो तेजसों सो लसतहै महिपाल । नारिसुकुमारीनमेंरमि लहत मोद बिशाल ॥ भानुकीसी प्रभाको लहिकै बिमान महान । रमतहैशतसहस कल्पहि इन्द्रलोंमतिमान ॥ करतभोजन जौ-नजन उनतीस दिनमें भूप । बर्षलौं नित करै होमहि गहि सु-नेम अनूप ॥ सर्व रत्नसु लगेतामें भानुसों छबिमान । जटित मोतिन हेमको बर प्रभाको सुबिमान ॥ नखत वृन्दन सहित राजत उदय कैसो भानु । अप्सरा गन्धर्व तिहिके माहिं करत सुगानु ॥ रमत तामें बैठिकै सो अमरलौं महिपाल । चारु भू-

षण भूषिता बहुपाय करिकै बाल । बसुनके अरुमरुतके अरु रुद्रके अभिराम । दक्षके अरु बिधाताकेलोकको सुख धाम ॥ जातहै अरु साध्यके सो लोकको मतिमान । अंगिरसमुनि कह्यो हमसों परम प्रज्ञावान ॥ मासजब गत होय तबजो करत भोजन तात । मासद्वादश करै होमहि नेमसों अवदात ॥ तेज सों अरु बपुषसों सोलसत बिरलौं दक्ष । देखिताको होतहै अनिमेष सुरकेअक्ष ॥ बिधाता के लोकमें सो प्राप्त ह्वैकै पर्म । रहतहै आनन्दमें रत नित्य भूपसधर्म ॥ आपनीही प्रभासों जे रहीं शोभित होय । रमत तिननारीन में नभयान लखिमुखभोय ॥ नित्य कन्या देवतनकी पूजती हैंताहि । सदामोदित राखती हैं भावकरि बहुचाहि ॥ भानुऐसो पूर्वदिशि अरुचन्द्र सो पश्चात । मेघऐसो श्यामउत्तर औरसों सुबिभात ॥ रक्त दक्षिण ओरसो अधनील ऊर्ध्व बिचित्र । व्योमयान सुलहत ऐसो सुनहु भूप पवित्र ॥ मेघवर्षत बूंद जेती बर्ष एकहजार । रहत तेते वर्ष है बिधिलोक माहिंउदार ॥ सोरठा ॥ जिहि बिधि जन धनहीन लहत यज्ञ को फल परम । सो बिधि सुनहु प्रवीन कही तुम्हैं हम बरणिकै ॥ दोहा ॥ सबिधि करत उपवास ते उत्तम गतिको जात । छोड़ि क्रुद्धकरि शुद्धहिय धरि सुज्ञान अवदात ॥ कही अंगिरस सुऋषिकी यहविधि बर भूपाल । यामें संशय है नहीं है यह सुखद बिशाल ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेउपवासविधौअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ सब उपवासन माहीं जौन । होय महत फलदायक तौन ॥ कहौ मोहिं उपवास सुजान । धर्म प्रवक्ता आपु महान ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ अगहनकी एकादशी तामें ब्रतकरि जौन । केशवको जे राति दिन पूजि भजत हैं तौन ॥ छूटि जातहैं पापसों होत देह अभिराम । अश्वमेधको फललहत सुनहु भूप बुधिधाम ॥ एकादशिका पौषकी तामें

ब्रतकरि पूजि। निशिदिनकरत प्रसन्न जे नारायणको कूजि॥ बाजपेयके फलहि लहि ते जन मोदित होत। यामें संशय है नहीं सुनहु तात बुधि पोत॥ एकादशिमें माघकी करि जे जन उपवास॥ पूजिमाधवहि दिवस निशि कूजतबरबुधिरास॥राज-सूयको लहतफल कुलको तारतसर्ब। यामें संशयहै नहींमति-बर कहतअखर्ब॥ फाल्गुणकी एकादशी ब्रतकरिकै मतिमान। पूजिजौन गोबिंदको निशिदिन करत सुध्यान॥ तौन यज्ञअति-रात्रको लहिकै फल अवदात। सोमलोक को जातहैं है नहिं संशय तात॥ एकादशिका चैत्रकी तामें ब्रतकरि जौन। सह बिधि पूजत विष्णुको नेम सहित बुधिभौन॥ पौंडरीक मख को सुफल तौन लहत अभिराम। देव लोक को जातहै सुनहु तात बुधि धाम॥ जौन मास बैशाखकी एकादशी अनूप। ब्रत करि तामें नेमसह निशिबासर सुनुभूप॥ पूजतजे मधुसूदनै भरे प्रेमसों भूरि। लहि फल अग्निष्टोमको रहत मोदसोंपूरि॥ सोम लोक को जातहै प्रभापाय अवदात। यामें संशयहै नहीं निश्चय जानहु तात॥ एकादशिका ज्येष्ठ की तामें ब्रत करि जौन। पूजतसबिधि त्रिबिक्रमहि शुद्ध होय बुधिभौन॥ पावत सो गोमेधको फल सुखदायक भूरि। संगमाहिं अप्सरनके र-हत मोदसों पूरि॥ एकादशि आषाढ़की ब्रतकरि ताके माहिं। पूजतबामनको सुजे बोलिसु बुधजन पाहिं॥ तौन लहतनरमेध को फल उत्तम हे तात। रमत संग अप्सरनके लहि भाचारु बिभात॥ श्रावणकी एकादशी तामें तिमिहीं भूप। कूजत जे जन श्रीधरहि निशिदिन सब्रतअनूप॥ पञ्च यज्ञको लहतफल तौन प्रज्ञ हेतात। पावतमोद महान है लहि बिमानअवदात॥ तिमिहिं भाद्रपद मासकी एकादशी अनूप। तामें ब्रतकरि नि-शिदिवस शुद्ध होयकै भूप॥ हृषीकेशको जौन जन पूजत हैम-हिपाल। ते जन मखअति रात्रके फलको लहत बिशाल॥

चरणादोहा ॥ एकादशी क्वारकी माहीं बूतकरि कै जनजौन। पद्म-नाभको पूजतनिशिदिन शान्ति गहै बुधिभौन ॥ गोसहस्रके दान को पावत हैं फल पर्म। यामें संशय है नहीं भूपति सुनहु सधर्म ॥ तिमिहीं कार्तिक मासकी एकादशिका माहिं। सादर मति बर जननको जो बुलायकै पाहिं ॥ पूजत दामोदरहि थिर करि मन निशि दिन तात। गोमखको फल लहतहैं महत तौन अवदात ॥ पूजत जो जन बिष्णुको एक बर्षलौं भूप। पूर्बजन्म को होतहै सुमिरण ताहि अनूप ॥ सुवरण प्रापत होतहै वर्ण होत अभिराम। यामें संशय है नहीं सुनहु तात बुधि धाम ॥ यहब्रत पूरण होय तब सादर बिप्रबुलाय। भोजन दीजेकैसुब्रत दीजै मुदसों छाय ॥ और नहीं उपवास है याके सम सुनुभूप। आपु बिष्णु यह है कह्यो आनँद रूप अनूप ॥ जयकरी ॥ होय द्वादशी युक्ता जौन। एकादशी कहत बुधिभौन ॥ तामाहींकीजै उपवास। सुनहु युधिष्ठिर बर बुधिरास ॥

इतिशांतिपर्बणिदानधर्मेएकादशीप्रशंसावर्णनोनामनवनवतितमोऽध्यायः

युधिष्ठिरउवाच ॥ मल्लिका ॥ ज्ञानवान नाहिं जौन। रूप औ बिभूति तौन ॥ कौनभांति पाय भूप। मोदको लहै अनूप ॥ भीष्मउवाच॥ चंचला ॥ जौन हेतुते अप्रज्ञ रूप औ बिभूति पाय। मोदकोलहैं महान तौन हेतु मोददाय ॥ कानदै सुनो महीप मैं तुम्हैं कहौं बखानि। कौन लेतहै अशेष मोदको सुताहिजानि ॥चरणादोहा॥ मार्ग शीर्ष की परिवा में जब परै सुमूल नक्षत्र। तब कीजै बर चान्द्रब्रतको नृप आरम्भपवित्र ॥ चित्त शुद्ध करि ध्यानमेंदेखि चन्द्रमा पाहिं। धरैनखतमूलादिसब ताके अङ्गनमाहिं ॥जयकरी॥ मूलनखत चरणन के माहिं। धरैरोहिणी जंघापाहिं ॥ धरैनित-म्बनमाहीं भूप। नखत अश्विनी कोसुअनूप ॥ दोऊ नखतअ-षाढ़ सुजान। धरैउरनके माहिं सुठान ॥ फाल्गुनीताराकोपर्म॥ धरै गुदा के माहिं सधर्म ॥ धरै सुकृतिका कटिके माहिं। तिमिहि

भाद्रपद नाभी पाहिं ॥ अनुराधारु धनिष्ठा दोय। धरै पीठि में सुखसों भोय ॥ धरै रेवतीको महिपाल। अक्षण माहिंपरमछ-बिजाल ॥ बाहुन माहिं विशाखा भूप। धरैहस्तमें हस्तअनूप॥ पुनर्बसुअंगुलिन में स्वक्ष। अश्लेषाहि नखनमें दक्ष ॥ज्येष्ठा धरै ग्रीवके माहिं। धरै श्रवण काननके पाहिं ॥ धरै पुष्यमुख माहिं सधर्म। स्वाती दन्त ओष्ठमें पर्म ॥ मघा शतभिषाको महिपाल। धरै नासिकामें छबिजाल ॥ लोचन माहिं मृगशिरा तात। मित्र ललाट माहिं अवदात ॥ शिरमें भरणीधरैनक्षत्र। आर्द्रा केशनमाहिं पवित्र ॥ ह्वैकै शुद्ध ध्यानकेमाहिं। देखिच-न्द्रमा अपने पाहिं ॥ इहि बिधि ताकेमाहिं नक्षत्र। धरै पक्षलौं भूप पवित्र ॥ होयपूर्ण जब यहब्रत तात। देय द्विजनको घृत अवदात ॥ सोरठा ॥ कीन्हें यहब्रत भूप अज्ञहोत है प्रज्ञबर। पावतरूप अनूप लहि बिभूति बहुमुद लहत ॥ दोहा ॥ सुन्यो चान्द्रब्रतकोसुफल तुमसों हम हे तात। सुन्यो चहत वृत्तान्त अब मनुजन को अवदात ॥ तोमर ॥ महिमाहिं हैं जनजौन। किहि कर्मसों नृप तौन ॥ सुरलोकमाहीं जाय। मुद लेतहैं नर-राय ॥ किहि कर्मसों अरुतात। जन नरकको हैं जात ॥ अरु जातजे परलोक। तजिदेहको बुधिओक ॥ कहु जातको तिन साथ। बरप्रज्ञ हे नरनाथ॥ भीष्मउबाच ॥ अरिल ॥ देखहु भूपवृह-स्पति आवत। भानु समान तेजसों भावत ॥ पूछो इन्हें प्रश्न तुम यहबर। और न इनसों बक्ताबुधिधर॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सो-रठा ॥ आये इतनेहिं माहिं बर भगवान वृहस्पती। लखिआगे चलिपाहिं जातभये धृतराष्ट्रसह ॥ सादर तिनको ल्याय अनु-पम पूजा करतभो। तदनन्तर मुदछाय सभासदन पूजाकरी॥ तदनन्तर महिपाल धर्म्मनन्दबर धर्मधर। करिकै बिनय बि-शालसुरगुरु सों पूंछतभयो ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥सुनहुवृह-स्पति बरधर्मज्ञ। सर्बशास्त्र बिद मोदद्प्रज्ञ ॥ जनको कहहु

सहायक कौन । पूछतहौं तुमसों बुधिभौन ॥ जबजन मृत्युहि प्रापत होत । तबसुत भ्राता अरुसब गोत ॥ पित औ मात मित्रके जूह । सम्बन्धी औ ज्ञाति समूह ॥ तासु शरीरकाष्ठलौं क्षिप्र । छोड़िजात सब घरको बिप्र ॥ जीवसाथ परलोकैमाहिं। कौनजात है कहुममपाहिं ॥ वृहस्पतिरुवाच ॥ एकहि जन्म लेत बुधिराश । तिमिहिं एकको होत बिनाश ॥ एकहि जातनरकके माहिं । भूपति यामें संशयनाहिं ॥ कोऊनहिंकरि सकतसहाय। पिता आदि निजजानो राय ॥ अरु इनमें कोऊ नहिं जात। साथ जीवके हे नरनाथ ॥ साथजात है धर्म सुजान । करतसहाय अवश्यमहान ॥ ताते कीजै धर्म्म अनूप । धर्म्महि मुददायक है भूप ॥ धर्म्मयुक्त प्राणी हैं जौन । दिवको गमन करत हैं तौन ॥ अधरमरत जनजे महिपाल । परैं नरकके माहिं बिशाल ॥ याते कीजै धर्म्म अनूप । तजिप्रमादताको हे भूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ युक्तधर्मसों बैन कहे तुम्हारे हम सुने। पै यक मोहिय ऐन संशयभो सो हरहुतुम ॥ दोहा ॥ जीव तजत है देह तब परत नहीं है देखि । धर्मजात किमिसंग है ताकोकहिये लेखि ॥वृहस्पतिरुवाच ॥ काव्य ॥ भू अपतेज अकाश बायुअरु अन्तक मनमाति । जीवनके ये देखतहैं महिपाल धर्म निति ॥ सब भूतनके साक्षि भूत येहैं नृप बुधिधर । इन सबनसह धर्म जात है जीव संगबर ॥ आभीर ॥ हमको पूछो जौन । कह्यो तुम्हैं हमतौन ॥ अब जो पूछहु हेत । सो हमकहैं सचेत ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ जात जीव सँग धर्म जैसे हम तैसे सुन्यो । अब तुम कहहु सशर्म रेत होत किहिभांति है ॥ वृहस्पतिरुवाच ॥ दोहा॥ शरीरस्थ जे पंच हैं भूतमहीप सचेत । ग्रहणकरै जो अन्न है सोइ होत है रेत ॥ नरनारी संयोगते होत गर्भहै तौन । जन्म पायकै कर्मबश भूमेंकरत सुगौन ॥ दोहा ॥ जन्म प्रभृति जेकरत हैं यथाशक्तिजनधर्म । मनुजहोय पुनिरहतहैं भूमेंनित्यसशर्म ॥

धर्म बीचजे करतजन अधरमको महिपाल। सुखके पाछे लहत हैं ते जन दुःख विशाल॥ अधरममें जे युक्त हैं ते जन यमपै जाय। महतदुःखको लहत हैं जानहु निजु नरराय॥ पुनि भूमें सो आयकै तिर्यग्योनी माहिं। जन्मलेत हैं भूपसुनु यामें संशयनाहिं॥ पुरुष सुजिहि जिहि कर्मसों दुखदागतिको जात। तेते अब हम कहत हैं कर्मभूपअवदात॥ पज्झटी॥ पढ़िकै सुवेद चारों सुजौन। द्विजलेय पतितसों दानतौन॥ खरहोय बर्ष दशलौं महान। दुख सहतपरम सुनु नृपसुजान॥ खरयोनिछोड़िकैसुनुनरेश। पुनिवृषभहोत बलको सुशेश॥ रहिवृषभ योनि में सप्तवर्ष। सुनु धर्मवान भूमिप सहर्ष॥ पुनिहोय ब्रह्म राक्षस विशाल। त्रयमास रहत बनमें नृपाल॥ दोहा॥ तदनन्तर सो होतहै ब्राह्मण सुनुवरभूप। यामेंसंशय है नहीं निजुकै कहत अनूप॥ जौन करावत विप्र है जन पतितनसों यज्ञ। ते ऐसीगति लहत हैं सुनहुभूप धर्मज्ञ॥ तोमर॥ कृमि होयकैबुधि भौन। दशबर्ष जीवततौन॥ खरयोनिको पुनिपाय। रहि बर्ष पंच अचाय॥ दोहा॥ पुनि सो शूकरहोत है पंच बर्षलौं भूप। शूकर योनिहिं छोड़ि पुनि कुक्कुटहोतअनूप॥ पंचबर्षलौं रहतहै कुक्कुटयोनीमाहिं। पुनि सो जम्बुक होतहै यामें संशय नाहिं॥ पंचबर्ष जम्बुक योनिहुंमें रहिकै सो बुधिपोत। श्वानयोनिमेंएक वर्षलौं रहिपुनि मानवहोत॥ बिनकारणही शिष्यको मारतहै गुरुजौन। जन्महंसकी योनिमें तासोपावततौन॥ अरिल॥ पितुको अरु माताको जोजन। करत अनादर सुनु नृपसोजन॥ गर्दभ ताको प्रापत ह्वैकरि। जीवतदशबत्सर दुखग्वैकरि॥ पुनि कुम्भीर होत यकबत्सर। होत मनुजसोहै तदनन्तर॥ अरुजाके माता पित रूषत। नित्य कुचाल देखिकै दूषत॥ दोहा॥ तौनहु गर्दभ योनिमें प्राप्तहोय भूपाल। जीवत चौदह मासलौं सहिकै दुःखबिशाल॥ जयकरी॥ पुनि मार्जार योनिमें होय।

जीवत सप्तबर्ष दुखभोय ॥ तदनन्तरसो मानवहोत । सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञापोत ॥ माताकी औ पितकी जौन । निन्दाकरै कुमति को भौन ॥ तौनहोत सारिकहैभूप । निजुकै प्रज्ञसु भणतअनूप ॥ अरु जो ताड़तहोयसक्रुद्ध । तौनहोत कच्छपहैउद्ध ॥ कच्छपह्वै जीवत दशबर्ष । सुनहु युधिष्ठिरभूप सहर्ष ॥ शल्यक योनिमाहिं पुनिहोय । तीनबर्ष जीवत दुखभोय ॥ पुनिबिकराल होतहै ब्याल । जीवत षटमहिना भूपाल ॥ तदनन्तर नरयोनी माहिं । होतनेक संशयहै नाहिं ॥ दोहा ॥ धरी धरोहरि अन्यकी मनुजछपावत जौन । जन्मलहत कृमियोनिमें सुनहु बारशत तौन ॥ रहत एकयक जन्ममें चौदह चौदह बर्ष । तदनन्तर सोहोतहै नर नृपसुनहुसहर्ष ॥ गुणमें दूषणदेय जो काहूके जन जौन । निश्चयसो पशुहोतहै सुनहुभूपबुधिभौन ॥ विश्वासीके घातजो करै होयसोमीन । जीवत बत्सर आठलौंभूपति सुनहु प्रवीन ॥ मीनयोनिते छूटि पुनि चारिमासमृगहोत । मृगयोनिहुसे छूटि पुनि छागहोतबुधिपोत ॥ छागहोयजीवतरहै एकबर्ष भूपाल । कीटहोयकै लहत पुनिदुखसों अतिहिबिशाल ॥ तदनन्तरसो लहतहै मनुजयोनि सुनुभूप । यामें संशयहै नहीं निश्चयजानु अनूप ॥ रामगीती ॥ उरद औ गोधूम यव तिल मूंग तण्डुलपर्म । चना अरसी तिमिहिं सरसों सुनहुतात सधर्म ॥ तिन्हैं चोरत जौनमूखक होतहै निरलाज । छोड़ि मूषक योनि शूकरहोत तौन दराज ॥ रोगसोंह्वै युक्त शूकर योनिकोसो त्यागि । पञ्च बत्सररहै जीवत श्वानकै दुखपागि ॥ ततअनन्तरहोत मानव सुनहुबर महिपाल । कहतहौं मैं तुम्हैं निजुकै हियेमाहिंबिशाल ॥ रमत जो परनारिमें सोहोत वृकबलवान । छोड़िकैवृकयोनिकोसो श्वानहोतमहान ॥ श्वानयोनिहिंछोड़िकै पुनि कृशित होकैशृगाल । ततअनन्तर गृध्रह्वै कै होतहैसो ब्याल ॥ ब्याल योनिहिं छोड़िकेपुनिहोतहै बककाक । हैनहीं

संदेह यामें सत्यहै मम वाक ॥ नारिमाहीं बन्धुकी जो रमत दु-
र्मतिभौन । रहै कोकिल योनिमाहीं एकवत्सर तौन ॥ सखाकी
अरु भूपकी अरु गुरूकी तियमाहिं । रमत जो है तासुसम नृप
और पापीनाहिं ॥ पञ्च वत्सर तौन जीवै ग्राम शूकरहोय ।
छोड़ि शूकर योनिकोसो श्वानह्वै दुखमोय ॥ रहैजीवतवर्षद-
शलौं सुनहुबुद्धि अगार । ततअनन्तर पञ्चवत्सर होतहै मा-
र्जार ॥ छोड़िकै मार्जार योनिहि होयकुक्कुटतौन । रहै जीवत
बर्षदशलौं परम दुर्मतिभौन ॥ ततअनन्तर ह्वैपिपीलक जिय-
तहै त्रयमास । कीटह्वै यकमासजीवै सुनहु नृपबुधिरास ॥
जन्मयेती योनिमें लहि फेरिसो महिपाल । जन्मलहि कृमियोनि
माहीं लहत दुःखबिशाल ॥ मासचौदह बासकरि कृमि योनि
माहीं तौन । फिरत बिष्ठा मूत्रमाहीं सुनहु नृपबुधिभौन ॥ तत
अनन्तर भये अन्नको नाश हेबुधिरास । करतमानव योनिमाहीं
फेरिसोहै बास ॥ ब्याहमें अरु यज्ञमें अरुदानमें जनजौन ।
करतबाधा लहतहै कृमियोनिको जनतौन ॥ बर्षदश औ पञ्च
सो कृमियोनिमें करिबास । ततअनन्तरहोत मानव सुनहु नृप
बुधिरास ॥ प्रथम कन्यादई जो सो औरको जेदेत । तौनहू कृ-
मियोनिको लहि महत दुखकोलेत ॥ रहत कृमिकी योनिमाहीं
बर्ष तेरह दक्ष । नशै अधरम सर्वसोपुनि मनुजहोत प्रतक्ष ॥
देवकारय पितरकारय किये बिनजन जौन । करतभोजन काक
सो जनहोत सुनु बुधिभौन ॥ काकह्वैशतबर्ष जीवतफेरि कुक्कु-
टहोत । छोड़ि कुक्कुटयोनिको पुनि तौनसुनु बुधिपोत ॥ ब्याल
योनिहिं प्राप्तह्वै यकमास रहि तेहिमाह । ततअनंतरहोतमा-
नव तौनहे नरनाह ॥ जीविका जोदेतताकी करतनिंदाजौन ।
रहतबानर योनिमें दशबर्षलौंहै तौन ॥ छोड़ि बानरयोनि मूषक
योनिमें पुनिहोय । पञ्चबत्सर रहत जीवत महत दुखसोंभोय ॥
छोड़ि मूषक योनिहूको होतहैपुनिश्वान । श्वानह्वै षटमासजी-

वत पायदुःखमहान ॥ करतहैं जनजौन जेठे बन्धुकोअपमान। क्रौञ्चपक्षी होतसोहैं सुनहु नृपमतिमान ॥ क्रौञ्चयोनिहिछो-ड़िकै यकवर्षमाहींतौन । होतचीरक बिहँगहैसुनुभूपप्रज्ञाभौन॥ छोड़िचीरकयोनिकोतिहिकेअनन्तरभूप।लहतमानवयोनिकोहै भनतविज्ञअनूप ॥ब्राह्मणीमेंरमतजोहैशूद्रदुर्मतिमान।कीजिये कबहूंनताकोदरशपरशसुजान॥ प्राप्तह्वै कृमियोनिमेंसोशूद्रबहु दुखपाय । ग्रामशूकरहोयकैपुनिरहतरुजसोंछाय ॥ छोड़िशूकर योनिको पुनि श्वानयोनी माहिं । महादुखको लहतहै यहिमा-हिं संशयनाहिं ॥ तिहि अनन्तर पापकर्मा होत मानवनीच । पापही को करत सो पुनि सर्व्व वयके बीच ॥ एकसंतति होय जब तव मृत्युलहिकै तौन । होयमूषक योनिमें है प्राप्त दुर्मति भौन ॥ कियो काहूको न मानै जौनजन उपकार । सहतहैयम-दूतकी सो दण्डकी बहुमार ॥ दूतकी यमराजके सो मारलहि कै भूरि । प्राप्त ह्वै कृमियोनि में पुनि रहतदुखसों पूरि ॥ बर्ष पन्द्रहबासकरि कृमि योनिमाहीं तौन । गर्भको पुनि होयप्रा-पत परम दुर्मति भौन ॥ गर्भहीमेंमृत्युको सोपाय सुनुभूपाल। गर्भ को पुनि होय प्रापत लहत दुःख विशाल ॥ इमिहि पुनि पुनि गर्भशतमें बासकरिदुख पाय । होय तिर्यग योनिमें पुनि प्राप्त है नरराय ॥ तौन तिर्यग्योनिमाहीं महादुखकोपाय । कूर्म ह्वैकै रहत है बहुकाल है नरराय ॥ सोरठा ॥ दधिकोचोरत जौन बगुला सोजन होतहै । सुनहु भूप बुधिभौन यामें संशय है नहीं ॥ जौन फूलफल पूप चोरत है दुर्मति सदन । सुनिये भूप अनूपसो पिपीलिका होतहै ॥ जयकरी ॥ पायसकीचोरीजन जौन। करत होत तीतिरि हैतौन ॥ अरुचोरै जन जौनपिसा-न। होत उलूक तौन अज्ञान ॥ अरु जो चोरतहै कीलाल। सो पपिहा है होत नृपाल ॥ कांस्यपात्रजो लेत चुराय। हरि-यलपक्षी सो नरराय ॥ रजतपात्रको चोरतजौन । होतकपोत

योनिमें तौन ॥ अरु जो काञ्चनपात्र चुराय । सो कृमि योनि पायदुखछाय ॥ पीताम्बर जो चोरतपर्म । लहत भृत्य ह्वै तौन सशर्म ॥ जामें लगै मोल बहुतौन।बसनचुरावत दुर्मतिभौन॥ हंसयोनिमें जन्महिपाय । रहतकालबहु है नरराय ॥ अरुचोरै जनजौन कपास । क्रौंच योनिमें पावैबास ॥ ऊर्णवस्त्र जो लेत चुराय । तौनहु क्रौंचहोय दुखपाय ॥ वस्त्रस्थूल चुरावतजौन । सुनु नृपशशा होतहै तौन ॥ रंगचुरावतजो जनभूप । मोरहोत है तौन अनूप ॥ रक्त पीतचन्दन अरुश्वेत । चोरी करिइनको जो लेत ॥ तौन छछुन्दरियोनिहि पाय । पन्द्रहवर्ष रहतदुख छाय॥ तदनन्तर सो मानवहोत। सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञापोत ॥ जौन चुरावत पयजो होय । बगुलारहत दुःखसों भोय ॥ लो-भी तैल चुरावत जौन । तैलपजीव होत है तौन ॥ धनअर्थी वा शत्रुबिशाल । शस्त्र सहित ह्वै सुन भूपाल ॥ शस्त्र रहितको मारत जौन । गर्दभ होत मृत्यु लहितौन ॥ जीवत वर्ष दोय बिख्यात । फेरिशस्त्रसों मारोजात॥ मरिकैसो पुनि होतकुरंग । रहै नित्यभय भरो उतंग ॥ एक वर्ष जब पूरणहोय । जातश-स्त्रसों मारोसोय ॥ छोंड़ि कुरंग योनि पुनि मीन । होततौनसुनु भूपप्रबीन ॥ जालमाहिं फँसि बहुदुखपाय। कछूदिनन मेंमारो जाय ॥ श्वापदह्वै पुनिसो दशवर्ष। जीवतभूपति सुनहुसहर्ष ॥ व्याघ्र होयकै बनमें गौन । बत्सरपंच करतहैतौन ॥ तदनन्त-रसो सुनुभूपाल । पापनशे ते परम बिशाल ॥ मनुज योनि में प्रापत होत । पै न लहत बहुमोद उदोत ॥ जौनहरै काहूकी दार । ताहि देत यमक्लेश अपार ॥ शीघ्र शीघ्र सो मरि दुख छाय । बीसजन्म पावतनरराय ॥ तदनन्तर कृमियोनिहिपाय। बीसवर्ष लौं रहतअचाय ॥ कृमि योनिहि तजिकै पुनि तौन । होत मनुज है सुनु बुधिभौन ॥ दोहा ॥ भोजनचोरत जौनजन तौन मक्षिका होय । बहुतमासलौंरहतहै महत दुःखसोंभोय ॥

सोरठा ॥ सर्वपापको नाश भये सुउज्ज्वलहोतजब । सुनहुनृपति बुधिराश पावत मानव योनितब ॥ अरिल ॥ सुनुनृप खरी चुरावत जोजन । निश्चय ह्वैकरि मूषक सोजन ॥ नित्य दौरिमनुजनको काटत । केहु न मानत बहुजन डाटत ॥ मीनमांस को जौन चुरावत । काकहोय सो दुखसों छावत ॥ अरु जो जन चोरतहै नोनाहिं । चीरीकाक होतहै भौनाहिं ॥ घृतहि चुरावत जौन सचावन । काकमद्गुलो होतभयावन ॥ धरी धरोहरि जौन छपावत । मीनयोनि लहि सो दुखपावत ॥ मीनयोनिको तजिकै सो पुनि । मानवहोत कहत तुमको गुनि ॥ मनुजयोनि में प्रापत ह्वैकरि । शीघ्रहि मृत्यु लहतदुखज्वैकरि ॥ प्रथमपाप के पुंज प्रकाशत । समुझि तिन्हैं व्रतकरि जे नाशत ॥ फेरि करत अघ तजिकै ज्ञानहि । व्याधिवान ते होत महानहि ॥ अरु नितपाप करतहैं जे जन॥निश्चय म्लेच्छहोत हैं तेजन ॥
दोहा ॥ करत जौनजन पापहैं पूरबकथित अपार । तिनको जो नारिहुकरै भूपति सुनहु सुढार ॥ तिनहींकी तौ नारि ह्वै पावति दुःख अपार । यामें संशय है नहीं भणत सुबुद्धि अगार ॥ इन पापनको फल कह्यो तुमको किञ्चित भूप । और कथाके योगमें सुनिहौ सर्व अनूप ॥ जन्म प्रभृति जे करतनहिं कौनहु पापसुजान । होत अरोगी तौनअरु रूपवान धनवान ॥ सुनिकै मेरे बचन ये करोनित्य तुम धर्म । धर्म किये भूपाल तुम रहिहौ नित्य सशर्म ॥
इतिभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मेशततमोऽध्यायः१०० ॥
दोहा ॥ हमको कही बखानि तुम अधरमकी गतिसर्व । धर्मगतिहि अब सुननकी इच्छा भई अखर्व ॥ तोमर ॥ सुनुबृहस्पति मतिमान । करि पाप कर्म महान ॥ जन लहतशुभगति पर्म । किहि भांति कहहु सधर्म ॥ अरु कर्म कीन्हे कौन । सुनुपरमप्रज्ञाभौन ॥ जनलेत शुभगति स्वक्ष । कहु मोहिं आपु प्रतक्ष ॥

बृहस्पतिरुवाच॥ दोहा ॥ प्रथम जौन अज्ञान ते करिकै पाप महान । प्राप्त होय सन्तापको ह्वैकै तौन सुजान ॥ गहि सु धीरताचित्त को करिकै थिर भूपाल । फेरि नहीं अघ करत ते शुभगतिलहत बिशाल ॥ रोला ॥ मानवको मन निन्दा अघकी करत सु जिमि जिमिं । उज्ज्वल होत शरीर पापते छूटत तिमितिमि ॥ जिमि जिमि मनुज सुजान करत हैं बात धर्मकी । तिमि तिमि छूटत पाप होतिहै प्रवृति धर्मकी ॥ अरु जे बिप्र सुजान वेदविद धर्मवान बर । तिनसों किये सनेह पाप छूटतहै दुखकर ॥ बिधिवत दीन्हें दान बोलिसादरबर बिप्रहि। शुभगति प्रापत होति पाप छूटत है क्षिप्रहि ॥ शुभगति मानव लहत पाप करि जौन हेतु सों । तुमको कह्यो बखानि तौन हम सर्व चेतसों ॥ दोहा ॥अघकारी जिहिदान सो होत धर्म युत पर्म । तौनदान मैं कहत हौं तुमसों भूप सधर्म ॥ सबदाननमें श्रेष्ठहै अन्नदान अभिराम । ताते प्रथमहिं दीजिये अन्नदान बुधि धाम ॥ करत प्रशंसाअन्नकी सुर ऋषि मानव सर्व । रन्तिदेव भूपाल यह करिकै दान अखर्व ॥ प्राप्त भये सुरलोक को महत पाय आनन्द । दुहूंलोक में लसति है ताकी कीर्ति अमन्द ॥ लब्धअन्न जो धर्म सों तौन अन्न महिपाल । वेदवान बर द्विजनको दीजैसमुद बिशाल ॥ जाके अन्नहिखात हैं द्विजबर एकहजार । नाहिं सो तिर्यग योनि में परत सुबुद्धि अगार ॥ दशहजार बरद्विजनको जोजन भोजन देय । अधरम ते सो छूटिकै महत मोदको लेय ॥ जो द्विज भिक्षामांगिकै अन्नल्याय अभिराम । वेदवानबर द्विजन कोदेत मोदसों माम ॥ लहततौन आनन्द को महत सुनहु महिपाल । चहतताहि सब भूमि में कहत सुबुद्धि बिशाल ॥पालि प्रजाको नीति सों लेय अन्न अवदात । जो क्षत्रिन बरद्विजन को मुदसों देत बिभात ॥ छूटि तौन सबपापसों महत धर्म को पाय । रहत नित्य आनन्द सों सुनु सधर्म नरराय ॥ जौनबिप्र

नित रहत हैं वेदहिमें रत भूप । अन्न दिये तिनको महतहोत सु पुण्य अनूप ॥ करि सुकृषी उतपन्न करि अन्न वैश्य जोप्रज्ञ । शुद्ध चित्तसों द्विजनको देत सुनो धर्मज्ञ ॥ छूटि जात सो पाप सों आनँद पायबिभात । अधरम दरबर धर्मकर सुनहु भूप अवदात ॥ शूद्रअन्न उत्पन्न करि करिकै क्लेशहि भूरि । वेदवान बर द्विजनको देत मोद सों पूरि ॥ छूटि जात सो पापते परमा पायबिभात । यामें संशय है नहीं भणतसुबुध अवदात ॥जौन अन्न उत्पन्न करि अपने बलसों पर्म । देत द्विजनको तौन नहिं दुखको लहतसधर्म ॥ अन्न दानको फल कह्यो तुम्हैं सर्व हम भूप । सब धर्मनको मूलहै यहशुचिदान अनूप ॥ अन्न दान कीन्हे लहत जनशुभ गतिको पर्म । यामें संशय है नहीं भूपति सुनहु सधर्म ॥

इतिशान्तिपर्वणिदानधर्मेगुरुयुधिष्ठिरसम्बादेएकाधिकशततमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ ध्यानअहिंसायज्ञ अरु इन्द्रिय निग्रह जौन । गुरुशुश्रूषा औ सुतप इनमें श्रेयसकौन ॥ बृहस्पतिरुवाच॥ ये सबही हैं सुखदपै इनमाहीं भूपाल । नित्य अहिंसाधर्म सोहै अति सुखद बिशाल ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ऐसे कहिकै दृहस्पति धर्मनंद सों बैन । जातभयेसुरलोकको बर आनँदकेऐन ॥ तदनन्तर भूपाल मणि पण्डुनन्द बुधिगेह । पूछत भे गांगेयको करिकै यह सन्देह ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हिंसा मन बच कर्मसोंकरत जौन जनतात । ते छूटत किमि दुःखसों कहौमोहिं बिख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ आभीर ॥ तजिकै हिंसाजौन । दयाधरतहैतौन ॥छूटि दुःखसों भूरि । रहत मोदसों पूरि ॥ कुंजर पदमें तात । सब के पाय समात ॥ तिमिहिं अहिंसा माह । और धर्म नरनाह ॥निश्चय जात समाय । संशय नहिं नरराय ॥ दोहा ॥ मनसा बाचा कर्मसों हिंसाहोत नृपाल । बुधजन सों मैं पूछिकै निश्चय कियो बिशाल ॥ ताते प्रथमहिं छोड़िये मनसों हिंसा पर्म । फेरि

बाक अरु कर्मसों तजिये तात सधर्म ॥ इहि बिधि हिंसा छो-
ड़िकै भक्षत मांसन जौन । छूटत तेहैं दुःखसों सुनहुतात बुधि
भौन ॥ करत प्रशंसा मांसकी जोजन है महिपाल । तिन्हैंहोत
है दोष अति कहत सुबुद्धि बिशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ परमअहिं-
सा धर्म है कह्यो आपु बहुबार । यामें संशय होत है सुनहु
सुबुद्धिअगार ॥ कही सुबहुबिधि मांससों आपु श्राद्ध बिधिप-
र्म । मांस प्राप्तनहिं होत है हिंसा विना सधर्म ॥ याते मांस
निषेधमें संशयभयो महान । करहुपितामह दूरिसो बक्ताआप
सुजान ॥ जोजन भक्षत मांसको ताहि दोषहै कौन । जोभक्षत
नहिं ताहिगुण होत कौन बुधिभौन ॥ मृगादिकनको बधकरैं जो
जन आमिष खाय । वाकाहूजन औरसोंतिनको बधकरवाय ॥
अन्यारथजे हनतअरु मोल लेतहैंजौन । तिनकोप्रापतहोतहै
कौनदोष बुधिभौन ॥ यहसुनिबेकी ममहिये इच्छाभईमहान ।
कहहुपितामह मोहिं तुम करिकैकृपासुजान ॥ भीष्मउवाच ॥ किये
अभक्षणमांसको होतधर्महैजौन । तौनतुम्हें मैं कहतहौं सुनहु
तातबुधिभौन ॥ रूपबुद्धिबल आयुअरु धीर्य्यअंग सबशुद्ध ।
कियेअहिंसामिलत हैं सबये सुनुनृपबुद्ध ॥ ऋषिगणके संवाद
में भयो जौन सिद्धांत । सो मैं तुमसों कहत हौं सुनियेबर क्षिति
कांत ॥ मास मासमें करतहैं अश्वमेध को जौन । औमद्मांस
हि तजतजो समदोऊ बुधिभौन ॥ हरिगीती ॥ सप्तऋषि औ बा-
लखिल्याऔ मरीचय जौन हैं। करत आमिषअभक्षणकी प्रशं-
साको तौनहैं॥ जेनभक्षत मांसको अरुहनतजे कबहूंनहैं। मित्र-
ता प्राणीनकीते लहत दिनादिन दूनहैं॥ जे न भक्षत मांसताको
करत जीव बिश्वासहैं। करत सो ताकीप्रशंसा साधुबर बुधिरा-
स हैं॥ जो बढ़ावत मांसअपनो मांसपरको खायकै। कह्योना-
रद नियत सो जनरहत दुखसोंछायकै॥ सदा कीन्हें यज्ञबरऔ
सदाकीन्हें दानहैं। सदाकीन्हें तपस्या फल होत जौनमहानहैं॥

होतजोफलत्यागमदिरा मांसकोकीन्हेंसुनो । कहत निश्चयतुम्हैं यामेंभूपमति संशयगुनो ॥ प्रथमआमिषखायकरिकैतजतफेरहु जौनहै । यज्ञकीन्हेंऔपढ़ेश्रुतिमिलतफलनहिंतौनहै ॥ खातजो जनमांसतासोंनाहिंछोंड्योजातहै । जौनछोड़ततौनपावतअभय फल अवदातहै ॥ अभय सब प्राणीनको जन देत जो महिपाल हैं । प्राणदाता होत ते बर भणतबिज्ञ बिशालहैं ॥ लोकमाहीं अभय दीबो जौन सब प्राणीनको । परम सोहै धर्मबर लखि परतहै ज्ञानीनको ॥ परमप्यारो लगत जैसे जीव अपनो जानिये । तिमिहिं सबको जीव आपनलगत प्रिय निजुमानिये ॥ मांसको जो छोड़िबो सो धर्म सुखको धाम है । स्वर्गलोकहि जायबे को हेतुबर अभिराम है ॥ अहिंसा है परमतप औ अहिंसाबर धर्म है । अहिंसाहै सत्यबर नृपकहत निजुकैपर्महै ॥ काष्ठ तृणअरु उपलमाहीं होत आमिष नाहिंहै । जंतुमारे मिलत याते दोष भक्षणमाहिं है ॥ जो न भक्षत मांस कबहूं तौन देव समान है । सदा आमिष खातराक्षस तौन दुर्मति मानहै ॥ जो न भक्षत मांस निर्भय रहतसो सर्बत्रहै । होत प्राप्त न कबहुं भयको नाहिंसंशय अत्रहै॥ कबहुं काहू जीवको उद्वेगजोनहिंदेत है। कबहुँ सो उद्वेगको नहिं प्राप्त होत सचेतहै ॥दोहा॥स्वादक जो नहिं होहिं तौ घातकहोहिं न तात । खादक काजै हनतहैं घातक जन बिख्यात ॥चरणादोहा॥ मृगादिकनकी हिंसाकोहै मानवस्वाद कहेत । भक्षण आमिषको कीजै नहिं याते बुद्धि निकेत ॥ दोहा॥ है सुभक्ष आमिष मनुजकहत जौन यह बैन । ताको हिंसाहोति है निवृत सुनहु बुधि ऐन ॥ जेजन हिंसा करतहैं तिनकी आयु नरेश । काल ग्रसत है शीघ्रही मतिवर भणत सुवेश ॥ सोरठा ॥ हिंसकहैं जन जौन तिनको रक्षक मिलत नहिं । सुनहु तात बुधिमान निश्चित करिकै कहतहौं ॥ दोहा ॥ खायजौन परमांसको अपनो मांसबढ़ात । जन्म जन्ममें भीतिको प्राप्तहोत ते तात॥

जौन अभक्षण मांसको सो दायक कल्यान । सुयश आयु अरु स्वर्गको दाता तिमिहिं सुजान ॥ सोरठा ॥ हिंसकहैं जन जौन तिनके निकटै जो बसत । सोऊ सुनु बुधिभौन निश्चयाहिंसक होत है ॥ दोहा ॥ याते हिंसक जननकी संगति कीजै नाहिं । सुनिये कुन्तीनन्द गुणि कहत प्रज्ञ हियमाहिं ॥ भूमिदान गोदान अरु सुवरणको जो दान । मांसअभक्षण श्रेष्ठ है तिनहूं ते मतिमान ॥ रामगीती ॥ करै रक्षा मांसकी जो बिप्र हे महिपाल । किये तौ तिहि संगभक्षण दोषहै न बिशाल ॥ यज्ञ बिन औ श्राद्ध बिन विधि हीन जेजन खात । दोष तिनको होतहै अति भणत बुध बिख्यात ॥ वृथामांसहि खात जेजन नित्य हे नरराय । नरक माहीं जात ते जन महत दुखसों छाय ॥ मांस जे जन खात ताके कार्य्य जौन अबुद्ध । कहे बिनही हनत पशुको सुनहु नृप बुधउद्ध ॥ महत दोषहि लहत सो हम कहतगुणि हियमाहिं । खात ताको होतदोष न प्राप्त संशय नाहिं ॥ खाय मांसहि प्रथम फेरिहु देत जो है त्यागि । छूटि अघते प्राप्तधर्महिं होत सो सुखपागि ॥ जौन ल्यावत मांसको अरु कहत नीको जौन । मोल मांसहिलेत अरुजो देत दुर्मति भौन ॥ हनतजे अरु खातजे जन मांसको भूपाल । होतहै इन सबहिके सम दोष भाव बिशाल ॥ रह्यो चाहत उपद्रव बिन जौन जन सर्बत्र । सर्ब मांसहि तजत सो है सुनहु भूप पवित्र ॥ सुनतहैं हम भूप पूरब कल्पमें मखकार । ब्रीहिको बनवाय कै पशु चारु बुद्धि अगार ॥ हनतहैं सब यज्ञमाहीं वेद विधिसों पर्म । हनत हैं नहिं कबहुं पशुको दयावान सधर्म ॥ सुनहु आमिष खात जे नहिं रहत सुखसों पूरि । खातजेजन नित्यहैं ते परत दुखमेंभूरि ॥ वर्षशतलौं तपस्या जो करतहै मतिमान । करत आमिष त्याग औ जो दुओजान समान ॥ खाइये नहिं मांस मदिरा कारतिक के माहिं । औ अवश्यहि खाइये सितपक्षमें तौ नाहिं ॥ धर्म

करिबो योग्य कार्तिक माहिं है भूपाल । कीजिये हिंसा न याते भणत विज्ञ बिशाल ॥ मास श्रावण भाद्रपद औ क्वार कार्तिक माहिं । जे न भक्षत मांसते दुख लहत कबहूं नाहिं ॥ कीर्ति बल अरु आयु यशको प्राप्तहोत महान । है नहीं सन्देह याते भणतबर मतिमान ॥ चारि महिना माहिं एकहुमाहिं जो नहिं खात । छूटि दुखसों तौन जन मुदवान होय बिभात ॥ मासहू में पक्ष यक जन मांसखात न जौन । तिनहुंकीहै होति हिंसा निवृत्ति सुनुबुधिभौन ॥ भूप पुरु नाभाग औ नृप अम्बरीष सुजान । गयन नहुष ययाति औ नृप आनरण्य महान ॥ आयु नृग कृतबीर्य औ अनिरुद्ध शिवि मुचकुन्द । श्येनचित्र दिलीप पृथु रघु रन्तिदेव नरेन्द ॥ बिरूपाश्व अलर्कनल निमि जनक करुष सुवेश । धर्मवान महान अरुबर कीर्तिकार अशेश ॥ ऐल रैवत सुना श्रृंजय हरिश्चन्द्र नृपाल । बीरसेन दुष्यन्त अज नृप रामभूप बिशाल ॥ मान्धाता भरत औ इक्ष्वाकु शम्भु सुजान । सगर औ वसुबाहु भूपति श्वेतबर मतिमान ॥ इते भूपन कारतिक में मांस खायो नाहिं । नेमसोंवर भयो ताते बास दिव के माहिं ॥ स्वर्गते पुनिजाय विधिके लोकमें भूपाल । बसत सोहैं करत हैं गन्धर्व गान बिशाल ॥ जन्मभर जे मद्य मांसहि खातहैं कबहूंन । मुनिनकी सम तौन तिनकी प्रभाहोति न ऊन ॥ पढ़तजे अरु सुनतजे यहि धर्मको अभिराम । जाय तौ नहिं नरकको जन दुराचारिहु मांम ॥ पापते छुटिजात पापी है न संशय अत्र । दुःखते दुखवान छूटत सुनहु भूप पवित्र ॥ जन्म तिर्य्यग योनिमाहीं लेतनाहीं भूप । ऋद्धिपावत भूमि पावत पाय रूप अनूप ॥

शान्तिपर्वणिदानधर्मेमांसाभक्षणप्रस्तावोनामद्व्यधिकशततमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ बहुप्रकारके भोजन तिनको मनुज छोड़िकैतात । आमिषभक्षत प्रीतिसों राक्षसलों विख्यात ॥ आ-

मिष भक्षणकी करत जिमि जन इच्छापर्म। अन्यभोज्यकी करतहैं इच्छातिमि न सधर्म॥मैंहूंजानत मांससम अन्यभोज्य नहिंचार। निश्चय करिकै कहतहौं तुमको भूप उदार॥ मांस अभक्षण माहिंहैं जे गुणबर बुधिधाम। औ भक्षणमें दोषजे ते पुनि कहियेआम॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा॥ कह्यो जौनतुम भूप तामें नेक असत्य नहिं। मांससमान अनूप भोजन और न भूमि में॥ विषय माहिं रतजौन औ जिनके तन माहिंक्षत। सुनहु तात बुधिभौन अरु जे हारे मार्गमें॥ तिनको मांस समान और न भोजन श्रेष्ठ है। आमिषकरत महान पुष्टि सुनहु भूपालमणि॥ मांस अभक्षणमाहिं बहुगुण हैं भूपालमणि। सुनहुतौन ममपाहिं मैं निश्चय करिकै कहत॥ दोहा॥ जौन बढ़ायो चहत हैं अपने मांसहि भूप। खाय अन्यके मांसको तेहैं क्षुद्र अनूप॥ सबकाहूको और कछु प्रिय नहिं प्राण समान। दयाकरैं ताते मनुज हियके माहिं महान॥ अर्द्ध चरणादोहा॥ मांस होतहै शुक्रते यामें संशयनाहिं। ताके भक्षणमाहिं दोष है पुण्य अभक्षण माहिं॥ सोरठा॥ वेदमाहिं विधिजौन आमिष भक्षणकी नृपति। तिहि विधिसों बुधिभौन भक्षणमें नहिं दोष है॥ जयकरी॥ पशू बनाये मखके काज। यहौ सुनत हम हैं नरराज॥ क्षत्रियकी जो विधिहै तात। आमिष भक्षणमें विख्यात॥ तौनहु कहत तुम्हैं हम पर्म। सुनहु कानदै नृपति सधर्म॥ अपने बलसों हैं नरराय। मृगया करिकै मांसहि ल्याय॥ भक्षण कीन्हेंदोष न होत। कहत महतहैं प्रज्ञापोत॥ चरणादोहा॥ यज्ञनके जे देवत हैं बर तिनके अर्थ नृराय। बनके पशु संकलिप दयेहैं पूर्व अगस्त्य सचाय॥ सोरठा॥ यातेबर भूपाल मृगया काजै जात हैं। सुनुबर बिज्ञ बिशाल तिनकोहोत न दोषहै॥ दोहा॥ पै सब भूतनमें दया तिहिसम धर्म न और। दयावान को होतभय कहुं न भूप शिरमौर॥ सोरठा॥ सुनहु अहिंसा जौन लक्षणसो है धर्म

को । कहत धर्मविद् तौन धर्मनन्द अरिवृन्द दर ॥ दोहा ॥ सब भूतनको देत जो अभय सुनहु माहिपाल । सर्बभूतहैं देत नृप ताको अभय बिशाल ॥ दयावानको होतहै प्राप्तदुःख जबभूप। सर्वभूत ताकी करत रक्षा परम अनूप ॥अरिल॥ भयते अन्यहि जौन छुड़ावत । छूटितौन भयते मुदपावत ॥ परम प्राणकेदान समान न । और दान है सुनु अरिभानन ॥ दोहा ॥ मरण न नीको लगतहै सबभूतनको तात । मृत्युकालमें लहत भय सर्ब जीव विख्यात ॥ सोरठा ॥ मांसखात जनजौन नारक कुम्भीपाक में । परिकै पावततौन महत दुःखबर बुधकहत ॥ दोहा ॥ सब पृथ्वीको राज्यहू प्रिय नहिं प्राणसमान । यातेसबमें कीजिये दयासुनहु मतिमान ॥ जयकरी ॥ मांस न खात कबहुं जनजौन। जबलौंजीवै तबलौंतौन ॥ स्वर्गमाहिं लहिचारु अगार । बसत मोदसों नृपतिउदार ॥ जिन भूतनको आमिष खात । जो जन सुनहुप्रज्ञ अवदात ॥ ताके मांसहितेसबभूत । भक्षतदैकैदुःख अकूत ॥ जो जन अन्यहि मारततात । सोऊ निश्चयमारहि खात ॥ अन्यहि सुनहु रोवावतजौन । तौनहु रोवत दुर्मतिभौ-न ॥ अरु जो जो दुख औरहि देत । सो सो आपहु लहत अ-चेत ॥ हरिगीती ॥ अहिंसाहै परमतप औ अहिंसा बर धर्म है । अहिंसाहै दानबर औ अहिंसा मख पर्म है ॥ अहिंसा है परम बल औ अहिंसाबर मित्रहै । अहिंसासम सुखद और न हेत तात पवित्र है ॥ यज्ञकीन्हें होतबर फल जौन तात सुजान है। तीर्थ यात्रा कियेअरु फल जौन दीन्हेंदान है ॥ अहिंसा फलकी न समता कैसकैं येसर्बहैं । अहिंसाफलसो अहिंसा फलहि कहत अखर्ब हैं ॥दोहा॥ कबहूं हिंसा करत नाहिं जोजन बर बुधिभौन। माता औ पितसोलगत सबजीवनको तौन ॥ हिंसाको जो त्याग है ताको फलहैजौन। शतबर्षहुमें कारिसकततााहिन मैंबुधिभौन॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥ सम्पति माहिं असम्पति में औ सुख दुख माहींतात। प्राप्तहोनका कहियेकारण आपुमोहिं विख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ सम्पतिमाहिं असम्पति माहीं औ सुख दुखकेमाहिं। जगमाहीं उत्पन्न होतहैं प्राणी संशय नाहिं ॥ हंसादोहा ॥ याको कारण कहतहौं तुमसों मैं भूपाल। थिरकरिकै तुम सुनहुसो चञ्चलचित्त बिशाल ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं यक इतिहास अवाद। कीटकको अरु ब्यासको तामेंहै संवाद॥ रामगीती ॥ सकटके पथमाहिं यक भयभरो कीट महान। शीघ्र धावतहुतो ताको देखिकै मतिमान ॥ ब्याससुनि सर्बज्ञतासों कहतभे इमिबैन। कहा धावत कीटतू हे भयो परम अचैन ॥ कीटकउवाच ॥ सकटके सुनिघोर घोषहिभरो भयमेंपर्म। धावतो हौं शीघ्रयाते सुनहु ब्याससधर्म ॥ मरणसबको लगत अप्रिय लगत जीवनप्रीय। है नहीं सन्देहयामें गुणो तुमहूंहीय॥दोहा॥ छूटिमोदते दुःखमें होहुं न प्रापत ब्यास। यहबिचारि मैं भजत हौं शीघ्रभरो अतित्रास ॥ भीष्मउवाच ॥ पज्झटी ॥ सुनिब्यास कीट के येसुबैन। इमि कहत ताहिभे सुमतिऐन ॥ सुनु कीट तोहिंहै मोदकौन। कहुमोहिं शीघ्रतू करि न गौन ॥ दोहा ॥ तिर्यगयोनी माहिं सुनु प्राप्त भयेहैं जौन। तिनको जोहै मरण मैं मानतहौं मुदतौन ॥ शब्दस्पर्श सुगन्ध रस और भोगहैं जौन। तिनको जानत तू नहै याते सुखहै कौन ॥ कीटकउवाच ॥ सब योनिनमें रहतरति जीव सुनहु हे ब्यास। यहिकारणते मोदहै मोकोबर बुधिरास ॥ यहि योनिहुके माहिं मैं रहत सहित आनन्द। जीवै की इच्छा करत ताते हे निरदन्द ॥पज्झटी॥ मैं पूर्बजन्मके माहिं पर्म। धनवान शूद्रहों सुनु सधर्म ॥ हौं क्रूर भूरिमैं पापकार। अरु कृपण महत छलकर अपार ॥ धन देय ब्याजलैकै अखर्ब। सुनु बिप्रकरतहौं कार्य सर्ब ॥ मैं कहत नित्य हौं कटुक बैन। कबहूं न देत काहूहिचैन ॥ परद्रब्य हरणहौंकरत

नित्य । सबही सदाहि बोलत असत्य ॥ तजि अतिथि भृत्य गृहमाहिं जाय । हौं करतनित्य भोजनसचाय ॥ मैं देवकाज अरु पितरकाज । कबहूं न करतहौं सुबुधराज ॥ जनरहत जौनमम शरणआय । मैं करतहौं न ताकी सहाय ॥ धनधान्य अन्यके देखिचारु । अरुदारबसन भूषण सुढारु ॥ अतिदुखित होतहौं सुनहुब्यास । निताकिये रहतहौं क्रुधप्रकास ॥ गन्धानक ॥ भलो अन्यको चाहत हौं नहिं अपनेहीके माहीं । अपनोभलो चहत हौं नित्यहि कहत सत्यतुमपाहीं ॥ क्रूरकर्म मैं नित्यकरेहौं बहुदुर्मतिसों छायो । ताके समरण ते अबमेरेताप हियेमें आयो ॥ दोहा ॥ पूर्वकर्म जेतेकिये तिनमें द्वै शुभ कर्म । कीन्हें हैं मैं ब्यासमुनि तुमसों कहत अभर्म ॥ वृद्धामाताकीकरी सेवामैं नितब्यास । भक्तिराखि हियमाहिं अति ह्वैकैसहित हुलास ॥ औ यक निर्मल बिप्रको भोजन मैं यकबार । दीन्हों हौं ममधाममें आये सुमति अगार ॥ इनदोऊन सुकर्मते जन्म पूर्वको पर्म । समरण है सुनु ब्यासमुनि मतिवर सुनहु सधर्म ॥ यहि सुकर्म सों होयगो पुनिहु प्राप्त सुखमोहिं । जानि परतहै कीटइमि कह्योब्याससों जोहि ॥ व्यासउवाच ॥ सोरठा ॥ कीटयोनि में तोहिं पूर्व जन्मकी सुरति है । अरुभो प्रापत मोहिं शुभकर्म न दोऊनसों ॥ प्लवंगम ॥ तपके बलते तोहिं कीटमैं तारिहौं । भूरिमोदसों पूरिदुःखसब टारिहौं ॥ तपकेबलसम और कीटबल्ल नाहिं है । तोहिं कहत हम गुणिकै निजु हियमाहिं है ॥ कीट योनिमें भयोप्राप्त तू पापसों । तजिकै अब यह योनि धर्म के दापसों ॥ ह्वै है मोदहिप्राप्त हिये निज जानुतू । मम बाणी में नेकु न संशयआनुतू ॥ रामगीती ॥ मनुजताको प्राप्तह्वैकै कीट तू मतिमान । धर्ममाहीं प्रवृत ह्वैहै प्रेमसहित महान ॥ करत ह्वैहै बिप्रपूजा देवतनकी यत्र । होति ह्वैहै कथा औ जहँबैठि है तू तत्र ॥ कीटसुनुबर प्राप्तह्वैहै भोगतोको सर्व ॥ पाय है

तू बिप्रताको न्यायसहित अखर्ब ॥ बैनमुनिये भयो ठाढ़ोकीट मगके माहिं। नेककीन्हों शकटगणको हियेमें भयनाहिं॥ शकटगण तिहिकालहीमें भयोआवत उद्द। मस्यो तिहिके तरे सो दबि सुनहुभूपति शुद्द॥ ब्यासमुनिकी कृपालेसो कीटसुनुबुधिधाम। भयोक्षत्रियबंशमें उत्पन्नहोतललाम॥ ताअनन्तरब्यासताके भये आवत पास। देखिसो करिस्मृति उठिकै गहेपद सहुलास॥ कीटकउवाच ॥ सुनहु मुनिवर ब्यासतव शुचिकृपा ते अभिराम। छोड़िकै कीटत्व मैं भो राजपुत्र ललाम॥ तुरँग मैगल ऊष्ट्ररथअरु और जान जितेक। प्राप्त हैं सब मोहिं तेरी कृपा ते सबिबेक॥ बन्धु मित्रन सहित मैं निज करत भोजन चारु। सोवतो हौं मोदसों मैं सुन्दरी सहदारु। करत बन्दीजन सुकीरति नित्य मेरीपर्म। देतहौं मैं दान तिनको नित्य होय सशर्म॥ प्राप्त जो है मोहिं सो सब कृपा ते तव ब्यास। करतहौं परणाम तुमको भरो भूरिहुलास॥ करो आज्ञा कृपा करिजो करौं मैं मुनि तौन। आपु मम आनन्दके हौ हेतुबर बुधिभौन॥ ब्यासउवाच ॥ राज्यको तू प्राप्तह्वैकै करत नहिं अभिमान। भयो हौं परसन्नयातेमैं महामतिमान॥ क्षत्रियत्वहिं छोड़िकै अब बिप्रता अभिराम। पायकै तू पायहै मुदपरमप्रज्ञाधाम॥ राज्यको सुख पायकैकरि यज्ञतू सबिधान। गऊ ब्राह्मण अर्थ लरिकै युद्धमें तजिप्रान॥ पाय है तू स्वर्गमाहीं महतमुद नरराय। लहैगो तू ब्रह्मपदको प्राप्तहोय सचाय॥ जीव तिर्यगयोनिको तजि शूद्रताको पाय। शूद्रताको छोड़िकै पुनि बैश्यतामें जाय॥ बैश्यताको छोड़िकैपुनिक्षत्रियत्वहिलेत। ताअनन्तरबिप्रताको लहतबुद्धिनिकेत॥ दोहा॥ रहैधर्मकेमाहिं तन पायबिप्रतास्वक्ष। पावतहैतबब्रह्मपद सुनहुभूमिपतिदक्ष॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिदानधर्मेचतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा॥ क्षत्रिय ह्वै सो कीटवर करत भयो तप

पर्म । तास निकट आवतभये पुनि मुनिब्यासशर्म ॥ सोरठा ॥ कहतभये इमि बैन ब्यास आयकै तासतट । सुनहुभूप बुधि-ऐन धर्मपाल अरिजालदर ॥ व्यासउवाच ॥ दोहा ॥ भूतनको जो पालिबो सो क्षत्रिनकोधर्म । करिकै तू तिहिधर्मको नीतिधारिकै पर्म ॥ तदनन्तर तू पाय है बिप्रताहिं अभिराम । क्षत्रियको तनत्यागिकै पागि मोदमें माम ॥ आभीर ॥ तातें धर्मपसारि । सर्व पापको टारि ॥ पालुप्रजाको सर्व । गहिकै नीति अखर्व ॥ भीष्मउवाच ॥ ब्यास सुमुनिके बैन । सुनिकै ये बुधि ऐन ॥ धर्म पसारि महान । अधरम टारि सुजान ॥ पालिप्रजा सहनीति । निशिदिन करिकै प्रीति ॥ थोरेही दिन माह । सुनुसधर्म नरनाह ॥ पाय बिप्रतापर्म । सोभो होत सशर्म ॥ तदनन्तर मुनि ब्यास । आये पुनि तिहिपास ॥ व्यासउवाच ॥ पापकरतजन जौन । पापयोनिमें तौन ॥ प्राप्त होत हैं दक्ष । सुनहु बिप्र बर स्वक्ष ॥ पुण्यकरतजो माम । पुण्ययोनिमें आम ॥ प्राप्त होयकै भूरि । रहत मोद सों पूरि ॥ अबतूहै द्विजपर्म । रहिहै सदास-शर्म ॥ कीन्हें ते अभिराम । पुण्यकर्म बुधि धाम ॥ पुण्यकर्म के माहिं । रहतू प्राप्त सदाहिं ॥ कीटकउवाच ॥ तव सु कृपाते ब्यास । आनँद कर बुधिरास ॥ भये पाप सब दूरि । लह्यों मोद में भूरि ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ कीटकृपाते ब्यासकी पाय बिप्रता पर्म । किये यज्ञ बहु प्रज्ञबर बर धर्मज्ञ सशर्म ॥ तदनन्तर सो जातभोबिधि के लोकहि चारु । ब्रह्म पदहि प्रापत भयो सुनहु सुबुद्धि अगारु ॥ चरणादोहा ॥ सम्पत्ति माहिं असम्पतिमें औ सुखदुख माहीं पर्म । प्राप्त होनके पुण्यपापहैं कारण भूप सधर्म ॥ दोहा ॥ हमसों पूछ्यो जौन तुम कह्यो तुम्हैं हम तौन । अब आगे का पूछिहौ सुनहु तात बुधिभौन ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेकीटोपाख्यानेपंचाधिकशततमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ बिद्याअरु तपदानमें श्रेष्ठहोयजोतात ।

त हौं मैं आपसों कहौ मोहिं विख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि
गके माहिं वर कहत एक इतिहास। सुनहु तौन भूपालम-
धर्मपाल बुधिरास ॥ बार बधूके गेहमें पुरीकाशिका माहिं।
मैत्रेय सु ब्यासमुनि आये तिनके पाहिं ॥ हरिगीती ॥ देखिकै
य प्रज्ञाराशि वर मुनि ब्यासको। जाय आगे ल्यायसादर
भूरि हुल्लासको ॥ भये पूजत ब्यासमुनिको प्रेम सों बैठाय
तृषावान बिलोकि शीघ्रहि नीर दीन्हों ल्यायकै ॥ प्याय
ले ब्यासमुनि को आपु पीछे जल पियो। देखि ताके धर्म
को ब्यासमुनि बिस्मयाकियो ॥ देखि बिस्मित ब्यासको सो
त भो इमि बैन हे। कहा बिस्मय कियो हियमें कहो प्रज्ञा
हे ॥ ब्यासउवाच॥दोहा॥ सत्यदान अद्रोह अरु ये तीनों मैत्रेय।
म ब्रत हैं मनुजके इनते आनँद लेय ॥ सोरठा ॥ ये सुवेदके
सुने पूर्व हम ऋषिन सों। सुनहु मनीषा ऐन धर्म धुरन्धर
वर ॥ रामगीती ॥ तृषित मोको देखि करिकै तृषित तुम मै-
। मोहिं मोदित कियो सादर नीरपहिलेदेय ॥ महत ताते
तुमको भयो पुण्यसुजान। सर्व लोकन माहिं तवगतिहो-
मतिमान ॥ भयो मैं परसन्न तेरो देखिपावन दान। हैन
ा तपहु उत्तमदान सम बुधि माम ॥ दोहा ॥ क्वैहौ प्राप्त म-
तुम आनँद को अभिराम। दान किये मनसों लहतको नहिं
नँद माम ॥

तेशान्तिपर्वणिदानधर्मेव्यासमैत्रेयसंवादेषष्ठाधिकशततमोऽध्यायः॥

भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ पुनि मैत्रेय सुजान कहतभयो इमिब्या-
ं। तुमहौ परम सुजान ताते पूछत हौं कछू ॥ ब्यासउवाच ॥
॥ जो जो इच्छाहोय तुम पूछो सो सो सर्व। जो तुम कहि
तौन हम सुनि हैं सुबुधअखर्ब ॥ मैत्रेयउवाच ॥ चरणादोहा ॥
ा औ तपते उत्तमतुम कहत दानको चारु। यामें संशयहै
ं निश्चयभयो उदारु ॥ दरश तिहारो पायकै लाभप्राप्तभो

मोहिं । हरषभयो हियमाहिं अति कृपासावरी जोहिं ॥ तवदरशन ते होयगो मेरोनित कल्यान । सुनहु ब्यासबुधिराशिबरकृपाधाम सुखवान ॥ सुन्दर कुलमें जन्म अरु शास्त्रपढ़नतपपर्म । ये कारण ब्राह्मणयके हैं मुनि ब्यास सधर्म ॥ इन तीनोंबरगुणन सों युक्त होय जबदक्ष । श्रेष्ठहोत तब विप्र है सुनहु ब्यासमुनि स्वक्ष ॥ जयकरी ॥ होततृप्त जब विप्र सुजान । तृप्तलहत सुर पितर महान ॥ जैसे चारु क्षेत्रमें पर्म । मनुजलहत फल महत सधर्म ॥ तिमिहीं गुणवत द्विजकोचारु । दीन्हेंते सुनुबुद्धिअगारु ॥ पावतदाताफलकोस्वक्ष । निजुकैतुमसोंकहतप्रतक्ष ॥ दोहा ॥ गुणयुत जोबिप्रनामिलैसुनहुब्यास बुधिधाम । तौदाता धनवान को ब्यर्थहोत धनमाम ॥ सोरठा ॥ जैसे ऊसरमाहिं बोये कछू न होतहै । तिमिहिं कछूफल नाहिं मिलत मूर्ख द्विजको दिये ॥ मूर्खलेत जो दान तौन परत है नरकमें । सुनहुब्यास बुधिमान दान ब्यर्थ ह्वैजात है ॥ दोहा ॥ लेयदान जो बिप्रबर गुणसों युक्त सधर्म । होय वृद्धको प्राप्त तौ दाता को धनपर्म ॥ याते दानहि देतजो गुणवत दानहि लेत । लहत सुपुण्य समान है दोऊ बुद्धि निकेत ॥ जयकरी ॥ जो कुलीनद्विजहै अभिराम । तप में रत नितरहत ललाम ॥ अरुरतपढ़न पढ़ावन माहिं । मिथ्या कबहूं बोलतनाहिं ॥ ऐसे ब्राह्मण सुनहुसधर्म । पूजनयोग्य सर्बदापर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ सुनिकरिकै मैत्रेयके बचनब्यासये भूप । कहत भये मैत्रेयको ऐसे समुदअनूप ॥ तेरी बुद्धि निहारिकै मैं भो हर्षित पर्म । तेई प्रशंसा योग्य हैं जिनमें सुगुण सधर्म ॥ जयकरी ॥ दानहिकी सुप्रशंसा चारु । हमहैं करत सुबुद्धि अगारु ॥ तुमतौ तपशास्त्रहुकी स्वक्ष । करत प्रशंसाहौ बरदक्ष ॥ स्वर्ग जायबेको अभिराम । बरसाधन तपहैबुधिधाम ॥ तपसों मिलत महत्त्व सुजान । तपहीसों अघमिटत महान ॥ जो जोइच्छा करिकैपर्म ॥ करैमनुजतप सुनहुसधर्म । सोसो इच्छा

होति सु सिद्धि। यामें नाहिं संशय बुधिनिद्धि॥ गुरु तियमाहीं रत जन जौन। गर्भहनै जो दुर्मति भौन॥ औ मदिरापी सुबरण चौर। ये सब सुनहु सुबुध शिरमौर॥ तपसों छूटि पापमो भूरि। रहत महत आनँद सों पूरि॥ विद्या सर्व पढ़ो जो होय। नीचहु करै कर्म जो कोय॥ तौ अपमान न कीजै तास। तिमिहिं तपस्वीको बुधिरास॥ श्रुति अरुशास्त्र पढ़त जन जौन। अरु जे दानदेत बुधिभौन॥ औ जे करत तपस्या पर्म्म। ते सब पूजन योग्य सधर्म्म॥ इहि सुलोकमें सम्पति पाय। रहत नित्य आनँदसों छाय॥ औ परलोक माहिं मतिमान। पावत हैं आनन्द महान॥ अन्न दानसों उत्तम लोक। पावतहैं जन बर बुधिओक॥ अरिल ॥ अरु जनजात अदाता जहँ जहँ। पावत दुःख महतहैं तहँ तहँ॥ मतिवर यामें संशयहै नहिं। कहत तुम्हैं हौं गुणिकै हियमहिं॥ अन्तगुरुतोमर ॥ तुम बुद्धिमान महान हो। अरु श्रेष्ठ तुम कुलवान हौ॥ व्रतवान औ सु दयाल हौ। बर धर्मकार बिशाल हौ॥ दोहा ॥ याते कौनहु पापको प्रापत ह्वैहौ नाहिं। तुमसों कीन्हें बार्त्ता भो सुख मो हिय माहिं॥ सदा सप्रेम निबाहिये अपने कुलको धर्म। यहगृहवाननको उचित सुनु मैत्रेय सशर्म॥ सोरठा ॥ ताते स्वधरम माहिं प्रवृतरहोतुम निशिदिबस। सुनहुआपु ममपाहिं यह सम और कछू नहीं॥ दोहा ॥ जो भर्त्ता निज नारिमें तुष्टरहतहै पर्म। औ निजपतिमें रहतजो तुष्टानारिसधर्म॥ तिनको दुःख न होत है प्राप्तहोत कल्यान। यामें संशय है नहीं सुनु मैत्रेय सुजान॥ अग्निप्रभा सोंजाततम जलसों ज्यों मलजात। तिमिहीं तप अरु दानसों कल्मष सर्व बिलात॥ सोरठा ॥ यह कहिकै मुनिब्यास बुद्धिराशि मैत्रेयसों। बिदाहोयसहुलास जातभये निजधामको॥ दोहा ॥ यह तुम मनमें राखियो कह्यो तुम्हैंहम जौन। बचन सुने ये ब्यासके जोरिपाणि बुधिभौन॥ नम्र होय परदक्षिणा करि

मैत्रेय प्रणाम। कहत भयो इमिब्यासमुख पायो तुमते माम ॥
शांतिपर्वणिदानधर्मेव्यासमैत्रेयसम्वादेसप्तमाधिकशततमोऽध्यायः १०७
युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ उत्तम नारिनको आचार। कहहु पितामह बुद्धिअगार ॥ भई सुननकी इच्छा पर्म। मेरे हियमें सुनहुसधर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ स्वर्गलोकके माहिं शाण्डीली सु तपस्विनी। ताको लखिकै पाहिं सुमना तिय पूछति भई ॥ रामगीतो ॥ कौनतूआचार बरसों पापको करि दूरि। आयकै सुरलोक माहीं रही मुदसों पूरि ॥ तेजसों शिखि शिखा ऐसी रही राजि सुजानि। प्रभासों शशिसुता ऐसीरहीभाय महानि ॥ धारि निर्मल बसन बैठी चारु पाय बिमान। ह्वैरहीमैं चकित ताकी प्रभादेखि महान ॥ अल्प कीन्हेंदान तप औ अल्प कीन्हें नेम। सकृत कोऊ आयनाहिं यहि लोकमाहिंसक्षेम ॥ नारिकिहिशुभ कर्मसों यहि लोकमाहीं आय। राजती है कहौ मोसों महत आनँदपाय ॥ चारु सुमना नारिके ये शाण्डिली सुनि बैन। ताहि ऐसे भईकहती सुनहुप्रज्ञाऐन ॥ धारिकै काषायबसनहि औ न बल्कल धारि। औ जटाको राखि नाहिं इहिलोक आई नारि ॥ आयबेको हेतु जो है कहतिहौं मैं तोहि। सुनहु सुमना नारिथिरकै चित्तमोतन जोहि ॥ कहे कबहूं मैं नपति को अहित बैनकठोर। औ नताकी नयनकरि क्रुधऐन प्रिय की ओर ॥ रहीयुक्ता पितर देवत बिप्रपूजा माहिं। करीकाहूकी न चुगली कबहुं काहूपाहिं ॥ द्वारपै आगार वारे भई ठाढ़ी मैं न। औनकाहूसोंकहे बहुबारलौंमैबैन ॥ सुनहुसुमना औकियो कबहूं न उन्नत हास। औ न काहूसंगमें एकान्त बागबिलास ॥ जायकै कहुं हुतो आवत जबसुमोभरतारु। मुदितह्वैबैठावतीही बिछेआसन चारु ॥ खातहै भरतारमेरो नाहिं भोजन जौन। रहीखाती नाहिं मैंहूं कबहुं भोजनतौन ॥ कहतहै भरतार करिबे कार्य जेजे सर्व। करतिही मैं कार्य तेते मुदितहोय

अखर्व ॥ पति सु कौनौ कार्यको जो हुतो जातबिदेश । होतही मैंबहुत मंगलयुक्त तब सु अशेश ॥ मोसुपति परदेशतेहो आवतोजबलौंन । धारतीही अंजनादिक सर्वमैंतबलौंन ॥ करतहैं जब शयनपति तबहीं जगावतिनाहिं । रहतिहीमें प्रीतिसों बर नित्यसेवा माहिं ॥ धन्यपियबिन अन्यमेरो लख्यो कोउन गात । करतिही गृह कार्यको मैं प्रीतिसों अवदात ॥ करतसेवा सासुकी औश्वशुरकीही भूरि । करतिही जो कहतहैं सो महत आनँदपूरि ॥ करतिनारी जौनहैं यह धर्मको अभिराम । अरुन्धति लौंलहति हैं ते स्वर्गमें सुखमाम ॥ किये याही धर्मको यहलोक माहीं आय । रहतिहौं मैं सुनहु सुमना महत मुदको पाय ॥ भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ बरतपस्विनी शाण्डिली कहि यहि धर्म ललाम । तहँहीं अन्तर्द्धान सों होतिभई बुधिधाम ॥ पर्व पर्वके माहिंजो पढ़िहैं यहआख्यान । स्वर्गलोकमें प्राप्तह्वै लहिहैं मोद महान ॥

इतिश्रीदानधर्मेसुमनाशाण्डिलीसम्बादेअष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८ ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ सामदानदोऊनमें श्रेष्ठहोय जो तात । पूछतहौं मैं आपसों कहौ मोहिं बिख्यात ॥ भीष्मउबाच ॥ किते सामसों होतहैं मुदित सुनहु महिपाल । किते दान सों होत हैं मानव मुदितबिशाल ॥ सोरठा ॥ यातेजानि स्वभाव मनुजनको संसारमें । कीजै यक नरराव सामदान दोऊनमें ॥ अन्तगुरुतोमर ॥ सुनुसामके गुणजौन हैं । तुमसों कहैं हम तौन हैं ॥ जनक्रूरता के पोतहैं । बश सासुसों ते होतहैं ॥ तोमर ॥ इहि प्रश्नमें इतिहास । यक कहत हौं बुधिरास ॥ यक बिप्रको गहिरक्ष । बन माहिंगो सुनु दक्ष ॥ तब बिप्र सो मति मान । अति लह्यो कष्ट महान ॥ मनमो सु थिरता धारि । बिधि सामकी सुबिचारि ॥ करतो भयो अभिराम । सुनि तौन राक्षस माम ॥ अति ह्वै प्रसन्नसुजान । मनमें बिचारि सुठान ॥ यक प्रश्नपूछौ पर्म । द्वि-

जको जानिअभर्म ॥ राक्षसउवाच ॥ दोहा ॥ रहित प्रभाअरुकृशि-
तमें कौन हेतुसों विप्र । कहौ मोहिं यह प्रश्नतू तोहिं छोड़िहौं
क्षिप्र ॥ मधुभार ॥ सुनि ये सुबैन । द्विज सुमति ऐन ॥ ह्वै मुदित
पर्म । सुनुनृप सधर्म ॥ बिकलइहि टारि । प्रश्नहि बिचारि ॥
उत्तरहि देत । भो द्विज सचेत ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ आभीर ॥ दायावान
महान । तूहै परम सुजान ॥ पै जन कहत सु जोहि । रहितद-
यासों तोहि ॥ यह तू हिये बिचारि । रहै शौचता धारि ॥ दोहा ॥
रहित प्रभाअरु कृशरहत यहि कारण सों रक्ष । यामें संशय है
नहीं निश्चयजानहु दक्ष ॥ सुनेविप्र के बैन ये राक्षस होय स-
हर्ष । मित्र करतभो बिप्रको जानि सुबुध्यउत्कर्ष ॥ राक्षसहूबश
होतभो साम सुबुधि सों भूप । आनँद दायक होत है ऐसोसाम
अनूप ॥ धन दीबेको होत नहिं तब सुनु हे महिपाल । जीवन
कीसु उपाय तू सामहि जानु बिशाल ॥

इतिशान्तिपर्वणिदानधर्म्मेसामबिधौनवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ छन्द ॥ कर्म भूमि माहीं सुखदाय । दुर्लभमनुज
योनिको पाय ॥ करै दरिद्री कहा सुजान । अर्थ श्रयके परम
महान ॥ दानन में जो उत्तम दान । औ ते मान्य पूज्यमति मान ॥
ते सब कहौ मोहिं बिख्यात । कहिबे योग्य आपुहौ तात ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ सुनि पाण्डवके ये बर बैन । भीषम परम मनी-
षाऐन ॥ धर्मन माहीं परम अनूप । गुप्त धर्म भे कहत अनूप ॥
भीष्मउवाच ॥ कह्यो पूर्व हमसों मुनिव्यास । गुप्तधर्मबर सुनु
बुधिरास ॥ तुमसों कहतधर्म्म मैं तौन । तजि प्रमाद को सुनु
बुधिभौन ॥ गाई गाथा यम अभिराम । कहे सुफल औ तप
के नाम ॥ रमादेव ऋषिपितर सुजान । चित्रगुप्त अरु प्रज्ञा-
वान ॥ सो गाथा सुनिकरिकै सर्व । ये प्रसन्नता लहत अख-
र्व ॥ तिहि गाथाकेमाहींपर्म । उत्तमकहे ऋषिनकेधर्म ॥ सब
यज्ञन के फल अभिराम । अरुबरफलदाननकेनाम ॥ कहेसर्व

हैं सुनु भूपाल। तिन्हैं सुने सुखहोत बिशाल॥ दशपशुघ्नसम होत सु एक। तैलकार सुनुनृपसविवेक॥ तैलकारदशसम यकहोत। मदिराकार कहत बुधिपोत॥ दश मदिरा करकेसम जानि। वेश्या एक न संशय आनि॥ दश वेश्या सम यक भूपाल। नीचकर्म जोकरे विशाल॥ तासोंदान लियेते पर्म। दोष होतहै जौन सधर्म॥ यमगाई गाथाको चारु। सुने मिटतते दोष अपारु॥ ताहिपढ़तजो मनुजअनूप। तासुहोत बुधि उज्ज्वल भूप॥ तीर्थकिये फल जौनमहान। औकीन्हें फल जो गोदान॥ यज्ञकियेऔबिधिसहजौन। बरफलहोतसुनहुबुधिभौन॥ तेफल प्राप्त होत अभिराम। पढ़े सुने यमगाथाआम॥ छूटतिहैं कल्मषता सर्व। प्राप्त होतहैं धर्म अखर्ब॥ यमकी गाथा को फल पर्म। पूर्बहिं भूपति तुम्हैं सधर्म॥ बरणि सुनायोहम अभिराम। अबगाथा कहतहैं आम॥ देवदूत यकप्रज्ञावान। कौनहुकाल माहिं मतिमान॥ गुप्त होयकै तौन सचैन॥ कहत भयो मघवाकोबैन॥ देवदूतउवाच॥ बर भेषज अश्विनीकुमार। परम श्रेष्ठ गुणके आगार॥ तिनकी आज्ञाको मैं पाय। नर अरु पितर देव सुखदाय॥ तिनको मैंभो प्राप्तसुरेश। सुनिये हे मुद्कार अशेश॥ करत श्राद्धमें भोजनजौन। औजो श्राद्धकरत बुधिभौन॥ तिनको मैथुनकरणसशर्म। किहि कारणते बर्जितपर्म॥ पृथक्पृथक् पिण्डनसोंतीन। भोबिभाग किहिअर्थ प्रबीन॥ चरणादोहा॥ प्रथमपिण्डदीजै किहिकोअरुमध्यमदीजै काहि। अरुसुतीसरोपिण्डदीजिये काहिकहौअवगाहि॥सोरठा॥ देवदूतये बैन कहत भयोसुररायसों। सुरअरुपितरसचैन सुनि सुप्रश्नसबहोतभे॥ तदनन्तर तिहिको पितरकहतभयेइमिबैन। देवदूत आवहु निकट परममनीषाऐन॥ आभीर॥ यहतुमपूछो जौन। प्रश्नपरमबुधिभौन॥ सोहैगूढ़सुजान। दायकमोदमहान॥ दोहा॥ जोजन करके श्राद्धको रमैं त्रियाके संग। औजो

जन भोजन करि त्रियको करैप्रसंग ॥ श्राद्धकारके पितरतौ ए-क्मासलौं बास । तिनदोउन के रेतमें करैं सुनहुबुधिरास ॥ चरणादोहा ॥ पिण्डन को बिभाग अब क्रमगहि कहत ललाम । सुनहु तीन तुम देवदूतबर परम मनीषाधाम ॥ रामगीती ॥ प्रथम पिण्डा नीर माहीं डारिये अभिराम । द्वितिय पिण्डा दीजिये निजनारिको बुधिधाम ॥ तृतिय पिण्डाको सु कीजै अग्निमाहीं होम । श्राद्धकी यह परमाबिधिहै सुनहुबरबुधितोम ॥ पितरहोतप्रसन्न कीन्हें श्राद्ध यहिबिधि पर्म्म । बढ़ति सन्तति तिमिहिं सम्पति बढ़त अक्षय शर्म्म ॥ देवदूतउवाच ॥ दोहा ॥ पिण्डनको सुभाग तुम कह्योसुक्रम गहिश्राम । पूछतहौं यक हेतुमैं तीनहु कहौ ललाम ॥ अरिल ॥ प्रथम पिण्ड जलमाहीं डारत । पितर सुतहिसों किमि मुद धारत ॥ तिहिसों होत प्रसन्न कौनसुर । यहतुम कहौ कृपाकरिकैतुर ॥ मध्यम पिण्डहि पति आज्ञालहि । पत्नी खाति भूरिरतिसो चहि ॥ ताकोपरमकहाहै कारण । कहौ मोहिं करिके निरधारण ॥ तृतिय सु पिण्ड श्राद्धकरिकै बर । अग्नि माहिं होमत हैंबुधिधर ॥ दोहा ॥ तासुकहा फलहोत अरु प्राप्तहोतहै काहि । यहसुनिकै इच्छाभई कहौ आपु अवगाहि ॥ पितरउवाच ॥ सोरठा ॥ तुमयह पूछोजौन सो अतिउत्तम प्रश्न है । सुनहुपरमबुधिभौन याको उत्तरदेतहैं ॥ दोहा ॥ करतप्रशंसा श्राद्धकी सुरमुनिके समुदाय । श्राद्धकर्म उत्तम परम है अति आनँददाय ॥ सुनिकरिकै भगवानते श्राद्ध कर्मको आम । लह्यो मारकण्डेय है निश्चय परमललाम ॥ और न कोऊ श्राद्धको जानत निश्चयचारु । यामेंसंशय हैनहीं सुनहुसुबुद्धि अगारु ॥ तीनहुं पिण्डा होतहैं जिनको प्राप्तसुजान । सोमैं तुमसों कहत औ जोफल होतमहान ॥ चरणाकुलक ॥ पिण्डजात जलमाहीं जो है । करैप्रसन्न चन्द्रकोसोहै ॥ चन्द्र प्रसन्नकरै देवनको । औतिमिहीं पितरनके गनको ॥ जोलहिकै भर्ता कीआज्ञा । पिण्ड खातिहै

नारिसुप्रज्ञा॥पितरदेतहैं ताहिसुनीको। पुत्रसु प्रज्ञमहानहिश्री-
को ॥ होमतजौन अग्निकेमाहीं । सुनोतासु फलमेरेपाहीं ॥ पि-
तरसुलहि प्रसन्नताभारी । करतकामना सिद्धि सुढारी॥ दोहा ॥
तीनोंपिण्डनको सुफलबरिंि सुनायोसर्व। देवदूत हमतोहिंसुनु
बर मतिमान अखर्व ॥ जो द्विजभोजन करतहैं श्राद्धमाहिं अ-
भिराम । श्राद्धकारके पितर त्वहिसो प्रातहोत बुधिधाम ॥चरणा-
दोहा ॥ मैथुनकीबो बर्जित यातेश्राद्ध दिवसके माहिं । होत स्व-
नारी परतियतुल्या यामेंसंशयनाहिं ॥ श्राद्धमाहिं भोजन करै
कैशुचि करिकै स्नान । क्रोध न आनै चित्त में गहै सुक्षमा महा-
न ॥ भीष्मउवाच ॥ यह बिशेषहै श्राद्धकी उत्तम बिधि भूपाल । यहि
बिधिसों जनको मिलत आनँदपरम बिशाल ॥ रामगीती ॥ शरद
अरु हेमन्त ऋतुमें अष्टमी तिथिमाह । करत यहिबिधि श्राद्ध
हैं जन सुनहुबर नरनाह ॥ अष्टकाहै नाम यहिबर श्राद्ध बिधि
को पर्म । किये याहिबिधि पितर कै परसन्न करत सशर्म ॥उल्लाल॥
तवप्रश्न माहिं आख्यान यक भूमिपाल औरहुसुनो। हमकहत
तोहिं अवगाहिकै ताहि तुम सुहीमेंगुनो ॥चरणाकुल॥ बिद्युत्प्रभ
यक परम तपस्वी । रबिसम तेजस भरो यशस्वी ॥ प्रातहोत
मघवाको बानी । कहत भयोऐसे सो ज्ञानी ॥बिद्युत्प्रभउवाच॥ कीट
पिपीलक अरु मृगजूहा । पक्षीगणअरु सर्प समूहा ॥ जे अ-
ज्ञानी इनको मारैं। तेजन बहु पातकको धारैं ॥ तिनको छूटत
पाप महाना । कैसे कहो मोहिं मघवाना ॥ बिद्युत्प्रभकी बाणी
सुनिकै । कहत भये मघवा इमि गुणिकै ॥ शक्रउवाच ॥ अरिल ॥
गंगागाय प्रभास तीर्थ बर । पुष्कर औ कुरुक्षेत्र कलुष हर ॥
इनतीर्थनको करिकै ध्यानहि । ही महँधरिकै प्रीति महानहि ॥
बिधिसों करत स्नान है जोजन । छूटिजात पातक सों सोजन ॥
अरु जोजन गोके करि दरशहि । करिकै तासु पीठके परसहि॥
पुनिगहि पुच्छ सु करत प्रणामहिं । सो पावत फलबृतके माम-

हिं ॥ सर्बहि छूटिजातहैं पातक । धर्मसु प्राप्तहोत दुख घातक॥ जयकरी ॥ तदनन्तर बासवको बैन । बिद्युत्प्रभभो कहत सचैन॥ अतिसूक्षम यक पावन धर्म । कहत तोहिंहों सुनहु सशर्म ॥ बटके बल्कल सुन्दर ल्याय । चारुनीर में तिन्हें पचाय ॥ प्रथम कांकको अबटन स्वक्ष । लायअंग माहीं सुनुदक्ष ॥ पुनि तिहि जलसों कीन्हें स्नान । छूटिजात सब पाप महान ॥ अरु षष्ठिक ओदन अभिराम । खाये पयके संग ललाम ॥ छूटत सबपाप-नसों भूरि । रहत परमआनँद सों पूरि ॥ औरहु चारुधर्म यक पर्म । सुनिये निर्जर नाथ सशर्म ॥ तीरथ कुरुक्षेत्र के माहिं । सुरगुरु जाय शम्भु के पाहिं ॥ कहत हुते मैंसुन्यों सुतत्र । कहत तौनतव पाहिं पवित्र ॥ चढ़िकै गिरिबर माहिंमहान । ऊर्ध्वजो-रिकै पाणिसुजान ॥ बृतकरि ठाढ़ो पदसों एक । ह्वै करिकै जो जन सविवेक ॥ मारतण्ड को लखै सप्रेम । सोजन नित्यहि रहत सक्षेम ॥ महत किये तप लहत सु जौन । फल सों प्राप्त होत बुधिभौन ॥ औ उपवासन को अभिराम । प्रापत होत परम फलमाम ॥ दिनकर की किरणिनि सों सर्ब । छूटिजात हैं पाप अखर्ब ॥ प्रभा देहमें होति महान । क्षीण होति नहिं कबहुं सुजान ॥ परम महान सुपरभावान । अति सुखदायक पाय बि-मान ॥ लसत चन्द्रलौं ताके माह । हर्ष माह ह्वै सुनुसुरनाह ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सुर बर्गमें देवराजसुनु भूप । सुरगुरुको पूछत भयो यहबर प्रश्न अनूप ॥ देवराजउवाच ॥ मनुजनको जिहि धर्म सों प्राप्त होय आनन्द । तौन धर्म हमसों कहौ करिकै कृपा बिलन्द ॥ औहैं दोष महान जे कहौ तौनहू सर्ब । आपु श्रेष्ठ धर्मज्ञ हौ वक्ता परम अखर्ब ॥ काव्य ॥ जेजन बिष्ठा मूत्र करत हैं मारतण्डदिशि । औ जे निन्दा उग्र बायुकी करत दिवस नि-शि ॥ भयेबिना प्रज्वलित अग्निजे होम करतहैं । औ जे मानव अज्ञ दया नहिं हिये धरत हैं ॥ तरुन बालवत्सा सधेनको मनुष

शचीपति। कहत तौन हम तिन्हैं होतहै दोष जौन अति॥
गोअरु रवि अरु अग्नि बायु मनुजनको तारत। इनको सेवत
जौन तौन नहिं दुखको धारत॥ रामगीती॥ मूत्रविष्ठा करत जे
नर नारि रविकी ओर। नरक सेवत छियासी तेवर्ष सुरशिर
मौर॥ करत निन्दा बायुकी हैं जौन जन अज्ञान। गर्भते गिरि
जाति तिनकी प्रजा हे मतिमान॥ भयेबिन प्रज्वलित पावक
करतहोम सुजौन। ग्रहण ताके हव्यको नहिं करत शिखि बुधि
भौन॥ बालबत्सा धेनुको जन दुग्ध पीवक जौन। लहतहैं आ-
नन्द सन्ततिको नहीं जन तौन॥ सुनहुताते बर्ज्य कार्य्य न की-
जिये सुरराय। बर्ज्य कारज किये तेजन रहत नित्य अचाय॥
ताअनन्तरदेवताअरु मरुतगणऋषिपर्म। सर्वयेमिलि सुनहु
भूपति परमप्रज्ञसधर्म॥ दोहा॥ पितरनकोपूछतभयेजोवृत्तान्त
अनूप। सोमैंतुमसोंकहतहौंसुनहुयुधिष्ठिरभूप॥ पितरहोतपर-
सन्नहैं किहिबिधिसोंअभिराम। औअक्षयकिमिहोतहैं श्राद्ध
प्रदानललाम॥ औ मानव किमिहोतहैं रहितसुऋणसों सर्ब।
यह सुनिबे की है भई इच्छापरम अखर्ब॥ पितरऊचुः॥ मधुभार॥
पूछो सुजौन। हमसों सुतौन॥ हम कहतसर्ब। कारणअखर्ब॥
मदनदीपक॥ बर्ण होय लोहित औ श्वेत खुर बिशान। होयब-
दन पाण्डुर औ पुच्छ त्यों सुठान॥ वृषभ यहि सुभांतिको सु-
ढार शीलवान। नीलकण्ठ तासुनाम है बलीमहान॥ मल्लिका॥
नीलकण्ठ शीलधाम। श्रेष्ठहोतसोललाम॥ तासुदानकेमहान।
जू फलै सुनोसुजान॥ जयकरी॥ जे सुजानि विधि बुधजनपाहिं।
तिथि सु अमावस्याके माहिं॥ पितर निमित्त सप्रीतिसशर्म।
नीलवृषभको छोड़त पर्म॥ होत अऋण ते प्रज्ञाधाम। पितर
मोदता पावतमाम॥ दीपदान बर्षामें चारु। जे जन करतसु-
बुद्धि अगारु॥ तेऊ अऋण होत हैं सर्ब। हम निश्चय करि
कहत अखर्ब॥ एसुपरम अक्षय हैं दान। इनते है फल होत

महान ॥ हम सन्तुष्ट रहतहैं पर्म । है नहिंसंशय सुनहुसशर्म ॥ दोहा ॥ पुत्र करत उत्पन्न जे धर्म सहित अभिराम । तौन निकारत नरकते पितरनको बुधिधाम ॥ सोरठा ॥ पितरनके ये बैन सुनि सचैन ह्वैकै परम । वृद्धगार्ग्य मतिऐन कहतभये ऐसे बचन ॥ जयकरी ॥ नीलवृषभ छोड़े गुणवान । अरु बर्षा के माहिं सुजान ॥ दीपदान कीन्हें अभिराम । होत कहाफल परमललाम ॥ पितरऊचुः ॥ नील बृषभकी पुच्छ सुढार । ऊर्ध्व उछारत जौनसुबार ॥ तिहिसों गार्ग्यसुनहु बुधिधाम । साठि हजारवर्ष अतिमाम ॥ पावत तृप्ति पितर हैं पर्म । संशय है नहिं सुनहु सधर्म ॥ दोहा ॥ जौन उठावत शृंगसों नदी कूलते पंक । सोम लोकको जात हैं ताते पितर अशंक ॥ दीपदान जेकरतहैं बर्षा में जनजौन । शोभित शशिलौं होतहैं परमासों जनतौन ॥ गूलरिवारे काष्ठको बर भाजनबनवाय । तामें मधुतिल औउदक भरिकरिकै सुखदाय ॥ अमावास्या माहिंबर जे मानवहैं देत । तिनको प्रापित होतहैं पुत्र सुबुद्धि निकेत ॥ अऋण होत हैं तौन जन पिण्डदेत हैं जौन । सन्ततिसों तिनकोसदा भरोरहतहै भौन ॥ देवत औऋषि मरुतगण पितरनके सुनि बैन । पावतभयेमहान मुद सुनहु तात बुधिऐन ॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिदानधर्मदशाधिकशततमोऽध्यायः११० ॥

आभीर ॥ तदनन्तरसुरपाल । मुदसों भरो बिशाल ॥ बिष्णुहि ऐसे बैन । कहतभये बुधिऐन॥ इन्द्रउवाच ॥ दोहा ॥ आपुहोत संतुष्ट किमि कहहु बिष्णु सानन्द । करता हरता जगतके दरता दुःख बिलन्द ॥ सुनि सुरपतिके बचन ये विष्णु परममुद धाम । कहत भये इमिइन्द्रको सुनहुभूप अभिराम ॥ बिष्णुरुवाच॥ चरणादोहा ॥ द्विजको जेजन करत अनादर करत हमारो जौन । औ जे द्विजको पूजत हैं जन पूजतहमको तौन ॥ दोहा ॥ जब भोजनकरि द्विजउठै तब कीजै परणाम । तिमिहीं संध्या करि

चुके मानव जब बुधिधाम॥ करिप्रणाम सु आपने चरणनको सुरराय। मैं प्रसन्न अति होत हौं यह बिधि किये सचाय॥ अरु गोमयसों लीपिकै चक्राकारसुजान। जपिकैमंत्र सुदर्शनहिं तामें दे बलिदान॥ होत परमसंतुष्टहौं कीन्हें यहबिधिपर्म। मुददायक मानवनको है यह सुबुधि सशर्म॥ बामन द्विज को देखि अरु जलते उठो बराह। तिनको करत प्रणामजे मानव सुनु नरनाह॥ कल्मष तिन मानवनके दूरि शीघ्रही होत। कबहूं तिनके गेहमें होत न अशुभ उदोत॥ गोको औ चलदल द्रुमहिं पूजत जौन हमेश। सब जगपूजे को सुफल तिनको होत सुरेश॥ पूजा मैं तिनकी करी अति प्रसन्न ह्वै लेत। परमहोत संतुष्ट हौंसुनुबर बुद्धि निकेत॥ चरणादोहा॥ गोकीऔ चलदलकी पूजा सोइहमारीजानि। अन्यापूजा है न हमारी यह तू निश्चयमानि॥ इन्द्रउवाच॥ दोहा॥ चक्रचरणबाराहअरु ब्राह्मण बामनजौन। करत प्रशंसा आपुहौं तिनकी किमि मुद भौन॥ भीष्मउवाच॥ तोमर॥ सुनिइन्द्रके यहबैन। बर बिष्णुआनँद ऐन॥ हँसिकैकह्यो इमिभूप। सुनु धर्मपाल अनूप॥ बिष्णुरुवाच॥ रामगीती॥चक्रसों हम दैत्यमारे बक्रबलकेधाम। लईबसुधा दाबि हैहम पदनसों अभिराम॥ रूपधरि बाराहको हम भूमिल्याये इन्द्र। रूपबामन धारिहम जीत्योसुबलि दैत्येंद्र॥ करतइनकी प्रशंसा यहिहेतुतेहौं पर्म। इन्हेंपूजे अजयजन की होति नाहिं सुशर्म॥ गुप्तयह बरधर्म तुमसों कह्योहमसुरराय। कियेते यहि महतधर्महि लहतसुखसमुदाय॥ भीष्मउवाच॥ अरिल॥ तदनन्तरसुनियेनरनायक। मनुजनको अतिआनँद दायक॥ कहतभये बलदेवधर्मबर॥ ताहिकिये नशिजातकलुषतर॥ बलदेवउवाच॥ प्रात करै उठिगोकेदर्शहि। औ दधिघृतसरसोंके परशहि॥ तिमिहि कांकको दरश किये अति। छूटि जात सबपाप कहत सति॥ देवाऊचुः॥ गूलरिकाष्ठ पात्रको लहिकरि। निर्मलनीर चारु ताम-

हि भरि ॥ तौननीरकरमेंलाहिपावन । उत्तरमुखह्वैहोयसचावन॥ ब्रत उपवासन के सङ्कल्पहि । करै प्रात तब सुफल अनल्पहि॥ प्राप्तहोत मानवहै मतिबर । कबहूं होत न जीवन दुखतर । करत जौन इमिहोत तासुसुर । अति प्रसन्न अरु काम सिद्धतुर॥ बिनसङ्कल्प किये फल होत न । यह निश्चय सुकियो मतिपोतन ॥ चरणादोहा ॥ बलिभिक्षाअरुअर्घ्य दीजिये ताम्रपात्र सों चारु । तिमिहिं दीजिये पितरनकोबर तिल अरु उदक सुढारु॥ दोहा ॥ ताम्रपात्रसों बिन दिये होत न फल अभिराम। गुप्तधर्म यह परमअति कह्यो देवतन माम ॥ धर्मउवाच ॥ रामगीती ॥अतिथिजाके गेहते जो होय जाय निराश । जायहोय निराश तौ शिखि पितर औ सुरताश ॥ नारिऔ गो बिप्र को जो हनत दुर्मति भौन । औनहीं उपकार मानत मनुजगर्वीजौन ॥ करत औ गुरुनारिके सँग जौन अज्ञाबिहार। होत जैसो तिन्हैं प्रापित पाप परमअपार ॥ होत तैसो ताहि प्रापित घोर पाप महान । अतिथि को नहिं करत पूजन जौन जन अज्ञान ॥ अग्निरुवाच ॥ गऊको अरु बिप्रको अरु अग्निको जन जौन। करतकबहूंपरश पदसों परमदुर्मति भौन ॥ होत ताको स्वर्ग लौंहै अयशअतिही भूरि । पितर ताके रहतहैं अति महत डरसों पूरि ॥हव्य ताको दियो पावकलेतहै नहिं पर्म । रहत तासउदास देवत देखिभूरि कुकर्म ॥ करत सोहै बास बहुदिन नरकमाहीं उद्ध ।करै ताते कर्म ऐसे कबहुं नहिं करि क्रुद्ध ॥ भीष्मउवाच॥ बशिष्ठादिक सप्तऋषिबर जाय बिधिके पास । करि प्रदक्षिण सर्ब ठाढ़ेभये सहित हुलास ॥ ता अनन्तर ब्रह्मज्ञानी ऋषि बशिष्ठ सुजान। प्रश्न पूछो द्रुहिणको यहमोदकार महान॥ जौन जनधनहीनते जन यज्ञकोफलपर्म । कौन कीन्हेंकर्मपावतकहौ द्रुहिणसशर्म ॥ सुनेवचनबशिष्ठके येद्रुहिणआनँद ऐन। कहत भे इमि बैनऐसे सुनहु भूप सचैन॥ब्रह्मोवाच॥प्रश्नमुनिबरकियो तुम यहप्रश्नअति

अभिराम। सुनहु यहशुभप्रश्नको तुम चारुउत्तर आम॥ पौष के सितपक्षमाहींरोहिणी नक्षत्र। प्राप्तकै तब स्नानकरिकै होय परमपवित्र॥ ओढ़िकै यकवस्त्रबाहरकरै भूमेंशयन। रहैजबलौं रोहिणीनृपसुनहुआनँद अयन॥ परै शशिकी किरणितनमेंसुधा-मयअभिराम। होतजनको यज्ञकोफल प्राप्तहै बुधिधाम॥ भानुरुवाच॥ दोहा॥ व्रत मिलाय अक्षतनमें अंजलिमें भरि बारि। पूरण मासी में दिये शशिको प्रीतिहि धारि॥ अग्निहोत्रकोमहत फल लहत मनुजअभिराम। यामें संशय है नहीं जानहुनिज बुधि धाम॥ चरणाकुलक॥ जेजन अमावास्या माहीं। करत बिचार हियेमें नाहीं॥ काटत हैं बहु बनस्पतीको। सुनोसुतिन की अशुभगतीको॥ पातकटे वृक्षनमें जेते। हत्याहोय द्विजन की तेते॥ तिथिसुअमावस्यामें जोहै। करै दंतधावनकोसोहै॥ पावतपाप हनेको चन्दहि। मानतहैं डर पितर बिलन्दहि॥ लेत न हव्य देव तिहिकेरो। तापै करैं क्रोध बहुतेरो॥ करत पितरऊ क्रोध महाना। ताको करत दुखद अघमाना॥ तिहिकोबाढ़त बंश नहींहै। सो पावत नाहिं मोद कहीं है॥ लक्ष्मीरुवाच॥ भाजन भग्न मलिन जो राखै। दारहि हनै कुबैननि भाखै॥ राखै आसन अतिहि मलीना। तिमिराखैभा गृहकी हीना॥ ताके गृहते जात पितरसुर। उत्सवमें औपर्वमाहिंतुर॥ अंगिराउवाच॥ जो सुनेम गहिएक सम्बत्सर। दीपक देय करंजक द्रुमतर॥ तिमि सुबर्चलालतिका पासै। दीपक धरिकै करै प्रकासै॥ बंश बढ़त है ताको नीको। बढ़त सुयश अरु शशिकीसीको॥ गार्ग्यउवाच॥ होतपुण्यजोशतमखकीन्हें। तिनमेंदानमहान सुदीन्हें॥ प्राप्त सु पुण्य होत सो क्षयको। कहत महत हम करि निश्चय को॥ औ श्रद्धा करिकै हिय माहीं। कियो धर्म ताकीक्षयनाहीं॥ गुप्तबात यह हम सुबखानी। जानत याहि महत जे ज्ञानी॥ दोहा॥ रजस्वला औ कुष्ठिका औ अपुत्रिकानारि। देव पितरके

कार्य्य में तिन्हैं दीजिये टारि ॥ देव कार्य्य जो तियलखै देवत लेत न हव्य । औ देखै जो पितर कार्य्य को लेत पितर नाहिं कव्य ॥ सोरठा ॥ रहत त्रयोदशवर्ष असन्तुष्ट ह्वैके परम । भूपति सुनहु सहर्ष कियो गार्ग्य सिद्धान्त यह ॥ धौम्यउवाच ॥ जयकरी ॥ भग्न भाण्ड अरु कुक्कुटश्वान । और खट्व सुनुबर मतिमान ॥ अप्रशस्तये सर्वहि जानु । यहिमें नेकु न संशय आनु ॥ भग्न भाण्डमें कलिको बास । रहत कहत हैं बर बुधिरास ॥ श्राद्ध-कार जो बर बुधि ऐन । सुनै कहूं कुक्कुटको बैन ॥ लेत सुपिण्ड पितर तौ नाहिं । है नहिं संशय याके माहिं ॥ तिमिही बैन सुनै मखकार । तौन देवहविलेत सुढार ॥ श्राद्धहि औ यज्ञहि जो श्वान । देखै तौ सुनुबर मतिमान ॥ पितर लेत नाहिं कव्यहि पर्म । औ हबिको नहिं देवसशर्म ॥ दोहा ॥ श्राद्धमाहिं औ यज्ञमें बिप्रबुलाये जौन । खट्वादीजै बैठिबे तिनको नाहिं बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ जौन निमंत्रित बिप्र बैठे खट्वामाहिंजो । नष्ट होय तौ क्षिप्र दाताको धनमहतसब ॥ यमदग्निरुवाच ॥ चरणा-दोहा ॥ बाजपेय अरु अश्वमेध मख करै हजारनपर्म । औशिर नतकरि करै तपस्या जोजनसुनहुसधर्म ॥ दोहा ॥ होय नजाको हृदय जो शुद्ध सुनहु महिपाल । तौ निश्चयपरि नरकमें पावै दुःख बिशाल ॥ जो न हृदयको शुद्धता तासम कोउ न यज्ञ । हृदय शुद्धतासों लहत मोद महत जनप्रज्ञ ॥ शक्कु बिप्रकोदेय जो शुद्ध हृदयसों पर्म । ब्रह्मलोककोजाय तौ प्राणीहोयसशर्म । बायुरुवाच ॥आभीर ॥ मनुजको अभिराम । आनन्ददायकमाम ॥ जे हैं धर्म सुढार । ते हमकहत उदार ॥ औ जे दोष अखर्ब । कहत तौनहू सर्ब ॥ जयकरी ॥ चारिमास बर्षाके माहिं । हींसक-रेक्रोधकोनाहिं ॥ तिलजलदेय सु करिकै स्नान । दीपदानअरु देय सुजान ॥ वेदवान द्विजबर बुधिधाम । तिनको भोजनदेय ललाम ॥ यथाशक्तिसों सादरपर्म । अरुसुबैन कहि करै सश-

मैं ॥ अग्निहोत्रकोकरै ललाम। औ सुखीर भोजनबुधिधाम॥
यहि बिधिसों मानव सुनुभूप। शतमखको फललहत अनूप॥
कह्यो धर्म हम तुम्हैं बखानि। अब हम दोषकहत अनुमानि॥
अग्निशूद्रसों मखके काज। जौन मँगावत मूर्खदराज ॥ मांस
बच्यो मखमाहीं जौन। देयमांस भार्य्याको तौन ॥ लिप्तहोय
सो अघसों धर्म। कबहूं नाहिं पावतहै शर्म ॥ कोप करतहै अ-
ग्निमहान। किये कर्म यह ह्वै अज्ञान॥ सुरअरु पितरनतुष्टित
होत। करत क्रोधकोमहत उदोत ॥ तदनन्तरसो मृत्युहिपाय।
शूद्रयोनि लहि रहतअचाय ॥ यह जोअधरम अतिदुखदाय।
ताके छूटनकी सुउपाय ॥ अब हम कहत सुनहु तुम तौन। त-
जिप्रमादको प्रज्ञा भौन ॥ गोपुरीषसों निर्मलधाम। करिकै
परमप्रीतिसों माम ॥ पीकरिकै गोमूत्रहिचारु। एकबर्षलौं बुद्धि
अगारु ॥ होम करै गोघृतसोंपर्म। तब प्रसन्नसुरहोतसशर्म॥
पितरहु श्राद्धकालके माहिं। आवत यामें संशयनाहिं ॥ लोमश-
उवाच ॥ दोहा ॥ जे बिवाह नाहिं करतहैं परतियमाहिं बिलाश।
श्राद्धमाहिं तिनके पितर ह्वैकै जात निराश॥ रामगीती ॥ रमत
है परनारि माहीं जौन दुर्मति भौन। अरु सुबंध्या नारिहीमेंरहै
मोदित जौन ॥ बिप्र को धन हरत जोहै लोभकरि हियमाहिं।
दोष तिन तिनहूंनको समहोत संशयनाहिं ॥ पितरऔ सुरदि-
यो तिनको नहीं कबिहबि लेत। रमै नाहिं परदारमें तिहिते न
होय अचेत ॥ करै अपनो ब्याह दूजो तजै बंध्यानारि। बिप्र
को धन हरै कबहुं न लोभता हियधारि ॥ धर्म एक तुम सुनो
औरहु मोददायक भूरि। बचन गुरुके सदामानै प्रेमसों हिय
पूरि ॥ सघृत अक्षत द्वादशी औ पूर्णिमामें देत। जौनजन बु-
लवायकै द्विज परमबुद्धि निकेत ॥ बढ़तताकेपुण्यसों है निशा-
पति सानंद। औ महोदधि बढ़त सागर होत नीर अमंद ॥
भाग चौथो देतहै हयमेधको अभिराम। सुराधिपकरि कृपाता-

को ज्ञानिवर बुधिधाम ॥ करत हैं नखतेश ताकी सिद्धि इच्छा सर्व । वीर्य बाढ़त अंगमाहीं होत तेज अखर्व ॥ औरऊ यक धर्म तुमसों कहतहैं हमपर्म । होतहै कलियुगहुमें जन कियेताहिसशर्म ॥ प्रातउठि जे स्नान करिकैंपैन्हिकै सितबास । ताम्र के बरपात्रमें भरितिलनको सहुलास ॥ शुद्ध सुन्दर वेदबिद बुलवाय ब्राह्मण पर्म । सहित आदर देत तिनको धारिकै हिय शर्म ॥ समधुतिल जल कृशर औ तिमि दीपको जो देत । सुनहु तिनको फलहि तुमको कहत होय सचेत ॥ करत जो जन दान सुरभी दान उत्तमभूरि । करत औ जो यज्ञ अग्निष्टोम आनँद पूरि ॥ तिन्हैं जो फल होत उत्तम कहत बासव सोय । भरो तिलसों पात्र जोजन देत ताको होय ॥ सदा कीन्हें श्राद्ध जैसी तृप्तपावत शुद्ध । दिये तिल जल तृप्त तैसी पितरपावत उद्ध ॥ भीष्मउवाच ॥ अर्द्धचरणादोहा ॥ तदनन्तर देवतनसह पितर सर्व सुनुभूप । पूछत भये अरुन्धति तियकोयहबर धर्मअनूप ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ कृपा तुम्हारी पायकै मोद कारणिमाम । मैं वृद्धा होतीभई तपहि करत अभिराम ॥ धर्मपर्म मैं कहतिहौं सुनहु तौन तुमसर्व । जिहि को कीन्हें लहत हैं मानवमोद अखर्व ॥ मनुजअश्रद्धावान जे औ अभिमानी जौन । गुरु तियगामी ब्रह्महा हैं जेदुर्मतिभौन ॥ तिनमनुजनके सामुहें कहियेकबहुँन धर्म । शुद्धहोयजिनको हृदयकाहियेतिनसोंपर्म ॥ जयकरी ॥ प्रातकालउठिकैबुधिभौन । गोकेशृंगमाहि जनजौन ॥ छिरकैकुशसों जलकोपर्म । पाणिजोरिकै प्रथमसधर्म ॥ उतरैनीरशृंगतेजौन । छिरकै अपने शिरमें तौन ॥ तीर्थजिते तिहुँलोकन माहिं । बसै सुमुनिवर तिनके पाहिं ॥ तिनमाहीं कीन्हें स्नान । जैसो फल बर मिलत महान ॥ गोशृङ्गोदक सों अभिराम । मिलै सुफल तैसोई माम ॥ सुनि अरुन्धती के ये बैन । पितर तिमिहि सुर आनँद ऐन ॥ भये प्रसन्न परम सुनुभूप । मोदकार यह धर्म

अनूप ॥ पितामहउवाच ॥ भे प्रसन्न हम सुनि यह धर्म । बढ़ोसदा तेरो तप पर्म ॥ तदनन्तर यम ऐसे बैन । पितरनको सहसुर मुद ऐन ॥ कहतभये सुनु कुन्तीनन्द । धर्म धुरंधर प्रज्ञ नरेन्द॥ यमउवाच ॥ चित्रगुप्तको कह्यो सुजान । सुनो सर्व तुम धर्म महान ॥ करत अराधन रबिको जौन । बर धर्मज्ञ मनीषा तौन ॥ तासु होत परलोकहि माहिं । साक्षी सूरज संशय नाहिं ॥ दीप दान अरु पानीदान । दीजै श्रद्धासहित महान ॥ छत्र उपानह दीजै चारु । बोलि वेदविद बिप्र सुढारु ॥ पुष्कर तीर्थ माहिं अभिराम । दीजै कपिला गऊ ललाम ॥ अग्निहोत्र को करै सदाहिं । आलस ल्यावै मनमें नाहिं ॥ है यह परमधर्म अभिराम । अब याको फल सुनिये माम ॥ दोहा ॥ जात जबै परलोक में मानव छोड़ि शरीर । क्षुधा प्यास सों लहत तब तहां जाय अतिपीर ॥ जरन लगत है भाजि कहुँ जाय सकत है नाहिं । प्राप्त होतहै महत अति अन्धकारके माहिं ॥ करत सहाय महानजहँ कीन्हें जेहैं धर्म । यामें संशयहै नहीं निश्चय जानहु पर्म ॥ चरणाकुलक ॥ जे जन देत सुउज्ज्वल पानी । नदी सुपुण्योदका महानी ॥ प्राप्तहोतिहै तिनको नीकी । अक्षयबर निर्मल पाणीकी ॥ तासु सुधासो पीकै बारी । पावत है अति तुष्टि सुढारी ॥ दीपादिये जिन जनन सदाहीं । तहां तिमिरते देखत नाहीं ॥ रहत प्रकाशित सूरज जैसे । दीपक रहत प्रकाशित तैसे ॥ होत जौन फल कपिला दीन्हें । सुनहु तौन अब मन थिर कीन्हें ॥ पुष्कर तीर्थ माहिं अति पावन । देत जौन कपिला यक चावन ॥ गोशतसवृष दिये ते जोफल । प्राप्तहोत ताकोहैं सो फल ॥ द्विजहत्यासम पातकजेहैं । यककपिला दीन्हें नशतेहैं ॥ ताते तीरथ पुष्करमाहीं । बिधिसह शुक्लपक्षके माहीं ॥ श्रुतिविद द्विजको कपिला दीजै । तासुभूरि अति आदर कीजै ॥ छत्रदेत है जो जन नीको । शुभ्र सलोनो शशिके सीको॥

सोपरलोक जात मगमाहीं । पावत आनँददायक छाहीं ॥ देत उपानह द्विजको जोहै । कंटकको दुख लहत न सोहै ॥ दोहा ॥ कबहूं दीन्हें दानको नाशहोतहै नाहिं । कह्यो धर्मयह धर्मवर सहसुर पितरन पाहिं ॥ चित्रगुप्तको धर्मयह यमसों सुनिकै पर्म । सुरसह पितरनको कहत सूरजभये सशर्म ॥ उक्छा ॥ जे जन श्रद्धावान । ह्वै करिकै ये दान ॥ द्विजको देत सप्रीति । ते जन लहत न भीति ॥भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ तदनन्तर देवतापितर औ तिमिहीं ऋषिसर्व । पूंछत भूतनको भये यहवर प्रश्न अखर्व ॥ जौन अपावन रहतहै मानव शुचिता टारि । कैसे तिनको हनतहौ कहौहमैं निरधारि ॥ किहि उपायसों हनि सकत मनुजनको तुमनाहिं । पूंछोहै हम जौन तुम कहौ हमारे पाहिं ॥ भूताऊचुः ॥ होत अपावन मनुज है मैथुनकरि अरु बान्त । करत स्नाननहिं जे तिन्हें डरहम देत नितान्त ॥ जोजन तरुतर मूल में सोवत शिरहि लगाय । औ पांयत करिकै शिरहि करिशिरहाने पाँय ॥ औ जेजन अज्ञानते सदाहिं आमिषखात । औ शिरपै धरिकै कहूं आमिष जो लैजात ॥ जलमें औजे करतहैं मलमूत्रहि अज्ञान । परम अपावन मनुज हैं ये ते दुर्मतिवान ॥ ये सब हनिबे योग्य हैं यामें संशय नाहिं । याते इनको हनत नहिं दयाकरत हियमाहिं ॥ सोरठा ॥ अबतुम सुनहु उपायजाते हम बधिसकत नहिं । है अति आनँददाय मनुजनको निश्चय कहत ॥ बरवादोहा ॥ गोरोचन शिरमाहिं लगावत बचराखै कर माहिं । तासुनिकट हम आयकै ताहि बधिसकैं नाहिं ॥ घृतयुत अक्षत और लगावत भाल माहिं जनजौन । अरुजो आमिष खात कबहुंनहिं मानववर मतिभौन ॥ अरिल ॥ मारिसकत नाहिं तिनहूंको हम । यहनिश्चय मनमें मानहु तुम ॥ अग्नि रहत निशि दिन जिनके घर । अरु सु ब्याघ्र के दांत चर्मवर ॥ अरु भूधर के जलको कूरम । होयजासु गृह माहिं अनूपम ॥ तिनके

गृह माहीं हम जात न। केहू पावत तिनके तात न॥ सोरठा॥ पीतबर्ण वा श्याम होय छाग जाके सदन। औ मार्जार ललाम होय तहूं हम जात नहिं॥ दोहा॥ तातेराखे गृहस्थी धाममाहिं ये सर्व। इनते बाधा सकत हैं देयन भूत अखर्व॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा॥ सुनहु भूप बुधिऐन तदनन्तर लोकेश बर। कहतभये इमिबैन महतप्रज्ञ सुरराजको॥ हरिगीति॥ अति भरे तेजस महतबर बलवानदिग्गजसर्ब हैं। सहशैलकानन समुद भूकोधरे भार अखर्ब हैं॥ तुमकहोरेणुक गजहिसादर इहांताहि बुलाय कै। तिनदिग्गजनको धर्मपूछै रसातलमें जायकै॥ सुनिदेव सहदेवाधिपति गुणि बिधाताके बैनको। गजरेणुकहि बुलवाय करिकै महत बलकेऐनको॥ इमिकह्यो तासों जायकरिकै रसातलके माहिंतू। बरधर्म आवहु पूंछिकरिकै दिग्गजनके पाहिंतू॥ सुनिसुरसह सुररायके ये बैन रेणुक गजबली। भोजाय पासैं दिग्गजनके पूंछतो बिधिसों भली॥ रेणुकउवाच॥ तुमकहौ हमको कृपाकरिकै गुप्तजोबर धर्महै। हमतुम्हैं पूंछत पायआज्ञा सुराधिपकी पर्म है॥ दिग्गजाऊचुः॥ दोहा॥ कृष्णपक्षकी अष्टमी कार्त्तिकवारी जौन। अश्लेषा तामेंनखत होवेजब बुधि भौन॥ श्लोकः॥ बलदेवप्रभृतयो येनागाबलवत्तराः। अनन्ता ह्यक्षयानित्यम्भोगिनःसुमहाबलाः॥ तेषांकुलान्वयायेच महाभूताभुजंगमाः। तेमेबलिंप्रयच्छन्तु ब्रह्मतेजोभिवृद्धये॥ यदा नारायणःश्रीमानुज्जहारवसुन्धरां। तद्बलन्तस्यदेवस्यधरामुद्धरतस्तथा॥ जयकरी॥ पढ़िकै यह बर मंत्रललाम। गुड़ ओदन की बलिअभिराम॥ नीलबस्त्रसों ढांपिसुढारु। अरु फूलनसों अतिही चारु॥ रविके अस्त समयमेंपर्म। सर्बशोच तजिहोय सशर्म॥ बरबल्मीक माहिं बलितौन। दीजैसुनहु मनीषाभौन॥ तिहि बलिसों सबनाग सुजान। पावतहैं बर तुष्टिमहान॥ संग भुजंगनके अभिराम। हमहूं लहत तुष्टिहैं माम॥ सब धरणी

को भारमहान। ताते परतनहींहै जान॥ ब्राह्मण औक्षत्री मतिमान। तिमिहि वैश्य अरु शूद्रसुजान॥ इमिबलिदानकरे यक बर्ष। पायमहतफल रहतसहर्ष॥ सोरठा॥ सुनि रेणुक यहधर्म धर्मज्ञ सुदिग्गजनसों। ऋषिसुर पितर सशर्म तिन्हेंकहत भो आयकै॥ दोहा॥ ऋषिसुर पितर सुधर्मसुनि लहि प्रसन्नता माम। पूजतभे रेणुक गजहि सुनहु भूप बुधिधाम॥ स्वामिकार्त्तिकउवाच॥ रामगीती॥ कहतहैं यकधर्म हमहूं सुनहु सोतुम सर्ब। ताहिकीन्हें लहतहैं आनंद मनुज अखर्ब॥ नीलखण्ड सुवृषभके लहि शृङ्गते अभिराम। मृत्तिकाको लायतनमें तीनदिन बुधिधाम॥ करतजोहै स्नानताके पाप छूटतभूरि। श्रेष्ठताको लहत दोऊलोकमें मुदपूरि॥ शूरता ताकीन कबहूं नष्टहोति महान। औरऊ यकमुनो हमसों धर्मपरम सुठान॥ पात्रगूलरि काष्ठको बनवायकै अभिराम। समभु भरि पक्वानतामें प्रीतिसों अतिमाम॥ पूर्णमासी सुतिथिमें जब उदयहोय निशेश। दीजिये बलितौन तब अतिस्वच्छ मधुर अशेश॥ अश्विनी सुत साध्यमारुत भानुऔ सितभानु। रुद्र बिश्वेदेव अरु बसुलेत सो बलिदानु॥ कान्ता॥ यहजो धर्म। है अतिपर्म॥ करिकैयाहि। हियमें चाहि॥ आनँद उद्ध। लेत सुबुद्ध॥ बिष्णुरुवाच॥ रामगीती॥ बर ऋषिनके अरु देवतनके कहेजेते धर्महैं। नितपढ़त जे अरु सुनतजे जन लहतते फलपर्महैं॥ नहिंहोत कबहूंप्राप्त तिनको बिघ्नकौनहुँ आयकै। अरु होत कबहुं न प्राप्त साध्वस रहत मुदसों छायकै॥ सबपापमा नशि जातसुखमा होतिहैबर देहमें। दुखनष्ट ह्वै सबजात है सरसात बहुसुख गेहमें॥ सुर पितर तिनके दियेमुदसों हव्य कव्य सुलेतहैं। बरहोतहैं बलवान औ मतिमान बुद्धि निकेतहैं॥ सुरपितर औ ऋषिपरम तिनपै प्रीतिकरत सुउद्धहैं। श्रुति शास्त्रमें रतरहत औ रतधर्म माहींशुद्धहैं॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा॥ यह सुधर्म अवदात कह्योमोहिं

मुनिव्यासबर। कह्यो तुम्हैं हमतात परमप्रज्ञ धर्मज्ञतर॥ अरिल ॥
जगमें जेजन श्रद्धावान न। करत सुधर्म कथा दिशिकान न॥
गुरुद्रोही अरु जो मतिमान न। यथाशक्ति जे करत सुदान न॥
तिनको कहियेधर्ममहान न। ये सुखदायक दुखतर भान न॥
इनको कियेकहूं अपमान न। होतलसत रबिलौं है आन न॥
इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्बणिदानधर्मेएकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११
युधिष्ठिरउवाच॥ चरणादोहा॥ बिप्रदेहि किहिको भोजन अरु किहिको क्षत्रियतात। वैश्यदेहि औ किहिको किहिको शूद्र कहौ बिख्यात॥ भीष्मउवाच॥ जयकरी॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सधर्म। देहिंपरस्पर भोजनपर्म॥ दीजै भोजनशूद्रहि नाहिं। औ लीजै न सुन्यो बुधपाहिं॥ अन्न शूद्रको जोजनखात। खाततौन बिष्ठा मनुतात॥ देखि शूद्रके उत्तमकर्म। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बिधर्म॥ ताकेकरत सुभोजन जौन। पचतनरककेमाहीं तौन॥ जौनकर्म अपनेको त्यागि। करै सुशूद्र कर्ममेंलागि॥ तौन सर्बहैं शूद्रसमान। संशय नहिंयामें मतिमान॥ दोहा॥ बिप्र पुरोहित जौन अरु करत चिकित्सा जौन। कोतवाल हैं जौन अरु सुनहु तात बुधिभौन॥ ज्योतिषही को पढ़तजे और शास्त्र नहिं कोय। अनध्यायमें पढ़त जे बिप्रधर्मको गोय॥ ते सब शूद्रसमान हैं यामें संशय नाहिं। निश्चय करिकै कहत हम सुन्यो सुबुधजनपाहिं॥ उकछा॥ जे द्विज शूद्रसमान। सुनहुतात मतिमान॥ तिनके गृहके माहिं। भोजन कीजै नाहिं॥ जोजन करत अजान। सो दुख लहत महान॥ तिर्यग योनिहि पाय। निशिदिन रहत अचाय॥ अन्न वैद्यकोजौन। हैपुरीषवततौन॥ बिरचत जौन अगार। तिनको अन्न उदार॥ होत रुधिरसम भूप। भणत सुप्रज्ञ अनूप॥ चरणादोहा॥ विद्यासों जे करत जीविका अन्न तिनहुं को जौन। शूद्रअन्नहीके समान है याते बर्जिततौन॥ दोहा॥ जोजन चुगली करतहै तिनको अन्नसुजान।

लीन्हें द्विज हत्या लगति बरबुध भणत महान ॥ नगरीकीरक्षा करत जो द्विज सुनु मतिमान । अन्न लिये ताको श्वपचहोत महत अघमान ॥ गो द्विजको जो हनतहै मदिरा पीवतजौन । औगुरुनारीमें रमैजोजन दुर्मति भौन ॥ भोजनतिनके अन्नको कीन्हेंते महिपाल । महतदक्षते कहतसो राक्षस होतबिशाल ॥ अरिल ॥ धरोहरिहि जनजौन छपावत । ताको अयश जगतसब गावत ॥ लेत अन्न ताको है जोजन । भिल्लयोनि को पावत सो जन ॥ दोहा ॥ कुलटा तियको अन्न जो सोहै मूत्र समान । याते कबहुंन लीजिये भणतसुबुद्ध महान ॥ तोमर ॥ द्विज शस्त्र धारत जौन । सम शूद्रकेहै तौन ॥ सुनु अन्न तेहिते तास । नहिं लीजिये बुधिरास ॥ सोरठा ॥ होय अनादरयत्र तहांनभोजन कीजिये। बरबुध भणत पवित्र औ बिन जाने मनुजके ॥ प्रश्न कियो तुम जौन ताको उत्तर हम दयो । सुनहु तात बुधिभौन अब आगेका पूंछिहौ ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिदानधर्मद्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ दान लिये भोजन किये होत कलुष है जौन । सोकिमि छूटत द्विजनको कहो तातबुधिभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ दान लिये भोजन किये होत कलुषहै जौन । सो छूटत जिहिकर्म सों सुनहु कहत हम तौन ॥ रामगीती ॥ अग्निको प्रज्वालित करि कै समिध सों अभिराम । करैं होमहिं जपि सुगायत्री सुनो तुम बुधिधाम ॥ होतजोहै कलुष द्विजको लिये घृततिल दान । छूटि सोसब जातहै मतिमान कहतमहान ॥ दानलीन्हें मांसको अरु लवण घृतकोपर्म । होतजोहै कलुषद्विजको सुनहु तातसधर्म ॥ लिये जबसों दान तबसों रवि उदय लौं तात । रहे ठाढ़ो होत पावन पाप सो नशिजात ॥ दान कञ्चनको लिये ते लहतजो अघ बिप्र । दानसो बिख्यात कीन्हे जगत माहीं क्षिप्र ॥ औ सु गायत्री जपे सों छूटि सो अघ जाय । होत पावन बिप्र है

सुनु धर्मधर नरराय ॥ तिमिहिं नारी दान लीन्हें बसन दान अनूप। औ लिये धन और पातक होत जोहै भूप ॥ जपेगायत्री सु कीन्हें दानको बिख्यात। नष्ट सो ह्वै जात पातक भणत बुध अवदात ॥ लिये पायस दान औ बरअन्नदान सुजान। तैल दानहिंलियेते अरुलिये इक्षुकदान ॥ होतजोहै पापसो त्रयकाल कीन्हेंस्नान। छूटिसो सब जातहै सुनु भूपबर मतिमान ॥ दोहा ॥ जावक जल फल दुग्धदधि अरु सुफूल अभिराम। लीन्हेंइन को दान अघ होत बिप्रको माम ॥ सो अघ गायत्री जपे छूटि जात है सर्व। यामें संशयहै नहीं बुधबर कहत अखर्व ॥ लिये क्रियामें मृतककी बस्त्रउपानह दान। होत प्राप्त है बिप्रको पातक जौनमहान ॥ करै तपस्या शतबरष बनमें जाय एकान्त। छूटत पातक तौन है सुनिये बर क्षितिकान्त ॥ सोरठा ॥ लियेक्षेत्रमें दान होत दोष जो द्विजनको। सो छूटत मतिमान कीन्हे ते उपबास त्रय॥ बन्दीखाने माहिं सूतकप्रापति होत जो। सुनिये बर नरनाह छूटत है त्रय ब्रत किये ॥ दोहा ॥ कृष्णपक्षमें श्राद्ध में करत सु भोजन जौन। अष्टप्रहरको ब्रत किये छूटत अघसोंतौन ॥ भोजन कीजै श्राद्धमें जिहिदिनमें नरनाह। संध्या पूजाजपनहीं कीजै तिहिदिनमाह ॥ चरणादोहा॥ द्वितिय बेरभोजन कीजै नहिं कहत सुबुधअवदात। यही हेतु अपराह्नमाहिं है श्राद्ध करन को तात ॥ रामगीतो ॥ गेह माहीं मृतकके दिनतीसरे में जौन। करत भोजन बिप्रहै सोसुनहु बरबुधिभौन ॥ करैद्वादश दिवसलौं नितस्नान तीनहुं काल। होतहै तब शुद्धभूपति कहत बिज्ञ बिशाल ॥ होहिं जबगत दिवसद्वादश तब सुकरि बहुस्नान। सहित आदर द्विजनको बुलवायकै मतिमान ॥ दियेभोजन तिन्हैं छूटत सर्वअघसोंभूरि। महतलहि सनमान भू में रहत सुखसों पूरि॥ मृतकके दशादिवसलौं द्विजकरैभोजन जौन। पूर्ब जो बिधि कही अघसों मुचत कीन्हे तौन ॥

शूद्रसँग यकपंक्तिमें द्विजकरै भोजन जौन। महत ताको होत पातक प्राप्त सुनु बुधिभौन॥ तौनपातक छूटिबेकी है उपायन भूप। करै पै स्नानादि विधिको कहत प्रज्ञ अनूप॥ वैश्यके सँग करैभोजनहोतजो अघ तात। किये ते उपबास त्रयदिन छूटि सो अघजात॥ क्षत्रियनसँग कियेभोजन पंक्तिमाहींएक। होत जो अघ प्राप्त द्विजको सुनहुनृपसबिबेक॥ छूटि सो अघजातहै सब किये स्नान सबस्त्र। कहत मतिबर सुनहु नरबर है न संशय अत्र॥ आभीर॥ पूछोहमको जौन। कह्यो तुम्हैंहम तौन॥ सुनहु भूप बुधिधाम। धर्मकार अभिराम॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेत्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ तपहूकीन्हे औदिये दानहु उत्तमतात। स्वर्गलोकको जात जन ह्वै अशोक अवदात॥ तिन दोउनमें अतिहिजो श्रेष्ठ होय भूपाल। कहौतौन मोको सुगुणि करिकै कृपा बिशाल॥ भीष्मउवाच॥ सोरठा॥ तपऔ उत्तमदान हैतो दोऊ समहि पै। बरमहान मतिमानकरत प्रशंसादानकी॥ दोहा॥ जे जे उत्तमदान करि गयेस्वर्गमें पर्म। ते ते तुमको कहतहौं भूपति सुनहु सधर्म॥ मल्लिका॥ अत्रिपुत्र ब्रह्मज्ञान। देय शिष्य को सुजान॥ स्वर्गलोक को गये सु। भूरि मोद सों रये सु॥ तुंगा॥ शिविबर नरराजा। परम धरमकाजा॥ सुनि सुबचन नीके। शुचि द्विज सुमतीके॥ सुत प्रिय हानिडार्यो। हिय न कछु बिचार्यो॥ लहि सुस्वर्ग ताते। लसत द्युति महाते॥ अमलकमल॥ नृपति प्रतरदनजो। समुझिधरमबरसो॥ द्विजहि नयन निज दै। अतुल कीर्ति शुचिलै॥ छुटि अति सब दुख सों। महत परम सुख सों॥ बसत अमरपुरमें। लसत अतिहि सुरमें॥ मद्रक॥ अम्बरीषमुदछायकै। बिप्र बिज्ञबुलवायकै॥ राज्य दै तिनहि प्रेमसों। होय युक्त अति क्षेमसों॥ आपु जाय करिस्वर्गमें। बासकीन्ह सुर बर्गमें॥ भुजंगप्रयात॥ वृषादर्भि दै

बिप्रको रत्न नीके। भरे द्रव्यसों धाम दै माम सीके॥ गयो मोदसों पागिकै स्वर्ग माहीं। लसै दूसरो इन्द्रसों इन्द्रपाहीं॥ मालती॥ ऋषि अगस्त्य को बोलि। परम प्रेम को खोलि॥ सुघरि आपनी ताहि। सुवानि देतभो चाहि॥ निमिसु भूप धी धाम। स्वर्ग जायकै माम॥ लहतभो सु आनन्द। सुनहु पाण्डुकेनन्द॥ नंदनी॥ जामदग्नि सुरामजू। जीति भूयह मामजू॥ देयकै द्विज वृन्दको। धारि मोद बिलंदको॥ जाय उत्तम लोकको। प्राप्त भोतजि शोकको॥ जासु कीर्ति महानहै। लोकमाहिं कहानहै॥ समानिका॥ ब्रह्मदत्त भूपजो। दानदै महानसो॥ प्राप्तपर्म धामको। होतभो ललामको॥ चामर॥ कक्षशेन भूमिपाल स्वच्छदान देयकै। स्वर्गमाहिं प्राप्त भोमहान मोद लेयकै॥ जासु कीर्ति भूमि में रही अमन्द छाय है। देत है अनन्द भूरि ताहि देवरायहै॥ पद्मिनी॥ सहस्राचित्त भूमिपालजो। सुजानिधर्म पर्मप्रज्ञसो॥ सुबिप्रकाज छोड़िप्रानको। अमन्द कीर्तिलै महान को॥ सुदेवलोक माहिं जायकै॥ बस्यो महान मोदपायकै॥ तोटक॥ बर पौत्र महीप करन्धमको। बिलसै यश जासु शशी समको॥ तनया अपनी मुदसोंभरिकै। ऋषिअंगिरसै नृप दै करिकै॥ तजि शोक महा सुरलोक लियो। तिहिको सु बखान न जात कियो॥ परमा लखिकै तिहिकीसुमहा। सुर के गण चक्रित होय रहा॥ कांता॥ हते भूप। परम अनूप॥ अरु भूपाल। और बिशाल॥ दैकैदान। सबिधि महान॥ निजर लोक। आनन्द ओक॥ पायोपर्म। सुनहु सधर्म॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिदानधर्मेचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ युक्तधर्म अरु अर्थमों अरु सुखकारक पर्म। होयमहत आश्चर्य्य सुनि जाको तातसधर्म॥ ऐसो बर वृत्तांत अति सुनिबेकी महिपाल। भई हमारे हृदयमें इच्छापरम बिशाल॥ नारायण आनन्दकर द्वन्द दूरिकर सर्व।

बैठे हैं तव पास अरु भूपति और अखर्ब ॥ कहिये तिनके सामुहे पूछतहौं मैं जौन । बक्ताआपु महानहौ सुनहु तात बुधिभौन ॥ भूप युधिष्ठिरके बचन सुनिये भीषम दक्ष । ह्वै प्रसन्न तिनको कहत ऐसे भये प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ नारायणको पूर्बबर जो हम सुन्यो प्रभाव । सो मैं तुमको कहतहौं सुनु सुप्रज्ञ नरराव ॥ गिरिजा को अरु मोदकर पशुपतिकोसंवाद । यहि प्रसंगमें कहतहौं सो सुनुछोड़िप्रमाद ॥ तपवर बारहबर्ष को करतभये हरिभूप । पर्बत नारद लखनको आये तिन्हैं अनूप ॥ धवल काश्यप धौम्य अरु ब्यास परमबुधिरास । और सुऋषि शिष्यन सहित आवत भे सहुलास ॥ आसन हरित बिछायकै कुशके चारु नवीन । बैठायेसब ऋषिनको हरिसादर सु प्रबीन ॥ दर्शन करिकै कृष्णको नारदादि ऋषिसर्ब । सुनहु प्रज्ञ धर्मज्ञनृप आनँद भरे अखर्ब ॥ कछू बेरमें सुरनकी अरु भूपनकीपर्म । कथाकरत भे सर्ब ऋषि हरिके संगसशर्म ॥ तदनन्तर नृप कृष्णके मुखते परमबिशाल । अतिहि महानप्रचंड अति कढ़ो सुअग्निकराल ॥ हरिगीती ॥ तरुलता जीवन सहित शैलहि अग्निसो जारतभयो । सबकरतहाहाकार भो गणजीव को दुख सों रयो ॥ तिहिके अनन्तर जारिशैलहि कृष्णपाहीं आयकै । पद परशिसोहें भयो ठाढ़ो होत शिष्य सुभाय कै ॥ सुनु भूप हरितिहिके अनन्तर दग्धशैलहि देखिकै । करिदयो जैसो रह्यो पूरब परमभासों भेखिकै ॥ सब मुनिन बिस्मय कियो अद्भुत यह सुचरित निहारिकै । हरिदेखि बिस्मित तिन्हैं ऐसे कहत भे निरधारिकै ॥ तुम शास्त्रबिद ह्वै परममनमें महत बिस्मय क्यों गहौ । यह भयो है संदेह ममहिय सर्ब तुमहमको कहौ ॥ सुनि कृष्णजूके बैनये ऋषिवृन्द आनँदसों पगे । यहि भांतिसोंहें कृष्णकेसुनु भूपते कहिबेलगे ॥ ऋषयऊचुः ॥ तुम सृजतसब हौ लोकको करत अरु तुमहीं नाशहौ । जलतुमहिं

कर्षततुमाहिं बर्षततुमहिं करतप्रकाशहौ ॥ हैचराचर भुवमाहिं तिनकेमातु औपितुपर्महौ । करिकृपाजनपर महतप्रभुपरतुमाहिं करतसशर्महौ ॥तवबदनतेजोअग्निनिकस्योतासुहेतुकृपालजू। हमको कहौ संदेह ताते मिटै परम बिशालजू ॥ येबचनसुनिसब ऋषिन के हरिसदनबरआनन्दके । इमिभयेकहते बचनतिनको हरणजन दुखवृन्दके ॥ बासुदेवउबाच ॥ यहहै हमारे तेजपरम प्रचण्डजो मुखते कढ़ो । तिहि सोंलताद्रुम दुण्ड जीवनसहित यह गिरिहौ दढ़ो ॥ ऋषि हुते गिरिके माहिं ते ते भये पीड़ित सर्ब हे । अरु तुमहु सब ऋषिबर तपस्वी भये व्यथित अखर्ब हे ॥ हमआपने सम सुवन लहिबेकी सुइच्छाकरि महा । इहि आय भूधर माहिं हम तपके सुमारगको गहा ॥ तिहि के अनन्तर आत्मा मम अग्नि रूपहि धारिकै । गो बरद शिवके पास हौं जहँ महत मोद पसारिकै ॥ लखिशंभु मेरे तेजको यहिभांति सों कहतो भयो । मम परम आतम तेजसों तव पुत्र ह्वै है मुदरयो ॥ बरदान लैकै शंभुसों यह तेज मम सो आयकै । गहि शिष्यलों मम चरण गो मम देह माहिं समायकै ॥ मम बदन ते जो कढ़ो पावक तासु कारण जौनहै । तुम डरहु मति हियमाहिं नेकहु कह्यो तुमको तौनहै ॥ तुम तपस्वी हौ परम अरुबर ज्ञान धारण किये हौ । गति तुम्हारी सर्वत्रहै अति धरे आनँद हियेहौ ॥ सोरठा ॥ भूमें वादिव माहिं सुन्यो होय आइचर्य जो । कहौ तौन ममपाहिं बुद्धिभवन तुमसर्वहौ ॥ बासुदेवके बैन सुनिकै ये बर सर्वऋषि । सुनहु तात बुधिऐन होत भये हर्षित परम ॥ दोहा ॥ पूजा करिकै कृष्णकी पढ़िकै स्तवन अनूप । अति प्रसन्न करते भये सुनहु युधिष्ठिर भूप ॥ सोरठा ॥ तदनन्तर ऋषि सर्व परम प्रज्ञ धर्मज्ञ बर । कोबिद जानि अखर्ब नारद को इमि कहत भे ॥ ऋषयऊचुः ॥ दोहा ॥ अचरज जैसो होतभो कृष्णमाहिं अभिराम । तै सोई भो हो परम गिरि हिमवत में

माम ॥ कहौ तौन आश्चर्य्य तुमहौ तुम बिज्ञ महान । सुनिकै नारद ये बचन कहत भये मतिमान ॥ नारद उवाच ॥ रामगीती ॥ परम उन्नतभूमिधर हिमवान बररमणीय । जासुपरमा देखि किहि को मुदितहोत न हीय ॥ फूलफलसों युक्त औ युत औषधिन सों चारु । करति तामें अप्सरा गन्धर्ब वृन्द बिहारु ॥ यक्षकिन्नर रक्षतामें करत केते बास । ऋक्ष मुख अरु बाजि मुख हैं किते करतबिलास ॥ ब्याघ्र मुख हैं किते केते सिंह मुखतिहि माहिं । किते जम्बुकबदन ताको छोड़िकहुं नहिं जाहिं ॥ शङ्ख भेरि मृदङ्ग की धुनिरही जामेंपूरि । करत जामें बिहँगहैं रव भरे आनँद भूरि ॥ फूल फलसों युक्त जामेंलसत वृक्ष महान । भ्रमर गुंजतफिरत जामेंभये अति मुदवान ॥ देवतागण बसत जामें लसत भासों उद्ध । किते बिषधर यक्ष केते किते मुनिगण शुद्ध ॥ लोकपालहुफिरतबिहरतभरेभूरिअनन्द । मरुतऔवसुरहतअरु बहु पिशाचनके वृन्द ॥ चारुऐसो अचलहै हिमवान तामेंपर्म । तपस्या बरभये करते गौरिनाथ सशर्म ॥ ब्याघ्रचर्महि किये धारण औधरे बहुब्याल । असुरगणको त्रासकर्त्ता भीमरूप बिशाल ॥ देखितिनको महत ऋषिबर करतभे परणाम । नम्र ह्वैकै स्तवहि पढ़िकै भरेआनँद माम ॥ तत अनन्तर शैलकन्या परम धन्याचारु । शम्भुसम ब्रतधारिणी सँगलिये बहुसुरदारु ॥ औलिये बहुसंगमाहीं नदी पातक हार्णि । भरीनिर्मल नीरसों बरपरम पावनकार्णि ॥ सर्ब तीर्थनके सुजलसों भरोअतिअभिराम । कलशलीन्हें हेमको करमाहिं भामयसाम ॥ हियेहर्षाति सुमनबर्षाति शम्भुजूकेपाहिं । भईआवाति प्रेमधारणाकिये हिय केमाहिं ॥ तत अनन्तर हास्यकीजै शम्भुजूके नैन । भईमूंदाति शीघ्र गिरिजा महतआनँद ऐन ॥ भये मूंदाति नयनतीजो नयन परमबिशाल । भालमाहीं होतभो रबिकेसमान कराल ॥ प्रलयकीसी अग्नि जाते कढ़ीज्वालाभूरि । सो जरावति भई

गिरि हिमिवताहिं चहुंदिशि पूरि ॥ दीप्तिपावक सदृश तिनको नैनऐसेसर्व। देखितिनको धारिकरिकै नम्रताहि अखर्ब॥जोरि कर ह्वै खरीसोहैं भई करति प्रणाम । जरत लखि हिमवान गिरिको भयो दुख अति माम ॥ हुते जेते जीवगिरि हिमवान् माहीं तौन। भये आवत शंभुजू के पासतुरकरि गौन ॥ ताअनन्तर तौन द्वादश भानुके सम ज्वाल । भई पर्शतिव्योम को अति भई चण्डाबिशाल ॥ क्षणहिं माहीं दग्धकीन्हों सर्व गिरि हिमवान। लतावृक्षन सहित पक्षिनके समूहमहान ॥ताहि गिरिजादेखिकै पुनि जोरि दोऊ पानि। भई सोहैं खरी करिकैसजल नयन सु जानि ॥ देखि बिकला उमाको अति शूलपाणि दयाल। लखतभे हिमवान को करि कृपा परम बिशाल ॥भयो तातेपूर्बवत् हिमवान गिरिअभिराम। फूलफल युत बिपिनसह सह बिहँग वृन्द ललाम ॥ पूर्बवत् लखि गिरिहि गिरिजाअति प्रसन्न सुहोय। भईकहती बैनऐसे शंभुसो हंजोय ॥ उमोवाच ॥ सुनहुशंकर भयोहैयक मोहिये सन्देह। दूरिकीजै तौनतुम करि भूरि सहितसनेह ॥ भयोतव सुललाटमें किहिअर्थ तीजोनैन। औकियो किहिअर्थ गिरिकरि दग्धपरम अचैन॥कियोपुनिकिहि अर्थगिरिको पूर्बवत् अभिराम। लतावृक्षन सहितपक्षिन स्वच्छ परमाधाम॥ महेश्वरउवाच ॥बाल्यतेतैं लयेलोचन गौरिमूंदिहमार। भयोताते लोकमाहीं तिमिर परम अपार ॥ सुनहु गिरिजाभई ताते प्रजा बिकला सर्व । नाशिवेको तिमिर तव हम तृतिय नयनअखर्ब ॥ करतभे उत्पन्न तेजस भरो अतिहीभूरि। महत तासु प्रकाशभूमें गयो चहुंघापूरि ॥ तव पिता हिमवान तिहि के तेजसों अतिचण्ड। दग्धहोतो भयो क्षणमें सहित खगतरु दुण्ड ॥ पूर्बवत् पुनिकियो गिरिहम तव खुशीके काज। मलिन तोको देखिकै हमभरे प्रीतिदराज ॥ उमोवाच ॥ चतुर्मुख तुमभये कैसे कहौहे ईशान। अरु सु चारिहु बदनमें तव तीनबर भा-

वान ॥ बदन दक्षिणओरको सो घोरहै किमिसर्ब । औ कहौ किमि कण्ठमें तव प्रभानील अखर्ब ॥ धरेरहत पिनाक करमें नित्यहौ किहिकाम । औकहौ किहि अर्थहौ तुमजटा धारेमाम ॥ बृह्मचारी रहतहौ तुम सदाहीं किहिअर्थ । कहौ मोको कृपाकरिकै सुनहु शम्भु समर्थ ॥ भीष्मउवाच ॥ बैनसुनि गिरिसुताके ईशान ये अवदात । होतभे परसन्न अतिही सुनहु कुन्तीतात ॥ ता अनन्तर भये कहते गौरिको इमिबैन । कृपासागर उजागर बरशम्भु आनँदऐन ॥ भयेहैं जिहिहेतुसों हम चतुर्मुख हेबाम । औ भयो जिमि घोर मेरो बदन दक्षिण माम ॥ हेतु तोसों सर्ब सो हम कहैंगे हे बाल । सुने तोसों प्रश्न मो हिय भयो हर्षबिशाल ॥ महेश्वरउवाच ॥ दोहा ॥ सब रत्ननको सारलै तिल भरि प्रिय अभिराम । बिरचीही लोकेश यक परमसुन्दरी बाम ॥ ताको नाम तिलोत्तमा धरतभये सुनु बार । भरीमहत बरगुणनसों सब अँगतासु सुढार ॥ सोमोमनहिं लुभावती करिकैभावप्रकास । मोतन लखि मुसकावती भई आवती पास ॥ जिहि जिहिओर फिरी सुवह मम समीप बरबाम । तिहि तिहि ओर भये बदन मेरे परम ललाम ॥ इहि कारणते मैं भयों चतुर्बदन हे बाम । यामें संशय है नहीं गिरि नन्दनि अभिराम ॥ पालत हौं सुरपति पदहि पूर्ब बदन सों पर्म । उत्तरमुख सों रमत हौं तो सँगमाहिं सशर्म ॥ पश्चिममुखसों देतहौं जीवनकोआनंद । दक्षिण मुखसों हनत हौं प्रजादेय कैदंद ॥ इहि कारण ते बदन त्रय मेरे हैं श्री मान । औ गिरि नंदनि घोरहै दक्षिण बदनमहान ॥ लोकन के हित अर्थमैं धरेजटा हौं माम । सदाब्रह्मचारी रहतकहत सत्यहेबाम ॥ देवनकीरक्षा अरथमैंहौंधरे पिनाक । होतवृन्द दानवन के जाको देखि सशांक ॥ पूर्बबज्र मारयो रह्यो मोऊपर सुरपाल । तातेमेरेकण्ठ में भई नीलताबाल ॥ उमोवाच ॥ वाहन तजिकै और सब प्रभावान बलवान । क्यों वाहन अप-

नो कियो वृषभ कहहु मतिमान॥ महेश्वरउवाच॥ करत भये उ-
त्पन्नवर सुरभीको लोकेश। तिहि सुरभीते और बहु सुरभी
भईं सुवेश॥ चरणादोहा॥ तिनकेबच्छनको उच्छिष्ट सुफेण आ-
यकै बाम। परोहमारे ऊपर ताते क्रुध करिकै हम माम॥दोहा॥
दग्धकरी सुरभीनको तबसु प्रजापति आय। दूरि क्रोध मेरो
कियो दैकै वृषभ सचाय॥ बरवै॥ वृषभ भयो तबसों बाहन
चारु। कह्यो जौन हमजो तैं पूंछो दारु॥ उमोवाच॥ तोमर॥ दिव
माहिं अति अभिराम। गुणमामके तवधाम॥ तजितौन हे तुम
सर्व। श्मशानमाहिं अखर्व॥ किहि अर्थ करत सुवास। कहिये
सुआनँदरास॥ श्मशानहोतमलीन। तिहि माहिं नित्य नवीन॥
बहु जरतहैं शव आय। दुर्गन्धता बहुछाय॥ सुनि गौरिके
शिवबैन। कहतभये मुद ऐन॥ महेश्वरउवाच॥ उक्छा॥ देखत
पावनथान। भूकेमाहिं महान॥ फिरतभयो सर्वत्र। पै श्मशान
पवित्र॥ समस्थाननहिंकोय। कहूंलखिपर्योजोय॥ श्मशानै के
माहिं। रहत सुभूत सदाहिं॥ बिन भूतन हम पर्म। केहुंनरहत
सशर्म। यातेहम हेदार। बर श्मशान सुढार॥ तामैं कीन्हों
बास। कै कै सहितहुलास॥ उमोवाच॥ चरणाकुलक॥ शंकर जो मैं
संशयकीन्हों। ताको आपु दूरिकरिदीन्हों॥ चारिहु बर्णनके
अबधर्मै। मोकोकहौ कृपाकरि पर्मैं॥ सुनिकै यह सुउमाकीबा-
नी। बोलेशंकर आनँददानी॥ महेश्वरउवाच॥ ब्राह्मणहैं सु देव
धरणी के। वेद शास्त्रबिद शुचि बरधीके॥ बिधिसों उपवासन
को कीबो॥ अरु सुरपूजा मैं मन दीबो॥ यह सुबिप्रको नित्य
धर्म है। याहि किये फल मिलत पर्म है॥ दोहा॥ धर्मक्रिया उप-
नयन अरु बृत आचरण ललाम। इन सर्बनसों होतद्विज सुनु
हे सुन्दरि बाम॥ जौन धर्म सों युक्त द्विज तौन ब्रह्मपद लेत।
रहित धर्मसों जौन द्विज सोदुख लहत अचेत॥ रामगीती॥ पढ़ै
बेदहि कै अबेदहि नम्रतागहिभूरि। करै तीनहुं काल सन्ध्या

होय थिर मुद पूरि ॥ देव जो गुरुदेव आज्ञा करै तौन सप्रेम । मांगि ल्यावै नित्य भिक्षा करैहोम सनेम ॥ ता अनन्तर पठन करि गुरु की सुआज्ञा पाय । बूह्मचारय बूतहि तजिकै सहित बिधि सुखदाय ॥ ग्रहण नारीको करै गुण सों सुढारी लेखि । सत्य बोलै नित्य आदर करै अतिथिहि देखि ॥ लेय अन्न न शूद्रको अरु लखै नहिं परदार । अग्निहोत्रहि करै बिधिवत् बिप्र बुद्धिअगार ॥ कबहुं हिंसाकोकरै नाहिं दया धरि हियमाहिं । भृत्य जनको देय भोजन करै क्रोधहि नाहिं ॥ देवताकी करि सुपूजा देय पुनि बलि पर्म । कह्यो हम द्विजगृहीको यह अल्प तोको धर्म ॥ दोहा ॥ क्षत्रियको जो धर्मबर सुखदायक अभि-राम । तौन धर्म अरु कहतहौं मन लगाय सुनुबाम॥ भुजंगप्रयात॥ प्रजाको सुपालै गहै नीति नीकी । नहींहो नदेईति की भीनृजी की ॥ सदाहीं प्रजा सों छठौ अंशलैकै । सुराखैसप्रेमै महामोद देकै ॥ महीपाल धर्मात्मा जो बिशालै । गहैनीति आछी प्रजा को सुपालै ॥ भली होति है कीर्ति जाकी महीमें । नहींतो हिया झूठ बानी कही मैं ॥ पढ़ै बेद औ देय दानै महानै । करैअग्नि-होत्रै अघैनित्य भानै ॥ महीपाल सो धर्मसों युक्त ह्वैकै । रहै भूमि माहीं महा मोदग्वैकै ॥ क्रियाको गहैही रहै धर्मचारी । करै यज्ञको रीति सोहैं सुढारी ॥ सदा भृत्यके वृन्द राखै सश-र्मै । तजै झूठ बोलै सदा सत्य पर्मै ॥ मही माहिं कोऊ करै दोष जैसो । करै राज की नीति सों दण्ड तैसो ॥ सुरक्षा करै दीनकी धारि दाया । गहै शरण तापै करै नित्य छाया ॥ गऊ बिप्र काजै लरै युद्धमाहीं । करै जीव में नेकहू छोभ नाहीं ॥ उकछा ॥ यह क्षत्रिनको चारु । धर्म परम है दारु ॥ करत सुयाको जौन । लहत मोद बहुतौन ॥ अश्वमेध ते लोक । जौन सुमिलत अ-शोक ॥ तौन लोक अभिराम । किये मिलत यह माम ॥ दोहा ॥ द्विजको अरु क्षत्रीयको कह्यो धर्म हम चारु । अब तोको मैं

वैश्यको धर्म कहतहौं दारु ॥ पशु पालै खेती करै पढ़ैवेद देदान। गहि सुमार्ग बाणिज्य को करै वैश्य मतिमान ॥ इन्द्रिनको निग्रह करै अतिथिहि भोजन देय। बिप्रनको आये महत आदर करिकै लेय ॥ सबिधि अग्निहोत्रहि करै तैलहिबेचैनाहिं। यह सुधर्म है वैश्यको कह्यो गौरि तव पाहिं ॥ सेवा तीनहु बर्ण की करै शूद्र हे बाम। जीतै इन्द्रिन को सदा बोलै सत्य ललाम॥ अतिथिहु की सेवा करै आये तेगहि प्रेम। अरु देवनकी द्विजन की पूजा करै सनेम ॥ यह सुधर्म है शूद्रको कीन्हें ते यह पर्म। शूद्र लहत है महत फल नित्यहि रहत सशर्म ॥ धर्म सुचारिहु बर्णको तोको कह्यो बखानि। अब आगेका पूछिहौ गिरिनन्दनी सुजानि॥उमोवाच॥धर्म सुचारिहु बर्णको कह्यो मोहिं अवदात।अब ऋषीनके धर्म को कहो आपु बिख्यात ॥ महेश्वरउवाच ॥ धर्म ऋषिनको जौनहै कहत तौन हम सर्ब । जाहि कियेसों महत ऋषि सिद्धिहि लहत अखर्ब ॥ पय पीवनजब लगतहैं बछरा होय सशर्म । निकसत जिनके बदन ते फेण दुहूंदिशिपर्म ॥तिन को जे ऋषि पियत हैं फेणपतिनको नाम । स्वर्ग माहिं ते प्राप्त ह्वै लहत मोद को माम ॥ ब्रह्मा पूरबतप कियो फेणपीयकैपर्म। तिहि ते परम महत्त्व को प्रापतभयोसधर्म ॥ मतिवर ऋषिफेणपन को मिलत परमफल जौन। सुनु नन्दनि हिमवान कीकह्यो तोहिं हमतौन ॥ बालखिल्यगणको परमसुनु सुधर्मअबनारि। है अंगुष्ठके पर्ब सम ते सब साठि हजारि ॥ करत भये पक्षीण की वृत्ति सर्बतेदक्ष। सूरज मण्डलमें रहत तिहि के फल सों स्वक्ष ॥ शुद्ध चित्तके और जे दया धर्म युत पर्म। फिरतरहत भुव माहिं हैं तपको करत सशर्म ॥ सो प्रलोकमें प्राप्त ह्वै मति बरते ऋषि सर्ब। भक्ष्य सु आसु सुधांशु की मोदित रहतअखर्ब ॥ जे ऋषि भोज्य पदार्थ को राखत हैं नहिं शेश। औप्रस्थरसों कूटि जे भोजन करत सुवेश ॥ औचर्बणहीं करि रहत

जे ऋषि महत सुजान । सुनु गिरिजे तिनको मिलत जो फल परम महान ॥ सोमप औ सुर ऊषमप तिनके निकटै जाय ।सभाको लहि रहत हैं नारिन सहित सचाय ॥ हरिगीती ॥ गिरिनंदनी सुनु औरऊ बर ऋषिनको जो धर्महै । अति दुखहिनाशक मुद प्रकाशक कहत तोको तौनहै ॥ बशमाहिं करि इन्द्रियनको सब काम क्रोधहि जीतिकै । लखि ज्ञान लोचन सों सुमार्गहि चलै तामहिं नीतिकै॥ नित पितर औ देवतनकी बिधि प्रीति सह पूजाकरै । अरु अग्निहोत्रहिकरै अतिथिहि देयभोजन सादरै ॥ चुनि बिहँगलौं नित अन्न ल्यावै बिपिन माहीं जायकै । अरु करै अल्पहिशयन आसन भूमि माहिंबिछायकै॥ फलमूल कबहूंखाय कबहूं शाकपर्ण शिवारको । कबहूंसु वायुहि करैभक्षण करैकबहूंबारिको ॥ नहिंकरैगोरसमाहिं प्रीतिहिऔर भोग्य जितेकहैं । नाहिंकरैतिनको ग्रहण कबहूं धारिचारु बिबेक हैं ॥ शुचिधर्म येते ऋषिन के अभिराम उत्तमपर्महैं ।इनकोकियेते चारु गतिको पाय रहत सशर्म हैं ॥

इतिचतुर्वर्णधर्मयुतऋषिकर्म्मबर्णनोनामपंचदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥

उमोवाच ॥ दोहा ॥ बान प्रस्थको धर्म जो कहहु मोहिं अब तौन । हरसों इमि कहती भई गिरिजा सुनु बुधिभौन ॥ आभीर॥ गिरिजा के ये बैन । सुनिकै शिव मुद ऐन । बानप्रस्थको पर्म । कहते भये सुधर्म ॥ महेश्वरउवाच ॥ जयकरी ॥ बानप्रस्थकोसुधरम जौन । गिरिजेतोहिं कहतहमतौन ॥ सुनुतूताहि सुचित्तलगाय। चञ्चलता कोसर्वबिहाय ॥ दोहा ॥ करैत्रिकाल स्नाननितगहि करिकैबरनेम । पितरनको अरुसुरनको पूजन करैसप्रेम ॥ करै अग्निहोत्रहिसदा आलसताकोत्यागि । बसै महाआरण्यमें निर्भयतासेंपागि ॥ सावांआदिकअन्नजोबिनबोयेहेदार ।तिनको ल्यावैबीनिकैभोजनकाजसुढार॥औल्यावै फल मूलबरबनमें ते अभिराम ।दीपकको एरण्डकोराखैतैलललाम॥ बल्कलचीर

सुवृक्षको औ मृगचर्मललाम । धारैऔ इन्द्रियनको राखैबशमें बाम ॥ बर्षामें जलको लहै अपने ऊपर दार । शीतमाहिं जल में रहै ठाढ़ो सुमति अगार ॥ वायुभक्ष्य कबहूं रहै कबहूं भक्ष्य सुनीर । कबहूं भक्ष्य शिवारको रहै धारिकै धीर ॥ ग्रीषममें पंचाग्नि सों तापै करि थिर चित्त । बनके सब प्राणीनको जानै अपने हित्त ॥ देवयज्ञ पितृज्ञअरुभूत यज्ञ अभिराम । बृह्मयज्ञ अरु पञ्चम सुमनुज यज्ञ है बाम ॥ अग्निहोत्र सुरयज्ञ है श्राद्ध परम पितृज्ञ । बृह्मयज्ञ स्वाध्याय में पठन कहत हैंप्रज्ञ॥ दीवो जो मानवनको मनुजयज्ञहै तौन । भूत निमित्तकसो सुबलिभूत यज्ञहै जौन ॥ करै सुपांचै यज्ञ ये श्रद्धा सहित महान। रहै शरणमें अग्निकी नित्यहि बर मतिमान ॥ करै नित्य यक होम अरु पूरणिमामें तीन । बानप्रस्थकरिचित्तको थिरतामाहिं प्रवीन ॥ बृह्मलोक अरु सोमको लोकचारु तिहि माहिं । किये धर्म यह जात जन यामें संशय नाहिं ॥ बानप्रस्थको धर्म हम तोको कह्यो बखानि । अब आगे का पूंछि हो भूधर सुतासुजानि ॥ शंकर के ये बचन सुनि आनँद भरे ललाम । फिरिगिरिजा करती भईप्रश्न भरीमुद माम ॥ उमोवाच ॥ दोहा ॥ दीप्तिमान जन होय कै लहत लोक अवदात । किहि बिधि सोंअब मोहिं यह कहो आपु बिख्यात ॥ सोरठा ॥ सुनि गिरिजाके बैन कहत भये ऐसे बचन । शङ्कर आनँद ऐन प्रश्न कियो नीको परम ॥ महादेवउवाच ॥ जे जनहैं बृत बान अरु जेइन्द्रीबशकरत। बोलत सत्य सुजान हिंसा कबहुंन करतहैं ॥ करत सबिधि उपबास दीप्तिमान बरहोयकै । तेजन लहत हुलास गन्धर्वनके संगमें ॥ शीतसमयके माहिं जे जन जलमें रहतहैं । ते नागन के पाहिं दीप्तिमानह्वै मुदलहत ॥ मृगके सँगमें घास खाय रहतजो बिपिनमें । दीप्तिमानह्वै बास अमरपुरी में करतहैं ॥ गिरपातशैवाल बसि बन मेंजेखातहैं । अरुहिममाहिं बिशाल

जो जलमाहिं बसत निशि ॥ दीप्तिमानह्वै पर्म उत्तम गतिको पायते । रहत सदाहिं सशर्म यामें संशयहै नहीं ॥ बायुहि भक्षत जौन अरु जेभक्षत नीरको । करिसु बिपिन में भौन जेजन भक्षत मूलफल ॥ दीप्तिमानते होय यक्षणमें ऐश्वर्य्य लहि । रहतमोदसों भोय अप्सरानके गणनसह ॥ जेजन द्वादश बर्ष पंचअग्निसों तपत हैं । ग्रीषम माहिं सहर्ष होत तौन द्युतिमानतृप ॥ गहिसुनेमआहार करतजौन द्वादशबरष । पर्वत मेरु सुढारतामें बसिकै प्रज्ञबर ॥ परभावान महान नीतिमान धर्मज्ञ अरु । भूपतिहोत सुजान यामें संशयहैनहीं ॥ अनशनब्रत में जौन बरबुध तजत शरीरको । दीप्तिमानह्वैतौन स्वर्गमाहिं सुख लहतहैं ॥ जोजनबारहबर्ष धरतीमें आकाशतर । सोवत होत सहर्ष सुनुनन्दनि गिरिराजकी ॥ ताकोवाहन चारुमिलत औसु शय्या मिलति । अरुबर मिलत अगारु शुभ्र प्रभामय चन्द्रसों ॥ द्वादशबर्ष सुजान जौन तपस्याकरतहै । छोड़ि सिन्धुमें प्रान बरुणलोकको लहतसो ॥ बारहबर्ष सुजान करत तपाहिजन जौनबर । पुनिदृढ़ताहि महानधरिकै पावकमेंजरत ॥ चारुदीप्ति सोपाय परमप्रज्ञ धर्मज्ञ शुचि । अग्निलोकमें जाय पूज्यमान ह्वैकै रहत ॥ अनशन ब्रतकेमाहिं तजतदेहजो बीर लौं । जाय इन्द्रके पाहिं कांतिमान ह्वैकै रहत ॥ निरत सत्वगुण माहिंजो सदाहिरहि तजततन । तौनहुं सुरपति पाहिंदीप्तिमान ह्वैकै रहत ॥ लहिबिमान अभिराम इच्छापूर्वक फिरत है । पावत है मुदमाम जहँजहँ जात तहांतहां ॥

इतिदानधर्मेगौरीशसंबादेसफलतपाबिधानंषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ॥

उमोवाच ॥ सोरठा ॥ हैएक और संदेह श्रीगङ्गाधर त्रिपुरहर । महत मोदके गेह करहु तौनहू दूरितुम ॥ पूर्वबिधातापर्मचारि बरण उत्पन्नकिय । शंकर सुनहु सशर्म दक्षयज्ञ हरप्रज्ञ बर ॥ तिन बर्णनकेमाहिं कौनकर्मसों वैश्यजो । कहहु हमारे पाहिं

प्राप्तहोतशूद्रत्वको ॥ अरुक्षत्रियसोंलेत बैश्यताहिकिहिकर्मसों। अरुकिमि मोद निकेत क्षत्रियताको द्विजलहत ॥ किये कर्मको कौन शूद्रयोनि में होतद्विज । कहियेआनँद ऐन क्षत्रियहू अरुबैश्यहू ॥ अरु जेतीनहु बर्ण बिप्रताहि किमिलहतते । श्रीशिवसंशय हर्ण करहु दूरि संदेह यह ॥ श्रीमहेश्वरउवाच ॥ प्रश्नकियोयह स्वच्छ तैं सुनु हे गिरिनंदनी । याकोहेतु प्रतच्छ अद्यहितोको कहतहौं ॥ जोद्विज ताजि निजधर्म क्षत्रियके कर्महि करत । द्विजताते सो पर्म छूटि सुक्षत्रिय होतहै ॥ त्यागि स्वधर्महि जौन बैश्यकर्मको करतहै । हेसुनु क्षत्रिय तौन बैश्यबर्णको लहतहै ॥ शूद्र कर्मके माहिंबैश्यरहत सोजौनहै । यामें संशय नाहिं शूद्र होतहै बैश्यसो ॥ दोहा ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्यअरु कियेशूद्रके काम । निश्चय शूद्रहि होतहैं है नहिं संशयबाम ॥ रामगीती ॥ सुनहु गिरिजे अन्न निंदित क्रूरजन को पर्म । शूद्रको है अन्न निंदित अतिहि नाशकधर्म ॥ श्राद्धमाहीं निमंत्रितहै बिप्र गिरिजे जौन । तौन भोजन करिचुकें जब बचोजोहै तौन ॥ परमानिंदितअन्नहै इहिमाहिंसंशयनाहिं । कहैहैं येपितामहकेबचन तेरे पाहिं ॥ चरणादोहा ॥ होयउदरमें अन्न शूद्रको मृत्युसमयकेमाहिं । शूद्रयोनिमें जन्महोय तो द्विजको संशय नाहिं ॥ दोहा ॥ अन्नसुजिहिजिहि जातिको मरे खाय द्विजजौन । निश्चय तिहितिहि जातिमें जन्म लहतहै तौन ॥ सोरठा ॥ दुर्लभ द्विजतापाय भक्षतजौन अभक्षको । निजु द्विजताछुटि जाय तौनबिप्रअज्ञान सों ॥ हरिगीती ॥ द्विजसुरापीवत जौनअरुजे नीचकर्महिं करतहैं । अरु जेनहीं उपकार मानत क्रूरता हियधरतहैं ॥ रतरहत चोरी माहिं जे अरु बिप्रको जे हनतहैं। अरु तौनहैं द्विजपरमगर्बी औरको नहिंगनत हैं ॥ अरु पढ़त जेनहिं वेदको नित कपट में रतरहतहैं । अरु जौन देखतशुद्ध राखतधूर्तताहितमहतहैं ॥ ब्रतकरतकौनहुंनाहिंजे अरुरमैंशूद्री

माहिंहैं । गुरु नारिमेंजे रमत हैं अघको विचारतनाहिंहैं ॥ जिहि पात्रमाहिं बनायभोजन तौनहींमेंखातहैं । अरुनीचकीजेकरत सेवापाप करिसरसातहैं ॥ व्रतकोनपूरणकरत देत सुबीचहीमें त्यागिहैं । नितकरतनिन्दागुरूकी गुरुद्रोहमाहींपागिहैं ॥ सोरठा ॥ ऐसेद्विजजेबालवेदवानहूंहोहिंजो । सुखदापरमविशालद्विजताते गिरिजातहैं ॥ दोहा ॥ जौनहेतुसोंलहतहैं शूद्रवैश्यताचारु । अरु क्षत्रियतालहतहैं वैश्यसुबुद्धिअगारु ॥ पावतहैंवरविप्रता क्षत्रियवरबुधिभौन । सुनुगिरिनन्दनि कहतअब तोकोकारणतौन ॥ पद्मिनी ॥ सुबुद्धिमान शूद्रआपने । करैसुकर्म मोदथापने ॥ टहल माहिंविप्रकीरहै । कबौं न उग्रबैनकोकहै ॥ सुमार्गमाहिं नित्यही चलै । कहै सुसत्य ना करैछलै ॥ करै सुनेमबांधि भोजनै । कबौं न काहु जीवको हनै ॥ जबै होय तिय रजस्वला । करै तबै सुकामकी कला ॥ दोहा ॥ देवनको अरु द्विजनको करैसदा सत्कार । भोजन देयसुआतिथिको आदर करिसुअपार ॥ सोरठा ॥ बैठै बुधजन पाहिं चारु वार्त्ता सुनन को । भोजनकरै सदाहिं बचोहोय जो द्विजनसों ॥ ऐसोबर बुधिधाम शूद्र लहतहैं वैश्यता । है नहिं संशयग्राम हे नन्दनि हिमवानकी ॥ दोहा ॥ वैश्य लहत जिहि हेतुसों क्षत्रियता अभिराम । तौन हेतु मैं कहत हौं गौरि तोहिं अबआम ॥ महती ॥ नित सत्यबैनहिं कहै । कबहूंन गर्वहि गहै ॥ अरु क्रोधको नहिंकरै । हियमाहिं शांतिहि धरै ॥ तोटक ॥ विधिसों अरु श्राद्ध सदाहिं करै । अरु दै धन दीनहिं मोदभरै ॥ बलिदेय सुभूतन को नितही । अरु होमकरैरतिसों अतिही ॥ शुचिह्वै करिकै नित वेद पढ़ै । सुगहै सब इन्द्रिन को सुदृढ़ै ॥ द्वैकालकरै नित भोजनको । नहिं फेरिकरै गहिकै पणको ॥ दोहा ॥ प्रथम अतिथिको देयकै सादर भोजन चारु । फेरिआपु भोजनकरै सबसहित परिवारु ॥ सोरठा ॥ कीन्हें ऐसे कर्म क्षत्रियता को लहत है । मतिबर वैश्य सधर्मया-

में संशय है नहीं ॥ रामगीती ॥ जाति कर्मादिक सुजाके समस्कार सुसर्ब । होहि जो द्विज होत क्षत्रिय धर्म सहित अखर्ब ॥ पालिकरिकै प्रजाको सब पुत्र जो अभिराम । लेय छठवों अंश तासों सत्यबोलै माम ॥ होहि जामें दक्षिणाबहु करै एसोयज्ञ। पढ़ै वेदहि अग्निहोत्रहि करै बर धर्मज्ञ ॥ लखै जैसो दोषतैसो दण्डदेय सधर्म । प्रजामाहीं देय शासन धर्म कीबे पर्म ॥ प्रीति करिकै दीनजनकी करै नित्य सहाय । रमै अपनी दारमाहीं समय लहि सुखदाय ॥ लखै नहिं परनारि कबहूं जानि पाप बिशाल । अग्निहोत्र सु होय जौने गेहमें सुनुबाल ॥ शयन तौने गेह माहीं करै शुचि ह्वै पर्म। देय भोजन अतिथिको बर प्रेम सहित सधर्म ॥ अतिथि शूद्रहु होय तौ दीजै सुभोजन ताहि। करै विधिवत श्राद्धराखै दुष्टभावहि नाहि ॥ होय पावन परम बिधिवत् करै बरउपवास । गुरू ब्राह्मण काजरणमें लरै सहित हुलास ॥ ज्ञानमान महानबर धर्मात्मा अभिराम । बिप्रताको लहत ऐसो तौन क्षत्रियवाम ॥ धर्ममाहीं रहै रततौशूद्रहू द्विज होय । बिप्रहू जो करै अधरम धर्म अपनो गोय ॥ शूद्रताको लहै तौ यहिमाहिं संशयनाहिं। रहै ताते नित्यतत्पर धर्म अपने माहिं ॥ हेतु द्विजताको सुधर्महिं जानु निश्चयबाम । बचन ब्रह्माके कहे हम कहे ताको आम ॥ दोहा ॥ द्विजता जौने हेतु सों पावत शूद्र सधर्म । औ द्विजजौनेहेतुसों लहत शूद्रता पर्म ॥ सोरठा ॥ ते सबकह्यो बखानि तोको हम गिरिनन्दनी । अबहियमाहिं सुजानि इच्छाका है सुननकी ॥ गिरिजा सुनि ये बैन कहत भई इमि शम्भुसों । पशुपति आनँद ऐन यक संशय औरउकहौ ॥ जयकरी ॥ पापकर्म बन्धनमें जौन । सुनहु बँधे हैं मानवतौन ॥ किहि बिधि कर्म कियेसों कौन । छूटि करत हैं दिवको गौन ॥ महादेवउवाच ॥ यह जो प्रश्न कियो तैं बाम । मनुजन को सुखकर अभिराम ॥ हमसों सुनो कहत हम

आम । करिहै प्रिय यहिको बुधिधाम ॥ जे रतरहत सत्यकेमाहिं । रहैं सदा प्रज्ञनके पाहिं ॥ ते नहिं अघबन्धनके माहिं । बँधे रहत हैं मुदित सदाहिं ॥ दोहा ॥ हिंसामनबच कर्मसों करत नहीं जनजौन । अघबन्धनसों छूटिकै करत स्वर्गको गौन ॥ इन्द्रिनको जे बिषयमें लगनदेत हैं नाहिं । शत्रुता न अरुमित्रता राखत काहूमाहिं ॥ दया धरैं शीलहि धरैं अरु जे जन अभिराम । अघबन्धनसों छूटि ते लहत स्वर्गमेंधाम ॥ हरिगीतो॥ धन औरकेमें जौनजन कबहूंन लोभहि करत हैं । अरु रमणी परनारिमें कबहूं न इच्छा धरत हैं ॥ बरआपनीही दारमाहीं रहतजे जन निरत हैं । अरुधर्म ते भो अन्न जोहै प्राप्तताको चरतहैं ॥ सोरठा ॥ ऐसे हैं जनजौन तौनछूटि अघफांसिसों।जाय स्वर्ग में भौन लहतमहत परमाधरे ॥ अरिल ॥ कबहूं भूठनबोलत जेजन । पापफांसिसों छुटिकै तेजन ॥ जाय स्वर्ग में आनँद पावत । भरे परम परभासों भावत ॥ जो कबहूं कोऊ आवैघर। ताहि कहत मीठीबाणी बर ॥ औ जे कहैं कठोरहि बैन न। करैं कुटिल काहू दिशि नैन न ॥ ते कुकर्म फांसीसों छुटिकरि । स्वर्ग लोकको जातसुमुदधरि ॥ मञ्जुगीती ॥ चुगलीहिजौन करैनहीं । हिय दुष्टताहि धरै नहीं ॥ जन औरको निदरै नहीं । हिय क्रोध ताहि भरैनहीं ॥ आभीर ॥ ऐसेहैंजन जौन । अघफांसी सों तौन॥ छूटि स्वर्गको गौन । करत होय मुदभौन ॥ तोटक ॥ अरु जौन बिरुद्धहि नाहिं करै । शठकी कहनूतिहि ना अचरै ॥ दुख होय महा सुनिकै जिहिको । हियमें नाहिं बैनकहै तिहिको ॥ कान्ता ॥ ऐसे जौन । जन बुधिभौन ॥ स्वर्गहि जाय । रहत सचाय ॥सोरठा॥ अरु अरन्यहू माहिं द्रब्य परायो देखिकै । जेजन मनमें नाहिं लीबे की इच्छा करत ॥ तेजन आनँद पाय अघ बंधनसों छूटिकै । स्वर्ग लोक में जाय ओक लहत परमामयो ॥ चरणाकुलक ॥ कामवती अति परमसुढारी । ऐसीजो पर नरकी नारी ॥ ताहि

देखि एकान्तै माहीं। जे मानव मनहू से नाहीं ॥ तामेंरमै तौन जन ज्ञानी। अघफांसीसों छूटि महानी ॥ जाय स्वर्गमें मुदसों भारे। पावतहैं बरसदन सुढारे ॥ जे काहूसों बैरनराखैं। औ करि मित्रता न अभिलाखैं ॥ सुपथ कुपथको जौन बिचारै। जीवनको करिदया निहारै ॥ दोहा ॥ अघ फांसीसों छूटितै जाय स्वर्गके माहिं। महत लहत आनंदको यामें संशयनाहिं ॥ जयकरी ॥ शास्त्रमाहिं रतजौन सुजान। अरुजे श्रद्धावान महान ॥ धर्म अधर्महि जानत जौन। युक्त दान गुणसों बुधिभौन ॥ अरु जे पूजत सुरहि सनेम। मानै श्रुतिवत द्विजहि सप्रेम ॥ ते जन अघफांसी सों भूरि। छूटि महत आनँदसों पूरि ॥ जाय स्वर्गमें पावत धाम। है नहिं यामें संशय बाम ॥ तोमर ॥ हमको सु पूंछ्यो जौन। सब कह्यो तोकोतौन ॥ अब पूंछिहै जो मोहिं। हमकहैंगे सो तोहिं ॥ उमोवाच ॥ दोहा ॥ रूपवान जन होतहैं कौन हेतुसों पर्म। मोहिं कहौ करिकैकृपा अबयह आपु सशर्म ॥ मोतीदाम ॥ दया सबजीवनकी हियमाहिं। करै जन जो बुधिभौन सदाहिं ॥ लहैं बर रूप महा अभिराम। परैं नहिं नारक में बुधिधाम ॥ मधुभार ॥ पूछ्यो सु जौन। हमको सु तौन ॥ सब तोहिं बाम। हम कह्यो आम ॥ उमोवाच ॥ दोहा ॥ कौन कर्म कीन्हें मनुज जात स्वर्गकेमाहिं। शंकर अबयह करि कृपा कहो आपु ममपाहिं ॥ महेश्वरउवाच ॥ हरिगीती ॥ बर कूप बापी धर्मशालाको बनावत जौन हैं। अरु बसन भोजन देत दीनहि जौनवर बुधिभौनहैं ॥ बर द्विजनको सन्मान करिकै परम मोदित करतहैं। अरु देयकै गोभूमि दानहि मोदहियमें धरत हैं ॥ भरि रत्नसोंअरु और धनसों धामअति अभिरामको। जन देत जेहैं प्रीतिसों द्विज वेद विद बुधिधामको ॥ अरुजौनबाहन देतहैं अरुचारुआसन देतहैं। अरु देत दारा दान जे कै मुदित बुद्धि निकेतहैं ॥ सब अन्नको अरु देतजे हैं परम चारु बनाय कै। जन सर्व ये ते

स्वर्गमाहीं लहत आनँद जायकै ॥ बसि स्वर्ग में बहुकाल लौं रमि अप्सरनके संगमें । अरु चारु नन्दन बिपिन माहीं रहत मोद उतंगमें ॥ जबहोत च्युतहैं स्वर्ग ते तब भूमिमाहीं आय कै । लहिजन्म धनयुत बंशमाहीं रहत आनँद पायकै ॥ सब होत युक्तसुगुणनसों सब होति इच्छा सिद्धिहै । कबहूंन आवत दरिद्र गृहमें भरी रहति सुनिद्धि है ॥ अरुजौन जनलखि अतिथिको अरु भिक्षुकन के वृन्दको । धनवान ह्वैकै देत कछुनहिं धरे कुमति बिलन्दको ॥ द्विज जौन मांगत आयतिनको कहत बैन कठोर हैं । पुनि बैठिदैकै पीठि तिनकी तकत नाहीं ओर हैं ॥ नहिं कबहु कौनहु दानको सबजन्म माहीं देतहैं । जन नरकमाहीं जाय ते अति महत दुखको लेतहैं ॥ कढ़ि नरकते बहु कालमें जो कबहुं मानुषता लहैं । तोजन्मलहि धनहीन कुलमें नित्य पीड़ितही रहैं ॥ अरु जौन अति अभिमानसोंयुत मनुज जगके माहिंहैं । जनजौन आदरयोग्य तिनको करत आदर नाहिंहैं ॥ महिपालको अरु अन्धको अरु बिप्रबुद्धि अगारको । अरु गर्भवतिका नारिको अरुवृद्ध जनहिं सभारको ॥ नहिंदेत मारग अल्पबुद्धी महत अति मदसों भरे । अरु देखि आवत गुरूको नहिं होत हर्षित ह्वैखरे ॥ अरुऔरऊ सन्मान कीबे योग्यमानव जौन हैं । नहिं करत जे सन्मान तिनको परम दुर्मति भौनहैं ॥ सबजातते जन नरकमें यहि माहिं संशय नाहिं है । हम सुन्यो यह वृत्तान्तपूरब लोकपति के पाहिं है ॥ दोहा ॥ कढ़ै कबहुं जो नरकते तो कुत्सित कुलमाहिं । जन्म पायकै लहत दुख अरुअघ करत सदाहिं ॥ चरणाकुलक ॥ अरुजे जन हैं नहिं अभिमानी । धरे दया हियमाहिं महानी ॥ पूजतसुर अरु द्विजहि सदाहीं । कहत मधुर बाणी सबपाहीं ॥ कबहूं दूषन मन में आनैं । सब जीवनको अति प्रिय जानैं ॥ जौन मनुष्य निकट में आवै । ताको अति प्रिय बचन सुनावै ॥ गुरु आवै जब

मोदित ह्वैकै। सादरलेय प्रीति सों ग्वैकै॥ अतिथि जौन आवै गृह माहीं। करत अनादर ताको नाहीं॥ ऐसे बुद्धिमान जन जेहैं। प्रापतहोत स्वर्ग में तेहैं॥ स्वर्ग माहिं रहिकै बहु कालै। पावत हैं आनन्द बिशालै॥ दोहा॥ तदनन्तर जब मनुजतापावत भूके माहिं। उत्तमकुलमें जन्मलहि मोदित रहत सदाहिं॥ प्राप्तहोत सब भोग हैं तिनको अरु बहुरत्न। सबप्राणिनको होत प्रिय बिना कियेहू यत्न॥ धर्महि माहीं रहत रत शर्म सहित अभिराम। पर्म प्रज्ञताको लहतजात भर्म मिटि माम॥ मुग्धबिलास॥ अरुजौन क्रूर महान। अघभौन दुर्मति मान॥नित रहै परमससान। नहिं करत कौनहुंदान॥ दोहा॥ कर पद सों अरु रज्जुसों तिमिहिं माहिं कै दण्ड। जे जीवनको देतहैंबाधा भूरि प्रचण्ड॥ आभीर॥ ते जन दुर्मति रास। लहतनरकमेंबास यामें संशय नाहिं। कहतसत्य तव पाहिं॥ दोहा॥ जो कबहूं कढ़ि नरकते लहै मनुजता जौन। तो बाधायुत वंशमें जन्मलहत है तौन॥ बिन अपराधहि करत हैं द्वेष तासजन सर्व। औनिशिदिन तिनकी परम निन्दाहोति अखर्ब॥ सुन्दरी॥ कौनहु भांति सुजीवहि जो जन। देत ब्यथाकबहूं नहिं सो जन॥जाय सुदेवत लोकहि भावत। चारुअनूपम आलय पावत॥सोरठा॥ निर्जर लौं दिन माहिं प्रभापायकै लसत है। सुरनारी तिहिपाहिं रहि बहु आनँद देति है॥ लहै मनुजता जौन कबहूंजोबहु कालमें। दुःख रहित कुलतौन पाय रहत आनंदसों॥ उमोवाच॥ दोहा॥ महाप्रज्ञ केते किते अल्पप्रज्ञ हैं पर्म। देखिपरतसंसार में पशुपति सुनहु सशर्म॥ चरणादोहा॥ महाप्रज्ञ अरु अल्पप्रज्ञ जन कौन कर्म सों होत। यह संशय कोकरहुदूरितुम गंगाधर मुद पोत॥ हंसदोहा॥ कौन कर्मसों होत जन अन्धा अरु रुज वान। कौन कर्मसों होतहै क्लीव कहहु मुद वान॥ महेश्वरउवाच॥ सोरठा॥ ॥ विप्रधर्म बिद जौन तिन्हें अशुभ शुभ कर्मते। तूछि

जौन बुधि भौन करत अशुभ तजिकर्म शुभ ॥ तेजन आनँद पाय परममहत यहि लोक में। फेरि स्वर्ग में जाय रहत सुरन के संगमें ॥ दोहा ॥ फेरि लहै जो मनुजता महा प्रज्ञतो होय। पढ़त शास्त्र को शीघ्रही रहत मोद सों भोय ॥ दुष्ट चक्षु सों लखत हैं परनारी को जौन। अन्धजन्मलहिहोतहैं तेजन दुर्मति भौन ॥ दुष्ट चित्तसों लखतजे नग्नापरकी दार। पीड़ितते जन होत हैं लहिंके रोग अपार ॥ सोरठा ॥ अरु जे दुर्मति भौनपर नारी में रमत हैं। होतक्लीब हैं तौन यामें संशयहै नहीं ॥ दोहा॥ गुरु तिय गामी जौन अरु पशुको बेधत जौन। व्यर्थ करत मैथुनहिं जे होत क्लीव हैं तौन ॥

इतिशांतिपर्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंबादेसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः॥

नारदउवाच॥ दोहा ॥ तदनन्तर शंकर परम गिरिजाको येबैन। कहतभयेमुसकायकै बरआनँदसोंऐन ॥ महेश्वरउवाच ॥ सावित्री तियद्रुहिणकीशचीइन्द्रकीनारि।स्वाहाशिखिकीरोहिणीशशिकी नारिसुढारि ॥ तियामारकण्डेयकीधूमार्णासुललाम।ऋद्धिधनद की वरुणकी गौरीतिय अभिराम ॥ सुबर्चला तिय भानुकीभरी रूप सोंचारु। कश्यप की तियदिति अरु यशस्विनीसुढारु॥ पति ब्रता ये सर्व हैं प्रज्ञावती महानि। इनसों तो सों,परस्परहै अतिप्रेम सुजानि ॥ सोरठा ॥ ताते पूछततोहिं मैं हौं हे गिरिनन्दनी। धर्म तियन के मोहिं कहु इच्छाहै सुननकी ॥ दोहा ॥ जेतव पूजा करतते होत महत बलवान। होत महा गुणवान अरुहोत महा सुखवान ॥ रक्षातू नित सुरनकी करति क्लेशकोदूरि। अरु तूही मानवनको देतिमोदसोंपूरि ॥ जैसोमैंब्रतवानहौं तैसीतूब्रतवानि। अतिप्रियमोकोलगतितू गिरिनन्दनीसुजानि ॥ नारिन को जोधर्मसो जानति तूहैसर्व। याते तोसों सुननकी इच्छाभई अखर्व ॥ उमोवाच ॥ सोरठा ॥ मोमेंहैगुणजौन तौन कृपातेरावरी। सुनियेआनँद भौन भयहरसुरगणसर्बके ॥ दोहा ॥ युक्तानिर्मल

नीरसों ये सबनदी महानि।कीबेकाजे परश तव आईं पास सु-
जानि॥ इनके संग बिचारिकै स्त्री धर्महिं पर्म। कहि हौं मैं तुम
सों सुनो हे ईशान सशर्म॥ यह जो नदी सरस्वती नंदिनमाहिं
अभिराम। ज्येष्ठाहैअरु उत्तमाजलसों भरीललाम॥ रामगीती॥
बिपासा अरु बितस्ता अरु चन्द्रभागा चारु। गोमती अरुकौ-
शिकीअरुनदीसिन्धुसुढारु॥औशतद्रुइरावतीअरुदेविकाअभि
राम। मोदकरणी सुरसरी बरपाप हरणी माम॥ नदी येतीहर्ष
सेती प्राप्त हैं तवपास। शम्भु सों कहि बैन इमि गिरिसुतास-
हित हुलास॥ भई पूंछति नदिनको नारीनको जो धर्म। पाय
आज्ञा शम्भु की बहु धरेहीमें शर्म॥ उमोवाच॥ सोरठा॥ प्रश्न
कियो शिवजौन नारिनके बरधर्मको। संगतुम्हारे तौन क-
हिहौं ताहि बिचारिकै॥ दोहा॥ सुनि गिरिजाके बैन ये बरगं-
गादिकसर्ब। गिरिजा को पूजतिभईं आनँदभरीअखर्ब॥ तद-
नन्तर गंगापरम बिनती करिकै भूरि। शैलसुताको बैन इमि
कहत भई मुदपूरि॥ सोरठा॥ योजन प्रश्न महान जिहि जनको
पूछै कछू। तासु होत सन्मान धरमज्ञा सुनुशैलजा॥ दोहा॥ तुम
सर्वज्ञा शैलजा पूंछति हमसों धर्म। याते अति सन्मानहै होत
हमारोपर्म॥ कहिबे योग्या तुमहिं हौ नारिनके बरधर्म। याते
कहिये आपुही बिनती सुनि ममपर्म॥ सुमती॥ गंगाकी सुनिकै
सुढार बातें। बोली यों गिरिजा सुमोद तातें॥ नारीके अति
स्वच्छचारु धर्म। मैंहीं हे कहिहौं सुनो सुपर्म॥ दोहा॥ गंगा
को इमिबैन कहि हेमवती अभिराम। शिवको नारिनके धरम
कहत भई सो आम॥ उमोवाच॥ सोरठा॥ जिहि दिनहोय बिवाह
तिहि दिनही सोनारिका। अतिही भरी उमाह पतिकी आज्ञा
में रहै॥ लखै प्रीतिसों माम जैसे बदन सुपुत्रको। तैसेही बर
बामपतिको देखै निशि दिवस॥ पतिब्रताजे नारि कथासुतिन
की श्रवणकरि। सेवामाहिं सुढारि पियकी तीय रहै सदा॥ क-

बहूं कहै कठोर जो पिय करिकै क्रुद्धअति । तबहू पियकीओर प्रीति सहित चाहै सदा ॥ करै सुव्रत प्रियजौन करै तौन तिय आपहू । करै जहांको गौन तहां प्रीतिसो जातसँग ॥ जानैदेव समान पतिको है मतिमान तिय । स्वपनेहू में आन पुरुषओर देखै नहीं ॥ होय पुरुषजो दीन अथवा रुजजुत होय कृश । तब ह्वै नित्य नवीन प्रीति सहित सेवाकरै ॥ पुत्र भयेहू पर्म पति कीरति राखै महत । पतिव्रतनके धर्म सुनहु शंभु ये सर्व हैं ॥ भोगकामके माहिं औ तिमिहीं ऐश्वर्यमें । राखै मनकोनाहिं पतिरति में राखै सदा ॥ नित्यहि उठिकै प्रात करै अगारहि स्वच्छअति । गोमयसो अवदात लीपि आपनेकरनसों ॥ पिय के संगसदाहि अग्निहोत्र बिधिवत करै । पियकी आज्ञा नाहिं भंगकरै कबहूं तिया ॥ देव अतिथि अरुभृत्य पतिसह तिनको तृप्तकरि । प्रीति सहित अरु नित्य शेष आपु भोजनकरै ॥ सेवाकरिकै भूरि सासूकी अरु स्वसुरकी । महत मोदसोंपूरि तिन से नित्त अशीष लै ॥ पतिकी आज्ञापाय दुर्बलदीन सुद्विजन को । अन्न सुदेति सचाय ते पतिव्रतानारिहैं ॥ राखै चितपति माहिं नितही सेवाकरिपरम । जानै स्वर्गहु नाहिं पियकी कृपा समानवर ॥ जामें होय अधर्म अरु जो कीबे योग्य नहिं । कीजै तौनहु कर्म जो आज्ञापति देयतौ ॥ महत कष्टहू माहिं पिय को संगतजै नहीं । सुखदुख माहिं सदाहिं छायालौंसँगमेंरहै ॥ नारिनके जे धर्म तुम्हैं सुनाये बर्णिमें । सुनिये शंभुसशर्म रहतिधर्म में पतिव्रता ॥ पतिव्रत धर्मसमान नारिनको नहिं और है । जे तियकरत महान ते पावतहैं मोदको ॥ भीष्मउवाच ॥ नारिनको जो धर्म शंभु गौरिसों सर्वसुनि । भये प्रसन्न सशर्म सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञवर ॥ तदनन्तर सबभूत नदी अप्सरा गन्धरव । हर्षहिपाय अकूत शिवहि नौमि सबजातभे ॥

इतिश्रीमहाभारतेदानधर्मेअष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

छप्पयछंदः ॥ सोरठा ॥ सुनु सशर्म हे सर्ब कहौ महातम बिष्णु को। दायकमोद अखर्ब हम सुनिबेको चहत हैं ॥ महेश्वरउवाच ॥ अरिल ॥ निर्जर शत्रुनकेगणनाशक। बासुदेव सुरमोदप्रकाशक॥ परममहान तेजहै तनकर। सम नहिं होत अनेकन दिनकर॥ तिनको सर्बदेवता पूजत। बहुबिधि प्रेमसहित हैं कूजत ॥ सब थावरजंगम के नायक। हैं भक्तनके सदासहायक ॥ रामगीती ॥ भये तिनके उदरते उत्पन्न हैं लोकेश । औ सुशिरते भये हैं उत्पन्न हमयहि भेश॥ केशतेउत्पन्न तिनके भयेनखतसमूह। औ भये हैं रोमते बरसुरासुरके जूह ॥ रहे सब में ब्यापि हैं अरु परम हैं सर्बज्ञ। फिरतहैं सर्बत्र तिनको भजतजे हैं प्रज्ञ॥ आपुही उत्पन्न कर्त्ता चराचरकेसर्ब। आपुही संहार कर्त्ता बासुदेवअखर्ब॥ है न तिनसों श्रेष्ठकोऊ तिहूंलोकनमाहिं। और रक्षक सुरनको तिन बिनाकोऊ नाहिं ॥ सुरनकाजै परमयाते धरतमानव रूप। सर्ब भूत सुकरत जाको नमस्कार अनूप॥ परमनायक सर्बभूतनके सुआनँदधाम। सकैनाहीं बर्णिकोऊ तासुगुण अभिराम ॥ भीतिसो है जौन पीड़ित हरततिनकी भीति। दीनपालनमाहि हैं रतरहत नित्यसनीति ॥ अहंकार न करत कबहूं क्षमावान महान। रहत तिनके शरणजेते होत हैं सुखवान॥ होहिं जे उत्पन्न मनु के बंश माहीं पर्म। सुरन के कल्याण को गोबिंद पर्म सशर्म॥ अंगह्वैहै पुत्र मनुकेपरम मेधावान। पुत्रअन्तर्द्धासुह्वै है अंगके बलवान॥ पुत्रताके होय गो बर हबिर्धामा स्वक्ष। हबिर्धामा के सुवन प्राचीन बरहिष दक्ष॥ होहिं गे प्राचीन बरहिषके सुप्रज्ञावान। प्रचेतादिकचारु दशसुत परमपरमा वान ॥ दक्ष तियके होयगो ह्वैहै प्रजापति तौन। पाय है सर्बत्र महिमा महत प्रज्ञाभौन॥ दक्षके दाक्षायणीह्वैहै सुपुत्री चारु॥ होयगो आदित्य ताके पुत्र उग्रसुदारु। होयगो आदित्य के मनु पुत्रबर अभिराम। पुत्रकाजैयज्ञ

करिहै तौन बिधि सो माम ॥ कहैगी सु बशिष्ठ सो तबइमि सु मनुकी नारि । करहु ऐसोकाज जातेसुताहोय सुढारि ॥ होयगी तिहि ते सुपुत्रीइला ताको नाम । देखि ताको कहैंगे मनु क्रोध करि इमिमाम ॥ सुनहु सुऋषि बशिष्ठ हम सुतकाजकीन्होंयज्ञ। भई पुत्री भयो ताते दुखदहमको प्रज्ञ ॥ बैनसुनिए सुमनुकेऋ-षिबर बशिष्ठ सुजान । तपस्यासों करैंगेसुत सुताको छबिमान॥ नामताको धरैंगे सुप्रद्युम्नसु ऋषि बशिष्ट। मुदित ताते होयगो मनु भये ते दुख नष्ट ॥ इलावर्त सुखण्ड माहीं तौन मृगयाका-ज । जायगो तहँ होय जैहै नारि सहित समाज ॥ कहैंगे वृत्ता-न्तयह सुबशिष्ठ को मनु फेरि । करैंगे तब प्रार्थना ऋषिशंभुजू कोटेरि ॥ शंभु ऐसे कहैंगे सुनि सुऋषि बरके बैन। धर्म धरबर सुनहुंऋषिबरपरमप्रज्ञाऐन। इलावर्तसुखण्डमाहींपुरुषआवत जौन । शापते मम होय नारी जात निश्चय तौन ॥ अन्यथासो होयगो नहिं सुनहुं ऋषि बुधि धाम । करतहौ तुम प्रार्थनायहि हेतु ते अभिराम ॥ एक महिना पुरुष ह्वैहै एकमहिना दार । करहुनिश्चय हियेमें तुम सुऋषि बुद्धि अगार ॥ शम्भुकेएबैन मनुको कहैंगे सुबशिष्ट । मुदित तिहि ते होयगो मनु भयेते दुख नष्ट ॥ शम्भुजूके बैन ते सुप्रद्युम्नआति अभिराम । एकमहिना पुरुषह्वैहै एक महिना बाम ॥ होयगो जबबामतब बुधप्राप्त ह्वै हैं आय । रमणतामें करैंगेलखि तासुरूपलुभाय ॥ होयगो सुपुरूरवा महिपाल तिहि ते पर्म । होयगो सुपुरूरवाके आयु पुत्र सधर्म ॥ नहुष ह्वै हैं आयु केसुत नहुषके सुययाति । होय गी बरतास कीरति लोक माहीं ख्याति ॥ होयगो सुययाति के यदु धर्म वान महान । होयगो यदुके सुक्रोष्टाके सुवृजिनीवा-न ॥ पुत्रवृजिनी वानके शुभ गोयगो सुउखंग । होहिंगे द्वै पुत्र ताके बलीसुभट उतंग ॥ चित्ररथ अरु सूर करिहैं भूरि कीरति पर्म । सूरके सुत होहिंगे बसुदेवस्वक्ष सधर्म ॥ होहिंगे बसुदेव

केसुत बासुदेव प्रचण्ड। जरासन्धहि जीति करिकै भरो गर्ब अखण्ड॥ महीपालनको रुके छुड़वायदैहैं सर्ब। जीति सकि हैं नाहिं कोऊ तिन्हें सबल अखर्ब॥ ब्राह्मणन को करैगो सो नित्यही सत्कार। महादाता होयगो वर वीर्य्यवानसुढार॥ शूरसेन सुदेशमें उत्पन्न ह्वैकै पर्म। द्वारिकामें आयबसिभू पालिहै सह धर्म॥ ताहि ह्वैकै प्राप्तपूजाकरोगेतुम तास। स्वच्छ चितसों सुतव पढ़िकै भरे भूरि हुलास॥ किये दर्शन हमारो औ बिधाता को जौन। होत है फल तासु दर्शन किये ह्वैहै तौन। बासुदेव सु कृपा जापै करैंगे अभिराम॥ कृपा तापै करैंगे सब देवता अति माम॥ शरणमें बसुदेव नन्दनके रहैगो जौन। कीर्ति जय अरु आयुको जन प्राप्त ह्वै है तौन॥ धर्मको उपदेश कारक होयगो अरुपर्म। धर्महीमें रहैगो रत छोड़ि सर्बकुकर्म॥ कोटि ऋषि उत्पन्न करिहैं बासुदेव समर्थ। वृद्धिकाजे धर्म की अरु प्रजाके हित अर्थ॥ गन्धमादन स्वच्छ पर्वत माहिं परम सुढार। रहैंगे ऋषि सर्ब ते बर सहित सनतकुमार॥ श्रेष्ठ ब्रत बसुदेव सुतको एक ह्वै है स्वक्ष। सुनहु तुमको कहत हौंमैंपरम तौन प्रतक्ष॥ पूजि हैं जन जौन ताको पूजि है सहप्रेम। कूजिहै जन जौन ताको पूजि है सह नेम॥ देखिहैजन जौनताको देखिहै सह प्रीति। लेखिहैं जन जौन ताको लेखिहै सहनीति॥ करैगो सम्मान जो सम्मान करिहै तास। प्रेमकरिहै जौनतापै प्रेमकरिहै आस॥ औ सुनो जो रहैगो जन तासुसेवामाहिं। कबहुं कौनहु लोकमें भय तौ सु लहिहै नाहिं॥ नमस्कारसुकरत हौं मैं नित्य नित्यहिताहि। सुनहु तातें तुमहु राखो तासध्यान सदाहि॥ होहिंगे बलदेवताके ज्येष्ठ भ्राता पर्म। चक्रलांगल धरैंगे ते दियोबन्धुसशर्म॥ दोहा॥ कह्यो महातम बर्णिहमबासुदेव को स्वक्ष। अतिपावन आनंद करि ऋषिवर तुम्हैं प्रतक्ष॥

इतिदानधर्मेबासुदेवमाहात्म्येएकोनविंशाधिकशततमोऽध्यायः ११९॥

सोरठा ॥ तदनन्तरऋषि सर्व नौमिगौरिसह शंकरहि । आनँद भरे अखर्ब तीर्थकरनको जातभे ॥ ये सुऋषिणके बैनमधुसूदन सुनिकै परम । बरआनँदके ऐन पूजत भये ऋषीणको ॥ तब ऋषि मतिबर सर्व कहत भये इमि कृष्णको । सदादयाल अखर्ब दर्शन हमको दीजिये ॥ दोहा ॥ जैसी हमको लालसा तव दर्शन की पर्म । स्वर्गहु की तैसीनहीं हमको नाथसशर्म ॥ सोरठा ॥ कह्यो महातम जौन शम्भु बर्णिकै आपुको । परमसत्य है तौन सुनहु कृष्ण आनन्दकर ॥ दोहा ॥ जो कछु तीनोंलोक में सो जानत हौ सर्ब । अबिदित तुमसों हैन कछु करुणासिंधु अखर्ब ॥ पुत्र तुम्हारे होयगो तुमहिं सदृश अभिराम । स्वच्छ कीर्त्तिकर दक्षबर परमप्रभाको धाम ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ इमि कहिकै ऋषि सर्व करिप्रणाम श्रीकृष्णको । आनँद भरे अखर्ब जातभये निजधामको ॥ दोहा ॥ जातभयेश्रीकृष्णहू द्वारावति को भूप । सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञबर बा सत्यअनूप ॥ पूर्ण भये दश मासबर पुत्र परम अभिराम । रुक्मिणिमाहीं होतभो शूर तेजको धाम ॥ तासनाम प्रद्युम्नबर धरत भये सहप्रेम । सब भूतनमें प्राप्त सो रहत सदाहिं सक्षेम ॥ शरण माहिं श्रीकृष्ण की तुम हौ रहत सदाहिं । याते तुम नृप धन्यहौ तुम सों कोऊ नाहिं ॥ कीरति लक्ष्मी धैर्य्य अरु स्वर्ग मार्ग अभिराम । जहां कृपा श्रीकृष्णकी तहां सर्बये आम ॥ पज्झटी ॥ तेतीस कोटिसुरबर बिशाल । कृष्णहिंतु जानि सुनु भूमिपाल ॥ आनन्द रूप हरि आदि देव । जानत न तास कोऊ सुभेव ॥ सब लोकनाथ आनन्द रूप । सर्बत्र तास महि है अनूप ॥ तिहिको सुनाम अघहरत उद्ध । आनन्द देत करि चित्त शुद्ध ॥ दोहा ॥ ताको कृष्णहि जय दई अरुबर कीर्ति ललाम । सुनहुं युधिष्ठिर धर्मधर परम मनीषा धाम ॥ जहां कृष्ण कीहै कृपा तहां सर्ब आनन्द । यामें संशय है नहीं सुनु धर्मज्ञ नरेन्द ॥ जयकरी ॥

तुम सुप्रतिज्ञा पालन माहिं। रहत निरत हौ भूप सदाहिं॥धा-
रेकोमल रहत सुभाव। करत न कबहुंक्रोधको छाव॥ दुर्योध-
नआदिक महिपाल।खाये तिन्हें युद्धमेंकाल ॥कालसमान और
बलवान।कोऊ हैनहिं भूपसुजान॥मेरे समरमाहिं हैंजौन।तिन
को शोककरुन बुधिभौन॥ शिव गौरीको जो सम्वाद। सुन्यो
पूर्वते छोड़ि प्रमाद॥ रह्योधरे ताको हिय माहिं। सुनहुं युधिष्ठिर
भूप सदाहिं॥ पढ़िहै अरु सुनिहै जनजौन। तिहि सम्वादहि
प्रज्ञाभौन॥ लहिहै तौन परमकल्यान। ह्वैहै नाहिं कबहुं दुख-
वान॥ ह्वै है सर्ब कामना सिद्धि॥ भरीरहैगी गृहमेंनिद्धि। भूमें
करिकै धर्म सचाय। लहिहैं मोद स्वर्ग में जाय॥ यहि में है
नहिं संशयभूप। बरधर्मज्ञ सुप्रज्ञ अनूप॥ गहिकै नीति देत
जे दण्ड। पालत प्रजा सप्रीति अखण्ड॥ ते नृपजात स्वर्गके
माहिं। निश्चय यामें संशयनाहिं॥ ताते पालहु प्रजा सधर्म।
गहिकै नीतिहि भूपतिपर्म॥ मयूरशालिनी॥ बासुदेव बाल भाव-
हीमें। ज्ञातिके सुरक्षणार्थजीमें॥ क्रोधकै महानकंसमार्‍यो।सर्ब
दुःख तातको निवार्‍यो॥ पर्म और कर्मकीन्ह जेते। है कहे न
जात सर्ब तेते॥ धन्य लोकमाहिं जीवते हैं। तास शर्ण में रहैं
सुजे हैं॥ दोहा॥ ऐसे हैं श्रीकृष्ण ते सखा तिहारे भूप। तिहिते
निश्चय पायहौ आनँद परमअनूप॥ बैशम्पायनउवाच॥धरणिमण्डन॥
सुनि सुबैन तातके महा। धर्मनन्दन कछूकहा॥ परमउद्धमो-
दकालहा। कृष्णकी सुप्रीतिको गहा॥ सोरठा॥ धृतराष्ट्रादिक
सर्ब अति बिस्मयको प्राप्त ह्वै। गहिकै प्रीति अखर्ब पूजि
पाणि जोरत भये॥ अरिल॥ तिमिहिं नारदादिक ऋषिमतिबर।
भीषमके सुनि बैन सुमुदकर॥ कृष्णहि पूजत भये सचावन।
पढ़िकै बहु बिधि सुतवसुहावन॥ दोहा॥ पुनि भीषमको कहत
भे कुन्तीसुतइमिबैन।कहौ महातम फेरितुम हरिकोबरबुधिऐन॥
इतिमहाभारतेदानधर्मेश्रीकृष्णमाहात्म्येविंशत्याधिकशततमोऽध्यायः१२०

बैशम्पायनउबाच ॥ जयैकरो ॥ भूपयुधिष्ठिर सुनिकै धर्म। अरुपावन सुनि सुस्तव पर्म ॥ फेरि पितामहको इमि बैन। कहतेभये मनीषा ऐन॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥ मुख्य देवता कौनहैं लोक माहिं अभिराम। अरु सुपरायण हैकहां कहौ मोहिं बुधिधाम॥ केहिको अर्चै औ पढ़ै किहिकी स्तुति सु अनूप। प्राप्तहोहिंकल्याणको मानवकहिये भूप ॥ सब धर्मन में परमतुम जानतहौ को धर्म। अरु सुजपे का जन्म सों रहित होहिं जन पर्म ॥ पाण्डवके ये बचन सुनि गंगासुत मतिमान। कहत भयेइमि बीरबर धरिकै हर्षमहान ॥ भीष्मउबाच ॥ रामगीती ॥ जगत केप्रभु देवदेव अनन्तबर भगवान। भक्तजनको कीर्ति वर्धन मोद मान महान ॥ सर्बलोकनके महेश्वरबिष्णु आनँदधाम। स्तुति सुतिनकी किये छूटत मनुजदुखसों माम॥ बिष्णुहीहैं सबके उत्पत्तिधाम नरेश। पूजिबे के ध्यायबे केयोग्य परम सुबेश ॥ पुरुष अव्यय चारु तिन की स्तुति सुकीबो जौन। सर्ब धर्मन माहिं हमकोअधिक धर्मसुतौन ॥ देवतनमेंपरम देवतबिष्णुही हैं जानु। पावनन में परम पावन औरमतिअनुमानु ॥ सर्बभूतनके पिताहैं नाशरहितअनूप। मंगलनमें परममंगल बिष्णुहीहैं भूप॥ बिष्णुही ते होतहैं उत्पन्न भूतक सर्ब। बिष्णुही में होत प्रापित प्रलयमाहिं अखर्ब ॥ सुनहुं नाम सहस्र तिन को पापभयको हर्ण। कहत हौं मैं तोहिं भूपति परम आनँद कर्ण॥ बिष्णुसहस्रनाम ॥ विश्वंविष्णुर्वषट्कारोभूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्माभूतभावनः ॥ पूतात्मापरमात्माच मुक्तानांपरमागतिः। अव्ययःपुरुषःसाक्षी क्षेत्रज्ञोक्षरएवच ॥ योगोयोगविदांनेताप्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहबपुःश्रीमान्केशवःपुरुषोत्तमः॥सर्वःशर्वःशिवःस्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः॥संभवोभावनोभर्ताप्रभवःप्रभुरीश्वरः ॥ स्वयम्भूःशंभुरादित्यःपुष्कराक्षोमहास्वनः। अनादिनिधिनोधाता विधाताधातुरुत्तमः ॥

अप्रमेयोहृषीकेशःपद्मनाभोऽमरप्रभुः।विश्वकर्म्मामनुस्त्वष्टास्थ विष्ठःस्थविरोध्रुवः॥अग्राह्यःशाश्वतःकृष्णोलोहिताक्षःप्रतर्दनः। प्रभूतस्त्रिककुद्धामपवित्रंमंगलंपरम्॥ईशानःप्राणदःप्राणोज्येष्ठः श्रेष्ठःप्रजापतिः।हिरण्यगर्भोभूगर्भोमाधवोमधुसूदनः ॥ ईश्वरो विक्रमीधन्वीमेधावीविक्रमःक्रमः। अनुत्तमोदुराधर्षःकृतज्ञःकृति रात्मवान् ॥सुरेशःशरणंशर्मविश्वरेताःप्रजाभवः।अहःसंवत्सरो व्यालःप्रत्ययःसर्वदर्शनः १०० अजःसर्वेश्वरःसिद्धःसिद्धिःस र्वादिरच्युतः । वृषाकपिरमेयात्मासर्वयोगविनिस्सृतः ॥ वसुर्व सुमनास्सत्यः समात्मासम्मितःसमः। अमोघःपुण्डरीकाक्षोवृष कर्मावृषाकृतिः॥रुद्रोबहुशिराबभ्रुर्विश्वयोनिःशुचिश्रवाः । अमृ तःशाश्वतःस्थाणुर्वरारोहोमहातपाः॥ सर्वगःसर्वविद्भानुर्विष्वक् सेनोजनार्द्दनः । वेदोवेदविदव्यङ्गोवेदाङ्गोवेदवित्कविः ॥ लो काध्यक्षःसुराध्यक्षोधर्माध्यक्षःकृताकृतः । चतुरात्माचतुर्व्यूहश्च तुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघोविजयोजेता विश्वयोनिःपुनर्वसुः ॥ उपेन्द्रोवामनःप्रांशु रमोघःशुचिरूर्जितः।अतीन्द्रःसंग्रहःसर्गोधृतात्मानियमोयमः॥ वेद्योवैद्यःसदायोगी वीरहामाधवोमधुः । अतीन्द्रियोमहामायो महोत्साहो महाबलः ॥ महाबुद्धिर्महावीर्योमहाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुःश्रीमानमेयात्मामहाद्रिधृक् ॥ महेष्वासोमहीभ र्त्ताश्रीनिवासःसतांगतिः। अनिरुद्धःसुरानन्दोगोविन्दोगोविदां पतिः ॥मरीचिर्दमनोहंसःसुपर्णोभुजगोत्तमः॥२००॥हिरण्यना भःसुतपाःपद्मनाभःप्रजापतिः । अमृत्युःसर्वदृक्सिंहःसंधाता सन्धिमान्स्थिरः॥अजोदुर्मर्षणशास्ताविश्रुतात्मासुरारिहागुरु र्गुरुतमोधामसत्यःसत्यपराक्रमः॥ निमिषोऽनिमिषस्स्रग्वीवाच स्पतिरुदारधीः। अग्रणीर्ग्रामणीःश्रीमान्न्यायोनेतासमीरणः॥ सहस्रमूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् । आवर्तनोनिवृत्ता त्मासंवृतःसंप्रमर्द्दनः ॥ अहःसंवर्त्तकोवह्निरनिलोधरणीधरः।

सुप्रसादःप्रसन्नात्माविश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ॥ सत्कर्त्तासत्कृतः
साधुजन्हुर्नारायणोनरः। असंख्येयोऽप्रमेयात्माविशिष्टःशिष्ट
कृच्छुचिः॥सिद्धार्थःसिद्धसंकल्पःसिद्धिदःसिद्धिसाधनः।वृषाही
वृषभोविष्णुर्वृषपर्वावृषोदरः ॥वर्धनोवर्धमानश्च विविक्तःश्रुति
सागरः। सुभुजोदुर्द्धरोवाग्मीमहेन्द्रोवसुदोवसुः ॥ नैकरूपोबृह
द्रूपः शिपिविष्टःप्रकाशनः । ओजस्तेजोद्युतिधरःप्रकाशात्मा
प्रतापनः ॥ ऋद्धःस्पष्टाक्षरोमंत्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः । अमृ
तांशूद्भवोभानुःशशबिंदुःसुरेश्वरः ॥औषधंजगतःसेतुःसत्यधर्म
पराक्रमः । भूतभव्यभवन्नाथःपवनःपावनोऽनलः ॥ कामहा
कामकृत्कान्तःकामःकामप्रदःप्रभुः । युगादिकृद्युगावर्तो नैक
मायोमहाशनः ॥ अदृश्योव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्।
इष्टोविशिष्टःशिष्टेष्टःशिखण्डीनहुषोवृषः ॥क्रोधहाक्रोधकृत्कर्ता
विश्वबाहुर्महीधरः।अच्युतःप्रथितःप्राणःप्राणदोवासवानुजः॥
अपांनिधिरधिष्ठान मप्रमत्तःप्रतिष्ठितः ॥३००॥ स्कन्दःस्कन्द
धरोधुर्य्योवरदोवायुवाहनः।वासुदेवोबृहद्भानु रादिदेवःपुरन्दरः॥
अशोकस्तारणस्तारःशूरशौरिर्जनेश्वरः।अनुकूलःशतावर्त्तःपद्मी
पद्मनिभेक्षणः ॥ पद्मनाभोरविन्दाक्षः पद्मगर्भःशरीरभृत् । मह
र्द्धिरृद्धोवृद्धात्मामहाक्षोगरुडध्वजः॥ अतुलःशरभोभीमःसमय
ज्ञोहविर्हरिः । सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिंजयः ॥
विक्षरोरोहितोमार्गो हेतुर्दामोदरःसहः । महीधरोमहाभागो
वेगवानमिताशनः ॥ उद्भवःक्षोभणोदेवः श्रीगर्भःपरमेश्वरः।
करणङ्कारणङ्कर्त्ताविकर्त्तागहनोगुहः ॥ व्यवसायोव्यवस्थानः
संस्थानःस्थानदोध्रुवः। परर्द्धिःपरमस्स्पष्टस्तुष्टःपुष्टःशुभेक्षणः॥
रामोविरामोविरजोमार्गोनेयोनयोनयः। वीरःशक्तिमतांश्रेष्ठो ध
र्मोधर्मविदुत्तमः ॥ वैकुण्ठःपुरुषःप्राणः प्राणदः प्रणवःपृथुः।
हिरण्यगर्भःशत्रुघ्नोव्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ऋतुःसुदर्शनःका
लःपरमेष्ठीपरिग्रहः। उग्रःसंवत्सरोदक्षोविश्रामोविश्वदक्षिणः॥

४०० ॥ विस्तारःस्थावरःस्थाणुः प्रमाणंबीजमव्ययम्। अर्थो
नर्थोमहाकोशोमहाभोगोमहाधनः ॥ अनिर्विण्णःस्थविष्ठोभूर्द्धर्म
यूपोमहामखः। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमःक्षामःसमीहनः ॥ यज्ञ
इज्योमहेज्यश्च क्रतुःसत्रंसतांगतिः। सर्वदर्शीविमुक्तात्मासर्व
ज्ञोज्ञानमुत्तमम् ॥ सुव्रतःसुमुखःसूक्ष्मःसुघोषःसुखदःसुहृत्। म
नोहरोजितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ स्वापनःस्ववशोव्यापीनै
कात्मानैककर्मकृत्। वत्सरोवत्सलोवत्सी रत्नगर्भोधनेश्वरः ॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मीसदसत्क्षरमक्षरम्।अविज्ञातासहस्रांशुर्विधा
ताकृतलक्षणः॥ गभस्तिनेमिःसत्वस्थः सिंहोभूतमहेश्वरः। आ
दिदेवोमहादेवोदेवेशोदेवभृद्गुरुः ॥ उत्तरोगोपतिर्गोप्ता ज्ञानग-
म्यःपुरातनः। शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रोभूरिदक्षिणः ॥ सोम
पोऽमृतपःसोमः पुरुजित्पुरुषोत्तमः। विनयोजयःसत्यसन्धोदा
शार्हःसात्वतांपतिः॥ ५०० ॥ जीवोविनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमि
तविक्रमः। अंभोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ अ
जोमहार्हःस्वाभाव्यो जितामित्रःप्रमोदनः। आनन्दोनन्दनोन
न्दः सत्यधर्मात्रिविक्रमः॥ महर्षिःकपिलाचार्य्यः कृतज्ञोमेदिनी
पतिः।त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गःकृतान्तकृत् ॥ महावराहो
गोविन्दः सुषेणःकनकांगदी। गुह्योगभीरोगहनो गुप्तश्चक्रग
दाधरः॥ वेधाःस्वांगोजितःकृष्णोदृढःसङ्कर्षणोऽच्युतः। वरुणो
वारुणोवृक्षः पुष्कराक्षोमहामनाः ॥ भगवान्भगहानन्दी वन
मालीहलायुधः। आदित्योज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्त
मः॥ सुधन्वाखण्डपरशुर्दारुणोद्रविणप्रदः। दिवस्पृक्सर्वदृग्
व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥ त्रिसामासामगःसाम निर्वाणंभे
षजंभिषक्। संन्यासकृच्छमःशान्तो निष्ठाशांतिःपरायणः॥ शु
भांगःशांतिदःस्रष्टा कुमुदःकुवलेशयः। गोहितोगोपतिर्गोप्ता
वृषभाक्षोवृषप्रियः॥ अनिवर्त्तीनिवृत्तात्मासंक्षेप्ताक्षेमकृच्छिवः॥
६०० ॥ श्रीवत्सवक्षाःश्रीवासः श्रीपतिःश्रीमतांवरः॥ श्रीदः

श्रीशःश्रीनिवासः श्रीनिधिःश्रीविभावनः । श्रीधरःश्रीकरःश्रेयः
श्रीमांल्लोकत्रयाश्रयः ॥ स्वक्षःस्वंगःशतानन्दोनन्दिर्ज्योतिर्गणे
श्वरः । विजितात्माविधेयात्मासत्कीर्त्तिश्छिन्नसंशयः ॥ उदीर्णः
सर्वतश्चक्षुरनीशःशाश्वतःस्थिरः । भूशयोभूषणोभूतिर्विशोकः
शोकनाशनः ॥ अर्चिष्मानर्च्चितःकुम्भो विशुद्धात्माविशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ कालनेमिनिहावीरः
शौरिःशूरजनेश्वरः । त्रिलोकात्मात्रिलोकेशःकेशवःकेशिहाह
रिः॥कामदेवःकामपालःकामीकान्तःकृतागमः। अनिर्देश्यवपुर्वि
ष्णुर्वीरोनन्तोधनंजयः॥ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्माब्रह्मब्रह्मविवर्द्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणोब्रह्मीब्रह्मज्ञोब्राह्मणप्रियः ॥ महाक्रमोमहाकर्मा
महातेजामहोरगः । महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञोमहाहविः ॥
स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोत्रंस्तुतिःस्तोतारणप्रियः । पूर्णःपूरयिता
पुण्यः पुण्यकीर्त्तिरनामयः ॥ मनोजवस्तीर्थकरोवसुरेतावसुप्रि
यः। वसुप्रदोवासुदेवोवसुर्वसुमनाहविः॥७००॥सद्गतिःसत्कृतिः
सत्तासद्भूतिःसत्परायणः।शूरसेनोयदुश्रेष्ठःसन्निवासःसुयामुनः॥
भूतावासोवासुदेवः सर्वासुनिलयोनलः । दर्पहादर्पदोदृप्तोदुर्द्ध
रोत्थापराजितः ॥ विश्वमूर्त्तिर्महामूर्त्तिर्दीप्तमूर्त्तिरमूर्त्तिमान् । अ
नेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिःशताननः ॥ एकोऽनेकःसवःकःकिं य
त्तत्पदमनुत्तमम् । लोकबन्धुर्लोकनाथोमाधवोभक्तवत्सलः॥ सु
वर्णवर्णोहेमांगोवरांगश्चंदनांगदी। वीरहाविषमःशून्योघृताशी
रचलश्चलः ॥ अमानीमानदोमान्यो लोकस्वामीत्रिलोकधृक्।
सुमेधामेधजोधन्यः सत्यमेधाधराधरः ॥ तेजोवृषोद्युतिधरःसर्व
शस्त्रभृतांवरः। प्रग्रहोनिग्रहोव्यग्रो नैकशृङ्गोगदाग्रजः ॥ चतु
र्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः । चतुरात्माचतुर्भावश्चतु
र्वेदविदेकपात् ॥ समावर्तोनिवृत्तात्मादुर्जयोदुरतिक्रमः। दुर्लभो
दुर्गमोदुर्गो दुरावासोदुरारिहा ॥ शुभांगोलोकसारंगः सुतन्तु
स्तन्तुवर्धनः॥ इन्द्रकर्म्मामहाकर्म्माकृतकर्माकृतागमः॥ उद्भवः

सुन्दरः ॥ ८०० ॥ सुन्दोरत्ननाभःसुलोचनः । अर्कोवाजसनः
शृंगीजयन्तःसर्वविज्जयी ॥ सुवर्णविन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरे
श्वरः । महाह्रदोमहागर्तो महाभूतोमहानिधिः ॥ कुमुदःकुन्दरः
कुन्दः पर्जन्यःपावनोऽनिलः । अमृतांशोऽमृतवपुःसर्वज्ञःसर्वतो
मुखः ॥ सुलभःसुव्रतःसिद्धःशत्रुजिच्छत्रुतापनः । न्यग्रोधोदु
म्बरोश्वत्थश्चाणूरांध्रनिषूदनः ॥ सहस्रार्चिःसप्तजिह्वःसप्तैधाः
सप्तवाहनः । अमूर्तिरनघोचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ अणुर्बृ
हत्कृशःस्थूलोगुणभृन्निर्गुणोमहान् । अधृतःस्वधृतःस्वास्यः
प्राग्वंशोवंशवर्द्धनः ॥ भारभृत्कथितोयोगीयोगीशःसर्वकामदः ।
आश्रमःश्रमणःक्षामःसुपर्णोवायुवाहनः ॥ धनुर्धरोधनुर्वेदो द
ण्डोदमयितादमः । अपराजितःसर्वसहोनियन्तानियमोयमः॥
सत्ववान्सात्विकःसत्यः सत्यधर्मपरायणः । अभिप्रायःप्रिया
र्होर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्द्धनः ॥ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभु
ग्विभुः । रविर्विरोचनःसूर्य्यः सवितारविलोचनः ॥ अनन्तोहु
तभुग्भोक्तासुखदोनैकदोग्रजः । अनिर्विणःसदामर्षीलोकाधिष्ठा
नमद्भुतः ॥९००॥ सनात्सनातनतमः कपिलःकपिरव्ययः । स्व
स्तिदःस्वस्तिकृत्स्वस्तिस्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥ अरौद्रः
कुण्डलीचक्री विक्रम्यूर्जितशासनः । शब्दातिगःसर्वसहःशिशि
रःसर्वरीकरः ॥ अक्रूरःपेशलोदक्षोदक्षिणःक्षमिणाम्बरः । विद्वत्त
मोवीतभयःपुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ उत्तारणोदुष्कृतिहा पुण्योदुः
स्वप्ननाशनः । वीरहारक्षणःशंतो जीवनःपर्यवस्थितः ॥ अन
न्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः । चतुरस्रोगभीरात्माविदि
शोव्यादिशोदिशः ॥ अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः सुवीरोरुचिरांगदः ।
जननोजनजन्मादि र्भीमोभीमपराक्रमः ॥ आधारनिलयोधाता
पुष्पहासःप्रजागरः । ऊर्ध्वगःसत्पथाचारःप्राणदःप्रणवःप्रणः॥
प्रमाणंप्राणनिलयःप्राणभृत्प्राणजीवनः । तत्त्वंतत्त्वविदेकात्मा
जन्ममृत्युजरातिगः ॥ भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारःसपिताप्रपितामहः ।

यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगोयज्ञवाहनः॥ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञीयज्ञभुग्यज्ञसाधनः। यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नादएवच॥ आत्मयोनिःस्वयंजातो वैखानःसामगायनः। देवकीनन्दनःस्रष्टाक्षितीशःपापनाशनः॥ शंखभृन्नन्दकीचक्रीशार्ङ्गधन्वागदाधरः। रथांगपाणिरक्षोभ्यःसर्वप्रहरणायुधः॥ १०००॥ इतिश्रीविष्णुसहस्रनामसम्पूर्णम्॥

दोहा॥ यह जोनाम सहस्रहै केशवको अभिराम। तिहिको पढ़िहैं जौनअरु सुनिहैं जोबुधिधाम॥ दुहूंलोकमें अशुभको कैहैं प्राप्तनतौन। यामेंसंशयहै नहीं सुनहुंतात बुधिभौन॥ पढ़िहैं सुनिहैं याहिजो ब्राह्मण परम अनूप। वेदवानतौ होयगो निश्चय जानहुंभूप॥ क्षत्रीलहिहैं बिजयको बैश्यद्रव्यअतिमाम। शूद्रहोत आनंदको प्राप्त सुनहुं बुधिधाम॥ चाहत जे जनधर्मको धर्म लहतते चारु। अर्थचहत ते अर्थको पावत बुद्धि अगारु॥ अरुकामीजन कामको प्राप्तहोतहैं भूप। संतति चाहत मनुज जे सन्ततिलहत अनूप॥ मधुभार॥ हरिमाहिं लाय। प्रीतिहि सचाय॥ निति पढ़तजौन। बर बुद्धिभौन॥ यश लहतस्वक्ष। अतिहोतदक्ष॥ अचलाअनूप। श्रियलहतभूप॥ भयहोतनाहिं। कबहौंहुपाहिं॥ बाढ़त सुवीर्य। अतिलहत धीर्य॥ कबहूं न होत। रुजको उदोत॥ बलऔ स्वरूप। पावत अनूप॥ द्युतिमान पर्म। होतसुसधर्म॥ अरुज्ञातिमाहँ। सुनु भूमिनाहँ॥ होतसुप्रधान। बर सुमतिवान॥ सोरठा॥ बँधोहोय जन जौन सो बन्धन ते छुटतहै। सुनहुंतात बुधिभौन रोगी छूटत रोगसों॥ छूटतहैं भयवान भयसों निश्चय भूपबर। मनुज आपदावान आपद सों सो छुटत हैं॥ दोहा॥ बासुदेव के भक्त ते अशुभ लहतकबहूं न। पावतहैं परमा महत आनँद दिन दिन दून॥ जन्मजरा अरुमृत्युको तिमिहिं ब्याधिको पर्म। भयनाहिं ब्यापत होत है सुनु बरभूप सधर्म॥ इतिश्री विष्णु-

सहस्रनाम माहात्म्यम् ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सुनहु पितामहप्राज्ञ बर सर्व शास्त्र बिद्पर्म्म। कौनजपे जपधर्मफल जन नित लहत अभर्म्म ॥ चरणाद्रोहा ॥ देवकर्म्म अरु पितर कर्ममें अरु प्रवेश में तात। औ तिमिही प्रस्थानमें कहाजपै अवदात ॥ हंसादोहा ॥ अरु अरिनाशन कौनजप अरु भय नाशनकौन। कहौ मोहिं अवगाहिकै सुनहु तात बुधिभौन ॥ कह्यो ब्यासको मंत्रहै तोहिं कहतहौं तौन। थिरि करिकै मन सुनहुतुम भूप मनीषा भौन ॥ मनुजसुने जिहि मंत्रको रहित पापसों होत। महतआयु को लहत अरुमुद्को लहत उदोत ॥ अथसाविची ॥ नमोवशिष्ठाय महाव्रतायपराशरंवेदनिधिंप्रणम्य। नमोस्त्वनन्तायमहोरगाय नमोस्तुसिद्धेभ्यइहापृशयेभ्यः ॥ नमोस्त्वृषिभ्यःपरमंपरेषां देवेषुदेवावरदंवराणाम्। सहस्रशीर्षायनमःशिवाय सहस्रनामाय जनार्दनाय ॥ अजैकपादहिर्बुध्नः पिनाकीचापराजितः। क्रतुश्चपितृरूपश्च त्र्यम्बकश्चसुरेश्वरः ॥ वृषाकपिश्चशम्भुश्च शवनाथेश्वरस्तथा। एकादशैतेप्रथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ शतमेतत्समाम्नातं शतरुद्रेमहात्मनाम्। अंशोभगश्चमित्रश्च वरुणश्चजलेश्वरः ॥ तथाधातार्य्यमाचैव जयन्तोभास्करस्तथा। त्वष्टापूषातथैवेन्द्रोद्वादशोविष्णुरुच्यते ॥ इत्येतेद्वादशादित्याः काश्यपेयाइतिश्रभो। धरोध्रुवश्चसोमश्च सावित्रोऽथ त्रिलोचनः ॥ प्रत्यूषश्चप्रभासश्च वसवोऽष्टौप्रकीर्तिताः। नासत्यश्चापिदस्रश्च स्मृतौद्वावश्विनावपि ॥ मार्तण्डस्यात्मजावेतौसंज्ञानाशाबिनिर्गतौ। अतःपरंप्रवक्ष्यामिलोकानांकर्मसाक्षिणः ॥ अपियज्ञस्यवेत्तारो दत्तस्यसुकृतस्यच। अदृश्याः सर्वभूतेषु पश्यन्तित्रिदशेश्वराः ॥ शुभाऽशुभानिकर्माणि मृत्युः कालश्चसर्वशः। विश्वेदेवाःपितृगणाः मूर्त्तिमन्तस्तपोधनाः ॥ मुनयश्चैवासिद्धाश्च तपोमोक्षपरायणाः। शुचिस्मिताः कीर्तयतां प्रयच्छन्तिशुभंनृणाम् ॥ प्रजापतिकृतानेतांल्लोका

न्दिव्येनतेजसा । वसन्तिसर्वलोकेषु प्रयताःकर्मकर्मसु ॥ प्राणा
नामीश्वरानेतान्कीर्त्तयन्प्रयतोनरः । धर्मार्थकामैर्विपुलैर्युज्यते
सहिनित्यशः ॥ लोकांश्चलभतेपुण्यान्विश्वेश्वरकृताञ्छुभा
न् । येतेदेवास्त्रयस्त्रिंशतूसर्वभूतगणेश्वराः ॥ नदीश्वरो महाका
यो ग्रामणीर्वृषभध्वजः । ईश्वराःसर्वलोकानां गणेश्वर विनाय
काः ॥ सौम्यारौद्रागणाश्चैव योगभूतगणास्तथा । ज्योतिश्च
सरितोव्योम सुपर्णःपन्नगेश्वरः॥ पृथिव्यान्तपसासिद्धाःस्थाव
राश्चचराश्चह । हिमवानादयःसर्वेचत्वारश्चमहार्णवाः ॥ भ
वस्यानुचराश्चैव हरतुल्यपराक्रमाः । विष्णुर्देवोथजिष्णुश्च
स्कन्दश्चाम्बिकयासह ॥ कीर्त्तयन्प्रयतःसर्वान्सर्वपापैःप्रमुच्य
ते। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि मानवानृषिसत्तमान् ॥ यवक्रीतश्च
रैभ्यश्चअर्वावसुपरावसु । औषिजश्चैवकक्षीवान्बलश्चांगिर
सःसुतः ॥ ऋषेर्मेधातिथेःपुत्रःकण्वोबर्हिषदस्तथा । ब्रह्मतेजोम
याःसर्वेकीर्तितालोकभावनाः ॥ लभन्तेहिशुभंसर्वं रुद्रानेकवसु
प्रभाः । भुविकृत्वाशुभंकर्ममोदन्तेदिविदैवतैः॥ महेन्द्रोगुरवःसप्त
प्राचींवैदिशमाश्रिताः।प्रयतःकीर्तयन्नेतान्शक्रलोकेमहीयते ॥
उन्मुचुःप्रमुचुश्चैव स्वस्त्यात्रेयश्चवीर्यवान् । दृढव्यश्चोर्ध्वबा
हुश्च तृणःसोमांगिरास्तथा ॥ मित्रावरुणयोःपुत्रस्तथागस्त्यः
प्रतापवान् । धर्मराजर्त्विजःसत्यादक्षिणांदिशमाश्रिताः ॥ दृढ़
युश्चक्रतेयुश्च परिव्याधश्चकीर्तिमान् । एकतश्चद्वितश्चैव
त्रितश्चादित्यसन्निभाः ॥अत्रेःपुत्रश्चधर्मात्मा ऋषिःसारस्वत
स्तथा । वरुणस्यर्त्विजःसप्त पश्चिमांदिशमाश्रिताः ॥ अत्रि
र्वशिष्ठोभगवान् कश्यपश्चमहानृषिः । गौतमःसभरद्वाजोवि-
श्वामित्रोऽथकौशिकः ॥ ऋचीकतनयश्चोग्रो जमदग्निःप्रताप
वान् ॥ धनेश्वरस्यगुरवःसप्तैतेउत्तराश्रिताः। अपरेमुनयस्स
प्तदिक्षुसर्वास्वधिष्ठिताः॥ कीर्त्तिस्वस्तिकरानृणांकीर्तितालोक
भावनाः । धर्मःकालश्चकामश्चवसुर्वासुकिरेवच ॥ अनन्तः

कपिलश्चैवसप्तैतेधरणीधराः। रामोव्यासस्तथाद्रौणिरश्वत्थामाचलोमशः॥ इत्येतेमुनयोदिव्याः एकैकाःसप्तसप्तधा। शान्तिस्वस्तिकरालोकेदिशांपालाःप्रकीर्तिताः॥ यस्यांयस्यांदिशिह्येते तन्मुखःशरणंब्रजेत्। स्रष्टारःसर्वभूतानां कीर्तितालोकपावनाः॥ सम्वर्तोमेरुसावर्णो मार्कण्डेयश्चधार्मिकः। सांख्ययोगौनारदश्चपर्वतश्चमहानृषिः॥ अत्यन्ततपसोदान्ता त्रिषुलोकेषुबिश्रुताः। अपरेरुद्रसंकाशाः कीर्तिताब्रह्मलौकिकाः॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंदरिद्रोलभतेधनम्। तथाधर्मार्थकामेषु सिद्धञ्चलभतेनरः॥ पृथुंवैन्यंनृपवरं पृथ्वीयस्याभवत्सुता। प्रजापतिःसार्वभौमंकीर्तयेद्वसुधाधिपम्॥ आदित्यबंशप्रभवं महेंद्रसमविक्रमं। पुरूरवसमैलंचत्रिषुलोकेषुविश्रुतं॥ बुधस्यदयितंपुत्रंकीर्तयेद्वसुधाधिपं। त्रिलोकविश्रुतंवीरंभरतंचप्रकीर्तयेत्॥ गवामयेनयज्ञेन येननेष्टंकृतेयुगे। रंतिदेवंमहादेवं कीर्तयेत्परमद्युतिं॥ बिश्वजित्तपसोपेतं लक्षण्यंलोकपूजितं। तथाश्वेतंचराजर्षिं कीर्तयेत्परमद्युतिं॥ सगरस्यात्मजायेन प्लावितास्तारितास्तथा। हुताशनसमानेतान् महारूपान्महौजसः॥ उग्रकोपान्महासत्वान् कीर्तयेत्कीर्त्तिबर्द्धनान्। देवानृषिगणांश्चैव नृपांश्चजगतीश्वरान्॥ सांख्ययोगञ्चपरमंहव्यंकव्यंतथैवच। कीर्तितंपरमंब्रह्म सर्वश्रुतिपरायणं॥ मंगल्यंसर्वभूतानांपवित्रंबहुकीर्तितम्। ब्याधिप्रशमनंश्रेष्ठं पौष्टिकंसर्वकर्मणाम्॥ प्रयतःकीर्तयेच्चैतान् कल्यंसायंचभारत। येतेवैयांतिवर्षंति भांतिवांतिसृजन्तिच॥ एतेविनायकाःश्रेष्ठाः दक्षाक्षान्ताजितेन्द्रियाः। नराणामशुभंसर्वं ब्यपोहन्तिप्रकीर्तिताः॥ साक्षिभूतामहात्मानः पापस्यसुकृतस्यच। एतान्वैकल्यमुत्थाय कीर्त्तयन्शुभमश्नुते॥ दोहा॥ सावित्री यहमंत्रहै कह्यो तुम्हैं हम जौन। याहि जपे सों प्राप्तसुख होत सुनहु बुधिभौन॥ देवकार्य में जो पढ़ै यहि मंत्रहि अभिराम। देवहोहिं परसन्न तौ अतिहि

सुनहु बुधिभौन ॥ पितरकार्यमें जो पढ़ै पावन ह्वैकैपर्म । पितर होहिंपरसन्न तौ अतिहीतातसधर्म ॥ काश्यपगौतम अंगिरस भृगुअरु भारद्वाज । शुक्रवृहस्पतिअत्रिअरु ऋषिअगस्त्यनर-राज॥अरुबशिष्ठजमदग्निअरुइनआदिकऋषिऔर । तिमिही वसुअरु अमरपति सुनहुमनुजशिरमौर ॥ साबित्री मंत्रहिपढ़ैह्वै बलवानमहान । जीतेसबदानवनकोभूपतिसुनहुसुजान ॥ सुबर-णसों मढ़वाइकै तिनकेशृंगअनूप । गोशतदीन्हेंते सुफल जैसो होत सुभूप ॥ साबित्री मंत्रहि पढ़ै तैसोई फलपर्म । प्राप्तहोतहै मनुजको निश्चय जानुसधर्म ॥ मनुजजपै जो पातकी तौ पातक नशिजाय । अरु जो जन रोगीजपै तौ सब रोग बिलाय ॥ पढ़े क्षेत्रमें होतहै अन्न बहुत अभिराम । पढ़े गेहमें होतहै मंगल महत ललाम ॥ नारी आदिक मनुज नितरहत निरोगितसर्व । अग्नि चोर भय होत नहिं सम्पति बढ़त अखर्व ॥ याहि पढ़े प्रस्थानमें अरु प्रवेशमें पर्म । राज्य सभाके माहिं अरु मिलति सुसिद्धि सधर्म ॥ हरिगीती ॥ रणमाहिं क्षत्रिय जोपढ़ै तौलहैरणमें जीतिको । सब जाहिं बैरी भागि रणते भूरि लहिकै भीतिको॥ जब जाय कौनहु काजको करि चित्त थिरतब जो पढ़ै । करिसि-द्धि काजहि आय गृहमें भूरि आनँदसों मढ़ै ॥ भयचोर अरु व्याघ्रादिको कहुं होय मारगमें नहीं । निति होत बहुसन्मान बर अपमानता न लहै कहीं ॥ अरु बायुजल अहि वृन्दको भय प्राप्त कबहूं होतना । निति रहै सम्पति छाय गृहमें होतदरिद उदोत ना ॥ जहँजाय साविन्री पढ़ी तहँ बाल मृत्युहि ना लहैं। सब होतहै सो सिद्धिहै मनमाहिं मानव जोचहैं ॥ सुनु भूप यह जप गुप्त है बर सुऋषि गण बुधिधामको । सब अशुभ कोहै नाशकारक हेतु आनँद मामको ॥ गहिनेम याको जपत हैं जन जौन बर बुधिभौन हैं। जन करत हैं आनंद सों ते परम गतिको गौन हैं ॥ दोहा ॥ साविन्री बर मंत्र हम तुम्हें कह्यो

महिपाल। अब आगेका भूप तुम करिहौ प्रश्न विशाल ॥
इतिशांतिपर्वणिदानधर्मेसावित्रीमाहात्म्येएकविंशाधिकशततमोऽध्यायः ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ परमपूज्य है जौन कहौ तौन अब मोहिं तुम। सुनहु तात बुधिभौन बक्काधर्म महानके ॥ तोटक ॥ सुनि भीषम बैन सुभूपति के। धर्मज्ञ सुप्रज्ञ महा अति के ॥ यहिभांति भये कहते सुख सों। लखि पाण्डव को रति की रुखसों ॥ तोमर ॥ बर बिप्रजे बुधिधाम। श्रुतिमान स्वच्छ ललाम ॥ अति पूज्य हैं नृप तौन। बर धर्म कर मतिभौन ॥ आभीर ॥ भीषम के ये बैन। सुनिकै भूप सचैन ॥ कहत भयो इमि बात। भीषमको अवदात ॥ अरिल ॥ ब्राह्मणकी पूजामेंशुचि फल। कहा अधिक देख्यो तुम बर बल ॥ करत प्रशंसा हौ पुनि पुनि अति। तिहि ते पूछतहौं मैं बरमति ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ कहत एक इतिहासहौं इहि प्रसंगमें भूप। कार्तवीर्य अरु बायुको है सम्बाद अनूप ॥ सोरठा ॥ होतभयो महिपाल पुरी सुमाहिषमतीमें। सहित सुनीति बिशाल पृथ्वी को पालत भयो ॥ देतभयो सोभूरि धनबर दत्तात्रेयको। महत मोद सों पूरिकरि बहु बिधि बिनती परम ॥ दोहा ॥ दत्तात्रेय प्रसन्न ह्वै ताहि कह्यो इमिबैन। मांगहु हमसों तीनबर देहौं तुम्हैं सचैन ॥ रामगीती ॥ बैनदत्तात्रेय के सुनि कार्तबीरय भूप। मांगतो बर भयो ये त्रय मुदित होय अनूप ॥ चमूमाहीं होहिं मेरे सहसबाहु प्रचण्ड। जीति औमें लेहुँ बल सों सर्व भूमि अखण्ड ॥ सदापालौं भूमिको मैं प्राप्त होय सधर्म। देहु ये बर तीन हमको कृपा करि तुमपर्म ॥ देहिं शिक्षा सन्तमोको करौं जब अभिराम। देहु यह बरदानचौथो मोहिं हे मतिमान ॥ कह्यो दत्तात्रेय ऐसे भूपके सुनिबैन। यहो हम बरदान तुमको दियो हे बुधिऐन ॥ ता अनन्तर भानु समरथ बैठि ताके माहिं। देखि अपनो तेज काहुहि भयो गनतो नाहिं ॥ भयो कहतो बैन ऐसे भूरि करि अभिमान। हैनकोऊ

आजु मोसों और बीर जवान ॥ दोहा ॥ अर्जुन के बाक्यान्त में नभबाणी इमि बैन । धरि निशाचरी रूपको कहति भईबुधि ऐन ॥ जयकरी ॥ कहा कहत है तू अभिमान । कार्तबीर्य सुनु हे अज्ञान ॥ बिप्र श्रेष्ठ क्षत्रिय ते तौन । तू जानत नाहिं दुर्मतिभौ-न ॥ अर्जुनउबाच ॥ सोरठा ॥ आश्रित बिप्र सदाहिं क्षत्रिय ह्वैकै रहतहैं । क्षत्रिय आश्रितनाहिं बिप्रनके कबहूंरहत ॥ चरणाकुलक ॥ अरु क्षत्रियहि प्रजाको पालै । राज्यनीतिको गहै बिशालै ॥ अरु क्षत्रियहीसुपथ चलावै । धरिकै धर्महि कुपथ मिटावै ॥ दोहा ॥ धर्म चलायो चलत है क्षत्रियहीसों पर्म । क्षत्रियते किहि भांति हैं ब्राह्मण श्रेष्ठ सधर्म ॥ रोला ॥ सदाराखिहौं अपने बशमें बिप्र-नको मैं । ब्राह्मणते क्षत्रियको अबते बर करिहौं मैं ॥ युद्धमाहिं नहिं कोऊ मेरे सोहैं आवत । ऐसे हौं मैं बीर परमभो यशजग गावत ॥ दोहा ॥ नर अरु सुरमोहिं राज्यते टारि सकतकोऊन । याते हम हैं श्रेष्ठ अति ब्राह्मण हम ते ऊन ॥ सोरठा ॥ अर्जुनके सुनि बैन कांपति भई निशाचरी । सुनहु तात बुधि ऐन बर धर्मज्ञ सु कीर्तिकर ॥ तदनन्तर इमि बायु गुप्तभयो सो कहत भो । सुनु अर्जुन नरराय कलुष भाव यह छोड़ि दे ॥ अरिल ॥ नमस्कार बिप्रनको तू करु । क्रूरभावको हियमें मति धरु ॥ बिप्रनको करिहै अपमानहि । ह्वैहैतौ तब बिघ्नमहानहि ॥ दोहा ॥ अथवा तेरो मान हरि करिहैं राज्यहि भंग । बिप्रकोप करि तू न करु यहि ते गर्व उतंग ॥ मारुत के सुनि बैन ये अर्जुन ब-ली नृपाल । कहत भयो इमि कौन तू है हे मूढ़ बिशाल ॥ मंजु-गीती ॥ सुनि बैन ये महिपाल के । अति गर्ववान बिशाल के ॥ यहि भांते बायु कह्यो बली । हम बायु बात कहीभली ॥ अर्जुन उवाच ॥ दोहा ॥ करत प्रशंसा बिप्रकी यहि ते पूंछततोहिं । बिप्रन को कीन्हो कहा होत सिद्धि कहु मोहिं ॥ आभीर ॥ अर्जुनके ये बैन । सुनि मारुत बुधि ऐन ॥ कहत भयो इमि बात । अर्जुन

को बिख्यात ॥ बायुरुवाच ॥ तोमर ॥ गुणाविप्रगणके पर्म । हम कहत तोहिं अभर्म ॥ सुनु तौन चित्तलगाय । नृपतू प्रमाद विहाय ॥ हरिगोती ॥ सुनु पूर्बऋषिबर अंगिरस जलतेज सों सब पीगये । नहिंरह्यो बाकी तनक भूमें तृप्तवहूं ना भये ॥ पुनिद‍ई भरि सब भूमिका को भूमिनीर प्रबाह सो । तिहिते नदी पुनि बहन लागी भरीसलिल अथाह सो ॥ सुररायको ऋषि शाप गौतम दियो क्रोध अछेहमें । तिहि ते भये सुररायके भग सहस सिगरी देहमें ॥ जलमिष्ट सों हो भरो सागर पूर्ब रत्ननसों रयो । सोशाप लहिकै ब्राह्मणनको परम लवणोदकभयो ॥ अरु और उग्र सुकर्म बिप्रन किये जे अवदात हैं। सुनु भूमि पालन कर्म मोसों कहेते सबजात हैं ॥ सम तू नहीं है ब्राह्मणनके करत का अभिमानको । करु नित्यपूजा बिप्रगणकीधारि प्रीति महानको ॥ बरबिप्रऔरो नाशकीन्हों तालजंघ नृपाल को । अरु कियो बिप्रहि दण्डकनते नाशराज्य बिशालको ॥ लखुतोहिं प्रापति राज्य भो अरु तेज बरबल माम है । वरबिप्र दत्तात्रेयजूकी कृपाते अभिराम है ॥ तिहि ते न तू सम विप्रके नहिं करत का अभिमानको । नहिं कछू दुर्लभ कार्य्यहै बरबिप्र वृन्द सुजानको ॥ हैबिप्रकर्ता लोकके क्यों जानिहोत अजानतू। दुहुँलोकमाहीं ब्राह्मणनको जानुउग्रमहानतू ॥ गुणचारु कश्यप बिप्रको मैंकहतहों सो सुनहुजू । सुनुताहि हेनरनाह हियकेमाहिं आपु सुगुणहुजू॥नृपअंग श्रीबर द्विजनको भूदेनकीइच्छाकरी। तिहि ते सुचिन्ता महा हिय के माहिं श्री धरणी धरी ॥ मैं दुर्लभाहौं ताहि प्रापति अंग नृपवर होयकै । कैसे सुइच्छा देन की है करत लोभहि गोयकै ॥ अब रहौंगी नहिं अबजैहौं बिधाताके धामको । यहकै बिचार सुधरणि चाली छोड़िदेह ललामको ॥ बरबिप्र कश्यप धर्मधर यहि जानिकै वृत्तान्तको । परबेश भूकी देहमें करिधरे धीर्य्य नितांतको ॥ भोकरत धारण

चराचरके भार अतिही मामको । जनजान तो कोऊनभे वृ-त्तान्तयहि अभिरामको ॥ मोदेत भूपति अंगभूको यज्ञमाहिं बिधानको । करिभूरि आदर द्विजनको हियधरे मोद महानको॥ सोरठा ॥ यहिबिधि तीसहजार वर्ष देवतनके परम । कश्यप बुद्धि अगार भूमि होयकै रहतभो । तदनन्तर पुनिआय भूमि द्रुहिण के लोकते । अति बिस्मयसों छाय कश्यपको देखति भई ॥ गुण कश्यपको देखि मुदिता धरणी होयकै। अतिहिश्रेष्ठ हियलेखि तासुसुता होतीभई ॥आभीर॥ भयो काश्यपी नाम । तबसो भूको आम ॥ ऐसो ब्राह्मण पर्म । काश्यप भयो सधर्म ॥ द्विजकश्यप सो कौन । भोक्षत्रिय बलभौन ॥ कार्तबीर्य महिपाल । कहिये मोको हाल ॥ दोहा ॥ मारुतके येबचन सुनि कह्यो न कछुनर-राय । तदनन्तर पुनिकहतभो भूपतिको इमिबाय ॥ अबमैंबिप्र उतथ्यको कहत पराक्रम तोहि । कारतबीर्य महीपमणि सुनिये मोतनजोहि ॥ रामगीती ॥ सुताभद्रा सोमकी अतिभरी रूपमहा-न । तासुतुल्य उतथ्यकोभो जानतो शशवान ॥ होयपति सुउ-तथ्य मोयह कामना करिभूरि । भई तपको करतिभद्रा महत मुदसों पूरि ॥ ताअनन्तर बिप्रबिज्ञ उतथ्यको बुलवाय । भयो भद्रा देतताको अत्रि मुदसों छाय ॥ बिप्रउग्र उतथ्य ताको कियो ग्रहण सप्रीति । भई हर्षित होतिभद्रा देखिपतिकी रीति॥ करीपूरब कामनाहीं जलेश्वर यहपर्म । होयभद्रा प्राप्तमोकोरूप मानि सशर्म ॥ जलेश्वरसों कालिन्दीके तीरमाहीं जाय । युक्ति कौनहु करिहरी भद्राहि मुदसों छाय ॥ जाय अपनेनगर माहीं लगोकरन बिहार । साथभद्राकेपगो सुख प्रीतिसहित अपार ॥ कह्यो सुऋषि उतथ्यको नारद सु यह वृत्तान्त । कह्यो इमिसुउ-तथ्यतब करिकै सुक्रोध नितान्त ॥ कहो नारद जायकै तुम वरु-णको यबैन । क्षिप्रकरिकै कृपामोपै परमप्रज्ञाऐन ॥ बरुणतू है लोकपालक लोकनाशकनाहिं । कहतहों मैंसत्यसमुभोआपने

मनमाहिं॥ हरीक्यों तैं नारिचारु उतथ्य ऋषिकीपर्म। छोड़ि देतूहै नतुमको योग्य बरुणसधर्म॥ बचन सुनि सुउतथ्यके ये सुमुनिनारद जाय। कह्योजौन उतथ्य बरुणहिदयोतौन सुनाय॥ बैन नारदके सुने इमिकह्यो बरुण सशर्म। मोहिंकन्या सोमकी यहलगति प्यारीपर्म॥ रहतयाके संगहौं निशि दिवसमें सानन्द। दईनाहीं जातिमोसों सुनहु सुमुनि अमन्द॥ सुनि सुनारद जलाधिपके बचन येसुनुभूप। आयपास उतथ्यके इमि भये कहत अनूप॥ तज्योनाहीं चहततेरी नारिको नीरेश। करहु कीबेहोय जोसो सुनु उतथ्य सुबेश॥ कहेजौन उतथ्यको ये बैन नारद तौन। अंगिरा सुनिकियो हीमें कोप अति बुधिभौन॥ कहतभे इमिहरीमेरे पुत्रवारी नारि। सर्व तिहिते सोखिजैहौं तेजसों मैं बारि॥ कहि सुइमिवर भये पीवत अंगिरा जलसर्व। तजीतबहूं नाहिंनारी नीरराज सगर्व॥ कह्यो इमिसुउतथ्य तबकरि क्रुद्धभूको बैन। देदिखाय सुभूमिमोको जलाधिपकोऐन॥ लक्षषट जिहिमाहिं हैं ह्रदस्वच्छ जलमय भूरि। रहतयत्र जलेशहै अति महत सुखसों पूरि॥ ताअनन्तर सिंधु हटिगो दयोभूमि दिखाय। सदनवर बारीशको अभिराम अतिसुखदाय॥ जायकै सुउतथ्य जहँ अतिभरेक्रोध महान। सरस्वतीबर नदीसों इमि भये कहत सुजान॥ जाहुतू मरुदेशको सुनु सरस्वति शुभबेश। जाय होय अपुण्य जासों बरुणको यहदेश॥ सुनिसुबैन उतथ्यके ये सरस्वति अभिराम। बरुणवारे देशकोतजि शीघ्रही बुधिधाम॥ भईजाति सुदेश मरुको सुनहु हेमहिपाल। भयोताते बरुणके हियमाहिं दुःख बिशाल॥ जलाधिप तबसहमि करिकै ल्यायभद्रा नारि। भयोदेतो ऋषि उतथ्यहि दुःख हियमें धारि॥ ऋषि उतथ्य सुपायभद्रा नारिको अभिराम। सुनहु भूपति महत मोदहि लहतभो बुधिधाम॥ छोड़िदीन्हो जलाधिपको दुःखते अतिभूरि। अंगिरस ऋषि

जगतमाहीं दयोनीरहि पूरि ॥ जातहौं निजधामको मैं लेय अ-
पनी नारि । मूढ़सुनु बारीशतेरे सर्बगर्बहि गारि ॥ ऋषि उतथ्य
सुपरम इमिकहि जलाधिपको बैन । नारि लहिकै होय मोदित
गयो अपने ऐन ॥ दोहा ॥ ऐसोभयो उतथ्य ऋषि परम प्रतापी
दक्ष । को उतथ्यते श्रेष्ठभो क्षत्रिय कहहु प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥
आभीर ॥ सुनि मारुतके बैन । कार्तबीर्य बलऐन ॥ बोले बचन
कछून । क्षत्रियकी सुनि ऊन ॥ कहत भयो इमिफेरि । बायु नृप-
तिकोटेरि ॥ ऋषि अगस्त्य अभिराम । सुनहु तास गुण माम ॥
सब देवनको जीति । दनुजन किये सभीति ॥ मानवान के कर्म ।
यज्ञादिक सबपर्म ॥ हरि लीन्हें ते सर्ब । बलसों परम अखर्ब ॥
तबसुभूतिसों क्षीन । ह्वैकै अतिही दीन ॥ देवतसबभू माह ।
फिरत भये नरनाह ॥ दोहा ॥ तदनन्तर कछुदिवसमें ऋषि अ-
गस्त्यको पर्म । लखतभये सब देवता भूपति सुनहु सशर्म ॥
रोला ॥ सर्बदेवता ऋषिअगस्त्यको नमस्कारकरि । बूझिकुशलै
पुनिकहत भये इमि दुःखधरि ॥ सुनहु सुऋषि हमयुद्धमाहिं
दनुजनसों हारे । भूमें ताते फिरतभये हमपरम दुखारे ॥ अब
तुम रक्षाकरहुकृपाकरिपरमहमारी । आपु महत दुखहरण सर्ब
हम शरण तुम्हारी ॥ सुनिदेवन के दीन बैनये ऋषि अगस्त्य
बर । कीन्हींकोप बिशाल सुनहु महिपाल गर्बधर ॥ चरणाकुलक ॥
तेजतपस्या के सो भारे । ऋषि अगस्त्य सबदानव जारे ॥ जरे
तदनु पीड़ितह्वै भजिकै । दक्षिणदिशिको गे दिवतजिकै ॥ बलि
हौ करत यज्ञ धरणी में । पगोक्रिया मखकी नीकी में ॥ तिहिते
अन्यदनुज हे जितने । सुऋषिजारिडारे सब तितने ॥ अमर
वृन्द तदनन्तर दुखसों । छूटिबसे दिवमाहींसुखसों ॥ पुनि नि-
र्जरन कह्यो इमिऋषिको । करिउत्पन्न फेरिक्रुधशिषिको ॥ भू-
में दनुज मण्डलीजेती । डारहुजारि सर्बतुम तेती ॥ सुनिकै दे-
वनकी यहबानी । बोलेइमि अगस्त्य ऋषिज्ञानी ॥ जेहैं दानव

सुनहु महीमें। जारिसकतहौं तिन्हैंनहीं मैं ॥ दोहा ॥ दहौं बिना अपराधजो सुनहु सो निर्जर सर्ब। क्षीणतपस्याहोय तौ मेरी चारु अखर्ब ॥ ऋषिअगस्त्य ऐसेदहे दानववृन्दमहान। अपने तपके तेजसों भूपति सुनहु सुजान ॥ ऋषिअगस्त्यजैसो भयो परमश्रेष्ठहेभूप। कहौकौनक्षत्रिय भयो तैसोउग्र अनूप ॥ भीष्मउवाच ॥ सुन्दरी ॥ भूपतिबैन सुमारुतके सुनि। बोलतभोन कछूहियमें गुनि ॥ मारुतबोलतभोलखिया पुनि। गर्बमहाहरणीकरिकैधुनि ॥ पज्झटी ॥ ऋषिबरबशिष्ठ मतिमानपर्म। सुनु कार्त्तवीर्य्य नृप तासुकर्म ॥ बैखानस सरवर अतिमहान। जल सों अमन्द पूरणसुठान ॥ दोहा ॥ ताकेतट आदित्यमख बिरचतभये अनूप। रक्षाकाजे सुमिरिकै ऋषि बशिष्ठको भूप ॥ वैखानस सरवर परम तासु निकट अभिराम। हुतोएक सर अतिमहत ब्रह्मदत्त तिहिनाम ॥ खलिन नाम दानव महत तिहिमें ते कढ़िउद्ध। करिकै शब्दहि भंगमख कीबे चलो सक्रुद्ध ॥ मधुभार ॥ ते दनुजसर्ब। गहि गिरिअखर्ब ॥ अरु वृक्ष वृन्द। लहिकै बिलन्द ॥ दोहा ॥ ब्रह्मदत्त सरको सलिल शत योजन लौं पर्म। मथतभये सुनुभूपबर कार्त्तवीर्य सहशर्म ॥ तोटक ॥ तदनन्तर शब्द महाकरिकै। मखके थलकै चहुँघा अरिकै ॥ लरिदेवनको सहत्रास किये। तब देव सबै धरि दुःख हिये ॥ भजिजाय सुबासवके शरणै। अपनो दुख सर्ब लगे बरणै ॥ तदनन्तर दानव तत्र गये। जहँ शक्रहुतो अतिक्रोध रये ॥ लरिशक्रहु दानवसों रणमें। लहि हारिहि ग्लानि धरे मनमें ॥ ऋषि पर्म बशिष्ठ हुतेसुजहां। अतिआरत होयगयो सुतहां ॥ लखिकै ऋषिबासवको सुडरै। इहिभांति कह्यो मति भीति धरै ॥ चरणाकुलक ॥ सुरनसहित सुरपतिको देखे। अतिही पीड़ित मनमेंलेखे ॥ तेज आपने सों ऋषिभारे। दानवखलिन सर्बदहिडारे ॥ तदनन्तर सुल्यायकै गंगा। ब्रह्मदत्तसरकी-

न्हीं भंगा ॥ फूटि सुब्रह्मदत्त सरवरयू । होतभयो सो सरितासरयू ॥ दोहा ॥ दानव खलिन हते जहां ऋषि बशिष्ठ बुधिधाम । सुनहु भूप तादेशको खलिनहोत भो नाम ॥ ऐसे देवनकी सुऋषि करी बशिष्ठसहाय । दाहि दनुज निज तेजसों सुनु अर्जुन नरराय ॥ तेजस्वी सुबशिष्ठऋषि ऐसे कीन्हें कर्म । ऐसो को क्षत्री भयो कहौ प्रतापी पर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ मारुतके ये बचनसुनि बोल्यो कछू न भूप । तदनन्तर पुनि कहतभो मारुत बचन अनूप ॥ तोमर ॥ अब अत्रिके बरकर्म । सुनु भूमिपाल सशर्म ॥ सुरअसुर युद्धमहान । रचते भये बलवान ॥ सोरठा ॥ बाणनसों स्वरभान रबि शशिको बेधत भयो । तिहिते घोरमहान छायगयो अतिही तिमिर ॥ चरणाकुलक ॥ दनुजन अन्धकारमें मारे । देवसमूहनको मलिडारे ॥ तेसबसुर कृशतासोंभेखे । अत्रि तपोधन ऋषिको देखे ॥ तिनको बचन कहतभे ऐसे । हारे महत भरे बहु भयसे ॥ शशि सूरहि बाणनसों चोखे । डारे बेधि दानवन रोखे ॥ तममें हमहूंको तिन मारे । ताते भे हमपरम दुखारे ॥ अब तुम रक्षा करहु हमारी । ऋषिबरहम हैं शरण तिहारी ॥ ऋषिरुवाच ॥ सकैंसुहोय तुम्हारी जैसे । रक्षा कहौमोहिं तुमतैसे ॥ तब इमिकहत भयेसुरबानी । सुनहुसुऋषिबर अत्रिसुज्ञानी ॥ होय चन्द्रमा तुम तम हरिये । जगके माहिं प्रकाशहि भरिये ॥ अरु सुतेज अपने सों चंडै । जारहु दनुज समूह अखंडै ॥ यहबाणी देवन की सुनिकै । अत्रिसुऋषि हियमाहीं गुनिकै ॥ सोरठा ॥ शशि ह्वैकै मतिमान बिना तिमिर कीन्हों जगत । भरिसुप्रकाश महान अर्जुनसुनहु महीप बर ॥ रोला ॥ तेज आपने सों महान दानवऋषि जारे । गणदेवनके परममहत आनँदसों भारे ॥ कियो प्रकाशित भासमान को दुःखदूरिकरि । ऐसो कीन्हों कर्म अत्रि हियमोद पूरिकरि ॥ दोहा ॥ कहे तोहिं हम अत्रिके करमपरम अभिराम । ऐसो को

क्षत्रियभयो कहो मोहिंतुमश्राम ॥ भीष्मउवाच ॥ जयकरी ॥ अर्जुन सुनि मारुतके बैन । बोलतभये कछु न बुधिऐन ॥ तदनन्तर ऐसे पुनिवायु । भये कहत सुनुबर नरराय ॥ कर्म च्यवनऋषि के अभिराम । अब हम तुम्हैं कहत हैं आम ॥ कहिअश्विनी सुतनसों बैन । ऐसे च्यवन सुबरबुधिऐन ॥ भागतुम्हैं मखमाहींपर्म । देंगे निश्चय करहु अभर्म ॥ बासवको ऐसेऋषिदक्ष। भये सुकहते बचन प्रतक्ष ॥ भाग यज्ञमाहीं तुमदेहु । अश्विनी सुतनहुँ को करिनेहु ॥ बासव ये सुच्यवनके बैन । सुनिइमि कहत भयो बुधिऐन ॥ दस्र और देवनसम नाहिं । याते भाग यज्ञके माहिं ॥ कैसे देहिं सुनहु बुधिऐन । कहिये आपु न पुनि ये बैन ॥ कहिहौ और तौनहम सर्व । करिहैं सुनु ऋषि च्यवन अखर्व ॥ च्यवनउवाच ॥ दोहा ॥ संगअश्विनीसुतनके पीवहु सोमहिंपर्म । येऊ तौ हैं अमरही सूरजपुत्र सशर्म ॥ नराचिका ॥ जो सो सुबाकर्मानिहौ । तौ मोंहीय तानिहौ ॥ जो आपु मानिहौ नहीं । मोदैन पायहौ कहीं ॥ इन्द्रउवाच ॥ सोरठा ॥ सोमपान हम नाहिं करिहैं अश्विनि सुतनसह । सत्यकहत तवपाहिं सुनहु च्यवनऋषि प्रज्ञबर ॥ च्यवनउवाच ॥ दोहा ॥ सोम अश्विनी सुतनसँग मनसों पीहौ नाहिं । बरबसतुम्हैं पिवायहौं तौ मैंमख के माहिं ॥ कहिके ऐसे इन्द्रसों किया यज्ञ प्रारम्भ । ताहि देखिके क्रोधअति करिकै इन्द्र सदम्भ ॥ तोटक ॥ गिरि औबर बज्रउठायचरयो । हनिबेऋषिकोअतिक्रुद्धभरयो ॥ सुरराजहि आवत सो चहिकै । पढ़िमंत्रजलैकर में लहिकै ॥ ऋषिउग्र महा तिहिपैछिरक्यो । तिहितेसुरराय न आय सक्यो ॥ तदनन्तर शत्रु सुसुरपतिको । अतिघोर भयङ्करभा अतिको ॥ ऋषिउग्रबली उत्पन्न कियो । लखिताहि कँप्यो सुरको सुहियो ॥ मदनामभये धरते तिहिको । दीरघ आस्य कियो जिहिको ॥ दोहा ॥ शतशत योजनके किये ताकेदन्त हजार ।

दन्तनते द्विगुणी रची उन्नत डाढ़ उदार ॥ ताकेमुखको भाग अध भू में लग्यो महान । अरु ऊपर को भागसो नभ में लग्यो सुजान ॥ ताके जिह्वा मूलमें सुरन सहित सुरराय । प्राप्त होत भो सुनहु नृप महत भीति सों छाय ॥ सोरठा ॥ तब पीड़ित सुर सर्व कहत भये इमि शक्रसों। सुनु हेशक्र अखर्ब करहु बन्दना च्यवनकी ॥ दोहा ॥ पीवैंगे हम सोम सब सहअश्विनी कुमार । नतौ जायगोलीलि यह मद बलवान अपार॥ ये सुनि देवन के बचन अरु गुणि दुखको शक्र। करिसुबन्दना च्यवन की छोड़ि सुभावहि बक्र ॥ शक्र अश्विनीसुतन सह पियो सोम अभिराम । तदनन्तर पूरण कियो यज्ञच्यवनबुधि धाम ॥ मद के चारि बिभागकरि च्यवन सुऋषि धर्मज्ञ ।सुनहु सहस्राबाहु नृप बर बलवान सुप्रज्ञ॥ द्यूतमाहिं अरु मृगयमें अरु परतिय माहिं अभर्म । अरु मदिराके माहिं धरतभे मद को सुऋषि सधर्म ॥ तिहिते नृप इन सबन सों रहिये दूरिसदाहिं । होत मनुजअल्पायु है लिप्त भये इनमाहिं ॥ च्यवन सु ऋषि वर उग्र के कहे तोहिं हम कर्म । ऐसोको क्षत्रियभयो उग्र प्रतापीपर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ अर्जुन सुनिकै बचन ये कछु नहिं बोल्यो बैन। तब मारुत पुनि कहतभो ऐसे सुनु बुधि ऐन॥ चरणाकुलक ॥ बिप्र सुकर्म करतहैं जैसे । क्षत्रिय सकतनहीं करि तैसे ॥ जब मदके सुखमाहिं भयेहे । प्राप्तसर्वसुर दुःखरये हे॥ दोहा ॥ तीन समयमें च्यवन भू हरी सुरनकीपर्म । अरु कप दनुजनदिव हरयो भूपति सुनहु सधर्म ॥ निकसे मद के बदनते तब पीड़ित सुर सर्व । जाय द्रुहिणपै सब कह्यो निज वृत्तान्त अखर्व ॥ देवाऊचुः ॥ च्यवन हरयो भूलोक अरु स्वर्ग हरयोकप वृन्द । सुनहु द्रुहिण ताते भयो हमको दुःखबिलन्द ॥मोतीदाम॥ सुने बिधि देवन के यहबैन । कह्यो यहि भांति सुनो बुधिऐन॥ सबिप्रन के शरणे तुम जाय । रहौ लहिहौ दहुंलोक सचाय ॥

रामगीती ॥ बैन सुनिये बिधाताके सर्व देवत पर्म । बिप्रगण के शरणमाहींभये रहत सधर्म ॥ तद अनन्तर कह्यो विप्रन सुरन कोइमिबैन । कहो जोतुम करैं सो हम कहत तुमकोऐन ॥ बचन सुनिये बिप्रगण के कहतभे सुर सर्ब । डरो तुम कपदानवन के वृन्द परमअखर्ब ॥ बैन सुनिये देवतन के बिप्रपरम सुजान । नाशिबे कप वृन्दकीबे लगे होम महान ॥ तौन सुनि कपदानवन बर ब्राह्मणनके पास । भये भेजत दूत अपनो परमप्रज्ञारास ॥ जायकरिकै ब्राह्मणनके पास सो बर दूत । भयो कहतो बैन ऐसे भरो बुद्धि अकूत ॥ सुनहु जैसे आपु हौ तैसेइहैं कप वृन्द । यज्ञकारक वेदबिद अरु प्रज्ञपरम अमन्द ॥ बासकीन्हें रहति लक्ष्मी सदा तिनके माहिं । किये धारण लक्षमीको तौन रहत सदाहिं ॥ ऋतुमती जब होति नारी जात जबतिहि पास । रजस्वलिका नारिमें नहिं रमतहैं बुधिरास ॥ करत हैं तब होम जब प्रज्वलित पावक होत । वृथामांसन खातहैं हैं परमप्रज्ञापोत ॥ दोहा ॥ पूरबाह्नमें द्यूतनाहिं खेलतहैं कपसर्ब । औदिनमें सोवत नहीं हैं बलवान अखर्ब ॥ तोमर ॥ तुम जीति सकिहौ नाहिं । कपवृन्दको रण माहिं ॥ तिहि ते न करहुबिगार । तुम सर्ब बुद्धि अगार ॥ विप्राऊचुः ॥ दोहा ॥ जीतैंगे कपवृन्दको हम सब संशय नाहिं । दूत शीघ्र तू जायकै कहौ कपन के पाहिं ॥ आभीर ॥ द्विजन कहौहो जौन । दूत कपनको तौन ॥ शीघ्र कहत भो जाय । सुनु अर्जुन नरराय ॥ पज्झटी ॥ सुनि कपन दूत के बैन सर्ब । गहि अस्त्रक्रोध करिकै अखर्ब ॥ द्विजगणहि मारिबेको महान । करिकै बिचार कीन्हो पयान ॥ लखिध्वज कपनकी द्विजनपर्म । तिनको सुजारिबेको अभर्म ॥ दीन्हों सुछोड़ि प्रज्वलितकृशानु । कपवृन्दतौन दहिकै महान ॥ भोलसत मेघ लौं ब्योमबीच । लखि ताहि होत भे सुर निभीच ॥ दोहा ॥ तदनन्तर ब्राह्मणनकी करत प्रशंसापर्म । भये अमर

इन्द्रादि सब ह्वै कै भूरि सशर्म ॥ प्रापतहौ सुरलोकको रहत भयेसानन्द । लहि सहाय ब्राह्मणनकी दहे सर्ब कपव्वन्द ॥ तोमर ॥ सुनि बैनये अभिराम । बरबायुके बुधि धाम ॥ अर्जुनसुबायुहि पूजि । गुणतासु बहुबिधि कूजि ॥ इमि कहतभो सुनु भूप । अभिमानछोड़ि अनूप ॥ तुम बिप्रके बरकर्म । हमको कहे सह धर्म ॥ तिहि ते गयो अभिमान । मिटि सर्ब मोमतिमान ॥ दोहा ॥ सुखदायक अभिमान जो कियोतौनतुमदूरि । ताते मोकोबायुतुम हौ सुखदायक भूरि ॥ कृपा सुदत्तात्रेय की तैं मोको अभिराम । कीर्तिमिली अरु बल मिल्यो अरु ऐश्वर्य्य महान ॥ बायुरुवाच ॥ बिप्रनको पालहु सदा गहिकै क्षत्रिय धर्म । अरु राखो इन्द्रीनको बशमें सदा अभर्म ॥ भृगुऋषि ते कछु दिवसमें अतिही भीति बिशाल । प्रापत तुमको होयगी अर्जुन प्रज्ञ नृपाल ॥

इतिशान्तिपर्बदानधर्मेबायुअर्जुनसंवादेद्वाविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२२

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ पूजामेंफलहैकहा बिप्रनकी सहधर्म । कहौ मोहिंतुम करतहौ पूजानित्य सशर्म ॥ आभीर ॥ पाण्डवके सुनि बैन । ये भीषम बुधिऐन ॥ कहतभये इमि पर्म । पाण्डव कोसहधर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ तोमर ॥ हमबिकलहैं अबपर्म । सुनुपाण्डुपुत्र सधर्म ॥ तिहितेनपूंछहुमोहिं । हमकहत सत्यहि तोहिं ॥ जयकरी ॥ ब्राह्मणकीपूजाअभिराम । कीहें जो फल मिलतललाम ॥ सोजानतहैं कृष्ण अनूप । पूंछो इनसों तुमहेभूप ॥ सबके कर्त्ता हैं सर्बज्ञ । कृष्णचन्द्र सुनु भूपति प्रज्ञ ॥ भीषमकी सुनिकै यहबात । भूपयुधिष्ठिर कुन्तीतात ॥ कृष्णचन्द्रको ऐसे बैन । कहतभये बर प्रज्ञाऐन ॥ बिप्रनकी पूजामें जौन । मिलत कृष्ण फल कहिये तौन ॥ सुनिये बैन भूपके पर्म । कहत भये श्रीकृष्ण सशर्म ॥ कृष्णोवाच ॥ द्वारावती पुरीके माहिं । सुतप्रद्युम्न हमारेपाहिं ॥ कह्यो बचन काहूकटुबिप्र । तातेकै सक्रोध अति क्षिप्र ॥ मोहिं कहत भो ऐसेबैन । ममसुतबर प्रद्युम्नसचैन ॥

विप्रनकी पूजा सहप्रेम । आपकरतहौ नित्यसक्षेम ॥ तासहोत फलका अभिराम । कहौमोहिंतुमआनँदधाम ॥ दोहा ॥ सुनिकै ये प्रद्युम्नके बचनपरमसुनुभूप । द्विजपूजाको चारुफल मैंभोकहत अनूप ॥ अरिल ॥ ब्राह्मणहैं सुखदुखके कारण । कहततोहिं मैं करिनिरधारण ॥ द्विजकीपूजाकीन्हेंनिर्मल । मिलतकीर्त्ति अरुआयु सुयशबल ॥ करहुक्रोधतुम मतिविप्रनपर । ब्राह्मण होत परम उत्तम तर ॥ रामगीती ॥ करैइच्छाचित्तमें जो विप्रबर मतिमान । रचै दूजोलोक तौ सहलोकपाल महान ॥ हुतोफिरतो एकब्राह्मण भूमिमाहिंअनूप । चीरबल्कल किये धारण कहतइमि मुदरूप ॥ नामदुर्बासा हमारो लोकमाहिं प्रसिद्धि । करैगोसत्कार मो जो लहैगो दुखवृद्धि ॥ जोकरावै क्रोधनहिंसो मनुजराखै मोहिं । करततातै नाहिं कोऊ तासआदर जोहिं ॥ ताहिराखतभये हम गृह माहिंहेसुनुतात । कहै कबहूं बचनकाहू सों नहीं अवदात ॥ करैभोजन मनुजजेतो सहस तेतोखाय। कबहुं भोजन अल्पहीकरि रहतमुदसौंछाय ॥ हँसैकबहूं आपुहीसों देतकबहूं रोय । वृद्धतासम औरभूमें पुण्यनाहीं जोय ॥ रहैकबहूं धाममाहीं कबहुं बाहर जाय । रहैठाढ़ोहोयगृहमें कबहुं औचक आय ॥ ताहिराहिबे काज हमबरदयो जोहोधाम । कछूदिनमें जारि ताको सहित शय्या बाम ॥ जायबाहर आय पुनि हमको कह्यो इमिविप्र । खीर भोजन करैंगे हम ल्याउअबहीं क्षिप्र ॥ तासु जानि स्वभाव भोजन सर्ब हम बनवाय । हुते राखे पूर्बही करि धामस्वच्छ लिपाय ॥ ल्याय पायस शीघ्रही हमदई ताको तात । क्षिप्रताको खायकै इमि कहतभोअवदात ॥ रहीभाजन माहिं हमते खीरबाकी जौन । सर्ब अपने अंगमाहीं कृष्णलावहु तौन ॥ बैनसुनिये तासुहमसब अंगमाहीं पर्म । भयेसो उच्छिष्ट लावत खीरतात सशर्म ॥ तदअनन्तर रुक्मिणीतव मातको लखि बिप्र । कह्योपायस तुमहुं ला-

वहुअंगमाहीं क्षिप्र ॥ रुक्मिणीहू भई पायस लावतीतनमाहिं। तदअनन्तर कियोतिहियहकर्म मेरेपाहिं ॥ लायरथमें रुक्मिणी को वृषभ लौंहे तात। बैठितामें शीघ्र गृह मेंभयो बाहर जात॥ लखत मेरे रुक्मिणी कोलग्यो मारनपर्म। चमौटीसों तौन ब्राह्मण रहित शंक सशर्म ॥ तबहुं अपने चित्तमें मैं दुःखकीन्हों नाहिं। देखि ताको सर्व यादवराज मारगमाहिं॥ होय क्रोधित परमते इमि लगे कहन सुजान। लखौयह द्विजकरतहै अतिघोर कर्ममहान ॥ रुक्मिणीको हनतहै नहिं करतभय हियमाहिं। औरऐसो बिप्रकबहूं कहूं देख्योनाहिं ॥ हैन ब्राह्मणवर्णके समऔर कोऊबर्ण। भरो आनँद सों महा निर्भांति ताको धर्ण॥ भये कहते बैन इमि अन्योन्य यादवसर्व। पैनकोऊबिप्रसोंकहिसक्यो बचनसगर्व ॥ तद अनन्तर रुक्मिणी गिरिपरी पथ के माहिं। तबहुं प्रेरत भये कीन्हींनेक शंका नाहिं ॥ उठिसकी नहिं क्रोधकरि तबउतरि रथते पर्म। छोड़िमारगभये दक्षिण ओरजात सशर्म ॥ कृपाकरिये करहु क्रोध न आपुबरबुधिधाम। लगोपीके चल्येमैं इमिकहत गतिगाहिमाम ॥ रहित क्रोध बिलोकि मोको तद अनन्तर बिप्र। भयोकहतो बैनऐसे कृपाकरिकैक्षिप्र ॥ क्रोधहूबे के किये हमबहुत कारणपर्म। तबहुंतुमने कियोनाहींक्रोधकृष्ण सशर्म ॥ दोहा ॥ ताते भयो प्रसन्नहों तव ऊपर मैं पर्म्म। जोइच्छामें होयसो मांगहु बरसह धर्म्म ॥ चरणाकुलक ॥ तुमसब लोकन के प्रियह्वैहौ। चारु कीर्ति लोकन मेंचैहौ॥ पायसलायो तनजितनेमें। ह्वैहै मृत्युभयनहिं तितने में ॥ जियबेकी इच्छातुम जबलौं। करिहौतुम जीवोगेत बलौं॥ जोतवहम अगार दहिडार्यो। ह्वैहैसो नवीनभाभार्यो ॥ पदतलमेंनहिं पायस लायो। सो तुम कियो न मोमन भायो ॥ और सर्व तनमाहीं कीन्हों। लेपनबाकीरहै न दीन्हों ॥ कहतहिकहत बात येनीकी। मेरीभई देह शुभ श्रीकी ॥ पायस लेपनतन

में जोहो। पयोजानि नाहिं सो कितगोहो ॥ तदनन्तर रुक्मिणिको बानी। कहत भये ऐसे ते ज्ञानी ॥ लोकनमाहीं कीर्त्ति सुढारी। ह्वैहै हे सुनु रुक्मिणिधारी ॥ ह्वैहै श्रेष्ठा नारिनमाहीं। रहिहै सदा कृष्णके पाहीं ॥ लहिहै तू वियोग नाहिं कबहूं। हरियहि लोकहि तजिहैंतबहूं ॥ सोरहसहस कृष्णकी नारी। तिनमें तू अति ह्वैहै प्यारी ॥ तो तनमाहिं सुगन्धबसैगी। नित्य नई तो प्रभा लसैगी ॥ दोहा ॥ दुर्वासातवमातको कहि इमिबैन सुजान। तदनन्तर पुनिबिप्रसों करिकै कृपामहान ॥ मोहिंकहत इहिभांतिभो क्षमा देखि ममपर्म। जैसी अब तैसी रहो तवमतिसदासशर्म ॥ सोरठा॥मोसोंकहिइमिबैन तहँहींअन्तर्द्धान भो। दुर्वासा मतिऐन बिप्र क्षिप्र सुनुतातबर ॥ दोहा ॥ तब सों हम यहव्रत लियो कहत जौन हैं बिप्र। सुनहु तातश्रद्धासहित करत तौनहम क्षिप्र ॥ चरणाकुलक ॥ तदनन्तर हमगृहमें आये। अतिही आनँदतासों छाये ॥ दुर्वासा जो धाम जरायो ॥ तौनधाम परभासों छायो ॥ नूतन लखत भये सहबामा। और बस्तुसह सर्व ललामा ॥ नूतनधाम सहित सबहेरे। ताते भो अचरज हियमेरे ॥ सोरठा ॥ द्विजसेवामें जौन मिलत महतफल परमहै। सुनहुतातबुधिभौन कह्योतुम्हैंहमतौनसब॥चरणाकुलक॥ फलजो द्विजसेवाके माहीं। सो प्रद्युम्नके सुहमपाहीं ॥ सुनहु भूपबर वर्णिसुनायो। सोई हमतव आगेगायो ॥ दोहा ॥ द्विज सेवामें जानिकै उत्तमफल अभिराम। भीषम निशिदिन करत हैं श्रद्धासह बुधिधाम ॥ जयकरी ॥ ताते तुमहुँ युधिष्ठिर भूप। कहिकै कोमल बचन अनूप ॥ उत्तम बिप्रन को अभिराम। करहु प्रसन्न परमबुधिधाम ॥ आभीर ॥ लोभी हैं द्विजजौन। हैं उत्तम नहिंतौन ॥ योग्य पूजिबे नाहिं। सत्यकहत तवपाहिं ॥ मल्लिका ॥ नित्य धर्म जौनभूप। ह्वै सकै न ते अनूप ॥ लोभमें पगे महान। रहैं असत्यता सुजान ॥ जौन लोभमाननाहिं।

बिप्रतौन हीयमाहिं ॥ होय जोय सिद्धिकर्त्त । भीतिको कहूं न धर्त्त ॥ बिप्रताहि हार्षिचारु । लोभ पापको अगारु ॥ क्षिप्रदूरि कै सुदेत । ना असत्य है सचेत ॥

इतिश्रीदानधर्मेदुर्वासाख्यानेत्रयोविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ मोतीदाम ॥ महातम शंकरको अभिराम । कहो अब आपु सुनो सुखधाम ॥ बासुदेवउवाच ॥ महातम शंकर को सुबिशाल । तुम्हैं कहते हम हैं महिपाल ॥ सुनो थिरकै चित को तुमपर्म । सुने सुख होइहि तोहिं सधर्म ॥ कियो यह प्रश्न महासुखकार । महीपति हे तुम बुद्धिअगार ॥ स्थावर जंगम भूत जितेक । रचे सब शंभुहिहैं सुतितेक ॥ सदा शिवकीसम कोऊनाहिं । महाबर तीनहुँ लोकनमाहिं ॥ पञ्झटी ॥ जब शम्भु पर्मसह क्रोधहोय । तब होत तासेसोहैं न कोय ॥ डरिशत्रुजात संग्राममाहिं । गिरि परत कम्पि थिरिसकतनाहिं ॥ शिव करत कोप जापै महान । नहिं लहत मोदसो कहुसुजान ॥ जिहिको निनाद सुनिकै अखर्ब । कम्पित सुहोत देवतहु सर्ब ॥ मखक-रतदक्षहो ह्वैसचोप ॥ मखसो निहारि शम्भुहि सकोप ॥ मृग रूपधारिभो भजतपर्म । लखि ताहि शंभु धरिधन सशर्म ॥ हनिशीश तीरसों तासुभूप । दीन्हों गिराय भूमें अनूप ॥ मख धाम माहिं सुरहुते जौन । दुखसहित होतभे सर्बतौन ॥ धनुके निनादसों अतिअखर्ब । ब्याकुल सुहोतभे लोकसर्ब ॥ गिरि गिरतभये भूउठीकम्पि । गो अन्धकार चहुँओर सुझम्पि ॥ सहभानु नक्षत्रनकोप्रबीण । गोद्वैप्रकाशबरसर्बक्षीण ॥ चरणाकुलक ॥ तदनन्तर देवनके पीछे । धाये शिवकरिनैन तिरीछे ॥ भगसुरके गहिनयन निकारे । अरु पूषाकेदांत उखारे ॥ पुनिजब धारण कीबेलागे । परकोतब सुर अतिभय पागे ॥ करिपरणाम जोरिकै पानी । सर्ब देवता सहऋषिज्ञानी ॥ अति प्रसन्न शंकरको कीबे । अरुबरानिर्भयताको लीबे ॥ शतरुद्रीय स्तव

अतिनीको । सुखदायक अरु दायक श्रीको ॥ पढ़तेभये शंभु के सौंहें । तातें सूध ह्वैगईं भौंहें ॥ भये प्रसन्नहोत शंभूअति । देवन पै सुनु प्रज्ञसुभूपति ॥ दोहा ॥ भागपीठलौं यज्ञको अमर शिवहिभे देत । तदनन्तरपुनि कहत भे ऐसे बुद्धिनिकेत ॥ शंकरहमतवशरणहैं कीजैकृपाअखर्व । सुनियेदेवनके बचनअति प्रसन्न ह्वैशर्व ॥ मखकेमुण्डहि रुण्डपरधरिकै दयोमिलाय । औरहतेजेतरहे ते सबदयेजिवाय ॥ आभीर ॥ शंकरकोअभिराम । और पराक्रम नाम ॥ कहततुम्हैं हमभूप । सुनिये तौनअनूप ॥ रामगीती ॥ भयेबिरचत स्वर्गमाहीं असुर त्रयपुरनाम । लोहको इकरजतको इक हेमको अभिराम ॥ सुरनसह सुरराजतिनको सक्यो नाहिं उजारि । आयकै शिवपास तब इमिभयो कहतपुकारि ॥ मारि पुर सह दनुज गणको कृपासिंधु अखर्व । करहुरक्षा शरण में हम हैं तुम्हारी शर्व ॥ बैन सुनि ये देवतन के शंभुआनँद धाम । दनुज नाशक मुद प्रकाशक सुरनके अभिराम ॥ विष्णुकाराचि तीर उत्तम शल्य शिखिहि बनाय । पुंख यम को विरचि हिय बरतीर माहिं लगाय ॥ वेदको करि धनुष गायत्रीहि रोदा पर्म । मही रथकरि बिधिहि सारथि महादेव सशर्म ॥ जाय करिकै होय क्रोधित बिरचिकै संग्राम । मारिदानव जारिडारे तीनहूं पुर नाम ॥ तद अनंतर तबहिंशंकर धर्यो बालक रूप । कौन शिशु यह कह्यो गौरी ताहि देखिअनूप ॥ छली दानव जानिताको इन्द्रबज्रउठाय । मारिबे को चल्योऊंचे हाथकरि रिसछाय ॥ प्राप्त तौन स्तंभ ताको होत भो सुरपाल । हस्त ऊर्ध्वहि रह्यो नाहिं नत होत भो महिपाल ॥ नहीं जानत भये शिव को सविधि देवत सर्व । तद अनन्तर बिधाता बर करि सुध्यान अखर्व ॥ जानि शंभुहिभये बंदत प्रीति सह अभिराम । जानि बिधिके कहे देवत और सबबुधिधाम ॥ बंदना करि शंभु को अरु गौरिको सुखदाय । भये करत प्रसन्न

हियमें महत आनँद छाय ॥ शंभु की बर कृपाते सुरनाथ बारो हाथ । रह्योजैसो पूर्व तैसो होत भो नरनाथ ॥ शंभु ह्वैकै बिप्र दुर्वासा सु तेजसवान । द्वारका में आयकै मम धाम माहिं महान ॥ बास करिकै काललौंबहु बहु उपद्रव कीन । सहे ते हम सर्व हे सुनु भूप परम प्रबीन ॥ शंभु हीहैं चन्द्रमा अरु शंभुही हैं भानु । शंभुहीहैं अग्नि औ अरु शंभुही पवमानु ॥ शंभुही हैं इन्द्र सह सब देवता अभिराम । शंभुही हैं बरुण औजल बिधाता बुधिधाम ॥ शंभुहीहैं मृत्यु औ बर शंभुही हैं काल । शंभुही दिन राति अरु ऋतुमास वर्ष नृपाल ॥ आभीर ॥ ऐसेहैं ईशान। सुनहुभूप मतिमान ॥ शत वर्षहुकेमाहिं। शिवके बर गुणनाहिं ॥ मैंकहिसकि हौं पर्म । मानों सत्य सधर्म ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिईश्वरप्रशंसायांचतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥

बासुदेवउवाच ॥तोमर॥शिवकोमहातम और । सुनुपर्मनृप शिरमौर ॥ रामगीती ॥ शंभुके द्वैरूपहैं यक सौम्य औ यकघोर । धर्मवान महान सुनुबर महीपति शिरमौर ॥ घोर तन जो शंभुको है सोय पावक पर्म । सोयबिद्युत सोय सूरजभयो तेज सशर्म ॥ शंभुकोतनु सौम्य जोहै चन्द्र सोईस्वक्ष । नीरसोई परमसोई धर्महै सुनु दक्ष ॥ सौम्य तनसोंकरत रक्षासर्व जगकीसर्व । घोर तमसों हरतहैंयह सर्वजगतअखर्व ॥ महत ईश्वरतास यातेमहेश्वर भो नाम । हैं प्रतापी परम याते उग्र नामललाम ॥ रुवावतहैं जगहि ताते रुद्रभोअभिमान । बिश्व पालत महत ताते महादेव सुजान । हैंसुधूम्रा जटाताते धूर्जटी भो पर्म । मनुष्यन को देत हैं कल्याण शंभुसशर्म ॥भयोताते ख्यातहै शिवनाम त्रिभुवनमाहिं । महाओढर ढरन है शिव अत्र संशय नाहिं॥ मिलति महती श्रीयहै बरलिंगपूजेजासु । होतहैं परसन्न शंकर लिंगपूजेआसु ॥ देतहैंआनंदनित्यहि भक्तको अभिराम । बसतहैं श्मशानमाहींमरेआनँदमाम ॥ युद्धमाहींलरतजेहैंपूजि

शिवको पर्म । होत तिनकी पराजय नहिं कबहुंभूपसधर्म ॥ श-
रण माहीं होत ताकी करत रक्षाभूरि । कीर्तिजाकी रही तीनों
लोकमाहीं पूरि ॥ मानुषनको देतहैं ऐश्वर्य्य धन अरु आयु ।
करत इच्छा सिद्धिहैं सब सुनहु बर नरराय ॥ शक्र आदिक सु-
रनमें ऐश्वर्य्य जौन बिशाल । शंभुही को जानु निश्चय तौन
सब भूपाल ॥ दोहा ॥ खर्वसु होत अखर्वहै शिव सेवा ते पर्म ।
कह्यो महातम शर्व को तोको सर्व सधर्म ॥
इतिश्रीशान्तिपर्वणिईश्वरप्रशंसायांपंचविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५
बैशम्पायनउवाच॥दोहा॥बासुदेवकेबैन येसुनिपाण्डव मतिमान ।
भीषमको पुनिप्रश्नयह पूछतभयोसुजान ॥ जेजननिंदाधर्मकी
करत सुदुर्मतिमान । औजेधर्महि करतहैं श्रद्धासहितमहान ॥
तेदोऊकहँजातहैं कहौमोहिंविख्यात । आपुहि कहिबे योग्यहौ
महतप्रज्ञवरतात ॥ भीष्मउवाच॥हरिगीती॥ जनजौन निन्दाधर्मवारी
करतदुर्मतिमानहैं । परिनरकमाहीं घोरतेजनलहतदुःखमहान
हैं ॥ अरु करत प्रज्ञावान हैं बरनिरन्तरजे धर्मको । सुरलोक
माहीं जायते जनलहत आनँद पर्मको ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ आभीर ॥
कैसे होत असाधु । दुर्मति भरे अगाधु ॥ अरु बरसाधु अम-
न्द । कैसे होत नरेन्द ॥ अबयह कहहु सुजान । वक्ताआपुम-
हान ॥ भीष्मउवाच ॥ भुजंगप्रयात ॥ धरेहीरहैं क्रोधभावै सदाहीं ।
सदा गूढ़ बोलैं कबौं सत्य नाहीं ॥ पगेई रहैं जे दुराचारमाहीं।
कबौंहूंन बैठें महा विज्ञ पाहीं ॥ दोहा ॥ ऐसेहोत असाधुहैंसुन-
हु पाण्डुसुतपर्म । अबसाधुन कें कहतहौं लक्षण तोहिंसधर्म ॥
चामर ॥ शीलताधरैं महान क्रोधको करैं नहीं । सत्य नित्यहीकहैं
असत्यको धरैं नहीं ॥ पापसों डरैं सदाहि काहु सों अरैं नहीं ।
चित्तसोंहु जीवके अनन्दको हरैं नहीं ॥ जयकरी ॥ ऐसे होतसाधु
हैं भूप । प्रज्ञावानमहान अनूप ॥ रहत सुसाधु सदा सानन्द ।
लहतअसाधु महत हैं दन्द ॥ दोहा ॥ धर्म और हम कहत हैं

सुनहुं युधिष्ठिर भूप । तिनधर्मनको श्रवण करि लहिहौ मोद अनूप ॥ रामगीती ॥ नारिको अरु पुरुषहूको नग्नलखिये नाहिं। गुरुहि आवत देखिकै उठिप्रेम धरि हिय माहिं॥ छूय पदकर जोरिआसन चारु पै बैठाय। खरो रहिये पूजिसोंहं हर्ष हियमें छाय ॥ देश औ परदेशहूमें अतिथि आये पर्म । सहित आदर चारु भोजन दीजियेसह धर्म॥ वृद्धजनके बैठिकै ढिगप्रात सायंकाल। बचन सुनिये धर्मवारे भर्म छोड़ि बिशाल ॥ वृद्धजनकी कियेसेवा बुद्धि होत महान। तिमिहिं गुरुकी कियेसेवा बढ़तिबय निजजान ॥ गुप्तमैथुन कीजिये औ तिमिहिं भोजन भूप। महत जनसों बोलिये न तुकारिप्रज्ञ अनूप ॥ तिमितुकारिन बोलिये बरबुधनको अभिराम। पुत्र शिष्यहि बोलियेत्वंकारि वर बुधि धाम ॥ अज्ञतासों होय जो अघकियो कबहूं पर्म। पूछि तोबर प्रज्ञजन सों चोप सहित अभर्म ॥ कीजिये अघदूरि करनि उपाय तजिअभिमान। बैठिये अरु सदाप्रज्ञन पासलहिवे ज्ञान ॥ दोहा ॥ जलसों जैसे लवणकोमहतवृन्द गरिजात । तिमिहीं किये उपाय बर पातक सर्ब बिलात ॥
इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेषड्विंशत्याधिकशततमोध्यायः ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ धर्मधुरन्धर बीरमहान। भीषम को पुनि वर मति मान॥ जोरिसुपाणि युधिष्ठिर भूप। पूछतभोयह प्रश्न अनूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कौनकर्म कीन्हें अभिराम।मिलत मोद मानव को माम ॥ छूटि जात कल्मषता सर्ब। होति देहमें प्रभाअखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीती ॥ देवतनके ऋषिनके अरु नृपनकेबरमाम। कहतहौं मैं तुम्हैंभूपति परमप्रज्ञाधाम ॥ जपे जिनकोहोत कल्मष दूरिसर्ब महान । भूरिआनँद होतप्रापत धर्मवान सुजान ॥ बिधाताअरु बिष्णु शंकर कार्तिकेयसुशर्म। बिशिखाशिखि आदित्यमारुतचन्द्र सुरपति पर्म ॥ सहितगार्गी वरुण धूमोरणा सहयमराय। सहित ऋध्याधनेस्वर अरु

बालाखिल्य सचाय॥ सुरभि अरु ऋषि बिश्रवा बरमहतप्रज्ञा-
वान। ब्यासनारद तथा पर्वत शुक्र परमसुजान॥ वृहस्पति
बुधराहु कश्यप शनिसु औ नक्षत्र। अश्विनी सुत भौम अरु
बसु अष्टपरम पवित्र॥ तुम्बर सुहाहा सुहूहू चित्रसेनसुजान।
औ सुविश्वावसुमहा मतिसुरगन्धर्वसुठान॥ देवकन्याअप्सरा
रम्भादिसुन्दरिपर्म। औरबरबहु देवगणहैं मोदवानसधर्म॥
बिपासा औ चन्द्र भागानदी सिन्धु महानि। नर्मदासरयू बि-
शल्या सुरसरी सुखदानि॥ बेत्रवति अरु गण्डकी ताम्रारुणा
अभिराम। कृष्ण बेणीतथाबेणाभरी जलसों माम॥ चक्षु औ
मन्दाकिनी त्यों अद्रिजागंभीर। तिमिहि लोहितमहानदवरता
सदोऊतीर नर्मदाकाबेरिकाविमलामहाअघहर्णि। देविकाअरु
नदीपुण्या पुण्यमयतन कर्णि॥ हिरण्वतिका पुच्छवतिकावेद
स्मृति सुअमन्द। चर्मण्वतिका कौशिकी अरु भरी सलिल
विलंद॥ भीमरथिका बाहुदायमुना सुपावन रूप। सरस्वति
माहेन्द्रवानी नीलिका सुअनूप॥ तिमिहिं नन्दाफल्गुत्रिदिवा
भूमिभागा चारु। ब्रह्मसर अरु महाह्रद बरभरो नीर सुढार॥
तिमिहिं नैमिष परमपुष्कर चारुधर्मारण्य। कलिल अरु कुरु-
क्षेत्र शिवसर अरु प्रयागसुपुण्य॥ बिन्ध अरु हिमवानभूधर
मेरु निषध महान॥ गन्धमादन अंचनाभ सुचित्रकूटसुठान॥
रजत पर्वत नीलदर्दुर मलयगिरि अभिराम। तिमिहिं उन्नत
सोम गिरिबर भरो औषध माम॥ दिशा बिदिशा भूमिभूरुह
लतावृन्द अनूप। कहे तुमको तीर्थ यह हम परमपावनभूप॥
सुऋषि कक्षीवान औषिज तथा रैभ्यसधर्म। अंगिराभृगु
कण्वमेधा तिथि सुतिमिहीं पर्म॥ सु ऋषि औ बरहीं सुगुण
सों भरो परमसुजान। सुऋषि प्राची दिशामें ये रहत हैं मति
मान॥ उन्मुचू औ प्रमुचु स्वस्त्यत्रेय बीरसुकाय। मुमुचु औ
सुअगस्त्य ऊरधबाहु अरु सुदृढ़ाय॥ रहत दक्षिण दिशामें

ये सुऋषि आनँदछाय । रहत भजनानन्द पूर्ब्बकसकलबिघ्न बिहाय ॥ दीर्घतम सुउखंग गौतम तथाकश्यपपर्म । परिब्याध सुतथा एकताद्वित्तत्रितसधर्म ॥ सारस्वतऔ तिमिहि सह सौं- दर्य्यसौं ऋषि अभिराम । रहत पश्चिम दिशामें ये सु ऋषिवर बुधि धाम ॥ शक्तिअत्रि बशिष्ठ पाराशर्य बिश्वामित्र । भरद्वाज सधर्म अरु जमदग्नि परमपवित्र ॥ बिपुल देवलदेवशर्मा पर- शुराम सुजान । धौम्यकोहल हस्तिकाश्यप च्यवनतेजसवान॥ तिमिहि लोमशलोमहर्षण नाचिकेत सधर्म । श्वेत केतु सुति- मिहि उग्रश्रवा भार्गवपर्म ॥ लिये तेइनसबनको अभिरामना- मसुजान । जात ह्वै सब दूरि कल्मष प्रभा होति महान ।सुनहु अबतुम नृपनकेबर नामबरबुधिधाम । महाकल्मष हरणआनँद करण तेजसधाम ॥ नृप ययाति सुनहुष यदुपुरुसगर अरु दु- ष्यंत । धुन्धमार दिलीप अरुबर धृष्टरथ क्षितिकंत ॥ यौवना- श्व सुयवन अरुनृप जनक तिमिहि कृशाश्व । कोशलेश्वरतथा नृप अनरण्य अजाचित्राश्व ॥ हरिश्चन्द्र नृपाल रघुअरु भूप दशरथ पर्म । रामराक्षस हरण अरु शशबिन्दु मरुत सधर्म ॥ भगीरथ अरु ऐलदृढ़रथ महोदय बलवान । करंधम कुरु मां- धाता जन्हुदक्ष सुजान ॥ आदि श्री महिपाल पृथुसह धर्मअ- रु मुचकुन्द । मित्रभानसुजान औ त्रसदस्युश्वेतनरेन्द ॥ महा- भिष निमिआयुक्षुप अरु प्रतर्दन महिपाल । दिवो दाससुदास शान्तनु अरु प्रतीप बिशाल ॥ प्रियंकर प्राचीनबर्हि सुजानुजं- घनरेश ।कच्छसेनसु तथाबर इक्ष्वाकुभूप सुवेश ॥ प्रातउठि अरु तिमिहि सायंकाल माहीं नाम । लियेते इन सबनकोअघ मिटत अतिहीमाम ॥ बिघ्नकौनहुंहोत नहिं औ धर्मप्रापतहोत। बढ़त आयु सुकीर्ति तनमें होत पुष्टि उदोत ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेसप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः

जनमेजयउबाच ॥ दोहा ॥ भूप युधिष्ठिर धर्म सुनि अरु सुदान

बिधि पर्म। और कियो कछु होयसोकहिये मोहिं सधर्म ॥ वैशम्पायन-उवाच ॥ भीषमजूसों धर्मसुनि अरुसुदान बिधिचारु । फेरिकछु न पूछ्योरहे चुपह्वै बुद्धिअगारु ॥ तदनन्तर कछुबरमें व्यासपरम बुधिधाम। सुरसरितासुतसों वचन कहतभये इमिआम ॥ कुन्तीसुततुमसों सुन्यो ज्ञानधर्म अरुदान। तातेसंशयसब मिट्यौ भीषमसुनहुसुजान ॥ भूपयुधिष्ठिर कृष्णसह बैठे हैं तव पास ।इनकोपुरकोजायबे अबतुमकहियेआस ॥ येसुव्यासकेबचनसुनि गंगासुत मतिमान । मधुर बचन इमि भूपको कहत भयेबलवान ॥ हरिगीती ॥ बरनृप युधिष्ठिर जाहु अब तुम हस्तिनापुर को सुनो। ममबचन मानि सुजानि तुमअब औरमति हियमें गुनो ॥ दुखटरहु तेरे चित्तको सबकरहु यज्ञ बिधानसों । जिमिकिये भूपययाति मतिबर परम द्रव्यमहानसों ॥ नितरहो क्षत्रिय धर्ममें रत प्रजापालहु नीति सों । अरुपितर देवनको करो तुमताततृप्त सुरीतिसों ॥ बरसुहृद हैंजनजौन नृपसत्कार तुम तिनको करो । मुददेहु मित्रन को महानित नित्यपरम दया धरो ॥ जब उत्तरायण होय रबि तबपास मेरेआइयो । परिवार सहित समाज अपने भूपबेरन लाइयो ॥ सुनिपितामहके बैनये परनाम कहिगहिपायको । भोजात सह परिवार पाण्डव नगर बरसुखदायको ॥ धृतराष्ट्रगान्धारीहि आगे किये अतिही प्रेम सों । सह बासुदेव स्वभक्तको बरयुक्त कारणसुक्षेम सों ॥ अरु मंत्रि भ्रातन सहितऋषि नृपभयो पहुंचतनगरमें । सबदेखिबे को नगरवारे भये ठाढ़ेबगरमें

इतिश्रीशान्तिपर्वणिदानधर्मेअष्टाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः॥१२८॥

वैशम्पायनउवाच ॥ चरणदोहा ॥ तदनन्तरपुरबासी जेहैं नृपकेसंग सधर्म । बिदा करत भो तिनसबहिंनके आदर करिकेपर्म ॥ दोहा ॥ जिन नारिनकेहे हते रणमें पतिअरुबीर । अतिही पीड़ितहोयकैतिनकोदेखिसपीर ॥ दानअर्थदेवनतिन्हैं कोमल

कहिकै बैन । धीरजभयो धरावतो पाण्डवबरबुधिऐन ॥ प्राप्त होयकै राज्य को बली युधिष्ठिर भूप । पालत भयो प्रजाहिसो गहिकै नीति अनूप ॥ वेदवान बर द्विजनसों लैकै आशिर्वाद । गजपुरमें बसतो भयो भूपति सहमर्याद ॥ रामगीती ॥ ताअनन्तर उत्तरायण शयन आयेपर्म । कियोसुमिरण पितामहके बचनकोसहधर्म ॥ पुष्पमाला गन्ध चन्दन पीतअम्बर चारु । अगरु अरु बहुमोलके बरलेय रत्नसुढारु ॥ धृतराष्ट्र अरुगान्धारिको अरु पृथाको धीमान । करिसुआगे सहित भ्रातन अरु सहरि मुदवान ॥ युयुत्सु अरु सात्यकी सह और सहपरिवार । अग्निलैकै पितामहके होमकी सुखकार ॥ निकसतोभो हस्तिनापुर तेबलीमहिपाल । इन्द्रकोसो लसतभोसो स्वर्गतास बिशाल ॥ जायकै कुरुक्षेत्रमाहीं भयोप्रापत भूप । दर्शिबेकी पितामहको धरेप्रीति अनूप ॥ असित देवल तथा नारद व्यासबर बुधिधाम । रहेबाकी युद्धमें हेभूपजेअभिराम॥ सर्बते चहुंओरबैठे बीच सुरसरिनन्द । शयनशरकी सेजऊपर कियेबीर बिलन्द ॥ देखितिनको उतरि रथते सहित भ्रातन पर्म । छूयचरणहि करतभो परणाम भूप सधर्म ॥ तिमिहिंसब व्यासादि बिप्रनको सुकरि परनाम । पितामहको बचन ऐसे भयो कहत ललाम ॥ हेपितामह युधिष्ठिरहौं प्राप्तमैं तवपास। होहुजोतुम सुनत तोनृप कहौबर बुधिरास ॥ करौंका मैंउत्तरायण समयआयोतात । पुत्रतो धृतराष्ट्रबैठे पासतव अवदात॥ औकृपानिधि कृष्णबैठे पासहैं तवभूप । और जेते बचेरणके माहिं नृपति अनूप ॥ लखोतुम तिन सबनको बुधिऐन नैन उघारि । चाहिये यहिसमयमें जे सर्बमैं निरधारि ॥ करी हेतव पाहिप्रापत बस्तुहे भूपाल । और आज्ञाहोयसोमैं करौं बीर बिशाल ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ भूप युधिष्ठिरके बचन सुनिये भीष्मपर्म । आंखिखोलिकै सबनको देखतभये सधर्म ॥ तद-

नन्तर इमिकहतभे कुन्तीनन्दहि बैन। भानुउत्तरायण भये मैं भो परम सचैन॥ पैमैं शरकीसेजपर अट्ठावनदिनमाहिं।बीते हैं शतबर्षलौं सत्यकहतहौं तोहिं॥ माघ महीना प्राप्त भा यह उत्तम मनुजेश। तामाहीं द्वैअंशगे एकअंशहैशेश॥ शुक्लपक्ष की अष्टमी कैहै आजुसुजान। गंगासुत इमिपाण्डुको कहत भये मतिमान॥ जयकरी॥ भूप युधिष्ठिर सों इमिबैन। कहिकै भीषम बरबुधिऐन॥ धृतराष्ट्रहिको निकट बुलाय॥ कहतभये इमिबचननृराय॥ भीष्मउवाच॥ जानतहौतुम हेसुतधर्म्म। अरु हौ प्रज्ञावानअभर्म्म॥ बरबहुज्ञ बिप्रनकोपास। राखतहौ तुम बर बुधिरास॥ श्रुति अरु शास्त्रनको अवदात। जानतहौतुम निश्चय तात॥ जोभवितव्य होतहैसोय। ताको मेटि सकत नहिंकोय॥ तातेशोच न करहुसुजान। धीरजधारे रहोमहान॥ युधिष्ठिरादिक पांचौनन्द। अपनेहीतू जानुनरेन्द॥ रहिहैंनित तवसेवामाहिं। आज्ञाभङ्ग करैंगे नाहिं॥ धर्मवान इनको तू जानि। मैंहौं कहत तोहिं अनुमानि॥ क्रूरभाव इनमें नहिंनेक। निशिदिन धारेरहत बिबेक॥ रहेपुत्र तवदुष्ट महान। निशि दिन करत रहे अभिमान॥ क्रोधलोभ माहीं पगिपर्म्म। करत रहत हेसदा अधर्म्म॥ तिनकोतू शोचन करितात॥ जानुपा-ण्डवन सुत अवदात॥ आभीर॥ धृतराष्ट्रहि इमिबैन। कहिभी-षम बुधिऐन॥ बासुदेवको पर्म्म। इमिभो कहत सधर्म॥ भीष्म उबाच॥ हरिगीती॥ मैंकरतहौं परनाम तुमको कृपासिन्धु महान हे। तिहुंलोक नायक आपुहौ तुमसों न कोऊआनहे॥ गुण गायबे जोचहैं तबतौ गायकोऊ नासकै। नरकी कहैको सुनहु माधव जीभ शेषहुकीथकै॥ दोहा॥ जानहुमोको दासतुम कृष्ण कृपा करिपर्म। मोदकरण भवदुखहरण औढर ढरण सधर्म॥ हेपाण्डव तव शरणमें इनकी करत सहाय। जैसे तिमिहींकी-जिये नितनित तुम सुखदाय॥ दुर्योधनसों मैंकह्यो यहिबिधि

सों बहुबारु । जहांकृष्ण तहँ धर्महै धर्मजहां जयचारु ॥ ताते
तू श्रीकृष्णको कह्योमानि भूपाल । करुमिलाप पाण्डवनसों
तजिकै द्रोह बिशाल ॥ चरणाकुलक ॥ मान्यो कह्यो मूढ़ नहिंमेरो।
करतभयो अभिमान घनेरो ॥ बहुभूपनको नाशकरायो । आ-
पुहि मस्यो क्रोधसोंछायो ॥ दोहा ॥ कहेव्यासको मैंतुम्हैं जानत
हौं मुदधाम । देवनके तुम देवहौ नारायणअभिराम ॥ आभीर ॥
सुनहु कृष्ण मुदगेह । तजिहौं मैं अबदेह ॥ तवसुकृपाते पर्म ।
लहिहौं सुगति सशर्म ॥ बासुदेवउवाच ॥ दोहा ॥ तू सुमारकण्डेय
सो पिताभक्तहै पर्म । तिहिते तोबशमृत्युहै भीषमप्रज्ञसधर्म ॥
प्राप्तहोयगो बसुनको तूमैं जानततोहि । मुदितभयोहौं बचन
सुनि भीषम हरितन जोहि ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ तदनन्तर पाण्ड-
वन सह धृतराष्ट्रहि इमिबैन । कहतभये भीषमपरम महत म-
नीषाऐन ॥ आभीर ॥ अबहम तजिहैंदेह । सुनहु सर्बबुधिगेह ॥
सत्यमाहिं तुमसर्ब । रहियो निरतअखर्ब ॥ सबसों कहिइमि
बैन । भीषमबरबुधिऐन ॥क्रमसोंप्राणहिपर्म। रोंकतभयेसधर्म॥
तबभीषमकेप्रान । ऊरधभयेसुजान॥ दोहा ॥ प्राणहिंजिहिंजि-
हिं गात्रते कर्षत भये सुजान । रहित तीर होतो भयो सो सो
गात सुठान ॥ सब के लखतहि शररहित क्षणकमाहिंभोगात।
ताहि देखि बिस्मित भये सबहि प्रज्ञअवदात ॥ सब शरीरते
खैंचिकै आत्माको बुधिधाम । योगयुक्तिसों फोरिकै मूर्द्धाको
अभिराम ॥ उल्कालौं सो प्राप्त ह्वै शीघ्रहि नभके माहिं । क्षण
में अन्तर्द्धानभो फेरि लखिपस्यो नाहिं ॥ माघशुक्लकी अष्टमी
तिथिमें वरबलवान। गंगासुतभो मृत्युकोप्रापतसुनहुसुजान ॥
तदनन्तर पाण्डव बिदुर चारु दारु बहुल्याय । चिताबनावत
भे रुदन करते दुखसों छाय ॥ आच्छादित करि बस्त्रसों चारु
सुगन्ध लगाय । भये चितामें धरतते पुष्पमाल पहिराय ॥ धा-
रण कीन्हों छत्रबर युयुत्सु सुखसों छाय । चामर पंखाकरतभे

अर्जुन भीम सचाय॥ अरु दोऊ पगरीलिये ठाढ़े माद्रीनन्द। और सर्ब चहुंदिशि खरेदुखसों भरे बिलन्द॥ सह युधिष्ठिर धृतराष्ट्र अति दुखसों भरे महान। लगे चरणादिशि ह्वै खरे पंखाकरन सुजान॥ तदनन्तर चन्दन अगरु और सुगन्धअमन्द। आच्छादित करिकै चितातिनसों सुनहु नरेन्द॥ बिधिवत नृप धृतराष्ट्रबर करि प्रज्वलित कृशान। दाहक्रिया करते भये सुनहु भूप मति मान॥ दाह क्रिया करि जातभे गंगाको ते सर्ब। आगे करि धृतराष्ट्रको दुखसों भरे अखर्ब॥ कीन्हीं क्रिया तिलोदका सुर सरितामें जाय। नृपधृतराष्ट्रहि आदिसब रोवत कहि कहिहाय॥ तदनन्तर उठि सुरसरी जलमेंते अभिराम। भई बिकलारोवती भई शोकसों माम॥ मृतक क्रिया लखि पुत्रकी गंगादुखसों छाय। कढ़ी सलिलते रोवती बिकलाह्वै नरराय॥ तदनन्तर कौरवनसों कहत भई इमि तौन। कहतीहौं मैं जो सुनो सिगरे तुम बुधिभौन॥ रामगीती॥ अति पवित्र सुपुत्र मेरोपिता भक्तमहान। महाबीरयमान अरु बर महा मेधावान॥ पूर्बरणमें परशुराम महान भट सों पर्म। पराजयको प्राप्तभो नहिं बलीबीर सधर्म॥ दोहा॥ तौनबीर बलभौन को हतो शिखण्डी हाय। तिहिते औरहु दुख गयो मेरे हियमें छाय॥ प्राप्तभयो मोको परमसुतको शोकमहान। फटत न तऊ कठोर है मोहिय लोह समान॥ सोरठा॥ काशीनगरी बीच जीति स्वयम्बरमें नृपन। मो सुतपरम निभीचकन्याहरि ल्यावतभयो॥ तासमकोऊ नाहिं बलसोंअचलामें भयो। ताहि युद्धके माहिं मार्योहाय शिखण्डिने॥ दोहा॥ गंगाअतिरोवति भई कहिकहि ऐसे बैन। धीर्य्य धरावत ताहिभे कहिइमिहरि मुद ऐन॥ गंगेतू मति रुदनकरु धीरजधरु हिय माहिं। परम लोकको प्राप्तभो तोसुत संशय नाहिं॥ सोरठा॥ तबभो होसुत जौन सो बसुहौसुनु सुरसरी। शापदोष ते तौन मानुषता पाई

रही ॥ दोहा ॥ अर्जुन ताको युद्धमें हतो शिखण्डीनाहिं । ताते तू मत शोक करु गंगाहिय के माहिं ॥ मारिसकतनाहिं इन्द्रहू भीषमको रण माहिं । स्वेच्छामों मरिकै गयो दिवको संशय नाहिं ॥ तातेतू हे सुरसरी करै शोकमतिपर्म । मनुजताहि तजि पुत्र तो बसुभो फेरि सधर्म ॥ सुनिसुबैन ये कृष्ण के गंगासुनहु नरेश । छाड़ि शोक करती भई जलके माहिं प्रवेश ॥ कृष्ण सहित ते सर्बकरि गंगाकोसत्कार । आज्ञालहि फिरतेभये सुनु नृप बुद्धि अगार ॥

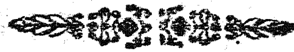
स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभि-
गामिनाश्रीबन्दिजनकाशिवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुल
नाथस्यात्मजगोपीनाथस्याशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचि-
तेभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिदानधर्मेनव-
बिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२९ ॥

दोहा ॥ दानधर्म्म दर्पणपरम बुधजनकोसुखदाय ।
श्रीउदित भूपालकी नितहीकरो सहाय ॥
श्रावण शुक्ल त्रयोदशी सोमबारशुभदीस ।
शांतिपर्ब पूरण भयो दशनौसौ इकतीस ॥

इतिशान्तिपर्वदानधर्मःसमाप्तः ॥



# महाभारतदर्पणे ॥



अश्वमेधपर्बदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहि नौमि । वन्दि गिराब्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ भूकृतभूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहिभजिभणतयह भाषाभार्तम-हान ॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहुशत कोटिअमन्द ।ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥ सोरठा ॥ बन्दौंकपि बर बीर रामपरमाप्रिय पारषद । मंगलमूरति धीरभारतस्वरस्थ ध्वजस्थ बर ॥ सुमिरि उच्छलनि अक्ष उदधि उलंघनसमय की । भारतसमुद्प्रतक्ष भाषा करिचाहततरयो ॥ दोहा ॥सकल यज्ञको फलमिलत कीन्हें याकोध्यान । ताहिध्यायभाषा रचत अश्वमेध मुद दान ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ जयकरी ॥ उदक क्रियाकरि सुरसरि तीर । गहिअति दुसह शोककी पीर ॥ महिमधि बैठि युधिष्ठिर भूप । रुदन लगेकै बिह्वल रूप ॥ नृपहि बिकललखि वृद्धमहीप । कहत भये सुनु कुरुकुल दीप ॥ अब करतव्यक्रिया बिधि जौन । धीरज धारि करोसबतौन ॥ तुमगहिक्षात्र धर्म्म करियुद्ध । जीतेभूमि पायजय शुद्ध ॥ करोभोगअब शोच बिहाय । उचित न शोच जीतिइमिपाय ॥ हमहिं दम्पतिहि

शोचबयोग । मरेजासु शत सुवनश्ररोग ॥ बिदुरब्यास भीषम के बैन । नहिंमान्यो कतशोकलहैन ॥ श्रबमतिकरौ शोचतुम तात । पालौप्रजा भूमिश्रवदात ॥ इमिकहिरहे वृद्धनृपमौन । तबइमि बोले रुक्मिणिरौन ॥ सुनोभूप कीन्हें श्रतिशोक । तपितहोत सबपितर सश्रोक ॥ तातेत्यागि शोकको लेश । करो कर्म्मजो कहत नरेश ॥ यज्ञकरौ दक्षिणा दैभूरि । देवन पूजो श्रानँदपूरि ॥ भीषम ब्यास बिदुर मतिधाम । तिनसों सुने धर्म्म श्रभिराम ॥ तजि निजराज धर्म्मकी गैल । गहत मूढ़ जनके बद फैल ॥ रोयेमरो मिलत नहिं श्राय । सोगुणि भूपति शोकबिहाय ॥ करोजौन करतव्यसनेम । क्षत्रिहिरण में मरिबोक्षेम ॥ यहसुनि कहे युधिष्ठिर भूप । प्रभुतुम सिखवत नीति श्रनूप ॥ गुरू पितामह बन्धुन मारि । रहोजात नहिंधी-रज धारि ॥ जो श्रनुशासन देहु सचाय । तौ हम बसैंबिपिनमें जाय ॥ प्रभुश्रबकहा करैं हमतौन ॥मिटैपाप यह कीन्हें जौन ॥ यहसुनि ब्यास मुनीश बिचारि । कहे युधिष्ठिर सों निरधारि ॥ नृप सुनु सर्व धर्म्म व्यवहार । फिरि फिरि कहत कहत जिमि बार ॥ वृथाबके हम परो लखाय । नहिं तुम सुने नेकु मनला-य ॥ वृद्धजीविका जाकी शुद्ध । ताको मरिबो कौन विरुद्ध ॥ साधुश्रसाधु कर्म्म जो पीन । पुरुषकरतहवै दैवाधीन ॥ यामें कहा शोचको काम । निज पहँ थापतपापश्रक्षाम ॥ कीन्हे स-विधि यज्ञतपदान । मिटतपापयह शास्त्रनिनान ॥ तातेश्रश्व-मेध मखपर्म्म । करोजानि भूपन को धर्म्म ॥ यहसुनि धर्मभूप हित जानि । कहेब्यासमुनि सोंश्रनुमानि ॥ मुनि हमहीनद्रव्य यहिकाल । कैसे करिये यज्ञ बिशाल ॥ भूरि दान दीन्हें बिनु तात । सिद्धन होत यज्ञ श्रवदात ॥ दोहा ॥ जिनके पतिसुतव-धिगये घोरयुद्ध मधि श्राय । तिन युवतिनसों लेबधन, उचित नहीं मुनिराय ॥ ताते मुनिश्रनुमान करि कहो उचितजोमंत्र ।

जेहिप्रकार बिधिवत सधै बाजिमेधको तंत्र ॥ चौपाई ॥ यहसुनि व्यासमुनीश सुज्ञानी। कहेधर्म नृपसोंअनुमानी ॥ पूर्वमरुतभू यशकारय। अश्वमेधमखकीन्होआरय॥ तहँलहिदानबिप्रमन भाये। नहिंजोचलैतौनतजिआये ॥ हमकहिदेततौनलैआयो। अश्वमेधकरिआनँदछायो ॥ ऐसोव्यासदेवसोंसुनिकै।धर्म्मभूप बूझतमेंगुनिकै ॥ कबमखकियोमरुतनरनायक। कहोतौनमुनि मंगल दायक॥ सुनि मुनिकहे सुनो नरपालक। भयोमरुत जब खल कुलघालक ॥ नृप कृतयुगमें पुहुमीत्राता।भयो दण्डधर मनुविख्याता॥ तासुतभो प्रसंधिनरनाहू । तासुसुवन क्षुपदीरघ बाहू॥ तासुसुवन इक्ष्वाकु महीपा। भये ताहिशत सुत कुल दीपा ॥ नृपति विंश तिनमें गुरुभ्राता। तासुविश्वास पुत्रमहि त्राता ॥ पन्द्रहसुवन प्रवल भेताके। जेठे खनीनेत्र बरभाके ॥ तासुसुवर्चस सुवनसुसाजा ॥ तासुसुवन कारन्धमराजा॥त्रेतामें कारन्धम भूपा। सार्वभौम नृपभयोअनूपा ॥ जाकोसुवन मरुत धनुधारी। भयोविष्णुसम भूतलचारी ॥ सोहिम गिरिकेउत्तर आसा। कियो यज्ञकरिधर्म्म बिलासा ॥ दोहा ॥ व्यासदेवके बचन सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। कहो सुमुनि बिस्तारकरि यह इतिहास अनूप ॥ व्यासउवाच ॥ भये अंगिरसके प्रगट दोयपुत्र तप धाम। प्रथमवृहस्पति द्वितिय हे मुनि सम्बर्त सुनाम ॥ तिनयुग बन्धुन सों नृपति भोअति दुखदाबिरोध। तबग्रहतजिकै बनगयो छोटो अनुज सुबोध ॥ रोला॥ तदनु असुरणजीति वासव इन्द्रपद लहि भूप। इबिधि गुरु सों कहतभे नहिं और मम अनुरूप ॥ मरुत नृप ममसदृश महिपर तासुढिग तुम जाय।यज्ञमतिकरवाइयो यह करोपण मनलाय॥ होकरन्धम मरुत नृपको पितामह अभिराम। ताहि करवाये अमित मखअंगिरस तपधाम ॥ तथा तेहि करवाइबोमख चहौतुमतौ तात। जाहु उत जो रहौ इततौ करोपण अवदात ॥ बचनयह

सुनि जीवबोले तुम्हहिं तजिन कदापि । भूमि पहँ करवाइबे मखकुण्ड वेदी थापि ॥ जीवके ये बचन सुनिकैशक्रत्यागेशोच। इहै चाह्यो यज्ञकीबो मरुत भूप अपोच ॥ यज्ञकीबोचाहिभूपति जायसुरगुरुपास । कहेहम मखकियो चाहत करोपूरणआसा ॥ कहेसुरगुरु जाहुभूपति नरपतिनकहँयाग । जायहमकरवाइबेको गहतनाहिं अनुराग ॥ सुरणसह सुरराजसो यजमान अनुपम पाय । नरनकहँ यजमान करिबो कौनमहिपै जाय ॥ कहे नृप तो पिता ऋषिमम पितामहको पूर्व । यज्ञकरवायो तथातुम करो सो बिधिगूर्ब ॥ कहेमुनि सुरराजसो हम कियेपण यहि हेत । जाहुनृप निज बिप्रसों यह कहो कारजचेत ॥ जीव के ये बचन सुनिकै फिरोभूप लजाय । तहांरहि गुणरटतनारद मिलेमगमें आय ॥ दीनमन लखिभूपको मुनि भयेबूझतभेद। दीनमनहो भूपकत कहलहे हो निरबेद ॥ सुमुनिके सुनिबचन भूपति कहे सो वृत्तान्त। भूप सों तब कहतभे इमि सुमुनिनारद दान्त ॥ अंगिरसको पुत्रलघु सम्बर्त मुनि तपधाम । भूप तेहि तुमल्यायकै मखकरो पूरणकाम ॥ भ्रमततीरथ काशिकाकोगयो सोयहिकाल। जाइतहँसम्बादमम कहि ल्याइयोनिजनाल ॥ दोहा ॥ यहसुनि भूपति मोदलहि जाइकाशिका द्वार। लखिसम्बर्तहि जोरिकर पीछूचलो उदार ॥ लखिभूपाहि सम्बर्तमुनि बटतरु तर करिगौन । कहेभूप सों भेदममतुम्हैं बतायो कौन ॥ सांचकहो नहिं शीश तुव फाटह्वैहैबहुटूक ।यहसुनि नृपसम्बर्त ते बोल बचन अचूक ॥ चौपाई ॥ यह उपदेश दिये मुनि नारद । मुनि तुम ममगुरुपुत्र बिशारद ॥ तुवप्रसाद लहिकै हे आरय। हममख कियो चहत हितकारय ॥ यहसुनि मुनि भूपति सों भाखे । हमगृह त्यागि बिपिन अभिलाखे ॥ प्रथमबृहस्पति सों यह कहहू । बैन करैं तबहमकहँ गहहू ॥ तब नृप सब वृत्तान्त सुनाये । जो सुरगुरुसों सुनि फिरि आये ॥ यह सुनि कहतभये

मुनि नायक। नृप तुम यज्ञकरो निजलायक॥ हम चलियज्ञकराइब विधि सों। जाते होहु शक्र सम रिधिसों॥ जो हिमवान शैलबर सीको। ताढिग मुंजवान गिरि नीको॥ ताके मध्यगुहा अभिरामा। तहांतपत तप शंभुसवामा॥ सुरगन्धर्व यक्षऋषि जेते। तहां बिहार करैं सब तेते॥ नृप ताके ढिगहै अति पावनि। जात रूपकी खानि सोहावनि॥ तेहिकुबेर के गणसह साजा। सदारहत रक्षत सुनुराजा॥ ताते तुम करि शिवकोपूजन। करि प्रणाम करि अस्तुति कूजन॥ लैधन तौनकरो मखरम्भन। सुनि सो कियो भूमिधुर थम्भन॥ सोसुधि लहि सुरगुरु अनखाने। गुणि अति अनरथ हिये सकाने॥ शक्र गुरुहि अति चिन्तितज्वैकै। बूझै भेद भीतिसोंग्वैकै॥ दोहा॥ कहेबृहस्पति शक्रसों मरुतआइ ममपास। यज्ञकरावनहेतभो याचत पूरित आस॥ तो संमत अनुमानि हम नहिंमान्योसो वैन। अबसम्बर्तहिल्यायसो यज्ञकरतलहिचैन॥ बृहस्पतिरुवाच॥ नहिं सपत्नकी वृद्धि यशकाहू सोहीजात। जानिवृद्धि सम्बर्त की हम बिवरण हे तात॥ इन्द्रउवाच॥ तजो शोच हम अग्नि कहँ भेजतसो समुझाय। कहिहि भूपसों भूपमख करिहैं तुम्हैं बुलाय॥ लहि अनुशासन शक्रकी अग्नि मरुत पहँ आय। अर्घ पाद्यलहि नृपति सों कहतभये समुझाय॥ अग्निरुवाच॥ नृप हम आये शक्रको लेयह शुभद सँदेश। तजिसंबर्तहि जीव कहँ ऋत्विजकरो शुभेश॥ जौन लोकबसिजौन फल ईछत भूभर्त्तार। तप निधि सुर गुरु तत्त्वविद जीवतासु दातार॥ जायइतो संवर्तमम नहिं सुरगुरुसुप्रयोग। ह्वै महेंद्रको परमगुरु नहिंमम ऋत्विजयोग॥ तब संबर्तक अग्निसों कहे नयनकरि बक्र। भस्मित करिहों तोहिं नहिं शीघ्रजाहुजहँ शक्र॥ यहसुनि पावक भीतभरि सुरनायक पहँजाय। निजनृपअरु संबर्तकीबातातदएसुनाय॥ इन्द्रउवाच॥ फेरिजायतुमइमिकहौनहिंमानिहितो

ताहि । हठकरिबाधिहौं जीवहितसहबज्रहिबरबाहि ॥ अग्निरुवाच ॥ अग्निकहो हमजावनाहिं गुणितहंइतोविशेष । कह्योविप्र अब तोहि लखि करिहौं भस्माशेष ॥ जयकरी ॥ सुनिसुरपति करिको-धअखर्ब । होधृतराष्ट्रनामगन्धर्ब ॥ तासोंकहे मरुतपहँ जाय । ममसँदेशयहकहो बुझाय ॥ ऋषिसंबर्तहि दूरिदुराय । जीव-हि ऋत्विजकरैं सचाय ॥ सुनि गन्धर्ब आयगहिचैन । कह्यो म-रुत नृपसों यहबैन ॥ मरुतउवाच ॥ शक्रहि जीवकरावहिं कर्म्म । सम्बर्तक ममऋत्विज पर्म्म ॥ इतनेमें सुरपति तेहिपर्ब । नभ पहँगरजत भये सगर्ब ॥ तबगंधर्ब कह्यो सुनुभूप । तोबधचा-हतशक्र अनूप ॥ नभपहँ गरजत सन्मुख आय । बाहनचढ़-त बज्रदृढ़ धाय ॥ यहसुनिमरुत महीप सचेत । सम्बर्तकहि सुनायो हेत ॥ सुनिबोल्यो सम्बर्त उदार । मतिभय गहोभूमि भर्तार ॥ कहाबज्र का शक्र कठोर । तपप्रभावममहा अथो-र ॥ जैसो निरखन चहौ उताल । तैसोलखो इन्द्रकोहाल ॥सु-निनृप कह्योशीघ्र सुरराज । इत चलि आवै सहितसमाज ॥ मुनि प्रभाव लहिनृप तेहिकाल । तुरिततहां आयेसुरपाल ॥ मिलिनृप सुरपति मुनिमुदपूरि । किये परस्परबार्ताभूरि ॥ सर-स प्रेममहि बैर बिहाय । सुरपति कोअनुशासनपाय ॥ अप्सर किन्नर यक्ष समस्त । बसु सुमनस गन्धर्ब प्रशस्त ॥ सादर तहांराखि चिरकाल । कीन्हौयज्ञमरुत क्षितिपाल ॥ अगणित तहां द्रब्यके ढेर । सोलै बिलसो यथाकुबेर ॥ ब्यासदेवके ऐसे बैन । सुनिनृप धर्म्मपाय अतिचैन ॥ राजनीतिको समुझिसु-तंत्र । कृष्णचन्द्र सों बूझेमंत्र ॥ अबहमसों कछु कह्यो न जा-त । अबजो उचित कहोसो तात ॥ कह कृष्ण सुनुभूप प्रबीन । सबजग होत मृत्यु आधीन ॥ अब इतिहास कहतहों एक । भूप सुनहु सो सहित बिबेक ॥ बृत्रासुर अतिछली अमान । हर्यो भूमिको गन्ध महान ॥ बज्र तज्यो तापै मघवान । धसोबारि स-

धिवृत्र अमान ॥ बज्रहन्यो फिरि तापहँ शक्र । तबरस हरिसों दैयत बक्र ॥ ढुरो तेजमधि ओज बढ़ाय । हन्यो बज्रफिर शक्र रिसाय ॥ हवै ताड़ित हरिसु बिषयरूप । जायवायु माधिबीर अनूप ॥ हर्यो बायुको बिषयसमाज । तहँफिरि बज्रहन्यो सुरराज ॥ तबधासि गगन मध्यसोबीर । हर्योशब्दगुणपरम गँभीर ॥ तब मघवा करि ऋषि अतिचण्ड । हन्योवृत्रकहँबज्रउदण्ड ॥ दोहा ॥ तब वृत्रासुर शक्रके तनमधि प्रबिशिसडौर । हर्यो बिषय मोहितभये शक्रसुमन शिरमौर ॥ तबवशिष्ठ चिन्तित कियो चेतिबज्रबर वाहि । निजगात्रस्य अदृश्यतेहि बध्योशक्र जयचाहि ॥ एकपिताकेपुत्रइमि लरेमरेनृपपूर्व । क्षात्रधर्म्मयह सिद्धहैशोचकरो मतिगूर्व ॥ रोला ॥ लहे सुख दुख रहत सुमिरत सुपटु पुरुष प्रबीन । परे दुख सुखकरत सुमिरन होत नाहिं अधीन ॥ सभामधिमेंद्रौपदीकी भईही गतिजौन । कर्णजो दुरबचन भाष्यो सुरति कीजै तौन ॥ जरत बचि कढ़िलाख गृहसों सह्योजो दुख घोर । बिपिन को दुख समुझि भूपति गुनोयह दुखथोर ॥ दोयअक्षर मृत्युनृपअरु ब्रह्मसुबरणतीन । होतिमृत्युममेति अरुनममेतिब्रह्म अहीन ॥ ब्रह्मशाश्वतसुबुधिसों गुनित्यागि सिगरोशोच । अश्वमेध सुयज्ञ करिबे को करो अब रोच ॥ इबिधि के बहु भांति के सुनि कृष्ण प्रभु के बैन । धर्म्म भूपति शोक तजिकै भये समुदसचैन ॥ पूजि बिप्रन प्रजन कहँ दैधीर साहस भूप । भीष्मकी करि क्रियालहिकै सुदिन स्वच्छ अनूप ॥ भूरि दक्षिणा भूसुरनदै सुनत मंगलचार । सहित नृप धृतराष्ट्र प्रबिशे पुरी मध्यउदार ॥ दोहा ॥ यथाउचित शुचिशुभ थलनि करि निबास मतिमान । पूजि भूसुरन देत भेमणिमणि पुहमीदान ॥ लगे प्रजापालन करन नीति निपुण नृपधर्म्म । शुचिबसु बन्धुनसहित पटुज्ञाता शुद्ध सुकर्म ॥

इतिश्रीअश्वमेधपर्वणियुधिष्ठिरराज्यप्राप्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बैशम्पायनबाच ॥ दोहा ॥ रामकृष्णश्रीरमणकी लहिकैकृपाअनू-
प । लगे प्रजापालन करन मुदित युधिष्ठिर भूप ॥ रोला ॥ कछू
दिन रहि तहांकेशव पार्थ पूरितमोद । इन्द्रप्रस्थ सुसभामधि
फिरिगये करतबिनोद ॥ तहां केशव कहे कितने कथा अरु इ-
तिहास । कहतभेफिरिपार्थसों इमिबिशदबीरबिलास ॥ प्रबल
अरिसों युद्ध करिकै बिहित धर्म्म नरेश । पार्थतेरे बाहुबलसों
लहेबिजय सुभेश ॥ सकलपाण्डव मोहिं अति प्रियइतोऔर
नआन। धर्म्मभूपहि त्यागिहमनहिं चहत कितहूजान ॥ द्वारका
बिनुलखेबीतो बहुत दिनइतमोहि । तुम्हेंसहतहँचलोचाहत
परम आनँदजोहि ॥ पार्थतुम कहँरुचैतोचलि धर्म्मनृपकेपास।
हमैंसह उतचलन कहँ तुम कहौ तजिकैत्रास ॥ गयेप्राणौतासु
अप्रिय करबहम न कदापि । जौन कहिहैं धर्म नृपसोंकरबहिय
में थापि ॥ पैन अब इत रहनको कछु अति प्रयोजन तात ।
प्रबलभूप अशत्रु बिलसत राज्य लहि अवदात ॥ बचन यह
सुनि कहे पारथ सुनो यदुकुल मौर । तत्त्व बार्त्ता सुनो चाहत
कहो कछु यहि ठौर । बचन यह सुनि मोदि केशव कहे करि
अनुमान । पूर्वको इतिहासभाषत सुनो सो मति मान ॥ पूर्वब्रा-
ह्मण एक आयो स्वर्गते मम पास । पूजि बिधिवत ताहि हम
इमि कियो बाक बिलास ॥ बिप्र आशय समुझि मम इमिक-
ह्त भोहे पार्थ । कृष्ण चाहत सुन्यो हम सों कहत तत्त्वयथार्थ॥
परम ज्ञाता तत्त्वकोहौं बिप्र बर्य महान । जासुगति सर्वत्रज्ञाप-
क सर्ब कर्म बिधान ॥ तासुसेवन कियो कोऊबिप्र ब्राह्मणएक ।
सिद्धकै परसन्नतासों कह्यो बुद्धि बिबेक ॥ कर्म्म बशपरिजीव
भरमत कर्म्म फल दातार । मिलत क्रमसोंलोक सिगरेकर्मके
अधिकार ॥ पितामातापुत्रभ्राता पुत्र हित समुदाय । जीवदेख-
तकर्मबशपरियोनि अगणितआय॥जातआवत थिरतनिपतत
चढ़त निपतत फेरि । लहत सुख दुखबिबिध बिधिके कर्मगति

सों घेरि॥ जरा बाधा बिसनरोग अनेक बिधिके खेद। दुसह यमपुर यातनायह कर्म फलकोभेद॥ विप्र इमिबहुबारकुत्सित कर्मको करि भोग। पाय सद्गुरु कियो बुद्धि बिचार अमलप्रयोग॥ लहे तब हम सिद्धि ऐसी अधिक लहिहैं और॥लहब उत्तमसुपद इमि करि ब्रह्मचिंतनजोर॥ बिप्र फिरि ममआगमन नाहिं होयगो यहि लोक। ब्रह्मपदअव्यक्त तामधि लहब अव्यय ओक॥ वचन यह सुनि बिप्र काश्यपकहत भोअनुमानि। देह कैसेहोत च्युतकिमिहोत कहिये जानि॥कष्टतेसंसारकै किमि छुटत कहिये तौन। प्रकृति सों छुटि जीव कैसे करत पर पद गौन॥ दोहा॥ यह सुप्रश्न सुनि सिद्धि द्विज कहत भयोसमुझाय। आयू पूरे पतत तन कछु उपद्रव पाय॥ देह प्राप्तजिमि होतहै सुनो तौन व्याख्यान। जीवदेह तजिजाय उत भोगि कर्म परमान॥ रज बीरज संयोग भव पिण्ड तासुमधि आय। सुनु द्विजाति निज करम के रूप क्षेत्र सो पाय॥ जिमि तुमपूरितगेह कहँ दीपक करत प्रकास। तथाप्रकाशत देहकहँ जीव आय करि बास॥ समय पाय ह्वै बायु बश कढ़त योनिमग पाय। यहि प्रकारते लेत हैं जन्म जीव इत आय॥ पूर्ब कर्मअनुसार लिपिलिखिदीन्हों करतार। भोग करत सो अशुभशुभ सो प्रारब्ध उचार॥ जिमिदुख सों संसारके छूटतजीवसचैन। सो सुनि बिप्र बिचार करु संशय नेकुरहै न॥ गुनि अनित्यसंसारकहँ इन्द्रिजीत रहि दक्ष। सुखदुखलाभअलाभ महँ रहि समभावप्रतक्ष॥ करै फलाशा त्याग करि बिधिवत उत्तमकर्म। रहि बैराग्य सुबुद्धिगहि पालन करै सुधर्म॥ इमि साधन करि जीव द्विज जगदुख सों छुटि जात। अब सो सुनिये जीव जिमि परपद पायबिभात॥ अजन अघोप सुठौर मधि कै गिरिकन्दर मांह। अचल ध्यान धरि थिररहै तिमिन चलै जिमि छांह॥ जेहि प्रकार सैंधव शिला बारिदमें मिलिजाय। शोधि मनहिं

तिमि ब्रह्ममें रहै सदालपटाय ॥ यहिप्रकार योगस्थ रहि जीव त्यागि यह देह । अव्यय पर अस्थान लहि बिलसत सहितसनेह ॥ सिद्धउवाच ॥ यह प्रश्नोत्तर सुनि तहाँ काश्यप विप्रसुजान । फेरि प्रश्न इमि करत भो सुनो कृष्ण मतिमान ॥ भोजन कीजै अन्न सों रस शोणित किमि होत । मांसरुधिर अरु अस्थि किमि होत कहौ ताजिओत ॥ केहि बिधि बढ़त गातबल जीवबसत कित तत्र । सुमुनि कहौ समुझाय जिमिआत्माबिलसत अत्र ॥ सुनो कृष्ण यहप्रश्न सुनि हम इमिकहे बुझाय। सबिधि आत्म दर्शन किये यह सुभेद लखिजाय ॥ चक्षुरादि इन्द्रियन सोंहै न दृश्ययहभाव । ज्ञान दीप दीपित भये मनयह लखत बनाव ॥ सुनो कृष्ण समुझायइमि बिदा कियो हमताहि । पारथइमि कहिसिद्ध वह गुप्तभयो जयचाहि ॥ कृष्णउवाच॥ और एक इतिहास हम कहत सुनहु सो पार्थ । पूर्व बिप्रदम्पति रहे ज्ञातातत्त्वयथार्थ ॥ एक समयलहि ब्राह्मणीकरि हियरे अनुमान । कहत भई इमि सुपति सों सुनोपार्थ मति मान ॥ न्यस्तकर्म जेते लहतकौन लोक हे नाथ । कौनलोकमो जाति हे भार्यापति केसाथ ॥ यह सुनि पण्डित बिप्र हँसिकहतभयो इमि बैन । प्रियकर्म कीन्हे बिना कोऊ कबहुं रहै न ॥ वेदउक्त शुचिकर्मको करत मोह बशत्याग । जेहि कीन्हे बिनुअनतमाहिं अब शिर हत सो लाग ॥ शब्द अरुपरश रूपरसगन्ध बिषय जो सर्ब । ग्रहण न तिनके स्वाद को सो संन्यास अखर्ब ॥ प्राण अपान समान अरु व्यानउदान समस्त । इनको शुचिब्यापार करि चिन्ततप्रभुहि प्रशस्त ॥ घ्राताभक्षयिता तथा श्रोताद्रष्टा चारु । अरु स्पर्शयितप्रभुहि समुझतसुबुधि उदारु ॥ ध्येय आदि जे बस्तु हैं तिन्हैं बिचारत जौन । हबिष अग्नि होतादि कहँ गुणमति मानत तौन ॥ श्रवण त्वचा चखजीभि अरुनासा अरु पगपानि । अरुउपस्थ येदश तिन्हैं होताली जैजानि॥

वाक्यक्रियाअरु शब्दरससमन्ध अस्परशरूप। रेतमूत्रमलत्याग ये हैं दश अविष अनूप॥ दिशिमहि रवि शशिअग्नि अरु इन्द्र प्रजापतिमित्र। बिष्णु बायुये दश सुनो हैंसब अग्निविचित्र॥ विषय समधि अरु चित अवाये विभागमखअंग। जे निरखतते लहतहैं परपद भरे उमंग॥ यहि प्रकार सद्वार्त्ताकहि सुनि करि चरितार्थ। सदल चले हास्तिन नगर रथचढ़िकेशव पार्थ॥ चयकरी॥ तहँ मगमें पारथमतिमान। कहेकृष्ण सोंकरि अनुमान॥ नाथआपके कृपा प्रसाद। पांडवलहेबिजय अह्लाद॥ कुरुदलदारुणसमुदअपार। विजयपाइहवै ताकेपार॥ लहे अकण्टक राज्य महान। प्रभुतुम जगपालक भगवान॥ सबजगतो इहाअनुसार। होत नशत नहिं और बिचार॥ इविधि प्रशंसतसहितसनेह। गेधृतराष्ट्रभूपके गेह॥ तहँधृतराष्ट्र विदुर नृप धर्म। भीम नकुल सहदेव अभर्म॥गान्धारीकुन्त्यादिक बाल। जायतहां निरखे क्षितिपाल॥ यथा उचित आशिषपरनाम। कहे सुने बरबल बुधि धाम॥ रहि तहँ करिबार्त्ता अभिराम। किये ब्यतीत दिवस सब याम॥ निशिलहि नृप धृतराष्ट्र सचैन। किये बिसर्जन कहिमृदु बैन॥ तब पारथके गृहमधि जाय। कृष्णचन्द्र सों निशा बिताय॥ लहिप्रभातकरिआह्निक कर्म। गये पार्थसह जहँ नृप धर्म॥ लखिकेशवहि धर्म करि नेम। करि आसीन कहे गाहिप्रेम॥ प्रभुदीजे अनुशासन जौन। पूरितप्रेम करैं हम तौन॥ यह सुनिकहे पार्थ मति मान। केशव चाहत निजपुर जान॥ यह सुनि बोले धर्म नरेश। उचित करत जो कृष्ण निदेश॥ जाय द्वारकापुरी बिभाति। मोहि रहेहु समुभतदिनराति॥ माता पिता बन्धुसमुदाय। मिलि सबजनसों देखिदेखाय॥ फिरि मम अश्वमेधमखमाह। आयहु श्री यदुकुलके नाह॥ हमैं भयोजो मणिधन लाहु। जो चाहोसो लीन्हें जाहु॥ यह सुनिकहेकृष्णअवदात।

मम धन तुव तुव धन मम तात ॥ यहसुनि भूप केशवहिपूजि। कीन्हें बिदा सुबानी कूजि ॥ लहि नृप को सम्मत सुखदाय। कृष्ण सुभद्रहि सुरथचढ़ाय ॥ रथचढ़िचले द्वारकाकोद। संग चलेसात्यकि गहिमोद ॥ पठवनचले आर्जुनभीम। बिदुर नकुल सहदेव अधीम ॥ चलिकछुदूरि कृष्णअनुमानि। तिन्हें बिदा कीन्हें सनूमानि ॥ मगमें निरखत सगुण अनेक। चले द्वारका पालनटेक ॥ मगमेंतहां मिलतभेआय। सुमुनिउतंक मोदसरसाय ॥ प्रभुसोंपूजित ह्वै तेहिठौर। सुमुनिभये बूझत करिगौर ॥ हैं कुरु पांडव कुशल ससैन। महाराजसुत बिक्रम ऐन॥ यहसुनि कृष्णचन्द्र तेहिपर्ब। दये सुनाय ब्यवस्था सर्ब ॥ दोहा ॥ सुनि बिनाश कुरुबंशको मुनिबोले अनखाय। बिनतो चाहे नहिं भयो ऐसोअनर अचाय॥ सबप्रपंच गुणि कृष्णतो पूरहिये परिताप। क्रोधरोकिनहिं सकतहम देन चहतहौं शाप॥ यहसुनि केशव कहतभे क्षमा गहौमुनिराज। बिशद तत्त्व अध्यात्म सुनि देहु शापनिज राज ॥ यहसुनिकै उत्तंकमुनि बोले क्रोधबिहाय। यहसुतत्त्व अध्यात्मगुण केशवकहौबुझाय॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ रोला ॥ सत्वरज तम गुणनि कहँ मम भावजानो तात। रुद्रबसुसब सुरनकेहम प्रभव हैं अवदात ॥ मोहिं मधिसब भूत अरु सबभूत मधिममबास। सत असत क्षरअरुअक्षरहम करतपूरण आस ॥ चारि आश्रम धर्म बैदिक त्रै ममात्मकसर्ब। बेद चरु हबि यूप मख हममंत्रसोम अखर्ब ॥ सकलउद्गाता सदा मम करत अस्तुतिनौमि। धर्महमहस धर्मरक्षक धर्मकर्ता सौमि॥ बिष्णुब्रह्मा इन्द्र शिव हम भूतग्रामसमस्त। धर्मरक्षण हेतुहम अवतार लेत प्रशस्त॥ यक्ष दैयत नाग सुर गंधर्ब किन्नर जौन। जात हमजेहि योनितेहि बिधि रचतहे मति भौन ॥ धर्मत्यागि अनीति गाहिकै किये कौरवयुद्ध। युद्धमधि मरिगये सुरपुरहोततुमक्त क्रुद्ध ॥ मुनिउतंकसु वचन यहसुनि

कहे हे जगदीश। तत्त्वयह सुनिआजमम भ्रम गयोविश्वेवीश॥ नाथअब दरशाइये निज बिश्वरूपअनूप। कृष्णतब दरशाय दीन्हें चारुविश्वसरूप॥ लखेहेकुरुक्षेत्र मेंजोरूपअनुपमपार्थ। देखिसो उत्तंक अस्तुति किये जानियथार्थ॥ कृष्ण तबउत्तंक मुनिसों कहेसुनुहेबिप्र। जौनतुमबरदान मांगहु देहिं हमसो क्षिप्र॥ बचनयहसुनिकह्यो मुनिउत्तंकआनँदछाय। तृषितहवै हमचहैंजहँ तहँ दिहेउदर्शनआय॥ कृष्णबोलितथास्तु तबगे द्वारकाशुभभेश। बिप्रक्रमसोंकछूदिनमेंजातभोमरुदेश॥फिरत तहँहवै तृषितकृष्णहि भयोसुमिरततौन। मिलोआगेआइतहँ चाण्डाल बिक्रमभौन॥श्वानलीन्हेंसंगशर धनुगहे अरुदिग बास। खरो लखि द्विजतासु पगतर लख्यो स्रोत प्रभास॥ कह्यो सो चाण्डालमुनिबर पियोजलतजिशंक। तासुपगतरदे-खिजलनाहिं पियो मुनि उत्तंक॥ कृष्णके गुणि बचन कृष्णहिं कह्यो बहुदुरबैन। कह्योसो चाण्डाल फिरि जल पियो संशयहै-न॥ पियो नाहिं जल बिप्र तबसो भयो अन्तर्द्धान। बिष्णुतेहि थरप्रकटभे गहिशंख चक्र महान। बिप्र बिष्णुहि देखिबोलो उचित नहिं इमि तोहिं। चाण्डाल के पगतरे जल करि देन लागे मोहिं॥ बचनयह सुनि बिष्णुद्विजसों कहे हम समुझाइ। कहे सुरपति सों उतंकहि देहु अमृत जाइ॥ शक्रसो सुनिकह्यो अमृत मानुषहि नहिं योग॥ मानि आज्ञा आपुकी कछु ठानि ब्याजप्रयोग। जाइ अमृतलेन भाषब जौनलेहैं तौन॥ प्रकट करि नहिं देब तौ फिरि आइबे करिगौन॥ भेषकुत्सित शक्रहै अरु रहो अमृत वारि। लये नहिं अब कहा कीजै कहो तौन बिचारि॥ भाषिइमि प्रभु कहे आपुहि जबहिं तुम यहि देश। चाहिहौ जल वृष्टि होइहि तबहिं वृष्टि सुवेश॥ होइंगे उत्तंक नामक मेघ अबते तौन। समुझि आशय आपुकी इतवृष्टि करिहैं जौन॥ अजौंलों उत्तंक नामक मेघ बरषततत्र। देश मरुमें

बिष्णुबिप्रहि दये आशिष पत्र॥ जनमेजयउवाच॥ रह्यो कैसो कियेतप उत्तंक जाके दर्प। चह्यो जाते करन कृष्णहिं शापदारुणअर्प॥ बैशम्पायनउवाच॥ शिष्यगौतम सुऋषिकोउत्तंकपरमप्रबीन। गुरुशुश्रूषाकरत प्रकटत नित्यभक्ति अहीन॥ करत सेवा गुरुकी भकेश सिगरे श्वेत। एक दिनगो काठ आनन गुरूके गृह हेत॥ खिन्न ह्वै अतिभार सों द्विज गिरोगृह ढिग आय। लगो रोदन करन तनमें महापीड़ा पाय॥ पायआज्ञा पिताकी गुरुसुता तेहिथर जाय। कियो वारण रुदनको नहिं तज्यो बिप्र अचाय॥ आपु गौतम कहे तब कत इतो रोदत आजु। गह्यो कैसोखेद बनमें भयो कौन अकाजु॥ दोहा॥ गौतम ऋषिके बचन सुनिकह्यो उतंक प्रशस्त। तौ सेवा करि शत वरषभये जरासों ग्रस्त॥ मम आगे कै यक शतक बिप्र शिष्य इतआय। गये गेह नहिं जान मोहिं कहे आपु सुखदाय॥ लह्यो न जगको बादकछुभये शक्तिसोंहीन। यह गुणि हम रोदन करत करैं कहा अब ईन॥ यह सुनि गौतम करि कृपा युवापुरुष करि ताहि। ब्याहि दई निज कन्यका श्रुति स्मृति संमत चाहि॥ तदनु अहल्यासोंकह्यो द्विज उतंक अनुमानि। अम्बकहौ गुरु दक्षिणा तौन देहिं हम आनि॥ अहल्योवाच॥ सुतशुश्रूषा तुम कियो ताहीसों हम तुष्ट। अवशिचहो जोदेन तौ देहु कहै जो पुष्ट॥ जो सौदासमहीपकी पत्नी कुण्डलतासु। आनि देहु यह बिप्र सुनितहांचलतभे आसु॥ जाइतहां द्विज लखतभो राक्षस रूपमहीप। द्विजहि देखि इमि कहतभो नृप राक्षस कुलदीप॥ षटदिन बीतेदैव बश भोजन पायो आजु। यह सुनि कै उत्तंक मुनि कहत भयो निजकाजु॥ गुरुहि दक्षिणा देन हित याचन आयउंतोहिं। देहु तौन दै आइहौं तब तुम खायहु मोहिं॥ जो कुण्डल तवतरुणि पहँ देहु कृपा करितौन। यह सुनिकै सौदास नृप कह्यो क्षणक रहि मौन॥ मम तियके ढिगजाय तुम कहिनिज अर्थबुझाय।

मम निदेश कहिलेहु द्विज कुण्डल आनँद छाय ॥ यह सुनिकै द्विजजातभो मदयन्ती के पास । नृपनिदेश अरु निज अरथ विधिवत कियो प्रकास ॥ मदयन्ती सो सुनि कह्यो यक्ष असुर सुर नाग । करि उपाय कछु चहत हैं कुण्डल लियो अदाग ॥ नृप आज्ञा दृढ़हेत कछुबार्ता ल्यायोफेरि । तौ कुण्डलहम देहिं तुमलेहु अपूरबहेरि ॥ यह सुनि नृपपहँ जाइद्विज यहबार्तालै आय । कहि सुनाय नृप घरानिकहँ चलो सुकुण्डलपाय ॥ श्लोक
नचैवैषागतिः क्षेम्या नचान्याविद्यतेगतिः । एतन्मेमतमाज्ञाय प्रयच्छमणिकुण्डले ॥ यहि राक्षस गतिमुक्त हित याते और न यत्न । यह मम मतगुणि दीजियोकुण्डल चारु सरत्न ॥ लहिसु कुण्डलहि मुदित द्विज जायभूपके पास । करिसुबार्त्ता चलतभो गुरु ढिग गुणतसुपास ॥ कछुदूरिचलि क्षुधित द्विजवृक्षबेलको देखि । चढ़िताप तोरन लगो पके सुफल अवरेखि ॥ इतने में छुटि गिरि परो कुण्डल महिपै आय । तेहि ऐरावतकुलज अहि गहिमहि गयो समाय ॥ तब तेहि तरुते उतरिकै विप्र दण्डग- हि पानि । देखि बिबर लागो खँदन कुण्डल लीबो जानि ॥ भरे क्रोध पैंतिस दिवस भूमि खँद्यो जबविप्र । तव भूमिहिं व्याकुल निरखि सुरपति आये क्षिप्र ॥ द्विज उतंकसोंकहतभे सुरपतिकरि अनुमान । नाग लोक अब इहांसों योजनसहसप्रमान ॥ विप्र रूप धरि शक्र सो यहसुनि कह्यो उतङ्क । बिन कुण्डलपायेइहां तजिहौंप्राण अशङ्क ॥ यहनिश्चयगुणिविप्रको शक्रदयाके तंत्र । दण्डहि योजित करतभे बज्रअस्त्रके मंत्र ॥ बज्रअस्त्रपरभावतें क्षणमें बिरचिसुराह । नागलोकमें जातभो ब्राह्मण कुण्डलचाह ॥ जायतहां द्विज लखतभो नागलोककोद्वार । ऊँचो योजनपांच अरु शतयोजन बिस्तार ॥ भयो निराशाविप्र तब मिलोतुरँग अति काय । द्विजहि गुरू को शिष्य गुणि कहतभयो समुझाय ॥ मम गुद फूंको बिप्र तुम तब लहिहौ निजराज । सोसुनिद्विजफूं-

कत भयो गुदा सिद्ध गुणिकाज ॥ रोमरोमते तुरँग केकढ़ीधूम कधार । तासोंपूरित होतभो नागलोक बिकरार ॥ ह्वै अति व्याकुल नागसब आइ उतंकहि पूजि । देत भये कुण्डलबिमल बिधिवत अस्तुति कूजि ॥ लहि कुण्डल अति मुदित ह्वै द्विज गौतम पहँ जाय । गुरुपत्निहि कुण्डल दयो सिगरी कथा सुनाय ॥ ऐसो परमप्रभावबर तपव्रत तेज अनूप । मुनिउतंक को हम सुने हे जनमेजयभूप ॥

इतिश्रीअश्वमेधपर्बणिउतंकोपाख्यानोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

जनमेज उवाच ॥ सोरठा ॥ बिप्रहि दै बरदान कृष्ण द्वारकाजाय कै । कीन्हें कौन बिधानसों बैशम्पायन कहो ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ चौपाई ॥ कृष्ण उतङ्क मुनिहि बरदैकै । सात्यकि सहितजातमुद लैकै ॥ देखत चारुपुरीकी शोभा । जेहि लखि बसति शक्रहिय लोभा ॥ आनँद देत मिलत सबजनसों । गे निजघरसेवितयदुगनसों ॥ क्रमसों बन्दिचरण गुरुजनके । बैठेहरणहार मुनि मनके ॥ कुशल प्रश्न बिधिवत कहिसुनिकै । इमिबसुदेवकहत भे गुनिकै ॥ केहि बिधिभयो युद्ध अतिभारी । सो सबसाबिधि कहौ रणचारी ॥ सोसुनि प्रभु कहिबो अभिलाषे । गाहिसंक्षेप युद्धसबभाषे ॥ सुनि अभिमन्यु बीरको मरिबो । भोतेहि समय बज्रको परिबो ॥ मातुदेवकी अतिदुख लीन्हीं । अंकिसुभद्रहि रोदन कीन्हीं ॥ तिमिबसुदेव शोकसों भोये । दुहितासुतके गुण कहि रोये ॥ तब केशव कहि धर्म बुझाये । ताकीतियहि सगर्भ सुनाये ॥ सुनि बसुदेव शोक दुखत्यागे । पिंडदान कीन्हें अनुरागे ॥ साठिलाख बिप्रनकहँ भोजन । दीन्हें अगणित धनकरि योजन ॥ उतै व्यास कुन्तीपहँ आये । यह सुहेतु कहिकै समुझाये ॥ गुर्बिनि कुंअरि उत्तरा बरणी । होइहि सुतपालक सब धरणी ॥ सोसुनि पांडवदुखतजि हरषे । बचन पितामहकोहित परषे ॥ दोहा ॥ अश्वमेधके हेत धन आगमको उपचार । करो

भाषिइमिजात भे व्यास मुनीश उदार॥ यहसुनि जनमेजयकहे
इमि कहिगे मुनि व्यास। नृपति युधिष्ठिर तब कहा किये कहौ
मतिरास॥ सुनि बैशम्पायन कहे सुनुजनमेजय भूप।तदनन्तर
नृप धर्म गुणि लहिकै समयअनूप॥ चौपाई॥ बचनव्यासकेकहि
मुद धरिकै।सब बन्धुन सों सम्मतकरिकै॥ धनल्यावनको शा-
सन दीन्हें। सदल चलतभे आनँदलीन्हें॥ प्रभुहि नौमिकरि-
कै सब कूजन। बिप्रन दानदेत करि पूजन॥ वृद्धदम्पतिहिनौ-
मि सुभावन। सबिधि सुनतस्वस्त्ययनसुहावन॥ राखियुयुत्सु-
हि नृपके धोरे। सुरथन नहि नहि चंचलघोरे॥ भीमधर्मआ-
दिक सबभाई। सदल चले अति ओज बढ़ाई॥ बंदीजनसों
अस्तुतिरूरे। सुनतजाय अति आनँदपूरे॥ क्रमते बनगिरि
सरिता तरिकै। गे तेहि गिरि ढिग कछु दिनचरिकै॥ जेहि गिरि
ढिग धन व्यास बताये। गये जासुहित आनँदछाये॥ तिहि गि-
रिढिग निवासकरि राजा। आगे करि सब बिप्रसमाजा॥ करत
शांतिमंगल हितकारी।सब दिशिराखि सुभट धनुधारी॥नृपति
युधिष्ठिर मधिमेंरहिकै।लसेशंकरहिमनमेंगहिकै॥ पटुबिप्रनको
सम्मत सुनिकै। धर्म्मनृपतिरहि निरशनगुनिकै॥ कुशबिछाय
महि शय्याकीन्हें। कामदानिप्रभु शंभुहिचीन्हें॥ यहिप्रकारसों
निशा बिताये। भोरद्विजातिनहोम कराये॥ मोदकपायस मांस
सोहाये। बिधिवतबलिदीन्हेंमनभाये॥ दोहा॥तबसुनिभद्रकुबेर
अरु अरुजेगणसमुदाय। बिधिवततिनकहँ पूजिकै दैबलिदान
सचाय॥ व्यासआदिद्विजबरन कहँकरिआगेमतिरास।सुनत
स्वस्त्ययनजातभे रत्नखानिकेपास॥ पूजिधनेशहि तत्रअरु दे
बिप्रनकहँदान। रत्नखुदावतभे तहां धर्म भूपमतिमान॥अग-
णित पात्र खुदायधन लदवावतभो भूप। तिनकी संख्याकहत
नृप सो गुणिलेहु अनूप॥ जयकरी॥ ऊंट लदाये साठि हजार।
तासु द्विगुण घोरे समचार॥ द्विरद एकादश शत लदवाय।

तितने शकटनके समुदाय ॥ खर अरु भार बाह नरजौन ।सं-
ख्यातासु सकै कहि कौन ॥ इतनो द्रव्य लदाय चलाय । फेरि
पूजि शंभुहि सुखदाय ॥ बिप्रभटनसह पूरित मोद । फिरेनगर
प्रति करत बिनोद ॥ इतै कृष्ण दायक फलचारि । अश्वमेध
को समयनिहारि ॥ सह प्रद्युम्नसात्यकि बलराम । अरुगदसा-
म्ब निशठ बलधाम ॥ अरु कृतवर्म्मा सारन संग । सहित सु-
भद्रा भरेउमंग ॥ हास्तिनपुर आयेकरिप्रेम । सुनिधृतराष्ट्र भूप
गुणिक्षेम ॥ बिदुर युयुत्सुहि समुद पठाय । उचित करतभेबास
कराय ॥ इतने में सुनु भूपति तंत्र । द्रोण तनयको प्रेरित मंत्र ॥
प्रबिशिउत्तराके उरबीच । पीड़नलागो दायक मीच ॥ तेहिक्ष-
णगुणिकै श्री यदुनाथ । गेअंतःपुरसात्यकिसाथ ॥कृष्णकृष्ण
टेरत तेहिकाल । कुन्ती आय कह्यो सोहाल ॥ उरताड़तपूरित
परिताप । करतभई आरत परलाप ॥ तुम हे किये प्रतिज्ञापूर्व ।
रक्षणकरब गर्ब हम गूर्ब ॥ सो तुम भूलिगये कततात । जाते
भयो गर्भको घात ॥ तुम रक्षक पांडवन सप्रेम । जैसे पुतरिहि
पलकसनेम ॥ प्रभु तव भागिनेय को गर्ब । हायलहै यहि बिधि
गति खर्ब ॥ धर्म्म भीम अर्जुन यहि देखि । किमि जीहैंअनरथ
अवरेखि ॥ यहि बिधि भयो बंशको नाश । लखियहगर्ब गह्यो
सब आश ॥ सोऊ मृतकभयो अब हाय । ऐसो शोक सह्योकि-
मि जाय ॥ प्रभुअब निजगुरगरिमा चाहि । उत चलिबेगिजि-
आवो ताहि ॥ यहि बिधि कहिकहि कुन्तीमोहिं । महि गिरिर-
ही कृष्णकहँ जोहिं ॥ तब कुन्तिहिगहि कृष्ण उठाय । साहस
देत भये समुझाय ॥ तहां सुभद्रा रोवत आय । बोलतभई ब-
चन दुखदाय ॥ मृतकपुत्र प्रगटितभो तात । यह दारुण दुख
सह्यो न जात ॥ लखि यह गर्भ पुत्रको शोक । मैं सहिरही धीर
करि रोक ॥ लहि तो अनुकम्पा की रीति । पांडवपाये सबथर
जीति ॥ द्रोण तनयको अस्त्र अमान । तासों बचोभीम बल-

वान ॥ अबसो अस्त्र देत जयचाहि ।तुमपउत्र कोजीवनदाहि॥ अब सब पांडवहारे जात । जाते होत मूलको घात ॥ याचत तोहिं तात परिपाय । भागिनेय सुत देहु जिआय ॥ द्विजसुत सों प्रण कीन्हों जौन । तात करो अब पालन तौन ॥तातआपु को जानि प्रभाव । हम हठि इतो कहति करिराव ॥ सुनिधीरज दै कृष्ण उदार । गये प्रसूत गेहके द्वार ॥ तहांगुणीजन भिषज अनेक। बैठे रक्षण हेत सटेक॥ घृततिलतंडुलसरषपभूरि। लीन्हें बैठे दुखसों पूरि॥ द्रुपद सुता उत धीरज आनि । कही उत्तरासों अनुमानि ॥ मातुल ससुर कृष्णतोतीर । आयेत्यागि शोक धरु धीर ॥ कृष्ण आगमनसुनि सुखपाय । मृतकपुत्रकहँ गोदलगाय ॥ कहिकहिकै शोकाकुल बैन। करोउत्तरा रुदनअचैन ॥ तब केशव करुणा के ऐन । लीन्हें कराषि अस्त्रजगजैन॥ लहि संहारअस्त्र वह भूप। गयोपितामह पासअनूप ॥ तबसचेतभो पितातुम्हार । अति पूरितभे मंगलचार॥ वृष्णिवंशके वृद्धमहान । कीन्हें नामकरण सविधान॥ वंशक्षीण पहँभोछबि धाम । ताते कियो परीक्षित नाम ॥ नरनारीसब आनँद पूरि । दिये दानमणि भूषण भूरि ॥ दोहा ॥ एक मासको जबभयेपिता तुम्हार महीप । तब धनलै आये सदल धर्मभूप कुलदीप ॥मिलिसबन सों परस्पर पूजिपुजाय सठौर । हास्तिनपुर राजित भयो धर्म नृपति शिरमौर ॥ समय पायतब भूप पहँ आयेव्यास मुनीश । पूजियथोचित ताहि इमि कहो धर्म अवनीश ॥अश्वमेध मखमहतको कियो आपु उपदेश। अबशुभ समय विचारिप्रभु कीजै उचित निदेश ॥ चौपाई ॥ इमिकहिकहे कृष्ण सों सानँद । आपुहोहु दीक्षित प्रभुमानँद ॥ मोहिं सिद्धि पद कृपा तुम्हारी । तुव आज्ञाफल सब मखचारी ॥ यह सुनिकहे कृष्ण प्रभु नागर । तुम ममकुल पति भूप उजागर ॥ तुवकर तबमम मम तुव आरय । आपु करो अनुपम मखकारय ॥ यहसुनिभूप

मोद हिय राखे । पाणिजोरि मुनिबरसों भाखे ॥ प्रभुअनूपअ-
नुकम्पा गहिये । आरम्भनको दिन गुणिकहिये ॥ यहसुनिब्यास
कहे करि ईछित । होहु चैत पूनोलहि दीक्षित ॥ सराजामसब
योजित कीजै । विप्र बोलाइ निमंत्रण दीजै ॥ भूमि परजटय
नहिं बिधिकै कै । अश्वतजौ रक्षक सँग दैकै ॥ सबजगजैनपार्थ
धनुधारी । सदल जाहिं हयकी रखवारी ॥ भीम नकुलसहदेव
मुखारी । रहैं गेह रक्षक मखचारी ॥ यहसुनि भूप बिजय अ-
भिलाषे । धीरफाल्गुणसोंइमिभाषे ॥ अश्वहिरक्षणहतेपधारो ।
भूमिबिजयकरियज्ञसुधारो ॥ जोआड़ैकोउ भूपअकादर ।पहिले
ताहि बुझावहुसादर ॥ जेहि न बिरोध बढ़ै सोकीजो । नहिं मानै
तो लरिजयलीजो ॥ इमिसमुझाय पार्थसोंकहिकै । भूपभयोदी-
क्षितदिनलहिकै॥ दोहा ॥ वृद्धभूपधृतराष्ट्रसों आज्ञालैतेहिकाल।
बिधिवतदीक्षित भैसबिधि अश्वतज्योक्षितिपाल ॥ पारथनृपसों
ह्वैबिदा कृष्णहि ध्यायसचैन । चलेअश्वरक्षणकरतसुनतशुभद
स्वस्त्यैन ॥ ह्वैउत्तरपूरबचलेअश्वसुनोक्षितिपाल । अबसुनिये
जेहिथलभयो युद्धमहा बिकराल ॥ सोरठा ॥ हयआगमनअनूप
सुनि त्रिगर्तपति बैरगुणि । बढ़िसहसेना भूप यज्ञअश्व लाग्यो
गहन ॥ चौपाई ॥ ताहि अश्वरोकत लखिपारथ । भयो सुनावत
बचन यथारथ ॥ सुत बन्धुनको बध गुणिताते । नहिं मान्यो
सो नृप रिसिराते ॥ नाम सूर्य्य वर्मारणचारी । बाणपार्थ पहँ
तज्यो प्रचारी ॥ अगणित रथन सहित बढ़ि बलसों । भिरत
भयो पारथके दलसों ॥ नृपति सूर्यबर्माको भाई ॥ नाम केतुब-
र्मा दृढ़ धाई ॥ भिरो पार्थ सों थिरुथिरु भनिकै । पारथताहि
बध्यो शर हनिकै ॥ तब धृतबर्मा बिदित महारथ । भिरतभयो
कहिभागु न पारथ ॥ अतिकर लाघव करि धनु करष्यो । अ-
विरलबाण पार्थपहँबरष्यो ॥ अतिकरलाघव लखितेहिक्षणमें ।
पारथभये सराहतमनमें ॥ धृतवर्मारिसकरि तेहिथरमें । मार्‍यो

बाणपार्थ के करमें ॥ करतेधनुष गिस्योतबराजा । देखिमुदितभे शत्रुसमाजा ॥ तेहिक्षणपारथभटअतिकोप्यो।गाहिगांडीवप्रलय आरोप्यो ॥ महाराज सुनियेतेहिपलमें । हाहाकारमचोअरिदल में ॥ अरिदलकेसहसनभटबाधिकै।लसोकालसमपार्थबराधिकै॥ तहँ पारथको बिक्रम देखी । भगी शत्रु सेना भयभेखी ॥ तब त्रिगर्तपति गुणि मन माहीं । शर अरु धनुष त्यागिरथपाहीं ॥ टेरिपार्थ सों कह्यो बुझाई । हम तो वश अब तजहुलराई ॥ अबहमकरैं करो जो शासन । कहेपार्थ सुनियहसम्भाषन ॥ बन्धुनसह हस्तिनपुर आयहु । अश्वमेधमखलखि सुखपायहु ॥ इमिकहि पारथभट जयईछे । सासयन चले अश्वके पीछे ॥ फिरि क्रमसोंप्राग्ज्योतिषपुरमें । पहुंचतभयो तुरँगअतितुरमें ॥ दोहा ॥ तहां सुवनभगदत्तको बजूदन्तवर नाम । कढ़ि पट्टनते सदल बढ़ि भिरतभयो बलधाम ॥ पारथसोंभिरि लरतभोबजूदन्तरणधीर । तिमि पारथकेभटनसों भिरे और बरबीर ॥ चढ़ो दीह युगदन्तपहँ बज्रदन्तबलवान।पारथबीर रथस्थपहँ बरषो अबिरल बान । चौपाई ॥ पारथतापहँशरझरिकीन्हे। बारणबाण बिरथ करि दीन्हे ॥ दोऊकर लाघवता ठाटे । अगणित बाण परस्पर काटे ॥ दोऊ दुहुन प्रचारिप्रचारी। बरषे बाणप्राणहर भारी॥ दोऊ दुहुन बाण हनि डाटें। घने बाण बाणनसोंकाटें॥ तहँ पारथ अति तुरता धार्यो । तीक्षण बाण तासु उरमार्यो ॥ तासों बेधित ह्वै सो धरकस । मोहित भयो भूलिधन तरकस ॥ क्षणमें चेतिभूप रिसिछायो । मेघ जलदसम द्विरद चलायो ॥ गहिकरसों सांकर उलझारत । गर्जत चलो द्विरद [illegible] भारत ॥ पार्थ द्विरदपहँ शरझरि करिकै । रास्योदूरि [illegible]पण धरिकै ॥ बजूदन्त तबकरषि शरासन । बर्षतभयो ब[illegible] अरिनाशन ॥ तेहि बिधिपार्थ शरासन करष्यो । बजूद[illegible] नृपपहँ शरबरष्यो ॥ यहि प्रकार दोऊ भट आरज । लरे [illegible]ने दिन जयके कारज ॥

चौथेदिन नृपबीर अतोलो । करि अट्टहासइमि बोलो ॥ लरि मम वृद्धपितहि तुममारे । तातेगर्व हियेमें धारे ॥ आजुतोहिं बधिकै जयलेहौं । बन्धुबर्ग कहँ आनँद देहौं ॥ इमिकहिगर्जत गजहि चलायो । चलो द्विरद ऐरावत जायो ॥ दोहा ॥ शुण्डा दण्ड उदण्ड सों दीरघगहे जँजीर । जंगम गिरिवर समद्विरद गयोपार्थ के तीर ॥ तब पारथअतिकोप करि मारि अमोघ सुबाण । डारिदेतभो भूमिपर द्विरदहि करिगत प्राण ॥ द्विरदसंग नृप गिरि परो तब इमि बोलोपार्थ । भूपभीत तजिबचनसुनु मैं यह कहत यथार्थ ॥ सोरठा ॥ मोकहँ धर्म नरेशयह निदेशदीन्ह्यो उचित । फिरि आवो सब देश मतिकीजो बध नृपनको ॥भूपन सों समुझाय इमिकाहियो मतिरण करैं । अश्वमेधमें आयलेहिं सुउत्सव जनित सुख ॥ तातेबैर बिहाय मखदेखन आयहुउतैं॥ यह सुनि नृप सुखपाय काहितथास्तु गृहजातभो ॥ तोमर ॥ तब तुरँग तौन शुभेश । चलिगयो सिन्धु सुवेश ॥ सुनि तौन उतके वीर । बढ़ि भिरतभे रणधीर ॥ तहँ चले अस्त्र अथोर । भोमचत संगरघोर ॥ भट अयुत तुरँग सवार । अरुरथीएकहजार॥ बढ़ि फाल्गुणकहँ घेरि । भे बाण बर्षतटेरि ॥ गुणिजयद्रथकोघात । भे करत आयुधपात ॥ जिमि विहँग पंजर माह । तिमिकरतभेनरनाह ॥ यह देखिभयदप्रयोग । भेदुखितइतसबलोग ॥ तेहिसमयअनरथ भूरि । लखिपरे अशकुनभूरि ॥ घनघोरमधि तमभ्मन । तिमि भयो पार्थ अमान ॥ तब पार्थ बिक्रमऐन ।इमि सै॰ त्रन सों बैन ॥ भो कहत सुनहुं समस्त । गुणि भूप वचन प्रशस्त ॥ न॰ि बधत तुमहिं सुटेक । ममवचनजानोनेक ॥ तुम बैरभाव बिहाय ॰ख लखौ ममपुर आय ॥ यह बचन सुनि ते सर्व । इमिकहे बे॰न सगर्ब ॥ जोगहे जियको लोभ । मम युद्ध लखिभो क्षोभ ॥ ॰ जाहु रण तजि भागि । कत कहत कैतव लागि ॥ यह सुनत ॰र्थ अमान । भोक्रोध कालसमान ॥

चलि चक्रसम भटचण्ड। अति चपलकरि दोर्दण्ड ॥ करि धनुष मंडलरूप। भोबाण वर्षत भूप ॥ प्रतिभटन शायकजाल। भोरचत बीर बिशाल ॥ भटतुरँग अगणित मारि। भो देत महिपर डारि ॥ दोहा ॥ पार्थ अग्निकी शरलपट सहिन सके भयपूरि। भागिचले सैन्धव सुभट बेधित पीड़ितभूरि ॥ तबदुहिता धृतराष्ट्रकी शिशु पउत्रलैआय। रुदन करनलागी तहां आरत बचन सुनाय ॥ चौपाई ॥ तेहिलखि पारथ करुणा भरिकै। तजि लरिबोधनु रथपर धरिकै ॥ सादर इमि भगिनीसों भाषे। कहति कहाकहु जो अभिलाषे ॥ तबदुस्सला कही सुनु आरज। यहिबालकको करुहित कारज ॥ यहमम सुतको सुतसुनु भैया। अबयाको नहिं और सहैया ॥ यहसुनि पार्थ कहे लेचहुसो। याकोपिता भयोकाकहुसो ॥ कहीदुस्सला पुत्र हमारो। पितामरण सुनिमरोविचारो ॥ अबयहि बालहिआशतिहारी। अभयकरो करिकृपा बिचारी ॥ इमिकहि दीनदशासों पागी। दुखित दुस्सला रोवनलागी ॥ तबपारथ तेहि स्वासित कीन्हे। कहेजाहु घरआनँद लीन्हे ॥ इमिकहि ताहि बिदाकरि पारथ। चलेअश्वके संग गुणिस्वारथ ॥ क्रमसोंअगणित देश मझावत। गोमणिपूर देशहयधावत ॥ बभ्रुबाहना नृपसो सुनिकै। सानँदपिता पार्थकहँ गुनिकै ॥ बिप्रन सहित निरायुध कढ़िकै। मिलनचलो पारथसों बढ़िकै ॥ तिमि तेहि देखिपार्थ रिसगहिकै। निन्दाकिये बचन इमिकहिकै ॥ क्लीवसमान क्षात्रगुणतजिकै। आवतकहा पलटि जोलजिकै ॥ मखयह रक्षत धनुटङ्कारत। नृप गर्विनको गर्व बिदारत ॥हम आवत तुम ताके धोरे। आयेक्षुद्र सरिस करजोरे ॥ जो हम इहां निरायुध आइत। तोइमि तोहिं देखिसुख पाइत ॥ तव यहि बिधिमम सम्मुख आइब। तोहिंउचितहो प्रीतिबढ़ाइब॥ यहसुनि बभ्रुबाहना लजिकै। रहोशीशनत करिमुद तजिकै ॥

यहसुनि नागसुता तेहिपलमें । भूमिबेधि प्रकटी तेहिथलमें ॥ नृपसों कहतभई महिचारी । नागसुता हममातु तुम्हारी ॥ बीर फाल्गुण पिता तुम्हारे । युद्धहेत इतसदल पधारे ॥ युद्धकरौ तजिनेह सगाई । क्षात्रधर्मकी इहैबड़ाई ॥ मातु उलूपीकी यह बानी । सुनतबभ्रुबाहन अभिमानी ॥ काञ्चनकवच रोषकरि धार्‍यो । अरु शिरत्राण तुरीण सुधार्‍यो ॥ रथचढ़ि महाक्रोध-सों पागो । हयगहि शायक बर्षणलागो ॥ धनुटङ्कारि पार्थभट नायक । बर्षणलगो पुत्रपहँशायक ॥ पितापुत्र दोऊ धनुधारी । कीन्ह्यो तहांयुद्ध अतिभारी ॥ दोऊलाघव करि धनु करषे । अबिरल शर दोउन पहँबरषे ॥ दोऊदुहुन चक्रसम परषे । अद्भुतबिक्रम लखि लखिहरषे ॥ दोऊ दोउनके शरक्रूरे । काटि दुहूं दिशि शायकपूरे ॥ दोहा ॥ अतिबिक्रम करिकै तहां बभ्रु बाहनाबीर । पारथकेभ्रूमधिहन्योअतिशयतीक्षणतीर ॥ तासों बन्धितपार्थभटरहिमोहितक्षणएक। चेतिधनुषटंकारकरिबरष्यो बाणसटेक ॥ गुरुतोमर ॥ तहँपार्थपुत्रहिहेरिकै । भोकहतयहिबिधि टेरिकै ॥ सुतसाधुसाधुसुधीरहै । धनुधरणिधररणधीरहै ॥ अब आड़भ्फरिममबानकी । जोचूर करानिपषानकी ॥ इमिभाषिशर सन्धानकै । नभदयोबिनुरन्धानकै ॥सोभूपधनुबिधिठाटिकै । भो नदतसबशरकाटिकै ॥तबपार्थअद्भुतठानसों । हनिअर्द्धबिधुबर बानसों ॥ ध्वजकाटि महिपरडारिकै । भोनदत तुरगनमारिकै॥ तबभूप रथसों कूदिकै । अतिगर्वकोप असूदिकै ॥ अतिपाणि लाघव ठानसों । भोबाण तजत बिधानसों ॥ तहँहन्यो पारथ घातमें । बहुबाणताके गातमें ॥ बहुबाणताके गातमें ॥ तबबभ्रु बाहन तेखिकै । निजबिजयबिधि अवरेखिकै ॥ अतिकठिन धनुटङ्कारिकै । थिरुपार्थ पार्थप्रचारिकै ॥ बरशरनको तमजा-लकै । भोलसत ओज बिशालकै॥ तहँपार्थ बिक्रम भूरिकै । अवकाश बाणन पूरिकै ॥ सब बाणबाणन वारिकै । बहुबाण

माख्यो भ्मारिकै ॥ तब बभ्रुबाहन कोपिकै । निजबिजयके हित चोपिकै॥ दोहा॥ बज्रसमानउदण्डशर पारथकेउरमाह।हनतभयो अतिवेगसोंदारुणभटनरनाह ॥ अतितीक्षणउद्दण्डशरबेधिमर्म थलतासु । पन्नगसम कढ़िजातभो प्रविशि भूमिमधिआसु ॥ नृप तेहिक्षण गतप्राण ह्वैपरोपार्थ तेहिठौर । हाहाधुनि सैनिक किये मरोपार्थभटमौर ॥ बेधितपारथके शरन बभ्रुबाहनाबीर । मोहितह्वै गिरि भूमिपर परत भयोभरिपीर ॥ चौपाई ॥ प्रियपति सुतको मरिबो सुनिकै । चित्रांगदा बिपति दिनगुनिकै ॥ जाय तहां अति दुखसों पागी । करिआरत धुनि रोवनलागी ॥ उर ताड़नकरि अनरथ ज्वैकै । परी भूमिपर मोहितह्वैकै ॥ कछुक्षण परी मोहबशरहिकै । चित्रांगदा चेतफिरि लहिकै ॥ ब्याकुल शोकानलसोंदहिकैरुदनलगीपतिपतिसुतकहिकै ॥तबआईतहँ नागकुमारी । नामउलूपी पतिहि पियारी ॥ तेहिलखि चित्रांग दासयानी । कहतभई यहिबिधिकी बानी ॥ ममसुतके बाणनसों पातित । पतिहिदेखुसबकी गतिरातित ॥ तोमतमानि लरोसुत मेरो । तातेभो यहअनरथहेरो ॥ बेगिजियाउ यत्नकछुकरिकै । कत लखिरही शोचसोंभरिकै ॥ इविधि सपत्नीसों कहिसोई । गहिपतिचरण बिकलह्वै रोई ॥ इतनेमें जयकीबिधिहेतो । बभ्रुबाहनाभूपतिचेतो ॥ पितामरणलखिनिजअबचीन्हों । अति आरतह्वै रोदनकीन्हों ॥ प्राचितहित मरिबोअभिलाषे । यहि बिधि नागसुतासों भाषे ॥ तोमतमानि पितासोंलरिकै । हम अतिपापलहे बधकरिकै ॥ अम्बसुनो हमनिश्चयभाषत । अब नहिं मोहिंबनततनराखत ॥ जियैपिता तौहमतनराखब । नाहिं यहतन तृणकेसमनाशब ॥ यहकहिकरि मरिबेकोसामा । बैठत भयोभूप बलधामा ॥ यहसुनि नागसुता दुखलीन्हीं । संजीवनि मणिसुमिरणकीन्हीं ॥ तुरिततहां संजीवनिआयो । नागसुताके पाणिसोहायो ॥ दोहा ॥ नागसुतातब भूपसों कहतभई इमियेहु ।

यह मणिलै निजजनकके उरऊपरधरिदेहु ॥ तबनृपमणिलैपार्थ के उरपरधरे सचाव । तबपारथठाढ़ेभये मणिके बिशदप्रभाव ॥ मोदिजनकके पदगह्यो बभ्रुबाहनाभूप । पारथलायो सुतहिउर ह्वै अतिमोदितरूप ॥ रोला ॥ चेतिपारथ उभयपत्निन एक ते तहँदेखि । भयेबूझत आगमनको हेतकछुअवरेखि ॥ तब उलूपीभईभाषत नाथतो बधजानि । बिकलह्वैहम उभयआईइहां अनरथ मानि ॥ शक्र बरुण कुवेर यमसों तुमअजेयअमान । गयेसोतुम पुत्रकेशर बधेइत यहिमान ॥ सुनोताको हेतहमअब देत तुम्हहिंसुनाय । भीष्मको बधकिये तुम जोकरि अधर्म अदाय ॥ आइगङ्गापास बसुगण मंत्रकरितेहिहेत । दये तुम कहँ शापऐसो सुनोसो करिचेत ॥ पार्थ अबयहिकर्मको फल पाइहैं रणमाहँ । बधैगो यहिपुत्रयाको भूपदीरघबाहँ ॥ आजुसोईभयो अबतुम तजो दुखकोलेश । छुटे अबवहि पापते तुमलहो आनँदबेश ॥ बचनयहसुनि मोदिपारथ कहेसुतसोंबैन। पुत्र अब हयसंग उतहम जातहैं सहसैन ॥ सुनोपरकीचारु चैत्री मध्य धर्मनरेश । यज्ञकरिहैं सहितमातन आइयोतेहिदेश ॥ भाषि इमिह्वै बिदापारथ तुरँगचारुचलाय । चलेरथचढ़ि सहितसेना दुन्दुभीबजवाय ॥ तहांसोचलि अश्वआयो राजमहल सुग्राम । तहांहो सहदेवको सुत भूप बलबुधिधाम ॥ मेघसंधि सुनामसों कढ़िभिरो धनुटङ्कारि । पार्थसों सो करतभो अतिघोर रणपणधारि ॥ पार्थपहँसो पार्थतापहँ बाणबरषभूरि । घनेशायक दुहुनदोऊ हनेअमरषपूरि ॥ मेघसंधिमहीपके हयसूतबधिकै पार्थ । मारिबाण क्षुरप्रदीन्हों काटिधनुगुणि स्वार्थ ॥ कूदिरथ सों गदागहितबचलो भूपअमान । काटिदीन्हों गदासोऊ पार्थ हनिबरबान ॥ बिरथबिधनु महीपतिहिकरिपार्थ बधब न चाहि। दयाकरि इमिभाषि बिधिवत भयेशीक्षत ताहि ॥ क्षात्रधर्म्म अनूपसो करिभयेतुम क्षितिपाल । कहेहमसों करौअबतजियुद्ध

बैरबिशाल ॥ अश्वमेधसुयज्ञमें तुमआइयो नृपपास । पूर्णमख लखिआइयोइत पाइपरमसुपास ॥ भाषिइमिह्वैसबिधिपूजित चारुअश्वचलाय । चलेपारथसहितसेना दुन्दुभीबजवाय ॥ तहांसोचलि अश्वआयोचेदिनगरअनूप । सरभसुत शिशुपाल कोतहँ कियोपूजनभूप ॥ पाइपूजा आइबेको यज्ञमध्यअभर्म । देइशासन चलोदक्षिणओरपालकधर्म ॥ तहां अङ्ग किरातकोशल नृपनसों पुजवाय । गयोदेश दशार्णमें सहसैन ओज बढ़ाय ॥ तहां चित्रांगद महीपति लरोकढ़िसहसैन । जीति ता कहँ चलोआगे पार्थ बिक्रमऐन ॥ एकलब्य निषादकेपुर गयो तब हयतौन । लरोतहँ कढ़ि एकलब्यमहीपको सुतजौन ॥ जीतिताकहँ गयेदक्षिण बारिनिधिकोकूल । तहां जीत्यो द्रविड़ माहिष कोलपतिन सशूल ॥ जायफिरि गोकर्णगिरिढिग अश्व सुखमाऐन । फेरिजाय प्रभासथलगो द्वारकाजगजैन ॥ अश्व को सुनि आगमनतहँ तरुणयादवसर्ब । नगरतेकढ़ि लरनचाहे शस्त्रपाणिअखर्ब ॥ उग्रसेनहिं आदिसिगरे वृद्धतिनकहँबारि । ल्यायपार्थहि करतभे सत्कारसबिधि बिचारि ॥ तहांसों चलि अश्वसों फिरि गयोपश्चिमओर । कृष्णसों ह्वैबिदा तितगो पार्थसुभट सजोर ॥ पंचनदमें जाय हयसो गयोजहँ गान्धार । शकुनिको सुतअश्व गहितहँ कियोयुद्धअपार ॥ मनेकीन्हें पार्थ बहुबिधिबचननृपके भाखि । सुनोनहिंसोशकुनिकोसुत गर्बहिय में राखि ॥ सैनसहबढ़िटेरि पार्थहिकियो संगरपीन । बध्योताके सुभटअगणित पार्थधीरधुरीन ॥ दोहा ॥ गनेगनेनिजभटनके शकुनिपुत्रबधदेखि । आपुपार्थसोंभिरिभयो बर्षतबाणबिशेखि ॥ फेरि ताहि बर्जत भयो पारथबीर अमान । नहिं मान्योतबबाण हनि काटि दयो शिर त्रान ॥ चौपाई ॥ सोलखि उतके योधा रूरे । भिरे पार्थसों अमरष पूरे ॥ तोमर पट्टिश शक्तिसोहाये । अबिरल बर्षि पार्थ पहँ छाये ॥ तहांपार्थ अति लाघवकीन्हों । अग-

णित धरबिनु शिर करि दीन्हों ॥ कीन्हों अगणित करपगछे-
दन । कीन्हों अगणित के उरभेदन ॥ कितने धनुध्वज काटि
गिराये । बधे कितेहय गजछबि छाये ॥ यहि बिधिप्रलयदेखि
तेहि क्षनमें । मंत्री वृद्धसुबुधि गुणि मनमें ॥ ल्यायशकुनि भू-
पति की रानिहि । शमितकिये निज नृप अभिमानिहि ॥ पुत्रहि
बारित करि नृपनारी । गई पार्थढिग शाम बिचारी ॥ पार्थता-
हि लखि धनु तजिसादर । किये प्रणाम उचितकरि आदर ॥
कहे शकुनिके सुतसों पारथ । तुम ममबंधु लरताबिनु स्वारथ ॥
बैर बिहाय प्रीति गहिभाई । मम पुर आयहु समुझि सगाई ॥
इमिकहि पार्थ बिदा कै तिनसों । चलोलेत जयहारे किनसों ॥
चलितहँ सों मखहय गुण अगरो । पलटि हस्तिनापुर दिशि
डगरो ॥ तब चलांक चारण चलि आये । धर्म नृपति सों खब-
रिसुनाये ॥ भूमि बिजय करि आनँद छावत । रक्षत तुरँगपार्थ
इत आवत ॥ धर्म भूप सुनि यह सम्भाषन । बन्धुन बोलिदयो
अनुशासन ॥ आजु माघकी अनुपम पूनो । आवत पार्थहोत
सुखदूनो ॥ दोहा ॥ शुभद यज्ञकेसदनकी रचना अति कमनीय।
तोरण करवावहु बिशद पंथ उचित रमणीय ॥ दूत भेजिसब
नृपनकहँ सादर लेहु बुलाय। सादर आनहु यत्नसों बिप्रन को
समुदाय ॥यह निदेश सुनि नृपतिको भीमसेन अनुमानि।यथा
योग सब करत भे क्रमसों सबबिधि जानि ॥ पाइ निमंत्रणमु-
दित कै आये सिगरे भूप। यथायोग सादरदये तिनकहँ बास
अनूप ॥ पूजनकरि करि द्विजन कहँ दीन्हों बिशद निवास ॥बि-
धिवत सब सतकार करि दीन्हें सकल सुपास ॥ कुम्भथारआ-
दिक सकल पात्र सौज समुदाय ।बिनु सुवरणके एकनहिंलखे
बिप्र क्षितिराय ॥ सिता मिले दधिदूध अरु घृतकेतालभराय।
भोजनके परकारके अगणित ढेरलगाय ॥ चहुंदिशि ठाढ़ेकहत
जन खाहुखाहुमनमान । पियोदूधदधि शब्दयह पूरि रहोसुख

दान॥ जो जहँ जो चाहत भयो लह्यो तहां सो तौन। भरोको-
लाहलमोदमय कहेननिबरतजौन॥ चौपाई ॥ इतनेमें तहँकेशव
आये। पुत्र पउत्र सहित मनभाये॥ सात्यकि एक साम्ब कृत-
वर्मा। गद प्रदुम्न सह पूरितपर्मा॥ सो सुनि भीममोदसोंछाये।
सविधिपूजि नृपढिगलै आये॥ लखि कृष्णहि नृप आनँद ल-
हिकै। बूझे कुशल बचन ऋजुकहिकै॥ फिरि भूपति बूझेमन
भायो। सुने पार्थ होतो पुर आयो॥ तासु युद्धजय विधिवत
कहिये। सो सुनि कृष्णकहे सब सहिये॥ इतनेमें आनँद सों
छायो। चार पार्थके ढिगसों आयो॥ करि प्रणाम करजोरिसु-
भावन। दयो सुनाय खबरिमन भावन॥ सो सुनि नृप अति
आनँदलीन्हें। आदर सहित बसनधन दीन्हें॥ वहादिन बिते
दोय दिनबीते। पार्थ निकट आयो हित चीते॥ धूरवार धाई
सब दिशिमें। लसे सूर जैसो शशि निशिमें॥ धुनि हयहींसनि
गजगुरजनकी। गईपूरि सुखप्रद हितमनकी॥अस्तुति सुनत
मोद सों पागे। गये भूप के ढिगअनुरागे॥ कृष्णचन्दनृपधर्म-
हि आदिक। सब बढ़ि मिले बचन प्रिय बादिक॥ बैठि सप्रेम
सकल अवदातै। लगे करन इतउत की वातै॥ इतनेमें तहँस-
हित समाजा। आयोबभ्रुबाहनाराजा॥ दोहा॥ कृष्ण युधिष्ठिर
भीम अरु नकुल पार्थ सहदेव। बन्दि सबहि मातामहिहि ब-
न्दतभयो सुभेव॥ सब गुरजनकीतियनकहँ बंदतभयो सप्रेम।
तासुजननि सब सोंमिली यथाउचितगाहिनेम॥यथाउचितसब
करतभे तासुउचित सत्कार। तेहिक्षण अतिआनँद बढ़ो सुनो
भूमि भर्त्तार॥

इतिअश्वमेधपर्वणिअर्जुनदिग्विजयोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ जेहि दिन आये पार्थ अरु नृप
मणिपूर अधीश। नृपताके तीजे दिवस आये ब्यास मुनीश॥
जयकरी॥कहे युधिष्ठिर नृपसों बैन। करोहवन आरम्भ सचैन॥

आजु मुहूर्त्त परमअभिराम । करोअश्वबिधि बिशद ललाम ॥ बिधिवत त्रिगुण दक्षिणादेहु । चारुतीनि मखको फललेहु ॥ ब्यास देवको पाय निदेश । कीन्हों यज्ञअरम्भ नरेश ॥ शुचि पलाशको यूपगड़ाय । लागे करन कर्म समुदाय ॥ खदिर पलाश बेलके तीनि । देवदारुके दोयअहीनि ॥ यूप गड़ाये आगमनेत । रत्नहेममय सुखमा हेत ॥ रुक्मपुंख रचिगरुड़ाकार । राखेदश हस्तकद्रष्टार ॥ यथाशास्त्र सबपशुब्यापार । कीन्हें ब्राह्मण बिधि ज्ञातार ॥ पशुपक्षी अरु जलचर तौन । जेहि जेहि देवन लेखितजौन ॥ तेहितेहिसो सबसाहितबिधान। दीन्हें अग्निकर्म्मकृतमान ॥ तीनिशतक पशुकेसमुदाय ।यूपन नियमित कीन्हेंल्याय ॥ अप्सरकरत नृत्य तेहिपर्ब । गानकरत मोदित गन्धर्ब ॥ राजत किन्नर सिद्धसमस्त । अरुऋषि मुनि जे बिप्रप्रशस्त ॥ तपनिधि शिष्य ब्यासके सर्ब । करत यज्ञके कर्म अखर्ब ॥ तपनिधि सबिधि अश्व पुजवाय । हिंसन किये वेदमत पाय॥ द्रुपदसुता सह धर्म्मनरेश । होमे अश्व अंग तेहि देश ॥ षोड़श ऋत्विज मुरुख महान । हवन कराये सहित बिधान ॥ शिष्यन सहित ब्यास तपधाम । पूर्णकराये मख अ-भिराम ॥ करिमख पूर्ण भूपमतिमान । कीन्हेंभूरि भूमिकोदान॥ भूमिदानलै ब्यास मुनीश । कहतभये इमिसुनु अवनीश॥भूमि दान दीन्हें तुमजौन । निष्क्रय तासुदेहुलै तौन॥ बिप्रहिनहिं प्रियमहि अधिकार । बिप्रहि प्रियधन सुखदातार ॥ यह सुनि कहे धर्म क्षितिपाल । यहनमोहिं स्वीकारकृपाल ॥ बिप्रहिदयो दानजो भूमि । उचित न सोफिरि लीबोघूमि ॥ चारिभागकरि सिगरे बिप्र । हठतजि बांटिलेहु अवाक्षिप्र ॥ भाइन सहितकहे इमिभूप। कियेप्रशंसा सुमुनि अनूप ॥ फिरि इमिकहे ब्यासस-मुभ्काय । मोहिंदये तुम भूमि सचाय ॥ सोहम तुम्हैं देत तुम लेहु । निष्क्रय भूरि दक्षिणादेहु । तबनृपसों सुनि कहेसुबैन ॥

लेहु देहु कछु संशयहैन ॥ ब्यासकहत सोकरो सप्रेम। गुरुअ-
नुशासन दायकक्षेम ॥ यहसुनि धर्मभूप गहिचाव। भाइन सो
करि सम्मतभाव ॥ दोहा ॥ देतभये प्रति ऋत्विजन कोटिकोटि
धनभूप। द्वैद्वैकोटिबिचारि फिरिदयेयज्ञअनुरूप ॥ तेहिप्रकार
सब द्विजनकहँ दयेरत्न धनभूरि। सबमंडप ऋत्विजनकहँदी-
न्हेआनँदपूरि॥ सबजनकोपरितोष करिकरिअवभृथअस्नान।
सविधि नृपनकी रचिसभा बैठोशक्र समान ॥ गजमणि हय
भूषण बसन दैदैनृपनसप्रेम। धर्मभूप कीन्हेबिदासविधिपालि
व्रतनेम ॥ कृष्णराम आदिकन कहँ समुद यथा विधिपूजि।
बिदाकियोक्षितिपालमणि उचितबारताकूजि ॥ बभ्रुबाहनैकरि
बिदा सानँद धर्मनरेश। बसुवर्षत सब जननपहँ कीन्हे नगर
प्रबेश ॥ चौपाई ॥ बैशम्पायन सो इमिसुनिकै। बोले जनमेजय
नृप गुनिकै ॥ मखमें अचरज होहु निरेखे। कहौतौन ममहित
अवरेखे ॥ यहसुनि बैशम्पायन बोले। अचरजलखे रहेसो
खोले ॥ मखपूरण सबभो तेहि थलमें। नकुल एक आयोतेहि
पलमें ॥ सोअतिघोर शब्दतहँ करिकै। नरसम बोलिकह्योपण
धरिकै ॥ नहिंयह यज्ञभयो तेहिविधिको। पूर्बलखेहमजोअति
सिधिको ॥ यह सुनिबिप्र नकुलसों भाखे। कहौकौन मख तुम
लखिराखे ॥ यहसुनिनकुल कह्योसातिबानी। कुरुक्षेत्रमें होद्विज
ज्ञानी ॥ तियसुत पुत्रबधू मनभावन। रहीतासु तपरुचि उप-
जावन ॥ अन्नखेतसो बीनिलेआवत। सोभोजन करिकाल
बितावत ॥ अति दुरभिक्ष भयोतहँ सुनिये। तबद्विज अतिपी-
ड़ितभो गुनिये ॥ षटव्रतकरि कछुजबलैआयो। तेहिदिनबीतत
सिद्ध करायो ॥ सोकरि चारिभाग सबलीन्हे। बिधिवत बलि
बैश्वादिककीन्हे ॥ इतनेमेंद्विजएकपुकारत। आयोमहा क्षुधित
ह्वै आरत ॥ सोसुनिवृद्धबिप्र मुदगहिकै। ल्यायोकुटी मध्यहित
कहिकै ॥ अर्घपाद्यदे बिधिवतपूज्यो। आजुकृतार्थ भयों इमिकू-

णा भूरि ॥ शिक्षक जाकोव्यासमुनीश। कर्ता जासुधर्म अवनी-
श ॥ नकुलभयो निन्दत मखतौन। कहोविप्र यहकारणकौन॥
यहसुनिबैशम्पायन मोदि। यहिबिधि बोले महाबिनोदि ॥ सुनो
भूपइतिहास पुरान। पूर्बयज्ञ कीन्हे मघवान ॥ तहँपशु बधको
समयनिहारि। दयागहे सबबिप्र बिचारि ॥ कहेइन्द्रसोंकरिअ
नुमान। रुचत नपशुबध करब बिधान ॥ हिंसा सरिस न और
अधर्म। बिनुहिंसाको यज्ञसुकर्म ॥ तातेशास्त्ररीति अनुमानि।
होमोबीज धर्मबिधि जानि ॥ यहबिधिरुची न इन्द्रहि भूप। तेहि
थरभयो बिबादअनूप ॥ करिबिबादतबते मतिभौन। बसुभूप
ति सों बूझेतौन ॥ यहसुनिबसुबोलो गुणिआस ॥ होमोद्रब्य
होइजोप्राप्त ॥ यहसुनि बोलेबिप्रबिचित्र। बसुउत्तरदीन्हेअ-
पवित्र॥ नहिंहिंसा उत्तमपददेत। हिंसायज्ञ कामकोहेत ॥ जेहि
बिधिधन उपराजित होत। यज्ञ किये फलतथा तनोत ॥ लेकै
एकअपटुको मंत्र। उचितन करिबो कर्मस्वतंत्र ॥ बिश्वामित्र
जनक गुणिसर्ब। कीन्हे धार्मिककर्मअखर्ब ॥द्वादशवार्षिक यज्ञ
महान। रहे अगस्ति करतसबिधान ॥ तहँनववर्ष न बरषोबा-
रि। तबसब ब्राह्मण कहेबिचारि ॥ अन्नदेत कुम्भज यजमा-
न। नहिं जल बर्षत है जलदान। जो न अन्नहोइहि उत्पन्न।
तौहोइहि केहिभांति प्रपन्न ॥ यशजनलहिहैं पीड़ाभूरि। तजौ
यज्ञयहदोषबिसूरि॥ कुम्भजयहसुनिकैमनलाय ॥ सबबिप्रनसों
कहे बुझाय ॥ तजौशोच हमकहतप्रयोग। जो नहिं सधीअन्न
उतयोग॥ तौहमकरब मानसिकयज्ञ। कैमखयात्रा करबकृतज्ञ॥
मनदै सुनो कहतयह और। हमचाहैं सोकरैं सडौर ॥ जबचाहैं
हमकरैं सुवृष्टि। उतपातिकरैं चारिविधिसृष्टि ॥ सबजगमें जो
अनधनयत्र। जबचाहैं तब आनैं अत्र ॥ सुनिअगस्तिके ऐसे
बैन। किये प्रशंसा बिप्रसचैन ॥ सुनि ये बैन जानि परभाव।
बरषे बारिमेघ गहिचाव ॥ दोहा ॥ सहित बृहस्पति इन्द्रतहँ

आयेरुचि उपजाय । मख समाप्त करिमुनि द्विजन बिदा किये हर्षाय ॥ यहसुनि जनमेजयनृपति फिरि इमिकहे बिचारि । नकुलरूपवहकोरहो कहोतौननिरधारि ॥ चौपाई ॥ बैशम्पायनमुनियहसुनिकै । बोले जनमेजयसों गुनिकै ॥ ऋषि जमदग्नि श्राद्धपणधरिकै । राखेदूधपात्रमधि करिकै ॥ तेहिथर क्रोध स तन चलिआयो । मुनिकेदेखत दूधगिरायो ॥ सोलखि सुमुनि क्रोधनहिं कीन्हो । क्रोधकहो इमिविस्मयलीन्हो ॥ मुनिवरआजुमोहिं तुमजीते । आज्ञा करहु होहुजो चीते ॥ तबजमदग्नि कहे सुनुभाई । मोहिं तोहिं नहिं बैर मिताई ॥ हमहैं पितृकर्म केचाहक । ता मधि विघ्न किये तुम नाहक ॥ हम न गहैं कृत दण्ड उछाहू । अब तुम मम पितरनपहँ जाहू ॥ वैजो कहैंकरो सो सादर । यह सुनि क्रोध भयो तजिकादर ॥ तासुपितर ढिग गयो डेरानो । तेहि लखि पितर कहे इमि जानो ॥ तू हठ किये नकुलको कारय । ताते हो अबनकुल अनारय॥ यहसुनि सो अति बिनती कीन्हे । तब तिन शापनाश कहिदीन्हे ॥धर्म भूप के मखमें जैहो । तब तुम मुक्तशाप सोंह्वैहो ॥ सोवहक्रोध नकुल बपुधारी । आयो तहँ अघहानि बिचारी ॥ सोवहचेति आइतेहि थलमें । छुटो शापसों ताहीपलमें॥ दोहा ॥ यहिप्रकार भूपाल मणियशी युधिष्ठिर भूप । अश्वमेध मख करतभे लहि प्रभुकृपा अनूप ॥

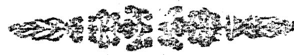
स्वतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेअश्वमेधपर्वसमाप्तिर्नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

इत्यश्वमेधपर्वसमाप्तः






# महाभारत दर्पण ॥



## आश्रमवासिकपर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ जेहि रघुवरप्रभु के चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरि भारत रचतभाषा बिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परमअनूप । ते सारथ रचिदेहिं यह भारत भाषा रूप ॥ जासुकृपाते सधत हैं शुभ आश्रम बिधि सर्व । ताहिसुमिरि भाषारचत आश्रम बासिकपर्व ॥ सोरठा ॥ सुमिरिउच्छलनिअक्षउदधि उलंघनसमय की । भारत समुद्रप्रतक्ष भाषा करि चाहत तस्यो ॥ जयकरी ॥ मुनि तब मम सुपितामहपूर्व । जयलहि पाय राज्य अतिगूर्व ॥ किमि धृतराष्ट्र भूपको तोष । कीन्हो गोपिपुत्र बध दोष ॥ केहि बिधि दम्पति वृद्धमहीप । रहे किते दिन कहु कुलदीप ॥ यह सुनि व्यास शिष्य मतिमान । कहतभये इमि सहित बिधान ॥ सुनोभूप लहि भूमि अशेश । सहित सुबन्धुनधर्म नरेश ॥ वृद्ध भूपतिहि बूझि सरीति । पालतप्रजा समस्त सनीति ॥रहत शुश्रूषा करत सप्रेम ।नितउठि बन्दत चरणसनेम ॥ धर्म नृपति को शासनपाय । संजयबिदुर युयुत्सु सचाय॥ सेवत रहतनृपति

सब याम । शासन लहतकरत सो आम ॥ करि तहँ बासव्यास तप धाम । रहत सुनावतकथा ललाम ॥ मंत्री सुभटसखासमुदाय । रहत पाणिजोरे ढिगजाय ॥तिमि कुंती अरुद्रुपदकुमारि। आदि सुभद्रा सिगरीनारि ॥ सेवत गान्धारिहि सबकाल ।रहि बिनीतकहि बचन रसाल ॥ भूमि रत्नअन धनको दान। कियो चहो धृतराष्ट्र सुजान ॥ सो बिधिवत करवायोधर्म । और सपुत्र सरिस करिकर्म ॥ भूषणवसन असन व्यवहार । अरु जो शासनको अधिकार ॥ रह्यो पूर्ववत तौन समस्त । अरु ताते कछु और प्रशस्त ॥ जाते पुत्र मरणको शोक। भूलिगयेदम्पति मुद ओक ॥ यहि बिधि भूप चन्द्रदश वर्ष । दम्पतिकिये व्यतीत सहर्ष ॥ सब दिन सब पाण्डव सुखदाय। सेवैं भूपहि दोष भुलाय ॥ भीम भूपको शासन मानि। सेवत वृद्धहि आनँदआनि ॥ पै उनको दुरमंत्र प्रभाव । अरुजो कुटिलपनेको छाव ॥ सो सबसमुझि समुझि अनखात। आदरकरत हियेपछिताात॥ एक दिवस पूरब बिरतांत । समुझि भीम अरिसेन कृतांत ॥ बाहु शब्द करि बीर अखर्ब । कहत भयो इमि बचन सगर्ब ॥ परिघोपम ममभुजाविशाल । अन्धभूपके सुतकेकाल ॥ चन्दन चर्च्चित पूजनयोग । है प्रसिद्ध जानतसबलोग ॥ सभासदनसों यहि बिधि बैन । दीरघगरेकह्यो बलऐन ॥ तौन सुनेनृपदम्पति वृद्ध । किये हिये में शोक प्रवृद्ध ॥ धर्म्म नकुल पारथसहदेव । कुंत्यादिक नहिं जाने भेव ॥ गहिनिर्वेद वृद्ध क्षितिपाल । कहे हितन सों बचन रसाल ॥ हैं हम सब अनरथको मूल। ममकुमंत्र मम हियको शूल ॥ दोहा ॥ दुष्ट मूढ़ दुर्योधनहिं राज्यदयो हम जौन। सकल जगतके नाशको दुस्तर कारण तौन ॥ द्रोण व्यास भीषम बिदुर कृप केशव के बैन। नाहिं मान्यो हम मोह बश कत न होहिंगतचैन ॥ धर्म शील पालक प्रजासुबुधि युधिष्ठिर ताहि। दई न महि पै तामही जगत सराहत ताहि॥तेहि

कुमंत्र को फल लह्यो ऐसो दुसह दराज। नृपति युधिष्ठिरबाहु
बल लह्यो अनूपम राज ॥ चौपाई ॥ धर्मभूपकी शासन रुखसों।
सेवत मोहिं सकल जन सुख सों ॥ इमिकहि वृद्ध भूप अनुमा-
नी। कहेधर्म भूपति सों बानी ॥ धर्म शील तुम कुरुकुलनायक।
हौ सर्वज्ञ सकल बिधिलायक ॥ तुमसम दोषनको करिगोपन।
सेवें सकल भांतिसों चोपन ॥ तुवप्रसाद हम कीन्हे नीके।दान
श्राद्ध बिधि भावत जीके ॥ सर्व धर्म्म शिक्षकतुम राजा। तुम्हैं
सराहत सुमुनि समाजा ॥ हम गान्धारी संमत करिकै। तुम
सों कहत उचित हिय धरिकै ॥ तुव शासनको लाभ उमाहत।
हमबनबास कियोअबचाहत ॥ बल्कलबसनअनूपमधारी।
जाब बिपिन हम सह गांधारी ॥ दै अनुशासन आशिष लेहू।
मोहिं बिदा करि आनँद देहू ॥ यह मम कुलकी रीति सदाहीं।
सुतहिं राज्य दै कानन जाहीं ॥ यहि बिधिवृद्ध नृपति सों
सुनिकै। नृपति युधिष्ठिर बोले गुनिकै ॥ तुम बन बसो सकल
दुख सहिकै। तौधिक मोहिं राज्यसुख लहिकै ॥ भोगराज्य
मखदान महानो। तुम बिनु मोहिं व्यर्थ सब मानो ॥ तुम
मम पिताबन्धु गुरु माता। हम तो सुवन आपु महित्राता ॥
लहेपापकरि अपयश पीछे। अब फिरि अयश देत तुमइछे ॥
दोहा ॥जो बन चलिबो अवशितौ देहु युयुत्सुहि राज। बिपिन
चलबहम आपुसँग सहित सुबन्धुसमाज ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र
नृपकहे सुनो क्षितिपाल। उचितमोहिं बनबासअब देखिबय-
क्रमकाल ॥ सकलभांति बहुदिवस तुम कियेशुश्रूषा तात। अब
आज्ञा बनवासको देव न अनुचित बात ॥ वृद्धहमहि बनउचि-
त अब यह मम कुलकीरीति। पाणि जोरिइमि भाषि नृपमोहित
भये सप्रीति ॥ रोला ॥ धर्म नृप आति भये खेदित दशा यह ल-
खितासु। बारिसों मुख हृदय ताको भये धोवत आसु ॥ बिदुर
संजय आदिसिगरे किये रोदन तत्र। आदि कुन्ती युवति रो-

दूत परे भूपति यत्र ॥ चेति क्षणमें वृद्ध उठिके नृपहि अंक लगाय । करे गदगद गरो फिरि इमि कह्यो प्रेम बढ़ाय ॥ छोहसों भरि हियो मेरो भयो पूरित मोह । तदपि तपकीभावना नहिं तजति मेरो गोह ॥ सुनो ताते हियो दृढ़ करिदेहु शासनमोहिं । जाब हम बन नीति गुणि नहिं नेक अनुचित तोहिं ॥ महा रोदन शब्द तेहि थर भयो पूरित भूप । व्याससुनि तब धर्मनृपसों कहे बचन अनूप ॥ कहत कुरुकुल दीप नृपसों करो संशय त्यागि । यहअवस्थापाय तपबिधि उचितबन मगलागि । शास्त्र बिधियह वृद्धनृपसब कियेतप बनबास । भाषि इमि निज आशरम गे गुप्तह्वै मुनि व्यास ॥ धर्म्म नृप सुनि घरिक गुणि इमि कहत भो मतिभौन । अवशिसो करतव्य आज्ञा गुरुजननकी जौन ॥ करोभोजन आजुअब इतममकह्यो प्रभुमानि । गह्योआश्रमबास तबजो कियेप्रण अनुमानि ॥ बचन यह धृतराष्ट्र नृप सुनिकरतभेस्वीकार । गयेदम्पति गेह निजसह बिदुर सबपरिवार ॥ तहांकरिसबकृत्य बिप्रन पूजि बिधि दरशाय । किये भोजन वृद्धदम्पति सरस रुचि उपजाय ॥ भोजनोत्तर वृद्धभूपति सहित सरस सुप्रेम । कहे नृप सों राज्य करियो सहित नीति सुनेम ॥ राजधर्म सुकर्म जो सब कहे भीषम तात । सदा तेहि अनुसार पालेहुप्रजा भट अवदात ॥ प्रजा पीड़ित होइ नहिं जेहिसे न होइ न क्षीन । लहै छिद्र न शत्रु जाते रहहुतेमि परबीन ॥ राज्य के सब अंग रक्षत रहेहु सहित बिधान । राखियो शुचि सुहृद मंत्री परम जोमतिमान ॥ मंत्रबिनु मतिकिहेहु कारज किहेहुकरि अनुमान । मंत्रको नहिं भेद पावै लखन कोऊआन ॥ सदा तोषत रहेहु सुभटन करिसुदानसुमान । सैनपतिअरु यूथपन कहँ किहेहु मित्र समान ॥ महा चतुर चलाक चारणरहेहुराखेतात । खबरिसिगरेदेशकी सुनिकेहेहुयत्न बिभात ॥ सरससुकृतीसुहृदराखेहु सहितचौकीदार । सूपपाणी

पानदायक किहेहुसाहितसुप्यार॥ सदाआमदखर्चअपनोसुनते रह्यो सनेम। अश्वगजकेदेखिबेमें रहेहुराखेप्रेम॥रहेहुरक्षत स-दासयतन जाति कुलको धर्म। रहेहु पूरण करत सबमें सविधि सकल सुकर्म॥ नित्य करियो सुबुधि अरु कबिकोविदन कोसंग। नित्य सुनियो शास्त्र अरु नितरहेहु गुणतसुढंग॥ मित्र अरि अरि मित्र अरुअरि शत्रुको अनुमान। करत रहियो युक्तिसों जेहि होइ नित कल्यान॥ युवा युवति शिकार आदिक विषयके आधीन। होइयो मति कबहुं ढिगकरि पुरुष मति गति हीन॥ सदाडर परलोक की यहि लोककीअतिलाज। रहेहुराखे कर-त रहियो दानपुण्य सुकाज॥ नृपतिसों नृप नीति इमिकहि नृ-पति बाहेरआय। दियेबिधिवतदान अगणित द्विजनकहँ बोल-वाय॥ खबरि यहसुनितहां आये व्यथित पुरजन सर्ब। जोरि युगकर भूपतिनसों कहे बचन अखर्ब॥ सुनो मम ममपुत्रके दुरमंत्रसोंयहिदेश। भयोअनरथमहासो नहिंकहतबनतअशे-श॥ नृप युधिष्ठिर सहित बन्धुन सबिधि सेयो मोहि। सकल बिधि परसन्न हमगुण धर्म इनके जोहि॥ सुनो अब मम हिये प्रकटित भयोअति निरबेद। जानचाहत बिपिन सह गान्धार जायहिभेद॥ सहित बन्धुन धर्म भूपति नीति सागर गूर्ब। स-बिधिसबको करिहि पालनयथा पूर्वज पूर्ब॥ दोहा॥ तातेतुम सबमुदितह्वै बिदाकरो अबमोहि। यहसुनि सबजन बिकलह्वै रोये अनरथजोहि॥ इतनेमें तहँ धीरधरि ब्राह्मण एकसुजान। कहतभयो धृतराष्ट्रसों सुनोभूप मतिमान॥ नहिंकाहूकी कुमति सोंभयोयुद्धजननाश। दैवचहतजोयत्न सों ताकोकरतप्रकाश॥ सबिधि पालिहै प्रजनकहँ पांडवनहिं संदेह। भूपजाहु तुम बिपिन कहँ कौनकहै तजिनेह॥ इतनेमें संध्या निरखि सब कोबिदा महीप। करि गान्धारी के सदनजात भयो कुरुदीप॥ सोरठा॥ तहँ सो रजनि बितायकहे बिदुर सों वृद्धनृप। धर्म

नृपति पहँ जाय कहो सँदेश अँदेश तजि ॥ जाब बिपिन हम तात पाय कार्तिकीपूर्णिमा। कियो चहत अवदात यहिअन्तरमें श्राद्धमख॥ भीष्म द्रोण बाहलीक दुर्योधन आदिकन को। श्राद्धकरब लखिलीक हिता सुहित लैभूरिधन॥ चौपाई॥ यह सुनि बिदुर मोद सा छाये। सादरधर्म्म नृपति पहँ आये॥ बिधिवत समाचार सबभाखे। सो सुनि भीमसेन अतिमाखे॥ कहे न यहि हित देबउन्हें धन। करबश्राद्ध हम यथारुचिहिमन॥ दुर्योधन आदिक सुत उनके। हैं नहिं श्राद्ध कर्मके गुनके॥ अब इमि बोलत ऋजुता पागे। यह मति कहांगईही आगे॥ यह सुनि अर्जुन अनुचित जानी। कहे कहत कत अति कटुबानी॥ वृद्ध पिताके जेठेभाई। निज आश्रित हतपुत्र सहाई॥दम्पति वन जैबे कहँ दीक्षित। करिबो उचित तासुसबईछित॥ देब न देवन तुम आधीना। उचित करिहि क्षितिनाथप्रवीना॥ यह सुनि धर्म भूप सुख पाये। भीमसेन रहु मौन सुनाये॥ तबइमि कहे बिदुर सों राजा। तासुसकलमम राज्य समाजा॥ हयगज रजत वसनमणि जेतो। मांगें भेजिदेहिं हम तेतो॥ बन दुख समुझिभीम इमि माख्यो। ताते इबिधि बचन कटु भाख्यो॥ सो यह वचन हिये मति आनैं। मम धन प्राण आपनो जानैं॥ तब चलिबिदुर भूप पहँ आये। सबिधि सकल वृत्तान्त सुनाये॥ सोसुनि भूपति आनँद लीन्हें। सबिधि श्राद्धको रंभनकीन्हें॥ दोहा॥ तहां युधिष्ठिर नृपति के भृत्यनके समुदाय। हाजिररहि सब सौज सह शासन लखे सचाय॥ शत सहस्र अरु अयुत धन जाहि दिवाये जौन। हय गजमणि क्षिति वसनसब दिये ताहि ते तौन॥ पृथक पृथक सब जननको करि करि श्राद्धसप्रीति। भूरिदक्षिणा देतभे नृपधृतराष्ट्र सनीति॥ यथायोगसब बरण कहँ भोजन दीन्हें भूरि। यहि प्रकार दश दिनकियेश्राद्ध यज्ञमुदपूरि॥ जयकरी॥ तबभूपति सोनिशाबिताय। भोरकार्तिकी

पूनोपाय ॥ प्रातकृत्यकरि सतियसचाय । प्रेम भरे पाण्डवबुल-
वाय ॥ करि सुबार्त्ता दम्पति भूप। गहे बिपिन की गैलअनूप ॥
पटबांधे चखमें अभिराम । गान्धारी अति पतिव्रत बाम ॥ कु-
न्ती के काँधेपर पानि। धरेचली बिधिगति अनुमानि॥ गान्धारी
के कांधेहाथ। धरिभो चलतवृद्ध क्षितिनाथ ॥ लीन्हें अग्नि-
होत्र सुखदान । आगे चलो बिप्रमतिमान ॥ रुदनकरत कुरु-
कुलकी नारि । संग चलीं अतिदुख बिस्तारि ॥ रोवत पांडव
करत प्रलाप। चले संगअति भरे उताप ॥ व्याकुलरोवत पुर
जन सर्ब। रुदत चले दुखगहे अखर्ब ॥ सुनोभूपतेहि क्षणकी
बात। दुसहदशा कछुकहीन जात ॥ चलिकछुदूरि भूपसमुझा-
य। फेरत भये युवति समुदाय॥ फिरि बुझाय पुरजनकहँफेरि।
चले भूप दुस्तर दुख मेरि ॥ धर्मभीम अर्जुन दुखपूरि । माद्री
सुवन गहे दुख भूरि ॥ संजय बिदुर युयुत्सु अचैन। धौम्य आ-
दि बहु द्विज मतिऐन॥ रोवतचले बिकलताछाय। कहतप्रला-
पितबचनअवाय॥दोहा॥ तबभूपति पाण्डवनकहँ बहुत भांतिस-
मुझाय। आशिष दै कीन्हेंबिदा गहि गहि अंक लगाय॥ धर्म
भूप अरु भीम तब मोहमये बहु बैन। निज जननीसों कहतभे
व्याकुल भये अचैन ॥ सो सुनि कुंतीरुदन करि सबिधि तिन्हैं
समुझाय। नहिं पलटी नृप सँगचली नेहजाल निछुटाय ॥तब
दम्पति बहुबिधिकहे तासु फिरनके हेत। तबहूंकुंती नहिं फिरी
गई बिपिनगत चेत ॥ रुदन प्रदक्षिण तिनहिं करि भूपतिआ-
ये गेह। बिपिन गये संजय बिदुर नृप सँगभरे सनेह॥ सोरठा ॥
रामकृष्ण सियराम रटत भूप अतिप्रेमसों। उत्तर दिशिअभि-
राम सुरसरि तट चलि जातभे ॥

इतिआश्रमबासिकपर्बणिधृतराष्ट्रस्याश्रमबासगमनोनामप्रथमोऽध्यायः १

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुरसरि तट धृतराष्ट्र नृपजानिऋषिन
कीभीर । अग्निहोत्र बिधि करि निबासिरजनि बिताई धीर ॥

जयकरी ॥ भोरबिदुरको सम्मतपाय । कीन्हे तहांनिवाससचाय ॥ कुन्ती सहदम्पाति मतिमान । कीन्हेसुरसरिमें अस्नान । कीन्हे उचित कृत्यअनुमानि । बिप्रनसहित बेद बिधिजानि ॥ आइ तहां मुनिगण सउमङ्ग । भये सुनावत कथाप्रसंग ॥ इमि मुनि सँग सो दिवस बिताय । सन्ध्या कृत्यकिये मनलाय ॥ करिउप-बास डासिकुशशैनि । भूप बितावतभे सो रैनि ॥ प्रातकृत्यकरि बिप्रन बन्दि । कुरुक्षेत्र कहँ गये अनन्दि ॥ तहां मिलोराजर्षि अनूप । केकय अधिप भूप शत यूप ॥ सो पुत्रहि दे राज्य ल-लाम । हो बनबासकरत तपधाम ॥ मिलितासों नृप ताके संग। ब्यांसाश्रम गे भरे उमंग ॥ बन्दि सबिधि मुनिबरके पाय । टिके भूपके आश्रम जाय ॥ मुनिबर के आज्ञाअनुसार । बानप्रस्थ को बिधि ब्यवहार ॥ भयो सुनावत केकयराज । तिमि बिलसो कुरुकुल शिरताज ॥ गान्धारी अरु कुन्ती बाम । संजयबिदुर भूप तपधाम ॥ बल्कल अजिन मनोहर धारि । कन्दमूल को अशन बिचारि ॥ करि ब्रत चरणलगेगहि नीति । मनबचकर्म सबइन्द्रियजीति ॥ भयेअस्थि अरुचर्म्मांशेष । जटा मौलिअ-तितेज बिशेष ॥ संजय बिदुर ब्रतीगहि नेम । निशिदिन सेवत नृपहि सनेम ॥ भूपचरत दुस्तर ब्रत यत्र । नारद मुनिआवत भे तत्र ॥ अरु पर्वत देवल तपधाम । देखि तिन्हें लहि आनँद आम ॥ कुन्ती करिसत्कारअहीन । करत भईआसनआसीन॥ शिष्यन सहित ब्यासमुनि आय । बैठत भेतहँ रुचिउपजाय ॥ तहँ नारदमुनिसमय निहारि । कहे पूर्बवृत्तान्त बिचारि ॥नृपति सहस्राचित्यहो पूर्ब । केकयनाथ बिदित भटगूर्ब ॥ हैंशतयूपभूप इतजौन । ताको रहो पितामह तौन ॥ सो पुत्रहि दै पृथ्वी तन्त। बन बासिलहि अति तपकोअन्त ॥बसो जाइसुरपतिके लोक । सुरपति सरिसतेज को ओक ॥ तिमिशैलाल भूमि भर्तार । जो भगदत्तमहीपउदार॥ताकोरहोपितामहतौन।तपबललह्योस्वर्ग

मतिभौन ॥ नृपवृषध्र करि तप अधिकाय। बिलसत भयोशक्र पुरजाय॥मान्धाताकोसुवनमहीप।हो पुरुकुत्सबिदितकुलदीप ॥ सोबनमें करि तप अभिराम । बिलसो शक्रलोकलहिग्राम ॥हो शशलोमा नामकभूप। सोइततपि दिव लह्योअनूप॥ द्वैपायन मुनिके परसाद । इत तप चरिकरि हरिगुण नाद ॥ तुमदम्पति लहिधामबिभात। करिहौंबिशदबासअवदात॥ धर्मभूपकीजननिसुजानि। सुमिरत पतिहित पतिहितमानि॥ सोजाइहि निज पतिकेपास। पूरणकरिहि तासुप्रभुआस ॥ लहिहिस्वर्ग संजय परबीन।होइहि बिदुर धर्ममें लीन ॥सुनिनारदके ऐसेबैन। पूजन कियो भूप मति ऐन ॥ यह सुनिकै शतयूप नरेश । कीन्हें मुनि को अस्तुति बेश ॥ अस्तुति करि उर आनँद आनि। बूझतभयो जोरियुग पानि॥ दोहा ॥ प्रभुसब तपकृत के कहेलोक गमन तजिखेद। नहिं इन दम्पति को कहे लोक बासको भेद॥ नारदउवाच ॥ तीनि वर्ष तप और करिये दम्पति मतिमान। तजितजि धाम कुबेरके बसिहैं जाय महान ॥ सोरठा ॥ इमिकहि देव मुनीश पर्वत देवल दिवगये। सहचर यह अवनीश सुनि आनँदसों भरि भये ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ गये भूपति विपिन जब तब सहित बन्धुनधर्म। शोचबश रहि कछू दिन करिभूमि शासनकर्म ॥ देखिबे की लालसा नहिं सकोरोंकि नरेश।सहित नारिन सहित पुरजन चलतभो तेहि देश ॥ नगर रक्षण हेतु राखि युयुत्सुकहँ रणधीर । कछूदिन चलि उतरि यमुना गये आश्रमतीर ॥ दूरते लखिआश्रम सबत्यागि बाहनसर्ब। मुनिन बूझत गये नृपढिग भरे शोच अखर्ब ॥ बारिपूरणकलशलीन्हे तिन्हैं आवत देखि । दौरिपाण्डव परे पांयन महादुखसों भेखि॥ लाइकै सहदेव कहँ उर तजति आंशूधार। कही कुन्ती पुत्र आये सुनतभूप उदार ॥ भयो सबकहँ अङ्क लावत करत रोदन भूरि। अङ्क लाई सुतनकहँ गान्धारजा दुखपूरि॥कलश

तिनके लये निजकर सकल पाण्डव तत्र। बधुन सों पुरजनन सों मिलिगये आश्रम यत्र ॥ आगमन सुनि पाण्डवनको ऋषिनके समुदाय । कहे संजय देहु सबके नाम भेद बताय ॥ बचन सो सुनि मुनिनसों इमि भयो कहत सुभेव । धर्म्म ये ये भीम अर्जुन नकुलये सहदेव ॥द्रौपदी बसुदेव जाये उत्तरायहि रीति। पृथक् पृथक् बताय दीन्हे गहेअतिशय प्रीति ॥ देखिमुनिवर गये निज निज आश्रमन सुखदान । वृद्धनृपतब भयो बूझत कुशल सहित बिधान ॥ भाषि सब बिधि कुशल निज नृप धर्म इत उत जोहि । कहे कितगो विदुर नहिं लखि परत है इत मोहि ॥ कहे नृप बसिबिदुर बनमें चरत तप अतिघोर। मौन रहि करि बायु भक्षण भरो धूरि अथोर॥ मुनिनकहँलखि परत कबहूं भ्रमत रहि दिगबास । गयोमोकहँ भूलिआवत कबहुं नहिं मम पास ॥ इते में नृप धर्मकहँ लखि परो बिदुरमहान । चला बनमें जात धूलिन मत्त द्विरद समान ॥ देखि नृप उठि दौरिकै इमि चलो टेरत ताहि। हम युधिष्ठिर विदुरथिरकै देहुदर्शन चाहि ॥ भूप के सुनि वचन क्षत्ता गहनबनमें जाय। बृक्षसों लगि खरो रहि भो लखत यकटकलाय ॥ जाय नृपभो खरो आगे गहे प्रीति अथोरि । मौन रहि सो रह्यो अनमिष चखन सों चख जोरि ॥ योग बलसों मिलैदीन्हो प्राणमें निज प्राण । इन्द्रियनमों सकल इन्द्री दयो मिलय सुजान ॥ बुद्धि मन चितबायु सिगरे मिलैकै परबीन । बिदुर यहिबिधि धर्म्म नृपमें होत भो तहँलीन ॥ धर्मनृप तब बिदुर को तहँ लखि अचेतन गात। तेज गुण बल अधिक निजमेंलखत भो अवदात ॥ ब्यास ताकहँ रहे योगी कहे सो अनुमानि। योगबिधि करि भयो मोमहँ लीन ऐसो जानि ॥ चहेतबनृपदग्ध करिबो तासु देह अनूप। गगनबाणी भई तहँ मतिकरो ऐसोभूप ॥ परम योगी कियेहै यह ज्ञान दग्ध शरीर। बचनयहसुनि पलटि आयो भूप

सुमति गँभीर ॥ बिदुरकी सो दशा सबसों कहे भूपति जाय। सुनतसो सब रहे ठगिसे महा दुखसोंछाय ॥ वृद्ध नृप तब देतभे फल मूल भोजन जौन। अशन सो करि भूमि शय्या किये सब मतिभौन ॥ कथाबार्ता करत सबते तीनि रजनि बिताय। कृत्य करिकै वृद्धनृपकी सरसआज्ञा पाय ॥ लखनलागे मुनिजननको आशरम रमणीय। अग्निपक्षी मृग गणनिसों परमजो कमनीय॥ बन्दिबिप्रन देतथाली श्रुवाअजिन अनेक। अरुकमण्डलु कनकके शुचिकुम्भसहित बिबेक ॥ इबिधि मिलिसब मुनिनसों फिरि भूपके ढिग आय। बन्दि बिधिवत भये बैठत सरस आज्ञा पाय ॥ सुमन सुरपति सहित जैसे लसत सुरगुरु दक्ष। पाण्डवन सह भूप तैसे भयो लसतप्रतक्ष ॥ दोहा ॥ इतनेमें शिष्यन सहित आये व्यास मुनीश। आसनस्थ कीन्हेसबिधि पूजि ताहि अवनीश ॥ आसनस्थ ह्वै मुनिन सह व्यास मुनीश महान। तप मन सहचर ज्ञानकी बूझै कुशल बिधान ॥ कुशलप्रश्न करि व्यासमुनि कहतभये समुझाय। यमराजहि मांडव्य ऋषि शाप दयो अनखाय॥ दासीसुत तूहो जनमिभयो बिदुर तेहि हेत। ताहीते नृपधर्ममें मिलो सुज्ञान निकेत ॥ धर्मजौनसो बिदुर है बिदुर जौन सो धर्म। बायु बारि क्षिति अग्नि नभ सम ये निर्मल कर्म ॥ चौपाई ॥ इतने में तहँ मुनिवर आये। नारदपर्बत देवलगाये ॥ अरुबिश्वाबसु आनँद छाये। चित्रसेन तुम्बरु मुनि भाये ॥ वृद्धभूपकी आज्ञा पाये। पूजि धर्म भूपति बैठाये ॥ बैठितहांमुनिवर तपरिधिके। कथाप्रसंग कहे बहुबिधिके ॥ तबसुनि व्यास कृपा सों भरिकै। बोलतभये दया हियधरिकै॥ सुतधृतराष्ट्र तुम्हैं लखि दीक्षित। हमपरसन्न कहो जो ईच्छित ॥ देखो सुनोलहो जोचाहौ। सोहमदेहिं न दुख अवगाहौ ॥ यहसुनि भूप मोद हियराखे। पाणि जोरि मुनिवर सों भाखे ॥ ममसुत गह्यो कपट अति मनमें ॥ ताते

प्रलय होतभोरनमें ॥ पुत्र पउत्र सखासम्बन्धी। बंधु पितामह जे अनुबन्धी ॥ तिन्हैंसमुझि मन धीरनधारै। सो दुख अग्नि सरिसहियजारै ॥ इमिकहिमौनरहो ब्रतधारी। तबइमि कहत भईगान्धारी ॥ नाथभूप हम अरुसबनारी। प्रियजनके बध परम दुखारी ॥ सहिन सकैं दुख हियेकराहैं। हमसब तिनकहँ देखन चाहैं ॥ यह सुनि ब्यासमुनीश सुज्ञानी। कुन्तीसों बोले प्रियबानी ॥ कुन्ती होय परम प्रिय तोहिं। सो अबमांगुबरद गुणि मोहिं ॥ सो सुनि कुन्ती आनँद गहिकै। बिधिवत्त जन्म करणको कहिकै ॥ इमि कहि कहत भई अति शोचित। मैं मुद लही नतासु यथोचित ॥ सोनाहिं लह्यो जननि सुख मोसों। यहदुख हिये किते दिन पोसों ॥ दर्शन तासु देहु मुनिनायक। तुम सर्बज्ञ सर्ब बिधि लायक॥ दोहा ॥ तबमुनि दम्पातिसों कहे तुम सुतबधुन समेत। जाहुसरित तट तहँ तिन्हैं लखिहौ ज्ञान निकेत ॥ सोसुनि नृप पाण्डव सहित अरु सब कुरुकुल नारि। सुरसरिके तटजाइकैकिये निवास बिचारि ॥ बर्षसरिस सोदिन बितै करि सन्ध्यादिक कर्म। बैठतभेढिग ब्यासके सिगरेपालकबर्म॥ चौपाई ॥ तबमुनि ब्यास बारि मधि धसिकै। मंत्रजापकरि रबिसम लसिकै ॥ कीन्हे आवाहन ब्रतधारी। भो जलमध्य शब्दअति भारी ॥ भूपति तहँ सुरसरि सों निकरे। बाहन शयन सहित नृपसिगरे॥ जाको जैसो रूप सोहावन। बाहन वेष रहो मन भावन ॥ तेतिमि प्रगट भये सुनु राजा। सहित सखा सुत सैन समाजा ॥ द्रुपद बिराट करणदुर्योधन। बन्धुन सहितसहित सब योधन ॥ शकुनि जयद्रथ शलौशिखण्डी। सोमदत्त बाह्लीक अदण्डी ॥ भूरिश्रवा शल्यवृषसेना। धृष्टद्युम्न केकय जगजेना ॥ द्रौपदेय अभिमन्युसुबीरा। लक्ष्मण इराबाणरणधीरा ॥ चेकितानहैडाम्बि अमाना। भटभगदत्त अलम्बुष जाना ॥ इन्हैंआदि नृपसुभटघनेरे। गनेरहे जेबीरबड़ेरे॥ बिनु

विरोधतेसिगरेआये। देखिपरस्परअतिसुखपाये॥ब्यासप्रसाद दिब्य चखलहिकै। दम्पतिवृद्ध मोद अतिगहिकै॥ सादरपुत्र पउत्रनदेखे। बन्धुनदेखि सुदिनअवरेखे॥पाण्डवअति आनँद सोंफेटे। उठि उठि पुत्रन सुहृदन भेटे॥ निज निज सुत पति पितहि निहारी। उठि उठि मिलतभईं सब नारी॥ दोहा॥ नृपसो निशि सबकहँ भई अति आनँदकी खानि। युवति पतिन सों मिलिरहीं महा कृतारथ मानि॥ यहिप्रकार मिलिपरस्पर महामोद सों पूरि। नर नारी सब हियेको शोक करतभे दूरि॥ यहि प्रकार मिलि रहि तहां नृप सो निशा बिताय। सब सबही सों ह्वै बिदा गये मोद दर्शाय॥ जे आये जेहिलोक सों तेतु गये त्यहि लोक। तब सब तरुणिनसों कहे मुनिजलस्थ तपओक॥ सोरठा॥ जो चाहै पति संग सो जलमधि धसि त्यागि तन।लहि पति लोक अभंग बिहरै पति सँग मोद भरि॥ चौपाई॥ यह सुनिकै पति बृता नारी। लहि नृपकी आज्ञा हितचारी॥ जल मधिधसिधसिकै तन तजिकै। जातभईं पतिढिगछबि सजिकै॥ दिब्य बिमानन चढ़ि चढ़िभामिनि। निज निजपति ढिगगईंसुकामिनि॥ जनमेजय भूपति यह सुनिकै। ब्यास शिष्यसोंबूझै गुनिकै॥ सबको देहरहो इत सहिये। सबवह देह लहे कितकहिये॥ जनमेजयके बचनअतोले। सुनिइमिबैशम्पायनबोले॥ होत न नाश कर्मको जौलौं। नृप नहिं देह नशातिहै तौलौं॥जौ लगिदूसर जनम न होई। तौलगि बिलसति आकृत सोई॥ तब जनमेजय मुनि सों भाषे। हमनिजपितु दर्शनअभिलाषे॥ ब्यास कृपा करि पितुहि लखावैं। तब हम निश्चय गुणि मुद पावैं॥ तब मुनि ब्यास भूप के चाहन। किये परीक्षितको आवाहन॥ निजबयरूप भूपतहँआये। जनमेजय लखि आनँद पाये॥ बन्दिपिताके चरण सोहाये। नृपअवभृथअस्नानकराये॥करिअवभृथ अस्नानसुखारे। नृपतिपरीक्षितस्वर्गपधारे॥

यह इतिहास सरुचिजे सुनिहैं । तेलहिहैं जो लहिवो गुनिहैं ॥
वैशम्पायन की यह बानी । सुनिबोले जनमेजयज्ञानी ॥ दोहा ॥
पुत्र पउत्रन सखन लखि नृपधृतराष्ट्र अहीन । किये कहा सो
अब कहो व्यास शिष्य परबीन ॥ बैशम्पायन मुनि कहे तब
नृप आश्रम आय । पुरजन अरु सैनिकनकहँ बिदा कियेसमु-
झाय ॥ पाण्डव निज स्त्रिन सहित अरु सहसेना शेष । बैठि
लसे ढिग नृपति के मानो सुमनाबिशेष ॥ जयकरी ॥ तबमुनिव्या-
सदेव सुखदानि । कहेवृद्ध नृप सों अनुमानि ॥ नृपतुमसबबिधि
सरस सुजान । नारदादि सों सुने सुज्ञान ॥ अब मति गहोशोच
को लेश । तप व्रतकरि बितवो दिनशेश ॥ आयोपाण्डव नृपति
अनूप । एकमास बीतो सुनु भूप ॥ बिदाकरौ अब सबिधि बु-
झाय । करैं प्रजापालन गृहजाय ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्रमहीप ।
कहत भये सुनु कुरुकुलदीप ॥ इतते आगमके परसाद । हम
पाये सब बिधि अह्लाद ॥ अब हास्तिनपुर जाहुसप्रीति ।
करौ प्रजा पालन गहि नीति ॥ यह सुनिबोले धर्मनरेश ।
भूप मोहिं राखौ यहि देश ॥ भीम आदि ममबन्धु बिशाल ।
करिहैं जाय प्रजा प्रतिपाल ॥ तब गान्धारी कही सचैन । पुत्र
कहौ मति ऐसे बैन ॥ तुम कुरुकुल के नाथ महान । करौ प्रजा
पालन सबिधान ॥ मानिभूपको बचन सनेह । बन्धुन सहित
जाहुनिजगेह ॥ यहसुनि धर्म भूप दुखधारि । निज जननी सों
कहे बिचारि ॥ मातु बिसर्जत भूपति मोहि । हम नहिं त्यागि
सकत बन जोहि ॥ बन्धुसखा सम्बन्धिन हीन । मोकहँ लगत
राज्यपदक्षीन ॥ यह सुनिकै बोले सहदेव । गेह जाहु तुम भूप
सुभेव ॥ हम इत रहबजननिके संग । सेवब चरण पालि
व्रत अंग ॥ यहसुनिकै कुन्ती दुख पाय । फिरि फिरि पुत्रनअंक
लगाय ॥ बोलीपुत्र नेह दुखत्यागि । पालौ प्रजानीति मनला-
गि ॥ तुम्हरे रहे भंग तप होत । ताते जाहु पुत्र मतिपोत ॥ यहि

बिधिकहिकहि बचन प्रशस्त। बिदाकरत भे वृद्धसमस्त॥ त-
जत चषनते जलकीधार। बिदाभये सबबन्धु उदार॥ करिकरि
परदक्षिण सबिधान। चरणबन्दि डगरे मतिमान॥ द्रुपदसुता
आदिक सब बाम। रुदतचलीं अति दुखसों क्षाम॥ चलैं लखैं
फिरिचलैं सखेद। यहिबिधि चलिपूरितनिरबेद॥ हयगजतुरँग-
नचढ़ि चढ़ि सर्ब। आये हास्तिननगर अखर्ब॥ हास्तिननगर
आइनृपधर्म। लागेकरननृपनकेकर्म॥ ताकेदोयवर्षकेबाद। ना-
रदकरतबिष्णु गुणनाद॥ आयेधर्मनृपतिकेपास। पूज्योसबिधि
भूपमतिरास॥ आसनस्थकरिज्ञाननिकेत। बूझतभेआगमको
हेत॥ नाथ देहु अनुशासन जौन। सानँद शीघ्र करौंमैंतौन॥
दोहा॥ यह सुनिकै नारदकहे सुनो युधिष्ठिर दान्त। उत्तरदिशि
हम जाइकै लख्यो एक वृत्तान्त॥ नृप आश्रमसों जब इहांतुम
आये तब भूप। कुरुक्षेत्र तजिकै गये गंगाद्वारअनूप॥ चौपाई॥
तहां भूप अनशन बृत लीन्हे। वायु अहार क्षुधाहित कीन्हे॥
जल अहार बृत करि गान्धारी। रहत भई तहँ पतिबृतचारी॥
कुन्ती एकमास गत करिकै। खायकछूफल व्रतबिधि चरिकै॥
छठयेदिनफल मूलअहारा। संजय करै पालि व्रतधारा॥ एक
दिवस सुरसरितटबनमें। बैठे हरिहि जपत हेमनमें॥ इतनेमें
तेहि बनमें राजा। लगो दवानल अनरथसाजा॥ तब बनजी-
व बिकलतापागे। जरे असंख्यन अगणितभागे॥ निराहारव्रतैं
सों बलहीने। चलि न सके तो पितरप्रबीने॥ संजय सों इ-
मि कहे बुझाई। अबहिय दृढ़करि नेह बिहाई॥ तुमकढ़िजा-
हुन संशय आनो। यहयहिसमय कहोममनानो॥ यहि प्रकार
संजय सों कहिकै। ते त्रय रहे योग बिधि गहिकै॥ सो सुनि
लखि संजय मेधावी। गुणिरहि घरिक बूझिकै भावी॥ सत्वर
तिन्हैं प्रदक्षिण करिकै। गंगा तीर जातभे टरिकै॥ कुन्तीभूप-
ति अरु गान्धारी। योगी सबै योग बिधिधारी॥ जरेकाष्ठसम

निश्चलरहिकै । भयेन नेकु बिकल दुख लहिकै ॥ संजय यह मुनिजनसों भाषी । गे हिमवान योग अभिलाषी ॥ दोहा ॥ सुनि मुनिजनसों यह दशा हम आये तुव पास । उचितहोइ अबजो क्रिया करौ तौन मतिरास ॥ यह अनरथ सुनि धर्मनृपगहि अति दुसह उताप । कुन्तीनृप गान्धारजहि शोच कियेपरलाप ॥ भीम आर्जुनसे प्रबलजाकेसुत रणधीर । ते जरिमरेअनाथ सम समुझि होत यह पीर ॥ यहिबिधि कहिकहि धर्मनृप महा शोकसोंपूरि । भीमादिक बन्धुन सहित रोदन कीन्हेभूरि ॥ चौपाई ॥ द्रुपद सुता दितीय यह सुनिकै । रुदतभई अति अनरथ गुनिकै ॥ पुरजन सखा सुभट दुखभोये । अतिआरत धुनि करि करि रोये ॥ तब नारदभूपहि समुझाये । मौनकराय सु बचनसुनाये॥ भूपतिसुनो शोकमतिधारो । बिहित अबिहित बिधान बिचारो ॥ कुन्ती अरु भूपति गान्धारी । हे अतिज्ञानी तत्त्व बिचारी ॥ किये उग्र तप अति ब्रत गहिकै । हे चाहततन त्याग उमहि कै ॥ जरे न प्रकृता जलमधि परिकै । हम यहसुने मुनिन सँग चरिकै ॥ कीन्हें होम अनल सों बढ़िकै । बर्द्धितभयो तरुणपै चढ़िकै ॥ तामधि जरे भूप सुनि लीजै । अबउनको कुछ शोच न कीजै ॥ गई पाण्डु ढिग जननि तुम्हारी । जेहि हित तपत रही ब्रत धारी ॥ शोक त्यागि अब धीरज धरिये । बिधिवत उदक क्रिया सब करिये ॥ यह सुनि भूपति जानि यथोचित । बंधुन सहित दुखित अति शोचित ॥ इस्त्रिनसहित सहित पुरबासिन । एकएक पटगहे उदासिन ॥ कढ़िपुरते सुरसरितट आये । बैठि क्षणक फिरि पैठि अन्हाये ॥ तब युयुत्सु कहँ आगे करिकै । उदक दान कीन्हें बिधिधरिकै ॥ गान्धारी कुन्ती निज मातहि । अरु धृतराष्ट्र नृपति भणितातहि ॥उदक दान करि मत ठहराये । सुहित बिधिज्ञ सुज्ञाति बुलाये ॥ तिन सों कहत भये समुझाई । गंगाद्धार जाहु तुम भाई ॥ जहां जरे

नृप दावानलमें । तहँलै अस्थि प्रवाहेहु जलमें ॥ सो सुनिकै ते आनँद धारे । तुरितहि गंगाद्वार पधारे ॥ बरहेंदिवस युधिष्ठिर राजा । शुद्ध होत मे सहित समाजा ॥ विधिवत श्राद्ध कर्म्म नृप कीन्हे । दान असंख्य द्विजनकहँ दीन्हे ॥ दोहा ॥ तिन तृमूर्ति को भूमिपति पृथक् पृथक्लै नाम । पिण्डदान करिद्विजन कहँ दिये द्रव्यअभिराम ॥ श्राद्ध कर्म्म करि भूमिपति कीन्हें नगर प्रवेश । मोह भरे बन्धुन सहित राजेयथाप्रवेश ॥ गंगाद्वार गये रहे जेते तेहि थल जाय । अस्थि बीनि एकत्र करि गंध सुपुष्प चढ़ाय ॥ करि प्रबाह सुरसरितमें पलटि भूप पहँ आय । उत कीन्हे उपचार सो भूपहि दये सुनाय ॥ तब नारद मुनि भूपतिहि करि आश्वासित तत्र । हरि गुण टेरतक्के बिदा रमेजाय अन्यत्र ॥ जयकरी ॥ दुर्योधन के बध उपरान्त । पन्द्रह वर्ष नगर रहि दान्त ॥ तीनि वर्ष करि विपिन बिहार । मरेभूप धृतराष्ट्र उदार ॥ तदनु युधिष्ठिर भूप प्रवीन । उदासीन रहि आनँद क्षीन ॥ धरत भयो महिभार सरीति । पाल्योप्रजा पालि नृप नीति ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रकहँ जपतनित लखत रहत धरि ध्यान । कृष्ण प्रभुहि प्रत्यक्ष लखि पावत मोद महान ॥ राम कृष्णकी लहि कृपाको नहिं पावत मोद । रामकृपाते शक्र सुर दिवमधि करत विनोद ॥

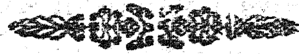
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजेन गोपीनाथकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेआश्रमवासिक पर्वसमाप्तिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

इतिश्रीआश्रमवासिकपर्वसमाप्तम् ॥

---



# महाभारत दर्पण ॥



## मूशलपर्ब दर्पणः ॥

नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमं । देवींसरस्वतींचैव ततो जयमुदीरयेत् ॥ दोहा॥नमस्कारनारायणहिकरिनरोत्तमहिंनौमि। बन्दिगिराव्यासहि रचत भारत भाषा सौमि॥ भूकृतभूभृतभू भरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनतयहभाषा भारत महान॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहुशत कोटिअमंद। ताहि सुमिरि भारत रचत भाषाविरचिसुछंद ॥ पारथकेसारथ भये सारथि परमअनूप । ते सारथ देहैं बिरचि भारत भाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबर बीर रामपरम प्रियपारषद। मंगल मूरति धीर भारतस्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ जाकोजपत सुनाम कुशल कुशलताल्लहत जन । मुशल पर्व अभिराम ताहिध्याय भाषा रचत ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ भूप युधिष्ठिर राज्य महान। छत्तिसबर्ष भोग मतिमान॥ अनरथकर्ता अशकुनभूरि। देखि रहतभे चिन्तापूरि ॥ सुने कछू दिनमें अतिघोर । यदुवंशिनको नाशकठोर ॥ अति शोकाकुल ह्वै हत चेत । सब संकल्प भये तजिदेत ॥ जनमेजयउवाच ॥ केहिप्रकार बिनशोयदुबंश । सबनृपमंडलके अवतंश ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनो भूमिपति अ-

नरथ तौन । हरिकीईहा मेटैकौन ॥ बिश्वामित्र कण्वमुनिराज । अरु नारदमुनि मुनि शिरताज ॥ आइद्वारकामें तप गेह । भये बिराजत सहित सुनेह ॥ तिनसों सारण आदि कुमार । कौतुक करत भये यहि चार ॥ सांबहि गर्बिनि युवति बनाय । कहेमोह बश मुनि सों जाय ॥ याके होइहै कैसोबाल । देहुबतायसुतप को चाल ॥ यहसुनिकै मुनिकरि अनुमान । कहे सुनोमम तप को ठान ॥ यह जो कृष्णपुत्र छबिसान । गहे युवतिको वेष बिधान ॥ होइहियाके मुशलमलान । लोहेको किरतान्त समान ॥ तासों यदुबंशिनको नास । होइहिबीचलहे कछु मास ॥ तबहलधर करुणासों पागि । समुद्रमध्य जइहै तन त्यागि ॥ महिपर सोवतकृष्णहिदेखि । धीवरजराजन्तु अवरेखि ॥ बेधिहि कृष्णहि ऐसे बैन । मुनिवर कहे अरुणकरि नैन ॥ इमि तिनसोंकहि हरिपहँ जाय । मुनि दीन्हे वृत्तान्त सुनाय ॥ प्रभुसो सुनिभविष्य अनुसार । सबकहँ दये सुनाय सचार ॥ दूजे दिवससाम्ब मजबूत । कीन्हें आय समुशल प्रभूत ॥ सो सुनिकै यदुकुलको भूप । मुशल करायो चूरण रूप ॥ चूरणकरिकै दोषबराय । दीन्हे सागरमध्य डराय ॥ सबपुर में डौंड़ी बजवाय । आहुकि सों दीन्हें कहवाय ॥ दोहा ॥ आजु प्रभृतकोउ करौ मति ऐसो सुरा सप्रेम । करिहि तौन दैजायगो सूरीसुनोसनेम ॥ चौपाई ॥ तब सों होत भयो पुर माहीं । अशकुन होत कुशल जेहिनाहीं ॥ श्याम युवति बरदन्त निकारे । इत उत फिरत फिरारबिचारे ॥ नहिं घरबासी बिहँगघनेरे । लगे गृहनमें लेन बसेरे॥ सारस शिवा नगर मधि बोलैं । पांडुकपोत गृहन बसिडोलैं ॥ मूषकलरैंनकुल सों भिरिकै । फिरैं कबन्ध शूर ढिगघिरिकै ॥ कृष्णपक्ष तेरह दिन केरो । भयो शुक्ल चौदह को हेरो ॥ चामर छत्रध्वजा आभूषण । निशिमें हरैं असुर शुभ दूषण ॥ यहि प्रकारके अशकुनरूरे । लखि यदुबंशी बिस्मय पूरे ॥ सो लखिप्रभु भ-

विप्र्य बिधि चीन्हे । तीर्थ करन को शासन दीन्हे ॥ सोसुनिक यदुबंशी सिगरे । युवतिन सहित नगर सों निकरे ॥बसेप्रभास तीर्थ तटजाई ॥ बेश वसनके बासवनाई । तहां मोक्ष रतिऊधो ज्ञानी । मिलि सब जनसोंभाषि सुबानी॥ कैकै बिदा समुद्मधि बसिकै । गुप्तभयो योगी सम लसिकै ॥ बिप्रन हित जो अन्न बनायो । बोलि बानरन तौन खवायो ॥ तब कृतबर्मा सात्यकि आदिक । मद्यपान करि भये प्रमादिक ॥ मन ममताके रँग में बोरे । बैठे राम कृष्ण के धोरे ॥ दोहा ॥ तहँ कृतबर्मासों कहेसात्यकि बचनमलान । कुत्सितकर्मा भटनमें कृतवर्मा नहिंआन ॥ जो भारत के अन्तमें द्विज भट के समलागि । निशिमें सूतेभटन कहँ बधवायो मुद पागि ॥ चौपाई ॥ सुनि कृतबर्मा अमरष गहिकै । बोले क्रोधानल सों दहिकै ॥ बाहु बिहून निरायुध चाहे । भूरिश्रवहि बध्यो तुम काहे ॥ यह सुनिकै केशव भट तीक्षण । देख्यो तानि अरुणकरि ईक्षण ॥ सो लखि कै सात्यकि रिसअतिसों । असिगहि उठो भटनकी जतिसों ॥ जहँ ये द्रुपद सुताके बारे । तहां भेजिहौं तोहिं गँवारे ॥ इमिकहि कूदि सिंहसम डाट्यो । करतलवाहि तासु शिरकाट्यो ॥ कृतबर्महि बधि गर्बित बकिबकि । चलोतासु सबपक्षिन तकितकि॥ तब ताको वारणकरिबेको । चले कृष्ण अनरथ हरिबेको ॥ इतनेमें भोजांधकबंशी । घेरिलिये सात्यकिहि प्रशंशी ॥ सोलखिकृष्ण कालगतिजानी । चुप ह्वै खरे रहे अनुमानी ॥ ते सब अनुचित बाणी कहिकहि । जूठे पात्र परेसो गहिगहि ॥ चाहि चाहि बध कीबो मनमें । हननलगे सात्यकि के तनमें ॥ तिमि सात्यकिहि प्रद्युम्न निहारे । बर्जनलगे क्रोधसोंभारे ॥ मद्यपानकीन्हें मतवारे । लगे प्रद्युम्नहि मारनसारे ॥ कृष्णप्रद्युम्नहि व्याकुल देखी । भरे क्रोध अनरथ अवरेखी ॥ जमोरहो शरको सो चीन्हें । मूठीएक ताहि गहिलीन्हें ॥ करमें आय भयो सो

मूशल । जाकेलगे रहैको कूशल ॥ सो गहिकेशव ओजबढ़ाये । बधे तिन्हैं जे सन्मुख आये ॥ शरको लीन्हें सबबलवाना । भो सबकेकर मुशलसमाना ॥ ताहि प्रहारि सबैमति बिगरे । क्षण में मरे परस्पर सिगरे ॥ भ्राता पितापुत्र नहिंजाने । बधे काल बश भये अयाने ॥ जरैपतंग अग्निपरि जैसे । तिमि यदुबंशी मरे अनैसे ॥ मूशललागि कृष्णरहि ठाढ़ो । देखतरहे तोषगहिगाढ़ो ॥ बढ़ि बढ़ि मारि परस्पर मरिमरि । अगणित लसे भूमिपर परिपरि ॥ तहँ प्रद्युम्न साम्बहि अनुरुद्धहि । गद अरु चारुदोष्णभट उद्धहि ॥ मरोपरो लखिअतिरिस धरिकै । केशवमुशल चक्रसम करिकै ॥ हे हतशेष तिन्हैं बधिडारे । हरे जौन बिधि हे बिस्तारे ॥ दारुक बभ्रु दोय तहँबाचे । तेकौतुक लखि बिस्मयराचे ॥ तिन्हैं सहित प्रभुकौतुकसागर । गे जहँ हे प्रभु रामउजागर ॥ तहांजाय प्रभुरामहिं देखे । ध्यानावस्थ योगबिधि भेखे ॥ तहँ केशवदारुकहाँ भाषे । हम अर्जुनहिंलखनअभिलाषे ॥ तुम रथचढ़ि हास्तिनपुरजाई । शीघ्र अर्जुनहिं ल्यावहु भाई ॥ दोहा ॥ सोसुनि दारुकहांकिरथ चलेनागपुर यत्र । तब केशवप्रभु बन्धुसों कहतभये इमितत्र ॥ बन्धुद्वारका जाय तुम रक्षो युवतिसमूह । नातरुधनके लाभधसि बधिहैंतस्कर यूह ॥ सो सुनिकै तहँ चलतही पायमुशलको घात । मरेबभ्रु तब रामसों कहे कृष्ण अवदात ॥ जयकरी ॥ तुम याहि ठौर रहौ मनलाय । हमफिरिआवतनिजपुर जाय ॥ इमि कहि निजपुर जातउदार । कहे पितासों कुलसंहार ॥ फिरि इमिकहे बिपिन हमजात । मोहिं न नगर रुचतअबतात ॥ जौलौंआवैं पार्थ प्रशस्त । तौलौं रक्षहु युवति समस्त ॥ नृपतेहिक्षण रोदनधुनिभूरि । जातभयो महि नभलोंपूरि ॥ रुदनसुनत करिहियो कठोर । केशवगये रामकी ओर ॥ रामहिं तहां लखे सुनु भूप । सहसशीर्षा शेषस्वरूप ॥ तक्षक बासुकि कद्रुहि आदि ।

आइतहांसब अहिअह्लादि ॥ सरितन सहित सरितपतिआ-
य । सादरगये लवाय सचाय ॥ तासुगवनलखिप्रभुअनुमानि।
कुरु यदुकुल की क्षयगतिजानि ॥ गुणिगान्धारी को जो शाप।
दुर्वासाको बचनप्रलाप ॥ बनमधिजाय योग बिधिधारि। महि
पै कीन्हें शयनबिचारि ॥ जरानाम व्याधातहँ आय। मृगगुणि
तज्यो बाणधनुलाय ॥ पगतलमध्य लगोसो बान। तबगो नि-
कट जरादुखदान ॥ प्रभुहि देखि गुणिनिज अपराध। पगगहि
करत भयो अवराध ॥ तेहिआश्वासित करिप्रभु बैठि। बिलसे
योग युक्तिमधि पैठि ॥ सुरसुरपति सब ऋषि तहँजाय । नभ
रहि अस्तुति किये सचाय ॥ दोहा ॥ उत दारुक पाण्डवनसों
कही दशासबजाय। सो सुनिकै अति बिकलभे धर्मआदिसब
भाय ॥ सब बन्धुनसों ह्वै बिदा शोचित पार्थसुजान । जायद्वा-
रकालखत भे हतश्री शून्यमहान ॥ लखिपार्थहि व्याकुलमहा
रानी रुक्मिणिआदि। घेरिबैठि रानी रुदन अतिआरत धुनि
नादि ॥ बारिधारिचखसों तजतकरि तिनको आश्वास। पारथ
शोचित जातभे कृष्ण जनकके पास ॥ चौपाई ॥ देखि पारथहि
रोदनकरिकै। इमि बसुदेव कहे दुखभरिकै ॥ शापदई गान्धारी
जोई। पारथ प्रकटभयो अब सोई ॥ मुनिजन शापदयो जो
पाछे। सोऊ अनरथ भयो अनाछे ॥ जब बिनाश यदुबंशीपा-
ये। तब केशवइत ममढिगआये॥ काल कलाकहि मोहिंबुझा-
ये। अरु यहि बिधिके बचन सुनाये ॥ दारुकगो अर्जुनहिं बु-
लावन। सुनतहि आइहि सो मनभावन ॥ जो हमसों अर्जुन
सुनिलीजै। जो अर्जुनसों हम गुणिदीजै ॥ सुतन सहित युव-
तिनको रक्षण। अर्जुन करिहि पालिसब पक्षण ॥ करतब बश
तो ऊरध देहिक। करिहि पार्थमम परमसनेहिक ॥ पारथजेहि
दिन यहिपुरआइहि। तबसों बीति सात दिनजाइहि ॥ तबब-
ढ़ि उदधिनगर यह बोरिहि। पुरको छोरिबारि निज जोरिहि ॥

इमि कहिकैगो कृष्ण प्रशंशी । मरेजहां सिगरेयदुबंशी ॥ पारथ मोहिं लगत जगफीको । मोकहँ देह तजेअबनीको ॥ यहसुनि महाशोकगहि पारथ । कृष्णजनक सों कहे यथारथ ॥ द्रुपदसुता अरु हमसबभाई । इहिजगमें बिनु कृष्णसहाई ॥ नहिंरहि सकब काल दिनआयो । कृष्ण गमनसों आगमपायो ॥ दोहा ॥ बाल वृद्ध नारी जिती हैं व्याकुल हत चेत । इन्द्रप्रस्थलैजाब हम तिनकहँ रक्षणहेत ॥ इमि कहिकै दारुक सहित सभासदृनमें जाय । राज्यकाज कर्त्ता रहे तिनसों कहे बुझाय ॥ गये सात दिन नगरयह बोरिहि बारिधि बारि । सरंजामसबजनन सह सादरकढ़ो बिचारि ॥ रोला ॥ बचन सुनिसब करनलागे कढ़नको व्यापार । बसे अर्जुनतहांतेहि निशि गहे शोकअपार ॥ रामकृष्णहि सुमिरि सब निशि भोरलहि बसुदेव । देह तजिकै गयो ऊरध लोक सुबुधि सुभेव ॥ नगरमें अतिघोर तेहिक्षण भयो हाहाकार । पार्थ ताको किये निजकर उचित करतब चार ॥ गईताके संगजरिकै सुबुधिपत्नीचारि । देवकी अरु रोहिणी अरु सुभग मदिरा नारि ॥ अरु सुपत्नी प्रियाभद्रा जरी संगसप्रेम । कियेशेषकुमार कुलके उदकदान सनेम ॥ देशकाल बिचारिकै करिक्रिया तेहिथर पार्थ । गयेयदुबंशी सकलजहँ मरे हे बिनुस्वार्थ ॥ देखिसबको गात निपतित महादुखसोंपूरि । राम केशवके सुतनलखि मोहिं घरिकबिसूरि ॥ प्रेतकर्म बिधान करिकै भरे अतिशयशोक । भये आवत सातयेंदिन कृष्ण प्रभुके ओक ॥ रुदत ताड़त शीशउर सब तियनको समुदाय । सपदिपुर ते कियेबाहर सहित सौजसहाय ॥ अश्वगजरथबसन मणिधन सकल दासीदास । बर्ण चारो दुखित पुरजन कढ़पूरितत्रास ॥ बजूनामपउत्र हरिको सहित शिशु सुकुमार । चलो रोदत युवति कोटिन गहे शोक अपार ॥ बज्रसदृश कठोर अतिशय हृदयकीन्हेंतत्र । लिये सबकहँ चलो पारथ धर्मभूपति

यत्र ॥ उदधिको जल उमगि तेहिदिन नगरदीन्हों बोरि । कियोमाया बिस्तरितसो विष्णुलीन्हेंमोरि ॥ लिये सबकहँ पार्थ नांघत शैल बिपिन अनेक । पंचनदमें भयेनिवसत राखिजन सबिबेक ॥ देखितिन्हहिं अभीरजुरिकै किये मंत्रबिशाल । एक धनुधर पार्थ सिगरे वृद्ध युवतीबाल ॥ घेरि सबदिशि युवतियन धनलेहु इनसों छोरि । मंत्रयहकरि परिघगहि गहि चलेपारे जोरि ॥ देखिपारथ कहे हँसि फिरि जाहुरे सबमूढ़ । चहौ जीवन आपनोतौ तजोममता गूढ़ ॥ बचनसो सुनिरुके नहिंते भिरे बलकत आय । पार्थतब गांडीव धनुषहि नीठनीठचढ़ाय ॥ दिब्य शस्त्रन गुणतभे अस्मरण भे नहिं एक । ब्रीड़ि विधिगत बूझिलागे बाण तजनसटेक ॥ होइसूक्षम घावताके लगे जाके बान । पार्थतबभोलेतऊबि उसांस करि अनुमान ॥ परिघसम तब वाहि धनुषा थके बल करि सर्ब । गये अगणित युवतिहरिलै म्लेच्छ कुमतिअखर्ब ॥ वृष्णिअन्धकभूपकुलकी युवति को समुदाय । लखतअर्जुनके गये लै खल अभीरसचाय ॥ अस्त्रशस्त्र प्रभावनिजको जानिक्षय तेहिकाल । बूझि भावीसुमिरिकृष्णहिं रहे घरिक अचाल ॥ धीरधरि हतशेष तिय धन सहित पारथ जाय । बसतभे कुरुक्षेत्रमधि अतिदुसह दुखसों छाय ॥ तहांसो हार्दिक्यको सुत भोजकुलकीनारि । तिन्हैंराखे मातृकावत नगरमध्य बिचारि ॥ इन्द्रप्रस्थ सुग्राम में फिरि आय पूरि कलेश । सात्यकीके सुतहिदीन्हें सरस्वति तटदेश ॥ कृष्णप्रभुको पौत्रहो जो बज्र तेहि सन्मानि । भयेराखत इन्द्रप्रस्थ सुग्राम मधि अनुमानि ॥ राज्यलहि जब भये राजत बज्रतब हेभूप । पार्थ शीक्षितकिये बिधिवत राजनीति अनूप ॥ अक्रूरकी तिय सकलकीन्हीं ग्रहण तब संन्यास । बज्रको नाहिं कहोमान्यो सहित दासीदास ॥ रुक्मिणी गान्धारजा अरुहेमवति मतिमान । दह्योतनजांबवति सब्या अग्निमें धरिध्यान ॥

सत्यभामाहिं आदिसिगरी कृष्णकीतियजौन। ग्रहणकरि संन्यास ते सबकियो कानन गौन ॥ द्वारकाके जितेपुरजन रहे तिनकहँ पार्थ। सविधिसौंपे बज्रकहँ कहि यथायोग यथार्थ ॥ दोहा ॥ शीक्षि यथा विधि बज्रकहँ कैकै बिदा सठौर। हास्तिनपुर प्रति चलतभे करत कालगति गौर ॥ कछूदूरि चलि बिपिन मधि व्यासहि बैठो देखि। निकट गये रथतें उतरि निजहित थित अवरेखि॥ करिप्रणाम अतिप्रेमसों बैठे आदरपाय। लखि शोकाकुल पार्थकहँ कहे व्यास मुनिराय ॥ व्यासउवाच ॥ जयकरी ॥ पारथ तुम अति खिन्न लखात। हत श्रीसुखो बदन बिभात ॥ रणमाधि तौनहिंपाये हारि। भोगेतौ नहिं रजयुत नारि ॥ घटह मुते तनपै जलदान। करितौनहिंकीन्हेंअस्नान ॥ बज्रदशीनख कच जल तात। परशेतौ नहिंकहुतो गात ॥ कीन्हें तौ नहिंद्विज कोघात। जातेहतश्री दीनलखात ॥ लख्यो न कबहुं तुम्हैं अस दीन। शीघ्रकहो निजदशा नवीन ॥ अर्जुनउवाच ॥ कहाकहौंकछु कहो न जात। महाअनर्थ भयो हेतात ॥ पंकज लोचन प्रभु घनश्याम। महापुरुष श्रीमहिमाधाम ॥ श्रीहलधर सहप्रभुता ओक। गयेदेहतजि ऊरधलोक ॥ गान्धारी के शाप प्रमान। अरुलहि ऋषिको शापमहान ॥ पाय मुशलको घात कठोर। बिनशे यदुकुलपुरुषअथोर ॥ महाशूर अतिबलरणधीर। जासु पराक्रम बिदित गँभीर ॥ शक्तिगदादिक आयुधघात। नहिं पीड़त हैं जाकोगात ॥ तेभटबर शरकाके पात। मरेकालगति कहीनजात ॥ पांचलाखभट सात्यकिआदि। मरेपरस्परलरि उनूमादि ॥ और असंख्यन पुरुष प्रशस्त। लरिभे तारागण समअस्त ॥ नभको पतन सिन्धुकोशोष। पर्वतको चालनसम पोष ॥ देखिकृष्ण प्रभुको तनत्याग। नहिं सहिजात महान अभाग ॥ लहि अतिकष्टकुलिशकोपात। ममहिय होत बिदीरणतात ॥ लाखन वृष्णि बंशकीनारी। हरिलैगये अभीर प्र-

चारी ॥ गहिगांडीव धनुष टंकारि । प्रभुहम सके न तिनकहँ बारि ॥ अस्त्र शस्त्र ममजे अस्पष्ट । सोसब तहां गयेह्वनष्ट ॥ परमात्मा केशव जगदीश । ममसहाय कृत बिस्वेबीश ॥ निज रथस्थ लहि जाहि सहाय । हमदाह्यो अरिवनसमुदाय ॥ जाहिबिनामम ऐसोहाल । प्राप्तभयो दुख दुसह कराल ॥ ताहि बिना बाढ़तहियदाह । अबनमोहिं जीवनकीचाह ॥ अबजोकरब मोहिं शुभभेश । सोतुमतातकरोउपदेश ॥ यहसुनिकै बोलेमुनि व्यास । यह भविष्य होसुनु मतिरास ॥ सुनहु कृष्ण प्रभुप्रभुता ओक । सकै अन्यथा करि त्रैलोक ॥ बिप्रशापको कितनो दाप । टारिसकैको विष्णु प्रताप ॥ भूमिभार मेटनके हेत । इत आयेहैं कृपानिकेत ॥ तुमसों करि अति नेहपसार । हरिहराय अवनीको भार ॥ निजअस्थान गये मुदधारि । शोकतजो तुम तत्त्वबिचारि ॥ दोहा ॥ कृष्णसंग बन्धुन सहित तुमकीन्हें सुर कार्य । तुवसबन्धुको प्राप्तभो गमन समय हेआर्य ॥ पंचतत्त्व जग बीजको मूलकालहैं तास । कालैकरत बिनाशअरु दुर्बल बली बिलास ॥ निजकरतब करि अस्त्रतुव गयेसुनोमतिमान । तथाभये कृतकृत्यतुम करिकरि युद्धमहान ॥ अबतुमहूं बन्धुन सहित करो महाप्रस्थान । यहसुमंत्र तुमको महा है श्रेयद कल्यान ॥ सोरठा ॥ व्यासदेवकेबैन सुनि कैबिदाप्रणामकरि । शोचित पार्थ अचैन हास्तिनपुरप्रति चलतभे ॥ कृष्णचन्द्रको ध्यान करतजाय हास्तिन नगर । गयोपार्थ मतिमान नृपति युधिष्ठिर हैं जहां ॥ जायनृपतिकेपास कहत भये वृत्तान्तसब । सुनि भूपति मतिरास ध्यायरहे कृष्णहि प्रभुहि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे मूशलपर्वसमाप्तिमगमत् ॥

---



# महाभारतदर्पण ॥



महाप्रस्थानपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करिनरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहुशतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरि भारतरचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥ पारथके सारथभये सारथि परमअनूप । ते सारथ देहैं बिरचि भारतभाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिवर बीर राम परम प्रिय पारषद । मंगलमूरतिधीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनि अक्ष उदधि उलंघन समय की । भारत समुद प्रतक्ष भाषाकरिचाहततर्यो ॥ दोहा ॥ जाहि ध्याय मानवसकल लहत शुद्धअस्थान । ताहि सुमिरि भाषा रचत पर्व महाप्रस्थान ॥ जनमेजयउवाच ॥ सोरठा ॥ मौशलको वृत्तान्तसुनि सबन्धु कौरव अधिप । किये कौन सिद्धान्त व्यास शिष्य मुनि कहहु सो ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ यदुकुल को मौशल उत्पात । महाकठोर कुलिशको पात ॥ सुनि सबन्धु कुरुपति क्षितिपाल । शोचि कालगति अमिट विशाल ॥ करिबे को सुमहाप्रस्थान । करत भये सिद्धान्त महान ॥ दैयुयुत्सु कहँ भार बिबेक । किये परीक्षित कहँ अभिषेक ॥ कहे सुभद्रा सों

समुझाय । पौत्रहि पालेहु नीतिबढ़ाय ॥ इन्द्रप्रस्थको राज्यपुनीति । बज्रहि हमदीन्हे गुणिनीति ॥ इन युगजनमें बाढ़ैप्रेम । शीक्षत रहियो तथासनेम ॥ तब कुरुपति नृप सहित बिधान । कृष्णादिकन दये जलदान ॥ रामकृष्ण सात्यकि बसुदेव । तिन्हैंआदि जितने शुभभेव ॥ पिण्डदान सबकहँ करिभूप । दीन्हें मणिमहि बस्त्र अनूप ॥ भोजन भूषणहयगजनारि । द्विजवृन्दनकहँ दिये बिचारि ॥ कृपाचार्य गुरुबरहि सराहि । नृप परीक्षितहि सौंपेताहि ॥ यह बालक तुवशिष्यसुजान । पालेहु शीक्षेहु सहित बिधान ॥ नृपपरीक्षितहि प्रजासमस्त । सौंपेकहिकहि नीति प्रशस्त ॥ तब सब कहँ कारण समुझाय । दीन्हें निज प्रस्थान सुनाय ॥ सो सुनि प्रजा लहे दुखभूरि । सुख उत्साह जातभो दूरि ॥ नृपसों कहतभये सब लोग । भूपति उचितन ऐसो योग ॥ सो सुनि नाहिं माने नृप पर्म । ज्ञाताकाल बिपर्ययकर्म ॥ बहुप्रकार सबकहँ समुझाय । चाहतभे प्रस्थान सचाय ॥ चारुबसन भूषण करित्याग । बल्कल धारण किये सभाग ॥ तथा द्रौपदी तजिशुचिचीर । धारी बल्कल बसन गंभीर॥बन्धुन सहितधारि यहभेष । कीन्हेंत्यागयज्ञसबिशेष ॥ निजतन ऊपर अग्निउतारि । जलमधिडारे बिधि बिस्तारि ॥ यहिबिधिकरि कीन्हें प्रस्थान । रुदन किये नरनारिमहान ॥ बन्धुनसहित हर्ष बिस्तारि । चले पांच सँग छठईं नारि ॥ कूकुर एक चलो सँगलागि । यहिबिधि सात चले अनुरागि ॥ घर जन पुरजन आनँदभंग । गयेदूरिलों भूपतिसंग ॥ चाहतपलटि चलै कुलदीप । पै न सको कहि फिरो महीप ॥ थिर भूपति पुरबासिन फेरि । फेरतभे सब नारिन हेरि ॥ भूप परीक्षित कृप आचार्य । अरु युयुत्सु कहँफेरेआर्य ॥ सबहिं फेरि नृपज्ञान निकेत । चले बन्धु तियश्वानसमेत ॥ गयेपूर्बदिशि भूपअमन्द । फिरतभये सब पूरित दन्द ॥ भो बिषाद तेहिक्षणमें जौन । भू-

पतिकहोजात नहिं तौन ॥ दोहा ॥ तदनुधसी सुरसरित मधि युवति उलूपीधाय। नागसुता तियपार्थकी इरावानकी माय॥ बभ्रुवाहना की जननि चित्रांगदा सुनारि । गईनगर मणिपूर प्रति निजसुत अधिप बिचारि ॥ और रहीं जितनी तिया ते परीक्षितहि घेरि। आईं निजपुर धामप्रति रोदतदुखहियपेरि॥ चौपाई ॥ चलिपूरब पाण्डवसबभाई। क्रमसों लसे समुदतटजाई ॥ लोहितधर उदयाचल घेरे। गये सातते नहिं मन मोरे॥ लीन्हेंरहे पार्थ मनभावन। धनु गांडीव तुणीर सुहावन॥ गुणि धनु रतन ताहि हे लीन्हें। अति सनेम गहि त्यागन कीन्हें॥ गिरिअकारपावक तहँ देखे। पुरूरूपअति सुखसों भेखे॥ तहां अग्नि पांडवसों बोले। हम हैं अग्निप्रभावअतोले ॥ कृष्ण फाल्गुणकेपरभावन। हमजारचो खांडववनचावन॥ धनुगांडीव लये जो पारथ। नहिंअब तासु ग्रहण ते स्वारथ॥ यहि तजि बिपिनजाहुजहँचाहो। महि दिशि सरित शैलअवगाहो॥ पूर्ब बरुणसों लैकैयेही। हमदीन्हें अर्जुनहि सनेही ॥ सोधनु अब तुम बरुणहिदेहू। जो पथगहेतासु ब्रतलेहू॥ सुनिसबपांडवकहे यथारथ। धनुषबारि मधिडारे पारथ॥ भेअदृश्यपावक गुणअगरे। तेनैऋत्यकोणगहि डगरे ॥ गहेकूप सागरको तैसे। फिरे प्रतीचीदिशितेहिलैसे॥ क्रमसोंजाय द्वारकादेखे। सागरमधि गोपिनअवरेखे॥ करि प्रणामजलसोंभरिईक्षण। चलेउदीची करतनिरीक्षण॥ दोहा ॥ गहे कूलतेहिसमुदकोगहे प्रदक्षिणभाव। चलि क्रमते हिमवान गिरि नांघपूरितचाव ॥ तितसोंपाये मेरुको दर्शन अनघबनाव। अगरि बालुकाकोमही देखेतुहिन प्रभाव ॥ रोला ॥ नांघिबेको ताहि तामधिचले योगीभेव। धर्म नृप तब भीम अर्जुन नकुल अरु सहदेव ॥ तासुपीछे द्रौपदी तब श्वान यहिबिधिजात। द्रौपदी कछुदूरि चलिकै गिरी तहँ हेतात ॥ देखि निपातित द्रौपदी कहँ भीमसेननिहारि। कहतभे

इमि धर्म नृपसों शोच अतिशय धारि ॥ महाराज बिलोकिये
इतगिरी द्रुपद कुमारि । किये कछुनअधर्म काहे गिरीसाहस
हारि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ पार्थसों यह रही राखत अधिक हियमें
नेह । गिरीइत तेहि पापसों तेहि पापको फलएह ॥ भीम सों
इमि भाषि भूपति चले योग सुधारि । गिरेतब सहदेवतेहां दु-
सह हमसों हारि ॥ भीमभाषे गिरो अबप्रियबन्धुतुव सहदेव ।
कौन पातक कियो इनसो भूपकहिये भेव ॥ आपु सममतिमान
औरहि गुणतहो नहिं एहु । गिरो अब तेहि पाप इमिकहिचलो
नृपतजि नेहु ॥ नकुल तब कछुदूरि चलिके गिरे सुनु क्षितिपा-
ल । भीमभाषे भूप सों तब गहेशोक बिशाल ॥ हायनिपतोन-
कुल भूपति कहो याको पाप । कह्यो भूपति रह्यो यहि निजरूप
को अतिदाप ॥ तदनु अर्जुन गिरे बोले भीम तब बिलखाय ।
भूपअर्जुन गिरो अब इतकौनकारणपाय ॥ भूप तबइमि कह्यो
अर्जुन कहत हो बहुबार । एक दिनमें करौंमें सब शत्रुको संहा-
र ॥ तौननहिं करि सकोहो इहिबीरताको गर्ब । तौन पातकगि-
रो अति अभिमान पाय अखर्ब ॥ भीम आयो धीर धरि इमि
भाषि अगरो भूप । तदनु कछु चलिभयो निपतत भीमबीरअ-
नूप ॥ टेरिभाष्यो सुनहु हमहूंगिरेहेमतिभौन । हेरिमम दिशि
कहो याको कठिन कारण जौन ॥ कह्यो भूपति तुम्हें बल को
रहो अति अभिमान । गिरे तुम तेहि पापसों लहि कालगति
बलवान ॥ भाषि ऐसो चलो नृपनहिं लखो तेहिकरिचाह । श्वा-
नसोई गयो नृपके संगहे नरनाह ॥ सुरथचढ़ि तबशक्र आये
भूमिपतिके पास । कहे रथ चढ़ि चलो ममपुर भूप महिमारास॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ बन्धुमम अरुद्रुपद दुहिता गिरीयहिमहि माह ।
तिन्हैं बिनु दिव जाइबेको नहीं मोकोचाह ॥ इन्द्रउवाच ॥ मानुषी
तन त्यागि तेसब लसत दिवमधिजाय । चलो तुम यहि देहसों
उतलखो तिनहिंसचाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ श्वानयहममसंगआ-

ऐताहि इतहो त्यागि। गयेदिवसोहिं लगतलघुताक्रूरताअघ पागि ॥ इन्द्रउवाच ॥ लहे तुम अमरत्वादिवसुख परमश्री अधिकाय । तजे श्वानहिं तुमहिं लघुता लगत नाहिं यह न्याय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ निन्द्य है यहकर्म आर्य्यहि नहीं करिबे योग ।भक्त जनको त्याग करिबो चाहिश्री सुखभोग ॥ इन्द्रउवाच ॥ श्वान अतिशय अशुचिनहिं संसर्ग के अधिकार । त्याग कीन्हें अशुचिको नहिं लगत लघुता चार ॥ ब्रह्महत्या सरिस पातकभक्तजनको त्याग । तजब नाहिं हम श्वानकहँ करि स्वर्गकोअनुराग ॥ आर्त अरु शरणारथी निज आश्रित जो ताहि। तजत हम नहिं कष्ट प्राणो नित्यव्रतअवगाहि ॥ इन्द्रउवाच ॥ श्वानको संसर्ग कर्ता पुरुष जोहै तासु । दान व्रतको हरतफलसुरक्रोध बश गन आसु ॥ भूप ताते श्वानको करि त्यागि चलहुसचेत। बन्धु तियको त्याग करिकत श्वानहित हठलेत ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा ॥ करिबो संग्रह त्याग अरु बैरमित्रता जौन। जीवततेअनुचित उचित मरेदोष गुणकौन ॥ मरेतज्यो हम बन्धु तियतजब न जीयत श्वान । मित्रद्रोह द्विजधन हरबभक्तहि तजब समान॥बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ श्वानकोतनत्यागिकै तब धर्मगहि निजरूप । कहतभो तहँ धर्मनृपसों सुनोकौरवभूप ॥ नृपयुधिष्ठिर धन्यतुम तुवधर्म परमअमन्द। नीति पालकभये तुमनिज पिता सरिस सुछन्द ॥दोहा॥ किये परीक्षापूर्बतुव द्वैतबिपिनमधितत्र । प्रश्नोत्तर दीन्हे बिना मरेबन्धु तुवयत्र ॥ मम प्रश्नोत्तर आइ जब तुम दीन्हे तेहि ठौर । यक्षरूप तबहमकहे सुनो भूप शिरमौर ॥ मरेतिहारे बन्धुये चारि तिन्हैंमो एक । जाकहँ कहिये ताहि हम देहिं जिआइ सटेक ॥ बसुकला ॥ तहँ अतिअनूप । जो बचन भूप॥ तुम कहेटेरि। सोसुनोफेरि ॥ दोहा ॥ निज जननी के जियत हम जेठ सुवन तेहिभाय । माद्री को सुत नकुलगुरु ताकहँ देहु जियाय॥ फिरि पेखे तुव धर्म्म अब पूरण

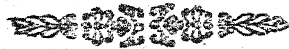
बिस्वेबीशं । स्वर्गहु नाहिं राजर्षि कोउ तो सम हे अवनीश ॥
बैशम्पायनउबाच ॥ तदनन्तर नृप धर्म्मकहँ यथाउचित सन्मानि । लयेचढ़ाय बिमानपहँ आपु शक्र गहिपानि ॥ धर्म्म रूप भगवान अरु मरुतशक्र ब्रह्मर्षि । चलत भये निजलोकप्रति करत बार्ताहर्षि ॥ आगेते आवतभये सुरराजर्षि समस्त । तहँनारद नृपधर्मसों बोलेबचन प्रशस्त ॥ यहि प्रकार मानव कोऊ नहिं आयो यहिदेश । जिमि आयेतुव धर्म्मनृप भोगौस्वर्ग शुभेश ॥ भूपकहेहमचहत नहिं स्वर्ग ऊर्ध्वके ओर । गयेबन्धु नृपसुताजहँ जानचहत तेहिठौर ॥ यहसुनिकै सुरपतिकहे सुरपदपाय अनूप । अजौं न छूटी मानुषी बुद्धि तुम्हारी भूप ॥ कौन कौनको बन्धु अरु नारि कौनकी कौन । कर्म्म भूमिको संगहो मोहतजोमतिभौन ॥ यहसुनिकै भूपतिकहे हमनाहिं चाहत स्वर्ग । मिलैं जहांमम बन्धुतिय उत्तमसो अपबर्ग ॥ यहि प्रकार करि कृष्णको ध्यानधारि नृपधर्म्म । जगमंगल प्रभुरूप लखि रहे मोदगहि पर्म्म ॥ रामकृष्णको ध्यानधरि को न लहत आनन्द । राम कृष्ण हिय जगत के शुभ सदस्थरबिचन्द ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेमहाप्रस्थानपर्बसमाप्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

इतिमहाप्रस्थानपर्बसमाप्तम् ॥



# महाभारतदर्पणो ॥



## स्वर्गारोहणपर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करिनरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ सीताराम सलक्ष्मणहि रुक्मिणि कृष्ण सराम । कपिअग्रस्थ ध्वजस्थसह धरु धारण हियधाम ॥ रामसतिय सानुज सकपि सहित भक्त समुदाय । ध्यायचहत हौं भार्तको पारलहव सुखदाय ॥ आरोहणि सबलोककी जासुनाम भवसेत । स्वर्गारोहण रचत यह ताहि ध्याय लहिचेत ॥ जनमेजयउवाच ॥ जयकरी ॥ दिवमधि जाय पितामह सर्व । बसेपाइथल कवनअखर्ब ॥ किमि दिवदर्शोधर्म नरेश । वैशम्पायन कहो विशेश ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दिवमाधि जाय युधिष्ठिरभूप । दुर्योधनहिं लखे अतिरूप ॥ राजत सिंहासन लहिवेश । सिद्धिसाध्य सेवतचहुँदेश ॥ लखिताको अतिशय ऐश्वर्य । नहिं सहिसकेउ धर्मनृप वर्य ॥ तेहि लखिसादर चखमन फेरि । कहत भये सुरगण से टेरि ॥ यहि सहसाकर्मी केसाथ । हम नहिं निवसब हे सुरनाथ ॥ याके दोष भूप समुदाय । मरे व्यर्थ लरिओजबढ़ाय ॥ सभामध्य गहि कुमतिदराज । पांचालिहि कीन्हों हतलाज ॥ कहो दुसह दुर्बचन अ-

नेक । नाहक युद्ध कियो गहिटेक ॥ इहिनाशो परिवारसमस्त । हित सम्बन्धी भृत्य प्रशस्त ॥ हम न सकत इतहूं यहि देखि । जानचहत जहँ बंधु बिशेखि ॥ यह सुनिकै नारद मुसुकाय । कहे न इमि भाषो कुरुराय ॥ त्यागि बिरोध बसतसब अत्र । तजिसब अमरष बसोएकत्र ॥ क्षात्रधर्मकरिकै तनत्यागि । यह इत बिलसत आनँदपागि ॥ यह दिवइहां उचितनाहिं बैर । त्यजो द्यूतकृत सगरो बैर ॥ मिलौ भूपसों प्रीति बढ़ाय । राज हेतुकृत दोषदुराय ॥ यह सुनिबोलो धर्म महीप । इमि न कहो शुभ बिधि कुलदीप ॥ जो कीन्हों बहु कुत्सितकर्म । सो इमि बिलसत मुदित अभर्म ॥ जे सबबिधि सुकर्मके ओक । तेमम बंधु बसत केहि लोक ॥ धृष्टद्युम्न आदिक मम मित्र । ते कहँ बिलसत परमपवित्र ॥ सोथरदरशावो मुनिराज । जहँबिलसतमम सहित समाज ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु अमान । इराबान आदिकबलवान ॥ धृष्टद्युम्न उतमौजाआदि । ये नृप बूझेजय यशनादि ॥ ते सब बिलसत जेहि अस्थान । सो दरशावहु सुमुनिसुजान ॥ सलिलदानकी समय निहारि । जो ममजननी कहो बिचारि ॥ कर्ण तिहारो सोदरभाय । सो गुणि मम हिय तपतअचाय ॥ कर्णबसतइत लहिथल जौन । मुनिहम लखो चहत थलतौन ॥ मुनि बिनु इनसबके सहबास । सब दिवमधि नहिं मोहिं सुपास ॥ यहसुनिकै मुनि सुमन समोद । कहे भूप सों गहे बिनोद ॥ लहि सुरपतिके शुभद निदेश । हमसबतोहिं तरतयह देश ॥ तुमहिं रुचै जो सब्य असब्य । हैहमकहँ सोई करतब्य ॥ देवदूतसँग लेहु प्रशस्त । जाहु जहां तुव बन्धु समस्त ॥ सो सुनि देवदूत लेसंग । चलोभूमिपति गहेउमंग ॥ ले भूपहि चलिआगे दूत । गयेजौनथल अशुचि अकूत ॥ तम पूरित सो देश अस्वच्छ । मांसरुधिरको कीचकतच्छ ॥ चहुं दिशिफैलि रहो नखकेश । माछीभरी अनाछीवेश ॥ कृमिअरु

कीट भयानकवेष । बहुदिशिज्वाल किये परिवेष ॥ अगणित काक गृध्र अरुप्रेत । बोलतडोलत किये निकेत ॥ पूरितमेद रुधिरसों गात । रपटत झपटत पीवतखात ॥ मांस रुधिरमज्जा अनुबंध । पूरितमहादुसह दुर्गंध ॥ अतिशय तपित बालुका भारि । महाभयानक नदी निहारि ॥ असिधारासम जाकेपत्र । अविरलवृक्ष लखतभे तत्र ॥ लोहकुंडमें प्रतपित तेल । प्रतपितलोह शिला प्रतिमेल ॥ अति दुर्गंध दुसहते पीड़ि । धर्म महीप कहतभे बीड़ि ॥ यहपन्था दुर्घट चहुँओर । नहिं ममगमन योगअतिघोर ॥ यहपथ इमि पूरित दुखभूरि । अबचलिबे को कितनीदूरि ॥ है यह कौनदेवको देश । कितबिलसत मम बन्धु सुभेश ॥ यहसुनि पलटि दूतमतिमान । भूपति से इमि कहेनिदान ॥ हम अब फिरत फिरो तुमभूप । श्रमित भयेअति पावनरूप ॥ इमिआज्ञादीन्हें बसुदेव । फिरहु देखि भूपहिश्रम भेव ॥ होइमूर्च्छितलहिमहाकलेश । तहँसोपलटतभयो नरेश ॥ दुःख शोक पूरित क्षितिपाल । पलटि सुनतभो गिरा अलाल ॥ हे राजर्षि भूप शिरताज । क्षणक थिरो मम आनँद काज ॥ लहि तुव तनको गन्धअनूप । हम सबचैन लहतहेभूप ॥ बहुदिनपै नृप तुम कहँ देखि । हम सब पाये मोद बिशेखि ॥ जबसे इत आयो तुम तात । तबसों मम दुखनिघटत जात ॥ ताते कछु क्षण थिरये तत्र । हम सब पावें आनँद अत्र ॥ सुनि यहि बिधि की दीन पुकार । थिरत भयो तहँ भूप उदार ॥ महा कष्ट लहि नृप तेहि ठौर । को तुम कहत भयो करिगौर ॥ सो सुनि कहत भये ते सर्ब । भीमार्जुन हम नकुल अखर्ब ॥ हमहैं द्रुपदसुता सहदेव । धृष्टद्युम्न अरु कर्ण शुभेव ॥ दोहा ॥ द्रौपदेय आदिक इबिधि बोले सब रणधीर । परे निरय मधि दैव बश पावतअतिशय पीर ॥ सो सुनि धर्म महीप तहँ गये शोच सों पूरि । ये सब पाये देश यहकिये कवनअघभूरि ॥ पापात्मा धृतराष्ट्रसुत

तिमि बिलसत गहिगौर । धर्म शीलये सब लहे ऐसो कुत्सित ठौर ॥ निद्राबश ह्वै स्वप्नयह लखत भईकी भ्रान्ति । देखिमहा बिपरीत यह मो मन गहत न शान्ति ॥ इबिधि चिन्ति अति शोचिनृप निंदि सुरन कहँ भूरि । देव दूत सों कहतभे महाक्रोध सों पूरि ॥ जाहुशक्रके पासतुमहमइत करबानिवास । कहेहुमोहिं यहिथर रहे पावत बन्धु सुपास ॥ रोला ॥ भूप के ये बचनसुनिकै दूत सत्वरजाय । भूमि पति के बचन शक्रहिदयो सबिधिसुनाय ॥ बचन सो सुनि शक्र सुरगणसहित नृप पहँआय । सहित आदर धर्म नृपकहँ लखे आनँद छाय ॥ मेद मज्जा आदि यहि थररहे कुत्सितजौन । देवपति के जातहीतहँ भयेलोपिततौन ॥ बहन लागो सुखद मारुत गहे निज गुणपर्म । शान्तिगहितहँ शक्र बोले सुनहु भूपतिधर्म ॥ इन्द्रउवाच ॥ सिद्धि तुम कहँ भई प्रापत महा महिमा ओक । भूप प्रापत भये तुम कहँपरम अक्षय लोक ॥ क्रोध भूपति करो मति मम बचन मानो सांच । अवशिहै द्रष्टव्य भूपन नरकदुःसह आंच ॥ सुकृत भोगत प्रथमपावत निरयते पश्चात । प्रथम भोगत निरयपावत स्वर्ग ते अवदात ॥ अधिक पातक हेत जाके पुण्य थोरोहोत । भोगि सो कछु स्वर्ग भोगत निरयको लहि सोत ॥ होतथोरोपाप जाके पुण्यको अधिकार । भोगि थोरो निरयसो फिरि लहत स्वर्ग उदार ॥ आचार्य्य के बध समयभाषे व्याजसे कछु बैन । व्याज ते लहि निरय ताते भये घरिक अचैन ॥ भीम अर्जुननकुल तिमि अरु द्रौपदी सहदेव । व्याजते सब नरक परशो भूप तैसो भेव ॥ मुक्तते सब भये अघतेचलो निरखो भूप । स्वर्गमध्य सपक्षबिलसतअक्ष अक्षयरूप ॥ तपत जाके हेतु तुम सो करण महिमा भौन । पाय पूरणसिद्धि बिलसत लखो करिउत गौन ॥ भूप मान्धाता भगीरथ भूमि पति हरिचन्द । भरतअरु द्रौपदेय बिलसत जौन ठौर अनन्द ॥ भूपसब के ऊर्ध्वहेतव

लोक बिहरहुतत्र। चलो निरखहु पक्षनिज यो कियेसंगरसत्र॥ स्वर्ग गंगा लखो पावनकरतयो त्रैलोक॥ तासु मधि अस्नान करिकै चलो आनँद ओक। इहांके अस्नानते तुव छुटिहि मानुष भाव। नाश होइहै बैर ईर्षा शोकको तेहि छाव॥ कहतऐसे शक्र के तहँ धर्मगहि निज देह। प्रकट लसिकै भूमिपतिसोंकहे सहित सनेह॥ क्षमा दमतो दयालखिहमभये अतिहिप्रसन्न। बारत्रय तो करि परीक्षा भये मुद आसन्न॥ परमपावनबन्धु तो सब नरकके नहिं योग। शक्रदरशाये तुमहिं निज परममाया भोग॥ स्वर्गगङ्गा मध्यचलि अस्नानकरिये भूप। त्यागिमानुष भावजाते लहोदिब्यस्वरूप॥ बचनयह सुनिनृपयुधिष्ठिरसहित सुमनसमीर। शक्र सह अरु धर्म सह चलिगये सुरसरि तीर॥ तहां करि अस्नानभूपति मानुषी तन त्यागि। गहेदिब्यस्वरूप अनुपम परम सुखमा पागि॥ तहां से चलिगये नृपजहँरहे बन्धु समस्त॥ सुवनसब धृतराष्ट्र के अरुभीम आदि प्रशस्त॥ दोहा॥ जाइ तहां गोविन्द कहँ भये बिलोकत भूप। चक्र आदि आयुध प्रभुहि शेषव गहेस्वरूप॥ अरु सेवत अर्जुन प्रभुहि जिमि सेवत हे अत्र। तिनहिं देखि नृपमोद गहि अगारि गये अन्यत्र॥ तहां जाइकर्णहि लखेसहद्वादशआदित्य। फेरिमरुद्गणसह लसित भीमहिंलखे अचिन्त्य॥ चौपाई॥ फिरि आगे चलिलखे शुभेवहि। आश्विन सहित नकुलसहदेवहि॥ पुनि आगे चलि द्रुपद कुमारिहि। देखे रमा सदृश दिव चारिहि॥ तहँ नृप कछु बूझन अभिलाषे। सो गुणि शक्र भूप सों भाषे॥ यह दिवकी श्री परमसोहावनि। तो हितगई भूमि मन भावनि॥ ये गन्धर्ब पंच अति पावन। भये तुम्हारे सुवन सोहावन॥ फिरि आगे चलिशक्र समीपहि। दरशाये धृतराष्ट्रमहीपहि॥ ये सब गन्धर्बन के स्वामी। तो पितु के गुरु बन्धु सुकामी॥ साध्यमरुत वसुगण मधिअंशी। वृष्णिभोज

अरु अन्धकबंशी ॥ सात्यकि प्रभृति लखो नरनायक । जितने महारथी रणचायक ॥ सोमसमान सोमसह राजत । देखो अभिमन्युहि छबिछाजत ॥ कुन्ती अरु माद्री सहशोभित । पांडु महीपहि लखो अक्षोभित ॥ बसुनसंगभीषम कहँ पेखो । संग जीवके द्रोणहि देखो ॥ और जितेदुहुँ दिशिके पक्षी । सुभटमहीपराजसुतरक्षी ॥ गुह्यक यक्ष पुण्यजन जेते । तिनके संग लसत इततेते ॥ यहिप्रकार सुरपति फिरिफिरिकै । भूपहिदरशाये थिरि थिरिकै ॥ शक्रसाथनृप धर्म सोहाये । तिनहिं देखि अति आनँद पाये ॥ जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ भीष्मद्रोण भूरिश्रवा शकुनिजयद्रथ भूप । जयत्सेन अरु कर्ण अरु नृपधृतराष्ट्र अनूप ॥ नृपदुर्योधन पुत्रसह सत्यसेन रणधीर । धृष्टकेतु अरु कर्ण के पुत्र घटोत्कचबीर ॥ इनहिं आदि अगणित सुभटमरे युद्धकरिजौन । ते दिवमधि कितने दिवस बसे कहोमुनितौन ॥ स्वर्गबासकरि कर्मके अन्तलहे गतिकौन । सोसुनिबेकी लालसा हमें कहौ तपभौन ॥ सूतउवाच ॥ चौपाई ॥ सो सुनिकै मुनि बैशम्पायन । भूमिपालसोंकहे सचायन ॥ सो हम कहत सुनौसब कोऊ । जाहि सुनेसुधरत दिशिदोऊ ॥ नृपको प्रश्न अनूपम सुनिकै । बैशम्पायन बोले गुनिकै ॥ भूपप्रश्न तू किये सोहावन । सुनोतासु उत्तर मनभावन ॥ देव गुह्य यह गुणिबेलायक । यहि बिधि कहा व्याससुनिनायक ॥ पापकर्मको अन्त अहीना । भे निज निज प्रकृतिन मधिलीना ॥ मिले बसुनमें भीषमज्ञानी । गुरुमें मिले द्रोणद्विजमानी ॥ मिले मरुतगणमें कृतबर्मा । रबि मधि मिले कर्ण अति पर्मा ॥ दम्पतिधनद मध्यचलिसम्प्रति । नृप धृतराष्ट्र मिलतभे दम्पति ॥ पत्निनसहित पाण्डुमुदधारे । देवराजके सदन सिधारे ॥ सनत्कुमार सुमुनि सबयामी । तिन में मिले प्रद्युम्नसुनामी ॥ शशिमों मिलेपार्थ सुतबीरा । जो अभिमन्यु बिदितरणधीरा ॥ द्रुपदविराट शंखशलराजा । उग्रसेन

बसुदेव समाजा ॥ धृष्टकेतु अरु भूरि महीपति। उत्तरभूरिश्रवा करि कीरति ॥ कंकविदूरथ भानुकहाये । साम्ब निशट अक्रूर गनाये ॥ कंसआादि पूरित अतिछविसे । विश्वेदेवा मधि सब प्रविसे ॥ धृष्टद्युम्न अरु शकुनिनरेशा । कीन्हेंपावक मध्य प्रवेशा ॥ शतसुबन्धु दुर्योधनआादिक। यातुधान हैं प्रबलप्रमादिक ॥ ह्वै पवित्र रणमें तन तजिकै । बसेस्वर्गमधि सुखमा सजिकै॥ बिदुर युधिष्ठिर मुदगहि मनमें ।किये प्रवेश धर्म के तन में ॥ शेषरूपगहिहलधरआरय । गये रसातलकरिजगकारय ॥ कृष्ण देवकी तनय गोसाईं । बिलसत भये पूर्वकी नाईं ॥ सोरह सहसकृष्णकी रानी । रहीं जिती सुख सुखमाखानी ॥ मनबच कर्ममाधवहिभजिकै। सरस्वती मधिधसि तन तजिकै ॥ ह्वै अप्सरा मिलीं घनश्यामहिं । नारायण जगकृत जग धामहिं ॥ आदि घटोत्कच राक्षसजेते । दुहुंदिशि रहे बिजय यश हेते ॥ तेगन्धर्व यक्ष अरुकिन्नर । ह्वै ह्वै लहे लोक अति सुन्दर ॥ केकय मद्र आादि चहुंदिशिके । रहे जिते भट शशिरण निशिके॥ ते सब दिव्य देह गहि गहिकै । क्रमसोंबसे लोक लहि लहिकै॥ जे माधवको दर्शनकीन्हे । ते सबजनउत्तमपद लीन्हे ॥ जेकीन्हे सहबास सोहावन । ते किनलहैं स्वर्ग मन भावन॥ जेजनराम कृष्ण रटलावत ।कहतबेद बिदतेदिवपावत ॥ सौतिरुवाच ॥दोहा॥
ब्यास शिष्य द्विज श्रेष्ठते यह अनूप ब्याख्यान । सुनिजनमेजय भूमिपति आनँदलहे महान ॥ तदनुशेष मखकर्मसों किये समापन भूप । याजक पूर्णाहुतिदियेपढ़िपढ़िमंत्र अनूप ॥ करि मोचित सब अहिन कहँ मुनि आस्तीक अमन्द। अतिप्रसन्न कृतकृत्य ह्वै पढ़ेसु आशिष छन्द ॥ जनमेजय क्षितिपालमणि महामोद सों पूरि । पूजनकरि सब द्विजनकहँदये दक्षिणाभूरि ॥ जनमेजय सों ह्वै बिदा दै आशिष सुखदाय । निज निज आश्रम जातभे मुदित बिप्र समुदाय ॥

श्लोक ॥

व्यासाज्ञयासमाख्यातं सर्पसत्रेनृपस्यतु । पुण्योयमितिहासाख्यःपवित्रंवेदमुत्तमं ॥ कृष्णेनमुनिनाविप्र गदितंसत्यवादिना । सर्वज्ञेनविधिज्ञेन धर्म्मज्ञानवतास्तुता ॥ अतीन्द्रियेण शुचिना तपसाविधृतात्मना । ऐश्वर्य्येवर्त्तताचैव सांख्ययोगविदस्तथा ॥ नैकतंत्रविशुद्धेन दृष्टादिव्येनचक्षुषा । कीर्त्तिंकथयता लोके पाण्डवानांमहात्मनां ॥ अन्येषांक्षत्रियाणांचभूरिद्रविणतेजसां । यइदंश्रावयेद्विद्वा न्सदापर्वणिपर्वणि ॥ धूतपापोजितःस्वर्गोब्रह्मभूतायगच्छति । यश्चैनंश्रावयेच्छ्राद्धेब्राह्मणान्पादमंत्रतः॥ अक्षय्यमानंपवनंपितॄन्तस्योपतिष्ठते। अह्नायदेनंकुरुते इन्द्रियैर्मनसापिवा ॥ महाभारतमाख्याय सायंसंध्याप्रमुच्यते। यद्रात्रौकुरुतेपापंब्राह्मणास्त्विन्द्रियैश्चरन्॥ महाभारतमाख्याय पूर्वसन्ध्यांप्रमुच्यते। धर्म्मेचार्थेचकामेचमोक्षेचभरतर्षभ॥ यदिहास्तितदन्यत्र यन्नेहास्तिननतत्क्वचित् । जयानामितिहासोयं श्रोतव्यंभूतिमिच्छता ॥ ब्राह्मणेनचराज्ञाचगर्भिण्याचैवयोषिता । स्वर्गकामोलभेत्स्वर्गं यजमानोलभेज्जयं ॥ गुर्विणीलभतेपुत्रंकन्याविन्दतिसत्पतिं । अनागतंत्रिभिर्वर्षैःकृष्णद्वैपायनःप्रभुः ॥ सन्दर्भंभारतस्येमं कृतवान्धर्म्मकाम्यया । षष्ठींशतसहस्राणि चकारेमांचसंहितां ॥ त्रिंशच्छतसहस्राणिदेवलोकेप्रतिष्ठितं । पितृपंचदशंज्ञेयं नागयक्षेचतुर्दशम् ॥ एकंशतसहस्रं चवैशंपायनगीयते । इतिहासमिमंपुण्यंमहार्थंवेदसम्मितं ॥ श्रावयेद्यस्तुवर्णांस्त्रीन्कृत्वाब्राह्मणमग्रतः ।सनरःपापनिर्मुक्तःकीर्त्तिंप्राप्येहसौमिक ॥ गच्छेत्परामिकांसिद्धिंमंत्रमेतन्नसंशयः । महर्षिर्भगवान्व्यासःकृत्वेमांसंहितांपुरा ॥ श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमध्यापयच्छुकं । मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानिच ॥ संसारेवनुभूतानियांतियास्यंतिचापरे । हर्षस्थानसहस्राणिभयस्थानिशतानिच ॥ दिवसेदिवसेमूढाः प्रविशंतिनपण्डिताः ।

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येषनचकश्चिच्छृणोतिमे ॥ धर्म्मादर्थश्चकाम
श्चसकिमर्थंनसेव्यते ॥ नजातुकामान्नभयान्नलोभाद्धर्म्मंत्यजे
ज्जीवितस्यापिहेतोः। धर्मोनित्यःसुखदुःखेत्वनित्येजीवोनित्यो
हेतुरस्यत्वनित्यः ॥ इमांभारतसावित्रीं प्रातरुत्थायनःपठेत्।
सभारतफलंप्राप्य परंब्रह्माधिगच्छति ॥ यथा समुद्रोभगवान्य
थाचहिमवान्गिरिः। ख्यातावुभौरत्ननिधीतथाभारतमुच्यते ॥
कृत्स्नंवेदफलंविद्वान्श्रावयित्वार्थमश्नुते । सवक्तादेवलोकेहि
गत्वादेवैःसहाचरेत् ॥ महाभारतमाख्यानंयःपठेत्सुसमाहितः ।
सगच्छेत्परमांसिद्धिमितिमेनास्तिसंशयः ॥ पुस्तकेपूजनंकुर्यात्
श्रद्धाभक्तिसमन्वितः । काष्ठमासनवेष्टञ्चमुक्तादामभिरन्वित
म् ॥ धूपैर्दीपैश्चगन्धैश्चनैवेद्यैर्विविधान्वितैः । गीतैर्वाद्यैश्चनृ
त्यैश्चउत्सवेन मनोहरम् ॥ भूयसींदक्षिणान्दद्यात्साष्टांगंप्रणमे
त्ततः। वाचकंपूजयेत्तत्रग्रंथिबन्धनसंयुतः ॥ पादप्रक्षालनञ्चैव
पादपूजनमेवच। तदूर्ध्वंतिलकंकुर्यात्पुष्पमालासमर्पणम् ॥ उष्णी
षोजाविकंतत्रकटिवेष्टोत्तरीयकम् । भूषयेत्तस्यकर्णौच कुण्डला
भ्यांतथोरसम् ॥ विष्णुपूजनजंपुण्यंलभतेनात्रसंशयः । व्यास
स्त्रीपूजनंकार्य्यं त्रिवस्त्रेणसमन्वितम् ॥ सर्वाभरणभूषाढ्यांलक्ष्मी
स्तेनप्रपूजिता । वाचकंतोषयेद्भक्त्यावित्तशाठ्यविवर्जितः ॥

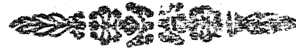
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना
श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचिते
भाषायांमहाभारतान्तर्गत शतसहस्त्रसंहितायांवैयासिक्यांस्वर्गा
रोहणंनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

स्वर्गारोहणपर्वसमाप्तम् ॥

---



# अथहरिवंशदर्पण: ॥



दोहा ॥

गुरुपद पद्ममरन्दछबि मो मन अलि तजिदन्द। ध्यानपान करि हरि चरित करत गान शुभछन्द ॥ नारायण नर रूपहरि न्यामक अन्तर्यामि। सीताराम कृपालु प्रभु सन्ततसदानमामि ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परमअनूप। तेसारथ रचि देहिं मोहिं भारतभाषा रूप॥ नारायण न्यामक नियम नरनरोत्तमहिं नौमि। बंदिगिराव्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ मन अलभ्य तेहि लहनको होंजुकरयो यह काम। महिमासीताराम की दृढ़ बसाय हिय धाम ॥ सीतारामहिं सुमिरिजनकबहूं लहैनहानि। परशनको चन्दहि जऊ परशिपसारैंपानि ॥सोरठा॥ तड़ित श्यामघनरूप कमल बान धनुधर बिशद। स्मित मुख शुभद अनूप सीताराम सुस्वामिप्रभु ॥ बन्दौं कपिबरवीरराम परम प्रिय पारषद। मंगल मूरति धीर भारथ स्वस्थध्वजस्थ वर ॥ चौपाई ॥ त्रिधिते छठईं शाखि सोहाये। पाराशरसुत गुरु गुणगाये॥ श्रुति स्मृति वेद पुराण निधाना॥ बन्दौंव्यासबिदित भगवाना ॥ शौनकादि तप तेज निधाना। नैमिषारमें करि अनुमाना ॥ सूतपुराणिक सों इमि बोले। प्रेम प्रशंसा बहुबिधि

खोले ॥ तातकहेहुबहुभांति बुझाई । सबकेबंश बिभूति बड़ाई ॥ कौरवबंश कहेहुमुनि ज्ञानी । जन्म कर्मकी कथाबखानी ॥ अंधक वृष्णि बंश व्यवहारा । क्रमसों कहेहुन ज्ञान अपारा ॥सो सुनि सूतपुराणिक हरषे । प्रश्नोत्तर कहि आनँद बरषे ॥ तात सुनहु यह प्रश्न सुबानी । जनमेजय नृप आनँद खानी ॥बैशम्पायन सों इमि बूझे । प्रेमलताकी जाल अरूझे ॥ बैशम्पानिजु उत्तर दीन्हा । सो हमतहांसकल सुनि लीन्हा ॥ बैशम्पानिकहा सुनुभूपा । प्रथमसृष्टि उत्पत्ति अनूपा॥ जो ईश्वरमाया बिस्तारी । रचत जगतबहुभांति सुधारी ॥ ब्रह्मा सोइ ईश्वर बर मांगी । निर्गुण नारायण अनुरागी ॥ महतपुरुष तेहि ते अहँकारा ॥ तेहि ते भूतभूत बिस्तारा ॥ दोहा ॥ अब जगउत्पत्ति कहउं नृपसह बिस्तार सहेत । वृष्णिबंश क्रमसों बहुरि कहिहौं ज्ञान निकेत ॥ चौपाई ॥ जग रचनाकरि ईक्षित ईशा । प्रथम हिं आप रचेउ जगदीशा ॥ तेहि मधि तजेउबीर्यजग स्वामी । करि बिचारि कछु अन्तर्यामी ॥ भयउ बीर्यतेहि अण्डअनूपा । अमल अपूरब सुबरण रूपा ॥ तेहि मधि बिधि ने एकबरीसा । बसितेहि द्विधा कीन्ह जगदीसा ॥ अर्द्ध भूमि दिव कीन्हेउ आधा । तेहि मधि शून्य अकाश अबाधा ॥ दशधादिशितेहि बिशद बनाई । ब्रह्मानिरखेउ निज निपुणाई ॥ कालकाम अरु क्रोधबनाये अरु मन बाचहि रचेउ सुहाये ॥ पुनिजग वृद्धियुक्तिहितबेधा ॥ सप्तप्रजापति रचेउ सुमेधा ॥ अत्रि मरीचिपुलस्ति सोहाये । पुलह अंगिरस अरु क्रतुजाये ॥ अरु बशिष्ठबर तप बिधि चीन्हे । मानस पुत्र सातबिधि कीन्हे ॥ बिधिसम तिनहिं पुराणबखानै । नारायण आत्मकजगजानै ॥ रोषात्मक पुनि रुद्रहि जाये । सनतकुमार रचे मनभाये ॥ सप्त प्रजापति उत्पति कीन्हे । बहुत प्रजाअति आनँदलीन्हे ॥ रुद्र प्रकट स्कन्दहि कीन्हा । गणसमूह रचिआनँद लीन्हा ॥ रुद्र

पुत्र अरु सनत्कुमारा। प्रजाप्रसूतन मन हिय धारा॥ प्रकट कीन्ह तब बिधिगुण गाये। बिद्युतअशानि मेघमनभाये॥दोहा॥ मेघाधिप रोहित धनुष पक्षी बिबिध अखेद। रचिबिधि रचेउ सप्रेम फिरि यज्ञसुधारन वेद॥ चौपाई॥ मुखसों प्रकट कीन्ह बिधि देवन। उरसों पितरपुनीत सुसेवन॥ मदनांकुशसोंउत्पतिमानव। कीन्हेउ जघनदेश सों दानव॥अप्सरादि सबसृष्टि अनूपा। अंग अंग प्रति प्रकटेउभूपा॥ तबबिधिद्विधाकीन्हनि जगाता।नारीपुरुषभयेसुनुताता॥ दृढ़तप करनलगी वहनारी। पुरुष बिराट रूप तेइ धारी॥ कै बिराट निज अंश निधाना। शुचिस्वयम्भुमनु रचेउ सुजाना॥ इकहत्तरियुग भोगबिधाना। तासु मन्वन्तर कहत पुराना॥ अयुत बर्ष तप करि वह नारी। नाम सुभगसतिरूपाधारी॥ लहि स्वयम्भुमनुपति परबीना। बीरनामसुत उत्पति कीना॥ कन्याकर्दमकी शुभचारी। पांनि गृहीत बीरकी नारी॥ द्वैसुतभये तासु बलवाना। उत्तानपाद प्रियब्रत जगजाना॥ मुनिबशिष्ठकी सुतासोहाई। कन्यासुपति प्रियब्रत पाई॥ प्रकटेसि चारिपुत्र शुभचारी। ते सम्राट कुक्षि बलभारी॥ पुनिबिराट अरु प्रभुबलवाना। प्रियब्रतके बरपुत्र पुराना॥ उत्तानपाद कहँ अत्रिसुजाना। ग्रहणकीन पुत्रत्व बिधाना॥ अश्वमेधमख परमपुनीता। धर्मनृपति किय सहित सुनीता॥ दोहा॥ भई चारु कन्याप्रकट तामखतें सुनुभूप। सुनीतानाम लहीसुपति उत्तानपाद अनुरूप॥ चौपाई॥ तासुभये सुत चारि अनूपा। ध्रुवअरु कीर्तिमतेचर भूपा॥ आयुषमंत बहुरिबसु जानो। तिनमें ध्रुवभागवत बखानो॥ तीनि सहस्र बर्ष ध्रुवज्ञानी। कीन्हतपस्या अतिहित जानी॥ लहि ईश्वर सों सबरनिदेशा। पृथिवी पालन कियो नरेशा॥ शंभूनाम प्रिया लहि नीकी। सुखदायनि अवलंबनिजीकी॥ सृष्टि भव्य द्वैसुतउपजाई। बसेजाय पदअनुपम पाई॥ को ध्रुवकी कहि

सकै बड़ाई । शेषशारदा सकैं न गाईं ॥ ऋषिग्रह जेहि परदक्षिणकरहीं । आपुहि धन्यजानि मुदभरहीं ॥ शिष्टनृपतिकीतियासुछाया । तासुभये सुतपांच सदाया ॥ रित्यसुरिपु जयबिप्र सोहाये । वृकल नृपतिवृकते यशगाये ॥ रिपुकी वृहतीतिया सयानी । तासु सुवन चक्षुष गुरुज्ञानी ॥ पुष्परनी चक्षुषकीघरनी । तासुत मनु नृप पालक धरनी ॥ प्रियानबूला मनुकीप्यारी । दशसुत तासुभये शुभचारी ॥ उरूपुरू सतद्युम्नतपस्वी । सत्यबाक कबिपरम यशस्वी ॥ अग्निष्टुव हरिरात्रि सोहाये । कहि सुद्युम्न अभिमन्यु सुभाये ॥ अग्रेई तिय ऊरूकेरी ।तासुत षटश्रोताजयभेरी ॥दोहा ॥अंगसुमनअरुस्वातिक्रतु अंगिरगय भूपाल । नामसुनीताकालकी सुताअंगकीबाल॥ चौपाई॥ तासुत नाना अगुण निधाना । नानाको गुणगहे अमाना ॥ भयोबेणु अपमारग गामी । कुमती क्रोध कलित कलिकामी ॥ कियो वेद पथ लोपन तेही । निज पथ रोपोसि कुपथ सनेही ॥ हठ करि हठ यह दिहेसि निदेशू ।यज्ञजापकर रहैन लेशू ॥ मोहिंजपहु मोहिं जानहु देवा । मोसों प्रबल कौनको भेवा ॥ धर्म लोपलखिऋषिगण आये । अत्रिप्रभृत यहकहि समुझाये ॥ हमसब कोवेयज्ञ उमाहे । तुवसहाय सबबिधि सो चाहे ॥ तूअधर्म तजु हे नृप साईं । करु सुधर्म निजापितुकी नाईं ॥ सोसुनि ब्यंगहास करिबोलेसि । निजममत्व की पदबीखोलेसि ॥ मुनिजाना यंहि होहि न चेता । तब तेहिको गहिज्ञाननिकेता ॥ दक्षिणजानुमथो रिसिराते । कृष्ण पुरुष प्रकट्यो इक ताते ॥ सो वहवेणुपाप को रूपा । भयो जोरिकर ठाढ़ोभूपा ॥ कह्यो निषीद अत्रि तपरासू । बैठ अर्थ यह भूपतितासू ॥ ताते जाति निषाद अपाना । कोलभिल्ल गणभये सयाना ॥ फिरि भुज दक्षिण मंथनकीन्हे । प्रकटे पृथुकर शर धनु लीन्हे ॥ कढ़त अग्नि जिमिमथे सुअरणी । तिमिदरशेबर बर्चशबरणी ॥ देखिलोकतेहि भयोसुखारी ।

मुद मंगल पसरयो दिशिचारी ॥ दोहा ॥ तदनुवेणु स्वर्गहिगये उच्चपरमपद पाय। प्रकटे को सत पुत्रके परकट परमप्रभाय ॥ चौपाई ॥ सागरसरिस सरससुखछाये। रत्नअमौलिक लैलैआ-ये ॥ ऋषि दिगपाल सुमनसुरनायक । अजकीन्हेउ पृथुकहँ अभिषायक ॥ बिधिकृत मखते उत्पति जाको। ऋषिकीन्हेउ आवाहनताको ॥ मागध सूतनाम शुभचारी । अस्तुति करता परम बिचारी ॥ बंदीजन अति अमल अचारी । मखते जेहि जायो सुखचारी । तिनसों ऋषि बोले सबकोऊ । करहुभूपकी अस्तुति दोऊ ॥ किमिअस्तुति करियेमुनिराई । बिनजाने गुण सुयशबड़ाई ॥ कहामुनिन तुमहौ बरज्ञानी । बरणि भविष्य कहौ अनुमानी ॥ बंदीजन निजमुखसोंकहिहैं। सोप्रत्यक्षजगजनसब लहिहैं ॥ सुनि आशिष तिनअस्तुतिकीन्हा। भूपमुदितमनतिन कहँ दीन्हा ॥ देश अनूपम सुत कहँ दीन्हा। मगधा धीश मगध कहँ कीन्हा ॥ प्रजनपुकार आइतब कीन्ही ।भूमि पदारथसबहरि लीन्ही ॥ सो सुनिपृथुकरिक्रोध अमाना। तेजराशिधारेउधनुबा-ना ॥ लखिसो भूमि धेनुह्वैमांगी। चले तासुपीछेपृथु लागी ॥ सब लोकपसों आरत भाखी। पृथुभय कोऊ सकेउ न राखी ॥ आई तबपृथुशरणबिचारी। त्राहित्राहियहबचन उचारी ॥ दोहा ॥ भूप-तिपरमसयानतुम तियबधकरबअयोग। जेतोतिर्य्यग योनिजा कहत वेद बिद लोग ॥ चौपाई ॥ लागिप्रजाहित ममबधचाहा। मोहिं बिना किमिप्रजानिबाहा ॥ होइहि भूप बिचारहु जियसों। मैं जोकहउँ धरहुसोहिय सों ॥ कारज सिद्धिउपायउपासे। कार-ज सधन न कारण नासे ॥ करि भूसम अरु क्रोध दुराई। करहु मोहिं दोहन नृपराई ॥ सो सुनि भूप भूमि सम कीन्हा। सकल पदारथ गोदुहि लीन्हा ॥ दानवदेव पित्र ऋषिआदिक। दोहेउ निजनिज कारज साधिक ॥ राजसूय मखनृप पुनिकीन्हा। बहु दक्षिणाद्विजन कहँ दीन्हा ॥ क्षत्री आदि भये पृथुभूपा। रोपे

राजसूय मखयूपा ॥ दोहा ॥ पृथु पुहुमिहि पुत्रत्व करि सिरज्यो सबसंसार । तबते भूपृथ्वीभई लही योनि अवतार ॥ चौपाई ॥ पृथुके दोयपुत्र नृपराई । अंतर्द्धानपालिसुखदाई ॥ अंतर्द्धान शिखण्डिनि दम्पति । हविर्द्धान सुत जायेउसंप्रति ॥ षटसुत हविर्द्धान के जाये । आग्रेई सो भयेसोहाये ॥ प्राचीनबरहि शुकगय नयगामी । कृष्ण कुँवर बरअजिन सुनामी ॥ प्राचीनबरहि जपतेज निधाना । कोटिन कियेयज्ञ सबिधाना ॥ उदधि स्वसुतासुबर्णा नामा । दिय प्राचीन बीर कहँ आमा ॥ तासु भये दशसुत तपचारी । नाम प्रचेता दशौ बिचारी ॥ जलनिधि बैठि करन तपलागे । तेदश एकधर्म अनुरागे ॥ तिनहिं तपत तप अयुत बरीशा । भयोब्यतीत सुनहुअवनीशा ॥ तबते भई वृक्षमय धरणी । रहीनकहुं खालीवर वरणी ॥ दुखित प्रजाभे भये अकाजा । तिनसों तहीं सुना सुनराजा ॥ सो सुनितेकरि कोपकराला । मुखतेवायुअग्निकी ज्वाला ॥ प्रकटितदशौप्रचेतसुकीन्हा । तातेवृक्ष नाशकरिदीन्हा ॥ शेषरहे तरु जब तब भूपै । आये चन्द्र प्रचेतसयूपै ॥ औषधीश बोले यह बानी । क्रोधहि क्षमहु प्रचेतसज्ञानी ॥ देहिंतुम्हैं तरुतनयालेहु । मारुतअग्नि शमित करिदेहु ॥ दोहा ॥ वृक्षनको शुचिअंशशुचि हो निजगर्भ बसाय । राख्योजानि भविष्ययाहिबंशवृद्धिके चाय ॥ चौपाई ॥ कन्यारत्न मारिषानामा । तुमसब याहि करहु निजबामा ॥ ममतुवतेज संभवित यासों । ह्वैहैपुत्र भूपफिरि तासों ॥ ह्वैहै सोमबंश बिस्तारा । पूरिहि सुयश पयोधि पसारा ॥ दशौ प्रचेतस सुनि हियधारी । अंगीकार कीन्ह वहनारी ॥ लहिपति तिनहिं भूमितलचारी । मानसगर्भ मारिषाधारी ॥ तासों दक्ष प्रजापतिजाये । तीनिलोक गुण गरिमागाये ॥ चर अरु अचर द्विपद चौपाये । दक्षप्रजापति बहुबिधिजाये ॥ सुता पचास मानसिक कीन्हा । दशतिनमहँते धर्म्महि दीन्हा ॥ तेरह

दयो कश्यपहितामें । सुतासताइस सोमसकामें ॥ बहुबिधिभई सृष्टितिन तिनसों । भयोसँयोग भूपजिनजिनसों ॥ तबसोंसृष्टि मैथुनी भूपा । उतैमानसिकरही अनूपा ॥ शौनक सुनहु परम बिज्ञानी । बैशम्पायनकी यहबानी ॥ सुनि जनमेजय प्रश्न उचारा । प्रथम कहेउ तुम ज्ञानअपारा ॥ उत्पति देव दानवन केरी । दक्षप्रजापतिकीमुदघेरी ॥ विधिकोचरण अगूढ़ाचारू । तासोंप्रकटे दक्षउदारू ॥ बायें अँगुठाते गुणखानी । भई तासु पत्नी सुखदानी ॥ तब तिमिबरणेहु बुद्धिनिधाना । अबइमि कहहु द्वितीय बिधाना ॥ दोहा ॥ चंदसुता सुत दक्षकहि कहेहु सर फिरितासु । सोसबसुनि संशय भयउ मेटहु ज्ञानप्रकासु ॥ उत्तर बैशंपानितब दीन्हेउ ज्ञानअपार । देहधरै तेहिनित्यनृप उत्पति अरुसंहार ॥ बिद्यावंत मुनीशगण तिनकहँमोहनहोत । ईश्वरकी महिमा महत निरखत ज्ञान उदोत ॥ सोरठा ॥ रह्यो न कछु तेहिकाल भेदनात अरु गोतको । तपगरिमा भूपाल तपप्रभाव कारणरह्यो ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेदक्षोत्पत्तिबर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

जनमेजयउवाच ॥ चौपाई ॥ उत्पति देवतादि सबहीकी । बैशंपानि कहहु प्रियजीकी ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ प्रथमदक्ष मानस विधि धारा । बहुबिधि कीन्हेउ भूतपसारा ॥ देवतादि क्रमिलोंरचि दीन्हें । तबफिरि सृष्टि मैथुनीकीन्हे ॥ बीरन नृपकी सुतासयानी । दक्षप्रजापतिकी प्रियरानी ॥ पांचसातसुत तासों जाये । नामएक हर्य्यश्व सोहाये ॥ तिनमनमें जगरचनाचीते । तिमि नारदमुनि कलह पिरीते ॥ कौतुक बचन सुनाइ सुदेही । तिनको नाशकीन्ह सबजेही ॥ सुनिजनमेजय बूझोऐसे । दक्ष सुतनि नाशामुनिकैसे ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ दक्षपुत्रजगरचनाईछे । तिनहिंआइ नारदमुनिशीछे ॥ तुमबालक सब भूप कुमारा । चाहनकीन प्रजाबिस्तारा ॥ भुवप्रमाणपहिलेलखिलेहू । रचहु

प्रजातब सहित सनेहू ॥ सोसुनिते दशादिशा सिधारे । लीबे भूमि प्रमाण सुखारे ॥ दोहा ॥ अबलोंते बहुरे न फिरि भूपभूरि परताप । भयेजलधिगत थिरतनहिं यथाआपगाआप ॥ चौपाई ॥ तिनहिं गयेफिरि दक्षबिचारी । सहसपुत्र कीन्हेउ पनधारी ॥ सोइबाणीपुनि तिनहिं सुनावा । वाहीबिधि उतउनहिं पठावा ॥ सोमुनि दक्षप्रजापति कोपे । नारदनाशनको पनरोपे ॥ ब्रह्म ऋषिनलै बेधाआये । बहुतभांति कहि शापबराये ॥ दक्षकहा तब बरऋषि गोई । नारदमोतनया युतहोई ॥ दक्षसुता कश्यप कहँ दीन्हा । बसितागर्भ जन्ममुनि लीन्हा ॥ ऋषिभयदक्षहिये अनुमानी । जाये दुहिता साठि सयानी ॥ दश तिय दक्ष धर्मकहँ दीन्हा । तेरहले कश्यप तियकीन्हा ॥ तियशुचि सोम सताइसधारी । रिष्टनेमि लीन्हेउ तियचारी ॥ द्वैबहुपुत्र प्रिया परबीना । भई दोय अंगिरसअधीना ॥ अरु कृशाश्व उलीन अनूपा । सबके नाम सुनहुअबभूपा ॥ अरुन्धती बसुजामीलंबा । भानु मरुत्वति धर्मअलंबा ॥ संकल्पा सुमुहूर्ती कहिये । साध्या बिश्वा सुनिमुद गहिये ॥ ये दशधर्मतिया अनुमानो । तिनके सुतके नामबखानो ॥ पृथिवी बिषय अरुन्धति जाये । बसुसुत ये बसुबसुमनभाये ॥ तनय नागबीथी जामीके । दोय पुत्र रंबानामीके ॥ भानूके सुत भानुप्रकाशे । मरुत्वतीके मरुत बिलाशे ॥ संकलपा संकल्पहि जाई । पुत्रमुहूर्त्त मुहूर्त्ता पाई ॥ दोहा ॥ साध्यासुत साध्यासुभग सुनु जनमेजयभूप । बिश्वाके सुत प्रकटजग बिश्वेदेव अनूप ॥ आठ बसुनके कहतअबनामवंशसुनु भूप । प्रथम आपध्रुव सोमधर अनिल अनलशुभ रूप ॥ चौपाई ॥ अरु प्रत्यूष प्रभाष बखाने । पुत्रआपके चारि सुजाने ॥ प्रथम बितंड्य बहुरिश्रमजानी । अन्तकहत पुनिमुनिबिज्ञानी ॥ ध्रुवकेपुत्र कालसुनु भूपा । बर्चससोमतनयअनुरूपा ॥ धरसुतद्रबिनशिराहतजाने । प्राणरमन येपांचबखाने ॥

अनिलकुमार मनोजवभूपा। अविज्ञात गति द्वुतिय अनूपा॥
भये अनलके सुवनकुमारा। षटकृतिकास्तन निजमुखधारा॥
नैगमेय अरु शाखविशाखा। तासुअनुज सुनुनृपसातिभाखा॥
भे प्रत्युषकेसुत ऋषिएकू। देवलदुतिय भये सविवेकू॥ देवल
के तनया यकजाई। बिदित बृहस्पति ताकेभाई॥ सो प्रभास
की पत्नी प्यारी। तासुत बिश्वकर्मा गुणभारी॥ जेतेरहकश्य-
पकी नारी। नामतासु सुनु भूतलचारी॥ अदिति दिती तनु
ताम्राजानो। विनतासुरसा कद्रूमानो॥ धरासुरभि अरु इला
बनाई। बहुरिश्वसा मुनि अश्वाभाई॥ सुरभी कश्यप दम्पति
भाये। तिनसों रुद्र एकादशजाये॥ अजैकपाद हरत्रंबकरैवत।
अहिर्बुध्न्य बहुपशुहैं दैवत॥ दोहा॥ अपराजित अरु वृषाकपि
शंभुकपर्दीजानि। नामपिनाकीकहतसबलियेपिनाक सुखानि॥
चौपाई॥ चाक्षुष मन्वन्तरसुचितामें। द्वादशसुरबरगुरुतपधामें॥
तुहिता एकनाम सबकेरा। तिनसब सम्मत निजमति हेरा॥
इनको अन्तर बीतनलागे। बैवस्वतको लागनलागे॥ उभय
सन्धिमो यह तनत्यागी। अदितिगर्भक्षैप्रकटैभागी॥ तनुतजि
अदितिगर्भ वे जाये। तब द्वादश आदित्यकहाये॥ शक्रबिष्णु
अरुत्वष्टा धाता। सवितापूषाभग सुनुताता॥ मित्रअर्य्यमाअं-
शुबिराजै। वरुण बिवश्वनासुखसाजै॥ जेनक्षत्रसताइसगाई।
सोमाप्रियातेबहुसुतजाई॥ अरिष्टनेमि पत्नीकेजाये। सोरहसुत
बरतप करगाये॥ बहुपुत्र तियके चारिकुमारी। विधुत सुनाम
भई गुणभारी॥ भेआंगिरस तनय शुचिभेवा। शुचिबरमंत्रअ-
धिष्ठित देवा॥ भेकृशाश्व शुभस्थल गामी। देवअस्त्र अधि-
कारीस्वामी॥ देवसमूह कहे जे नामी। इन्हैं आदि बहुअन्त-
र्य्यामी॥ विधिके दिन प्रमाण तनधारी। फिरि तनतजि शुचि
सुहृद सुखारी॥ बिधिमें लीन रहे सबऐसे। रहतबीजमें मिलि
तरु जैसे॥ प्रकट होहिं यहि बिधि ते तैसे। अस्तह्वोत प्रकटत

रविजैसे ॥ दोहा ॥ दितिके दोयततनयभये हिरण्यकशिपु बलवा-
न। अरु हिरण्य चखबर गरबअवगुणओघअमान ॥ चौपाई ॥
हिरण्यकशिपुके भेसुतचारी। अह्लादनामसंह्लादअनारी॥अरु
प्रह्लाद फिरिभयो सुखारी। अनुह्लादसुतत्वविचारी ॥ अह्लाद
पुत्रअह्लदनिरदंदा। संह्लाद तनयद्वैसुन्दनिसुन्दा॥ अनुह्लाद
सुतआपूएका। नृपप्रह्लाद जुसहितबिबेका ॥ बिष्णुभक्तभावत
सुअपारा। भयो बिरोचन तासुकुमारा॥ तनय बिरोचनकोबलि
धीरा। बानबार बलिको बरबीरा ॥ हेबलिकेसुत बलीअनेका।
तिनमें बड़े बान सबिबेका ॥ इन्द्रदमनसुत बानबलीके । लौ-
हिति तियसों प्रकटेनीके ॥ पांच हिरण्यनयनके बेटे। रहेबली
बरबिरदलपेटे ॥ रही हिरण्यनयनकीचाही। सुतासिंहिकाछाया
आही ॥ इतिदितिबंश ॥ अथदनुबंश ॥ शतसुतभयेदनूकेभूपा।
तिनमें कहेप्रधानअनूपा ॥ बिप्रचित्ति स्वर्भानु पुलोमा। वैश्वा-
नरहयग्रीव सजोमा॥ अरुवृषपर्वा सुनु नृपज्ञानी। कहैंकहांलों
सबअभिमानी॥ स्वर्भानूकीप्रभाकुमारी। अरु पुलोमकी शची
दुलारी॥ वैश्वानरकी दुहितानोई। कालीऔर पुलोमासोई॥
हयग्रीवकी तनयाजानी। उपदानवी सुनहु नृपज्ञानी ॥ दोहा ॥
वृषपर्वाकीहीसुता शर्मिष्ठायहनाम। तिनकेबंश कहैं सुनोभूपति
आनँद धाम ॥ चौपाई ॥ प्रभापुत्रके नहुष उदारा। नृप जयन्तहै
शचीकुमारा ॥ पौलोमा कश्यपसों जाये। साठिहजार पुत्र मन
भाये ॥ चौदहशत काली सों कीन्हा। तिनसबबिधि सौंयहबर
लीन्हा ॥ देवनसों नहिं मरों बिधाता। तिन्हैं फाल्गुण जाइ नि-
पाता ॥ उपदानवी तासुके जाये। भेदुःकृन्त महतबलगाये॥
शर्मिष्ठाको पुर भो पूता। तासों बाढ्यो बंश बहूता ॥ सिंहिका
हिरण्याक्षकाजाई। बिप्राचित्रपति अनुपमपाई॥ तासुत जेठो
राहुबखानो। बातापीशुचिइल्वलजानो॥ इनहिंआदि सुतशत
सह वाके। पुत्र पउत्र अनगिनेताके॥ इतिदनुबंश॥ अथता-

म्राबंश ॥ षटतनया ताम्राकीजानी। काकी शेनी भाषी मानी ॥ सुग्रीवा शुचिगृध्रा कहिये। तिन जायेजेहि तेहि श्रुति लहिये॥ काकी काक उलूकनिजाई। शेनी बाज प्रभृति नृपराई ॥ भाषी भाषादिक रचिदीन्हा। गृध्रागीधन प्रकटितकीन्हा॥ शुचीजई जल जंतु ससींवा। सुग्रीवाहयखर लवगींवा॥ इतिताम्राबंश॥ अथबिनताबंश॥ अरुणगरुड़ बिनताके बालक। सुरसाकेअहि उरगति तालक॥ कद्रू के जेनागकहावैं। एक अनेक फणनिसों भावैं॥ तक्षक बासुकि शेष प्रधाना। बिनता कद्रूवंश बखाना॥ दोऊवंश बहुत बढ़ि जाते। चौदहसहससुपर्ण निपाते॥ जल-जा थलजा पक्षी जेते। कीन्हींप्रकट धरासब तेते॥ गायमहिष ये सुरभीके हैं। तरु तृणलता इलाकेये हैं॥ दोहा ॥ भये इवसा के तनय ये यक्ष रक्षगण सर्ब। भूतिके अप्सरवृन्द हैं अरिष्टाके गन्धर्ब ॥ कश्यप सों भूपाल मणिभई सृष्टियहि भांति। स्वारो-चिष मनु के रह्यो अन्तरहे बरकांति॥ चौपाई ॥ अब आगे सुनु कथा सोहाई। बैवस्वतमन्वन्तर पाई॥ देव दैत्य सों भयो बि-रोधा। देव दैत्य बधि कीन्हेउबोधा॥ तब दितितपिकश्यपकहँ तोषी। मांग्योबर यह अन्तर रोषी॥ देव देहु मोहिं सुत बल बीरा। बधै सुरपतिहिं जो रणधीरा॥ होयपुत्रयह कश्यपभाखी। जो शत बर्ष गर्भ सकुराखी ॥ सहित अचार बिचार सदाईं। तेइ सब कहा साधिहि सब साईं॥ तब निज तेज तासुहियथा-पी। करन गये तप कश्यप जापी॥ रहि तब ताढिग करिकछु भेशा। शङ्कि अशुचता लहत सुरेशा॥ लहि दिन प्रभुइच्छा अनुसारे। दितिसोईबिनु पायँपखारे॥ ताक्षणतनु तन धरिनृप आसू। बज्रपाणिशत शत करि तासू॥ रुदन करनते लगेदुखा रे। मारुद मारुद इन्द्र पुकारे॥ तिन्हैं सहितबाहर काढ़िआये। तब ते मारुत नाम धराये॥ ते उञ्चास बायु भूस्वामी। तब ते भये इन्द्र अनुगामी॥ अनाचार सुनु भूतल शासन। जनको

होत सर्ब बिधि नाशन ॥ ताते अनाचार नहिं कीजै । श्रुति पु-
राण को शिष सिखि लीजै ॥ दोहा ॥ तिन्हैं इन्द्र कीन्हों तदनु
सात सात करि एक । सात सात मण्डल अधिपसुनिये सहित
बिबेक ॥ चौपाई ॥ सुनहु भूपअबबिधिकी बातैं । सहितप्रेममुद
मोहिंअरातैं ॥ लोकलोकसहथोक सुमेधा । कियेइतकअबिकारी
बेधा ॥ द्विजबल्ली गृहमख नप ताके । कियो अधिपशशिअयन
सुधाके ॥ जलके बरुण कुबेर नृपनके । बसुके पावक इन्द्रसुम-
न के ॥ बिष्णु अधिप द्वादश आदितके । पतिप्रह्लादहिदनुज
दइतके ॥ सागरनदीमेघ बर्षा के । कियोअधिप पर्जन्यसदाके ॥
दंशिनके धिप शेषहि कीन्हे । नाग अधिप बासुकि करि दीन्हे ।
शेषन के धिप तक्षक भीले । अप्सरके पति काम छबीले ॥ ति-
थि अरु बार मास पखवारा । तामें कला आदि ब्यवहारा ॥
सिन्धु सरितके स्वामि सयाने । पर्बत पति हिमवन्तहि जाने ॥
साध्यनके नारायण स्वामी । रुद्रनके वृषभध्वज नामी ॥ बिप्र-
चित्ति दानवके राजा । गजपति बिधि ऐरावतसाजा ॥ अश्व
अधिप उच्चैःश्रवगाये । पक्षिनके पति गरुड़ सोहाये ॥ दोहा ॥
चित्ररथहि गन्धर्बपति कीन्हों बिधिसहरीति । मृगपति कीन्हों
सिंह कहँ सुनिये भूप सुनीति ॥ चौपाई ॥ गोपतिकियो वृषभकहँ
भूपा । बनस्पतीपति प्लक्षअनूपा ॥ तदनु भूपमणिखल कुल
घालक । अभिषेकेउ नृप अज दिशि पालक ॥ कियो सुधन्वहि
प्राची दिशिपति । सुतबैराजके बस्मर बल अति ॥ कर्दमसुत
दक्षिण दिशिपाला । नाम शंखपद कियउ गुआला ॥ पश्चिम
दिशि परजससुतभूपा । केतु मंत तेहि कियो अनूपा ॥ सुतपर-
जन्यको उतर दिशेशा । नाम हिरण्यरोम शुभ भेशा ॥ ते सब
यथा प्रदेश महीपा । अघप्रभृत पालत सब दीपा ॥ मुनिमुख
कंजतासुरसबानी । पीछकि बोले नृप अतिज्ञानी ॥ अबमुनिवर
तपतेज निधाना । कहहु मन्वन्तरकेर बिधाना ॥ मनु के नाम

कहहुं नृप तोसों। कौरव बंश शूर सुनु मोसों॥ मनु स्वयम्भु स्वारोचिष जानो। औतिम तामस रैवतमानो॥ चाक्षुष बैवस्वत सावर्णे। चारि मेरु सावर्णि सुवर्णे॥ भौत्य रौच्य येरुचि सुत जानो। यहि प्रकार चौदह मनुमानो॥ तिनके ऋषि सुत देवन कहिये। सो सुनि पुरुषसिंह मुद गहिये॥ अत्रि मरीचिपुलस्त्य मुनीशा। अंगिर भार्गव सुनुअवनीशा॥ अरुबशिष्ठयेऋषि यम देवा। मनु स्वयम्भुके सुत शुभ चेवा॥ दोहा॥ मेधावसु अग्निध्र अरु अग्निबाहु द्युतिमान। हव्यश्रवन अरु पुत्रकहि कहिये ज्योतिष्मान॥ चौपाई॥ अरु मेधातिथि सुनु नृपज्ञानी। मनुस्वयंभुके सुत सुखदानी॥ स्तम्ब और्व काश्यप अरु प्राना। अत्रि च्यमनगुरु ऋषि राजाना॥ तुषिता देव पुत्रअप आया। प्रकृति ज्योतिनभमूर्ति सजाया॥ प्रथित नभस्वह विघ्नसु मनुके। उर्जससुत स्वारोचिष मनुके॥ ऋषि बशिष्ठके तनय सोहाये। सातसै वै वाशिष्ठ कहाये॥ ते ऋषि तृतिय मन्वन्तर के हैं। भानुदेवता तासुरहेहैं॥ दशसुत उर्जस आदिबखाने। औतममन्वन्तरके जाने॥ काव्य अग्निष्ठथु जह्नुकहेहैं। कपीवान कपिवान लहेहैं॥ धाताये ऋषिसात सुसाजा। द्युतिहि आदिदशसुत हे राजा॥ सत्य देवगण अभय दिशाकर। तामस मनुमें हैगुणआकर॥ बेदबाहु परजन्य मुनीशा। बेदशिरा ध्रुव सुनु अवनीशा॥ सत्यनेत्र अरुबत्सर जानो। पितृ अधिप बैवस्वत मानो॥ यक्ष रक्षसो भूतपिशाचो। ताधिप शिव सुजान बिधिराचो॥ मुद मंगल अरु ऊरधबाहू। अरु हिरण्य रोमा ऋषिनाहू॥ ये ऋषि रैवत आदि सुभेवा। अभूतरजपारिप्लवदेवा॥ धृतिहिआदि दशसुत तपधामा। हैरैवतमनुकेशुचि नामा॥ भृगु बिवस्व नभ बिरज सुधाता। और अमिनामा सुनु ताता॥ अरु सहिष्णुये सात ऋषीशा। देष्ठप्रसूत रिभव क्षिति धीशा॥ दोहा॥ लखा पृथुक दिवौकस ये देवत गणपांच।

चाक्षुष मनुके सुवनदश रूरू आदिक सांच ॥ चौपाई ॥ गौतम अत्रि बशिष्ठ बिराजे । भरद्वाज कश्यपतपसाजे ॥ बिश्वामित्र बिदित तपरासी । जामदग्नि सुनु भूमि बिलासी ॥ बिश्वेदेव साध्य बसुबायू । अरु आदित्यन सुहुबर आयू ॥ आश्विनेय ये देव बखाने । सुत इक्ष्वाकु आदि दशजाने ॥ वैवस्वत मनुके सुनु भूपा । बर्तमान जे लसत अनूपा ॥ बर्तमान अरु भूतबखाना । अब भविष्य मनु सुनहु सुजाना ॥ अष्टममनु सावर्णिसुभावी । शुचिसूरजके सुत मेधावी ॥ परशुराम अरु ब्यासपुनीते । कृपाचार्य गालव गोजीते ॥ दुर्बासा अरु उर्बस लीने । अश्वत्थामा ये ऋषि हीने ॥ बारावान आदि दशपावन । लहिहैं सुत लावरण सुहावन ॥ चारिमेरु सावर्णि गनाये । कश्यपप्रिया प्रियाके जाये ॥ मेरु शिखर तिनबर तप कीन्हा । तबते सुनो नाम यह लीन्हा ॥ ऐसे चारिमेरु साबरणू । रौच्यभौत्य येहैंबर बरणू ॥ सात सुऋषि अरु सुतसुर लहिते । यथा प्रमाणभोगिहैं महिते ॥ चौदह मनुजेकहे सुचालैं । सहसचौकड़ी युगमहि पालैं ॥ बीते सहसचौकड़ी भूपा । बीतैबिधिको दिवस अनूपा ॥ दोहा ॥ शयनकरहि बिधि प्रलय तब होय सृष्टि संहार । युगसहस्र निशि सोइ फिरि जागिरचे संसार ॥ चौपाई ॥ सुनि मुनीश के बचन पुनीता । फिरि इमि बोले नृपति सुनीता ॥ मन्वन्तर युग बिधि दिनतासू । कहहु प्रमाण द्विजोत्तमआसू ॥ सुनिमुनि कहा सुनहु नृपज्ञानी । कियो प्रश्न ताउत्तरजानी ॥ पंद्रहनिमिष प्रमाण बखानी । काष्ठा कहत गणित गणज्ञानी ॥ काष्ठा तीस कला परमाना । तीसकलानि मुहूरत जाना ॥ तीस मुहूरतमें सब कोऊ । कहत भोगवत निशिदिन दोऊ ॥ पन्द्रह निशिदिन पक्षबखाने । दोय पक्षको मासप्रमाने ॥ दोयमासको ऋतुसुनु भूपा । तीन ऋतुनको अयन अनूपा ॥ दोय अयन लहिकै नृप पूजे । बर्ष गिरा यह सबकोउ कूजे ॥ मास बिदित मानुषको जो-

ई । सो पित्रनको निशिदिन होई ॥ कृष्ण पक्षसों दिन बिस्तारा । शुक्लपक्षसों राति अपारा ॥ मानुष वर्ष प्रमाण कृपाला । देवन को निशि दिवस बिशाला ॥ उत्तरायण दिन अघ तमघाती । दक्षिणायन जो सो शुभराती ॥ यहि बिधि जो नृप देव बरीसा । ता दशगुणमनु निशिदिन दीसा ॥ निशिदिनदशगुण पक्ष कहावै । लहि दशपक्ष मास मनुपावै ॥ द्वादश मासलहेऋतु होई । लहि ऋतु दोइ अयन मनु कोई ॥ दोय अयन लहि पूरित होई । मनुको बर्ष कहै सब कोई ॥ देव बर्ष बर चारिहजारू । सतयुग को बरभोग बिहारू ॥दोहा॥ चारि चारि शतसंधि दै भूपतिकरो बिचार । चारि सहस्र अरु आठ शत सतयुगको सञ्चार ॥ चौपाई ॥ बर्ष हजार तीन परमाना । त्रेतायुगको भोग विधाना ॥ तीन तीन शत संधि बिचारे । तीन सहस्र षटशत अधिकारे ॥ द्वापरदोय हजारबरीसा । भोग भोगवत सुनि अवनीसा ॥ द्वैद्वै शत दे संधिसमेता । दोयहजार चारिशत एता ॥ कलियुग बर्ष हजार विराजे । शतशत बर्ष संधि शुभ साजै ॥ एकहजार दोयशतमानो । द्वादशसहस बर्ष सबजानो ॥ ये युगचारि चौकड़ी नामी । ताइकहत्तर के मनुस्वामी ॥ सहस चौकड़ी युग तेहि माहीं । चौदह मनुगण भोगिनशाहीं ॥ सो कल्पान्त कहत सब लोका । बीते बिधिको दिवस अशोका ॥ बीतगये दिन सन्ध्याजोवै । तब बेधा निद्रित नृपहोवै ॥ तब कछु लखि ईश्वरकी आशैं । द्वादश आदित प्रचण्ड प्रकाशैं ॥ भस्महोहिं चर अचर जहांते । सुरनआदि सब कहे कहांते ॥ बिबिध बिधान बिधीसों बगरे । लीन होहिं ते बिधिमें सगरे ॥ होहिं स्वतेज भस्म रचिजेऊ । लीनहोहिं बिधिमें सब तेऊ ॥ पसरे पूर पयोधिपसारा । लहि ईश्वर इच्छा अनुसारा ॥ शयनकराहिं तब सुचित बिधाता । सकलपसार धारि निजगाता ॥ सहस चौकड़ी के परमाना । बीते निशितब सुनहु सुजाना ॥

दोहा ॥ जागि बिरंचि बिचार करि बिरचैं बिश्व अखेद । वाही क्रम वेई सकल प्रजाप्रजापति वेद ॥ यथा दुकान समेटिसब सोवै बनिकसुजान । भोर पसारै जागिसब सोई वस्तुनआन ॥
चौपाई ॥ बैशम्पानि कहा सुनुभूपा । बैवस्वतको जन्म अनूपा ॥ रबि कश्यपके तनय सोहाये । संज्ञानाम तिया तिनपाये ॥ बिश्वकर्माकी तनया सोई । रबिके तेज दुखितसोहोई ॥ नीटनीट सो द्वै सुतजाई । वैवस्वत अरु यमसुखदाई ॥ दुहिता एकसरस अभिरामा । कहत जाहि जग यमुनानामा ॥ फिर न सकी सहि तेज अमाना । तब संज्ञा हिय करिअनुमाना ॥ निजछायाकहँ तियते कीन्हीं । निज अनुरूप ताहि लखिलीन्हीं ॥ कहेसि रहहुतम गृहमें बाला । बालक तीनकरहु प्रतिपाला ॥ लखैं न पावैं रबि यहभेदा । इमिकहि पितुघर गई अखेदा ॥ बिश्वकर्मा तेहि लखिरिस कीन्हीं । निदरि सिखापन बहुबिधि दीन्हीं ॥ सो सुनि संज्ञा फिरी लजाई । भई अश्विनीरूप बनाई ॥ उत्तरदिशा कुरू यकदेशा । तहां जाइ बिहरैं तिहिभेशा ॥ छायारूप भई रबि घरणी । सो जायेसि द्वै सुत बरबरणी ॥ जेठेमनु सावर्णि बिलासी । दूजे शनिशुभ सुखमा रासी ॥ निज सुत मैं माया अधिकारी । छायाकरैस्वगुण अनुसारी ॥ सो प्रभावसब यमलखिपावा । मारनको निज चरणउठावा ॥ तब तेइँशाप दीन्ह रिसिराती । तेरोचरण गलैउतपाती ॥ दोहा ॥ सो सुनि डरि यमसूरसों कही कथासब जाइ । जननी दीन्हों शाप सो दीजै पिता बराइ ॥ चौपाई ॥ सो सुनिकहा सूरगुणज्ञाता । जननी शाप मिटिहि नहिं ताता ॥ यह पग गलि दूसरपगहोइहि । तो मनकोसब संशयगोइहि ॥ तासु बोधकरि तियढिग आये । बूझनलगे भेद मनभाये ॥ कहै न भेद सूर तब तेखे । तब धरिध्यान बिधानानिरेखे ॥ कचगहि शाप न चहे रिसाई । तब तेइँ सब वृत्तान्त बताई ॥ सोसुनि बिश्वकर्मा पै आये ।

लखिअतिनी हिय कोपबसाये ॥ रबिहि पेखिबिश्वकर्मा डरपे। अर्घ्य पदारथ बहुबिधि अरपे ॥ रबिसों बिश्वकर्मा करजोरी। कह्यो न संज्ञाकी कछु खोरी ॥ तुवप्रताप अति उग्र गोसाईं। सहि न सकै नैनूकी नाईं ॥ जौं दिनेश प्रभु देहु निदेशू। तेज सुधारिकरौं शुभभेशू ॥ तब रबि तेहि अनुशासन दीन्हा। तेजछोलितेइ तनु समकीन्हा ॥ मुखतेतेज पुंजभयन्यारे। तेद्वादश आदित बपुधारे ॥ मित्रबरुण भग त्वष्टाधाता। पूषाइन्द्रबरुण सुनुताता ॥ बिवस्वानअरु बिष्णु सुलेखे। ये द्वादश आदित बपुभेखे ॥ और अंगते तेज निकारे। बिष्णुचक्र शुचितासु सुधारे ॥ तब रबिआपु अश्वबपुधारी। गये तहां जहँ तियशुभ चारी ॥ सूंघेजाइ सुखदमुख तासू। रतिचेष्टित भा बीर्य खलासू ॥ दोहा ॥ घ्राण कियो सो बीर्यतेइँ भये दोयसुत तासु। नाशत्यप्रथम अरुदस्रजे सुरबइद्य गुणरासु ॥ चौपाई ॥ ते फिरिनिज निज शुचितनधारी। बिहरैंसुचित चित्तशुभचारी ॥ बैवस्वत भे मनु अधिकारी। पितृअधिप यमलोकप भारी ॥ मनुसावर्णि भविष्यनरेशा। तपैंमेरुपै तप शुभभेशा ॥ शनिभे ग्रहभाषत सबकोऊ। सुरबइद्य अश्विनीसुत दोऊ ॥ यमुनाभई नदी बरपावन। ये रबिकेसुत सुता सुहावन ॥ रबिसुत बैवस्वतमनु भूपा। पालकलोक नीति अनुरूपा ॥ लह्यो न सुत तिन बहु दिनबीते। करनलगे मखपुत्र पिरीते ॥ मित्रबरुणकहँ देहिं सुआहुति। ताते कढ़ी सुता शुभदा द्युति ॥ सो वह इलानाम सुखदाई। मित्र बरुणसों बूझेसिजाई ॥ ईश मोहिंजो देहु निदेशा। सो मैं करौं रहौं तेहिदेशा ॥ तब तिनकहा नृपति पहँ जाहू। होहुसुद्युम्न पुत्रके लाहू ॥ चली बहुरितब मनुनृप पाहीं। रमे इला सों बुधमगमाहीं ॥ सुतपुरूरवा तहां परगटे। सरस तेजसों लसे अरगटे ॥ तदनुइला पूरुषतनुधारी। नामसुद्युम्न महीतल चारी ॥ सुत सह बैवस्वत पहँ आई। दियो सकल

वृत्तान्त सुनाई ॥ मनुके छींकतभे इक्ष्वाकू । प्रकट नासिका ते शुभशाकू ॥ मनुकी तिया आठ सुत जाई । नाभग धृष्ठ सर्याति नृपराई ॥ दोहा ॥ अरु निरिख्य कहि प्रांशुफिरि कहिये नागादिष्ट । भूप कुरुष सुवृषध्रये पालक प्रजासुदिष्ट ॥ चौपाई ॥ भे सुद्युम्न के सुवन सोहाये । उत्कल अरु बिनताश्व गनाये ॥ उतकल नृप उत्तर दिशि पाये । गयलहि पूरुबगया सोहाये ॥ बिनताश्वहि पश्चिम दिशि दीन्हा । देश यथामति सोतिनली-न्हा ॥ प्रतिष्ठानजो देश सुराजा । सो सुद्युम्नकहँ दीन्हेंउराजा ॥ जो अब रूसी प्रकट कहावें । तीरथपति ढिग महिमा पावें ॥ दंड आदि सुततीनि सोहाये । प्रकटे फिरि सुद्युम्न के जाये ॥ जिन दंडक बन रचे प्रबीना । पावनपरमापूर अहीना ॥ इस्त्री बपुमें बुधसों जाये । जो पुरूरवा सुतगुणवाये ॥ प्रतिष्ठान को नृप तेहि करिके । गये सुद्युम्न स्वर्गमुद भरिके ॥ भेनाभाग त-नय बलवाना । अंबरीष भागवतबखाना ॥ धृष्ट पुत्र धर्ष्टकरण-धीरा । सुत नरिक्ष्यकेसका सुबीरा ॥ भे करूषके तनयसयाने । ते कारुष नामा गुणगाने ॥ भे नाभागादिष्टके बारा । ते स्वकर्म कृत के अनुसारा ॥ लहि बइश्यता फिरि बरमांगी । लहें द्विजत्व कर्म अनुरागी ॥ भये वृषध्रप्रांशु के बालक । लहे शापते गुरु गौघालक ॥ प्रांशुतनयभे भूतलभर्त्ता । नृपसर्यातिदुवनदल दर्त्ता ॥ भे सर्याति तनय बलधामा । नृप आनर्त नाम अभि-रामा ॥ कन्या एक सुकन्या नामी । भे ऋषि च्यवन तासुके स्वामी ॥ भे आनर्त तनयबल भारी । रेवा नृपबर भूमिबिहारी ॥ रेवतके सुतरैवतलायक । कुशस्थलीके पति सुखदायक ॥ दोहा ॥ रेवतके सुत औरहैं शतपरमित अभिराम । तिनमें रैवतहैं बड़े नीति निपुण गुणधाम ॥ रैवतके कन्याभई तासु रेवती नाम । लै ताको बिधि पै गये रैवतसुमिरत राम ॥ चौपाई ॥ गगनसुनत बिधिको लखि ठाढ़े । देखिमुहूर्त रहे मुद बाढ़े ॥ फिरि बूझेउ

विधि सों चितचाही । ईशदेउँकन्या यह काही ॥ विधि हँसि कहा जाय जगदेखो । बलरामे तनया दे लेखो ॥ आइ लख्यो निजुपुरी सुधामी । सोऊै रही द्वारका नामी ॥ औरै युग जन औरैदेख्यो । ईश्वरकी महिमा अवरेख्यो ॥ दैबलरामहि सुता सोहाई । बैठे आपु मेरुपैजाई ॥ अबलों रैवत तहँ सुनु भूपा । परमतपस्या करैं अनूपा ॥ बैवस्वतके सुवनसलोने । प्रकटे जे इक्ष्वाकु अयोने ॥ मध्य देशपति तिनकहँ कीन्हें । गुरु वशिष्ठ को शासन लीन्हें ॥ ताके शत सुत भये सोहाये । तामें बड़े बिकुक्षि गनाये ॥ तासु अयोध दूसरोनामा । तिनयह रच्यो अयोध्याग्रामा ॥ भे बिकुक्षके तनयसयाने । नृपककुत्स्थ जे बिश्व बखाने ॥ चढ़े ककुद जे इन्द्र वृषभके । नाम ककुत्स्थ लह्यो मुख सबके ॥ असुरन सों बरसंगर कीन्हा । मारितिन्हैं दुर्लभ जयलीन्हा ॥ ताके सुवन अनेन अमाना । सुत अनेनके पृथु बलवाना ॥ तनय आइ पृथुके धनुधारी । आइ तनय यवनाश्व बिचारी ॥ दोहा ॥ भयेतनय यवनाश्वके नृपश्रावस्तसुजान । प्रकटे सुत श्रावस्त के नृपवृहदाश्व अमान ॥ चौपाई ॥ भे वृहदाश्व तनय गुणज्ञाता । नृपकुवलाश्व महीतल त्राता ॥ धुन्धमारभो नाम बिख्याता । तासुधुन्धको किये निपाता ॥ सुनि बोले जनमेजयऐसे । कोहो धुन्ध बध्यो तेहिकैसे ॥ बैशम्पानि कहा सुनुभूपा । कहो आदिसों कथा अनूपा ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ दै कुवलाश्वहि राज्य बिलासा । नृपवृहदाश्व करनवनबासा ॥ चले निरायुध ह्वै तिमिआई । मुनिउतंक निजशोच सुनाई ॥ भूपतिमम आश्रमके धोरे । भूमिबालुका मैं चहुँओरे ॥ तहँमधुसुत दै अतितनचोरे । धुन्धनाम यक रहै अजोरे ॥ संवत सरके अंत कठोरा । छोड़े श्वास बायु अति घोरा ॥ धूरिधूम सों धुन्धुरिमाचै । हालै भूमि वृक्षजनुनाचै ॥ बरषै आगि अमोघअँगारा । तामधि तपत बालुकाछारा ॥ सातदिवसतक

प्रलय पसारै । प्रतिसंबतनाहिं कबहुँ बिसारै ॥ ताहि मारि नृप
काननजाहू । होइ तुम्हैं बरतप फललाहू ॥ नृप कुबलाश्वहि
दीन निदेशु । मारहु शठहि जाइ मुनिदेशु ॥ नृपतिगये बनसो
मुनि साथा । चल्यो बीरलैशरधनु हाथा ॥ शतसुत रहे तिन्हैं
सँगलीन्हें । धुन्धनाशकोपनमन कीन्हें ॥ दोहा ॥ तममें नृपकु-
बलाश्वके बिष्णुतेज तहिकाल । प्रबिश्यो आइ अमोघ जो
दैयतकुलको काल ॥ चौपाई ॥ नृपतेहि तहां अदृश्य निरेखी ।
आज्ञा दियो सुतनतन देखी ॥ लहि निदेश ते हेरनलागे । कै
सरोष अति रिससों पागे ॥ पश्चिम दिशिसो कढ़ा अयानु ।
मुखते काढ़ि कराल कृशानु ॥ तिनमें सुत सतानबे जारेसि ।
फिरिजलको परबाह पसारेसि ॥ तब नृप करिअतिकोप नि-
हारा । पानगये करिबारि पसारा ॥ अग्नि बर्षि जल शीतल
कीन्हा । धुन्ध दैत्यको बध तब कीन्हा ॥ धुन्धनाशलखि सुर
गण हरषे । सुमनसमूह भूपपै बरषे ॥ धुंधमारयह नाम अ-
नूपा । भोकुबलाश्वकेरइसि भूपा ॥ जै कुबलाश्व तनयबलपूरे ।
शतमें तीनि बचेरहिरूरे ॥ है दृढ़ाश्व जेठे सुत तिनमें । तासुत
भे हरयश्व सुदिनमें ॥ तासुतभे निकुम्भ धनुधारी । तासुतसं-
हताश्व बलभारी ॥ द्वैसुतसंहताश्वके जाये । अकृशाश्वकृशा-
श्व सोहाये ॥ अकृशाश्वकेसुत जगजेता । भे प्रशेन नृपनीति
निकेता ॥ तासुतभे यवनाश्व यशीले । मांधाता सुततासुलसी-
ले ॥ द्वैसुत मांधाताकेताता । पुरूकुत्समुचुकुंद सुदाता ॥ पुरू-
कुत्सकेसुत बिख्याता । भे त्रैदस्युगुणी गुणज्ञाता ॥ दोहा ॥ ताके
सुत शंभूभये तासु सुधन्वा पूत । नाम त्रिधन्वातासुसुतधनुधा-
री मजबूत ॥ चौपाई ॥ तनयत्रिधन्वाके सुख रासी । भेत्रैज्यारुण
भूमि बिलासी ॥ भयो तासुसुत सुनु प्रियबादी । नामसत्यव्रत
अति उन्मादी ॥ पाणिग्रहण समयमो तेही । हरसिप्रजाकीति-
या सनेही ॥ सो सुनि त्रैज्यारुण अतिकोपी । तासों कह्योजानि

पथ लोपी ॥ तू चण्डालकर्म अधिकारी। इमिकहि दीन्हेंउ ता-
हि निकारी ॥ गुरु बशिष्ठ नहिं कीन्ह निवारण। जानिदंडअप-
राध सुधारण ॥ नृप त्रेज्यारुण मुनि बृतधारी। बसेजाइ बनह्वै
बनचारी ॥ पुरजनपरिजनपरजाजेते। गुरु बशिष्ठ पालहिं सब
तेते ॥ त्रेज्यारुणको तनय सदोषा। गुरुबशिष्ठपै दुइ बिधिरो-
षा ॥ बारहबर्ष अबर्षण भयऊ। ताके पाप मोदसबगयऊ ॥
लखि सब सुतको मरण उपाधी। मध्यतनयके गरगुण बाधी ॥
कौशिककी तिय बेचनलागी। सोलखि वहनृपतनय सुभागी ॥
ऋषिपत्नी कहँ धीरज दीन्हें। ऋषिसुत बंधन मोचनकीन्हें ॥
मृगगण मारि मांसपहुंचावैं। कौशिकसों चाहैं चितचावैं ॥ एक
दिना मृगपायेसि नाहीं। गुरसुरभी तिमि कीन्हेंसि ताही ॥ सो
सुनि गुरु बशिष्ठ अतिकोपे। तासु त्रिशंकुनाम आरोपे ॥ दोहा ॥
पिता अवज्ञा प्रथमकहिगो बध करिबो दोय। तीजेगो भक्षण
कियो इमि त्रिशंकुभो सोय ॥ चौपाई ॥ इतने में कौशिक मुनि
आये। समाचार सुनि अति सुखपाये ॥ कहामांगु बरनृपयहि
ठाऊं। कहेसिस्वदेह स्वर्गमैंजाऊं ॥ कौशिकताकहँ राजसुधारा।
कियअभिषेक बजाइ नगारा ॥ मुनि तेहि यज्ञकरावन लागे।
हियबशिष्ठ के अमरषपागे ॥ ऋषिगण कोऊ तहां न आये।
सुर मखभागन लीन्ह सुभाये ॥ ऋषिकर जानि भूपकर कर्म्मू।
जानि रहे सब जुदे सधर्म्मू ॥ तब कौशिक मुनिकोप बढ़ावा।
भूपहि स्वर्ग सदेह पठावा ॥ चला बशिष्ठहिगर्ब सुनाई। अध
गिरु कहा बशिष्ठ रिसाई ॥ गिरत देखि तेहि गगनमँझारे। उ-
तरहु कौशिक बचनउचारे ॥ रहात्रिशंकुलटकि नभकैसे। बिबि
चुम्बक बिच लोहा जैसे ॥ भे त्रिशंकु के सुत भूभर्ता। नृपहरि-
चन्द्र दुवन दलदर्ता ॥ तासुत रोहित अरिमदगारी। हरितता-
सुसुत हित हियहारी ॥ तासुत चंचु चंचु सुतदोई। बिजयसु-
देव कहत सबकोई ॥ भये सुरुरुक बिजय सुतबीरा। तासुत

वृकसबगुणन गँभीरा ॥ वृकके पुत्र बाहु बलवाना । तेन लखे नृपनीति निधाना ॥ नृपति बाहुपै अरिचढ़ि आये । तिन सों बाहु पराजय पाये ॥ दोहा ॥ बाहुजाय बनमें बसे औरबस ऋषि के पास । तहांभये सुत सगर नृप जाको सुयशप्रकास ॥ दोर-दण्ड कोदण्ड सों धरि कोदण्ड कराल । सगर रोष परचण्ड करि जीत्यो तिन्हैं उताल ॥

इतिभाषायांभारतान्तर्गतेहरिबंशदर्पणोनामचतुर्थोऽध्यायः४ ॥

जनमेजयउवाच ॥ चौपाई ॥ केहि औगुण नृप बाहुपराजै । लहे कहो मुनि संशय भाजै ॥ सगर नाम ताके सुत केरा । भोकाहे करि कहो निबेरा ॥ कहा मुनीश सुनहु परबीना । बाहुभूपहेब्य-सन अधीना ॥ जुआ शिकार खेलि दिन खोये । कैयुवतिनके सँग परि सोये ॥ असती निर्गुण हास्यप्रबीने । तिन्हैं सभासद करि हित चीन्हे ॥ मंत्री सुभट गुणी गिनतीके । तिन्हैं न कीन्हों प्रियसम जीके ॥ सो सुनि अरिजब गाजन लागे । लरि न सकेतबयहि गुणभागे ॥ काल जंघसेकहैं हयआदी । लिये राजबसिये उनमादी ॥ सगर मातुकी सौति अयानी । गर्भ समयगर दीन्हेंसि जानी ॥ गरसों भयो न कछूअकाजा । गरसह भयो पुत्र सुनुराजा ॥ ताते सगर नाम मुनि कीन्हा । मंत्र दिब्य अस्त्रनकरदीन्हा ॥ तिनअस्त्रन नृप रिपुदलजीता । पालेउ प्रजापुनीत सुनीता ॥ सगर नृपतिकी तियापुनीती । रहींदोयशुभ चरितसुनीती ॥ औरबस ऋषि तिनकहँबर दीन्हा । दैइमिकहबरलेहुप्रबीना ॥ साठिहजारपुत्रएकबारा । होहिंएकके एक कुमारा ॥ जेठीतियै एकसुत मांगी । छोटी साठिसहस अनु-रागी ॥ भई गुर्बिणी दोऊ नारी । ईश्वर की माया अधिकारी ॥ दोहा ॥ कढ्यो गर्भ तिय एक के तूंबाके आकार । भरे पुत्र तेहि वीज सम तिलमित साठिहजार ॥ चौपाई ॥ घृतभरि कुम्भ भूप धरवाये । साठिहजारमोद सोंछाये ॥ एक एक सुत तिनमें की-

न्हा । एक एक प्रति धाइनदीन्हा ॥ समयपाय तेहि भये सया-
ने । अति बलवान जगतमें जाने ॥ जेठी तियके सुतशुभ कर-
णी । भेअसमंजस पालक धरणी ॥ भूपसगरजग जीतन चोपे ।
अश्वमेध बर मख आरोपे ॥ साठि हजार पुत्र सँगलागी ।
चले अश्व रक्षण अनुरागी ॥ अग्नि कोणमें अश्व चोराई ।
बाँधो इन्द्र कपिल ढिग जाई ॥ अश्व अदृश्य भये नृप बारे ।
मही खोदिसागर करिडारे ॥ जाइ पताल कपिलकहंदेखे ।
अश्व निकटलखिअतिशयतेखे ॥ तबतिनतहां कीन्हउत्पाता ।
कपिल कोपकरि तिन्हैंनिपाता ॥ सगर जाइ बहु अस्तुति की-
न्हा । कपिल ताहिशुभ आशिषदीन्हा ॥ सगर सुतनके खँदेब-
नाये । ताते सागरनाम कहाये ॥ सगरसुवन असमंजस नामी ।
ते भे भूरि भूमितल स्वामी ॥ असमंजसके सुवनमहीपा । अंशु-
मानभे पालक दीपा ॥ तासुत भूप दिलीपसुसाजा । तासुतभ-
ये भगीरथ राजा ॥ तासु सुवन श्रुति स्मृति पथगामी । श्रुति
के सुत नाभाग सुधामी ॥ भेनाभाग तनय बरबीरा । अम्बरी-
ष रणकर्कशधीरा ॥ तासुतसिन्धुदीप दलबाहक । तासुतअयु-
ताजित गुणगाहक ॥ दोहा ॥ अयुताजितके सुवनशुचि भे रुतब-
रणसुजान । तासुतआर्तापर्णिनृपति शीक्षकधनुषबिधान ॥ ता
सुतभयेसुदासनृपतासुतकल्मषपाद । दुतियनामहैंमित्रसहजो
पूरकअह्लाद ॥ चौपाई ॥ तासुतसर्बकर्मजगजाने । तासुतनय
अनरण्यबखाने ॥ ताकेतनयनिध्वनयगामी । ताकेसुतअनमि-
त्रसुनामी ॥ ताकेसुतदुलिदुह गुणग्रामा । ताकेसुतदिलीप छ-
बिधामा ॥ भेदिलीपसुतरघुनरनाहू । रघुकेसुतअजदीरघबाहू ॥
अजकेसुतदशरथबड़भागी । तासुतरामस्वजनअनुरागी ॥ श्री
श्रीपति सियराम सुस्वामी । बन्दौंन्यामकअंतर्यामी ॥ भरतल-
क्षमण सरससोहाये । अरुशत्रुघ्नशत्रुहनगाये ॥ रामअनुजयेप-
रमपियारे । सुन्दरनृपदशरथकेबारे ॥ रामचन्द्रकेसुतधनुधारी ।

भेकुशलवजग आनँदकारी ॥ कुशकेसुवनअतिथिश्रुतिलहिये। तासुत निषद सुने मुद गहिये ॥ तनय निषदकेनल नयनागर। नलके सुत नभ सबगुण आगर ॥ पुण्डरीक नभसुतसुततासू। भये क्षेमधन्वा सुखरासू ॥ तासुतदेवानीम प्रबीना । तासुत अ-हीन गुणन अहीना ॥ तासुतभये सुधन्वागाये । तासुत नलनय निपुण कहाये ॥ नलके सुवन उबस्थ प्रतापी । तासुत बज्रनाभ दलदापी ॥ तासुत शंख पुष्पसुतताके । तासुत अर्थसिद्धिघर भाके ॥ दोहा ॥ भयेसुदर्शन तासुसुत अग्निबर्ण सुततासु। अ-ग्निबर्ण के शीघ्रसुत मरूतनयभे जासु ॥ भये मरूके तनयनृप बिश्रुतवतमति धाम । शुभदबंश बरण्यो सुजेहि प्रकटे राजा-राम ॥ सूर्य्यबंशके ये कहे जे जेपुरुष प्रधान । इनते भयोपसार सो को कहि सकै सुजान ॥ श्राद्ध देव बर देव हैं सूर्य्य धाम के धाम । तासुबंश बर्णन पढ़ै सो इतउत अभिराम ॥

इतिहरिबंशदर्पणोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

चौपाई ॥ सूरजश्राद्धदेव मुनिकैसे । को हैं पितर कहोसबतैसे ॥ जासुनामलै पिण्डा देहीं । प्रेतकर्म गतिते किमिलेहीं ॥ तेहिते इतरपितर कोउ होई । कहो प्रकट करि मुनिबर सोई ॥ बिधि-वत श्राद्ध किये जे तोषैं । श्राद्ध करै तेहि बहुबिधि पोषैं ॥ सुनैं वेद बिद सों यह बानी । पितरहि पूजहिं सुर शुभ जानी ॥ सो सब कहो मुनीश बुझाई । सुनि तब कहा हर्षि मुनिराई ॥ पूछे-उप्रश्न भूप तुम सोई । नृपति युधिष्ठिर आनँद भोई ॥ भीष्म-पितामह सोइमि बूझे । जाकेबाण बीरबहुजूझे ॥ सोसुनिबोले भीषमतातैं । सुनहु भूप यक दिनकी बातैं ॥ हमहे करत श्राद्ध सुखदाता । भूत काढ़ि हाथ मम ताता ॥ मांगन लगे पितरनि-जपानी । सो प्रकारहौं अनुचित जानी ॥ कुशपै धरयों पिण्ड क्रमही सों । सोलखि ह्वै प्रसन्न पितु जीसों ॥ कह्यो सुवन हम कीन्ह परीक्षा । तुम बिधि सों करिहौ जगशीक्षा ॥ चले कुपथ

जो भूतल स्वामी। तेहिमग चलै प्रजा अनुगामी॥ ताते धर्म शास्त्र विधि लोपै। सो अनुचित लखि ईश्वर कोपै॥ हौ तुम निपुणनीति अनुसारी। अविहित विहित विधान विचारी॥ मृत्युकहतजेहि जगत पुकारे। सो सुतरैहैं सुवश तिहारे॥ दै आशिष इमि सहित सनेहू। कह्यो मांगि सुत बरतुम लेहू॥ इहै प्रश्न तब भूप तुम्हारा। हम बूझा तिन कहि निरधारा॥ दोहा॥ आदि देवके सुवन हैं पितर प्रसिद्धउ-दार। विधिवत अर्चन हारको सुखसंपति दातार॥ गोत्रनाम लै जासुजन करत पिण्डको दान। सो जेहि गतिते ताहितित पोषतरहत सुजान॥ प्रश्नोत्तर संक्षेपसों बरणि कहा हमतात। कहिहैंसब विस्तार सों मार्कण्डे अवदात॥ चौपाई॥यहकहि भे पितु अन्तर्द्धाना। हम तिनसों सब कहा विधाना॥ मार्कंडेय कहासुनु भूपा। पितरप्रभाव प्रकार अनूपा॥ मेरु शिखरशुचि निरखिसुहावन। हमहे करत तपस्यापावन॥ तहां बिमानचा-रु आसीना। आये सनत्कुमार प्रबीना॥ लसैं बिमान मध्य तेकैसे। ज्वलित अग्निमें सुबरण जैसे॥ तबहौं करि दंडवत प्रणामा। अर्घ्यपाद्यदै बूझेउँ नामा॥ तब तिन आपन नाम उचारा। सुनु मुनि हैं हम सनत्कुमारा॥ तप बिधि बिशद सु-धारणताई। निरखिभये हमतुमहिं लखाई॥ इंछितहोय बूझि सो लेहू। तब हम बूझा यह संदेहू॥ पितृनको प्रभावबिख्या-ता। जो तुम बूझेउ नृपगुणज्ञाता॥ सनत्कुमार कहातबजैसे। भीषम सुनो कहौं सो तैसे॥ ब्रह्माआदि देवकहँ जाये। निज आराधन हित मनभाये॥ समय पाइते बिधिहि भुलाये। लहि आतम सुखमें मनलाये॥ शाप दियो बिधि निरखि भुलाने। शून्यहृदय तुम होहु अयाने॥ ते निजहृदय शून्य लखिजाई। विधिसों कियो बिनय गुणगाई॥ बिधि हँसिकहा लहे कृत लाहू। अब तुम निज सुतपै चलिजाहू॥ दोहा॥ वैजो कहैं बि-

चारिसो प्राश्चितकरो अखेद । होइहि तब चैतन्यचित मिटि-हिग्लानि निरवेद ॥ चौपाई ॥ सो सुनि ते निज सुतपहँ आये। तिनसों सब वृत्तान्त सुनाये ॥ सुनि ते तिन्हैं उपाय बताये। सो करिते बहुबिधि सुखपाये ॥ तब सुतकहा पितासों बानी। जावपुत्र अब घरसुखमानी ॥ सो सुनिआदि देव अनखाये। करिबिवादब्रह्मापहँ आये ॥ बिधिसे कह्यो कहा मुनिबेधा । सत्य कह्यो तुम परमसुमेधा ॥ देहजनक तुम वै तुवबारे । ज्ञान दाबि वै पितरतुम्हारे ॥ तुमदोउ जने पितर अरुदेवा । हौअन्योन्य पिता सुतभेवा ॥ आदिदेवतव हियमुदराखे । सुत पहँ आइ पितरकहिभाखे ॥ प्रथमपूजितुम कहँ सबलोगू । पाइहि मुद मंगलमय भोगू ॥ पीछे पूजन करिहि हमारा । सुर अरु असुर सकल संसारा ॥ तबते सुनोगिरीश बिहारे । भयेपितर परसिद्ध अगारे ॥ पितर निमित्त कर्म्म जो करहीं। पितरताहि मुद मंगलभरहीं ॥ पितरतृतकै चंदहि पोषैं । चंद औषधीशाइयहि तोषैं ॥ सनत्कुमार देवकी बानी । सुनि फिरि कीनप्रश्न अनुमानी ॥ किते पितरगण हैं सो कहिये । बसत लोक केहि केहि मुद गहिये ॥ सनत्कुमार कहो सो जानो । हैं गणसात पितरअनुमानो ॥ दोहा ॥ मूर्त्तिवंत गणचारि हैं हैं अमूर्त्तिगण तीन । लसत सात इमि पितरगण सुनु मुनि महतप्रबीन ॥ चौपाई ॥ तिनके लोकबंश सब भाखैं । तुमसों मुनि कछु गोइ न राखैं ॥ तिनमें तीनिअमूर्त्तिगनाये । भूपतासु तिननामबताये ॥ प्रथम कहे वैराजसुनामी । अग्निष्वाता अन्तर्यामी ॥ तृतिय बर्हिषद कहें उदारैं । लोक सनातन तहां बिहारैं ॥ ये बिराज के मानस जाये । मनमय शुचिशुभ तन जे पाये ॥ इन्हैं देव अरचैं करिआदर । और बिधान तासुसुनु सादर॥ पितर बिदित वैराजकहाये। सुता मानसिकते उपजाये ॥ मैनानामतासु करिलीन्हें । सो हिमवन्त नगेशहि दीन्हें ॥ सुतमैनाक तासु

शुभदेशा । क्रौंच तासुसुत उन्नत भेशा ॥ तीनिसुतामैना की जाई । ते दुस्तरतप कर्त्ता गाई ॥ जेठी सुता अपर्णा चाहीं । पर्ण अहार कीन्ह जिन नाहीं ॥ दुतियएक पर्णाशनि लीन्हा । एक पर्ण तिनभोजनकीन्हा ॥ तृतियएक पाटलाकहाई । पाटल पुष्प एक तिनखाई ॥ भई अपर्णा शिव संयोगिनि । दुतियभ-ईदेवल संभोगिनि ॥ एकपाटला नगपदुलारी । जैगीषव्यकीन तेहिनारी ॥ अग्निष्वाता पितरसुचरिता । तनयातासु अच्छि-दा सरिता ॥ कहत अच्छिदा सरिता जासों । भयो अछोद सरोवरतासों ॥ सो सरिता बिनु पितरहि देखे । ब्याकुलतासों निज हियभेखे ॥ दोहा ॥ बिनुदेखेनिज पितरअरु बिनजानेगुण नाम । लज्जितह्वै अति शोचकरिभई अच्छिदाछाम ॥ चौपाई ॥ चली स्वर्ग तब पितरनिरेखन । देखिपरे तहँ पितरअभेषन ॥ तहां अमावसुको तेइँ देखा । सहित अद्रिकांति अशुभेखा ॥ तासों कहेसि सुनहु करिछोहू । तुमदोउ मातु पिता मम होहू ॥ आपनपितरताहि बिन चीन्हें । औरहिदेखि पितरकरिलीन्हें ॥ निज गरिमाहित तेहि अब सोई । गिरी तहांते तपबलखोई ॥ देखेसि तब शुचि चढ़ेबिमाना । तेजपुंज त्रसरेणु प्रमाना ॥ त्राहि त्राहिलखि तिन्हें पुकारेसि । तासुकृपा लहि थिरता धारे-सि ॥ ते बोले हम पितर तुम्हारे । तुम औरहि कहिपितर उ-चारे ॥ योग भ्रष्टह्वैताते ऐसे । गिरिहु भूमि कोउ रोकै कैसे ॥ सुर अरु असुर आदि सबलोगू । अवशिभोगवै निज कृतभो-गू ॥ बिधि बिरच्यो जो बिहित बिधाना । बिबिध भांति सों बि-धि बलवाना ॥ ताते कहो भविष्य तुम्हारा । जो ईश्वर इच्छा अनुसारा ॥ ह्वै है भूप अमावसु जाई । द्वापरमें निजकृतगति पाई ॥ तासु अद्रिका होइहिनारी । पतिब्रत पूरित पतिहि पि-यारी ॥ पितर ब्यतिक्रम फल तुम पाई । मत्स्ययोनि जाह्वैहो जाई ॥ लहि पितु मातु इन्हैं सुखभैहौ । अब ईछेहुतब परछत

पैहौ ॥ दोहा ॥ पाराशर सों सुवन तब उतपति करिहौएक। एक वेद सों चारिजे करिहैं सहित बिबेक ॥ चौपाई ॥ फिरि लहिनृप संतन पति प्यारे। उतपति करिहौ द्वै शुभ बारे ॥ बिदित बिचित्र बीर्य्य बलवाना। अरु चित्रांगद चारु सुजाना॥ तबवह तन तजिसब सुख ओका। आइ भोगिहौ यह निज लोका॥ कह्यो पितरयह सब जैसेही। लह्यो अच्छिदासो तैसेही ॥ पितर बर्हिषद जो शुभ रासी। सो बैभ्रा जलोक के बासी॥ ते पुलस्त्यके सुवन सोहाये। मानस सुतापीवरी जाये॥ द्वापरमेंसो यह बरबरणी। होइहि व्यासपुत्रकी घरणी ॥ चारिपुत्र यक कन्या जाइहि। शुकाचार्य के मनअति भाइहि ॥ कृष्णगौर प्रभुशंभु कहै है। पुत्रयोगकी युक्ति जे गैहै ॥ कृत्वा नाम सुताशुभचारी। होइहि सोइ अनुहकी नारी ॥ तासुत ब्रह्मदन्न गुणि धरिहै। तपबल बंश वृद्धिते करिहै॥ ये अमूर्तिबर पितरबखाने। जेगणतीनि जगतमें जाने ॥ सुरगन्धर्ब असुर अरु किन्नर। अप्सरयक्ष इन्हें अरचैवर ॥ मूर्त्तिवंत गणचारि बताये। तिनके नाम सुनहुँ मनभाये॥ शुकुल अंगिरस सुस्वधाजानो। शुभद सोमपा सुनि सुखमानो ॥ कहेशुकुलगणपितरसमाने। ते बशिष्ठकेसुवन बखाने॥ दोहा ॥ दिब्यलोकतिनको महत पूजकब्राह्मणतासु। तनया ताकी मानसिक प्रकटनाम गौजासु ॥ चौपाई ॥ सो शुककी पतिनी गुणखानी। ह्वैहै सुनुमुनिबरगुरुज्ञानी॥ जे आंगिरस पितरगण कहिये। तेअंगिरस तनयश्रुति लहिये॥ ते क्षत्रिनकहँ पूज्यपुनीता। देनहार अरचक चितचीता॥ सुता यशोदा मानसताकी। तापति बिश्वमहान सुताकी ॥ सुवन दिलीप राजऋषि ताके। ऋषिन सराह्यो शुचिमख जाके॥ पितर सुस्वधा पुलह के बारे। ते नित कामग लोकबिहारे ॥ पूजहिं तिन्हैं बइश्य बिचारी। बिरजा ताकी सुता दुलारी ॥ तापति भूप नहुष नयगामी।

सुवनययाति भूमि के स्वामी ॥ बरणे पितर सोमपाजाही। हिरण्यगर्भ उपजायहुताही ॥ मानस लोक बिहारहिं सोऊ। पूजहिं ताहि शूद्रसबकोऊ ॥ मानससुतातासु अबहरिता। नाम नर्मदा पावनि सरिता॥ पुरुष कुत्सपाति अनुपम पाई। त्रसद नाम सुत तेइ उपजाई ॥ श्राद्धदेव ये ये फल दायक। ये नित्त अर्चन करिबे लायक ॥ पितर प्रभाव भूप अतिभारी। सनत्कुमार कह्यो नभचारी ॥ रहे पूर्व युगमें सुनु ताता। भरद्वाजके सुतगुण ज्ञाता ॥ योगभ्रष्ट ह्वैतेयकबारा। गिरिसुमान सरोवर पारा ॥ कछु दिनपै ते तन तजिजाई। योग कियेहे ताफलपाई ॥ दोहा ॥ ह्वै सुमनस सो भोग फल कुरुक्षेत्र मों आय। कौशिक के फिरि सुतभये बिधिगति कही न जाय ॥ चौपाई ॥ उतहूं वै कर शर धनुधारे। पितर कर्म मिसमृग बहु मारे ॥ मांसबनाय उदर भरिलेहीं। झूंठ निहोरा पितरहिं देहीं ॥ हिंसा अघ ते लहे कुयोनी। निज कृत कर्म कहावत होनी ॥ पितर प्रभाव तऊ मुनिज्ञानी। रही तिन्हैं सुधि पूर्व कहानी ॥ तातेडरपि सुधर्म सुधारे। तेहि गुणभे ब्राह्मणके बारे ॥ तब सुकर्म करिकै मनभाये। तब तजिते अनुपम पदपाये ॥ ताते करिबो उचित मुनीशा। शुभ सुकर्म शुचि बिस्वेबीशा ॥ सुनहु मुनीश सुधर्म प्रकारा। विधिसों करै अहार बिहारा ॥ याचन योगन तिन्हहिं न याचै। पाइ बिभूतिन ममता राचै ॥ शरणागत कर रक्षण धरई। मद्यमांस नहिं भक्षण करई ॥ करिअध्ययन ध्यानधरि धीरा। गतकरशोच न करै गँभीरा ॥ करै काज सो लेयबिचारी। क्रोधहि तजै शांति ब्रतधारी ॥ सदाअनालस रहैप्रवीना। होय अशक्त न काम अधीना ॥ कहिबे योग न करिबे योगू। कहै करै नहिं सो शिखिलोगू ॥ असतिन संग न बैठेकितहूं। लहै मोदसों उतहूंइतहूं ॥ सांच कहै अरु इन्द्रिनजीतै। अहंकारसों हियधर रीतै ॥ दोहा ॥ पहिले कहै बिचारिफिरि करैक-

है जो सोइ । सर्व धर्म में श्रेष्ठलखि परउपकारक होइ ॥ यह सुधर्म है योगसम जो जन साधै याहि । जो पदयोगीजनलहैं सोपद सुलभताहि ॥ बर्ष अठारहलौं नृपति यहि बिधि करि उपदेश । सनत्कुमारअदृश्य ह्वै गयेफेरिनिज देश ॥

इतिहरिवंशदर्पणो नामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

चौपाई ॥ बन्दौं सीताराम सुस्वामी । जेहि लहि भये जनक जगनामी ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ दिव्यदृष्टि तुम होहु मुनीशा । गये देव दै सुभग अशीशा ॥ तबह्वै दिव्यदृष्टि हमभूपा । कौशिक के सुत लखा अनूपा ॥ पितृब्याज जिन हिंसाकीन्हों । फिरिजे ब्राह्मणको बपु लीन्हों ॥ रहे सात ते नृपहम देखे । जन्म कर्म तिनके सब लेखे ॥ तिनमें सप्तम सरस सयाना । ब्रह्मदत्तसोइ भयो सुजाना ॥ शुक्राचार्यकी सुतासयानी । कृत्वा अनुह भूप की रानी ॥ तिनसों प्रकटभये ये ज्ञानी । ब्रह्मदत्त बकता प्रिय बानी ॥ भीष्मउवाच ॥ तिनको बंश बिभूति बिधाना । मुनिबरसों हम सुनिनृपजाना ॥ सो सब कहे युधिष्ठिरतुमसों । सुनियेसावधान ह्वैमनसों ॥ पौरवबंश प्रसिद्धबखाने । भेपुरमित्रजगतमें जाने ॥ तासुतभे बृहदिषु बरसाजा । तासुतभयेबृहद्धनुराजा ॥ तासुतबृहद्धर्मरणधीरा ॥ भयेसत्तजिततासुतबीरा ॥ भयेबिश्वजित ताकेबारे । भयेसेनजिततासुदुलारे ॥ भयेसेनजितकेसुतचारी । रुचिअरुरखतकेतुगलभारी ॥ महिस्तारअरुबत्सप्रबीना । रुचि के सुत पृथुसेन अहीना ॥ ताकेतनय पारबलवाना । तनयपार के नीपुसुजाना ॥ दोहा ॥ भयेसुवन सतनीपके नाम सबन को नीप । भूपदेश पंचालके भूषितकीन्हें दीप ॥ चौपाई ॥ जेठे के सुत समर कहाये । तीनि सुवन तिनके गुणगाये ॥ परसदश्व पारापरघालक । परकेसुतभे पृथुपुर पालक ॥ पृथुकेपुत्र सुकृत धनुधारी । तासुतभे बिभ्राज बिचारी ॥ तासुत अनुह शास्त्रबिधिचीन्हें । कृत्वासुता ताहि शुकदीन्हें ॥ तासुत ब्रह्मदत्त ह्वैजा-

ये । सप्तम कौशिक सुतजेगाये ॥ नृपविभ्राज बहुरिजगआये । ब्रह्मदत्तके सुतकैजाये ॥ विष्वक्सेन नामभो ताको । दण्डसेन प्रगट्योसुत जाको ॥ ब्रह्मदत्तको सुतयकऔरो । सर्वसेन नामी हो बौरो ॥ जाकी चारु आंखिरँगराती । फोरेसि पालितपक्षी घाती ॥ दण्डसेन को सुतबल भास्यो । होमल्लडा करण तेहि मास्यो ॥ तासु भयो उग्रायुधवारा । सतौनीप कहँ जेइँ शठमारा ॥ सोयुधि कानन में ममबानन । मारो परौ पुरुष पंचानन ॥ सुनि उग्रायुधको यह काजा । बूझो बिहँसि युधिष्ठिर राजा ॥ पूर्व जन्मको को यहपापी । केहिगुणयाहि मारेहु परतापी ॥ भीषमकहा सुनहु भूपतिवर । अजमीढ़को सुवनजबीनर ॥ दोहा ॥ तासुत भे धृतमन्त अरु तासुसत्व धृतिजानि । ताकेसुत दृढ़नेम नृप तासु सुधर्मामानि ॥ चौपाई ॥ तासुत सर्व भौमनृपजानो । सुतमहान ताके अनुमानो ॥ भयेरुकुमरथ ताकेवारा । तासुत भयो सुपार्श्व उदारा ॥ तासुत भयोसुमतिबलवाना । ताको तनय सुन्वति गुणवाना ॥ तासुपुत्र कृतवेद बिचारी । तासुतकार्त्ति भयो बलभारी ॥ सोइ उग्रायुध भयोमहीपा । जेबध कियो नीपकुल दीपा ॥ उग्रायुधको सुत सुनुताता । क्षेमनाम भो दीरघदाता ॥ तासुत भयो सुबीर सुबीरा । तासुतभयो नृपंजयबीरा ॥ बहुरथ ताको सुवन रसाला । एते पौरव वंश बिशाला ॥ उग्रायुधउनमत्त अचेतू । जाउर सागर अवगुणसेतू ॥ हतिनीपन फिरि हमहिं सँदेशू । भेजेसि धूत दूत निरदेशू ॥ राजकाज युत जीवनचाहौ । मम निदेशतोभीषम चाहौ ॥ नाम गेध काली निजमाता । देहु मोहिं तुम ममबल ज्ञाता ॥ कैसन्मुख चढ़ि करो लराई । छोड़ि ताहिकै जाहु पराई ॥ सोसुनिहों करिकोपकराला । कह्यो सजनशुभ सभटरिसाला ॥ मंत्रिन तबनृप तीनसुनावा । क्रमसों करिबोउचितबतावा ॥ सामदाम अरु भेद उपाई । पहिले करिलीजे नृपराई ॥ ताहि न जोमानै

शठ कोई। करै दण्डतब नृपनय जोई॥ दोहा॥ सो सुनिताके पास हौं दूत पठायोवृंद। तेइ समुझायो भांतिबहु एकनमान्यो मूढ़॥ चौपाई॥ तब दलसाजि गाजि चढ़िताता। कियोजाइ हौं तासु निपाता॥ मरचो तीनदिन लरि उनमादी। सर्बशस्त्रबिद सगरबबादी॥ तासुमरण सुनि अतिसुखसाजे। रहे नीपकेसुत जे भाजे॥ वृषतनाम ममपाइ निदेशू। बसिकीन्हेउपालननिज देशू॥ तासुत द्रुपदराज अधिकारी। जीतिताहि अर्जुन धनुधारी॥ ताकरदेश द्रोणकहँदीन्हा। सोयहद्रोणभाग द्वैकीन्हा॥ आधा लियो द्रोणधनुधारी। आधाद्रुपदहि दियो बिचारी॥ भूपयुधिष्ठिरमुदमयज्ञानी।फिरभीषमसोंबूझेउज्ञानी॥सर्बसेनकी फोरिसि आंखैं। केहि गुणचटक आपुसों भाखैं॥ भीषमकहा सुनहु नरनाहू। धराधर्म धर दीरघ बाहू॥ बृह्मदत्त नृपतपकर ज्ञानी। बूझहि सब जीवनकी बानी॥ चटकएक ते घरमें राखे। सहित सनेह सखाकहि भाखे॥ सो वह चरण देशांतरजावै। रात्रिआइ सबकथा सुनावै॥ बृह्मदत्तभूपति के बारे। सर्ब सेन हे परम दुलारे॥ भयो चटकके प्राणअधारा। एक चेटुवाअति सुकुमारा॥ करत कुतूहल भूप कुमारा। तासु नरमगर करक सिधारा॥ मरचो चेटुवाग्रीव दबाने। बृह्मदत्त सो सुनि पछिताने॥ आइ चटकतहँ सो गति देखी। भई मोहबशाबिकल बिशेखी॥ दोहा॥ मुर्छित ह्वै फिरि चेतसो करि रोदन परलाप। जाइ कहेसि फिरि भूप सों निज हियको सन्ताप॥ चौपाई॥ भूपति तुम नय जानन हारे। किमि तुव सुत मम सुत कहँ मारे॥ पीड़ित क्षुधित दीन शरणागत। छायमानअरु आरतभाषत॥ बहुदिनको सेवक सुखरासी। बहुदिन को निजघरको बासी॥ इनसों निर्दयपन जो करई। कुम्भीनरक अवशि सोपरई॥ इमि कहि चटकचटकई कीन्ही। नृप सुतके चखनखकरि दीन्ही॥ आंखिफोरि नभचली उड़ाई। तब तेहिं भूपतिकहि समुझाई॥

उचित दण्ड तुम दीन्हेउताही। हमप्रसन्नतुव बुधिबलचाही॥ आइ रहौ फिरिपूर्ब बिधाना। सोसुनि बोलीचटक सुजाना॥ राजनीति हम जानहिं भूपा। करैं काजताही अनुरूपा॥ कुसुत कुमित्र कुनारि कुदेशा। ज्ञानी तजतजानि कुनरेशा॥ अपकारी अरिबिनय प्रकासै। तऊ न ज्ञानवान बिश्वासै॥ रोग अगिनि ऋण अरि जेहि भाखै। बुधिबर तासु शेष नहिं राखै॥ जो अरिसों निज बढ़ती होई। तऊ न ताहि बिश्वासइ सोई॥ कोमल ह्वै अरि इमि नगिचाही। जिमिनभ बौरितरुहि लपटाही॥ अरिह्वै नमित चरणजो लागै। तौ तरुदीमककीगति जागै॥ जे बिश्वासन योग न आहीं। तिन्हैं बिश्वासैतौ अतिनाहीं॥ दोहा॥ तुव सुतको चषफोरिहम किमिरैहैं तुवपास। इमिकहि सो चेटक चतुर गहेसि अनतको बास॥ चौपाई॥ भीषम फेरि कहा जनमेजय। भूप युधिष्ठिर सों इमि मुदमय॥ कौशिक के सुतसात बताये। तिनके जन्मकर्म सबगाये॥ कृत कुत्सित करि जे सब बिगरे। पितृ प्रसाद भलीबिधि सुधरे॥ जानितिन्हैं करणी के खोटे। कौशिक तिन्हैं कियो चषवोटे॥ गार्ग्य सृष्टि ते ह्वै मन भावन। तासुगाय बनगये चरावन॥ तेहि हति रुचिसों मांस बनाये। पितरन अरचिमूढ़सो खाये॥ मुनि सों कहेनि वत्समुनि लेहू। धेनुहिं हतेसि बाघबन गेहू॥ शुद्धहृदय मुनिसों सतिमाने। कछु दिन बीते मरे अयाने॥ व्याधाभयेसहोदर जाई। तेहि अघको फलते सबपाई॥ पितर प्रभावशुद्धि मति तिनकी। भईरहीसुधि पूरबादिनकी॥ थोरेजीवमारिकै तोषैं। जाते मातु पिताकहँ पोषैं॥ तिनके मात पिता तनछोड़े। ते तब मन हिंसासों मोड़े॥ बनमें बसि तन त्यागन कीन्हे। तब फिरि जन्म मृगाकर लीन्हे॥ भये कालजर शैल बिहारी। सातौ पूर्ब वृतान्त बिचारी॥ कछु दिन मुनि वत रहि तनत्यागे। फिरि भे चक्रबाक सँग लागे॥ तितहू पूर्ब कर्मके ज्ञानी। ब्रह्म-

चर्य्य बृतधारे जानी ॥ सो तन तजिभे हंस उदारे । मानसरो-
वर सुथर बिहारे ॥ दोहा ॥ सुभग सहोदर साततें जातस्मरपर-
वीन । बृह्मचर्य्य बृतधारिहे योग युक्तिमें लीन ॥ चौपाई ॥ गये
तहां तिय सहित बिहारण । नृप बिभ्राजअरिंद बिदारण ॥ ति-
नको सुख समाज लखिनीको । लोभ्यो एकहंस शुचिजीको ॥
जो कछु तप कीन्हो यहिदीपा । तौहम ऐसे होहिं महीपा ॥ औ-
रौ द्वै बोले फल चीते । हममंत्री ह्वैहैं हित हीते ॥ रहे चारि ते
सुनि ऋषि भोये । तुम यह तपफल नाहक खोये ॥ इनके बंश
प्रगटिहो जाई । ये दोउह्वैहें मंत्रीभाई ॥ योगजे बाहिरदे तुम
लीन्हे । राज्य लाखसो नहिं फल कीन्हे ॥ सुनौतात यहभावी
भाखे । फिरि योगहि पैहौकहि राखे ॥ पुरुषएक अश्लोकसुनै
है । सो सुनिकै तुव चित भ्रमजैहै ॥ तब तुम चेतियोगमगगहि
हौ । तेहि प्रसाद उत्तमपद लहिहौ ॥ तिन हंसन कहँ लखिसु-
खपाये । नृपबिभ्राज बहुरिघर आये ॥ तासुत अनुह धर्मधर
आगर । शील समर सर्बस गुण सागर ॥ कृत्वासुता ताहिशुक
दीन्ही । चित चैतन्य चारुता चीन्ही ॥ तबनृप मणिबिभ्राज
बिचारी । सुत कहँ कियेउ राज्य अधिकारी ॥ सबताजि आपु
योग बृतधारी । बसेजाय तेहि सर शुभचारी ॥ इन्हें देखिजि-
तहंस लोभाने । ये जितहंससरबशुभमाने ॥ दोहा ॥ तापीछेतन
त्यागिवै तीनो हंस सुजान । जो जस इच्छा भूप मणिसो तस
लह्योविधान ॥ चौपाई ॥ इच्छौराजभयोसोराजा । अनुहपुत्रकै बि-
शदबिराजा ॥ ब्रह्मदत्तभो नामसुसाजा । जाहिदेखिहियसुरपति
लाजा ॥ वैद्वैमंत्रीभयेसहाये । कण्डरीकपंचालकहाये ॥ सबजीव
नकीबूझैबानी । बृह्मदत्तनृपनिर्मलज्ञानी ॥ बृह्मदत्तकहँराजसु-
धारी । लह्यो परमपद अनुहप्रचारी ॥ देवलनृपकीसुता दुला
री । सन्तति बृह्मदत्तकीनारी ॥ वै जे चारिहंसबरयोगी । बिद्या
बुद्धि बिशदके भोगी ॥ सो तनतजिजेतेहि पुरआये । बृह्मदत्त

जाके पतिगाये ॥ आठौ द्विजके सुत सुखदाई। चारौभये स-
होदरभाई ॥ कछुदिनमें ते तजि पितुमाता। कानन बसनचले
सुनुताता ॥ ताके पिता शोचबहु कीन्हा। तेहिश्लोक एकतिन
दीन्हा ॥ मंत्रिन सहित भूप कहँचाही। यह श्लोक सुनायहु
ताही ॥ देइभूपसो ले मुद भरियो। भगवत भजन सुचितह्वै
करियो ॥ तबते जाइ भये बनबासी। योगयुक्तिके विशदबिला-
सी ॥ ब्रह्मदत्त लै तियबर ब्रीड़ा। करत एकदिन हे बनक्रीड़ा ॥
तहँ पिपीलिका दम्पति भोले। रति चेष्टित आपुसमें बोले ॥
दोहा ॥ सो सुनि सुखद सुजाननृप समुझिहँसे तेहिकाल। सो
लखि जान्यो नृपघरणि मोहिं हँसे क्षितिपाल ॥ चौपाई ॥ हठि
बूझेसि हँसिबेको कारण। सोवृत्तान्त कह्यो भूमारण ॥ सोसु-
निसन्नति सांच न मानी। बूझेसिपति सों कहि मृदुबानी ॥
गिरापिपीलिक की तुमजाना। केहि कारणसो कहो बिधाना ॥
योगभ्रष्ट तुम हौ ब्रतधारी। कैईश्वर आशिष अनुसारी ॥ तब
भूपति अनशनब्रतलीन्हें। नारायण आराधन कीन्हें ॥ छठईं
निशिनारायण आये। दीनोद्धर इमिताहि सुनाये ॥ कियेभाव-
ना होनृप जोई। होइहि प्रकट कालिहसब सोई ॥ यह कहि भे
प्रभु अन्तर्द्धाना। धन्यआपुकहँ भूपतिजाना ॥ प्रातन्हाय सर
सचिव समेता। रथचढ़ि भूपति चले निकेता ॥ इतने में नृप
ब्राह्मण सोई। चारौ हंस जासुसुत होई ॥ दै श्लोक भये बन-
बासी। सो वहब्राह्मण वेद बिलासी ॥ भरो भूरिमुद सन्मुख
आयो। भूपतिसो श्लोकसुनायो ॥ व्याधा सातदशारणदेशा।
गिरि कालिंजर पै मृगभेशा ॥ फिरिसरद्वीप रहेह्वै कोका। मा-
नससरमें हंसअशोका ॥ हम उत्तमपद जात सयाने। तुमचे-
तहु मतिरहहु भुलाने ॥ सुनिनृप दोउ मंत्रिन तन जोहे। सब
वृत्तान्त समुझिमन मोहे ॥ दोहा ॥ फिरि भूपतिचैतन्य ह्वै तेहि
बिप्रहि मनमान। गोगयन्द हयभूमिदै कियो प्रसन्नसुजान ॥

बिष्वक्सेन कुमारकहँ करिराजा सुखदान। सहतिय सचिव सु-
जाननृप साधे योगबिधान॥
इतिगोपीनाथकृतेभाषाभारतान्तर्गतहरिबंशदर्पणेसप्तमोऽध्यायः ७॥
बैशम्पायनउवाच॥ चौपाई॥ सुनहु भूप जनमेजय ज्ञानी। तुम जो
कियो प्रश्न अनुमानी॥ बूझेउ वृष्णिबंश ब्यवहारा। सोअब
कहें सहित बिस्तारा॥ ब्रह्माके मानस सुतजाये। अत्रिमुनीश
वेद बिद गाये॥ ऊर्ध्वबाहुह्वै अत्रिमुनीशा। कियोतपस्यासुनु
अवनीशा॥ तीनि हजार बर्ष मुद बाढ़े। वृक्ष समानअचल ह्वै
ठाढ़े॥ दिब्य बर्ष इतने के बीते। तब कछु रचनामनमें रीते॥
सत्वहि करि सोमत्व सचेता। चख पथ काढ़े ऊरधरेता॥ दृगते
कढ़त बारिकी धारा। दश दिशि देवी निज उरधारा॥ तेन स-
कींसो गर्ब सँभारी। भूपैगिरो गर्भसों भारी॥ मूर्तिवन्तह्वैसोम
सुधाकर। तेज पुंज सतगुरमेंभावर॥ शशिहिभूमिपै लखिअ-
ज आये। लै सादररथपैबैठाये॥ सहस सुभेष बाजिजेहि लागे।
शोभा सींव श्वेत रँग पागे॥ सोमहि रथपै मुनिगण देखी।
अस्तुति किये शुभाशिषभेखी॥ बारएकैससोम पनधारी। भूमि
प्रदक्षिण किय नभचारी॥ तन ते गिर्योताहि नेहिकाला। तासु
औषधी भई रसाला॥ पद्महजार बर्ष तपकीन्हे। सोम परस
पन मनमें लीन्हे॥ दोहा॥ बिधिवत बिधि कीन्हे नृपति शशि
हि राज्य अभिषेक। बिप्र औषधी बीज कर शशिकर सहित
बिबेक॥ चौपाई॥ राजसूयमख बिधि तबकीन्हे। कियो काजतहँ
बिधि सुर लीन्हे॥ ह्वैसंगर्ब शशिअनय बिचारा। हर्यो वृह-
स्पतिकी तिय तारा॥ अंगिर सुवन वृहस्पति कोपे। लै सुर
साथलरन कहँ चोपे॥ तबभे शशिके शुक्र सहाई। लैअसुरन
कहँ किये लराई॥ सुर अरु असुर लरे ये दोऊ। दोऊ प्रबल
न हारे कोऊ॥ तब सुर तुषिता बिधिपै जाई। सब यह कथा
कह्यो समुझाई॥ सुनि बिरंचि तब सादर आये। कलहबराय

शशिहि समुझाये॥ लै तारहिं सुरगुरु कहँ दीन्हा। ताहिसगर्र
भा सुर गुरु चीन्हा॥ सुरगुरु कह्यो गर्भ यह नाखौ। यहपरवी-
र्य गर्भ मति राखौ॥ तब तारा सो गर्भ गिराई। धरि दीन्हा
गाडर पै जाई॥ तेजपुंज अति उग्रप्रभामें। लस्यो तहांसो बा-
ल कलामें॥ देखि ताहि बिस्मित ह्वै देवा। बूझ्यो तारासों य-
ह भेवा॥ कहौ सांच यह सुत हैकाको। शशि कोकै गुरुको कहु
जाको॥ सोसुनि तारा उतरनदीन्हा। तब सो सुवन कोप अ-
ति कीन्हा॥ मम पितुको नहिं नाम बतावै। शापन चह्योबूझि
यहि भावै॥ करि तेहि क्षमित बिरंचि अखेदा। बूझ्यो तारा
सोंवहभेदा॥ दोहा॥ तबतारा विधिसोंकह्योहैशशिकोयहवार।
सोसुनिकैसुतअंकमें लीन्होसोमउदार॥ चौपाई॥ कीन्होसोमना-
म बुधताको। सुतपुरूरवाभूपतिजाको॥ भयेइलासोंजोनृपआ-
छे। आयेबरणि कथासोपाछे॥ नृपपुरूरवा भो भूभर्ता। दान
शील अगणितमखकर्ता॥ ताहिउर्बशीबरेसिसकामा। तेजपुंज
लखिअतिअभिरामा॥ तासँगभूपतासु शुचिहिहरे। नन्दनब-
नमें बहुदिनबिहरे॥ बनचइत्ररथअलकातामें। मेरुगन्धमादन
सुखदामें॥ अरुमन्दाकिनि पाइनि धारा। तहांपुरूरवा कियो
बिहारा॥ जनमेजयबूझा यह भावा। नृप उर्बशिहि कौनबिधि
पावा॥ बैशम्पायन हरषि बताये। सो उर्बशीशापहीपाये॥ ह्वै
मानुष की संयोगिनि। भइ पुरूरवाकी संभोगिनि॥ लीन्हेसि
करिकरार करिशोचन। सोइकरारहोशापबिमोचन॥ भूपतिन-
गन दरशमति देहू। मम इच्छालखि रति सुख लेहू॥ एकबार
घृत भोजनकरहू। नित्यनिरन्तर पन मनधरहू॥ शयन पासद्वै
छागसोहाये। राखौबांधिकरौमन भाये॥ याहिकरारसोंजेहिदि-
नटरिहौ। तेहिदिन हमैंअदृश्य निहरिहौ॥ यहकरारभूपतिदृढ़
धारे। तासँगवोनसठि बर्षबिहारे॥ दोहा॥ ह्वैचिन्तत गन्धर्वग
ण जानिनिबंध बिधान। आइतहा निशिमेंहर्यो एकछागसुख

विष्वक्सेन कुमारकहँ करिराजा सुखदान । सहतिय सचिव सुजाननृप साधे योगबिधान ॥

इतिगोपीनाथकृतेभाषाभारतान्तर्गतहरिबंशदर्पणेसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ चौपाई ॥ सुनहु भूप जनमेजय ज्ञानी । तुम जो कियो प्रश्न अनुमानी ॥ बूझेउ वृष्णिबंश ब्यवहारा । सोअब कहौं सहित बिस्तारा ॥ ब्रह्माके मानस सुतजाये । अत्रिमुनीश वेद बिद गाये ॥ ऊर्ध्वबाहुह्वै अत्रिमुनीशा । कियोतपस्यासुनु अवनीशा ॥ तीनि हजार बर्ष मुद बाढ़े । वृक्ष समानअचल ह्वै ठाढ़े ॥ दिब्य बर्ष इतने के बीते । तब कछु रचनामनमें रीते ॥ सत्वहि करि सोमत्व सचेता । चख पथ काढ़े ऊरधरेता ॥ दृगते कढ़त बारिकी धारा । दश दिशि देवी निज उरधारा ॥ तेन सकींसो गर्ब सँभारी । भूपैगिरो गर्भसों भारी ॥ मूर्तिवन्तह्वैसोम सुधाकर । तेज पुंज सतगुरमेंभावर ॥ शशिहिभूमिपै लखिअज आये । लै सादररथपैबैठाये ॥ सहस सुभेष बाजिजेहि लागे । शोभा सींव श्वेत रँग पागे ॥ सोमहि रथपै मुनिगण देखी । अस्तुति किये शुभाशिषभेखी ॥ बारएकैससोम पनधारी । भूमि प्रदक्षिण किय नभचारी ॥ तन ते गिस्योताहि तेहिकाला । तासु औषधी भई रसाला ॥ पद्महजार बर्ष तपकीन्हे । सोम परस पन मनमें लीन्हे ॥ दोहा ॥ बिधिवत बिधि कीन्हे नृपति शशिहि राज्य अभिषेक । बिप्र औषधी बीज कर शशिकर सहित बिवेक ॥ चौपाई ॥ राजसूयमख बिधि तबकीन्हे । कियो काजतहँ बिधि सुर लीन्हे ॥ ह्वैसंगर्ब शशिअनय बिचारा । हस्यो वृहस्पतिकी तिय तारा ॥ अंगिर सुवन वृहस्पति कोपे । लै सुर साथलरन कहँ चोपे ॥ तबभे शशिके शुक्र सहाई । लैअसुरन कहँ किये लराई ॥ सुर अरु असुर लरे ये दोऊ । दोऊ प्रबल न हारे कोऊ ॥ तब सुर तृषिता बिधि पै जाई । सब यह कथा कह्यो समुझाई ॥ सुनि बिरंचि तब सादर आये । कलहबराय

शशिहि समुझाये॥ लै तारहिं सुरगुरु कहँ दीन्हा। ताहिसगर्भ भा सुर गुरु चीन्हा॥ सुरगुरु कह्यो गर्भ यह नाखो। यहपरवीर्य गर्भ मति राखो॥ तव तारा सो गर्भ गिराई। धरि दीन्हा गाडर पै जाई॥ तेजपुंज अति उग्रप्रभामें। लख्यो तहांसो बाल कलामें॥ देखि ताहि बिस्मित ह्वै देवा। बूझ्यो तारासों यह भेवा॥ कहौ सांच यह सुत हैकाको। शशि कोकै गुरुको कहु जाको॥ सोसुनि तारा उतरनदीन्हा। तव सो सुवन कोप अति कीन्हा॥ मम पितुको नाहिं नाम बतावै। शापन चह्योबूझि यहि भावै॥ करि तेहि क्षमित विरंचि अखेदा। बूझ्यो तारा सोंवहभेदा॥ दोहा॥ तवतारा विधिसोंकह्योहैशशिकोयहवार। सोसुनिकैसुतअंकमें लीन्होसोमउदार॥ चौपाई॥ कीन्होसोमनाम बुधताको। सुतपुरूरवाभूपतिजाको॥ भयेइलासोंजोनृपआछे। आयेबरणि कथासोपाछे॥ नृपपुरूरवा भो भूभर्ता। दान शील अगणितमखकर्ता॥ ताहिउर्बशीबरोसिसकामा। तेजपुंज लखिअतिअभिरामा॥ तासँगभूपतासु शुचिहिहरे। नन्दनबनमें बहुदिनबिहरे॥ बनचइत्ररथअलकातामें। मेरुगन्धमादन सुखदामें॥ अरुमन्दाकिनि पाइनि धारा। तहांपुरूरवा कियो बिहारा॥ जनमेजयबूझा यह भावा। नृप उर्बशिहि कौनबिधि पावा॥ बैशम्पायन हरषि बताये। सो उर्बशीशापहीपाये॥ ह्वै मानुष की संयोगिनि। भइ पुरूरवाकी संभोगिनि॥ लीन्होसि करिकरार करिशोचन। सोइकरारहोशापविमोचन॥ भूपतिनगन दरशमति देहू। मम इच्छालखि रति सुख लेहू॥ एकबार घृत भोजनकरहू। नित्यनिरन्तर पन मनधरहू॥ शयन पासद्वै छागसोहाये। राखौबांधिकरौमन भाये॥ याहिकरारसोंजेहिदिनटरिहौ। तेहिदिन हमैंअदृश्य निहरिहौ॥ यहकरारभूपतिदृढ़ धारे। तासँगवोनसठि बर्षबिहारे॥ दोहा॥ कैचिन्तत गन्धर्वगण जानिनिबंध बिधान। आइतहा निशिमेंहर्‌यो एकछागसुख

दान ॥ चौपाई ॥ छागहरत लखिनृपहिजगाई । कहेसिउर्बशीलेहु छड़ाई ॥नृपहेनग्नन उठे बिचारी । दुतियछाग तिनहरेनिहारी ॥ फिरि उर्वशीकहेसि अनखाई ॥ तबनृप छागछोड़ायो धाई ॥ तबगन्धर्ब सु अवसर जानी । बिजुरीप्रगटकिये अभिमानी ॥ तारुचिनृपकहँ नग्नानिरेखी ॥ भईअदृश्य उर्बशी तेखी ॥ तेहिबिनु लखे नृपति अकुलाने । मोहभयेबहुतै पछिताने ॥ ह्वै ब्याकुल घरताजि बनहेरत । कुरुक्षेत्र में गे तेहिटेरत ॥ रुदन करत अति मायाभेखे । सर में न्हाततहांते देखे ॥ लहिभूपहि बोली सोधीरे । भूपतुम्हारगर्बहमहीरे ॥ बीतेबर्षपासतुवआई । एकराति बसिहौं सुखपाई ॥ कहिसोभईअदृश्यसनेहा । मोहित नृपआयेनिजगेहा॥बीतेबर्षभूपपैआई।रमिउर्बशीउपायबताई॥ गन्धर्बनकहँ भूपअराधौ । तुमगन्धर्ब होहुसोसाधो ॥ सुनिनृप तिन्हैंअराधिसभागे। हमगन्धर्बहोहिंयहमांगे॥पूरिअग्निथाली तिन्हलीन्हा। करोयज्ञकहिनृपकहँदीन्हा॥यज्ञकियेनिजइच्छित पैहौ । तबयहिलोक मोदसों ऐहौ ॥ कहिदीन्हे सुतसात सोहाये । जो उर्बशी भूप सों जाये ॥ दोहा ॥ अग्नि राखि बनमेंनृपति सुतन सहित घर आय । तिन्हैं यथोचित राज्य दै आप लखे बन जाय ॥ चौपाई ॥ तहां न भूपति अग्नि निरेखा । तेहिथर पीपरको तरु देखा ॥ ताके गर्ब समी लखिभूपा । गयेजहां गंधर्व अनूपा ॥ तिनसों यहु वृत्तान्त सुनाये । सुनि गन्धर्ब उपाय बताये ॥ ताकर अरणी रचिमुद बाढ़ौ । अग्नि ताहि मथिकै नृप काढ़ौ ॥ नृप पुरूरवासों सिख लीन्हा ॥ अग्निकाढ़ि मंजुल मखकीन्हा ॥ एक अग्नि आगे परधाना । तब ते त्रेताग्नि जगजाना ॥ यज्ञ सिद्धि करिकै मनभावा । शुभ गन्धर्ब लोक नृप पावा ॥ जे पुरूरवाके सुतगाये । तिनके नाम सुनहु मनभाये ॥ आयू और अमावसुजानो । सतासु बिदित बनायु पुमानो ॥ बिश्वायू द्रिढ आयू कहिये । भूप शतायू सुनि मुद

गहिये ॥ अमावसूके सुत सु अधीमा। भूप भीम अरिदलकहँ भीमा ॥ ताके सुतकांचन प्रभुनीके। ताके सुवनसुहोत्र सुजीके॥ सुत सुहोत्र के जह्नु यशीले। यज्ञकरतते रहे रसीले ॥ ताकहँ पति करिबेके लोभा। गंगा आईं तहँ सह क्षोभा॥ जह्नुनमान्यो तब रिसि आई। दई यज्ञ सामान बहाई॥ सो लखिकै तब जह्नुरिसाने। गंगहि पान कियो जगजाने ॥ दोहा ॥ तब ऋषि गण स्तुति कियो सुनि सऊम्य ह्वै भूप। छोड़्योधारा स्रोतमग सुन्दर सुधास्वरूप ॥ चौपाई ॥ निज संकल्पसत्य हित गंगा। कियो दोय निज सुभग सुअंगा ॥ हूवै आधे कावेरी सरिता। भई जह्नुकी तियासुचरिता ॥ तिनसों सुवनसुनह नृप जाये। पुत्र सुनहके आनँद पाये॥ कुशके भये चारिसुत चारू। कुशिक और कुशनाभ उदारू॥ नृप कुशांब बरबिरद बखाने। मूर्तिमान अति मंजुलजाने॥ कियो उग्रतपकुशिक महीपा। ईच्छि इन्द्र समसुत कुलदीपा॥ बीते सहसबर्ष तहँ आई। इन्द्रकुशिक सों कह्यो बुझाई॥ नृप मम अखिलअंश संभविता। पैहौ सुवन उग्र जिमि सविता॥ कुशिक सुवनभो गाधिसोहाये। गुणअगाधि कौशिक कहिगाये॥ पुरूकुत्स्य तियतासु पियारी। सत्यवती तासुता दुलारी॥ ब्याहेहु गाधि ऋचीकहि सोई। बरतपकरेसुकृतयुतजोई॥ ऋषिऋचीकचरुचारुबनाये। पुत्रहेत द्वै मांगलगाये ॥ ब्रह्ममंत्र मंत्रित यककीन्हा। छत्रशक्ति दूजे में दीन्हा॥ तासुभेद तजिखेद बताई। निज तियकहँ दीन्हेउ मुनिराई ॥ यहचरुचारु चाहि तुम लेहू। यह चरु निजमाता कहँ देहू ॥ दोहा ॥ चरु दै ऋषिकानन गये सत्यवती तबजाय। निजमाताके ढिगधस्यो दोउचरुभेद बताय ॥ चौपाई ॥ सोसुनि गाधि भूपकी नारी। चरुबदल्यो कछु भेद बिचारी॥ शुचिचरु तासु आपुलै खायो। आपनचरुसो वाहि खवायो ॥ मुनिबर आइ भेदसो जाने। निज पतिनीसों कह्यो सयाने॥ होइहिसु-

त तुम्हरे धनुधारी । क्षात्रबंश नाशक अपकारी ॥ क्रूरस्वभाव कठोर कराला । बिदितबीर रणधीर कराला ॥ तुवमाताकोसुत तवभ्राता । होइहि ऋषिबर तपबिधि त्राता ॥ सत्यवती सुनि अनुचितजानी । पतिसों कही बिनयमयबानी ॥ ममसुत ऐसो होइ न साईं । तपबिधि होइ तुम्हारियनाईं ॥ चरुप्रभाव जो वृथा न जानो । ममपउत्र तौ ऐसो आनो ॥ एवमस्तु तबकहा मुनीशा । तब प्रभाव निरखौ अवनीशा ॥ तपबर सत्यवती के जाये । जगजाहिर जमदग्नि कहाये ॥ सूर्य्यबंश नृपरेणु सुदानी । तासुरेणुका सुतासयानी ॥ मुनि जमदग्नि तासुकेभर्त्ता । अमलअमन्द अतुलतप कर्त्ता ॥ तासुत परशुराम धनुधारी । भे तेहिचरु प्रभावअनुसारी ॥ द्वैसुत और आपुसम कीन्हें । मुनि जमदग्नि मोदबर लीन्हें ॥ शुनःशेफ शुनपुच्छ कहाये । ब्रह्मऋषीश ब्रह्मबिद गाये ॥ दोहा ॥ गाधि नृपति के सुवनभे चरु प्रभावते भूप । सतऋषिनमें शीवजे बिश्वामित्र अनूप ॥ भेसुत बिश्वामित्रके तपकर्त्ता सबिबेक । यागबल्कि कतिबभ्रु अरु गालव आदिअनेक ॥ चौपाई ॥ जो जमदग्निकेरसुतदूजा॥ शुनःशेफनामक कृतपूजा ॥ सो कौशिकको मानि निदेशा । भयो पशुत्व सरुचिशुभ भेशा ॥ नृपहरिदश्व कियो मख तामें । मानुषबलि निर्मितहो जामें ॥ बिश्वामित्र ताहि सुतकीन्हा । निज पुत्रनमें गुरुतादीन्हा ॥ सुत पुरूरवा के जेभाखे । सात उर्बशी सों रुचिराखे ॥ तिनमें बंश अमावसुके ये । अबकहियो आयूके हेये ॥ प्रभातिया आयूकी सुहिता । सोस्वर्भानु भूपकी दुहिता ॥ तिनके पांच तनयबरसेना । नहुषरज्जि अरु रम्भ अनेना ॥ छत्रवृद्धि क्षत्री क्षितिपालक । ये आयूके सुत खल घालक ॥ रजिके सुवन पांचशतजाये । ते पांचौशत राजकहाये ॥ देव असुरसों भयो बिरोधा । दोऊ बिधिसोंआगमशोधा॥ हमदोउ लरनहार बलभारी । को जीतिहि को पाइहि हारी ॥

विधि भाषा जेहि और सुनीती । रजिनृप रहिहि लहिहि सो जीती ॥ सुनिसुर असुर रज्जिपहँआये। निज निज अरथकहे मन भाये ॥ कह्यो सुरनसों रज्जिसुभागी । हतें असुर हम तुव हितलागी ॥ यहकरार पहिले करिलेहू । जयलहि हमैं इन्द्र पद देहू ॥ दोहा ॥ कीन्हींसुरनकरार सो तबचढ़ि रज्जिसुकाय। हति असुरन बैठे विशद इन्द्रासनपहँजाय॥ चौपाई ॥ तबमघवान बिनय बिधिसाजा । हमतुव धर्मपुत्रहैंराजा ॥ सुरसमाज आपन करिलेहू । उचित बूझि फिरिहमकहँ देहू ॥ सोसुनिनृपति रज्जि सुखपाये । इन्द्रहि उतै राखिइतआये ॥ रज्जिभूमिपति जबतनु त्यागे । तबनृपके सबसुत बलपागे ॥ तेशतपांच इन्द्रपै जाई । पदकरि लीन्हीं राज्य छड़ाई ॥ तेतहँ भोगबहुत दिन कीन्हे । इंद्रहि कछूभाग नहिं दीन्हे ॥ इन्द्रदुखित सुरगुरु पै जाई । कह्यो सकल वृत्तान्त बुझाई ॥ सुनिगुरु इन्द्रहि साहसदीन्हे । मतनास्तीक प्रगट तबकीन्हे ॥ गुरुकृतसुनि नृप सुत सिखिलीन्हा । सोइ आचरण चाहि चितकीन्हा ॥ तातें धर्म नष्ट भे सिगरे । हीनपराक्रम ह्वै अतिबिगरे ॥ लखिनिज तेजपापसों राते । बज्रपाणिचढ़ि तिन्हैंनिपाते ॥ गुरुप्रसादलहि मघवाराजे । तीनिलोकपति ह्वै फिरिगाजे ॥ आयूके सुत रंभकहाये । ते स्वकर्मबश पुत्रनपाये ॥ नृपआयू के सुतसुख दाने । है अनेनतावंश बखाने ॥ नृप अनेनके सुवनबखाने । नृप प्रातिछत्र सुअब बिधिजाने ॥ तासुत सृंजयजयसुतताके। तासुत बिजय सुवनकृतजाके ॥ दोहा ॥ हर्यश्वन ताके सुवन ताके सुतसहदेव। भे नदीन ताके सुवन हरणदीन दुखभेव ॥ चौपाई ॥ तासुत जयत्सेन जयकर्त्ता। तासुत संकृत अरिदलदर्त्ता ॥ तासुतछत्रधर्मशुभरूपा। ये अनेनके वंशजभूपा ॥ छत्रवृद्ध आयूके वारे। तासुतभे सुनहोत्र दुलारे ॥ तासुततीनिकाससलमानो। और गृत्समदवरहद जानो ॥ भूपगृत्समदको सुत

बीरा। सुनकमहीप मत्तरणधीरा ॥ सुवनसुनकके शौनकनामी। भये भूप अनागिने सकामी ॥ चारोंबर्ण भये ते मानो। नित कृत धर्मकर्मगतिजानो ॥ सालनृपतिकोसुतबलभारा। चष्णिषेनभे भूपउदारा॥ तासुतभये सुतपनरनाहू ॥ जासोंलह्योनजयअरि काहू॥ कासभूपकोसुतसुनुताता। भयोदीर्घतपदीरघदाता॥भूप दीर्घ तप बरतप कीन्हे। पुत्र कामना मनमें लीन्हे॥ वृद्धापनमें ते सुत पाये। जे धन्वन्तरि बिदित कहाये॥ कढ़ेक्षीर सागरते जोई। प्रकटे आइ धन्वन्तरि सोई॥ भूपदीर्घ तपके सुतगाये। धन्वन्तरि द्वापर में जाये॥ धन्वन्तरि के सुत सुखदानी। प्रगटे केतुमान बरज्ञानी ॥ तासुत भये भीम रथदापी ॥ तासुत दिवो दास परतापी ॥ दोहा ॥ दिवोदास काशीशको क्षिति भोगवत अनूप। भई बिचित्र कथाकछू सो अब सुनिये भूप ॥ चौपाई ॥ काशी अति रमणीयनिरेषी। चाह्यो लियो शंभु शुभभेषी॥ गण निकुम्भको दियो निदेशू। तुम काशी में करोप्रवेशू ॥ करिप्रवेश कछुकला बढ़ायो। दिवोदासको खोरि लगायो॥ खोरि लगाइ शाप फिरि देहू। देवहि शाप तेजहरिलेहू॥ ह्वै निहतेज छोड़ि सो भागै। तब उतबासिबे की विधि लागै॥ सोसुनिगण निकुंभ तहँ आये। कंठक नाउहिं सपन देखाये॥ मम मूरति अस्थापन करहू। करि पूजन मुद मंगलभरहू॥ सोसुनिकंठक आनँद लीन्हें। तासुमूर्ति अस्थापित कीन्हें॥ पूजनकोसबपुर जन आवैं। जोफल जोमांगैं सो पावैं॥ सोसुनि दिवोदासहरषाई। निज पतिनीको दियो पठाई॥ दिवोदास की पतिनीजाई। करि पूजन बहुभांति मनाई॥ सुवनसु पूत मांगिघरआई। परिखेसि बहुत दिवस मनलाई॥ भयो न सुत तबभूपरिसाई। मठमूरति खुदि दियो बहाई ॥ तब निकुम्भगण औसरपाई। उग्रशापदीन्हों अनखाई ॥ रहै शून्य यह सुखदा कासी। बर्ष हजार अमानवबासी॥ शाप प्रभावआइ तहँघोरा। छेमकनाम

दैत्य सह जोरा ॥ किहेसि उपद्रवता भयआगे । पुरजन छोड़ि काशिकाभागे ॥ दोहा ॥ शून्यदेखि काशीपुरी दिवोदास नृपधीर । चिन्तिशाप फल जाइ तब बसे गोमती तीर ॥ चौपाई ॥ लखि शिव शिवा सहित सुखसाजे । आइ काशिकामें तबराजे ॥ कही एक दिन शिवा सोहाई । सुपति शंभुसों समया पाई ॥ चलौ नाथ कहुं अनत बिहारैं । कानन शैल पेखिसुख धारें ॥ कह्यो शम्भु तियसों चित चावन । आबिमुक्त यह मम गृहपावन ॥ याहि छोड़ि हम अनतन जैहैं । सबयुग नित्य इतहिमेंरैहैं ॥ रहैं तीनि युगप्रकटमहेशा । कलिमें रहत गुप्तकरिभेशा ॥ दिवोदास के सुतबलभारी । भयेप्रतर्दनभूतलचारी ॥ भयेप्रतर्दनकेद्वैबारे । बत्सभार्ग नृपभूमि बिहारे ॥ भूप अलर्क बत्सकेजाये । कुंभजकी तियसों बरपाये ॥ छाछठि सहसवर्ष तन धारे । ते छेमकराक्षस को मारे ॥ फिरि काशीमें बसिमुदभारे । खलकुलकेबल बिरद बिदारे ॥ सुत अलर्क के सन्नातिभाये । ताके सुवन शुनीथ कहाये ॥ ताके सुवनक्षेमबरक्षेमी । तासुत केतुमान नृपनेमी ॥ ता सुत भये सुकेतु सुकेतू । तासुत धर्मकेतु यशसेतू ॥ तासुतसत्यकेतु सतिबकता । तासुतविभु हरिगुण रस छकता ॥ नृपआनर्त तासुसुत बीरा । तासुसुवन सुकुमार सुधीरा ॥ दोहा ॥ सुत भूपति सुकुमार के धृष्टकेतु बलवान । बेणुहोत्रताके सुवनतासुत भर्ग सुजान ॥ चौपाई ॥ येते काशिवंश गुरज्ञानी । नहुषबंश अबकहे बखानी ॥ बिरजापित्र सुताबर बरणी । नहुषभूमि पति की सो घरणी ॥ भे तिनके षटसुत कुलदीपा । पतिय यातिसंयाति महीपा ॥ अरु ययाति यातिबर राजे । येषट नहुष तनय सुखसाजे ॥ नृपककुत्स्थ की सुतादुलारी । सोस्वयंबरापतिकी नारी ॥ पतिदंपति द्वै योग बिलासी । भयेजाइ काननकेवासी ॥ भये ययाति महीप बिबेकी । बेद बिहित भूधर अभिषेकी ॥ तासु देवजानी तिय प्यारी । सुता शुक्रकी पतिव्रतधारी ॥

तासुत यदु अरु तुर्बसु जाये । यदुबंशहि यदुबंशी गाये ॥ विष पर्बण हो असुर सुनामा । तासुसुता सरमिष्ठा आमा ॥ सो ययातिकी दूजी नारी । तासुत भये तीनि शुभचारी ॥ द्रुह्युदुबन दर अरु अनु आछे । प्रकट भये पुरुतिनके पाछे ॥ नृप ययाति को सुरपति दीन्हें । दिब्य सुरथ सो भूपति लीन्हें ॥ शुभ्रमनो जब हय जेहि लागे । तापैं चढ़ि ययाति मुद पागे ॥ षटदिनमें सब धरणी जीते । जाहिर जगजेता जयहीते ॥ भूपति भोग बहुत दिन धरणी । भये वृद्ध करताशुभ करणी ॥ बिषयभोगसो तोषन पाये । कै आरत पुत्रनपहँ आये ॥ कह्यो बुझाइ सुतन सों बानी । मैं जो कहौं करौ सो ज्ञानी ॥ दोहा ॥ भूमि बिषय के भोग सों मो मन लहै न तोष । है तृष्णा आतुरभई करौतासुपरिपोष ॥ चौपाई ॥ मम वृद्धापनसुत तुमलेहू । आपन तरुणापन मोहिंदेहू ॥ क्रमसों चारिसुतनसों भाष्यो । भूपति बचनन काहू राष्यो ॥ दिये शाप तब नृपरिसि भारे । होहिं अराजकसुवनतुम्हारे ॥ तिन्हैं शापदै पुरपहँआये । पुरसों कहितेहिभांतिबुझाये ॥ सुनिपुरतासु बिरधई लीन्हें । निज तरुणापनभूपहिदीन्हें ॥ युवा पुरुषकै मोहितभूपा । लगे भोगवनविषय अनूपा ॥ बहुबिधिकिये भोगलगि जीसों । बिश्वाची आदिक तरुणीसों ॥ जितो भोगवैबिषयाबिहारी । होइतितकतृष्णाअधिकारी ॥ बहुबिधि भोगि बहुत मनलाये । कामभोगको अंत न पाये । तबभा भूपतिके उरज्ञाना । बिषय त्याग तबकियो सुजाना ॥ पुरुको तरुणापन नृप दीन्हा । आपन वृद्धापन सोलीन्हा ॥ तबनृप भूमि पांचधा करिकै । पांचौ सुतहि दियो मुद भरिकै ॥ चारिसुदेश चारि कहँदीन्हा । मध्यदेशपति पुरुकहँ कीन्हा ॥ कह्योययातिज्ञानमैं बानी । समयपाय सदसद पहिंचानी ॥ जीरणभये नजीरणहोई । जाहि न त्यागिसकै सबकोई ॥ जोतनसंग रोगसमलागी । कबहूं अमित न होइ अभागी ॥ दोहा ॥ सो यहतृष्णा प्रबल है याहि

तजे सुखहोइ । जबलोंयह तनमेंरहैतबलों सुखी नकोइ ॥ तीनिलोककोईशकै कोटिनारिपतिहोय । जोतृष्णैमानैनतौ मोदित कबहुंनसोय ॥ जिती लहै तृष्णातिती तृष्णा बाढ़तिजाति। जैसे आहुति को दिये ज्वलन ज्योति अधिकाति ॥ थोरोलहि विनहूंलहै तियअनधन परधान। ज्ञानीजन सन्तोषसों पावत मोदमहान ॥ कहिऐसो भूपालमणि तियसहकरिबनबास । साधियोग बिधि त्यागि तन कीन्होंस्वर्ग बिलास॥

इतिश्रीहरिवंशदर्पणोनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

चौपाई॥सुनिजनमेजयभूपतिज्ञानी। मुनिसोंकह्योमनोहरबानी॥ नृपययातिके सुवनबखाने । यदुपुरुअनुअरु द्रुह्युसयाने ॥ अरु तुर्वसुये पांचगनाये। इनकेबंशकहौंमनभाये॥ वैशम्पानि कहा सुनुभूपा । पुरुके पुत्रप्रबीनअनूपा ॥ तासुतभये मनस्युमनस्वी। तासुत अभयदअभययशस्वी ॥ तासुतपशुधन्वाधनुधरता ।तासु सुबाहुतनयभूभरता ॥ भेरौद्राश्व तासुसुतराजा। भईं तासु दशसुता सलाजा॥ शुचि नामी ते शूद्रासलदा । भद्राखला चलाअरु मलदा ॥ मद्रासुरथा बलदाजानो ।गो चपला ये गणिदशमानो ॥ अत्रिबंश ऋषिबर तपभारी । नाम प्रभाकरपरम अचारी ॥ दशौसुता तेहिको नृपदीन्हा । श्रुतिकीऋचा सुरुचि कहिलीन्हा॥ जेसुतइन के होहिं दुलारे । तेसिगरे सुत होहिं हमारे ॥ एक एकसुत तिनकेजाये ।तिन्हैंभूप निजसुतकरिमाये ॥ नृपकक्षेपू अरु कृकणेपू । स्थण्डिलेपु अर्थेतु सनेपू॥ नृपति ऋचेपु बनेपु जलेपू । धीरधनेपु महीप थलेपू ॥ तीनिसुवन कक्षेपूकेहैं । भूप सभानर चक्षुषते हैं ॥ दोहा ॥ अरु परमेक्षु प्रबीण नृप ज्ञाता धनुष बिधान । भयेसभा नरके सुवन कालानल बलवान ॥ चौपाई ॥ कालानलके शृंजयजाये । शृंजयसुवन पुरंजय गाये ॥ ताके सुत जनमेजय नामी । महा सालतासुत महि स्वामी ॥ तासुत महामना नयगामी । तासुदोय सुतभये

सुधामी ॥ भयेउसीनर जेठ वासों । भो तितिक्षु लहुरो जो तासों ॥ पांच उसीनर की तिय जानो । नृगीक्रिमी अरु नबा बखानो ॥ सुवन क्रिमीके क्रिमि कहवाये। तनयनबाके नबकहि गाये ॥ दर्वाके सुत सुव्रतबीरा । दृषद्युतीके सिबि रणधीरा ।जो सिबि भूपचारि सुतताके । नृप बृषदर्भ सुबीर सुसाके ॥ मद्रव अरु कैकेय बिचारो । पौत्र उसीनरके येचारो ॥ नृपतितिक्षुके सुतजग जेता । भयेउ सद्रथसुपरपुर लेता ॥तासुत फेनसुतप सुत ताके । तासुत बलिबरणैं गुणजाके । दियोतिन्हैं बर कृपा निधाना । बिधि आयू करि कल्पप्रमाना ॥ बलि हैं योगी इंद्रीजेता । ज्ञानगेर अरु ऊरधरेता ॥ ताते निजतियते मन भाये ।मुनि सों पांच पुत्र करवाये ॥ अंगबंग अरुसुम्भ सराहे । पुंडकालिंग प्रजाजिन पाहे ॥ अंगपुत्र दधिबाहन बीरा । तासुत दिबिरथ गुणन गँभीरा ॥ भये धर्मरथ तासुत राजा । तासु चित्ररथसुवन द्राजा ॥ दोहा ॥ भये चित्ररथके सुवनलोमपाद परबीन ।शृंगीऋषिको ल्याइजे शांतास्वसुतादीन ॥ शृंगी ऋषिकी कृपाते लोमपाद क्षितिपाल । पायो सुवन सपूत शुचि नृपचतुरंग सुचाल ॥ चौपाई ॥ भे चतुरंग भूपके बारे । नृप पृथुलाक्ष अच्छ गुणवारे ॥ तासुत भये चंपनृपचारू । तासुत भे हरिजंग उदारू ॥ ऋषि बैभांडाकि जाहित धारे । ऐरावत गजभूमि उतारे ॥ भेहर्य्यंग भूपके बेटे । नृपति भद्ररथ बिरद लपेटे ॥ तासुत बृहत्कर्म बलवाना । ताकेसुत दृहदर्भसुजाना॥ तासु वृहन्मन सुत धनुधारी । ताके द्वै पतिनीपतिप्यारी ॥ एक यशो देबी शुचिनामा । सत्वा दुतिय सुबुधि सब जामा ॥सुवन यशो देबीके जाहिर। भये जयद्रथ सबगुण माहिर ॥ दृढ़रथभये तासुसुत नामी । तनय बिश्वजित तासु सुधामी ॥ तासुतभयेकरण शुभ कर्णी । तासु बिकर्णतनयबर बर्णी ॥ इनके बंश बहुत नयचीन्हें । अंगभूपकी कीरति कीन्हें ॥ भये बिजय संत्वाके

बालक। ताके सुत धृति खलकुल घालक॥ तासुत धृतिव्रत धीरयधारी। सत्यकर्म तासुत बलभारी॥ सत्यकर्म भूपतिके जाये। भे अधिरथ जे सूतकहाये॥ तेईकरणहि पालि बढ़ाये। करण ताहिगुण सूत जगाये॥ सुवन करणके बिष्वक्सेना। तासुत वृषवाहक बरसेना॥ दोहा॥ येवंशज कक्षेपुके पुत्रवंत सबधीर। अबऋचेपुके कहतहैं रौद्रपुत्रजे वीर॥ चौपाई॥ ज्वलनातक्षक सुतादुलारी। सो ऋचेपुकी पतिनी प्यारी॥ ताके सुत मतिनारमहीपा। तासुत तीनिभये कुलदीपा॥ अंशुप्रथम फिरिप्रतिरथमानो। यह सुबाहुनृप धार्मिकजानो॥ अरुयक कन्या गौरी नामा। तासुत मांधाता गुणग्रामा॥ भये कर्णप्रतिरथके बारे। मेधा तिथिभे तासुदुलारे॥ इलिनी तासुसुता व्रतधारी। ताको कियो अंशु प्रियनारी॥ तासुत भये सुराध सुयोधा। तातिय उपदानवीसुबोधा॥ ताकेचारि सुवन गुणवंता। नृप दुष्यंत भूप सुखकंता॥ अनघ प्रवीर धीरयेचारो। वर्णे बीर सुने मुदधारो॥ नृपदुष्यंत भूपमणि गाये। रमिशकुन्तला सों सुत पाये॥ भरतनामनयविद महित्राता। जावंशज तमभारत ख्याता॥ तनय भरतके हैं बरदापा। ते निजजननी को लहि शापा॥ नशे तिन्हें नाशित लखिराजा। भरत वृद्ध कीन्हों यहकाजा॥ भरद्वाज सुरगुरुके बारे। पुत्रबधूसों तिन्हें निहारे॥ सुवन बितथ नामक तबजायो। अभिषेकित भूपाल कहायो॥ सुवन बितथके पांच ललामें। भये सुहोत्र जेठ हैं तामें॥ दोहा॥ भे सुहोत्रके सुवन द्वै कासगृत्समतिनाम। भये गृत्समतिके सुवन ब्राह्मणक्षत्रीआम॥ चौपाई॥कासभूपको सुत सुनु ताता। भये दीर्घतप दीरघदाता॥ भूप दीर्घतपकी सुत गाये। धन्वन्तरि द्वापरमें जाये॥ धन्वन्तरिके सुतसुखदानी। प्रकटे केतुमान बरज्ञानी॥ तासुत भये भीमरथ दापी। तासुत दिवोदास सुप्रतापी॥ दिवोदासके सुतबलभारी। भये प्रतर्दन

भूतल चारी ॥ भये प्रतर्दन के द्वैबारे । वत्सभार्ग नृप भूमि-
बिहारे ॥ भूप अलर्क बत्सकेजाये । लोपामुद्रासों बरपाये ॥ सु-
तअलर्क के सन्ततिजाये । ताकेसुवन शुनीथ कहाये ॥ ताके
सुवन क्षेमबर क्षेमी । तासुत केतुमान बरनेमी ॥ तासुतभये
सुकेतु सुहेतू । तासुत धर्मकेतु यशसेतू ॥ तासुत सत्यकेतु स-
तिवकता । तासुत बिभुहरिगुण रसभरता ॥ नृपआनर्त तासु
सुतबीरा । तासु सुवन सुकुमार सुधीरा ॥ धृष्टकेतु सुततासु सु-
जाना । वेणुहोत्र तासुत बलवाना ॥ तासुत भर्गभयेबलभारी ।
एते कासबंश अधिकारी ॥ जे सुहोत्रके सुवन तृतीये । ताको
बृहतनाम सुनिलीये ॥ ताके सुवन तीनिअजमीढ़ा । अरु धी-
मीट हस्तिपुर मीढ़ा ॥ दोहा ॥ तीनितिया अजमीढ़के नीलिनि
केशिनि जानि । अरु धूमिनि सुकुमारि शुचिसरस सुशील सु-
जानि ॥ चौपाई ॥ अजमीढ़ा केशिनिसों जाये । जह्नुभूपबर तप
करगाये ॥ नृप युवनाश्व सुता शुभचरिता । ताकी तियकावेरी
सरिता ॥ तिनसों सुवन सुनहनृपजाये । पुत्र सुनहके अजक
कहाये ॥ तासुत बली काश्वबलभारी । ताके सुत कुश आनँद
कारी ॥ कुशके भये चारिसुत चारू । कुशिक और कुश नाभ
उदारू ॥ नृपकुशांब अरु भूरमति मानू । सुवन कुशिकके गा-
धिसुजानू ॥ तासुत विश्वामित्र कहाये । तिनके सुवन अनगि-
ने गाये ॥ ये अजमीढ़भूपके जाये । केशिनिसोंते तुम्हैंबताये ॥
जे नीलिनिसों प्रकटे बारे । ते अब तुमसों कहौं पुकारे ॥ भेसु-
सत्ति नीलिनिके जाये ।। पूरूताके सुवन कहाये ॥ नृपति पुरू
के बाह्यसुबालक । तासुतपांच भये क्षितिपालक ॥ मुद्गलसु-
जयबृहद्दिषु कहिये । औक्रिमिलाश्वजयीनर लहिये ॥ येपांचौ
जो देश बसावा । सोइ सुदेश पांचालकहावा ॥ जेठो सुत
मुद्गल को जोई । इन्द्रसेन कहवायउसोई ॥ इन्द्रसेनकेसुवन
सयाने । मेधअश्व जगतमें जाने ॥ ताकी तिया मेनकानामा ।

सो साथहि जायसि अभिरामा ॥ दिवोदाससुत पालकधरनी ।
सुता अहल्या गौतमघरनी ॥ तासुत सतानन्द शुचिजीके ।
ताके सुवन सत्यधृत नीके ॥ दोहा ॥ देखिअप्सरा को भयोता-
को बीजखलास । परिसरईके पुंजपै सो शुचिलह्यो सुपास ॥
तासों भूप तहां भये सुतअरु सुता अनूप । कृपाचार्य जो वि-
दित हैं कन्याकृपी अनूप ॥ तिनपैसंतनकरिकृपा लै आयेनिज
धाम । सुनोभूप ताते भयो कृपाकृपी यहनाम ॥ चौपाई ॥ दिवो-
दासकेसुतसुनुराजा । भयेमित्रयुःकृतशुभकाजा ॥ येमुद्गलके
वंशबखाने । अबसृंजयकेसुनुसुखमाने ॥ सोमदत्तसृंजयकेबारे ।
भयेतासु सहदेव दुलारे ॥ तासुतभे सोमकमहि साईं । तासुत
जन्तु पिताकी नाईं ॥ शतसुत जन्तु यज्ञकरिपाये । सबते छोटे
पृषतकहाये ॥ तनयपृषतके द्रुपदप्रबीना । धृष्टद्युम्न ता तनय
अहीना॥धृष्टकेतु ताकोसुत शूरा । सर्वशास्त्र विद्यासोंपूरा ॥ ये
अजमीढ़ भूप के बंशज । भेनीलिनि सों ईश्वर अंशज ॥ अब
धूमिनिके बंश बखानै । जेहि में तुम्हें प्रमृतिसुखदानै ॥धूमिनि
पुत्र हेत ब्रतधारी । अयुत बर्ष कीन्हों तप भारी ॥ कच्छ नाम
ताके सुत जाये । ताके सुत सम्बरण कहाये ॥ ताकेसुवनकुरू-
नय लीन्हें । तजिप्रयाग कुरुक्षेत्र सु कीन्हें ॥ ताके बंशजकौ-
रव गाये । भे कुरु के सुतचारि सोहाये ॥ भूप सुधन्वा सुधनुम-
हीपा । नृपति परीक्षित भे कुलदीपा ॥ चौथा सुत अरिमेजय
चारू । भयो धनुर्द्धर परमउदारू ॥ भयो सुधन्वाको सुतबीरा।
भूप सुहोत्र सरस रणधीरा ॥ दोहा ॥ नृप सुहोत्र के च्यवनसुत
ताके सुत कृतयज्ञ । चैद्योपरि चरतासुसुत भूपतिपरम कृतज्ञ॥
अंतरिक्ष गणनाशबसुताको हैं अवतारु । षटसुत यक तनया
लह्यो चैद्यो परिचरचारु॥ चौपाई ॥ नृपति बृहद्रथमगधाधीशा ।
अरु प्रत्यग्रथ बर अवनीशा ॥ नृप कुशअरु मनि वाहनशाल-
क । अरु पद्ु जाहिर युधिकर तालक ॥ सुतामत्स्यकाली अति

पावनि । पतिव्रता व्रत भवतहि भावनि ॥ तनय कुशाग्र वृहद्रथ केरे । तासुत वृषभल ये अरिखेरे ॥ तासुत पुष्पवानमहित्राता । नृपति सत्वहित तासुत ख्याता ॥ तासुत ऊर्ज सकलगुणखानी । तासुत संभव नृप गुरुज्ञानी ॥ ताके तनय भयोद्वै फारा । लखि अनिष्ट सो बाहर डारा ॥ लखि तेहि जराराक्षसीलीन्ही। सारकील दै सन्धित कीन्ही ॥ ताते जरासन्ध ह्वै राज्यो । बिशद बीर दश दिशिमें गाज्यो ॥ तासुत भे सहदेव नरेशा । तासुत उदायु तनय शुभभेशा ॥ तासुत श्रुतशर्मा महि शीक्षक ।मगध अधीश धीर जय ईक्षक ॥ कहँ सुधन्वा कुरु के बारे । तिनके बंशज कहि निरधारे ॥ नृपति परीक्षितके अबकाहिये। कौरवबंश बिदित जो लहिये ॥ सुवनपरीक्षित के जनमेजय । तासुत तीनि सुनो जनमेजय ॥ उग्रसेन श्रुतिसेन सुसेना । भीमसेन जिनकी पन देना ॥ ये सुत एक प्रियासों जाये । दूजीतियाएक सुत पाये ॥ दोहा ॥ सो जनमेजय को सुवन भयो सुरथबलवान । भूप बिदूरथ तासु सुत शीक्षक धनुष बिधान ॥ चौपाई ॥सुवनबिदूरथके बलवाना । भये ऋक्षनृप परमसुजाना ॥ भीमसेन ताके सुतजाने । ताके सुवनप्रतीपबखाने ॥ भेप्रतीपकेतीनकुमारा । सन्तनअरुदेवापि उदारा ॥ अरुबाह्लीकभेलीकनिबाहू। ता सुत सोमदत्तजय चाहू ॥ तासुत भूरिश्रवा भो भूपा । महारथी बिरुदैत अनूपा ॥ देवापी सन्तनके भाई । तेमुनिभये च्यवन ढिगजाई ॥ सन्तन नृप नृपसेवक जाके । भीषमभे अनुपमसुत ताके ॥ गंगासुत भीषम धनुधारी । इन्द्रीजित योगीशअचारी ॥ रही गन्धकाली तिय दूजी । सन्तन की प्रिय पावनि कूजी ॥ तासु दोय सुत जानत सिगरे । नृपति बिचित्रबीर्य्य हैं अगरे ॥ छोटे चित्रांगद गुणसागर । शूरबीर धनुधरमें आगर ॥ इच्छि कुमात्र शुद्धता चाहे । ये दोउबन्धु देह निज दाहे ॥ तिनकीतिया नेत्र पथ आनी । किये ब्यास क्षेत्रज सुतज्ञानी ॥ भूप पांडु

धृतराष्ट्र कहाये। भये बिदुर भागवतगनाये॥ पांडवकेसुतअर्जुन बीरा। ता सुत भे अभिमन्यु सुधीरा॥ तासुपरीक्षित भये सुसाजा। तासुत तुम जनमेजय राजा॥ दोहा॥ रही पांडुक्षितिपालकी शुभदा दुहिता एक। नाम सुभद्रा तासुको कीन्हें सहित बिबेक॥ शतसुतहैं धृतराष्ट्र के गांधारी सौबीर। तिनमें जेठेहैं नृपति दुर्योधन रणधीर॥ चौपाई॥ नृपति ययाति भूप के बारे। कहे पांचजे भूमि बिहारे॥ पुरुतुर्बसु अरु द्रुह्युसुखारे। अरु अनुयदुबर्मा दृढ़भारे॥ तिनमें पुरुकेबंश सुनाये। जे पौरवकौरव कहिगाये॥ तुर्बसुको सुत बह्नि बिख्याता। तासुतनयगोभानु सुदाता॥ तासुत मैत्रे सादिसु सानी। ताके सुत मारुतविज्ञानी॥ नृपति मरुत के दुहिताएका। भई सम्मता सहितबिबेका॥ नृपति ताहि सर्बत्रहि दीन्हें। सुत दुष्यन्त तासुनिज कीन्हें॥ सुत दुष्यन्तभूपको जायो। करुत्थामबर भूप कहायो॥ तासुत नृप अंकीड सुभेशी। भे ताके सुतचारिसुदेशी॥ केरलपार्थिव पाण्डु प्रबीने। अरु नृप गोलबीर रसभीने॥ नृप तुर्बसु के बंश बखाने। कहैं द्रुह्युके अब मनमाने॥ भये द्रुह्युके द्वैसुत नागर। ब्रह्मसेतु कुबदीप उजागर॥ नृप अंगार सेतुके बारे। तेहि यवनाश्व समरमें मारे॥ जाय जोबकीजाल अरूझे। चौदहमास युद्धकरि जूझे॥ ताको सुत गांधार महानो। ये ते द्रुह्युबंशनृप जानो॥ अब अनुबंशज भूप बखानै। अनुके पुत्र धर्मजगजानै॥ दोहा॥ तासुत धृति ताके दुदुह ताके तनयप्रचेत। प्रगटे तनय प्रचेत के नौविद भूतसुचेत॥ पुरुतुर्बसु अनुद्रुह्युके बरणि कहे ये बंश। अब आगे यदुको कहैं सुनिये नृप अवतंश॥

इतिश्रीगोकुलनाथकृतेभाषाभारतान्तर्गतेहरिबंशदर्पणेनवमोऽध्यायः ९॥

चौपाई॥ नृपययातिके सुत यदुज्ञानी। तिनके भये पांच सुत दानी॥ नृपति सहस्रद सदसंद ज्ञाता। अरु पयोद कोष्टामहित्राता॥ भूपनील अरु अंजिक जाने। ये यदुके सुतपांचब-

खाने ॥ तीनि सहस्रदके सुत कहिये । सो सुनि पुरुष सिंहमुद गहिये ॥ है हय हय ये दोय सुनामी । भूप बणु हय तृतियसु-धामी ॥ है हयनृपको पुत्र बिशाला । धर्म नेत्रभो अरिकुलका-ला ॥ भये कांति ताके सुत भूमर । नृपसाहंज तासुसुतकूपर ॥ ताके तनय महिष्मतमानी । भद्रसेन ताकेसुत ज्ञानी ॥ ताके सुत दुर्दम नरनाहू । कनकतासु सुत दीरघबाहू ॥ चारिकुमार कनकके जाये । ते कृतबीर्य कृतोज कहाये ॥ अरु कृतबर्मोकहैं सयाने । हे कृताग्नि चौथो सुनिजाने ॥ भो कृतबीर्य तनय भू स्वामी । कार्त्तवीर्य सहसार्जुन नामी ॥ अयुतबर्षकरि तप मन माना । दत्तात्रय सों लहि बरदाना ॥ सातोद्वीप अमलिसोंली-न्हें । शतशतमख प्राति द्वीपन कीन्हें ॥ जीति रावणै बांधिल-यायो । ताको आइ पुलस्त्य छोड़ायो ॥ तासों लरनयोग जे जोऊ । रह्यो न भूपै भूपति कोऊ ॥ दोहा ॥ बर्ष पचासी सहस सो कीन्हों भूमि बिहार । परशुराम तब कोपकरि कियो तासु संहार ॥ चौपाई ॥ शतसुत रहे तासुबरबीरा । तामेंबचे पांचरण-धीरा ॥ सूरसेन अरु सूर सुसूरा । नृपधृष्टोक्त कृष्णबलपूरा ॥ पँचयोंपूत जयध्वज पूता । कार्त्तवीर्यसुत बली अकूता ॥ भयो जयध्वजको सुतबांको । तालजंघ नृपबड़े भुजाको ॥ ताकेबंश भये बहुराजा । तामें वृष कै बिदित बिराजा ॥ वृषके मधु नृप मधुके बालक । भये वृषगण परजा प्रतिपालक ॥ मधुकेबंशज माधवख्याता । वृषण बंशजा वृष्णि सुज्ञाता ॥ यदुकेपुत्र सहं-सदनामी । तिनको बंशजये महिस्वामी ॥ यदुसुतजे क्रोष्टाब-रदानी । अब ताबंशसुनो नृपज्ञानी ॥ नृपक्रोष्टाकेही द्वैनारी । मंजुलमाद्री अरु गान्धारी ॥ गान्धारीके सुवन बखाने । हेअ-नमित्र जगतमें जाने ॥ भेअनमित्र भूपके बारे । भूप शिरोम-णि सुनि मुदभारे ॥ तासुसुवन सात्यकि बलभारी । तासुसुवन सात्युकि धनुधारी ॥ ताको सुवन असङ्ककहाये । तासुसुवनभे

भूमि सदाये ॥ ताके पुत्र जुगन्धर राजा । किये सदानयमिति
सतकाजा ॥ क्रोष्टा गान्धारीके अंशज । नृप अमित्रतिनके भये
बंशज ॥ दोहा ॥ यदुसुतक्रोष्टा भूपकी माद्री तिया सुजानि ।
ताके बंशज अब कहैं सुनो भूप सुखदानि ॥ चौपाई ॥ माद्रीसु-
वन युधाजित कूजे । भूप देवमी दुशहेदूजे ॥ नृपति युधाजित
के द्वै सुतभे । बृष्णि अंधते नृप नययुतभे ॥ भये बृष्णिके द्वैसुत
बीरा । स्वफलकअरुचित्रकरणधीरा ॥काशिराजभूपतिकीतन-
या । रहीयथार्थगांदिनीसनया ॥ सोस्वफलकभूपति कीप्यारी।
तासुतनय अक्रूर अचारी ॥ तासुअनुजहै बारह औरौ । सुत
स्वफलक नृपके सति सौरौ ॥ उग्रसेनकीसुतादुलारी ।सोअक्रूर
केरि प्रियनारी ॥ द्वैसुततिनसों भयेसयाने । ते प्रसेन उपदेवब-
खाने ॥ कृष्ण तनय दूजो महि त्राता । जो चित्रक स्वफलकके
भ्राता ॥ तिनके सुवनकहैंसो मानो । पृथु बिपृथुये जेठे जानो ॥
बाहु सुबाहु सुपाश्र्व सुसीवां । और सुधर्मा अश्वग्रीवां ॥ अ-
रिष्ट नेमि गवेषिण धीरा । अश्वबाहुसब गुणनगँभीरा ॥सर्मि-
ष्ठा श्रवणा द्वै कन्या । चित्रक नृपकी धनीसुधन्या ॥ क्रोष्टाअरु
माद्री सों जाये । दोय सुवनजो तुम्हैं बताये ॥ जेता युद्धयुधा-
जित कूजे । भूप देवमी दुशहे दूजे ॥ वंश युधाजितके येजानो॥
अब दूजेको सुनि सुखमानो॥ तियादेवमी दुखकी ज्ञानी । रही
अश्वकी सरससयानी ॥ तिनके तनय शूरनृप यतनी । भोज
बंशजाताकी पतिनी ॥ दोहा ॥ भये शूरके दश सुवन सुतापांच
शुभमेव । तिनमें सबतेंहैंबड़े भाग्यवानबसुदेव ॥ तासुजन्ममें
दुन्दुभी सुरन बजायो आम । तातेभो बसुदेवको आनकदुंदु-
भिनाम ॥ देवभाग गंडूष फिरि अनाधृष्टि अरु श्याम । देव
श्रवागृंजिम बहुरि बत्सावत अभिराम ॥ चौपाई ॥ अरुसमीक
कन बक उरआनो । तनय शूरके ये दशजानो ॥ जेठीपृथातदनु
श्रुतदेवा । पृथुकीर्ती श्रुतश्रवा सुभेवा ॥ अरु राजाधि देवि-

रा पांचौ । सुताशूरकीसुनि सुखरांचौ ॥ राजा सुकृत शूर सों मांगे । पृथा सुताते दै मुदपागे ॥ तेहिं निजसुता कियो भूस्वामी । पृथाभई तब कुन्ती नामी ॥ कुन्तिहि कुन्तपाण्डुको दीन्हें । लोक वेद बिधिसों मुद लीन्हें ॥ भेकुन्ती के तीनि कुमारा । नृपति युधिष्ठिर भीमउदारा ॥ और धनंजयक्रमसोंजानो । यमअरु बायुइन्द्रसोंमानो ॥कुंत्यभूमिपतिकोपतिपाई । देवश्रवाजगृहुसुतजाई ॥ वृद्धशर्मणाकोपतिलहिकै । पृथुकीर्तीसोंबरमुदगाहिकै ॥ दन्तबक्रसुत उतपति कीन्ही । उग्र तेजमें तेहि लखिलीन्ही ॥ शूर सुता श्रुतश्रवा कहाई । सो चद्यपति अनुपमपाई ॥ ह्वै शिशुपाल तासु सुत जायो । जो हिरण्यकश्यप कहिगायो ॥शूर भूपकी सुतासयानी । तिनकेबंश कहे नृपज्ञानी ॥ कहे सुवन जे दशगुणज्ञाता । तिनकेबंशसुनो अबताता ॥ जेठेनृप बसुदेव सोहाये । जाकेसुवन कृष्णगुण गाये ॥ दोहा ॥ देवभागगंडूष अरु अनाधृष्टअरुश्याम । देवश्रवागृंजमबहुरि बत्सावत अभिराम ॥ चौपाई ॥ अरु समीकिकन बक उर आनो । सुवन शूर के ये दश जानो ॥ देवभागके सुत बरज्ञानी । ऊधो भये परम परमानी ॥ अनाधृष्ट के सुवन बखाने । भयेनिनर्त जगत में जाने ॥ देव श्रवाके सुत सुखभोये । भेशत्रुघ्न शत्रुजित जोये ॥ देवश्रवाके सुवनसराहे । एकलब्य जे पर पुरदाहे ॥ वत्सावत के सुत नाहिंजायो । तब ताको करिकै मनभायो ॥ तेहि बसुदेव सुवन निज दीन्हें । कौशिकतेहिते निजसुत कीन्हें ॥ शूरसुवन गंडूष उदार । तिनकेभयो न आत्मजबार ॥ निजसुतचारि तिन्हें हरिदीन्हें । कृष्ण कृपामय करुणा चीन्हें ॥ तासुनाम कृत लक्षण चारु । चारु देष्णपंचाल सुचारु ॥ तंत्रिपालतंत्रित द्वैबारे । भेकनवकके परमदुलारे ॥ हनु बिश्वास दोयसुतबीरा । भेगृंजम के हरहितपीरा ॥ सुबुधिश्यामको सुवन सुशीला । भे सुमित्रसहसानरशीला ॥ सुतसमीककोपरमप्रबीना । भोअजा-

त अरिजय यशलीना ॥ हीवसुदेव भूपकीरानी। चौदह चातुरि चारु सयानी ॥ सबसों बड़ीरोहिणी रानी । फिरिमदिरापीहीं गुरुज्ञानी ॥ फिरि बैशाखी अरु सहदेवा । तदनु सुनामाकहि श्रीदेवा ॥ दोहा ॥ तिया शांति देवा सुरुचि देवरक्षितारानि । वृकदेवी अरु देवकी उहदेवी सुखदानि ॥ सुतनु सुतनु बड़वा बहुरि ये चौदह गनिलेहु । नृपमणिश्रीवसुदेवकी पतिनी सरससनेहु ॥ चौपाई ॥ पौरवनृप वाह्लीकयशीला । तासुरोहिणीसुता सुशीला ॥ आठ सुवन दुइदुहिताताके । नृपवसुदेव सुवश हैं जाके ॥ जेठे श्रीबलरामकहाये । फिरि सारणशठ दुर्दमगाये ॥ दमनश्वभु पिंडारकजानो । उग्रउसीनर येबसु मानो ॥ चित्रानाम सुता यकजाई । सोतन तजि फिरिताउर आई ॥ सोइ सुभद्रा भई सोहाई। जोपतिव्रतापार्थपतिपाई ॥ रामरेवती रमण उदारा । तासों प्रकट्यो निशठ कुमारा ॥ भये देवकीके सुतनागर । कृष्णकृपानिधि करुणा सागर ॥ भये शांति देवाकेबारे । भोज बिजय द्वै जय रुचिधारे ॥ गदवृक देवसुबीर करेरे । येद्वै सुवन नामतिनकेरे ॥ वृकदेवीके सुत जय ईक्षक । भये अनावह धनुधर शीक्षक ॥ सुता त्रिगर्तिराजकी ज्ञानी । वृकदेवीही सरस सयानी ॥ ताभूपति के रहे पुरोहित । शिशि रायण बरतप स्रज पोहित ॥ ताहि नपुंसक काहू भाख्यो । सोरिसते मनमें गहिराख्यो ॥ वीते द्वादश वर्षप्रमाना । तबलहि औसर करि अनुमाना ॥ गोपसुता लहि रति सुख लीन्हें । निज मनुशापन प्रकटितकीन्हें ॥ दोहा ॥ सोशापितहो अप्सरा गोपसुता जोबाल । मुनिसंग रमी अनेक दिन सहित सप्रेम सुचाल ॥ चौपाई ॥ सुवन एक प्रकट्यो तहँ तासों। तबसो गई स्वर्ग भरि भासो॥ मुनि निस्पृहनहिं सुतहिनिहारे। शोकानन तजिअनत विहारे ॥ रह्यो यमनराजा यककोई। लख्यो आइतहँ सोसुत सोई ॥ सोसुतलै नृपनिज सुत कीन्हें ।

कालयमन सोइ शिवबर लीन्हें ॥ कालयमन के रथके बाजी । रहे वृषभमुखबर जयसाजी ॥ सुनहु भूप जनमेजय ज्ञानी ।अब जोकहैं सरुचि शुचिबानी ॥ क्रोष्टा भूपतिके बलवाना । भयो एकसुत और सुजाना ॥ तासुनामवृज नीव सुनीको । तासुत स्वाहि सूर शुचिजीको ॥ ताके सुवन रुसद्गु सुवीरा । ताके पुत्र चित्ररथधीरा ॥ ताकासुत सरबिंदु नरेशा । तासुत पृथुश्रवाशुभभेशा ॥ ताकेसुत अन्तर महिस्वामी । ताकेसुत सुयज्ञ शुभ नामी ॥ ताके पुत्र उसत बिख्याता । ताके सुवन सिनेयु सुदाता ॥ ताकेतनयमरुत महित्राता । कम्बलबर्हिष तासुतज्ञाता ॥ शतप्रसूति तासुत सुखदायक । रुक्मकवचतासुत सबलायक ॥ तासुत अपराजितरणजेता । तासुतपांचभये जयलेता ॥रुक्मेयू पृथुरुक्म महाना । अरु ज्यामेघ अमोघ सुजाना ॥ दोहा ॥ पालित अरु हरिपांचये बर्णे बीर बिशाल । सुवन पराजितभूपके अरि वृन्दनकेकाल ॥ चौपाई ॥ भूपबिदेह ताहिनृपदीन्हें ।पालित हरिहै सुतमुदलीन्हें ॥ भेरुक्मेयु राज्य अधिकारी । भेपृथुरुक्म तासु सहचारी॥ येदोउमिलि बिरोधहियधारी । लरिज्यामेघहि दियो निकारी ॥ तेमुनि सँगबसिमुनि सोपाये । शस्त्रमंत्रजे जय बिधिज्ञाये ॥ तबचढ़ि रणज्यामेघ सचायक । बिदितबीरबरबिना सहायक॥ नदीनर्मदातटभटभारे । रिच्छवन्तगढ़पतिकहँमारे ॥ बसितहँ राज्यकियो सबिबेका । हियेटिकाये रणजयटेका ॥ हे ज्यामेघ भूपकीरानी । सैब्यानामप्रगल्भामानी ॥ रह्योनभूपति पुत्रउछाहू । तियभयकरैनदुतिय बिबाहू ॥ जीतिकहूं भूपति की दुहिता । ल्याये निजतिय हितकरि सुहिता ॥ लखिसैब्या बोलीरिसभारे । यहको तियहै साथ तुम्हारे ॥ सुनिडरि भूपति कहा बिचारी । पुत्रबधू यहतिया तुम्हारी ॥ तबतेइँ कहा मूढ़ मति होहू । पुत्रहीन किमि लह्यो पतोहू ॥ कह्यो भूपमति रिस उर आनो । सुत भविष्यकी पतिनी जानो ॥ तबवह सुताकियो

तपभायो । ताकेभाग्य भूपसुतपायो ॥ भोज्यामेघ भूपकोबारा । ताकोनाम विदर्भ उदारा ॥ ताकेभये तीनि सुतमानो । लोम पाद क्रथ कौशिक जानो ॥ दोहा ॥ लोमपादके बभ्रुसुत ताके सुत आह्यात । तासुत कौशिक चेदिता तासुत चैदि विख्यात॥ चौपाई॥ भोविदर्भके सुतयक औरौ । बलगुण गर्वगहे जोगौरौ॥ भूपति भीमभूरि बलभीमा । एक विहित जोविदित महीमा ॥ तासुत कुन्ति नीति विधिचीन्हे । जेकुन्तहि निज तनया कीन्हे॥ ताकेतनय धृष्ट क्षितिकन्ता । तासुतीनि सुत गुणनि अनन्ता ॥ नाम अवन्त दसाह सुहावन । बिषहर परपुर दुन्द मचावन ॥ सुत दसाहके व्योम सुनीता । ताकेसुत जीमूतपुनीता ॥ तासुत वृहती अरिदल कूटन । तासु भीमरथ परपुर लूटन ॥ ता सुत अनरथ रिपुरथ खूंदन । दशरथ तासु दुवन दलदूंदन ॥ तासुत शकुनि सुशील सराहे । तासु करम्भ सुनय जेचाहे ॥ देवरात तासुत असिबाहक । तासु देवक्षिति वरयश चाहक ॥ तासुत मधु मंजुल महिभरता । तासों द्वै सुत अरिदल दरता॥ मरुबस सत्वसत्य प्रतिपालक । पुरद्वान मरुवसुके बालक ॥ तनय सत्वके चारि उजागर । कौशल्या सों भे गुणसागर॥ नृप भजमान देवभृतजानो । अंधक वृष्णिभूप येमानो ॥ द्वैभजमान भूपकी रानी । तिनमें बड़ी बाह्यका ज्ञानी ॥ उपबाह्यकी दुतिय सयानी । भये बाह्यकाके सुतदानी ॥ दोहा॥ धृष्ट बिदूरथ ब्रमन कृम और पुरंजय पाठ । अयुताजितसुसहस्राजित सतजित स हयेआठ॥ चौपाई ॥ उपबाह्यकके सुत बलभारी । देववृद्धभे भूत लचारी ॥ सुवन सपूत हेत ब्रतधारी । कीन्हींतपकै पर्णअहारी॥ जाय सरिततट संध्याकरहीं । लहित्रिकाल जलपरशन करहीं॥ नृपकी चित्तवृत्तिशुचि देखी । सरिता भये प्रसन्न बिशेखी ॥ तब कै मूर्तिमान वहसरिता । कहोभूपसों सरुचि सुचरिता ॥ क्षितिपति अबनिज इच्छित भाखौ । कियेकर्मको शुचिरसचा-

खौ॥ भूपति कही कृपायह कीजै। मोहिं सदृश मोहिं शतसुत दीजै॥ सुनितेइ गुणी तियाको ऐसी। भागवान शुचि सुहृद सदैसी॥ जो ऐसो सुत उतपति करिहैं। भूपति अतिआनँद सोभरिहैं॥ यहगुणि आपुहिशुचितन धारी। भईभूपकी पतिनी प्यारी॥ रमितासों भूपति मुदलीन्हें। बभ्रुनाम सुत उतपतिकीन्हें॥ ताकेपुत्र पउत्र बिधाना। भे बंशज शतसह बलवाना॥ जेभजमान भूपके बारक। बीर बिदूरथ बैरि बिदारक॥ नृपराजाधि देवसुतताके। दत्तअदत्तसुवनभेजाके॥ तीजोसुत सोणाश्वहि जानो॥ चौथश्वेत बाहनको मानो। सुवन दत्तके अरिबल खोऊ। समीदण्डशर्मा ये दोऊ॥ श्रवणा अरु सरमिष्टा तनया। दत्तभूपकी शुचिरुचि सनया॥ भे प्रतिक्षत्र समीके जाये। तासुत स्वयंभोज जगभाये॥ ताकेसुवन हृदीक बिख्याता। ताकेबहुततनय गुणज्ञाता॥ जेठे कृतबर्मा गुणज्ञाता। भिषगु सुधन्वा भीमहि त्राता॥ तनया दोय कामदा नामी। कामदंतिका लह्यो सुस्वामी॥ इनके बंशज शतसह जानो॥ सबको धीरवीर अनुमानो॥ दोहा॥ सत्वा भूपति के सुवन नृप भजमान उदार। ताके बंशज ये कहे नरपति सह बिस्तार॥ चौपाई॥ सत्वाकोसुत अंधक भाखा। सुनो तासु बंशजकी शाखा॥ नृप दृढ़ाश्व की तनया चारू। ताके अन्धक नृप भरतारू॥ तिनसोंभये चारिसुतउतपाति। तिनमें बड़े कुकुरभे नरपति॥ अंभजमान तदनु सम सांचे। कंबल बरहिष बर जस रांचे॥ तनयकुकुरके धृष्णु कहाये। ताकेसुवन कपोतर गाये॥ तैतिर नृपतिभये सुतताके। प्रकटे सुवन पुनर्वसु जाके॥ ताके सुत अभिजित महिनाथा। ताके भये सुतासुत साथा॥ सुता आहुकी भई सुशीला। आहुक नामक सुवन यशीला। नृप अवंतिपति निज समजानी। दियोआहुकी सुतासयानी॥ भे आहुकके दोय कुमारा। देवक उग्रसेन बलभारा॥ देवकके सुत

चारि बखाने। देववान उपदेव सयाने॥ अरु सुदेव शुभकारज कर्ता। और देव रक्षित हिय हर्ता॥ तनया सातदेव की आदी। और शांत देवीशुभ बादी॥ देव रक्षिता अरु उपदेवी। श्रीदेवी अरु शुचि वृकदेवी॥ सतईसुता सुजान सुनामा। सबवसुदेव भूपकी बामा॥ नवसुत उग्रसेन के जानो। कंस न्यग्रोध सुनामा मानो॥ कंकुसु भूमिप सुधनु सुधन्वी। राष्ट्रपाल अरु शंकु समन्वी॥ अनाधृष्ट बल धीरज गेहू। पुष्टिमान ये नव गनिलेहू॥ दोहा॥ कंसा कंसवती सुतनु कंकाजेहि प्रियसांच। रहीराष्ट्रपालीसहित बहिनिकंसकीपांच॥ यदुवंशजपरधानजे बरणिसुनायेभूप। बीरधीरदाताबिदित जेतायशीअनूप॥

इतिश्रीहरिवंशदर्पणोनामदशमोऽध्यायः १०॥

चौपाई॥ यदुसुतक्रोष्टानृपकीनारी। मंजुलमाद्री औ गान्धारी॥ गान्धारीमहिषीके जाये। भूपतिजे अनमित्र सदाये॥ माद्रीपुत्र युधाजित कूजे। और देव मीढुषहैं दूजे॥ तिनकेबंशभेद ब्यवहारा। प्रथमहिं कहा सहित बिस्तारा॥ और एक माद्रीके जाये। ते भूपति अनमित्र कहवाये॥ अनमित्रके सुत निघ्न महीपा॥ ताके दोय तनयकुल दीपा। नृप प्रसेन सत्राजित जेता। बिदितबीर बिरदैत सचेता॥ सब यदुवंशी कृष्ण समेता। बिहरैं द्वारावती सनेता॥ सत्राजित हे सूर्यअराधक। परमभक्त अबिछिन्न अबाधक॥ ते यकदिवस समुद्रतटजाई। रबि सन्मुख ह्वै बांह उठाई॥ रहि तहँ खरो खरीलय लाये। ह्वै प्रसन्न रबि भूपै आये॥ रबिहि समीपहुँआये लेखे। तेजपुंज नहिं मूरति देखे॥ तब नृप कह्यो सूर्यसों ऐसे। देखतरहे तुम्हें प्रभु जैसे॥ नभ पै तैसे इतहूं लेखैं। तेज पुंज मैं मूर्त्तिन देखैं॥ सो सुनिरबि निजगरसों तूरी। मणिस्यमन्त धरिलीन्हेंदूरी॥ तब रबि सौमि तेज ह्वै भाये। नृप ह्वै सुचित मूर्त्तिलखिपाये॥ दोहा॥ करिसंभाषण भूपसों रबि चढ़िचले बिमान। मांग्योनृप

सेमन्त मणि दियोसूर सुखदान ॥ चौपाई ॥ सोमणिबांधि कंठमु-
दजोहे । भूपति भूमि सूर्य ह्वै सोहे ॥ सत्राजित सो मणिमुद
लीन्हें । नृप प्रसेन जित भाइहि दीन्हें ॥ सो मणिदेखि कृष्ण
प्रभुमांगा । दिये न सो शठ लालचपागा ॥ सोचलिमणिसह
बिपिन बिहारेसि । मणिहित ताहि सिंह तहँ मारेसि ॥ मणि
लहि ह्वै वह सिंह असूदै । लाग्यो बनमें इतउत कूदै ॥ मोहित
लखितेहि बिधि रिसिआई । जांबवान मणि लियो छड़ाई ॥
जब सेनाजित घरनहिंआये । तबता गुरुजन कपट बढ़ाये ॥
मांग्यो कृष्ण न तेइँ मणिदीन्हा । ताते ताहि मारितिनलीन्हा॥
कहन लगे इमि सबै अयाने । सो सुनिकै हरिअनुचित माने ॥
प्रभुलै संग सुभट शुभभेशा । लगे लगन करि बिपिनप्रवेशा ॥
तहां मरो तेहि नृपको देखे । ताके कंठन सो मणिलेखे ॥ च-
लि आगे सब सिंहानिरेखे । ऋक्ष चरण तहँ उपटे पेखे ॥
उपटे चरण लखत चलिआगे । दीरघ गुहादेखि मुद पागे ॥
सुन्यो तहां बाणी यहि भावै । ऋक्ष सुतहि जोधाय सुनावै ॥
उरप्रसेनको सिंह बिदास्यो । सिंहहि जाम्बवान गहि मास्यो ॥
कततुम रोदन करत कुमारा । है यह चारु स्यमन्त तुम्हारा ॥
सो सुनि सबहि राखि बिलद्वारे । प्रविशे कृष्णरोष बरधारे ॥
जाम्बवान हरिकहँ लखिझपट्यो । घोर सजोर शब्दकरि लप-
ट्यो ॥ दोहा ॥ ह्वै सक्रुद्ध सो उद्भट बाहु युद्धकरि घोर । यक-
इस दिनपै जानिप्रभु पर्योपाय सहजोर ॥ जाम्बवती कन्या
दियो अरु स्यमन्तमणि चारु । सो लै मोदित द्वारका आये
कृष्णउदारु ॥ चौपाई ॥ सोमणि सत्राजित कहँ दीन्हें । झूठो
लांछन लोपित कीन्हें ॥ हींसत्राजित के दशनारी । तिनकेशत
सुत भूमि बिहारी ॥ तिनमें तीनिप्रसिद्ध सुकामी । हेमंकारबात
पति नामी ॥ बियत्स्नातये सुत त्रयमानी । तनया तीनिप्रबीण
बखानी ॥ चारु सत्यभामा अरु ब्रतिनी । प्रस्वापिनि हरिरति

रस रतिनी ॥ सत्राजित नृपनिज भलचीन्हे। तीनोंसुता कृष्ण कहँ दीन्हें ॥ द्वैसुतभाग राजके जाने। नृप सभाक्ष नारियबखा- ने ॥ ऋच्छजीति जो मणिप्रभु ल्याये। सत्राजित को दै सुख पाये ॥ नित्य सुवर्ण भरै मणिसोई। रहै तहां न अवर्षण होई॥ यह गुणलखि अक्रूर लुभाने। मणिलीबे को मत हियमाने ॥ सुनि पाण्डवको कौरवजारे। कृष्णराम तहँ गये पियारे॥ तब अक्रूर सुअवसर पाई। शतधन्वाको मंत्र सिखाई ॥ सत्राजित को हतिमणिल्यावो। निशिमें हमको दै मुदपावो ॥ शतधन्वा तेहि हति मणिलीन्हें। सहितप्रेम अक्रूरहि दीन्हें॥ कह्यो अ- क्रूरकरो पनभाई। हमैं दियोतुम जो मणिल्याई ॥ सो मतिका- हुहि भेदबतावो। कियो कष्टजो वासोंपावो॥ दोहा॥ पितामरण लखिदुखित ह्वै सतिभामा रिसियाइ। रथचढ़िजाइ गोविंदपै कहीदशा बिलखाइ ॥ चौपाई ॥ सुनि हरितहांसात्यकिहि राखे। आपद्वारका गेरिसिराखे॥ शतधन्वाकोघेर्योजाई। लख्योनिकसि सोसन्मुख आई ॥ कछुक्षण लरि फिरिचल्योपराई। रथमेंएक अश्वनीलाई॥सोबाजिनि शतगामिनिनामा। शतयोजन चलि मरीसुकामा ॥ तबशतधन्वा भयसोंपाग्यो। रथसोंउतरिपयादे भाग्यो ॥ पीछे रामकृष्ण तहँ आये। रथकी दशादेखि सुखपा- ये ॥ निजरथ सहतहँ रामहि राखी। ता पीछे हरिचले सुसा- खी ॥ लखिताको इमि कियो झपेटैं। जिमिगयन्दको सिंह द- पेटैं ॥ मिथिलापुर पहुंचत तेहि मारे। तेहिमणि बिनु ताकंठ निहारे ॥ फिरिगे भ्रातापै मुदपागे। रामलषणको सो मणिमां- गे ॥ कह्यो रामसों कृष्णबुझाई। तासोंरह्यो न सो मणिभाई॥ सो सुनि रामकपट अनुमाने। मिथ्यावचनजानि रिसियाने ॥ रूसिजाइ मिथिला सुखसाजे। मिथिला पतिसों पूजितराजे॥ लहि मणिकनक प्रसूतिसुखारे। गुणि अक्रूर यज्ञपन धारे ॥ नित्यनिरंतर शुचिमख करहीं। दैअसंख्य दक्षिणमुद भरहीं ॥

साठिबर्ष यहिविधि मखकीन्हें । मणिप्रभाव सो काहूचीन्हें ॥
सतमारग मैं रततेहि लेखे । कहिनसकै कोऊ बिनुदेखे ॥दोहा॥
यहिअन्तरमें रामपै मिथिलापुरमें जाय । गदायुद्ध सीख्योसु-
भट दुर्योधन नृपराय ॥ चौपाई ॥ अंधकि वृष्णिरामपै आई ।
सहितकृष्ण लैगये मनाई ॥ मणिकारणकै अंतरत्रासी । भेअ-
क्रूर दूरिके बासी ॥ गे अक्रूर दूरिकढ़ि जबते । भो निजदेश
अवर्षण तबते ॥ तब अंधक नृपजाइ बुझाये । अक्रूरहि निज
पुरमहँ ल्याये ॥ सुनहुभूप तब मणिकेभेवा ॥ बर्ष्यो द्वारावति
में देवा ॥ सुधिअक्रूर कृष्णकहँ दीन्हों । निजतनया हिय आ-
नँद लीन्हों ॥ सभामध्य अक्रूरहिदेखी । कह्यो कृष्णबाणीरिस
भेखी ॥ मणि स्यमन्तहै तुम्हरे गेहू । निजभल चाहि हमैं सो
देहू ॥ सुनिअक्रूर न उत्तरभाखे । सो मणि हरिके आगेराखे॥
लखिसो मणिप्रभु निजकर लीन्हें । कैप्रसन्न अक्रूरहि दीन्हें॥
बांधि कंठमणि मुदसों मोहे । नृप अक्रूर सूरसम सोहे ॥ जा-
म्बवानके घरके द्वारे । प्रभु जे सुन्यो शब्द पुनधारे ॥ भांदों
चौथि चन्दजो देखे । हियकलंकके भयसों भेखे॥ तौ वहशब्द
पठन जो लागै । झूंठकलंक न ताको लागै ॥ हिय प्रसेनको
सिंहबिदार्‍यो । सिंहहिजाम्बवान गहिमार्‍यो ॥ कतरोदन तुम
करत कुमारा । है यहचारु स्यमंत तुम्हारा ॥ श्लोकः ॥ सिंहः
प्रसेनमवधीत्सिंहोजाम्बवताहतः । सुकुमारकमारोदीस्तवह्ये
षस्यमन्तकः ॥ दोहा ॥ तीनिबारयहिजो पढ़ै निश्चयसों हिय
भेखि । झूंठकलंक न त्यहिलगै चौथि चन्दको देखि ॥ फिरि
बूझ्यो मुनिराज सों जनमेजय क्षितिपाल । बिदित बिश्वभर
बिष्णु की पावनि कथारसाल ॥ छन्द ॥ शुचि सुबुधि सकल
पुराणबिदसों सुरुचि यह बाणीलहै । भे बिशद बिष्णु बराह
ताकर शुभकथा सुनिबो चहै ॥ आचरण चरित सुभाव का-
रण रूपगुण तिनके कहो । अरु बिश्व सृजभगवान कत बसु-

देवके सुतभे अहो ॥ जेहि अखिल अमर विरंचि आदिक ध्यान धरि लखि हृदिधरे। निज लोक तजि यहि लोकप्रभु ते नरनसँग क्रीड़ाकरे ॥ जो रचत पालतकरत गोपन विश्व वहुविधि वहु घने। ते गोप कहवाये स्वरुचिगोपाल गोपीपति बने ॥ अरु विविध बिधिके विविधविधि सों विविधवर वि-धिसों भये। बहुविश्व जाकेउरवसत उरवाससोप्रभु कतलये॥ तेयज्ञते यज्ञांगताई यज्ञ कारक यशयशी। तेयुगुति पावकज्य जन जाहिर वासुकीरति पगवसी ॥ जे वरणविद्यावेद व्यापक चरअचर समुदायहैं। क्षण आदि जुगपरयन्त ताके भेद मैं जे काय हैं ॥ जेगरुड़गामीक्षीर सागर शयनकर अभिरामहैं।जेहि भजे गोपीनाथ जन गणलहत आनँद धाम हैं ॥ वात्र्मा ॥ और एक। वातनेक ॥ तासुभेद। का अखेद ॥ दोहा ॥ रससों शोणितहोतअरु शोणितही सों मासु। होतमाससों मेदहढ़ होतहाड़ फिरितासु ॥चौपाई ॥ तासों मज्जाहोत गोसाईं। तासोंहोत शुक्र शुभठाईं॥ होतशुक्रते गर्भबिधाना। सबकोमूलकरस परधाना ॥ ताते प्रथमभागरस जानो। आकर तासु सुधाकरमानो ॥ ताते सोमात्मक सबकोई। शुक्रहिकहत अनुक्रम जोई ॥ द्वुतियभाग जो रज रमणीके। सोपावक आतमकहैं नीके ॥ हैं कफवर्ग शुक्र सुनि जाने। रजकहँ पित्तगर्व अनुमाने॥हृदय होइकफका अ-सथाना। रहत नाभिमें पित्त प्रधाना ॥ है मन नित्य हृदयको बासी। मनकोदेव चन्दसुखरासी ॥ नाभिदेश रजपित्त सुभेवा। ताके सदा हुताशन देवा ॥ रज अरु शुक्र एकतेक्कैके। बाढ़ैअ-म्बुदसम दोउभैके ॥ तब तेहि गर्भ मध्यशुभ देशा। करिईश्वर मयवायु प्रवेशा ॥ अंगभेद प्रकटितकरि पोषैं। तामेंआपुपांच कै तोषैं ॥ प्राणअपान समान कहाये। अरु उदान अरु व्यान गनाये ॥ अघअपान हृदिप्राण बिचारैं। अरु उदान ऊरधसंचारैं ॥ नाभिदेशमें बसै समाना। सर्व देहमें बिहरै व्याना ॥

ऐसी दशा देहकी जानों । पंचभूत में सो अनु मानों ॥ दोहा ॥
पृथ्वीबायु अकाश जल अग्निपांचये भूत । दशइन्द्री तेहैं सबै मनयन्ताके सूत ॥ प्राणबायुतनु भूमिमैं चक्षुज्योति मैं चारु । रंध्र अकाश अदृश्यजो जलप्रसेद अरुलारु ॥ सबप्रकार निर्मित कियो न्यामक ईश्वरजौन । सोइ आपु प्रभुनर भये सो यह कारणकौन ॥ गर्भ बास को महत दुख बरणत हैं सबकोय । तासुबास ईश्वरकियो कहोकौनगुणहोय ॥ चौपाई ॥
इतनो प्रश्न भूप कहिलीन्हें । तब मुनिबर यह उत्तरदीन्हें ॥ अहोभूमिपति तुमबड़भागी । पावनिबिष्णुकथा अनुरागी ॥ निमिषमात्र प्रभुमें मनलावै । सोअपूर्व उत्तमपदपावै ॥ नृपतुम भाग्यवान सबहीते । जो प्रभु कथाश्रवण चित चीते ॥ एकमूर्ति प्रभु की सुखरासी । ज्योतिराशि वैकुंठ बिलासी ॥ द्वितिय क्षीरसागरके बासी । सहितयोग मायाशुभदासी ॥ सहसचौकड़ी युगपरमाना । सोयजागितेकरि अनुमाना ॥ नाभिकमल पै बिधिहि बिलासैं । ताहित मधुकैटभको नासैं ॥ रचैं जगत ब्रह्मा मनभाये । जेहिप्रकार पीछू कहिआये ॥ प्रभु जेहिहेतु लेत अवतारा । सो अब सुनियेभूप उदारा ॥ जबजब दैत्यहोहिं मदमाते । अति उतपातकरैं रिसराते ॥ तबतब धर्मलोप जगहोई । दुखित होहिंऋषि सुरसबकोई ॥ तब प्रभु लै अवतार महाशै । करुणानिधि खल को कुलनाशै ॥ असुरहिरण्यनयनमदभारा । ह्वैबराहताकहँ प्रभुमारा ॥ यज्ञअंग जितनो श्रुतिधारो । तेबराह प्रतिअंग बिचारो ॥ ताते यज्ञबराहबिख्याता । धर्योदशनपै महि हिमत्राता ॥ जल प्रबाहमें बूड़त देखी । ऊरधकियो लोकहितपेखी ॥ दोहा ॥ यह बराह की शुचि कथा तुम्हैं सुनायो भूप । अब सुनियेनरसिंहके पावनचरितअनूप ॥
तोमर ॥ शुभसत्ययुगमेंआम । जुहिरण्यकश्यप नाम । खल दैत्य बर बल धाम । तप कियो अति अभिराम ॥ दोहा ॥ सहस

इग्यारह पांचशत वर्ष निरम्बु विधान । तपत देखि बिधिआइ तब कह्यो मांगु बरदान ॥ चौपाई ॥ ह्वै मोदित तब तेइँ बरमांगा। सब जग जीतनके पन पागा ॥ देव असुर गन्धर्व कहाये । किन्नर यक्ष पिशाच गनाये ॥ अरु मनुष्य ऋषि तप बल भारे । हौंन मरौं प्रभुइनके मारे ॥ अस्त्रवेद अरु पर्वत भारी । तिन सों सकैन म्वहिं कोउमारी ॥ सूखेवादे आयुध जेते । मोतन व्यर्थहोहिं सबतेते ॥ इनते इतर निरायुधआवै । करै पराक्रम जो वहि भावै ॥ सोसुनि एवमस्तु कहिवेधा। सुरसेवित गे स्वर्ग सुमेधा ॥ वर प्रभावअति उग्र निरेखी । सुरन कह्योबिधि सों भय भेखी ॥ प्रभु जिमिबर दीन्हें तुमवाको । निर्मित मृत्यु करो तिमिताको ॥ सुनि बिधिकह्यो सुनोसबकोई । तप प्रभाव मिथ्या नहिं होई ॥ तप फल भोगि गर्व हिय भारे । मरिहिबिष्णु सों उदर बिदारे ॥ ह्वै हिरण्यकश्यप बलभारी । जीतेसि तीनि लोक धनुधारी ॥ तब सुरगये बिष्णु पै धाये । आरत ह्वै निज व्यथासुनाये ॥ प्रभु सुरगणकहँ साहस दीन्हें । ता बध करिबेको पन कीन्हें ॥ घनसम बपुघन वोज कठोरा । करि घन बेग घनस्वन घोरा ॥ ह्वै सक्रुद्ध नरहरि बपुधारे। दुष्ट दैत्यको उदर बिदारे ॥ दोहा ॥ जेहि हित प्रभु नरसिंह भे सो वर्णे क्षितिपाल । अबकहियतु जेहि हेतभे बामन बिदित बिशाल ॥ रोला ॥ शक्रहूवे हेत बिरच्यो बलिमहत मखजूप । तब बिनयसुनि पुरुहूत के प्रभु भये बावन रूप ॥ जाय बलिपै मांगिसाढ़े तीनि पग महिपाय । लगे नापनताहि ह्वै अति अमल उन्नत काय ॥ दोहा ॥ तहँ प्रभु के कटि जानुलौं भये निशेश दिनेश । तादिनकी सुखमान कहि सकैं शारदा शेश ॥ चौपाई ॥ सकल लोक अमलत लखिधाये । असुर जिते पहिले कहि आये ॥ दिति अरु दनुके बंशज जेते। प्रभुसों हतेगये तहँतेते ॥ फिरि प्रभु बलिहि पतालपठाये । सहसुरशुक्रसरस सुखपाये ॥ फिरि

प्रभुलै अवतार सुहावन । दत्तात्रेय भये चित चावन ॥ वेदधर्म को लोपनिरेखी । भयेअत्रिके सुवनसुभेखी ॥ बेद धर्म्मसखबर्ण बिबेका । रोपित कियो सुरीति अनेका ॥ दत्तात्रेयहि पूजिसुजापी । कार्तिबीजभो परमप्रतापी ॥ प्रथमरह्यो सोद्वै भुजगायो । लहि प्रभु कृपा सहसभुज पायो ॥ सातद्वीपको पतिह्वै राज्यो । माहिष्मती पुरीबासि गाज्यो ॥ ताको पापकर्म लखिकोपी । भे प्रभु परशुराम पन रोपी ॥ परशुराम जयशब्दनिबेदन । कियो तासुबध करिभुज छेदन ॥ बार एकैस जीति महि लीन्हें । सो बिधिवत बिप्रनकहँ दीन्हें ॥ अब नृपचित्त एकते ल्याई । सुनु सप्रेमहिय भक्तिबसाई ॥ जेहि बिरञ्चि सनकादिक ध्यावें । सो उदार अवतार बतावें ॥ भवसागरको सेतु सोहायो । जासुनाम शुभधाम गनायो ॥ प्राणपयान समय ज्यहिनावें । बसिकाशीमें शंभु सुनावें ॥ दोहा ॥ राम नाम अभिराम अति महिमा सागर चारु । अमलअगाधि अभौर शुचि अनुपम सरलसुतारु ॥ श्री श्रीपति सियरामह्वै कीन्हीं भूमिबिहार । सहकारण सोसुनि सुजन अवशिलहत भवपार ॥ बिधिबर लहि अतिप्रबलह्वै रावण निशिचर राज । सुरसुरपति अरु ऋषिनको कीन्हेंमहत अकाज ॥ रोला ॥ लंकपतिके कर्मकुत्सित देखि अतिदुखपाय । भूमिधरि गोरूप बिधिसों कही बहुबिधिजाय ॥ कहीसो सुनि समुझिबिधा सहित सुरऋषि भीर । समुद करुणा समुद ढिगगे पयसमुदके तीर ॥ कियो स्तुति सरुचि रचिरचि जोरिकरसुखपाय । भक्ति बत्सल प्रकटभे प्रभु दिशाप्राची आय ॥ रमासह इमि गरुड़ पै प्रभु सूर परमापूर । उदय गिरिपै उदित मानहुँ कला कोटि नसूर ॥ तोटक ॥ मुदमें सुनिकै बिनती बिधिसों । बिधिके मन की करिबो बिधिसों ॥ कहिकै हरिअन्तरध्यान भये । सुरसह करता निजधाम गये ॥ चौपाई ॥ पूरणब्रह्म बिश्वपति स्वामी । रमारमण नागान्तकगामी ॥ जनहित हेति हरषि पुरुषोत्तम ।

ा नरेन्द्रअज इन्द्र पुरोगम ॥ सुनहुतासुशुभ चरित नरेशा।
ाहि सुनि रहै न पातकलेशा ॥ बिधिकीबिनय मानिमुदभारे।
ा दशरथके सुवन सुखारे॥ शंख चक्र सह गदा सुखारी। भये
ाहि ह्वै चारुसुचारी ॥ राम भरथ अरु लषण पियारे। अरु
ात्रुघ्नभये लघुबारे ॥ रामहि परब्रह्म नृपजानो। अनुजतीनि
ांखादिक मानो ॥ रचिरचि बालचरित चितचावन। बहुबिधि
बेहरिभये मनभावन ॥ ह्वै कछु दिनमें सुभग सयाने। गाहि
ारधनु बिधि धनुधर जाने ॥ कौशिकबचन मानिमुदलीन्हें।
दशरथ नृप कौशिक कहँदीन्हें ॥ अति अभिरामराम सब जा-
मेहि। पुरुषसिंह लक्ष्मण अनुगामिहि ॥ मगमें मारि ताड़कै
स्वामी। गे मुनिबन शतरबि समधामी ॥ तहँ मुनियज्ञ विध्वं-
सनहारे। आदि सुबाहु दैत्यबहु मारे ॥ लखि मारीचहि शर
एकछाड़े। सो लैगयो समुदतट चाड़े ॥ ऋषिसह चालि तहँते
मुदधारे। गौतम घरणि अहल्यहि तारे ॥ तहँ ते चलि सुरस-
रिततटजाई। सुनिकेवटसों बिनय सोहाई ॥ दोहा ॥ सुरसरिउत-
रिउदारप्रभु ऋषि अरु अनुज समेत। लखे मनोहर मंजु पुर
मिथिला कृपानिकेत ॥ महिधरी ॥ तहँ पुहुमिपति मिथिलेश को
पण परम प्रिय सुनिमुदभरे। करधनुष धरिसो धनुषधरिकरि
द्विधाधरणी पै धरे ॥ निज प्रियापरमा पूरपावन कराणि सिय
तेहि पुनिबरे। करिलोकरीति सप्रीति फिरि निज तेज भृगुपति
सोंहरे ॥ सुख अवधिजाय सुअवधपुर बरबर्ष द्वादश लौंरहे।
पितु बचन मिसि सियलषणसह फिरिसुरन हित बनमगगहे॥
लहि शृंगबेर निषादपै करि कृपा फिरिसुरसरितरे। लखिसुमु-
नि भारद्वाजको फिरिउतरि यमुनाजल खरे ॥ चलिबालमीकि
मुनीशसों मिलि चित्रकूटहि चाहिकै। कछु दिननमें तितभरथ
आये तेहि सुबचननि पाहिकै ॥ शुचिपादुका दै बिदाकरिफिरि
अत्रिमुनिपै प्रभुगये। तब तहांते चलिनदी तरिलखि बाधि

बिराधहि बरदये ॥ फिरिसुवनदण्डक चाहि जेहि तरुबलि अ-
तिहि सुन्दरजमे । सरभंगसुत पशु तीक्ष्ण मुनिगण सहित तहँ
बहुदिनरमे ॥ करि कुम्भसंभव सों समागमजाय पंचबटीबसे ।
ते धन्य गोपीनाथ जाहिय बनबिहारी प्रभुलसे ॥ तोटक ॥ तहँ
रावणकी भगिनी बलमें । तहँ सूर्पणखा ठगिनी छलमें ॥ चित
चावन सों अति चातुरि ह्वै । प्रभुपास गई मदनातुरि ह्वै ॥
दोहा ॥ प्रभुकी आज्ञा लहि तहां लक्ष्मणबीर निशांक । सूर्पण-
खा को गहिलियो काटि कान अरुनाक ॥ चौपाई ॥ तासु सहाय
निशाचर धाये । चौदहसहस महत बलआये ॥ खरदूषण त्रि-
शिराबल भारे । क्षणमें तेहि श्रीराम सँहारे ॥ तब सो देखि रु-
दनकरिभागी । रावणके ढिगगई अभागी ॥ ताकी दशादशा-
नन सुनिकै । गो मरीचपै हिय कछु गुणिकै ॥ करि बिचित्रमृग
ताहि पठायो । पीछे आपु धूर्त्त बनिआयो ॥ लखिबिचित्र मृग
प्रभु पहिचाना । निज संकल्प हिये अनुमाना ॥ करितब सि-
यहि अग्निमें लीना । किय माया आसन आसीना ॥ लषणहि
राखि तासुरखवारी । बध्योजाइ तेहि असुर बिचारी ॥ मर्‍यो
रामवत बचनसुनाई । सो सुनि लषणहिं सियापठाई ॥ माया
सियपै रावणआई । हरिलै चल्यो सुरथ बैठाई ॥ लखिजटायु
तेहि पक्ष न मार्‍यो । एहँ जटायु को पक्ष बिदार्‍यो ॥ शेषप्राण
ह्वै परे जटायू । गयो सियहि लै सोलघुआयू ॥ प्रभु फिरिआइ
सियहि नाहिं देखे । ब्याकुलतासों निजहिय भेखे ॥ यह सुनि
भूपति भ्रममति कीजो । लीलाप्रोढ़ हेत लखिलीजो ॥ लखि
जटायु कहँ शुचिगति दीन्हें । चलिकबन्ध भुज छेदनकीन्हें ॥
सो तन दहि सो निजपदपायो । तिमि शबरिहि निजधामप-
ठायो ॥ दोहा ॥ पम्पासरजल परसकरि आगूचले उदार । तहँ
पठये सुग्रीवके आये पवनकुमार ॥ भक्ति सहित दण्डवत करि
बूझिकथा सुखदाय । गिरिपै सहभ्राता प्रभुहि लैगे कन्ध

चढ़ाय ॥ चौपाई ॥ तहँ सुग्रीव परे पग आई । कीन्हें ताहि सखा रघुराई ॥ तासु दशा सुनि प्रभु प्रण कीन्हे । बालिहि मारि राज्य तेहि दीन्हे ॥ बालिसुवन अंगद बलवाना । कियो ताहि युवराज प्रधाना ॥ राज काज में कपिहि लगाई । बसे प्रवर्षण पै प्रभुजाई ॥ तहँ सुग्रीव अंगद अथोरे । कटक राज कपि कटक बटोरे ॥ लषण जाइ तेहि प्रभु पैं ल्याये । सियहि निरेखन हेत पठाये ॥ जाम्बवान अंगद हनुमानहिं । आदिबीर दशबर बलवानहिं॥ निजनामांकित अमलअंगूठी । प्रभु हनुमानहिं दई अनूठी ॥ लैतेहि कपिबर चले सदाये।बीचहि एक निशाचर पाये ॥ ह्वै सरोष ताकोबध करिकै। पेखि योगिनीको मुद भरिकै ॥ गये समुद्रतट आनँदभेखे । तहँ सम्पाति गृद्धकहँ देखे ॥ लहि उद्देशसियाको तासों । पवनकुमार चले भरिभासों ॥ सुरसासों संभाषणकरिकै । प्राणसिंहिका कोपरि हरिकै ॥समुद्रसमुद्रकेपार कपीशा। जाइनिशंकलंकपुर दीशा ॥ तब कपिबर सूक्षम बपुधारी। लंकापुरमधिचले सुखारी ॥ मगमें मिली लंकिनी धीरा । सीक्षिताहिपुर प्रविश्यो बीरा ॥ दोहा ॥ सियहि दरशि करि बार्ता दैमणि मुँदरीचारु । लै चूड़ामणि चलिकस्यो उपबन को संहारु ॥ अछै कुमारहिंमारि अरु अक्ष्य रावणहि जाय । जारि लंकपुरफिरि लख्यो प्रभुपद पंकज आय ॥ मौक्तिकदाम ॥ कह्यो बिरतान्त सबै प्रभुपास । कस्योउत जो बलवान बिलास ॥ सुन्योप्रभु सों अतिशय सुख पाय । लियो हनुमानहिं अंक लगाय ॥ जयकरी ॥ करजोरिकहि सियको सँदेश । मन मुदित दै शुचिमणि सुवेश ॥ अबचलहु प्रभुमति करहुदेरि । कहिमंजु मूरति रह्योहेरि ॥ दोहा ॥ सोसुनि सेना सहित चलिप्रभु बिरदैत सुबीर । सुथरे सुथरे देखि थल उतरे सागर तीर ॥ चौपाई ॥ आयो तहँ प्रभुशरण बिचारी । भगत बिभीषण बुधि बलभारी ॥ तीनि दिवस रहि सागरतीरा।

तबतेहि भयदीन्हों रघुबीरा ॥ तब सागर ब्राह्मणबनि आयो। बिहित बिनयकरिभेद बतायो ॥ सेतबांधिसहसेनास्वामी। जाहु पारप्रभु अंतरयामी ॥ सेतबांधि प्रभुउतरेपारा। धराधीशमर्दन खलधारा॥प्रभुनिदेशलहि सुभटप्रचारे।गढ़लंकाकेचारिउद्वारे॥ लहि रावणको उग्र निदेशा। राक्षसकढ़े कराल कुभेशा ॥ भिरे बीर रणधीर प्रचारी। कपि अरु निशिचर बपुबलभारी ॥हनूमान अंगद बलवाना। जाम्बवान नलनील सुजाना ॥ द्विविद मयन्द केसरी बीरा ॥ तार सुषेन सरभ रणधीरा ॥ गवगवाक्ष येयूथप भारे। दै अतदल बलदलि मलिडारे ॥ दैदैतालकँगूरन चाढ़िकै। जयतिराम टेरेबल बढ़िकै ॥ मनुदश शिरके शिरन सुसाजें। काल कराल बिशाल बिराजें। सोलखि मेघनादभट घोरा। बाणवृष्टि कीन्हेसि चहुंवोरा ॥ ह्वै अदृश्यअतिअसत अथाया। लाग्योयुद्ध करन रचिमाया ॥ सोलखिप्रभु करिकोप कराला। लीन्हों कर शर धनुष बिशाला ॥ ह्वैसभीत चल बलखल भाग्यो। प्रबल राम दलगाजन लाग्यो ॥ दोहा ॥ ह्वै सक्रुद्ध तब युद्धको दशकंधर क्षितिपाल। चढ़ोमूढ़ जाशिरचढ़ो निरततकाल कराल ॥ बीसभुजानि आयुध बिशद धरे लस्यो यहि चाल। मनुसूखो तरुहै सचल शाखासहित बिशाल ॥ चौपाई ॥ तासों भिरेसुभट रणधीरा। हनूमान आदिकबलबीरा॥ पर्बत तरुवर लैलैडारैं। निशिचर सेना सुभट सँहारैं॥ दशकन्धर निज बन्धुहिं देखी। शक्ति अमोघ चलायसि तेखी॥ सो लखि लक्ष्मण निज उर लीन्हे। रघुबर पाहिं अभयबर दीन्हे॥ ताते प्रभुलीला अनुसारी। परेभूमि पै मनो दुखारी ॥ लखि लषणहिं प्रभुसांच जनाये। औषध हित प्रिय कपिहि पठाये॥ बायुबेग चलि बायुकुमारा। मगमें कालनेमिकहँ मारा ॥ तदनु जाय द्रोणाचलल्याये। लषणहिं औषध दै सुखपाये ॥ सुनिदशकन्धर अतिदुख पायसि। कुम्भकरणकहँ लरन पठायसि॥

बिदित बीर रावणको भ्राता । कठिनयुद्ध कीन्हेंसि मदमाता ॥
निजकर रघुबर ता बध कीन्हा । ताते तेहि उत्तम पद दीन्हा ॥
सो सुनि रावण अतिदुखपायो । मेघनादतबतेहि समुझायो ॥
थलनिकुम्भिलामें फिरि जाई । लाग्योयज्ञ करन मनलाई ॥सो
यह भेद बिभीषण जानी । प्रभुसों कह्यो बिनयमय बानी ॥प्रभु
अब आज्ञा लषणहिं देहू ।मेघनाद करवध सुनिलेहू ॥ प्रभुतब
आज्ञा लषणहिं दीन्हा । लषणजाइ ताकरबध कीन्हा ॥ दोहा॥
मेघनादको मरण सुनि ह्वै व्याकुल दशकंध। पाइमंत्रभृगुसों
करन लाग्यो मखमति अंध ॥ तामखध्वंसन करिबहुरिपेखेप्र-
भुके पाँय । रावण निश्चर राजतब उन्नत रथपै जाय ॥ प्रभु
आज्ञालखि कोटिदश सुभट सराहे राजि । उमड़िघनोघनघो-
र सम चढ़ो प्रबलदल साजि ॥ मादक ॥ आवतताहि बिलोकि
बलीबर । मारुत नन्दन दैत दलीदर ॥ कोपकराल कियो जय
चाहक । बानरयूथ सयूथप पाहक ॥ सोरठा ॥ हनूमान बलवान
तड़पि झड़पि घनसम गरजि । मूका बज्रसमान रावणकेउरमें
दयो ॥ भुजंगप्रयात ॥ चौपाई ॥ लगेदीहमूका भयो मूढ़मूका । रहेकै
दशौ आस्य ज्योंमंजु मूका ॥ उठ्यो चेतिकै हेतिकै युद्धभारी ।
सराहै हनूमान को गर्बधारी ॥ कहामोहिंरेतू सराहै सुखारे । ल
खेफेरि चौगान जौं प्राणधारे ॥ अरेएक मूका हमैं मारिले तू ।
लगैफेरि मेरो तनयछांड़िदेतू ॥ सुनेसो हनूमानको मूकमार्‍यो ।
न ताते कछूद्वन्दसो बीरधार्‍यो ॥ भगोलेखि लंकेश संकेत जा-
नी । गयो फेरिश्रीरामपै मत्तमानी ॥ कलैकै छलैकै बलैकै करा-
लै । तजैशूलऔबाण भिण्डानभालै ॥ भयोमोहमैं मूढ़माया
पसारै । तिन्हैंव्यर्थ देखे तऊ ना बिसारै ॥ दोहा ॥ मायानिधि
प्रभुसों करै यों माया बिस्तार । चहैंबहायो जलनिधिहि शठ
प्रस्वेदके धार ॥ निशिचर पतिहिरथी निरखि प्रभुहि पदाती
देखि । शक्र पठायो मातलिहि निजरथ अस्त्र निमेखि ॥चौपाई॥

चढ़ि तेहिरथपै प्रभुमुद भारे । गहि प्रचण्ड कोदण्ड निहारे ॥ बीरहु मूढ़खरोमति भागे । निजकृत फललहि निजतन त्यागे॥ कहिबर बाणन मारनलागे । ताकेतनहिं बिदारण लागे ॥ दश शिर बीस भुजाप्रभुकाटैं। नये प्रकटिफिरि सुखमा ठाटैं ॥ गिरैं शीश रावणकेकैसे । ताल वृक्षतेबर फल जैसे ॥ कटैंकढ़ैं इमि भुजाशिरताके । अदरश दरश यथा क्षणदाके ॥ यहिबिधि निशिदिन सातप्रमाना । शीक्षताहिबर युद्ध बिधाना ॥ प्रभुनिशिचर पतिको बधकीन्हें । बरषेसुमन सुमनमुदलीन्हें ॥ लखिविभीषणहि सहित बिबेका । कियोलंकपतिकर अभिषेका ॥ माया सीतहि अग्नि प्रवेशी । लहि शुचिसीता महिमाभेशी ॥ चढ़ि पुष्पक पै सहित समाजा । आयेप्रभुजहँ भारद्वाजा ॥ एकनिशीथिनि तहां बिताये । फिरि प्रभुसोध अवधपुरआये ॥ गुरुअरु मातु बन्धुपुरबासी । मिलिसबसों प्रभु आनँद राशी ॥ फिरि प्रभु महिमंगलसों साजे । बिधिवत विशद राज्य लहिराजे ॥ पाइप्रभुहि प्रतिपालन परणी । भईधन्य तादिनते धरणी ॥ दोहा ॥ प्रतिरोमन ब्रह्माण्डजो पालनकरत अनूप । महिपालन की ता कथा कहैं कहांलों भूप ॥ शुभद चरित श्रीरामके पावन करन उदार । बरणि कहे संक्षेपसों भवनिधि तारनहार ॥ अब कहियतु श्रीकृष्णके चरित चारु संचार । जे प्रभु ह्वै बसुदेव सुत कियो दैत्यसंहार ॥ चौपाई ॥ हो तब मथुरा कल्प अनूपा । भये कृष्ण जब अनुपम रूपा ॥ भे बसुदेव तनय जगस्वामी । दुष्ट दलनहित अन्तर्यामी ॥ मंत्री सखा सुभट सुत भ्राता । सहित कंसको कियो निपाता ॥ और जिते खल नृप मदमाते । कौतुक सों तब तिन्हैं निपाते ॥ प्रभुके चरित कहांलौं गावैं । ताते भेद निदान बतावैं ॥ लखौ सुनौ जो गुणि अनुमानो । सो सब कृष्ण चरित करिजानो ॥ मच्छ कच्छ आदिक अवतारा । ये बरणे सुनु भूप उदारा ॥ व्यास कपिल सनकादिक आदिक ।

प्रभु अवतार असंख्य सुबादिक॥ चाहि जानिबो जासु प्रमा-
ना। लहै देवगण मोहमहाना॥ अब भविष्य अवतार महीपा।
सुनु सप्रेम कौरव कुलदीपा॥ होइहि संभल पुरकोबासी। नाम
विष्णु जगद्विज सुखराशी॥ तासुत ह्वै ह्वै हैं बिख्याता। सुप्रभु
कलंकी पुहुमी त्राता॥ अन्तरबेद मध्यकरि वासा। करिहैं
प्रभु दुष्टनको नासा॥ असती पुरुष सबै मिटिजैहैं। सुसती
प्रकटि सुधर्मबढ़ैहैं॥ सुनो भूप तब कलियुग जाइहि। परम पु-
नीत सत्ययुग आइहि॥ दोहा॥ जो प्रभुके अवतार के सुनै सु-
चरित सप्रेम। सो धनि परमारथ धनी इतउत लहै सुक्षेम॥
याही सों सबबनतहैं यहि बिनु सबै नशाय। नहिं इहि कीन्हें
श्रम अधिक तजे नसुख सरसाय॥ बिनाबिचारेसहजही बात
सुबड़ी नशाय। किये बिचार सुसहजही बड़ी बात बनिजाय॥

इतिश्रीहरिवंशदर्पणोनामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

चौपाई॥ परब्रह्म ईश्वर गुणगाये। सुर सेवित बैकुण्ठ कहा
ये॥ ते प्रभुमानुष ह्वै गुणधारी। कृष्ण कहाये भूतलचारी॥ जे
प्रभु क्षीरधि उदधि बिहारी। बिरच्यो बिधिहि स्वरुचि अनु-
सारी। क्रमसों बिधिजग उत्पतिकीन्हें। गुणमें बिबिध भांति
मुद लीन्हें॥ सबमें रहेब्यापि प्रभुऐसे। उपल दारुमें पावक
जैसे॥ अदितिपुत्र ह्वै निजजनपालक। भेउपेंद्रराक्षस कुलघा-
लक॥ करुणानिधिकी कीरति नीकी। पावन करनिसुनहु प्रिय
जीकी॥ भयो सत्ययुगमें बलवाना। वृत्रासुर अघओघअमा-
ना॥ मुशलप्रमाणरोज सोफैलै। भयोप्रमत्त सुरनसोंजैलै॥ लै
दधीचिको हाड़सोहायो। विदित बिड़ौजा बज्रबनायो॥ तासों
बधिवृत्रहिजयलीन्हे। ताते असुरवृन्दरिसकीन्हे॥ चढ्योकोपि
मय बरबलभारी। लर्योसुरनसोंसुजयबिचारी॥ कीन्हेंसिक्रुद्ध
युद्धअतिघोरा। मायाब्यापित करिचहुंओरा॥ गरजैघूमिघनो
घनछायो। अतिशय अन्धकार मढ़िआयो॥ तड़पै तड़ित भया-

नकभेशा । जेहि लखिरहै न धीरजलेशा ॥ मारुतसातप्रबलह्वै डोलैं । अतिप्रचण्ड दशादिशिसों बोलैं ॥ तपितबारिबरषै बर बूंदन । उल्का पतनहोइदिशिढूँढ़न ॥ सुरबिमान परबशतेहि माहीं । उलटैं पलटैंझूकैं उड़ाहीं ॥ बरबीची सागरमें जैसे । बोझितबोहित बिहरैं तैसे ॥ दोहा ॥ सुरपति सहित समस्तसुर ह्वैतब तहांअचैन । त्राहि त्राहि करुणायतन आरत बोलेबैन॥ सोसुनिकरुणासिंधुप्रभु दीनोद्धरणउदार । ताक्षण तहँ प्रकटित भये लखिनिजबिरदबिहार ॥ चौपाई ॥ हैंजितने उतपात महाने । ते तेहि क्षण यहि भांतिनशाने ॥ ज्वलितज्योति जिमि निरखि सुभेशा । रहै न घरमें तमकोलेशा ॥ घनसम श्याम मेरुसम भारी । चारु चतुर्भुज आयुधधारी ॥ गरुड़ध्वज रथपै आसीना । जासु चक्रशशि सूरअहीना ॥ कीलजासु मन्दरतनुधारी । नह्यो अनंत किरिणिसों भारी ॥ जामें सुमन गुच्छसमलागे । ताराग्रह नक्षत्रछबिपागे ॥ रबिरथके बाजीजेहिबाधे । जे जय लीबेकीविधि साधे ॥ प्रभुहि पेखिह्वै सुमनसुखारे । सहित इन्द्र जयजयतिपुकारे ॥ कह्योशक्रसों सारँगपानी । होहु निशंकदैत्य बधजानी ॥ सत्यसंधकी सुनियहबानी । भयेअशंक सुमनसुख मानी॥सुमनसुरपतिहि निर्भयदेखी॥दानवदोहचढ़ेअतितेखी ॥ द्वादशशतबर हाथ प्रमाना । चारिचक्रको सुरथअमाना ॥ कंचनमय परदलकोदाहक । सहसरिच्छगणजाके बाहक ॥ अस्त्र बिशेष भूरिसोंभार्यो । तापैचढ़िमय लरनपधार्यो ॥ कोशभरे को जासुपसारो । लोहमयो अस्त्रनिसोंभारो ॥ दोहा ॥ जामेंलगे सहस्त्रखर आंछे ऐंचनहार । तेहिरथ चढ्यो प्रमत्तह्वै दैत्यबीर बर तार ॥ हयग्रीव अरु राहुखर अरु अरिष्ट बाराह । प्रबल बीर रथ चढ़िलसे करत युद्धकोचाह ॥ चौपाई ॥ बिप्रचित्त दनुजेश कहायो । श्वेतनामभट ताको जायो ॥ चलो बिरोचन बर रणधीरा । बलिको तनयअरिष्टप्रबीरा ॥ इन्हेंआदि दैअतबर

बढ़िकै। हैगज रथ खर ऊंटन चढ़िकै॥ ब्यूह बांधि भे सन्मुख ठाढ़े। बीरधीरमद उन्मदबाढ़े॥ सिंहबराह रिच्छआरोहे। कितनेबीर पदातीसोहे॥ नानारूपनके बलभारे। बिबिध भांति के आयुध धारे॥ दैंदै ताल काल सम गरजैं। लखि लखि सुमन समूहन तरजैं॥ प्रभुप्रसाद सुरपति दलसाजे। ऐरावत गजपै चढ़िराजे॥ रुद्रादित्य आदि सबदेवा। तेंतिस कोटिसंग शुभभेवा॥ पूरुब दिशि पुरुहूत बिराजे। दक्षिणादिशिगरबी यमगाजे॥ पश्चिम दिशिरहि बरुण प्रचारे। उत्तरदिशा कुबेरबिहारे॥ सहित साजसुर सेना पाहैं। करदन परदल मरदन चाहैं॥ किन्नर यक्ष गंधर्बसोहाये। मुनिगण सर्ब मध्यरहि भाये॥ बाजि सहस जेहिरथमें स्वागे। तापैचढ़ि शशिसुखमा पागे॥ मारुत सात प्रबलह्वैडोलैं। ह्वै सन्मुखअरिदलपै बोलैं॥ उमड़ि मेघ अरि दलपै गरजैं। जाते परैं दैत्य उरदरजैं॥ तड़िता अशनि भयानक तरपैं। निर्भय असुरलखे जेहि डरपैं॥ दोहा॥
तक्षक बासुकि बिशद बिष जुरे सहित परिवार। दै अतदल प्रातितजततकि फूतकारकीधार॥ शर धनु खड्गादिक बिशद आयुधधरे सुबीर। शोभे सबसुमनससुभग संगर करताधीर॥
तोटक॥ शुभदं शुभमंगलआशिषमैं। सुमनैसुअमीअसुरैं बिष मैं॥ तपपुंजमयं सुनि बृन्दपढ़ै। सुनि सोमुदसों सुरचावचढ़ै॥
महिखरो॥ इतसजीसुर शुभसैनतामधि बिष्णु सुरस्वामीलसे। प्रभुगरुड़गामी गरुड़केतु बिलोकि जेहि परबलत्रसे॥ धरिशंख चक्र गदारि भंजन सरुचि सारँग धनुगहे। कटिखंगनंदक नंदकर तूणीर अक्षय छबिलहे॥ लखि प्रभुहि बिधिवत बांदि सुरपतिसहित सेनाबढ़िचले। जिमि नांघि बेला उदधि फैलत तिमि असुरदल पैरले॥ शर खंगभल्ल सुशक्ति मुद्गर भिंडपालहि आदिते। सब चले आयुध दुहूंदिशिसों घोरशब्दबिनादिते॥ बरसैनदोउ दुइओरसों चलिह्वैसमुदसेभिरिमिले।

जिमिप्रलय मारुतपाय बीची उठतितिमि भटगणखिले ॥ भट जुटैं कुटैं छुटैं जुटैंछुटैं भटफिरि जुटिधरैं । बढ़िमारु मारु पुकारि मारैं मरैंजुधि क्रीड़ाकरैं ॥ इमिमढ़ो घोर अमोघसंगर देखिमय मायामयो । सरगर्बमाया फांससों सबबांधिसुरसेना लयो॥तेहि फँसेसुरह्वै चढ़ीभूतनसकहि हिलि चित्रितभये । तबदेखिसुर पतिबज्रसों बहुकाटिबरबंधनदये॥ दोहा ॥ मायाफांसहि काटिकै दानवदलमेंजाय । तामसअस्त्र अमोघ तेहिंतज्योसुरेश सचाय॥ ताते निशिचर सैनपै गयो घनोतम छाय । जाते नहिंदानवनको निजपर परै लखाय ॥ चौपाई ॥ अन्धकार व्यापै चहुँ ओरा । भये वितप चक्रिनी चकोरा ॥ निजदल बिकल देखि मेधाबी । माया प्रकटेसि मयमायाबी ॥ तामसभई अग्निकी ज्वाला । कीन्हेंसिप्रकट अग्निमय ज्वाला ॥ तमभो दूरिदैत्य मुदपागे । ह्वैकै तपित सकलसुर भागे ॥ शशिकेपास जाइ भे ठाढ़े । लखिसुरेश अति अमरष बाढ़े ॥ कह्यो बरुणसों भयम तिपावो । करिकैज्यायह अग्नि बरावो ॥ सो सुनिकह्यो बरुण मुददाता । यहिमाया की गतिसुनुताता । रह्यो पूर्बयुगमें तपरासी । ब्रह्मऋषिज काननको बासी ॥ उर्ब नाम दुस्तर ब्रत लीन्हे । तपके तेज तपितमहिकीन्हे ॥ ताकेपास तपितह्वैआये । सुरऋषिगण करिताहि सुनाये ॥ तातजहु दुस्सहब्रतभारी । सुतउत्पत्ति करहु लहिनारी ॥ सोसुनिउर्ब कोपकरिबोले । ब्रह्मचर्य्यकी महिमा खोले ॥ धीरज धर्म तेजतपजानो । ब्रह्मचर्य्य के बशतेमानो ॥ ब्रह्मचर्य्यको बरत निबाहैं । ते योगीश करैं जो चाहैं ॥ बिना योगनाहिं सिद्ध अधीना । सिद्धि बिना नाहिं सुयश अहीना ॥ दोहा ॥ जासुसुयश संसारमें होतलहैसंसार । ताको इतउत्तमसरग है उत सुरथबिहार ॥ चौपाई ॥ तियसंग्रह करिसुत उपजावन । तुमजोकहे चढ़े चितचावन ॥ प्रथमसृष्टि उतपति बिधिकीन्हे । तबते कहो तिया हे लीन्हे ॥ ब्रह्मचर्य्य

व्रतधारी योगी। मानसपुत्र रचैं मुदभोगी ॥ याहिप्रकारबहुवि-
धिसों भाषे। फिरिमुनि उर्वपुत्र अभिलाषे ॥ दक्षिणजानु अ-
ग्नि पै राखी। कुशसों मंथन कियो सुसाखी ॥ भेदि उर्व को
ऊरूचारू। औरबलनल भे प्रकटउदारू ॥ जगत दहन ईछे
ऋषिभारे। तीनिलोक निज तेज पसारे ॥ ताक्षण कहेसि
पितासों ऐसो। रोषमयो रुखकरे अनैसो ॥ मैंहों क्षुधित देहु
मोहिं शासन। हौंजगभक्षों सुनो शुभासन ॥ इतने में तहँबेधा
आये। बहुतभांति उर्वहि समुझाये ॥ सुनि निज सुतको तेज
अपारा। क्षमितकरावहु ज्ञानअपारा ॥ हमदेहैं तुवसुतके ला-
यक। आसन अशन चारु चित चायक ॥ सोसुनि उर्व सरस
सुखमानी। बिधिसोंकह्यो परमप्रियबानी ॥ नाथकियोकाकित
अनुमाना। ममसुत योगअशन अस्थाना ॥ कह्योबिरंचिसुनहु
मुनिज्ञानी। बड़वा कहत अश्वनिहि ज्ञानी ॥ तामुख सदशस-
मुदको आनन। परमसुहावन सुरुचिसुकानन ॥ दोहा ॥ तामधि
बासिहौं करत हो सदा उदधि जलपान। सो जल तुवसुतको
अशन सो सुख शुचिअस्थान ॥ सो सुनिकैमन मुदित कैमुनि
सुत अनल महान। बड़वा मुखमेंबसिकरै सदासमुदजलपान॥
चौपाई ॥ बिधि मुनिगण गे निज निजधामा। यह कौतुक लखि
कै अभिरामा ॥ दैत्य हिरण्यकशिपु बरजोरी। कहेसि उर्वसों
करिचितचोरी ॥ तात बिलक्षण चरित तुम्हारो। लखिमोहित
मनभयो हमारो ॥ ताते हमैंशिष्य करिलेहू। यहसुप्रयोगमंत्र
मोहिं देहू ॥ सुनि मुनि कृपा तासु पै कीन्हे। और प्रयोग मंत्र
तेहि दीन्हे ॥ कहि निज बंश यदपियहमानो। सोई यहप्रयोग
है जानो ॥ ताते अब मोहिं देहु सहाई। सोमशीतकर कहँसुख
दाई ॥ शशि सुधांशु करिशीत प्रकाशन। करिहैं ज्वाल जाल
को नाशन ॥ सो सुनिकै सुरपति मुदभारे। शशिसों कहे सरा-
हि सुखारे ॥ तुम अरु बरुण स्वतेज प्रकाशौ। रजनीचर

की मायानाशौ ॥ शासन सुनि सुधांशुमुख पागे । ह्वै हर्षितहिमि वर्षन लागे ॥ज्वालजालमें मायाक्षणमें । लोपितकरिपूरेपंन मनमें ॥ प्रलयकालके धाराधरसे । तुहिनधारअरिदलपर बरसे ॥ बरुणपाशधर मुदित ननरदैं । पाशडारिदैअत दलमरदैं॥ जलआकर जलपति ये दोऊ । इनसों जीति सकै नहिं कोऊ ॥ ह्वै ह्वै हिमिते बिकल पिरारे । गिरे दैत्य जिमि पर्वत भारे ॥ दोहा ॥ सो लखि मय निशिचर अधिप करिकै कोप कराल । शैलमयी माया प्रकट कीन्हेसिबरण बिशाल ॥ परनलग्योसुर सैन पै शिला बिटपचहुँओर । आकसमाद् अमोघ अति मढ्योशब्द अति घोर ॥ हरिगीत ॥ सुरशयनमधि गिरि बिपिनकन्दर सरितसर अनगिनबने । जेहिएक एकहि लखत नहिंरहि थरनिथर अन्तरघने ॥ बहुसिंहव्याघ्रबराहानिर्मितभालुभीषण लखिपरैं । ह्वै छारवायु प्रकर्षउन्नत अमितआमि दिशिरजभरैं ॥ शशिबरुणआदि समस्तसुरगणचकितरहिव्याकुलभये। लखि असुरबलहि प्रमत्त गरजहिंमेघसम मनमदभये॥ सुरअसुरको यहलखतसंगर गरुड़गामी प्रभुखरे। बरदैत्यपतिको बधसमय करिक्षमापरखत धनुधरे॥दोहा॥ तबप्रभुमारुतअग्निकहँआज्ञा दयोउदार । करोप्रबलह्वै आसुरीमायाकोसंहार ॥ चौपाई ॥ प्रभु सों लहिनिदेशते कोपे । ह्वैअतिप्रबल प्रलयआलोपे ॥ गिरि काननजे मायाधारे। तेहिउड़ाइ परदल परडारे ॥ प्रबलपवन कोपाइ सहायक । ह्वैप्रकर्ष अतिअनल सुभायक॥ घूमिभूमि दै अत दलजारे । जरमरे ह्वै दैत्य पिरारे॥ मरेकिते अधजरे पराने ॥ किते भागि सर सरित समाने ॥ सुरपति सेनाके भट गाजे । सुखद जीति के दुन्दुभिबाजे ॥ मय निशिचर पति की सुनिहारी । कालनेमि दानव बलभारी ॥ शत मस्तकसों शोभित तैसे । शत शृंगनको पर्वत जैसे ॥ शतभुजबीर बलीबरणन को । कठिन कराल जई परणको ॥ शत आयुध लीन्हे मद

माता। आयो मयपै रिस रसराता॥ तेहि लखि मय उठि अं-
कलगायो। ह्वै आरत निजदशा सुनायो॥ सोसुनि कालनेमि
रिस भरिकै। सुरन जीतिबे को पनकरिकै॥ धीगधकेत धुरंधर
धीरा। धाराधरसों बरबपु बीरा॥ सँगलै चढ्यो दानवी सेना।
मय आदिक निशिचर जगजेना॥ कठिन करालकालसमघो-
रा। बिशद बाण बर्षत चहुं ओरा॥ बिबिध भांति के आयुध
धारे। भेष भयानक भूषणभारे॥ कालनेमिकोलखिसुरनायक।
किये सजुषसेना सर सायक॥ दोहा॥ भिर्यो जायसुरसैन सों
घालत शस्त्र अघात। भिरेसघनबनमें मनो बर्षत मेघसवात॥
भुजंगप्रयात॥ भिरेतालदै पायदै पायदै सों। रथीसों रथीते लरे
कायदै सों॥ भिरे बाजिबारेन सों बाजिबारे। लरे मैगलीमैग-
ली रोषधारे॥ सुभालैत भालैतसों जंग माच्यो। जुबानैत बा
नैत से रंग राच्यो। सबैबीर ऐसे भिरे जोर जोरैं। अमा नैनके
हूंमनै नेकु मोरैं॥ किते बीर बांके बली जय बिचारी। बिनाशी-
श के ह्वै लरे खड्गधारी॥ घनेघाव लागें किते बीर घूमें। छके
से खरे ह्वै किते धीर झूमें॥ किते तर्जिकै गर्जिकै शस्त्रमारैं।
नभैमें किते चर्मपै ताहि धारैं॥ भिरे भल्लमें है कितेबीर ऐसे।
खिले कालके दंडमें सानुजैसे॥ दोहा॥ बाहुयुद्ध केते करैं भिरे
बीर बलवान। दांकि दांकि दै हांक हठि धारे रोष अमान॥
चौपाई॥ भेरी दुन्दुभिको सु अदोरा। अरु कोदंडनकोटंकोरा॥
वीरनकी गर्जनि ते घोरा। शब्द अमोघ मच्यो चहुं ओरा॥
बाढ्यो शोणित समुद महाना। तामधिसब जलजन्तुसमाना॥
यहि बिधिको लखि संगर माचो। कालनेमि दानवरिसरांचो॥
लाग्यो युद्ध करन अतिभारी। शत भुज सोंशतआयुधधारी॥
लैलै शृंग सुरनपै झेलै। चल मंदर मनु कंदुक खेलै॥ घनस-
मान घनको गुणलीन्हेसि। शस्त्र वृष्टिको दुर दिन कीन्हेसि॥
शरमें बंधन रचिभरि भासों। गहेसि बांधिसुरपतिकहँ तासों॥

यम कुबेर जे बरुण कहाये । शशिसूरजजे प्रबलगनाये ॥ अन-
ल अनिल जल सागर सरिता । सुर गन्धर्बजिते शुभचरिता ॥
सबहि जीति निज बश करि भायो । प्रथितपांच नहिं वशकरि
पायो ॥ बेद धर्म अरु क्षमासोहाई । सुखद सत्य अरु श्रीगुण
गाई ॥ येसब नारायण आधीना । कैसे इन्हें लहै मति हीना ॥
सुरन जीति मन ममता मेरेसि । तब सो नारायण तनहेरेसि ॥
गरवी क्रोध अग्नि सों डाढ़ो । चलिकै प्रभुके सन्मुख ठाढ़ो ॥
लग्यो कहन बढ़ि बचन कठोरा । भयो काल बश ह्वै मतिभो-
रा ॥ दोहा ॥ तुम मम बैरी बिदितहो बनि सुरगणके नाथ । करे
बहुत अपराधहै लगि सुरपतिके साथ ॥ भलेसमयमों लखि
परे भलो बन्यो यह काजु । लेहौं सबदिनको बयर बधतुम्हार
करि आजु ॥ चौपाई ॥ सोसुनिहँसिबोले सुरस्वामी । श्रीश्रीपति
नागांतक गामी ॥ हम जाना तुमहौ बलवाना । बहुभुज बहुत
धरे धनुबाना ॥ हौ बहुमुख बहुबिधि सों बोलौ । निज महिमा
की पदवीखोलौ ॥ रहै एक मुखके सब आगे । कहिनसकेइमि
ते रिसपागे ॥ थोरो कहिते यहफल पाये । अब तुम बहुतकहत
ढिगआये ॥ ताते चहतअधिक फललीन्हो । सो यह जानि
चहैं हमदीन्हो ॥ अर्थांतर गर्वित यहबानी । सुनिकै कालनेमि
अभिमानी ॥ मुद्गर तानि महतबल मारेसि । खगपति के म-
स्तकपै मारेसि ॥ ह्वै घूर्मितते हिलगेखगेशा । गयेभूमिपैं बैठि
सुभेशा ॥ सो लखिकालनेमि मुदपाग्यो । बाण पखानन मारन
लाग्यो ॥ ऋषि सुमनसगण अचरज जानी । अस्तुति करन
लगे शुभबानी ॥ अस्तुति सुनि प्रभु अंतर्यामी । बर्द्धित भये
गरुड़सह स्वामी ॥ नभ किरीट महि चरण सोहाये । चारु बि-
शाल भुजातिमिभाये ॥ उग्रचक्रसों महिमाठाटे । कालनेमिके
शिर भुजकाटे ॥ शिरभुजकटेहु रह्यो रिसबाढ़ो । शाखाहीन
वृक्षसोंठाढ़ो ॥ हन्योपक्षसों तेहि उरगारी । तबसो गिर्यो शैल

समभारी ॥दोहा ॥ मयतारहि आदिकरहे जिते दनुज परिवार। चक्रगदासों प्रभुकियो तिनसबको संहार ॥ अतिरोला ॥ सुर शक्र सों इमि कहेउ प्रभु हतिदनुजको समुदाय । निज निज पदन बसि करहु अब निजधर्म्म पालन जाय ॥ तुव हेत रण चढ़ि कस्यो हम सब असुरकोसंहार । बलिराहु बाचे भागि तिनसों रहेहुनित हुशियार ॥सोरठा॥ कमलासन तहँ आयकरि अस्तुति श्रीरमणकी । गे निज लोकलवाय अति अमोघ आनँदभरे ॥

इतिहरिबंशदर्पणेमयतारकामयदेवासुरसंग्रामोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

चौपाई ॥ बैशंपायनकी बरबानी । सुनि बोले जनमेजयज्ञानी॥ ब्रह्मलोक बिधिके सँगजाई । कियो कहा प्रभु कहौ बुझाई ॥ केहि कारज हितप्रभु अभिरामहिं । गे लवाय बेधा निज धाम-हिं ॥ लहि अषाढ़ की शयनीनामा । शुक्लपक्षकी अति अभि-रामा ॥ एकादशिशुचि सुखमारासी । शयनकरहिं जे बिश्वबि-लासी ॥ एकादशि कार्तिक की चारू । लहिजागहिं लोकपभर तारू ॥ क्षीरसमुद्रमें बसैंसबाला । कैसे करैं बिश्व प्रतिपाला ॥ प्रश्नभूपको सुनि सुखदायक। बोले मुनि सुनु नृप सबलायक॥ प्रभुकी गति अति सूक्षम जानो । सुर न सकहिं जेहि लखिइ-मिमानो ॥ बिष्णु लोकमय महिमापूरे । लोक बिष्णुमय हैं सब रूरे ॥ जलतरंगकी गति उरआनो । कंचन भूषणसम अनुमा-नो ॥ प्रभुमहिमा सागरको पारा ॥ करि बिचारको पावनहारा ॥ सुनहुजाय बेधा केसाथा । ब्रह्मलोक प्रभु कियो सनाथा ॥ तहां सरस सुखमासों भेखे । यज्ञ करत ऋषिगणकहँ देखे ॥ सहित अग्नि तिनकहँ प्रभुबंदे । मर्य्यादापालक आनंदे ॥ दोहा ॥ प्रभु हि पेखिऋषिगणमुदित अर्घपाद्य दैचारु। परब्रह्म भगवानकी अस्तुति कीन्हउदारु ॥ चौपाई ॥ सुनिअस्तुति ह्वै प्रमुदितस्वा मी। गेनिजधामबिहँगपतिगामी॥ मंजुलमढ़्यो जासुचहुँओरा। अंधकार अति सों अतिघोरा ॥ जहां न अनल निशेश दिने-

शा । प्रभु के तेज दिपित सो देशा ॥तहां सहसशीर्षा ह्वैस्वामी । शयनकियो प्रभु अंतर्यामी ॥ बर्षहजार शयनतहँ कीन्हे । कृतयुग द्वापरलों मुद लीन्हे ॥ तबऋषिसप्तसहित बिधिजाई। प्रभुहि जगाये गुरु गुणगाई ॥ जागि कह्यो बिधिसों बरबानी। बिश्वंभर प्रभु आनँददानी ॥ कहो सुमन कासों भयपाये । जाहित तुम मोहिं आइ जगाये ॥ तासु निपात करौंहों सादर । बिधिबोले सुनि बानी सादर ॥ सुरन कुतो भय हेरिजु घालक । प्रभु कृपालु जिनके प्रतिपालक ॥ सुमनसमूह सुचित्तबिलासै । सह सुरपति सुखमासों भासै ॥ यथाकाल बर्षै घनबारी । ताते परजापरमसुखारी ॥ नृप करि नीति प्रजन सुख देहीं । छठवां भागभाग निज लेहीं ॥ नृप समूहधरणीपै बाढ़े । ते बलदलसों बिदित उकाढ़े ॥ नगर ग्राम गढ़ मानुष भारे । अप्रमेय अति घने बिहारे ॥ तिनके भार भई इमि धरणी । बेप्रमाण बोझी जिमि तरणी ॥ दोहा ॥ ताते धरणी दीनह्वै आतुर मम ढिग आइ । भरी भूरि भय निज दशाकहति बिकल बिलखाई ॥ चौपाई ॥ ताहित सत्वर हौं इत आयो । तासुदशा प्रभुतुमहिं सुनायो ॥ लहि नर नरपति को बरभाये । धरणी पीड़ित भई अपाये ॥ याको एक आपुकी गतिहै । सुने सर्बदा सों यह सतिहै ॥ ते सब धर्म गैलके गामी । भूमि भार किमि हरिहौ स्वामी ॥ बिनु अपराध नृपन कहँ मारे । रहिहि न प्रभु कछु धर्म बिचारे ॥ भार हरे बिन महिदुख पाइहि । सकिहि न थामि पातालहि जाइहि ॥ ताते चलहु मेरुपै साईं । सह सुर करहुमंत्र तेहि ठाईं ॥ एवमस्तुकहि प्रभुतब आये । मेरु शिखर पै सुखमा छाये ॥ अजसुरपति सुर ऋषिन समेता । बैठे तहँ प्रभुकृपानिकेता ॥ भूमि जोरिकर ह्वै तहँ ठाढ़ी । लगीकहन अति करुणा बाढ़ी ॥ युगयुगमें मम भार निवारण । करहु नाथ तुम असुर सँहारण ॥ जब नहिं रह्यो सृष्टि व्यवहारा । होइ पूरित जलपूर पसारा ॥ तहां

शेष शायी तुम गाये। नाभिकमल पै बिधिहि रमाये ॥ तबतहँ कानन सों मलकाढ़े। ते भे मधुकैटभ बल बाढ़े ॥ ते लरिबेकहँ बिधिहि प्रचारे। बिधि हित प्रभुतुम तिनकहँ मारे ॥ वर्षसहस्र युद्धकरिघोरा। ते दोउ मरे सरससह जोरा ॥ दोहा ॥ जललहरिन सों मथिजमी जलपर बर बिस्तार । तासुमेदकी मेदिनी जापै बिश्व पसार ॥ हिरण्याक्ष हरिलै चल्यो तब वराह ह्वैआप। ता बध करि ऊरध कियो मोहिं भरी परताप ॥ हरिगीती ॥ ह्वै भारवति क्षत्रीन सों जब भई हों व्याकुल महा। तब परशुराम उदार ह्वै प्रभुपरशुतीक्षण तुम गहा ॥ सो बिदित बार एकैस हति क्षत्रीनको आनँद लये। करि पिताको शुभ श्राद्धलौकिक मोहिं कश्यपको दये ॥ बरसार्ब भौम महीशयोग निरेखिसर्वसु गुणमये । दै मोहिं बैवस्वतमनुहिं तपहेत कश्यप बनगये ॥ इक्ष्वाकुआदि नरेन्द्र दिनकर बंशमम पालनकरे। अब फेरिहौं तुव शरणआई पाहि करुणाकरखरे ॥ सुनिभूमिकी इमि बिनय सुरगणसरुचि इमिबिधिसों कहे। ते समुझि आशय बिष्णुकी चितचाहसों करिबोचहे ॥ जिमिकहहु तिमिसब सुमन गणहम जायमानुषतनधरैं। तहँ बिष्णुकीरुचि रुचिरकी अनुगमनकरि महिधुरहरैं॥सुनि कह्योबिधितुम कहेउसो करतव्य निश्चयकरहु हे। महिप्रकट भारतबंश तेहि तुमजायसबअब तरहुहे ॥ रचि योगराख्यो पूर्व सोहौं कहत सो तुम सब सुनो। हिय जानिइच्छित बिश्वपतिकी शीघ्रसो करिबो गुनो ॥ दोहा ॥ एक समय कश्यपसहित लवणसमुदपै जाय। करतकछू बातैंरहे ईश्वरके गुणगाय ॥ चौपाई ॥ ताक्षण समुद उमड़िकरहेला। गंगासहित नांघि निजबेला ॥ पूर्णचन्द्र लखि आनँद पागो। लहरिनसों मोहिं भेवनलागो ॥ तब हौं कह्यो शान्तहो सागर । सो सुनि तनधरि उदधि उजागर ॥ भो अतिराजसिरी सों बाढ़ो । सुर सरिसह मम आगे ठाढ़ो ॥ तब तिनसों हौं कहौं निरेखी। तुम

भे राज्यतुल्य वपुभेखी ॥ तातेजाय भूमिपति होहु । शांतननाम पुण्यश्रज पोहु ॥ तितहुँ हुये गंगातुव पतिनी । तन धरि ह्वै है पतिव्रत व्रतनी ॥ च्युत ह्वै बसु बसुमहि पथज्वैहैं । ते गंगा के गर्भज ह्वैहैं ॥ अष्टम बसुसो सुनु सहकारण । होइहि महि को भार निवारण ॥ ताते अबतुम सादरजाहू । हो शुभार्थ बंशज कहलाहू ॥ यह बिधान पाहिले रचिराख्यो । लखि भविष्य सो तुमसों भाख्यो ॥ सो अब गंगासुत महिचारी । बिद्यमानभीष मधनुधारी ॥ द्वुतियतिया संतनकी तासों । द्वै सुतभये भेरबर भासों ॥ तिनके भये दोयसुत ज्ञानी । पाण्डु और धृतराष्ट्र सुदानी ॥ द्वै तियभई पांडुके नीकी । कुन्तीअरुमाद्री शुचिजीकी॥ है धृतराष्ट्र भूपकीप्यारी । गांधारी तिय पतिव्रतधारी ॥ दोहा ॥ तिनके पुत्रनसों सुनो बिग्रह बढ़ी महान । द्वापर युगके अंतमें सुनो सुमन सुखदान ॥ दोऊ निज निजपक्षलै करिहैं युद्ध बिलास । ताते ह्वैहै भूमिपै भूमिपतिनको नास ॥ चौपाई ॥ तबकलियुगकरहोहि पसारा । मिटिहै सर्बधर्म ब्यवहारा ॥ शिवअरु शिवकुमार द्वैदेवा । ह्वैहैं पूज्य उग्र करिसेवा ॥ ताते तुम सब सुमनउदारा । निज निज अंश लेहु अवतारा ॥ कुन्ती अरु माद्रीके बारे । धर्म अंशसों होहुसुखारे ॥ कलिप्रभावमें ममता छाये । प्रकटहु गांधारी के जाये ॥ सो सुनि भूमिगई निजआनन । लहि सुरगण बिधिको अनुशासन ॥ कुरुपांचाल बंशमें जाये । बरबलमें गुण गरिमागाये ॥ अंशयुधिष्ठिर धर्मराजके । भीमसेन मारुत दराजके ॥ अंशशक्रके अर्जुन बीरा । अरिमर्दन जयबर्द्धन धीरा । नास्वदस्रके अंशज चारू ॥ भये नकुल सहदेव उदारू ॥ रबिकेअंशजकरण कहाये । गुरुके अंशद्रोण ह्वै आये ॥ यमके अंशज बिदुरबिख्याता । शशिअंशज अभिमन्यु सुज्ञाता ॥ भूरिश्रवा शुक्रांशज जायो । भो बरुणांश श्रुतायुध गायो ॥ शिवको अंशज अश्वत्थामा । मित्रांशज

भे कर्णिक सुनामा ॥ यक्ष गंधर्व अंशते निगरे। भे दुश्शासन आदिक सिगरे ॥ यहिविधि सुर निज अंश सुधारी। जबआये महिपै शुभचारी ॥ दोहा ॥ तब नारद मुनि कलह प्रिय देवसभामें जाय। कह्यो विहँसि इमि विष्णुसों अस्तुति करिगुणगाय ॥ प्रभु अंशाअवतरणजो कीन्हें सुमन समूह। तिनसों नहिं कारज सधिहि कहैसांचकरिऊह ॥ चौपाई ॥ नरनारायणसों सुर स्वामी। सधिहिकाज यह अन्तर्यामी ॥ जे तुम हते असुरधनुधारी। युद्ध तारकामयमें मारी ॥ ते सिगरे पृथिवी पै जाये। वैसेइबल सुविरुद्ध बैठाये ॥ मथुरानाम पुरी इक पावनि। यमुनाके तट सरस सोहावनि ॥ रह्यो पूर्व राक्षस मधुनामा। तेइमधुबन बिरच्यो अभिरामा ॥ तासुत रह्यो लवणवपु पोषक। दीह दाप दानव द्विजदोषक ॥ लंकाजीति राम जब आये। अवधपुरी में मंगलछाये ॥ तबसों लवण दूतह्वै आतुर। व्यंगकठोर बचन कहि चातुर ॥ भेजिसिराम पास पनधारी। युद्धहेत बहु भांतिप्रचारी ॥ रामचन्द्रसों सुने सँदेशू। शत्रुघ्नहि इमि दियो निदेशू ॥ तुममम शासन सुनिपन धरहू। जाइलवणकर बध हठि करहू ॥ सुनिशत्रुघ्नउग्रपन लीन्हें। सादरजाय तासु बध कीन्हें ॥ ताबध करिकरि सोवन छेदन। पुरीरच्यो जयशब्द निवेदन ॥ सो मथुरा यह आनँददासी। परम सोहावनि सुखमा रासी ॥ शूरसेन हैं ताके स्वामी। ताकुल उग्रसेन हैं नामी ॥ ताकेसुत ह्वै कंसकहायो। दानवकालनेमिजो गायो ॥ हयग्रीव सों भो अभिरामा। अनुज कंसको केशी नामा ॥ दोहा ॥ वृषभासुर है तहँ भयो दैत्य अरिष्टअमान। रिष्टदैत्य तहँ है भयो कुबलै गज बलवान ॥ लवण नाम दानवउतै भो प्रलंब है जाय। खर नामक दानव उतै धेनुक रह्यो कहाय ॥ चौपाई ॥ जे बाराह किशोर इतै ते। भे मुष्टिक चाणूरउतैते ॥ ये सब उतै भयानकभेषी। हैंतव शुभदकथाके द्वेषी ॥ सबको अ-

धिप कंस बलवाना। उग्रसेनको तनय अमाना॥ दिव सागर अरु पृथिवी पाहीं। हैं तुम सों ये बध्य सदाहीं॥ और सुमन गण जितने आहीं। तिनसों बध्य कदाचित नाहीं॥ ताते जाय भूमिपै स्वामी। मानुष रूप धरहु नयगामी॥ दानव कुल को करहुनिपाता। हरहु भारपृथ्वी को ताता॥ सुनि नारदकोबचन सुहावन। बोले कृपासिंधु प्रभुपावन॥ तुमजो कहोत्रिकाल बिशारद। सो सब हम जानहिं हे नारद॥ जोहैं इत उत जो ह्वै राजे। कंसादिक दानव सुख साजे॥ मम अवतार हेतुतुमभाखे। सो बिचारहमदृढ़ करिराखे॥ इमिकहिनारदसों सुरस्वामी। बोले बिधिसों अन्तर्यामी॥ काके गर्भ बास करि वेधा। जन्म लेहिं हम कहहु सुमेधा॥ सो सुनि कह्यो बिरंचि बिचारी।एक समयकश्यप पनधारी॥ हर्यो बरुणकीकामद गाई। सोमांग्यो कहि बरुण बुझाई॥ दियो न कश्यप तब अनखाये। सादरबरुणपासमम आये॥ दोहा॥ कहेतात मम जनकह्वै कश्यपअनय बिचारि। काम पयद मम गानसोहरि लीन्हे ऋषिधारि॥ मांग्यो हों कहि भांतिबहु पिता न मान्यो एक। अदिति सुरभि द्वै तियनको लहि समताहिय टेक॥ चौपाई॥ सोसुनि यहभविष्य जियजानी। हो इमि दियो शाप अनुमानी॥ कश्यपहरणगाय कोकीन्हे। अदिति सुरभि को सम्मत लीन्हे॥ ताते होहिं गोप भुवि जाई। अदितिसुरभि सहकृतफलपाई॥ ताते कश्यपांश गुरुज्ञाता। हैं महिपै बसुदेवविख्याता॥ अदिति देवकीह्वैअभिरामा। सुरभी चारु रोहिणी कामा॥ भई तासु सुखदाइनि बामा। करै भूरि भूषित शुचि धामा॥ तिनके गर्भबासलै स्वामी। होहु प्रगट ह्वै भूतलगामी॥ निज भक्तनको करहुसनाथा। करि क्रीड़ाप्रभु तिनके साथा॥ इमिकहिगे बेधानिज आसन। क्षीरधितीरगयेगरुड़ासन॥ क्षीराधिकेउत्तरतटचारू। गुहा पार्बतीनामउदारू॥ तहँनिजतेजाबिभज्यसोहाये। गृहवसुदेव ध-

नीकेआये ॥ नारदसुमुनिभेद यहजानी । कह्योकंससोंजाइसुज्ञा-
नी ॥ भल तुम्हार हम जियसों ईछैं । तातेकंस तुम्हैं इमि शीछैं ॥
सुर अज सहित मंत्रकरिकीन्हैं । तुव बधकोपनप्रभुमन लीन्हैं ॥
सो सुनिकै हम सादर आये । सहितप्रेमवृत्तान्त सुनाये ॥ देव-
ककी तनयाअभिरामा । जोतुव स्वसादेवकीनामा ॥ दोहा ॥ ता-
के अष्टमगर्भसों लै ईश्वर अवतार । ह्वै सरोष करिहैं अवशि
तुव सबंश संहार ॥ ताते अब चैतन्य रहि करियो यत्न बिचा-
रि । यह कहि नारद दिवगये हृदय सुआनँद धारि ॥ रोला ॥
कंस सचिव सखानको इमि दियो चाहि निदेश । देवकीकोगर्भ
रक्षण करहुभीषण भेश ॥ एकलौं अरु आठलौं जे होहिंगेसुत
तासु । जन्मतेही आनि तिनको करौंगो हौं नासु ॥ चौपाई ॥ मम
हित इस्त्री दृढ़तागहिकै । ऋतुदिन गनै तासु ढिग रहिकै ॥ पूर-
णमास सुने निशि दिनमैं । अति चैतन्य रह्यो छिन छिनमैं ॥
जन्मतहोसुत मोढिग ल्यायहु । तासुनाश लखिकै सुखपाय-
हु ॥ नित बसुदेवहिं चख चर राखौ । बचन कठोर कछू मति
भाखो ॥ यह सुनि प्रभु रहिअन्तर्द्धाना । कह्यो कंसकोहृद अ-
नुमाना ॥ भावीभूत चिंतिकैस्वामी । गेपतालप्रभुअन्तर्यामी ॥
तहँ षटदैत्य रहैं खलपूरे । ते षटगर्भ नाम है रूरे ॥ तेहैं काल-
नेमि के जाये । पौत्र हिरण्य कशिपु के गाये ॥ तपकरि बिधिहिं
मुदित ते कीन्हे । अबध्यत्व सुरगण सों लीन्हे ॥ ताते तिनसों
कहेसि रिसाई । दैत्य हिरण्यकशिपु अनखाई ॥ कत तुम मम
महत्वको बाधे । हमैंछांड़िकत बिधिहि अराधे ॥ मोहिं अराधि
मांगितुमलेते । बर अमोघ चाहत हैं जेते ॥ मोहिं छांड़ि बिधि
सों बरमांगे । ताको फल पावहुगे आगे ॥ निज पितुके हाथन
सों सिगरे । बधे जाहुगे हे मति बिगरे ॥ कालनेमि तिनकोपितु
जोहो । सोई मथुरा कंस भयोहो ॥ सोइ प्रभाव चिंतिप्रभुचा-
वन । गे जहँ हेषटगर्भ सोहावन ॥ दोहा ॥ तहांजाइ जलगर्भमें

सोवत तिन्हैं नरेखि। प्राणकर्षितिनको लियो दशास्वप्नकी भेखि॥ तिन्हैं योगनिद्रहिदियो कहिइमिसरुचिसहास। इनजीवन को यत्न सों राखो अपने पास॥ चौपाई॥ देखि देवकी को ऋतु भेशा। क्रमसों ताके गर्भ प्रवेशा॥ इन्हैंकरावहु हे गुणखानी। भूत भविष्य सबै अनुमानी॥ जन्म धरे पै तासु निपाता। करिहिकंस दारुण रिसराता॥ क्रमसों नाश करिहि इन षटको। जब नृप कंस कालिन्दी तटको॥ तब तौ सप्तम गर्भ बिहारू। करिहि चारु मम अंशउदारू॥ सप्तम मास होइ जब तासू। तबसो गर्भ कर्षि तुमआसू॥ उरसि रोहिणी के सुचाव सों। ताहि राखियो शुचि सुभावसों॥ ताते संकर्षण पद पाई। ह्वै हैं ममअग्रज प्रियभाई॥ तासुगर्भ अष्टमजो भाखो। तामेंहौं बसिहौं सुनिराखो॥ तवतुम चाहि चारुवर बरणी। यशुदा नन्द गोपकी घरणी॥ ताके गर्भबासतुमकीजो। जानि जन्ममम साथहिंलीजो॥ सरुचि यशोदापै हम आउब। तुम्हैं देवकीपास पठाउब॥ जानिजन्म तब कंस नरेशा। गहि तब चरणमृत्यु उद्देशा॥ पटकन लगिहिशिलापै जाक्षण। ताके कर सों छुटि तुम ताक्षण॥ जाइ गगनपै बिदित बिहारेहु। दिव्य स्वरूप अनूपम धारेहु॥ चारि भुजनसों धारि अतूलहि। खड्ग कंज मधुपात्र त्रिशूलहि॥ दोहा॥ भूषणबसन बिचित्रधरि तेज पुंज अधिकाय। उग्रउदार अमन्द तेहिनिजस्वरूप दरशाय॥ घोर भूतगण यूथसों सेवित परम अपार। सानँद जायहु स्वर्ग धरि ब्रत कौमार उदार॥ हरिगीती॥ तहँ समुझि भगिनी सहित सुर सुरराज बिधिवत पूजिहैं। प्रियकरणिमंगल भरणि मंजुल बरणि अस्तुति कूजिहैं॥ फिरि शक्रदैहैं बास तुम्हहिंसुबिंध्यगिरि रमणीय पै। तहँबसि बिबिध धरिरूप रमेहु अनेक थल अवनीय पै॥ त्रैलोक्य चारिणि चारुचरिता बिन्ध्यशैल निवासिनी। ह्वै दैत्य शुम्भ निशुम्भ के हैं तासु दर्पबिनासिनी॥ त्वं

सिद्धि आर्याकीर्त्ति धृति अरु कामदा कात्यायनी। तुम रात्रि सन्ध्या प्रभानिद्राकौशिकीबरदायनी॥ बहुरूपिणीसुविरूपिणी नारायणी जनरक्षणी। तुम उग्रयमकी स्वसाजेठी दैत्य कुलकी भक्षणी॥ तुम जया बिजया क्षमादाया अग्नि ज्योति स्वरूपिणी। अरु सिंह वाहन चन्दसूर पपाकिनीस अनूपिणी॥ तुम रमावाणी पार्वती इन्द्राणिश्रौ परजायसों। तुम सर्ब व्यापिनि सर्बमयहौ सर्बदा चितचायसों॥ जेजानिजन परभाव मम बर प्रेम तुमकहँ ध्याइहैं। तेअभयरहिहैं सबसमयजो चाहि हैं सो पाइहैं॥ दोहा॥ इमिकहिप्रभु महिभारहर भेतहँ अन्तर्द्धान। मुदित महामाया करी क्रमसों सकल बिधान॥ दई देवकी के उदर षट गर्भन केबास। सक्रम कंस तिनको कियोजन्म भयेपै नास॥ रोला॥ गर्भसतयों मास सतये गये आधीरैनि। देवकी को नींद बश लखि करषिसो जगजैनि॥ राखिउरमें रोहिणी के दई भेद बताय। रोहिणी सुनि रही चुपह्वै महतआनँद पाय॥ देवकी निज गर्भ लखिकरि स्वप्नकी बिधिदेखि। जागिउर बिनु गर्भ लखिहिय रही दुखसों भेखि॥ तासु अठयें गर्भमें तब बसे श्रीपतिआय। नंदकी तियके उदरमधि बसीमायाजाय॥ देवकीको गर्भ अठयोंजानिकंस नरेश। कियो चौकी हेत नियमित सुहितसुभट सुभेश॥ मास दशयें भाद्रपदकी कृष्णपक्षी भांति। अष्टमीको रोहिणीलहि गये आधीराति॥ देवकीके जन्म लीन्हे आपु त्रिभुवन नाथ। भईयशुदा के प्रगट जगदेव प्रभु केसाथ॥ मोहमें ह्वै लोग सबकोउ नाहिं येहलखेव। भयरहे चितचैतन्य दम्पति देवकी बसुदेव॥ दोहा॥ निज स्वरूप सों प्रगट भे प्रभु सर्बज्ञ उदार। लखि बसुदेव कह्योदवे कंस भीत के भार॥ चौपाई॥ यह स्वरूप प्रभु गोपन करहू। ह्वै प्रसन्न लौकिक बपुधरहू॥ सो स्वरूप प्रभुगोपन करिकै। बोले तासु शोच सब हरिकैं॥ मोहिं लै चलहु नन्दकेगेहा। यशुदाके ढिग

सरस सनेहा ॥ ताके पासमोहिं धरिश्रावो । ताके सुताभई सो ल्यावो ॥ सो सुनि प्रभुहि गोदते लीन्हे । तुरित पयान तहांको कीन्हे ॥ सुत यशुदाके ढिग धरि दीन्हे । ताकीसुतागोदमें लीन्हे ॥ निज गृहश्राये आनँद साने । इतउत काहू भेदनजाने ॥ दियो देवकिहि सुता सभागी । तब सो तनया रोवनलागी ॥ चौकीदार रुदन सुनि जागे । सावधान ह्वै आनँद पागे ॥ गे बसुदेव कंस पै आतुर । कन्या भई सुनायो चातुर ॥ सो सुनि आइ कंस तहँ सादर । कन्यहिं मांगि बिहँसिहठिकादर ॥ तासु चरण गहि आनँदपागो । ऐंचि शिलापै पटकन लागो ॥ तब ताके करसों छुटिकन्या । दिवपै दिब्यरूप धरिधन्या ॥ करि अट्टहास सुखदानी । कंसहि टेरि सुनायसि बानी ॥ तुम जो आत्म कुशलके काजा । ममबध विहित बिचारेहु राजा ॥ कछु दिन बीतेतवबध होई । ताहि नेवारिसकै अब कोई ॥ दोहा ॥ तासों इमि कहिकै भई देवी अन्तर्द्धान । पांयपर्‌यो सो देवकीके करि बिनयमहान ॥ कहि निज मुखसों खोरि निज भयो शोच सों छाम । शीशनवाये दीनसम गयो आपने धाम ॥ रोला ॥ रोहिणीयों प्रथमहीसों नन्द के घरजाय । रहीहीतिन भयो हो सुत सरुचि सुन्दरकाय ॥ नामकरण सरीति तिनकोकियो श्रीनँदराय । मोद सों अनधेनु मणिगण बसन बेसलुटाय ॥ दोहा ॥ कीन्हों जेठे कुवँरको संकर्षण यह नाम । कियोकुमार कनिष्ठको कृष्णनाम अभिराम ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेकृष्णावतारवर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ कथाकृष्णके जन्मकी बर्णिकही सह हेत । चरित कहत अबकृष्णके जेचितकर चितचेत ॥ चौपाई ॥ यकदिन कृष्णचन्द्र अभिरामहिं । बालचरित बिचरत छबिधामहिं ॥ स्वायतहां जा ऊरधभारी । बांधोरह्यो शकटमहिचारी ॥ गई यशोदा यमुना तीरा । भाग्यवती जगधन्या धीरा ॥ इत

लीलामिसि कृष्ण उदारू। चपलबढ़ाय चरण चलचारू॥ दयो गिराय शकटवह भूपर। अधरहि आपु ताहिलै ऊपर॥ रुदनकरन लागे किलकाई। तिमितहँ लख्योयशोमतिआई॥ निजउर ताड़ि धाइतहँ जाई। ऐंचि सुतहिलैअंकलगाई॥ बिस्मितशोच कहन इमिलागी। हर्षबिषाद भावसोंपागी॥ आजु कुशल यह ईश्वरकीन्हों। नयोजन्म करिसुत मोहिंदीन्हों॥ बनतेतहां नन्दतब आये। शकटलेखि बिस्मयसोंछाये॥ लगे साचरज बचन उचारण। कैसे गिस्यो शकट बिनुकारण॥ रहे लखतते बाल बताये। एई पगसों शकट गिराये॥ सो सुनि काहू सांचन माने। दैवीगतिहियमें अनुमाने॥ एकसमय निशिमें तहँ आई। दारुणकंसभूपकी धाई॥ नाम पूतनापापिनि गाई। कुच कुम्भनिमें जहर लगाई॥ अर्द्धरातिमें सूनोदेखी। प्यावन लगी कृष्णकहँ तेखी॥ दोहा॥ मुखसों स्तनगहि लिये करषिप्राण प्रभुजानि। घोर पूतना घोरधुनि करि गिरिपरी उतानि॥ चौपाई॥ सो धुनि सुनि नन्दादिक जागे। तेहिलखि बिस्मित बोलनलागे॥ कोबलवान याहि जो मास्यो। कोगहि ल्याय याहि इतडास्यो॥ बिरचिअथाई सब अनुमाने। पैकाहू कछुभेद न जाने॥ क्रमसों रामकृष्ण दोउभाई। घुटुवनचलन लगे सुखदाई॥ खेलैं इतउत आंगनमाहीं। कृष्ण चपलकढ़ि बाहर जाहीं॥ खीझिएकदिन यशुदामाई। कृष्णहि गहि बाहर सो ल्याई॥ कटिमें बांधि दाममुद लीन्हीं। ताहिबांधि ऊखलमेंदीन्हीं॥ कछुकारजमें आपु भुलानी। ओखरिसह चलि प्रभु अनुमानी॥ जुरेबढ़े हें ढिगबर छाये। यमलार्जुन द्वै वृक्ष सुहाये॥ तिनके मधि ह्वै काढ़िमनभाये। तिनमें बरवोखार अटकाये॥ ऐंचि मूलसों तिन्हैं उखारे। बालभाव प्रभु हँसैं सुखारे॥ तब तिमि तेहि तहँ लोग निहारे। सादर यशुदहि जाइ पुकारे॥ सुनिसो दशा यशोदा धाई। हाहाकरत पुत्रपहँ आई॥

धाइ उठाय अंकमें लीन्हो। बिस्मित सुचितशोचबहु कीन्हो॥ सुनिनन्दादिक गोप महाने। जुरेआइतहँ शिशुकसयाने॥ दोहा॥ वृक्षपात लखि बिस्मित कीन्हों नन्द बिचार। कारण लखि पावै न कछु करैकहा उपचार॥ दाम उदरमें कृष्णके बांध्यो गयो ललाम। ताहीते गोपिन कह्यो दामोदर यह नाम॥ रोला॥ रामकृष्ण उदार सुखमा सीवँ आनँदधाम। चारु कंचन बर्ण वैवै बनकबर घनश्याम॥ बाल चरित अनेक बिधि ते बिरंचिकीन्हे जौन। कहैं गोपीनाथ सो कहि पारपावै कौन॥ हरिगीती॥ बलराम कृष्णउदार क्रमसों सातबर्षनके भये। धरि नील पीत अमन्द अम्बर अखिलसुखमासों मये॥ शुचिश्वेत पीत सुअंग रंगनि चारुतनचित्रितकरे। बनमालचारु बिशाल अरु शिखिपक्ष अति मंजुलधरे॥ लै गोपसुतानिसमेत बत्सनि जायबन बिहरणलगे। तहँकरैं क्रीड़ा बन्धुदोउ बहुभांति अति आनँदपगे॥ तहँ एकदिन बलरामसों श्रीकृष्णचन्द्र जु इमिकहैं। यह बन बिरल रमणीय नाहिं यहि तजन मोमन चहतहैं॥ हैकालिंदीके पार वृन्दावन परम रमणीय सों। तानिकट गोबर्द्धनशयल छबिसीवमय कथनीयसों॥ सो सुबन बिहरण योग निबिड़ सकुंज सरित सुतारहैं। तहँ गोप गोपिनहूं सुखद हित गउनको अतिचारहैं॥ उतबास बिरचन हेत हम वृक इतै प्रकटित करतहैं। उत्पात अति दरशाय गोपनिभूरि भयसों भरतहैं॥ तबडरपिकै नन्दादिसबइतछोड़ि चलि बसिहैं उतै। तहँमोदसों दोउबन्धु बिबिधबिलासकरिहैं अद्भुतै॥ दोहा॥ इमिसम्मत बलरामसों करि श्रीकृष्ण अनूप। प्रकटकिये वृक यूथतहँ बिकट भयानक रूप॥ तिनसों लहि उत्पातडरि नन्दादिक सबगोप। वृन्दाबनमें जाइकै बृजरचि बसे सचोप॥ चौपाई॥ योजन भरको चौड़ोचारु। दुइयोजन बिस्तारित्त उदारु॥ रचो पुरी अतिबृज रमणीया। पुलकित होय जाहिलखि हीया॥

चारिउ दिशारुधान बढ़ाये। पृथक् पृथक् बरगौंठ बनाये ॥ रमैं तहां सिगरे ब्रजबासी। रामकृष्ण प्रभु बिपिन बिलासी ॥ यक दिन कृष्ण बिना बलभाई। गोपसुतनि कहँसंगलवाई ॥ बत्सन लये रमत बरकानन। धरम धुरीण पुरुष पंचानन ॥ जोय लाखबट बिटप सुहायो। उन्नतजो भांडीर कहायो ॥ दीरघ शाखी घनो गसीलो। मढ़ो लतनिसों सरल रसीलो ॥ चारु भवन सो बनो सुहावन। पक्षिनके रवसों मनभावन ॥ त्यहि लखि कृष्ण सुखद थल चीन्हें। निज बिलास हित रोचित कीन्हें ॥ सबै सखनिसह तब अनुरागे। रमे दिवस में आनँदपागे ॥ गये तहांसो यमुना तीरा। गोपसुतनिसह लेगोभीरा ॥ अति रमणीय तासुतट देखी। इतउत रमणलगे शुचिभेखी ॥ लखेतहां यकदह अतिभारी। योजन भरको बर बिस्तारी ॥ मीनादिक जलजन्तु न हीना। याके तटके द्रुम अतिक्षीना ॥ जीवजन्तु कोउ निकट न आवै। भूरि भयानक लखिभयपावै ॥ दोहा ॥ ब्रज ते उत्तर देशमें कोशभरे पै तौन। चाहि ताहि चितमें धरिक शोचे आनँद भौन ॥ कालीजामें बसतहैं साहितपक्ष परिवार। यह थर सूनो ताहिके फूतकार के झार ॥ चौपाई ॥ यह बिचारि आनँदसो मढ़िकै। कूदेकृष्ण कदमपैचढ़िकै ॥ जलमें भयोशब्द अति घोरा। उमड़ि गयो जलचाढ़ि दुहुँओरा ॥ घोरशब्द सुनिकैरिसिछायो। काली प्रभुकेसम्मुख आयो ॥ फूतकारछोड़त रिसि रातो। करे कालिन्दीको जलतातो ॥ सह परिवार गर्बभरिमनमें। लपटिगयो शठ प्रभुकेतनमें ॥ सोलखिकैसिगरे सँग वारे। सादरब्रजमें जाय पुकारे ॥ सुनतेनंद यशोमति धाये। बालक वृद्ध युवा सबआये ॥ हाय हायकहि इतउत हेरत। कृष्ण कृष्ण कै आरत टेरत ॥ नन्द यशोमति अति अकुलाने। मरण चहैं कै सरितसमाने ॥ यहि गति श्रीबलराम निरेखी। बोले सगरब अतिशय तेखी ॥ कालिहि मर्दि बाहिरे आवो। अब

मीत कृष्ण बिलम्ब लगावो ॥ फणिगहि तापै चढ़ि मुदलीन्हें। गर्जि मर्दि रिजुरजु समकीन्हें ॥ तबकाली प्रभुकहँ पहिचानी । कहेसि बिनय करि आरत बानी ॥ मम अपराध क्षमा करि स्वामी । देहु बास मोहिं अन्तर्यामी ॥ कहे कृष्ण तुम सह परिवारा । करौ जाइकै उदधि बिहारा ॥ प्रभुनिदेश कालीउरधारे। मुदित समुद कहँ तुरित पधारे ॥ दोहा ॥ प्रभुआयेकढ़ि बाहिरे नन्द यशोमति धाय । नीर भरे नयननि पुलकि लीन्हें अङ्कलगाय ॥ धन्य जानिकै अपुनको अतिनिज भाग्य सराहि । आये ब्रजमें मुदितमन प्रभुमुख पंकजचाहि ॥ चौपाई ॥ संकरषण अरु कृष्ण सुनामी । सुखमा सिंधु सरस सहगामी ॥ गोप सुतन सँग लैसह गोधन । बन बिहरतगे जहँ गोबर्द्धन ॥ उत्तरदिशि गोबर्द्धन केरे । अति रमणीय तालबन हेरे ॥ उन्नत ताल वृक्ष जेहि फूले । जिनमें करिकरसम फलझूले ॥ तिनकोपाय शुद्ध सोहायो । संकरषण सों कृष्ण सोहायो ॥ लखो तालफल सरस सुहावन । ऐसो जासु गन्धमनभावन ॥ ताको स्वाद अपूरब ह्वैहै । पायेमनआनँदसों ग्वैहै ॥ सोसुनिरौहिणेयसुखपाये । तरुण तालतरु तुरित हलाये ॥ भो अतिशब्द तरुनके हाले । फलके गिरे पत्रके चाले ॥ सुनि धेनुकदैअत अघखानी । ताबन को रक्षक अभिमानी ॥ गर्द्दभ रूप भयानक भारी । सँगसम रूप लयेअनुचारी ॥ लताभवनते चपलनिकशिकै । संकर्षणहिदांत सों दशिकै ॥ फिरि पछलातनि मारनलाग्यो । दारुण दुष्ट दोषसों पाग्यो ॥ तासुचरण दोउ पूरब वारे । गहिऊरधको राम पवारे ॥ उन्नततालशिखापै परिकै । गिरयो मूढ़तहँमहिपै मरि कै ॥ रहे चिते ताके सँगवारे । ताकी बिधिगहि तिन कहँ मारे ॥ तिन्हैं मारि अति आनँद पागे । बीरधीर बन बिहरण लागे ॥ दोहा ॥ गोपन सँगक्रीड़ा करत लै गोधन समुदाय । बट बिशाल भांडीर के ढिग प्रभुगये सचाय ॥ तहां जाय पेषण लगे बाला-

पनके खेल। दोय गोल करि चावसों बिरचि बरग चितमेल॥ जयकरी॥ असुर प्रलम्ब नाम बलवान। गोप सुवन बनि कुटिल अमान॥ आये तहंतहँ हे व्रजनाथ। खेलन लगो सखा बरि साथ॥ चौपाई॥ खेलत रहे खेल बलधामें। यह करार निर्मित होतामें॥ हारै सो निजकन्ध चढ़ाई। जोजीतै ताको लै जाई॥ सुबिटपबट भांडीर छुआवैं। फेरि चढ़ायइतैलै आवैं॥ हो श्री-दाम नाम प्रिय बादी। भयो कृष्णको तहँ प्रतिबादी॥ जो प्रलम्ब होकरे ठगोरी। सो भो संकरषण को जोरी॥ जोर बिरचि यहिभांति सभागे। चतुर चावसों खेलन लागे॥ कृ-ष्ण सबन्धु सबर्ग सुनीते। सुहित संग प्रति बादिहि जीते॥ निज निज बादिन पै चढ़ि चावन। लगे गोप सब जावन आवन॥ संकर्षण कहँ कन्ध चढ़ाई। चल्यो प्रलंब सुऔसर पाई॥ बटढिगजायरोष हिय छायसि। कै बर्द्धित निजबपु दर-शायसि॥ उन्नत कज्जल गिरिसा भारी। भूरि भयानक भेष सुधारी॥ संकर्षण कहँ लैलै भागो। मत्तअनन्त गर्वसोंपागो॥ तापै संकर्षण हैं ऐसे। चल बारिद पै थिर रबि जैसे॥ तब संक-र्षणहिये बिचारी। कहे कृष्णसों धीरज धारी॥ मोसों दुगुन लखात सुरारी। काकरिये सोकहौ पुकारी॥ सुनिइमिकह्योकृष्ण सुखदानी। आपहि भूलिकही तुमबानी॥ दोहा॥ जगदाधार अनन्त तुम हौ अनन्त परभाव। महिधारण तुम शेषहौ चेति गहौ चितचाव॥ हम तुम एक न भिन्नहैं भयेएकसोंदोय। धा-रण पोषण जगतके हेतुबिचारोसोय॥ चौपाई॥ ताते बन्धु बचन मम सुनिकै। मानि अनंत आपकोगुनिकै॥ बलीदैत्यको बध अब करिकै। हमसों आइ मिलो मुदभरिकै॥ सोसुनि संकर्षण रिसिभारे। मूका तासु शीश पै मारे॥ मूका मारि फोरि शिर दीन्हें। फेरि जानुसों ताड़न कीन्हें॥ तब मरि गिरयो भूमिपै सोई। कृष्ण ग्वाल हर्षे सब कोई॥ रहि अदृश्यसो लखि सुम-

नस गन । बर्षिसुमन इमि कहे मुदितमन ॥ बलसों हते दैत्य ऋषि राते । ये बलदेव नाम अबताते ॥ करि प्रलम्बको बध सुख पाये । सहित समाज कृष्ण ब्रज आये ॥ सहित सखा प्रभु ब्रजमें राजे । चारुपुरी सुखमासों साजे ॥ लहि बर्षाको अन्त सोहाये । गोप वृन्द आनँद सों छाये ॥ इन्द्र यज्ञ आरोपण चाहे । तब इमि बोले कृष्णउछाहे ॥ कोहैं इन्द्रयज्ञसो भाखौ । तासु प्रभाव गोप मतिराखौ ॥ सो सुनि वृद्धगोप यकबोल्यो । शक्र यज्ञकी महिमाखोल्यो ॥ इन्द्र मेघ के अधिपति सरसैं । तासु निदेश पाय घन बरसैं ॥ बर्षेहोइ तृप्ति यहधरणी । तृण अरु शस्यहोय बहुबरणी ॥ तरु तृणलता फूलि फलिभावें । जीवजन्तु सब आनँद पावें ॥ दोहा ॥ जलतृण अन्नरु तरुन सों औषधीनसों तात । जगमें सबजीवीनको जीवनबर्णोजात ॥ वृन्द गउनको चरि सुतृण ह्वैकै पुष्टि बिशाल । देहिंबहुत पय ताहिते गोपिनको प्रतिपाल ॥ चौपाई ॥ याहीहेतु सुनहु प्रिय कूजन । करैं इन्द्रको हमसब पूजन ॥ गोपवृद्धकी सुनि यहबानी । हँसिइमि बोले कृष्ण सुज्ञानी ॥ गोपजाति हम बिपिन बिहारी । गोधन जीवन वृत्ति हमारी ॥ गोधन गिरि काननके चारी । गिरि काननसों रहैं सुखारी ॥ ताते हमैं पूजि गिरि कानन । अरु गोधनकरि बिबिध बिधानन ॥ जीवनवृत्ति जासु है जासों । सोई तासुदेव सर्बदासों ॥ तिन्हैं छोड़ि जे औरहि पूजैं । ताहि कृतघ्न सुबुधि जनकूजैं ॥ गिरि प्रभाव यक और सुनतहैं । सो निज जियमें सांच गुनतहैं ॥ गिरि ह्वै सिंहब्याघ्र तनुधारी । करैं सबनकी नित रखवारी ॥ गिरिवरको पूजै जन कोई । तासुबिघ्न कबहूं नहिंहोई ॥ बिनु गिरिपूजेबिपिनबिहारै । ब्याघ्रसिंह ह्वै गिरि तेहिमारै ॥ ताते मम सु बचन हियधरहू । गिरिगोधनकर पूजन करहू ॥ सोसुनि गोपवृन्द हर्षाने । कृष्ण कहे जोसो सतिमाने ॥ पूजि गउनकहँ भूषित करिकै । गो

गोबर्द्धनपै मुद भरिकै॥ पयदधिघृतसेकुण्डभराये। भोज्यवस्तु के गांज लगाये॥ नरनारिन सह आनँदलीन्हे। गोबर्द्धन कर पूजनकीन्हे॥ दोहा॥ पूजनान्तमें कृष्णप्रभु माया बिरचिउदारु। गिरिवत बपुधरि प्रकटभे दिव्यपुरुषकै चारु॥ भोज्यवस्तु भोजनकरै पयदधिकीन्हे पान। देखि अपूरब कलायह हर्षे गोप सुजान॥ चौपाई॥ गोपनसहित कृष्ण बलरामू। कीन्हे त्यहि दण्डवत प्रणामू॥ प्रभु कौतुकी कुतूहल लीन्हे। आपुहि आपु दण्डवत कीन्हे॥ शैल मूर्ति धरसों करजोरी। कहे गोपकरि प्रीति अथोरी॥ आज्ञाकरौ नाथ अब जोई। करैं नेमसों हम सबसोई॥ सो सुनिकहे शैल बपुधारी। प्रति बर्षनकरि पूजा म्हारी॥ सहित समाज प्रदक्षिण करिहैं। सरस सम्पदा सों तौ भरिहैं॥ हम तुव आदि देव उपकारी। अपरनपूजेहु हमैं बिसारी॥ गिरि बपुधारी कृष्ण सुजाना। इमि कहिकै भे अंत र्द्धाना॥ सहित समाज गोप छविछाये। गिरिहि प्रदक्षिणकरि ब्रजआये॥ चढ़ेचाव चातुर चितचाहे। कृष्णहिं भांति अनेक सराहे॥ निजपूजन बिधि ध्वंसनदेखी। दशशताक्ष अतिमन में तेखी॥ सम्बर्तक गणबली बलाहक। तेहि निदेश दीन्हें सुरपाहक॥ ममनिदेश लहि ममहित चाहू। तुम सिगरेचलि ब्रजपै जाहू॥ ब्रजको नाश करनको चोपौ। बात बृष्टिसों प्रलयारोपौ॥ सातराति दिन अतिशय घोरा। करहुदृष्टि ब्रजपै चहुंओरा॥ शक्र सक्रोध निदेश जु दीन्हें। सो सुनिचले मेघ रिसिलीन्हें॥ रोला॥ सजल मेघ असंख्य उन्नत सबदिशिनि ते घेरि। चलेइमिबृजपै सजबजन लहतउर जेहिहेरि॥ क्षुधित मत्तअनन्तमैगल सुबश बिनुगढ़दार। झुकत जिमिचहुंओर ते लखि ऊखको केदार॥ दोहा॥ ब्रजमण्डलको घेरिकै घिरि घनघनेअपार। छोड़न लगेसरोषअतिकरि करसमजलधार॥ चौपाई॥ गर्जि तर्जि मढ़ि करि अँधियारी। लहि प्रचण्ड मारुत

उपकारी ॥ प्रलय काल आरोपित कीन्हें। ब्रजबासिनकोंअति दुख दीन्हें ॥ ब्रजबासिन कहँ आरत देखे। तब श्रीकृष्णचन्द्र अति तेखे ॥ करि अनुमानि प्रयत्न बिचारे । गोवर्द्धन गिरि कर पै धारे ॥ ताकेतर बैठे मुदराते । गोगोपी गोपालजहांते॥ छप्पन पहर बलाहकबरसे। कान्हूकेतनछींटनपरसे ॥ ह्वैलज्जित तब शक्र सुशामा । मेघन सहित गये निजधामा ॥ जयति कृष्ण इमि गोपनभाषे । यथा प्रदेश गिरिहि प्रभु राखे ॥ गिरि धारणब्रज रक्षण ज्वैकै। सुरपति मनमें बिस्मित ह्वै कै। ऐरावत पै चढ़िछबि छाये। परम प्रेम गहिप्रभुपर आये ॥ गोबर्द्धनको शिला सोहावन। तापै बैठे हैं प्रभु पावन ॥ श्री घनश्याम पिताम्बर धारी। मंजुमुकुटधर बिपिनबिहारी ॥ बनजकुसुमके भूषण धारे । जेहि लखि जाहिं काम शतवारे ॥ उर श्रीवत्ससु लक्षण सोहैं। देखि जाहि सुरमुनिनरमोहैं ॥ रहि तहँगुप्तसुपर्ण सुकाया। कीन्हेहे पक्षनिसोंछाया॥ किये इन्द्रलखि तृपितसुअखियन। लालचलाजभरे अनमिषियन॥ लहे मोहतहँशक्रसुभेखी ॥अनमिखियन आँखियनसों देखी ॥दोहा॥ प्रभुहि पेखि अति मोदलहि सुरपतिसरससुजान। मधुरमनोहरबचनसों करनलगे गुणगान॥करपरगिरिधरि कृष्णतुम लीन्हेंजोब्रजराखि।सो अमोघगुणअपुनको सकै न कोऊ भाखि ॥हरिगीती ॥सुर यक्षरक्ष सगणनहूंको काजयहदुस्तररह्यो। तुम सहजहीमेंकिये सोयहजात गुणकापै कह्यो ॥ निजयज्ञ ध्वंसनदेखिहौं रिसिमानि अतिअनुचित करे। निज काजलीन्हें साधि तुम कछुरोष नहिं हियमें धरे॥ अति दुखित उग्र समस्त बैष्णवतेज तुम गोपनकिये। कोसकै बूझि बिचारिकहि अति अमल गुणतुम जोलिये॥ जो आपु बिधि तुव गुणगणन को अन्त कछु लहिबो चहैं। तौ देखिगिरि बर पंगु जिमि तिमि बूझि मनसों थकिरहैं ॥ हेपूर्वहम तुम अदिति गर्भज तत्रहौं अग्रजसुनो। सो जानि मम अप-

राध हिय सौं दूरिकरि बोई गुनो ॥ हैं कील दण्ड समान जल पै शैल महितापै बनी । हैं भूमिपै सब आदि मानव जाति जितनी अनगिनी ॥ अरु तासु ऊरध गगनमें गतिखगणकीसब कहतहैं। ताऊर्ध हैं रवि स्वर्ग की शुचिद्वारता जो गहत हैं ॥ है तासुपर मम स्वर्ग लोक सुतासु परविधिलोकहै । हैतासुपरगो लोक शुचि आनन्दको जो लोकहै ॥ दोहा ॥ सुरन सहितनिज लोकपै हों निति करत विलास । ब्रह्म ऋषिणसह विधि करैं ब्रह्मलोकमें बास ॥ करत साध्यगोलोकमैं गोपालन व्रतधारि। तासों अति ऊरध तहां तुम बिलसत भुजचारि ॥ चौपाई ॥ जा सुभेद सुर मुनिनाहिं पावैं । बहुत भांति विधिजऊं बतावैं ॥ पृथिवी कर्म क्षेत्र है पावन । इतै कर्म करिजीव सुहावन ॥ पद अनुरूपकर्म के पावैं। सबथल जाहिंबहुरि इतआवैं ॥उत्तम पद तुम्हारजे पावैं। तेन कबहुं फिरि महि पै आवैं ॥ कुत्सित कर्म तमो मय करहीं। तेभूमिहुते अघसंचरहीं ॥ कहूं सुकृतकहुंदुष्कृत करिकै। भ्रमैं गगनमारुत बस परिकै ॥ शुद्धसुकर्म सुकृत जेकरहीं। पायस्वर्ग ते आनँद भरहीं ॥ चारुब्रह्मतप करि अनुमानी। पावै ब्रह्मलोक गुरुज्ञानी ॥ गऊलहैं गोलोक उदारा। औरहि दुर्लभ तासु बिहारा जोतवभक्त मुमुक्षु अकामक। पावैं ते तव लोक सुनामक ॥ इमिकहि सुरपति आनँद छाये। कनककुम्भ भरि सुजल मगाये ॥ शुचिअभिषेक कृष्णको करिकै। कहे इंद्र हिय आनँद धरिकै ॥हम देवनके इन्द्रविख्याता। तुम गाइनके इन्द्रसु ज्ञाता ॥ अबसों तुम गोविन्द कहावो। निजजनके हिय आनँद छावो ॥ सुभग बारषिक चातुरमासा। मम पूजन दिन बिहित बिलासा ॥ तिनमैं दोयमास हमलेहीं। दोय मासशुचितुमकहँ देहीं ॥ दोहा ॥ बर्षाऋतुद्वै मासमें हमहि पूजिहैं लोग। करिहैंलहि ऋतुशरदको तवपूजन उपयोग ॥ यह कहिकै फिरि कृष्णसों इमिभाषेसुरराज। शीघ्रकरौ बधकंसको

सहित सुसखासमाज ॥ चौपाई ॥ कंसहि मारि मोद हिय धारौ। ब्रजमण्डलमैं शुचितबिहारौ ॥ तुव पित भगिनी कुन्तीनामा। तागर्भज अर्जुन अभिरामा ॥ सोमम पुत्र धीरधनुधारी। तापै करिकै कृपाबिचारी ॥ कीजोसखासप्रेमहिं याते। कछुहमरेकछु अपनेनाते ॥ सोतुव चित्तवृत्ति अनुगामी ॥ होइहि समरभूमिमैं नामी ॥ कहेशचीपातेजासोसुनिकै ।सादरकहेकृष्णइमिगुनिकै॥ चाहिसुरेशइतैतुमआये। तासोंहमअतिआनँदपाये ॥ भावतुम्हारअहैहमजाने। सोकरिबो मतहैअनुमाने ॥ अतिप्रियसखा अर्जुनहिंकरिकै। अरुबरुतासु भृत्यताधरिकै ॥ भूमिभारतिनसों हरवैहौं।तीनिलोकमेंआनँद छैहौं॥सोसुनि सुरपुरगयेउचाहैं। दै आशिष बहुभांतिसराहैं ॥ काजअमानुषलखिकैबिस्मित। आनँदभरेबहैं इमि सास्मित ॥ बालापनसों अबलों कीन्हे। तुमजे कारज आनँदलीन्हे ॥ देवनहूं दुस्तर तेकारज। करेसहजहीमें तुमआरज ॥ तातेहमसब बिस्मितह्वैकै। बूझोकहौसत्यमुदग्वैकै ॥ दोहा ॥ हौतुमकोसुरगणनमें अरुकेहिकारणआय। ह्वैमनुष्य प्रकटित भये कहौकृष्ण समुझाय ॥ पद्मदलेक्षण कृष्णप्रभुसो सुनिबोलेबैन। तुमजो कहे बिचारकरि इनमें हमकोउहैन ॥ हैं हमगोप सजातितुव जौनलेहु यहमानि। तौकछुदिन चुपरहहु फिरिआपुहि लेहौजानि ॥

इतिहरिबंशदर्पणेबालचरित्रेकृष्णशक्रसमागमोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

चौपाई ॥ श्रीश्रीकृष्णचन्द्र गुणसागर। धर्मधुरन्धरधीरउजागर। गोपउबारणधारेमन्दर। भयेकुमारमारसमसुन्दर॥ पायशारदीनिशा उदारू। चाहि चांदनीचन्द्रसुचारू ॥ रसिकराजअति आनँदपाये। मोहनमुरली मंजुबजाये ॥ सोसुनि गोपबधू मुदग्वैकै। गईकृष्णपै मोहितह्वैकै ॥ भांतिअनेक रमेप्रभुतिनसों। कहीजाइ सो सुखमाकिनसों ॥ बहुबिधि रमेबहुतनिशि नागर। अन्तर्यामी सुखमासागर॥ सोबिस्तार कहांलोंकहिये।

बहुतमोद थोरो कहिलहिये ॥ सुनो एकदिनकी मनभावन । कृ-
ष्णचन्द्रकी कथा सुहावन ॥ नाम अरिष्टदैत्यबलभारी । रह्यो
अमान वृषभबपुधारी ॥ गोयूथनमें परलय नाधक । छोटेबड़े
वृषभको बाधक ॥ गाइनहूं को दुखद अन्याई । संध्या समय
एकदिन आई ॥ प्रभुके सन्मुख गर्जनलाग्यो । भयोकालवश
अतिरिसपाग्यो॥तेहिलखि हरि करतालीदीन्हे । सुनिसोचल्यो
हकड़िरिसलीन्हे ॥ कासि शरीर पुरपूंछउठाये । खींचतिरीछेशृङ्ग
उदाये ॥दोहा॥ यहिबिधि आवतताहिलखि कूदिशृङ्गगहिबीर ।
घूमघुमाय गिराय तेहि बधे कृष्णरणधीर ॥ वृषभासुरकोदेखि
बध सिगरेगोप सुजान । ह्वैमोदित श्रीकृष्ण की अस्तुतिकिये
महान ॥ चौपाई ॥ सिगरे चरितकृष्णके सुनिकै । कंसभूपनिज
हियमेंगुनिकै॥ उग्रसेन बसुदेव निशंकहि । बभ्रु अक्रूर भोज
अरु कंकहि ॥ सात्यकि दारुक अरु कृतबर्मा । कंकावरण विकद्रु
सपर्मा ॥ विपृथु पृथुश्रिय अरु बैतरणू । ये यदुबंशी आनँदभर-
णू ॥ अर्द्धरात्रिमें इन्हैं बोलाई । करितिनकी बहुभाँतिबड़ाई ॥
हिये त्रसित ऊपरअभिमानी । कहनलगो यहिविधिकी बानी ॥
ममबिनाशको कारणगाढ़ो । नन्दगोपको सुतह्वैबाढ़ो ॥ कृष्ण
नाम अति उद्धतबीरा । दुस्तरकारजकर रणधीरा ॥ मंत्रीचार
बिचारनहीना । हौंयहपायो शोचअधीना ॥ जिमिआलससों
रोगबढ़ावै । तबचेतै जबअतिदुखपावै ॥ तिमिअबलौंहम चे-
तनकीन्हों । अबसुनि तासु चरितचितदीन्हों ॥ खेलतहो पलना
पै जबसों । अद्भुतकाज करैपैतबसों ॥ एकसमय नारदमुनिआ-
ये । द्वितियबार इमिमोहिंसुनाये॥ तुवबिनाश करताहोंटेरो । अ-
ठवोंपुत्र देवकीकेरो ॥ तेहिबसुदेव यशोदहिदीन्हे । तासु सुता
निजतनयाकीन्हे ॥ बिन्दक्षेत्रपै बिदितबिराजैं । सोहत शुम्भ
निशुम्भ दराजैं ॥ दोहा ॥ अठवोंसुत बसुदेवको सुतबधकर्त्ता
बीर । नन्दगोपके गेहमें बिलसतहै रणधीर । सोतुम सबबसु-

देवको देखो कुत्सितकर्म । ममबिनाश चितचाहिकै कैसोकियो अधर्म ॥ चौपाई ॥ ममढिग रहिकरि भोगबिलासा । ह्वैकृतघ्न चाहै ममनासा ॥ मम बध इच्छिचाव चितराखै । अरु निज सुतहि राज्यअभिलाखै ॥ आपुहिआपु मोदहियभारे । ममबध करिबोसहज बिचारे ॥ वृद्धकहाय मान्यसबहीके । हैं ये भये कुटिल अतिजीके ॥ बारपकेते वृद्ध न कोई । वृद्धसोईबरबुधिको जोई ॥ इनहिं न बधउँ बूझियह आजू । ज्ञाति वृद्धतिय बधब कुकाजू । तातै हेअक्रूर सुज्ञानी । जाहुनन्दपै सुनिममबानी ॥ कह्यो नन्दसों ममढिगआवैं । उचितदण्डदै आनँदछावैं ॥ सब कोउ उनकेसुतनसराहैं । तिनहूंको हमदेखनचाहैं ॥ तिनहूंको सँगलीन्हे ऐहैं । जैहैं तबसँग लीन्हे जैहैं ॥ धनुषयज्ञहम रंभन कीन्हे । तामेंतिनकेमुदसुत लीन्हे ॥ मेरेमल्लनसों लरिजीतौ । मांगिलेहिं तैंजो चितचीतौ ॥ यहिप्रकार बहुभांति बुझाई । ल्यावो तिन्हैं बिश्वासबढ़ाई ॥ सोकरिबो जेहि इतलोंआवैं।उत इतको कछु भेद न पावैं ॥ कह्योकंसजोसो सबसुनिकै । चलेअ- क्रूर नन्दपै गुनिकै ॥ प्रभुहि लखनको उत्सुककैसे । तृषितज्येठ को जलको जैसे ॥ सबके मान्यवृद्ध शुचिभेवहि । देवतुल्य बर बुधि बसुदेवहि ॥ अतिकठोरबानी रिससानी । कहेसिजुकुटिल कंस अभिमानी ॥ दोहा ॥ सोसुनि नहिं बोले कछू श्री बसुदेव सुजान । सब यदुबंशी ब्यथितह्वै मूंदि रहे निजकान ॥ अति अबाच्य बातैं कहै ताहिकालबश मानि । उग्रसेनके पितामह अंधकबोले जानि ॥ चौपाई ॥ अहो कंस तुम शुचिमति नाषे । बसुदेवहि जो यहिबिधि भाषे ॥ ये नहिं ऐसे कहिबेयोगू । इन्हैं सराहत हैं सबलोगू ॥ यदुबंशज वीरधअरु पोचू । सबमानैं इनको संकोचू ॥ तासुनिरादर इमितुमकीन्हे । सबकेहृदयभल्ल यह दीन्हे ॥ मान्यपुरुषकहँ निदरै कोई । ताकोभल कबहूं नहिं होई ॥ निजसुतको इनरक्षण कीन्हे । सो अघजानि रोष तुम

लीन्हे॥ नीके निज पितुसों तौ बूझो। याहीबिधि उनहूंसों कूझौ॥ नाहकतुमको पोषि सुधारे। जनमतकाहे मारि न डारे॥ सुतपै करै नेह पितुजैसो। वे तुमसों कहिहैं सो तैसो॥ पीछेकिये कर्म तुमजेते। सो बिचारकरिपहिले लेते॥ निज अघ समुझेहू कहिआवत। तौ तुम कहते जो कछुभावत॥ तुम बहुअनरथ कीन्हें पीछे। अरु अबहूं करिबोई ईछे॥ ताते इत अति असगुन होई। राजछत्रको नाशक जोई॥ संकर्षण अरु कृष्ण सुयोधा। तिनसों तुमसों बढ़ो बिरोधा॥ ताते मम शिक्षा हिय धरिकै। श्रीबसुदेवहि मोदित करिकै॥ लै बसुदेवहि संगसहाई। चलो कृष्णपै कपट बिहाई॥ दोहा॥ अन्धकको यह सुनि बचन बोलाकछू न बैन। गो उठिकै निजभवन में करिरिसराते नैन॥ अन्धकादि यादव गये निज निज घर सुखदानि। जानि कंसको कालबश हरिइच्छा अनुमानि॥ चौपाई॥ रह्यो दैत्ययक केशीनामा। बाजिवेषधर बरबलधामा॥ रहैसदा वृन्दावनमाहीं। गोमानुष हतिखाइसदाहीं॥ तेहिपठयेहो कंससँदेशू। कृष्णनाशको उग्र निदेशू॥ सो वहकेशी अश्व बिशाला। आयो ब्रजपै कठिनकराला॥ तेहिलखि ब्रजबासी भयपाये। आरत भागि कृष्णपै आये॥ ब्रजबासिनको साहस दैकै। ताढिगचले कृष्ण मुदलैकै॥ कृष्णहि आवत सन्मुख देखी। आइहयेन्द्र झपटि भय भेखी॥ हींसत ग्रीव सुपूंछउठाये। घूम्यो प्रभुके दहिने बांये॥ बार अनेक घूमि चहुँओरा। शठमारेसि पछिलात कठोरा॥ फिरि अतिघोर शब्दकरिडाटेसि। बाहुमूलमें रदसों काटेसि॥ बरबलके ममतासों छायो। चाहेसिउरसोंरौंदि गिरायो॥ तब हरिनिजभुज बर्द्धित कीन्हे। डारिदैत्यके मुखमें दीन्हे॥ करि ताउरमें भुज बिस्तारा। कीन्हेंकेशीको दुइफारा॥ केशिहिमरोदेखि बृजबासी। अति मोदितभे बिपिनबिलासी॥ यथाउचित कहि कहि प्रियबानी। बहुबिधि प्रभुहि सराहे ज्ञा-

नी ॥ नारदमुनि परभाव अतोले। रहि अदृश्य नभ पै तहँ बोले ॥दोहा॥ या केशीको बध रह्यो दुस्तरहे असुरारि। याके बधिबे योग्य हैं तुमहीं कै त्रिपुरारि॥ तुमकेशीको बधकरे ताते महिमाधाम। होइहि जगमें प्रगट तुव अनुपम केशवनाम॥ हरिगीती॥ लखि तुमहिं तुव चरितानि अबहम जात हैं आनँद भये। फिरि आइ इत लखिहैं सरुचि अन्न चरित करिहौ जेनये॥ इमि कृष्णसों कहि प्रेमपूरि मुनीशनारद दिवगये। सह गोप कृष्ण उदार प्रभु प्रिय परम बृज प्रविशतभये॥ तेहिदिवस संध्या समय तहँ अक्रूरपहुँचे बुधिवरे। तुर उतरिरथसों नन्दकेघर गये अति सुखसों भरे॥ गोबत्सके ब्यापार में तहँ देखि कृष्णहि तकिरहे। रोमांचितो ह्वै पुलकि पसिजि सुनैन जलभरि जकिरहे॥ यकसमयमें बटपत्रपै शिशुरूप शयन सरुचिकरैं। ते आइ महिपै गोपबनि यहिभांतिके कारज करैं॥ इमि बूझि मनमें ज्ञानबर चलि कृष्णकृष्ण सुटेरिकै। गहिमिले अंग लगाइ कासिवह मूर्त्तिचखमें मेरिकै॥ सहकृष्णगे जहँ नन्द हे तहँ झपटिकै तिनसों मिले। बलरामसों मिलि ताहि क्षणते कदम किंशुकसे खिले॥ तहँ वृद्धगोपन सहित बैठि सुकुशल कहिसुनि मुद लहे। फिरिकह्यो कंसमहीपको तहँनन्द अरु हरिसों कहे॥ दोहा॥ शासनकंस महीपको सुनहुनन्दसह चोप। वार्षिककरलै चलहु उत लै सँग सिगरे गोप॥ कंसनृपति कीन्हें महत धनुमखको आरोप। चलैं तहां तेहि लखन को रामकृष्णवर ओप॥ चौपाई॥ इमिकहि कहे कृष्णसों ऐसो। रुचत रह्यो निज मनकोजैसो॥ वृद्धपिता बसुदेव तिहारे। परबशपरे जन्मतेहारे॥ रहति देवकी जननीधारी। तुमहिं लखे बिनुसदादुखारी॥ तुमसोंपुत्रपाइतेदम्पति। लहैंशोचसों अनुचितसम्पति॥ तुम्हरे अमरष बरारिसलीन्हे। कंसातिन्हें अतिशय दुखदीन्हे॥ ताते उत चलि सहित सनेहू। मातहि पितहि

सरस सुखदेहू॥ सोसुनि कृष्ण न रिस कछुकीन्हे। उतचलिबेके शासनदीन्हे॥ रामकृष्ण अक्रूरसोहाये। निशिकाहिकथा प्रसंग बिताये॥ चलेभोर सब सम्मत करिकै। पयदधि वृषभ महिष घृतलैकै॥ रामअक्रूर कृष्णतहँ बढ़िकै। दुसरे एकसुरथपै चढ़िकै॥ निरखिकलिंदी दीरघदानद। कहेअक्रूर कृष्णसों सानद॥ तातएकक्षण तुम दोउभाई। रथसह इतैरहो सुखदाई॥ न्हाइ ध्याइ शेषहि इतजबलों। नहिंआवों मोहिं परखेहुतबलों॥इमि कहिजाइ कलिंदी भीतर। लैचुभकी तहँ लखैं अनीतर॥ सेवित तक्षकादि अहिगण सों। शोभित शेष सहस्र सुफण सों॥ तासु उछंग बिष्णु आसीना। निकटबिराजे रामप्रवीना॥दोहा॥ लखि विष्णुहि इमि तहँ कछू चाहे कहन अक्रूर। कहि न गयो कछु तकिरहे अनुपम परमापूर॥ बाहरकाढ़िजों लखै तो श्याम गौर अभिराम। रथ पै बैठे हँसतहैं रामकृष्ण छविधाम॥चौपाई॥ जलमें बूड़ि निकसि फिरि देखे। ताहीबिधि उत इतै निरेखे॥ तब तजिजल अक्रूर सोहाये। साचर जितसे रथढिग आये॥ बोले बिहँसि कृष्ण तेहिचाहे। हौआश्चर्यितसे तुमकाहे॥ सुनि अक्रूर कहे प्रभुपाहीं। तुमकहँ ये कछु अचरज नाहीं॥ चाहो सो करि आनँद छावो। एक अनेक रूप दरशावो॥ उततुम्हरे सन्मुख मन भायो। हम सों कछूबोलि नहिं आयो॥ इत इहि भांति रमो सबही सों। लागोइतक आचरजजीसों॥ इमिकहि रथचढ़ि चले उतालहि। पहुंचे मथुरा सायंकालहि॥ गे अक्रूर निजगेह लवाई। सादर तहां उतारे जाई॥ बोले तहँ अक्रूर सुबानी। सुनहु कृष्णबलराम सुज्ञानी॥ कछु दिन इतउत बैठि बितायहु। अबै न निज पितुके घरजायहु॥ जो उतको जैबो सुनि लेइहि। तो नृप उनहिं अधिक दुखदेइहि॥ सुनि हँसि बोले केशव आरज। उत जैबे को मोहिं न कारज॥ जहँ तहँ जायपुरी यह पेखब। धनुषयज्ञको शाला देखब॥ सुनि अक्रूर

मोद हिय धरिकै। हरिहि प्रणाम मनहि मन करिकै॥ गयेकंस पै आनँद पागे। राम कृष्ण पुर पेखन लागे॥ यथाअनर्गल युगगज भारी। जहँ तहँ बिहरैं स्वेच्छाचारी॥ दोहा॥ राजमार्ग में रजकहो रंगकार तेहि देखि। तासों मांगन लगे शुचिबसन बिचित्र निरेखि॥ रजककहेसि तुमकौनहौ केहिबनके रखवार। कंसभूपको बसन लखि मांगनलगे गवाँर॥ समअनंतशिखा॥ शठ-करजककर सकतबचन सुनि रिस करि तेहि हरि हनि करतल सों॥ शिर धरसनभिन्न करि दियेतब गइ रजकिनि कहननृप-ति बर बलसों॥ चौपाई॥ बसनपहिरि तव प्रभु दोउभाई। ईछे शुचिमाला छबिछाई॥ चलिकछु दूरि सुसबननिभेखे। गुणक सुनामकमालिहि पेखे॥ तासों कहेकृष्ण छबिगेहू। हमहिंयोग शुचिमाला देहू॥ सोसुनि कहेसि प्रियंबद माली। लीजै सुख-मानिधि बलशाली॥ इमिकहि तिन्हहिंहार पहिरायसि। श्रिय बर्द्धन शुचिआशिष पायसि॥ राजमार्गमें फिरते डगरे। तहँ देखे कुबिजहि गुण अगरे॥ अंगरागकर भाजन लीन्हे। लखि तेहि कृष्ण प्रश्न इमि कीन्हे॥ कमल नयनि यह शुचिअनु-लेपन। करिहौ काके अँगमें लेखन॥ सुनि हँसिकुबिजा चितै तिरीछे। बोली मनमथ शरसों सीछे॥ आवहु तुम मोहिं अति प्रिय लागे। अमल अलौकिक छबिसों पागे॥ कंस भूपकी दु-हिता प्यारी। हों तौ अनुलेपन अधिकारी॥ तुमको कहौ कहां सों आये। केहि हित मोहिं मोहिं बेलमाये॥ सास्मितकृष्णकहे तब तासों। भरे भूरि मनभावनि भासों॥ हम दोउबन्धु अति-थि यहि पुरके। मर्दनमल्लमल्लवल पुरके॥ अंगरागसह तुम कहँ चाहे। सो निज अंगलगावनचाहे॥ यथायोग अनुलेपन भावन। भामिनि देहु सनेह सचावन॥ दोहा॥ कै प्रमुदित कु-बिजैंदई अंगराग सित पीत। सोलैलायेअंगमें हलधर कृष्ण अभीत॥ तदनन्तर तापर कृपा करि केशव यदुराय। ठोढ़ीतर

दै आंगुरी लीन्हे ताहि उठाय ॥ चौपाई॥ ग्रीवतनेसी पीठिलचा-
यसि। ह्वै चंचलि तियभाव लखायसि॥ लचे गयो मिलिकूबर
तनमें। प्रभुप्रभावसों जानहु मनमें॥ कनकलतासी सुन्दरिह्वै
कै। प्रभुसेकहेसि मोदसोंग्वैकै॥ भये मोहिं तुम अनुपमलाहू।
अब मोहिंछोंड़ि कहूं मतिजाहू॥ सुनहु कंत अब सहितसनेहू।
बसिकरिये पावनममगेहू॥ बाणीतासुप्रेममें सुनिकै। कृष्णचन्द्र
बोले इमिगुनिकै॥ कछुदिनसुन्दरिधीरज राखौ। अबै न आतुर
ह्वैकै भाखौ॥ कछुदिनमें हम सादरआइब। बसितुम्हरेघर आ-
नँद पाइब॥ ताहिप्रबोधि बीरदोउभाई। धीर बिलोके धनुगृह
जाई॥प्रभुलखि बहुत धनुषतहँ राखे। सस्मित धनुष पालसों
भाखे॥ सो वह कौनधनुष है ओपे। भूपतिजासु यज्ञआरोपे॥
तेइँ दरशाये सो धनुभारी। सकै न जाहि इन्द्रगहि टारी॥ ल-
खिउठाय तेहि प्रभुगण जोरे। सहजहि ऐंचि बीचसों तोरे॥
टूटत धनुष शब्द अतिघोरा। भयो दुसहब्यापित चहुँओरा॥
धनुष तोरि दोउ बन्धु सुखारे। सो गृह तजि कहुं अनत बि-
हारे॥ शंकित धनुषपाल तबजाई। कहेसि कंससों कथाबुझा-
ई॥ दोहा॥ पुरुषसिंहद्वैबीरबर गौरश्याम शुचिगात। तेजपुंज
अतिप्रभा में बिबुधोपमित बिभात॥ आइ लखे तहँ धनुष
तब कृष्ण पुरुष बरबीर। बड़ो धनुषगहि तोरि धौं कितै गये
रणधीर॥ चौपाई॥ धनुषभंगको दुसह सँदेशा। कहेसितासु क-
रिबिदा नरेशा॥ कीन्हे अन्तःभवन प्रवेशा। मनमें गहे अ-
मोघ अँदेशा॥ रामकृष्णको पौरुषभारी। समुझि बिलक्षण
भयो दुखारी॥ मुनिको बचन सांचकरि जान्यो। निजकृतकर्म
समुझि पछितान्यो॥ हम षटबालक नाहकमारे। बिधिचाहत
सो टरत न टारे॥ इमि चिन्तित कढ़िबाहरआयो। मखशाला
को कृत्य बतायो॥ मंचादिककी रचना जेती। करि आज्ञाभृ-
त्यनकहँ तेती॥ युद्धधर्मबिद अरु युधकर्त्ता। अरु जे युद्धपेखि

मुदभर्त्ता ॥ तेसब प्रात रहैं इतआई ॥ इमिकहिबैठो घरमेंजाई ।
मुष्टिक अरु चाणूर सुनामा । दोयमल्लहैं बरबलधामा ॥ तिन्हैं
बोलाइ तहां मुद भरिकै । अस्तुति तिनकी बहुबिधि करिकै ॥
कहे कंसलखि सूरसुजीके । सुनहु बीरतुम ममहित नीके ॥ जे
बसुदेव तनय दोउभाई । बर्द्धितभये नन्दघर जाई ॥ संकर्षण
अरु कृष्णकहाये । ते मम शासनते इतआये ॥ ते दोउ बिशद
बीर बिख्याता । युद्ध भेदके सरस सुज्ञाता ॥ तिन सों तुमसों
युद्धमहाना । होइहि काल्हि सुनहु बलवाना ॥ दोहा ॥ सावधान
ह्वै युद्धकरि पनभरि पकरिपछारि । जीवततिन्हैं न छोड़ियो बा-
लक हिये बिचारि ॥ सोसुनि बोले मल्लनृप उनकी आयूछाय ।
तौलौं मम सनमुख नवै जौलौंपरैं लखाय ॥ आर्यागीती ॥ तेदोउ
मल्ल सहितबल इमि कहिगे निजघर अति गौरवसों । तबनृप
कंसबुलायसि कुबलय गजपालहि रवधरवरसों ॥ तोटक ॥ कुब-
लयगजपालक मोदमयो । नृपके ढिगजाय खरोजुभयो ॥ तेहि
देखिकहे इमि कंसबली । हियदंभभरे मतिअन्धछली ॥ तुमलै
कुबलय गजमत्तमहा । मखद्वाररहौ मममानिकहा॥गजकेमनको
सहरोषकिये । रहियो निजपास सुअस्त्रलिये ॥दोहा॥ तहँलखिकै
बसुदेवके तनयनको करि जेर । गजसों बध करवाइयो कीजो
कछू न देर ॥ चौपाई ॥ तिनको नाश देखि मुदलहिकै । तब हौं
घोर रोष हिय गहिकै ॥ भये मोहिं यदुबंशी लक्षी । सिगरेराम
कृष्णके पक्षी ॥ तिनकोनाश करों फिरि सादर । उग्रसेनआदि-
क जे कादर ॥ उग्रसेन नाहिं पिता हमारे । कहिगेहैं मुनिकलह
पियारे ॥ सो सुनिकै बोल्यो गजपालक । यह वृत्तान्त कहहु
खलघालक ॥ कहे कंस यक द्योस बिशारद । मम ढिग आइ
सुमुनिबरनारद ॥ मोसों इमि हँसिकहे सुखारे । उग्रसेन नाहिं
पिता तुम्हारे ॥ तबहौं हठि नारदसों बूझे । सुनिबेको वृत्तान्त
अरूझे ॥ नारदकहे सुनहु महि त्राता । ऋतुदिन लहि मोदित

तुव माता ॥ गिरि जो चारु सुजामुन नामा । तापै सखिन सहित छबिधामा ॥ गईं लखन बर बनकी शोभा । कुसुमित बिपिन देखि मन लोभा ॥ कूजनि सुनि सुखदानि खगन की । गुंजनि सुने मत्त अलिगनकी ॥ मारुतसुखद त्रिबिध तनलागे । तिय स्वभाव मन मन्मथजागे ॥ अतिअमोघ आनँदसों पागी । तियन सहितबन बिहरनलागी ॥ बिधिवशताहीक्षणतहँ आयो । द्रुमिलनाम दानव छबि छायो ॥ रथसों उतरिसूतसह सोऊ । लग्यो रमण बनमें छबि जोऊ ॥ दोहा ॥ तहँ बनबिहरत दूरिसों तुव मातहि सों जोहि । बिस्मित बोल्यो सूत सों मनमें अति सो मोहि ॥ यह अपूर्व मनमोहनी अति रुपवन्तीनारि । बन बिहरतमोमनभयो बिकल याहिनिहारि ॥ चौपाई ॥ यह धौं कौनभूपकी नारी । लगीमोहिं यह अतिशय प्यारी ॥ याको भेद कौनबिधि पावों । किमि बशकरियहि अंक लगावों ॥ तबजल परसि ध्यान बिधि ठान्यसि । उग्रसेन की तिय यह जान्यसि ॥ तब सो उग्रसेन बनि लीन्ह्यसि । जाइ तहां तासों रतिकीन्ह्यसि ॥ प्रथम ताहि तिन चीन्हो नाहीं । जानि प्राणपति रमीउछाहीं ॥ पीछे रतिगौरव लहि तासू । बोली शंकि क्रोध करि आसू ॥ को तू मम पतिसम बनि आये । जो मम पतिव्रतधर्म नशाये ॥ रेशठ दुष्ट पतितअपराधी । धिग त्वाहिं खल परतिय रति साधी ॥ सो बोल्यो मैं हौं बर ज्ञानी । द्रुमिलनाम दानव अभिमानी ॥ इमि कत रोष करहु गजगामिनि । मैं जो कहौं सुनहु सो भामिनि ॥ केती तियपरपति रतिसुनिये । कितेपुरुष परतिय रति गुनिये ॥ है तियपूरुष को यहकामा । भयो कहा यह अनुचित बामा ॥ मम सम्भोगज सुत अबलहिहौ । तब कामिनिबर आनँद गहिहौ ॥ को तुम इमि मोहिं बूझेहुबामा । ताते तासु कंसयहनामा ॥ होइहि सो अतिशयबलवाना । अरिमर्दन अमनैत अमाना ॥ सुनिसो बोली सुनु मति बिगरे ।

पुरुष न लम्पट तोहिंसम सिगरे ॥ होहिं न सब तिय परपति गामी । कहूं एक कोउ भई हरामी ॥ ताते निन्द्य न हैंतिय सिगरी । जे बिगरी हैं तेई बिगरी ॥ तुव सम्भोगज सुत जो होइहि । सोखल धर्म लोककर खोइहि ॥ तब कोउ एक पुरुष अवतारी । होइहि यदुकुलमें बलभारी ॥ दोहा ॥ तबतुव संभव पुत्रको कर्म निरखि गहिरोष । बधकरिकरिहैसोइपुरुष यदुकुल को परिपोष ॥ यह सुनि सो निजपुरगयो यहआई निजधाम । इमि कहि मोसों दिविगये नारदमुनि अभिराम ॥ चौपाई ॥ ताते सुनु हे बारप आरज । हमैं न मातपिता सों कारज ॥ तुम मम कहो भोरही कीजो । फिरि जो होइहि सो लखिलीजो ॥ इमि कहि तेहि गजपास पठाये । नृप चिन्तितसो निशा बिताये ॥ भोरहि सुभट सचिव सुखदाई । जुरेयुद्धघरमें सबजाई ॥ युद्ध विशारद योधा आये । आये मल्ल वीररसछाये ॥ पुरजन आये आनँदसाने । युद्ध देखिबे को ललचाने ॥ तबनृपकंस मत्तमद छायो । रंगभवनके द्वारे आयो ॥ कुबलहि गजहि राखिकैद्वारे । गयो आपुभीतरमुदधारे ॥ सब समान तहँदेखिनरेशा । यथा उचित को देइ निदेशा ॥ अतिउन्नत हो मंचबनायो । मणिन रचित सब भांति सोहायो ॥ तापै जाइ गर्व गहि बैठो । मोछ उमेठि ऐंड़ सों ऐंठो ॥ इतरदारुमय मंचबनाये । तिनमें बसि यदुबंशी भाये ॥ मंचै तियन योग जे खासैं । तिनपैबैठि लसी रनिवासैं ॥ लसै मंचमनु देवनलीन्हे । सपद बिमान भूमि पद दीन्हे ॥ मुष्टिकआदि मल्लबल बाढ़े । करिकै तीनि गोल भे ठाढ़े ॥ बहुबिधि बाजन बाजन लागे । जयसाजनजन गाजन लागे ॥ दोहा ॥ ताहीसमय सुबंधुदोउ रामकृष्णबलवान । रंगभूमिके द्वारपै आये बीर अमान ॥ मगरोंके कुबलय गजहि खरो देखि अनुमानि । कहो कंस क्षितिपालको लिये कृष्णप्रभु जानि ॥ चौपाई ॥ प्रभुहि निकट लखि गजप रिसाये । कीन्हेसि

कुवलय गजहि इसाये ॥ कुवलय करको कुण्डल करिकै । प्रभु पै चलो दुसह रिस धरिकै ॥ तब प्रभु तालठोंकि छरकीले । द्वै पग पीछू हटे लसीले ॥ सिंधुरधरिबोमनमेंधारेसि । शुण्डा-दण्ड उदण्ड पसारेसि ॥ लखि बढ़ि झपटि कृष्ण रिस पागे । लपटि शुण्डमें झूलन लागे ॥ रदचरणनके अन्तर द्वारे । प्र-विशे कढ़ शुण्डउरधारे ॥ दीह दशन अरु शुण्ड चरन सों । करि न सक्यो कछु द्विरद रदनसों ॥ कछुक्षण गजसँग कृष्ण बिलसिकै । इमि दाबेगज कर कर कसिकै ॥ जाते ह्वै पीड़ित गजराजू । बैठि गयो गिरिसदृश दराजू ॥ तब प्रभुपग कुम्भन ढिगधरिकै । लये उखारि दशन दोउ धरिकै ॥ बज्र सदृश सोइ दशन प्रहारे । गजगिरिको शिर श्रृंग बिदारे ॥ पूछउपारिलिये हलबाहक । कौतुक लागि युद्ध जयचाहक ॥ गिरि बिलमेंमधि प्रविशो नागहि । ईचिलोहु जिमि शुचि परनागहि ॥ गजगज-वानहिबधि गजमर्दन । धीरधराधर धरजग बर्द्धन ॥ गजरक्षक हे सुभट घनेरे । बली कंस भूपति के प्रेरे ॥ गज दन्तनसों ते दोउभाई । तिनको नाश किये सुखदाई ॥ फिरिधरि कन्धन पै रद प्रविशे । सुपुरुष सिंह रंगघर प्रविशे ॥ दोहा ॥ तहां जाइ निरखत भये भट मल्लनको यूथ । सिंह सरोष लखैयथा गज गणकेर बरूथ ॥ गजबध सुनि लीन्हे दशन लखिदुख पायसि भूप । लागैक्षतमें लवण जिमि प्राणीहोत बिरूप ॥ हरिगीती ॥ बलराम अरु बलबीर बीर सुबीर भेष सरुचिधरे । बरबीर रस सों भरे धीर प्रबीर शंकद चखकरे ॥ तहँ घूमि इतउत देखि सकल समाज जन मुदसोंमये । लखिरंग घरको मध्यदेश सु-भेष प्रभु ठाढ़े भये ॥ नृप कंसलखि अति क्रोध करि चाणूरको शासनदये । तुमकृष्णसों बलरामसों मुष्टिकलरहु चेतनभये ॥ चलि चावसों चाणूरचलि बृजचन्दके सन्मुखभयो । युधचाहि चञ्चल अचलसम चौगानमें ठाढ़ोभयो ॥ रणरूढ़ दीरघकाय

ताहि बिलोकि यदुबंशी कहे । यहमल्ल शास्त्र बिरुद्ध युद्धत होत अति अनुचित अहे ॥ है मल्लयुद्ध समानबपुबय कोसुकोबिद कहतहैं।तिमिऐन हैं बलभरे सुभट जु खरे गौरवगहतहैं॥सुनि कृष्णचन्द्र बिचारि यदुबंशीनसों इमिकहतभे । येमल्ल दीरघ काय हमसों लरनकोमुद गहतभे ॥ ये धर्मयुद्ध बिरुद्धकरत सकुद्धक्वै हमहैं सुने । ये मारि कितने मल्लमहिपै एक आपुहि हैं गुने ॥दोहा॥ जैसो करिबोचाहिये हमसों येबलवान । तैसो इन को जानिहमकरिहैं सुनो सुजान ॥ इमि धीरजदै यादवन क्वैमोदित यदुनाथ। तालठोंकि चाणूरके सन्मुख कीन्हेहाथ ॥चौपाई॥ हाथहिहाथ पकरि दोउ बीरा । लपटि गये छरकैल सुधीरा ॥ लपटि छूटिभिरि छूटनलागे । बन्धबिधाननि जूटनलागे ॥ करैं पेंचअरु पेंच बचावैं । अतिशय चञ्चलता दरशावैं ॥ पकरि भूमिकोउ घातलगावैं । कोउ ऊपरसों पेंचचलावैं ॥ फिरि उठि भिरैंतालदै चावन । करिकरि बिबिधभांतिके दावन ॥ जैसे सिंहगजाहि गहिपावैं। झपटिलपटि तजि लपटिगिरावैं ॥ फिरिउठाइ फिरि दाबि गिरावैं । तिमितिमि बिहरैं जिमिजिमिभावैं ॥ श्रीश्रीकृष्णचन्द्र प्रभुतैसे। गहिचाणूरहि क्रीड़ सुलैसे ॥ दक्षिणकरसों कंस निवारे । हैं जे बाजत बाजनभारे॥ चढ़े बिमानन सुमन सचावैं ।सदय सप्तऋषि समुदसुभावैं ॥ जयति कृष्ण कहि आनँद छावैं। बहुतभांति दुन्दुभी बजावैं ॥ किये कंसपै ऋषि प्रभु मनमें । कंपित भई भूमि तेहि क्षनमें ॥ हाल्यो मंत्र मुकुट ते ताके । शुचिमणि गिरे सदनसुखमाके॥ नव पल्लवित वृक्षते जैसे ॥ झरैंअनूपम सुसुमन तैसे ॥ इमि भिरि लरैं दोऊ भट भारे । जिमि बनमें मैगल मदवारे ॥ क्वै चाणूर रोष रसरातो । होइ न नेकुमातु मदमातो ॥ रोला ॥ चाणूरको बध भये पै अतिक्रोध करिबलराम । बीर मुष्टिक सों भिरे बरबीरताके धाम ॥ होनाम तोशल मल्लमत्त सुबिदित बल बलवान ।भिरे

तासों कृष्ण शीक्षक मल्लयुद्ध सु विधान॥ राम मुष्टिकको बधे करि पंचपांच पछारि । कृष्ण पकरि घुमाइमारे वाहि महि पै डारि ॥ नाशकरि मल्लानको श्री राम कृष्ण सुबीर । तालदैदै खड़े भे रमणीय अति रणधीर॥ तीनिपुरको एकते लहिमनोहै त्रिपुरारि । उग्ररूप अनूप ठाढ़ेलसै तिनकोमारि॥ तहांतिनको देखि जो सुख नन्द अरु बसुदेव । लहे सो नहिं लहेकबहूं देव देव सुभेव ॥ कंसको मुखश्वेतभोअरुस्वेदकणभेछाय। हारिहियसों क्षणक शंकित रह्यो शीश नवाय ॥ फेरिसाहस आनिगरबीभटन की दिशि हेरि । सचल दक्षिण करहिं करि इमिकहन लाग्योटेरि ॥ दोहा ॥ गोप बनेचर जेजुरे तिनकोदेहु निकारि। नन्दहि गहिकै पै करै देहु पांय में डारि ॥ अन धन गोधनगण सकल गोपनको हरि लेहु । ये खलहैं मम राज्य में इन्हैं बसन मतिदेहु ॥ चौपाई ॥ सो सुनि कृष्णचन्द्र रणधीरा । कूदि मंचपै गये सुबीरा ॥ जातन काहू मगमें देखे । खड़े मंचपै सब कोउ पेखे ॥ मुकुट गिराइ केश गहिलीन्हे । कंसहि जड़ीभूत कहि दीन्हे ॥ केहरिके झपटे गजजैसो । होतभयो सो भूपतितैसो ॥ चले श्वास तन नेकु न हालै । भूलिगयो बल कुटिल करालै ॥ प्रभुहि न पेखिसक्योभय पूरो । रह्यो मूंदिचख ब्याकुल फूरो ॥ गहे केशवहि साहित सहाये । कूदि मंचते महिपै आये ॥ कंसी कंसनामहो जाको । प्राण बिहीन भयो तन ताको ॥ जितातित ताहि कठोरि सुखारे । रंगभूमि के बाहेर डारे ॥ जेहि मगगयो कठोरि बेचारा । तहँभो कंसकठोरणखारा ॥ रह्यो सुनाम कंस को भाई । बधे ताहि हलधर सुखदाई ॥ तब सहबंधु कृष्णआनन्दे । मातु पिताके शुचिपग बन्दे ॥ सिगरे यदुबंशिन सों हरषे । मिलि घनश्याम मोद जल बरषे ॥ यथाउचित मिलिसुभग सोहाये । यदुबंशिन सह पितु घंर आये॥ कंसभूमिपति कीसब नारी । पतिको मरण निरेखिदुखारी ॥ जायमृतक ढिग रोवन

लागीं । आंसुन सों अँगधोवन लागीं ॥ दोहा ॥ हायनाथ केसै भये कत ह्वैरहे अबोल । आलिंगनकरि करि बकति कर्षणकरो निचोल ॥ पुरुषसिंह पुरुषार्थ तजि कत सोये हियहारि । अब हम सब करिहैं कहा सो किन कहौ पुकारि ॥ चौपाई ॥ अब को तुम्हैं बिना हे स्वामी । निरखि समान तियन प्रियकामी ॥ सरस बचन कहि हिय समुझाइहि । गहि सप्रेम सादर उरलाइहि ॥ चलत न कहि लीन्हे तुम भर्त्ता ॥ कैसे भये निठुर भय हर्त्ता ॥ तुम तिय लहि उतहूं सुख लहिहौ । अब ममसुधिकाहे को गहिहौ ॥ इमि प्रलाप बहुबिधि कहिकहिकै । कटि उरभुज ऊरू गहि गहिकै ॥ कीन्हो रुदन कंसकी पतिनी । परमपियारी पतिब्रत ब्रतिनी ॥ रुदति आइतेहि नृपकी माता । उरपैकरति स्वकरतलपाता ॥ सुत शिर निज ऊरुनपर धरिकै । बहुबिलाप कीन्ही दुखभरिकै ॥ सुततुम हे राजनके राजा । गये शीघ्रकत छोंड़ि समाजा ॥ रथ गजतुरै छत्र भटनारी । लेनगये सँगकहा बिचारी ॥ कहिगो हो रावण सुनिलीजै । बंधुहि बैरी कबहुं न कीजै ॥ बंधुबिरोध किये भल नाहीं । बंधुप्रयोग आड़ि नहिं जाहीं ॥ सो अबहमैं प्रत्यक्ष लखाना । बंधुबैर कत अगुण अमाना ॥ यहिबिधि बिलपि कही ब्रजपति सों । बूझो जाय कृष्ण यदुपतिसों ॥ जो वै कहैं सोई उर धरहू । कृत्यकाजवाही बिधि करहू ॥ उग्रसेन सुनि दुखित पधारे । गये जहां हैं प्रभु मुदधारे ॥ दोहा ॥ बैठे यदुबंशिन सहित करुणासिन्धु बिभात । रुदन कंसकी तियनको सुनि सुनिहैं पछितात ॥ यदुबंशिन मुखियानको लैकै संगसहाय । उग्रसेन सन्ध्यासमय कहन लगे ढिगजाय ॥ चौपाई ॥ तातकंस निजकृत फलपाई । गयोस्वर्ग निजदेह बिहाई ॥ तुम बीराधि बीर जगमाहीं । तुम्हैं सदृश कोउ महिपै नाहीं ॥ अबसुनि भूमिपाल सब डरिहैं । बिनाप्रयास उचित करभरिहैं ॥ प्रचलितधर्म अधर्म नशाइहि । सुयश

तुम्हार भूमिपरछाइहि ॥ यदुकुल बर्द्धित मोदित होइहि। कोउ अनर्थ कबहूं नहिं होइहि ॥ देशकोश सेनाभट जेते। करहुराज्य निज बश करितेते ॥ देहु निदेश कृपाहिय धरिकै। प्रेतकर्म्म हम सुतकर करिकै ॥ तियअरु पुत्र बधुनसहजाई। बसबजाइ बन नगर बिहाई॥ उग्रसेनकी आरतबानी। बोले कृपासिन्धु सुखदानी ॥ उग्रसेनतुम सबबिधिज्ञानी। तजहुशोच सुनि गुणि ममबानी॥ कर्म्मकाल के वश सब लोका। अमत रहत सहशोक अशोका ॥ तनधरिकर्मकरै सबकोई। तनधारि अवशि कालबश होई ॥ कर्मफेर परितन धरिसोई। कृतफल भोगि कालबश होई ॥ ताते कर्मप्रधान बिचारो। तजौ शोक साहस उरधारो ॥ करो सुराज्यग्रहण तुम आरज। हमैं न कछू राज्यसों कारज ॥ हम स्वतन्त्रबिहरब महिपाहीं। जिमिखग पुर थलबन गिरिमाहीं ॥ दोहा ॥ ताके कर्मनिरेखिकै ताहि काल बश जानि। हौंकीन्हों बधतासु नहिं राज्यहेत अनुमानि ॥ सादर प्रभुके बचनसुनि उग्रसेन सुखपाय। उत्तर नहिं दीन्हेंरहे चुपह्वै शीशनवाय ॥ इमि कहि यदुबंशिन सहित कृष्णचन्द्र सबिबेक। उग्रसेन पै करिकृपा किये राज्य अभिषेक ॥ सोरठा ॥ यदुबंशिन सहजाय उग्रसेन अभिषेकलहि। प्रेतकृत्यमनलाय पुत्रनको कीन्हे सबिधि ॥ करि पुत्रनको कृत्य उग्रसेन भूपालमणि। आपुभये कृतकृत्य पाय सहाई कृष्णको ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेकंसबधउग्रसेनराज्याभिषेकोनामपंचदशोऽध्यायः १५

चौपाई ॥ रामकृष्ण प्रभुस्वेच्छाचारी। उग्रसेन कहँ राज्य सुधारी ॥ युवती युवावशी जगजेता। कछुदिन मथुरा बिहरिसनेता॥ प्रियदर्शन पावनदोउभाई। पुरीअवन्तीमें चलिजाई ॥ तहँहे शान्दीपन तपरासू। तिनसों सीखे धनुषबिलासू ॥ चौंसठि दिनमें चाहि उदारू। सीखे चौंसठि बिद्या चारू ॥ यहि बिधि बुद्धि बिलक्षण देखी। शान्दीपन मनमें अवरेखी ॥ रूप

बुद्धिगुण निरखि सयाने। अतिउत्कृष्ट देवकरिजाने॥ पैंसठवें दिन कृष्णसुज्ञानी। कहेगुरूसों आनँददानी॥ सरुचि मांगि गुरुदक्षिणा लेहू। घरजैबे को शासनदेहू॥ सो सुनिकै गुरुउर सुखपाई। करिप्रभुकी बहुभांति बड़ाई॥ कहे सुनहु हेकृष्ण सुदाता। रह्यो तुम्हार एक गुरुभ्राता॥ लवण उदधिमें तीर्थ प्रभासू। सो अन्हानगो सुखमारासू॥ निगलि ताहि जलमें गहि मीना। सो सुत आनिदेहु परबीना॥ एवमस्तुकहि सागरतीरा। गयेराम अरु कृष्ण सुबीरा॥ किये समुदमेंजाइ प्रवेशा। तहँआयो सागरधरिभेशा॥ तासोंकहे कृष्ण छबिगेहू। शान्दीपन मुनिकर सुतदेहू॥ दोहा॥ सोसुनि सागर जोरिकर बोल्यो सुनहु कृपाल। पांचजन्य नामक असुर हैझषरूप बिशाल॥ शान्दीपनके तनयको पकरिगयो सो खाय। निजगुरुके बरतनयको लेहुताहि गहिजाय॥ चौपाई॥ यहसुनि रामकृष्ण रिस लीन्हे। शीघ्रजाइ ताकर बधकीन्हे॥ पांचजन्यशुचि शंख सोहायो। होतौतनमैं जागुणगायो॥ लीन्हें शंखनसोसुत देखे। तब यमपुरगे रिससोंभेखे॥ यमहिं जीति गुरुकोसुतलैकै। आयभूमिपै गुरुको दैकै॥ मथुरा आइमोदसों पागे। यदुवंशिन सह बिहरन लागे॥ जरासन्ध नृपकी दुइ दुहिता। कंसभूपकीहैं तिय सुहिता॥ तेवैजाइ पितासों रोईं। पति बियोग अतिदुखसों भोईं॥ दईसुनाइ दशाते सिगरी। सोसुनिकै ताकी मतिबिगरी॥ कारुष दन्तबक्र शिशुपालू। साकित कालयमन महिपालू॥ भीष्मक सुतसह अरुभगदन्तू। दुर्योधन केशिक क्षितिकन्तू॥ भूरिश्रवा जयद्रथबीरा। चित्रसेन अरुशल्य सुधीरा॥ अंगबंग कालिंग देशपति। कोशलकाशी को पति बरमति॥ मद्रदेश पति आदिक जितने। रहे भूमिपै भूपतितितने॥ लैसँगचढ्योकोपकरिभारी। जरासन्धक्षितिपति धनुधारी॥ मथुरहि घेरिलिहेसि चहुँदिसिसों। बरबानैत भरो

अतिरिसिसों ॥दोहा॥ तासुचमूलखिमंत्रकरिरामकृष्णसहचाव। यदुवंशिनको संगलैकीन्हे व्यूहबनाव ॥ कहे बिहँसिबलरामसों बिशद बीर बलबीर। धर्म धुरन्धरधराधुर हरणधनुर्द्धर धीर ॥ चौपाई ॥ लखहु कालबश ह्वै चढ़िआयो। जरासंधरिस रुजसों छायो ॥ भूमिपाल सिगरे सँगलैकै। निजभुज बलसों तिन्हैं अभैकै ॥ हंसराज सम राजत जेहैं। शुचिसितछत्र नृपनकेते हैं ॥ ये सब अतिथिसुप्रथमसमरके। बलिपशु से संगर मख बरके ॥ अब इनसों करि संगरभाई। हरे भूमिकोभारभलाई ॥ तेहि निशि जरासंध की सेना। करिनिवास जाहिर जगजेना ॥ भये प्रात नृपगणहैं जेते। जरासंधके ढिगगे तेते ॥ जरासंध मति अंध नरेशा। दयो तिन्हैं अति उग्र निदेशा ॥ तुम सब निज निज सेनालैकै। लगहु तीनि दिशि गन निरभैकै ॥ राम कृष्ण बधिजाहिं न जौलौं। लरेहु सरोष भूपसब तौलौं ॥ इमि निदेश दै बर रिस पाग्यो। आपु जाइ दक्षिणादिशि लाग्यो ॥ लैशिशुपालहि संगसोहायो। अतिअमोघ अमरषसों छायो ॥ चारियूथ करिपुरसोंकढ़िकै। लरनलगेयदुबंशीबढ़िकै ॥ रथचढ़ि रामकृष्ण धनुधारी। लागे करन युद्ध बलभारी ॥ तीक्षणबाणन मारन लागे। परदल व्यूह बिदारनलागे ॥ अति सबेग चहुँ दिशि रथफेरैं। परबल भट के तनशर मेरैं ॥ दोहा ॥ इतने में तहँ स्वर्ग ते आये आयुध वेद। हल मूशल अरु धनु गदा दिव्य प्रभाव अखेद ॥ सो नन्दक नामक मुशल संवर्तकहल चारु। तिन्हैं धारि शोभित भये श्री बलराम उदारु ॥ रोला ॥ शार्ङ्ग धनु अरु गदा धरि कौमोद की यह नाम। भये शोभित समर में श्री कृष्ण प्रभु अभिराम ॥ करषिहलसों आनि ढिग बर भटन को बलराम। मारि मूशल सों लगे संहार करनलगाम ॥ बिकल ह्वै नरनाह सब तब भागिजाइ अचैन। जरासंध नरेन्द्रके ढिगकहे आरत बैन ॥ तिन्हैं लखिकरि क्रोध अति

नृप जरासंध सुबीर । लग्यो धिक धिक कहन तिनको धनुष-धर रणधीर ॥ विदितक्षत्री धनुष धारे जीवकोकरि लोभ । भागि आये समर सों सो किये कार्य्य अशोभ ॥ प्रबलअरि सों लरहु अबकै धीर धरि उतजाय । कैसुचित ममयुद्धदेखौ बैठि पीछे आय ॥ वचन सुनि कै भूप सिगरे लज्यमान सचेत । जाय निज निज थरन लागे लरनजय यश हेत ॥ बिबिधविधि के शस्त्रलागे चलन दुहुँदिशिभूरि । धनुष के टंकार रवसों रह्यो दिशिदश पूरि ॥ दोहा ॥ गरुड़ध्वज सुरथस्थ श्री कृष्णचन्द्रबर बीर । जरासंध के तनहने आठबाण रणधीर ॥ बेधेताके सारथिहि मारिबाण बरपांच । तर तुरँगनके बध करे मारि बिशद नाराच ॥ चौपाई ॥ जरासंधको बिकल निरेखी । चित्रसेन नृप अतिशय तेखी ॥ आइसामुहे प्रभुहि प्रचारी । छांड़ेसिबाणचपल रथचारी ॥ केशिकसेनानी रिस धारेसि । तीनिबाण बलरामहिंमारेसि ॥ तबबलदेव क्रोधकरिडाटे । तासुधनुषवरशरसों काटे ॥ तबनृपचित्रसेन बलदेवहि । नव सुबाणमारे शुभभेवहि ॥ पांचबाण कौशिक रिस भरिकै । मारे कोपिदुतियधनु धरिकै ॥ जरासंध शरसात बिशाले । मारेसिकोपि नैन करि लाले ॥ तब हरि शर तीक्षण असिबारे । तीनितीनि तीनोंको मारे ॥ पांच पांचनाराच सुचारू । मारे तिनको रामउदारू ॥ नृपजो चित्रसेन होबांगा । काटे ताके रथकी तांगा ॥ अरु श्रीराम बृहत भुजदंडा । काटे तासु कठिन कोदंडा ॥ बिरथ बिधनु ह्वै बिकट गदालै । चित्रसेन नृप महत मदालै ॥ रथसों उतरि क्रोध सों छायो । संकर्षण के सनमुखधायो ॥ चित्रसेनको नाश बिचारी । लाये शर धनु सो हलधारी ॥ सोलखि जरासंध नृप आसू । शर सों दयो काटि शर तासू ॥ जरासंध धनुधरधनुभेदी । संकर्षण को बर धनु छेदी ॥ दोहा ॥ सत्वर निजरथसों उतरि गरजिगदासों मारि । रथवाहक हय रामके दीन्हे महिपै डारि ॥

उद्धयुद्धको चाहकरि ह्वै सक्रुद्ध बलराम । स्वजय युद्ध लागे करन गदा युद्ध अभिराम ॥ चौपाई ॥ संकर्षण मगधेश सोहाये। दोऊ गदा युद्ध बिदगाये ॥ करलै गदा प्रचारिप्रचारी । किये युद्ध अतुलित बलभारी ॥ भांति भांतिके घातनि मारैं। गरुवे गदा गदासों टारैं ॥ लागे गदा नेकु नहिं मानै। गहिअतिरोष मारिमुद आनै ॥ ठौर ठौर यहि बिधि चहुँओरा। महत युद्ध माच्यो अतिघोरा ॥ लहि रुक्महिं केशव धनुधारी। हते ननान्त भविष्य बिचारी ॥ दिवससताइस लों यहि बिधि को। भयो युद्ध असिसुभट समधिको ॥ हलधर जरासन्धरणधीरा। लरि ह्वै बिरथ बिधनु बरबीरा ॥ चारुगदा करमें लैलैके। लरेगदा अँगमें लै दैकै ॥ गदायुद्धमें तेहिदृढ़दखी । श्रीसंकर्षण अतिशय तेखी ॥ जरासन्ध को वध अनुमानी । लीन्हे नन्दक मुशलसुज्ञानी ॥ मुशल अमोघ अमोघ प्रभावा । जब हलधर भरि व्याम उठावा ॥ तब भइ नभ बाणी गम्भीरा । क्षमहु क्रोध हलधर रणधीरा ॥ बध्य न तुमसों यह मगधेशा। ताते क्षमा धरहु शुभभेशा ॥ याको बधनहारभयचाही । हैजग प्रकट बधिहि सो याही ॥ सुखदानी यह बाणी सुनिकै । अभय भये हलधर हिय गुनिकै ॥ दोहा ॥ क्रोधरोध करि नहिंकरे मुशल प्रहार सुभाव। जरासंध सोऊ भयो सुनि बिस्मिततजि चाव ॥ इतने में संध्या निरखि रामकृष्णलैसैन। शंखध्वनिकरिकै करे पुर प्रवेश लहि चैन ॥ चौपाई ॥ भये प्रात मगधेश महीपा। नृपन सहित क्वै दिनको दीपा ॥ मगधरि मगधगयोमन मैलो। इतवर बर्चस प्रभु को फैलो ॥ फिरि सुनि निजदुहितन की बानी। रिसकरि चढ़ो मगधपति मानी ॥ ताही बिधि फिरि भई लराई। पृथक् पृथक् सो बर्णि न जाई ॥ फिरिहलधरगहि मुशल सुधारे। तिमि नभबाणी सुनि न प्रहारे ॥ लहिप्रभात फिरिनृप मगधेशा। बिस्मित व्यथित गयो निजदेशा ॥ कंसी

कसक कंसको गहिये । सत्रहबार हारिइमि लहिये ॥ बीसक्षौ-
हिणी दलको स्वामी । जरासंध नरपति जयकामी ॥ चढ़ि अ-
ठारहें बार अयाना । मथुराकहँ फिरिकिहिसि पयाना ॥ सोसुनि
रामकृष्ण बलभारी । यदुबंशिनसह सरुचिसुखारी ॥ लागेकर-
नमंत्रमनभाये । तहँइमि बचन बिकद्रुसुनाये ॥ सूर्यबंशइक्ष्वाकु
नरेशा । हेतासुत हरयश्व सुभेशा ॥ मधुदइत्यकी तनयाचारू ।
हेते ताके प्रिय भरतारू ॥ हौंहरयश्व केर गुरुभ्राता । अभिषे-
कित नरपति महित्राता ॥ सो हरयश्वहि दयो निकारी । सो
तजि अवध भयेबनचारी ॥ नृपहरयश्व बिपिनमेंबसिकै । अति
दुखलहे शोचमें ग्रसिकै ॥ दोहा ॥ तहँ यकदिन नृपसों कहीइमि
मधुमती सुनारि । कुन्तराज्यको मोहअब तजहु धीरता धारि ॥
तजि संशयमधुबन चलौ ममपितु मधुके गेह । वैमोदित करिहैं
तुम्हैं सादर सहित सनेह ॥ चौपाई ॥ सो सुनि नृप हरयश्व सु-
खारी । मधुबन गये सहित प्रियनारी ॥ मधुलहि निकट भूप
जामातहि । सादर मिलि बूझेकुशलातहि ॥ सुनिवृत्तान्त कहे
इमि मानँद । तजहु शोच हियधारहु आनँद ॥ मधुबन बिना
राज्य मम जेतो । लेहु सनेहु देउ मैं तेतो ॥ मधुबनमें ममलव-
णकुमारा । बसि नितकरिहि सहायतुम्हारा ॥ दक्षिणसमुदकूल
लौंधरणी । होइहि नृपतुव सुबश सुवरणी ॥ इमि कहि नृपरा-
ज्यावर दैकै । मधुदानव हिय आनँद लैकै ॥ जाइ लवण निधि
तट शुचिज्ञानी । तपसाधन कीन्हें हितजानी ॥ पाइराज्य हर-
यश्व सुखारी । पालनलगेप्रजानयचारी ॥ पुर आनर्त सुनाम
बसाये । दुर्गम दीरघ दुर्गबनाये ॥ मधुजा जोमधुमती सुबामा ।
तासोंभयो पुत्र यदुनामा ॥ संबत्सर दशसहससुनामी । बिहरि
भूमिपै नृप नयगामी ॥ तनतजिजाय स्वर्गबसिभाये । इतयदु
लहि अभिषेक सोहाये ॥ नीतिनिपुणयदुकरि महिपालन । अ-
तिशोभित भे खलकुलघालन ॥ हितबर्द्धन अरिमर्दन बीरा ।

धर्मधुरन्धरधनुधरधीरा ॥ एकदिवसप्रियतियन समेता । जाइ समुदतटकृपानिकेता ॥ दोहा ॥ लागेजलक्रीड़ाकरन भरनमोद सुनुतात ।सहित नक्षत्र नक्षत्रपति समशोभितशुचिगात ॥ सर्पराज तहँ यदुनृपहि गहिलैगेनिजधाम । जाइ नृपतिअहिपुर लखे सुखमासे अभिराम ॥ रोला ॥ चारुमणिमय बारिजासन बनोहो अतिवेष । भूपको बैठाय तापै सर्पराजसुभेष ॥ कहेइमि भूपालसोंसबभांतिसों हितजानि । कन्यका हैंपांच म्हारी सरस शुभ सुखदानि ॥ पितृव्यअरुतव पिताजे युवनाश्वअरुहरयश्व । तासु भगिनीकी सुता येसिखेगुण सरबश्व ॥ पाणिग्रहण सरीति इनसों प्रीति सों करिभूप । जाहु लै निज सदनसुबदन मदन कदनसरूप ॥ सुवनहैंहैं पांच इनसों परमपरमापूर । सर्वगुणसम्पन्नभूमिप समरजेताशूर ॥ जगबृहतह्वैहैविशदयदु बंशइनसोंख्यात । देवअंशज नृपति इनसों प्रकट ह्वैहैंतात ॥ भौम अंधक कुकुर भोजदशार्ह वृष्णि उदार । पुरुषबरपरसिद्ध ह्वैहैंबंशवर्द्धनहार ॥ बंशवर्द्धन पाइयह बरदान बरगुण जानि । नातको न बिचार कीन्हें नृपति यदुसुखदानि ॥ दोहा ॥ पाणिग्रहण सरीतिकरि पांचोंतियन समेत । कढ़ेउदधिके बाहिरे सब को आनँद देत ॥ नाग नरनकीकन्यकन नृपतिमिलापकराय । पुरप्रवेशकीन्हें समुद समुदकूल तजिजाय ॥ चौपाई ॥ कछुदिन में अहिपतिकीतनया । पांचोंलहींपांचसुत सनया ॥ पद्मवर्ण मुचुकुन्द नरेशहि । माधव सारसहरित शुभेशहि ॥ तेसब क्रमसों बर्द्धितह्वैकै । कहे पितासों मुदसों ग्वैकै ॥ तातहमैंजोआज्ञा देहू । सोतिमि हमसबकरहिंसनेहू ॥ सोसुनि इमिबोलेयदुराजा । प्रियसुत मम मुचुकुन्दसमाजा ॥ बिंध्यऋक्षगिरिकोमधिदेशा ॥ तहँ पुररचिबिलसैं शुभभेशा ॥ सह्य शैलपै यशके काजै ॥ पद्मवर्ण पुररचि बसिराजै ॥ पश्चिमदिशि तेहिगिरि पै नीकी । सारस रचेपुरी प्रिय जीकी ॥ धूम्रवर्ण अहिपतिको

दीपा । पालन करहिं हरित कुलदीपा ॥ जेठे सुत माधव शुभ साजू । ममपुर पालहिं है युवराजू ॥ पितु निदेश अभिषेक समेता । लहि लहिते बल बुद्धि निकेता ॥ यथा निदेश देश बसि राजे । राज राजसी सुखमा साजे ॥ यदुनृप राज्य माधवहिदैके । गये स्वर्ग निजकृत फललैके ॥ माधवनृपके सुतगुणगाये । भये सत्व बरसत्व सोहाये ॥ सुवनसत्वके भीम कहाये । भूपति भूमि भावतिहि भाये ॥ दोहा ॥ भीमहिमहि शीक्षतसमय दाशरथी श्री राम । । कोनिदेश शत्रुघ्न लहि हति लवणहि अभिराम ॥ मधुवन छेदन करि बिरचि मथुरापुरी सप्रेम । सुतहि राज्य दै रामपद सेवन करे सप्रेम ॥ मधुभार ॥ जबरामचन्द्रउदार । कुश लवहि दै महिभार ॥ बर स्वर्ग द्वार प्रविश्य । प्रभुभे सबन्धु अदृश्य ॥ तब भीम नृप निज जानि । बसिलये मथुराआनि ॥ तहँ लहे सुत नृप भीम । सोनाम अंधक भीम ॥ चौपाई ॥ अंधकके सुत रैवत भूपा । ताके सुवन ऋक्ष अनुरूपा ॥ रैवत नाम ऋक्षको दूजा । बिश्वगर्भ तासुत कृतपूजा ॥ बिश्वगर्भ की तीनि सुनारी । रहीं प्रियपतिहि परम पियारी ॥ लहींचारि सुतते कमलाक्षा । बसु अरु बभ्रुसुषेण सभाक्षा ॥ येयदुबंश बंशके कर्त्ता । असमदादि के हैं मुद भर्त्ता ॥ बसुके सुतबसुदेव सुखारे । भाग्यमान जे जनक तुम्हारे ॥ यह सुबंश उत्पत्ति तिमिभाखे । जिमि द्वैपायनसों सुनि राखे ॥ होइहै बंश सदैवअदूषित । तुमहिं पाइभो अतिशय भूषित ॥ सुनहुकृष्णयदुबंशज जेते । हैं तव सुबश शुद्ध सब तेते ॥ यह नृपजरासन्धबलवाना । बीस क्षौहिणी पति जगजाना ॥ यदुबंशी थोरे गिनती के । लरे बहुत दिन शूर सजीके ॥ अब अति खिन्न भये सब लोगू । एकबार नहिं लरिबे योगू ॥ नहिं खंधक नहिंशहरपनाहू । अड़गड़गढ़ बिरच्यो नहिं काहू ॥ तापैलरे न अबबरिआइब । ईंधन अन्नबिना दुखपाइब ॥ हैं सिगरे पुरजनभयभारे ।

अवरोधनते भये दुखारे ॥ तातेमम सुतंत्रयह सुनिकै। उचित
होइ सो करिये गुनिकै ॥ दोहा ॥ सुनि बिकद्रुकेबचन इमिहरषि
कहे बसुदेव। उचित मंत्र यह तुमकहे राजनीति के भेव ॥ सो
सुनि बोले कृष्णप्रभु तुमभाषे सतमंत्र। याकोकहैंउपायहों सोऊ
सुनहु स्वतंत्र ॥ चौपाई ॥ है बिरोध यानृपसोंहमसों। यासों कछुन
बैरतुम सबसों ॥ ताते कछुक्षण यासोंलरिकै। हमबलराममोद
हिय धरिकै ॥ कढ़ि जैहैं दक्षिणदिशिदूरी। तब यह मनमें मद
भरि भूरी ॥ इत काहू के निकट न आइहि। जितहमजाब तहां
चलि जाइहि ॥ तुम सब रहेउ सुचित सुखपाई। हम यासों उत
लेब बनाई ॥ इतने में नृप पुरढिग आयो। अति गक्करदुन्दुभि
बजवायो ॥ सुनि पुरते कढ़ि दोऊ भाई। रामकृष्णजगके सुख-
दाई ॥ कछु दिनतासों लरिगुण अगरे। छरकीले दक्षिणदिशि
डगरे ॥ शैल अनेकन सैर सुखारे। गये सह्यगिरिपै मुदधारे ॥
पद्मबर्ण नृप जहां सोहावन। पुर करबीर रचेहैं पावन ॥ बेणु
सरिततट तहँ बटतरुतर। बैठेहैं भृगुपति मुनि तपबर ॥ तेज
पुंज सुखमा सों छाये। परशु कांध पै धरे सोहाये ॥ राम कृष्ण
भृगुरामहि लखिकै। जाइ निकट हिय आनँद लखिकै ॥ करि
प्रणाम ढिग बैठि सुज्ञानी। बोले कृष्ण मनोहर बानी ॥ प्रथम
तासुगुण कीर्तन कीन्हे। फिरि निजकथाकहे मुद लीन्हे ॥ उत्तर
दिशि यमुनाके तीरा। मथुरा नामापुरी गँभीरा ॥ दोहा ॥ यदु-
बंशज तहँ बिदित हैं श्री बसुदेव उदार। येसंकर्षण कृष्ण हम
तिनके सुखद कुमार ॥ कारणबशनृपकंस सों हमसों बढ़ो बि-
रोध। ताते हम बध कंसको करि कीन्हे निज बोध ॥ चौपाई ॥
जरासंधको सो जामाता। होताते सो सुनि रिसराता ॥ कपटी
कंसभूपके जनकहि। दयो राज्य हों शुभद बचन कहि ॥ जरा-
संध बरबल दलसाजी। आइ लर्यो बहुबार स्वकाजी ॥ सेन
साजिबहुरो चढ़ि आयो। अति प्रमत्तममतासों छायो ॥ तेहि

ते पुरजन अतिदुख पाये । तब हम पुरतजि इतचलिआये ॥ अब भृगुपति तुम मंत्र बिचारि । कहौ करैं हमसो व्रत धारि ॥ सो सुनि परशुराम हँसिबोले । परमप्रेम की पदवीखोले ॥ तुम जोहौ जो कीन्हे कारज । जिहि हित जो अब करिहौ आरज॥ सो हम भलीभांतिसों जानैं । भूतभविष्य सबै अनुमानैं ॥ तुम सर्बद सर्बज्ञ सयाने । बूझहु हमसों मनहुं अयाने ॥ सोकहिबे की आज्ञा जानी । हम अब कहैं उचित अनुमानी ॥ यहकरबीर नाम पुर चारू । निरम्यो यदुको सुवन उदारू ॥ ताके बंशज सों लरि जैलै । नृप शृगाल बिलसत निज कैलै ॥ सो अति क्रूर स्वभाव कुचाली । ताते तुम यह पुरतजिहाली ॥ बेणुनाम जे नदी अगारे । तेहि तरिजाहु पार मुदभारे ॥ चारु यज्ञ गिरिहैं यक आगे । तापै बसियक निशि अनुरागे ॥ ताढिग नदखद्योग महाना । उठि प्रातहि तेहि तरहु सुजाना ॥ दोहा ॥ कनक कसनके उपल सों भूषित ताकेकूल । तेहि लखि फिरि आगे चलेहु मुदमंगल के मूल ॥ यहसुत सारसको रचो तहां क्रौंचपुर चारु । नृपति महाकपि है तहां ताकेबंश उदारु ॥ चौपाई ॥ तहँ बसि नृपसों मिलि मुददाता । गिरिगोमंत लखेहु चलित्राता ॥ अति उन्नत नभगत यकसानू । है तेहि गिरिको मंजु महानू ॥ तहँ बसितेहि महिमासों भेखेहु । जहँ लों रबिगति तहँ लों देखेहु ॥ जरासंध नृप जबते आई । तब तासोंतुम किहेहु लराई ॥ है यहकामद गऊ हमारी । करहुतासुपयपान सुखारी ॥ पयपीचलहु शीघ्र मुद प्यारे । हमहूंचलिहैं साथतुम्हारे ॥ पय करिपान चले दोउभाई । परशुराम मुनि संगसहाई ॥ चलि कछु दिनमेंते सुखदाई । गिरिगोमंतलखे ढिगजाई ॥ अतिरमणीय मनोहर नीको । अति उन्नत आनँददा जीको ॥ चढ़िताषै ते इमि छबिसाजे । मनुचय बिदिश त्रिदिवपै राजे ॥ बोले तहँ भृगुपति गुरुज्ञानी । सुनहु कृष्ण सादर ममबानी ॥

इत बसिकै कछु दिवस बितावो। गिरि शोभालखि आनँदपा-
वो॥ इतऐहैं सब शस्त्र तिहारे। उग्र अमोघ प्रभावनि भारे॥
जरासंध नृपसों जयलैहौ। यदुबंशिनको आनँद देहौ॥ इमि
कहि बहुबिधि आशिषदैकै। भृगुपति गये स्वथल मुद लैकै॥
रामकृष्ण प्रभु आनँद पागे। सुन्दरवन गिरि बिहरनलागे॥
दोहा॥ कृष्णचन्द्र बिनु एक दिन वन बिहरत बलराम। पुष्पि-
तचारु कदम्बतरु तर बैठे अभिराम॥ तहां मद्यको गन्धलखि
पीबेको ललचाय। उठि कदम्ब कोठरलखो गन्धडोर गहिजा-
य॥ चौपाई॥ तेहि कोठरमें मदिरानीकी। भरीलखे सुखदाइनि
जीकी॥ वर्षामें जलतेहितरुपाहीं। परिथिररहै सुकोठरमाहीं॥
सोई होइ मदिरा अभिरामा। उनमादककादंबरि नामा॥ सो
लैकरे पानहलधारी। मदिरामधुके अलिवनचारी॥ क्षणमेंता-
के रस रँगराते। भेउनमत्त मत्तमदमाते॥ मूर्त्तिमान इतने में
आई। बरुण कुमारि बारुणीगाई॥ सो तहँ जोरिपाणि कैठाढ़ी।
करि बहु बिनय प्रीति गहिगाढ़ी॥ श्रीबलराम बीरके तनमें।
भई लीन आनँद गहि मनमें॥ तदनुआयतहँ कांति सोहाई।
मूर्तिमान सुखमा सों छाई॥ हलधरसों संभाषण करिकै। सोऊ
भईलीन मुदभरिकै॥ तदनंतर तहँ श्रीसुखदाता। आई प्रभा
पुंजमयगाता॥ मणिमयमाल बिचित्र सुहावन। हलधरकहँ
पहिराय सचावन॥ ज्योतिजालको चारु निकेता। कुण्डलअरु
किरीट सुसुहेता॥ नील बसन अरुहार अनूपा। अमल अ-
लौकिक अरु अनुरूपा॥ सो स्वरूप के ये तव भूषण। कहि
धारण करवाइ अदूषण॥ संकर्षणके तनमें लीना। भई तेज
बर्द्धन परबीना॥ दोहा॥ सोथल तजि बलराम प्रभु कृष्णचन्द्र
पैआय। बैठिलगे बतलान तिमि जिमि गृहमें सुखदाय॥ बै-
ष्णव चारुकिरीटलै तेहिक्षण तहँ खगराज। आइकृष्णके शी-
शपै तकि तजि करे स्वकाज॥ चौपाई॥ प्रभुके मौलि यथोचित

चारू। शोभित भयो मुकुट हियहारू॥ सोवृत्तान्त जानिखल गंजन। कहेबन्धुसों मुनिमनरंजन॥ क्षीरधिमेंहम शयनसोहा-यो। करतरहे तहँ बलिचलिआयो॥ बनिसुरपतिसम ममढिग जाई। हरि किरीट लै गयोदुराई॥ कछुदिनमें सो समुझि ख-गेशा। तासों जाइ लरे शुभभेशा॥ अबतासों जय लहि यह लीन्हे। सादरआइ हमें इत दीन्हे॥ अबतजि शोच मोदहिय आनो। यह शुभकर्म जयद अनुमानो॥ इतने में वह नृपकी सेना। देखिपरी दारुणि दुखदेना॥ तेहिलखि कृष्णकहे कित लेखो। जरासंधकी सेना देखो॥ चतुरंगी यहसेना भारी। धूरि धार सह परे निहारी॥ जलद जलद मनुसँगकरिभावें। अति रव जवसों उमड़े आवें॥ जरासंधके भयसों पागे। सब नृप गण याके सँगलागे॥ भये कालबश आये कोही। ठगसँगमं-त्रित यथा बटोही॥ इतने में भूपति मगधेशा। घेरिसिजाइशै-ल चहुँ देशा॥ तेहि निशि तहँ निवासकरिराजा। भोरहिबैठो सहित समाजा॥ सबभूपनकहँ पासबोलाई। दियो निदेशरोष सों छाई॥ दोहा॥ घनकुद दारिन सों कठिन शिलासमूह बि-दारि। समकरि गिरिसह सैनचढ़ि लेहु तिन्हें गहिमारि॥ जे दुर्गम दुरगम्यनृप शस्त्र कुशल रणधीर। शूरपूरबल के लरैंते आगे रहिबीर॥ चौपाई॥ सुनिबोले शिशुपालबिचारी। नहिंयह मंत्र उचित धनुधारी॥ फोरेतेनहिं फुटैपहारू। बिनुदेखकतशस्त्र प्रहारू॥ यहिउपायसोंउन्हैंनपैहो। हवैकैश्रमितहारिफिरिजैहो॥ ताते सूखे काठमँगाई। पर्वतके चहुँओर धराई॥ आगिलगाइ देहु बनमाहीं। सहजहि जरिमरिहैं गिरिपाहीं॥ जोअधजरेबा-हिरऐहैं। तौवैशस्त्रनसों बधिजैहैं॥ यहसलाहसुनि नृपसुखपाई। चहुँदिशिदई आगि लगवाई॥ लागो बरन बिपिन चहुँओरा। जरनलगो गिरि उन्नत घोरा॥ अर्द्धकोश पैदल सहजाई। खरेभये भूपति सुखपाई॥ रहेशैल पै जीव जहांते। व्याकुल

सिगरे भये तहांते ॥ लखिहलधर हिय दायाभेखी। बोले कृ-
ष्णचन्द्रसों तेखी ॥ तात जरे यहगिरि गिरिचारी। होइहिअ-
यश भूमिपै भारी ॥ हों अब उत्रिणगिरिसों तबहीं। हतौंजाइ
भूपनको जबहीं ॥ इमिकहि कूदि शैलते धीरा। गये भूपके द-
लमेंबीरा ॥ तदनु कृष्ण पगसों गिरि दाबी। कूदिसैनमें गे मे-
धाबी ॥ दाबेसों गिरिते जलधारा। चहुँदिशि अबिरल कढ़ी
अपारा ॥ दोहा ॥ अग्निशांति तातेभई भे सबजीव अचेत।
निरखि अलौकिक कर्मयह डरपेनृपति अचेत॥इतनेमें तहँस्व-
र्गते आये आयुधबान । हलमूशलधनु अरुगदा चक्र महान
अमान ॥ महिखरी ॥ बलरामकृष्ण सुधीरयातहँ सिमिटि सबनृप
भिरतभे। बहुबाहि आयुध बिबिध बिधिके रोषरससों निरत
भे ॥ हलमुशल गदा प्रहारसों तहँ सुभटकितने नशतभे। हिय
हारि कितने अमितह्वै मुरिमनमसूसन मसतभे॥ बलराम अरु
मगधेश भिरितहँ गदायुद्ध सुकरतभे । बरबीर दोऊकाललों
हठि घने घालन लरतभे ॥ तजिगदा तब बलराम करमें मंजु
मूशल धरतभे। बधचाहि नृप मगधेशको अतिक्रोधसों हिय
भरतभे ॥ नहिं नृपति तुमसों बध्ययहइमि नभगिरा तब सुन-
तभे। सुनिरोक मुशल प्रहार नृपतिहि गुरुगदा सों धुनतभे॥
गुनि दिब्यपुरुष उदार इनकहँ मगधपति कर मलतभे। अति
बेगसों रथ हांकि बल तजि निज निलय प्रति चलतभे ॥ जि-
मिबातके सँग पाततिमि तासंग सबनृप भगतभे। जिमिसिंह
के भे भगलगैबर यूथ तिमिते लगतभे ॥ बलराम कृष्णउदार
तिनसों बूझिनाहिं कछु कहतभे। हो चेदिराज महीप जेशिशु-
पाल ते तहँ रहतभे ॥ जयकरी ॥ नृप शिशुपाल बुद्धि बलपूर।
जाइकृष्णकेढिगअगरूर॥ जोरिपाणि ह्वैखरेसचाय। लागेकरन
बिनय गुणगाय॥ केशवतुम करुणाके ऐन। शीलसिन्धु बकता
प्रियबैन ॥ हम तव पितु भगिनीके बार। ताते तुम ममबन्धु

उदार ॥ जरासन्धके भयसों नाथ । रहतरहे हम वाके साथ ॥ कहतरहे बहुभांति बुझाय । नहिं वह मानतहो दृढ़काय ॥ भल तुम्हार मनबच क्रमकाय । चाहतहैं हम देवमनाय ॥ सो अब मोपर जो ऋषिभूरि । हो हिय धरे करहुसो दूरि ॥ दोहा ॥ अब हम तुव अनुगमन नित करिहैं रहि आधीन । सद्य अद्यकरत- व्यजो सोसुनि करहु प्रवीन ॥ पद्मबर्ण यदु सुवनको बिरच्यो पुरकरबीर । तिहि भुजबलसों निजकरे है शृगाल नृपधीर ॥ पुरुषसिंह यदुबंश तुम ममदल सहचलिघेरि । मारि शृंगलहि सो नगर जीतिलेहु बसि फेरि ॥ सोरठा ॥ सुनि सबन्धु प्रभुमोद सहसेना शिशुपाल सह । तेहि पुरके चहुँकोद घेरिलये दिन- तीनिच्चलि ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेगोमंत्रगिरिदहनोजरासंधपराजयोनामषोड़शोऽध्यायः

दोहा ॥ पुर रुन्धित लखिकै कढ़ो नृप शृगाल सहसैन । धनु टंकार करत कहत गर्बी गर्बित बैन ॥ चौपाई ॥ शुचि हरिताश्व सुरथपै चढ़िकै । आयो हरिके सम्मुख बढ़िकै ॥ हरिहलधरहि प्रचारन लाग्यो । बरबाणन सों मारन लाग्यो ॥ सत्वसदन सुशील समभारी । बरणो एकबीर धनुधारी ॥ होसंगर युधजय यशलीन्हे । गहिप्रभुचक्र तासुबध कीन्हे ॥ नृपति शृगालकेर बध देखि । भागे सैनक भटभय भेखि ॥ पति बधसुनि भूपति की नारी । उर शिर ताड़न करति दुखारी ॥ पतिढिगजाईपीन दुख पागी । रुदनप्रलाप करन तबलागी ॥ पद्मावती नामपट- रानी । धरि धीरज लैसुतहि सयानी ॥ रुदनकरति प्रभुकेढिग जाई । लगी कहन करि विनय बड़ाई ॥ जो नृपकोबध प्रभुतुम कीन्हे । यहताको बालक भयलीन्हे ॥ पाणिबांधि तुव पगढिग आई । ठाढोभयो लखहु यदुराई ॥ जोकारिकृपा देहु अनुशासन । सो यह करै सुनहु भयनाशन ॥ सोसुनि कृपासिन्धु यदुनन्दन । दयेताहि धीरजजगबन्दन ॥ ताके मंत्री सखा पुरोधा । तिन्हें

बोलाइ कृष्णकरिबोधा ॥ नृपसुतको अभिषेकित करिकै। लै हरिताश्व सुरथ मुद धरिकै ॥ निज पुरचले कीर्त्तिलहि बरणी। शक्रदेव कीन्ही पितु करणी ॥ दोहा ॥ पांच रजनि मगमें बिहरि रामकृष्ण शुभभेश। छठयेंदिन शिशुपाल सह मथुराकिये प्रवेश ॥ बन्दि चरण बसुदेवके जननीके सहप्रीति। गुरुलघुसब सों फिरिमिले यथाउचित सहरीति ॥ चौपाई ॥ तहँ फिरिराम कृष्ण अनुरागे। यदुबंशिन सहबिहरन लागे ॥ एकसमय बलराम सुखारे। कृष्णबिना गे ब्रजमुदधारे ॥ नन्दादिक गोपन पै जाई। सादरमिले प्रेम दरशाई ॥ सबसों मिले मिलतहैं जैसे। सानँदसहज सुभावन तैसे ॥ कुशल बूझिकहि आनँद पाये। हरिबियोगको दुखतिन गाये ॥ कहेगोप अतिआनँद लीन्हे। तुमदोउ बंधुइहांजो कीन्हे ॥ अघप्रभृत जययशके कारज। सो हम सुनतरहे हैं आरज ॥ तुमहिं देखि अब अतिसुख पाये। कहैं कहांलौं हे मनभाये ॥ सोसुनिकहे रामगुरुज्ञानी। जन्म भूमि यह मम सुखदानी ॥ तुवघर हम सुख पाये जेतो। लहिहि न कोउ निजघरमें तेतो ॥ दधि पय माखन बहुबिधि खाये। संग सखनके गाय चराये ॥ इमि गोपनसों बातैं करिकै। लैसँग सखन राम मुद भरिकै। बरबृन्दाबन देखन लागे ॥ फूलनसों अँग भेषन लागे ॥ तहँ प्रिय सखा बारुणी ल्याये। सो करिपान सरस छबिछाये ॥ सखनसंग फिरि ब्रजकोडगरे। अतिउनमत्त भये गुण अगरे ॥ लखि कालिंदि न्हाइबो चाही। कहेकलिंदिहि सों हलबाही ॥ मम अस्नानहेतु इमि आवो। सुनिमो बचन बिलम्ब न लावो ॥ जबदेखे यमुना नहिं आई। तबहलाग्रता तटमें जाई ॥ निज ढिग करषि बिशद जलधारा। कीन्हे मज्जनबीर्य अपारा ॥ तनकै मूर्त्तिवन्त सुखदाई। यमुना कहन लगीढिग आई ॥ दोहा ॥ हलधर तुमहठ गहिकरे मो धारा अवरोध। केहिमग ह्वै हम जाहिं अब सो कहिकीजै बोध ॥

सोसुनिकै हलधर कहेलहि अतिआनँद लाहु । जल प्रबाहसों तोरिमहि याही मगसों जाहु ॥ यमुनाको भेदननिरखि मोदित गोप सुजान । हलधर तिनसों कैबिदा मथुराग‌ये अमान ॥ हलधरको आवत निरखि उठिमिलिहरिसुखदान । कुशल प्रश्न ब्रजजननको बूझिसुने मतिमान ॥ चौपाई ॥ एकसमय प्रभु मोदित मनमें । हैं बैठे शुचिसभा सदनमें ॥ तहँ चलाक चारण चलिआयो । करिप्रणामकरजोरि सोहायो ॥ इच्छितअतिप्रिय खबरि सचावन । लग्यो कहन सो सुबुधि सुधावन ॥ नाथ रुक्म नृप कुण्डिनपुरको । सुवन भूप भीष्मक बलपुरको ॥ भगिनी ताकी रुक्मिणि नामा । परमापूर सर्बगुणधामा ॥ तासु स्वयम्बर रचि शुभसाजा । किये एकत्र देश के राजा ॥ तिसरे दिवस आजुके नामी । होईतासु स्वयम्बर स्वामी ॥ यह सुनि कै हों सादर आयो । प्रभु कहँ सब वृत्तान्त सुनायो ॥ सुनि प्रभु उग्रसेन बलरामहिं । पुर पक्षन हित तजि बलधामहिं ॥ साजि सेन चतुरंगिनि भारी । कुण्डिनपुर प्रतिचले सुखारी ॥ सिगरे यदुबंशी धनुधारी । कृष्ण संग तहँ गये सुखारी ॥ संध्या समय सेन सहजाई । पहुंचे कुण्डिनपुर सुखदाई ॥ निज प्रभाव तहँ प्रगटन कारज । गरुड़हि सुमिरे केशव आरज ॥ सुमिरतही नागान्तक आये । पक्षज मारुत सों दिशिछाये ॥ गिरिबास गृह पटापटिनके । जुरे रहे जे भूपति तिनके ॥ लखि गरुड़हि प्रभु आनँदलीन्हे । प्रेमपूरि अनुशासन दीन्हे ॥ मम ढिग रहि अब आनँद धरहू । खल क्षितिपन कहँ भय सों भरहू ॥ दोहा ॥ इमि कहि सेना सहितगे कौशिक नृपके गेह । ते प्रभुको आगमन सुनि चलि लैगये सनेह ॥ अतिबिचित्र मन्दिर बिशद जाको बर बिस्तार । तामें प्रभुहि निवास दै किये उचित ब्यवहार ॥ चौपाई ॥ प्रभु आगमन गरुड़सह सुनिकै । नृप समूह सब मनमें गुनिकै ॥ भीष्मक नृपके सभा सदनमें । जुरे जाइ सब

चिन्तत मनमें ॥ लागेकरन मंत्र शुभभेशा। बोल्यो तहँभूपति मगधेशा ॥ कृष्णप्रभाव लेहु सुनि मोसों। कहेउकरेहु फिरिभाइहि सोसों ॥ इमिकहि मत्स्य आय अवतारा। कहि सब कीर्त्य कीर्ति व्यवहारा ॥ वृन्दाबनमें जो जो कीन्हे। क्रम सों सो सब कहि मुद लीन्हे ॥ मथुरामें जिमि मैगल मारे। मल्ल मत्त नृपको संहारे ॥ सत्रहबार आपुलरिहारो। क्रमसों सो सबकहेसि सुखारो ॥ फिरि गोमन्त शैलपर बारी। कहत भयोसब कथा विचारी ॥ गरुड़ बिना ये कीन्हे ऐसो। गरुड़सहित धौं करिहैं कैसो ॥ दोहा ॥ ये अव्यय भगवानहैं लीला बितरण हार। अब करि इनसों प्रीति दृढ़ तजहु युद्ध व्यवहार ॥ जरासन्धकोवचन सुनि नृपति सुनीथ सुजान। कहे कह्यो मगधेशको है कर्तव्य न आन ॥ मधुभार ॥ फिरि दन्तबक्र महीप। इमि कहत भो कुलदीप ॥ ये कृष्ण आनँद ऐन। हैं सहनशील सचैन ॥ पनबालपन दै आदि। लहि आपु ये उनमादि ॥ नहिंकिये कबहूं रारि। यहि लेहु बूझि बिचारि ॥ जो भिरो नाहक आय। इनादिये ताहि सजाय ॥ ये अबहुँ कलहबराय। घर कौशिकैके जाय ॥ बसि रहे हैं सहसैन। ये कलह लायक हैन ॥ हम कहें सो अनुमानि। अब करहु निज हितजानि ॥ दोहा ॥ नृपसमाज सब कृष्ण पै चलिकै सहित सनेहु। पूजि यथोचित बचन कहि परम मित्र कहिलेहु ॥ नृपकन्या जाकहँ बरिहि सो तेहिलही सचैन। नाहकही बिग्रह किये सुनो नफा कछु हैन ॥ चौपाई ॥ दन्तबक्रकी सुनि शुभबानी। बोल्यो शाल्व नृपति अभिमानी ॥ तुमसब बचन कहे जे सांचे। ते श्रुति परिनाहिं ममनन राचे ॥ क्षत्री धनुधर धीर कहाई। यहि बिधि तिनसों बैरबढ़ाई ॥ तजितजिशस्त्र दीन ह्वैजाई। आरत भाषे कहा बड़ाई ॥ बिनाकाल कोउ सकै न मारी। प्राप्तकाल कोउसकै न टारी ॥ कालअप्राप्त असुरबलभारे। तिन्हैं न हठि प्रभु कबहूं मारे ॥ बिनाकाल-

बश बलिहि निहारे । छलिपताख पठये नहिं मारे ॥ तातेधीर रहौ सबकोई । जो होनी होइहि सोइ होई ॥ बचन हमारऔर यह सुनहू । सो यहसांच हिये में गुनहू ॥ ये महिभार हरण मुदभारे । क्षितिपसँहारन हिततन धारे ॥ बैरकरहु कै प्रीतिबढ़ावो । रहो दूरिकैढिगरहि भावो ॥ समयपाय इनसोंसबकोऊ। लहिहो नाश लेहु सुनिसोऊ ॥ ताते आनि तजहु मतिभाई । बैरप्रीति निबहेहिं भलाई ॥ नृपति शाल्वकी सुनियह बानी । चुप ह्वै रहे भूपसब मानी ॥ आगत संध्यासमय निहारी । निज निज डेरनगे धनुधारी ॥ भोर कृत्यकरि मोदितमनमें । जुरे आइ फिरि सभासदनमें ॥ दोहा ॥ उत बिदर्भपुरमें सुखददेव दूत इकआय । पाती कौशिक भूपकहँ दीन्हीअति सुखदाय ॥ पाती पठई इन्द्रकी क्रथकौशिक नृपदेखि । जाइ कृष्णसोंजोरि कर लगे कहन मुदलेखि ॥ चौपाई ॥ नाथ नाथ तुम तिहुँपुरके हो । तुवइच्छा माया तुमलेहो ॥ सो प्रभु तुम मुद मंगलद्वारे । भये कृपाकरिअतिथि हमारे ॥ ताते तुव सतकारसुभावन । करिहमभयो चहतहैं पावन ॥ यह मम राज्य समाज समाजा । सो करिग्रहण होहु महिराजा ॥ जे नृप तुमहिं अराजा कहिकै । अनुचित बचन कहेंरिसगहिकै ॥ तुवप्रभाव ममशासनमानी । इत ऐहैं ते सब अभिमानी ॥ शुचिअभिषेकतुमहिं सबकरिहैं । आपुहि धन्यजानि मुदभरिहैं ॥ इमि कहि दोउबन्धु घरआये । पाती कुंडिननगर पठाये ॥ ऐसी पाती लिखे सुभेशा । भूपति सुनहु आदि मगधेशा ॥ सुरपति हमैं निदेश पठाये । सो हम तुम्हैं लिखे मनभाये ॥ क्रथ कौशिक ममशासनमानी । कृष्णहि परब्रह्म पहिंचानी ॥ रत्नमयो सिंहासन चारू । जो हमभेजें परमउदारू ॥ तापरकृष्णहि करिआसीना । अर्पहु आपन राज्य अहीना ॥ कुण्डिनपुरमें भूपतिजेते । जुरे बोलाइ लेहु तहँ तेते ॥ तिन्हैं सहित प्रभुकहँ अभिषेका । करहु वेद बिधि

सहित बिबेका ॥ तुव शासन सुनि जे नाहिं ऐहैं । ते सब बध्य कृष्ण सों ह्वैहैं ॥ दोहा ॥ गुरु निदेश सुरराजको हम यह देत पठाय । सो सुनिआवहु शीघ्रइत तजि बिरोधगहिचाय ॥ पाती कौशिकभूपकी कुण्डिनपुरमें जाय । नृपसमाजमें देतभो धावन अति सुखदाय ॥ चौपाई ॥ लखि पाती सब नृपति अमाना । लागे करन मंत्र अनुमाना ॥ इतने में तहँ सुरपपठायो । सुधि चित्रांगद दूत सोहायो ॥ अन्तरिक्ष रहि सो गुरुज्ञानी । लगो कहन यहि विधिकी बानी ॥ तुम सबको यह इन्द्र निदेशा । दीन्हें सो सुनि करहुनरेशा ॥ तजि बिरोध हरि पै चलिजाहू । करहुजाइ अभिषेक उछाहू ॥ उनसों बैरकिये भलनाहीं । उन्हें बिष्णु जानेहु मनमाहीं ॥ जरासन्ध अरु शाल्वमहीपा । नृपति सुनीथ रुक्म कुलदीपा ॥ इत अशून्य हित ये नृपचारी । रहैं इतै दीरघधनुधारी ॥ और नृपतिजे यहि पुरमाहीं । ते बिदर्भ पुर सादरजाहीं ॥ कृष्णहिकरि अभिषेकित लेखैं । फिरिइत आय स्वयंबरदेखैं ॥ इमिकहि चित्रांगदनिजदेशा । गयो मुदितमन शुभद सुभेशा ॥ चित्रांगद की सुनि यह बानी । भीष्मकआदि भूप हितजानी ॥ जरासन्धकी आज्ञा लहिकै । गेबिमान लै सबमुद भरिकै ॥ दिब्यपताके लखि मुदभारे । चढ़े बिमानन सुरन निहारे ॥ शुभद दुन्दुभी सुरबजवावैं । नरदुन्दुभि रव दशदिशि छावैं ॥ सोसुनि अति आनँदसोंसाने । आपुहि धन्यधरापर जाने ॥ दोहा ॥ बिशद सिंहासन शक्रको शुचि तापै आसीन । कथकौशिक क्षितिपालसों सेवितप्रभाअहीन ॥ दिव्यबसन अरु आभरण दिब्यगंध स्रगस्वच्छ । सो भूषित प्रभु को निरखि मोदित सिगरे पच्छ ॥ रोला ॥ गन्धर्ब अप्सर दिशपबिद्याधर सुमुनिगण आय । चढ़े याननिकरें अस्तुतिसरुचि सरस सचाय ॥ मुदिततन मघवान मंजु बिमान चढ़िछबिछाय । थिरे अम्बरपै लखै तहँशची सहसुख पाय ॥ परभाव

मंगल शब्दबरको भयो न पारावार । रंगभूमि बिचित्रनृपसब
गये ताकेद्वार ॥ बृष्णिप्रभुसों नृपतिकौशिक द्वारलौंचलिजाय ॥
नृपनको सत्कार करिगे कृष्णपास सचाय ॥ तासमय सुर हेम
कुम्भनि भरे मंगलवारि । मेघसम बर्षन लगे अभिषेक बिधि
अनुसारि ॥ गानअस्तुति नृत्यआशिष बाद्यजयरव भूरि । भू-
मिनभसों बरधि ताक्षण रहे दश दिशिपूरि ॥ नगर अरु दिव
तेहि समयभो एकनगरसमान । इन्द्र परम उपेन्द्र सुरनर रहे
मिलि सुखदान ॥ स्वरुचि अभिषेकित प्रभुहि दै अर्घनृप स-
मुदाय । जोरि मण्डल भये बैठत उचित आसनपाय ॥ दोहा ॥
नृप कौशिक तहँ ह्वै खरे प्रभुसन्मुख करजोरि । सबिधिअर्ज
करि नृपनकी माफकराये खोरि ॥ नृप भीष्मक फिरि जोरिकर
प्रभुसों बोले बैन । प्रभु प्रभावलखि चित्तमें चिन्तितभये अ-
चैन ॥ चौपाई ॥ प्रभु मम आत्मज रुक्म सुनामी । सो ह्वैबाल
भाव अनुगामी ॥ चाहै कियो स्वयम्बर सोई । निज भगिनी
को निजबश होई ॥ सो प्रकार हम नहिं अनुमानें । कह्यो ह-
मारन सो कछु मानें ॥ ताते कहैंदासकीनाई । क्षमो तासुअप-
राधगोसाई ॥ सो सुनि हँसिइमि केशवबोले । कपट भूपकेमन
की खोले ॥ तुवसुत बालभावमें ऐसो । करै प्रौढ़ ह्वै करिकै
कैसो ॥ तुमजो कह्यो स्वयंबरकीबो । और भूपकै कन्यादीबो ॥
हम नहिं चहैं सुता बारिआई । करैंकह्योसो शिशुकी नाई ॥ इत-
ने नृपति तिहारे आये । चल आगे तुम तिनकहँल्याये ॥ ति-
न्हैं देखितुमअतिशय तोषे । करिसत्कार भांति बहुपोषे ॥ मम
आगमन तुम्हैं नहिं शोच्यो । सो प्रकार हमआपुहि शोच्यो ॥
ममसत्कार न तुमकछु कीन्हें । ताते हम इत आसन लीन्हें ॥
बल बिश्राम हेत अबलों इत । रहे न तरु जाते निजपुरतित ॥
कन्या जेहि चाहहु तिहि देहू । भय हमारमति हियमेंलेहू ॥ क-
न्याबरत बिघ्न जो करई । रौरव नरक अवशिसो परई ॥ कृष्ण

चन्द्रकी सुनि यहबानी। बोलेनृप भीष्मक भयमानी॥ हे हम चर्म दृष्टि प्रभु तबलों। तुव दरशन नहिं पाये जबलों॥ अब ह्वैदिव्यदृष्टि हमताता। भयेअसतसत बिधिके ज्ञाता॥ दोहा॥ शरणागत ह्वै अपुनको नाथ हमैं भयनाहिं। अब चिन्तित निज चित्तकी कहौं सांचप्रभु पाहिं॥ बिरचि स्वयंबर अब न हम कन्या देब बिचारि। करहुकृपा प्रभु हीयते शेष दीजिये टारि॥ जयकरी॥ भीष्मकभूपतिके येबैन। सुनिबोले प्रभुकरुणा ऐन॥ सुता तुम्हारिलेहुँ करिगौर। देहुन देहु कहै को और॥ पै हमकथा कहैं यहएक। सो तुम सति जानहु सबिबेक॥लिये बिष्णु महिपै अवतार। कहे रमासों तब करतार॥ तुमकुंडिन पुरमें चलिजाहु। होहु भीष्मकहि तनयालाहु॥ सो रुक्मिणि तवसुताललाम। याहि न जानेहु लौकिक बाम॥ हे नहिं यह नरपति के योग। इतो बूझियो योग अयोग॥ तुमजब रचे स्वयंबरतासु। तब सुरपतिसों आज्ञा आसु॥ लहि इत आये बली सुपर्ण। बिघ्न करनके हेत सुबर्ण॥ हमहूं आये सहजसु-भाव। उतसबदेखनकोगहिचाव॥ क्षमाकरन तुमकहे सुलीक। सो यहलगो हमैं अतिनीक॥ बुधिबरकहैं क्षमागुण जोय। क्षमाकिये सिधिकारज होय॥ तुमसों प्रथम निरादरपाय। हम इत बसे क्षमाकरिआय॥ क्रथकौशिक ममकरि सन्मान। दये मोहिं निजराज्य महान॥ तेहि प्रभाव इनके दशपूर्व। पायेउ-त्तमलोक अपूर्व॥ इनहिं आदिदै ग्यारहऔर। लहिहैं उत्तम लोक सुठौर॥ दोहा॥ जे नृपसम अभिषेक यह आये लखन सचाय। तेऊ सुमन सुलोक शुचिलहिहैं समयो पाय॥ इमि कहि प्रभुसब नृपनकहँ दीन्हें सहित बिधान। बसनरत्नहाटक अमल करिसबको सन्मान॥ चौपाई॥ यहिबिधि सबको मोदित करिकै। सदल चले निजपुर मुदभरिकै॥ रथढिगआवत भी-ष्मकभूपहि। दरशाये प्रभु निजबररूपहि॥ सोलखि भीष्मक

आनँद लाहिकै । अस्तुति कीन्हें गुरुगुण कहिकै ॥ प्रभु की अस्तुति करिमुदलीन्हें । अस्तुति बिहँगराजकी कीन्हें ॥ ह्वै प्रसन्न सुनि अस्तुति स्वामी । चले सुरथ चढ़ि अन्तर्यामी ॥ नृपसब परम प्रेमसों पागे । गये कोशभरि प्रभुसँग लागे ॥ तब प्रभु तिनसों कहि प्रियबानी । बिदा किये सबकहँ सन्मानी ॥ फिरि फिरि क्रथ कौशिकसों मिलिकै । बिदा किये अति मुदसों रलिकै ॥ इत बिदर्भपुरमें सुरआई । गे सिंहासन लै सुखदाई ॥ ह्वै प्रभुसों नृप बिदा सुखारी । गे कुण्डिनपुर बिस्मित भारी ॥ सभासदनमें सभा सोहाई । रचिबैठे तहँसब कोउ जाई ॥ जरासन्ध आदिक सबराजा । बैठे तहां मंत्र के काजा ॥ समाचार हो उतको जेतो । भीष्मक सबहि सुनायो तेतो ॥ समाचारकहि भीष्मकभूपा । कहे सपचिकरि बदनबिरूपा ॥ जनित स्वयंबर दोष बिशाला । क्षमेहुमोर सिगरेमहिपाला ॥ समाचारसबजानहुभाई । अबन स्वयंबरकियेभलाई ॥ किये स्वयंबरबिघ्न महाना । होइहि जानहु करि अनुमाना ॥ दोहा ॥ इमि कहिकै सबनृपनको कीन्हेंबिदा नरेश । गयेनृपति निज निज पुरनकिये मलिन मनवेश ॥ जरासन्ध नृपशाल्व नृप अरु सुनीथ क्षितिपाल । दन्तबक्र नरनाह अरु महाकूर्म नरपाल ॥ क्रथकौशिक श्रीशान्त अरु बेनुदार नरनाह । काशमीर को भूप अरु अरिदल सुहित पनाह ॥ इतने भूपति तहँ रहे मन्त्रकरन के हेत। जनमेजय क्षितिपाल मणि सुनिये बुद्धि निकेत ॥

इतिहरिबंशदर्पणेरुक्मिणीस्वयंबरकृष्णाभिषेकोनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥

चौपाई ॥ चिन्तत भूपति भीष्मकज्ञानी । बोले जरासन्धसों बानी ॥ नीति निपुणहो तुम सब राजा । तुव सम्मतलहि हम यहकाजा ॥ कीन्हें सोगुणि धीरज गहहू । अब जो उचितहोइ सो कहहू ॥ इमिकहि भीष्मक रुक्महिचाहे । तेहि निदरनाहित

प्रभुहि सराहे॥ धनि बसुदेव देवकी दोऊ। इन्हैं समान न महिपै कोऊ॥ जाके सुवन कृष्णधनुधारी। बिदित बीरसत असदबिचारी॥ रिपुदल दलन धीर नयगामी। गुणी ज्ञाननिधि अन्तरयामी॥ ऐसोई सुतदेइ बिधाता। बिना सुवनकइ राखइ ताता॥ इमिबाणी भीष्मककी सुनिकै। बोले शाल्व नराधिप गुनिकै॥ भीष्मक जो तुम यहिबिधि कहिकै। रुक्महि निदरे रिस हिय गहिकै॥ रामकृष्ण कहँ जीतन लायक। को तीजो महिपै चित चायक॥ रामकृष्ण बिनु तीजो कोहै। रुक्महि जीतन लायकजो है॥ रुक्म एक धनुधर बिख्याता। नीति निपुण बिधिवत महित्राता॥ परशुरामसों धनुबिधि सीखो। रिपुदलमर्दन गणमेंलीखो॥ कृष्णहिदेव सनातनजानो। निज पुत्रहि मति निदरि बखानो॥ ताते हमजो कहैं बिचारी। सो उतयोग करहु दृढ़धारी॥ दोहा॥ कालयवन नृपको पिता गार्ग्यगोत्र मुनिराज। मांग्यो शिवहि अराधिबर लखि कछु कारणकाज॥ दीजै सुवन सुबीर मोहिं धनुधरधीर धुरीन। मथुरोद्भव बीरानसों जो अजेय परबीन॥ ताते मथुरा भटनसों कालयवन युतनीति। है अवध्य जययश लहिहि उनसों रणमें जीति॥ तातेदूत पठायकै करो सहाई ताहि। हमकहँ तौ यह रुचतहै कहौ रुचै जो जाहि॥ चौपाई॥ कहीशाल्वसों सुनिसब राजा। कहे अवशि करिये यहकाजा॥ सब नृपतिन की सुनि यहबानी। बोलो जरासन्ध अभिमानी॥ अबलौं ममआश्रित तुम रहिकै। हरयो राज्य मोसों फिरि लहिकै॥ भये चहत अपराश्रित तैसे। कुलटा तियपर पतिरति जैसे॥ सो अबकछु संशय मतिधरहू। जातेभलजानहुसो करहू॥ ममवृत्तांत सुनहु सबलोगू। परआश्रय नहिं हमकहँ योगू॥ हमैं हांकि लरिमरे भलाई। पर आश्रय गहिबो कदराई॥ तुम सब कहँ हम मने न कीजे। बरु यहियोग दूत कहि दीजे॥ शाल्वभूमि पति है

बरज्ञानी । इनकहँ दूतकरहु हितजानी ॥ हैं येबिहिता बिहित बिचारी ॥ है इनको रथ नभ पथचारी ॥ अन्तरिक्ष चलियेउत जैहैं । महिते केशव भेदनपैहैं ॥ नृपगणसों इमिकहिमगधेशा। शाल्व नृपति को दिये निदेशा ॥ नृपतुम कालयवन पहँजाई । किये मन्त्र सो साधहुभाई ॥ याते कालयवन अनखाई । जाय कृष्णसों करै लराई ॥ जीति तिन्हैं दुन्दुभी बजावै । नृपसमूह आनँदसोंछावै ॥ यहिविधि ममनिदेश अनुसारा । कहेउबढ़ाइ बिशद ब्योहारा ॥ दोहा ॥ इमिनिदेश मगधेश पलि सदलगये निजदेश । और नृपति तेऊगये निजपुर सबलसुभेश ॥ शाल्व नृपति नभपथगये रथपै मुदित महान । कालयवन नरनाहपै सादर गये सुजान ॥ चौपाई ॥ कालयवन नृप शाल्वहि देखी । सानँदउठि सादर शुभभेखी ॥ चलिकछुमंत्रिन सहितउमाहे । उचित अर्घलै अर्पण चाहे ॥ तबरथते नृपशाल्व उतरिकै । बोले हिय आनँदसों भरिकै ॥ हमनाहिं अर्घ योग यहिकाला । हमहिं अर्घमतिदेहुनृपाला॥ जरासन्ध आदिकनृपगाथे । तासु दूतकै हमइत आये ॥ यातेटेरिकहैं तुमपाहीं । नृपाहिदूतअरघा रहनाहीं ॥ सोसुनि कालयवन नृपज्ञानी । बोलबिहँसि बिहित बरबानी ॥ नृपयहभेद प्रथम हमजानो । ताते तुम्हैं पूज्यअति मानो ॥ सबके सम्मत सों तुम आये । अतिशय सुखदस्वरूप लखाये ॥ तुमहिं पूजि मनु सबकहँपूजे । कहै शोचनहिं मिथ्या कूजे ॥ इमि कहिदोऊ नृपति सयाने । मिले परम आनँद सों साने ॥ कुशल बूझिकहि नृपसुखदाई । बैठे सिंहासनपर जाई ॥ बोले कालयवन सुखपाई । जेहिहित चले कहहु सो भाई ॥ जासु कृपा लहि हमसब राजा । सदाअभीत रहें सहसाजा ॥ सो मगधेश तुम्हैं केहिकारण । भेजे कहहु जु करहु अवारण ॥ यहसुनि शाल्वभूप सुखपाये । जरासन्धको वचनसुनाये॥ दोहा॥ जरासन्ध नरनाहपति जो कहि शुभद सुदेश । पठये मोहिंसो

सुनहुनृप कालयवन शुचिभेशा ॥ इमिकहि शाल्वमहीप मणि क्रमसोंकहे सहर्ष। भयोकृष्णसों शैलढिग जिमिसंगर उत्कर्ष ॥ चौपाई ॥ तहँ द्वादश अक्षौहिणि सेना। हनेसबन्धु कृष्ण जग जेना ॥ अरु जिमिभई बिशद नभबानी। सो सबकहे शाल्व नृप ज्ञानी ॥ कहिनृप कहे सुनहु यवनेशा। यहकहि कहे भूप मगधेशा ॥ गार्ग्य गोत्रमुनि पिता तुम्हारे। ते सुतहेतु उग्रब्रत धारे ॥ असिचूंरण भक्षण बिधिसाधे। शम्भुहि द्वादशबर्ष अराधे ॥ बरंब्रूहि यह शिवकीबानी। सुनिमांगे तहँ बरबरमानी ॥ सुतउदग्र बर्चस बरबीरा। देहिं धनुर्द्धर गुणन गँभीरा ॥ जो माथुरभट गणकहँजीतै। सिद्धिलहै सोजो चितचीतै ॥ एवमस्तुकहि तबशिवदीन्हें। तुम अतिउग्र सर्बगुणलीन्हें॥तातेराम कृष्णके जेता। हौ तुम एक नृपनके नेता ॥ तासों हमयह मंत्र बिचारी। तुमसों कहैं सुनहु धनुधारी ॥ सैनसाजि चतुरंगिनि भारी। मथुरापै चढ़िजाहु सुखारी ॥ कृष्णहि जीति नृपनसुख देहू। उद्धत सुयश लोकपै लेहू ॥ यह मगधिप को महत निदेशा। शाल्वनृपति इमि कहे सँदेशा ॥ सो सुनि कालयवन मुद लहिकै। बोले रणको उत्सव गहिकै ॥ दोहा ॥ सुनहु भूप मणि धन्यहम भये धरापर आजु। तपकीन्हें जेहि हित पिता भयो सिद्धिसो काजु ॥ रामकृष्ण जगजैनके जीतनयोग बिचारि। दीन्हें भूप दिनेश मोहिं संशयहियसों टारि॥ चौपाई ॥सब नृपगण के बचनप्रभावन। अवशिलहब जययश मनभावन ॥ नृपहित हारिलहब जो भाई। कोटिजीति सम्मतउभलाई ॥ इमिकहि कालयवन मुद लीन्हें। बिप्रनबोलिदानबहु दीन्हें ॥ पक्षी सुभट सभासद चोषे। दानमान करितिनकहँतोषे॥ सोइ क्षण शुभ दिन समुझि सुजाना। मथुराकहँ कीन्हेंप्रस्थाना ॥ तब ह्वै बिदा शाल्वनरनाहू। रथचढ़िगे निजपुरबरबाहू॥ इत युगपाणि जोरिउरगारी। बोले प्रभु सों बचन बिचारी ॥ प्रभु

तुव बास योगमनभावन । है रैवत गिरि परम सोहावन ॥ रजनीचरबिहरैं तेहिकानन । अरु जो दुष्टजीव पंचानन ॥ जो प्रभु सों अनुशासन पावों । सो बन निष्कण्टक करिआवों ॥ सो सुनि प्रभु अनुशासनदीन्हे । गये गरुड़तहँ आनँदलीन्हे॥ प्रभु यदुबंशिन सह मुद छाये । चलि मथुरापुरके ढिगआये ॥ बैशम्पायनसों इमिसुनिकै। बोलेजनमेजय नृपगुनिकै ॥ जिमि बिदर्भपुरमें मनभाये । भो प्रभुको अभिषेक सुहाये ॥ उग्रसेन नृपसो सुधि पाई । किये कहासो कहहु बुझाई ॥ जनमेजयकी सुनि यह बानी । बोले बैशम्पायन ज्ञानी ॥ दोहा ॥ क्रमसोंप्रभु अभिषेक को सुनि वृत्तान्त सचाय। उग्रसेनमथुराधिपति अतिशय आनँदपाय ॥ दियेदान द्विजवरनको पूजेदेवीदेव । अतिशय उत्सव किये सब निज बिभूतिके भेव ॥ चौपाई ॥ बहु बिधि उत्सव करि मनभाये । उग्रसेन नृप आनँदछाये ॥ सुख निधि लूटति सहित सनेहा । गे बसुदेव देवकी जेहा ॥ उनको सब वृत्तांत सुनाये । ते सुनि अतिशय आनँद पाये ॥ समाचार कहि मोदित राजा । राम सहित रथचढ़े सुसाजा ॥ ताही क्षण प्रभुपुरढिगआये । पांचजन्यशुचिशंख बजाये ॥ धुनिसुनि उग्रसेन हलधारी । चले शीघ्र प्रभु मिलन बिचारी ॥ पुरजन युवावृद्ध अरुबाला । नरनारी सब चले उताला ॥ जे जैसे तैसे उठि धाये । सिगरे पुरजन आनँद छाये ॥ उमँगि चलेसब पुर जन ऐसे । राकाशशिलखि जलनिधि जैसे ॥ जिमिशैलस्थरबिहि लखि नंदहि । तिमि रथस्थ कृष्णाहि जन बंदहि ॥ उग्रसेननृप प्रभुहि बिलोकी । उतरे महिपै निजरथ रोकी ॥ रत्नमयोरथ प्रभाअहीना । तापै प्रभुहि पेखि आसीना ॥ दिव्य बसन भूषणसों भूषे । कोटिमैनकी महिमा दूषे ॥ चामरव्यजन सुछत्र उदारू । अतिउन्नत गरुड़ध्वजचारू ॥ राजचिह्नसंपूरणदेखी । नृपनिज हिय आनँद सों मेखी ॥ बोले श्रीहलधर

सों बैना। मोद बारिसों पूरेनैना ॥ दोहा ॥ अब रथचढ़ि मोहिं कृष्णके सन्मुखजाय अयोग। हैं उदार ये बिष्णु प्रभु गहेकछू उतयोग ॥ रहि मथुरापै गुप्त ये पुरबिदर्भमें जाय। प्रगटतकीन्हें आपुको लहि अभिषेक सचाय ॥ चौपाई ॥ ताते पांयन चलिबो चाहैं। बिधिवत अस्तुति करन उमाहैं ॥ उग्रसेन की सुनियहबानी। बोले राम परमप्रिय मानी ॥ भूपाहिं अस्तुति करब न योगू। देवहि कहत चलत बुध लोगू ॥ तुमसों प्रभुप्रसन्न वैसेही। मिलहुमिलत हैं जिमि तैसेही ॥ इमि बतलात भूप अरु हलधर। चलि पहुँचे प्रभुके ढिग बुधिबर ॥ अर्घपात्र लै भूप उछाहे। कृष्णचन्द्र तहँ अर्पण चाहे ॥ तिमि रथरोकि कृष्ण नयगामी। कहे भूपसों त्रिभुवन स्वामी ॥ मथुरा अधिपति करि अभिषेका। कीन्ह तुम्हैं हम सहित बिबेका ॥ तुम मति अर्घपाद्य मोहिं देहू। सीख हमारि मानियह लेहू ॥ तुव अभिप्राय बूझि हमयेहा। कहैं करहु सो तजिसंदेहा ॥ सहित समाज शत्रुकुल चालहु। निजपुर पुहुमि पूर्बता पालहु ॥ जितने नृप महिपै अहलादे। मान्य हमाहिं तुम सबसों ज्यादे ॥ इमि कहि कृष्णचन्द्र प्रभु मानद। दीन्हें उग्रसेनकहँ सानद ॥ दिव्यआभरण बस्त्र यथोचित। जिमि दीन्हें हे नृपन सुरोचित ॥ आदि बिकद्रु भूपके सँगमें। हे जेते यदुबंशी मगमें ॥ दशदश सहस द्रब्यमुद लीन्हें। भूषण बसन तिन्हैंप्रभु दीन्हें ॥ दोहा ॥ परिजन पुरजन सुभटगण बंदीजनहिं समोद। सहस सहस बसु दै सबिधि कीन्हें बिशद बिनोद ॥ गणिका अरुगायननिको शतशत द्रब्यअमंद। दीन्हें प्रभु यदुबंशमणि पूरित परमअनंद ॥ जयकरी ॥ बिधिवत करि सबको सत्कार। कृष्णचंद्र प्रभु भूभर्त्तार ॥ उग्रसेन सों बोलेबैन। पूरेमोद बारिसों नैन ॥ तजिसंदेह भूपशिरताज। चढ़ो स्वरथपै सनृपसुसाज ॥ इमिकहि रथपै नृपहि चढ़ाय। पुर प्रवेश कीन्हें यदुराय ॥ भेरी

तुव बास योगमनभावन । है रैवत गिरि परम सोहावन ॥ रजनीचरबिहरैं तेहिकानन । अरु जो दुष्टजीव पंचानन ॥ जो प्रभु सों अनुशासन पावों । सो बन निष्कण्टक करिआवों ॥ सो सुनि प्रभु अनुशासनदीन्हे । गये गरुड़तहँ आनँदलीन्हे॥ प्रभु यदुबंशिन सह मुद छाये । चलि मथुरापुरके ढिगआये ॥ बैशम्पायनसों इमिसुनिकै । बोलेजनमेजय नृपगुनिकै ॥ जिमि बिदर्भपुरमें मनभाये । भो प्रभुको अभिषेक सुहाये ॥ उग्रसेन नृपसो सुधि पाई । किये कहासो कहहु बुझाई ॥ जनमेजयकी सुनि यह बानी । बोले बैशम्पायन ज्ञानी ॥ दोहा ॥ क्रमसोंप्रभु अभिषेक को सुनि वृत्तान्त सचाय। उग्रसेनमथुराधिपाति अतिशय आनँदपाय ॥ दियेदान द्विजवरनको पूजेदेवीदेव । अतिशय उत्सव किये सब निज बिभूतिके भेव ॥ चौपाई ॥ बहु बिधि उत्सव करि मनभाये । उग्रसेन नृप आनँदछाये ॥ सुख निधि लूटति सहित सनेहा । गे बसुदेव देवकी जेहा ॥ उनको सब वृत्तांत सुनाये । ते सुनि अतिशय आनँद पाये ॥ समाचार कहि मोदित राजा । राम सहित रथचढ़े सुसाजा ॥ ताही क्षण प्रभुपुरढिगआये । पांचजन्यशुचिशंख बजाये॥ धुनिसुनि उग्रसेन हलधारी । चले शीघ्र प्रभु मिलन बिचारी ॥ पुरजन युवावृद्ध अरुबाला । नरनारी सब चले उताला ॥ जे जैसे तैसे उठि धाये । सिगरे पुरजन आनँद छाये ॥ उमँगि चलेसब पुर जन ऐसे । राकाशशिलखि जलनिधि जैसे ॥ जिमिशैलस्थरबिहि लखि नंदहि । तिमि रथस्थ कृष्णहि जन बंदहि ॥ उग्रसेननृप प्रभुहि बिलोकी । उतरे महिपै निजरथ रोकी ॥ रत्नमयोरथ प्रभाअहीना । तापै प्रभुहि पेखि आसीना ॥ दिव्य बसन भूषणसों भूषे । कोटिमैनकी महिमा दूषे ॥ चामरव्यजन सुछत्र उदारू । अतिउन्नत गरुड़ध्वजचारू ॥ राजचिह्नसंपूरणदेखी । नृपनिज हिय आनँद सों भेखी ॥ बोले श्रीहलधर

सों बैना। मोद बारिसों पूरेनैना ॥ दोहा ॥ अब रथचढ़ि मोहिं कृष्णके सन्मुखजाय अयोग। हैं उदार ये बिष्णु प्रभु गहेकछू उतयोग ॥ रहि मथुरापै गुप्त ये पुरविदर्भमें जाय। प्रगटतकीन्हें आपुको लहि अभिषेक सचाय ॥ चौपाई ॥ ताते पांयन चलिबो चाहैं। बिधिवत अस्तुति करन उमाहैं ॥ उग्रसेन की सुनियहबानी। बोले राम परमप्रिय मानी ॥ भूपहिं अस्तुति करब न योगू। देवहि कहत चलत बुध लोगू ॥ तुमसों प्रभुप्रसन्न वैसेही। मिलहुमिलत हैं जिमि तैसेही ॥ इमि बतलात भूप अरु हलधर। चलि पहुँचे प्रभुके ढिग बुधिबर ॥ अर्घपात्र लै भूप उछाहे। कृष्णचन्द्र तहँ अर्पण चाहे ॥ तिमि रथरोकि कृष्ण नयगामी। कहे भूपसों त्रिभुवन स्वामी ॥ मथुरा अधिपति करि अभिषेका। कीन्ह तुम्हैं हम सहित बिवेका ॥ तुम मति अर्घपाद्य मोहिं देहू। सीख हमारि मानियह लेहू ॥ तुव अभिप्राय बूझि हमयेहा। कहें करहु सो तजिसंदेहा ॥ सहित समाज शत्रुकुल चालहु। निजपुर पुहुमि पूर्बता पालहु ॥ जितने नृप महिपै अहलादे। मान्य हमहिं तुम सबसों ज्यादे ॥ इमि कहि कृष्णचन्द्र प्रभु मानद। दीन्हें उग्रसेनकहँ सानद ॥ दिव्यआभरण बस्त्र यथोचित। जिमि दीन्हें हे नृपन सुरोचित ॥ आदि बिकद्रु भूपके सँगमें। हे जेते यदुबंशी मगमें ॥ दशदश सहस द्रव्यमुद लीन्हें। भूषण बसन तिन्हैंप्रभु दीन्हें ॥ दोहा ॥ परिजन पुरजन सुभटगण बंदीजनहिं समोद। सहस सहस बसु दै सबिधि कीन्हें बिशद बिनोद ॥ गणिका अरुगायननिको शतशत द्रव्यअमंद। दीन्हें प्रभु यदुबंशमणि पूरित परमअनंद ॥ जयकरी ॥ बिधिवत करि सबको सत्कार। कृष्णचंद्र प्रभु भूभर्त्तार ॥ उग्रसेन सों बोलेबैन। पूरेमोद बारिसों नैन ॥ तजिसंदेह भूपशिरताज। चढ़ो स्वरथपै सनृपसुसाज ॥ इमिकहि रथपै नृपहि चढ़ाय। पुर प्रवेश कीन्हें यदुराय ॥ भेरी

दुंदुभि पटह बिशाल। तूर्जशंख को स्वनमुदमाल ॥ बंदीजन की स्तुति धुनिमेश। जय उच्चरत जु सुभट सुभेश ॥ गजबृं-हित हयहीसन भूरि। रथधुनि रही दिशनमें पूरि ॥ श्रीश्रीकृ-ष्णचंद्र घनश्याम। बसु बरसावत आनँदधाम ॥ उग्रसेन नृप औ बलराम। अरु यदुबंशिन सह अभिराम ॥ सरस सुखद प्रभु सहित सनेह। मोदितगे निज पितुके गेह ॥ ह्वै मोहितब-सुदेव सुजान। पत्निनसह लहि मोद महान ॥ प्रभुहि निरेखि रहे तेहि ठौर। करि न सके कछु कारज और ॥ दै तहँ प्रभुहि अर्घ मुद धारि। चातुरि उग्रसेन की नारि ॥ कंसकियेहो अ-र्जनजौन। अर्पण कीन्हों धन सबतौन ॥ तब प्रभु परमकृपाके ऐन। बोले उग्रसेनसों बैन ॥ पुरधन राज्य बाजिगजराज। इन सों नहिं कछु हमसोंकाज ॥ दोहा ॥ इनसबको नृपनाथ तुमक-रहुअचिंतित भोग। करहुयज्ञ बिधिवत बिबिध तजहु कंसको शोग ॥ यहि बिधिकहि भूपालसों सोधनदै फिरिताहि। सहित राम श्री कृष्ण गे अंतर्भवन सचाहि ॥ मधुभार ॥ है ग्रहणकी-न्हें जौन। शुभशस्त्र तजितहँ तौन ॥ करिनित्य नियमितकर्म। दोउ बंधु पालक धर्म ॥ तहँ करनलागे आम। बरबारता अ-भिराम ॥ तेहि समय आकसमाद। सुनि पर्‍यो दीरघ नाद ॥ अति बह्यो रंघसबात। जेहि बढ़ो अति उत्पात ॥ सब बिकल भे अनुमानि। प्रभु किये स्मित मुसुकानि ॥ सो शुभदमारुत मानि। प्रिय गरुड़ पक्षज जानि ॥ लखिपरे प्रकट सुपर्ण। बर पन्नगासन कर्ण ॥ ते दिव्यगन्ध सुमाल। है धरे बिशद बिशा-ल ॥ लखि प्रभुहि आनँदधाम। करिदण्डवत परनाम ॥ ढिग राजिराजे भूरि। अति अनघ आनँद पूरि ॥ प्रभु बूझिस्वाग-ततासु। सहबन्धु तेहि सहआसु ॥ चलिबैठि एकथलजाय। भे करत मंत्र सचाय ॥ तहँ गरुड़सों यहि भांति। प्रभु कहत भे बरकांति ॥ यह कालयवन नरेश। अरु भूमिपतिमगधेश ॥

ये बध्य हमसोंहैन। हम लहब इनसों जैन॥ दोहा॥ तातें अब यहि नगरमें हम बसिलहब न क्षेम। याहि छोड़ि कहुँ अनत चलि बसिबो चहैंसप्रेम॥ गरुड़ध्वजके बचन सुनि गरुड़ कहे ये बैन। नाथ आपसों ह्वै बिदा जो हों गयो अचैन॥ सोरठा॥ पश्चिम दिशिमें जाय निरख्यो परमबिचित्र थल। रैवत गिरि सुखदाय सागरतट रमणीय अति॥ चौपाई॥ अति पावन सो सुथर गोसाईं। सुन्दर शुभद सुखद शुभठाईं॥ है तव बसिबे योगसोहावन। बन उपबन पुरसों मनभावन॥ वैनतेय की सुनि यह बानी। कृष्णचन्द्र मुदमंगलदानी॥ इच्छित करिबे की बिधिलीन्हें। उतका बासिबो रोचितकीन्हें॥ सोसुनि उग्र-सेन मुदग्वैकै। कहा कृष्णसों शोचित ह्वैकै॥ आप अनतको बास बिचारे। सो सुनिसब हम भये दुखारे॥ तुम्हहिं बिना हम ब्याकुल ह्वैहैं। जलबिन मीन सदृश दुख ज्वैहैं॥ तुम्हहिं बिना हैं हम सबकैसे। बिना पुरुषकी पतिनी जैसे॥ तातें हम सिगरे हे स्वामी। हैं मनबचक्रम तुवअनुगामी॥ तातें जहां चलहु नयगामी। लयेचलहु तित सबहिं सुनामी॥ कहेतथास्तु कृष्णसुनि सोई। सोसुनि हर्षितभे सबकोई॥ यहि बिधिकृष्ण बारता भावनि। रहेकरतरुचि सभासोहावनि॥ कालयवनइतने में आई। पुरढिग परो निशानबजाई॥ तासुआगमनसुनि यदु-नायक। बिधिवत कौतुकबितरण चायक॥ यदुवंशीबरवृष्णिहि आदिक। मंत्र निपुण नय प्रियमय बादिक॥ बिधिवत तिनसों मंत्रदृढ़ाये। बिषद भयानक ब्याल मँगाये॥ घटमें ताहि मूंदि चावनसों। तापै भेजिदिये धावन सों॥ सो घट खोलि देखि नृप ब्यालहि। समुझि सुकृष्णचन्द्र के ख्यालहि॥ बहु पिपीलिका तुरत मँगाई। भेजि दियो तेहि घटमें नाई॥ सो लखि कृष्ण-चन्द्र मुसुकाने। यवनहिं बुद्धिमान अतिजाने॥ दोहा॥ तासुबु-द्धिबल प्रबल लखि कृष्णचन्द्र सुखदान। बोले यदु पुंगवन

सों यह नृप बली महान ॥ हमहिं आदि माथुर भटन सोंअब-ध्य यह बीर । रण चढ़ियासों जीतिनहिं लहबसुनहु रणधीर ॥ ताते तुम सब शीघ्र अब तजिमथुरा सहसैन । रैवतगिरि ढिग चलिबसहु समुदमानि मम बैन ॥ प्रभुआज्ञा लहिकै कढ़े यदु-बंशी सहसाज । सह कलत्रसह धन सदल सह हयगय गजरा-ज ॥ पश्चिम दिशि सबचलतभे सह कुटुम्ब परिवार । सुभट असंख्य निशंक मति प्रभु आज्ञा अनुसार ॥ चौपाई ॥ जे भट बीर धीर गणतीके । मर्दन परदल सुभट अनीके ॥ तिनहिं स-हित प्रभु सबके पीछे । भेरिनिशानचले जय ईछे ॥ बन गिरि शहर नदी नद शैरत । गे रैवतगिरि ढिगप्रभुजैरत ॥ रैवतगि-रिको ढिग अतिपावन । शिखर मंदरोदार सोहावन ॥ हो नृप एक लब्यता स्वामी । ही तहँ ताकीरची सुनामी ॥ पुरीद्वारका अति रमणीया । प्रमुदित होत जाहि लखि हीया ॥ सो लखि प्रभु हिय आनँद लीन्हें । निज निवास हित रोचित कीन्हें ॥ दै तहँ सबहि निवास सुपासू । मथुरा प्रति पलटे प्रभु आसू ॥ एकाकी पांयन पथचारी । मथुरा प्रविशे प्रभु धनुधारी ॥ प्रभु-हि देखि सहसैन नरेशा । चढ़ो कालबश ह्वै यमनेशा ॥ प्रभुके सन्मुख बाण चलावन । लाग्यो भरे बीररसभावन ॥ प्रभु तापै कछुबाणचलाई । फिरिफिरि चले छरहरे धाई ॥ कालयवनग-र्बीमदपागो । दलसह प्रभु के पीछे लागो ॥ मांधाताको सुत जयबर्द्धन । हे मुचुकुंद भूप अरि मर्दन ॥ पूर्ब देवसुर संगरकी-न्हें । तबते लरि इन्द्रहि जय दीन्हें ॥ कहे इन्द्रतब सरससनेहू । नृप मुचुकुन्द मांगि बरलेहू ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै पुरुहूतसों ऐसो कहे नरेश । बहुत काल करि युद्ध अति होंहौं श्रमित सुरेश ॥ ताते चाहत करनहों निद्रा दिवस बहूत । दीजै मोहिं बरदान यह पुर पालन पुरहूत ॥ चौपाई ॥ सोवत मोहिं जगावै जोई । भस्म होइ मो देखत सोई ॥ एवमस्तु सुनि कहे सुरेशा । सो

सुनि क्षितिपर आइ नरेशा ॥ दीरघ गुहा देखि मुदमोये।सोये ते हैं तबलों सोये॥ सो वृत्तान्त समुझि प्रभुनागर। कलितकौतुकी कौतुक सागर ॥ ताके देखत प्रविशे तामें । सोवत हो नृप जेहि सुगुहामें ॥ जाइ भूप के अमल उसीसे । बैठे छपि बिनु ताके दीसे॥ कालयवन नृप प्रभु के पीछे। प्रविश्यो तामें जययश ईछे ॥ खरो पांयते ह्वै धनुधारी । हनेसिपांयसों कृष्ण बिचारी ॥ लांगे लातजागि नृप सोई। आंखिखोलि देखे रिस भोई ॥ सुरपति के बरके अनुसारा। कालयवननृप जरिभो छारा ॥ तब श्रीकृष्ण परम सुखपाये । उठि भूपति के सन्मुख आये ॥ कहेभूप सों आनँद भोये। नरपतिआप बहुतदिनसोये ॥ जेहि कारण तुम सोये जबसों । नारद मुनिभाषे सबहम सों ॥ नृप तुम महत काजमम कीन्हे। तुम्हहिं देखि हमअति मुद लीन्हे ॥ अति हरस्व बपुबर्चसुभेखी। पुरुष बिलक्षणप्रभु कहँ देखी ॥ युग बिभेद मनमें अनुमानी। कहेभूप इमिप्रभुसों बानी ॥ दोहा ॥ कोतुम कित आये इतै केहि युगमें इत आय। सोये हम अब कौनयुग सो सब देहु बताय ॥ सो सुनि बोले कृष्ण प्रभु चन्द्रबंश कुलचन्द। नृपति नहुषके तनय हे नृपति ययाति स्वछन्द ॥ नृप ययातिकेचारि सुत तिनमेंगुरु यदुभूप। ताके कुल बसुदेवभे बंश बिरद अनुरूप ॥ रोला ॥ नृपति ताको सुवन हों मैं कृष्ण मेरोनाम। दुवन मेरो दुष्ट हो यह कालयवन सकाम ॥ रह्यो हमसों यह अबध्य सुहेतु यहि तुवपास। आइजू क्षितिपाल मणिहों लख्यो याकोनास ॥ शयनकीन्हें आपजब तब रह्यो त्रेता तात । अंत द्वापरको अहै कलिप्राप्त कल्मष गात ॥ कृष्णके ये बचनसुनि मुचुकुन्द तजिगिरि गेह। निकसि बाहेर खरेभे सह कृष्ण पूरित नेह॥ अल्पबुधिबल बिजय अल्प हरस्व लखि नरनारि। हीनसंपति क्षीणकांति मलीन भूमि निहारि॥ औरबंशजको निरखि निज राज्यपतिअनुमानि। कृष्ण

सों ह्वै बिदा श्री मुचुकुन्द नृप गुणखानि ॥ जाय गिरि हिमवंत पैकरि उग्रतप मुदपागि। गये स्वर्ग स्वकर्म्म फल लहि सुचित शुचितन त्यागि ॥ कृष्णचन्द्र उदार प्रभु नृपयवनके दल जाय। अश्वगज रथ अस्त्रध्वजधनुकवचहरि सुखछाय॥ जाय द्वारावती में सबकहे इतको हाल। तौन सुनि यदुबंशसिगरे लहे मोदबिशाल॥ भोरलहिफिरि सखनसह यदुराय प्रभुकुलचंद। देखिबन गिरि सुथर चहुंदिशि पूरिपरम अनंद ॥ क्षत्र बर्द्धन करनपाय नक्षत्र शुभद महान। रोहिणीमें द्विजनको सनमान करि दैदान॥ स्वस्तिबाच्य पुनीतसुनि बिधिपूर्बकरि शुभकाज। दुर्गरचनाकोकिये आरम्भ प्रभु सहसाज ॥ कहेइमि यादवन सों प्रभुबचनप्रिय कमनीय । पुरीनिर्मित करतहों इत सुखद अति रमणीय ॥ नामप्रिय द्वारावती अमरावतीसी बेश। बिरचि निज निज गेह तुमसुर सदृश लसहु सुभेश ॥ चौक चत्वर सौधसुन्दर राजमार्ग बनाय। पन्नगौरि बिचित्र रचिरचि रमहु सुचित सचाय ॥ कृष्णके सुनिबचन यादव लहिसुदिनकर क्षेम। लगेरचना करनपुरकी परम पूरितप्रेम ॥ दोहा ॥ पुररचिबेकेकाज प्रभु बिश्वकर्म्माकेहेत। मनसि शक्रसों कहतभे यदुपति कृपानिकेत॥ लहिसुदेश सुरराजको बिश्वकर्म्मा तहँआय। जोरिपाणि प्रभुसोंकिये बिनय परमसुखपाय॥ चौपाई॥ मोहिं इन्द्र अनुशासन दीन्हें। जाहुउपेंद्र पास मुदलीन्हें ॥ होंसुनि प्रभु तवमैं ढिगआयों। पदपंकज लखिअति सुखपायों ॥ जो अनुशासन देहु गोसाईं। सोमैंकरौं दासकीनाईं ॥ तासु बचन सुनि प्रभुमुदलीन्हे। पुररचिबेको शासनदीन्हे ॥ सुनिनिदेश सो निरखि बिचारी। प्रभुसोंकहे जोरि युगबारी ॥ नाथ चहूंदिशि सागरजोहै। अतिसंकीर्ण कियेसो सोहै ॥ नाथ देइजो महि कछुसागर। तौपुर रचना बनै उजागर ॥ बिश्वकर्म्माकी सुनि यहबानी। कहे सरितपतिसों प्रभुमानी ॥ ममपुर रचना

हित सुनिलेहू। द्वादश योजनक्षिति शुचिदेहू ॥ जो सरितेश मान्य मोहिंजानो। तौममवचन शीघ्र यहमानो ॥ प्रभुकीआज्ञा जलनिधि सुनिकै। कर्षि प्रवाहदये महिगुनिकै ॥ सम बिस्तरित भूमिसों ज्वैकै। बिश्वकर्म्मा आनँदसोंग्वैकै ॥ मानसपुरी रचे मनभावनि। चाहतचख चितचाव चढ़ावनि॥चामीकरमय बिरचितचारु। रतन बिचित्रित जाल उदारु ॥ यथायोग गृह सबकेलायक। रचिदीन्हें भरिभासों भायक ॥ भांति भांतिके सौधबनाये। रचिबिचित्र सुखमासोंछाये॥दोहा ॥बिरचे बिशद बजार बर बिबिध बिधानबनाय। बिश्व सुसबसे बनिक जेहि बसिबिलसे वसुपाय ॥ बापी कूप तड़ागवर उपबनविशद बिचारि। विश्वकर्म्मा बिरचे सरुचि सउचित सुरथ निहारि ॥ चौपाई ॥ प्रभुहि योग अतिउत्तम गेहा। मणिमय बिरचेसहित सनेहा ॥ अन्तःपुर बहु बहुबिधि बिरचे। हीराहेमनि हरषनि हिरचे ॥ कृष्णचन्द्रन्यामकबरभाके। बिश्वकर्माहैंशिल्पीजाके॥ तापुर गृहकी सुखमाकोकहि। सकै सर्ब गुणकी गरिमा गहि॥ रचिपुर बिशद समुद बिश्वकर्मा।प्रभुहि बन्दिगे स्वघरसुधर्मा॥ शंख निधिहि तब कृष्णबोलाई। ताहिदई आज्ञा मनभाई ॥ द्वारावतिमें सानद सरसे। सर्ब संपदा घरघर बरसे ॥ प्रभुनिदेशलहि निधिपतिहर्षे। सर्ब संपदा घरघर सरसे ॥ फिरिएकान्तै बैठिसुहाये। मुरमर्दन मारुतहिबोलाये ॥ प्रभुढिगआइ जोरिकर सानद। मारुतकहे सुनहुप्रभुमानद ॥ जिमिहम देवदूत शुभभेशा। तिमितुवदीजे सुखद निदेशा ॥ यहसुनि प्रभु जोहेअभिलाषे। सोसादर मारुतसोंभाषे ॥ जाहुशक्रपैममहितमानी। सभा सुधर्मा ल्यावहुज्ञानी ॥ सुनिमारुत सुरपतिपै जाई। सभासुधर्मा दीन्हे ल्याई ॥ सभापाय प्रभु आनँदपागे। यदुबंशिन सह बिहरनलागे ॥ फिरि प्रभुनीति रीतिके चारी। नियमित किये काजअधिकारी ॥ दोहा ॥ उग्रसेनको नृप करे

सत्यसन्ध भगवान । अनाधृष्टको करतभे सेनापति बलवान ॥ उद्धव कंक विकद्रुगद स्वफलकविपृथुताहि । चित्रकपृथु सात्यकिहि किय मंत्री बुधिबर चाहि ॥ अधिकारी वरयुद्धको किये सात्यकिहिजानि । सांदीपनको करतभे पुरोहित हितमानि ॥ दारुकको प्रभुकरतभे निजरथकेरोसूत । धीरबीर बुधिमान लखि संगर बिद मजबूत ॥ यहि बिधान कोबन्धरचि कृष्णचन्द्र सुखदानि । बिहरनलागेद्वारका मेंमुद मंगलखानि ॥ सोरठा ॥ रैवत नृपतहँ आय ल्यायरेवतीनिजसुता । बलरामहिंसुखदाय ब्याहिगये बन तपकरन ॥

इतिहरिबंशदर्पणेकालयमनमरणोद्वारावतीनिर्माणोनामाऽष्टादशोऽध्यायः

दोहा ॥ निर्मितकरि द्वारावती रमिसह अंधक वृष्ण । भूपति सो अबकहतहौं कियेचरित जोकृष्ण ॥ चौपाई ॥ प्रभुको बासद्वारकाजानी । जरासंध भूपति अभिमानी ॥ सबभूपन कहँ पास बोलाये । सबसोंकहि यह मंत्र दृढ़ाये ॥ रुक्मिणिको नृप सहित उछाहू । हैशिशुपालभूपसोंब्याहू ॥ तुमसब कोउतहँ जाइ सुखारी । रक्षन करहु बीरधनुधारी ॥ दन्तबक्रको सुवनमहीपा । नाम सुबक्र धीर कुलदीपा ॥ पांडुदेशकोभूपसुभेवा । बासुदेवके सुवन सुदेवा ॥ एकलब्य नृपको सुतबीरा । प डुदेशपतिको सुतधीरा ॥ बेणुदारि सुलबर्म्माराजा । अंशुमान अरुक्राथ सुराजा ॥ नृपति कलिंगदेशको जोसो । अरुगान्धार देशपतिहोसो ॥ काशीपति आदिक नृपजेते । गेशिशुपाल संग सजि तेते ॥ मुनिबैशम्पायनसोंयह सुनि । बूझे जनमेजय नृपहियगुनि ॥ बंशदेशकेहि मेंरुक्मिणिजू । भई प्रकटसोकहिये मुनिजू ॥ यदुसुत हैंक्रोष्टा माहि स्वामी । ताबंशजअपराजित नामी ॥ ता सुतहैं वृजनीब सुमानी । ताबंशज अपाराजित ज्ञानी ॥ ताके पांच सुवनहैं आनी । तीजो सुत ज्यामेघ सुदानी ॥ भोज्योमेघभूपकेबारा । ताकोनामबिदर्भ उदारा ॥ ताकेभये तीनिसुत मानो । लोमपाद

क्रथ कौशिक जानो ॥ दोहा ॥ लोमपादके बभ्रुसुत ताकेसुत अद्दात। तासुतकौशिक चेदिहै तासुतचैद्य बिख्यात॥ चौपाई ॥ क्रयसुत अंशुमान शुभ साजा। कौशिककेसुतभीष्मकराजा ॥ भीष्मककेसुत रुकुम बिख्याता। सुतारुक्मिणी श्रीजगमाता॥ बिन्धशैलकेदक्षिणदेशा। कीन्हे राज्य बिदर्भ नरेशा॥ तहँकुण्डिनपुरमेंनयचारी। हैंभीष्मक भूपति धनुधारी ॥ सुत यथातिके पुरकेबंशंज। हैंचैद्यो परिचर बसु अंशज ॥ ताकेसुवनवृहद्रथ गाये। जरासन्धता बंशजभाये॥ बंशज चैद्यो परिचरहीके। हे दमघोष भूपशुचिजीके॥ रही श्रुती श्रवा ताकी पतिनी। जो बसुदेव भूपकीभगिनी॥ तासों भये पांच सुत ताके। शिशुपालहि आदिक बरभाके॥ जरासन्धनृप आनँदसाने। शिशुपालहि निजसुत करिजाने॥ तेहि सम्बन्ध चावसों चोपे। अनरथमूल ब्याहआरोपे॥ लैसँग नृपन मोदसोंछाये। साजि सेन कुण्डिनपुरआये॥ रुक्म भूमिपति आगे चलिकै। ल्याये तिन्हैं मोदसोंभरिकै॥ सुनिशिशुपाल बंधुकोब्याहू। रामकृष्णकोमानिउछाहू॥ सहयदुबंशिनसाजि सुसेना। आये कौशिक पुर जगजेना॥ क्रथकौशिकचलिआगेलीन्हे। मुदित यथोचित पूजनकीन्हे॥ दोहा ॥ कौशिकपुर में बासकरि प्रभुसों निशाबिताय। प्रातकृत्यकरि सेनसह रथचढ़िचले सचाय ॥ ताहीक्षणरुक्मिणि गई रथचाढ़िसाखिनसमेत। इन्द्राणीकी मूर्तिको प्रियपूजनकेहेत ॥ गुरुतोमर ॥ तहँ रुक्मिणीकोदेखिकै। प्रभु हिये आनँद भेखिकै॥ करिमंत्र श्री बलरामसों। अतिही सु बुद्धि निधानसों॥ जबशचीजूको पूजिकै। बरबरणि अस्तुतिकूजिकै॥ लखि प्रभुहि हीरे नेहको। भरिचलनचाही गेहको॥ तब पाणिगहि बलबीर जू। शरधनुषधर रणधीरजू॥ रुक्मिणिहि रथपै आनिकै। बैठाय रमणी जानिकै॥ अतिचपलबाजी हांकिकै। कढ़िचले बीरन दांकिकै॥ बलराम दृक्ष

उपारिकै। परबर भटनकहँ मारिकै॥ सहयादवन रिसिभारिकै। थिर रहे तहँ धनुधारिकै॥ तब जरासंधहि आदिजे। नृपरहे हैं उनमादि जे॥ नैनृपति बरदल साजिकै। सब भिरे तिनसों गाजिकै॥ बढ़ि यादवो भटभावसों। भिरि लरनलागेचावसों॥ तहँ दुन्दुभी के भेरको। हय मैंगलन के टेरको॥ बरधनुषके टं-कारको। अरु भटनके हुंकारको॥ बहुमल्ल तोमर बान को। असिझिलिम टोप मिलानको॥ रवरह्यो पूरिदिशानमें। तेहि समयके घमसानमें॥ दोहा॥ रुक्मिमणि को हरिकंसहा निजरथ पै बैठाय। लयेजातहैं सुनि रुकुम महत रोषसों छाय॥ गहिकोदंड उदंड भट भुजदंडन तन देखि। किये प्रतिज्ञा प्रलयकर प्रबल प्रकर्ष बिशेखि॥ रोला॥ मारि कृष्णहि जो न ल्यावों रुक्मिणीको फेरि। तौ न आवों या नगरमें बचन ऐसोटेरि॥ चल्यो रथचढ़ि चावसों चितचाहि जययश पूर। सबल सत्वर साजिसेना सरस सौंवथ शूर॥ चले सँगलगि रुक्मके नृप अंशुमान सुधीर। बेणुदार महीप वरभट औश्रुतर्बावीर॥ बेगसो चलि सुभट ते बहुकोश बीथीजाय। नर्मदाकेतीर प्रभुसों भिरे चौरेच्याय॥ रुक्ममारेकृष्णकहँ तहँ चारु चौंसाठिबान। बाणस-त्तरिरुक्मके तन हने कृष्ण सुजान॥ रुक्मके ध्वज सूतको शिर बाणसों प्रभु काटि। तजे अगणित बाणधनुसों बिकट बीरन डाटि॥ अंशुमान महीपदश नृप श्रुतर्बाणो पांच। बेणुदारक सात प्रभुके हने तब नाराच॥ अंशुमान महीपके उर हनेप्रभु यकबान। गिर्यो ताते बिह्वलै सो बिदितबीर महान॥ श्रुति बाणतानि महीपके बर बाजि शरसों मारि। बेधि ताको हद-य रथपै दये ताको डारि॥ बेणुदार महीपको ध्वज काटिकै यदुनाहँ। मारि शीघ्रग बाणदीन्हें बेधि दक्षिणबाहँ॥ क्रोध करिये सुभट प्रभुपै झुके तबयकबार। मुदित ह्वै प्रभुकिये तब बहुभांति युद्ध बिहार॥ हस्त लाघव अनघ करि इमितजे

सरस बिधान। सुभटसिगरे भजेजाते बिकल ह्वैतजिसान॥
रुक्मनिज बलव्यर्थ लखिह्वै बिकलकरि अफ़सोस। हनेप्रभु
के हृदय मधिशर पांच करि अतिरोस॥ तीनिशर बर हनत
भो फिरि सारथीके देह। हनेप्रभु तब साठि शर तन रुक्मके
सहनेह॥ काटिदीन्हें रुक्मको फिरि धनुषशरसों साधि। रुक्म
नृपलै औरधनु तब इष्टदेव अराधि॥ दिव्यअस्त्र अनेकबाह-
त गयेजय अभिलाखि। काटिते सब बाणते प्रभु दये महिपै
नाखि॥ दोहा॥ काटि शस्त्रसब रुक्मके प्रभु काटे फिरि तासु।
रथकी ईषा चारु अरु धनुष बाणसों आसु॥ कटेचापरथ क्रोध
करि रथते उतरि उताल। खड्गचर्म लै चलतभो प्रभुपै सो क्षि-
तिपाल॥ चौपाई॥ तबप्रभु धनुधरकी बिधि ठाटे। शरसों खड्ग
मूठिढिग काटे॥ खड्गकाटि कछुरिसि हियधारे। तीनिबाण बर
उरमें मारे॥ ताते रुक्म मूरछित ह्वै कै। महिपै गिरो चावसब
ग्वैकै॥ रुक्मिणि भ्राताहि मुरछितज्वैकै। प्रभुके चरण परीदुख
ग्वैकै॥ अबमति याहि हनहु मुददानी। यह रुक्मिणि की आ-
रत बानी॥ सुनिकै कृष्णक्रोध परिहरिकै। गये द्वारका आनँद
भरिकै॥ कृष्णआदि यादवसमुदाई। भूपन जीतिनिशान ब-
जाई॥ सेना सहित द्वारका आये। मिलिके सबसों आनँद पा-
ये॥ उतै श्रुतर्वा नृप धनुधारी। रुक्म भूपकहँ रथपै डारी॥
कुण्डिनपुरप्रति चलो दुखारी। चेति रुक्मतब स्वपन बिचारी॥
हीनप्रतिज्ञा भे हे ताते। गये न कुण्डिननगरहि याते॥ कुण्डि-
न पुरके दक्षिण आशा। कीन्हेंपत्तन बिरचि बिलाशा॥ नाम
भोजकटपुरभो सोई। तामेंबसे रुक्म सुखभोई॥ कुण्डिनपुरमें
भीष्मक राजा। रहे पूर्बवत सहित समाजा॥ उतै कृष्ण बिधि-
वत मुद लीन्हें। पाणिग्रहण रुक्मिणिको कीन्हें॥ निज अनु-
रूप प्रियाबर पाई। बहुदिन रमि सप्रेम सुखदाई॥ दोहा॥
उत्पतिकीन्हें दशसुवन प्रबल प्रद्युम्नउदार। चारुदेष्णसुदेष्ण

सुत सुतसुषेण सुकुमार ॥ चारुगुप्त सुत चारु अरु चारुबाहु रणधीर । चारु बिन्द अरु चारु कहि भद्रचारु परबीर ॥ चौपाई ॥ कन्या चारुमतीशुभ थारी । प्रकटी रुक्मिणिसों शुभचारी॥महिषी सात और प्रभुकीन्हें । तिनके नाम सुनहु मुद लीन्हें ॥ कालिन्दी कमनीया सोई । सुता सूर्य्यकी यमुना जोई ॥ मित्रबिंदा सुखदाइनि सनया । सोआवंत्य भूपकी तनया ॥ भूप नग्नजित अवध अधीशा । सत्या तासु सुता नयदीशा ॥ जाम्बवान की सुता सयानी । जाम्बवती सुखदायनि मानी ॥ कैकेपतिकी सुता सुखामी । भद्रा द्वुतिय रोहिणी नामी ॥ भद्रराज की सुता ललामा । नाम सुशीला अति अभिरामा ॥ सत्राजितकी सुता दुलारी । सत्यभामा अति पतिहि पियारी ॥ सैव्यराज की तनया ज्ञानी । नाम लक्ष्मणा नवईं रानी ॥ सोरह सहस और शुभनारी । लहि प्रभु कीन्हें अतिशय प्यारी ॥ प्रकटे सुवन हजारन तिनके । धीर बीर दाता गिनती के ॥ तिनहिं सहित प्रभु आनँद द्वारे । द्वारावति में मुदित बिहारे ॥ रुक्म नृपति की शुभद कुमारी । नाम सुभागी सुखमाभारी ॥ रुक्म भूमिपति आनँद लीन्हें । तासुस्वयम्बर रोपित कीन्हें ॥ देश देशके भूप बुलाये । तहँ प्रद्युम्न गे आनँदछाये ॥ तहां स्वयंबर सभा सदनमें । बैठे नृप सब मोहित मनमें ॥ दोहा ॥ रुक्म भूमिपति की सुता आइ स्वयम्बर गेह । निरखि प्रद्युम्नहि सो तहां बरत भई सहनेह ॥ बिधिवत पाणि ग्रहण करि सतिय प्रद्युम्न सुभेश । आये द्वारावति गये निज निज पुरन नरेश ॥ महिखरी ॥ कछुद्योस रमिते सरुचि दम्पति सुभग सुत उत्पति किये । अभिराम ताकोधाम लखि अनिरुद्धपद ताको दिये ॥ क्रमसों सुबर्द्धित ह्वै बिशदगुण सर्ब शास्त्र सबिधि सिखे । अरु धनुष वेद बिधान सों शुभमंत्र सह सानँद सिखे ॥ तेहि लखि अनूपम अरु अपूरब अति अलौकिक गुणभरे । शुचि साव-

धान सराहिवेके योग सुखमालय खरे ॥ हीरुक्मके सुतकीसु-
ता त्यहि योग सुन्दरबर गुणी। लिखि रुक्मनृपको बिहितपाती
कियो सम्मत रुक्मिणी ॥ तब साजिबेश बरात बर प्रभुभोज-
कटपुर प्रतिगये। बलरामरुक्मिणिसहित यादवयूथ मन आ-
नँद भये ॥ तहँ रुक्म नरपति कर उचित ब्यवहार लहि शुभ
दिन सुखी। दीन्हें सबिधि अनिरुद्धकहँ शुभसुतासुतकी शशि
मुखी ॥ अति भयो उत्सव दुहूंदिशिसों सरस आनँदसों भयो।
लहिदानअरुसन्मानयाचक गणनकोदारिदगयो ॥ तहँएकदिन
सब नृपतिगण ह्वै एकमति मतकरिगये। नरपति रुकुमके पास
तहँयहिभांतिसों भाषतभये ॥ नृपअक्षखेल बिधानमें तुममहत
चातुरहौकहे। अरुहमसबैजन अक्षखेलन में परमपटुहैंअहे ॥
बलरामकहँ हैं अक्षप्रिय परखेल नहिं जानहिंसुनो। हमसबहि
मिलकर जीतिहैं यहबातमनमें तुमगुनो ॥ इतबोलिताते उन्ह-
हिं उनसों दाम लीजै दावसों। कटु बचन व्यंग प्रसिद्ध कहि
कहि कूटकीजै चावसों ॥ सुनि मोदि रुक्म नरेश मिसिसों बो-
लिबलरामहि लिये। करिबार्ता कछुचातुरी सों अक्षखेलनतहँ
गये ॥ बदिदांवधरिधरि द्रब्यदुहुंदिशि घनेघातनिखेलिकै। नृप
रुक्म जीते बलहि पांसा कितब ताके झेलिकै ॥ तब रामअम-
रष करि दये धरि कोटि मुद्रा कनकके। सोउजीति लीन्हें रुक्म
पांसा डारिकै बर बरणके ॥ सो जीति रुक्म बिदर्भपति हिय
गर्भ अतिशय गहतभे। गहिगर्ब हँसिहँसि नृपनसों कटुबचन
यहिबिधि कहतभे ॥ दोहा ॥ अबल अबुधि अति अपटुये अरु
अबिद्य असमर्थ। इत आये हैं द्यूतमिसिद्रब्य देनके अर्थ ॥
यह सुनिकै कालिंगपति बिहँसिहँस्यो करि शोर। चारु दशन
दरशायकै लखिहलधरकीवोर ॥ चौपाई ॥ सुनि हलधर अति
मनमें माखे। कहे न कछूरोकि रिसिराखे ॥ कोटिसहसदशमुद्रा
मांगे। बोलि दांवपै खेलन लागे ॥ रुक्मनरेश जीति ललचा-

ने। अक्षपात कीन्हें मुदसाने ॥ पर्‍यो रामको जयकेपासा। बोले रुक्म तऊकटु भासा ॥ यह मम दांव जीति यह मेरी। कहिझूठे झगरे झगरेरी ॥ भई इतेमें तहँ नभ बानी। जीतेहलधरआनँददानी ॥ सुनि नभगिरा रामअतिकोपे। नृपमण्डलमेंप्रलयारोपे ॥ मोहरभरी मंजुल थैली। धरी रही आनंद अमेली॥तिनमें ते लै एक रिसारे। रुक्म भूप के उरमें मारे ॥ ताके लगे रुक्म नृप मरिकै। शोभित भये पुहुमिपै परिकै ॥ दांत निकासिहँसोहो जोई। नृप कलिंगपति आनँद भोई ॥ सगरब तेहि अमरष सों पूरे। लातमारि ताके रद तूरे ॥ सिंह समानसक्रुद्ध गरजिकै। द्विरद सदृश नृप भटन तरजिकै ॥ कृष्णचन्द्रपैसानँद जाई। कहे सकल वृत्तान्त बुझाई ॥ सो सुनि कृष्णचन्द्र नहिं बोले। निज अन्तर्गत कछूनखोले ॥ बन्धुमरण सुनि रुक्मिणि रानी। करि रोदन अतिशय बिलखानी ॥ दोहा ॥ दैवी गति कहि रुक्मिणिहि केशव प्रभु समुझाइ। सहित यादवन द्वारका आवत भे सुखदाइ ॥ बर्‍णयो या अध्यायमें प्रभुरुक्मिणि कोब्याह। उत्पतिब्याह प्रद्युम्नको बर्णन कियेसचाह ॥ कह्यो जन्मअनिरुद्धको अरु बिबाहउत्साह। अक्षखेलि जिमि रामसों मरेरुक्म नरनाह ॥

इतिहरिबंशदर्पणेरुक्मिणीस्वयंबरोनामऊनबिंशोऽध्यायः १९ ॥

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ कहे स्वयम्बररुक्मिणी तुमबर बर्णि सहेत। सो सुनिहों आनँद लह्यो सुनिये ज्ञाननिकेत ॥ चौपाई ॥ अब कहिये मुनिबर तपरासू। श्री हलधरको चरितबिलासू ॥ जन्मेजय नृपकी बाणी सुनि। बोले बैशम्पायन मुनिगुनि ॥ अनघ अनन्त अमोघ सुज्ञाता। शेष धराधर जो बिख्याता ॥ हैं बलराम हलायुधसोई। जानै ज्ञानमान सबकोई ॥ अयुतनाग के बलसों भारो। जरासन्धहो पूरबवारो ॥ बाहुयुद्ध करिजीते तासों। भूषितभये भूरि भरि भासों ॥ दुर्योधनकी सुतासोहाई।

हरिलै चले साम्बतेहि जाई ॥ लखि दुर्योधन नृप रिस भारे। गहि तेहि कारागृहमें डारे ॥ जाम्बवतीके सुवन दुलारे। सांब कृष्ण कहँ परम पियारे ॥ सुनि तहँ जायराम रिस पागे । साम्बहि दुर्योधनसों मांगे ॥ दिये न दुर्योधन मद माते। तबबलराम अधिक रिस राते ॥ पुर परिखाको बिप्र सुहावन । तामें लाय हलाग्र सो भावन ॥ ब्रह्ममन्त्रसों बिधिवत सींचे । ईंचि ताहि पुर उलटन ईंचे ॥ पुर उलटत लखि नृप दुर्योधन । बर कन्या दै कीन्हें बोधन ॥ सतियसांब कहँ लै सुखछाये। नतउन्नतपुर तजिघरआये ॥ दोहा ॥ धेनुक और प्रलम्ब अरुमुष्टिक आदिक बीर। को बधिबो कहिकहे जो यमुना कर्ष्यो धीर॥सुनि मुनि के ये बचन बर जन्मेजय क्षितिपाल। फिरिबूझे मुनिराज सों पूरितप्रेमबिशाल ॥ जयकरी ॥ रुक्म भूपकेबधके अन्त। आइ द्वारका कृष्णअनन्त ॥ गुणनिधि कीन्हें कहाबिलाश। सोकहिये मुनि ज्ञान प्रकाश ॥ नृप जन्मेजयके येबयन। सुनि बोले मुनिआनँद अयन॥रह्यो प्राग्ज्योतिषपुर ग्राम। तहँबसिनर्कासुरबल धाम॥ प्रबलप्रमत्त भरोउन्माद। करै सुरनसों हठि अनबाद॥ सुरगन्धर्बन की सुकुमारि। लखि चतुर्दशी तनयाबारि॥सोलह सहस एकशत जानि। किहेसि एकते हरि हरि आनि ॥ महिसागर ते हरिगहि नेम। हर्षित जोरेसि हीरा हेम॥ सुवन भूमि कोअति बलवान। नर्कासुर अघ ओघअमान ॥ प्राग्ज्योतिष पुरपति निरदुन्द। सब असुरनको अधिप अमन्द ॥ रत्ननिको पुर ढिग बरफैल। रचेसि चारु अति सुन्दर शैल ॥ पुरमें रक्खा चारिउ द्वार। द्वारे चारिचारिरखवार ॥ हयग्रीव यूथप सरदार। पालत होसो पहिलोद्वार ॥ निसुन्दवती द्वार निसुन्द। तीजीपौंरि पंचजनतुन्द ॥ चौथी पौंरिरहै अमनैत। सुवन सहस्र सहित सुरदैत॥ दोहा॥ नर्कासुर असुराधिपति निज भुजबल के जोर। हरेसि सुकुण्डल अदितिके पारिस्वर्ग में

शोर ॥ ऐरावत चढ़िइन्द्र तब आये प्रभुकेपास । चिन्तचित्तमें
चाहिकै नर्कासुरको नास ॥चौपाई॥ रामकृष्ण आदिक यदुबंशी ।
हे बैठेजहँ कृष्ण प्रशंशी ॥ तहँ सहसा ताहि आवत देखी ।
उठि मोदित ले सरुचि सुभेखी ॥ अर्घ पाद्यदै मोदित कीन्हें ।
यथा उचितशुचि आसन दीन्हें ॥ आसनस्थ सहस्राक्ष स्वहा-
ये । सानँद प्रभुसों बचन सुनाये ॥ जो हित हेति इहांहमआये ।
सो प्रिय बन्धु सुनहु मनभाये ॥ महि सुतनर्कासुर बलभारी ।
है अतिपाप कर्म्म अधिकारी ॥ तपबिधिसो बरपाइ अयानो ।
है अबध्य सुरगण सो जानो ॥ सुर गन्धर्ब यक्ष अप्सरगण ।
अहनिशि देइ तिन्हैं दुखगहि पण ॥ हरेसि अदितिके कुण्डल
सोई । कुटिल कलंकी कुमती सोई ॥ सुनि मन बचन मोद सों
पागी । करहुतासु बध सुरहित लागी ॥ खगपति इत आयेमम
गोहन । करहुशीघ्र तापै आरोहन ॥ चक्रपाणिचातुर जगनेता ।
बधहु ताहि नैऋत कुलजेता ॥ दश शताक्षकी बाणी सुनिकै ।
कृपासिंधु प्रभुमन में गुनिकै ॥ सत्यभामा सह आनँद दाता ।
चढ़ि खगेश पै त्रिभुवन त्राता ॥ साथहि चले शक्रके मानद ।
गहिनिज आयुध पूरित आनद ॥ इन्द्र उपेन्द्र धनुष शरधारी ।
ऊरध चले गगनपथचारी ॥ दोहा ॥ आवह प्रबहिहि आदि दे
वायुमार्ग जेसात । क्रमसों तिनपै चलिभये इन्द्र उपेन्द्र बिभात ॥
महिसो यदुबंशी तिन्हैं लखे ऊर्द्धकरि गौर । गजपति खगपति
सहित शुचिरबि शशिसमयकठौर ॥ अप्सर अरु गन्धर्बसोंतहँ
अस्तुति सुनिधीर । शक्रगयेनिजलोक प्रभुप्राग्ज्योतिषपुरबीर ॥
चौपाई ॥ करि अति बेग बिहँगके स्वामी । क्षणमें तहँपहुंचेतभ
गामी ॥ दूरिहिसो प्रभुद्वारे देखे । षटसहस्रभट आयुधभेखे ॥
भट गजस्थ बाजिस्थ सयाने । अरु रथस्थपैदर उमदाने ॥ ति-
न्हहिं लखि प्रभु आनँदसाने । धनुटंकार किये मनमाने ॥ तब
लखिप्रभुहि दैत्य सुनि ज्ञानी । जानेसिबिष्णुबेष अनुमानी ॥

गहिकर शक्ति क्रोध सों छायो। सेना सह उठि सन्मुख धायो॥
दीरघ शक्ति हेम सो भूषित। सो प्रभुपै छांड़ेसिमति दूषित॥
तेहि आवत लखि कृष्ण अखेदे। शर क्षुरप्र सों बीचहिं भेदे॥
तब मुरदैत्य क्रोध अति धारेसि। गहिगुरुगदा दूरसो मारेसि॥
प्रभुलखि बाणगदामधि मारे। काटि बीचसों महिपैडारे॥ करि
अतिक्रोध दानवन डाटे। मुरको शीश शूलसों काटे॥ मुरको
मारि धनुष शर धारे। ताके सँग के सुभटसँहारे॥ तिन्हहिं मारि
प्रभु महिपै डारे। नांघे प्रथमप्रकार सुखारे॥ दुतियपौरिके तहँ
रखवारे। भिरे आइते अतिरिस भारे॥ असुर पंचजनबर
बलवाना। दैत्यन शुण्ड उदण्ड अमाना॥ हयग्रीव दितिसुत
बलभारी। भिरे आय तहँ सब धनुधारी॥ दोहा॥ सेन सहित
ते असुर तहँ कीन्हें युद्ध महान। बिदित बीरबानैतवर प्रबल
प्रकर्ष अमान॥ रथचढ़िबीर निसुन्दतहँ प्रभुके सन्मुखआय।
मारतभो दशबाणबर महत क्रोधसों छाय॥ जयकरी॥ निजशर
सों प्रभु ताशरकाटि। मारेताहि सातशरडाटि॥ सो सुभटन
सहबाणचलाय। दीन्हेसि शरको जाल बनाय॥ तबश्रीकृष्ण-
चन्द्र जय ईछि। उग्रप्रजन्य मंत्रसोंशीछि॥ बाणसबै सुभटन
केबारि। पांच पांचशर तिनको मारि॥ दीन्हेंमारिभूमि परडा-
रि। तब निसुन्द अतिरिस बिस्तारि॥ मारि बाणबर भुजके
जोर। शरपंजर कीन्हेसि चहुंओर॥ तबसाबित्र शस्त्रतजि
चारि। शरपंजर प्रभुदये बिदारि॥ तबशरसो रथधनुध्वजभे-
दि। अरुहय शीश सूतकोछेदि॥ भटनिसुन्दपै भल्लचलाय।
कीन्हेंतासुशीश बिनुकाय॥ सत्वर दीरघ शिलाउठाय। मारे-
सिप्रभुपैसबलचलाय॥ लखि श्रीकृष्ण बाणबरवाहि। बीचहि
दयेचूर्णकरिताहि॥ प्रभु चलाय बरबाणअलेष। राक्षस सेना
कीन्हे शेष॥ हयग्रीवतब अतिरिस धारि। लीन्हेंसि दीरघवृ-
क्षउखारि॥ होदशब्यामजासुबिस्तार। सोप्रभुपैडारेसिदृढ़सा-

र ॥ प्रभुतजि शीघ्रगबाणहजार । काटिकियेतेहितिलकेतार ॥ दोहा ॥ फिरि गरुड़ध्वज कृष्ण प्रभुमारि एकबरबाण । हयग्रीव बरबीरको कीन्हें तनबिनु प्राण ॥ पंचजनहि आदिक सुभट आठलाखबरबीर । मारितहां श्रीकृष्णप्रभु शोभितभे रणधीर॥ चौपाई ॥ प्राग्ज्योतिषपुर ध्वंसन करिकै । श्री श्रीकृष्णचन्द्र मुद भरिकै ॥ मध्य कछूमेंहो छबिछायो । नाम पंचनद बिशदबनायो ॥ नरकासुर असुराधिपताको । मंजुमहतपुर पुयघरभाको॥ ताके पासगये छबि छावत । पांचजन्य शुभशंख बजावत ॥ धुनिसुनि तनधनके मदमातो । ह्वै नरकासुर अति रिसरातो॥ लोहहेम रत्ननिमय भारी । पूरित शस्त्र सहस हयधारी ॥ रथ बिशालपै चढ़ि धनुधारी । प्रभुके सन्मुख चलो सुखारी ॥ बिबिध भांतिके आयुध धारे । सुभट असंख्य बीजबलभारे ॥ चले संग बलकत गर्बीले । हयगजरथ चढ़िबने छबीले ॥ बीर पदाती धीर नुकीले । चले चावसों छकि छरकीले ॥ घननादोपम बाद्य बजावत । घने समान निशान घुमावत ॥ गोससेन तहँ जहँहैं स्वामी । शारँगधर नागांतक गामी ॥ सैनिकसुभट सहित मुदपाग्यो । अस्त्र अनगिने मारनलाग्यो ॥ शक्तिशूल शरपाश सोहाये । भिन्दिपाल बरगदा बनाये ॥ तोमर भल्ल आदिहैं जेते । शस्त्रचलाये तेतहँ तेते ॥ शीक्षित सुभट सुगौरव लीन्हें । नभमहि पूरि शरनसों दीन्हें ॥ दोहा ॥ कृष्णाम्बुद रुचि कृष्णप्रभु गहि कोदण्ड बिशाल । तजे अनन्त अमोघ इषु कौणपकुलके काल ॥ अस्त्रजाल रांक्षसनके निज बाणनसों भेदि । शिरभुज कटि पगभूमिपै डारे तिनके छेदि ॥ गुरुतोमर ॥ शिरकटे कितने डोलहीं । धरु मारु कितने बोलहीं ॥ भुजकटी जिनकी दाहिनी । ते बामकरअँग पाहिनी ॥ लैखरे अनुपम भावसों । हे कितेभट शरघावसों ॥ भटजिते निशिचरराजके । हैं दैत्य दापदराजके ॥ ते लगे प्रभुके बाणके । सबगिरे ह्वै बिनु

प्राणके ॥ गजबाजिरथ धनुबानसों । प्रभु दयेकाटिविधानसों ॥ परसेनमें जेते रहे । नहिं एकबिनु भेदे रहे ॥ यह दशालखि निजसैनकी । अतिदुसह बिपदाऐनकी ॥ असुराधिपति जय चोपसों । कोदण्डगहि अतिकोप सों ॥ बरदिव्य अस्त्र बनाव सों । भोतजत प्रभुपै चावसों ॥ सो अस्त्रचक्रचलायकै । प्रभु दये काटि बचायकै ॥ फिरि तासु ध्वज हय सूतको । धनु कवच रथ मजबूत को ॥ प्रभु मारि बाण बिबेकसों । करिबहुत दीन्हें एकसों ॥ कै बिरथ बिधनु सुबीर सों । बर तजेसि शूल सुधीर सों ॥ सोउ बाणसों प्रभु काटिकै । असुराधिपति को डाटिकै ॥ तेहि युद्ध बिधि इमि शीछिकै । भे मुदित निजजय ईछिकै ॥ दोहा ॥ उग्रप्रभाव उदग्र रुचिचक्र अमोघ चलाय । नरकासुर को बधकिये कृष्णचन्द्र यदुराय ॥ नरकासुर निजसुवनको मरणदेखि दुखपाय । कहतभई श्रीकृष्ण सों भूदेवी तहँ आय ॥ नाथ याहि तुमदीन्हेंउ मोही । तुममार्यो यहि अवगुणजोही ॥ हौ तुम स्वेच्छाचारी साईं । क्रीड़ाकरहु बालकीनाईं ॥ अदिति देविके कुण्डल जोई । नरकासुर ल्यायो रिस भोई ॥ सो यह मोहिं दये हो ल्याई । लीजै यह प्रभु रोष बिहाई ॥ राज्यरत्न धन हय गजनारी । लेहुतासु लीला बिस्तारी ॥ इमिकहि पृथिवी कुण्डल दैकै । गई प्रभुहि लखि आनँद लैकै ॥ तब प्रभु अति सुषमा सों भेखे । मोदित जाय कोशगृह देखे ॥ मरकत मणि आदिक मणिजेते । लखे असंख्य तहांप्रभु तेते ॥ मुक्ता अरु प्रबाल छबि छाये । चन्द्रकांत के ढेर लगाये ॥ जातरूप कलधौत सोहाये । लखे अतौलन जातबताये ॥ हो नरकासुर के घरजेतो । धनन धनाधिपके घरतेतो ॥ कोशसदनके रक्षक भाये । पृथक्पृथक् सब प्रभुहिलखाये ॥ तिनमें जितनीसुषमा छायो । कृष्णचन्द्रके मनमेंभायो ॥ राक्षसगणके शीशचढाई । दीन्हें सो निजपुर पहुँचाई ॥ फिरिकरि पक्षिराजको आदर ।

चढ़िगे मणि पर्वत पै सादर ॥ बैठे पक्षिराजपै सानद । लखत भये तहँ केशव मानद ॥ दोहा ॥ मध्य शैलमें कन्दरा बनी बिशद रमणीय । रतनमयो आलयतहां चित्रितअतिकमनीय ॥ सुर गन्धर्बनकी सुता तहँदेखे अभिराम । सोलहसहससुएकशत कंचनकीसी दाम ॥ चौपाई ॥ ते सब नरकासुरकी आनी । ब्रती कुमारी तेजस सानी ॥ तेसब प्रभुहि पेखि प्रभु चीन्हीं । अतिमोदित शुभ अंजलि दीन्हीं ॥ अंजलि नाथ कृपालु निहारी । कृपा कटाक्षहि सों असुरारी ॥ सुन्दर दिनमणि सुरुचि सुदिनके । पाणिग्रहण कीन्हेंप्रभु तिनके ॥ दै अंजलि तेसरस सयानी । कहतभईं प्रभुसोंबरबानी ॥ नाथएकदिन मारुत आई । गेहैं ऐसो बचन सुनाई ॥ सोई बचन महत मुनि नारद । कहिगे हे बर बिदित बिशारद ॥ शंखचक्रधर खगपतिगामी । गदाधनुषगाहि अन्तर्यामी ॥ ससथन नरकासुरको मरिहैं । तुमहिं प्रिया करि मोदित करिहैं ॥ नाथ आजु तुम सोई कीन्हें । ह्वै प्रसन्न निज दर्शन दीन्हें ॥ यह सुनि कृष्ण प्रेम अति गहिकै । उचित बचन प्रिय तिनसों कहिकै ॥ रहे बृद्ध राक्षस तहँ रक्षक । तिनको दै आज्ञाप्रभु दक्षक ॥ शिविका यान सबाह मँगाये । सादर तिन पै तिनहिं चढ़ाये ॥ सँगकरि सुभट समूह सोहाये । बेगि द्वारका तिन्हैं पठाये ॥ तेहिगिरिको जो शृंग सोहावन । मणिमय अर्चित हो मनभावन ॥ तापै जे अस्थावर जंगम । हैं कीन्हें अति अनुपम संगम ॥ दोहा ॥ पक्षिराजते उतरिप्रभु तिन्हहिं सहित सोशैल । गहि उखारि धरि गरुड़पै गहे स्वर्ग की गैल ॥ प्रभु आज्ञा लहि बिहँगपति मेरो परिक्रै जाय । शक्र शचीके द्वारपै उतरत भये सचाय ॥ चौपाई ॥ उतरि गरुड़ से प्रभु सत्यभामा । गे जहँ शक्र शची अभिरामा ॥ यथायोग्य जेहैं जस जिनसों । बन्दि मिले तहँते तिमि तिनसों ॥ कुशल प्रश्न कहि सुनि मुद लीन्हें । प्रभु सो कुण्डल शक्रहि दीन्हें ॥

लैकुण्डल सह शची सुखारे। सतिय कृष्ण सह इन्द्रपधारे॥ गये अदितिके सदन अनंदे। दै युग कुण्डल शुचि पगबंदे॥ इन्द्र उपेन्द्र शची सत्यभामहि। दिव महिपालन कर अभिरामहि॥ आशिष दीन्हीं अदिति सुमाता। सुनि प्रमुदित भेदोऊ भ्राता॥ समाचार तब इन्द्र सुनाये। जेहि बिधि केशवकुण्डल ल्याये॥ सतिय अदिति सों शासन लहिकै। श्री श्रीकृष्णचन्द्र मुद गहिकै॥ सादर बिदा शक्र सों ह्वैकै। चढ़ि खगपतिपै नन्दन ज्वैकै॥ पारिजात तरु सरस सोहायो। पुष्पित तहँ प्रभुके मन भायो॥ गहि उपारि तेहि लीन्हें चावन। चले गरुड़ पै धरि मनभावन॥ सो सुनि शक्र रोकि रिस राखे। बूझि प्रभाव कछू नहिंभाखे॥ सुर मुनि गणसों अस्तुतिभाये। सुनि श्रीकृष्ण द्वारका आये॥ वृष्णि आदि सब यादव गनसों। मिले यथोचित गुरु लघुजन सों॥ सह परिवार मोदसों पागे। बहुरि पूर्बवत बिहरनलागे॥ दोहा॥ बरणे यहिअध्याय में हलधर केर प्रभाव। अरु द्वारावतिपुरी में शक्रागमन सचाव॥ नरकासुर को बध बहुरि सहसइन्य परिवार। तिय समूहको लाभ फिरि बरणे सहबिस्तार॥ स्वर्ग गमन फिरि कृष्ण को शक्र अदिति सम्भास। बहुरि आइकै द्वारका बरणेबिशद बिलास॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेनरकासुरबधोनामविंशतितमोऽध्यायः २०॥

जन्मेजयउवाच॥ दोहा॥ कृष्णचन्द्र के चरित सुनि मोमन तृप्ति लहैन। ताते कहिये और अब चरित सुमुनि तप ऐन॥चौपाई॥ सुनि नृप बचन कहे सुनि आरज। किये कृष्ण प्रभु फिरि जे कारज॥ एक दिवस प्रभु अन्तर्यामी। सहित रुक्मिणी त्रिभुवन स्वामी॥ रैवतगिरि पै जाय सुखारे। रुक्मिणिको सम्मत अनुसारे॥ उत्सव कीन्हे निज अनुरूपा। आनँद अयनअपूर्ब अनूपा॥ तहांबासगृह बिशद रचाये। संपूरणपरिवार बुलाये॥ द्विज समूहको अर्च्चन कीन्हे। करि सन्मान दान बहुदीन्हे॥

बन्दीजन अरु अर्थी जेते । प्रभुसों लहे दान तहँ तेते ॥ बन्धु वर्गकेकरि रुचिरोचित । बेस बासबसु दिये यथोचित ॥ बहु-बिधि तहँ उत्सवकरि मोदे । सह कलत्र करिबास बिनोदे ॥ रु-क्मिणिके घरमें तहँ सानद । बैठे रहे कृष्ण प्रभु मानद ॥ तेथर मुनिवर नारद आये । पूजि यथोचित प्रभु बैठाये ॥ पारिजात को पुष्प सोहावन । दिये कृष्ण कहँ मुनि मनभावन ॥ कृष्ण अपूर्व पुष्पसो चीन्हे । प्रेमसहित रुक्मिणि कहँदीन्हे ॥ रुक्मि-णि पति इच्छा अनुसारी । भामिनि भावन भाव बिचारी ॥ रा-खत भई शीशपै ताको । ताते लहीदुगुण बरभाको ॥ तब नारद रुक्मिणिसों बोले । पारिजातकी महिमा खोले ॥ दोहा ॥ देवि तुम्हारे योगयह पारिजातकोफूल । ईप्छितसौरभकोसदा देन-हार अनुकूल ॥ शीत उष्ण मन मानको देनहार सुखदानि । बांछित रसको श्रवतयह मनकी बांछा जानि ॥ क्षुधा पिपासा जराको है यह बरजनहार । सम्बतसर पर्य्यन्तयह ईप्छितदे-त बिहार ॥ चौपाई ॥ राति दीपसम सुभग उजेरी । रहित पुष्पके चहुंदिशि घेरी ॥ अदिति उमा अरुशचीसोहाई । इन्हहिं आ-दि सुर तिय सुखदाई ॥ पुष्प एक प्रति सम्बतधारै । लहि सो-हाग पतिसंग बिहारै ॥ सो यहफूल कृष्ण के करसों । लहेहु देवितुम अति आदरसों ॥ सांच बचन मानहु मनमाहीं । तिय न तुम्हहिं समकोउ जगमाहीं ॥ सत्यभामा आदिक जे रानी । निज सुषमाकोहै अतिमानी ॥ तिनमें सत्यभामा बरमानी । निज सोहागकी सगरब जानी ॥ तुव सोहाग लखि सबै सिहै हैं । सत्यभामा लहिहारि लजै हैं ॥ निज सोहागकी ईहा तजि तजि । लहिहैं अबसब तियगुणि लाजिलजि ॥ नारदमुनि हिय कछु अभिलाषे । यह सुबचन रुक्मिणिसों भाषे ॥ आपुहि पतिहि एकतिय जानों । और तियनकहँ न्यारीमानों ॥ सो सुनि सखी सकल मानिनकी । सत्यभामा आदिक रानिनकी ॥ कहीं जाय

निज निज स्वामिनिसों । गजगामिनि भामिनि कामिनि सों ॥ सो वृत्तान्त सबैतिय सुनि सुनि । चिन्तित भई चित्तमें गुनि गुनि ॥ सखियनसों सुनि सो सत्यभामा । रूपप्रेमगुण गर्बित बामा ॥ मान अमान मान करि मानिनि । ठौनि अटान ठानकी ठानिनि ॥ दोहा ॥ भूषणबसन जुअँग सरिस तेहि कै सरिसउतारि । प्रविशी कोप निकेतमें बसनश्वेत शुचिधारि ॥ तनुअंशुक शुचिश्वेत सों बेष्टिभाल शुभदेश । लेपि अरुण चन्दन कियो गोपित बन्दनभेश ॥ चौपाई ॥ ऊबि उसांस लेतिरिसराती । त्योरितरेरिभांति अवदाती ॥ सुमिरि सुमिरि शिरकंपन करि करि । जलपति गिरा रोषसों भरि भरि ॥ धरि करतल पै चारु कपोलै । तकिअनिमेष क्षणक नहिं बोलै ॥ सुपाति सेज पै उठि फिरि सोवै । अति उदबेग दशासंभोवै ॥ श्वासनिभुरैकमल संपूरण । तजति नखनसों करिकरि चूरण ॥ चरणअँगूठा सो महिलेखति । समुझि समुझि अमरष ते तेखति ॥ उतै कृष्ण प्रभु अंतर्यामी । यह वृत्तान्त जानि महि स्वामी ॥ रुक्मिणिके गृह सों उठि आतुर । पठै प्रद्युम्नहि मुनि ढिग चातुर ॥ चिन्तित शंकितसे मनभाये । सत्यभामाके आलयआये ॥ दूरहिते सत्राजितजाके । लखिअनुभाव भावबरभाके ॥ चपेचरण चलिआनँद साने । अलिके ओटजाइ नगिचाने ॥ जबवहडारि बदनपै अंचल । रही सोय तब चातुर चंचल ॥ जाइ पिछौं हे बीजन लीन्हें । नयनसैन सखियनकहँ कीन्हें ॥ हौंजैसे तैसेही रहहू । मम आगम को भेद न कहहू ॥ इमिकहि कौतुक के रँग पागे । बीजनमंद डोलावन लागे ॥ उत जो पारिजातकोपावन । हैं लीन्हें करकुसुम सुहावन ॥ तेहि प्रभाव शुभ सौरभ नीको । बगर्‌यो घरमें मोदद जीको ॥ दोहा ॥ तेहि अपूर्ब सौरभसुखद कोलहि घ्राण सुजानि । सत्यभामा ह्वै चकित उठि बैठीअचरजमानि ॥ यहसौरभ केहिपुष्पको परतनहींपहिचानि । आवत

कितसों सखिनसों कहतभई अनुमानि ॥रोला॥ सखी गण सुनि कृष्ण के भय सकीं नहिं कछुभाखि। शंकिसत्यहि भई प्रणमिल शीश महिपै राखि ॥ ताहि परिमल को प्रभाव तहँ चहूंदिशि चखफेरि। लगी हेरन सत्यभामा परेप्रभु तबहेरि ॥ लखतही चख कमलते कढ़िचले अलिजल बून्द। पेखिजेहि श्रीकृष्ण के मन कियो मनमथ दून्द ॥ गौरसों करि त्योर तिरछे डौरसों सतुराय। फेरि मुखधरिपाणितलपै लही शीश नवाय ॥ लजतही तिय नयन ते ज्यों बारिआति अनखाय। पाणि पुटमें ताहि लैप्रभुलये उरमेंलाय ॥ बारि हियसों लायके निज प्रेमबरदरशाय। कहे बचन बिनीत बिधिवत गहेपटुताभाय ॥ प्राणप्यारी हेत कहि चख कोकनदते बारि। तजतिहौ ममखेददायक शोच चित संचारि ॥ सुरँग बसनउतारि कतधरि श्वेतसारी बेश। देव पूजन बिना बैठिहु धारि अनुचित भेश ॥ भूरिभूषण रत्नकेकत धरे दूरिउतारि। सुखद सिगरे सौज हठिकत दिहेहु ढिगसों टारि ॥ मान दिन लहि आभरणसुनुछत्र बिनमृगनयनि। बदन शशिन बिभात अति सति मान है पिक बयनि॥ पूर्बवत लखि सरसकत नहिं देतिहौ म्वहिं मोद। भूलिसीकत गई हौ तिय आजुसकल बिनोद ॥ जानि किंकर आपनोमोहिं करहुसूधे नैन। मंजुमम मन मथनमन्मथ बाणसे जगजैन ॥ कृष्ण के कृश बचन सुनि कृशतनी करि कृशमान। कृती ह्वैकृत कृत्यकरि कृतकृत्य को अनुमान ॥ कोपि कृत्रिम शोचिकृपिणी नेहकी कथनीय। कृपाकी करि क्रिया बोली करषिमनकमनीय॥ नेह निजकी निपुणतासों नाथ थोरोनेह। रही जानत आजुलौं निजनेह सदृश अबेह ॥ देखि सुनि परतक्ष सों वह परो अब पहिंचानि। बचनकहिबो मधुर सों तुव चातुरीकी बानि॥ दोहा॥ मोपै करहु सनेह जोहै ताको अनुभाव। दक्षपुरुषके कितब जो ताको बिशद बनाव ॥ शुद्धहृदयमन ओर सों गहेनेहकी नीति।

हमसों भावनहौं गहे सहजलोककी रीति ॥ चौपाई ॥ सहजनेह हो मोपै जोऊ। अब तुम औरहि अर्पहु सोऊ ॥ नाथहमैंनहिं सुखकी ईहा। तप करिहैं गहि निर्जन ठीहा ॥ बिनुपाये पति आज्ञा नेकौ। उचित न तियको तप व्रत एकौ ॥ पति आज्ञा बिनु हठतिय कोई। करै क्रिया सो निष्फल होई ॥ ताते मोहिं देहु अनुशासन। करैं सुचित ह्वै व्रतउपवासन ॥ इमिकहिनयन बारिभरि प्यारी। तजन लगीं ह्वै महत दुखारी ॥ पतिको पीत बसनगहि भामिनि। ईंचि दोउकर पै धरि कामिनि ॥ बदन सनयन मूंदि सुखदाइनि। मंजु मनोहर भाव लखाइनि ॥ सो लखि कामदानि गुणसागर। बोले सत्यभामा सोंनागर ॥ मानिनि मान अग्निके कारण। दहहुगातममसोकेहिकारण ॥ कहिसि अराउ शीघ्र मेधाबिनि। शशि मुख बचन सुधासम श्राबिनि ॥ सुनि पति बचन प्रिया सत्यभामा। पतिव्रतपालिनि अति अभिरामा ॥ चखगर भरेहरे लखिबोली। मानठान को कारण खोली ॥ ममसोहाग तुमहीं गुरुकीन्हें। सब सीमन्तिनमें मुदलीन्हें ॥ मम सोहागलखि सबै सिहाहीं। सत्यासहशाप्रिया कोउनाहीं ॥ तेसबदशा सखिनसों सुनि सुनि। हँसि हैं हमहिं न्यून अबगुनिगुनि ॥ दोहा ॥ पारिजात को कुसुमजो अनुपम अति सुखदाय। नारदमुनि तुमकहँदये समुदस्वर्गते लाय ॥ सो लै तुमताकोदये जोअति तुमहि पियारि। मोपैरह्यो पियारसो हियते न्यारे टारि ॥ जयकरी ॥ जबतुम दये सुमनसनमानि। तबमुनि अधिक प्रियातेहि जानि ॥ कियेतासु अस्तुति बहुभांति। सोतुम सुने मोहिंसोंराति ॥ अस्तुति किये करैमुनिराय। तुमहुं सुने सूनौगहिचाय ॥ पर मम भाग्यहीनको नाम। कतलीन्हें तहँमुनि तपधाम ॥ गौरवतासु न्यूनतामोरि। नारद कहे बहोरिबहोरि ॥ सो तुम सुनो चोप अधिकाय। यह दुख मोसों सहो न जाय ॥ ताते सुनहु कहौं परियाय। देहु निदेश

करौं तपजाय ॥ ज्ञातिबर्गमें ह्वै अतिहीन । रहिबो ताते मरिबो पीन ॥ मान सहित नीको संसार । मानगये मरिबोअधिकार ॥ सुनि सत्यभामाके ये बयन । हँसिबोले प्रभु राजिवनयन ॥ सुनहु प्रिया वहसुमन सराहि । निजकर दीन्हें नारदताहि ॥ इतनोई मन दोष बिशाल । मुनिहि न बरजिदिये तेहिकाल ॥ क्षमहु प्रिया मम सो अपराध । मानिलेहु मम बिन आराध ॥ पुहुपसु पारिजातको एक । तांके हेत गही तुमटेक ॥ तजहुमान देहौं सुखदानि । पारिजातको तरु ल्वाहिं आनि ॥ तासुकुसुमलै लै मन मान । बिहरहुकामिनि यथा बिधान ॥ दोहा ॥ प्रियपति के ये बचन सुनि सत्यभामा सुखपाय । कहत भईइमि चावसों ह्वै कै सौम्य सुभाय ॥ पारिजात को बिटप जो स्वर्ग लोक ते ल्याय । देहु नाथ तौ अपुनको सांचोनेह लखाय ॥ चौपाई ॥ तौ सब तिय गणमें बड़भागिनि । होउँ नाथ मैं बिदित सोहागि-नि ॥ मम तुव प्रीति रीति निपुणाई । सुनि करिहैं सब लोक बड़ाई ॥ कहे तथास्तु कृष्ण शुभकामी । चक्र शार्ङ्गधर खग-पति गामी ॥ भई सरस तब मान बिहाई । सत्यभामा शशि मुखी सोहाई ॥ सत्यभामा सह आनँद पाई । न्हाने कृष्णसमु-द तट जाई ॥ करि नितकृत्य पाक गृह आये । तब तहँ प्रभु मुनिवरहि बुलाये ॥ करिसत्कार यथोचित मानद । पूजे मुनि-हि कृष्ण प्रभु सानद ॥ हेम पात्र सों प्रभु जल ढारे । सत्यभामा शुचिपायँ पखारे ॥ आसनस्थफिरि मुनिकहँ करिकै । भोजन करवाये मुद धरिकै ॥ करि भोजन मुनि आशिष दीन्हें । सो सुनि दम्पति आनँद लीन्हें ॥ नारद मुनिकी आज्ञा लहिकै । भोजन किये कृष्ण मुदगहिकै ॥ प्रभु निदेश लहि प्रिया सोहा-ई । भोजन कीन्हो गृहमेंजाई ॥ करिभोजन ह्वै शुचिसुखदाई । राजित भई नाथ ढिग आई ॥ तदनन्तर प्रभु सों मुनिज्ञानी । कहत भये यहि बिधिकी बानी ॥ अबहम तात शक्रपुरजाहीं ।

उत्सव बड़ो सबै गृहमाहीं ॥ करि शिवको पूजनचितचायक। करिहैं अतिउत्सव सुरनायक ॥ दोहा ॥ पूर्ब दिवसमें देइहैंसुमन हमें सुरराज। दिये निमंत्रणचाहिकै उत ऐबे के काज ॥ वृक्षराजको फूल यह बांछित को दातार। शचीपूजिसहनीति लहि नित्य सोहाग बिहार ॥ जयकरी ॥ पति कश्यपकहँ अदितिअराधि। करिप्रसन्न पूरणब्रत साधि ॥ मांगत भई समय अनुमानि। देहु मोहिं सो सुनि सुखदानि ॥ ईछित फल जो देइ महानि। पूरणकरै मोद मम मानि ॥ सो सुनि करि मारीच बिचार। मन्दरगिरिको कर्षि सुसार ॥ पारिजात तरुराज बिख्यात। दिये अदितिको सोअवदात ॥ पारिजात तरुमें गुणखानि। अदिति बांधि पति के युगपानि ॥ दई समर्पि मोहिं बिधिजानि। पुण्य सोहाग अर्थ अनुमानि ॥ दै पतिको निक्रय पश्चात। लईछोड़ाय पतिहि सुनुतात ॥ सो तिमिकीन्हीं शची सुजानि। करी रोहिणी सो बिधिमानि ॥ सुरसरि पार भयो अभिराम। ताते पारिजात यहनाम ॥ मन्दर तरुको सारउदार। ताते नामभयो मन्दार ॥ कौन दारु यह बूझो कोय। ताते कोबिदारिहै सोय॥ दिव्य वृक्षसत सौम्यसुभाव। चेतन चारु पुनीत प्रभाव ॥ यहि बिधि पारिजातको भेव। कहि प्रभु सों नारद मुनि देव ॥ चहेचलन सुरपति के गेह। तब इमिबोले कृष्ण सनेह॥सुरपतिको हम कहैं सँदेश। सो सुनि लीजै सुमुनि सुभेश ॥ दोहा ॥प्रथम कहेहु सुरराज सों बूझि उचित व्यवहार। भायपु कहेहुसुभाय कहि गुरु लघुको निरधार ॥ फिरि मम अर्थ सुरेशसों कहियो सुमुनि सुजान। सिद्धि होय जाते अरथ तिमि कहियो सबिधान ॥ रोला ॥ कामदानि अनन्त गुणमय पारिजात महान। पूजि तेहि जिमि अदिति कीन्हीं अरु शचीपति दान ॥ तासु पुण्य प्रभाव सुनि मम सत्यभामा बाम। चहति तिमि तेहि पूजि कीन्हों सोइबिधि अभिराम ॥ दानपुण्य सुधर्म हेत बिचा-

रिकै सुरराज। पारिजात बिख्यात तरु इत भेजिदेहिं सुसाज॥ पूजि दान बिधान करि फिरि पारिजातहि तत्र। भेजि हम देहैं सुनो उत रहतहै वह यत्र॥ बार्ता कहि शक्रसों मुनि किहेहु सो उतयोग। देहिं जाते शक्र सुरतरु लखहिं इत सब लोग॥ कृष्ण के ये बचन सुनि हँसिकहे मुनि शिरताज। कहब हमबहु भांति पर नहिंदेहिंगे सुरराज॥ शक्रसों यकसमय मांगे पारिजात सचाय। उमाके प्रियहेत शंकर आपुसुरपुर जाय॥ शची के बिश्रामको करि ब्याज तब सुरनाथ। दिये नहिं सो बिनय करिकै जोरिकै युगहाथ॥ शम्भु तब करि कृपा नहिं हठि लिये तरुवर तौन। चारुमन्दिर शैलपै तब रचेगिरिजारौन॥ कोश युग परमानलौं तरुराजको बनबेश। सूर्यके किरणनिकीगति है न कछु तेहि देश॥ उमाशिवसह गणन तेहि बन बिहरि नित्य बिभात। हमहिं तजि तहँ और की नहिं गतागत है तात॥ गयो तहँ यक समय अन्धक नामअसुर अमान। वृत्रते दश गुण सबल तेहि हते शम्भु सुजान॥ दियो नहिं जो शिवहिसो किमितुमहिं देहैं शक्र। उभय ओर बिचारि मोहिं यह लगो कारण बक्र॥ बचन ये सुनि कहे केशव सुनहुनारद दक्ष। कहे तुम जो बात तामें भेदहै परतक्ष॥ शम्भु उनसों बड़ेहैं नहिं दिये तौनहिं दोष। शचीको सुनि ब्याज लघु गुनि किये शङ्कर तोष॥ शक्रके लघु अनुजहैं हम लालनीय सप्रेम। बूझि सब बिधि मोह तजि तरु दियेही है क्षेम॥ कियो प्रण हम बामसों सोसुनहु ज्ञाननिकेत। स्वर्गते तरुराज देहैं ल्याय पूजन हेत॥ बचन सो नहिं ब्यर्थ ह्वै है सत्य बिस्वबीश। बचन मिथ्याभये होत सुधर्मलोप मुनीश॥ सुरासुर गन्धर्ब पन्नग सर्ब हैं न समर्थ। कियो हों प्रण उग्रताको करैं बलसों ब्यर्थ॥ जो न देहैं आपुसों हठि पारिजात सुरेश। एक प्रण तौ करौं औरौ सुनहु सो शुभभेश॥ दोहा॥ लिय हियके अनुलेप सों चिह्नित जो

उर तासु। मारि गदा ता मधि सुनों लेहों सुरतरु आसु॥ यह सुनि नारद चुपरहे बोले कछू न बैन। सादर प्रभुसों ह्वै बिदा गये शक्रके ऐन॥ चौपाई॥ तहां जाइ आनँदसों भेखे। नारद मुनिवर उत्सव देखे॥ सुरसमूह ऋषि मनु अरु बसुमन। मारुत नाग सुपर्ण मुदित मन॥ यक्ष सिद्ध गन्धर्व सोहाये। डम्बर तुम्बर किन्नर गाये॥ अप्सरादि सुरलोक बिहारी। राजे तहँ निजपद अनुसारी॥ बाद्य नृत्य अरु गान सोहायो। अति उत्सव सुरपुर में छायो॥ तहँ सुरमण्डलके मधि पावन। सिंहासन अतिउच्च सुहावन॥ तापै गौरीपति आसीना। देवदेव परभाव अहीना॥ नंदिहु आदिकगण छबिबाढ़े। सेवैंतहँ चहुं दिशिसोंठाढ़े॥ सहउपचारशक्र मुदलीन्हे। सबिधिशंभुको पूजनकीन्हे॥ ह्वै प्रसन्न शङ्कर सहबामा। धामधाम चलिगेनिजधामा॥ तब जे सबआये हैं तेहां। ते ह्वै बिदा गयेनिज गेहां॥ सहित सभासद सुरपति सोहे। आवततहँ नारदकहँ जोहे॥ उठिसहसाक्ष सुमुनिकहँ पूजे। आसनस्थ करिअस्तुति कूजे॥ तबसुरपतिसों नारदज्ञानी। कहतभये यहिबिधिकी बानी॥ सुनहु शक्र मम बचन सोहाये। हमहिं कृष्ण करिदूत पठाये॥ कछूकाज हितभूतल स्वामी। सोसुनिये ऐरावत गामी॥ दोहा॥ नारदमुनिकेसुनि बचन शक्रकहे हरषाय। कहनलगे केशव कहा सो कहिये मुनिराय॥ सुनहु नरेन्द्र मुनीन्द्र तब कहेइन्द्रसों चाहि। तबलघु अनुज उपेन्द्रप्रभु लखन गये हमताहि॥ चौपाई॥ सुरतरुको लै फूल गयेहैं। सोहम तिनकहँ तहां दयेहैं॥ अति अपूर्व लखि कुसुम सोहावन। बिस्मितभईं तिया सब चावन॥ पारिजातके गुणमनभाये। अरुउत्पाति बिधिउन्हैं बताये॥ अरु पतिदान व्यवस्था जैसी। सबिधि सुनाये सो सबतैसी॥ सो सुनि एक कृष्णकी बामा। माननि पति प्यारी सतिभामा॥ सो पतिदान धर्म अभिलाषी। पतिसों यांचत भई सुसाषी॥

अति अभिलाष तियाकोजानी । हमसों कहे कृष्ण मुददानी॥
नारद तुमसुरपति सों जाई । मम प्रणाम कहि कहेहु बुझाई ॥
वैमम गुरुभ्राता सुरत्राता । हमउनके लघुअनुज बिख्याता ॥
सुतसम सदा दुलारन योगू । बहुरो अनुज कहत सबलोगू ॥
अनुजबधू उनकी सातिभामा । पारिजातको गुणसुनि आमा ॥
तेहिलहिदान सुधर्म्मउछाहू । करिचाहतसो अनुपमलाहू॥धर्म
हेत अरु मोरिहिताई । बूझिदेहिं सुरतरुहि पठाई ॥ नारदसों
यह प्रभुकी बानी । सुनि बोले सुरपति अनुमानी ॥ सकलप्र-
श्न केशव सों कहि सुनि । फिरि मम बचन कहेहु नारदमुनि॥
सुर तरु आदिक जितक पदारथ । मन सों उनको कहेउ यथा-
रथ ॥ दोहा ॥ उतसों करि कारजसकल तियन सहितइतआय।
जो जो भाइहि चित्त में सो करिहैं गहिचाय ॥ अधिकपदारथ
स्वर्गको स्वल्प काजके हेत । लैजैबो नरलोक में अनुचितज्ञा-
न निकेत ॥जयकरी॥ बिरचे बेधा जो जेहि लोक । सकल पदारथ
दुखसुख ओक ॥ ताही लोक तासु अधिकार । उलटि सकैको
सो ब्यवहार ॥ जो हम पारिजात उततात । भेजिदेहिं तो सुनि
यह बात ॥ कर्ता कोपि देहिं मोहिं शाप । करैं सुमनगण निंद-
रिअथाप ॥ ताते तात कहो मम मानि । कहे बातसोअनुचित
जानि ॥ उतै पदारथ जिते अदोष । तिन सों भोगि करहुस-
न्तोष ॥ इते पदारथजे अवदात । भोगिहैं तिन्हैं आइइततात॥
नारद कृष्ण भूमि पै जाइ । आमिषभोजनकिये अघाइ ॥ ताते
ह्वै उन्मत्त मोटाय। भये पापरत पर्‍यो लखाय ॥ गहेमानुषीबुद्धि
सचाय । स्त्री बश भे ज्ञानभुलाय ॥ बड़े बन्धु को ऐसे बैन ।
कहि पठये तजि लाज सचैन ॥ पारिजात तरु महिपैपाय । म-
हिजन सबै मोद अधिकाय ॥ पाइ स्वर्गको फलउत बेश । लजैं
स्वर्गको इहालेश ॥ मखतप धर्म करै नहिंकोय । तरु प्रभावते
निर्भयहोय ॥ जरामृत्यु आदिक जे ईति । तिनकी लहै न कोऊ

भीति ॥ तातेपारिजात सुखदान । नहिंदेहैंहम महिपै जान ॥
दोहा ॥ मृत्युलोक के योगहैं जितने बस्तु बिभात । भूषण बसन
बिचित्र मणि सोहम देहैं तात ॥ देवराजके बचन सुनि बोले
मुनि परबीन । अवशि कहब हम तुमकहे जे ये बचन अहीन॥
तुमसों बूझेही बिना हम उतही समुझाय । कहे शक्र दीन्हे न
तरु शम्भुहि बिनयसुनाय॥ तबवै बोले शम्भुहे गुरुनाहिं कीन्हें
रोष। हमसों तरु लीन्हेंबिना करिहैं नाहिं सन्तोष ॥ रोला ॥ कियो
प्रण हम बामसों सो सुनहु ज्ञान निकेत । स्वर्ग ते तरुराज देहैं
ल्याय पूजन हेत ॥ बचन सो नहिं ब्यर्थ कै है सत्य बिस्वेबीश ।
बचन मिथ्या भयेहोत सुधर्म लोप मुनीश ॥ सुरासुर गन्धर्व
पन्नग सबैहैं न समर्थ । कियो जो प्रण उग्रताको करैं बलसों ब्य-
र्थ ॥ जोन देहैं आपुसों हठि पारिजात सुरेश । एकप्रणतो करों
औरौसुनहु सो शुभभेश॥दोहा ॥ अनुलेपन सों शचीके चिह्नित
जो उरतासु । मारिगदा ता मध्यसों लेहौं सुरतरुआसु ॥ सुर-
तरुलेहैं अवशिवै जिमिदेहौ सुरराज । तातेमंत्रबिचारिकै करौ
उचित जोकाज ॥ सुरतरु दीजै कृष्णकहँ राखिउचितब्यवहार।
हिततुम्हारममंत्रयह परममंत्रकोसार ॥ चौपाई ॥ नारदमुनिकी
सुनि यहबानी। रिसकरिकहे शक्र अभिमानी॥ जेठो बन्धु सहो-
दर मोही । यहि बिधिकहे कृष्ण जो कोही ॥ तौ अब मुनिब्य-
वहार कहांहै। ऐसो नीरस प्रश्न जहां है ॥ मम अपकार बहुत
वै कीन्हे । अबलों सो सब हम सहि लीन्हे ॥ जब वृत्रासुरअ-
ति बलभारी । आयो मोसों लरन प्रचारी ॥ तब सहाय हित
उनहिं बोलाये । बूझि कछू नहिं तब वै आये ॥ देवासुर सोंभई
लराई । तब वै लरे न मम हित आई ॥ कौतुक देखत हैं ढिग
ठाढ़े । चढ़े गरुड़पै आनँदबाढ़े ॥ उनसों भिरोआइ मयजबहीं ।
लरे निदान सुनों वै तबहीं ॥ अर्जुनको सँगलै मुद छाये । मम
प्रिय खांडवबन जरवाये ॥ मम पूजन ब्यवहार मिटायो । जो

त्रणसों गिरिवर पुजवायो॥धरि गोवर्द्धन ममअपमाना । कीन्हे तोन तिहूंपुर जाना ॥ और बहुत अबकहँलगि कहिये । मनमें समुझि समुझि चुप रहिये ॥ हम बिरुद्धमति कबहुं न राखी । नारदतुम सब दिनके साखी ॥ अबमम उरमें गदा प्रहारण । कहे कृष्णहठि तियके कारण ॥ राजस तामस गुणगहि भाई । तियहित बोले सत्यभुलाई ॥ दोहा ॥ राजस तामस काम तिय कोधिकहे तप ऐन । जाबश ह्वै केशव कहे गुरु बन्धुहिं इमिबैन॥ कश्यपके अरु दक्षके कुलकीजोहै रीति । ताहिछोड़िके सब गहे नारद सुनहु अनीति ॥ चौपाई ॥ कहे बिचारिबचन यह बेधा । जो जगकर्त्ता सरस सुमेधा ॥ सहसन सुत तियगण जगमाहीं । एक सुबंधु सरिस कोउनाहीं ॥ भाइ समान न हितकोउहोई । कश्यप अदिति कहे यहसोई ॥ तिनमें सरस सहोदर भाई । करतसदा बिनु कपट हिताई ॥ अबयहि समय पिताअरु माता । हैंजल बास किये मम त्राता ॥ ये केशवके बचन अचायक। हैंनिजुतिन्हहिं सुनावनलायक ॥ निज आननसों निजप्रभुताई । बड़कहें नहिं लाजबिहाई ॥ तदपिप्रयोजनबश कहि आवै । ताते कछू कहोंसतिभावै ॥ एकसमय वैधनुष चढ़ाई । खड़े रहे ठोढ़ीसों लाई ॥ कीटरूप धरि निशिचरआई । औचकजाकाटेसि दुखदाई ॥ लगेतीरतब तुरित पछारे । धरते दूरि पर्यो शिरन्यारे ॥ तब हम तहों कृपाकरिआये । तनसों शीश लगाइ जिआये ॥ चली नकछु प्रभुतातेहि क्षनमें । विष्णु कहाइमुदित हैंमनमें ॥ जो ममभाग रह्यो बसुधामें।आधी दयेउन्हें हमतामें॥ जब असुरनसों भईलराई । तब हम उन्हें जानिलघुभाई ॥ प्रथम लराइन साधेकाजा । हमनाहिं लरे यदपि हैराजा ॥ दोहा ॥ लघुह्वै वै ममगेहके ऊपर कीन्हेंगेह । सोऊहम कीन्हें क्षमाजानि अनुज गहिनेह ॥ पात्रयशी अरु मान्यपुट अरु सर्बज्ञकृतज्ञ । जानत हैं अबलों उन्हें अबपहिचाने अज्ञ ॥ जयकरीछन्द ॥ अब

सादर नारद मुनिराय। कहो कृष्णसों यहि बिधिजाय॥ बहु
दिन सहे बहुत अपराध। अब नहिं क्षमब नेकु पल आध॥
ताते भावेजब मनमाहिं। तब चढ़िआवैं कछु डरनाहिं॥ पहि-
ले मारि लेहिंवै आय। चक्र बाण वा गदा चलाय॥ तापीछे हम
बाहुबशस्त्र। जेहि प्रकार बनि आइहितत्र॥ लरबयथेष्ट प्रीति
सब नाखि। गुरुता लघुता न्यारे राखि॥ बिनु जीते नहिं देहौं
तात। पारिजात्त को आधोपात॥ इतनो उनसों कहेहुबुझाय।
मति तरुवर लै जाहिंचोराय॥ सुनिमहेन्द्रके बचनअमान।
बोले नारदसुमुनि सयान॥ सुरपतितुम सबबिधि मतिमान। सु-
नों कहैंजो हम व्याख्यान॥ बन्धु बिरोध न नीको होय। यहकरि
लह्यो न आनँद कोय॥ सुबुधिअरंभै कारजसोय। जाकोअन्त
सोहावन होय॥ यहिकारजको अन्त मलीन। करिबिचार दे-
खोपरबीन॥ कारणरूप जौन प्रभुएक। परेप्रकृतिसों कियेबि-
बेक॥ अगुणअव्यक्त जाहि कहुवेद। तासुव्यक्त जो भागअ-
खेद॥ जग उतपतिकर जेसुनु जिष्णु। तासु आतमाहौ प्रभु
बिष्णु॥ दोहा॥ जीव जातहैं जहांलों तिनमें चेतनरूप। पावन
आत्मा आपुहैं न्यामक बिष्णुअनूप॥ पराप्रकृति अव्यक्तजो
व्यक्तरूपहै तासु। गिरिजासीता रुक्मिणीनाम प्रगट हैजासु॥
करि ताको संसर्गकै सगुणी निगुणी जौन। करैंचाहि कारज
सुनो बिबिध भांतिके जौन॥ नारायण अव्यक्तसो करिसुव्य-
क्तनिजअंश। रुद्र बिष्णु ब्रह्महि रचै सगुण स्वरूपप्रशंश॥
सुनोरुद्र अरु बिष्णुसों गुणोन कछूबिशेष। प्रभवप्रभावनए-
कहैं नामदोय कै भेष॥ सोरठा॥ आपुबिष्णु तजि खेद जाते
भेतुवलघु अनुज। सुनहु शक्र सो भेद सावधान ह्वै शचीस-
ह॥ अदिति देबिअनुमानि बिष्णुहि सबिधिअराधिकै। वर
मांग्यो सुख दानितुमहिं सदृश सुतहोंलहों॥ चौपाई॥ सोसुनि
कहेबिष्णु यह बानी। मोहिं सदृशको दुतिय सयानी॥ मैंनिज

अंश तोर सुतह्वैहौं। सुर समूह में आनँदग्वैहौं॥ यहिबिधि भये बिष्णु तव भाई। भये न जननि कर्म बश आई॥ बरदै गर्भ अदितिके आये। कश्यपतनय उपेन्द्र कहाये॥ तुवहित बिष्णुरूप बहुधारे। प्रबल दैत्यके वृन्द सँहारे॥ बलिहि छले प्रभु तुवहितलागी। पर उपकार धर्म अनुरागी॥ जगउपकार हेत अबस्वामी। भयेकृष्ण ह्वै भूतल गामी॥ अच्युत अव्यय अरु अनन्तहैं। न्यामक व्यापकत्रिपुरकांतहैं॥ तातेपूज्यकेश-वहि मानो। मनमें भायपु मति अनुमानो॥ हियेतोष गहिरो-ष बिहाई। सादर सुरतरु देहुपठाई॥ सुनि मुनि बचन सुरा-धिपबोले। भुजबल बज्र बिलोकि अतोले॥ तासु प्रभावसुमु-नि तुमभाखे। सो सब हम पहिले सुनि राखे॥ बरु याते कछु अधिक सुनैहैं। ताहीते नाहिं देनगुनैहैं॥ महतप्रभाव पुरुषजे ज्ञानी। रिस न धरैं तेईर्षाआनी॥ महतपुरुष वै तरुकेकारण। नहिं रिसकरि करिहैं धनु धारण॥ क्षमाशील सत पुरुषसुज्ञा-नी। मानहिंसुनि वृन्दन कीबानी॥ दोहा॥ परमपुरुष जगईश वै रिस करितरुके काज। करिहैं बन्धु बिरोध नहिं यह निश्चय मुनिराज॥ यहबिचारि निश्चिन्त रहि तरुवर हमदेहैन। सुनि बिचार करिये सुमुनि और कहैंजो बैन॥ चौपाई॥ जिमिमम जननीको बर दैकै। भये सुरन वै आनँद लैकै॥ तेहि बिधि जेठ बन्धु मोहिं जानी। राखैं मान उचित अनुमानी॥ जो ऐसो करिबोहो उनको। तौ जेठो किनाकिये अपुनको॥ येबातैं सुरपति कीसुनिकै। नारदमुनि भविष्य कछु गुनिकै॥ ह्वैकैबिदा मोद सों छाये। सादर द्वारावति पुरआये॥ गे तहँ जहांसहित सतिभामा। बैठे हे प्रभु प्रिय अभिरामा॥ आवतनारद मुनि-हिं निहारी। उठिचलितिय सह कृष्णसुखारी॥ बिधिवतमुनि को पूजन करिकै। बैठायेआनँदसों भरिकै॥ सुखासीन ना-रदसों सानँद। बूझे बिहँसि कृष्ण प्रभु मानद॥ उतके वचन

प्रलाप सोहाये । पृथक् पृथक् सब सुमुनि सुनाये ॥ सो सुनि बोलेकृष्ण बिशारद । अमरावती जाब हम नारद ॥ इमिकहि सुमुनि समुद तट जाई । न्हाइ सुमुनि सों कहे बुझाई ॥ नारद कहेहु इंद्र सोंजाई । मति हाठि हमसोंकरहिं लराई ॥ ममसन्मुख ह्वै करैं लराई । ऐसे समरथ नहिं सुरराई ॥ नाहक लरि मति होहि हँसाई । सादर सुर तरु देहिं पठाई ॥ सुनिह्वै बिदा जाइ मुनि भाये । सुरपति सों ये बचन सुनाये ॥ दोहा ॥ बहुत भांति मुनिवर कहे नहिं मानी सुर राज । तब सुरपति सों ह्वै बिदा अनत रमे मुनि राज ॥ बरणों या अध्यायमें सतिभामा को मान । कृष्ण शक्र नारदसुमुनि को संबाद बिधान ॥

इतिहरिबंशदर्पणेनारदशक्रसम्बादोएकबिंशोऽध्यायः २१ ॥

दोहा ॥ नारद मुनिको करि बिदा जिष्णुजीवपै जाय । समाचार सब कहतभे सुनि गुरु रहे चुपाय ॥ जयकरी ॥ धरि कछु पाय चिन्ति सुरपति सों । कहे बृहस्पति इमि रिस अति सों ॥ अहो सुरेश न तुम भल कीन्हे । प्रथमहिंमोहिं बूझिनहिं लीन्हे ॥ शक्र अरम्भेहु काजअनीको । जासु अन्तदुख दायक जीको ॥ कर्म्मज कछु भवितव्यसुरेशा । प्रेरिकहेसि जोयहउपदेशा ॥ ब्रह्मलोक मोहिंगये बिहारण । भयोइतो अनरथकोकारण ॥ साहसकरिकै बिनाबिचारो । कियोकाज दुखदानिउचारो ॥ यहसुनि कह्योशक्र सुनिलीजै । भयेकार्य्यको शोचन कीजै ॥ होय प्राप्तजब जोव्यवहारा । बुधजन ताको करैं बिचारा ॥ ताते अब जो करिबेलायक । सोकरि कृपाकहौ सुखदायक ॥ दशशताक्षकी सुनियहबानी । शीश नवाइचिन्ति गुरुज्ञानी ॥ अवतो लरिबेई को कारय । सहित जयन्त लरेउ लखि आरय ॥ इमिकहिशक्रहि गेह पठाये । आपु शीघ्र क्षीराधि माधि आये ॥ तहँ हे कश्यप अदिति सुहाये । समाचार सब तिनहिं सुनाये ॥ सो सुनि कश्यप रिससों भोई । कहे कर्मफल निश्चय होई ॥ गौतमघरनि

अहल्यानामी । सो जो किये कुकर्म कुकामी ॥ ताको शान्तबि-
धान बिचारी । होंजलबास करौंब्रतधारी ॥ दोहा ॥ कहेबृहस्पति
अब करौ गुनि कछुउग्रविधान । कर्मज फलके प्राप्तिको समय
आइ नगिचान ॥ चौपाई ॥ तहँ देवास्तुति शिवकी कीन्हे । ह्वै
प्रसन्न शिव दर्शन दीन्हे ॥ दर्शनदै करुणा के सागर । औढर
ढरनि सुदानि उजागर ॥ बोले कश्यप सों जगस्वामी । देवदेव
प्रभुअन्तरयामी ॥ मंजुतुम्हार मनोरथ जानी । कहें सुनों क-
श्यपगुरुज्ञानी ॥ जाइइंद्र के गृहमधि संप्रति । करहु बास तुम
तपबिधि दंपति ॥ तेहि प्रसाद लवसुतसुखसाजिहि । चिरंजीव
ह्वै सुरपुर राजिहि ॥ बरलहि कश्यपदम्पति भाये । शिवहि
नौमितुर सुरपुर आये ॥ प्रातहि कृष्ण नित्यकृति कै कै । संग
प्रद्युम्न सात्विकिहिलैकै ॥ मृगया मिस रथचढ़ि धनुधारी । रैवत
गिरिपै गये बिचारी ॥ तहँ सात्विकि सह सरससुखारे । चढ़े
गरुड़ पै आनँद धारे ॥ दारुक को यह दिये निदेशा । तुमरथ
लै इतरहौ सुभेशा ॥ नभगरथस्थप्रद्युम्न कुमारहि । संगलाइ
बरबीर उदारहि ॥ चलिदिवदिशि आयुधसों भेखे । क्षणमेंजाइ
शक्रबन देखे ॥ तहां देवयोधा भट भारे । नन्दनबनके हे रख-
वारे ॥ तेलखि शङ्कि कछूनाहिं भाखे । पारिजात लखिप्रभुमुद
राखे ॥ मूलसहित सुरतरुहि उखारी । राखिगरुड़ पै कृष्ण बि-
चारी ॥ दोहा ॥ मन्द मन्दचलिदन्द हर नन्दसुनन्द समेत ।
परदक्षिण लागे करन सुरपुरको सहहेत ॥ तदनन्तर सुरवृक्ष
के रक्षक सत्वरधाय । समाचार यह कहतभे सुनाशीरसोंजाय ॥
चौपाई ॥ सो सुधि सुनि सुरेश रिस भरिकै । चढ़ि ऐरावत पै
धनु धरिकै ॥ संग रथस्थ जयन्तहि लैकै । चले कृष्ण पै हियो
अभयकै ॥ पूरबद्वार कृष्णकहँ देखी । कहे पुरन्दर अन्दरतेखी ॥
केशव कौन कर्म यह कीन्हे । ह्वैअभरम मम मरम अचीन्हे ॥
सुनि हँसिप्रभु धीरनकी जति सों । कहे नौमि यहि बिधि सुर-

पति सों॥ दान धर्म सुनि भई उछाही। अनुजबधूतवयहतरु
वाही॥ ताके हेत सुनहुंपबिधारी। लिये जातहमयहतरुभारी॥
बक्रबचन सुनि शक्र रिसाई। कहे न इमिलै गये बड़ाई॥ लरि
मम उरमें गदा लगाई। तरुलै जाबकहे तुमभाई॥ लरि मम
उरमें गदाप्रहारी। तब सुरतरुलैजाहु सुखारी॥ सुनिप्रभुएक
सुबाण निकारे। ऐरावत गजबर कहँ मारे॥ तब सुरराज एक
इषुचोखो। गरुड़हि मारे अमल अनोखो॥ केशव शर सुर
पति कहँ मारे। शर सों कृष्णहि शक्र प्रहारे॥ बिष्णुहिजिष्णु
जिष्णुकहँ बिष्णु। मारन लगे बिष्णुकहँ जिष्णु॥ दोउरण
कर्कस धर्कस धीरा। दोउ बर कर्कस धर्कस बीरा॥ धनु
विधि बिहित बाणबर प्रेरैं। बीर शब्द समरोचितटेरैं॥ दोहा॥
जेशर मारे कृष्ण ते छेदे शक्र सुजान। जेइषु मारे इंद्रते
काटे कृष्ण अमान॥ जिष्णु बिष्णुके धनुषके टंकोरनसों
पूरि। रह्योस्वर्ग मोहित भये दिवबासी त्रसि भूरि॥ तोमर॥
तहँ मचो संगरघोर। सुतशक्रको सहजोर॥ रथहांकि नीरे
आय। तरु लियो चाह्यो धाय॥ प्रभुकी सुआज्ञापाय। तहँ
चलि प्रद्युम्न सचाय॥ रथहांकि आड़े आय। शरहनो ताके
काय॥ तेहि लखि जयन्तौ क्रोधि। शरतजे मंत्रन शोधि॥ ते
बिशदबीर महान। बटुपढ़े धनुष बिधान॥ तहँ तजे बाणअ-
मान। जलबूंद मेघसमान॥ तहँ सुमन जनगण सर्ब। जुरि
लखैं युद्ध सुपर्ब॥ हो प्रबर नामक एक। भट बिकट पालक
टेक॥ सो पूर्ब ब्राह्मण जाति। करिउग्रतप मुदराति॥ बरपि-
तामहसों पाय। वह ह्वै अवध्य सचाय॥ तजि भूमि सुर पुर
जाय। भो देवदूत सुकाय॥ सुरराजको प्रियमित्र। सो धनुष
धारि बिचित्र॥ गुणसुनाशीरहि देन। बढ़िचलो सुरतरुलेन॥
तिन देखिकै सबताहि। इमि सात्यकीसों चाहि॥ कहि दये
आवत तासु। तुम करहु वारणआसु॥ दोहा॥ परयह ब्राह्मण

जाति है रोकेहु रोषअमान । निर्दयह्वै मति मारियो याके तन में बान ॥ सात्यकिभट गरुड़रथ तहँ प्रभु आज्ञा हितजानि । डाटतभे परप्रबरको शीघ्र शरासन तानि ॥ चौपाई ॥ तब भट प्रबर क्रोध हियभारे । साठिबाण सात्यकि कहँमारे ॥ सात्यकि शरसों ताधनु छेदे । फिरितासों इमि कहे अखेदे ॥ रेब्राह्मण चलु द्विजके पथपै । मति हठि पांवराखु अनरथपै ॥ ब्राह्मण जानि क्रोधमें वारौं । प्राणहरणशर तोहिं न मारौं ॥ यह सुनि कहे प्रबरमुसुकाई । क्षमाछोड़ि अब करहुलराई ॥ क्षमायुद्ध में कादरकरहीं । हियसों हारिब्याज बिधि धरहीं ॥ जामदग्निसों शरबिधि सीखो । मैं धनुधरमें पहिले लीखो ॥ केशवके भय सुरगणकोई । लरैंन सुरपति के सँगहोई ॥ सखा शक्रको बिदित कहायो । निर्भय हो ताते चढ़िआयो ॥ अब मति क्षमा ब्याजकरिबरहू । लोभजीवको तजिकै लरहू ॥ इमि कहि धनु धरि धनुधरगायो । सात्यकिपै बरबाण चलायो ॥ तब सात्यकि अति रिससों पागे । त्यहि बाणनसों मारनलागे ॥ लेहिसात्यकि सात्यकि कहँ सोई । मारनलगे बाण रिसभोई ॥ मारहिं कूटहिं डाटहिं मारैं । प्रबल प्रबीण प्रशंसि प्रचारैं ॥ भांतिभांति के शर दोउछांड़ैं । बीचहि तिन्हैं शरनसों आड़ैं ॥ यहि बिधि ते अतिउग्रलराई । कीन्हें सो नृप बरणिनजाई ॥ दोहा ॥ बीर जयन्त प्रद्युम्न तहँ करिकै युद्ध अघात । पूरिदिये नभ बाण सों कहैं कहांलों तात ॥ इंद्र उपेन्द्र तनय दोऊ बरणे बीरअमान । निज निज जय इच्छक सुभट शीक्षक धनुष बिधान ॥ मधिखरी ॥ तहँ जानि प्रबल प्रद्युम्नको मघवानको सुत रिसभरो । भो दिब्यअस्त्र अमोघ छांड़त चपलचातुर बलखरो ॥ लखि कृष्णको सुत ताहि आवत दीप्तितेज बिशालसों । क्षण एकलौं तेहि मगाहिरोंके सुभटनिज शरजालसों ॥ फिरिदिब्य उग्रप्रभावशस्त्र प्रद्युम्नके रथपै गिरो । जरिगयो रथपर तासु

तेज प्रद्युम्नके तन नहिं भिरो॥ नाहिंदहति अगणित अग्नि अग्निहिं भेद याको यह गुनो। ह्वै बिरथबीर प्रद्युम्न बोले शची सुतसों इमिसुनो॥ नाहिं जीति लहिहौ छांड़ि तुम यहि भांतिके शरसहसहे। नाहिं छुवन पैहौ सुतरुको दल कोटिबिधिकरि वहसहे॥ यह सुनि जयंत रिसायमारे चारिशरमंत्रित किये। तेजाय चारिहुं दिशि प्रद्युम्नहिं घेरि तत्रित रिलिकिये। तब पुरुष सिंह प्रद्युम्न शरसों काटिउनको शरदये॥ शर काटि डाटि बिशाल बाणन बिहँसि तेहिमारतभये॥ तकिउन्हहिं वै वै उन्हहिं प्रति तकि बाणबर अनगिन तजे। शरमारि काटि बचायमारे सरस सुखमासों सजे॥ दोहा॥ वीर जयन्त प्रद्युम्नको उद्वयुद्ध तहँ चाहि। साधु साधु कहि सुमनभे प्रमुदित तिन्हैं सराहि॥ महारथी सात्यकि सुभट प्रवरबीरकोडाटि। शरसों ताके धनुषकी दईप्रत्यंचाकाटि॥ चौपाई॥ तबभट प्रबर दुतियधनु गहिकै। अब बचाउ सात्यकि सों कहिकै॥ सात्यकि को धनु काटि सुखारे। शीघ्रग बाण अनगिने मारे॥ सात्यकिशीघ्र दुतियधनुधारे। शरसों प्रबरहि बेधि प्रचारे॥ गहिबरअष्टधार शरचोखो। इन्द्रसखाभट प्रबर अनोखो॥ सात्यकि भटके इषुको आसन। छेदि हनेतेहितीनि शरासन॥ फिरिसात्यकिहि लेत धनुदेखी। मारेसिगदा प्रबरअतिलेखी॥ तब सात्यकी शरासन लीन्हे। खड्ग चर्म लै सन्मुखकीन्हे॥ काटिखड्ग तब प्रबर प्रबीरा। तजनलगो शरप्रदपअधीरा॥ तब प्रद्युम्न चंचलता लीन्हे। निजसुखड्ग सात्यकि कहँ दीन्हे॥ मारिभल्लतब प्रबर अखेदे। सोऊ खड्ग मूठि ढिग छेदे॥ फेरि प्रबर सात्यकिहि प्रचारी। गरजो शक्ति हृदय मधिमारी॥ तदनु सात्यकिहि मुरछित देखी। सुरतरु लेनचलो मुद भेखी॥ खगपति प्रबरहि आवत हेरे। पक्षज मारुतताऐ प्रेरे॥ ताते रथसह प्रबर उड़ाई। मुरछितपरोकोशयुगजाई॥

तेहि जयंत तहँजाइ उठाये । रथपैडारि समरमहँ ल्याये ॥ मुदित प्रद्युम्न गरुड़ पै आये । करिउपायसात्यकिहि चिताये ॥
दोहा ॥ सुरतरुके दक्षिण तरफ़ रहे प्रद्युम्न सुबीर । लसेसात्यकी बामदिशि विशदबीर रणधीर ॥ संखापुत्र जानस्थको बायें दहिने राखि । कहे शक्रमति लरहु मम युद्धलखहु भयनाखि ॥
जयकरी ॥ इमि कहि तिनसों शक्र सनेह । मारेबाण गरुड़कीदेह ॥ तब खगराज रोष बिस्तारि । भिरेगजाधिपसों मुदधारि ॥ रदकर मस्तकसों गजराज । चोंचनखन पक्षन खगराज ॥ मारन लरनलगे अति कोपि । दोऊ प्रबल प्रलय आरोपि ॥ किये मुहूर्तक युद्धमहान । तब अतिकोपि सुपर्णअमान ॥ नख अंकुश अति कठिन कराल । मारतभे गजपतिकेभाल ॥ ताते ह्वै व्याकुल गजराय । मूर्च्छित परे भूमिपै आय ॥ पारिजात गिरिपै सहजिष्णु । आये तितहीं सगरुड़ विष्णु ॥ ऐरावत जब भये सचेत । तब सुरनायक सत्व निकेत ॥ अतिशय प्रबल गरुड़ को लेखि । मारनलगे बज्रसों तेखि ॥ जितने बज्र हने सुरराज । तितने पक्ष तजे खगराज ॥ बज्र बज्र प्रति इक इकपक्ष । जानि प्रभावहि तजे सुपक्ष ॥ लहिअमान खगपति को भार । सो गिरिदबिगो भूमि मँझार ॥ बाहेर रह्यो कछू जब शेष । तब गिरि आरत धरिकै भेष ॥ कीन्हेसि बिनयकृष्णसों चाहि । तब प्रभु करि आश्वासित ताहि ॥ खगपतिको यह दिये निदेश । तुम उड़ि शीघ्र रहौ नभ देश ॥ प्रभुकीआज्ञापाय द्विजात । अन्तरिक्ष रहि भये बिभात ॥ तब प्रद्युम्न कहँ पुरी पठाय । निजरथ लीन्हे कृष्ण मँगाय ॥ रथलखिसादर महिपै आय । तापै आपु चढ़े प्रभुजाय ॥ सात्यकिऔ प्रद्युम्नसों भाखि । शोभित किये गरुड़पै राखि ॥ दोहा ॥ सात्यकि सतरु प्रद्युम्नसह खगपति परमापूरि । रथके पीछे चलतभेहिये भरे मुद भूरि ॥ सत्वरप्रभुगे जहँ रहे सुरपति सहित गजेन्द्र ।

लखालखी करि फिरि लगे लरनमहेन्द्र उपेन्द्र ॥ चौपाई ॥ अति-
शयश्रमितगजेन्द्रहिदेखी। कहेइन्द्रसोंकृष्णसुभेखी॥ लखिखग-
पतिको किये प्रहारा। है अतिश्रमितगजेन्द्र उदारा ॥ करिनहिं
सकै कछूपुरुषारथ। तात सुनहुहमकहैं यथारथ॥ ताते युद्ध नि-
वारणकरिये। संध्याभई कृत्यअनुसरिये॥ निशिगजपति श्रम
लेहिं बिहाई। फेरिभोर चढ़ि करब लराई॥ करि प्रणाम यह
मंत्र दृढ़ाई। पुष्करतट उतरे दोउभाई॥ ब्रह्मा कश्यप अदिति
सोहाये। सुरमुनि गण बसु सबतहँ आये॥ पारिजात गिरिपर
बिश्रामा। करिदीन्हे प्रभु आशिष आमा॥ मेरु सुगिरिते आ-
धी महिमा। होइहि पारिजात तव महिमा॥ फिरिप्रभु निशा
शेष लखिलीन्हे।आवाहन सुरसरिको कीन्हे॥ आइतहां सुर-
सरिशुचिधारा। महिमा जासु अनूप अपारा॥ तामधि करि
स्नानसबाहन। कियेशंभुको तहँ आवाहन॥ प्रकट भये तहँ
शिवशिव कूजन। बिधिवत तासुकिये प्रभु पूजन॥ गंगोदक
दल बिल्वचढ़ाई। बेदस्तुति बरकहे बनाई॥ बेदस्तुति सुनि
शिव सुखदाई। ईषद दाक्षिण हाथ उठाई॥ प्रभुहि दये बरदा-
नसोहाये। तेसुनि प्रभुअति आनँद पाये॥ दोहा ॥ कृष्णहिदै
बरदानइमि कहेशंभु अभिराम। होइहि इतमम मूर्तिबर बिल्वो-
दक यहनाम॥ सुरधुनिकी धाराबिशद इतआने तुमजौन।
सुरसरि सरिद्वल रहिहि लहि नाम अबिंध्यातौन॥ रोला॥ जे
अबिंध्या सुरधुनी में तीनिदिन इतन्हाय। पूजिहैं बिल्वोदकहि
उपबास करियुतचाय॥ परम आनँद ओक इच्छित लोकते
जनपाय। बिलसिहैं इमिकहि कहेफिरि शंभुप्रीति बढ़ाय॥ धरा-
धरके तरेषटपुर नाम पट्टन अत्र। दीह दानवबसत हैं बहुबि-
घ्नकारकतत्र॥ जानि तृणवत मानुषहि बरमांगिबिधिहि अरा-
धि। भयेसुर गणते अहतले महत बलब्रत साधि॥ बधहुताते
तिन्हहिं तुम त्रयलोकपति नररूप। अमर नरबर अपर हो-

हिं जुअपर अडर अनूप ॥ शंभु इमिकहि जातभे तब कृष्ण प्रभु अनुमानि। पारिजात सुशैलसों इमिकहे आनँद खानि॥ सुनहुपर्वत श्रेष्ठतव अध बसतदुष्ट सुरारि। करहु तिनकोनाश जिमिहम कहहिं यत्न बिचारि ॥ दीहदलबल दानवन तुमदेहु दलमालिदाबि । बासममतव उपररैहै नित्य हे मेधावि ॥ शिला लै तव मूर्त्ति ममरचि पूजिहैं जे जानि। पाइहैं चित रुचित फल रहि सुचितते सुखदानि ॥ पारिजात गिरीन्द्रको इमि दै निदेश सुकाम । सौरिसौरि सगौरिको चढ़ि सुरथपै अभिराम॥ जाय पुष्कर तीर शक्रहि भये टेरत बीर। टेर सुनि रथ चढ़ि भिरे बढ़ि पाक शासन धीर ॥ रथी अरथी सुतरुके शुचि पथी पूरण क्रुद्ध । शुद्ध जय के लुब्धते तहँ किये उद्धतयुद्ध ॥ सगिरि बसुधा भई कम्पित दिशानि जहँ लगिछोर। घोरधनु टङ्कारको दश ओर भरिगो शोर ॥ देखि बेधा कहे कश्यपअ-न्दिति सों मुसुकाय । जाय बर्द्धित युद्ध वारहु सुतनकहँ समु-झाय ॥ मानिरथ तहँ शीघ्र दम्पति तेज पुंज उकाढ़ । जाय इन्द्र उपेन्द्र के भे मध्यमहि में ठाढ़ ॥ देखि मातहि पितहिरथ ते उतरि ते तजिशस्त्र । नौमि बिधिवत गये चलिवै खरेहैं तहँ यत्र ॥ दोहा ॥ गहिकर तिनके अदिति इमि कहतभई मुदपूरि। सोदर ह्वै कोउ लरतहै यहि बिधिभरि रिस भूरि॥ मानिबचन मम क्रोध तजिसंग निरायुध जाय। न्हाय आयइत करहुसुत जो हम कहैं बुझाय॥ चौपाई ॥ मातु बचन सुनिते सुखपाये। जाय समुदसुरसरिमें न्हाये॥ करत यथोचित बातें भाई। पितर पास आये दोउ भाई ॥ सो प्रिय संग प्रणाम सुभेशा । तबसो भयो सुनो मनुजेशा ॥ तब सब सुर सुरपुर कहँ उगरे । चढ़ि चढ़ि यानन सरस उजगरे ॥ कश्यप अदिति शक्र यदुनायक। एक यान पै चढ़ि मुद दायक ॥ जाय शक्रके सदनसुखारे। अदिति चित्र रमणीय निहारे॥ पेखिशचीअति आनँद ली-

न्हीं । सासु ससुरको पूजनकीन्ही ॥ तेहि दिन तहँ निवास करि मोदे । सादरसह परिवार बिनोदे ॥ भोरभयेकश्यप गुरुज्ञानी। कहे कृष्ण सों इमि अनुमानी ॥ सुनहुतातसुरतरुलै जाहू। करहुजाइ बिधिवत उत्साहू ॥ फिरि सुरतरु इत दिहेहु पठाई। सदासनेह रहेहु दोउ भाई ॥ इमिकहि बिदा कृष्णकोकीन्हे । चले कृष्ण अति आनँद लीन्हे ॥ चलती बार सतीकरि रोचित । दीन्हो भूषणबसन यथोचित ॥ ह्वै सुरपति सों बिदा सोहाये । प्रभुरैवत गिरिवर पहँ आये ॥ रहि तहँ सुरतरु सहित सुभेशा । सात्यकि कहँ इमि दिये निदेशा ॥ तुम अब शीघ्र द्वारका जाई । मोदहु यह वृत्तान्त सुनाई ॥ दोहा ॥ पारिजातको करबहम नगर प्रबेश न आजु । ताहित सब पुरजन करहिंमंगल उत्सवसाजु ॥ प्रभुनिदेश सुनि सात्यकी द्वारावतिमें जाय। ब्रह्मादिक सब कहँ दये सब वृत्तान्त सुनाय ॥ चौपाई ॥ सुनि यदुबंशी अति सुखपाये । पुरजन परममोद सों छाये ॥घरघर मङ्गलसाज सुसाजे । बजवाये मनभाये बाजे ॥ साम्बहि आदि कुमार सुखारे । यदुबंशीपुरजन मुद धारे ॥ चढ़ि चढ़ि गजरथ अश्वन भाये । सात्यकिके सँग प्रभु पहँ आये ॥ यथा उचित सब सों मिलि स्वामी । चढ़े सुरथपै अन्तरयामी ॥ पारिजात सह खगपति पाहीं। चढ़ि प्रद्युम्न मोदे मन माहीं ॥ यहिबिधि पुर प्रवेश प्रभु कीन्हे । लखि पुरजनअति आनँद लीन्हे ॥पारिजात कहँ लखि मन भाये । जेजन जो चाहे सो पाये ॥ प्रभु निजगृहमें जाइ अनन्दे । पितुजननी गुरुजनकहँ बन्दे ॥ रामहि आदिक यादव तिनसों । मिले उचित जिमि मिलबोजिन सों ॥ फिरि प्रभु निज निवास गृहजाई। सत्यभामासहगे सुखदाई ॥ कामरूप तरुवर कहँ सानँद । सत्यभामाकहँ दीन्हे मानद ॥ पारिजात तरुवर लहि आमा। भई परम मोदितसत्यभामा ॥ तब प्रभु दान हेतकी सामा । सम्पादित तहँ किये

ललामा ॥ दान ग्रहणहित आनँद लीन्हे । आवाहननारदकर कीन्हे ॥ जानिहेतु नारदतहँ आये । पूजियथोचित प्रभु बैठाये ॥ दोहा ॥ भोजनादि ब्यवहार करि दान प्रतिग्रह हेत । मुनिहि निमंत्रण दिये प्रभु बुधिबलज्ञाननिकेत ॥ प्रातकृत्यकरिप्रातहीं हेम कूट मय रत्न । भूषणबसन सुधान्य के बिरचे कूट सयत्न ॥ चौपाई ॥ पति निदेश लहितबसत्यभामा । लैबिचित्र कुसुमनकी दामा ॥ पारिजात में कृष्णहि बांधी । प्रमुदित मंजु मनोरथ सांधी ॥ सकल पदारथ सहमुद लीन्ही । सबिधि समर्पिसुमुनि कहँ दीन्ही ॥ स्वस्तिबोलि लै मुनि अभिलाषे । हास्यबचन बहुबिधिकेभाषे ॥ तिय अधीन पियसुनि नहिंमाने । अब यह बचन सांचमम जाने ॥ बांधि गरे तब पुष्पित गुनको । दीन्ही सत्राजीत अपुनको ॥ अब तुम केशव मम आधीना । चलहु संग मम सुनहु प्रबीना ॥ यहि बिधि कहि प्रभुसों मुनिज्ञानी । सत्यभामासों कहे सुबानी ॥ सत्यभामा अब निज पतिलेहू । निष्क्रय हम माँगहिंसो देहू ॥ कपिला गऊ सबत्सा चारू । कृष्णाजिन तिमि पूर्ण शिंगारू ॥ सोदै सत्यभामा मुद दाती । लीन्ही पतिहि प्रेम सों राती ॥ ह्वै प्रसन्न तब दानदमानद । प्रभु बोले मुनिबर सों सानद ॥ नारद मांगहु बर मनभावन । सो अब तुमहिं देहिं हम चावन ॥ सुनि मांगेमुनि भक्तिसोहावनि । अरु सुरलोक गवनि गति पावनि ॥ जनन अयोनिज लहउँ गोसाईं । होउँ सुब्राह्मण अबकी नाईं ॥ एवमस्तुतबकृष्ण उचारे । सुनि नारदभे परमसुखारे ॥ दोहा ॥ जिती सपत्नी गण तिन्हैं सत्यभामा गहि मोद । न्योति बुलायेही तितै निरखन हेत बिनोद ॥ एकएक तिनकहँदये सानँद सुभगसुभेश । भूषण बसन बिचित्र जे दये शची केबेश ॥ चौपाई ॥ कृष्णचन्द्र तहँ रेवति बुलाये । लखनहेत आनँदसों छाये ॥ पारिजात की बिशद बिभूती । अमल अपूर्ब अनूप अकूती ॥ सुभद सु-

भद्रा कुन्तीरानी। सहित द्रौपदी पाण्डवज्ञानी॥ भीष्मकआ-
दि सहित जे राजा। तिन्हें बोलायलये सहसाजा॥ यथाकाल
प्रभु तिन्हें रमाई। कीन्हें बिदा प्रीति दरशाई॥ पारिजात
अनुपम सुरसाखी। सम्बत्सर प्रमाण तहँराखी॥ गये स्वर्ग
लै ताहि विचारी। कृष्णचन्द्र चातुर नयचारी॥ बन्दिअदिति
कश्यपके पावन। शक्रहि दये देवतरु पावन॥ कश्यपअदिति
सुआशिष दीन्हें। सुनि केशव अति आनँद लीन्हें॥ कुण्डल
अरु किरीट छबिछाये। दये कृष्णकहँ शक्र सोहाये॥ कहेशक्र
सों प्रभु अनुमानी। देवराज सुनिये ममबानी॥ पारिजातगि-
रितरु उनमादी। है राक्षस सुरगणके बादी॥ करनतासु हम
बधधनु धैकै। तब तुम प्रबर जयन्तहिलैकै॥ तेहि गिरिकेऊ-
रधनभबारी। रहियो खरेखरे धनुधारी॥ इमिकहि माधवनिज
पुरआई। बधेजाइ राक्षससमुदाई॥ फिरिपुर आइ मोद हिय
गहिकै। किये बिहार पूर्ववत रहिकै॥ दोहा॥ बरण्यो यहि अ-
ध्यायमें पारिजातके हेत। किये युद्धजो कृष्णअरु शक्रसुसत्य
निकेत॥ पारिजात गिरिराजपै जेहि बिधिभयो मिलान। सो
कहि कहे यथाकरी सत्यभामा पतिदान॥ सोरठा॥ पारिजातलै
जाय प्रभु दै आये शक्रकहँ। सो कहि कहे सचाय तदनुज
बिना न पुररमन॥

इतिहरिवंशदर्पणेपारिजातहरणोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

दोहा॥ वैशम्पायनसों कहे फिरिजनमेजयभूप। मुनिबरतुम
सर्बज्ञहौ तपबर परमअनूप॥ चौपाई॥ व्यासहि प्रियबहुश्रुत
गुरुज्ञानी। मुददायक कर्त्ता प्रियबानी॥ सुनिमम बचन अ-
नुग्रहगहहू। ब्रतउत्पत्ति तात अबकहहू॥ सुनिभूपतिके बचन
अमोले। प्रेमपूरि मुनिबरइमि बोले॥ ब्रत बिधि प्रथम उमा
उपजाई। साबिधि सुनहु सो नृपमनलाई॥ षटपुरस्थ दनुजन
कहँ मारी। जब प्रभुभये द्वारकाचारी॥ तब नारदमुनिबरतहँ

आये। पूजि यथोचित प्रभु बैठाये॥ प्रभुके सन्मुख रुक्मिणि रानी। ब्रत बिधि बूझी मुनिसों मानी॥ रहीं तहां आठौं पटरानी। अरुषट दशहजार सबरानी॥ रुक्मिणिकही सुनहुमुनिराई। ब्रत उत्पत्ति कहहु समुझाई॥ अरुबिधिसमय दानफलयोगू। संयम नियम सुदेव प्रयोगू॥ मुनिबोले इमि सुमुनिबिरागी। सुनु रुक्मिणि पतिब्रत अनुरागी॥ पूर्व उमा पुण्यकब्रतकरिकै। ब्रतके अन्त सुबिधि अनुसरिकै॥ न्योति बुलावत भई भवानी। सकलदेवपत्नी शुभदानी॥ दक्षप्रजापति की सब तनया। सब ऋषि मुनिकीपत्नी सनया॥ सबदिगपालन की प्रियनारी। सिद्धसाध्यकी पत्नी प्यारी॥ स्वाँहा सावित्री शुभचरिता। अरु गंगाआदिक सब सरिता॥ दोहा॥ तियापितृपतिकी बिशद अष्टबसुनकी नारि। ह्री श्री धृति अरुकीर्त्ति मति मेधा मुद दातारि॥ सन्नति आसा प्रीतिअरु बारुसुब्रता ख्याति। आइशिवाके ढिगभई ये सब तहां बिभाति॥ चौपाई॥ इन सबकहँ तहँ पूजि भवानी। देतभई बिधिवत बिधिजानी॥ पर्बत रचितिलधान्य रतनके। भूषणबसन सुबिबिधयतनके॥ हमहूं एकशैलतहँ पाये। हमलै दये द्विजनकहँ भाये॥ बिरचि सभा तहँ सकल सयानी। लगीं कहन शुभ कथा कहानी॥ तब लहि सबको सम्मत सुहिता। अरुन्धती शुचि शशिकी दुहिता॥ पत्नी मुनि बशिष्ठकी ज्ञानी। कहत भई गिरिजासों बानी॥ पुण्यक बिधि प्रभाव सुखदाता। कहहुउमा त्रिभुवन की त्राता॥ कहतभई तब शैलकुमारी। ब्रत प्रभावसुनुपतिब्रतचारी॥ ब्रत बिधि कामद सुकृती जनको। होत होत नहिं कुटिल कुमनको॥ जे पतिब्रता साधु प्रियबादिनि। शुचिसउम्यप्रिय हिय अहलादिनि॥ सुबुधि सुशीलसुकारज करता। मन बच क्रम पतिमनअनुसरता॥ ब्रत अरुधर्म सुफलहै तिनको। नहिं कुत्सित सुभावहै जिनको॥ दुष्टाअप्रिय बचन प्रलापि-

नि। रुक्ष संक्रुद्ध अशुचिसन्तापिनि ॥ स्वामी दुखी रहत हैं जाके। बृत संयम सब निष्फलताके॥ ते तिय अवशि नरक अधिकारी। इतउत रहहिं न कबहुँ सुखारी॥ जो ये चेतिपति-बृतधरहीं। तौकरि प्राश्चित अवशि उधरहीं॥ दोहा॥ पतिबं-चक पर पुरुषरत तिनको नाहिंउद्धार। घोर नरकमें परिकैं ते तिय निकर बिहार॥ कुत्सितयोनिनमें भरमि जो पावैंनररूप। तौ वै डोमिनि ह्वै बहुरि परैं नरकके कूप॥ क्रोधी कपटी क्रूर शठ कुपथी मूढ़ मलीन। दीन दारिद्री दुष्ट अरु कलुषितरोगी क्षीन॥ ऐसेऊ पतिको तिया जानै देवसमान। सो तिय पति सहस्वर्ग लहि बिहरै कल्पप्रमान॥ जयकरी॥ जे पतिभक्ता ति-यासुजानि। तिनकहँ बृत संयम सुखदानि॥ तिनके हित बृत को सुबिधान। कहौं कहे जो शम्भुसुजान॥ सुबुधि तियाउठि प्रात अन्हाय। लै पतिकी आज्ञा सुखदाय॥ बंदि ससुरके च-रण सुजानि। सकुशताम्र भाजन लै पानि॥ दक्षिणशृंग सुर-भिको चारु। सींचिलेइ तामें जलधारु॥ धरि पतिके आगेज-लसोय। पतिसहकरि मार्जन सुख भोय॥ तीनिलोकके तीर्थ महान। मनु कीन्हों तिनमें अस्नान॥ यहि मार्जनको चारुप्र-योग। नारी पूरुष सबके योग॥ अमल असीये आसनडारि। महि पै शयन करै बृतधारि॥ अश्रुपात रिस कलह चबाव। कीन्हें रहै न बृतको भाव॥ धारणकरै बस्त्र शुचि श्वेत। शौच्य शिंगार न करै सकेत॥ दन्तकाष्ठनहिंकरै सचाय। मलै न ब्रार मसाला लाय॥ मृत्तिकासोंसब करैबिचारि। छुवै न कबहुं तैल ब्रतधारि॥ गो बाहन करि चलै ननेक। नंगे न्हाइ न जानि बिबेक॥ रुचिसों न्हाय सरित मोजाय। कैअन्हाय भरनाजल पाय॥ कै तड़ाग कै बापीबेश। क्रमसों ये अस्नान शुभेश॥ दोहा॥ ये अलभ्य जो होइ तो नूतनघट भरवाय। स्नान करै तियशीशसों ब्रत बिधिधारिसचाय॥सम्बत्सरपर्यंतकै कै घटमा-

स सनेम। मास एककौतिय करैं यहि बिधि सुब्रतसप्रेम॥चौपाई॥
शुक्लपक्षकी नवमी लहिकै। ब्रत आरंभैं आनँद गहिकै॥ शुक्ल-
पक्षकी नवमी पाई। ब्रत उद्यापन करै सोहाई॥ तिय सावित्री
सुभगएकादस। बिधिवत तिनकहँ पूजिअनालस॥ सविधि
समर्पि अचार्यहि देकै। दै निष्क्रय फिरितिनकहँलैकै॥ दान
मानसों तोषि सुज्ञानी। बिदाकरैं तिनकहँ बिधिजानी॥ करि
उपवास ताहिदिन यामिनि। उत्सव दानकरैं बरकामिनि॥
क्षौरकर्म पतिसहकरवावैं। जेहि यशउचित बूझितेहि भावैं॥
स्नान शिंगारयथोचित तादिन। करैंप्रबीण प्रियाप्रियबादिन॥
स्नानहेत शुचिकुम्भभराई। पढैं मंत्रयह तिय सुखपाई॥--आ
पोदेव्यःऋषीणांहि बिश्वधर्य्यादिव्यामदंत्योयशस्करा। धर्म
धात्र्यःहिरण्यवर्णाःपावकःशिवतमेन रसेनश्रेयसेमांजुषन्तु--॥
इतिमंत्रः॥ यह पौराणिक मंत्र सुहावन। पढ़िअस्नान करै तिय
चावन॥ स्नानकरत बांछितफलमांगे। सो लहि तियआनँदसों
पागे॥ भूमि बायु नभ जलशशि सूरहि। साक्षीकरै अग्निगुण
पूरहि॥ दिशिदेबिन ब्रतसाक्षी करिकै। धारि बसन शुचि आ-
नँद भरिकै॥ निज करतित बिरचित पढ़शुचि सों। देइपतिहि
तब समुद सरुचिसों॥ नालरु अन्य सुबसन मँगाई। निज
काते इकसूत मिलाई॥ देइ पतिहि तदनन्तर नारी। पूजिद्वि-
जबरहि पतिब्रत धारी॥ दोहा॥ भोजन ताहि कराइ कै धौत
बस्त्रदै दोय। गऊदेइ फिरि देइतेहि यथा शक्ति सुख भोय॥
पय दधि घृत मधु लवण गुड़ पै प्रतिमा रचिभोरि। देइ द्विजन
कहँ मोदसों पूरित प्रीतिअथोरि॥ रजतहेम अरु ताम्रकी प्रति-
माविप्रहि देइ। देइ चारु तिलपात्र अरु गऊ सवत्सादेइ॥ देइ
तिलन सों पूर्णकरि कृष्ण मृगाको चर्म्म। भूषण बसन सआ-
दरसदेइ पूरिवरधर्म्म॥ भांति भांतिके सुफलअरुसुमनद्विजन
कहँदेइ। जीवघात नहिं करइयह सीख सुखद सिखिलेइ॥ भा-

ग्यवती शुचि सुतवती अरु धनवती सुजानि। यह ब्रतकरि तिय होतहै लहि बांछित सुखदानि॥ सोरठा॥ बरबांछित फल पाय भोगि भूमिपै भावनी। फिरि लहि स्वर्गसचाय पतिसह बिलसति कल्पमिति॥ सुनि शशिसुता सुज्ञानि प्रथमहि यह ब्रत हमकरो। ताते यह सुखदानि भयो उमाब्रत नामबर॥ जयकरी॥ अबब्रत कहहु दुतिय सुखदानि। सुनहु अरुन्धति सरससुजानि॥ जेहि बिधिमोसों कहे इशान। मैं तुम सों सो कहौं बिधान॥ जेष्ठ अषाढ़ मासमें मानि। एक एक कै दूनो जानि॥ करि आचरण कहे जिमि पूर्व। कामिनि यह ब्रत करै अपूर्व॥ जलपथ दधिघृत मधुगुड़ चारु। तिल सर्षपसों करक उदारु॥ पूरि पूरि ब्रत के अवसान। देइद्विजन कहँ सहित बि-धान॥ कांचन रजतसबत्सा गाय। भूषणबसन धान्यसुखदाय॥ यथाशक्ति द्विजबर कहँ देइ। मोदितकरै चरणशुचिसेइ॥ भो-जन करवावै मन मान। देइ दक्षिणा करि सन्मान॥ खाइ सु अन्न प्रथमदिन जौन। ब्रत पर्य्यन्त खाय तियतौन॥ पहिले दिवस दिवसमें खाय। भोजन करै दिवसतौ पाय॥ भोजन करै प्रथमजो राति। तौब्रतभरि निशिमें मुदराति॥ दिनमें भोजन करि ब्रतधारि। कांचनको रबिदेइ सुनारि॥ निशिकेनेम चन्द्र ग्रह देइ। सुनहुअरुन्धति ब्रतयह सेइ॥ लहै सुपुत्र सरुचि सो बाल। भाग्यवान धनवान बिशाल॥ कन्याइछैजो तिय सोइ। कन्यालहै न मिथ्याहोइ॥ दोहा॥ सम्बत्सर पर्य्यन्तजो करै तियाब्रत येहु। संयमसों रहि नियमयुत पूरितपरमसनेहु॥ लहि आज्ञा पतिकी शुभद देइ द्विजनकहँ दान। जेहिविधि कहिआये सुफल करकादिक सुखदान॥ मास मास प्रतिदान बर करै सशक्ति अकूत। देइ कार्तिकी पूर्णिमा मयकंचनकेसूत॥ लौवा भांटा अमिषनहिं भोजनकरै सुजानि। कांचनकी लौकी बिरचि देइ द्विजन सन्मानि॥ यह ब्रतकरि युवतीलहै अवशि

सुपुत्र सुजान । सावित्री रहि सर्ब सुख भोगि लहै दिवयान ॥
चौपाई ॥ अति उत्तमबपु चाहइजोई । अब जो कहउँ करैसिख
सोई॥दीरघ कुटिल श्यामकचचारू।कोमलजेहि मोहैभरतारू॥
चाहै तियासो असिती नीकी । पाइ अष्टमी सुखदाजीकी ॥
बसन श्वेतधरि सरस अचारू । कंद मूलफल करइ अहारू ॥
प्रात ब्राह्मणहि भोजन दैकै । भोजन करै आपु मुदलैकै ॥
यहिबिधि सम्बत्सर भरिनारी । करै बिशदब्रत बिहितबिचारी॥
सम्बत्सर पूरे सुखमाबर । देइ द्विजहि सितचारु सुचामर ॥
चमरी गोको असित सुकेशा । देइ दक्षिणा सहित सुभेशा ॥
होहि अपूर्ब केश तौताके । अति दीरघ शुचि श्यामप्रभाके ॥
शीश निरोग चाहु जो कोई । गोमय सोकच मींजे सोई ॥
आँवरा बेलगिरी सों पीछे । मींजै चिकुरअरुजशिर ईछे ॥ जल
सों धोयकरै अस्नाना । नित गोमूत्र करै शुचिपाना ॥ कृष्णा
चारु चौदशीपाई । यहबिधिकरै तरुणि सुखदाई ॥ भाग्यवती
निरुजा सो कामिनि । होइ परम पतिकी मन भामिनि ॥ अति
सुन्दर ललाट जो चाहै । सो अब कहौं बचन सो पाहै ॥ प्रति
प्रतिपदकहँ दृढ़ ब्रतधारी । अलवण भोजन करैबिचारी ॥ एक
बारपय घृतसों खाई । सुखद सुअन्न मोदसों छाई ॥ दोहा ॥
सम्बत्सर पर्य्यन्त इमि ब्रतकरि सहित बिधान । पत्र रजतको
भालमिति देइ बिप्रकहँ दान ॥ अति सुन्दर भ्रू जोचहै सुनो
तासु उपचार । प्रति दुतियाको ब्रतकरै करि फलमूलअहार ॥
सम्बत्सर पर्य्यन्त करि यहि बिधि सुब्रत बिधान । माषलवण
घृत दक्षिणा देइ द्विजनकहँ दान ॥ श्रुति अतिसुन्दर चाहि
तिय श्रवण नक्षत्रहि पाय । सम्बत्सर पर्य्यन्तरचि सरशुचि
यवकोखाय ॥ सम्बत्सरके अन्तमें श्रुति सुवरणके दोय । देइ
बिप्रकहँ डारिकै घृतमें आनँदभोय ॥ सुन्दरि नासा जो चहै
सो सुन्दरि सुखपाय । तिलको गुलुम अलोपिकै सींचन करै

सचाय॥प्रथम दिवस बृत करइ वहि सींचनलायक जानि। दूजे
दिन सींचन करै याही क्रमसों मानि॥ जबवह फूले फूलतब
वाको घृतमेंडारि। सहित दक्षिणा द्विजनकहँ देइ परममुदधा-
रि॥ कबहुं न ताकी नासिका में न होइ रुजजाय। अति सु-
न्दरचष जोचहै अबसुनु तासु उपाय॥ सम्बत्सर पर्य्यन्तसो
कामिनि अलवण खाय। सम्बत्सरको अन्तलहि उत्पल पत्र
मँगाय॥ सीरे पयमें डारितेहि देखि तरुणि सुखदानि। सहित
दक्षिणा द्विजनकहँ देइ दान सन्मानि॥ मनमोहन सुन्दर अ-
धर चाहै जो शुभनारि। सो मृतिकाके पात्रमें पिये वर्ष भरि
बारि॥शुचि ह्वैके शुचिगेहमें नौमीको दिनपाय। बैठिरहै तहँ
आपुसों देइ कोऊ सो खाय॥ यहिबिधि सम्वत्सर बितै करै
सुविद्रुमदान। होहिं अधर तेहि तरुणिके कुंदुरू रूपसमान॥
चारुदशन चाहैतरुणि एकबार तौ खाय। शुक्लपक्षकी अष्टमी
में भरिबर्ष सचाय॥ सम्बत्सरके अन्तसों दशन रजतकेदेइ।
डारि दूधमें दशनमित द्विज पद पंकजसेइ॥ मुखअतिसुन्दर
चाहि तिय प्रति पूनो लहि जानि। चन्द्रोदय लहि न्हायकै
बिप्रनकहँ सन्मानि॥ यवकी जाउरि चारुशुचि सघृतासिता
ताहि। प्रिय भोजन करवाइकै देइ दक्षिणा चाहि॥ सम्बत्सर
पर्य्यन्त इमि बृतकरि तिय अभिलाखि। देइ भूसुरहि रजतको
चंद कमलपै राखि॥कुच श्रीफलवत चारुचहि पियप्रति दश-
मी पाय। रहै मौन ह्वै बैठि जब देइ कोऊ तबखाय॥ सोरठा॥
द्वै कांचनके बेल सम्बत्सरके अन्तमें। करि सुधर्मसोंमेल देइ
भूमिसुर कहँ तरुणि॥ चाहि कृशोदर नारि एक अन्नभोजन
करै। वर्ष दिवस बृतधारि पुण्यशीलरहि शुचिसदा॥ अन्त
तोय सँगखाय सरुचि पंचमीके दिवस। मास बारहोंपाय स-
हित मान द्विजबरनकहँ॥ चारु चमेली बेलि पुष्पित देय
सदक्षिणा। सो तिय करता केलि होइ कनककी बेलि सी॥

तिय अति सुन्दर पानिचाहि द्वादशीके दिवस। करि फलभो-
जन जानि बर्ष एकबर ब्रत करै॥ द्वादश मास बिताय कमल
देइ शुचिकनक के। बिप्रहि देइ सचाय होहिं तासु करकमल
से॥ बर्तुल उन्नतपीन चाहि नितम्ब नितम्बिनी। प्रतित्रयो-
दशी प्रबीन एक बार भोजन करै॥ पूरे बर्ष उदारु कमलासन
रचिलवणके। अरु कंचनके चारु देइ सबस्त्र महीसुरन॥ मधुर
बचन अभिलाखि बर्ष एक वा मास भरि। लवणछोड़ि मुद रा-
खि दानदेइ फिरि लवणको॥ मांसल चारु सुबेष चाहिगुलुफ
कामिनि सुनहु। प्रतिषष्ठी शुभभेष खाइउदक ओदनसरुचि॥
बहानि बिप्र अरु गाय छुवै न कबहूंचरण सों। जो धोखे छुइ
जाय तौ सशोच बन्दै तिन्हैं॥ चरणचरण सों नेक धोवै कबहूं
भूलिनाहिं। देइ द्विजहि सबिबेक दोय कुर्मरचिकनकके॥ दोय
कमल के फूल उलटि राखितेहि पूजिकै। कामद आनँदमूल
देइ सहेम द्विजाति कहँ॥ अति सुन्दर सब देह कामिनि चाहि
बसन्तमें। तीनि दिवस युत नेह करै सुब्रत अतिमोदसों॥ मं-
जुल मासअषाढ़ आश्विनकार्तिक ज्येष्ठकी। लहिपूनोगुणबाढ़
बिधिवत ब्रत कामिनि करै॥ करि शुचिसुन्दर गेह चित्रितकरै
सुचूर्णसों। मधुरबचन सह नेह दासिनहूंसों कहइ प्रिय॥ दोहा॥
मिथ्याकबहूंनाहिं कहै सदासउम्य दयाल। देवाराधननित करै
रहै सदा खुशहाल॥ ब्राह्मण भोजन प्रेमसों करवावै सुखदा-
नि। होइपरम सुन्दरि तरुणि पियप्यारी सुखदानि॥ चौपाई॥
शतसुबंधु इच्छौतिय जोई। प्रति सतिमीमें ब्रत करि सोई॥
चौबिशई सप्तमि लहि भामिनि। अरपै वृक्षहेमको कामिनि॥
दक्षिणा देइ द्विजनकहँ भूरी। तौ शतबन्धु लहै मतिपूरी॥ दि-
पतदीप कंचनके बारी। देइ दीप घरमें धरि नारी॥ दिपै दीप
वत तौ सबतियमें। रमै निरन्तरपियमें हियमें॥ जे शुचिसदा
चार रत भामिनि। सौम्य सशील सुसतपथगामिनि॥ पति-

ब्रत रत पतिकी अह्लादिनि। प्रियकर प्रकृतिसदाप्रियबादि-
नि॥ सासु श्वशुर की सेवा करहीं। ले बिनु ब्रतहि मोदसोंभ-
रहीं॥ दैव योग जोतिय पतिबरता। बिधवा होहिं सुपथ अनु-
सरता॥ ते मृण्मय वा कागद माहीं। पूजहिं रचिपतिरूप स-
दाहीं॥ तासों आज्ञामांगि सुनावै। ब्रतकरि मृत्युसुलोकतपावै॥
ब्रत बिधि गिरिजासों सुनि सुनिकै। बंदि सतिहि करिबे गुनि
गुनिकै॥ ह्वै ह्वै बिदा उचित कहि कहिकै। गईं सकल आनँद
गहिगहिकै॥ सो ब्रत अदिति प्रेमसों कीन्हीं। ज्यहि बिधिगि-
रिजासों सुनि लीन्हीं॥ पारिजात सहपतिको दाना। कीन्ही
अधिक नवीन बिधाना॥ तबसों भयो अदितिब्रत नामा। सो
ब्रत कीन्हो अब सत्यभामा॥ दोहा॥ सावित्रीसों सुब्रत करि की-
न्हीं अधिक इतेक। संध्यालहि देवारचन दुगुणित जबसबिबे-
क॥ इंद्राणी सों उमा ब्रत करिइतक अधिकाय। चौथे चौथे
दिन दई कुम्भ सहस्र भराय॥ चौपाई॥ सोई ब्रतफिरिसुरसरि
कीन्ही। इतक बिधान अधिक करि दीन्ही॥ ऊषाकाल अन्हान
सोहावन। करै सप्रेम सदाचित चावन॥ कुंभ सहस्र पूर्ण करि
देई। गंगा तटमें आनँदलेई॥ यह सब ब्रत सनेम जो करई।
मुद मंगल सो इतउत भरई॥ सातसात पूर्बन कहँ तारै। स्व-
पति स्वर्ग लहि मुदित बिहारै॥ कीन्हींबर ब्रत यमकी पतिनी।
ऋतुहिमन्तमें पतिब्रत ब्रतिनी॥ नाम जामरथसुत सुखदाई।
यह करि कोउ यमलोक न जाई॥ देश अनाछादितमें रहिकै।
प्रातन्हाय हिय आनँद गहिकै॥ पतिहि बन्दि बांछितफलमां-
गै। सोलहि कामिनि आनँद पागै॥ बिप्रनकहँ भोजनकरवावै।
देइ दक्षिणा बांछित पावै॥ ये ब्रत शिव गिरिजा सों भाखे। ते
हम गिरिजा सों सुनि राखे॥ ते पौराणिक ब्रत मन भाये। तुम
सबकहँ हम सबिधि सुनाये॥ मम बरतपके उग्र प्रभावन। व्रत
फल तुम सबलहहु सुभावन॥ सुनहु भूपनारद प्रियबादिक।

सो सुनि हरषीं रुक्मिणिआदिक ॥ रुक्मिणिप्रथम उमाबूतधारी । कीन्हींटृषभ दान अधिकारी ॥ फिरि करि जीववती सुखदाई । रत्नबृक्ष दीन्ही अधिकाई ॥ सत्यभामा करि बूत अधिकारी । दीन्ही पीतबसन पियधारी ॥ दोहा ॥ सर्वकामप्रद उमा बूत जे करिहैं सुखदानि । सर्ब सम्पदा सर्बफल ते लहिहैं सुख दानि ॥ बरणे इहि अध्यायमें नारदको सम्बाद । रुक्मिणिसों शुचि उमाबूत कोबिधिबर अहलाद ॥

इतिहरिबंशदर्पणेबूतोपदेशकथनोनामत्रिबिंशोऽध्यायः २३ ॥

दोहा ॥ बैशम्पायन सुमुनिसों बूझेन्टपशिरताज । पारिजातके हरणमें कहे आपु मुनिराज ॥ षटपुरके दानवन को कीन्हे कृष्ण निपात । काहे वै किमि बधे सो कहो सबिस्तर तात ॥ चौपाई ॥ जनमेजय भूपतिकी बानी । सुनि समोद बोले मुनि ज्ञानी ॥ त्रिपुरहि हते शम्भु रिस राचे । साठि हजार दैत्य तब बाचे ॥ जम्बू मार्ग बिषय ते जाई । लगे करन तप मंत्र दृढ़ाई ॥ जम्बू तरबैठे तहँ केते । कितने गूलरितर मुद हेते ॥ बटकपित्थ तरु किते सुखारी । बैठि लगे तप करन बिचारी ॥ अरु शृगालबाटी तर कितने । बैठे निज निज कारज हितने ॥ बिधिहि जपैंधरि धीर अपारा । रहि रबि मुखकरि बायु अहारा ॥ शिवहि जीतिबेकी करईहा । लगे करन तप महिपै ढीहा ॥ बटतर जे बैठेअनुमानी । बृह्मचिंतवत ते गुरुज्ञानी ॥ आइ तहां बृह्मामुदराखे । जम्बूतर वारेन सों भाखे ॥ मांगहु बर ते नहिं अभिलाखे । शम्भुहि जीतनकहँ हियमाखे ॥ तबबटतर वारेनसोंबेधा । बरंबूहि बोले बरमेधा ॥ शिव महिमाके जाननहारे । तेअकामता सरुचि उचारे ॥ फिरि जंबूतरबेधा आई । तिनसों कहत भये समुझाई ॥ उत्पति प्रलय नाशके कर्त्ता । शिव अनादि ईश्वर जग भर्त्ता ॥ तिनसों बैर न कबहूंपैहौ । श्रमकरि ब्यर्थपरे इतरैहौ ॥ दोहा ॥ ताते शिवसों जीतिकी बांछा तजि अनुमानि । चहौ

और बरदानसो मांगिलेहु हितजानि॥ तब ते करता सों कह्यो अबध्यत्व मोहिं देहु। सर्ब सुमनसों सबसों स्वामीसहित सनेहु॥ चौपाई॥ षट पुरदेहु भूमि तर स्वामी। तहँ बसि हम सब रहैं मुदामी॥ एवमस्तुकहि बिधि मुसुकाई। तासु मरण दिन दये बताई॥ जब तुम बैर बिप्र सों करिहौ। तब नारायणसों निज मरिहौ॥ बिधि निदेशलहि तबते जाई। बसे भूमितर छपुरबसाई॥ जेहैं बटतर आनँदलीन्हे। तिन्हैंआपु हर दर्शन दीन्हे॥ श्वेत वृषभपै चढ़े सोहावन। आयकहे तिनसों मनभावन॥ बैर दम्भ अरु ईर्षा कोहा। तजि तुममोहिं भजेहु तजिमोहा॥ ताते हम चलि तव ढिगआये। देनतुम्हैं बरदान सोहाये॥ जेइत तपकरिहैंमदराते। बानप्रस्थ बिधान सोहाते॥ मासबर्ष वाबिधिवतरैहैं। सहसबर्षको फलतेपैहैं॥ नाम श्वेतपाहन ममजोई। जपिहि लहिहि बांछितफलसोई॥ जंबूमार्ग जाय हम बसिहैं। यह इछि हैं ते ममढिग लसिहैं॥ इमिकहि तिनके गुणनि सुखारे। जे कपित्थ गूलरि तरवारे॥ अरु शृङ्गाल बाटि तरवारे। तिनहिंसहित निज लोकासिधारे॥ जम्बू तरवारे जे सिगरे। षटपुर बसे जायमति बिगरे॥ समय पायते गर्ब अहीने। भये काल बश बुद्धिमलीने॥ दोहा॥ ताहि समयातिनके निकट रहतरँहो तपधाम। याज्ञवल्क्यको शिष्य वर ब्रह्मदत्त यहनाम॥ रह्योकराये बिप्रसों अश्वमेध बरयज्ञ। श्री बसुदेव सुजानके परमप्रवीन कृतज्ञ॥ चौपाई॥ तबसों ताहि सखा करिभाषे। श्री बसुदेव प्रेम अभिलाषे॥ सांबत्सरिकयज्ञ आरोपन। करत भयो सो द्विजवर चोपन॥तहँ बसुदेवहि नेवाति बुलाये। ते दम्पति गे आनँद छाये॥ हे मुनि व्यास हमहिंसह तेहा। याज्ञवल्क्य जैमिनि सह नेहा॥ जाबालिदेवल आदि मुनीशा। रहे बहुत तहँ सुनहुं महीशा॥ ताही समयतहां बलपूरे। षटपुरके ते राक्षसकूरे॥ आदि निकुम्भ आय अ-

घसाने। ब्रह्मदत्तसों कहे अयाने॥ देहु सुरन कहँ जिमि गहि नेहु। यज्ञभाग तिमि हम कहँ देहु॥ हैं अनेक जे सुतातुम्हारी। देहु हमाहिं ते सुखमा भारी॥ रत्न अमौलिक जितने जोरे। हाँसोदेहुं बिनामनमोरे॥ यहसुनि ब्रह्मदत्त मुनि ज्ञानी। कहत भये तिनसों बरबानी॥ उचित न यज्ञभाग दैत्यनको। बूझिलेहु तपबर मुनिगनको॥ हैं सब सुता समर्पित कीन्ही। श्रुति पराग बिप्रनकहँ दीन्ही॥ रत्न मांगिहौ बिनय समेता। तौ देहैं हम कृपा निकेता॥ बलसों चाहो तौ नहिं देहैं। बली कृष्णके बल हम हेहैं॥ यह सुनिते सब अति रिस करिकै। लैगे तासु सुता सब हरिकै॥ दोहा॥ तब बसुदेव गोबिंद कहँ कहिपठये संदेश। सुनि श्रीकृष्ण प्रद्युम्न कहँ दीन्हें उचित निदेश॥ रक्षामुनि तनयानकी शीघ्रकरहु तुम जाय। जबलौं आय ससैन हम उत कछुकरैं उपाय॥ जयकरी॥ सो सुनिजाय प्रद्युम्न उताल। रचि माया बल बुद्धि बिशाल॥ माया मयी सुतातहँ राखि। ल्याये सब तनया अभिलाखि॥ ते सब नाहिं जाने यह भेद। तिनसों बिलसन लगे अखेद॥ लागेकरनयज्ञतप बिप्र। मोदित मुनिगण सहित अक्षिप्र॥ इतनेमें आये सबभूप। पूर्ब निमंत्रित बलअनुरूप॥ जरासंध शिशुपाल महीप। दुर्योधन पाण्डव कुलदीप॥ दन्तबक्र अरु रुक्मनरेश। आदिक और क्षितिप शुभभेश॥ ते मुनिके पुरके ढिगआय। भये निवास करत सहचाय॥ तब नारदमुनि कलह बिलास। गये तुरित दनुजनके पास॥ पूजित तिनसों बैठिसनेह। कहत निकुम्भ दैत्य सोयेह॥ सुनो कहेंहम तुमसोंसांच। युवती चारु चपल शतपांच॥ ब्रह्मदत्तहै राखे ल्याय। हत प्रद्युम्नके आनँद छाय॥ ब्राह्मणकी तनयाशत दोय। शत क्षत्रिनकी आनँद भोय॥ शतवैश्यनकी तनयाबेश। शतशूद्रनकी सुता सुभेश॥ ब्रह्मदत्तकी आज्ञापाय। ते सब दुरबासा पहँजाय॥ सेवाकरत

भई मुद्आनि। आशिष दये सुऋषि हित मानि॥ सरस सोहाग भाग्यसोंपूरि। बिलसहु पतिसह लहिमुदभूरि॥ दोहा॥ सुवन सुता एकैक सँग प्रति सम्बत्सरपाय। भये करैं सबकहँ दयोयह आशिष मुनिराय॥ आशिष को वृत्तांत सुनिब्रह्म-दत्त सुखपाय। जाय ल्यायसब कन्यका देन कहे गहिचाय॥ पृथक् पृथक् कहि यादवन कह सुन्दरिशतचारि। अहैंअमन सीछबिलसी तिनमें ते शतनारि॥ चौपाई॥ जाय तिन्हें निज हितहरिलाई। हो अशोच तक आनँदपाई॥ तिन के हेतकृष्ण धनुधारी। लरिहैं तुम सोंअवशि विचारी॥ यदुबंशज अम-रष सों राते। आवत चढ़े बीर रसमाते॥ ताते हमजो कहे उ-पाई। करहु बूझिसोसादर जाई॥ जरासंधआदिक मनुजेशा। हैंआये तव निकट सुभेशा॥ दान मान अरु बिनय भलाई। करि तिनकहँ अब करहुसहाई॥ बीर निकुम्भ बचनयहसुनि-कै। मंत्रिनसहित गयो तहँ गुनिकै॥ जरासन्ध आदिक नरप-तिसों। मिलिभो देत रत्न बहुजतिसों॥ दान मान लहिमोदि-तह्वैकै। तासों कहेभूप मुद ज्वैकै॥ केहि कारण आयेहु दनु-जेशा। कहहु शीघ्रसो बीरसुभेशा॥ तबतेई कहा कहौं यह तुमसों। बढ़ो बिरोध कृष्णसों हमसों॥ उन्हहिंहमाहिंअब होहि लराई। तुम सब कोउ ममहोहु सहाई॥ सुनिकहि एवमस्तु महिरक्षी। सिगरेभये तासु प्रतिपक्षी॥ तासु बचननहिं पाण्डव माने। कृष्णहि आतम परम हितजाने॥ राखि आहु कहिनि-ज पुर रक्षक। सब यदुबंशी सह प्रभु दक्षक॥ आइ सुब्रह्मद-त्त केधोरे। किये निवास शयनबरजोरे॥ दोहा॥ आर्वतकशुभ सरितसों उठिप्रभु प्रातअन्हाय। बिल्वोदक शिवके चरण ब-न्दि परम सुखपाय॥ सात्यकि अरु बलराम सहचढ़े गरुड़पै धीर। मखरक्षणहितपाण्डवन कहँ निदेश दैबीर॥ रोला॥ सैन रक्षण हेतनियमित करिप्रद्युम्नहि तानि। सैन सह चलिशीघ्र

स्वामी कौतुकी अनुमानि ॥ पारिजात गिरीन्द्रकीन्ही गुहागुर बिस्तार। बिकट पुरको प्रकट सो तट अघट अनुपमदार ॥ सैनयोजितकरितहां प्रभु बोलिलीन्हे आसु। प्रबरसहितजयन्तकहँकरि शुभदसुमिरणतासु ॥ कहे तिनसों गमनमधि तुम रहहुधीरधुरीन। चलेनभपथ असुर तिनकहँ नेहपरमप्रवीन ॥ रचतभेतहँ मकरव्यूह समूहभट करियूह। शांबसारण बिपृथु पृथुगद अनाधृष्टि सऊह ॥ बीर कृतबर्माबली अरु चारुदेष्ण सुधीर। रहेचहुँदिशि मध्यमें हेसकलयादवधीर ॥ रहेरक्षकपृष्ठ दिशि अनिरुद्धकुंवरसक्रुद्ध। पाइशासन कृष्णकोतब बजेबाजे उद्ध ॥ सुनतहीगहगहेमारू बाद्यकेरवकोपि। धोग धौंसाधुनत धाये धीरदानवचोपि ॥ नाग हय रथ ऊंट खर मृगमहिष मकर महान। पै चढ़ेते कढ़ेसिगरे बढ़ेरोषअमान ॥ बिबिध आयुध धरे बीर असंख्यदीरघकाय। उमड़िघनसेघुमड़ि बढ़िबढ़ि लये दशादिशिछाय ॥ दैत्यराज निकुम्भकी दिशिसकल नृपदल साजि। आइसन्मुख यादवनसों भिरेगर्बितगाजि ॥ चलेआयुध दुहूंदिशिसों प्राणहरणअनेक। भिन्दिपाल त्रिशूल तोमर शक्ति भल्ल अनेक ॥ मचे संगर घोरबीर निकुम्भबाणनमारि। यादवीदल बिकलकीन्हे बिशदबल बिस्तारि ॥ यादवी सेनाधिपति तब अनाधृष्ट रिसाय। डाटि बीरनिकुम्भपै शरतजत भे यहिभाय ॥ ध्वजालों गो गोपि जातेशरनसों वहदैत। त्रिकलकैतब असुरमाया रचतभो अमनैत ॥ अनाधृष्टहि पकरि मायाफांससोंअनखाय। अन्धसे बरगुहामें लैजारिदीन्हेसिजाय ॥ दोहा ॥ कृतबर्मा अरु भोजअरु चारुदेष्ण अरुबाहु। हियकरि अरुभट रिक्षतहँ दीन्हेसि डारि सुबाहु ॥ इनहिं आदिभट बहुतगहि दिये गुहामें डारि। आपुनिकुम्भअदृश्यरहि गुरुमाया बिस्तारि ॥ गुरुतोमर ॥ यह देखिकृष्ण रिसाइकै। बरमांगे धनुषचढ़ाइकै ॥ शरतजे ताकी सैनमें। इमिचले पूरे चैनमें ॥

जिमि दीहदावा जोरसों। बनघनेमें इकओरसों॥ इमि लरत कृष्णहि देखिकै। सबदैत्य अतिशय तेखिकै॥ इमि झुके रिस बिस्तारिकै। जिमिशलभ ज्योतिनिहारिकै॥ बहुशस्त्र तरु पाषाणसों। अरुलगे मारनबाणसों॥ निजबाणसों प्रभुडाटिकै। सब शस्त्र तिनके काटिकै॥ बरबाण मंत्रितमारिकै। भटकोपि महिपैडारिकै॥ तहँसरितशोणितधारकी। करिदइपाटअपारकी॥ रुकिसके तेन सचेतज्यों। जलधसे सिकता सेतज्यों॥ तबदैत्य भयसों पागिकै। उडिचले ऊरध भागिकै॥ तितइन्द्रको सुत हेरिकै। बधकिये तिनको घेरिकै॥ अरु प्रबरशर सन्धानसों। भोबधत तिनहिं बिधानसों॥ तेराहुकेतुअनेकसे। महिगिरे रूपन एकसे॥ भुज गिरतभे बरचापसे। लसिपांच फणके सांप से॥ भरिरुधिरसों भट भातसे। तहँगिरे उलका पातसे॥ दोहा॥ माया मयी गुहा बिरचि तब प्रद्युम्न तमछाय। रहि अदृश्य पहि नृपनकहँ डारेतामधिल्याय॥ जरासन्ध दुर्योधनहिं द्रुपदहि शकुनिहि आदि। धृष्टद्युम्न आदिक नृपन दये डारि अहलादि॥ दन्तबक्र शिशुपाल अरु रुक्महिं तहां निहारि। कहे नात गुरुता समुझि देहिंतुम्हें हमबारि॥ चौपाई॥ सुनि शिशुपाल महत रिसपागे। दलपै बाण चलावन लागे॥ शाम्बादिक यादवसों तिनसों। लागोहोन युद्ध सुरथिनसों॥ इतनेमें तहँ नन्दीआये। लिये अनेकपास मनभाये॥ दे प्रद्युम्नकहँ फांस सोहाये। हरकोकहो सँदेश सुनाये॥ इन फांसनिसों नृप तिनबांधो। हति असुरन जय कारज साधो॥ मुदित प्रद्युम्न फांसि सबलीन्हे। बन्दन बिल्वोदक करकीन्हे॥ दन्तबक्र शिशुपालहि आदिक। बचेरहे जे नृप अनबादिक॥ सदलबांधि तिनकहँ रिसछाये। मायामयी गुहामेंनाये॥ अनिरुद्धहि तिन की रखवारी। राखेबीर प्रद्युम्नबिचारी॥ बांधितिन्हें कै सुचित सुखारे। असुरनपै शरबिधि बिस्तारे॥ सुतको सत्वदेखि प्रभु

हरषे। असुर सैनपै बरशरबरषे॥ भगे असुरके परम पिरारे। तिन्हैं बुझाइ निकुम्भ निवारे॥ क्षणमें तिनकहँ कृष्णबिनासे। असुराधिपहि शरनसों गांसे॥ तब निकुम्भ नभगये उड़ाई। तहँ जयन्तसों भई लराई॥ तब निकुम्भ अतिरिस बिस्तारी। प्रवरहि हने परिघ गहिभारी॥ मूर्च्छित प्रबर भूमिपै आये। तब जयन्ततहँ आइ उठाये॥ दोहा॥ जीयत प्रबरहि जानिकै तुरत तहां फिरिजाय। मारे बाण जयन्तकहँ अति मत्सरसों छाय॥ परिघ जयन्तहि मारिकै भट निकुम्भ अनखाय। रहि अदृश्य मारतभयो परिघ कृष्णकहँ आय॥ गरुड़ राम अरु शाम्ब कहँअरु प्रद्युम्नकहँजानि। मारतभो पांडवन कहँ परिघ जोरसों तानि॥ चौपाई॥ लखे बिना तेहि सब आचरजे। प्रभु तब ध्यान शम्भुको सरजे॥ शिव प्रभावसों पर्यो निरेखी। तब धनुधर अर्जुन अतिलेखी॥ दुष्ट दैत्यको नाश बिचारे। बाण अनेक तासुतनमारे॥ ताके तनमें शर जुरिजुरिकै। धसे न एक गिरे मुरिमुरिकै॥ तब अर्जुन अतिबिस्मितह्वैकै। प्रभुसों कह्यो चावसब ग्वैकै॥ येमम शरवर शैल बिदारण। ब्यर्थ भये यापै केहिकारण॥ तबप्रभु पूर्ब वृतान्त सुनाये। आपुनसों बधताहि बताये॥ यह बिदेहहो अतिबलभारो। तिनमेंएक पूर्ब हममारो॥ भानुमतीके हरण समयमें। हतितेहि कीन्हों सुरन अभयमें॥सेवै दितिकहँएक सुखारी। हो यहएक बीर बल भारी॥ बातें किये कृष्णइमि जौलौं। गयो निकुम्भ गुहामधि तौलौं॥ तबप्रभु शीघ्र गुहामधिजाई। लागे तासों करनल-राई॥ प्रभुके पाछेतहँ सबकोई। गेपांडव यादव सुखभोई॥ मरे न शरसों सो रणधीरा। कहे शम्भुतब रहि अशरीरा॥ अबके-शव शरधनु धरिदीजै। याकोनाश चक्रसों कीजै॥ सुनि धरि धनुष चक्रप्रभु लीन्हें। मारितासुशिर छेदनकीन्हें॥ तबप्रद्युम्न बीराधिप अगरे। ल्यायेमोचि रहजेपकरे॥रहेआपु नृपजन कहँ

बांधे। छोंड़ितिन्हैं जयकारज साधे॥तेसब लज्जित शीशनवाई। खरेभरे तहँडीठि बचाई॥ दोहा॥असुरनकी बरकन्यका यदुनदये यदुनाथ। हयगज धनरथ देतभे हेजितने तहँसाथ॥ षटसहस्र रथ पाण्डवन कहँ दीन्हे यदुभूप। देतभये सब नृपनकहँ गज रथ रत्न अनूप॥ ब्रह्मदत्त यदुराजकहँ दै षटपर रमनीय। नृप गण अरु पांडवन कहँ किये बिदा कमनीय॥ बिल्वोदक शिव के निकट करि उत्सव अभिराम। यज्ञपूर्ण लखि कृष्ण प्रभु आये सदल स्वधाम॥ बरणे यहि अध्यायमें षटपुरकोसंहार। ब्रह्मदत्त यदुराजको सिद्धयज्ञ व्यवहार॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेषटपुरबधोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

दोहा॥ बैशम्पायन सों कहे फिरि जनमेजय भूप। भानुमती को हरण अब कहिये सुमुनि अनूप॥ पारिजातके हरणमें नारदमुनि बिख्यात। अन्धकको बध शिवकिये कहे कहहुसो तात॥ चौपाई॥ सुनिबोले मुनिवर बिज्ञानी। जनमेजय नृपकी यह बानी॥ जब देवासुर संगरमाहीं। असुरन हते बिष्णुनभ पाहीं॥ तब दिति अतिशय शोचित ह्वैकै। तपि कश्यपहि मोद सों ग्वैकै॥ यह बरमांगत भई सनेहू। सुरगणसों अबध्य सुतदेहू॥ एवमस्तु तब कश्यप भाखे। अंगुलि तासु उदर पर राखे॥ कछु जप करि इमि कहे सुखारे। होइहि सुत मन मान तुम्हारे॥ सबसुरपै प्रभाव मम भारी। बरजिसु आदि देव त्रिपुरारी॥ सर्बहि बिनासर्ब सुरगनसों। होइहिसोअबध्य भरिपनसों॥ इमि कहिगये तपन तपमुनिबर। लहतभईदिति सुत अनुपमधर॥ शिरभुज सहसदुगुनपग नैना। अति दीरघ बपुबलीसचैना॥ बलकेमद तेहिअंध निरेखी। अंधनाम सबकहेविशेखी॥ अतिशय सोउनमादि सुरारी। लगोअनीति करनबलभारी॥ तिय धनरत्न बाजिरथ गजगण। हरनलगो सुरगणके गहिप्रण॥ तीनि लोक जीतनको प्रणकरि। चाहेसि

लरनइन्द्र सोंधनु धरि ॥ तबकश्यपपै सुरपति जाई। कहतभये बहु भांति बुझाई ॥ ताहि अवध्याकिये तुम ताते। बाचब अब हम केहिबिधि याते॥ दोहा ॥ सुनि धीरजदै इन्द्रकहँ कश्यपदिति सहजाय। वारतभे अन्धक बलिहि बहुतभांति समुझाय॥ तऊ जायसुरलोकमेंकरैउपद्रवनित्य। बाधैऋषिमुनिकेकरमअभरम पितुबरचिंत्य ॥ ताकी इच्छासों चलै रबिशशि ग्रह गणपौन। चढ़ि विमान सुरसिद्धगण सकैं गौन करिकौन ॥ चौपाई ॥ यहि बिधितासु कर्म्म लखिपोचे। कैयकत्र सबऋषि मुनिशोचे ॥ कहे तहां सुरगुरुऋषिगनसों। बध्यदुष्ट यहमदन कदनसों॥ ताते चलिसब नारदमुनिसों। कहहुदशासमुझाय सुधुनिसों॥ शिवबर कृपा करैउन पाहीं। वैचाहैं तब शिवपहँ जाहीं ॥ तब शिवसों सब दशा सुनैहैं। तासोंतासु नाश करवैहैं ॥ यहसुनि सबमुनिगण मुदराखे। जाय व्यथा नारदसों भाखे ॥ सोमुनि नारदमुनिबर रोषी। शिवपहँ गये मुनिनकहँतोषी ॥ पारिजा-त करबिपिन सोहावन। तहांशम्भुपै जाइसचावन ॥ एकराति तहँ बसिसुख पाये। विधिवतसबवृत्तान्तसुनाये ॥ सुनिशिवको निदेशमुदगहिकै। पारिजातकी मालालहिकै॥ डारिगरेअन्धक पहँजाई। बैठेपूजितकैसुखदाई॥ पारिजातकोगन्धसोहायो। करि कैघ्राणअन्ध मुदछायो॥ बूझतभयो दुष्टगहिभारद। पारिजात यह कितको नारद ॥ जाकोऐसो सुमन अनूपा। सरससौरभित अनुपम रूपा ॥ बहुदिन लखेशक्र बन माहीं। ऐसे कुसुमउतैहू नाहीं ॥ तातेकहहु शोचमन भाये। यहमालातुमकहँसो ल्याये ॥ दोहा ॥ सुनिमुनिदक्षिण पाणिसोंसोस्रगचारुउठाय। हँसिअन्धक मतिअन्ध सों कहत भये सुखपाय ॥ मन्दरगिरिपै शूलधरपा-रिजात को बेश। हैं बिरचेबनबिशदअति सुनुसुबीर असुरेश ॥ मधुभार ॥ तेहि बिपिन कुसुमउदारु। बहुभांति यासों चारु॥ धन रत्नके दातार। मनमानदेत बिहार ॥ शुचिगन्ध इच्छितदेत।

तरु तरुणिमोद निकेत ॥ तेहि बिपिनमें निशिएक। जो बसै सुनहुसटेक॥ सोलहै कबहुं न भीति। कोउ सकै ताहिन जीति॥ पर कठिन उतको जाब। उत प्रबलशिवकोदाब॥ रणधीरबीर सुमेश। रक्षपतरति सो देश॥ तहँ सदा शंभु उदार। सह शिवा करतबिहार॥ नहिंआनपुरुषसचाय। उतसकतकैसेहु जाय॥ सुनि सुमुनि के ये बयन। करि अंध अरुण सुनयन॥ वरबीर सेना साजि। चढ़ि चलो शिवपै गाजि॥ चलि शीघ्र शठबद फैल। भो लखत मन्दर शैल॥ गिरि श्रेष्ठ तब गहिकाय। भे खरे तो ढिग आय॥ गिरिराज को लखि दैत। इमि कहतभो अमनैत॥ जोचहौंनिजकुशलात। तौ मानिमेरीबात॥ तरुराज को बनपत्र। मोहिं चलहुलै तुमतत्र॥ दोहा॥ नातरु हम मर्दब तुम्हैं कौन उबारण हार। हौं अबध्य पितु कृपाते जानतसब संसार॥ अंधकके ये बचन सुनि भे अदृश्य गिरिराज। तबअन्धकबोलत भयोगर्बितगिरादराज॥ चौपाई॥ ह्वैअदृश्य मन्दरकहँ जैहौ। मोहिं तजि शरणकौनकी लैहौ॥ अबतुव सानुचूर्ण हम करहूं। इतसोंडारि अनतलै धरहूं॥ इमिकहि दीरघ सानु उपारी। लग्योदेन शृङ्गनपैडारी॥ सुभटन सहतहँशृंगउपारन। लग्योलग्यो शृंगनपहँ डारन॥ इमिबहुशृंगचूर्ण करिदीन्हें। तब शिवकृपा शैलपहँकीन्हें॥ भयेपर्बवतसिगरेसानू। लखिबिस्मित भो दैत्यअमानू॥ शृंग उपारिअसुर परिहरहीं। तिनसोंदबिदैयत गणमरहीं॥ यह बिपरीत दशालखि कोही। कहत भयो अन्धक सुरद्रोही॥ गिरि तुम सों हमसों नहिं कारज। हैंकित शम्भु बने जे आरज॥ हम बल सों उन पै चढ़ि आये। जीतन चहैं उन्हैं मुद छाये॥ सो वै अब कितरहे लुकाई। सनमुख ह्वै किन करहि लराई॥ इतने में शंकर अति कोहे। वृषभारूढ़ शूलगहि सोहे॥ तेहिक्षण अन्धकके दलमाहीं। अशकुनभये कुशल जेहिनाहीं॥ आइतासु सन्मुख छबिछाये। शम्भुअमो-

घ त्रिशूलचलाये ॥ लगित्रिशूल अन्धकके तनमें । कीन्हेंताहिभस्म तेहिक्षनमें ॥ लखिसुरमुनिगण आनँदपागे । अस्तुति करन शम्भुकीलागे ॥ दोहा ॥ देवबजाये दुन्दुभी हरषेबरषेफूल । गानकिये गन्धर्बगण अप्सरनृत्यअतूल ॥ अन्धकककेबध तेभयो निष्कण्टक सबलोक । आनँदपूरो महतसुर मुनि नर गणके ओक ॥ तोटक ॥ सुनिअन्धकको बध आनँदसों । जनमेजय भूपति मानदसों ॥ फिरिबूझतभे मुनिराजकहो । अब जो हमबूझत चित्तचहो ॥ प्रभुसारथ पारथसों जुकहे । युधि दैत्य निकुम्भहिके उमहे ॥ यहहोव पुनीत मरोबलसों । तेहिमें यहएक महोछलसों ॥ दितिकोनित सेवत एकगुनो । हमएकहि पूर्ब बधेसोसुनो ॥ यहिभांति धनंजयसों कहिबो । प्रभुको मुद पारथको गहिबो ॥ तुमभाषेहुजो अबसोमुनिजू । बिस्तार समेतकहो गुनिजू ॥ बरबीर निकुम्भहिकी अरुजी । गिरिसी गुरजोवह देहदुजी ॥ तेहिबिष्णु बधेजेहि कारणसों । जेहि भांतिजिते प्रणधारणसों ॥ सुनिकैजनमेजयकी सुगिरा । मुनि बैशंपायनजू रुचिरा ॥ इमिबोलतभे नृपसों सरितै । पहिलेसुनिये प्रभुकेचरितै ॥ फिरिबूझेहु सोवह उच्चरिहौं । सबसंशय आपुनको हरिहौं ॥ प्रभुएकहमें तियकोगणलै । जलमें जल क्रीड़नको प्रणलै ॥ बसुदेवहि औनृप वृद्धसभै । पुरद्वारावती महँराखिअभै ॥ सँगयादवलै सिगरेसुखसों । करिमोदित आनँदमें रुखसों ॥ दोहा ॥ निजयुवतिनको वृन्दलै आपुचलेसुख पाय । गणिका सब यादवनके दीन्हेंसंगलगाय ॥ संगरेवती को लये चलेरामबलवान । पिंडारक बरतीर्थमें कीबेकोअस्नान ॥ चौपाई ॥ गयेसमुदतट तहँ बलभारे । दैत्यबसतहैं तिन्हैं सँहारे ॥ फिरियुवतिन सहआनँदपागे । पैठिसिंधुमहँ क्रीड़न लागे ॥ रहींजिती युवती रँगराती । पटरानी रानी बिख्याती॥ कामरूपके तितनेस्वामी । बिहरेसबसों अन्तरयामी ॥ निज

निजढिग निज निज बशजानी। क्रीड़तभईं सकल सुखदानी॥ भावअनेक भांतिके करिकरि। बिहरनलगीं तरुणि मुद भरि भरि॥ प्रेमछाकसों छकी उछाही। जेजेहिबिधिसों बिहरनचाही॥ तिन्हैंबिहारे तेहिबिधिनागर। सागरगतप्रभु कौतुक सागर॥ नखरदछतसों चिह्नितह्वैकै। मोदितभईं आदरशज्वैज्वै॥ युवतिनके शुचि अनुलेपनसों। अरुचिकुरनको गथितसुमनसों॥ कैयकयोजनलों सरितेशा। भयोसौरभित सुखद सुभेशा॥ प्रभुप्रभावते भोअतिनिरमल। पयसुस्वाद लवण निधिकोजल॥ जानुलंक कुचला बरसीके। रह्योउदधिजल तहँ सबहीके॥ कादम्बरी पानकरिमाते। रामरेवतीके रसराते॥ बहुबिधिरमे स्वइच्छाचारी। ह्वैजल गिरिरहि बिपिन बिहारी॥ यादवगण गणिकन सँगमोदे। सागरमें बहुभांति बिनोदे॥ दोहा॥ हरिणाक्षिणिके हियोहरि जलमें हरिजलजाक्ष। रमित तत्तिता लहेतकि तीक्षण तरल कटाक्ष॥ निजप्रभावसों कृष्ण तहँ दिब्याप्सरन बुलाय। संगयादवनकेरमहु आज्ञादयेसचाय॥ चौपाई॥ प्रभुनिदेश सुनिते मुदपागीं। यदुबंशिन सँगबिहरनलागीं॥ सजल मेघगण सँगजिमि दामिनि। तिमितिनमें बिलसींते कामिनि॥ बाद्यगान अरुनृत्य सोहाये। थलसम फिरैं बारिपैभाये॥ भावलखाय अनेक यतनके। हरतभईं मन यादवगनके॥ मन्दिरबस प्रमत्तबलपूरे। छबिसागरयादवगण रूरे॥ तिन्हैंसहित ऊरधबलिजाई। बाहुकंधधैतिन्हहिरमाई॥ फिरिसागर बनगिरि महँल्यावैं। रमिरमाय फिरि उतैंरमावैं॥ तियनसहित तिनके सँगलागे। इतउतरमे कृष्णमुदपागे॥ मोदअलभ्य अपूर्ब अनूपा। यादव इमिलहि अद्भुत रूपा॥ कृष्णप्रभाव चित्तसुखसाने। सोप्रकार नहिं अचरज माने॥ भोज्यलेइ अरुचोष्य पेयशुचि। भोजनभावन भूरियथारुचि॥ प्रभुप्रभावते अति अनुपमतहँ। भयोप्राप्त नरनारिसबनकहँ॥

प्रभु कारन ॥ तदनुराम मदके मदछाये। सहित रेवती सम्मुख आये ॥ कहेरहे प्रभु जेहिबिधि तैसे। दुहुं दिशि बँधोगोल लखिलैसे ॥ बारियंत्र लैलै बरभावन। दुहुं दिशिसों जललगे चलावन ॥ कितने बारि बारिसोंबारें। कितेबारिबारिजपैधारें। यहिबिधि तरुणि तरुण दुहुंदिशिसों। बिरचे चारियुद्ध बिनु ऋषिसों ॥ प्रभु अप्सर आज्ञा अनुसारी। करैं बाद्य तहँ उचित बिहारी ॥ दर्दुर बाद्य करैं मुदराती। अरुजल बाद्यगान अवदाती ॥ बारिधि कामिनि बारिज बिधिमय। भो तेहिक्षण बारिधि सुखमालय ॥ यहिबिधि वारियुद्ध करिछाके। कृष्ण प्रबल प्रभुप्रभु प्रभुताके ॥ बारियुद्धकहँ बारण करिकै। बाहर कढ़े मोदसों भरिकै ॥ प्रभुके कढ़े कढ़े सबकोई। धारण किये बसन सुखभोई ॥ दोहा ॥ अनुलेपन तन सुमुनिके निज करसों प्रभुलाय। लगवाये निज गातमें तियन सहित सुखपाय॥ यादवगण नरनारिसब लावतभे तनराग। कृष्णचन्द्र भगवानके पूरितबर अनुराग॥ तबप्रभु भोजन करनकहँ बैठत भे सुख पाय। यादवगण अरु तियनकहँ यथाउचितबैठाय ॥ सोरठा ॥ व्यंजनबलो अनेक सामिष सुखद सुस्वाद अति। मानस सहित बिबेक सानँदतहँ भोजन किये ॥ न्यारे बैठि प्रबीन ऊधो आदिक वृष्णबर। शुचिसुस्वाद अमलीन भोजन कीन्हेबैष्णवी॥मोदक॥पाय निशीथिनी ताथरमें फिरि। केशव रामरचे मुद सोंघिरि॥ नारदराज बिशारद मोदित। गान किये सबिधान बिनोदित ॥ माधवके चितचिन्तितको लखि। आइतहां हिय आनँदकोरखि ॥ बारबधू सुरनायककी सब। रूप निधानसमानसुनीतब ॥ दोहा ॥ रम्भा मंजुलिमैनका अरु उर्बशीसुजानि। हेमा तरुणि तिलोत्तमा आदिसरस सुखदानि ॥ यहिबिधिसबै सखानसह सहस सर्बरो तौनि । प्रभु बिताय कीन्हीबिदा हीसुर गणिकाजौनि ॥ सोरठा ॥ कृपासिंधु सुखदानि पुत्रनआदिक

लघुनसह। परमसखा सममानि रमैतहां बहुभांतिइमि ॥ महि-
खरी ॥ यहिभांति क्रीड़ाशक्त प्रभुकहँ देखिअतिशय हरखि कै।
हो दैत्यबीर निकुम्भ औसर लखत सोतब परखिकै ॥ होवज्र-
नाभ सुबन्धुतातेहि मारितासुप्रभावती। हींसुताताहि प्रद्युम्न
हरिलै कियेहे प्रियभावती ॥ तेहिबैरसों तब द्वारकामें आइकौ-
तुक करतभो। तहँ भानुयादवकी सुताहीं भानुमति तेहि हरत
भो ॥ ह्वै गुप्तलै तेहि धीरधृत स्वधामकी मगधरतभो। इतभानु
कोगृह नारिनरके रुदनसों तबभरतभो ॥ सुनिशीघ्रतहँ बसुदे-
वआहुक जायनहिं तेहि रुकतभे। तबपूरि बिस्मय भूरिघरिक
बिसूरिनहिं कछु सकतभे ॥ तब हांकिरथ चलिजाय प्रभुसोंद-
शा यह सबकहतभे। सुनिकृष्ण अतिशय कोपिताके नाशको
प्रणगहतभे ॥ सब यादवन कहँ द्वारकाको बिदातब गुणिकरत
भे। तहँ बोलि खगपति कहँ सपारथ चढ़ि सुशस्त्रन धरतभे ॥
सँग बीरप्रबल प्रद्युम्न रथचढ़ि पायशासन चलतभे। तेहि
समय सागर शैलासिगरे सहित सीवां हलतभे ॥ दोहा ॥ नभ
पथपै अति वेगसों चलिते बीर बिभात। दैत्य निकुम्भहिलख-
तभे बज्र नगरकहँ जात ॥ प्रभुप्रद्युम्न पारथहिलखि मायाबी
सो दैत। तीनि मूर्ति आपुहिभयो अति अमान अमनैत ॥
चौपाई ॥ बहुकपटक लै गदा बिशाला। लगे लरन रचिजो बि-
कराला ॥ लीन्हें सुताबासकर बरमें। लरेगदालै दक्षिणकरमें ॥
कृष्ण प्रद्युम्न पार्थ धनुधारी। मारहिंशरसों ताहि बिचारी ॥
कन्यहि लगे न शरबरजाते। शंकि अशीघ्र तजेशरताते ॥ तऊ
धनुर्द्धर की बिधिलीन्हें। मारिदैत्यकहँब्याकुलकीन्हें ॥ तबसह
तनया सो मायाबी। भो अदृश्यसकपट मेधावी ॥ अधमआइ
अघकरि बिधिअक्षी। भागतभोबनि हारितपक्षी ॥ माया बिन
के रिपु प्रभुज्ञानी। लगेतासु पीछे अनुमानी ॥ बारहिबार बाण
बहुमारैं। मुदिततासुसँग लगेबिहारैं ॥ सातौंद्वीप फिरोसोभा-

गो। थिरिन सको कितहूं भयपागो॥ थकिगो कर्ण शैल ढिग जाई। सुरसरिकूल गिरो भयपाई॥ तब प्रद्युम्न अति जवगतिकीन्हे। तासों ऐंचि कन्यकहि लीन्हे॥ प्रभुके बाणनके सो पीड़ित। चलो भागि दक्षिण दिशि ब्रीड़ित॥ गुहाद्वारमें प्रविशिसशंकित। जो षटपुर सरक्षत सो अंकित॥ गुहाद्वार कहँ रोकि सुखारे। तेहि निशिपारथ कृष्णबिहारे॥ लहि प्रद्युम्न प्रभु शासनभाये। कन्या भानुहि दै तहँआये॥ दोहा॥ भोरभीम बल दैत्यसों वीर निकुंभ अमान। कढ़ो युद्धको चाव गहि गर्जत मेघसमान॥ कढ़त देखि मारनलगे पारथ बाणन ताहिं। तड़पि हनेसि तबतेइगदा शिरसि पार्थके चाहि॥ चौपाई॥ रक्त बमतके घूर्णित पारथ। मूर्छित गिरे भूलिशर वारथ॥ फिरिहनिगदा प्रद्युम्नहिं जोई। करतभयो मूर्छित तहँ सोई॥ तबप्रभु कृष्ण गदाले आपै। सत्वरचले कोपकरितापै॥ चलि निकुम्भ अतिशय रिसपागो। प्रभुसों लड़नगदाले लागो॥ घूमिचक्र सम निजजय ईछे। गदायुद्धते बहुक्षण शीछे॥ ऐरावतचढ़ि सुरपति ठाढ़े। सुरसह लखैं युद्ध मुदबाढ़े॥ मढ़ो आठ घण्टा सों घोरा। सोगुरुगदा निकुम्भ कठोरा॥ प्रभुके शीश हनेसि मतवारे। हने ताहि प्रभुस्वजन बिचारे॥ मोहिंकछूक्षण कौतुक चाही। हने चक्रसों केशवताही॥ चक्रहि आवत लखि सोइ भाई। तजि निजतन कहुं अनतहिजाई॥ आयो धरि अति दीर्घ शरीरा। बनि दशसहस निकुम्भ प्रबीरा॥ इतसुत सखा सहित धनुधारी। प्रभु दइत्यको कपट बिचारी॥ सो तनखण्ड खण्डकरि तौलौं। राखेवह फिरिआयो जौलौं॥ अयुतनिकुम्भ बीर बनिआयो। तिन्हैं पेखिप्रभुअति सुखपायो॥ पारथ अरु प्रद्युम्न रिसपागे। तिन्हैं शरनसों मारनलागे॥ तबते कइक सहस दश दिशिते। झपटि एकसँग भरिअति रिसते॥ दोहा॥ पाणिपाद कटि शीशधनु अतिअंगन लपटाय। गहिबरजोरी

अर्जुनहि लैगे ऊर्द्ध उठाय ॥ सहप्रद्युम्नतहँजाय प्रभुकरिनिज मूर्ति अनेक। द्वैद्वै खण्डकरैलगे शरसों तिन्हैंसटेक ॥ रोला ॥करे जेहि द्वै खण्ड ते ह्वै दोय दीरघकाय। लरे प्रबल प्रकर्षभटभरि रोष चहुँदिशि धाय ॥ बूझियह वृत्तान्त प्रभुधरिध्यान चितमें चाहि। रह्योसत्य निकुम्भ लीन्हे अर्जुनहिं जोताहि ॥ मारिशर सों दोयकीन्हे गिरेसोतजिप्रान। भये मायामय असुरसबबारि बुदबुद मान ॥ गगनते अर्जुनहि महि पै गिरत कृष्ण निहारि। दये शासन सुतहि ले चलि लये रथपै धारि ॥ मारिइबिधि निकुम्भकहँ सह सखा सुत प्रभुजाय। द्वारकामें ओक ओकनि दये आनँद छाय ॥ आइतहँ तेहि समयनारद भानुसों यहि भांति। कहेकन्या हरणको मतिकरहु शोच सुकांति ॥ एक दिन तुव सुतारैवत शैल पै अभिराम। रही खेलत ताहि निज ढिग टेरिहेरिसकाम ॥ दये दुरबासा सरिस कै शाप अनुचितमानि। कौनकौतू सुतापरिहै खल असुरके खानि ॥ दोहा ॥ तबहीं मुनिनसमेत तेहि बहुबिधिकहे बुझाय। सुनि दुरबासा कहतभे शीश नवाय लजाय ॥ व्यर्थनहोइहहि मम गिरा असुर हाथ यह जाय। छुटि तासों फिरि सुपति लहि बिलसिहि अति सुख पाय ॥ बसुकला ॥ सुनु भानु। सुनि मानु ॥ यह भेद ॥ तजिखेद ॥ दुहिताहि। चितचाहि ॥ सहदेव। शुभभेव ॥ तेहि देह। सह नेह ॥ मुनि बैन। सुनि चैन ॥ लहिभानु। बरज्ञानु ॥ दोहा ॥ करि सम्मत श्रीकृष्ण सों सहदेवहि तहँ आनि। भानुमतीनिज कन्यकहि दिय समर्पि गहि पानि ॥ माद्रीसुतपाण्डवसुभग पत्नी सह सहदेव। भानुकृष्णसों ह्वै बिदा गे निज गृह शुभ भेव ॥ अन्धक बधकहि कहि कहेप्रभुको बारि बिहार। भानुमतीको हरण अरु बध निकुम्भको प्यार ॥ भानुमतीको शाप हो दुरबासाको जौन। कहे ब्याह सहदेवसों भानुमतीको तौन ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेषटपुरबधोनामपंचबिंशोऽध्यायः २५ ॥

दोहा ॥ बैशम्पायन सों कहे जनमेजय क्षितिपाल । सुनि निकुंभ कोबध लह्यो मनमें मोद बिशाल ॥ भानुमती के हरणमें बज्रनाभके घात । प्रभावती को हरण तुम कहेकहहु सोतात ॥ चौपाई ॥ बैशम्पायनकी यह बानी । सुनि बोलो मुनिबर बिज्ञानी ॥ जाइ मेरु गिरिपै बलभारी ।दितिसुत बज्रनाभ ब्रतधारी॥ बिधिहि अराधि उग्रतपकरिकै। बरंब्रूहिं सुनि आनँद धरिकै ॥ इन्द्रहि जीतन के पन पाग्यो । अवध्यत्व सुरगणसों मांग्यो ॥ और बज्रपुरमांग्यो बिस्तर । बज्रमयो बिरच्योअति दुस्तर ॥ बिनता सुत इछा तहँ जाई । सकै न बापुमहत भयपाई ॥ तेहि पर ज्ञातिन सहबस सोई । बिहरण लागो निर्भय होई ॥ विधि बरके प्रभावमुद पागो । करन उपद्रव जगमें लागो ॥ जाइइन्द्र सोंकहेसि रिसारो । बिधिवर बल मदसों मतवारो ॥ तीनिलोक पतिता हम चाहैं । सो मोहिं देहु देखि ममबाहैं ॥ बहुदिन तीनि लोक पति ह्वैकै । बिलसेतुम आनँदसों ग्वैकै ॥ देहुहमैं अब राखिबड़ाई । कै सन्मुख चढ़ि करहुलराई ॥ कश्यपके सुत हम तुमभाई । कततुम भोगहु हमैंबिहाई ॥ बज्रनाभकीबाणीसुनिकै । कहे शक्र निजगुरुसों गुनिकै ॥ कश्यप यज्ञकरतहै थाई । तौलौं तू धीरज धरु भाई ॥ भये यज्ञसब पितहि सुनाइब । जो कहिहैं सो करि सुख पाइब ॥ दोहा ॥ बज्रनाभ यह बचन सुनि कश्यप मुनि पहँ जाय । कहत भयो वृत्तान्त सो सुनि कश्यप सुखदाय ॥ बज्रनाभ सों कहतभे अवहिं बज्रपुर जाहु । यज्ञभये पै कहब हमसोकीन्हेहुलखिलाहु ॥ चौपाई ॥ बज्रनाभपितु बचन सोहायो । सुनिसत्वर चलिनिजपुर आयो ॥ सादर शक्रद्वारका आये । केशव सों सबकथा सुनाये ॥ कहे शक्र सोंकृष्णसुखारे। यज्ञ करतहैंपिताहमारे ॥ बाजपेय मखपूरणज्वैकै । करिहौं तासु नाशमुद ग्वैकै ॥ तासुनाश की बिधिको करिकै । सम्मत शक्र गये मुद भरिकै । यज्ञोत्सव महँ तहँ नट आयो । निज बिद्यामें

अति पटुभायो ॥ सुबिधि नाट्यबिधि करि मुद लीन्हे। मोहित सब ऋषिगण कहँ कीन्हे ॥ ह्वै प्रसन्न मुनिगण अभिलाषे। बर मांगहु नटवर सों भाषे ॥ भद्रनाम नट सुखसों ग्वैकै। प्रभु ईहासों प्रेरित ह्वैकै ॥ यह बर मांगत भो सो सबसों। सबका भोग्य होहुँमैंअबसों ॥ सातद्वीप में सबथर माहीं। मम गति होइ कहो तुमपाहीं ॥ सबसों होउँ अबध्यसुखारी। होउँ ईप्सितभेष सुधारी ॥ मृतक अमृतकभविष्यहु के तन। प्रतिसबशक्तिहउँ प्रमुदित मन ॥ सुनि ऋषिगण आनँदसोंभारे। एवमस्तुबर बचन उचारे ॥ उतै स्वर्ग पै शक्र बिचारी। कहसहसों ये सुबिधि दुखारी ॥ मन सुबन्धु कश्यप कुल जाये। ह्वै तुम हंस सुभग तन पाये ॥ दोहा ॥ सुर बाहन सुर सदृश तुम हंस परमप्रिय मोहिं। कछु निदेश चाहौं कियो बुद्धिमानलखि तोहिं ॥ बज्रनाभके नगरमें आनँद गहितुम जाहु। तहँबनबापिनमें बिहरि मम हित कहोसचाहु ॥ जयकरी ॥ बज्रनाभकी सुता सुजानि। प्रभावतीहै सरस सथानि ॥ तासोंकरि सम्भाषणाजानि। चातुरतासों निजबश आनि ॥ कहि प्रद्युम्न को कुलगण नाम। सुखमावय सुभाव अभिराम ॥ पुरुषारथ आदिक सब ढंग। कहिताकोमन करिसउमंग ॥ लैमिलापको शुभदनिदेश। कहेहुआइ प्रिय सुपद सँदेश ॥ तब हम केशवकरि अनुमान। करब उपाय सुनहु बुधिमान ॥ सुनि बासवके वचन सकाम। मोदितजाय हंस मणिधाम ॥ बिहरनलगे बज्रपुरबीच। बन बापिन मधि निकट सभीच ॥ बोलि मनोहरबाणी बेश। इत उत लागे रमनसुभेश ॥ बज्रनाभतहँ तिन्हें निरेखि। कहतभयोकरिकृपा बिशेखि ॥ तुम दम्पति मोहिं प्रियनितअत्र। रमौ स्वइच्छा सों सर्बत्र ॥ तबते ह्वै अति सुचित सचाय। रमन लगे अन्तःपुर जाय ॥ नरभाषातहँ बोलिसुबोल। लागेकहन कथा अनमोल ॥ सो सुनि सुनि तियगण गहिचाव। लगींक-

रन अतिआदर भाव ॥ सानँद ते तहँ करत बिलास । गेचलि प्रभा नदीके पास ॥ तिन्हैं लोखिसो लहि अतिमोद । लगींकरनबहुभांति बिनोद ॥ दोहा ॥ जानि तिन्हैं मतिमानअति प्रभावती गुणखानि । हंसिनि शुचि शुचिमुखी तेहि कीन्ही सुखी सुजानि ॥ प्रभावती के सँग बिहरि कछुदिन तहँ सुखदानि । समयपाय हंसिनिसुबुधिं कहतभई अनुमानि ॥ चौपाई ॥ प्रभावती मैं कहउँ बिचारी । नहिं तोहिं सम तिहुंपुरमहँ नारी ॥ सुन्दरि सुबुधि सुशील उजागरि । बिधि तोहिं रचे अतुलिगुण आगरि ॥ ताते बूझि कहउँ तुमपाहीं । कछुपदार्थ तोहिंदुर्लभ नाहीं ॥ रतिसुख बिनु निष्फल से सिगरे । ब्यर्थ जातसुखके दिननिकरे ॥ यौबनगयोबहुरिनहिं आइहि । कढ़ि प्रवाहकेजल सम जाइहि ॥ बज्रनाभ बहु भूप बुलाये । तुव सुस्वयम्बरइत मनभाये ॥ तेनर असुर सर्बगुणधारे । रुचे न तुम्हैं सबै हिय हारे ॥ ताते तुम्हरे योगउदारू । बरअनुमान कियों होचारू ॥ सुवन कृष्णको परमउजागर । धीरधुरीण बीर नयनागर ॥ पुरुषसिंह पुहुमीको नेता । अमर असुर सुरगणको जेता ॥ निज प्रभावसों तनमनमंथहि । किये पुत्रप्रभु बूझि सुअरथहि ॥ नामप्रद्युम्न पुहुमिके मण्डन । मंजुमनोहर बैरिबिहण्डन ॥ बालपने में जो धनुधारी । हत्योशम्बरहि भूतलचारी ॥ बरहु तिन्हैं जो निज हितजानी । सुफलसर्ब तुव गुणसौमानी ॥ निजअनुरूप अनूपम जो हौ । कंचनरत्न सदृश मिलि सो हौ ॥ बचन शुचिमुखी के येसुनिकै । प्रभावती निज हियमेंगुनिकै ॥ बोलत भई यथोचित बानी । पुलकिपसीजि मोदसों सानी ॥ दोहा ॥ आपुबिष्णु प्रभु कृष्णसे दैत्य बिनाशनहेत । सो सबहैं विधिवतकहे नारदज्ञान निकेत ॥ सकल चरित्र प्रद्युम्नके हैं हम सुनेसभेद । परयहि कारज सिद्धिमें हैं ब्यापित गुरखेद ॥ केशवसों मम पितासों है स्वाभाविकबैर । शुचिमुखि केहि बिधि

सधिहि यह कारण पूरत घेर ॥ चौपाई ॥ परमपंडिता शुचिमुखि आरज। जो तू सिद्धकरै यहकारज ॥ तौ हौं तोहिं स्वामिनि सममानो। आपुहि तुव दासी समजानो ॥ यहसुनि शुचिमुखि प्रमुदितह्वैकै। कहत भई संशय सब ग्वैकै ॥ सुन्दरि हम गुरगिरहि अराधब। करिबहुयत्न काजतुवसाधब ॥ निजपितु पास बहोरिबहोरी। बहुबिधि करहु बड़ाई मोरी ॥ प्रभावतीसुनि आनँद गहिकै। अन्तःपुरमें भूपति लहिकै ॥ कथाकहन की बिशद बड़ाई। कहत भई शुचिमुखि की भाई ॥ सो सुनि दनुजाधिपति सुरुखसों। बूझतभयो सरुचि शुचिमुखसों ॥ तुम जो कथा कहहु अतिनीकी। सो अबमोसों कहहु खुशी की ॥ शुचिमुखिलहि ताको अनुशासन। लागीकरन कथासम्भाषन ॥ सुनु दनुजेश शांडिलीनामा। परमतपस्विनि अति अभिरामा ॥ निकट मेरुके बरतप चारत। ताहि निरखि हम तहां बिहारत ॥ तासोंनहिं अतिदूर सोहावन। भद्रनाभनटवर मनभावन ॥ रहै तासुगुण अनुपम देखी। तुमसों कहउँसुनहु शुभभेखी ॥ ऋषिगणसों बांछित बरपाये। हैजग निजमहिमा सों छाये ॥ सुरगन्धर्बन समसो गावै। करिमनमोहन अनुपम भावै ॥ दोहा ॥ कामरूप नटनाहसो सातद्वीपमेंजात। सीमन्तनकहँ मोहितहँ ह्वै सुप्रशंसित भात ॥ बज्रनाभ इमिकहतसो सुनि सुप्रशंसा तासु। जाइतासुढिग शुचिमुखी लैआवहु तेहि आसु ॥ तब दनुजाधिप सों बिदा ह्वै ते सादरजाय। सानँद इन्द्र उपेन्द्रको दीन्हीकथा सुनाय ॥ सो सुनिकृष्ण प्रद्युम्नकहँ दिये निदेश सचाय। हति असुरहिताकी सुता ल्यावहुतुमउत जाय ॥ सोरठा ॥ दैवीमाया वेष रचिनटवरबनिसाम्बसह। अरु यादव शुभभेष संगलेहुसामानसजि ॥ सुनि प्रद्युम्न नटराय बनेबिदूषक साम्बसजि। यादवअन्यसुकाय भयेसमाजीमुदित मन ॥ बारबधूगण चारु तिन्हैं जटीकरि मोदसों। नटवर भद्र

उदारु ताहिसहायी संगलै॥ चढ़ि बिमानपै मोदि शाखापुरपर बज्रको। रह्योसुपुर निज मोदि सह समाज तहँजातभे॥ रोला॥ आगमन नटनाहको सुनि दैत्यपति हरषाय। सुपुर पुरमें रहत हैं जे दैत्यमुख्य सचाय॥ दियो ताहि निदेश उनको करहु तुम व्यवहार। पायआज्ञा आइकीन्हे ते उचित सत्कार॥ नाट्य निपुण बिधानभे फिरि लखत निकट बुलाय। नाट्यबिधिते किये उत्तम रागउत्तम गाय॥ कथा रामायण बिशदकी नाट्य बिधिमें ठानि। तिन्हैंदरशाये सकलहित आपनो अनुमानि॥ रहीशान्ता सुतादशरथ भूपकी तेहि आय। लोमपाद महीप मांगे पुत्रहीन अचाय॥ दये दशरथ सुता तेहि लै भूप निज पुरजाय। बारबधुन पठाय निजगृह सुऋषि शृंगहि ल्याय॥ दये शान्तहि ब्याहिसो यहसदृश वेष बनाय। गाय रामायण दये परतक्ष सकल लखाय॥ रहेहैं तेहि समयमें जे वृद्धदानव भूरि। देखिते तब समुझिसो अतिरहेआनँद पूरि॥ देखि मोदितहवै दइतगण दिये तिन्हहिं सचैन। बसन भूषण रत्न अगणित बोलि प्यारेबैन॥ तोषि तिनकहँ असुर तेसब असुरपतिपहँजाय। कहे कौतुक सर्बसुनि सो तुरित तिन्हहिं बुलाय॥ परम उत्तमगेह तामें बास तासु कराय। करि सबिधि सत्कार तिनको परम प्रेमबढ़ाय॥ पायपर्बणि बिहँसि बैठो सभाबिरचि बिशाल। जाल बेष्टित सुरथमें बैठाय सिगरी बाल॥ बोलिले नट वेष बिरचे यादवनकहँ तत्र। करि उचित सन्मान बोल्यो नाम करिये अत्र॥ पायशासन मुदितहवैते बिरचि वेषबनाय। प्रथमकीन्हे बाद्य अनुपम बाद्य बिधिके भाय॥ गानकरि गान्धर्ब तिनकहँ मोहिं फिरि परबीन। नाट्य बिधिभे करत तेतहँ कौतुकी अनहीन॥ जाति नलकूबर सरुचि पै रहीरम्भाबाम। आइ तासों रम्यो बलसों लंकपति बलधाम॥ दोहा॥ नलकूबर सुत धनद के यह वृतान्त लखिकोपि। नलकूबर पौलस्त्यकहँ

दिये शाप अतिचोपि ॥ यहरामायणकी कथानाट्यभेषमेंभेरि दरशाये असुराधिपहि निज कारज अवरेखि ॥ नलकूबर प्रद्युम्नभे शूरभये लंकेश । मनोवती गणिका भई रम्भा बिरचि सुभेश ॥ सोरठा ॥ मायामय कैलास रचिनटवर मतिमानतहँ। दरशाये सबिलास सोशुभकथा अभेदकरि ॥ चौपाई ॥ वज्रनाभ लखि अतिहरषाई । देतभयो गज बाजि मँगाई ॥ भूषण बसन रत्न बहु बिधिके । देतभयो तहँ बड़ी समृधिके ॥ भूषण वसन रत्नबहु तियगन । देत भईं अति करि प्रमुदित मन ॥ सो सबलै ह्वै बिदा सुखारी । गये वासथर नट पनधारी ॥ प्रभावतीसों उतवह हंसिनि । कहत भई इमिपरम प्रशंसिनि ॥ बीर द्वारकामें हों जाई । बीर प्रद्युम्नहि न्यारेपाई ॥ भक्ति तुम्हारि प्रेम उत्साहू । अरु अभिलाष सुचाव सचाहू ॥ दई सुनाइ सबिधिसो सुनिकै । आवन आजु कहे वै गुनिकै ॥ ताते आजु अवशि वे ऐहैं । मिलि तुमसों आनँद सरसैहैं ॥ यह सुनि बिहँसि प्रभावति तासों । कहत भई अति पूरि प्रभासों॥ सखि शुचिमुखि तुम मोढिग आजू । रहि निशिमें साधहु यह काजू ॥ लालच लाजभांति म्वहिं घेरे । बनि न परिहि कछु उनकहँहेरे ॥ हँसि तथास्तुकहि हंसिनि तासँग । गई सोधपै गहि अनुपम सग ॥ तहँप्रद्युम्नके योग सोहाये । फरस पांवड़े पलंगसजाये ॥ परदे अरु छतपोश सोहावन । लगवाये मणि मय मनभावन॥ अतर गुलाब अगर आनन्दन । धरवायेतहँ चौरस चन्दन ॥ दोहा ॥ उतचिन्तित उत जाय कहँ रहे प्रद्युम्न उदार । ताही क्षणतित ह्वैचली तहँ मालिनि लैहार ॥ प्रभावती पै जातिहै लखि प्रद्युम्न करिगौर । भौंरनके संग भौंर बनि गेतहँ करत सुभौंर ॥ उतचंगेर धरि फिरि गई मालिनि अपने धाम । सांझभये उठि भौंरगे रहे अकेले काम॥ बरवै ॥ प्रभावती बिरहाकुलि ह्वै तब ताल । कहतिभई शुचि मुखसों

हियकी बात ॥ सखि पूरणशशि चाहत दाहत आजु। ताजि निजबानि करतकह अनुचित काजु ॥ त्रिबिध बायु सुखदायक सो यहिकाल। मोहिं लूकसम परशत करत बिहाल॥ चन्दन चौसर अगर सुअतर गुलाब। बेगिटारु सखि नातरु तनतजि जाब ॥ शरसम लागत परशत सरसिजसैन। बिकलहोत तन बनत न कहत सुबैन॥ कम्पित उररोमांचित टूटतगात। मुख सूखत रुज नूतन प्रगटत जात॥ जोसखि प्रथमहिं जोरतप्रेम बिआधि। तौ न बिकल इमि होइत यह ब्रतसाधि ॥ जाहि लागि हो व्याकुलि ताहि न लागि। लागितोहिं धिक् बिथवति एकहिलागि ॥ प्रभावतीके सुनिये बचन सप्रेम। भेप्रद्युम्न तहँ प्रगटित पालकनेम॥ लखि प्रद्युम्नकहँ प्रमुदित हिये सकाम। लज्जित अक्षणि अध करि रहीसुबाम॥ तबगहि दक्षिण कर सों तासु सुहार। कहत भये यहि बिधिसों पुलकित मार॥प्रि-यामोहिं लखि चुप ह्वै शीश नवाय। रहिहु शोचिकतमुदग्वै देहु बताय॥ दोहा॥ यहि बिधिकहि बहुभांति तेहि करिसन्मुख गाहि मोद। करि गन्धर्व विवाह तहँ कीन्हे बिशद बिनोद॥ सौधद्वारपै हांसिनिहि द्वारपालिका राखि। बिहरिरहे कछुनिशि गये निशिलहि आइब भाखि॥ सब्बैगान॥ याभांति सों रातिमें फोर लैभे सभाभूरि भामिनि पै जायताही। निःशंक परयंक पै अंकमें लाय आलिंग कै चाहिजो चित्तचाही॥ कैकोककी रीति की नीति के घातलै दै सु आनन्द आनन्द पाही। प्रद्युम्नग्वै कमलके पत्र से गातमें तत्रभे भौंरकी वृत्तिनाही॥ दोहा॥ भोर जायनटगेहमें बिलसैं दक्षउदार। प्रभावतीपै जाय निशिबिरचैं कामबिहार॥ कबहूं दिनहूंमेंरमें इतहू उतअभिराम। रतिसम बाम सकाम लहि कामरूप श्री काम॥ चौपाई॥ इमिबिहरेबहु दिन मुदपागे। निज कारजके घातन लागे॥ बज्रनाभके बध की बेरा। निरखतकीन्हे तहां बसेरा॥ दैत्य दैत्यपति भेद न

जाने। नाट्य देखि अति आनँद साने॥ बासव बासुदेवपहँजा-
ई। सरुचिसयानि हंस सुखदाई॥ उतको सब वृत्तान्तसुनाई।
जाहिं बहुरिउत आनँद छाई॥ बज्रनाभको सोदरभ्राता। रह्यो
सुनाभ असुर मद माता॥ रहींतासु है सुतासयानी। चन्द्रवती
गुणवती सुमानी॥ एक समयते आनँद राती। प्रभावतीपैग-
ई सोहाती॥ प्रभावतिहि रति चिन्हित देखी। ते निज हिय
बिस्मयसों भेखी॥ बूझत भईं भेद मन भावन। प्रभावती तब
बोली चावन॥ पूर्ब्ब मोहिं दीन्हों दुरबासा। बिद्या दायकबि-
शद बिलासा॥ सो पढ़ि जोकामिनि गहिचावै। रति हित पति
चाहै तेहिपावै॥ सो बिधि साधि आधिसों भावन। भइउं स-
नाथ नाथलहि पावन॥ तुमहूंचाहहु तौ सिखिलेहू। बांछित
पतिहित सहित सनेहू॥ जपि सुमंत्र इच्छित पतिपाईं। बिहरौ
बिधिवत शोच बिहाई। सुनि तथास्तुकहि ते मुदपागीं॥ सि-
खिसो मंत्र जपनतहँ लागीं॥ दोहा॥ कहत भईं प्रद्युम्नसोंप्र-
भावती सुखभोइ। इन्हैं योग है रावरे बन्धु बर्गमें कोइ॥ कहे
प्रद्युम्न सुबन्धु मम शाम्ब अनूपम बीर। अरुगद हैं पितृव्य
मम अति प्रसिद्ध रणधीर॥ चौपाई॥ प्रभावती सुनि बोलीपति
सों। ल्यावहु तिन्हैं इतै भरि रतिसों॥ तबते नटमन्दिरमेंजाई।
शाम्बगदहि वृत्तान्त सुनाई॥ भेषबनाइ छपाइ लवाई। जाइ
तहां तिनकहँ दरशाई॥ चन्द्रवती कहँ गदसों आई। शाम्ब
गुणवतिहि ब्याहि उछाई॥ करि गन्धर्व ब्याह नटनायक। बि-
हरत भये तहांते लायक॥ बर्षा आइ देखिघन उमड़े। गदहि
घेरि चहुंदिशि सों घुमड़े॥ क्षनदा छहरनि की छबि छावनि।
सुपद बकनकी पांति सुहावनि॥ तरुगणकीसुखमा असफूरित।
बारिहार तृणसों महि पूरित॥ बरसिरहेकोमारुत शीतल। पर-
शे गात तप्तकरहीतल॥ श्रुति सुखदायक रव पक्षिणके। सुनि
प्रद्युम्न शिर मणिदक्षिणके॥ प्रियहि लगाइ अंकमुदलीन्हे।

वर्णन बर्षा ऋतुको कीन्हे ॥ कश्यप को मखपूरणसुनिकै । बज्र नाभ नित हियमें गुनिकै ॥ सत्वर कश्यप के ढिग जाई । कहत भयो निज अर्थ बुझाई ॥ कश्यप सुनिते बचन अभाये । बज्र नाभ कहँ बहु समुझाये ॥ सुत तुम जो यह मंत्र बिचारे । सो निज नाश हेत प्रणधारे ॥ हैं बासवके बिष्णुसहाई । तासों लरे तुम्हें न भलाई ॥ तुम निज जीवनजानहुतबलौं । करहुन रारि शक्र सों जबलौं ॥ दोहा ॥ ताते निजपुर जाइसुत करहुअकंटक राज । जानि सुहित निज मम बचन जनि चिंतहु यह काज । कश्यपके ये बचन नहिं इमि मानेसि नादान । करैं न औषधि पान जिमि काल बिबश म्रियमान ॥ जयकरी ॥ बन्दि कश्यपहि बीर बिशाल । जाय बज्रपुर करि चख लाल ॥ सेनापति कहँ दियो निदेश । सेना साजन कहँ उद्देश ॥ सुनासीरके जीतन हेत । भुजबल के मद भयो अचेत ॥ उत एकत्रह्वै बैठिसुतंत्र । बासव बासुदेव करि मंत्र ॥ भेजे प्रद्युम्नहि संदेश । बधौअसुर कहँ तजिअंदेश ॥ सुनि गद आदिक यादव सर्व । ह्वै इकत्र करि मंत्र अखर्व ॥ हंसहि पठये प्रभुके पास । कहिसँदेश इमि आनँद रास ॥ गर्भवती हैं इततियतीनि । लहै प्रसवदिनप्रभा अहीनि ॥ होनहार अरु करिबो जौन । होइशीघ्रकहि भेजहु तौन ॥ सो सुनि इन्द्र उपेन्द्र बिचारि । कहिपठये इमि आनँद धारि ॥ तिनके ह्वैहैं सुत छबि ऐन । शस्त्र शास्त्रबिद अरिदल जैन ॥ प्रगटतहीं ते सब बलधाम । ह्वैहैं युवा पुरुषअभिराम ॥ तिन्हैंसहिततरुणिनकहँ राक्षि । कीजोनाश दैत्यदललाक्षि ॥ कछु दिनमें तिनके सुकुमार । क्रमसों प्रगटत भये कुमार ॥ जनमतहीते सब गुण पूरि । भयेयुवा दीरघबल भूरि ॥ प्रभुप्रभावनिधिको यहसोत । नतरु भूपकहुँ ऐसोहोत ॥ दोहा ॥ तिन बालन कहँ अटनिपै बिहरत इतउत देखि । नभगचार दनुजेश सों कहतभये अवरेखि ॥ पुरुषसिंह त्रयप्रबलबर अति

सुन्दर सुकुमार । अन्तःपुरके अटनि पै सानँदकरैं बिहार ॥
चौपाई ॥ यहसुनिकै क्रोधितदनुजेशा । सुभटन कहँयह दियेनि-
देशा ॥ ममगृह धर्षक जेअनिआई । जाइतिन्हैं गहिल्यावहु
भाई ॥ सुनिसन्देश दैत्यगणधाये । लैलैशस्त्ररोषसों छाये ॥
घेरिहर्म्यचहुँदिशि भयभारन । मारुबांधु धरुलगे पुकारन ॥
प्रभावतीसोसुनि हेभारत । लागीरुदन करनकैआरत ॥ तब
प्रद्युम्न साहसदेतासों । कहतभये भरिभूरि प्रभासों ॥ मतिभा-
मिनिहियमेंभयलेहू । ममसुप्रश्न सुनिउत्तरदेहू ॥ पितापितृव्य
बन्धु सबथारे । यहजो तुमकहँ होहिंपियारे ॥ तौकामिनि तव
प्रियहितलागी । तजिजयइहा आयुधत्यागी ॥ इनकेशस्त्र देह
परलैकै । मरैंइहांहम मननिर्भयकै ॥ नातरु तुमसब सम्मतक-
रिकै । शासनदेहुमोहिं मुदभरिकै ॥ गहिआयुध हम आनँद
रातैं । असुराधिपहि ससैननिपातैं ॥ यहसुनि प्रभावती गज-
गामिनि । कहतिभइ प्रियपतिसोंकामिनि ॥ सुतन सहितप्रभु
निज तनपाहौ । करहुउचित लखि जोचितचाहौ ॥ कहिअनु-
मानि असल असिआनी । देतभईपतिकहँ सुखदानी ॥ चन्द्र-
वती गुणवती सोहाई । निजनिज पतिहिदईमनभाई ॥ दोहा ॥
तबप्रद्युम्न गदशाम्बसों कहेविलसितुमअत्र । रक्षिससुत युव-
तीनकहँ करोसमर शुभशत्र ॥ असुर सुभटसँगलैचढ़ो असु-
राधिप बलवान । चहुंदिशि फिरि भिरिहौंकरौं तिनसों युद्ध म-
हान ॥ इमिकहि मायासोंरचे सुरथ तहां अनुमानि । जासुसा-
रथी सहसफणि नागराजभयदानि ॥ चौपाई ॥ तापैचढ़े बैररस
पागे । युद्धकरन असुरनसोंलागे ॥ तृणबनमें जिमिपावकदर-
सै । यथाबायु बारिदपैसरसै ॥ तिमिप्रद्युम्न परबलमें बिहरै ।
शरपरिहरे अनगिने जिहरै ॥ बिबिध धनकके बाणचलाई ।
बिकलकिये परभट समुदाई ॥ चहुंदिशिसों भट असुरप्रचारै ।
शस्त्रचलाइ प्रद्युम्नहिमारैं ॥ तिनकेशस्त्र काटिधनुधारी । बीर

प्रद्युम्न बिदित रणचारी ॥ शिरभुज उरकटि पगअँगकाटे । असुर सुभटसों क्षितितल पाटे ॥ सुरगण सहित सुराधिप आई । रहिऊरध अति आनँदपाई ॥ लेखन लगे समर की सुखमा । जेहि प्रद्युम्न रबिकी बरउपमा ॥ जेबचिगे गद शाम्ब जहां है । भे ते भट सब तरल तहांहे ॥ परेकहरसागर परमाना । जल जलजात जहाज समाना ॥ गद शाम्बहि बिनु बाहनदेखी । सुनासीर हियमें अवरेखी ॥ शाम्बहेत पठये रिपुनाशक । रथ करिमातलिको सुतशायक ॥ गदके हितपठये ऐरावत । करि आरूढ़ प्रबर मन भावत ॥ कृष्ण सुवनकेसमर सहायक । भेजत ते जयंत कहँ चायक ॥ रथगज सहितजयंत सोहाये । सानँद चलि प्रद्युम्नपहँआये ॥ दोहा ॥ प्रबरप्रद्युम्न जयंतमिलि मातलि सुत सहबीर । अरि दल मर्दन गेजिते हैं गदशाम्ब सुधीर ॥ गज रथ दै गद शाम्बकहँ कहि वृत्तान्त सहर्ष । बिरचेकोटिप्रद्युम्नतहँ प्रबल प्रद्युम्नअमर्ष ॥ श्रुतिमोदक ॥ रमणीय रंग । बर बिशद अंग ॥ धनुधर सुढंग । प्रति भटन संग ॥ तहँ जैतजंग । करिगाहि उमंग ॥ अरि गरब भंग । करि करण तंग ॥ जलजात नैन । प्रभु तनय मैन ॥ बल बिरदऐन । कहि बीर नैन ॥ तेहि पलक लैन । दे दुवन जैन ॥ पर प्रबल सैन । कीन्हें अचैन ॥ हैं सुभटनेक । बरणे जितेक ॥ तहँ भिरि तितेक । नहिं लरेनेक ॥ यहि बिधि सटेक । दिन रैनि एक ॥ लरिसह बिबेक । तनधरि अनेक ॥ भट भागितीनि । हनि क-लाक्षीनि ॥ परसिरी दीन । करि दईक्षीन ॥ जन जीतिलीन । निज कीर्त्ति पीन ॥ तामें अहीन । करि सुबुधि लीन ॥ दोहा ॥ लरिबो देखि जयन्तको सुमन सुसह पुरहूत । किये प्रशंसा भांति बहु लखिब्यवसाय अकूत ॥ भोर कृष्ण चढ़ि गरुड़ पै आइ शक्रके पास । राजि बजाये शंखबर पंचजन्यसबिलास ॥ सुनि प्रद्युम्न धुनि शंखकी प्रभु आगमन बिचारि । जाइ बंदि

पग ढिग खरे भये जोरि युगबारि ॥ सोरठा ॥ निज नन्दनहिं निहारि नन्दि वृष्णि नन्दहि निपुण । नागारि नवल बिचारि दीन्हे नाथ निदेशइमि ॥ चौपाई ॥ चढ़ितुम खगपै जायबिहारौ। सादर बज्रनाभकहँ मारौ ॥ सुनि खगपतिपै चढ़ि सुखपाई । गहि प्रभुपद पंकजसुखदाई ॥ होजहँ बज्रनाभतहँजाई । लागे तासों करन लड़ाई ॥ दोऊभुज बलके मदमाते। घोरयुद्धकीन्हे रिसराते ॥ गहिगुरुगदा प्रद्युम्नसुखारे । बज्रनाभके उरमेंमारे॥ रक्त बमनकरिघूमिघरीलों । गिरिअचेत लहिअसुरअजीलों॥ बहुरि चेत लहि गदा प्रचारी । हनेसि प्रद्युम्नहि बल भट भारी ॥ ताके लगेमूर्च्छि गरुड़ोपर । गिरे प्रद्युम्न निरखिहरषो पर॥ कृष्ण प्रद्युम्नहिं मूर्च्छित देखी । शंखबजावत भे अवरेखी ॥ सुनि सुखदा शंखध्वनि तत्क्षण । भे चैतन्य प्रद्युम्न सुलक्षण ॥ तबप्रभु मनगचक्र तेहिथरमें । आवतभे प्रद्युम्नके करमें ॥ इन्द्र उपेन्द्रहि नौमि उछाहे । चक्रप्रद्युम्नशंखपैबाहे ॥ बज्रनाभको बर शिर छेदी । प्रभुपै गयो चक्रअरिभेदी ॥ गद सुनाभ हित दनुज निपाते । अन्य भटनकहँ शाम्ब सोहाते ॥ बज्रनाभको बध लखि भागो । षटपुर गो निकुम्भभय पागो ॥ बरषेसुमन सुमन सुख लहिकै । जयति कृष्ण केशवकहि कहिकै ॥ दोहा ॥ सुमन पुरन्दर सहित तब कृष्णबज्रपुरजाय । शासित कीन्हे प्रजन कहँनीति सहित सुखदाय ॥ चारिभाग तेहि राज्यकहँ कीन्हे तहँ करिमंत्र । सुत जयन्तको बिजयतेहि दीन्हों एक स्वतंत्र ॥ हे प्रद्युम्न गद शाम्बके तहँ जे सुभग कुमार । तीनिभाग तिनकहँ दये क्रमसोंकृष्णउदार ॥ चारिकोटि हैं ग्राम बर शाखाग्राम अनेक । तुल्यभागसों दै तिन्हैं कीन्हें प्रभु अबिबेक ॥ सोरठा ॥ शक्रकृष्ण करिक्षेम गे निज निज पुर मोदलहि । तहँ षटमाससप्रेमरहि गदशाम्बप्रद्युम्नगे ॥ अबलौंराज्य सचैन तेचारों तहँ करत हैं । सुनहुभूप मुदऐन उत्तर

दिशा सुमेरुके ॥ प्रभाकर ॥ परमारथ भारथको लखिअन्त । गद शाम्ब प्रद्युम्न प्रभाव अनन्त ॥ चलिजाय तहां कछु दिवस बिनोदि । फिरिजातभये प्रभु मंजुलमोदि ॥ दोहा ॥ बरणे यहि अध्यायमें कारण सहित सप्रेम । बज्रनाभको बध किये जिमि प्रद्युम्न गहि नेम ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेषड्बिंशोऽध्यायः २६ ॥

दोहा ॥ कमलनयन कमनीय अति करुणा सिंधु कृपाल । कला कुशल प्रभु कौतुकी कोणप कुलकेकाल ॥ विग्देही ॥ तासुईहा जानि । शक्र निज हितमानि ॥ बिश्वकर्महिं टेरि । कहे आनँदघेरि ॥ द्वारकापुर जाय । रचौफेरि सचाय ॥ महत आनँदपाय । बिश्वकर्माआय ॥ दोहा ॥ पुरकी रचना फिरिकिये अति सुन्दररमणीय । सुनहु भूपको कारसकै सो सुखमा कमनीय ॥ प्रभुके रहिबे को सदनयोजनअर्द्धप्रमान । अतिउन्नत सुरपति भवन सम बिरचे मतिमान ॥ चौपाई ॥ चढ़ि गरुड़ोपरिनभपै धाई । रहि निजपुर लखि प्रभु सुखदाई ॥ शंखबजावत निज गृह आये । मिलियादवगण सों छबिछाये ॥ कहि प्रियबचन चारुसों अर्चन । किये गरुड़को तहां बिसर्जन॥सह यादवगण सुखसरसाई । बैठे सभासदनमें जाई ॥ यथाउचित सबको आदरकरि । दीन्हे मणिधन बसन मोदभरि ॥ आदि रोहिणी सिगरीमाता । अरु यशुदा सुनु भूतलत्राता ॥ सुनि आगमन मोदसों छाई । प्रभुहि लखन हित तहँ चलिआई ॥ तिन्हें लखि प्रभु सुखसों सरसे । चलिसबन्धु सबकेपगपरसे ॥ बारबार सब हिये लगाई । मोदितभई जन्म फलपाई ॥ कहि कहिउचित बचनचितचावन । अतिसुखदयेकृष्णप्रभुभावन ॥ आवतिभईतहां तेहि क्षनमें । बिंध्यनिवासिनि मोदितमनमें ॥ लखि भगिनिहि सानँदमनकीन्हे।रामकृष्ण आगेचलिलीन्हें॥ अतिसप्रेमहवै मिलिदोउभाई । करिसत्कार प्यारअधिकाई ॥

मातुनसहकरि बिदासुखारे। बिमलसभागृह मध्यबिहारे॥ संग
जननिगणके जगजननी। गई गेहमधि दैयतदलनी॥ कृष्ण-
चन्द्रयदुगण सहमोदन। नीतिरीतिसों लगीबिनोदन॥ दोहा॥
इतने में सुरराजके अनुशासनते तत्र। आयेनारदमुनि मुदित
रहेकृष्ण प्रभुयत्र॥ पूजित बिधिवत कृष्णसों बैठि यथोचित
ठौर। कहतभये सब यदुनसों मुनिगणके शिरमौर॥ बालापन
अरु ताहि दिनलों जितने शुभकर्म। क्रियेपरम बलरामने अ-
सुर सँहारनधर्म॥ पृथक् पृथक् यदुरायके सबगरुयेगणगाय।
मुनिकेशवसों ह्वै बिदा गये स्वर्ग सुखपाय॥ सोरठा॥ यदुगण
आनँद पूरिलहि अनेत धनकृष्णसों। दै दै दक्षिणा भूरिरुचि-
तयज्ञलागे करन॥ चौपाई॥ अथ फिरि जनमेजय भू भरता।
मुनिसों बूझेअरिदलदरता॥ जे प्रधानमाधवकी रानी। तिन
के बंशकहो मुनिज्ञानी॥ सुनिमुनिवर हिय आनँदराखे। यहि
प्रकार नरपति सों भाखे॥ रुक्मिणि जाम्बवती सत्यभामा।
नग्नजिती सैब्याअभिरामा॥ तरुणिसुदन्ता यमुना प्यारी।
और लक्ष्मणाये ब्रतधारी॥ चारु मित्र बिन्दा गजगामिनि।
सरुचि सभीमा भरतहि भामिनि॥ आठ दोयप्रभुकी तियना-
मी। ये सुन जनमेजय महि स्वामी॥ हैं प्रद्युम्नरुक्मिणिकेगुरु
सुत। शम्बरकेनाशकबरबलयुत॥ चारु देष्णताकेलघुभ्राता।
चारुभद्र फिरि बिदित सुदाता॥ चारुगर्भ संदृष्ट बहुरिहैं। द्रुम
सुषेण ये दोऊ फिरिहैं॥ चारु गुप्तगण जययशलेता। चारु-
बिन्द सुहितन सुखदेता॥ ये दश सुत रुक्मिणिके जाये। क-
न्या चारुमती सहभाये॥ सुवन एकादश भानुहि आदिक।
सत्यभामाके है प्रिय वादिक॥ कन्या चारि चारुअति गुनिये।
अब सुत जाम्बवतीके सुनिये॥ शाम्ब आदि सुत पांचबखा-
ने। तनया एक सहित सुखमाने॥ द्वैसुतनाग्निजीतके नागर।
हैं बरणे भट परमउजागर॥ दोहा॥ सुता एक द्वै सुवन लहि

लहि सुन्दरता नारि । सैब्याके सुतएकहो अरुजेताधनुधारि ॥ सात सुभीमाके सुवन करता कीर्त्ति अहीन । तीनि लक्ष्मणाके सुवन कन्या एक प्रवीन ॥ अश्रुतनाम सुत प्रगटभो यमुना सों जगजैन । ताहि दये सुत सेन कहँ केशव करुणा ऐन ॥ सोरहसहस तियानमिलि लाखसुवन रणधीर । भये कृष्णके प्रबलअति बिदित बखाने बीर ॥ भे अनिरुद्ध प्रद्युम्नके सुवन परम बलवान । जेठोसुत अनिरुद्धको बज्रनाभ मतिमान ॥ भे प्रतिरथ सुत बज्रके ताके सुवन सुचारु । सुत कनिष्ठ अनिरुद्धके हैं अनमित्र उदारु ॥ सिनि सुतभे अनमित्रके सत्यबाकसुततासु । सत्यबाकके सूरसुत सुतयुयुधान सुजासु ॥ सोरठा ॥ तासु असंग कुमार तू नितासु सुत प्रगटभे ॥ तासुयुगन्धरबार बंश प्रशंसितकृष्णके ॥ इतनेकहे प्रधानशाखाबंश असंख्यहैं । पुत्र सुपौत्र प्रमानअरु परपौत्र बिधानसों ॥ चौपाई ॥ बैशम्पायनकेये बैन । सुनि बोलेभूपतिलहिचैन ॥ जिमि प्रद्युम्नशम्बरको नाश । किये कहौ सो ज्ञानप्रकाश ॥ बैशम्पायनकह सुनु भूप । भोप्रद्युम्नको जन्म अनूप ॥ यादिन ताकी सतईरैनि । लहिनिशीथ बोला भुवभैनि ॥ आइशम्बरासुर गुरुकाय । निठुर सूतिकागृह मधि जाय ॥ लै प्रद्युम्नकहँ गो निजभौन । काहूजान्योभेद न तौन ॥ केशवजानिभविष्य बिचारि । रहे मौन ह्वै धीरजधारि ॥ हीं शम्बरकीप्यारी तीय । मायावती परमशुचिहीय ॥ दिहोसि प्रद्युम्नहितेहिकहि मोदि । सुत ब्रतपालहु याहिबिनोदि ॥ हरषि प्रद्युम्नहिलै सो अंक । लागीनिरखन बदनमयंक ॥ निरखतभो ताकेहियमान । हैये ममपतिकाम अमान ॥ यहदृढ़जानि सुकरि अनुमान । दियो न तेहि निज अस्तन पान ॥ धाईके अस्तन को क्षीर । पान करावत भईस्वतीर ॥ पालनपोषण बिधिनिज हाथ । करत भई जाने निज नाथ ॥ क्रमसोंकछू दिवसमेंबार । बरधि अवस्था लहे कुमार ॥ तब रति ईछि असुरकी बाम ।

लागीं करन बिनोद ललाम ॥ दोहा ॥ जानत ताहि प्रद्युम्न हे निज जननी नहिं आन। तकि बिकार चेष्टा कहे शोचित ह्वै मतिमान ॥ जननी ह्वै कत करति हो इमिचेष्टा अनुमानि। भूलिपुत्रको भाव हठि रति मति पति समजानि ॥ मैंतवसुतहौं कै नहीं कहहु शीघ्र यहभेद। दूरि होइ जेहि जो भयो तुव सुभावलखि खेद ॥ रोला ॥ बचनसुनि प्रद्युम्नके मायावती मुसुकाय। कहत ऐसे भई सिगरो भेदआनँद छाय ॥ हौ न तू मम सुवन हौ तुम कत सुमम छबिवन्त। हैन शम्बर पिता तू तव पिता कृष्ण अनन्त ॥ मंजु महिषी कृष्णकी रुक्मिणी हैं छबि भौन। तासु गर्भज भये तुम फिरि भयो सुनिये तौन ॥ जन्म तें निशि सातईं उत शम्बरासुरजाय। हरितुम्हैंलै आइ मोकहँ देतभो गहिचाय ॥ प्याय पय तिय और की मैं तुम्हैं सेयो मोदि। करहु अब मम आश पूरण केलि कलन बिनोदि ॥ तजहु मोमें जननिको हौ भ्रान्ति कीन्हें जौन। तुमहिं देखेबिन जननि तुव परम दुखित सरौन ॥ सुनिप्रद्युम्न सुरोष ह्वै यह भये करत बिचार। कोपिशम्बर लड़ै मोसों करउँसो उपचार ॥ यह बिचार चढ़ाय धनुशर लाय श्रुतिलौं तानि। काटिदीन्हें रत्थमैंध्वज परमप्रिय पहिचानि ॥ ध्वजाको बिध्वंस सुनिकै ध्वजाधीश रिसाय। रहे सतसुत तिन्हैं शासन दयो निकट बुलाय ॥ जाइ तुम सब सुभट शीघ्रहि बाण शीघ्रग मारि। केतु छेदो दुष्टके हृद देहु महिपै डारि ॥ मानि शासन निज जननिको शस्त्र लैलै सर्ब। गे समर्षहिपै प्रद्युम्नहि टेरि बचन सगर्ब ॥ शस्त्र गर्बित सुरथ पै चढ़ि भटप्रद्युम्न महान। जाइतिनसों भिरो लखि गजयूथ सिंह समान ॥ किये उद्धतयुद्धक्रुद्धि सदाद्धि सिगरेबीर। गिनतभोतृणसम तिनहिं सुतकृष्णको रणधीर ॥ सहित सुर गन्धर्ब गण तहँ आइकै सुरराज। लखन लागे सुभट जनके बीरताके काज ॥ देखि अद्भुत युद्ध तहँ ग-

न्धर्बअद्भुत नाम । कहतभो सुरराजसों कर जोरिकैतेहियाम ॥ एक सुभट प्रद्युम्न वे शतबीर दीरघ काय । पाइहैं प्रद्युम्न तिनसों बिजय किमिलहि चाय ॥ दोहा ॥ सुनासीर गन्धर्बको सुनि यह बचन सदन्द । प्रबल प्रकर्ष प्रद्युम्नको कहेप्रभाव अमन्द ॥ ये प्रद्युम्न छबिधाम हैं पूर्ब प्रशंसित काम । भस्म किये शिवतब इन्हैं लखिकछु दोष सकाम ॥ रतिके अस्तुतिकेकिये कहेंकृपाकरि ईश । मानुषह्वैहैं बिष्णुप्रभु जनहित बिस्वेबीश ॥ तासुतनय ह्वैहैंप्रकट तुवपतिनाम अनंग । हरि लै जाइहि निजसदन तेहिशम्बर सउमंग ॥ ताते प्रथमहिंजाइ तुम मायावती कहाय । शम्बरकीतिय ह्वैरहौ मोहिंताहि गाहि चाय ॥ सोरठा ॥ शापिहि तुम्हैं सक्षेम तुवपति कहँ हरिल्याइ वह । पालेहु ताहिसप्रेम बराधि बिधिहि सोशम्बरहि ॥ बहुरि द्वारकाआय तुमहिंसहित बिहरिहि सरुचि । इमिकहि शिव सुखदाय गये कलित कैलासपै ॥ यहिबिधि को बरदान लहे कामसुत कृष्णके । ये जगजैन अमान भ्रमनकरहुकछुचित्तमें ॥ चौपाई ॥ यह सुनि सुरगण संशय त्यागे । लखनलगे संगरसुद पागे ॥ शम्बरके शतसुत भरि रिशिसों । लगेशस्त्र मारनचहुं दिशिसों ॥ तिन शस्त्रनकहँ काटिसुखारे । धीर प्रद्युम्न बीररस भारे ॥ बाणअमोघ अनगिने मारे । क्रमते असुर शतक बधि डारे ॥ ताक्षणलसे सुरथपै ऐसे । हति गजसिंहशिखरपै जैसे ॥ सुतबध सुनि शम्बर रिसछायो । चतुरंगिनि सेना सजवायो ॥ सानुमान समरथ अतिभारी । चल्यो ताहिपै चढ़ि धनुधारी ॥ मंत्रीचतुर चारिरणधारी । चलेसंग परप्राण प्रहारी ॥ दुर्द्धर और प्रमर्दनबीरा । तृतियकेतुमालीरणधीरा ॥ चौथशत्रुहन्ता शरवाहक । चलोप्रचारतसंगरचाहक ॥ बीरगजरथ सहसदश बरणे । द्वैशत रथीरुधिरमहि भरणे ॥ आठसहस्र हयरथ सजाती । बरणे बरभट अयुतपदाती ॥ चलोसंगलैशम्बरराजा ॥

बजवावत बहुजंगीबाजा॥ अशकुन बहुतभयो तेहिक्षनमें। नहिं मानेसि सो गर्बित मनमें॥ रणमहिं मध्य प्रद्युम्नहिंदेखी। सबल शम्बरासुर अति तेखी॥ शीघ्रगबाण सहस्र प्रहारे। तिन्हैं प्रद्युम्न काटि महिडारे॥ दोहा॥ मच्योयुद्ध अति घोर तहँ आयुधचले अनेक। हत्योअनगिने असुरकहँ तनयकृष्ण को एक॥ ह्वै प्रद्युम्न के शरनते व्याकुल दैयत भागि। शम्बर के पीछे भये खरेजाय भयपागि॥ तब शम्बर चारिव सचिव को यह दये निदेश। लरिमम अप्रियकारकहि हतहुशीघ्र शुभ भेश॥ चौपाई॥ निजस्वामी को सुनि अनुशासन। ते चारौभट युद्ध बिलासन॥ कीन्हेंघोरयुद्ध बलभारे। क्रमसों तिन्हैंप्रद्युम्न सँहारे॥ ताथरते शोणित की तरणी। बहतिभई बोरति सी धरणी॥ तिनको नाश देखिकै शम्बर। लागो आपुकरन गुरु संगर॥ हने प्रद्युम्न लायधनु गुर में। एकबाणशम्बरके उर में॥ ताकेलगे मूर्च्छि असुरेशा। चेति हने शरसात सुमेशा॥ तिन्हैं प्रद्युम्न बीचहीकाटे। फिरिहनि सत्तरिशर तेहि डाटे॥ फिरिअसंख्यशर तजिरणचारी। छाइ दिशिनकरि कियेअँध्यारी॥ अन्धकार लखि शम्बर धनुधर। बैष्णव अस्त्रतजतभो बुधिबर॥ अन्धकार लोपनकरि पथपै। बरष्योशर प्रद्युम्नके रथपै॥ करिप्रद्युम्न करलाघव मितिमैं। डारे काटि सबै शर क्षितिमैं॥ तब तरुबरष्यो सो मायावी। तजे अग्निशर ये मेधावी॥ शिलावृष्टि कीन्हेंसि वै जबहीं। मारुतशर छांड़ेयेतबहीं॥ सो गजयूथ रचे अति कोपे। ये रचि सिंह तुरित तेहि लोपे॥ शम्बर कीन्हीं माया जितनी। किये प्रद्युम्न व्यर्थ वहं तितनी॥ तवशम्बर करिचष रँगराते। प्रकटित कियेसिंहमदमाते॥ दोहा॥ तब प्रद्युम्न कीन्हे प्रकट शलभ अष्टपद भूरि। सिंहयूथको नाश ते करतभये बलपूरि॥ तब शम्बर शोचित भयो मैं पाल्यो निजकाल। बालपने यहिनहिं बध्यों चूकिचा-

तुरीचाल ॥ यहि बिधिशोचो घरिकलौं फिरिहिय साहस आ-
नि । दई शम्भुकीपन्नगी मायाकरी महानि ॥ चौपाई ॥ बमत
ज्वाल पन्नगगणधाये । चहुँदिशिसों अतिरिससोंछाये ॥ तब
प्रद्युम्न तार्क्षकी माया । करिलोपितकीन्हीं सो माया ॥ यह ल-
खि शोचित संगर शम्बर । हिये बिचारतभो गुणगह्वर ॥ जो
गिरिजाको दीन्हों मुद्गर । भीमअमोघ जयद जाहिर बर ॥ है
ममपास आशाकोपाहक । पावकसम अरिबनको दाहक ॥ तेहि
चलाइयहि शीघ्र निपातौं । जयलहि परममोदसों रातौं ॥ यह
बिचारजो शम्बर कीन्हे । तुरित सुरेश जानि सो लीन्हे ॥ सो
नारदसों कहि सुरस्वामी । कहत भये इमि अंतरयामी ॥ कवच
सुशस्त्र इक्षमवचारू । अमल अभेद अमोघ उदारू ॥ यह लै
सादरसहितसनेहू । जाइ प्रद्युम्नहिं गुणकहिदेहू ॥ सुनिलैकवच
शस्त्र मुनिनारद । गेप्रद्युम्नपै परमबिशारद ॥ अन्तरिक्षरहिनभ
पैमानद । कहेकृष्णके सुतसोंसानद ॥ मैं नारदहौं सुनु रिपुघा-
लक । पठयेमोहिं सरुचिसुरपालक ॥ पूर्वभावनिज सुमिरहु चा-
वन । तुमहौ कामदेव अतिपावन ॥ शिवके क्रोधानलसों जरिकै ।
भयहु कृष्णको सुततनधरिकै ॥ बालापनमें लखि छबिछायो ।
हरितुमकहँ इत शम्बरल्यायो ॥ दोहा ॥ जो शम्बरकी घरनिहै
मायावती प्रवीनि । सोलव तियरति प्रियाहै रतिसोंभरी अही-
नि ॥ तुव पालनके काजहैं मोहिं शम्बरहि अत्र । मारिशम्बरहि
ताहिलै जाहुकृष्णप्रभु यत्र ॥ जयकरी ॥ कवच सुशस्त्र बैष्णवीचारु ।
अमल अभेद्य अमोघ उदारु ॥ सुनासीर यह तुमकहँ दीन ।
अबयह धारणकरहु प्रवीन ॥ अरु मन दै सुनिये मम बैन ।
यहजो शम्बर दैत्यसचैन ॥ दियो पार्वतीको करिटेक । हैयासों
गुरु मुद्गरएक ॥ सो अमोघ अति उग्रप्रभाव । तेहि वहछां-
ड़न चहै सचाव ॥ सत्वरताके बारणहेति । गिरिजहि ध्यावहु
सबिनय चेति ॥ गे सुरपति ढिग मुनिकहि नेम । रथते उतरि

प्रद्युम्न सप्रेम ॥ धरि हिय शैलसुताको ध्यान । अस्तुतिकरत भये मतिमान ॥ सुनि अस्तोत्र कृपाकरिगौरि । कहतभई निज महिमा सौरि ॥ मैं प्रसन्नहौं लखि तवकर्म्म । मांगिलेहु वांछित बरपर्म्म ॥ जगदम्बाके बचन उदार । सुनि अति मोदि प्रद्युम्न कुमार ॥ करि प्रणाम बोले करजोरि । अम्बसुनहु यह बिनती मोरि ॥ जो मोपर तवकृपासचैन । तौ बरदेहु सर्वअरि जैन ॥ अरु आपुनको दीन्होंजौन । है शम्बरसों मुद्गरतौन ॥ पद्ममालसम लागि ममग्रीव । माधि सोहै गुरु सुखमासीव ॥ यहसुनि एवमस्तुकहि हर्षि । भई अदृश्य अम्ब मुद बर्षि ॥ दोहा ॥ तब प्रद्युम्न चढ़ि सुरथपै बैठे गहि धनुबान । लखि शम्बर मारतभयो मुद्गर बज्रसमान ॥ सो मुद्गर कमनीय ह्वै चारु कंजकी माल । लगि प्रद्युम्नके ग्रीवमें शोभित भयो बिशाल ॥ चौपाई ॥ तब प्रद्युम्नगहि बाणशरासन । जो मुनिदीन्हें करि सम्भाषन ॥ कहतभये इमि जो महित्राता । केशव रुक्मिणि मम पितु माता ॥ तौ यहि शरसों यह खल मरई । सुरनर मुनिकर संशय टरई ॥ कहि धनु श्रुतिलौं ईंचि सुखारे । बाण अमोघ तासु उर मारे ॥ भेदिताहि शर महिमें प्रबिसो । पर्वत फोरि घोरगुर पबिसो ॥ दुस्सह तेज बैष्णवी शरको । लहिभो भस्म असुरबर धरको ॥ सुर गन्धर्बनके गण हर्षे । साधुसाधु कहि सुमन सुबर्षे ॥ असुरहि बधि प्रद्युम्न धनुधारी । जाइ ऋक्षवत् पुरी सुखारी ॥ लै तिय मायावतिहि सुरथपै । गये द्वारका चढ़ि नभ पथपै ॥ सत्वर प्रभुके गृहपै जाई । उतरतभये परम सुखपाई ॥ रथते उतरि सतिय सुखदाता । चले जितैहीं रुक्मिणिमाता ॥ देखि तिन्हैं सब तियगण रूरी । बिस्मय हर्ष भीतिसों पूरी ॥ सुतहि देखि रुक्मिणि मृगनयनी । पुत्रशोकतें आरत बैनी ॥ सहितसपत्निन सब तियगनसों । कहत भई कछु मोदित मनसों ॥ अर्द्धरातिके ऊपर सजनी । सपन

लख्यो मैंसुनहु सुबरनी ॥ दयेमोहिं केशवप्रभुल्याई । सुरतरु को पल्लवसुखदाई ॥ दोहा ॥ अति सुन्दर रमणीयरुचि शुचि मुकुलनके हार । पहिराये मोहिं लायउर प्रीतम कृष्णउदार ॥ श्वेत बसन धारे सुरुचि श्यामा तिय लखि मोहि । गहि अन्हवाइ सुबारि मैं शीश सूंघि मनमोहि ॥ माला कञ्चन की बिमल पहिराई करिप्रेम । निरख्यो मैं शुभस्वप्नये शीघ्रहि करता क्षेम ॥ महिखरी ॥ यहकहिकही प्रद्युम्नसे इमि निकट लहिकै रुक्मिनी । तुव सुवन बरके करींजेइँ बरपुण्यकी पदवी घनी ॥ तव सदृशहोतो सुवन मम प्रद्युम्न होतो जो सुनो । तेहि गयो हरिलै बालपनमैं असुर शम्बर अरिगुनो ॥ तहँ आइ इतनेमैं समुद प्रभु कृष्ण रुक्मिणिसों कहे । यह पुत्रतव सुप्रद्युम्नहै यह पुत्रकी पत्नी अहे ॥ रति नामहै यह रति रहति उतरही मायावतिकही । निज शक्तिसों निज सदृश तिय रचि शम्बरहि तोषतिरही ॥ अब मारिरणमें शम्बरहि लै तियहि इत आवत भये । लहि सतियसुत तुम करहु अब व्यवहार लौकिक मुद मये ॥ ये सुनि स्वभाग सराहि रुक्मिणि पाइप्रिय प्रफुलित भई । चलिअंकलाइ सुपुत्रगहि सुखसिन्धुमधि मनु हलिगई ॥ तब मुदित श्रीप्रद्युम्न बन्दे पग जनक अरुजननिके । बलरामके पग बन्दि बन्दे चरण सबगुरुजननिके ॥ सब दये आशिष लाइ अंकनि हरषसों गदगदमहा । तेहि समयके सुखके प्रबाह न जात अबनेकसु कहा ॥ दोहा ॥ फिरिकीन्हें बलरामप्रभु पूरितप्रेम स्वतंत्र । रक्षाहित प्रद्युम्नके पावन आह्निक मंत्र ॥ रोला ॥ विष्णुबिधि हरगुरु सुरासुर पितरऋषिमुनि पातु । पातुशुचि ओङ्कार अरु निति बषट्कार सुपातु ॥ पातुवेद पुराण अरु ब्याख्यान सर्बसपातु । पातु पृथिवी बायुनभ दिशि नदी सिगरीपातु ॥ सर्बसागर सर्बपर्बत सदा खगपतिपातु । सर्बबसु आदित्यसब सुअश्विनौ द्यौपातु ॥ पातु ह्री श्री स्वधामेधा

तुष्टि पुष्टि सुपातु। पातु स्मृति धृतिअदिति दिति दनु स्वधा स्वाहापातु॥पातु ग्यारहरुद्र अरुसब रुद्रकेगणपातु। तीर्थपति सब तीर्थपाहि सुतीर्थबासीपातु॥ पातु गणपति स्वामिकार्त्तिक सदा नन्दीपातु। पातु सब पर्जन्य अरु नक्षत्रग्रह सब पातु॥ पातुदेवी सदा सिगरी सप्तमालरिपातु। पातुतीनों अग्निशुचि अरु सर्ब मख नितिपातु॥ शेष बासुकि तक्षकादिक सर्प सिगरे पातु। पातु अमृत गऊ सुबरण दूध दधि निति पातु॥ पातु ऋषिपत्नी सकलऋषि कन्यका सबपातु। पातु सिगरे प्रजापतिसुत प्रजापतिके पातु॥ कियो श्री बलरामको यह चारुरक्षामंत्र। पढ़ैंजे अरु सुनैंजे जन राखिचित्त स्वतंत्र॥ लहहिं कबहुँन क्लेशते जन लहैं कबहुँन भीति। लहैं बांछितफल अपूरब लहहिं रणमैं जीति॥ दोहा॥ बरणे यहि अध्यायमें बंश कृष्णकेजौन। हरिप्रद्युम्न को लैगयो शम्बर दैयत तौन॥ बधिशम्बरहि प्रद्युम्नलै मायावती स्वतीय। फिरिआये पुरद्वारका सो बरणे कमनीय॥ फिरि बरणे बलरामजो कीन्हें रक्षा मंत्र। जाहि पढ़े जन रहि अभय बिहरैं स्वरुचिस्वतंत्र॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेशम्बरबधोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

बैशम्पायनउबाच॥ दोहा॥ हरिप्रद्युम्नकहँ लै गयो शम्बरजाही मास। जाम्बवतीके शाम्बभो सुनोभूप तेहिमास॥ चौपाई॥ करिबलराम छोह अतितापै। शस्त्र शास्त्र बिधि सिखये आपै॥ सिगरे यादव लखिमुद भरहीं। अतिशय छोह शाम्बपर करहीं॥ सहित सबतयदु द्वारावति मैं। बिहरैं मन दीन्हेंसुतमति मैं॥ प्रभुप्रभाव तेहि वर पट्टनमैं। पूरित निधि ऋधि सबहि गृहन मैं॥ लखि बिभूति सिगरे यदुगनको। लही हारिश्रीसब नृपजनको॥ एकसमय दुर्योधनराजा। किये यज्ञबर सरससमाजा॥ तहँ सिगरे चहुँदिशिके महिपति। न्योते गये रहेहिय गहिरति॥ तहँ ते सब गुणि सरस उछाहे। पुरीद्वारका देखन

चाहे ॥ सिगरे नृपसह पाण्डवकौरव । गये द्वारका गहि गुरु गौरव ॥ सुनेकृष्णसिगरे नृपआये। रैवतगिरिढिगबासकराये॥ सेना अष्टादश अक्षोहिनि । सिगरेनृप गणको मन मोहिनि ॥ योजन योजन में निज निजदल। लैलै परे भूपसब बरबल ॥ यदुबंशिन सह कृष्ण सुखारे। गयेतहां सुखमासों भारे ॥ मिले यथोचित सब नृपगनसों । सब नृप लहे मोदि अति मनसों ॥ चारु सिंहासन रचित रतनसों। मधिमें ताहिधराय यतनसों॥ तापै सरुचि प्रभुहि बैठाये। नीके निरखि नेत्र फलपाये॥दोहा॥ यथा उचित आसननि पै यदुन सहित सब भूप। चहुँ दिशि बैठत भे बहुरि सुखमापाइअनूप ॥ यदुगण नृपजन सहिततहँ सोहे प्रभु छबि संचि। सुर असुरन की रचिसभा राजतमनहुँ बिरंचि ॥ मधुभार ॥ तहँ लगोहोन समोद । शतबार तासु बिनोद॥ भो ताहिक्षण घनघोर । अरु बह्यो मारुत जोर ॥ इमि महत दुरदिनदेखि। सबरहे चकित अवरेखि ॥ घनघोर ते छबिछाय। तब प्रकटि नारद आय ॥ लहि अर्घ्य पाद्यप्रवीन। भे सभामधि आसीन ॥ तब मिटो दुरदिन सर्ब। भे सुचित नृपति अखर्ब॥ तब कृष्णसों मुनिराज। इमिकहत भे निजकाज॥ आचरज धन्य महान। हो कृष्णतुम सुखदान ॥ सुनि कहे प्रभु मुसकाय। मुनिकहे तुमसतिभाय॥ है आचरज अरु धन्य। सहदक्षिणा हमगन्य ॥ यहसुनि सुमुनि सुखदाय। इमि कहतभे हरषाय॥ यहिप्रश्नको करिशोध। अबलह्यो प्रभु में बोध॥ इमिभाषि सुमुनि सुजान। फिरिचहे ऊरधजान॥यहि बारताको भेद। बिनलहे नृपलहिखेद ॥ इमिकहे प्रभुसों बैन। मुनिकिये प्रश्नसचैन ॥ तुमदये उत्तरजौन । करिप्रगट कहिये तौन॥ दोहा ॥ सुनि प्रभु भूपनसों कहे नारदसो सुनिलेहु । कहे सुमुनिसो भेदयह भूपनसों कहिदेहु ॥ सुनिमुनि भूपनसों कहे सुनहु सकल क्षितिपाल। बूझेहु सोहम कहतहैं सह बिस्तार

बिशाल ॥ रोला ॥ न्हाय सुरसरि गयेहम निशिरहेआधोयाम । लख्यो तटमें तहां कच्छप एकअति अभिराम ॥ एक योजन उच्चचौड़ो तासुदुगुण अनन्य । परसि तेहिहम कहेतुम आचरज वपुहौ धन्य ॥ बचन यहसुनि कहेसि सोमति कहहु मुनि इमिबात । आचरज धनि सुरसरित मधिकिते हमसे आत ॥ जायतब सुरसरितको लखिकही हमयह बात । आचरज गति धन्यतुम सुनिकही तिनसुनुतात ॥ आचरजधनि सिन्धुजामधि किती हमसी जाति । जाय सिन्धुहि कहे तब आचरज धनि तेहि भांति ॥ सिन्धुमोसों कहेमुनि आचरज धन्यउदार । भूमि-जापै सात सागर ब्रसतसह परिवार ॥ जाय तबहम भूमिसों इमिकहे आनँद धारि । आचरज अरु धन्यहौ तुम कहेंहम निरधारि ॥ भूमि यहसुनि कहोमुनि तुम कहहु मति यह बैन । आचरज अरु धन्यगिरिजे धरे मोहिं सचैन ॥ जाइतब भूध-रनसों हम कहे साधककार्य्य । आचरजगुण भरेहौ तुम धन्य सिगरे आर्य्य ॥ सुनिकहे गिरितुमकहहु इमि मतिकलह प्रिय मुनिराज । आचरज अरुधन्यबिधिजो रचत सृष्टि समाज ॥ जायतब हमकहे बिधिसों धन्यतुम करतार । आचरजहौ आ-चरजमें रचतहौ सबसार ॥ कहेबिधि इमि कहहु मुनिमति बि-नाजाने भेद । आचरज अरुधन्य है जग चारु-चारिउ बेद ॥ वेदसों हम कहे तुम आचरज धनि सरबज्ञ । कहे वेदन कहहु इमि आचरज धनिहैं यज्ञ ॥ यज्ञसों हम कहे तुम आचरजध-न्यप्रभाव । कहेयज्ञ न कहहु इमि मुनि कलहप्रिय गाहिचाव ॥ आचरज अरुधन्यहैं प्रभुबिष्णु पुरुष पुरान । आइतब इतकृ-ष्णसों हमकहे सोइ बिधान ॥ आचरज अरु धन्यहौ तुमकृष्ण प्रभु अभिगत्य । कहे प्रभु आचरज धनिहम दक्षिणा सहसत्य ॥ दोहा ॥ सुनहु नृपति आचरजधनि करैं सुयहिबिधि शोध । आ-इतै श्रीकृष्णको बचनसुनेभो बोध ॥ इमिकहि नारद स्वर्गगे

नृपसब निजनिज धाम। गये कृष्णसों ह्वै बिदा बरबिस्मित अभिराम॥ सब भूपनको करि बिदा केशव रुक्मिणि रौन। यदुबंशिन सह मुदितमन आये अपनेभौन॥ बरणे यहि अध्याय में नारदको सम्बाद। सुपद धन्यआचरजको प्रभुके मुख निर्बाद॥

इतिहरिबंशदर्पणेआचरजधन्यपदयोनिर्बिबादोनामअष्टविंशोऽध्यायः२८॥

दोहा॥ बैशम्पायनसों कहे फिरि जनमेजयभूप। मो मन तृप्ति न होइ मुनि सुनि प्रभु चरितअनूप॥ताते कहिये कृष्णके चरित और अभिराम। जे इतउतके सुखद शुचि परम धरमके धाम॥ सोरठा॥ जनमेजयके बैन बैशम्पायन सुनिकहे। कहिकोसकै सचैन कृष्णचन्द्रके सब चरित॥ चौपाई॥ मति अनुरूप कहैं सो सुनिये। पापतूल गिरिको शिखि गुनिये॥ ज्ञानवान पटु सुगति बिलासी। भीषम शरशय्याके बासी॥ कहे सुअर्जुन सों बरचावन। कह्यो कृष्णके चरित सोहावन॥ यह निदेश भीषमको लहिकै। कहतभये अर्जुन मुद गहिकै॥ एकसमय हम द्वारावतिमें। गेहेमतिही बोरति अतिमें॥ तहां एकदिन प्रभु ह्वै ईछित। भे एकाह्निक मखरचि दीछित॥ तेहिक्षण आयो ब्राह्मण आरत। पाहि कृष्णप्रभु पाहि पुकारत॥ सुनि प्रभुकहे करबहम रक्षक। कहु निज अर्थ अजल करि अक्षक॥ कह्यो विप्र सुनिये खल घालक। जन्मतही मेरेत्रय बालक॥ हरेगये कासों दुख कहिये। समुझि मसूसि तोषगहि रहिये॥ चौथो आजु होयगो सुनिये। रक्षण तासु आपु दृढ़गुनिये॥ सुनियह आरत बचनसुद्विजके। कृष्ण कृपाल भिषजभवरुजके॥ मोतनहेरि कहत भोऐसो। उभय सन्धिपरि करिये कैसो॥मखबिधि त्यागत बनत न कैसेहु। द्विजहि न रक्षिय बनत न ऐसेहु॥ मैंतब कहेउं कृष्णसों बानी। मोहिं देहु शासन गुरुज्ञानी॥ हो उतकरि बरभयको लक्षण।

सजोरथ लखि सहित आदर द्विजहि कृष्णचढ़ाय । आप चढ़ि मोहिं सारथी करि शीघ्र रथ हकवाय ॥ बिपिनगिरि सर सरित तरि करि दिशा उत्तर गौन । गये सागरकूललौं चलि मुदित रुक्मिणि रौन ॥ दोहा ॥ आइ सिन्धुतहँ कृष्णको करि पूजन लहि चैन । जोरि पाणि युग कहत भो कहा कहो यह बैन ॥ तब प्रभु सागरसों कहे सुपथ मोहिं तुमदेहु । यहसुनि जलनिधि दीन ह्वै कहत भयो फिरिएहु ॥ चौपाई ॥ हौं मैं तव थापित हे स्वामी । तव प्रसादते अनुपम नामी ॥ पथलै प्रभु जैहौ तुम जैसे । जैहैं मत्तभूप सब तैसे ॥ होइहि नाथ हिनाई मोरी । लखहु बिचारि कहउँ करजोरी ॥ बिनय सिन्धुकी सुनि यदुनायक । बोले कृपासिन्धु चितचायक ॥ द्विजके अर्थ मानि मम बानी । देहु मार्ग अम्बुधि बरज्ञानी ॥ तुमहिं न नांघि सकिहि कोउ मानुष । बीर प्रमत्त गने जे धानुष ॥ यह सुनि सिन्धु कह्यो गुणनिधिसों । रथमिति जलमें सोखउ बिधिसों ॥ तेहि पथ जाइकरो प्रियही को । कहेकृष्ण नहिं यह मत नीको ॥ तुम्हें दये हों हों आशिष बर । रहौ अगाधअदृश्य रत्न बर ॥ ते बर व्यर्थ करहुमति सागर । करहु बारिथम्भन गुण आगर ॥ सुनि बारिधि जल थम्भनकीन्हे । तेहि पथ पार जाइ मुदलीन्हे ॥ उत्तर कुरु तरिआनँद पागे । गये गन्धमादनके आगे ॥ तहां रूप धरि आनँद छाये । पर्बत सात सामुहे आये ॥ मेरु जयन्त रजतगिरिभारी । बैजयन्त अरु नील सुखारी ॥ इन्द्रकूट कैलास सोहाये । पूजि प्रभुहि बोले मन भाये ॥ नाथ आपु अनुशासन दीजे । सो हम सिगरे सानँद कीजै ॥ दोहा ॥ कहे कृष्ण भूधरनसों बिवर मार्ग रचि देहु । यह निदेश सुनि शैलबर कहे तथास्तु सनेहु ॥ भे अदृश्य सब शैल तब गिरिमधि बिवर लखाय । तामधि रथ प्रविशाय प्रभु चलत भये हरषाय ॥ यथाघने घनको पटल भेदि होहिं रविपार । तथा शैल मधि चलि सरथ गे उत कृष्ण

उदार ॥ अन्धकार अतिघोर तहँ मिल्यो सुनहुनरनाह। जानि परे जो चलतमें कर्दम सम तन माह ॥ नीठि नीठि रथ ईचिहय रहे खरे ह्वै हारि। तब प्रभु दीन्हे चक्रसों सबतम तुंग बिदारि॥ जयकरी ॥ तब कुण्ठित मति सुनहु नृपाल । दरशे तेज समूह बिशाल ॥ तीनिलोकमें किये पसार। ज्वाल जाल प्रज्वलित अपार ॥ तासु निकट रथ ठाढ़ कराय। कृष्ण तेजमें गये समाय ॥ द्विजसह रहि हम रथपै तत्र। निरखत हेमनाकि एकत्र ॥ बीते दोय घरी तेहिबार। कढ़े ज्योतिसों कृष्ण उदार ॥ लये संगबर बालक चारि। आइदये बिप्रहि मुद धारि ॥ पुत्रन लखिद्विजलहि मुद पर्म। लगो प्रशंसन प्रभुको धर्म ॥ फिरि वाहीमग सुरथ चलाय। क्षणमें पहुँचे प्रभुपुर आय ॥ करि यात्रा लहि प्राप्त ललाम। आये दिवस गये द्वै याम ॥ ससुत द्विजहि भोजन करवाय। देइ दक्षिणा प्रीति बढ़ाय ॥ कीन्हे बिदा कृष्ण अभिराम। गयो सुतनलै द्विज निजधाम ॥ द्विज अनेक फिरि कृष्ण बुलाय। भोजन करवाये सुख पाय ॥ सहित यादवनलै मोहिंसाथ। भोजन कीन्हे प्रभुयदुनाथ ॥ तदनु सभा गृहमें गहिमोद। बैठि करत भे कथा बिनोद ॥ बिस्मित हम तहँकर युगजोरि। कहत भये गहि प्रीति अथोरि ॥ मगमें तव चरित्र प्रभु देखि। हौं मैं अति विस्मित अवरेखि ॥ दोहा ॥ करि थम्भन जे उदधि जल किये कृष्ण तुमगौन। तदनुसात गिरिवरनमें कियेबिवर प्रभुजौन ॥ किये नाथ जो चक्रसों तुम कोतुंग अलेश। ज्वालजालमें जो किये रुचिसों आपु प्रवेश॥ द्विज पुत्रन कहँको हरे रह्यो कहा अनुमानि। सो सब भेद बताइये चिरंजीव मोहिं जानि ॥ चौपाई ॥ सुनि यह बचन कृष्ण मुसुकाई। कहत भये यहि भांति बुझाई ॥ मम दरशन हितद्विजके बालक। हरे गये हैं सुनु खलघालक ॥ ब्रह्म तेजतेहि तेजहि गुनिये। मैंहौं ब्रह्मतेज मम सुनिये ॥ सो मम परम प्रकृतिहै

जानो। व्यक्ति अव्यक्ति सनातन मानो॥ जल समुद्र गिरिवर तम मैंहों। मैं जगकारण कारज मैंहों॥ मैंशशिसूर सरित सर सिगरे। मैंहों वेदवर्ण जेनिगरे॥कारण कार्य्यरूप मोहिंजानी। करोदूरि बिस्मय सबज्ञानी॥ तादिन ते हम भये सयाने। कृष्णहि परब्रह्मदृढ़ जाने॥ सुनिअर्जुनके बचनसोहाते। धर्मराज आनँद सों राते॥ बैशम्पायन की यहबानी। सुनिबोले जनमेजय ज्ञानी॥ मुनिबरचरित कृष्ण के सुनिकै। नहिंसन्तोष गहे मनगुनिकै॥ ताते औरचरित कछुकहिये। कृपा पात्र लखि दया सुगहिये॥ बोले मुनि गुणि नृप मन माहीं। प्रभुके गुणकी इयत्ता नाहीं॥ तदपि कहउँ कछु तव हित लागी। सुनु नृप जनमेजय बड़ भागी॥ यदुबंशिनके हित प्रभुमानँद। हते बिचक्र दानवहि सानँद॥ लोहित दहमें बरुणहिं जीते। किये हराइ गर्बसों रीते॥ दोहा॥ दन्तबक्रकारुषनृपति सौभशाल्व शिशुपाल। हयग्रीव आदिक हते जीति किते क्षितिपाल॥ अष्ट राज्य पाण्डवन को दिये राज्य करिपक्ष। रक्षण तव पितुको किये गर्भहिमें प्रभुदक्ष॥ बानर द्विविद मयन्द कहँ जीते भुज के जोर। जाम्बवान सों जयलहे मल्लयुद्ध करिघोर॥ सोरठा॥ बलिको सुत बलवान बीरसहसभुजको बली। दुर्मद परमअमान जीते तेहिप्रभु सत्वनिधि॥ दोहा॥ बरणे यहि अध्यायमें भीष्मार्जुनसम्बाद। बिप्रसुवनके हरणकीकथादेनि अह्लाद॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेकृष्णचरित्रबर्णनोनामऊनत्रिंशोऽध्यायः २६॥

दोहा॥ बैशम्पायन सों कहे जनमेजय इमि बैन। अबबाणासुर कीकथा कहिये मुनि तप ऐन॥ चौपाई॥ बोले मुनिसुनुभूपति ज्ञानी। बलिको गुरुसुत बाण सुमानी॥ शिवढिग जायपेखि सेनानिहि। भईमहतईहा अभिमानिहि॥ वर ब्रतसाधि उग्रतप करहू। शिवहि तोषि सुलहवैमुदधरहू॥ यहबिचारिदुस्तरब्रत चरिकै। शिवहि प्रसन्न कियोतप करिकै॥ ह्वै प्रसन्न शिव

आनँद धारे। बरं ब्रूहि यह बचन उचारे॥ यह बर मांग्यो बाण सुखारी। मोहिं करैं सुतशैलकुमारी॥ एवमस्तु कहितबकैला- शी। कहेशिवासोंइमि अबिनाशी॥ यहि पुत्रत्वमानिह्वैमाता। जानहु निज सुत को लघुभ्राता॥ जित सेनानी शिखिसों प्र- गटे। तेज पुंजबरप्रभा अरगटे॥ सो शोणितपुर सहितसनेहू। बाणहि बसिबे कहँ तुम देहू॥ लहि निदेश तब बाण उमाहीं। बस्यो जाय शोणितपुर माहीं॥ बाणहिं शम्भुपरमप्रियजानी। ध्वजअरुशिखिबाहनसेनानी॥ सगण शम्भुसेनानी सानँद। रक्षा करैं बाणको मानँद॥ सह परिवार सदल बलभारी। बिल- सत भोतहँ बाणसुखारी॥ सुर गन्धर्ब आदि दिवबासी। सेवहिं तेहिलहि हारिउदासी॥ शिवप्रसादके मद मतवारो। जीतेसि तीनि लोक बलभारो॥ दोहा॥ लखे बिना त्रैलोकमेंनिज लरिबे के योग। गो शिवपै निज प्रतिमभटलरिबे के उतयोग॥ बन्दि चरण तहँ शम्भुसों कहत भयो इमिबान। जीतो मैं त्रैलोकतव बरबलसों बलवान॥ ह्वै सन्मुख सुर असुरकोउ लरिनसक्यो पलआध। हारि मानिरहिनिकट ममसेवनकरैंअगाध॥ चौपाई॥ बिना लरेमम सहसभुजाये। फरकत रहत महतछबि छाये॥ युद्धकिये बिनु सकल बिभूती। मोहिं न भावत जिती अकूती॥ प्रभु सों आजुकहों सतिभावे। लरेबिना नहिं जीवन भावै॥ ताते कहहु मोहिं चितचायक। बीर मिलिहि कोउ लरिबेलाय- क॥ यह सुनिकै शंकर मुसुकाई। कहेबाण सों इमिसमुझाई॥ सेनानीको दीन्होंध्वजजब। पतन होइ यह जानेउ निज तब॥ अब कोउ सुभटबीर रसराती। लरिहि आइबरबीर्य बिभाती॥ यह सुनि बाण परम सुखपाई। आनँद बारि चखनमें छाई॥ पगगहि कहत भयोहे स्वामी। अबमैं धन्यभयउँ अरु नामी॥ इमिकहि सहसपाणिपै लैकै। कुसुमपंचशत अंजलि दैकै॥ बिदा शम्भुसों ह्वै धनुधारी। निजपुर आयो परमसुखारी॥

जाइ खजानागृह में बैठो । सगरबवीर ऐंठ सो ऐंठो ॥ तहँ कुम्भाण्ड सचिवसों भाष्यो । दयो मोहिं शिवबर अभिलाष्यो ॥ बाणहि अतिमोदित सों लेखी । बूझतभो यहि बिधि अवरेखी ॥ कहो कहाबर पायहुसाई । जाते अति मोदित यहिदाई ॥ बिष्णुहि जीतन को बरलीन्हें । कै निज पतिहि पूर्बवत कीन्हें ॥ दोहा ॥ चक्र पाणिके भीति सों दैत्य समुदमें जाय । दुरे रहत तिनकहँ कहा अभय किये बरपाय ॥ इन्द्रहि गहि पातालमें राखनको बरदान । लहे कहा तुमअपुनको होवे को मघवान ॥ चौपाई ॥ सोयह दीजे शीघ्र बताई । मोसों गहर सहो नहिं जाई ॥ यह सुनि बाण गोइनहिं राखेसि । मांगेसि जो पायसिसो भाषेसि ॥ सोसुनि सचिव कहतभो ऐसो । नाथ लहेहुबर दुखदअनैसो ॥ इतनेही में बिनाप्रयासे । गिरतभयो वहध्वजा अन्यासे ॥ लखिध्वजपतन बाणहर्षाना । निकटयुद्ध को उत्सवजाना ॥ भेतबतहां दशौदिशिचारी । अशकुनबिबिध भांतिकेभारी ॥ तिन्हें न बाण चित्तमें आने । गेअन्तहपुरमें हर्षाने ॥ मंत्रीफल अशकुनकेजानी । भयोव्यथित अनरथ अनुमानी ॥ कछुदिनगये मोदि गिरिजाहर । जायनदीके तट भवभयहर ॥ गणन सहित आनँदसों पागे । बारिबिहारकरन तहँलागे ॥ बाणासुरकीचारुकुमारी । ऊषानामा परमदुलारी ॥ सोगिरिजाको लहि अनुशासन । गईरहीतहँ बारि बिलासन ॥ नृत्यगान अरुबाद्य सोहाये । अप्सर कृततहँ सुख सरसाये ॥ पारिजातको गन्ध सोहावन । बगरयो चहुँदिशि मन उमगावन ॥ बन्दीजन सम अप्सरकेती । शिवहिप्रशंसहिं सुबुधिसुचेती ॥ नामचित्ररेखा सुखदानी । रहीअप्सरासो अनुमानी ॥ दोहा ॥ तहँगिरिजाको भेषकरि शिवके सन्मुखजाय । नृत्यगान लागीकरन भावअनेकबताय ॥ सोलखि शंकर गौरिसों कीन्हें हास्य सचाय । कहीशिवा तब गणनसों शम्भु मनहुसुखपाय ॥

महिखरी ॥ तहँअप्सरासबगौरि अरुसभ सुगण गण शंकरबने। इमिलगे क्रीड़ाकरन मिलि लखिलहेशिव आनँदघने ॥ यह देखिक्रीड़ा कुंवरिऊषा चावसों सरसतभई। तेधन्य तियपति संगजे इमिरमैंयह मनसतभई ॥ यहतासु आशय समुझिगिरिजा चारुकरयुगपरसिकै। इमिकहततासों भईतेहिअति प्रेम सों ढिगकरषिकै॥ सुनुधीरधरु कछुदिवसमनमें प्रियेऊषे सकुचिहै। अबगनेदिनमें पाइप्रियपति मोदिहौ इमिसरुचिहै ॥ दोहा ॥ जोमाधवकी द्वादशी निशिसपनेमें आय। पुरुषरमिहि तोसोंतहीं सो तोहिंपति सुखदाय ॥ सुनिऊषा सुखलहिरही सकुचित शीशनवाय। करतभईलबहास्यतहँ अप्सरगण हरषाय ॥ संध्यालखितब गौरिशिव आवतभे निजधाम। ऊषा आई निजभवन गईंसबैनिजग्राम ॥ जयकरी ॥ पारबतीकोबचन बिसूरि। ऊषाह्वै बिरहाकुल भूरि॥ चौसर चंदन सुरँगदुकूल। तजतभई जिमिदुखकोमूल ॥ दिनभोजन निशिनिद्रात्यागि। सूखिगई अतिदुखमेंपागि ॥ अनुक्षणलैलै ऊबिउसास। करत भई मनुअबा अवास ॥ परीरहै नित मूंदेनैन। मूर्च्छितभई न बोलैबैन ॥ दासीसखी दशायहदेखि। ह्वैबिस्मित हियभयसों पेखि ॥ हारीकरि कितनोउपचार। तबसब करिकैमंत्रबिचार॥ ऊषाकी जननीपैजाय। देतिभई सब दशासुनाय ॥ सुनिसो शीघ्र सुतापैआय। भईदेखावत बैदबोलाय॥ कहतभये इमि बैदबिचारि। जलक्रीड़ाकीन्हीसुकुमारि ॥ करिश्रम कीन्हैंबारि बिहार। शीतगरमको भयोबिकार ॥ सुनिबोली ऊषाकीमाय। सखीदेहिं उरचंदनलाय ॥ चुरनलगे सोजिमिलहिआगि। यहक्रम कहाकहौ हितलागि ॥ कहेभिषज तब सुनु हेरानि। अतिसुन्दरि तवसुता सुजानि ॥ तातेभयो डीठि को योग। मंत्रयंत्रको करौ प्रयोग ॥ यहकहि भिषज गये निजधाम। जानिहिये यहि बिथवत काम ॥ दोहा ॥ दासीसखी सुजानिस-

बलखति भई यह भेद । कामनरेन्द्र अमान यहि करत सुबश देखेद ॥ यहि बिधिरहि कछुदिवस में लहि बरमाधव मास । शुक्लपक्षकी द्वादशी पूरणकीता आस ॥ सोरठा ॥ निशिमें सखिन समेत सोई ऊषा हर्म्य पै । सुखमा सत्व निकेत पुरुषरम्यो तहँ स्वप्नमें ॥ दोहा ॥ प्रथम समागम की भई चेष्टा सकलअनूप । शोणितादि व्यवहारसों भयोसुरतिकोरूप ॥ चौपाई ॥मन्द मन्द रोवत बैठीउठि । भरोस्वेदसोंगात शिथिलसुठि ॥ लखि सखिजन समुझावनलागीं । जानिकुंवरि कछुभयसों पागीं ॥ ऊषाकही न मैं डरपानी । सखिनजाति कहिहानिगलानी ॥पुरुषएक सपनेमें आई । ममकुमारि पनगयो नशाई ॥ किमिमाता के ढिगमैं जैहौं । बूझेदशा उतरकादैहौं ॥ जागतसीमैं रहिउँ हहाकरि । वहबलसोंकरि गयो चहाधरि ॥ कुलमेंलगी कालि हेसजनी । अरुभो धर्मलोप यहिरजनी ॥ इमिकहि नयननते जलधारा । मोचनलगी सशोचअपारा॥ इतनेमें यकसखी सयानी । कहतभई सुनुऊषाबानी ॥ मनबिकारकरि कारजकीन्हें। धर्मनशाय शास्त्रकहिदीन्हें ॥ स्वप्नदशामें परबशऐसो । भये गयोनहिं धर्मअनैसो ॥ तबकुम्भाण्ड सचिवकी तनया । कहतिभई इमिचातुरि सनया ॥ सुमुखि सुजानि बचन सुनुमोसों। सुधिकरुशिवाकहीजो तोसों ॥ सोईभयो शोचुमति कामिनि । जानुअपूर्व सुखदयह यामिनि ॥ मिलोपुरुष सपनेमें तोही । होइहिसो तवपतिअति छोही ॥ सुरगन्धर्व असुरगण जोऊ। निशिपुर प्रविशि सकैनाहिं कोऊ ॥ ऐसो त्रासबाणको भारी । थरथर डरपहिं सब धनुधारी ॥ दोहा ॥ ताके अन्तह भौनमें आइनिशंक प्रबीर । ताकी तनया सों बिहरिगो निजघर रणधीर ॥ सो यह नहिं प्राकृत पुरुष यह कोउपुरुषमहान । है जेतात्रैलोकको बीर उदण्ड अमान ॥ धरिधरणी पै धन्यतू धनी अपूरबपाय । शोच त्यागिपतिके मिलनको अबकरो उपाय ॥

चौपाई ॥ प्रियासखी की बाणी सुनिकै । कहतभई इमि ऊषा गुनिकै॥ निज पै परे भीरजन मोहै । करि न सकै कछु करिबो जोहै ॥ जिमि रुजग्रसित बइद्य बिचारो । ताते तुमयह कार्य्य सुधारो॥ यह सुनि बोली सुतासचिवकी। सुनुऊषाप्यारी तुव जिवकी ॥ सखी चित्ररेखा जो अप्सर। तेहि त्रैलोक्य बिदित हैं सबथर ॥ ताहि बुलाय कहो हे आरय। शीघ्रकरिहि सो सिधि यह कारय ॥ तब ऊषातेहि तहां बोलाई। कहतिभई कर जोरि बुझाई॥ हे सखिजो मम जीवन चाहौ। तौमैं कहौं बचन सो पाहौ॥ जो सपने में मम ढिग आयो। पुरुषसिंहसुखमासोंछायो॥ तेहि इतल्याइ मिलावहुमोसों। यह हठि कहौं बिनय करि तोसों॥ यह सुनि सो अप्सरा सयानी। कहतभई ऊषासोंबानी॥ सुनु बिन नाम ग्रामकुलजाने। अरु बिन तासुमूर्त्ति पहिचाने॥ केहिबिधि तेहि आनउँ हो कामिनि।करि बिचार कह तू गजगामिनि ॥ करिहौं एक उपाय उजागर। हैं जितने त्रयपुरमें नागर॥ तिनके चित्रलेखि लै ऐहों। पृथक्पृथक् सो तुम्हैं देखैहों॥ तेहि लखि चीन्हि लिहेहु तब रसकर। धनकुमारि पनको जोतस्कर॥ दोहा॥ असुर अमर गन्धर्बमें जितने पुरुषबिभात।तिनके चित्र बिचित्र लिखिल्याई लहि दिनसात॥ ऊषहिते सिगरेदई पृथक् पृथक् दरशाय। लखि सुचित्रअनिरुद्धको ऊषे लई उठाय॥ कही प्रेमसों लाइउर पुलकि पसीज सचाय। सखि यह जाको चित्रहै सो ममपति सुखदाय॥ चौपाई॥ ते ताके हैं सुवन सलोने। केहिकुल प्रगटे ममपति होने॥ कही अप्सरा सुनु मृगनयनी। पुरी द्वारका निधिकी ऐनी॥ बिष्णु कृष्ण हैं तहँ सुनुऊषे। हैं यदुकुल महि मोसो भूषे॥ तासुसुवन प्रद्युम्न गनाये। कामरूप हैं काम सोहाये॥ हैं अनिरुद्धतासु सुतबीरा। सुखमा सींव सरस रणधीरा॥ है यहतासु चित्रमन भावन। तो उर रमणि सुरस सरसावन॥ यह सुनिकै ऊषा

प्रेमातुरि । कहत भई सुनु हे सखि चातुरि ॥ समयपरे जोहोइ सहाई । सोई सखा पितासुत भाई ॥ करि दूतत्वसाधुममकारय । ल्याइ मिलाउ शीघ्रपति आरय ॥ सुनु सखिहोत दूतपटुजैसो । सिद्धि होतहै कारज तैसो ॥ ताते तू सबभांति सयानी । अरु अति मम हितरत सुखदानी ॥ हे सखि हेतू नभपथ चारिणि । योगिनि चारु रुचित बपुधारिणि ॥ यह कारय सिधि करिबे लायक । है तूही मम हितू सहायक ॥ कही अप्सरा सुनहु कुमारी । धरहुधीर मतिमानहु हारी ॥ अब हम शीघ्र द्वारकाजाइब । करि उपाय अनिरुद्धहि ल्याइब ॥ ह्वैसो बिदासमुदइमि कहिकै । सत्वर चली गगनपथ गहिकै ॥ दोहा ॥ क्षणमें चलि द्वारावती लखत भई सो जाय । नभते अमल अटान लखि होतभई सहचाय ॥ तबनभतजितरि भूमिपै नगर द्वार पैआय । सरिताके तट ह्वै खरी मनसन लगी उपाय ॥ सोरठा ॥ तहँचहुँ ओर निहारि देखि सरिततट नारदहि । कारज सिद्धनिहारि जाति भई ढिग सुमुनिके ॥ रोला ॥ जाइ मुनिपै चित्ररेखा दूरिहीसों नौमि । पाइ आशिष भई ठाढ़ी शीश नत करि सौमि ॥ सुमुनि तासों भये बूझत आइबे को हेत । दई सो कहि आदि सों सबभेद मोद निकेत ॥ जानि मुनि अनिरुद्धको लैजाइबो श्रमसाध्य । दये तामस मंत्र कारय सिद्ध करन अराध्य ॥ मंत्र लै अनिरुद्धके गृह जाइसोगाहिमोद । अलखरहितहँ लगीलखन तासुसर्वबिनोद ॥ युवतिगणमधिलसतितारणिमध्यजिमि निशिनाह । नृत्यगानबरांगना तहँकरति रंजिमनमाह ॥ गान नृत्यत युवति गणमें रमत ताको चित्त । देखि लीन्ही चित्ररेखा जानि कारण बित्त ॥ स्वप्नमें ये रमे हैं मिलि बाणजासों जौन । उलै तेहि चित्त लागो इनको हैं न हैं यहिभौन ॥ बूझियह निज कार्य्य सिद्ध बिचार मोहन मंत्र । दयो मुनिको ताहि सो तहँ भई पढ़तस्वतंत्र ॥ तियन सह अनिरुद्ध तब जहँरहे सोय

सुमेहि। चित्ररेखामोदि तव चख फेरि इतउतजोहि॥ चावसों अनिरुद्धको गहि हर्म्य पै लैजाय। तहां ताहि जगाय ऐसे भई कहत सचाय॥ स्वप्नमें दुर्दशा जाकी किये तुम चितचोर। लहे बिनु सो तुम्हैं व्याकुल लखति है चहुँओर॥ रुदति जृम्भति श्वसति पसिजाति कँपति मूर्च्छि अचैनि। लिखोमो तव चित्र लेखि बितौति है दिन रैनि॥ देइ ऊषहि तुम्हहिंपति गिरि-सुता दै बरदान। चलौ तापै बेगिनातो तजैगी वहप्रान॥ सुवन बलिको बाण ताकी सुता ऊषा चारु। तासु शोणित नगरमें चलि होहु तुम भरतारु॥ चित्ररेखाके बचन सुनि कहतभे अनिरुद्ध। रह्यो उनके बिषय बाढ़ि मम प्रेम पूरण शुद्ध॥ स्वप्नके रतिरंगमें उनकरी जौन सशङ्क। कम्पि सुसुकि उरूण बांधि नितम्ब चालिसलङ्क॥ हहाकरि मम कर्णिकाग-हि श्रमसरितमें डूबि। सजललज्जित चखन चितई लई श्वा-सा ऊबि॥ भई सो जो दई ये दइ कहलि लहैं बहुबार। फैलिगे छुटि छबिनि लौं जो सरस सुथरेबार॥ लाइ हीरैं लयो हो जो भयो पीरोगात। सरस कंचन दाम समभा भरो भूरि बिभात॥ तजै पै उठि यत्न सों जोलगी सुसुकनबैठि। मथतहैं ममहियोये सब चरित चितमें पैठि॥ दोहा॥ प्राणप्रिया मम बल्लभा की तू सखीसयानि। शीघ्र सत्य करु स्वप्न यह कहौंजोरि युगपानि॥ यहसुनि अति आनन्द लहि लै अनिरुद्धहि तौनि। अन्तरिक्ष पथ गहिगई ही जित ऊषारौनि॥ चौपाई॥ अनिरुद्धहि लखि बाण कुमारी। ह्वै प्रमुदित भरि नयनन बारी॥ पुलकि पसीजि तुरै परितापहि। मानत भई धन्य तन आपहि॥ अर्घ्यपाद्यदै पूजन करिकै। कुशलप्रश्न बूझीमुद भरिकै॥ बहुरि सखी सों मिलि गज गामिनि। अस्तुति करत भईप्रियकामिनि॥ भाषि सखीसों पितुकेमरमें। गई पतिहि लै गोपित थरमें॥ करिग-न्धर्व व्याह मुद गहिकै। बिहरनलगे गोपितै रहिकै॥ बिधि

बश तिनकहँ तहां बिहारत। लेखत भयो चारदिशि चारत॥ सो लखि कहेसि बाण सों जाई। युवा पुरुष तुवगृहमें आई॥ बिहरै ऊषाके सँग साईं। बनमें मत्तसिंहकी नाईं॥ सुने बाण क्रोधागिनि सों जरि। कियो घोरधुनि तन चञ्चल करि॥ भेजत भयो तुरतदल भारी। कहि निडरहि गहिडारहुमारी॥ चलेबीर बलकत भय भारत। मारु मारु धरु मारुपुकारत॥ ऊषा लेखि सुभट भय भोवन। पति बध भीति लगी तहँ रोवन॥ लखि अनिरुद्ध युद्धके चावन। तियसोंकहे बचन मनभावन॥ मति करु रुदन तिया भय भेखी। सुखलहु मोरि बीरता देखी॥ बिन भट आजुबाणको करिहौं। शोणितपुर शोणितसों भरिहौं॥
दोहा॥ इतनेमें तहँआइके नारद सुमुनि सचैन। कहतभये अनिरुद्ध सों अन्तरिक्ष रहिबैन॥ हौं आयो अनिरुद्ध तव युद्ध लखन हित अत्र। तरुणि शङ्क लखि युद्धहौं जैहैं केशवयत्र॥
चौपाई॥ सुनि नारदके बचन सोहाते। श्री अनिरुद्ध बीररस राते॥ केहरिसम कढ़ितेहिथर बनसों। भिरेद्विरद रजनीचर गनसों॥ शस्त्र शक्तितोमर परिघादिक। तजत भये सब असुर प्रमादिक॥ परिघ कपाटबद्ध अतिभारी। लै अनिरुद्ध बीरपनधारी॥ अति सरोष करि तासु प्रहारण। असुर वृन्द कहँ लगे सँहारण॥ क्षणमें बीर असंख्य सँहारे। कितेबीर भागे अधमारे॥ रुधिर बमत अतिभयसों भारे। गये बाणके पास पिरारे॥ कादर जानि तिन्हैं तिमिज्वैकै। ध्वंसनिकिहिसि बाण रिस ग्वैकै॥ अयुत सुभट फिरि और पठाये। बलकत गर्बभरे ते आये॥ तोमर भिन्दिपाल शर चावन। देखतही ते लगे चलावन॥ अति जवसों तिनके मधिजाई। कीन्हे कुंवर परिघ की घाई॥ अप्लुतप्लु बिप्लुत उदभ्रांता। भ्रांतरु आविध भ्रांत बिभ्रांता॥ इन्हहिं आदि बत्तिस अस्थानन। कियेप्रहार अनेक बिधानन॥ करि चापलता अति मनमाने। गे अनिरुद्ध सहस

समजाने ॥ पलमें कइकसहसभट मारे । बचे रहेते भगेदुखारे॥ गिरत एक पै एक भभरसों । नभपथ गहे बाणके डरसों॥दोहा॥ नृत्य गगनते मुनि कहे धन्यधन्य अनिरुद्ध । सोसुनि अरुनिजसैन लखि भयो बाण अतिक्रुद्ध ॥ रथ सजाय कुम्भाण्ड सों चढ़ि बरणो बलवान । चलो बाण अनिरुद्ध पै गरजत मेघ समान ॥ गुरुतोमर ॥ सो सहस पाणि अखेदसों । बरभूषि आयुध तेदसों ॥ अनिरुद्धबीरहि देखिकै । अघसमुभि अतिशय तेखिकै ॥ बपुधनुषबरटङ्कारिकै । भो कहतदीह पुकारिकै ॥ अब भागु मतिभय पागिकै । नहिं बचैगो तुम भागिकै ॥ अनिरुद्ध ताको पेखिकै । निजबधो सम अवरेखिकै ॥ कर खड्ग चर्म महानलै । हैंखड़ेबीर बिधानलै ॥ तब बाण बाण अनेगिने । तकि तजे जौन बनेंगिने ॥ अनिरुद्धते शर चर्मसों । कहुदिये टारि अभर्मसों ॥ फिरि बाण सहसन बानसों । भो हनत बाण बिधानसों ॥ अनिरुद्ध निर्भय प्राणके । तब चले सन्मुख बाणके ॥ सुमहोक्ष ताकि किसानको । जिमि चलै त्योरि बिसानको ॥ शर भिन्दिपालहि आदिकै । तेइ तजे कितने नादिकै ॥ सहि सबै रथढिग आइकै । अनिरुद्ध रथपै जाइकै ॥ सब बाजि बाणको मारिकै । रथ जुवादण्ड बिदारिकै ॥ फिरि फिरे सत्वर बानपै । भुज सहसबीर अमानपै ॥ इमिबाण ताहि निहारिकै । भो गुप्त अनर बिचारिकै ॥ दोहा ॥ उतसों शर बर्षन लगो तब रथ तजि अनिरुद्ध । महिपै ठाढ़े ह्वै लगे इत उत लखन सक्रुद्ध ॥ तबबाणासुर ह्वै प्रगट धीर शक्ति अतिघोर । तजतभयो अनिरुद्धपै क्रुद्धि भुजनके जोर ॥ कूदि बीर अनिरुद्धसों शक्तिलये निजपानि । ताहीसों बाणहि हने कोपि व्योमभरि तानि ॥ जयकरी ॥ लगे शक्ति भो मूर्च्छित बाण । करते छूटिपरे धनुबाण ॥ घरी द्वैकलौं मूंदि सुनैन । रह्यो ध्वजामें लागि अचैन ॥ गहेसि धनुष फिरि होइसचेत । तब बो-

लतभो सचिव सहेत ॥ यासों लरि परतक्षसनीति । भूपतितुम नहिं लहिहौ जीति ॥ ताते मायाबिधि अवगाहि । लरि भूपति मणि जीतहु याहि ॥ बचन तासु यह सुनिकै बान । भो रथ ध्वज सह अन्तर्द्धान ॥ छांड़ि सर्प शर मंत्र अराधि । दीन्हेसि श्रीअनिरुद्धहि बांधि ॥ सर्प्पनसों बँधिकै अनिरुद्ध । कीलित अहिसे भये सक्रुद्ध ॥ तब ह्वै प्रगट रक्तपुर रौन । कह्यो सचिव सों यहि बिधि तौन ॥ हरौ शीघ्र हति याकोप्रान । सोसुनि बोलयो सचिव सुजान ॥ भूपति बूझिलेहु यह कौन । तबफिरि करहु सुचितहै जौन ॥ यहहै कोऊ पुरुष अनूप । बरबंशज जगजेता रूप ॥ या बिधि बांधो लऊ बिभात । तुम्हैंलखि नहिं नेकु सकात ॥ ऊषासों गान्धर्बबिवाह । करि यह रमोचित्तकीचाह ॥ मिलत न अस कीन्हें उतयोग । ताते यहनहिं बधिबे योग ॥ यह सुनि कहेसि बाण तेहि पाहिं । यहि राखहु कारागृहमाहिं॥ दोहा ॥ कारा रक्षणकहँ सउँपि अनिरुद्धहि बलवान । गयो सभाकेसदनमें सगरब बाणअमान ॥ नारदयह वृत्तान्तलखिगये कृष्णके पास । मुनिहि जात अनिरुद्ध लखि गहे छुटनकी आस ॥ कारागृह में जाइकै श्रीअनिरुद्ध प्रवीन । अस्तुति गिरिजाकी किये कहिकहि पद्यनवीन ॥ सुनिदुर्गा तहँप्रगट ह्वैनागबंध कहँमोचि । अरु असिपंजर तोरिकै कहत भई इमिशोचि॥ जौलों केशव आदिलै जाहिं न गरुड़ चढ़ाय । तौलों बन्धित इवइतै रहियोपुत्र सचाय ॥ यहसुनि फिरि अस्तुति किये श्रीअनिरुद्ध सकाम । दैआशिष गिरिजा गईं सानँद अपनेधाम ॥ बरणे यहि अध्याय में कारणसहबिस्तारि । ऊषा अरुअनिरुद्ध को मिलन समोदबिहारि ॥ बाणासुर अनिरुद्धको कहेयुद्धफिरिबार्णि । बन्धन केहि अनिरुद्धको बन्धमोक्ष फिरिकार्णि ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेअनिरुद्धोषासमागमोनामात्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

चौपाई ॥ हरि अनिरुद्धहि लै जेहि क्षनमें । गईं अप्सरामो-

दित मनमें ॥ तापीछे द्वारावति बरमें। श्री अनिरुद्ध कुंवर के घरमें ॥ सोवतिरहीं मोहिजेनारी। तेसबचेति जगीं पतिधारी॥ बिनु अनिरुद्धहि लखे दुखारी। रुदन करन लागीं भयभारी॥ सो सुनि कृष्णादिक सबजागे। सुनि वृत्तान्त मोहसोंपागे॥ सुनि रोदन यादव भयछाये। निजनिज घरसों उठि उठिधाये॥ सभासदनमें कृष्णहि देखे। ऊर्ध्व उसांसलेत अति तेखे॥ बैठत भये तहां यादवगन। शोचित रहिचुप भरिभयसों मन॥ तब बिपृथु केशवसों भाखे। इतक शोचकत मनमें राखे॥ तव भुज बलते निर्भय सुरपति। रहतभये हम सबनिर्भय अति॥ सोप्रभु तुमकत चिन्ता गहहू। सादर उचित होइ सो कहहू॥ सुनि प्रभुकहे शोचपरिहरिकै। लैगोकोउ अनिरुद्धहि हरिकै॥ यह वृत्तान्त नृपति सब सुनिकै। हँसिहैं हीन पराक्रम गुनिकै॥ तब प्रभुसों यहिबिधिकी बानी। कहतभये सात्यकि गुरुज्ञानी॥ प्रभुचारण बसु दिशा पठावहु। कोलैगो यहखबरि मँगावहु॥ लहि वृत्तांत करब जो भाइहि। लैअनिरुद्धहि कहँसो जाइहि॥ दोहा॥ यहसुनि चारण अनगिने केशव तहां बुलाय। बिदाकिये प्रति दिशनकहँ बिधि वृत्तान्त बुझाय॥ बनगिरिवर तरुगुहन प्रति सगर नगर प्रतिग्राम। लखिफिरि आये चारनहिं मिलो कुंवर अभिराम॥ चौपाई॥ तबगुणि बोलतभो अभिमानी। अनाधृष्टि बरबल सेनानी॥ नहिं कोउ महिबासी यहकारज। जीति सकिहि करि सुनिये आरज॥ शक्रहि जीति पराभवदेकै। प्रभुतुममोदे सुरतरु लैकै॥ ताहितपर सुरपति इतआई। अनिरुद्धहि लैगये चोराई॥ मम अनुमान परैलखि ऐसो। आपु विचारि कहैं हो जैसो॥ प्रभु बोले नहिं इमिमन धरिहैं। शक्र कबहुं नहिं ऐसोकरिहैं॥ क्षुद्रछली जो पराक्रमहीने। करै चोरवत दगा मलीने॥ बिपदांपरे प्राणपरिहरहीं। उत्तम पुरुष न लघुगति धरहीं॥ तब बोले अक्रूर सयाने। तवकल्याण

शक्रहित जाने ॥ तासुकाज तुमनिज सममाने । तव कारज वैनिज अनुमाने ॥ तबप्रभु कहत भये अनुमानी । सबकोउ सुनहु सत्यमम बानी ॥ सुरगन्धर्व असुर किन्नर नर । नहिं लैगे अनिरुद्धहि बलबर ॥ कोउ पुंश्चली असुरकी भामिनि । रमण हेतलैगई सोकामिनि ॥ इतनेमें तहँ नारद आये । पूजि कृष्ण सादर बैठाये ॥ लखिबोलतभे मुनिवर ज्ञानी । कत शोचितहौ तुम सब मानी ॥ कहेकृष्ण निशिमें पनधरिकै । लैगो कोउ अनिरुद्धहिहरिकै ॥ दोहा ॥ बिनु जाने यह भेदहैं हम सब पूरितखेद । मुनि तुम जानत होहुतौ शीघ्रकहहु यहभेद ॥ तब नारदमुनि कहतभे नांव गाँव ब्यवहार । लरनि भिरनिगहि परनि सब बिधिवत सह बिस्तार ॥ अहि बन्धनते कुंवरहै कष्टित लेहु बिचारि । ताते चलियेशीघ्रउत हियतेसंशय टारि ॥ चौपाई ॥ तब उत जैबेको मुद लीन्हें । प्रभु सुभटन कहँ शासन दीन्हें ॥ तबइमि कहतभये मुनिनारद । सुनहुबचन मम कृष्णबिशारद ॥ सहसइग्यारह योजनसोथर । मधिबननदी अनगिने गिरिवर ॥ तातेगरुड़हिलेहु बुलाई । तापैचढ़ि चलियेदोउभाई ॥ यह सुनि कृष्णगरुड़कहँध्याये । शीघ्रगरुड़ तहँसानँद आये ॥ आइगरुड़ प्रभुकेपगबन्दे । बन्दिकहतइमिभये अनन्दे ॥ नाथ कृपाकरिकरियेशाशन । सोमैं करउँसुनहु अरिनाशन ॥ सुनि प्रभुअतिआनँदहिय छाये । समाचार खगपतिहि सुनाये ॥ तदनु गरुड़की अस्तुति करिकै । कहत भये आनँद बिस्तरिकै ॥ मोहिं शीघ्र शोणितपुरलै चलि । जीतहु बाणहि असुरहि दलिमलि ॥ यह सुनि कहेगरुड़ हरषाने । धनिहो जेहि प्रभु आपु बखाने ॥ मोमें जिती सत्वकी गुरता । सोतुव अनुकम्पा की पुरता ॥ नाथ तुम्हार भक्तजो होई । धन्यधन्य तिहुँपुर में सोई ॥ कारणकार्य्य आपु सब जगके । दर्शक दर्शावक सबमगके ॥ लहि तव कृपा होइ सब आरज । करै सिद्ध अतिदुस्तर कारज ॥ लैशत

सखा बन्धुगण गोहन। करहु शीघ्र मोपर आरोहन॥ दोहा॥ तब गरुड़हि आलिंग्यप्रभु सह प्रद्युम्नबलराम। चलत भये चढ़ि मोदसों गहिआयुध अभिराम॥ कछुदूरिचलि कृष्ण प्रभु भये अष्टभुज रूप। सहसशीरषापुरुषत्यों भोगिरि सदृश अनूप॥ खड्गचक्र शरवर गदा दक्षिणकरन बिहार। लसे शंख धनुपबि चरम बामकरनमें धार॥ सहसशीरषा रामभे गिरिवतगुरुबल-वान। ख्वमिं कारतिकको गहे रूप प्रद्युम्न महान॥ सोरठा॥ यहि बिधि चलि बलधाम शोणितपुरके निकटभे। तहां कहत भे राम बिशदबचन श्री कृष्णसों॥ रोला॥ इतैहम सुत सहिततम ह्वै निज प्रभासों हीन। भये कांचन बरण कारण कहायह पर-बीन॥ कहे यह सुनि कृष्ण शोणित नगरमें चहुँ ओर। दिपति ज्वाला अग्निकी प्रज्वलित अतिशय घोर॥ परे ताकी प्रभा हम तुम भये ऐसे रूप। कृष्णसों सुनिकहे फिरि बलराम बचन अनूप॥ आवले ढिगतासु हम तुम भये जो बैवर्ण। कहा आगे करहिंगे पुरुषार्थ तौगहि पर्ण॥ बचन सुनि प्रभु बिहँगपतिको दयेतत्र निदेश। गरुड़ सुनि अति बेगसों उड़िजातभे नभदेश॥ सहस मुख करि सुरसरितको बारि भरिलै आय। बरषिधारन देत भे सब ज्वाल जाल बिताय॥ अग्नि बर हवनीयकी लखि शांति शिवगण बह्नि। आइसन्मुख लरन लागे कृष्णसों तिहि अह्नि॥ नेसु तिनके युद्धको इवनबाण बीर उदार। तहां भेजे अग्निरहि जो अग्नि को सरदार॥ दहन शोषन कुसुम अरु कलमाष तपन सुखाल। पांच स्वाहाकार बिषये प्रगट अग्नि बिशाल॥ जठरपतग अगाध सर्ण सुभ्राजपावक पांच। स्वधा कामाअई ये दश अग्निदीरघ आंच॥ बिभाग ज्योतिष्ठा भये द्वै अग्नि अति अभिराम। बषट्काराअई तिनसह सरिससह-स ललाम॥ बेगसों तहँ आय कै सो अंगिरा बलवान। बैठि रथ आग्नेय पै तकितजन लागो बान॥ कहेप्रभु तब अंगिरा

सों खरो रहु धरि धीर । शीघ्र मेरे अस्त्रसों तुव जरत दीर्घ शरीर ॥ बचन यह सुनि अंगिरा भो हन्यो शूल उदण्ड । काटि शर सों बीचही तेहि किये प्रभु द्वै खण्ड ॥ स्थूल कर्ण बिशाल शर फिरि हने प्रभुउर तासु । ह्वै बिदीरण हियो अंगिर गिरयो महिपै आसु ॥ सर्व अग्नि उठायलै तब अंगिरहि भरित्रास । गयेशोणित भरेशोणित नगर पतिकेपास ॥ दोहा ॥ तब शोणित पुर प्रतिचले अतिजवसों बिहँगेश । लखिप्रभुसों दारदकहे यह शोणिलपुरबेश॥इत सुतगणगिरिजा सहितरहत रुद्र सबयाम । बाणबीर असुरेशके रक्षणहित अभिराम ॥सुनिप्रभु बोलेशम्भु जो ह्वै दैयतकीओर । लरिहैं उनहूंसों करौंलौं संगरअतिघोर ॥ चौपाई॥ ऐसोकहत नगरढिगआये । तबतहँ केशवशंख बजाये ॥ सुनिधुनि दैयतगण समुदाई । निकसत भये निशान बजाई ॥ कोटिनकिंकर मदसों छाये । लरनहेत बलआगेआये ॥ कहेराम प्रभुसों सुनिलीजे । इनको शीघ्र निवारणकीजे ॥ सुनि प्रभु अग्निबाण तबलीन्हे । क्षणमें तिन्हेंभस्म करिदीन्हे॥तबयूथनसह सहसन यूथप । आयेसन्मुखपरदलऊथप ॥ गिरिसम बपुकेतरु सम आयुध । गहे बीरबरणे करतायुध ॥ तेसब प्रभुहि प्रचारण लागे । शस्त्र समूहन मारन लागे ॥ तब बल लगे भटनसों जूटन । हलसों ऐंचि मुशल सों कूटन ॥ शंख बजाय बजाय सुखारी । बाण गदा अरु बज्र प्रहारी ॥ कृष्णचन्द्र निशियुद्ध बिहारे । यूथन यूथ पतिन संहारे ॥ घन प्रद्युम्न बन सम शर बरसे । तृणसम प्राण अपर के सरसे ॥ पक्षन नखन चोंचसों खगपति । हते अनगिने भट बरबल अति ॥ भये परनि कल्पांत समयके । चारिकाल समदायक भयके ॥ करि संगर अति व्याकुल ह्वैकै । बचे असुर भागे भय ग्वैकै ॥ तब प्रभु अति आनँद सों छाये । सुखद दुखद शुभ शंख बजाये ॥ दोहा ॥ तब सहाय असुरानके आवतभो तहँतौन । ज्वरजव-

लित जहानको जौन जाहिरो जौन ॥ तीनि चरण औ तीनि शिर षटभुज अरु नव नैन ।भस्मायुधा सुरौद्रअति करुणासिन्धुसचैन ॥ निद्रितसो जँभुआत अरुअरुण भयद चष बक्र। श्वसत खरो सम्मुख भयो घन सम गर्जत तत्र ॥ महिखरी ॥ घन सम गराजि बलरामको लखि रोष अतिशय गहतभो। भरि भस्म मूठीतीनिलीन्हे जाय ढिग इमि कहत भो ॥ मति भागु अबरहु खरो इमि कहि भस्म डारन चहत भो। बल सके सो न बचाय भस्महि वाहि वह थिर रहतभो॥ तब दहनसों ह्वै राम ब्याकुल भूमिपै गिरि परत भे। अति ऊबि उससत जृम्भि केशव कृष्ण यहजब धरलभे ॥ सुनि कृष्ण उरमें लाय रामहिं ब्यथा सिगरी हरतभे। लखिज्वरहि निपटनिशंकमोढिग आउ यह ध्वनि करतभे ॥ सुनि भस्म तीनिउँ मूठि सों ज्वर कृष्ण के तनमधि हने। हरिक्षणक मुर्छित चेति फिरि प्रभु भिरे ज्वरसों सुखसने ॥ लरि घरिक गहि तेहि कृष्ण पटके छूटिकर सों ज्वरसुने। तहँ प्रबिशि प्रभुके देहमधि भोकरत पीड़ित गुर गुने ॥ तब कृष्ण बैष्णव ज्वरप्रबल निज देहते प्रगटितकिये। सोल्याय गहि तेहि ज्वरहि तात्क्षण कृष्णके कर महँदये ॥ फिरिताहि महिपै पटकि प्रभु शतखण्डकरिबो गुनतभे। तेइँ त्राहित्राहि पुकारबहुधा कियोसो नहिं सुनतभे॥ दोहा॥ तात्क्षण नभबाणी भई यह मति हतहु कृपाल। सो सुनि कृष्ण नतेहि बधे सुनियेहेक्षितिपाल ॥ तब रउद्रज्वर कृष्णके बन्दि चरण अभिराम। कह्यो दुतियज्वरको शमन करहु कृष्ण अभिराम ॥ चौपाई ॥ एवमस्तु तब प्रभु कहिदीन्हे। निज ज्वर मिलै आपुमें लीन्हे ॥ निजज्वर लोपिरउद्र सुज्वरसों। कहत भये केशव आदरसों ॥ अबह्वै तीनिभाग अतिअगमें। बिलसहु ज्वर तुम सिगरे जगमें ॥ द्विपद चतुष्पद थावर गुनमें। बिहरहु क्रमसों मोदितमनमें ॥ एकाहिक द्वाहिकअरुत्र्याहिक।

बिचरो मानुषमें ये ह्याहिक ॥ बारिजमें हिम काई जलमें । ऊ-
खर रूप रमौमहिथलमें ॥ गेरू रूप रमौ गिरिवरमें । सुनो क-
हौंजेहि बिधिसौंतरुमें ॥ सकुचनि और पाण्डुतादलमें । कीट-
काठिमें क्रमिताफलमें ॥ परकोझरिबो पक्षीजनमें । खुरकअप-
स्मर चौपद गनमें ॥ मानुषदेवभेव तुवसहिहैं । औरन आन
सुधीरजरहिहैं ॥ यहसुनि एवमस्तु कहि ज्वरबर । कहतभयो
इमि प्रभुसों तेहिथर ॥ त्रिपुरदैत्यके संगरबरमें । सुनहुनाथमो-
हिं शंकर निरमें ॥ लहितव कृपा आजु याहिठाईं । भयउँ धन्य
मैं सुनहुगोसाईं ॥ अबकछु मोसों कहियेसाईं । सोमैं करहुँदास
कीनाईं ॥ यह सुनि कृष्ण कहत भेऐसे । मम तुव युद्ध योग
यहलैसे ॥ मोहिं प्रणाम्य पढ़ैनरजोई । सो न ज्वरनसोंपीड़ित
होई ॥ दोहा ॥ स्वामीहोइहि अवशियह कहिज्वर प्रभुपदबन्दि ।
जात भयो रणभूमिते बरलहि परम अनन्दि ॥ तौलों साजि
असंख्यदल आयो बाण प्रबीर । सुत गण सह शिवतासु सँग
रक्षक दायक धीर ॥ गिरि सम बपुके बीर जे बरणे बीर अ-
मान । भिरे कृष्णसों आइते लाखनबीर महान ॥ गरजि गर-
जि डारन लगे शस्त्र अमोघ अपार । काटितिन्हैं प्रभु बीचही
करनलगे संहार ॥ जिमिदावानलसोंजरैं घुनो गहनकालीन ।
तथा कृष्णके अस्त्रसों जरैं असुर भालीन ॥ सोरठा ॥ श्री श्री
कृष्णसुभेष रामप्रद्युम्न खगेश लरि । कीन्हे संखितशेष दैयत
सैन असंख्यको ॥ रहे शेषजे बीर तेसबत्रसि भागत भये ।
धरैन काहू धीर फिरैनफेरे बाणके ॥ चौपाई ॥ इबिधिबाणकोनि-
र्जय देखी । शंकरमनमें अतिशय लेखी ॥ रथचलाय बाढ़िप्रभु
के सन्मुख । आये भये बीररससों रुख ॥ सहसन भेष भयान-
कगणगन । बलकत संगपरम प्रमुदितमन ॥ शिवहिंदेखिप्रभु
आनँदछाये । लरन हेत चलिआगेआये ॥ शतशर हरिहिल-
खत हरमारे । तब पार्जन्य अस्त्रप्रभुडारे ॥ ज्वलत जाइ सोशि-

वके नेरे। कैशत सहसबाण रथघेरे॥ शिव आग्नेय अस्त्र तब छांड़े। सोचलि जाइ कृष्ण पैचांड़े॥ ज्वाल जाल में तासोंय-दुपति। छादित भये दशौंदिशि सों अति॥ भये अदृश्यसुनो तेहि क्षनमें। तब करि कृष्ण कोप अति मनमें॥ तजि बरुणास्त्र मोद अति लीन्हे। अस्त्र शम्भुको लोपित कीन्हे॥ तजत भये तब यदुकुल नायक। साथहि चारि अस्त्र भयदायक॥ बासव अरु बायव्य बखाने। मोहन अरु साबित्र महाने॥ आठौ अस्त्र एकता धरिकै। समित होतभे बीचहि बरिकै॥ फेरि बैष्णव अस्त्र सोहाये। छांड़त भये कृष्ण रिसछाये॥ दोहा॥ उग्रबैष्णव अस्त्रको करतहि उग्र प्रयोग। अन्धकार मढ़िगो दिशनि बिकल भये सबलोग॥ अन्धकार मो छन्नकै शङ्कर करि अति कोप। तजनचहे सोअस्त्र जेहिकिये त्रिपुरकोलोप॥ तोटक॥ शिवके मनकी यहजानि लिये। प्रभु जृम्भन अस्त्रबियोग किये॥ धनुसों शिवलावत हे शरसों। इषुतौ लगिजाइ लगो बरसों॥ जिमि जृम्भन अस्त्रलगो तनमें। अति ब्याकुल ह्वै शिव ताक्षनमें॥ शरचापहि सों तिमिलाइ रहे। अरु बारहिबार जँभाइ रहे॥ मोदक॥ शम्भुहियो लखिकै प्रभु मानँद। शङ्खबजावतभे तहँ सानँद॥ दैयतके गणदीह लहे भय। कोणपके कुलको गुनिकै क्षय॥ शङ्करके गणके अतिशय रिसि। घेरि लिये तहँजाय दशौंदिसि॥ केशवके सुतपै भयछावत। भे सब अस्त्र अनेक चलावत॥ दोहा॥ मायावी प्रद्युम्नतबमोहन अस्त्रचलाय। करि निद्रित सबगणनको दीन्हे तुरित सुवाय॥ चौपाई॥ हरिहरसों इमि सङ्गर माचो। बरब्रह्माण्ड भीतिसों राचो॥ कच्छप कोल शेष दहलाने। दिग्बासी दिग्गज हहलाने॥ उछलन लगे सिन्धु तजि बेला। इतउत भजेजीव करिरेला॥ लगे गिरन गिरिशृंग उकादे। बिरलभये बनजेअतिगादे॥ सब दिगपाल त्रसित तहँ जाई। खरभये करउरपै

लाई ॥ सुर गन्धर्ब यक्ष किन्नर गण । त्रसित लखे सब करि बिस्मित पण ॥ आइ प्रथमहीं सोतहँ बेधा । चिन्तित ठाढ़ेरहे सुमेधा ॥ तहि अतिभार भूमिक्कै व्याकुल । आइ तहां अति सुखसों आकुल ॥ कहत भई बिधिसों करजोरे । करहु सहाय लोकहित मोरे ॥ वारहु बेगि युद्ध हरहरिको । नातरु सकिहि मोहिं अब धरिको ॥ बेला नांघि समुद बढ़ि ऐहैं । जीव जात सिगरे बहिजैहैं ॥ सुनि पृथिवी कहँ धीरज दैकै । गे शिवपै बिधि आनँद लैकै ॥ कहतभये यहि बिधि बिधि बानी । सुनहु वचन मम शङ्करज्ञानी ॥ युद्ध योग तुमहीं यहि दीन्हे । अब कत आपु लरत रिस कीन्हे ॥ तुमहिं न हरिसों उचित लराई । करि बिचार देखो मनलाई ॥ तुम बिचार बिनु किये भुलाने । आपुहि हरिहि दोय करिजाने ॥ करि बिचार पहिले लखि लीजे । फिरि जो उचित होइ सो कीजे ॥ दोहा ॥ यह सुनि शम्भु बिचारि लखि कृष्णहि आपुहि एक । धनुषबाण तजि पाणिते तजे लरनकी टेक ॥ शम्भु कृष्ण तब मिलतभे बर्द्धित प्रेम महान । चतुराननसों लखतभे लख्यो न काहू आन ॥ न्यारे ह्वै लेखन लगे सहित शिवा तहँ शम्भु । बीर धीर बाणौतके युद्ध अरण आरम्भु ॥ जयकरी ॥ तब चतुरानन हिये बिचारि । बूझतभे तब पुंज निहारि ॥ मार्कण्डे मुनिसों मुदराति । अरु नारद मुनिसों यहि भांति ॥ मन्दर गिरि ढिग सुनहु अमीच । देख्यो मैं नलिनीकेबीच ॥ स्वपनेमें हरिहर सुखदानि । बिहरैं सङ्गसकल गुणखानि ॥ गहे आपु हरिहरको रूप । बिरचे हरहरिरूप अनूप ॥ अकल साजसों भये अभेद । पगेप्रेम सों रमे अखेद ॥ यह लखि बिस्मय भयो महान । यथा तत्त्व सों कहौसुजान ॥ मार्कण्डेय कहे हरषाय । तजिबिस्मय सुनिये मनलाय ॥ रूप दोय हरिहरहैं एक । द्वै थर बिहरैं सहित बिबेक ॥ मध्यमनिधन अनादि बिख्यात । हरीहरात्मकतेये तात ॥

जोई बिष्णु रुद्रहैं सोइ। रुद्र पितामह एक न दोइ॥ एक रूप हैं ये त्रयदेव। शुचि स्वयम्भु करता शुभ देव॥ रुद्र अग्निमय उग्र अमान। सो मात्मक हैं बिष्णु महान॥ करता कारण कारजकर्म। पुरुष पुराण बिष्णु शिव पर्म॥ उत्पति पालन अरु संहार। करणहारये पुरुषउदार॥ परमगुह्य यह यामें जौन। सदा लहैं बांछित फल तौन॥ दोहा॥ अब हरिहरकी करतहौं अस्तुति परमउदार। मन रञ्जन गञ्जन कलुष सुनत होत भवपार॥ यह कहि हरिहरकी किये अस्तुति सुनि सुखदाय। महाराज क्षितिपालमणि सो सुनिये मनलाय॥ रोला॥ कृष्ण रुद्र उदार हरिहर बिष्णु शिवहि प्रणाम। द्वै नेत्र अरु त्रयनेत्र प्रभुको परम प्रणतप्रणाम॥ चारु बारिज नेत्र पिंगक नेत्रको सु प्रणाम। धीर धरणी धरण गंगा धरहि प्रणत प्रणाम॥ मुण्डमाला धरहिं औबनमाल धरहिप्रणाम। चक्रपाणि त्रिशूल पाणिहि परम प्रणतप्रणाम॥ पीत अंशुक धरहिं अरु चर्म्माम्बरीहि प्रणाम। रमापति अरु उमापति को परम प्रणत प्रणाम॥ अंगरागिहि भस्मरागिहि प्रेमपूरिप्रणाम। गरुड़बाहन वृषभ बाहन प्रभुहिप्रणतप्रणाम॥ दैत्य बलिके दक्षके मखध्वंशनहिं सुप्रणाम। देवरिपुहनत्रिपुरहनको परमप्रणत प्रणाम॥ सहसशीर्षा पुरुष अरु बहुशीर्षहि परणाम। सहसबाहु असंख्यबाहु सुप्रभुहि प्रणतप्रणाम॥ यजुर्वेदी सामवेदी ख्यातप्रभुहिं प्रणाम। सौम्यरौद्र सुभावन्यामक प्रभुहि प्रणतप्रणाम॥ दोहा॥ ऋषि कृतयह स्तोत्रवर हरि हरातमकवेश। बांछितको दातार है गुणिये सत्यनरेश॥ युद्धकरनको त्यागजब कीन्हेंशम्भुसुजान। रथचढ़ायलै गुहहि गो तब कुम्भांडि अमान॥ सोरठा॥ कार्त्तिकेय बलवान हने तीसशर कृष्ण पै। तीस तीस बरबान रामप्रद्युम्नअमानको॥ चौपाई॥ तब बायव्य अस्त्रप्रभु डारे। शरअग्नेयराम तकिमारे॥ शरपार्जन्यप्रद्युम्न चलाये।

बिकटअस्त्र ये गुह प्रतिधाये ॥ तब गुहबारुण शैलसुहेरे । अ-
रुसाबित्र अस्त्र त्रयप्रेरे ॥ बीचहि अस्त्र अस्त्रसोंबारि । हनेअ-
नगिने बाणप्रचारि ॥ तब प्रभु सजि शर मायाशरसे । बीचहि
शरकुमार के झरसे ॥ लखिकुमारअतिशय रिसकीन्हें । अस्त्र
ब्रह्मशरकरमें लीन्हे ॥ उग्रप्रभाव अस्त्रसों छांड़त । हाहाकार
मढ़ो भयमाड़त ॥ चलेचक्र के भोसो निष्फल । जिमिरबिचले
घनो घनको दल ॥ ब्यर्थ ब्रह्मशर अस्त्रहि देखी । षटमुखमन
में अतिशयतेखी ॥ लये अमोघ शक्ति अतिभारी । जोयुगान्त
पावकसमचारी ॥ तजेशक्तिसो गुहकरिदपटैं । चलीपूरिमहिन-
भलों लपटैं ॥ सहितसुमनगण शक्रसकाने । जरे कृष्णयह ध्रुव
अनुमाने ॥ ताहि निकटलखिप्रभुअनखाये । हुङ्कहि महिपैता-
हि गिराये ॥ साधु साधु श्रीकृष्ण महाशय । कहेसुमनलखिप्र-
भुको आशय ॥ फिरिप्रभु चक्रपाणिमें लीन्हे । गुहके नाशनको
पनकीन्हे ॥ यहलखिकैगिरिजाबररूपा । सुतकेरक्षण हेतअनू-
पा ॥ दोहा ॥ लहि शासन त्रिपुरारिको धरतभई द्वै देह । सात
भागसों कोटवी देवीभई सनेम ॥ एकभाग बरसों भई देवील-
म्बानाम । गहियुगरूप अनूप अति दिगबसना अभिराम ॥
जाइ कृष्णके सामुहे खरीभई चषजोरि । देतकृष्ण नतनयन
करिकहेगई मतितोरि ॥ गच्छगच्छ अपगच्छ तू मतिकरु देवि
अकाजु । कार्त्तिकेयको बध अवशि मैं करिहौं हठि आजु ॥
मौक्तिकदाम ॥ इबात महानसुनो सुनिकैजू । कही गिरिराजसुता
गुनिकैजू ॥ कुमारहि रक्षण हेत अबास । खरी इतआइ भईतुव
पास ॥ सुश्री ॥ तौलागि मैं अंशुक नहिं लैहौं । औ नहिं ह्यांते
अनतहि जैहौं ॥ यहिबिधि याही थरथिर रैहौं । पाहहुसेनानि-
हिइमि कैहौं ॥ दोहा ॥ जौलगि चक्रहि समितकरि क्रोधहिये ते
टारि । कार्त्तिकेय को अभयबर नहिं देहो असुरारि ॥ बचन
कोटवी देविके सुनिबोले श्रीरंग । अभय कियोमैं तव सुतहि

लियेजाहु निज संग ॥ यह सुनि गिरिजा गुहहिलै गई शम्भु केपास । चक्रहि कीन्हे शमितप्रभु करुणाकर सुखरास ॥ चौपाई ॥ युद्ध भूमि ते गुहकोलैके । गईं शिवाजब मन निर्भय कै ॥ तब रणधीर बीर तरवाना । गह्योयुद्धको चावअमाना ॥ चढ़िउन्नत रथपै रिसछायो । सदलकृष्णके सम्मुखआयो ॥ बिबिधभांतिके बाजन बाजत । संगअसुरभट गर्जतगाजत ॥ सुतपपुरोहित बिप्रहजारन । पठत स्वस्त्ययन बिघ्न निवारन ॥ सहस भुजनमें आयुधधारे । दर्प सखर्ब गर्ब्बहियभारे ॥ गर्बकुटिलता बिषसोंसानी । कहत भयो केशवसों बानी ॥ काल बिबश ह्वै तू इतआई । चाहत मोसों करनलराई ॥ आठ भुजासोंआयुधधारी । सहस भुजासों लरन बिचारी ॥ आये हौ अतिशय हरषाने । ताते तुम्हें मूढ़ हमजाने ॥ अब जीवतनाहिं निजपुर जैहो । मरिनिवास यमपुरमें लैहो ॥ मेघश्वनशतचाप शरासन । कीधुनिसुनि मरिहौ कपित्रासन ॥ बज्रसदृशमम अस्त्रप्रहारण । किमि सहिहौ तू भूमि बिहारण ॥ यहसुनिनारदमुनि नभचारी । अट्टहासकीन्हें धुनिभारी ॥ यहसुनि कृष्ण बुद्धिबलसागर । हँसिइमिकहे बाणसों नागर ॥ सुनुशठ जल्पब नहिंमनुसाई । यहकादर जनकीकदराई ॥ निजमुख भाषेनिजप्रभुताई । मिलै न जय बिन किये लराई ॥ शिवसों लरन हेतबसु बाहैं । कीन्हे तौ हित द्वै भुज चाहैं ॥ इमि कहि केशव द्वै भुज ह्वैके । मारेबाण बाण कहँज्वैके ॥ तब शरवृष्टि बाणप्रभुपाहीं । करत भयो गर्बितमनमाहीं ॥ दोहा ॥ अस्त्रएक हो बाणपै याहि पूर्ब अनुरागि । हो हिरण्यकश्यपुलहे बिधिसोंतपि बरमांगि ॥ ताहि चलावत भे प्रबल प्रलय अग्निसमजौन । ज्वालजाल सों छाइ दिशि चलो कृष्णपैतौन ॥ पारजन्यबरअस्त्रतब तजेकृष्ण करिकोप । ज्वालजालमें अस्त्रको करतभयो सोलोप ॥ तोमर ॥ निजअस्त्रको लखिलोप । करि बाणअतिशयकोप ॥ भोतजत

शस्त्र अनेक । अरु अस्त्र बिबिध सटेक ॥ तेसबै मगमें काटि । प्रभुहने बाणहि डाटि ॥ तजि शार्ङ्ग धनुसों बान । प्रभु दयेकाटिमहान ॥ रथध्वज धनुषयहतासु । अरु मुकुट कवचहिआसु॥ फिरि बाणके हियबीच । शरहने एकनिभीच ॥ शर लगेते भटबान । तहँपरो मूर्छि अयान ॥ तेहिदियेहे गुणजौन । सुमयूर बाहन तौन ॥ तब गरुड़ सों सोधाय । भो भिरत दीरघकाय ॥ नखतुण्ड पक्ष चलाय । तेलरतभे रिसछाय ॥ लरिशिखिहि खगपतिमारि । झिकि दयेमहिपै डारि ॥ यह बाणकी गति देखि । मुनिकलह प्रिय अवरेखि ॥ ह्वै मुदित कुक्षि बजाय । हँसिलगे नचनसचाय॥तबचेति बाणसकानि । भो करत महत गलानि ॥ सह शक्र समुदासोय ।इमिलखे मोकहँओय ॥ इमि बूझि मनमें खेदि । तिमि रहत भोनिर्बेदि ॥ दोहा ॥ चिन्तिबाणकेचित्तकी चिन्ताश्री त्रिपुरारि । नन्दीश्वरसों कहतभे करुणा सिन्धु बिचारि ॥ ममरथलै अब जाय तुम बाणहि शीघ्र चढ़ाय । युद्ध करावहु कृष्णसों ह्वै सारथि सुखदाय ॥ सुनि निदेश गिरिनाथको रथलै नन्दीजाय। प्रभुके सम्मुख करतभे बाणहि तुरत चढ़ाय ॥ चौपाई ॥ शिवकी कृपा पाय मुदपागो । बाण पूर्ववत बलकन लागो ॥ परमरउद्रउग्र अति जोई । अस्त्रब्रह्मशिर छाड़िससोई ॥ केशवताहि चक्रसोंवारी । कहे बाण सों आयुध भारी ॥ पूर्व सहस भुज अर्जुन की गति । कीन्ही परशुराम जो बरमति ॥ सोगति करउँ शीघ्र मैं तोरी । थिर रहि देखु बीरतामोरी ॥ यहकहि चक्रपाणिमे लीन्हे । बाणहि नाशनको प्रणकीन्हे ॥ कहे शिवा सों शंकर चाही । सादरजाय बचावहु याही ॥ सुनि कोटवी शम्भुकी बानी । लम्बा सहित सरस सुखदानी ॥ सादर दिग्बसना सुखदाई । ठाढ़ीभई मध्य में जाई ॥ लखि प्रभु बोले नैननधाई । कहौ कहा कहँ हौ अब आई ॥ बोली तब कोटवी भवानी । बाण मोहिंप्रिय जिमिसे-

नानी ॥ इतनो कहो मानि ममलेहू । अभयदान बाणहि अब देहू ॥ सुनिप्रभु बोले सुनहुभवानी । बधब न याहि मानि तुव बानी ॥ सब भुजकाटि दोयभुज राखब । गर्व बाणके तनते नाखब ॥ भाषिकोटवी सों इमि मानद । कहे बाणसों केशव सानँद ॥ कुरु कुरु युद्धरहो कत जकिसों । इतनेही संगरमें छकिसों ॥
दोहा ॥ कै शोणितको सिन्धुलखि गयोभीतिसों मोहिं । सहस भुजा बलवान तू पौरिन आवततोहिं ॥ इमिकहि चक्रसुदर्शन छाड़े कृष्ण अखर्व । तेजपुंज त्रैलोक्यको जामें पूरित सर्व ॥
रोला ॥ परसि गुरुबपु बाणको सोघूमि गहिगति बक्र । राखिद्वै भुजकाटि सिगरे गयो प्रभुढिगचक्र ॥ सहसशाखी दीर्घशाखी सदशहो बलवान । दोयशाखी चारुशाखी सदशभो सोबान ॥ क्षतनते कढ़िकढ़ि रुधिरकीधार परम ललाम । लगो बढ़िबढ़ि गिरन दशादिशि भांतियहि अभिराम ॥ साहसी सब दिशि सुखीअति दीहजिमि जलजंत्र । भारतीके बारिभारो छुटतफैलि स्वतंत्र ॥ कटेहूँपै भुजानिके अतिक्रुद्धिगरज्योबाण । कृष्णसुनि फिरिकिये उद्धत चक्र शोषक प्राण ॥ आइतब सुतसहित हर करि कृष्णके गुणगान । क्रोध शमित करायमांगे तासु अभय प्रदान ॥ मानि शिवको कहोप्रभुतजि क्रोधकरिमन शुद्ध । गरुड़गामी चले जहँतहँ रहतहैं अनिरुद्ध ॥ कहेतब असुराधिपतिसों निरखि नन्दी बैन । शीघ्र शिवके निकट चलिअब करहु नृत्य सचैन ॥ जाइतब ढिग शम्भुके करिनृत्य बहुबिधि बान । शिवहिकरि परसन्न लीन्हें मांगिबर मनमान ॥ शम्भुगे निज धाम तबगो बाण अपने ग्राम । कहेतब मुनि कलह प्रियसों कृष्णप्रभु अभिराम ॥ चलहुलै मोहिं सुमुनि तहँ अनिरुद्ध हैं जेहिगेह । बचनसुनि सँगजाइ नारद गहेसरस सनेह ॥ दये अनिरुद्धहि लखाइ सुलखत प्रभुभरिनैन । गयेढिग अनिरुद्ध के करुणायतन जगजैन ॥ देखिगरुड़हि भगे अहिजेरहे बन्धन

घोर। गहे श्री अनिरुद्ध प्रभुपद गहेमोद अथोर॥ राम अरु प्रद्युम्न अरु खगनाथके गहिपाँय। किये अस्तुति कृष्णकी प्रभु लये उरसों लाय॥ सेवकिनि सब सहित ऊषहि गरुड़पै बैठाय। चलनचाहे कहतभे तिमि सुमुनि नारद आय॥ सहितसुर सुरराजचाहत सुनोगालिप्रदान। करहुताते ब्याहइत अनिरुद्ध को सुखदान॥ दोहा॥ एवमस्तु प्रभु कहतभे तिमि बिवाह को साज। लैआयो कुम्भाण्ड तहँ मंत्रीकरन सुकाज॥ प्रभुपद बन्दतभो सचिव करिताको आश्वास। किये बिवाह सुपौत्रको सबिधि सरस सबिलास॥ मुदित बिवाहोत्तरगये बेधा अपने लोक। सह परिवार खगेन्द्रपै चढ़े कृष्णमुद ओक॥ सखिन सहित ऊषहि उमा दैआशिष सुखदाय। कीन्हीबिदा मयूर पै चाहि सचाव चढ़ाय॥ सोरठा॥ चलतीबार सचाय कहत भयो कुम्भाण्ड इमि। नाथ बाणकी गाय हैं असंख्य घर बरुण के॥ स्रवै अमृत शुचि क्षीर ते सिगरी सुखदा सुरुचि। चाहहु तौ रणधीर तिन्हें लेतजैये सदन॥ कहि तथास्तु श्री रंग चलतभये आनँद अयन। चले मुदित ह्वै संग सुरपति सुर गन्धर्ब सह॥ चौपाई॥ सहित स्वपुत्र सुपुत्र सुभाई। चले गरुड़पै प्रभु सुखदाई। पूरुब ढिग ऊषाको बाहन। चारु मयूरहि राखि सुचाहन॥ नभपथ चले बारुणी दिशिपति। सुर गन्धर्ब सहितसह सुरपति॥ पश्चिमसमुद निरखि यदुनायक। कहे गरुड़सों बचन सचायक॥ खगपतिजहां बाणको गोधन। चलौ तहां करिकै मग शोधन॥ यहसुनि गरुड़ झारिपरमारिहि। मारिबारितहँ उतरब बारिहि॥ चले बरुण प्रति मुदसों भेखे। चलि जबसों बरुणालय देखे॥ निजदिशि आवततिन्हैं निहारे। सुभट बरुणपुरके रखवारे॥ कोतुम कत आवत भय त्यागे। कहि शस्त्रनसों मारनलागे॥ करितेकठिनयुद्ध रिसिराते। खगपतिसों तहँ गये निपाते॥ यह सुनिपाय बरुण रिसछाये।

छांछठि शत भट रथी पठाये॥ ते करि घोरयुद्ध भरिबलसों
जरे कृष्णके बाणानलसों॥ यहसुनि बरुण सैनसजिभारी। आ-
ये लरन आपु धनुधारी॥ जलपति जल जब जाइ सुखारे।
बाण अनेक कृष्णकहँ मारे॥ शङ्ख बजाइ कृष्ण प्रभु हरषे।
बाण असमान बरुणपैबरषे॥ दोहा॥ बरुणहि प्रभु प्रभुकहँबरुण
मारे शस्त्र अनेक। तुमुलयुद्ध कीन्हें प्रबल गहे युद्धकी टेक॥
तजे कृष्णतब बरुणपै बैष्णव अस्त्रप्रचण्ड। चल्यो चण्ड कर
सहशसो ज्वालपुंज उद्दण्ड॥ बारुणास्त्रतब तजतभे बारण ब-
रुण बिचारि। भिरोसु बैष्णव अस्त्रसों बरषतसो बरबारि॥
बारुणास्त्रको वारिसब वारि बैष्णव अस्त्र। प्रलयागिनि सम
बरुणपै चलतभयो शुभशस्त्र॥ जयकरी॥ अस्त्रहि आवत लखि
मनमोरि। प्रभुसोंकहे बरुण करजोरि॥ स्मरण करहु निज प्र-
कृति उदार। जेहि सुबीजको तरु संसार॥ तेहि समरे जोमम
संहार। उचित होइ तौ करौ न बार॥ इमिकहि अस्तुति किये
बनाय। तब इमिबोले श्रीयदुराय॥ दीजै शीघ्र बाणकी गाय।
जो तुम कुशल चहौ निजकाय॥ बरुण कहे सुनिये गुण
गेहु। हौंमैं किये प्रतिज्ञा एहु॥ गोधन तुमदीन्हे सो बाण।
आनहि देव न आछत प्राण॥ हौ सुधर्म पालक तुमईश।
करौ उचित लखि बिश्वेबीश॥ जोचाहौ गोधनको लाहु। तौ
प्रभुमोहिं मारिलै जाहु॥ यहसुनि कहे कृष्ण प्रभुपर्म। राखहु
गाय सहित निजधर्म॥ यहसुनि बरुण बिनै बहुकूजि। भये
सनाथ कृष्णकहँ पूजि॥ ह्वै पूजित सह सुमनसमाज। आये
निजपुर श्रीब्रजराज॥ निज आगम सूचक सुखदाय। शंख
बजाये पुरढिगआय॥ धुनिसुनि यदुबंशी सुखपाय। पूजतभे
पुरबाहर आय॥ यथा उचित सबपुरके लोग। पूजे प्रभुहिस-
हित उपयोग॥ अस्तुतिसुने सरस सुखसाजि। पुरबाहर उप-
वनमें राजि॥ दोहा॥ थिरि उपबनमें क्षणकप्रभु सादर निजगृह

आय । उतरि गरुड़ते कहतभे यदुगणसों हरषाय ॥ अन्तरिक्ष ढिग लसतजे सुरमुनि सह सुरनाथ । तिन्हैं पूजि अस्तुति करौ बन्दिजोरि युगहाथ ॥ सुनि सब यादव करतभे पूजन सह उपचार । यदुगणसों तब इमिकहे श्रीपुरहूत उदार ॥ जीति अग्नि शिव कार्त्तिकहिं बिशद बाणबिधि ठाटि । करिसहस्रभुज बाण कहँ द्वै भुज सब भुज काटि ॥ करि बिज्वर त्रैलोक्य कहँ तिनमें मोहिं बिशेखि । आये इत श्रीकृष्ण प्रभु लहौ मोदअबरेखि ॥ सोरठा ॥ कहि यहि बिधिके बैन करि अस्तुति श्रीकृष्ण की । सुनाशीर लहि चैन सुरन सहित निजधामगे ॥ चौपाई ॥ तबप्रभु मिलिसब यादव गणसों । कुशल प्रश्न बूझे सब जनसों ॥ बैठिसभारचि आनँद पागे । कथाप्रसंग कहनकछुलागे ॥ आदि रोहिणी सिगरी तियगन । गावत मंगल चारु मुदित मन ॥ सहित सखीगण ऊषहि बिधिसों । अन्तहपुरलैगई सुसिधिसों ॥ बिधिवत लोकचार तहँ कीन्ही । शुभद बधुहि लखि आनँद लीन्ही ॥ हीकुम्भाण्ड सचिवकी तनया । रामानाम सुबुधि शुचि सनया ॥ ताहि शाम्बसो सबिधिबिवाहे । करि सम्मत श्रीकृष्ण उछाहे ॥ और सखी जे रहीं कुमारी । ऊषाके संग शुभगुणभारी ॥ तिनकहं यथायोग कुंवरनसों । दये बिवाहि सबिधि सुबरनसों ॥ अतिमंगलमुद मंजु नगरमें । होतभयो तब सब घरघरमें ॥ सुनिये जनमेजय क्षिति शासन । इमि बाणहि जीते गरुड़ासन ॥ असुरन जीतन हित प्रभुस्वामी ॥ बिष्णुकृष्णभे अंतरयामी ॥ देखेसुने परै सबजे हैं । तिनके प्रभब पुरुषप्रभु तेहैं ॥ प्रभु आचरज धन्यगुणवारे । यहि बिधि कृष्ण कहाइ बिहारे ॥ नृप यह युद्ध कथा जे सुनिहैं । ते नरसो लहिहैं जो गुनिहैं ॥ कृष्ण बाणको युद्ध सोहावन । कहेसुने मंजुल मनभावन ॥ दोहा ॥ बरणे यहि अध्यायमें सह बिस्तार प्रबुद्ध ॥ हित ऊषा अनिरुद्धको कृष्णबाणको युद्ध । गोधनहित

फिरिबरुणसों बरणे युद्ध सचाय। बहुरिआगमनद्वारका बरणे ये सुखदाय॥
इतिहरिवंशदर्पणेबाणयुद्धोनामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥
दोहा॥ सौतिकसों यह सुनिकथा लहि शौनक आनन्द। फिरिबूझे मुनिराजसों पावनिकथाअमन्द॥ जनमेजय नरनाह को मुनि अब कहिये बंश। सुनि पौराणिक कहत भे सुनियेऋषिअवतंश॥ चौपाई॥ काशिराजकी सुतासुबरणी। हीजनमेजय नृपकी घरणी॥ तासों भये दोयसुतज्ञानी। जेठे चन्द्रापीड़सुदानी॥ सूर्य्यापीड़ द्वितीय कुमारा। चन्द्रापीड़ गहेमहिभारा॥ ताके शतसुत भेअभिरामी। सकलजानमेजय यहनामी॥ जेठो सत्यकरण अरिद्रता। सो भो परम भूमिको भरता॥ तासुत श्वेतकर्णभे राजा। तेतजिराज्य समूहसमाजा॥ गयेबसनबनह्वैसुबिरागी। पत्निनीएकगई सँगलागी॥ चारु मालिनी नामानारी। रही गुर्बिणी पतिब्रत धारी॥ उत्तर दिशि अति निरजन बनमें। भयोपुत्र तेहि ताही क्षनमें॥ ताही थर तजि नृप अरुरानी। गये महतपथ गहेसुज्ञानी॥ सो सुतपरो रह्यो तहँ रोवत। इतने में आये बन जोवत॥ सुवन श्रविष्ठाके गुण आगर। पैप्पलअरु कौशिक करुणाकर॥ तेलै सुतहि बारिमें धोये। सूखो रुधिर छुटो नहिंजोये॥ घसिपाथरपर ताहिछुड़ाये। ब्रणभो रुधिर कढ़ोदुखपाये॥ बेमकनाम रह्यो कोउताके। ते दीन्हे सोसुत बरमाके॥ बेमककीर्त्ति असुतसम जानी। बर्द्धितताहि करीसुखदानी॥ दोहा॥ पाथरपैरगरेतहाँ भयोअजा समश्याम। ताते तेहि सुकुमारको भो अजपार्श्व सुनाम॥ तिनके पुत्र पौत्रसों बढ़ो बंश अतिभूरि। ते बिलसैं वहि देश में बरबिभूतिसों पूरि॥ चौपाई॥ यहसुनिशौनक ऋषिबिज्ञानी। बूझे फिरिसौतिकसोंबानी॥ बैशम्पायन मुनिसों सुनिकै। भारत जनमेजय नृप गुनिकै॥ महत सर्पमख पूरणकरिकै। किये

कहाकहियेमुद धरिकै ॥ सौतिक कहे सर्पमखकीन्हे । तबजनमे जय आनँद लीन्हे ॥ अश्वमेध मख करिबो चाहे। सुनिसुमहातिम परमउछाहे ॥ ऋत्विज मंत्रिहि दिये निदेशा । सजौसमान अश्व शुभभेशा ॥ यह अनुमानि ब्यास तहँ आये । पूजि यथोचित नृप बैठाये ॥ कुशलप्रश्नकहि बूझि सुखारे । कहेभूमिपति आनँद धारे ॥ मुनिजो किये आपु मनभावन । भारत अति रमणीय सोहावन ॥ तासुकथा सुनिकै मनमेरो । होय न तृप्त चाहसों घेरो ॥ मुनि हम भारत सुनि अनुमाने । सो तुम सों बूझत भयमाने ॥ राजसूय अनरथको कारण । कीन्हेंधर्मराज भयभारण ॥ प्रथमहिं राजसूय मखभारी । कीन्हें सोम सरस ब्रतधारी ॥ ताके अंतयुद्ध जगत्रासन । भयो तारका भय जननाशन ॥ किये बरुणसो मखअभिरामा । भो तब देवासुर संग्रामा ॥ नृप हरिचन्द किये फिरिआछे । भो आडीव युद्धता पाछे ॥ दोहा ॥ राजसूय मख जो भयो तब भो प्रलय अघात । ज्ञाताभूत भविष्यके तुम सब बिधिसोंतात ॥ तुव अनुशासन कौनहै लंघनकरता कोइ । प्रभुतुव कत दीन्हेकरण राजसूयक्रतुजोइ ॥ जयकरी ॥ यहसुनिकै बोले हँसिब्यास । सत्यकहे तुम ज्ञानप्रकास ॥ वैन मोहिं बूझे यहबात । बिनु बूझे हमकह्योन तात ॥ तदपि न याते कह्यो बिचारि । होनहार कोउसकै न टारि ॥ काहरूप प्रभु निरमेंजौन । कीन्हें यतनकरै नहिं तौन ॥ करिहौकाहा भयको शोचि । अबजो कहहु करहुसो रोचि ॥ बाजिमेध मखचाहौकीन । सो नहिं होइहि सिद्धिप्रबीन ॥ होइहि विघ्नकलंक महान । ताते मति कीजे मतिमान ॥ पै यह विधिराखे बिधिलेखि । करिहौ अवशिसुखद अवरेखि ॥ अश्वमेध में बिघ्न अमान । तेखिकरे बहुबिधि मघवान ॥ सो जो भूपति सकौ सँभारि । अश्वमेधतौ करैसुधारि ॥ कहेभूप सुनि येमुनिराय । दीजैभावी बिघ्नबताय ॥ भाषेब्यास बिप्रपैक्रोध ।

भूप करिहि मखको अवरोध ॥ अब आगेसुनु नृपशिरमौर। करिहि न बाजिमेधकोउ और ॥ कहेभूपयहगुरु परिताप। सबै बिनाशक द्विजको शाप ॥ हमते अश्वमेधकोशोक। होइहिहहो अयश यहि शोक ॥ पग बन्धित बर खगकी भांति। अयशी लहै न स्वर्ग सुकांति ॥ दोहा ॥ यह बिचारि अतिशयभई लज्या भय परधान। तातै फिरि बूझोकछू सो कहियेमतिमान ॥ अश्वमेध बरयज्ञके आवृतिको संचार। अब होइहिकै नहिं कहौ फिरि करि सुमुनि बिचार ॥ सुनु मुनिकहे नरेशसुनु भूपति ओ द्विजनाम। होइहि काश्यपगोत्रद्विज कलियुगमें अभिराम॥अश्वमेध मख करिहि सो फिरि ताहीके बंश। राजसूय मख करिहिकोउ सुनिये नृप अवतंश ॥ सोरठा ॥कहे ब्याससोंभूप अब भविष्यकहिये सुमुनि। जो आचरण अनूप गहिहैं कलिके नर सरल ॥ सुनिमुनिकहे बिचारि सुनिये जन्मेजय नृपति। जौन आचरण धारि बरिहैंकलि चारोबरण ॥ चौपाई ॥ ह्वैहैं नीति बिमुख महिस्वामी। दुखदप्रजनके असुपथ गामी ॥ द्विज निज धर्म करम सों हीने। ह्वैहू है हत तेज मलीनें ॥ बिप्राचरण शूद्र गुणगहिहैं। शूद्राश्रित ह्वै द्विजजनरहिहैं ॥ छोटोजन जो सम्पति पाइहि। सोई महत पुरुष कहवाइहि ॥ इस्त्रीजन ह्वै सुवश बिलासिनि। कच मुड़ाइ होइहैं संन्यासिनि ॥ सिद्ध अन्न जन बिक्रय करिहैं। द्विजगण बेदबेंचि मुद भरिहैं॥ तिय गणयोनि बेंचिधन संचन। करिहैंकरि निजपतिको बंचन ॥ तिय ठगिपतिहि और सों रमिहैं। पतिठगि तियहि और सों गमिहैं ॥ म्लेच्छ मध्यमें द्विजगण इतउत। बसिहैं कलियुग में आनँद युत ॥ निज निज धर्म कर्मकहँ खोई। सबकोउ बणिक कर्मरत होई ॥बुधिबल प्रभा हीन नर ह्वैहैं। कृत्य अकृत्य बिबेक न ज्वैहैं॥ युवती अधिकीपुरुष थोरे। ह्वैहैं कलियुगमें मति भोरे ॥ दानी एकन शत सह याचक। ह्वैहैं यम अखाद्यके पाचक ॥

कलिमें दृष्टि विषम सम होई। स्वल्पशस्यकी उतपति जोई॥ मनसों सुखी जीवसब ह्वैहें। सुखपदार्थ सपने नहिंज्वैहें॥ जन गोधनको संग्रह त्यागी। अजापालिहैं पयहितलागी॥ दोहा॥ दुराचार रत आपु ते सब में कहिहैं दोष। सत पथ गामी आपु को निज सुख कहिहैं सोष॥ करिहैं कुत्सित कर्म अरु कथिहैं ब्रह्म बिलास। कहिहैं आपुहि परम पटु आनहिं मूढ़ सहास॥ इस्त्री बश ह्वैहें पुरुष मातहि पितहि दुराय। तिमि दुश्शीला तरुणिसब ह्वैहें कलियुगपाय॥ सोरठा॥ तहँ प्रतक्ष अनुमान कोप्रमाण करिहैं सरुचि। वेदउक्तपैकान नहिं देहैंनर मन्दमति॥ मत नास्तीक विधान कोप्रमाण होइहि अधिक। क्षुद्र वृत्तिको ठान करिहैं कलिमें नरसकल॥ जयकरी॥ ह्वै अभक्ष्य भक्षकसब लोग। सदा अइन्द्रीजित कृत भोग॥ याचन वृत्ति बिप्रकी जौन। करिहैं क्षत्रिय आदिक तौन॥ पर धन पर तिय हारक सर्ब। ह्वैहें कलिके मानव खर्ब॥ होइहि तस्कर के अधिकार। त्राता करिहि कपट ब्यवहार॥ ह्वैहैंबहुल शस्यके चोर। चोरी करिहिं चोरकेचोर॥ पुत्र पितापैकरिहि निदेश। नहिं सुशीलको रहिहै लेश॥ आपुहि पालक आपुहि चोर। रक्षक ह्वैहें भिक्षुक घोर॥ प्रीतिरीतिको करिअनुरोध। बढ़िहि परस्पर परम बिरोध॥ यहिबिधि लहिकलियुग को अन्त। बढ़िहि पापको पुंज अनन्त॥ लखि बहु कुत्सितकारयछिद्र। जाइहि जगमें पूरि दरिद्र॥ उतपति ह्वैहें मानव थोर। बढ़िहि भूमिपै बन चहुंओर॥ अन्न बसन सों मानव पीडि। बसिहैं जाइ बननि में ब्रीड़ि॥ खग मृगमीन कन्द फल खाय। जीहैंवल्कल धारिअघाय॥ जेपरिहैंग्रामन माह। तिन्हैं कष्ट देहैं नरनाह॥ राजाप्रजा अनीति अधर्म। करिहैं निशिदिन कुत्सित कर्म॥ ह्वैहैं अति नरनारिहरस्व। लघु बुधि बल बीरय सरबस्व॥ तीस बरष मिति आयुदीय। करिहैं

भोग रोगसों छाय ॥ दोहा ॥ तब कछु दिनमें जाइगो कलियुग करि निजभोग। आइहि सतयुग पुण्य मय सुख लहिहैं सब लोग॥ ब्यासदेवकेबचन ये सुनि जनमेजयभूप। ह्वै बिस्मित करजोरिइमिबोले बचन अनूप॥ ऐसे पापी जीवइमिपरे पापके धाम। किमिसतयुग लहि तेलहैं मोद परमअभिराम॥ कहे ब्याससुनिये नृपति ह्वै नरसबबिधि छीन। व्याधि आदि बहुभांतिकी लहि पीड़ाकै दीन॥ ह्वै आरत तब बिषय ते बिषम होतहैं चेति। त्राहित्राहि भगवान इमि रटलावतहित हेति॥ पापपुंज मिटि जातहैं ह्वैते सिगरे शुद्ध। पुण्य पुरुष ह्वैजातहैं रहत न नेक बिरुद्ध॥ तब यहि बिधिसतयुगप्रवृति होत सुनहुनृपतौन। जिमिक्रमसों बढ़िहोत हैं पूरणराकारौन॥ तिथि अरुबार नक्षत्र सम भ्रमत रहतयुग बारि। तथा लहु नृप जीवको गमनागमन बिचारि॥ सोरठा॥ लहत जीवयह भूप सुखदुख आयू पुण्ययश। निज कृतके अनुरूप युगअरु समय प्रमाणते॥ सूतपुराणिक धर्म्म इमिकहि फिरि ऋषिसों कहे। यहभविष्यकलिधर्म्मकहि मुनिब्यासस्वपदगये॥ ऋषि आस्तीकहि आदि सब ऋषि निज निजसदनगे। जनमेजय आह्लादि आयेहस्तीनिगरमाधि॥ चौपाई॥कछुदिनमेंबरफलहित चोपे। अश्वमेध मख नृप आरोपे॥ तहँ अध्वर्य्यु वेद बिधि लीन्हें। हय हियप्राण मंत्रपढ़ि दीन्हें॥ तेहि बपुष्टमा नृपकी रानी। पूजनगई मोदसोंसानी॥ तासुप्रभालखि इन्द्रलोभाई। प्रविशि मृतकहय मधि हरषाई॥ करिबपुष्टमारानिहि निजब-स। कीन्हें सत्वर मैथुनबर्बस॥ यहसुनि जनमेजयरिसिआई। कहे अध्वर्य्युहि निकट बुलाई॥ तुम बध किये बाजिकोकैसो। जाते भयो उपद्रव ऐसो॥ सुनिबोलो अध्वर्य्यु बिचारी। यह बध कियो शक्रअपकारी॥ कहेभूपसुनु द्विजमनलाई। यहतव तप की दूर्बलताई॥ तजिममदेश जाहुमतिबिगरे। सुनितजि

देश गये ते सिगरे ॥ दियेशापतब इन्द्रहिराजा । लम्पट शक्र किये यहकाजा ॥ अब ते बाजिमेध मखकोई । करिहिनभाग लोपतुवहोई ॥ फिरिनृपअन्तह पुरमेंजाई । कहतभयेअतिरोष बढ़ाई ॥ असती बपुष्ट महि गहि जबसों । मैथुनकीन्हें बासव तबसों ॥ तासुत्याग मैं कीन्होंऐसे । बिषयीमार्दित स्रजंकोजैसे॥ बेगिकढ़ैममगृहतेसोई । तासुहेतकछुकहैनकोई॥ दोहा ॥ यहसुनिकै गन्धर्वपति बिश्वाबसु परबीन । कहतभये क्षितिपालसों ऐसो बचन अहीन ॥ नृप बपुष्टमा तरुणि है रम्भाको अवतार । रमे शक्रके नहिं भयो कछु अघको संचार ॥ किये तीनिशत यज्ञ तुम ताते सुरपति लेखि । किये बिघ्नयहि भांति यहि सूने थरमें देखि ॥ दोष ऋत्विजनको न कछु अरु बपुष्टमा कोन । भावी भाषे ब्याससो भयो दोष कछुतो न ॥ करहुत्याग मति ऋत्विजनको न तरुणिको भूप । कोटिभांतिसों होतिहै होनी जौनि अनूप ॥ यहसुनि जनमेजय नृपति ग्रहण किये तजि कोप । तिय अरुबिप्रन पूर्बवत् करि सुधर्मसों चोप ॥ सोरठा ॥ यह शुभकथारसाल सुनैंगुणैं अरु पढ़हिंजे । तेफल चारि बिशाल लहैं लहैं बांछित सकल ॥ दोहा ॥ बर्णे यहि अध्यायमें कहे ब्यास मुनिजौन । जनमेजय क्षितिपालसों कलि भविष्य सब तौन ॥ अरु जनमेजय नृपकिये अश्वमेध बरयज्ञ । सो बर्णन बिस्तारसों सुनिये सकल कृतज्ञ ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेभविष्यबर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

दोहा ॥ बैशम्पायनसों कहे जनमेजय क्षितिपाल । मोमन होत न तृप्तसुनि प्रभुकी कीर्त्ति बिशाल ॥ नारायण कितने दिवस करैं उदधि मधिशैन । करैं हेत केहि शैन प्रभु करुणासिंधु सचैन ॥ किमिप्रबुद्दि बिरचे जगत सो कहिये समुझाय । जो सुनि होउँ सनाथ मैं सब संशय मिटिजाय ॥ सुनिबैशम्पायन कहे धन्य धन्य तुमभूप । जासुसुमति ऐसी भई निज अन्वय

अनुरूप ॥ आदि पुराणनि बांचिअरु ब्यासदेवसों काणि। गु-
णिराख्यो जेहिभांति तिमि सुनौ कहत हौं बर्णि ॥ सो सम्पूरण
कहिसकै कोबिधि आदिकसबै। निज निज मतिसम सबकहत
नारायणगुणपर्ब ॥बैदिकज्ञानीशम्भुबिधि सुरऋषिगणकोनित्य।
जोगुणबिबिध बिधानसों स्तायचारुचितचित्य ॥ सोनिगुणीसों
सगुणसोंकरताकारणकार्य। सोमनबुधिक्षेत्रज्ञप्रभुन्यामकसमय
समार्य॥सोसुदेवअधिदेवसों सोसुभूतअधिभूत।सोबक्ताबक्तब्य
सो सोनरसुरपुरुहूत ॥ सोरठा ॥ श्रीक्षितिपाल उदारयुगप्रमाण
सुनियेप्रथम। अरुयुगकोब्यवहार धर्म अधर्मसुकर्मके॥बरसुर
बरषहजार चार सत्ययुग भोगवत। दयोसन्धिशुभचारि चारि
चारिशतबरषके॥ चारिसहस शतआठबरषसत्ययुगमेंबिशद।
पूरण धर्म सुआढ़ चारु चारिशुचि चरणसों॥तपब्रत श्रुतिरत
बिप्र राजवृत्ति रजक्षात्रसब। कृषी बइश्य अक्षिप्र सबहि शूद्र
सेवत सदा ॥ चौपाई ॥ बरष हजार तीनि परमाना। त्रेता युग
कोभोग बिधाना॥ तीनितीनि शतसन्धि बिचारे। तीनि सहस
षट शत अधिकारे ॥ तीनि चरणसों धर्म बिराजे। ह्वैद्वै षट
अधर्म्म बिधिसाजे॥ द्वापर दोयहजार बरीशा। भोग भोगवत
सुनु अवनीशा॥ द्वै द्वै शतद्वै सन्धि समेता। दोयहजार चा-
रिशत एता॥ तहांधर्म द्वै पदसों सोहै। ह्वै द्वैपद अधर्म जग
मोहै॥ कलियुग सहस वर्षलौं विलसै। शत शत वर्षसन्धि द्वै
सरसै॥ एकहजार दोयशत मानो।धर्म एक पदतामधिजानो॥
ह्वै अधर्म चोपद बलवाना। चारिबरणमें रमै सुजाना॥ यहि
बिधि सहसबार युगचारो। बीते बिधिकेदिवस बिचारो॥ यहि
प्रकार बिधिको दिनबीते। तबप्रभुनाश जगतको चीते॥ तब
श्रीनारायण प्रभु योगी। ह्वै प्रचण्ड रबि सरस प्रयोगी॥
करि आतपित शरीरिन जगके। कर्षै जीव बायु ह्वै सबके॥
ह्वै कृशानु जारैं सब तनको। महीबिपिन सिगरे गिरिगन

को ॥ सिंधुसरित सरसागर जेते । भस्माशेष होहिंसब तेते ॥ सबतेआत्मअंश परिहरही । सानँदलीन आपुमें करही ॥दोहा॥ सुरपतिलों अरुकीटलों इहै ब्यवस्था भूप । करिप्रभु ह्वै सहसाक्षघन बरसै बारि अनूप ॥ जलमय करि ब्रह्माण्डवर अमल अनूप अगाध । शयनकरैं तामधि सुचित प्रभु अद्वैत अबाध ॥ रोला ॥ सुनहु नृपहम सुने तबकी कथा एक बिचित्र । चिरजीवि मार्कण्डेय मुनि सर्बज्ञ परमपवित्र ॥ तीर्थहित प्रभु केउदर मधि भ्रमत भ्रमत उदार । बदन मगसों आइ बाहर कढ़त भयकआर ॥ जादहीन अगाध तहँजलपूर पसरो देखि । मोहिंभ्रमिचकि गुणत भे निज हियो भ्रमसों भेखि ॥ लोकहै यह कौन जहँ नहिं सूरशशिगिरिग्राम । पूरिबारि अपार चहुं दिशिरह्यो अति अभिराम ॥ शोचिइमि शयनीय पुरुषहि लखतभे तेहि काल । सजल जलदसमान श्याम सुशील सदृश बिशाल ॥ चलेढिगवृत्तान्त बूझन तहांदेवहिहेरि । श्वासमारुत में बिबशह्वै गये उरमें फेरि ॥ लखे यहसो तहां मुनिगुणि स्वप्न बिधिअनुमानि । पूर्बवत् फिरि रमन लागे तीर्थ प्रतिसुखदानि ॥ बर्ष सहसन पर्य्यटन करि लखेतहँ सबलोक । नदी गिरिबन उदधि सातोद्वीपपुर चहुँ ओक ॥ नाग नरसुर असुर सिगरे इन्द्रबिधि शिरमौरि । देखिमुनिफिरिकढ़े बाहर पायशुचिमुखपौरि ॥ लखे तहँ जल राशिमधि बरवृक्ष बरबर पत्र । पत्रपै करि शयन क्रीड़त बालअद्भुत तत्र ॥ ताहि लखिमुनि चले पैरत तासुढिग भय पूरि । मुनिहि लखि सो बालबोल्यो मेघस्वन बलभूरि ॥ भ्रमत कितहेपुत्र सादर आउममढिग अत्र । बचनयहसुनि क्रोधकरिमुनिरहेगुणिहेतत्र । दीर्घजीविहि मोहिं बिधि इमि सक्यो कबहुंन भाखि । कहत तिमियह कौन बालक हिये आनँद राखि ॥ समुझिआशय सुमुनिकी प्रभुकहेफिरियहिभांति । सुनहु मुनि तव जनकहैं हम हृषीकेश सु-

कांति॥अंगिरा तवपितामांगेपुत्र मोहिंअराधि। दयेतबहमतुम्हैं करि दीर्घायु अतिविधि साधि॥ परम आत्मामेरेतुम मोहिंपरम प्रियतपधाम। नतरुकोइत मोहिं लेखनहारइमि यहियाम॥ दोहा॥नारायणके बचनसुनि मार्कण्डे तपऐन। शिरधरि पाणि प्रणामकरि सानँद बोलेबैन॥ प्रभुमैं जान्यो चहतहौं तुवमाया कोभेद। कोतुम बटदलपै करौ शिशुहै शयन अखेद॥ सुनि प्रभुबोले ब्रह्महौंनारायण अभिराम। हौंमैं जगउत्पति करन कारण कारयकाम॥ शशि रबिमारुत अग्निमहि नभादिशिग्रह गिरि सर्व। सिन्धुसरित सरयुगकलप हौंऋतुदिनसबपर्व॥ हौंतपब्रत मखमंत्र सब हौंबिधि हरिहर शेश। सो सबहौं जो कछुसुनोदेखौ सुमुनि सुभेश॥ सुनिमुनि लहि मुद फेरिकैश्वास बायु बशजाय। प्रभुकेउरमधि पूर्बवत बिहरनलगे सचाय॥ सोरठा॥ सहस चौकड़ीचार युगमिति निशि इमि तहँ बिते॥ इछित किये उदार जग रचना प्रभु चावसों॥ चौपाई॥ तबप्रभु हरये दये हलाई। बारि बिचारि कछूसुखदाई॥ उरमीभईबारिकेहालत। भयो शब्दतेहि नभगुण पालत॥ मारुत भयो प्रगटफिरि ताते। मन्थित भयो उदधि वहजाते॥ प्रगटो तहँ मारुतसों पावक। जारन लग्यो बारिसों भावक॥ जरेबारिके सुनुहेआरय। महतअकाश खुलो कृतकारय॥ खुले गगनप्रभु आनँद लीन्हे। बारिज प्रगट नाभितेकीन्हे॥ सहस पत्ररबिसम भो भारा। योजनकइक जासुबिस्तारा॥ तब जाके माणि परमप्रबीना। रुचिसों किये बिधिहि आसीना॥ तेहि कमलहि भूदेवीजानो। केशरकण सबपरबत मानो॥ सुमनसगण नितबिहरैं जिनमें। तेगुरु शैल ब्यक्त हैं तिनमें॥ मध्यदेश बारिज कोजो शुचि। सोबर जम्बूद्वीप सरस रुचि॥ स्रवै सूरसों तीरथसब हैं। जेबिख्यात पूत कर अबहैं॥ अधपत्रन के अन्तरजितने। हैंपताल आदिक सबतितने॥ होबारिजके चहुंदि

शिखारि । चारि समुदते चहुंदिशिचारि ॥ सबके अध पत्रावलि जैहैं । जाहि तामसी जितते तैहैं ॥ यहिबिधि मानस सृष्टि सोहावन । बिरचे प्रभु परमानिधि पावन ॥दोहा॥ तबप्रभु कछु अनुमानकरि तामस राजसरूप । मधुकैटभ द्वै असुरबरकीन्हें प्रगट अनूप ॥ तेजंगम गिरिसे महत प्रबलसरोषरउद्र । पाणि पाय के चलनसों मन्थनकिये समुद्र ॥ फिरिते उतपलमें बिहरि प्रभु चतुरास्यहि देखि । युद्धकरनको उदितह्वै इमि बूझतभे तेखि ॥ कोतुमकासों हौप्रगट कत बिलसतहौ अत्र । गनततनमोको मोहबश बनिमंजुल चौबक्त्र ॥सोरठा॥ मोहमयेयेबैन सुनि मधुकैटभ असुरके । सस्मित राजिवनैन कमलासनइमि कहतभे ॥ रोला ॥ योग इति बिख्यात जगमें परम पुरुष महान । तासु सम्भवहो सरुचि इलकरतयोग विधान ॥ कहतभे तब असुर मोसों परम नहिं कोउ आन । लोक मोहित करत हम द्वै प्रगट युगन महान ॥ कहे बिधि जो योग युक्त न ते परे अभिराम । रंचत गुणमय सृष्टिस्रष्टा जौन आनँद धाम ॥ हृषीकेश उदार उत्पल नाम प्रभु कमनीय । असुर सुर करि समरकरिहैं तुमहिं ते समनीय ॥ बचन सुनि मुनि असुर ते भगवान के ढिग जाय । कहे करि अस्तुति हमहिंबर दीजिये बरदाय ॥ मरें जहँ तहँ मरैयाको हमैं नहिं कछु शोच । होहु आपुनके सुवन बर बीर्य्यवान अपोच ॥ कहे प्रभु तुम होहु गे मम पुत्र बर बलवान । हिरण्यकशिपोत्पत्ति समय प्रवृत्ति में मतिमान ॥ भांति यहि बरदान दै फिरि रोष अति बिस्तारि । नाश तिनकोकिये प्रभु ऊरूनपै धरिमारि ॥ तदनु ब्रह्मा ब्रह्मविद तेहि कमल पै गहिचाय । किये दुस्तर घोरतप बरबाहु ऊर्ध्व उठाय ॥ फिरि स्वयम्भु अचिन्त्य आतमा आतम आतमा ताहि । द्विधा करि युग रूप औरो गये चितसों चाहि ॥ मुनि पतंजलि कपिल मुनि ज्वलनार्क सदृश सुभेश । किये ते भगवान बिधिकी सविधि अस्तुति बेश ॥

बचन तिनके समुद सुनि बिधि जपे व्याहृति तीन। तीनलोक समान जे कृतवान बिग्रह इंन॥ प्रगटि क्रमसोंकहे ते चतुरास्यसों यह बात। देहुशुभद निदेश जो हम करहिं सो अवदात॥ कहे बिधि इन ब्रह्मबिदसों बूझि करहु सचैन। कहे व्याहृत मुनिनसों जिमि कहे बिधिसों बैन॥ कहेबिधि तुम ब्रह्मको स्मरण करहु सप्रेम। लहे ते ब्रह्मत्व ब्रह्महिं सुमिरि सलय सनेम॥ फेरि बिधि निज अर्द्धतन सों प्रगट करि बरबाल। बिहरि जाय प्रजापतिन प्रभावअनघबिशाल॥ दोहा॥ त्रिपदाजननीवेदकी गायत्रीशुभखानि। कोसिरजे सिरजेबहुरि वर्णअकारहिजानि॥ गायत्री सम्भव बहुरिसिरजे चारों बेद। फेरि धर्म बिश्वेशको जाये समुद अखेद॥ दक्षमरीची अत्रि मुनि पुलह पुलस्त्य बशिष्ठ। क्रतु गौमत भृगु अंगिरस प्रजाकरण बरदिष्ठ॥ निज द्वादश दुहितानको दक्ष योग्यता चाहि। सुत मरीचिके कश्यपहि दीन्हे विधिवत ब्याहि॥ अदितिदिति दनु मुनि कहीकाला प्रधा सुजान। सुरसा क्रोधा सिंहिका अरु अनायु सुखदानि॥ बिनता अरु कद्रू प्रभृति ये द्वादश तपनिष्ठि। कश्यप इन में करत भे बिबिध भांतिकी सृष्टि॥ फेरि सताइस निज सुता दीन्हे दक्ष सुजान। सुवन अत्रिके चन्द्रमाहिं करिसुयोग्य अनुमान॥ निरमिदये बिधि धर्म कहँ लक्ष्मीकीर्त्ति बिचारि। साध्या और मरुत्वती बिश्वापांच सुनारि॥ निज तन आधे सों रचे हैं बिधि पत्नी जौन। गऊरूप धारत भई कार्य्य साधनी तौन॥ बिधिताकेअनुरूप ह्वै रमि कीन्हे उत्पत्ति। प्रथमएकादश रुद्रजे कामदानि अभिरात्ति॥ अजैकपाद मृगब्याधि अरु अपराजित भगवान। दहन पिनाकी ईश्वर सेनानी सुखदान॥ अहिर्बुध्न्य कामदसुप्रभु और कपालीजानि। निरऋति सर्प ग्यारह परम रुद्र लेहु अनुमानि॥ गऊवृषभ औसब सकल अजअस्रीत अकृष्ठ। एकबंश महिषाद बहु प्रगटित भये क-

निष्ठ ॥ प्रभवच्यवन महिष बलध्रुव अरु तनूज ईशान । वि-
श्वाबसु सुविभूति अरु बिज्ञात्मा मन परधान ॥ सुरभी अरु
बिधिसों भये इतने सह विस्तार । अब कहियतुहैं धर्मसों प्रग-
टे जिते कुमार ॥ लक्ष्मीसों अरु धर्मसों प्रगटेकाम अमान ।
साध्य शैल वृष नागभे साध्या सों मतिमान ॥ धरध्रुव बिश्वा
बसु निकृति क्षम अरुयोग युषान । सोमबायु ये धर्म शत सुर-
सा सों सुखदान ॥ भे बिश्वा अरु धर्म सों बिश्वेदेवा सर्ब ।
और धर्म के सुतनके सुनिये नाम अखर्ब ॥ अग्निचक्षुहबि
ज्योति अरु बिरज शुक्र साबित्र । बिश्वावसु सावृष्टि अरु प-
न्नग अमृत मित्र ॥ नियुधिजपोन बिभावसु आदुति औ चा-
रित्र । परतापन असमन्त अरु अरुचिररश्मि पवित्र ॥ वृहद्भूत
अरुवृहत बरइते मरुत गणबेश । धर्ममरुत्वतिसों प्रगटिसोहैं
सरुचिसुमेश ॥ दक्षसुधर्मासङ्कपा औरबपुष्मादेव । विश्वाबसु
बिश्वषणु अरु सुपर्वाग शुभ भेव ॥ और अनुत्तम हारि नहिं
अरु रुरुतेजस शक्त । बिश्वदेव बिश्वेशकोबिश्व तननि किय
व्यक्त ॥ भे कश्यप अरु अदितिसों ये द्वादश आदित्य । बिष्णु
इन्द्र त्वष्टा बरुण भग रबि तूषा नित्य ॥ मित्र बरदअरु अर्य्य-
मा अरुमनु अरु परयन्य । ये द्वादश आदित्यहैं सुखर परम
आनन्य ॥ प्रगट भये आदित्यसों सरस्वतीमें आम । रूपश्रे-
ष्ठ बपुश्रेष्ठ ये दोऊ पुत्र अभिराम ॥ भे सुदैत्य दितिके सुवन
दनुके दानव बीर । कालकेय राक्षस असुर कालाके सुतधीर॥
आध व्याध ये प्रगट भे अनायुषा सों बार । भयेसिंहिकासों प्र-
गट ग्रह गरिमाके गार ॥ भई अप्सरा प्रधासों मुनि सों भेग-
न्धर्ब । अरुण गरुड़ बिनताहिसोंकद्रू गिरि अहिसर्ब ॥ गुह्यक
यक्ष पिशाच गणभे क्रोधासों भूप । अरु चौपद सिगरे सुनो
बराजिगरू शुभरूप ॥ सोरठा ॥ यहि बिधि प्रादुरभावह्वै बर्द्धितभो
लोकसब । तिमि बरणे गहि चाव जिमि द्वैपायन सों सुने ॥

मुनिवरके ये बैन सुनि जनमेजय नृपकहे । पुनि कहिये तपऐन गुणि ब्राह्मिक पावनिकथा ॥ बैशम्पानि सुजान यह सुनि आ-नँदगहतभे । मनवशकरिमतिमान सुनहुभूपसोंकहतभे ॥ रोला ॥ ब्रह्मके सम्बन्धसों सम्बन्धजो इतिहास । सुनहुसो सन्नद्ध ह्वै नृप राखिमन ममपास ॥ ब्रह्मप्रभु अव्यक्त सतह्वै आत्मयो-निजरूप । ब्यक्त असत अव्यक्त सत ह्वै लसत परमअनूप ॥ दिव्य अबपुष दिव्यबपुवर भूतपति बिभुईश्रि । प्रभवयुनजग कल्पकेकरि सकल कलिपतशीश्रि ॥ अचर चरचर अचरच्चर-चित अचरखचर अभिराम । दारुगत सत दहन समकृतकर्म कारणकाम ॥ सुनहु भूपति प्रथमसों यहकथा अति रमणीय । जबहिं पुरुष पुराण रुचिनिधि क्षीरनिधि शयनीय ॥ रचोजग में किये यह अनुमान ह्वै गुणवान । भये गुणसों तबहिं प्रग-टित पञ्चभूतमहान ॥ आत्मयोनिज तदनु ह्वै कमलस्थ करि अनुमान। रचे जगपूर्बवत गुणिलखि वेदको करिध्यान॥ बारि मधि महि घुलनलागी तबहिं आरत भाखि। कही प्रभु मोहिं ऊर्ध्व कीजे हिये करुणाराखि ॥ भूमिकी सुनि बिनय प्रभुबाराह को बपुधारि । दांतपै धरि महिहि कीन्हें ऊर्ध्व स्वयशबिचारि॥ भेदि मधिमें महिहि ऊरध कढ़ो तेजबिशाल । चण्डरश्मि उद-ण्डजिमि मार्त्तण्डप्रचलअबाल ॥कढ़तभेतेहितेजमण्डलमध्य ते शुचिनाम । सोममण्डल रूप ह्वै बिधिलोककृत छबिधाम॥ सोमके मुख चारुते भो कढ़त श्वास अखेद। बायु अक्षर मयो जानहु नृपति सोई वेद ॥ योगमें बरज्ञानते सोभयो सृजतअ-मंद। लोककाय बिराट पूरुष दिव्य कहँ शुभ छन्द ॥ भूत भौ-तिक भौतकी सब तासुमयचैतन्य। भूतभव्य भविष्य दृश्यसत मयगन्य॥ जीवबशइंद्रियनके ह्वै मोहिं ताहि भुलाय। बिषय प्रिय ह्वै कर्म करिकरि भ्रमतसुखदुख पाय ॥ ज्ञानबलतेबश्य करि इन्द्रियनकहुँ कृतयोग। चेतितेहिबूह्मत्व पावत साधिपरम

प्रयोग ॥ दोहा॥परमात्माहि जीवात्मापरमातमासविधान । करता है अज्ञान अरु योगज निरमलज्ञान ॥ कढ़ो तेज जेहि बेधि क्षिति तेहि सुबिवर माधिभूप । ईश्वरराखे स्वरुचिसों निर्मि सुमेरु अनूप ॥ जेहि सुबरणमें मेरु पै लसे आपमय ज्योति । जासुज्योति त्रैलोक्यमें निजरुचि अमल अनोति ॥ प्रगटकिये निज आस्यसों प्रभु चतुरास्यहि तत्र । प्राणबायु द्विजइन्द्रकहँ अरु अग्निहि कृतसत्र ॥ ब्रह्मलोक सो शृंगभो गिरि सुरगण को भौन । एकलक्ष अरु एकशत योजनऊंचो तौन ॥ इतनोई चहुँदिशि गुणित है बिस्तारित बिशाल । अरु असंख्य तेहि कहत हैं जे ब्रह्मज्ञ रसाल ॥ शत शत योजन उच्च है चहुँदिशिमें बरशैल । ब्रह्म बिचारी कहतहैं गुणिअसंख्य गुणकैल ॥ सुर सुरपति आदित्यबसु मनु मुनि मारुत ग्राम । सहितबिष्णु पालत जगत करुणानिधि अभिराम ॥ जौनब्रह्ममें तेज है ब्यापित सबमें ताहि । ब्रह्मकहत हैं ब्रह्मविद ज्ञानसिन्धु अवगाहि ॥ तीनलोकमें प्रगट है प्राण प्रतिष्ठित ब्रह्म । ब्रह्माके दिन को भयो हैजबतेआरम्भ ॥ वेदउक्ति यज्ञादि जे कर्मसकलसुखदानि । ते हैं गुणि क्रियमान नित परमआतमाहित जानि ॥ ब्रह्म भूत आत्मादिको बिशद बहुत्वनिरेखि । अरु सुभावजगजनन के बहुबिधिके अवरेखि ॥ इन्द्रमरुत बरुणादि के शब्दन कर्म अनेक । कहेसर्व पै सर्व में हैं सबई प्रभुएक ॥ स्थूलसूक्ष्म देहीनको बुद्धिरूप गुणिलेहु । सम्रूप दर्शन सद्दश ज्ञानी कहैं सनेहु ॥ सोई बिधि भगवान तेहि देवी सहित बिनोद । बिरचि भोगबहु चरतहैं अनुगण सहित सुमोद ॥ गंगातासों प्रगट ह्वै करि शिवको अभिषेक । तीनिस्रुत बहुधारह्वै त्रिपुरनि भसी सटेक ॥ नाद किये ते नदी अरु गंगा बिहरी स्वर्ग । ह्वै बिख्यात द्दाला बिशद पृथ्वताको अपबर्ग ॥ प्रभुके मुखतेप्रगट जे चारिबदनसम चारि । वेद तदक्षर सिद्धिमें हैं दाताफलचा-

रि ॥ चारिचरण हैं यज्ञके पूरिततप ऐश्वर्य । ऋत्विजअरु उ-
द्गाता अरु होता अरु अध्वर्य ॥ चारिचरण हैं धर्मके ब्रह्मचर्य
गृहवास । दुस्तर बानप्रस्थअरु ह्वै नगस्थ संन्यास ॥ वेद
बांचिकीन्हें मनन उपजेज्ञान अमन्द । निवृतहोत हैं कर्म सब
पूरतपरम अमन्द ॥ अब नृपकहिये योग विधि जौनज्ञानमय
यज्ञ । अमलअहिंसामोक्षप्रद करहिंजाहि सर्बज्ञ॥उत्तम शुचिसु-
पदस्थकरि सिद्ध्यासन सुप्रयोग । उन्नत उरनत ग्रीवरहि दश-
ननि अकृत सँयोग ॥ बामपाणि तलपै सुधिर शुभकर पृष्ठ
सुदक्ष । राखि नाभिढिग रहि अचल मूंदिओठ दृगपक्ष ॥ मन-
हिं स्ववश करि यतनसों जीव ब्रह्मलैजाय । राखि मूर्ध्निपैज्ञान
चष सोंनिरखैं सुखपाय ॥ प्रणवात्मक पुरुषहि जपै लहि भ्रू-
मध्य निकेत । सो सुबिंबते बिंबमिव बिष्णु अचिंत्य सचेत ॥
बिशद वेदमय यज्ञयह योग ज्ञानमय रूप । मोक्षद अम-
ल अनन्यकृत अप्रतिम परम अनूप ॥ भये ब्रह्मके नेत्रते
ऋग अरु यजुर सुवेद । सामअथर्बण जीभि अरु शिरतेभये
अखेद ॥ शीशअथर्बण वेद है ग्रीव बाहुऋगवेद । हृदय पार्श्व
हैं साम अरु यजुकटिचरण सभेद ॥ बैशम्पानि मुनीशसों सु-
निकै योग विधान । बूझत भये विचारि इमि जनमेजय मति-
मान ॥ मनसों जासु अलभ्य बिधि ऐसो दुस्तर योग । मुनि-
वर ताके लहनको कहिये प्रगट प्रयोग ॥ सुनि मुनिकहे महीप
सुनु करसुख बलधन भृत्य । मित्रनते नहिं बाधसों सिद्धहोत
यह कृत्य ॥ अन्तर्गत मानस अमल शारीरिक कृतकर्म । पूर्व
अन्दको ज्ञानमय सो कारण है पर्म ॥ बिदित तत्त्वअरु ब्रह्म
बिद ब्राह्मण बिदुष बिनीत । ब्रह्मकर्मरत नियत ब्रत दृढ़मति
इन्द्रीजीत ॥ अपुनर्भव भावज्ञतजि और भावके कर्म । साधै
क्रमते योगसो जानि युक्तिको मर्म ॥ छुटि इन्द्रिनके बन्धसों
लहै परमपद तौन । इन्द्रादिक सुरगणनको है दुर्लभपदजौन॥

तेजमूर्ध्निपै राखिजब करत योगबिदयोग । उठत धूम तहँ बहु बरण कहत श्रुतिज्ञ सुलोग ॥ तहां धूमते मेघ ह्वै बर्षत बारि उदार । प्रबलहोततब मूर्ध्निपै मानस अग्नि बिहार ॥ परसत हैं सब अंगमें सहसन तासु फुरंग । प्रबलहोत तब बायु लहि अग्निवारिको संग ॥ अग्निबायु जल भूमियेसर्बधातु सम्पन्न । सम सुभावते होतहैं बरबीजित्व प्रसन्न ॥ तब भूमधि जोब्रह्म प्रभु सूक्ष्म बिराट स्वरूप । ते तहँ बिरचत हैं बहुत सूक्ष्म प्रभूति अनूप ॥ ते सब प्रेरित ब्रह्मसों सुख दुखके ज्ञातार । बसि योगीके मूर्ध्निमधि नृपसुनु करत बिहार ॥ अथचेष्टा आरब्ध ते मूर्त्तिसूक्ष्म क्षितिपाल । तासु स्थूल तनते निकसि दश दिशिजात अबाल ॥ ते बहुभूतहि लहतहैं लयलहिकै तत्रैव । कर्म बन्धते छुटत हैं जिमि जाये यत्रैव ॥ यज्ञादिक शुभकर्मकरि पितृमार्ग ह्वै जाय । पुण्य भोगकरि पतन ह्वै जन्मलेत इमि आय ॥ पदते गिरि नभबायु अरु तेजधूम घनबारि । महिमें मिलिफल होतहैं क्रमसों लेहु बिचारि ॥ फिरि जीवनकी उदर लहि होत सक्रम रसरेत । गर्भबासलहि प्रगटि गुर होत जुलहिकै चेत ॥ ह्वै अव्यक्तसो व्यक्तइमि ब्रह्मसनातन आप । बिद्या बिद्या सहित नृप बिहरत नित्यप्रताप ॥ ब्रह्म सनातन ईशइमि करि युगकइक बिहार । लीन आपुमें लेत करि करि सबको संहार ॥ सोरठा ॥ मुनिवर बैशम्पानि फिरि नृपसों इमि कहतभे । प्रश्नोत्तर अनुमानि परम प्रशंसा योगकी ॥ ब्रह्मयज्ञ बरयोग करन लगत जब ब्रह्मविद । कहत वेदविद लोग होत बिघ्न तब अनगिने ॥ सहि सब बिघ्न महान जब योगी थिर रहत हैं । तब ऐश्वर्य्य महान प्राप्त होत ईछे बिना ॥ प्रथम गगन ऐश्वर्य्य बिशद बायु ऐश्वर्य्य फिरि । बहुरितेजऐश्वर्य्य अरु रसमय ऐश्वर्य्य बर ॥ अरु पार्थिव ऐश्वर्य्य क्रमतेताकहँ करतहैं । जनमेजय नृपबर्य्य सुनहु पृथक् तिनके स्वगुण ॥

रोला ॥ परम नभ ऐश्वर्य्यलहि अरु बायुमें अनुरक्त। स्थूलतनते निकसि रबिसो नभसि रमहिं अव्यक्त॥ तेजमय ऐश्वर्य्य लहि रबि अग्नि सदृश बिभात। होत रसमें तेबरुण पर्य्यन्य शशि समतात॥ पार्थिव ऐश्वर्य्य लहि निल लहत दिव्य सुगन्ध। दिब्यबार्त्ता सुनत लहिजन दिव्यको सतगन्ध॥ सिद्ध करिकै योगनृप नरहोत ब्रह्मसमान। तुच्छ गणि ऐश्वर्य्य सब दृढ़ चिन्ति ब्रह्म महान॥ अन्य धारण धारि जगदाधार ब्रह्मा ब्रह्म। परम योगी करत मानस ब्रह्म कर्म अरम्भ॥ चक्षुते अप्सरनि जाये नासिका ते सर्ब। यक्ष तुम्बर किन्नरादिक गान बिद् गन्धर्ब॥ ब्रह्मयोग विधानसों योगस्य योगी जानि। रचे ऋग्यजु साममें श्रीवेदबाणी मानि॥ भावयोग सुभावसों बिधि रचेकरिअनुमान। भूत आत्माजितेभवमधि अमतिहैंभृतप्रान॥ रचे पदते सिंहगज मृगवृक्ष तृणसब जाति। गउहिहियते बाह ते पक्षीन आनँद राति॥ रचे भूते अंगिरस अरु भृगु मुनिहि अभिराम। भालते मुनि नारदहि बिधिरचे आनँदधाम॥ मूर्ध्निते बिधिरचे सनत्कुमार तपबरताहि। सोमको अभिषेक करि द्विजराज कीन्हेंचाहि॥ लोकअरु अस्थान अरु तत्रस्थभांति अनेक। रचेब्रह्मासरुचिसों बहुरूपसहित बिवेक॥ तत्त्वसांख्य सुयोगयज्ञ सुभाव बर बिज्ञान। क्षेत्र अरु क्षेतज्ञ सम्भव निधन कालप्रमान॥ सर्बमयसो रच्यो सर्बहि सबिधिबिधिसुखदान। सुनहुजनमेजयमहीपातिशास्त्रबिद् गुरुज्ञान॥ योगाबिधियहकहे जो करि मुक्त पदजन लेत। कहत अब कृतकर्म क्रमसों जोन यह वहदेत॥ यज्ञ अरु ब्रतदान तप अति उग्रकरि मुदओक। स्थूल तन तजि सूक्ष्म तनमें जाय बिधिके लोक॥ कल्पभरि बासिनील विधिमें होत लहि कल्पांत। कल्पप्रगटितभये पै फिरिहोतहैं ते दांत॥ दक्ष अत्रिमरीचि नारद आदिआनँदऐन। दक्षको इतिहास कहियतु सुनहु नृपति सचैन॥ दोहा॥ दक्ष

प्रजापति करत भे उत्पति प्रजासधर्म । ब्राह्मण क्षत्री बैश्यअरुशूद्र चारि ये वर्ण ॥ शुद्ध सत्वमय बिप्र अरु सत्व रजोमय छात्र । सुधरमजो मय बैश्यअरुशूद्र तमोमय पात्र ॥ पृथक्धर्म येसर्ब भे एकरूपअभिराम । हैं अधिकारी वेद के तीनि वर्ण तप धाम ॥ वेद क्रियासंस्कार के योग्य न शूद्र मलीन । यज्ञ कर्म कृत अग्नि जिमि नहीं धूमद्युतिहीन ॥ भये और सुतदक्षके बुद्धिमान बलवान । तिनसों बूझेदक्ष इमि सुनहु सकल मतिमान ॥ जग जननी माया महा देवी ताको भेद । तुम सब जानत होहु तो मोसों कहहु अखेद ॥ सोरठा ॥ ते ज्ञानी करि गौर दक्ष प्रजापतिसों कहे । को माया केहिठौर रहै न हम जानैं कछू ॥ चौपाई ॥ बैशम्पायन सों यह सुनिकै । बोले जनमेजय नृप गुनिकै ॥ सतयुगको यह धर्म सोहावन । सुनि सुनि मेरो हियमन चावन ॥ शुभआचरण कहहु अब सोई । समीचीन त्रेतामें जोई ॥ यह सुनिकै मुनिवर मुदराखे । प्रश्नोत्तर यहि बिधिसों भाखे ॥ योगदक्ष अर्द्धनिज तनसों । नारीप्रगट किये गुणिमनसों ॥ तासोंबिहरि परम मुदलीन्हे । सुतापचास सुउत्पति कीन्हे ॥ तदनु दक्ष तेहितियहिं बिचारी । तनमय मिले लये व्रतधारी ॥ तब दशतनया दीन्हे धर्महि । दये सताइस सोम सुकर्महि ॥ तेरह लहि कश्यप सुतजाये । जेहिप्रकार पीछकहि आये ॥ बिधिवत दक्ष कन्यकन दैकै । ब्रह्मक्षेत्रमें वरब्रत लैकै ॥ किये तपस्या सँग मुनिगनके । ब्रह्मयज्ञ कृतजेशुचि मनके ॥ ब्रह्मक्षेत्र तीरथपति जानो । अरु ब्रह्माण्ड द्वितिय बिधि मानो ॥ मुनिगण पञ्चबायु अनुमानो । ब्रह्म बिचारयज्ञ बिधि ठानो ॥ क्रियातीन नाड़िन की जेहैं । यजन तीनि वेदनकेतेहैं ॥ मंत्रयज्ञ परब्रतहितमेंरत । जेतेपंच सुस्वरधृत पथसत ॥ मथि अर्णिहिं शुभ अग्नि निकासी । तीनिकरै तेहियज्ञ बिलासी ॥ द्वैकरि और पांच शिखि गावै । ठांउ भेदते नाम बतावै ॥ दोहा ॥

हिय अरणिहि मथि बायुसों सुनिये भूप सुजान। करि ऊर्द्धित जठराग्निकहँ योगीसहित बिधान॥ पंचबायु अस्थानगत करितेहि पांच प्रकार। योग यज्ञ साधन करै दक्ष सहित उपचार॥ सोम कलश अरु समिध अरु पांच सवत्सागाय। जल भाजन हवि आज्य द्विज तहां मानसिक ल्याय॥ मंत्रवेद उच्चारते ब्रह्मलोकसम पर्म। योग यज्ञ थर होत भो भूपति सुनो सुधर्म॥ योग यज्ञ करिलहत हैं बिष्णु ब्रह्मपद वेश। यज्ञ योगतेहोत हैं सुमनस सिद्ध सुरेश॥ ब्रत यज्ञादिकबासनिक करिकै कर्म सचाय। बिहरैं सुरपुर पै सातिय परमदिव्य तनपाय॥ नहिं छूटति तहँनृपतियह अहं अबिद्या बुद्धि। निजपुर गुरुलघु कर्मकी रहति भावनाशुद्धि॥ बाक्य तत्त्वमसि आदि सुनि गुणै न जौलौं भूप। तौलौं छुटि रागादिसों रहै न लहि ध्रुवरूप॥ शुचि बिद्या बुधिकृत्य बिनु लहै उच्चपद जौन। भोगि अबिद्या कृत्यफल फेरि पतन ताजितौन॥ ब्राह्मणादि त्रयबर्णता लहि फिरि क्रमसोंबार्धै। शतपदरथ ह्वै सुनत इमि सतगुरुसों असपार्धै॥ इन्द्रिन बशकरि मनसहित आत्मनिष्ठलहिज्ञान। योगसिद्ध करि लहत हैं अब्ययपद मतिमान॥ यहिबिधिदुस्तर जानित्ते क्षणरहि मौन बिचारि॥ आबिमुक्ति मय बसत भे शुचि आश्रम ब्रत धारि॥ गृहस्थ सुबानप्रस्थ अरु ब्रह्मचर्य्य संन्यास। वेद उक्त विधि ग्रहण करि बिधिवत करत प्रयास॥ वेदपढ़े बिनु सुनिगुणै गुरु गृहस्थ पदत्यागि। साधन आश्रम तीनि को करै न निजहित लागि॥ वेद पढ़ैनहिं बिप्रजो सोशूद्रवत अधर्म। करवावैतासों सनय नृपतिशूद्रके कर्म॥ सोरठा॥ इमिकहिबैशम्पानि ज्ञानगेह अरु ब्रह्मबिद। स्वाभाविक बिधि ठानि इमि जनमेजयसों कहे॥ चौपाई॥ अब सुनिये जनमेजय मनदै। जो सुनु साधुनको मन अनदै॥ शुभ अरु अशुभ भाव इन्द्रिनके। सुर दइत्य बल जाहिर जिनके॥

शम दम काम क्रोध सुखदाई। भट दुहुंदिशिके सखा सहाई॥ लरे उमँगि निजनिज जयधुनिके। रुकेनरोके मति बुधिमुनिके॥ भई बिकल महि बपु ह्वैमर्दित। भये दृढ़त्व शैलगणअर्दित॥ भई मथित सब नाड़ी सरिता। योग युक्त तरणीकी चरिता॥ तामस मधु दइत्यपतिजब्बर। रजस दनुजपति सहचढ़ि ग-ब्बर॥ गिरि बपुके अन्तहगहवरमें। बिषयमोह बन्धनसों फर में॥ आतमा इन्द्रहि बांधि स्वबश कै। बिहरण चहो तेजकर चषकै॥ प्रार्थित स्वगुरु बचनबर बिधिसों। सतगुण बिष्णुल-रतभे बिधिसों॥ नवसाधन आयुध अतिचोषे। लगे चलावन चितमें रोषे॥ नामबाण के जपन यतनसों। मारे याज्य हरौ लहि पनसों॥ ज्ञानगरुड़कहँ चपलितकरिकै। लागे मर्दनपर बल चरिकै॥ तत्वबिचार प्रजन्य मरुतसों। दिये उड़ायतिन्हैं बलयुतसों॥ मनपरपंची परदिशिचारी। तेहि गहि निजबश किये बिचारी॥ परचारण इन्द्रिनकहँ गहिकै। संयमअसिशं-करसों लहिकै॥ शुचिव्रत कारागृहमें डारे। सुमतिसुबुधिमुनि जयति पुकारे॥ दोहा॥ प्रभुतामें प्रभु सत्यगुण का सहाय इमि पाय। जीवइन्द्र सवकाशलहि भोचैतन्य सचाय॥ सत्संगत शुभ सिद्धसों सुनतभये बरबैन। वेदतत्व बिधि बिहितजो प्रभु कीर्त्तन गुणऐन॥ तेजभूतबरब्रह्मअरु देहेन्द्रियसों युक्त। जीव कर्मबश होतनहिं इतउत गतिसोंमुक्त॥ प्रलयकालमें होत हैं ध्रुवकारणमें लीन। गहत फेरिआरम्भमें बहुबपुलघु अरुपीन॥ कामदकारण रूप प्रभु सर्बदेहमय आप्रु। कायरूपह्वै करत हैं बहुकारज करिथाप॥ कच्छप शेष बराह ह्वै जिमि महिधारण काज। करतकरत तिमि सर्वमय सर्वकार्य सहसाज॥ बसतवेद ह्वै द्विजनमें क्षत्रिनमें ह्वैयुद्ध। दान कर्म बिधि बैश्यमें शूद्रन सेवा शुद्ध॥ सातअन्न प्रभु रचतभे सुनहुतासु ब्यवहार। एक अन्न जो करतहैं भोजनसब संसार॥ दोय अन्न सुरशक्तिको

अर्पणकरियत जौन। चौथोअन्न पितृणके पिण्डदानको तौ-न॥ चारिअन्न ये एकगण हैं पोषकसुखदानि। प्राणवाकमन तीनि ये अन्न सप्तइमि जानि॥ सूर्यात्मक हैं तीनिजे चन्द्रा-त्मकहैं चारि। ते प्रकाशअप्रकाशकृत क्रमसों लेहु बिचारि॥ तीनिअन्नकहँ सेइकरि कर्मजफलकोभोग। अर्चिरादिपथ जाइ फिरि लहत न तनको योग॥ चारि अन्न सेवन करैं धूमादिक पथजाय। भोगि कर्मफल करतहैं देहबास फिरिआय॥ अग्नि वायु अरु यज्ञ तुम तुमप्रचण्ड रबिरूप। निज किरणानि युगा-न्तमें दाहत जगत अनूप॥ कर्मलोपजेहि होइनहिं यहबिचार अनुमानि। यज्ञादिक सब कर्म तुम करत परम हित जानि॥ नूतन रसके वृत्ति हित बनस्पतिनमें आय। बसत अमावस लहि शशी सो तुम जगसुखदाय॥ लीलाकर अप्रमेय तुम पुरुष पुराण बिराट। भूलिरहे हौ आपुको निजकरतबके ठाट॥ यह सुनिकै चैतन्य ह्वै समुझि आपनोरूप। जीवइन्द्र जयल-हतभो कहैं कहांलौं भूप॥ योगसिद्धकरि सविधिफिरि ब्रह्महि चिन्ति अखेद। अहंब्रह्म शुभ बचनयह उचरणलगो अभेद॥ सोन गर्बते भूपमणि भये अद्वैत सुज्ञान। श्रुतिस्मृति वेदपुरा-णको दृढ़ अनुमानि प्रमान॥ अन्तरगत मृग तृष्णिका सम माया व्यवधान। ज्ञानचक्षुसों तेहि परखि ब्रह्महिलहेसुजान॥ अहंकार शास्वत अचल गुणहैं ताके प्राण। द्वारतासु गुरु के बचन सुखदायक सुखदान॥ तेहि मग तेहि गिरिमें प्रविशि तासुपुरातन प्राण। त्रिगुण अविद्यात्मकहि हठि देइ निकारि अमान॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिमें यथाजीवकोभास। तेहि बिधि प्रभु चितअचित ह्वै करत बपुनमें बास॥ मनबुधि इन्द्रिहि राखि बश त्यागैं सकल बिभूति। उदासीन बैराग्यमत पावत बिद्यापूति॥ अभिमानी जे देहके ते नहिं जानैंनेक। विष्णुभ-क्त निष्कामते पेखैं प्रभुहि सटेक॥ सनियम धर्म पथस्थनर

आराधन सोपान । पैचढ़िक्रमसों लहत हैं प्रभुकोपरअस्थान॥ बिद्याको साभ्यासकरि प्रादुर्भाव सुभक्त । इतहूं उतहूं लहत हैं पूरण आनँद ब्यक्त ॥ दीन क्षुधित अर्थी द्विजन देतसबिधिजे दान । सर्बत्रहि प्रभु सर्वसुख पावत ते मतिमान ॥ यज्ञादिक शुभ कर्म जे करत वेदश्रुतिउक्त । लहहिं सुगौरी सिद्धिते बि- द्योद्भव कुलमुक्त ॥ यह कहि बैशम्पानि फिरि कहतभये समु- भाय । पूर्व कियेहे योगजे जिमि दिन जिते सचाय ॥ शुचि तुर्यावस्थास्थह्वै दिगमित बर्ष हजार । योग कियेप्रभु विष्णु गुणि शीक्षणसबिधि उदार ॥ सोरठा ॥ नवहजार सुरबर्ष किये योगबर चन्द्रमा । जातेलहे सहर्ष ब्राह्मी सिद्धिअनूप अति ॥ महिखरी ॥ एकशत नवसहसबर्ष सुयोग शंकरप्रभुकरे । बरवृषभ रूप बिशाल योगी योगयुगतन अनुसरे ॥ तेहिरूपके शुभचर- णको शुचिनामव्याख्या नृपसुनो । दिशिबामकेजे चरण पावन यज्ञमें तिन कहँ गुनो ॥ ते चरण हिंसात्मक सकाम अकाम क्रमसों जानिये । पद चारु दक्षिण ओर केते योगमें शुचि मारिये ॥ ते युग अहिंसात्मक सकाम अकाम अगिलोताहिहे । हे करें आगे धर्म में अनुमानि अति मुदसोंन हे ॥ तहँयोग भा- वजसलिल पावक बीर्य हिलि मिलि फेनह्वै । भे गिरत मुखते गोंदसम नहिं द्रवित दृढ़ तनके न ह्वै ॥ ते पृथक् पृथक् सजीव बाहेर बारिसों फिरि भरत भे । तब अन्य मारुत बसि गगन मधि जाय घनकै चरत भे ॥ फिरि योग साधे बायु ब्राह्मण रूपगहि अति मोदसों । आत्मदरशी कइक बर्ष हजार ब्रह्म बिनोद सों ॥ फिरि अग्नि कीन्हें उग्रतप बहु जटी ह्वै ब्रत धारिकै । रहि मौन आत्महि दार्शि बर्ष हजार चारि बिचारिकै॥ बर बराधि याको तेज ह्वैधी भूत अध ऊरध बसे । दिव भूमि भूषित किये शुभमय कार्य कृत अनुपम लसे ॥ फिरि पुष्यमित्र सुजान दक्ष महान ब्रतधारि तपत भे । इहि कइक बर्ष हजार

आत्मा निष्ठ ब्रह्महि जपत भे ॥ धरि जानु महिपै रविहि बिधि निधि नित्य नियमित तकतभे । जेहि रश्मिमें प्रतिबिम्बवत् बहु नेत्र ह्वै जग लखतभे ॥ तपकृत फल लहि यक्षसोई ख्यात धनद कुबेर हैं । गृह मध्य जाके रत्नगणके अनगिने बहुढेर हैं ॥ बहुशीर्ष बासुकि मौन ब्रतगहि उग्रतप बहु दिन किये । फिरि शेष तरु गहि अधोमुखरहि उग्रतामस ब्रतलिये ॥ तब गिरो मुखते भूमिपै बिष कालकूट महागुनो । भे प्रगट ताते जीव बिषधर अरु जहर जितने सुनो ॥ बिधि किये तिनके शमन हित तब मंत्र न्यास बिधानसों । शुभगरुड़दै बालक अपूरब ध्यानसह अनुमानसों ॥ तेहिजपै सहउपचार बिषको दोष तनते दुरत है । सो मंत्रन्यास महीप सुनु परभाव जाको फुरत है ॥ मंत्रश्लोक ॥ गरुत्मान्वितर्तैर्पक्षैर्नखाग्रैःसलिलंमही । समासह स्त्रंसम्पूर्णंचूलाग्रेणावलम्बिना ॥ अथध्यानम् ॥ पर्णभारैश्चावि कचैर्विस्तीर्णैर्वसुधातले । रराजवसुधाचैवपर्णैर्बहुविचित्रितैः ॥ अथन्यासः ॥ ओंबाङ्गरुत्मान्हृदयायनमः । अंगुष्ठयोः ॥ ओंवि गरुत्मान्शिरसेस्वाहा । तर्ज्जन्योः ॥ ओंगरुत्मान्शिखायैवषट् । मध्यमयोः ॥ ओंवैगरुत्मान्कवचायहुं । अनामिकयोः ॥ ओंवो गरुत्मान्नेत्रत्रयायवौषट् । कनिष्ठयोः ॥ मंत्रः ॥ ओंबलाह्नःवषट इति ॥ ब्रह्मऋषिर्गायत्रीछंदःगरुत्मान्देवताविंबीजंहस्त्रशक्तिः लंकीलकंविषनाशनेविनियोगः ॥ दोहा ॥ तपकीन्हें अत्युग्रफिरि प्रभुहि ध्याइ हिमवान । पृथिवी कीन्हीं उग्रतप दैबहुबिधि बसुदान ॥ एक सहस अरु एक शत बीते बर्ष अमन्द । भई सूर्य्य में लीनतब भूमि सुनो कुलचन्द ॥ जिमि अस्थूल शरीर सों होति बारिमें लीन । तिमि सूक्षमतनसों मिली रविमेंसुनो प्रबीन ॥ फिरि रबिमण्डलते कढ़ी ह्वै सुरसरि शुचिधार । भवहारिणि चारिणि त्रिपुर तारिणिप्रभा उदार ॥ सर्ब्बात्मकता योगते फिरि अभिरामा पर्म । ब्रह्म बदन शीला भई सरस्वती

में धर्म ॥ वेद वादिनी ईश्वरी सो करिकै अनुमान । निर्गुणप्रभु अद्वैत को चाहि कियो गुणगान ॥ अलख अनिर्बचनीय गुण कहिबो दुस्तर जानि । महत मोदमें मग्नक्वै भई मौन अनुमानि ॥ कहत भई तब द्वैत करि सुनो भूप यह रीति । तरु शाखा पै शशिहि जिमि दरशावत गहि नीति ॥ सरस्वतीसों उक्तसो शीक्षा देहीं ग्राहि । मुदमंगलमय मग्न नित हरत मननकरिताहि ॥ आपुबिष्णु बिष्णुत्वगहि लै बहुबिधि अवतार । रक्षत शीक्षत जननको ईछत सगुण बिहार ॥ अग्नि बिप्र हबि आज्य बसु यज्ञ यज्ञकरतार । बेद बेद बिधि देव प्रभु फलअरु भलदातार ॥ घनके प्रेरक श्रेष्ठगज घनजल उर्बीअन्न । दाता भोक्ता ईश प्रभु हैं सबमें सम्पन्न ॥ प्रभुते जीवन जीवते प्रभु इमि लेहु बिचारि । जिमि तरंगहै बारिते नहींतरंगते बारि ॥ सोरठा ॥ सुनि द्विजबरके बैन जनमेजय भूपतिकहे । कहिये मुनि तपऐन तपकरिले फिरिका करे ॥ यह सुनि बैशम्पानि जनमेजय नृपसों कहे । सुणहुभूप सुखदानि प्रश्णोत्तर यहिभांति सुनि ॥ रोला ॥ यज्ञआदिक कर्मकरिलहिस्वर्ग फिरिइतआय । यज्ञकरि फिरि स्वर्गलहि फिरि आइ इतसुखदाय ॥ भांतियहि बहुबार क्रमसों उच्चउच्चस्थान । भोगि तेहि संस्कारते फिरि लहत उत्तमज्ञान ॥ योग यज्ञ महानको फिरि कहत साधन चेति । यज्ञ योग बिधानको फिरि करन बरजन हेति ॥ सिद्धि जयबर लहे लरि तम दैत्य सों सहसैन । कहे जेहिबिधि पूर्ब तेहि बिधि जानियो गुणऐन ॥ दोहा ॥ फिरिनृप मुनिबरसोंकहे सुनि सुबचनमुनि उक्त । यज्ञयोगरत जेन ते होत भांति केहि मुक्त ॥ सोरठा ॥ यह सुनि बैशम्पानि पांडव कुलपति सों कहे । जनमेजय सुखदानि प्रश्णोत्तर सुनिये सरुचि ॥ होत जीवते मुक्त बिष्णु भक्त जे धर्मरत । हैं श्रुतिस्मृतिमें उक्त नहिं यहि बिनु सो योग करि ॥ जयकरी ॥ धर्मासीन नीति रतभूप । शी-

क्षत प्रजन उचित अनुरूप॥ तब नहिं धर्म शीलजे अछि। होत धर्मरत तेऊ शछि॥ बेन नृपतिकहँ शीक्षत भूमि। रहो अधर्म चहूंदिशि घूमि॥ ऋषिन सहित सब बिधि सबिबेक। पृथुकहँ किये राज्य अभिषेक॥ तासोंह्वै शीक्षित गहि धर्म। करन लगे सबप्रजा सुकर्म॥ त्रेता में पृथुकहँ पतिपाय। बिलसत भये प्रजा गहि चाय॥ लागे करन स्वरुचि सों योग। ब्रह्म चिन्तवन में कृत भोग॥ पायकछू दिनमें गति वृद्धि। क्षुधा पिपासा बर्जनि सिद्धि॥ इतनेहीमें गर्बिसमोद। हटके तेभटके चहुंकोद॥ जेदृढ़करि यह रहे बिचार। यहदिनप्राप्त बसन्तउदार॥ योगवृक्ष वर ब्राह्मण फूल। को इहि गुण परिमलअनुकूल॥ प्रापत भयो इतो उतकर्षि। सिद्धि सुफललहि कितनो हर्षि॥ होइहि इमि मतिमत अनुमानि। किये बिचार योगगुरुजानि॥ अन्तष्करण वारिनिधि ताहि। मथि बिबेक मन्दरसों चाहि॥ काढ़िसोम रस अमृत सनेम। कीजै निशिदिनपानसप्रेम॥ यहगुणिके तेदृढ़ब्रतधारि। सोबिधिलागे करनबिचारि॥ दोहा॥ प्राणायामादिक कराणि सो करिथके उपाय। नहिंबिबेक मन्दरउठो भे बिस्मित श्रमपाय॥ ध्यानधारि तब दीनह्वै कहे ईश्वरहि बन्दि। करो कार्ययह सिद्धि प्रभु करुणासागर नन्दि॥ रोला॥ मानि सो करुणायतन दै ताहि निर्मल ज्ञान। गिरा व्याहृति सो कराये तासु हियइमि भान॥ सुमतजे इंद्रीनके लै तिन्हें संग सहाय। कार्य करिये सिद्धि रहि चैतन्य दृढ़ताछाय॥ तम दइत्य रजदनुजभे तब संग लगत अक्षोभ। करो कारयसिद्धिगोरव गहि अमृतको लोभ॥ सुरअसुर येतौन मन्दर मन समुद्रमेंडारि। किये मंथन दण्ड दमहि बिचारि अहि गुणधारि॥ मथे बहु नहिं लहे तबह्वै शमितकरि अनुमान। सत्य बिष्णुहि पार्थि लहि बैराग्य बलसुखदान॥ मथे फिरितब कढ़ेआरोग्यत्व बैद महान। योग बिधिके स्थान मधु

मति आदि मध्य बिधान ॥ वेद बिद्या मूर्ति श्रीमणि प्रभाशशि अहलाद। दूरदरशन श्रवण गुण ऐश्वर्य्य हय तेहि बाद ॥ दिब्यसौरभ घ्राण पार्थिव भूमिसों पारिजात। बिशद बाकनि सिद्धिमल्ल अनुपमं शंख बिभात ॥ सर्वईच्छित करन शक्ति सुधेनु सुनिये भूप। तदनुप्रकटित भयो शुचि कैवल्य अमृत अनूप ॥ ताहि लहिकै जीव सुरपतिभये मोदित पर्म। कहतहैंइमि वेदविद सब सुनहु पालक धर्म ॥ योगबिधिकी सिद्धसुनि फिरि कहत भे क्षितिपाल। तमस रजमय यज्ञकर गति लहत कौन बिशाल ॥ कहे मुनिते राज्य भोगत शुचि सुकुलमें जाय। कै सुद्विज ह्वैयोगकरिकै होत मुक्त सचाय ॥ दोहा ॥ तमरज चेष्टित निज जननि करिरज तमसों मुक्त। तारणगणि प्रभु करत हैं जिमि बलिकी बिधि उक्त ॥ रजतम बेष्ठित दक्षकहँ दैकै सांभव दण्ड। जिमि कीन्हें प्रभु सत्यमय तिमि हे नृपति उदण्ड ॥ निज तनको करि द्विधा शिव आधे तनसों चारु। भेनन्दीश्वर उग्रबपु बरद बिशाल उदारु ॥ सोरठा ॥ नन्दिहि आदिक सर्व गणलै सँग बहुभांति को। जबकीन्हें प्रभु सर्व मख बिध्वंसन दक्षको ॥ तेहि क्षण हाहाकार यज्ञ भूमिमें मचतभो। सबको हिय बिकरार भूरि भीति सों रचतभो ॥ चौपाई ॥ पात्र श्रुवाअरु यूपसों हारा। मंडपतोरण जिते बनारा ॥ तिन्हें तोरिगण दूरि बहाये। डारिबारि त्रय अग्नि बुताये ॥ मोदित हबिष द्रब्य लै खाये। आज्य पान करि इतउत धाये ॥ हिये सोम पशुबध करिचोपे। प्रलयकार बहु भांतिअरोपे ॥ बिभिदित मुमुचि लुलुपितेदेखी। सकलसाज तहँ मखअलि तेखी॥ रूपवान ह्वै घनसम गरजे। मख बिध्वंसि कारकन तरजे ॥ तब शिवजानु भूमिपैलाई। ह्वै सरोष कोदण्ड चढ़ाई ॥ मारे बाण तासुतन माहीं। तब मख भागिगयो बिधि पाहीं ॥ मृगा रूप अति भयसों छायो। पाहिपाहि इमि बचन सुनायो ॥ परमारत

बाणी यह सुनिकै । धीरज ताहि दिये बिधिगुनिकै । तजहु शोच अब नहिं भयतुमको । सुनहु यज्ञतुम अति प्रिय हमको ॥ इमि मृगरूपधरे अब बिलसौ । ह्वै मृगशिर नक्षत्रद्युति सरसौ ॥ तारन सहित सोमके सँगमें । चरहु सदा बिधुमधिसत मगमें ।·बिधिपै जात मृगा के क्षतते. । शोणित धारागिरो इत उतते ॥ सोई इन्द्र धनुष हैं जानो । कामरूप बहुरँग अनुमानो ॥ महिते प्रकटि गगन मधिजाई । लीनहोइ निजतन दरशाई ॥ दोहा ॥ ज्ञानाधिष्ठित देवशिव हनत भये जब देखि । धर्मप्रभव शुभ कर्ममख कह इमि अतिशयतेखि ॥ धर्माधिपति सुबिष्णुतब लै करमेंधनुबान । युद्ध करनकोभे खरे सुनो भूप मतिमान ॥ लखि शिवमारे बिष्णुकहँबाणमहान अमान । बिष्णुहनतभे शम्भुकहँशरशोषकअरिप्रान ॥ तबशङ्करकेकंठमें झपटि लपटिगेबिष्णु । नीलकण्ठतातेभये रुद्रसुनहुनरजिष्णु ॥ तबते सुनेगगन बचन सिद्ध गणनसों युक्ति । नमो सनातन जाहि भजि होत जीवसब मुक्ति ॥ लपटो शिवके कंठमें बिष्णुहि लखिकरिकोप । धनुउठायमारन चहे हेहेपौरवगोप ॥ हँसि लखि नन्दिहि बिष्णु तब कीन्हें स्तम्भीभूत । रहे मिलत गुरु शृंगसम ऊरध बाहें पूत ॥ ज्ञानधर्म्म के देवफिरि हिलि मिलि भये सप्रेम । यज्ञभागबर शम्भुकहँ दीन्हेंबिष्णुसनेम ॥ सोरठा ॥ लहे यज्ञफल दक्ष लहि सहाय प्रभु बिष्णुकी । कानलहैकोदक्ष सुनि गुणिकीर्त्ति सहिष्णुकी ॥ योगयज्ञमें तत्व पुष्कर प्रादुर्भावशुचि । सुनिगुणि लहि गुरुतत्व लहिहै उत्तमपद सरुचि ॥ पुष्करप्रादुर्भावशुभ छबिशुचि अध्यायबर । सुनि गुणियाको भाव जेबूझैं ते धन्यनर ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेपुष्करप्रादुर्भावबर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ अबमुनि तू वाराहको प्रादुर्भाव महान । कीर्त्ति क्रिया करकी करौ कीर्तन सहित बिधान ॥ सुनि

बैशम्पायन कहे सुनिये नृपति सुजान । पावन करनि बराह की भावनकथा बिधान ॥ चौपाई ॥ सहस चौकड़ी दिनके बीते । बिधिको दिन प्रमाणसों रीते ॥ तब प्रभुअग्नि बायु रविह्वैके । सर्बलोक कौतुकसम ग्वैके ॥ सानँद लीन आपु मय करिकै । बरब्रह्माण्ड बारिसों भरिकै ॥ निद्रारूप रमहि निजतनमें । फेरिसुचित सोवैं प्रभु बनमें ॥ ऋषिसुरतासु अन्त नहिं पावैं । ताते तेहि अनन्त कहिगावैं ॥ निर्गुण परब्रह्म कहिकूजे । प्रादुर्भाव रूपलखिपूजै ॥ कोटिनयुवा सूर्यसमधामी । सहसचौकड़ी युग मितिस्वामी ॥ सोय जागिकरि कौतुक भावन । प्रगटित करे अंडबरपावन ॥ ताते रचै लोक बहुबिधिके । बिधिवतपृथक्पृथक् बहुरिधिके ॥ अण्ड हिरण्मय भेदित कीन्हें । दशधा दिशाब्यक्त करिदीन्हें ॥ जिते अण्डके सकल सोहावन । तेभे मेघ बारिबरसावन ॥ ऊरधभाग अण्डकोताते । कनजल चुत भो भरो प्रभाते ॥ सो भो कनकमयो गिरिअद्भुत । अतिउन्नत बिस्तारित प्रभायुत ॥ अधकनजलभे प्रगटित जेते । ठौर ठौर सब गिरिभे तेते ॥ तिनको भूरिभार समतरणी । भई अशक्त धरणकहँ धरणी ॥ दुसहभार ते ऊबनलागी । जल प्रबाहमधि डूबनलागी ॥ दोहा ॥ तब प्रभुकी अस्तुतिकरी ह्वै आरत करजोरि । सुनि लखि प्रभु करुणाउदधि करिके कृपा अथोरि ॥ कहे भूमिमति शंकुमो स्वस्थ करत हौं तोहि । सो सुनि महि साहसलई कृपा ईशकी जोहि ॥ सोरठा ॥ इमि कहि ईशबिचारि भूसों कृतभूभृत भरण । बपुबराह को धारि शोभितभे जनदुख हरण ॥ चौपाई ॥ शत योजन उन्नतअति अनुपम । दशयोजन बिस्तारित शुभदसम ॥ वेद चरण क्रतुदशन सोहाये । यूपडाढ़ ऊरध छबि छाये ॥ रसना अग्नि रोमकुश जानो । निशिदिन नेत्र अनूपममानो ॥ श्रुति वेदांग अभूषणगाये । आज्यनाक स्रुवतुण्ड कहाये ॥ पशुउरूण सबरा उदगाता । होमलिंगफ-

लबीज सुत्राता ॥ पगअन्तर मन्तर अनुमानो । शोणितसोम गन्धहविजानो॥ वेदीगन्ध कहैं श्रुतिज्ञाता । हृदयदक्षिणाआनँद दाता ॥ रदछद उपाकर्म मनभावन । कुण्डनाभि आवर्तक पावन ॥ शुभगति नानाछन्द बिख्याता । आसनगुह्यप निषद सोहाता ॥ सदछाया पत्नी सहचारी । मख बाराह बिशदव्रत धारी ॥ द्वै अधमहि सुदांत पै धरिकै । धरणिहि फिरि ऊरध गति करिकै ॥ जलपर गुरु नौका समराखे । तब महिभाग करन अभिलाखे ॥ शैलनदी चहुँदिशिमें निरमे । सुरनर मृग पक्षी जेहि बिरमे ॥ चहुँ दिशि समुद अन्तधरणीके । किये अगाध अगम अति नीके ॥ मधिमें मेरु स्वर्णमें कलपित । कीन्हें अनुपम प्रभा अनलपित ॥ शैलकन्धवर चहुँ दिशिताके । निरमितकीन्हें पूरप्रभाके ॥ दोहा ॥ उदयाचल बररचतभे तदनु पूर्व दिशिजाय । शतयोजन बिस्तरित अरु तासु त्रिगुण गुरु काय ॥ शैल सोमनस दुतियतहँ फिरि बिरचे कमनीय । ऊंचो योजन साठिको मणिमय अति रमणीय॥ श्रावणकी संध्यासदृश सहस शृंगवत तौन। बिश्वसृजै तापै किये रुचिसों अपनो भौन ॥ शिशिरशैलतहँ फिरिरचे समतुषारके धौल । शिशिर प्रभावा नदी तहँ रचे प्रभावअतौल ॥ फिरि दक्षिणादिशिजाय प्रभु बपुष्मंत गिरितौन । बिरचे सरस सिकान्तिहै एक एक दिशितौन ॥ भानुमन्तगिरि फिरिरचे अतिउन्नतबरफैल । कुंजर निभफिरिरचतभे उन्नतकुंजरशैल ॥ ऋषभशैल फिरितहँरचे कादरकन्दरचारु । अरु महेन्द्रशैलेन्द्रतहँ बिरचे उच्चउदारु ॥ मलयशैल मैनाक अरु पर्बतबिन्ध्यमहान । सरिता चारु पयोधरा बिरचे सहित बिधान ॥ फिरि पश्चिमदिशि जाय प्रभु गिरिवर साठि हजार । कंचन मणिगणसों रचित बिरचे प्रभा अपार ॥ कीन्हें तिनमें श्रेष्ठप्रभु गिरि सहस्र जलधार । ऊंचो अरु बिस्तरितयो योजन साठि हजार ॥ इतनोई मितितहँरचे

निज रूपोपम बेश । गिरि बराह मणिमें बिशद पावन करन सुभेश ॥ चक्रवन्त गिरितहँ रचे चक्रवन्त अभिराम । शङ्खवन्त गिरि फिरिरचे शङ्खसदृश छबिधाम ॥ घृतधारा शुभदा नदी रचिचितपावनरूप । उत्तरदिशि फिरिजातभे प्रभुवाराह अनूप ॥ सौम्यनाम गिरि तहँरचे सूर्य्यहु प्रभु यहिभांति । सूर्य्यबिन उद्योत तिहि जासु कांतिकी पांति ॥ सुगिरि गन्धमादन रचे अरु मन्दर सहनेह । जम्बु जाम्बूनद भई तहँ बिरचे छबिगेह ॥ त्रिशिखर गिरि पुष्करशयल शुभ्र शुभद कैलास । अरु हिमवान नरेशये उत्तरदिशि छबिरास ॥ सिगरे शैल स्वपक्षये निरमित करि मनमान । मधुधारा सरितारचे उत्तरदिशिशुभदान ॥ सोरठा ॥ सरित शैल यहिभांति निरमित करि बाराहप्रभु । करतभये मयकान्ति परजोत्पातिकीभावना ॥ रोला ॥ भावनाको करत प्रभुके बदनते तेहियाम । प्रकटभे भूभरण ब्रह्मा परमआनँदधाम ॥ प्रगट ह्वै सो पुरुषप्रभु बाराहसों सह नेहु । कहेसोमैं करहुं प्रभुतुम जौन आज्ञादेहु ॥ बिभजआत्मा भाषि इमि प्रभु भये अन्तर्द्धान । कहे इनसों करौं किमि इमि बिधिहि सो अनुमान ॥ भये चिन्तित कढ़ो बिधिके बदनते ओंकार । भूमि नभ सम दिशनि पूरो जासु परम पसार ॥ अभ्यपत तेहिबढ़ो हियते बषट्कार महान । फेरि प्रगटित भये ब्याहृति सुनोनृप मतिमान ॥ चतुर्विंशाक्षरा जननी वेदकी अभिराम । भई गायत्री प्रगट फिरि सरस दायक काम ॥ भये मनते प्रगट बिधिपुनि सनक सनकुउदार । अरु सनातन अरु सनन्दन कपिल सनत्कुमार ॥ फेरि बिधिसुत किये प्रकट मरीचि आदिक आठ । अत्रिपुलह पुलस्त्य क्रतुभृगु अंगिरसमनुपाठ ॥ भये इनते प्रजा प्रगटित परम शुचिकृत बंस । वेदबिद तपपुंज ब्रतभृत धर्म धरण प्रशंस ॥ फेरि बिधिके चरण दक्षिणको अंगुष्ठ ललाम । भये ताते दक्ष अरु तिमि बामते ताबाम ॥ भई

तिनकी कन्यकनसों प्रकट बहुबिधि सृष्टि । कहेसो बहुवार तेसे जानियो शुचि दृष्टि ॥ कल्प कल्पनि होहिं प्रगटित पुरुष तेई आय । भेदनाम स्थानको बसकर्म कछु कछुपाय ॥ कियेफिरि बिधिबर्ग बर्गनि अधिप करि अभिषेक । कहेसो जिमि आदि में तिमि जानियो सबिबेक ॥ सविधि लहि अभिषेक बिधि सो अरु यथाबिधि लोक । सकल बिहरन लगेसगण सुधारि निज निज ओक ॥ एक दिवसै पक्ष पर्वत दिशा प्राचीजाय । दैत्यराज हिरण्यअक्षहि सों कहे समुझाय ॥ इन्द्रअदितिज भोगवत कत तीनलोक बिशाल । एकपुरलहि देखि कततुम रहेहितज कराल ॥ दोहा ॥ हिरण्याक्ष यह बचनसुनि करि अति दीरघ कोप । तीनिलोक बसिलेनको गहत भयो गुरुचोप ॥ साजिसेन चतुरंगिनी दैयत मई कराल । गराजि इन्द्रपै चलतभो फेरि निशान बिशाल ॥ चौपाई ॥ बिबिध भांतिके आयुध धारे । बल कत चले बीर मतवारे ॥ गज रथ हय खर ऊंटन चढ़ि चढ़ि । चले बीर अति रिससों बढ़ि बढ़ि ॥ बरणेबीर असंख्यपदाती । चले उमँगि परदलके घाती ॥ हिरण्याक्ष अधिपति कहँ घेरे । बढ़े बीर रससों मन मेरे ॥ सुनाशीर तब यह सुधि पाये । सुरन सहित चढ़ि सन्मुखआये ॥ लागेचलन शस्त्र दुहुं दिशिसों । बलकन लगे बीर भरि रिससों ॥ गराजि गराजि भट डाटन लागे । बाणनसों भट काटन लागे ॥ शरधनुकढ़े कितेभटडोलैं । कितने शस्त्रबाहिजे बोलैं ॥ कितने शस्त्र शस्त्रसों काटैं । किते बीर पिलि सन्मुख डाटैं ॥ बिरथ बिधनु ह्वै किते परस्पर । बाहु युद्ध भिरि करैं सुभट बर ॥ हिरण्याक्ष सहसाक्षहि देखी । बाण वृष्टि कीन्हेसि अतितेखी ॥ शरपंजर चहुंदिशि करि दीन्ही । स्तम्भभूत सुरपतिहि कीन्ही ॥ भे अप्रपन्न बिकल सुर सिगरे । मोदित भयेदैत्य मतिबिगरे ॥ सुरसुरपतिहि संहारि निहारी । करुणासिन्धु दयो हिय धारी ॥ निरमित हे बराह गिरि

जोई। आयोतहँ बराह बनि सोई॥ शङ्ख चक्रविशाशि सम लीन्हे। बपुष्मन्त गिरि सम छबि कीन्हे॥ आय चमूढिग श-ङ्खबजाये। इवनसुनि असुर महत भय पाये॥ दोहा॥ हिरण्याक्ष सो शब्द सुनि चौंकि लखतभो तत्र। को यह कहि क्रोधित चलो हे बराहप्रभु यत्र॥ सर्ब असुर इकबार झुकि मारे शस्त्र अनेक। यथा बारिकन शैलपै तिमिते भये सटेक॥ सोरठा॥ हिरण्याक्ष तबलेखि मारी शक्ति अमोघ अति। ब्यर्थ भयोतेहि देखि साधुसाधु बिधि कहत भे॥ जयकरी॥ तब बराह प्रभु चक्र कराल। सो काटे शिर तासु बिशाल॥ भिन्न शृंगगिरि सम गुरु काय। परोभूमि पै दैयत राय॥ बसु दिशि भागि असुर तजि चाय। उर शिर ताड़त करिहाहाय॥ जय जयकहे सुमन हरषाय। बन्धन मोचे प्रभु सुखदाय॥ तब बराहसों सुर सुर नाथ। कीन्हें बिनयजोरि युग हाथ॥ करि अनुकम्पा तुमभग-वान। कीन्हें मम रक्षण सुखदान॥ यम मुखगत समहे हम सर्ब। मोचे तुम प्रभु ईश अखर्ब॥ अबअनुशासन दीजे जौन। हम सब दास करैं तिमितौन॥ पुण्डरीक चख सुनि यह बैन। कहे सुनो सुर सुरप सचैन॥ पूर्ब लहे जो जो अधिकार। सो सो पालत नेक उदार॥ दै निदेश मम सुरपतिशौर। कीजो नीति सहित करि गौर॥ यज्ञ धर्म ब्रत तप जप दान। कृतसु-करम रत जेमतिमान॥ सत्वशूर रण शूर अडोल। उपकारक बक्ता सति बोल॥ शुचिदाया दिहि दये अभिराम। नव सा-धन साधन कृतआम॥ निजपत्नी ब्रत धृत जेशूर। आश्रम धर्मशील गुणपूर॥ पुरुषअहिंसकजे दृढ़ नेम। इनकहँदीजो स्वर्गसप्रेम॥ दोहा॥ जेनास्तीकअधर्म्मरतकामी धूर्त्त मलीन। तिन्हैं कीजियो नरकगत सुनि ममसीख प्रबीन॥ इमि कहिकै बाराहप्रभुभेतहँअन्तर्द्धान। निजनिजपददिगपालगे सुरपुरसुर मघवान॥ तबसुरपति सब गिरिनकहँ करि करि यथा प्रदेश।

पक्षकाटि कीन्हें अचल सुनिये नृपति शुभेश ॥ सम्मत सों सुरगणनके सत्वर सिन्धुसमाय। अति चातुर मैनाक गिरिरह्यो सपक्ष सचाय ॥ सोरठा ॥ प्रादुर्भाव अमन्द यहश्रीप्रभु बाराह को। पढ़ि नरपरम अनन्द बांछितलहि इतहूं उतहुं ॥
इतिश्रीहरिबंशदर्पणेबाराहप्रादुर्भावबर्णनोनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥
दोहा ॥ प्रादुर्भावनृसिंहको अबसुनियेक्षितिपाल। पावनकर अभिराम जो दैयतकुलकोकाल ॥ तोमर ॥ शुभसत्ययुगमेंआम। जुहिरण्य कश्यपनाम ॥ खलदैत्यबरबलधाम। तपकियोअति अभिराम ॥ दोहा ॥ सहस इग्यारह पांच शत वर्ष निरम्बु बिधान। तपत देखिबिधि आइतहँ कह्यो मांगु बरदान ॥ चौपाई ॥ ह्वैमोदित तेई बरमांगा। सब जग जीतन के पनपागा ॥ देव असुर गन्धर्व कहाये। किन्नर यक्ष पिशाच गनाये ॥ अरु मनुष्यऋषि तप बलभारे। करता जितने रूप सँवारे॥ मैं न मरौं प्रभु इनके मारे। नहिंनिशिनहिंदिन शस्त्रप्रहारे ॥ अस्त्र भेद अरु पर्वत भारी। तिनसों सकैन मोहिं कोउमारी ॥ सूखे वोदे आयुध जेते। मोपै ब्यर्थ होहिं सब तेते ॥ इनते इतरनिरायुध आवै। करै पराक्रम जो वहिभावै ॥ सो सुनि एवमस्तु कहि बेधा। सुर सेवित गेस्वर्ग सुमेधा ॥ बर प्रभावअतिउग्र निरेखी। सुरनकह्यो बिधिसोंभयभेखी ॥ प्रभुतुमबरदीन्हेंजिमि वाको। निर्मित मृत्युकरहुतिमि ताको ॥ सुनि प्रभु कहा सुनो सबकोई। तपप्रभावनाहिं मिथ्याहोई ॥ तपफल भोगि गर्भहिय भारे। मरिहि बिष्णु सों उदर बिदारे॥ सुनि सुरगण निज निज गृहजाई। बसेधीर धरि शोच गँवाई ॥ ह्वैहिरण्यकश्यप बहु भारी। तीनिलोक जीतेसि पनधारी ॥ सुर ऋषि कहँपद च्युत करि दीन्हे। यज्ञभाग भुज असुरन कीन्हे। तब सुर गये बिष्णुपै धाये। आरत ह्वै निज ब्यथासुनाये ॥ प्रभुसुरगणकहँ साहस दीन्हे। ताबध करिबे कोपन लीन्हे ॥ दोहा ॥ तब प्रभु

सुरन बिसर्जि कै हिमवत शैल प्रपन्न। अनुत्पन्न नरसिंहको बपु कीन्हेउत्पन्न॥ तेजपुंज अति उग्र बपु नारसिंह अभिराम। जायलखे दैत्येशको सुन्दर उन्नतधाम॥ लम्बो योजन डेढ़-शत शतयोजनकोब्याम। ऊंचो योजन पांच हो तासु सभा-गृह आम॥ बहु रंगनके रत्नसों बहुबिधिरचित अनूप। बि-श्वकर्माके करनिसों तासु बिभव अनुरूप॥ तरु गुल्मनि अस उपबननि सों अतिशय रमनीय। कुसुमसरोवर बिहँग गण सों मनहर कमनीय॥ जरबीले बसनानिसों छादित यथाप्र-देश। उन्नत अनुपम ध्वजनसों शोभित सरस शुभेश॥ ना-नाबिधिके शस्त्रधर छरीदार बलधाम। भृत्य असंख्यखरेजहां करें महत इतमाम॥ सोरठा॥ सिंहासन अतिकाम हस्तचारि शतको बिशद। तापैबैठे आम जोहिरण्यकश्यपअसुर॥ रोला॥ कुण्डलादिक सर्व भूषण धरे अति रमनीय। दीर्घ माणि मैं श्याम गिरिसम लसत अति कमनीय॥ अमरकिन्नरयक्ष तु-म्बुरसुमुनि द्विजबर सर्व। खरेसेवैं तहां ताकहँगुह्यकौगन्धर्ब॥ सौरभेयी मिश्रकेशी समीचीगुण ग्राम। चित्रसेनासेनकाउर्ब-शी रम्भाबाम॥ चारुबिश्वाची घृताचीअप्सरा बहुसंग। गा-ननृत्यबिधान करितहँकरेंअद्भुतरंग॥ प्रियासहसन तियाता-कीतासुबैठीपास। मद्यकीन्हेपान करतसहास बिबिधबिलास॥ बलिबिरोचन नरकपृथिवीबिप्रचितगर्बिष्ट। क्रोधहन्ताश्वनअ-हन्तासुमनकथनबरिष्ट॥ संह्रादअरु प्रहलादआदिकअसुरब-हुसरदार। उग्रतपकरिलहे बरणेसत्वअगम अपार॥ तिन्हेंस-हितसगर्बराजत दैत्यपति गुरुयत्र। लखेश्रीनरसिंह प्रभुतिहि जायसन्मुखतत्र॥ दोहा॥ गुप्तभस्ममैं अनलसम बपुनृसिंहमेंगु-प्त। प्रभुहिदेखिदैत्यनको भयोगर्बबललुप्त॥ तकिबिस्मित स-चकितह्वैकहे सकलभयपूरि। सुनेनऐसो आजुलोंमृगपति ब-चैसभूरि॥ लखिनृसिंह प्रभुकहँकहे निजपितुसों प्रहलाद। सह

अस्तुति मृगपतिहि लखि तजौगर्ब अहलाद ॥ सोरठा ॥ यहि मृगपति कहँ योहिं ज्ञानदृष्टि ते निरखिगुनि । जानिपरो यह मोहिं येअव्ययअव्यक्तप्रभु ॥ दैयत कुलकोनास करनहेत अद्भुतसुतनु। गहि कृत बिशद बिलास इतआये निश्चयगुनो ॥ दोहा ॥ यहि मृगपतिके देहमें बिधिहरि आदिकदेव । तीनिलोक ब्रह्मांडबर निरखौपरै सुभेव ॥ इमिकहिकै प्रह्लादकै भक्तिनदी में मग्न । ध्यानधारि प्रभुव्यक्तको थिरह्वैरहे अभग्न ॥ सोरठा ॥ सुनि दैयत पति चाहि कहत भयो इमि भटनसों । जियतलेहु गहियाहि कैशस्त्रनसों बध करो ॥ चौपाई ॥ दैत्याधिपको शासन सुनिकै। उठि भट प्रबल मृगपतिहिं गुनिकै ॥ बिदित बीर दैयत जेजेहै। तेऊ निकटनजायसके है ॥ तब बर अस्त्र प्रहारन लागे। लाखन भट अमरषसों पागे ॥ प्रभुपैअस्त्रपरे सबऐसे । गिरिपै बूंद मघाके जैसे ॥ तब प्रभु कालमेघसम गरजे । भागे डरि दैयत भट बरजे ॥ टुटसुभटनको भागतदेखी । धरि हिरण्यकशिपु अति तेखी ॥ उठिकै आपु गर्बसोंपागो । दिव्यास्त्रनसों मारनलागो ॥ मुद्गर मुशल दण्ड अतिघोरा । शूल शक्ति ब्रह्मास्त्र कठोरा ॥ शैशिर येशिक ऐंद्रअस्त्रबर । क्रौंचरौद्र कंकाल प्राणहर ॥ हयशिर अस्त्र ब्रह्मशिर भारी । अरु बायव्य अस्त्र दलदारी ॥ अरु आग्नेय अस्त्र दल दाहक । अस्त्र प्रजन्य प्राणको गाहक ॥ अरुपैशचअस्त्र जय दायक । अरु सोमास्त्र जीतिबेलायक ॥ मोहन शोषन दर्पण तापन । अरु गान्धर्व अस्त्र प्रस्वापन ॥ संबर्तन प्रमथन अरुबारुण। पातन अस्त्रपाशुपत दारुण ॥ साप्यै कपाल अस्त्रभवव्यापन । अशनि और त्वष्टास्त्र समापन ॥ कालचक्र ऋषिबक्र कराला। अरु पैतामह चक्र बिशाला ॥ दोहा ॥ बिष्णुचक्र अत्युग्रअरु धर्मचक्रअतिघोर । महाचक्र अरिदलदरुण रौद्रव चक्रकठोर ॥ इतने अस्त्र अमोघसों मारत भयो अमान। तेप्रभुके ढिग जा-

इभे तृणअरु तूल समान ॥ अस्त्रअसंख्य हने बहुरि दैयत यूथअनेक। प्रभुके तनकोपरसनाहिं करत भयेते एक ॥ शस्त्र जाल लहरिन कहर जलनिधिसदृश महान। तामधि लसे नृसिंह प्रभु गिरि मैनाकसमान ॥ सोरठा ॥ दैत्याधिप तब देखि छांड़ेसि शक्ति अमोघ अति। प्रभु नृसिंह तेहि देखि द्वैकीन्हे हुंकारसों ॥ चौपाई ॥ तब सब असुर गगन मधिजाई। बर्षत भये शिला सुखदाई ॥ प्रभु तन पराशि शिला सम्पूरण। इत उत गिरत भये द्वै चूरण ॥ तबते मायावी हियधरषे। अबिच्छिन्न धारा जलबरषे ॥ छींटपरीनहिं प्रभुकेतनमें। गयो बारिभरि तासुसदनमें॥ तबते दैत्य यूथ गुरुकाया। कीन्हे अग्नि बायुकीमाया ॥ छाइलये तेसर्व दिशन को। परसे नहिं नृसिंह के तनको ॥ लहिसुरेशकी आज्ञाआये। मेघबर्षि सोअग्निबुताये॥ तबते तामसि मायाकीन्हे। दशदिशिअन्धकार मढ़ि दीन्हे ॥ प्रभुनिज बर्चस सों तम नाशे। द्वैरबि समसब दिशा प्रकाशे॥ माया ब्यर्थ भये दैत्येशा। करत भयो अति कोप कुभेशा ॥ कीन्हे कोपदैत्यपति जबहीं। मारुत सप्तक्षुभितभे तबहीं ॥ आवह बिहव प्रबह अरु सम्बह। और परावहपरिवहउदसंबह॥ अशकुन सकल भयेतेहिक्षणमें। सोलखिशोचि असुरपति मनमें ॥ निज गुरुसों बूझे तेहि ठाईं। कहिये शकुन प्रभाव गोसाईं ॥ कहे शुक्र जहँ ऐसो होई। मरै तहां को अधिपति सोई ॥ इमिकहि शुक्रबिदाह्वै तासों। निज निकेतगे भरे प्रभासों ॥ दोहा ॥ हिरण्यकशिपु गुणि धारिकलों कोपिगदालैपानि। चलत भयो नरसिंहपे गर्व हिये में आनि ॥ चलो गदा ले दपटिजब दैत्याधिपति सगर्व। काम्पितभे तब गिरिमही सरिता सागर सर्व ॥ साध्य बिश्व आदित्यबसु सुमन मरुततहँआय। अन्तरिक्ष रहि कहतभे प्रभु सों आनँदछाय॥ सोरठा ॥ याको मारनहार नहिं तुमते कोउ आन प्रभु। करियेअब संहार शीघ्र

दुष्टखलअसुरको ॥ चौपाई ॥ सुनिनृसिंहप्रभुकोपितड़पिकै। काल मेघसम गरजि झरपिकै ॥ नव अमोघ आयुध बिस्तारे । उर हिरण्यकश्यपको फारे ॥ बज्र प्रहारित भिन्न अचलसो। परो भूमि पै असुर प्रबलसो ॥ कढ़त भई शोणितकी सरिता। बुदबुद यादवती मणि चरिता ॥ भगे असुरगण सुरगणहरषे। जयजयटेरि सुमन शुचि बरषे॥करिकरिअस्तुति सुरगणबोले। सानँद पूरित प्रेम अतोले ॥ प्रभु तुम यह नृसिंह बपुधारी। सुरमुनि गणकहँ किये सुखारी ॥ प्रतियुग यहअपूर्व बपुध्याई। सब मुद लहिहैं बांछितपाई ॥ तदनु बिरंचि मोद अतिलीन्हे। प्रभु नृसिंहकी अस्तुति कीन्हे ॥ सांख्ययोग तत्वज्ञ सुज्ञानी। वेदोद्भव विद्यायुत ध्यानी ॥ मोदैं तव महिमा कछु जानी। कहि न पार पावैं अनुमानी ॥ तैजस बिश्व प्राज्ञ तुरिया शुचि। धर्म मूर्त्ति तुमईश यथारुचि ॥ परमदेव परसिद्ध प्रसिधि हो। परम मंत्र मम पर पर रिधिहो ॥ परम रहस्य परम बरबानी। तुमहिं परम गति भाषहिं ज्ञानी ॥ परमधर्म तुमकहँ मुनिगावैं। परम धर्म तत्वज्ञ बतावैं। परम तेज तुम तुम जग करता। तुम कारण कारय मुद भरता ॥ दोहा ॥ तुम पुरुषोत्तम परम प्रभु तुम परसों परज्ञान। तुम परसोंपरतत्वहौ निर्गुणपुरुष पुरान ॥ इमि अस्तुति करि बिधिगये लहि आनँद निजलोक। करि प्रणाम मेदित गये सुरगण निज निजओक ॥ उत्तर तट क्षीराब्धिके तब नृसिंहप्रभु जाय। तहँ नृसिंह बपु राखिगे निजपद आनँद छाय ॥ सोरठा ॥ यह अत्युग्र अपूर्व प्रादुर्भाव नृसिंहको। पढ़िहैं जे गुण गूर्ब ते लहि हैं बांछित परम ॥ दोहा ॥ अब नृप बामनको सुनो पावन प्रादुर्भाव। प्रभुता प्रभव प्रभाव अरु कारण कार्य सुभाव ॥ सुत मरीचिके कश्यप तासु तिया सुखदान। सुतादक्षकी अदिति दिति पतिब्रतरतगुणखान ॥ चौपाई ॥ भे द्वादशशुभ सुवन अदितिके। धातामित्र अर्य्यमा मितिके ॥

वरुण अंशु भग इन्द्र बखाने। बिवस्वान पूषाजगजाने॥ अरु प्रजन्य त्वष्टा ये ग्यारह। और बिष्णु भूपति ये बारह॥ दितिसुत द्वै हिरण्यकश्यपबर। हिरण्याक्ष दूजो गुरु धनुधर॥ हैं सुत पांच हिरण्यकशिपु के। प्रह्लादहि आदिक सुररिपुके॥ प्रह्लादहिके सुवनबिरोचन। तासुसुवनबलि निज यशरोचन॥ राजनीति गुरु गुणको आकर। धीर धनुर्द्धर बीरप्रभावर॥ बर बलबीर्य मानअभिमानी। सत्यबाक गुणगाहक दानी॥ ऐसो बलिहि बिचारि असुर गन। मंत्रि कहे बलिसों प्रमुदितमन॥ करिउपाधि सुरगणमुद छाये। तुव प्रपितामह कहँ मरवाये॥ निर्भय तीन लोक बसि सरसैं। हम सबसो देखन कहँ तरसैं॥ ताते लहि अभिषेक बिराजै। चतुरंगिनि सेना बर साजै॥ चढ़ि सुरपति सों करहु लड़ाई। जीति बसौ फिरि तिहुंपुरमाई॥ बन्धु असंख्य बीर हम जेते। सुरन जीतिबे लायक तेते॥ तजि संकल्प बिकल्पहि मानौ। सादररारि इन्द्रसों ठानौ॥ इमिकहि असुरवृन्द मुदलीन्हे। बलिहि सबिधि अभिषेकित कीन्हे॥

दोहा॥ बर असुराधिपतित्वको लहिअभिषेक सुभेश। सुरपति पैदल साजि चलन को बलिदये निदेश॥ सुनि निदेश साजिसजिचले यूथप दैत्य अमान। महापद्मनीकुम्भ अरु कुम्भकरण बलवान॥ काञ्चनाक्ष कपिकन्ध अरु क्षितिकम्पन मैनाक। ऊर्ध्वबक्र शितकेश अरु बिकच सुबाहु निशांक॥ सहस बाहु ब्याघ्राक्षअरु बज्रनाभ एकाक्ष। गजस्कन्ध गजशीर्षअरु ब्यालजिह्व कपिलाक्ष॥ कलभ सलभ क्रतमासपै धेनुक बालिअखर्ब। इन्हैं आदि सहसन चले यूथपबीर सगर्ब॥ बलिको सुवन सहस्रभुज चलो बाण रणधीर। रथीअतिरथी तासुसंग चले कोटि बरबीर॥ रथम्बाह शतहस्तको ह्वै तापैआसीन। सर्ब शस्त्रगहि चलतभो बाहक शस्त्रप्रबीन॥ रक्षकताके सुरथ के रहे पांचबर बीर। मेघनाद आदिक गने शस्त्र कुशल रण-

धीर ॥ कश्यपकी तिय पातिब्रत अनायुषाही तासु। सुवन बली बल चलतभो लाखरथी सँगजासु ॥ सहस रिक्षवत् सुरथ पै चढ़ि शुचिआयुध सर्ब। उमड़िचलो घनघोरसम गर्ज्जत बैन सगर्ब ॥ सहस ब्याघ्रयुत सुरथपै चढ़िकैनमुचि दइत्य। साठि हजार रथीन सह चलो गुनै जय नित्य ॥ चतुर्बिन्श सहस्र तहँ सुगुर सरिक्ष युत तौन। रथतापै चढ़ि चलत भो यम दइत्य हो जौन ॥ रथी लाख दश तासुसँग चलेगहे उतकर्ष। मणिन जड़ित कंचन घटित सिगरे सुरथ अधर्ष ॥ सोरठा ॥ दैत्य पुलोमाबीर सहस ऊंटयुत सुरथपै। चढ़ि भो चलत सुधीर साठिहजार रथीनसह ॥ हयमुख दैत्यहजार युत रथपैचढ़ि चलतभो। हयग्रीव अरिमार सानँद सहस रथीन सह ॥ शत क्रतु कृत प्रह्लाद सहस दैत्य सरदार सह। चले गहे अह्लाद चढ़ि मणिमयबर सुरथपै ॥ चौपाई ॥ सहस बाजियुत रथ अतिभारी। चढ़ि तापै शम्बर धनुधारी ॥ रथी लाखत्रय सहप्रण करिकै। चलो बीर रससों मनुभरिकै ॥ बाजि ब्याघ्र मुखदशशत तिनसों। युतरथ जड़ित सुमणि अनगिनसों ॥ अनुह्लाद तापै चढ़िडगरो। हिरण्यकशिपुको सुतगुण अगरो ॥ कोटि रथी ताकेसँगरूरे। चले अस्त्रविद्यासों पूरे ॥ बाजिसहसकौतुक कृत पथपै। तिनसों युतमणिमें बररथपै ॥ चढ़ि बलिको पितु चलो बिरोचन। श्रीमन्तन सहआयत लोचन ॥ दैत्यबिरोचन को लगुभ्राता। बीरकुजम्भ बीर्य्य मदमाता ॥ असुर सहस्रन आवृत सोई। रथचढ़िचलो सगर्बित होई। रथचढ़िचलोबीर असिलोमा। सहस रथिन सहसरस सजोमा ॥ एकचक्रदैयत अभिमानी। चढ़िरथपै कहिसगरबबानी ॥ असीहजार रथिन सहचावन। चलोशत्रुदल द्वन्दमचावन ॥ सुवन सिंहिका को अतिघोरा। राहुशैल समदीर्घ कठोरा ॥ चलेसगर्ब सुरथपैचढ़िकै। मणिमय कवचनसों तनमढ़िकै ॥ बिप्रचित्ति दानव अ-

रिदरता । बिदितधनुर्द्धर संगरकरता ॥ रथत्रैलोक्य बिजयबर नामा । चढ़िताप रबिसम अभिरामा ॥ दोहा ॥ पुत्रपउत्र सुबन्धुगण भृत्यअसंख्यन बीर । रथीअतिरथी सह चलो बिदित बिशदरणधीर ॥ ससहसमहिष रथस्थह्वै चलोरथीलैलाख ॥ शतचषभुज दानव प्रबल केशीअरिमदनाख ॥ मणिमयरथपै चढ़िचलो विशपर्वा बलवान । प्रबल मन्दराचल सदृशदीरघ कठिन अमान ॥ सुतअनायुषाको प्रबल बित्रनाम अरिजैन । सहसबाजियुत सुरथपै चढ़िकैचलो सचैन ॥ कनकबिन्दुदैयत प्रबल रथचढ़िचलो सगर्ब । मन्थनपरदल जलधिको मन्दर सदृश अखर्ब ॥ नामहेम मालीअसुर यूथप करता कौल । सुवनसुबलिको बाणभो ताकहँ करत हरौल ॥ रथचौंसठि शतहाथगुरु कनक रचित अभिराम । रत्नअमौलिकसों जटित बिरचि जालवत्दाम ॥ गजमुख असुर सहस्रसों बाहितअद्भुतरूप । तापैचढ़िकै चलतभो बलिदैत्येन्द्रअनूप ॥ पैदरसुभट असंख्यसों आवृतप्रभा अमन्द । छरीदार इतमामकर बोलत अमितसुछन्द ॥ बिप्रपुरोहित मंत्रबिद पढ़िस्वस्त्ययन सनेत । आशिर्बचनकहैंतिन्हैंसुबरणमणिगणदेत॥मणिमयबालव्यवन सों बीज्यमान रमनीय । दोलितासु मेरुस्थमनु अंशुमानकमनीय ॥ शिबिअयशिर अयअश्वशिर कुपथ शताक्ष मतंग । बिकट निकुम्भ कलापये यूथप दशसउमंग ॥ रक्षत दशदिशि सुरथको गिरिसंगम गुरुकाय । दशदिग्गज दिगपालसम अचपल चपल सचाय ॥ गजहयऊंट रथानपै बाद्यदुन्दुभिहि आदि । बजे असंख्य सुघनस्वने यूथनियूथ प्रमादि ॥ मणि कंचन अशिरजतमय सबरथ प्रभाअनन्त । शस्त्रनपूरितसर्ब सब घण्टा किङ्किणिवन्त ॥ बररथजे यूथपनके ध्वजावन्तते सर्ब । अस्त्रकुशल सिगरे असुर सिगरेशूरसगर्ब ॥ कवचचारु भूषण बिबिध मणिकंचनमय पर्म । सोभूषित सिगरे सुभटक-

त्तोदुस्तरकर्म । यहिविधिसाजिप्रचण्डदल गहिघमण्डदैत्येश।
मारतण्डसों चण्डकै चलोइन्द्रके देश ॥ सोरठा ॥ प्राबिटमेघघन
घोर उमड़िलेत जिमिछायनभ। तिमिदल प्रबल अथोर छाय
लिये सबदिशि बिदिशि ॥ जातभूमिपै पूरि बेलातरि जलरा-
शिजिमि । तिमिसेनाभटभूरि पूरिगये नभ पैघने ॥ चौपाई ॥यह
सुनिशक्र क्रोधसोंराते । चलेसंगलै सुमन बिभाते ॥ बिद्याधर
गन्धर्ब यक्षगन । डम्बर तुम्बर किन्नर बरपन ॥ बसुआदित्य
मरुत गणजेते । सहितसमाज चलतभेतेते ॥ रुद्रकुबेर बरुण
यमअगरे । सगण सबर्ग साजिदलडगरे ॥ सिद्धपितरराजर्षि
महाने । चलेसगर्ब बीररससाने ॥ चलेअश्वनीके सुतदोऊ ।
सोम बिख्यात चले सजिसोऊ ॥ दिशप गइन्द्र युद्धकेचावन।
चलेचले अहिगण छबिछावन ॥ कितेबाजिपै चढ़िछबिछाये।
कितने गजारूढ़ मनभाये ॥ कितनेचले अहिनपै चढ़ि चढ़ि ॥
कितनेचले मृगन चढ़िचढ़िबाढ़ि ॥ वृषभारूढ़ चलेसुरकितने।
चलेरथनचढ़ि सुमन अनगिने ॥ निजनिजयूथ ध्वजनसोंभूषे।
चमूओज असुरनकीदूषे ॥ सिगरेतनमें कवचबिहारे । त्रिविध
भांति के आयुधधारे ॥ तेंतिसकोटि सुमन भयभारद । चले
सक्रुद्ध सुयुद्ध बिशारद ॥ मणिमय महत सुरथ अतिनीको ।
बिश्वकर्माको रचोसुशीको ॥ अतिउन्नत शुचिध्वजसों शोभि-
त । होहिं जाहिलखि दैत्यतक्षोभित ॥ हरिताश्वन सहशोभित
ऐसो । हरित पक्ष रजताचलजैसो ॥ अस्त्रभेद अगणित सों
भारो । मातलिकेकरसुरुचिसँवारो॥ दोहा ॥ त्यहिरथचढ़ि सुरसै
नमधि शोभितभये सुरेश । यथा निशालहि शारदी उडुगण
मधिराकेश॥ अत्रि बृहस्पति जमदग्गिनि नारदमुनितपधाम ।
अरु बशिष्ठ मुनिपढ़त तहँ शुभ स्वस्त्ययन ललाम ॥ सोरठा ॥
सुर अरु असुर सकैन इमिसाजि चढ़ि बढ़िबढ़ि भिरे। मिले
दोयजल ऐन बेलानांधि सतेज मनु ॥ चौपाई ॥ शूलशक्ति मूश-

ल दुहुं दिससों। मारतभये बीरभरि रिससों॥ भिन्दिपाल तोंमर असिशरसों। कूटपाश दीरघ मुद्गरसों॥ दुहुंदिशिसों भट मारनलागे। सगरब बैन उचारनलागे॥ द्वैद्वै धीरबीर भिरि भिरिकै। कीन्हें कठिनयुद्ध थिरि थिरिकै॥ बलिको सुवनबाण जो तासों। भिरेमरुत पञ्चम भरिभासों॥ ध्रुवबसु भिरे भरेबर बलसों। अनायुषाको सुतभट बलसों॥ भिरे नमुचिसों धरबसु परणी। बिश्वकर्मा मयसों भइ भिरणी॥ भिरेबायु अरु दैत्य पुलोमा। सम्बरभग आदित्य सजोमा॥ सरभ सलभ दैयत मदमाते। शशिसों लरे बीररस राते॥ बिष्वक्सेन साध्यशुचि मतिसों। लरोबिरोचन भरिरिस अतिसों॥ वृत्रासुर पूरो जयपनसों। भिरोअश्वनीके सु सुतनसों॥ भिरोअंशु आदित्यप्रबलसों। बलीदैत्य कुंजभकलछलसों॥ अजैकपादरुद्रधनुधरसों। भिरोराहु गरबीचढ़ि थरसों॥ अनुह्लादधनपतिसों भिरिकै। कीन्हें कठिन युद्ध तहँथिरिकै॥ बिप्र चित्तिदानव पति घोरा। भिरो बरुणसों बिदितकठोरा॥ जो प्रह्लाद धर्म्म अधिकारी। भिरे सक्रुद्ध बीरधनुधारी॥ बलिअरु इन्द्र अधिप अधिकारी। लरत भये फिरिसुयश बिचारी॥ यहिबिधि धीर बीर इतउतके। भिरि भिरि लरतभये बल युतके॥ दोहा॥
ब्रह्मानिजसुत ऋषिनसह अन्तरिक्ष गृहआय। लखतभये सुर असुरको युद्ध अमोघसचाय॥ इतउतके बहुबाद्यबर घण्टनके बरभूरि। सुभटहांक ज्या घोषबर गयो दिशनमेंपूरि॥ सावंत॥
बरअस्त्रइत उततेचले। जेगात अरिगणकेमले॥ भटडाटिदुहुं दिशिसों हने। दुहुंओर बीरमरेघने॥ बहि धार शोणित की चली। चहुंदिशि तरलतातर रली॥ शिरबाहु पगधनु ध्वजकटे॥ जल जीव समतहि माधिअटे॥ दोहा॥ मरुत धीर साबित्र तिहिं बलिकोसुत भटबाण। जालबद्धसम करिदयो मारिअनगिनेबाण॥ चौपाई॥ तबसावित्रक्रोधकरिछांड़े। उत्तमशक्तिबाण

पै चांड़े ॥ बाणशक्तिकहँ आवत देखी। शरक्षुरप्रसों काटेते-
खी ॥ तबसाबित्र खड्ग करलीन्हें। जेहिबिश्वकर्म्मा निर्मित
कीन्हें ॥ लैकरबिद्युतास्त्रअसिबाँकी। गयोबाणकेढिगरथहांकी॥
निरखिबाणकटु बचन उचारे। मंत्रित बाणअनगिनेमारे ॥
तब सावित्र बिकलह्वैभागे। बलिढिगगये बाणमुदपागे ॥ भट
बलअसुरगदागुरुगहिकै। ध्वनिध्रुव बसुलहि थिरुथिरुकहिकै॥
तबसिगरे बसुअनगिनबाणन। भवहिहनतभे धनुषबिधानन ॥
तबबलि गदा पाणिमें लैकै। तजि रथचपल चित्तनिर्भयकै ॥
मत्तमतंग सदृश बिरुझानो। गदाप्रहारि प्रलयदिन ठानो ॥
सब बसु लरिलरि ब्याकुलह्वैकै। भागतभये भीतिसों ग्वैकै ॥
थिरिध्रुवबसुअस्त्रनसोंलरिकै। फिरिभिरिबाहुयुद्ध अतिकरिकै॥
थिरिन सके तुलबलसोंहारे। भागिशक्रके पासपधारे॥ दोहा ॥
भृगुसुतसों कृतजयक्रिया बढ़ि सगर्बप्रह्लाद। यमके सन्मुख
जातभे करत सहास प्रबाद ॥ लेउँबैर निजपूर्वको बध करि य-
मको आज। मोदित बिलसैं असुर गण तजि हियको दुख
लाज ॥ रोला ॥ प्रबलसत्तरिसहस सुभटगजरथ तितकहयरथ।
सहितराज्यो प्रलयदिनके मेघ सदृशनररथ ॥ सुभट साठिह-
जार सुरथी चन्द्रदिशि बलवान। लाख भटसह पास मधिमें
कालनेमि अमान ॥ बांधिव्यूहअभेद्य यहिबिधि झेरिबिबिध
निशांन। लगेयमके सैन प्रतितकि तजतअनगिनबान ॥ रथी
साठिहजार हे प्रह्लादके सुतबीर। अक्षयशैलसपक्षसे ते
लरतभे रणधीर ॥ रक्तलोचन क्रोधिअन्तक गहे दीरघदण्ड।
ब्याधिआधि उपाधि गणकी सजेसैनप्रचण्ड ॥ लोहदण्ड प्र-
हारिभटन सँहारि ब्यूह बिदारि। भिरतभे प्रह्लादसोंपिलि
तासुनाश बिचारि ॥ दण्ड मुद्गर शक्ति पट्टिश यष्टि मूशल
बान। खड्ग तोमर भिन्दिपालहिं आदि अस्त्रअमान ॥ ब्या
धिगण पै असुर छांड़े असुर गणपैब्याधि। किये संगरघोरते

तहँ पौनकीगति बांधि ॥ कटे अगणित सुभट करि करि द्वन्द युद्ध अपार। बहीसरितारुधिरकी अतिअगम अरुअकरार ॥ भरे शुभ्र समूहतामें परे इतउंतजात । भारती मधिगेरुगिरिसम लहरिबशसे भात ॥ घोरसंगर होतभो तहँ भूरिभयकोदानि । कटेकटिसों भूमिपटि भइ गाड़कीसीघानि ॥ लरे रणबनानिबिड़में प्रह्लादअरुयमराज। मत्तद्वैगजराजसमभिरि कीर्तिकरणीकाज ॥ उभयघनसे उभयबरषे उभयपै कृतदुन्द । कवच तृणयुत देह महिपै बाणबनबरबुन्द ॥ बीरबर प्रह्लादसों लरिजानि दुस्तर जीति । इन्द्रपैयमराजगे नरभूरिसों तजिभीति ॥दीह दुन्दुभि जीति को बंजवायतब प्रह्लाद। लगेमर्दन अन्य बाढ़ि सुरसैनलहि अह्लाद ॥ कितेभट शिरकटे कितनेपिले झपटे जात। शृङ्ग भिन्न सपक्षगौरिक शैल सदृशलखात ॥ दोहा ॥ अनुह्लाद प्रह्लादको अनुज धनुर्द्धर बीर । कोटि रथिन सह भिरतभो धनपतिसों लहि तीर ॥ यक्ष सुभट अनगिनत सह धनपति धृत धनुबान । अनुह्लादसों भिरतभे गिरिसोंमेघ समान ॥ भुजंगप्रयात ॥ भिरेबीर बीरानसों रोषबाढ़े । सशृङ्गै गिरिन्द्रै नसे जेउ काढ़े ॥ तजे शूल औतोमरै शक्ति बानै । गदा मूशलै भिन्दिपालैं अमानै ॥ घनै चक्र बक्रायुधै बज्र ऐसे । हने दाकिकै कीन्हहांकै अनैसे ॥ कटे शूरलाखै इतैहूं उतैके । गने बीर बांके तितैहूं तितैके ॥ बही धारता शोणितोघा नदी की । अछारा कछारा अपारा हदीकी ॥ सुसैवाल अग्रावलीग्राह रुण्डैं। धगैं पाणिमीनै महा कूर्म मुण्डैं ॥ ध्वजाचाप अन्यायुधो वृक्ष शाखै । गिरे कूल द्वै मत्तमातंग लाखै ॥ रथै नाव औ भौंर जे चक्र टूटे। लसैं फेनसों जे बहे बांश छूटे ॥ पदाती हले मेदिनी मुत्र ईछे। सबै शस्त्र शस्त्रानिमें साधु शीछे ॥ भरैं खप्परै कुम्भ निर्भीति जीकी । बनी बारि हारी अनी योगिनी की ॥ खबीसै सुजाची अजाचीनिहारैं। यक्षीगीधपक्षी सुकागे बिहारैं॥

गिरैं घाइलै ते खुलैं फेरि डूबैं। थकेसू परे आलटे प्राण ऊबैं॥
गिरैं बीर मातंग पै ते असूदैं। बड़े कूलपै ते यथा धीर कूदैं॥
कटे मुण्ड केते बलीबीर सैरैं। मनो भारतीपै घने केतुपैरैं॥
बही मेदजू दानि की धारतैसे। लसै भारती में धसैं गंग जैसे॥
कटी बाहिनीसे किते बाहिनी जो। कहेनाहिं जो भूप तौ जानि
लीजो॥ दोहा॥ धनपति गुणि अद्भुत अनघ अस्त्र शस्त्रकीसृ-
ष्टि। अनुह्लाद की सेन पै करी बाणकी दृष्टि॥ निजदल व्या-
कुल निरखिकै अनुह्लाद अति तेखि। अतिउन्नत बिस्तरित
तरु लिये ऐंचि ढिग देखि॥ तासों मारि कुबेरके रथके प्रबल
तुरंग। ह्वै मोदित सैनिकनसह कह्यो कठिन रणरंग॥ चौपाई॥
नाना बिधिके आयुध नोखे। कठिन करालशैल भिदि चोखे॥
गहि गहि गर्जि गर्जि बढ़िबढ़िकै। थिरु थिरु कहि सबमनु पढ़ि
पढ़िकै॥ असुरन हतेसुमनस्त्रासिराते। सुरन हनेदैयतमदमाते॥
दैयत ह्वै अस्त्रनसों अर्दित। किये सुरनसों अरिदल मर्दित॥
शिला धरे काटे भुजदीखैं। जनु युग अहि महिधरनो सीखैं॥
लखि सुरपतिसोंनिज दलरोधित। लै गुरुशिला दैत्यपति क्रो-
धित॥ धनाधीशके रथपै मारे। तिहिलखि धनपति अनतबि-
हारे॥ भे रथ रथी बाजि ध्वज चूरण। लखिमोदे दैयत सम्पू-
रण॥ फिरिलै अन्य शिला अतिभारी। अनुह्लाद दैयत रण
चारी॥ चाहिधनदपै करनप्रहारा। गर्ज्जतचलोक्रोधसोंभारा॥
लखि कुबेर हिय अति रिसभारे। तड़पितासु हियगदाप्रहारे॥
सहिसो गदा कोपि दैत्येशा। कीन्हेसि शिला प्रहार कुभेशा॥
ताते धनपति मोहित ह्वैकै। महिपै गिरेचावाचित ज्वैकै॥ तहँ
धनेश कहँ मुरछित देखी। सिगरे यक्ष धीर अतितेखी॥ दैत्य-
नमारि दूरि करि दीन्हे। धनाधीशकर रक्षणकीन्हे॥ एकमुहूरत
मूर्च्छित रहिकै। चेतिधनेश उठे मुद लहिकै॥ दोहा॥ गदापा-
णि अति क्रोधकरि गर्ज्जिदैत्यदल ओर। चले तड़पि यक्षाधि

पति तेज पुंजमय घोर ॥ अनुह्लादके करन ते दुस्तर मिला प्र-
हार । ब्यर्थ निरेखि अबध्य गुणि भगेदैत्य बिकरार ॥ गुरुतोमर ॥
तब भजत निजदल देखिकै । दैत्येश अतिशय तेखिकै ॥ बर
बचन संगर टेरिकै । करि अभय तिनकहँ फेरिकै ॥ बहुयूथयूथ-
पसों घिरो । बढ़ि आइ सुरदलसों भिरो ॥ बर अस्त्र बहुबहु भां-
तिके । असिहेममयमें कान्तिके ॥ तहँ चलतभो दुहुं ओरसों ।
नभ पूरिगो रव घोरसों ॥ भट कटे बहु दुहुंवोरके । दोउ प्रबल
बीर अथोरके ॥ तकि दैत्यपति धनुबानसों । भो भिरत धनद
अमानसों ॥ तहँ युद्ध कठिन करालभो । ब्रह्माण्ड सिगरोलाल
भो ॥ दोहा ॥ अनुह्लादके बाणसों ह्वै ब्याकुल अलकेश । गदा
पाणिमें लै गरजि सनमुख चले सुभेश ॥ गदापाणि आवत
निरखि धनुतजि शिला उठाय । चलो गरजि बैश्रवणपै अनु-
ह्लाद घुरुकाय ॥ सोरठा ॥ धनाधीश भयभूरि शिलापाणि असु-
रहि निरखि । सहित यक्ष भटभूरि गे सुरपति पै समर तजि ॥
चौपाई ॥ गुणि प्रचेत दानव बल भारो । गुरु मृगेन्द्रसम रणबन
चारो ॥ उलका सहस सदृश समभारा । कालदण्डसम परिघ
अपारा ॥ लीन्हेप्रबर प्रबलजगजेना । भिरोबरुणसों बढ़िसहसे
ना ॥ तासुप्रभाव सुजाननहारे । भेसिगरेसुरसुमुनिडरारे ॥ घन
समदनुज घोर धुनिकरिकै । भूरिभीति सुरदलमेंभरिकै ॥ परि-
घअमोघ बरुणकेदलपै । हनेइन्द्रपबियथाअचलपै ॥ मरेलाख
भटतासुप्रहारे । फिरिसोपरिघ बरुणपैमारे ॥ लागिपरिघआप
वकेतनमें । चूरचूर ह्वैउड़ोगगनमें ॥ दशदिशि उड़ेचूरबहुजेवै ।
लसेअमित उलका समतेवै ॥ धीरबरुण तबअतिरिस कीन्हे ।
निज सुभटन कहँ शासन दीन्हे ॥ बढ़ि दानव दल मर्दहु भा-
ई । लहहु जीति यशबिशद बड़ाई ॥ सुनि सावन्त बीररस पा-
गे । दीह दनुज दल मर्दन लागे ॥ मंजुमूर्त्ति मत सिगरे सा-
गर । सिगरे नाग युद्ध बिद नागर ॥ और प्रबलबहु सुभट

घनेरे। लागे करनयुद्ध चहुंफेरे॥ बिप्रचित्ति अरुबरुण अभयके। अनुग बीर बर अरथीजयके॥ लागे बहुबिधि अस्त्र चलावन। मारु मारु धरु धरु कहि धावन॥ दोहा॥ बिप्रचित्ति अरु बरुण भिरि कीन्हे युद्ध प्रकर्ष। दोऊ धीर धुरीणभट धनुधर गिनेअधर्ष॥ लरिनागनते भे बिकल सिगरे दनुज अमान। किते चले भजि समरतजि किते गिरे तजि प्रान॥तोटक॥ लखि दानव राज सरोष भयो। गरुड़ास्त्रतजे शुभमंत्र मयो॥ तिन बाणनते भय आकुल ह्वै। अहि यूथ दुरे अति ब्याकुल ह्वै॥ तजि आय प्रज्वाल मये बिशिखै। बर रस्मि उदण्डनि सों ससिखै॥ दनुजाधिपको दल भीतितकै। मुमुदे सहशासन रीतितकै॥ भट आपवके तजि बाण घने। दनुजाधिपके बहु बीरहने॥ दनुजेश महा रिससोंसरस्यो। शर आपवके तनपै बरस्यो॥ बहुबारनि बाणन काटि दिये। जितने धनुआपव खानि लिये॥ बहुबार जलाधिप चायगहे। पर मारन को नाहिं दाव लहे॥ दोहा॥ तब ब्याकुल ह्वै बरुणगे सदलइन्द्रकेपास। झरेदुन्दुभी जीति के दानववृन्द सहास॥ देखिपराजय सुरन की अग्निक्रोधसोंपूरि। उग्र प्रभाव किये प्रगट दुस्सह बर्चस भूरि॥ जयकरी॥ बायुचक्र लोहित हय युक्त। धूम्रकेतु रथ परम प्रयुक्त॥ चढ़ितापै ह्वै कठिन कराल। पूरे दैयत दलमें ज्वाल॥ भये कोटि भट सामाशेष। कोटिन भये अधजरे भेष॥ सुहित सखाको सतगुण पाल। मारुत प्रबल चलो तेहिकाल॥ प्रलयपरो दैयत दलमध्य। भरो दैत्य जेप्रबल अबध्य॥ प्रहलादादिक जे बर बीर। थिर न रहेकोऊ धरिधीर॥ तबमय अरु सम्बर मतिमान। मायाबी दैयत बलवान॥ बारुण अरु पार्जन्य महान। माया प्रगटितकिये अमान॥ दशदिशिपूरिबारि कीधार। कीन्हे समित ज्वाल विस्तार॥ ह्वै निशंक फिरि दैत्य सक्रुद्ध। लागे करनसुरनसों युद्ध॥ फिरि दैत्यनकहँ प्रमुदित

देखि । सुर गुरुनिजमनमें अवरेखि ॥ किये अग्निकी अस्तुति बेश । भये प्रबल फिरि अग्नि सुभेश ॥ फिरि अग्निहि बर्षत लखि दैत्य । तजि साहस सिगरे अमनैत्य ॥ बलिकेपास जाइ भट भूरि । त्राहि त्राहि टेरेभय पूरि ॥ तबबलिसों प्रहलादसुजान । कहत भये इमि करि अनुमान ॥ तुम बिधि सों लहिबर मनमान । हौ त्रैलोक्य जयन गुणमान ॥ दोहा ॥ ज्वालज्वालसों डरिअसुर लीन्हें तुव अवलम्ब । शीघ्र इन्द्रसों लेहु जय अब मति करहुबिलम्ब ॥ सुनि सुबचन प्रहलादके बलि दैत्येन्द्र सक्रुद्ध । चलोइन्द्रपै गुणि करन दुस्सह दुस्तर युद्ध ॥ सोरठा ॥ प्रलयकालको घोर घनमण्डल सों मढ़ि दिशन । धनु घोषन को शोर पूरित करि ब्रह्माण्डमें ॥ चौपाई ॥ ध्वजधनुषहु आदिक मनभाये । अस्त्र अशनिसों दशदिशिछाये ॥ बर्षत बाण बारि भय पूरत । बेगवायुपर धृति बन तूरत ॥ यहि बिधिबलि कहँ आवत देखी । सब दिगपाल सुमन गण तेखी ॥ जुरि अति जवसों बढ़िकै आगे । तेहि प्रतिकूल बायु सम लागे ॥ लागे चलन अस्त्रइतउतसों । अभिरे धीर बीर रस युतसों ॥ कालदण्डसम कठिन कठोरा । ब्रह्मको दण्ड बज्रसम घोरा ॥ गहिबलिमारि शरन मुद लीन्हें । सिगरेसुरन पराजित कीन्हें ॥ भागि सुमन सुरपति पै जाई । अस्तुतिकरि इमि कहे बुझाई ॥ हम सबहोहिं दैत्यसों पीड़ित । तुमलखिहोहु नेकनहिंब्रीड़ित ॥ ह्वै सरोषकर आयुध लेहू । सुरगण कहँ निर्भय करिदेहू ॥ सुनि पुरहूत क्रोध बिस्तारे । अगणित आयुध बलिपैडारे ॥ तिन आयुधनअस्त्र सों भेदी । हने अस्त्रबहु बलिधनु बेदी ॥ अस्त्र कृशानु इन्द्र तब मारे । बलि पार्जन्य अस्त्रसों वारे ॥ तब पुरहूत बज्र गहिताने । तासुनाश हियमें अनुमाने ॥ ताक्षण भई बिशद नभ बानी । बज्रतजहु मति सुरपति ज्ञानी ॥ उग्र तपस्या पूरणकरिकै । लहि बिधिसों बरशत ब्रतचरिकै ॥ हैअजेय

बलि रिस परिहरहू। बज्रप्रभाव व्यर्थ मति करहू॥ दोहा॥ जेय सर्बथा बिष्णुसों है यह सुनो निदान। समर भूमि तजिभजहु अब भजहु ताहिमतिमान॥ यह सुनिकै रणभूमितजि सहित सुरन बलऐन। युवतिन सह चलि जातभे पूरुबदिशि बहुनैन॥ जय दुन्दुभि बजवाइ तब ह्वै मोदित दैत्येश। सदल इन्द्रपुर में किये सानँद शुभद प्रवेश॥ शुक्रादिक निजपूज्य द्विज गण सों लहि अभिषेक। त्रिपुराधिप इन्द्रत्व लहि बिहरे बलिसु बिबेक॥ सोरठा॥ सहितगर्ब समुदाय लोकपालनानीति युत। यथा उचित सुखदाय करतभये बलिधर्मवित॥ ह्वैप्रसन्न तहँ आय बलिहि प्रशंसि सुप्रेमयुत। आपुरमासुख दाय बसी तासुगृह वर्गमें॥

इतिहरिबंशदर्पणेबामनप्रादुर्भावेबलिबासवयुद्धोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५

दोहा॥ बलिबासवके युद्धको सुनि वृत्तान्त सभेद। वैशंपायनसों कहे जनमेजयलहि खेद॥ चौपाई॥ बलिसों इन्द्र पराजित ह्वैकै। कीन्हें कहा कहौ मुदग्वैकै॥ बैशम्पानि कहे सुनु राजा। रणतजि सुरपति सहित समाजा॥ प्राची दिशा अदिति पै जाई। कहेसकल वृत्तांतबुझाई॥ सोसबदशा शक्रसों सुनिकै। अदिति देवि निजहियमें गुनिकै॥ सुरगणसहशक्रहि सँग लैकै। पतिपै गई शोचबहुतैकै॥ पितहि पुरन्दर दशासुनाये। सुनि शक्रहि कश्यप समुझाये॥ होनी अवशिहोय ध्रुव जानो। सब करिकर्म लहै फलमानो॥ करे कर्म्म जो जेहिफल योग। अवशिकरै सो सो पद भोग॥ इमिकहि तिनसहदम्पतिआरज। गेबिरंचिपै गुणिशुभ कारज॥ सनकसनन्दनादि ऋषिगनसों। अरु कृत उत्तम कर्म्म सुजन सों॥ सेवित चतुरास्यहि तहँ देखे। तेजपुंज परभासों भेखे॥ शास्त्रवेदकी धुनि सुनिहरषे। मूर्त्तिमान तहँ सबकहँ परखे॥ सुर सुरपति सहकश्यप विधिके। बन्दे चरण दानि सब बिधिकै॥ कहे बिरंचि

सुनो सबकोई । हम जाने हैं तुवहित जोई ॥ अबधरिधीर शोच परिहरहू । तासुउपायकहैं सोकरहू ॥ आपतपरे धीरह्वैरहिये । ताहि वारिबे की बिधि गहिये ॥ दोहा ॥ उत्तर दिशि क्षीराब्धि के जाइ उदीची कूल । ध्यावहु प्रभु भगवानकहँ जो बिश्वसृज मूल ॥ ब्रत समाप्त मैं सुनिहि औ बरबाणी मुददानि । बरमांगहु सो देहिं हम सर्ब्ब सम्पदा जानि ॥ सोरठा ॥ प्रभुमम आत्मज होहु यह मांगेहु कश्यप अदिति । मम सुबन्धु करिछोहु होहुकहेहु सुरसहसुरप ॥ चौपाई ॥ सुनिबिरंचिके बचनसोहाये । सुरनसहित कश्यप सुखपाये ॥ साबिधिबन्दि बिधिकेपदभाये । गये शीघ्र ते जहां बताये ॥ अमृत स्थान नामथर पावन । बैठे तहां जायसब चावन ॥ अन्धकार में सो शुभदेशा । जहां न कछु पवनहु को लेशा ॥ तहँ कश्यप सों दीक्षित ह्वैके । सुब्रत सहस्र बारषिक लैके ॥ प्रभु चरणाम्बुज में मनदीन्हें । सुरन सहित सुरपति तपकीन्हें ॥ कश्यप वेद बिहित मनभाये । अस्तवपढ़ि प्रभुकेगुण गाये ॥ अस्तव सुनि प्रभु आनँददानी । बोले बरंब्रूहि बरबानी ॥ सुनिते पृथक् पृथक् बरमांगे । जिमि बिधिसों सुनिहैं अनुरागे ॥ सुनि कहि एवमस्तु प्रभु मानँद । कीन्हें तिन्हें बिदा तब सानँद ॥ सुनिसुरगण सह आनँदछाये । कश्यप दम्पति निजगृह आये ॥ कछु दिन गये अदिति ब्रत धारिणि । भई गर्भयुत मंगलकारिणि ॥ सहसब्रर्ष बीते तेहि दिनसों । भे प्रभुप्रगट भये बिधि जिनसों ॥ सुर समूह अति आनँद लीन्हें । पढ़ि अस्तोत्र दण्डबत कीन्हें ॥ तुम्बर अरु गन्धर्ब सुखारे । बहुप्रकारकरि गान बिहारे ॥ सब अप्सरामोद सों राचीं । करिकरि गान भांतिबहुनाचीं ॥ दोहा ॥ सर्ब प्रजापति सर्बऋषि सर्ब नाग तहँ आय । करिप्रणाम अस्तुति करे भरे मोदसों छाय ॥ कहे पितामहँ आइ तहँ कश्यपसों लहिमोद । भये पुत्रतव बिष्णुप्रभु दायकपरम बिनोद ॥ सोरठा ॥ दर्शि

नौमि सुखपाय गये पितामह निजअयन। सुरगणसों सहचा-
य सानुकूलह्वै प्रभुकहे ॥ रोला ॥ सुनो सुरगणसहित पुरपति
कहो जो निज अर्थ। करैं सो हम शीघ्र करितव दुवने बल
व्यर्थ ॥ कहे सो सुनि सुमन सुरपति सुनहु प्रभु ममबैन। पाय
बिधिसों बिशदवरबलि दैत्यपतिबल ऐन ॥ जीति भोगतनीति
युत त्रैलोक्य ह्वै निरभीत। देहसों फिरि हमहिंकरितेहि सत्व
श्रीसों रीत ॥ बाजिमेध महान मख सो करत हैं यहिकाल।
भये बिनु तेहि सिद्धमम हितसिद्धकरियेहाल ॥ इन्द्रके येवचन
सुनि प्रभु बिष्णुबामनरूप। कहेसस्मित करि अबिस्मित बचन
सुखदअनूप ॥ मोहिंताके यज्ञगृहलों चलैसँगलै जीव। जाइतहँ
हम करबजो करतब्य श्रेष्ठअतीव ॥ बचन यह सुनिप्रभुहिलै
तहँ गये जीवसुजान। करत हो जहँ यज्ञ बैठो दैत्यपति मति-
मान ॥ मंजुमूजी धरे अरु उपवीत अतिरमणीय। लयेदक्षिण
पाणिमें शुचिलकुटवर कमनीय ॥ बामकरमें क्षत्रपूर्ण नक्षत्रप-
तिहिउदारु। रश्मिगाहिमनु लयेवारिज बालरबिपैचारु ॥ रूप
अनुपम बिशद बामन ब्रह्मचर्य्य शुभेश। जाय निरखत भये
दीक्षित बलिहि सुनहुनरेश ॥ शुक्रआदिक ऋषि सभासद ग-
णन सहउपविष्ट। करत उत्तमयज्ञ मंगलकरण हरणअनिष्ट ॥
जाय तहँ प्रभु यज्ञ बर्णन ब्याज बलिहि प्रशंसि। पढ़े नूतन
यज्ञबिधि वेदोक्तपरबिधि दंसि ॥ शुक्रआदिक ऋषि बिलक्षण
यदु बिचक्षण पर्म्म। मौन ह्वै तकिरहे सुनिसो सत्य अद्भुत
कर्म्म ॥ उपाध्यायनलखि निरुत्तर कहतभो दैत्येश। आपुके
सुत कौनकेहौ प्रकटभे केहिदेश ॥ वृद्ध सदृश अवृद्ध वय सु
प्रवृद्ध बुद्धि अनन्य। तुमहिं सुतलहि भयोको सुरपित यहि
ऋषि धन्य ॥ तुमहिंदेखि अपूर्बगुणि मैं भयों परम प्रसन्न।
कहोतुमसों देउँजाहित भये अत्र प्रपन्न ॥ दोहा ॥ यहसुनि बा-
मन प्रभुकहे सुनहु बलि सर्बज्ञ। माँग्यो साढ़े तीनिपग महि

मम गुरुकृतयज्ञ ॥ सो मांगनहौं पासतव आयोंसहितसनेहु। देन कहे तुम आपुतौ सो मांगतहौं देहु ॥ सोरठा ॥ यह सुनि दैत्येश कहेबिप्र चूकतकहा। चैहौकितनो देश निजपग साढ़े तीनिसों ॥ चौपाई ॥ राज्यहेममणि हय गज मांगौ। जेहिलै लहि बिभूति अनुरागौ ॥ सुनिबोले बामन सुनुराजा। क्षत्रिहि चाहत सकल समाजा ॥ हमद्विज नित तप ब्रत अभिलाषैं। राज समाज तुच्छगुणिनाषैं ॥ इतनोतौ गुरुके हितमांगैं। अधिक मांगिनहिं धृतब्रत त्यागैं ॥ है जिनके संतोष पदारथ। तेनहिं चाहतहैं अन्यारथ ॥ यह सुनिगुनि बलि सहित सनेहू। साढ़े तीनि पैग महिदेहू ॥ तब तथास्तुकहि बलिबैठाये। गहिसुदर्भ भृङ्गार उठाये ॥ कहेशुक्र सुनु हेबलिज्ञानी। महिमतिदेहु कहो ममबानी ॥ इन्हैंदेखि तुम आनँद लीन्हें। परबिचारकरि इन्हैं न चीन्हें ॥ मायाछन्न कौतुकी हरिहैं। बंचि बिभूति सर्ब तव हरिहैं ॥ प्रभु भगवान इन्द्रहित कारण। आये करिबामन बपु धारण ॥ बलि ये बचन शुक्रसों सुनिकै। चुपह्वै घरी एकलौं गुनिकै ॥ ऐसोपात्र मिलिहिकोदूजा। देबदानकरि जाकरपूजा ॥ कहिबिचारि फिरिदेनबिचारे। लखितबफिरि इमिशुक्रपुकारे ॥ बलियहिमहिमति देमतिदेतू। ममसुबचननिजहित गुणिलेतू ॥ सुनि बलिकहेकहो मतिऐसो। धर्मरहेहित गये अनैसो ॥ दोहा ॥ बोले तब प्रह्लादमति देहु भूमि दैत्येश। तेई बामनरूपधरि आये फेरि सुभेश ॥ सोरठा ॥ कैनृसिंहचलिआय बधि हिरण्यकश्यपहि जे। किये सुचित सुखदाय सहित सकलसुर सुरपतिहि ॥ तोमर ॥ सुनि कहे बलि यह बैन। इमिकहन लायकहैन ॥ असपात्र परम अनन्य। नहिं लहो कोऊ अन्य ॥ तेहि आपु दीबो भाषि। नहिं देहिं किमिब्रत नाषि ॥ कहिबचनपालनकर्म्म। है परम उत्तमधर्म्म ॥ कहिबचन न करतजौन। है उग्र पातकतौन ॥ गुरुपाप लीबो दान। यहकहत सब मति-

मान ॥ जे दान रोंकल देत। ते पापपुंजनिकेत ॥ बरपात्र भाग्यन पाय। महिदेव अवशि सचाय ॥ लहिपात्र उत्तमदेव। है कांचदै मणिलेव ॥ इमिभाषि दैत्य उदार। लै कनकमय भृंगार ॥ जलढारि करि संकल्प। महिदये अल्प अनल्प ॥ कर बिजय करन पसारि। प्रभुलये जल कुशधारि। भेमुदितबलि दैताहि। जिमिदिपत अग्निहि चाहि ॥ शुभ दीपबारि देखाय। जनहोतहै युत चाय ॥ तब भये बर्द्धित बिष्णु। प्रभु बिश्वसृजन सहिष्णु ॥ बढ़ि नांघिलै सबलोक। भेकरत सुरन अशोक ॥ दोहा ॥ प्रह्लादादिक सुभटबहु रोंकेपद तेहि ठौर। हति कोटिन भटलये प्रभु नापि लोककरिगौर ॥ जीतिदये प्रभुइन्द्र कहँ तीनिलोक अभिराम। सुतलनाम पाताल मधि बलिको दीन्हें धाम ॥ सोरठा ॥ नागफांससों बांधि बलिसों बोले बिष्णु प्रभु। शक्रहि सदा अराधि सुखलहिहौ बसि सुतलमधि ॥ चौपाई ॥ तब बलिकहे जोरि युगपानी। मोहिं अशन कछु दीजे ज्ञानी ॥ सुनि प्रभुकहे सुनो बलिसोऊ। करिहि श्राद्धबिनु श्रोत्री कोऊ ॥ बिन ऋत्विजके आहुति जेते। अन्त दक्षिणाबिन मखतेते ॥ दान बिना श्रद्धाको जोई। तासु पुण्यफल तुवहित होई ॥ यहसुनिकै प्रभुसों बलिराजा। गयेसुतल मधि सहित समाजा। प्रभुसुरगण कहँ शासन दीन्हें। यथा प्रदेश बसौ मुदलीन्हें ॥ लहिशासनसुर शुभदिन बरमें। बसे पूर्बवत निज निज थरमें ॥ बसे पाकशासन निज पदपै। भयो जगतरत निजनिज हदपै ॥ सिगरे लोक मोदसों राते। गे क्षीरधिमधि बिष्णु सोहाते ॥ कंबलाश्वतर आदिकब्याला। सकल सप्तशिर कठिनकराला ॥ पीड़ितभे बलितिनसों बाधे। तबआरत ह्वै प्रभुहिअराधे ॥ ताहीक्षणतहँ नारदजाई। बलिसोंकहतभये समुझाई ॥ बन्धनमोक्ष उपायउदारा। कहैं करौसोकरिसुबिचारा ॥ अस्तव श्रीपतिको मन भावन। पढ़ोताहि गुणिशोक न-

शावन ॥ बन्धनमोक्ष नाम भवहरता। मनबांछित सुखसम्पति
भरता ॥ इमि कहिमुनि अस्तोत्र पढ़ाये। ताहि पाठकरि बलि
सुख पाये ॥ दोहा ॥ जासुनामलै होत जन भवबन्धनसों मुक्त।
पढ़िताको अस्तोत्र बलि किमि न होहिं मुदयुक्त ॥ मंत्रः ॥ ओं
नमोस्त्वनन्तपतयेअक्षयायमहात्मने । जलेशयायदेवाय पद्म
नाभायविष्णवे ॥ सप्तसूर्य्यबपुः कृत्वा त्रीन्लोकान्क्रान्तवान
सि। भगवन्कालकालस्त्वन्तेनसत्येनमोक्षय ॥ नष्टचन्द्रार्कग
गने क्षीणयज्ञतपःक्रिये । पुनश्चिन्तयसेलोकांस्तेनसत्येनमो-
क्षय ॥ ब्रह्मरुद्रेन्द्रवस्वग्निसरिद्भुजगपर्वताः। त्वत्स्थोदृष्टाद्विजे
न्द्रेणतेनसत्येनमोक्षय॥ मार्कण्डेयःपुराकल्पेप्रविश्यजठरन्तव।
चराचरगतन्दृष्टन्तेन सत्येनमोक्षय॥ एकोविद्याऽसहायस्त्वंयो
गीयोगमुपागतः । पुनस्त्रैलोक्यमुत्सृज्य तेनसत्येनमोक्षय ॥
जलशय्यामुपाशीनो योगनिद्रामुपागतः । लोकांश्चिन्तयसे
भूयस्तेनसत्येनमोक्षय ॥ वाराहंरूपमाश्रित्य वेदयज्ञपुरस्कृ
तं ॥ धराजलोद्धृतायेनतेनसत्येनमोक्षय ॥ उद्धृत्यदंष्ट्रयाय
ज्ञों स्त्रीन्पिण्डान्कृतवानसि । त्वम्पितृणामपिहरेस्तेनसत्येन
मोक्षय॥ प्रदुद्रुवुःसुरास्सर्वे हिरण्याक्षभयार्दिताः । परित्राता
स्त्वयादेवतेनसत्येनमोक्षय ॥ दीर्घचक्रेणरूपेणाहिरण्याक्षस्यसं
युगे। शिरोजहारचक्रेणतेन सत्येनमोक्षय ॥ भग्नमूर्द्धास्तिम
स्तिष्कोहिरण्यकशिपुःपुरा। हुंकारेणहतोदैत्यस्तेनसत्येनमोक्ष
य ॥ दानवाभ्यांहृतावेदाब्रह्मणःपश्यतःपुरा। परित्रातास्त्वयादे
वास्तेनसत्येनमोक्षय ॥ कृत्वाहयशिरोरूपंहत्वातुमधुकैटभौ ।
ब्रह्मणेत्वर्पितावेदास्तेनसत्येनमोक्षय॥ देवदानवगंधर्वायक्षासि
द्धामहोरगाः। अन्तन्तवनपश्यन्तितेनसत्येनमोक्षय॥ अपांत
रतमानामजातोदेवस्यवैसुतः । कृताश्चतेनवेदार्थास्तेनसत्येन
मोक्षय ॥ वेदयज्ञाग्निहोत्राणि पितृयज्ञहवींषिच । रहस्यन्तव
देवस्यतेनसत्येनमोक्षय ॥ ऋषिदीर्घतमानामजात्यन्धोगुरुशा

पतः। त्वत्प्रसादाच्चचक्षुष्माँस्तेनसत्येनमोक्षय॥ ग्राहग्रस्तंग
जेन्द्रंचदीनंमृत्युवशंगतं। भक्तंमोक्षितवाँस्त्वंहितेनसत्येनमोक्ष
य॥ अक्षयश्चाव्ययश्चत्वंब्रह्मण्योभक्तवत्सलः। उच्छ्रितानां
नियन्तासितेनसत्येनमोक्षय॥ शङ्खचक्रगदापद्मशार्ङ्गगरुडमे
वच। प्रसादयामिशिरसातेबन्धान्मोक्षयन्तुमां॥ दोहा॥ सुनि
अस्तव भगवान प्रभु गरुड़हि दये निदेश। बन्धमोक्ष बलि
कोकरो जाइसुतल शुभदेश॥ गरुड़हि आवत निरखिगे सर्पि
सर्प तजिगात। मोदेबलि निर्बन्ध ह्वै पढ़ि अस्तव अवदात॥
तब खगपति बलिसों कहे प्रभुको सुखद सँदेश। याथरसों
युगकोशजो जैहौनांघि निदेश॥ मरिहौ ताहीक्षण तहां ताते
सहपरिवार। बसियाहीथर सर्वदा कीजो उचितबिहार॥ पढ़ि
हैं यह अस्तोत्रजे ह्वै श्रद्धासों युक्त। तेलघुगुरुयुग बन्धते अ-
वशिहोहिंगेमुक्त॥ बामन प्रादुर्भाव यह जे पढ़िहैं मनलाय।
तेनर लहिहैं उच्चपद जिमि सुरपति युतचाय॥

इतिश्रीहरिवंशदर्पणेवामनप्रादुर्भावोनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

दोहा॥ बैशम्पायनसोंकहे जनमेजय क्षितिकन्त। अबकहिये
जेहिहितगये शिवपैकृष्णअनन्त॥ सुनिबैशम्पायनकहेसोसुनु
पाण्डवभूप। कृष्णहिनौमिकहोकहेजेहिबिधिव्यासअनूप॥ चौपाई॥
प्रभुनरकासुरको बध करिकै। सोरह सहस युवतिपरिहरिकै॥
बिहरिद्वारकामें मुद लीन्हे। बन्धुबर्गशुभ श्रीयुत कीन्हे॥ एक
दिवस शशियुत निशिबरमें। हैं बिहरत रुक्मिणिके घरमें॥
कही तहां प्रभुसों करजोरी। सुखदा रुक्मिणि प्रभा अथोरी॥
नाथ मोहिं निजसम सुतदेहू। जासुचरित लखि आनँदलेहू॥
सुनि बोले प्रभु आनँद दानी। प्रिये कहीतुम अति प्रियबानी॥
लहि सुपुत्र बर शुचि पदपावै। जाहि कुसुत लहिनिरय कुठावै॥
ताते उत्तमसुतहित जाई। सेइ शिवहि करि तपबर पाई॥ आइ
इतै तुमसों रमि भावन। भामिनि लहब पुत्रमन भावन॥ इमि

कहि अन्तनिशाको लहिकै। प्रातकृत्य करि प्रभुमुद गहिकै॥ करि गोदानबन्दि द्विजगनके। चारु चरण शुभदायक जनके॥ जाइ सभागृह शोभन थरपै। बैठे सुखद सिंहासन बरपै॥ तहँ यादवगण कहँ बुलवाये। उग्रसेन आदिक सब आये॥ तिन सों बोले बचन सुहाते। सुनहु सर्व यादव मुदराते॥ हमगुणि कछुकारज मनमाहीं। आजुशम्भुपै सादर जाहीं॥ ताते तुम सों कहैं बिचारी। सोकरियो तुमसब धनुधारी॥ दोहा॥ जरासन्धको युद्धलखि लखि रुक्मिणिको ब्याह। सिगरे नृपगण हैंतजे युद्ध जीतिकी चाह॥ है नरकासुर को सखा पौंड्र भूप बलवान। समय परेखत रहतसो अमरष भरो अमान॥ हमैं बिना लखि नगरसो अइहै अवशि निशङ्क। जीति जाइ है तोहमैं ह्वैहै बड़ोकलङ्क॥ याते रहियो सजग सब निशिदिन रहि सन्नद्ध। राखेहु पुर प्राकारके तीनिद्वारनित बन्द्ध॥ एकदिशाके द्वारते सदा गतागत होय। धसन न पावै नगरमें बिनु जानो जनकोय॥ आवैसो निज भेद कहि लहै मुद्रिकाअङ्क। तबप्रबिशनपावै कदन ताही भांति निशङ्क॥ द्वारपाल यूथप रहैं द्वारनधीरअथोर।चातुरचार चलांकते रहैंफैलि सबओर॥ पुरतजि कोईबननमें मतिमृगयाकोजाय। सबदिन सवक्षण सबरहैं गहे शास्त्रसमुदाय॥ सोरठा॥ इमिकहि करुणाऐन सात्वकिसों फिरि इमिकहे। सात्वकि गुणिममबैन पुर रक्षण तुमकीजियो॥ शिष्य द्रोणको बीरहै पौंडूक बरअस्त्रबिद। पुरपाहेहु रणधीरतजिनिद्रा चैतन्यरहि॥ रामआदि बलवान यादवगण सों भाषिइमि। लखि मंत्री मतिमान उद्धव सों इमिप्रभुकहे॥ जयकरी॥ उद्धव तुम्हौमंत्रिमतिमान। नित पुरपाहेहुसहित बिधान॥ याते होइनहैंसीहमारि। तिमिपुर पाहेहुनीति निहारि॥ सुनिबोलेउद्धव सुखपाय। तुम सर्वदसर्वज्ञ सुभाय॥ सामदाम अरु दण्ड बिभेद। अरिसों ये करतव्यअखेद॥ न्यून देखिकै

कीजै दण्ड। दीजैदानजानि अरु चण्ड॥ समसौं करिकैसाम उपाय। रुचित कीजिये समयापाय॥ जहांन लागैइनमेंएक॥ तहांकीजिये भेद बिबेक॥ करैनीतियुतकार्य बिचारि। तौ सो लहैनकबहूंहारि॥ प्रभुकी कृपा सर्बसिधिहोत। हम करिबे में करब म ओत॥ जाहुत्यागि सन्देहअरिघ्न। इहांनहोइहिने-कौबिघ्न॥ जापर राउरि याबिधि प्रीति। कबहुंन आइहि ता ढिग ईति॥ यहसुनि ताहीक्षण यदुराय। करिकै बिदायदुन गहिचाय॥ सुमिरण कियेगरुड़कोतत्र। आये गरुड़ कृष्णाहे यत्र॥ गरुड़ोपर प्रभुकै आसीन। चलिउत्तर दिशि पुरुषप्रबी-न॥ सुरगण सौं उच्चारित सुछन्द। सुनत निज स्तुति आनँद कन्द॥ गये बदरिकाश्रममें क्षिप्र। जहँ राजित बरतपकृत बिप्र॥ दोहा॥ जहां पूर्वप्रभु बिष्णुकरि निजतन द्विधा अनूप। अयुतबर्षतपकियेप्रभु नरनारायणरूप। गंगाजाके मध्यकैधसीं परमरमनीय। जहां तपस्याकरिसुमुनि होहिं सुमन कमनीय॥ सोरठा॥ वृत्रासुर कहँ नारि ब्रह्मज्याकेशान्ति हित। जहांसुरेंद्र बिचारि अयुत वर्ष कीन्हें सुतप॥ चौपाई॥ संध्या समय तहां प्रभुजाई। उतरे सहित सुमनसमुदाई॥ मुनिगण सबप्रभुआ-गम जानी। सायंकृत्य पूर्णकरि ज्ञानी॥ याज्ञवल्क्यकश्यप प्रियबादि। गौतम अत्रि बशिष्ठहिआदि॥ ऋषिगण जाइप्रभुहि तहँपूजे। अतिआनँद लहि अस्तुति कूजे॥ बूझि कुशलशु-चिआसनलहिकै। बैठे सुरऋषिसह मुदगाहिकै॥ जोसुखऋ-षिन लह्यो ताक्षणमें। सोकहिसकै कोनगुणि मनमें॥ करि आतिथ्यकन्द फलदीन्हें। सुरन सहित प्रभुभोजन कीन्हें॥ भेप्रभु शासनपाय अहीना। सबनिजनिज आसनआसीना॥ गये तहांतब कृष्णबिचारी। हेजहँपूर्ब बिशदब्रत चारी॥ उत्तर तट सुरसरिकेपावन। परम रुचिरथल अतिमनभावन॥ तहँ प्रभु ध्यानावस्थितकैकै। बिलसनलागे योतिनिज्वैकै। भयो

इतैमें हरगिरि ओरा। मृगयाशील शब्द अति घोरा॥ छोड़हु छोड़हुश्वान समनको। मारहुधरहु खाहु मृगगनको॥ मिलैं शीघ्रकहुं खगपति गामी। तौमैं होउं धन्यशुभनामी॥ मोक्षद जासुनाममुनिगावैं। ब्रह्मादिकजेहि निशिदिनध्यावैं॥ मैंअभाग्यबशताहिन ध्यायों। ताते महाअधम तनपायों॥ दोहा॥ निशिदिन जासुसुभावसों हिंसाआदिक पाप। जानि जानिकरि लहतहौं नितनूतन परिताप॥ हिंसारतनिर्वेद युत सुनि ऐसो आह्वान। चिंतनलगे अजान सम श्रीमाधव तजिध्यान॥ कोयह ऐसो कहत है मम सुभक्तिसोंपूरि। गुणिइमि लेखनलगे तिमि परेलेखिबलभूरि। मांसखात पीवत रुधिर भयद पिशाच अनेक। तिनमें दोयप्रमत्तअति सबके अधिप सटेक॥ मांसखातपीवत रुधिर अंत्रावलि की माल। पहिरे माधव कृष्णहरिरटतपरम खुशहाल॥ सोरठा॥ निर्वेदज युत ग्लानि बचनबकत निन्दतनिजहि। प्रभुकेगुण सुखदानि कहत बारहूंभांतिबहु॥ चौपाई॥ तेपिशाच पाले प्रभुपै जाई। कोतुमकहे कहौं समुझाई॥ तुम मानुषइत कितसोंआये। अतिसुन्दरसुकुमारसोहाये। पद्मेक्षण पद्मानसुशोभन। पद्मापतिसम मनसिज क्षोभन॥ सिंह बराह पिशाच निकरमें। कतआये तुमदुर्गम थरमें॥ सुरगन्धर्व किन्नरकहवावो। कैनरसिंहकहि भ्रमबिलगावो॥ सुनि हँसिबोले कृष्ण प्रशंसी। हम मनुष्य क्षत्रीयदुबंसी॥ चाहिजान हर गिरिपै सानँद। शम्भुहि देखन हित सुनुमानँद॥ यह थर देखि परम रमणीया। बासकिये गुणिश्रम शमनीया॥ कहिप्रभु कहे कहौ तुमकोहौ। सेना सहित बीरयुग जोहौ॥ मुनिगण सेवित शुभथरपावन। तहँतुम जातचले कतचावन॥ तुमसब हिंसक भेष अपावन। उतैजाहु मति धर्म नशावन॥ जो आगेचलिहौ वरिआई। तौ सबबाधि जैहौ इहिठाई॥ तिन युगमें ते एक सुबाती। कहत भयो प्रभुसों अनुमानी॥ हम

पिशाच अनुचर धनपतिके। आलय शिवके पूर्ण भगतिके ॥ नाम सुघण्टकर्ण ममजानो । यहमम लघु भ्राता बलवानो ॥ सुनो एक ममबर अपराधा । जेइ कीन्हों इच्छितकोबाधा ॥ दोहा ॥ घण्टा बांध्यो श्रुतिनमें यहगुणि मैं अघधाम । जाखते नहिं सुनिपरै कबहुं विष्णुको नाम ॥ गहि अनन्य शिवकी भगति तपकरि शिवपै जाय । मांगिमुक्ति शिवसों सुन्यो यह उत्तर सुखदाय॥ मुक्तिदानि हैं विष्णुप्रभु मांगहुतिन्हैं अराधि। बदरी बनमें जायकै तासुभक्तिव्रतसाधि ॥ सोरठा ॥ यहसुनि मो मन मैर चढ़ो ग्लानि निरवेदको। विष्णुनामसों बैर करिदिन खोयो हाय मैं ॥ महिखरी ॥ सुनि शम्भुसों यह बचन विष्णुहि परमप्रभु अनुमानिकै। जगप्रभव सर्बद सर्ब में अव्यक्त अव्यय जानिकै ॥ इत आइप्रभुहि अराधि लखि शुभमुक्ति चाहतहौं सुनो।वै भक्तबत्सल कृपानिधि सो अवशि देहैं ध्रुवगुनो ॥ इहि भांति प्रभुसों भाषि तहँ फिरि मुदित शोणित पानकै । जलपरशि बिशद विदर्भआसन परबिराजि सुध्यानकै ॥ ह्वै महत आरत गायगुणकरि बिनय रहिलय लायकै। भो गुणत क्षण में कृपानिधिको ध्यानदर्शन पायकै॥ प्रभुकिये मोपर कृपाताते दिये दर्शन जानिकै। जिहि लहे इमि नहिं कबहुं योगिन सविधि करत बढ़ानिकै ॥ अबभयों धन्य कृतार्थ लहिकै शुभद बांछित आजुमैं। इमि समयलहि मम बन्धु ह्वैहै करि सुरति सतकाजु में॥ यह समुझि मोदित ध्यान तजि सो प्रभुहि सन्मुख देखिकै। लहिध्यान दर्शन स्वच्छमति परतच्छ प्रभु अवरेखिकै ॥ उठि पुलकि नृत्यन लगो हँसिहँसि शोच सिगरो नाषिकै। ये विष्णु प्रभु ये बिष्णु प्रभु ये बिष्णु प्रभु इमि भाषिकै॥ दोहा ॥ ब्रह्मासह ब्रह्माण्ड बर अगणित अमितप्रभाव। इच्छि विरचि एईसदा ईच्छित शीक्षित भाव॥ एई प्रभुअव्यक्त गहि बपुकै व्यक्त अव्यक्त। कौतुक करत अनेकविधि ह्वै

कौतुक अनुरक्त ॥ इमि गुणि निर्गुण सगुणकरि अगणित गुण गण गान। पुनि पुनि सुनि धुनि स्वच्छ सों मुनिजन सम मति-मान ॥ सोरठा ॥ लखत ध्यानधरिजौन प्रभु अव्यक्तहिधन्यसो। मोसम धन्यन तौन लख्यों अव्यक्तहिव्यक्त इमि ॥ चौपाई ॥ प्र-मुदित बारबार इमि कहिकै। मृतकबिप्रको शुचितन गहिकै ॥ करिद्वै टूक पात्रपै धरिकै। जललै बिधिवत अर्पण करिकै ॥ बन्दि चरण नन्दित करजोरी। कहतभयो गहिप्रीति अथोरी ॥ प्रभु यह मास बिप्रको पावन। नूतन निर्मल सद्य सोहावन ॥ अर्प्यो यज्ञआपुकेजानी। ग्रहण करहु करि कृपा महानी ॥ भक्षण करै आपु जो जोई। देव पितर कहँ अरपै सोई ॥ यह श्रुति उक्तसुवचनबिचारी। ग्रहण करहु मम दोष बिसारी ॥ प्रेममयी यह आरत बानी। सुनिबोले प्रभुआनँद दानी ॥ ब्राह्मणसदा पूज्य निरधारो। नहिं बध भक्षण योग बिचारो ॥ मृतक न छुवन योग शुचि जनको। अबन कहहु यहिअशन बचनको ॥ हम प्रसन्न तुव भक्ति निहारी। होहु अशोच शङ्क तजिभारी ॥ इमि कहितासु गात प्रभु परसे। कृपाकटाक्ष सु-धासमबरसे ॥ परशत भयोदिव्य तन सोई। पारस परशि लो-हजिमि होई ॥ परशत भयो तौन भरि भासों। तब प्रभु कहत भये इमि यासों ॥ अनुजसहित तुम सुरपुरजाहू। बिहरहुलहि अपूर्ब मुदलाहू ॥ करी बास सुरपतितहँ जौलौं। करौबिहार तहाँतुम तौलौं ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सायुज्य मम लहिहौ सुनो सुजान। यहकहि ताहि किये बिदा कृपासिन्धुभगवान ॥ बिह-रत भयो पिशाच सो इन्द्रलोकमें जाय। इत प्रभु द्विजाहिजि-याइकै अस्तुतिसुने सचाय॥ अस्तुतिसुनि तेहि करिबिदा मुनि मण्डल में आय। कहेसफल वृत्तान्त प्रभु कृष्णचन्द्र सुख-दाय ॥ करिअस्तुति मुनिजन कहे इतो आचरज कौन। बिश्व-सृज भगवानप्रभु चहौकरौतुम तौन ॥ सोरठा ॥ सुनिसु बचन

अवदात प्रभु इमि मुनिजन सोंकहे । हम हर गिरिपैंजात आ-
यहु तुम सब समयलहि ॥ जयकरी ॥ कहि खगपतिपै ह्वैआसीन।
दरशेगिरिजोप्रभा अहीन ॥ जहां अराधहिं शिवहि धनेश।
करैं तपस्यासिद्ध सुभेश ॥ गंगादिक सरिता अभिराम । प्रगट
भईं जहँसों गुणग्राम ॥ जहँ बेधाको पंचम शीश । काटे असत
करत लखि ईश ॥ पूर्व जहां हरिकरि सहप्रेम । सहस कमल
अर्पणको नेम ॥ घटे एकदिन बारिज एक । कमल नयनपाहक
धृतटेक ॥ काटिअर्पि निज चष सुखदान । लहे शंभुसों चक्र
महान ॥ अति सुन्दरमानससर यत्र । गयेकृष्णप्रभु सादरतत्र॥
सरवरके उत्तरतट जाय । बैठि लगे तप तपनसचाय ॥ द्वादश
बार्षिक करि सङ्कल्प । किये तपस्या परमअनल्प ॥ गरुड़ त-
हां ईंधनहे देत । पुष्पदेतहे चंचलचेत ॥ दर्भदेत हे खड्गसुभे-
श । रक्षतरहे शङ्खसो देश ॥ गदा धनुष शुभसत्व निकेत ।
परिचर्याहिं करत सनेत ॥ प्रथम दिवस करि शाकअहार । दूजे
दिन रहि बिना अधार ॥ शाक बहुरि तीजेदिन खाय । फिरि
खाये दिन तीन बिताय ॥ खायेफेरिगये दिनचारि । फेरि पांच
दिन बिते बिचारि ॥ दोहा ॥ शाकखायकै एकदिन यहिबिधिके
क्रमचाल । अन्तर दैदै दिवसबहु पक्षमास अरुसाल ॥ दुस्तर
व्रत जप हवन अरु बेदपाठ सबिधान । मास ऊनद्वादशबरष
कीन्हें कृष्ण महान ॥ आये तब बिष्णुहि लखन सुरगणसहित
सुरेश । पितर धर्म ऋषिगण बरुण किन्नर मरुत सुभेश ॥
अप्सर अरु गन्धर्बगण सब सत्वर तहँ आय । तपत उग्रतप
प्रभुहि लखि निरखिरहे टकलाय ॥ सोरठा ॥ ब्रत समाप्तमें
सर्व उमा सहित आये तहां । धनदसखागण सर्ब साथ भरे
अतिमोदसों ॥ चौपाई ॥ दर्भदीपिका डिंडिमशूला । धारिचारि
भुजसों अनुकूला ॥ भस्मगरल शशि सुरसरिधारे । कर कपाल
की मालबिहारे ॥ अहिगणके भूषणसों शोभित । करेकोटि क-

न्दर्पहि क्षोभित ॥ भूप वृन्द बहुरूप बिभाते । संग अनगिने आनँदराते ॥ नृत्ति शिवास्तुति कूजत मोदित । बहु पिशाच के यूथ बिनोदित ॥ पढ़त बेद मुनिगण बहुपावन । आये संग शम्भुके चावन ॥ तिनकेमध्य वृषभचढ़िभाये । प्रभुके निकट शम्भुप्रभुआये ॥ लखिहरिहरहि निकट मुदलीन्हें । जयति जयति सुर ऋषिगणकीन्हें ॥ जगन्नाथ जय जय प्रभुशङ्कर । चक्र शूलधर जय अभयङ्कर ॥ जय कौस्तुभधर जय अहिभूषण । जय अघओघ तमसके पूषण ॥ जयश्रीखण्डभस्मधरस्वामी । उमारमापति खगपशुगामी ॥ जयभृगुचरणअङ्क विषधारी । जय क्षीरधि कैलाश बिहारी ॥ जयति श्याम सितरूप सलोने। जय जग प्रभव अनादि अयोने ॥ यहिबिधि कहिकहि सकल अनन्दे । श्रीप्रभु हरिहरके पगबन्दे ॥ तब उठि केशव शंभुहि पूजे । करिप्रणाम शुभ अस्तुति कूजे ॥ सुनिअस्तुति शिवहिय मुदसों भरि । कह बिष्णुके करकरसों धरि ॥ दोहा ॥ तुमअनन्त तुमबिश्वसृज बहुब्रह्माण्ड निकेत । पुत्रहेत इतनोकरे कोजाने यहहेत ॥ निरमेहैं हम पूर्वहीं तुवहित पुत्र अनूप । सुनो तौन इतिहास अब निजबांछित अनुरूप ॥ सोरठा ॥ कृतयुगमें तप पर्म अयुताब्दिक हमहैंकरत । तहँपरिचर्य्या कर्म उमा सर्वदाहीकरत ॥ चौपाई ॥ तहँ सुरपतिको शासन लहिकै । आयो काम बाण धनुगहिकै ॥ संग सहाइ लैगइ ऋतुराजहि । हनेसिकुसुम शर तजि डर लाजहि ॥ सो बिचारि हौं क्रोधित ह्वैकै । ज्वाल जालमें चषसों च्वैकै ॥ भस्माशेष कियो तेहि क्षनमें । पीछूइंद्र कृत्यगुणि मनमें ॥ सुनि बिधि बचन कृपा तब कीन्हे । तुव सुत ह्वैको बरदीन्हे ॥ रुक्मिणिमें तुमसों सुत होई । नाम प्रद्युम्न कामवह सोई ॥ इमिकहि शम्भु जोरियुगबारी ।अस्तुति किये तत्व अनुसारी ॥ अस्तुति करि शिव फिरि अभिलाषे । सुर मुनि जनसों यहिबिधि भाषे ॥ येई बिष्णुरुद्र बिधिजानो । इन्द्र

कुबेर वरुण रबिमानो ॥ इनहींसों सबजग उतपतिहैं । लीन होत इनहींमें सातिहैं ॥ ये ईश्वर न्यामक सबहीके । ये चितकरण चारु शुचिहीके ॥ ये नि जगरचना ईच्छित । तब ह्वै सगुण बिरचि जग शीक्षित ॥ आपुअव्यक्त रहत सबहीमें । जैसे माखन दूध दहीमें ॥ मथे ज्ञान मन्थनसों दरशैं । जेहि प्रकार योगीजन हरशैं ॥ ये सबमें बैभवलक्षणसों । प्रगट निरेखिपरत अक्षणसों ॥ देखे सुने परत सब जे हैं । ते सब येते भे इनते हैं ॥ दोहा ॥ सुनि शंकरके बचन ये भये मोद युत सर्ब । सुर सुरपति दिग्पाल ऋषि यक्षाप्सर गन्धर्ब ॥ श्री नारायण विष्णुते अन्य देव नहिंकोइ । विष्णुहि जपत सप्रेम नित धन्य धन्य जन सोइ ॥ बिष्णुसदा जपतब्य हैं हैं पठितब्यात्रिमूर्त्ति । इनमें कछू न भेदहै जो निरखै करि सूर्त्ति ॥ सोरठा ॥ यक्षाप्सर गन्धर्ब सुर सुरपति दिग्पाल ऋषि । भये मोद युत सर्ब सुनि शंकरके बचनये ॥ महिश्वरी ॥ यहिभांति प्रभुहि प्रशंसिहर फिरि किये अस्तुति चावसों । जो वेद कच्छन कथित ग्रथित अनूप अनघ प्रभावसों ॥ श्री नाथ केशव नमस्तुभ्यं नमः शशि सूर्य्यात्मने । जयनमो वेदात्मने तुभ्यं नमः श्रीब्रह्मात्मने ॥ जयनमो सर्वात्मनेतुभ्यं नमः श्रीमरुतात्मने । बिधि बिष्णुरुद्रात्मने तुभ्यं नमः श्रीविश्वात्मने ॥ जयनमस्तुभ्यंरूपरसगन्धस्पर्शशब्दात्मने । जयसहस्रशीर्षपुरुषतुभ्यं नमः श्रीत्रिगुणात्मने ॥ दोहा ॥ करि अस्तुति यहिभांति शिवभे तहँअन्तर्द्धान । शिवा सहित सब गणहिं सह पूरितमोद महान ॥ बन्दि बन्दि प्रभुके चरण लोकप दिगप अशोक । लहि लहिमोद अमोघगे थोक थोके निजओक ॥ शङ्खी चक्रीप्रभुगदी खड्गीधन्वी जिष्णु । आये गरुड़ारूढ़ ह्वै बदरीबनमें बिष्णु ॥ सोरठा ॥ मुनिजनसों विधिपूर्ब पूजितह्वै बैठोजहां । पायेमोद अपूर्ब प्रभुहिलखिते मुनिसकल ॥

इतिश्रीहरिबंशदर्पणेकैलाशयात्राबर्णनोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

चौपाई ॥ उतैसुपौण्ड्र भूप धनुधारी । कृष्णचन्द्रसों शरिबिचारी ॥ पास बोलिसब दिशिके राजा । कहत भयो गुणि जय यशकाजा ॥ हमहिंदण्ड सब भूपति देहीं । सुनत निदेशशीश धरिलेहीं ॥ नहिं मानैं यदुबंशी हमको । सुनि मम तेज न लहैं भरम को ॥ दण्ड न देहिं रहैं नितकलसों । भये निशङ्ककृष्ण के बलसों ॥ सुनिये कृष्ण गोपकी करणी । बासुदेवमम नाम सुबरणी ॥ सो कहु बीच मोदसों रातें । और सुनो यह अनहद बातें ॥ ममधनु गदा खड्ग को जोहै । नाम बिख्यात अमोघ गुणो है ॥ निजधनु गदा खड्गको सोसो । राखिनाम चाहत भो मोसों ॥ अब ओहि बासुदेव जो कहिहैं । सो अति दुसह क्रोध मम सहिहैं ॥ निजपन यौबन को पनलैहैं । शतशतभार हेम मणि देहैं ॥ नरकासुर मम सखाप्रबलको । हैयहगोपदुवन बरदलको ॥ मारियाहि निज दुसह गदासों । लेहों बैरमित्रको यासों ॥ यह सुनि किते भूप मुसुकाई । समुझिरहे चुप शीश नवाई ॥ कितने निलजमूढ़हरषाने । मूढ़कालबश ह्वैउमदाने ॥ इतनेमेंतहँ नारदआये । हरि गिरि ते गुणि आनँदछाये ॥

दोहा ॥ पूजि मुनिहि बैठाय सो कहत भयो वृत्तान्त । जिमिनृप गणसों सो कहे गर्बितबचनअशान्त ॥ सुनि मुनि नारद कहत भे सुनु पउण्ड्र क्षितिपाल । कृष्णहि ऐसोसो कहत चढ़त जासु शिरकाल ॥ शार्ङ्गी खड्गी गदी औ बासुदेव प्रभुपर्म । सोकहाइबो तुमचहत सोयह दुस्तरकर्म ॥ सोरठा ॥ सुनि पउण्ड्रयह बैन ह्वै सरोष फिरिरोकि रिस । तुम अवध्य तपऐन चहो कहो सो इमिकह्यो ॥ चौपाई ॥ शीघ्र उठहु कहुँ जाहु गोसाईं । अब फिरि मति आयहु यहिठाईं ॥ मुनि उठि तुरत कृष्ण पै आये । बिधिवत यह वृत्तान्त सुनाये ॥ सुनि प्रभु कहे गर्व बलतासू । मुनिहम करब शमन अबआसू ॥ इतै पउण्ड्र सेनसज़िभारी । चढ्यो द्वारका पै धनुधारी ॥ एकलव्य आदिक बहुराजा । चले

संग साजि सहित समाजा॥ रथगज हयारूढ़ पदचारी। सुभट असंख्य बीर अरिदारी॥ सह बजवाय भेरिकरनालै। दिपित कराय असंख्यमशालै॥ सत्वरजाइ भरो अति रिससों। घेरि द्वारकापुर सब दिशिसों॥ सुभटन दयो निदेश लरनको। यदु-बंशिन के मान हरनको॥ तिन्हैं देखि पुरकेरखवारे। शस्त्रसमूह क्रोधकरि मारे॥ लागेलरन भूपभट तिनसों। मारिमारि आयु-धअनगिनसों॥ यह सुनिकैसिगरे यदुबंशी। उग्रसेन आदिक सुप्रशंसी॥ गहि आयुध बाहनपै चढ़ि चढ़ि। लागेलरननगर ते कढ़ि कढ़ि॥ भिरे गजस्थ भटन सुभटनसों। रथी रथी जय शब्द रटनसों॥ भिरे हयस्थन सों हयसादी। पैदर पैदर सों उनमादी॥ लागोहोन युद्धअतिघोरा। लगे चलन बहुशस्त्र कठोरा॥ दोहा॥ तहँ निषाद प्रति प्रबलभट शिष्यद्रोणकोबीर। बाण वृष्टि अति करत भो एकलब्य रणधीर॥ सात्यकि हार्दिक रामगद जेभट उद्धव आदि। करत भयो ब्याकुलातिन्हैं मारि बीर ध्वनि नादि॥ सोरठा॥ ह्वै अर्दित तजि युद्ध प्रविशतभे सब नगरमें। तब लखि जीति सक्रुद्ध पौण्ड्रकहत भो भटन सों॥ परशुकुठार कुदारि सोंबिदारिगाकार बर। पुरमेंप्राविशि प्रचारि लूटिलेहु मणिधनयुवति॥ चौपाई॥ यह सुनिसकल सुभट मुद पागे। पूरुबदिशि लागि खोदनलागे॥ हाहाकार मचोपुरमाहीं। कृष्ण बिनाकोउ रक्षक नाहीं॥ राम आदि सब भटयहसुनिकै। पलटेबचन कृष्णको गुनिकै॥ सत्वर आयेतहां प्रचारत। जहँ हेभट प्राकारबिदारत॥ तिन्हैंदेखिसात्यकि धनुधारी। तजेअस्त्र वायव्य बिचारी॥ ह्वै तासों प्रेरित मति बिगरे। गये पूर्वथल पैते सिगरे॥ गेनिशितहांहांकिरथ हेरत। कहां पउण्ड्रबारबहु टेरत॥ आजुतासु शिरकाटि गिरावों। रणदेविहि बलिदानचढ़ावों॥ जोशठनिलज मोहसों छायो। निशिमें इततस्कर सम आयो॥ सुनि सात्यकि के बचन अनैसे। बोलतभो पौण्ड्रकनृप ऐसे॥

हैंकहु कृष्णगोप बनचारी । स्त्रीपशुहन्ता अघकारी ॥ जो मम नाम आपनोकीन्हे । जहँ तहँबिहरत आनँदलीन्हे ॥ वाहि बुलाउलरौंमैंओसों । तूनहिं लरनयोगहैमोसों ॥ जोतू बीर आपुकोजानै । तौलरिकरि लेनिज उरमाने ॥ जबतुवमरणखबरि सोपाइहि । तब ब्याकुल ह्वै आपुहि आइहि ॥ यहसुनि सात्यकि अति रिसकरिकै । तासों कहे बाण धनु धरिकै ॥ रेशठ तोहिं काल जोघेरे । नृत्यत चढ़ो शीशपैतेरे ॥ सोजबउतरि जीभ पैआवत । तबयहि बिधिके बचन बकावत ॥ रुचै जौनसो बकिले तौलों । गिरैन शीश भूमिपै जौलों ॥ घरीचारिमेंरसना तेरी । खैहैं गिद्ध बातसतिमेरी ॥ इमि कहि धनुष कानलोंताने। बाण तासु उर हनिहरषाने ॥ दोहा ॥ लगे बाण अति क्रोधकरि भरो रुधिर सों गात । पौण्ड्र भूप मारतभयो सात्यकिको शर सात ॥ सात्यकि तेहि सोसात्यकिहिमारे बाणअनन्त । मारेसि एक प्रचण्डशर सिनिकहँसो क्षिति कन्त ॥सोरठा॥ सात्यकिभट बलवान ताकेलगेघरीकलों। मूर्च्छितरहेअजान लागिध्वजाके दण्डसों ॥ चौपाई ॥ तौलौं दशशर सिनि तेहि मारी । हनिपचीस शरहयन बिदारी ॥ गरजतभयो पउण्ड्र अमाना। सुनिसचेतभे सिनिबलवाना ॥ सूत गजनकहँ अरदित देखी । दुस्सह बाण हने अतितेखी ॥ लगेबाण मूर्च्छितहवैसोऊ। रथपैगिरेसूदिचष दोऊ ॥ तबलोंसात्यकि शरबिधि ठाटे । सिगरे अंगसुरथके काटे ॥ सिगरे गात हयनके भेदे । धरसोंशीश सूतको छेदे । तबसों चेति गदा लैधायो । बढ़ि. सात्यकिके रथढिग आयो ॥ सात्यकि गदापाणिलै तासों । कीन्हेगदा युद्ध भरि भासों ॥ बहुबिधि गदा युद्धते कीन्हे । लखि इतउतसब विस्मय लीन्हे ॥ गदा तासु भूपैसिनि मारे । मूर्च्छित करि तेहि महिपै डारे ॥ चेतिशीघ्र उठिसोरणचारी । मारेसिसिनिहि गदा अतिभारी ॥ तबसात्यकि अतिभुजबल बरसों । तोरेतासु गदालै

करसों ॥ तबसोचाबुक बीरनचूका। मारेसात्यकि केउरमूका ॥ सात्यकि डारि गदागुणि मनमें। मूका हनेतासुगुरुतनमें ॥ तेहि सात्यकि सात्यकि कहँसोई। मुष्टिक हनत भयेरिसि भोई ॥ बलकल करि घातनसोंमारे। बाहुयुद्ध बिदि नेकुनहारे ॥ दोहा ॥ भोइमि सात्यकि पौंड्रसों संगर परमप्रचण्ड। एक लव्य बलरामसों भो तिमियुद्धउदण्ड ॥ एक लव्यकहँराम अरु रामहिं धीरानिषाद। मारत भये अनेक शर बीरशब्दकरिनाद ॥ सोरठा ॥ एक लव्यकोचाप दये काटि बलवानसो। तबसो करि परताप खड्ग फेंकि मारत भयो ॥ गुरुतोमर ॥ तेहि देखि आवत ठान सों। बलकाटिदीन्हें बानसों ॥ असिहन्यो दूजो हेरिसो। बल काटिदीन्हें फेरिसो ॥ फिरि शक्तिघण्टामाल में। अय हेममय मणिजालमें ॥ लै एक लव्य बलीहनो। बलबीर पैगर्बीगनो ॥ चलिकूदितेहिनिज पानिकै। जेहिहनोतासोंजानिकै ॥ उरशक्ति लागे झूमिकै। सोगिरो रथपैघूमिकै ॥ तबताहिमूर्छितदेखिकै। सबतासु सैनकतेखिकै ॥ यकबारझुकिचहुं ओरसों। बहुशस्त्र धरबर जोरसों ॥ दोहा ॥ सहसअठासी धीरते बीर निषादसटेक। मारतभेबलरामपै आयुध अगम अनेक ॥ हल मूशल लैरामतब हने तिन्हें गहिमोद। तिनमें करत भये तहां शिबा पिशाचाबिनोद ॥ गिरिकन्दरमें दुरतभे तिनमें कितने भागि। एकलव्य हयलखतभो उठिमुर्छासोंजागि ॥ सोरठा ॥ लैगुरुगदा सक्रुद्ध जाइ रामपैबेगसों। गदायुद्ध अतिउद्ध करत भयोदारुणसुभट ॥ चौपाई ॥ चारिपुरुषबर भिरि तेहिनिसिमें। युद्ध करतभे भरि अति रिसिमें ॥ एकलब्यअतिरामप्रबीरा। अरु पौंड्रक सात्यकिरणधीरा ॥ अति प्रचण्ड संगरतहँ माचो। घोर शब्ददशादिशिमेंराचो ॥ इतनेमें शशिकी द्युतिमैली। भई सुरुचिदिन मणिकीफैली ॥ लखि प्रभात प्रभु बदरी बनते। चलेबिदाकै सब मुनिगनते ॥ खगासीन नभते धुनि सुनिकै।

आये पौंड्लरत यह गुनिकै ॥ पांचजन्यशुभ शङ्खबजाये । सुनि यदुबंशी अतिसुखपाये ॥ आये पुरमें प्रभुमुद लीन्हे । बन्दीजन जुरिअस्तुतिकीन्हे ॥ उतरिखगपतिहिस्वपुरपठाये । दारुकि सों निज रथ मँगवाये ॥ चढ़िरथपै आये रण भूमें । जहँ अगणित भटघायलघूमें ॥भूपपउंड्कृष्णकहँ देखी। तजि सात्यकि सों युद्धअदेखी ॥ प्रभुपै चल्यो क्रोधसों हढ़िकै । तब सिनि रोंके आगे बढ़िकै ॥ रेशठ भूप मोहिं बिन जीते । जात आनपै संगर चीते ॥ यह नहिंक्षत्रिनकोसुधरमहै। यह कादर जनको कुकरमहै ॥ हमहिं जीतिकै जब कहुं अनतै । जैबेकी शुचिरुचि गुणमनतै ॥ इतनेहूंपै पलटिनवाजा । चलोकृष्णपै गर्बित राजा ॥ दोहा ॥ तबसुप्र शंसित कृष्णसों सात्यकिकरि कैगौर । तासुपीठि मेंहनिगदापरे रहेतेहि ठौर ॥ महाराजसुनपौंड्तब प्रभुकेसन्मुख जाय । गरबितअरबितभो कहतगरबितबचनअबाय ॥ गोयुवतीहय वृद्धके बधकरता हेगोप । नरकासुर निजसखाके बैरकरौंतो लोप ॥ सोरठा ॥ तौबधकरि गहिटेकचक्री शार्ङ्गीअरु गदी । बासुदेवअबएकमैं कहवैहोंजगतमें ॥ रोला ॥ पौंड्केयेबचन सुनिप्रभुकहतभे मुसुकाय । सत्य जोतुम कहेइनमें एकहैनअबाय ॥ गोकहतमहिदिवदिशनिहमतासुपालनहार । खलनकेबर बीर्यबुधिकेगोपके करतार ॥ वृषभ तियहय वृद्धमारत कियोहमन बिचार । मध्यतुमकहँ पाय बधत न नेकु हमहिं अबार ॥ चक्रधनुतो गदातोहैं नाम रूप समान । पैनहैं मम गदाधनु अरु चक्रसमगुणवान ॥ शोच हमको यहै तुमतो जाहुगे तजिदेह । बूझिहै को तुम्हैं बिन गुण अगुणता गहि नेह ॥ सुनहु जो तुव अस्त्र अरु मर्मअस्त्र हैं सहनाम । क्षणकमें मम अस्त्रतोते कराहिंगे तो काम ॥ करहु अब मतिबेर रथचढ़ि लरहु गहि निज अत्र । जाहुतो प्रिय सखा नरकासुर गयोहै यत्र ॥ बचन यहसुनि कोपिरथ चढ़ि

पौण्ड्र भट बलवान। लगो गरजन हने तौलौं कृष्णप्रभु बर-बान॥ कृष्णकोदशबाणवर अरु सात्यकिहि दश पांच। हनत भो सब हयनकहँ सोबीर दशनाराच॥ कृष्ण तौलौं तासुध्वज अरु सूतको शिरकाटि। मारिचारौं बाजि मारे ताहि शरबर डाटि॥ कूदिरथते पौण्ड्र मारत भयो खड्ग चलाय। बीचहीं तेहि काटिदीन्हें बाणसौं यदुराय॥ तज्यो सो तब घोर चक्र अमोघ करण अनर्थ। कूदि अनतेजाय के सब दये तेहि करि ब्यर्थ॥ घरिकलौं इमि शीक्षिताके चक्रसौं जगदीश। डारिउ-रवी पै दये तहँ काटिताको शीश॥ मरोताको देखिताके सुभट के समुदाय। भगे ताड़त हियो रोवत करत हाहाहाय॥ राम सों लरि हारिभागो एकलब्य निषाद। लये करमें गदाभागो गहे दीह बिषाद॥ क्रोध बशगे तासु पीछे दूरिलौं बलराम। दुरो सो तब पलटिआये कृष्णपै बलधाम॥ दोहा॥ यदुबंशिन सहकृष्ण तब सभा सदनमें जाय। हरिगिरि यात्राकोकहे सब वृत्तान्तसचाय॥ सोकहि मोदित करियदुन अस्तुति कर्णि बि-सर्जि। जाइप्रियन अनदित करे कहि वृत्तान्त अचर्जि॥

इतिहरिबंशदर्पणेकैलाशयात्रापौण्ड्रबधबर्णनोनामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

दोहा॥ मुनिबरसुनिप्रभुकी कथा मोमनतृप्तनहोत। कोअस जेहि प्रभुगुण सुनत गुणतहोतहै वोत॥ ताते कहिये जो किये हंस डिभकके संग। चारु कुतूहल चावसों श्रीकेशव श्रीरंग॥ चौपाई॥ सुनि मुनि कहे सुनहु नृप बरणी। प्रथमतासु उत्पति अरु करणी॥ हो शुभशाल्व देशको स्वामी। ब्रह्मदत्त भूपति नयगामी॥ रहीतासुद्वै तिय वरलाजा। तिनसों रमे बहुतादिन राजा॥ लहे न सुततव शुचिव्रतसाधे। शम्भुहि दिगमित ब-रष अराधे॥ तब शिव क्षिप्र दरश तेहिदीन्हा। सुत हित बर दै मोदित कीन्हा॥ नाम मित्रसह ब्राह्मण ज्ञानी। रहो भूपको सखा सुमानी॥ बहुदिन पुत्रहीन रहि सोऊ। चिन्तित भे पत्नी

पतिदोऊ । तेऊ पांचवरष हरिपूजन । करिकीन्हे शुभ अस्तुति कूजन ॥ दीन्हे बिष्णुताहिबरपावन । पुत्रोत्पतिकर शोक नशावन ॥ ब्रह्मदत्तके द्वैसुत जाये । हंस डिभक शुभनाम सोहाये ॥ भो सुत एक बिप्रके आरज । नाम जनार्दन कृतशुभ कारज॥ नृपके अरु द्विजके सुत साथहि । बरधिपढ़े बिद्यागुण गाथहि॥ सर्बशास्त्र धनुर्वेद पुराना । सुनिगुणिकरि अभ्यास बिधाना ॥ हंस डिभक हिमगिरि ढिगजाई । शिवहि अराधे दृढ़लयलाई॥ पांचबरष जलबायुअहारा । करितपकीन्हे सहितबिचारा ॥तब तहँआइशम्भुमुदराखे । बरंब्रूहिनृपसुतसोंभाखे ॥ दोहा ॥ मांगे शम्भुहिबन्दिते प्रभुहम होहिं अभेय । अमरअसुर गन्धर्बगण नरसोंसदाअजेय ॥ दिब्यअस्त्रनिजसर्बप्रभुपूर्णकृपाकरिदेहु॥कवचअभेद्यअछेद्यधनु देहुनिरखिममनेहु ॥ सोरठा ॥ द्वैद्वैगणबलवान रहैंसहायी संगमम । सुनियबचनईशान एवमस्तुकहिगुप्त भे ॥ जयकरी॥ तेनृपसुतलहिकैबरदान। आयेनिजपुरमधि मतिमान॥ शम्भु अराधन रत रहि नित्य । चित चिंतबकरिभये अचिंत्य ॥ द्विज सुतरह्यो जनार्दन जौन । बिष्णुहि पूजि लह्यो बरतौन॥ क्रमते भे सदार ते सर्ब । भूपपुत्रद्विज सुनहु अखर्ब ॥ एक दिवस ते नृपके बार । द्विज सुत सह युत सैन अपार ॥ मृगयाशील बिपिनमें जाय। बिधिवत किये बिहार सचाय ॥ गयोबीति जब दिन युगयाम। तब तजि मृगया करणआराम ॥ गे तड़ागतट सहित समाज । जहँ बारिजबन लसत सभ्राज ॥ बैठे तहँ जल परशि समोद। करनलगे सबसखा बिनोद ॥ तहां वेद धुनि सुनि बुधिवन्त । लहेमित्र सह मोद अनन्त ॥ ते त्रय पुरुष गये तब तत्र। मुनिजन करतरहे धुनि यत्र ॥ बन्दिमुनिन कहँ ते हे भूप। आशिष अर्घ्य लहे अनुरूप॥ बिधिवत तिन्हैं पूजि ते बिप्र । सादर बैठावतभे क्षिप्र॥ बन्धु बिप्रसह बैठि सप्रेम । कहैं मुनिनसों हंस सनेम ॥ उत्तम राजसूय शुभयज्ञ ।

कियोचहत ममपितु सर्बज्ञ ॥ बिधिवत तेहि साधनके कार्य। आयहु तहँ तुम सिगरे आर्य ॥ दोहा ॥ ससुत सबंधु सदारमिलि आयहु तहँ तुम हाल। सुनि मुनि जन नृपसों कहे आइब हम तेहिकाल। तब मुनिगणसों ह्वै बिदा हंस डिभक अरु विप्र। दक्षिण दिशिसों जातभे शरके उत्तर क्षिप्र ॥ सोरठा ॥ दुर्बासा तपधाम पांचहज़ार ऋषीनसह। तपत रहे अभिराम जहां धरे संन्यासब्रत ॥ रोला ॥ श्रेष्ठ शुचि संन्यास आश्रम तपत मुनि तप रास। अशिष अतिथ अबास दण्डी धृत कमण्डलु पास ॥ वन्यबिसके धरेशुचि कौपीन सुखमाकन्द। ब्रह्मचिन्तत ध्यान तत्पर लहत परमानन्द ॥ देखि तिन कहँ गुने मनमें हंस डिभक अमान। तजि गृहाश्रम लसतहैं ये कौन परम अयान ॥ गृहीपटु धर्म्मज्ञ धर्माचार रत शुचि रूप। गृही सर्वाश्रमिनको प्रतिपाल करण अनूप ॥ ताहि त्यागि कुभेषकीन्हे गहे शूद्राचार। इन्हैं दैकै दण्ड करिबो गृही उचितबिचार ॥ गुणतइमि ढिग जाइ कीन्हे अरुणचष अतिक्रुद्धि। कहे दुर्बासा सुमुनिसों दुष्टमति दुर्बुद्धि ॥ धूर्तताके बचन कहिकै मोहिं द्विजसमुदाय। धर्म कर्म बिहीन कीन्हे लाज डर बिसराय ॥ शीघ्र तजि यहि आश्रमहि हो गृही जीवन ईछि। नतरु क्षणमों करौं सबकोनाश शरसों सीछि ॥ हंसको यह बचनसुनि जो बिप्र ताकोमित्र। भयो बरजत ताहि सो कहि बचन परमपबित्र ॥ क्रोधि दुर्बासा कहे तब हंससों हे मूढ़। गच्छ इतसों शीघ्र जो जहँ पिता तेरो बूढ़ ॥ गहे हों संन्यास ब्रत नहिंतजों ऋषिकर धर्म। नतरुअबलों बन्धु सह तुम जानते मम मर्म ॥ सर्व क्षत्री वृन्दको मैं भस्म करण समर्थ। गहे उत्तम ब्रत न ताते करतबूझि अनर्थ॥ कछू दिनमें कृष्ण करिहैं ध्वंसतेरो दम्भ। आजु भो तो नाशके ध्रुव हेतुको आरम्भ ॥ भाषि इमि उठि अनत जैबो चहे मुनि अनुमानि। गह्यो त्योंहीं हंस मुनिको चारुकोमल पानि ॥ तोरि

अनुपम दण्ड फारत भयो शुचि कोपीन । फोरि बिमल कमण्डलुहि भो कहत बचन मलीन ॥ देखि मुनिको हाल यहसब यतीगण डरपाय । शीघ्र लैलै पात्र दण्डहि दुरे बनमें जाय ॥ दोहा ॥ बिप्र जनार्दन धृष्टि तेहि दीन्हों तब बिलगाय । बिप्रहि दये अशीष मुनि जानि सुबुधि सुखपाय ॥ तब देखो नृप पुत्र सों ताहीथर मँगवाय । सखन सहित भोजन करत भयो मांस बनवाय ॥ तदनु सैन सह जातभो निजपुर भरो उमंग । तासु नाश ध्रुवगुणतभो मित्र बिप्र तासंग ॥ सोरठा ॥ तबमुनि यतिनबुलाय बैठि एकते मंत्र करि । गये जहां यदुराय भिन्न कमण्डलु दण्डलै ॥ चौपाई ॥ मुनिहिं पूजि प्रभु आसन दीन्हे । कुशलप्रश्न बूझै मुदलीन्हे ॥ बिशदभीर मुनि जनकी ज्वैकै । बूझतभे बिस्मितसे ह्वैकै ॥ मुनि तपभौन मौन मति गहिये । इमिआवनको कारण कहिये ॥ यहसुनि सुमुनि शोचपरिहरिकै । बोले क्रोध नयो सो करिकै ॥ जानि अजान मोहिं तुम जाने । जाते बूझत मनहुं अजाने ॥ जानत भेद जौन जन जाको । उचित न तासों गोपन ताको ॥ भलीभांति हम तुम कहँजानैं । जाने जानत आपन जानैं ॥ तुम सर्बज्ञ सर्व प्रद स्वामी । सबके न्यामक सबथर गामी ॥ जासुनाभि भव कमल सदनते । प्रगटित ह्वै बिधि चारि बदनते ॥ गायजासु गुण अंत न.पाये । सो तुम जगत योनिइतआये ॥ पांचतत्त्वमयतन सबमानत । सो सब तुम कृत भेद न जानत ॥ प्राण बाक मन में तुमसाईं । बूझत किमि दुस्तरकीनाईं ॥ इमिबहु बिधिकहि मुनिअभिलाषे । करणी हंस डिभककी भाषे । दण्ड कौपीन कमण्डलु भाषे । टूटो फाटो फुटो देखाये ॥ मम यह दशा जानि तुमचावन । बूझतकुशल हाससम भावन ॥ दीनबन्धु मम यह गति देखी । हौं निश्चिन्त कहा अवरेखी ॥ दोहा ॥ पाणिजोरि मुनिसों कहे मर्यादा प्रतिपाल । क्षमहु सुमुनि अपराधममलेबबैर मैंहाल ॥

वरुणइन्द्राबिधिरुद्रकेपासदुरैंजोधाय । तिलहूंमारौंतिनहिंहठिब
चैनकितहूंजाय॥सोरठा॥तोषिमुनिहिंयहि भांतिदैसुनिमंत्रनकृष्ण
प्रभु। सहद्विजगणकीपांति भोजनकरवायेसरुचि ॥महिबरी॥पुनि
योगसुन्दरसुथरमें फिरिबासमुनिकहँ देतभे । लहिबास प्रभुके
निकटको मुनि परमआनँद लेतभे ॥ उतहंस डिभक नरेशसुत
नृपसूय कोअनुमानिकै । द्विज बर जनार्दन मित्रसों इमिकहत
भेप्रणठानिकै ॥ निज पिता सों हम यज्ञकरवायो चहत जग
जीतिकै । सुनि बिप्र गुणि सुनिसोंइबिधि की सिद्धिबोलोभीति
कै ॥ नृप सूनु सुनु तू गुणेसो यह परम दुस्तर मंत्रहै । यहअ-
ल्पजीवीजनतिको यमराजको कृततंत्रहै ॥ दोहा ॥ जरासन्धबा-
ह्लीकअरु यादव सबैअधर्ष । अरु भीषम जिन मृगपतिहिजी-
तिलहे जयहर्ष ॥ रामकृष्ण त्रैलोक्य को क्षणमें जीतनशक्त ।
तिन्हें समुझि यहि मंत्र में मन कीजै अनुरक्त ॥ सोरठा ॥ जो
इन सों मिलि मेल साम दामसोंलेहु करि । तौ रचिकै रण-
खेल जीति विश्वमख सिधि करहु ॥ चौपाई ॥ यह सुनि तेहर
बर बलवारे । बचन सगर्ब सरोष उचारे ॥ भीषम वृद्ध कहा
बलताको । उग्रप्रभाव कहतहौं जाको ॥ एकलब्य कहँ भट में
जोरे। तुम्हैं न कहब उचित मम धोरे । जरासन्ध मम बन्धुप्र-
शंसी ।ह्वै है कबहुं न मम हित ध्वंसी ॥ यदुबंशी केहि लेखे
माहीं ।तिनको हमैं भटक कछुनाहीं ॥ तातेप्रथमकृष्णपै जाई।
मम निदेश तुम कहहुबुझाई॥यज्ञ हेतकर देहिं पठाई। आय
सबर्ग करैं सेवकाई॥ भोजनसमय स्वाद उपचारा । ऐहैं लये
लवण बहुभारा॥ मोरिशपथ तुमकहँ बहु बेरी । जाहु शीघ्रअब
करहु न देरी ॥ यह मम कार्य सिद्धअभिलाषौ । अब मतिदीर्घ
सूत्रता भाषौ ॥ यहसुनि बिप्र जनार्दनज्ञानी । होनी अवशि
होति अनुमानी ॥ फिरि न कछू नृप सुतसोंभाषो । प्रभुदर्शन
हित अति अभिलाषो ॥ शीघ्र बिदाह्वै यात्राकीन्हे । चलेअ-

इवचढ़ि आनँद लीन्हे॥ पावनकर प्रभुके गुणगावत। आपुहि धन्यजानि सुखछावत॥ सुमिरत चारुरूपमनभावन। परमानन्दसुरस सरसावन॥ घन सम श्यामपीत पटधारी। मणिमय भूषण धृत हियहारी॥ दोहा॥ अनुपम अमल अपूर्व अतिधरे किरीट अनूप। बारिजाक्ष सुखमा सदन कदन मदनको रूप॥ कौस्तुभमणिकी रुचिरसों रचितसुवक्षबिशाल। भृगुपतिकेपग चिह्नपै बिहरतबरबनमाल॥ सोरठा॥ मणिमेंपरमविचित्र सिंहासनबिस्तरितपै। बैठेकरतचरित्रबिश्वयोनिकहँकबलखब॥ रोला॥ गहेशरकोदण्डखण्डनसमरमखध्वजयूप। सभासदनसमेतभूषे सभासदन अनूप॥ प्रभुहि पेखिकृतार्थह्वैहौं धन्यसोक्षणस्वक्ष। होहिंगे अबधन्य मेरे अमल आयतअक्ष॥ ध्यानधरि धरिहेरि जेहि सनकादि पावतमोद। ताहिमैंपरतक्षलखिहौं करतलोक बिनोद॥ इतोदुखमोहिंदुसहप्रभु सोंकहनपरिहयहाय। चलो करलैहंसपैयह करिकुबुद्धिकुभाय॥ गुणतउत्सुकदरशको इमि हांकिबाजिह्हिक्षिप्र। गयोप्रभुकेद्वारपैअति भयोप्रमुदितविप्र॥ द्वारपालप्रवीणप्रभुसों अरजकरिकैतासु। गयेताहि हजूरमेंलै जायसोतहँआसु॥ प्रेमजलसोंभरेचष भोकरतप्रभुहिप्रणाम। हंसनृपको दूतहौं कहि कहतभोनिजनाम॥ कहेप्रभु इतआय सुखसों बैठिये द्विजआर्य। कहौवैजो कहेतुमसों कहनकारिबो कार्य॥ बचनयहसुनिमोदिब्राह्मण बैठितहँकरजोरि। कह्योप्रभु तुम जानि सब मोहिं कहन कहत बहोरि॥ पाइ शासन आपुको सो कहत हौं मनमोरि। कृपासिन्धु सुजानसो सुनि गुणब मोरि न खोरि॥ भाषि इमिसो कह्यो द्विज कारि लाजतेनतबैन। हंसहो जो कहे प्रभुसों कहन कुत्सितबैन॥ हंसको संदेशसुनि यह कहे कृष्ण सहास। दये बिनु कर करब कैसे तासु पुरमें बास॥ बचन यह सुनि राम सात्यकि आदियादव हर्षि। पाणि तल दै लै सुहँसिहँसि कहे बचनअमर्षि॥ कहे प्रभु फिरि विप्र

सोंह्वै भूपके सुतढीठ । मांगि हमसों कर चहत हैं भयोजग में ईठ॥ मुक्त निजकर धनुषसों शर प्राण हरकरपर्म। देबतेहि हम अवशि ताको निरखिकै थल मर्म॥ जाय तिनसों कहो निर्मित करैं जो शुभदेश। आइ तहँ हम देहिं कर जो करन कठिन कलेश॥ दोहा॥ तुम नहिं कहि सकिहौ इतौ नृपसुतसों भयपाय। सात्यकि जैहैं साथतव कहिहैं सबसमुझाय॥ लखि तव भक्ति प्रवीणता तोपर मम अतिप्रीति। जपि मम नाम सप्रेम नित लहिहौ कबहुं न भीति॥ सुनि यह बचनकृतार्थ ह्वै बन्दिचरणसुखदाय। चलोबिदाह्वै बिप्रसो हियमेंमूर्त्ति बसाय॥ तबप्रभु सात्यकिसोंकहे तुम द्विजके सँगजाय। बासों कहि सुनि बार्त्ताआवो शीघ्र सचाय॥ सुनि सात्यकि चढ़िअश्वपैएकाकी द्विजसाथ। गये हंसके निकट जिमि मृगके ढिग मृगनाथ॥ सोरठा॥ तहां बिप्रमतिमान कहतभयो इमि हंससों। सात्यकि बीर अमान बासुदेवके दूतये॥ चौपाई॥ सुनि तुवप्रश्ण कृष्ण रिस छाये। इनकहँ उत्तरदैन पठाये॥ ये प्रियसखा कृष्णकेआरज। ईछि न भुजसम कृत शुभकारज॥ कह्योहंस हम इनकी करणी। सुनत रहे सब बिधिसों बरणी॥ धीरबीर शास्त्रज्ञ बखाने। हैं ये आजु देखि सतिमाने॥ इमि कहिकै सो कपटीमन को। बूझो कुशल कृष्ण यदुगनको॥ यहसुनि सात्यकि बोलि अरुचिसों। कहे सर्ब कुशली मतिशुचिसों॥ सो सुनि हंस प्रशंसि अनुजसों। बूझतभयो जनार्दन द्विजसों॥ बिप्रजायतुम कृष्णहि देखी। कहेसुने सो कहोबिशेखी॥ कह्योबिप्र सुनु नृप सहभाई। हमजिमिलखे कृष्ण कहँजाई॥ इन्दीबरदल सदृश सोहावन। चारु गात रुचि अतिमनभावन॥ अतिरमणीय पीतपटधारे। गुरुउरपै वनमाल बिहारे॥ मणिमय भूषणसों तनभूषे। कोटिमदनकी सुखमादूषे॥ चारु किरीट शीशपै शोभित। करत सूरकी छबिको क्षोभित॥ चामर छत्र बिचित्र बि-

भाते। राजश्री की रुचिसों राते॥ परधनसदा शङ्ख असि पावन। धरेपार्श्व अरिवृन्दनशावन॥ पुरुषसिंह सिंहासनपाहीं। बैठेलसत सभागृहमाहीं॥ दोहा॥ राम आदि यदुगणसहित राजत धीर धुरीण। शस्त्रशास्त्रकीबारताकहत सुनत परवीण॥ बन्दीजन अस्तुतिकरत करत अप्सरानृत्य। कांतिभरे करि पांतिहे खरे छरी धृतभृत्य॥ दुर्बासा नारद सुमुनि बैठे यतिन समेत। प्रभुहिलेखिआनँद भरे कृत तपकोफललेत॥ सोरठा॥ यहि बिधि प्रभुहि निरेखि ह्वै कृतार्थअति धन्य मैं। कहतभयों अवरेखि तव संदेश अंदेशतजि॥ सो सुनिकै अति तेखि भेजे तव ढिग सात्यकिहि। सुनि उत्तर अवरेखि करौ जौन कीन्हे बनै॥ चौपाई॥ सुनिबोलो नृप सहसाकरमी। रेद्विज अधम निलज्जअधरमी॥ मोसँग खाय मोटाय अभागे। अब परको गुण जलपनलागे॥ रेखल कुटिल कुकरमी खोटे। शीघ्र गच्छ मो चषके ओटे॥ इमि कहि फिरि सात्यकिसों बोलो। भरो रोष गहि गर्ब अतोलो॥ रेयादव कहुमो भयराखो। नन्द नँदनजो भाषणभाखो॥ तासुबचनसुनि सुनिमुसकाने। बोलेबचनबीर रससाने॥ दुरबासासों तव अघसुनिकै। सत्यसन्ध तवबधध्रुव गुनिकै॥ हेरत हैंमिसि इतनेही में। तुवसँदेश सुनिसकेनहीमें॥ ताते तुम्हें पात्रगुणस्वामी। देनचहे कर प्रभु नयगामी॥ चक्र अमोघ पाणिमें लेहैं। सोतुव नाश करनकर देहैं॥ जोथरकहो आय तिहि थरमें। देहिं चक्रकर कर तुव करमें॥ फँसो पङ्कमें जिमि नरकोई। निकसन चाहत करगहिसोई॥ तिमितवप्राण फँसो यहि तनमें। मांगतकर प्रभुसों गुणि मनमें॥ ताकहँ कृपासिन्धु मुदद्वारे। करिहैं तन कर्दमसों न्यारे॥ यह सुनि हंस क्रोधसों भरिकै। बोले नयनलालसम करिकै॥ यादव तू तन बचन उमाहै। मोहिं कलंक दयो निजु चाहै॥ दोहा॥ दूतकर्म्म में आयहू आपुहि जानि अवध्य। बचनकहत यहि भांतिके

मम सुभटनके मध्य ॥ दूतजानि नहिं बध करौं सहितौ बचन अन्याय । करिहौंताकोनाशजो पठयो तोहिंसिखाय ॥ जयकरी॥ अरिको बधब न दूतहि योग । कहैं शास्त्रबिद सिगरे लोग ॥ ताते आजु छोंड़ितव प्रान । जातकृष्णपै धृत धनुबान॥ करिहौंकहां युद्धतुमआय । शीघ्र ठौर सो देहु बताय ॥ कह्यो हंस पुष्करपैटूटि । लेब यदुन सह सम्पति लूटि ॥ सात्यकि ताहि कालबशजानि । नहिं उत्तर दीन्हे अनुमानि ॥ रथचढ़ि शीघ्र कृष्णपै जाय । दीन्हेसब वृत्तान्त सुनाय ॥ सुनि प्रभु साजिसेन चतुरङ्ग । गेपुष्करपै भरे उमङ्ग ॥ दश अक्षौहिणि सेनासाजि। आये हंसडिभक तहँ गाजि ॥ शिवके द्वैगण वीरमहान । आये तासु सँग बलवान ॥ अरुबिचक्र दानव पतिवीर । सखा हंस को अति रणधीर ॥ देवासुर संगरमें जौन । इन्द्रहि जीति बुद्धिबलभौन ॥ लरो बिष्णुसों बर बाणैत । आयो सदल तौन अमनैत ॥ राक्षसबली हिडम्ब अमान । सो बिचक्रको सखा समान ॥ सहसअठासी राक्षस भीर । सहसहाय आयो रणधीर ॥ जरासंध नहिं कियो सहाय । प्रभु प्रभाव बिद जानि अन्याय ॥ बर पुष्करपरदोऊसैन । कियेनिवास जायतेहिरैन ॥ प्रातकृत्य करि करि लहि प्रात । करन लगे भिरि शस्त्रप्रपात॥ दोहा ॥ क्रुद्धि क्रुद्धि भिरिउद्भट लगे लरन कैशुद्ध । धीर धनुर्द्धरशरनि मग रुंधिरुंधि जयलुब्ध ॥ भिरे गजस्थ गजस्थसों भिरे रथस्थरथस्थ । भिरेहयस्थ हयस्थसों पैदर पैदरस्वस्थ ॥ सोरठा ॥ चंड चंड शरछंडि वीरप्रचण्ड प्रचण्डभिरि । खंडखंड तन खंडि करे उदण्ड उदण्ड धुनि ॥ भुजंगप्रयात ॥ जुटैंबीर बांके छुटैंफेरि जूटैं । गदामुद्गरो बाहिद्वन्दी न कूटैं ॥ खरेखेल बारे सुलैखड्गटूटैं । खरेहांकिआड़ैं हनेतेनहूटैं ॥ अहेअर्बसादीगहे गर्बतेलैं । रथीजे पथी सर्व शस्त्राणिफेलैं ॥ तजैंतोमरैं भिन्दिपालैं सुबानै । हनैं शक्तिभालैं बिशालैं अमानै ॥ दटैंहांकिकेते

कटैंहांकिकेते । जहैंहांकिजेते अडैंहांकितेते ॥ बड़ेबीरकेते कटे शीशघूमैं । भिदेभल्लमें भूरिसावन्त भूमैं ॥ गिरैंबाजितैंते किते बीरजूझे। परेपापसों पापरैमी अरूझे ॥ मरैंस्वामिबाजी गजैं भीलपागे । इतैते उतैते फिरैं भूरिभागे ॥ दोहा ॥ दानवबीर विचक्रसों भिरेकृष्ण जयकाज । भिरेहंससों रामप्रभु सात्यकिडिभकसुभ्राज ॥ उग्रसेन बसुदेवये भिरिहिडम्बसों क्रोधि । करत भयेतहँ युद्धबर शरसमूहसों रोधि ॥ सोरठा ॥ राक्षस दानवसर्ब अरु यादवभिरि लरतभे । सिगरेबीर सगर्ब द्वन्दयुद्ध घिरिकरतभे ॥ भूतपिशाच खबीस यूथ योगिनीके जुरे । शोणितपियैं हदीस डकरि डकरि खेलैंखुशी ॥ रोला ॥ जूझिकितने सुभटरणमें दिब्यशुचि तनपाय । अपसरनसह चढ़िबिमाननि लखतहैं निजकाय ॥ दुहूंदिशिके सुभटकितने लरतउतहूं रोषि । अपसरनहित गहेमत्सर करिसुयुद्ध अतोषि ॥ हनेकृष्ण बिचक्रके उरबर तिहत्तरिबान । कृष्णकेतनहनतभो बहुबाण तौनअमान॥तीक्ष्णबाण क्षुरप्रसों रथछत्रध्वज धनुतासु । काटिमारेकृष्ण ताके सूतअरु हयआसु ॥ कूदिरथसों हनतभोसो गदा गहिकै त्यागि। काटिदीन्हेबाणसोंतेहिकृष्णआनँदपागि ॥ शिलामारत भयो सोतब दये प्रभुतेहिकाटि । फेरितेइतरु हन्योतेहिप्रभु काटिदीन्हेंडाटि ॥ कोपिपरिघ अमोघलैकर तबबिचक्र प्रबीर । कहतभो इमिकृष्णसों अबखरोरहु सहिपीर ॥ असुरसुरके युद्धमें ममलखे बलहिभुलाय । फेरिआयो लरनताको लहतशीघ्र सजाय ॥ भाषिइमिभो हनतसोतेहि काटिबीचहि बिष्णु । काटि शरसों शीशताको कियेमहिगत जिष्णु ॥ बचेहे जो बीरताके भगेते भयपाय । जयतिकेशव सुमनबोले इन्द्रसह हरषाय ॥ हंससों अरु रामसों तिमिभयो संगरघोर । हनेहंसहि रामरामहि हंसबाणकठोर ॥ रामकोध्वज धनुषपथबर काटिशरसों तौन । हतेचारौ बाजिसूतहि बाणसों बलभौन ॥ गदासों

कीन्हे तासुध्वजरथराम । मारिअश्वन हतेसूतहि बीरवर बल-
राम ॥ गदाबिधि बिदगदासों तेलरेतत्र सक्रुद्ध । अमरनरसब
भयेबिस्मित देखिअद्भुत युद्ध ॥ डिभकसात्यकि किये तिमिभिरि
युद्ध परमप्रचण्ड । तजिपरस्पर बाणअगणितगहेबरकोदण्ड ॥
एकसै दश धनुषकाटे डिभकके सिनिधीर । खड्गगहि तब डि-
भकधायो कहतबचन गँभीर ॥ दोहा ॥ लखिसात्यकिभट खड्ग
गहि रथतेउतरि सचाय । स्थानभेदते भेखरे ताके सन्मुखजा-
य ॥ खड्गयुद्धके भेदजे बत्तिस बिधिके पर्म । तेकरि करिते भे
लरत करतादुस्तर कर्म ॥ उग्रसेन बसुदेवये वृद्धबली रणधीर।
हनेहिडम्बहि बाणबहु करता दुस्सहपीर ॥ सोरठा ॥ बलीहिडम्ब
अमान सहितिनके बरबाणसब । मर्दतभयो महान चतुरंगीदल
यादवी ॥ चौपाई ॥ गजनउठाइ गजनकहँ मारत । भयोरथनसों
रथन बिदारत ॥ हयके यूथ हयनसों मरदित । करिभो करत
सबदल अरदित ॥ अतिजपसों बलिचली ढिगहिलहि । भ-
क्षतभयो मानुषनि गहिगहि ॥ मुखमें प्रविशि नासिकाकीमग ।
कढ़ैंकितेनर मारुतके सँग ॥ फेरिबायुबश ह्वैतप्रविशैं । कढ़ैंफेरि
तिमिफिरि तिमि प्रविशैं ॥ खाइअसंख्य भटनइमि पापी । कु-
म्भकरण समदुस्तर दापी ॥ उग्रसेन बसुदेवहि भक्षण । चलो
पसारि बदनबरतक्षण ॥ तेलखि बहुशर मुखमधिमारे । रुको
न सो कलबल करिहारे ॥ तबप्रभुके दिशिचले पराई । पीछे
चलो हिडम्बअदाई ॥ यहलखि कोपि रामसुखदाई । तुरितहंस
सों छोड़िलराई ॥ जाइहिडम्बहि मुष्टिकमारे । भिरेहंससों कृष्ण
सुखारे ॥ सोरामहिं तेहि रामप्रहारे । मूकाबज्रसदृश बलभारे ॥
यहिबिधि घरीद्वैकलौं लरिकै । मारेबलकर तलबल भरिकै ॥
गिरोभूमिपै मूर्च्छित ह्वैकै । तबगहि तेहिबल फेकेज्वैकै ॥ जाय
कोशयुगपै परिचेतो । फेरि न युद्ध करणसों हेतो ॥ भागिजाय
सागरतट बनमें । दुरोहिडम्ब भरेभय मनमें ॥ दोहा ॥ इतनेमें

सन्ध्याभईलईअस्तगतिसूर। युद्धकरणसों भेनिवृत सिगरेभट बलपूर॥ हंसकहतभो कृष्णसों करबयुद्ध फिरिभोर। गोबर्द्धन गिरिकेनिकट सूरसुताकी ओर॥ महाराजतेहि द्योसमें पुष्कर सरकेतीर।सहससतासीगजकटेलाखरथीरणधीर॥ दनुजमनुज राक्षस प्रबलअरुबाजी सहईश। तीसकोटि जूझे तहां ह्वैबिन-कर हरशीश॥ तेहि निशि पुष्कर पैकिये प्रभु सहसेन निबास। सैनसहित नृप हंस गो गोवर्द्धन केपास॥ सोरठा॥ प्रातकृत्यक-रिभोर सहितसेन तहँ कृष्णगे। गिरिके उत्तरओर भिरतभये फिरि भट बली॥ महिखरी॥ तहँउग्रसेन प्रद्युम्न सात्यकिशाम्ब सारण बरबली। बसुदेवबिपृथुकङ्क ऊधो अनाधृष्टसुबहुकली॥ येबीर दशभिरिहंस डिभकहि तकिशरण मारतभये। तेबाणइ-नकेकाटिदश दश बाण सबकेतनदये॥ तब लगे ताके बाण यादव सर्ब ये ब्याकुलभये। तजि समर सत्वर हांकि रथश्रीकृ-ष्ण प्रभुके ढिगगये॥ यहदेखिकेशव हंस भट बरसों सरसरिस भिरि भिरे। बलिराम डिभक प्रमत्त भटसों युद्धबिधि सिधिम-धिथिरे॥ सुरसिद्धऋषि गन्धर्ब सर्ब बिमानचढ़ि चढ़ि मुदभरे। सोयुद्धदेवा सुरसमर समलखतहेनभमधिखरे॥ जेदूतशिवके दोय तासु सहाय हित सँगरहतहे। तेशूल गहिगहि प्रगटप्रभु सों बचन कटु भेकहतहे॥ प्रभुपकरितिनहिंघुमाइ बलसों दि-शि उदीचीप्रातितजे।तेभ्रमत नभपथ जाय शिवके निकट गिरि अति लचिलजे॥ यह देखिहंस प्रबीर प्रभुकेभाल मधि बर शर हने। तब कोपि मनसेकृष्ण ताकहँ हिंये हनिबो शरघने॥ दोहा॥ तब सात्यकि कहँसारथी करिकेशवअनुमानि। तजेअ-स्त्र आग्नेय बरधनुष कानलोंतानि॥ बारुणास्त्र तजि हंस तब दयो अस्त्रसों वारि। दिव्यअस्त्रबायव्यफिरि मारे कृष्ण बि-चारि॥ महेन्द्रास्त्र तजिहंस फिरि ब्यर्थ करतभोताहि। तबमाहे-श्वरअस्त्र प्रभु तजे ताहिपैचाहि॥ रौद्र अस्त्रसों हंसफिरि किये

अस्त्र सों ब्यर्थ। चारिअस्त्र तब साथहीमारे कृष्ण समर्थ ॥ राक्षस अरु पैशाच अरु गन्धर्वास्त्र ब्रह्मास्त्र। चारिअस्त्र तबतजतभो शीघ्र हंसबिद्शास्त्र ॥ आसुर अरु ब्रह्मास्त्रअरुयाम्यअस्त्र कौबेर। आड़े प्रभुके अस्त्र कहँ भिरिये अस्त्रअजेर ॥ अस्त्रब्रह्मशिरनामतब मारे कृष्ण रिसाय। रोंक्यो ताको हंसफिरि सोई अस्त्र चलाय ॥ सोरठा ॥ तबश्रीकृष्णबिचारि गहे बैष्णव अस्त्र बर। जातेअसुरनमारि राज्य दिये हेइन्द्रकहँ ॥ चौपाई ॥ लखि सोअस्त्रहंस भयपागो। रथतजियमुनाकीदिशिभागो ॥ रथ तजिचले कृष्ण जयईछे। यथा केशरीगजके पीछे ॥ जाय हंसभय भरसों दूदो। कादर कालीदह मधिकूदो ॥ तापैतुरत कूदि रिसभारे। लात तासु शिरमें प्रभुमारे ॥ सोमरिगड़ोपंक माधिजाई। अबलों फिरि नहिं भयो लखाई ॥ प्रभु कढ़ि आइ सुरथ पै राजे। सैनिकतासु समर तजि भाजे ॥ बन्धु बन्धुकरि डिंभकदुखारो। धसो कलिन्दीमाधिधनु डारो ॥ बहुबिधि खोजि बाहिरेआयो। रोवत गयो कृष्णपैधायो ॥ कहतभयो ब्याकुल बिलखाई। रेरेगोपकहांममभाई ॥कहेकृष्णयमुनासोंजाई।बूझो देहैं जाहिबताई ॥ यमुनातीरजाय फिरिरोवत। भोधसिइतउत बारिबिलोवत ॥ हाहाहंसहंसकहिजलसों। कहिउरशिरताड़त करतलसों ॥ निजकरसों निजजीभउखारी। तनतजिभयो निरयअधिकारी ॥ तिनके मरेकृष्णमुदलीन्हें। बासगोबर्द्धन गिरिपैकीन्हें ॥ सुनितहँ नन्द यशोमति आये। गोपन सहितमोदसोंछाये ॥ दधि घृत माखन दूध सोहाये। अरुशुचिभोज्य पदारथल्याये ॥ दोहा ॥ तिन्हैंपेखिप्रभु उठि तुरित मिलि सप्रेमहरषाय। बारबार बूझे कुशल निज समीपबैठाय ॥ गोधन गोपीगोप जे युवाबृद्धअरुबाल। पृथक्पृथक् सबको कुशलबूझे त्रिभुवनपाल ॥ पुरगृह बन तरुकुंजके पृथक् पृथक् लैनाम। बूझे यशुदानन्दसों कृष्ण कृपाके धाम ॥ सोरठा ॥ सुनिप्रभु

केये बैन नन्द यशोमति दीनकै। भरे बारि सोंनैन कहे बचन करुणामये ॥तोमर॥ इतकुशल हैसबठौर। तव कृपातेशिरमौर॥ दुखदुसह इतनो भूरि। तुम बसेजोअतिदूरि ॥ मम सर्बसुख हैब्यर्थ। बिनु लखेतुमहिं समर्थ ॥ यहसुनितिन्हैं समुझाय। प्रभु बिदाकरि गहिचाय ॥ चलिगये पुष्कर तीर। जहँ लसत बहु ऋषिभीर॥ जेलसत अति तप तोम। जिमिउदित दिनकरसोम ॥ बलअतुलदुरबलवेश। बढ़िलसत शुचिनखकेश॥ गहिबन्य बलकलबास। रचि पूर्णको सु अवास ॥ बसिध्याय प्रभुहिस्वछन्द। जे लहे परमानन्द ॥ तहँ प्रभुहिलखिते पूजि। बैठाय अस्तुति कूजि ॥ करि करि उचित सतकार। सुखलहे अपर अपार॥ तब बिदा कै सहसैन। गेस्वपुर आनँदएैन ॥ तहँजायसह परिवार। भेकरतविशद बिहार ॥ प्रभु बिश्वयोनि सनेह। गहि आपु मानुषदेह॥ इमिकरे कौतुकरंग। हितजननि केसउमंग ॥ यहिपढ़ैंतेनरधन्य। नहिंतिन्हैंसमकोउअन्य॥ दोहा॥ इतैपावतेपरममुदउतपदपरमप्रकर्ष। सुनैंगुणैंजोप्रभुचरित ध्यावैंप्रभुहिसहर्ष॥

इतिहरिबंशदर्पणेहंसडिम्भकोपाख्यानोनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

दोहा॥ जनमेजय भूपतिकहे अबकहियेमुनिपर्म। बिधिभारतकेसुनन की अरुस्वाभाविकधर्म ॥ बैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ बिश्वसृजभगवानकोहैजितोपरमप्रपंच। भारतरचिमुनि कियोतितनो एकनेशुचिसंच॥ भारतपढ़िसुनि गुणिसबिधि नरहोहिं सुमनसमर्थ। कहोयहमुनि ब्यासको यह होइनकबहुंनब्यर्थ॥ परम पटु धर्मज्ञधर्मी सतपथीसर्बज्ञ। सत्यबादी शुचि अक्रोधी भागवत शास्त्रज्ञ॥ धीरसुबुधिसुशीलद्विजसों सुनैसुनियमभर्थि। सुनैजोसो गुणैमनमें जानिसकल यथार्थ ॥ धनुसुबरण अन्न पटघट पर्ब पर्बणदान। ब्यास आदिक द्विजबरनकहँ देइकरि सनमान॥ पर्बपर्बणिचारुपुस्तक पर्बपर्बलिखाय। देइब्यासहि

मुदित करि सह और द्रव्य सचाय॥ पर्व पर्वणि विप्रभोजन
यथाशक्तिकराय। रहिससंयम अर्थसागरभार्त सबसुनिजाय॥
पारलहिहरिबंशको नरभाग्यवान प्रवीन। करै उत्सव परमक-
रिकैप्रेम पूरणपीन॥ पूजि पुस्तक करै अर्पण हेम मणि पटआ-
दि। बस्तुउत्तम शक्ति मिति युत भक्तिअति अहलादि॥ पूजि
ब्यासहि सुमनके सम देइजितनेदेय। अधिक दीन्हें अधिक
उत्तमअधिक फल अप्रमेय॥ भीष्मद्रोणादिकनको करि श्राद्ध
आनँदपूरि। सहस बिप्रन देइ भोजनदेइ दक्षिणा भूरि॥ एक
लों दशबारलों सुनिभार्त सुनहुनरेश। बिष्णुकोसालोक्यक्रम-
सों लहै तीन सुभेश॥ बिबिधबिधिकेमणिनमय शुचिमानपै
आसीन। सुमन सँग सम सुमनगणकेरमै सुखमा पीन॥ भूप
भारत श्रवण कोहैपुण्य अकथ अनन्त। धन्य जेनर सुनत हैं
अतिधन्य जेनर सन्त॥ धन्य सोथर होत है जहँ भार्त कथन
अनूप। धन्यसोघररहत है जहँ भार्त पुस्तकरूप॥ धन्य तुमजो
कियेहमसों प्रश्नयहसुखदानि। धन्यतुम हम भये कथियहि
भांतिआनँद आनि॥ दोहा॥ फिरिभूपति मुनिसोंकहै अबक-
हिये सबिलाश। कामादिक दैयतनकोज्ञान शम्भुसोंनाश॥
चौपाई॥ कहेसुमुनि सुनुभूपतिज्ञानी। त्रिपुरअवस्थात्रय अभि-
मानी॥ बिश्वरतैजस प्राज्ञबखाने। मायाधातुमयेझबिसाने॥
बने कारणीकसा बिशदपै। घनसम अति बिचित्रता हदपै॥
पिण्डअन्नमय बरप्राकारा। युतगन्धर्बनगरब्यवहारा॥ प्रथम
करोरथखण्डअनेगा। अतिउन्नत अरु अकथ असेगा॥ काम
क्रोध मत्सरमदलोभा। मोहसर्बदैयत अक्षोभा॥ इन्द्रीहैंसुख
दुखपरिवारे। तासु अकथबाहन बलभारे॥ आलम्बन उद्दीप-
नजेते। बिषय तासु आयुध सबतेते॥ कुमत कठोर कवच सब
धारे। ब्यसन गर्ब मदसोंमतवारे॥ योगकर्म सुरअरुपितनके।
भागगयलरोके बरपनके॥ तबहै जीवइन्द्र अति ब्याकुल।

सुरसमादिसहभय सों आकुल ॥ गुरु बिरंचिकेढिगगे आये। कै आरत निज दशासुनाये ॥ तेकरिक्रियाकहे समुझाई। ज्ञान शम्भुकहँ ध्यावहुजाई ॥ तिनसोंबध्य दैत्यये सिगरे। भये प्रचण्डाजिते मतिबिगरे ॥ सुनिसुरपति सुरगण सहमोदे। आश्रम महिपै आइबिनोदे ॥ कियेतपस्या बरव्रतधारिकै। तृष्णातियहिबियोगिनि करिकै ॥ दोहा ॥ हृदाकाश कैलासमें बिहरिईश्वरहिध्याय। शङ्करज्ञान अमंदको लैकै सङ्गसहाय ॥ नभउपासना मार्गपर लरत भयेसब आय। असुर वृन्द कामादि सों सुमन समादि सचाय ॥ रोला ॥ प्रणवधनुशर तत्त्व चिंतनसों सुशंकरज्ञान। काम आदिक असुरगण कहँ कियेमृतक समान ॥ लिंगदेह सुभूमि माधिरहि बासनामयसर्ब। कामआदिक दैतगणतजि दर्प गुरुतापर्ब ॥ पाय जय ऐश्वर्य्य अद्भुत जीवइंद्र बिनोदि। गर्बिसालस भये सोई क्षमालहिकै मोदि ॥ प्रबलकै तेहिक्षणहि आलस रजनिचर तेदैत। लगेमारनबिषय आदिकशरन बरबाणैत ॥ दशा यह लहिगये फिरि ते ज्ञान शिवके शर्ण। किये शिवतब तेजक्रोधहिभिरिप्रकर्ष सुबर्ण ॥ श्रवणमननहिं सुनिय ध्यासनवर त्रिशूल उदण्ड। वाहि सुबरणकियेमुर्छित सुरन परमप्रचण्ड ॥ भूतिजयलहि जीवसुरपति स्थूलतन दनठौर। त्यागि सूक्षम देह रथचढ़िचलोऊर्द्धसगौर ॥ तहांअप्सरसिद्धअरुगन्धर्वताकहँ देखि। किये अस्तुतितासुसोसुनि भेसगर्बविशेखि ॥ प्रबलकै ज्यों असुरगणतेयुद्धकरिफिरितत्र। घेरिलाये फेरिताकहँ पूर्ब्ब हैजिमियत्र ॥ कियेतहँ गुरु गुरू शुचि स्वस्त्ययन शुभउपदेश। फेरिकैचैतन्यताविधि लगेलरनसुरेश ॥ सर्बसाधन शस्त्रगहि सामादिसुरन समेत। युद्धकीन्हे घोसबहु तहँजीवइंद्रसचेत। ज्ञानशिवतब धारिकै अद्वैत शत सिद्धांत। बाणधनुषअमोघ तीक्षण बिष्णुमययुतशांत ॥ धर्म्मउर्बी सुरथ पै आसीनकै भरिभ्राज। मारिकै ब्रह्मास्त्रक्रमसों किये भस्म स-

माज ॥ स्थूल जाग्रत सूक्ष्म स्वप्नसुमहत्तत्त्व सुषुप्त । देहत्रययेत्रिपुर तिनको भावसोंकारलुप्त ॥ तुर्य्यब्रह्मानंदमय मैं भूतिसुर पुरपर्म । मध्याबिहरतभयेयोगी इंद्रकरिशुचिधर्म ॥ धर्म्मसोंसब लहत सब पद धर्म्मदायकश्रेय । धर्म्मनित करतव्य सबक्षण धर्म्म नित अनुमेह ॥ दोहा ॥ जीव इंद्र इमि लहत नृप इन अ-सुरन सोंजीति । कैकीन्हे सियरामके पद पङ्कज पै प्रीति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथकबिनाबिरचितेभाषायां महाभारतान्तर्गतेहरिबंशदर्पणेचत्वारिंशोऽध्यायःसमाप्तः ४० ॥

इतिहरिबंशदर्पणःसमाप्तः ॥

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपा ॥
अगस्त सन् १८९१ ई० ॥

---